RPSC 2026

राजस्थान प्रशासनिक सेवा प्रारंभिक परीक्षा

भारत का इतिहास

INDIAN HISTORY

NODIA

खंड-2

अध्यायवार MCQs

Nodia

Scan QR for Demo PDF

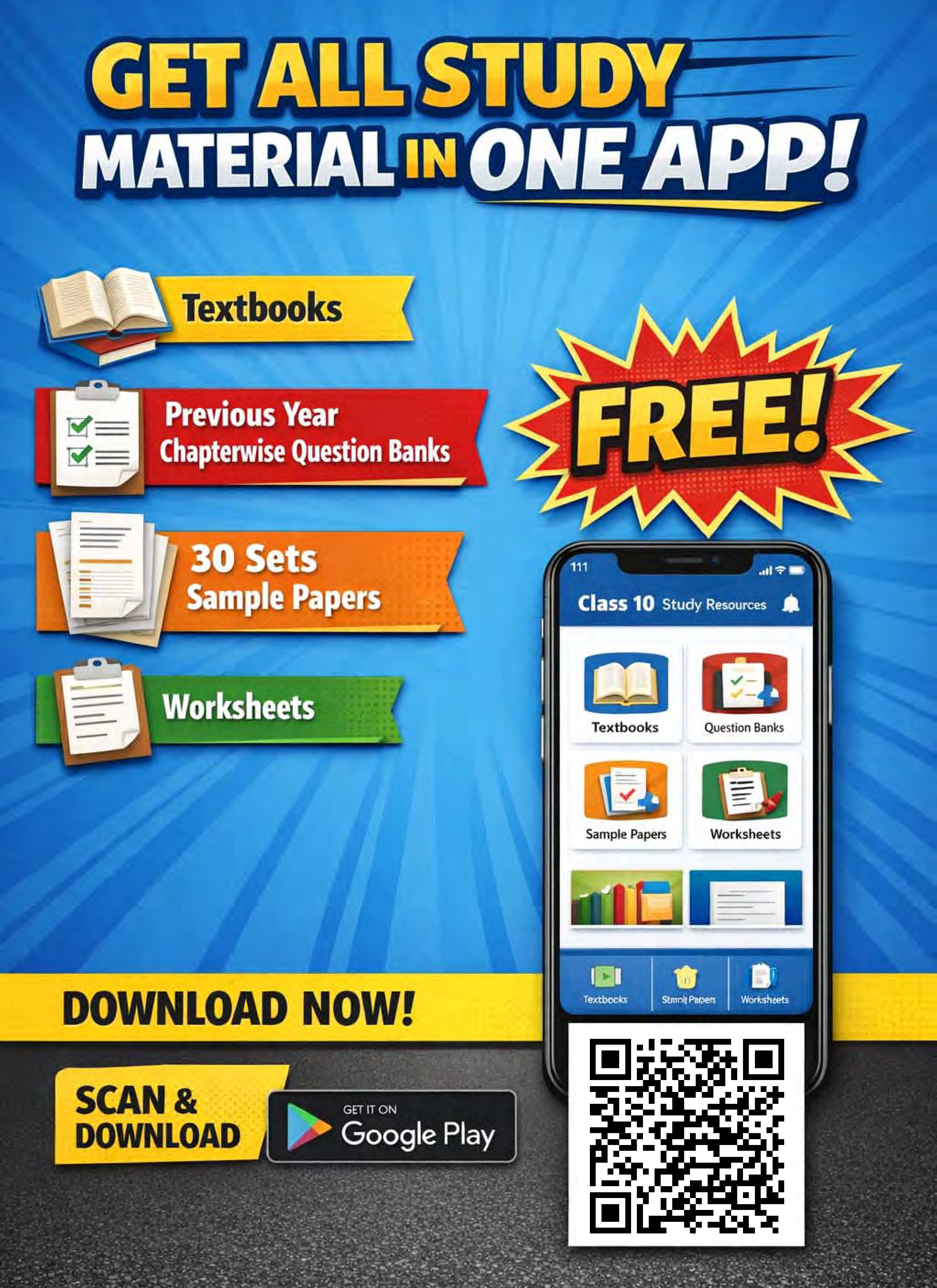
GET ALL STUDY MATERIAL IN ONE APP!
Textbooks
Previous Year Chapterwise Question Banks
30 Sets Sample Papers
Worksheets
FREE!
Class 10 Study Resources
Textbooks
Question Banks
Sample Papers
Worksheets
DOWNLOAD NOW!
SCAN & DOWNLOAD
GET IT ON Google Play

राजस्थान लोक सेवा आयोग

राजस्थान प्रशासनिक सेवा

प्रारंभिक परीक्षा 2026

सामान्य ज्ञान और सामान्य विज्ञान

खंड 2

भारत का इतिहास

अध्यायवार वस्तुनिष्ठ प्रश्न बैंक

आयोग द्वारा जारी पाठ्यक्रम के अनुसार

NODIA

Downloaded from www.pdf.tube

RPSC प्रारंभिक परीक्षा खंड 2
Edition April 2026
Published by :NODIA
An Imprint of NODIA EDITIONS LLP

Information contained in this book has been obtained by author, from sources believes to be reliable. However, neither NODIA nor its author guarantee the accuracy or completeness of any information herein and NODIA nor its author shall be responsible for any error, omissions, or damages arising out of use of this information. This book is published with the understanding that NODIA and its author are supplying information but are not attempting to render engineering or other professional services.

© NODIA EDITIONS LLP

NODIA

MRP ₹520.00

available at
amazon

This book is available on amazon and flipkart only and not available in market.

NODIA EDITIONS LLP
125, Sector 6, Vidyadhar Nagar, Jaipur 302039
Phone :+91 9001005245
email : mail@nodia.in

विषय-सूची

अध्याय 1.	सिंधु घाटी सभ्यता	9
अध्याय 2.	वैदिक काल : पूर्व एवं उत्तर वैदिक काल	28
अध्याय 3.	छठी शताब्दी ईसा पूर्व के धार्मिक आंदोलन : बौद्ध धर्म, जैन धर्म एवं आजीवक संप्रदाय	49
अध्याय 4.	मौर्य एवं मौर्योत्तर राजवंश : कुषाण, सातवाहन	67
अध्याय 5.	गुप्त साम्राज्य एवं गुप्तोत्तर काल	86
अध्याय 6.	दक्षिण भारतीय राजवंश : चालुक्य, पल्लव एवं चोल	105
अध्याय 7.	प्राचीन भारत में कला, स्थापत्य एवं वैज्ञानिक विकास	123
अध्याय 8.	भारतीय ज्ञान एवं मूल्य प्रणाली	142
अध्याय 9.	दिल्ली सल्तनत	160
अध्याय 10.	विजयनगर साम्राज्य एवं क्षेत्रीय राज्य	180
अध्याय 11.	मुगल साम्राज्य : प्रशासन एवं नीतियाँ	199
अध्याय 12.	मराठा	218
अध्याय 13.	मध्यकालीन कला, स्थापत्य, साहित्य एवं संगीत	238
अध्याय 14.	भक्ति एवं सूफी आंदोलन	257
अध्याय 15.	ब्रिटिश साम्राज्यवाद, प्रारंभिक प्रतिरोध : मैसूर एवं मराठा	275
अध्याय 16.	आंग्ल-सिख युद्ध एवं व्यपगत का सिद्धांत	295
अध्याय 17.	1857 का विद्रोह	314
अध्याय 18.	ब्रिटिश राजनीतिक एवं प्रशासनिक नीतियाँ	333
अध्याय 19.	ब्रिटिश आर्थिक नीतियाँ एवं उनका प्रभाव	353
अध्याय 20.	सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन	372
अध्याय 21.	राष्ट्रवाद का उदय एवं प्रारंभिक कांग्रेस	391
अध्याय 22.	गांधी युग : जन आंदोलन एवं प्रमुख घटनाएँ	411
अध्याय 23.	क्रांतिकारी आंदोलन, क्षेत्रीय आंदोलन एवं विभाजन	430
अध्याय 24.	स्वातंत्र्योत्तर राज्यों का पुनर्गठन एवं नेहरुवादी संस्थान निर्माण	450
अध्याय 25.	नियोजन, आर्थिक सुधार एवं वर्ष 2000 तक का विकास	469
अध्याय 26.	स्वातंत्र्योत्तर भारत में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी	489

****

Click Here to Buy book on Amazon

राजस्थान लोक सेवा आयोग, अजमेर

राजस्थान राज्य एवं अधीनस्थ सेवाएँ संयुक्त प्रतियोगी (प्रारम्भिक) परीक्षा

–:परीक्षा योजना एवं पाठ्यक्रम:–

दिनांक 09.01.2026

NODIA

प्रारम्भिक परीक्षा में नीचे विनिर्दिष्ट विषय पर एक प्रश्न–पत्र होगा, जो वस्तुनिष्ठ प्रकार का होगा और अधिकतम 200 अंको का होगा।

परीक्षा का उद्देश्य केवल स्क्रीनिंग परीक्षण करना है। प्रश्नपत्र का स्तरमान स्नातक डिग्री स्तर का होगा। ऐसे अभ्यर्थियों द्वारा, जो मुख्य परीक्षा में प्रवेश के लिए अर्हित घोषित किये गये हो, प्रारम्भिक परीक्षा में प्राप्त अंको को उनका अंतिम योग्यता क्रम अवधारित करने के लिए संगणित नहीं किया जायेगा।

विषय	अधिकतम अंक	समय
सामान्य ज्ञान और सामान्य विज्ञान	200	तीन घण्टे

नोट:–

1. प्रश्न पत्र में बहुविकल्पीय प्रकार के 150 प्रश्न होंगे व सभी प्रश्न समान अंक के होंगे।
2. मूल्यांकन में ऋणात्मक अंकन किया जाएगा, जिसमें प्रत्येक गलत उत्तर के लिए 1/3 अंक काटे जाएंगे।

राजस्थान का इतिहास, कला, संस्कृति, साहित्य, परम्परा एवं विरासत

- राजस्थान के प्रागैतिहासिक स्थल – पुरापाषाण काल से लेकर ताम्रपाषाण काल तक और कांस्य युग, प्राचीन राजस्थान का समाज और संस्कृति
- राजस्थान इतिहास के स्रोतः पुरातात्विक, अभिलेखीय, साहित्यिक और मुद्राशास्त्रीय
- राजस्थान के मुख्य राजवंशों के प्रमुख शासकों की राजनीतिक एवं सांस्कृतिक उपलब्धियाँ, केंद्रीय सत्ता के साथ सहयोग एवं प्रतिरोध, मध्यकालीन राजस्थान में प्रशासनिक एवं राजस्व व्यवस्था
- 18वीं–19वीं शताब्दी में राजनीतिक और सामाजिक स्थिति, 20वीं शताब्दी में किसान और आदिवासी आंदोलन, प्रजा मंडल आंदोलन और जन जागृति, राजस्थान का एकीकरण
- राजस्थान की स्थापत्य परंपराएँ – मंदिर, किले, महल, स्मारक,मानव निर्मित जलाशय, चित्रकला और हस्तशिल्प की विभिन्न शैलियाँः प्रदर्शन कलाएँः लोक नृत्य और नाटक, संगीत (शास्त्रीय और लोक) और वाद्ययंत्र
- भाषा एवं साहित्यः राजस्थानी भाषा की बोलियाँ, राजस्थानी भाषा का साहित्य और लोक साहित्य, धार्मिक जीवनः राजस्थान में धार्मिक समुदाय, संत और संप्रदाय, राजस्थान के लोक देवता और धार्मिक प्रथाएँ
- राजस्थान में सामाजिक जीवनः मेले और त्यौहार; सामाजिक रीति–रिवाज और परंपराएँ, वेशभूषा और आभूषण
- राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व

भारत का इतिहास

प्राचीनकाल एवं मध्यकाल :–

- भारत के सांस्कृतिक आधार – सिंधु और वैदिक युगः छठी शताब्दी ईसा पूर्व के धार्मिक विचार – आजीवक, बौद्ध और जैन धर्म।
- मुख्य राजवंशों के प्रमुख शासकों की उपलब्धियाँः मौर्य, कुषाण, सातवाहन, गुप्त, चालुक्य, पल्लव और चोल।
- प्राचीन भारत में कला एवं स्थापत्य कला एवं वैज्ञानिक विकास
- भारतीय ज्ञान एवं मूल्य व्यवस्थाः वर्णाश्रम, पुरुषार्थ, संस्कार, दर्शन एवं शिक्षा व्यवस्था।
- सल्तनत कालः प्रमुख राजवंशों की उपलब्धियाँ, विजयनगर साम्राज्य की राजनीतिक और सांस्कृतिक उपलब्धियाँ।
- मुगल कालः प्रशासन एवं विभिन्न नीतियांः मराठा
- मध्यकाल में कला एवं वास्तुकला, साहित्य, चित्रकला और संगीत का विकास।
- धार्मिक आंदोलन और भक्ति एवं सूफी आंदोलन का योगदान।

आधुनिक काल (प्रारम्भिक 19वीं शताब्दी से 2000 तक) :–

- ब्रिटिश साम्राज्यवाद और प्रतिरोध – मराठा, मैसूर, सिख।
  1857 का विद्रोह।
  ब्रिटिश राजनीतिक, आर्थिक और प्रशासनिक नीतियाँ। राष्ट्रवाद का उदय, सामाजिक–धार्मिक आंदोलन।
- स्वतंत्रता संग्राम और भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन– विकास, चरण और प्रमुख घटनाएँ। क्रांतिकारी और विभिन्न क्षेत्रीय आंदोलन। स्वतंत्रता और विभाजन की ओर।
- स्वातंत्रोत्तर राष्ट्र निर्माण (2000 तक), राज्य पुनर्गठन, नेहरू युग में सांस्थानिक निर्माण, योजना एवं आर्थिक सुधार, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का विकास

Downloaded from www.pdf.tube

विश्व एवं भारत का भूगोल

विश्व का भूगोल :–

- भौतिक स्वरूपः– पर्वत, पठार, मैदान एवं मरूस्थल
- प्रमुख नदियाँ एवं झीलें
- प्राकृतिक वनस्पति
- कृषि : प्रकार, वितरण तथा प्रमुख फसलें
- प्रमुख औद्योगिक प्रदेश तथा प्रमुख उद्योग
- परिवहन तन्त्र
- पर्यावरणीय मुद्दे – मरूस्थलीकरण, वनोन्मूलन, जलवायु परिवर्तन एवं ग्लोबल वार्मिंग (वैश्विक तापन), ओजन अवक्षय

भारत का भूगोलः–

- भौतिक विभाग
- जलवायु
- प्रमुख नदियाँ एवं झीलें
- सिंचाई
- कृषि : प्रमुख फसलें
- खनिजः धात्विक और अधात्विक
- प्रमुख औद्योगिक प्रदेश तथा प्रमुख उद्योग

राजस्थान का भूगोल

NODIA

- राजस्थानः– अवस्थिति, विस्तार तथा भौतिक विभाग
- नदियाँ एवं झीलें
- जलवायु की विशेषताएं
- प्राकृतिक वनस्पति, जैव विविधता तथा संरक्षण
- मृदा
- कृषि
- पशुधन
- सिंचाई
- जनसंख्या– वृद्धि, घनत्व, साक्षरता, लिंगानुपात
- नगरीकरण
- जनजातियाँ
- खनिज– धात्विक एवं अधात्विक
- पर्यटन

भारतीय संविधान, राजनीतिक व्यवस्था और शासन

- संविधान का निर्माण, उद्देशिका, नागरिकता, मौलिक अधिकार, राज्य की नीति के निदेशक तत्व और मौलिक कर्तव्य
- संघीय सरकार– कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका
- संघ राज्य संबंध, आपातकालीन प्रावधान
- शहरी और ग्रामीण स्थानीय सरकार
- निर्वाचन आयोग, संघ लोक सेवा आयोग, राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग, राष्ट्रीय महिला आयोग, राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग और नीति आयोग
- लोक नीति, नागरिक चार्टर, सामाजिक अंकेक्षण और शिकायत निवारण प्रणाली
- लोकपाल, केंद्रीय सतर्कता आयोग, केंद्रीय सूचना आयोग

राजस्थान की राजनीतिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था

- राज्यपाल, मुख्यमंत्री एवं मंत्रिपरिषद, राजस्थान विधान सभा, राजस्थान उच्च न्यायालय, अधीनस्थ न्यायालय एवं अन्य न्यायिक निकाय, महाधिवक्ता
- मुख्य सचिव, राज्य सचिवालय, विभिन्न विभागों के निदेशालय, संभागीय आयुक्त, जिला कलेक्टर/ जिला मजिस्ट्रेट, पुलिस अधीक्षक, उप–खण्ड अधिकारी, तहसीलदार
- राजस्थान लोक सेवा आयोग, राजस्थान राज्य निर्वाचन आयोग, राजस्थान सूचना आयोग, राजस्थान राज्य महिला आयोग, राजस्व मंडल, लोकायुक्त
- राजस्थान में पंचायती राज एवं नगर पालिकाओं का प्रशासन

आर्थिक अवधारणाएँ एवं भारतीय अर्थव्यवस्था

- आर्थिक संवृद्धि और विकास। पर्यावरण क्षरण और सतत् विकास।
- विकास के मापक– पारंपरिक माप, मानव विकास सूचकांक और अन्य संबंधित सूचकांक।
- आर्थिक विकास में मौद्रिक और राजकोषीय नीति की भूमिका। भारत सरकार का नवीनतम बजट और संसाधन संग्रहण।
- राजकोषीय संघवाद– केन्द्र– राज्य वित्तीय संबंध और वित्त आयोग।
- कृषिगत विकास– संस्थागत और तकनीकी पहलू। भारतीय कृषि में सुधार–चुनौतियां और सरकारी पहल।
- औद्योगिक वृद्धि, स्वरूप, नीति और औद्योगिक सुधार– उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण।
- आर्थिक वृद्धि में सेवा क्षेत्र की भूमिका– चुनौतियां और अवसर। ऊर्जा, परिवहन और संचार।
- कौशल विकास और रोजगार संवर्द्धन– कार्यक्रम और नीतियां। सामाजिक न्याय और सशक्तिकरण

राजस्थान की अर्थव्यवस्था

- अर्थव्यवस्था का वृहत् परिदृश्य और राज्य बजट।
- कृषि, उद्योग और सेवा क्षेत्र की मौजूदा स्थिति, मुद्दे और सरकारी पहल।
- आधारभूत संरचना का विकासः ऊर्जा, परिवहन और संचार।
- ग्रामीण विकास, पंचायती राज और राज्य वित्त आयोग।
- मूलभूत सामाजिक सेवाएं– शिक्षा और स्वास्थ्य।
- राजस्थान सरकार की मुख्य कल्याणकारी योजनाएं।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

- दैनिक जीवन में विज्ञान के मूलभूत तत्व।
- कम्प्यूटर्स; सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी।
- रक्षा एवं अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी भारत के विशेष संदर्भ में।
- वंशागति एवं विभिन्नता; अनुवांशिक–अभियांत्रिकी; जैव–प्रौद्योगिकी एवं नैनो–प्रौद्योगिकी।
- मानव स्वास्थ्य देखभाल; आहार एवं पोषण; रोग एवं सार्वजनिक स्वास्थ्य कार्यक्रम।
- पर्यावरणीय तथा पारिस्थितिकीय परिवर्तन एवं उनका प्रभाव मूल्यांकन।
- जैव–विविधता; प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण एवं संतत् विकास।
- राजस्थान के विशेष संदर्भ में कृषि–विज्ञान, उद्यान–विज्ञान, वानिकी एवं पशुपालन।
- राजस्थान तथा भारत में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी से संबंधित प्रमुख सरकारी कार्यक्रम एवं नीतियां।
- अभिनव वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी प्रगति; विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में भारतीयों का योगदान; विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का स्वदेशीकरण।

Click Here to Buy book on Amazon

तार्किक विवेचन एवं मानसिक योग्यता
तार्किक दक्षता (निगमनात्मक, आगमनात्मक, अपवर्तनात्मक):– • कथन एवं मान्यताएं • कथन एवं तर्क • कथन एवं निष्कर्ष • कथन–कार्यवाही • विश्लेषणात्मक तर्कक्षमता / विवेचनात्मक तर्कक्षमता **मानसिक योग्यता :–** • संख्या / अक्षर अनुक्रम • कूटवाचन (कोडिंग–डीकोडिंग) • संबंधों से संबंधित समस्याएं • दिशा ज्ञान परीक्षण • तार्किक वेन आरेख • रैंकिंग एवं बैठक व्यवस्था • आकार और उनके उपविभाजन **आधारभूत संख्यात्मक दक्षता :–** • अनुपात–समानुपात तथा साझा, लाभ एवं हानि • प्रतिशत • साधारण एवं चक्रवृद्धि ब्याज • समतलीय चित्रों के परिमाप एवं क्षेत्र • आंकडों का विश्लेषण (सारणी, दण्ड–आरेख, रेखीय आलेख, पाई–चार्ट) • माध्य (समांतर, गुणोत्तर एवं हरात्मक), माध्यिका एवं बहुलक • क्रमचय एवं संचय • प्रायिकता (सरल समस्याएं)
समसामयिक घटनाएँ एवं मुद्दे (राजस्थान के विशेष संदर्भ में)
• महत्वपूर्ण व्यक्तित्व, स्थान और प्रासंगिक समकालीन मुद्दे • कल्याण और विकास से संबंधित नई योजनाएँ, कार्यक्रम और पहल • प्रमुख आर्थिक और राजनीतिक घटनाक्रम • खेल और क्रीड़ा से संबंधित महत्वपूर्ण घटनाएँ एवं उपलब्धियाँ • प्रमुख पुरस्कार, प्रकाशन और प्रतिष्ठित लेखक • राजस्थान सार्वजनिक परीक्षा (भर्ती में अनुचित साधनों की रोकथाम के अध्युपाय) अधिनियम, 2022

अजमेर

दिनांक 09.01.2026

मुख्य परीक्षा नियंत्रक

Downloaded from www.pdf.tube

अध्याय 01
सिंधु घाटी सभ्यता

NODIA

1. निम्नलिखित में से कौन सा स्थल सिंधु घाटी सभ्यता की सबसे उत्तरी सीमा का निर्धारण करता है?
(1) सुत्कागेनडोर
(2) मांडा
(3) आलमगीरपुर
(4) दैमाबाद
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

2. सूची I के पुरातत्वविदों को सूची II में उनके संबंधित हड़प्पा स्थलों के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर का चयन कीजिए:
सूची I: (पुरातत्वविद)
A. दयाराम साहनी
B. आर. डी. बनर्जी
C. अमलानंद घोष
D. एस. आर. राव
सूची II: (संबंधित हड़प्पा स्थल)
i. मोहनजोदड़ो
ii. लोथल
iii. हड़प्पा
iv. कालीबंगन
(1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(2) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(3) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(4) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

3. निम्नलिखित में से कौन सा कथन सिंधु घाटी सभ्यता की जल निकासी प्रणाली का सटीक वर्णन करता है?
(1) नालियां पूरी तरह से खुली थीं और कच्ची मिट्टी की ईंटों से बनी थीं।
(2) मुख्य मार्ग की नालियां विशेष रूप से लकड़ी और बांस से ढकी हुई थीं।
(3) प्रत्येक घर का अपना आंगन और स्नानागार होता था जो सड़क की नालियों से जुड़ा था।
(4) लोथल जैसी छोटी बस्तियों में जल निकासी व्यवस्था पूरी तरह से अनुपस्थित थी।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

4. सिंधु घाटी सभ्यता के कालीबंगन स्थल के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह राजस्थान में घग्गर नदी के तट पर स्थित है।
II. दुर्ग की प्राचीर के बाहर जुते हुए खेत के प्रमाण मिले हैं।
III. यहाँ लोथल के समान ही एक गोदीवाड़ा (डॉकयार्ड) की खुदाई की गई थी।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा संयोजन सही है?
(1) केवल II और III
(2) केवल I और III
(3) I, II और III
(4) केवल I और II
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

5. नर्तकी की प्रसिद्ध कांस्य मूर्ति निम्नलिखित में से किस हड़प्पा स्थल पर खोजी गई थी?
(1) हड़प्पा
(2) धोलावीरा
(3) मोहनजोदड़ो
(4) चन्हुदड़ो
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

6. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रुप में अंकित किया गया है। सही विकल्प का चयन कीजिए:
अभिकथन (A): सिंधु घाटी सभ्यता को सामान्यतः एक कांस्य युगीन संस्कृति माना जाता है।
कारण (R): हड़प्पा के लोग कृषि और युद्ध के लिए लोहे के उपकरणों का व्यापक रूप से उपयोग करते थे।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

7. निम्नलिखित में से कौन सी संरचना हड़प्पा के पुरातात्विक स्थल पर नहीं पाई गई थी?
(1) श्रमिकों के आवास
(2) अनाज पीसने के लिए ईंटों के वृत्ताकार चबूतरे की पंक्तियाँ
(3) छह-छह कक्षों की दो पंक्तियों वाला अन्नागार
(4) विशाल स्नानागार
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

8. सूची I की सामग्री को सूची II में उसके प्राथमिक स्रोत क्षेत्र के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर का चयन कीजिए:
सूची I: (पुरावस्तु/सामग्री)

A. लाजवर्त (लैपिस लाजुली)
B. तांबा
C. सेलखड़ी (स्टीएटाइट)
D. सोना

सूची II: (प्राथमिक स्रोत क्षेत्र)
i. राजस्थान का खेतड़ी क्षेत्र
ii. अफगानिस्तान में शोर्टुघई
iii. कर्नाटक में कोलार
iv. दक्षिण राजस्थान और उत्तरी गुजरात

(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

9. निम्नलिखित हड़प्पा स्थलों को उनके प्रथम व्यापक उत्खनन के कालानुक्रमिक क्रम में, प्राचीनतम से नवीनतम तक व्यवस्थित कीजिए:
I. धोलावीरा
II. हड़प्पा
III. लोथल
IV. मोहनजोदड़ो

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही क्रम का चयन कीजिए:
(1) II, IV, I, III
(2) IV, II, III, I
(3) II, IV, III, I
(4) IV, II, I, III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

10. धोलावीरा के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
कथन I: इस नगर को तीन मुख्य भागों में विभाजित किया गया था, जबकि अधिकांश हड़प्पा नगर दो भागों में विभाजित थे।
कथन II: यहाँ से एक वृहद् शिलालेख प्राप्त हुआ है जिसमें हड़प्पा लिपि के दस बड़े आकार के चिह्न अंकित हैं।
(1) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(2) कथन I गलत है और कथन II सही है।
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

11. सिंधु घाटी सभ्यता के विस्तृत भौगोलिक क्षेत्रों में समान मानकीकृत बाट और माप की उपस्थिति मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किसकी ओर संकेत करती है?
(1) सभी शहरी केंद्रों में बोली जाने वाली पूर्णतः एकसमान भाषा
(2) असमान वस्तु विनिमय और व्यापार प्रथाओं के विरुद्ध एक धार्मिक प्रतिबंध
(3) स्थानीय विनिर्माण या कुटीर उद्योगों की पूर्ण अनुपस्थिति
(4) एक केंद्रीकृत प्रशासन और सख्त वाणिज्यिक नियम
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

12. सिंधु घाटी सभ्यता के व्यापारिक संबंधों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. मेसोपोटामिया के लेखों में सिंधु क्षेत्र को 'मेलुहा' कहा गया है।
II. ओमान और बहरीन के प्राचीन स्थलों से हड़प्पाई मुहरें प्राप्त हुई हैं।
III. दिलमुन फारस की खाड़ी में स्थित एक प्रमुख मध्यवर्ती व्यापारिक केंद्र था।
IV. व्यापार विशेष रूप से केवल थल मार्गों के माध्यम से किया जाता था।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा संयोजन सही है?
(1) I, II और IV
(2) I, II और III
(3) II, III और IV
(4) I, III और IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

13. एम. आर. साहनी और रॉबर्ट राइक्स जैसे विद्वानों द्वारा मोहनजोदड़ो के पतन के लिए प्राथमिक भौतिक कारण के रूप में निम्नलिखित में से किसे उत्तरदायी माना गया है?
(1) अत्यधिक ईंटें पकाने के कारण होने वाली वनों की कटाई जिससे वर्षा का स्वरूप बदल गया।
(2) यमुना नदी का अचानक पूर्व की ओर विस्थापन जिससे नगर जलविहीन हो गया।
(3) विवर्तनिक हलचल (टेक्टोनिक उत्थान) जिसके कारण सिंधु नदी का मार्ग अवरुद्ध हुआ और दीर्घकालिक बाढ़ आई।
(4) आक्रमणकारी समूहों द्वारा लगाई गई भीषण अग्नि जिससे अन्नागार नष्ट हो गए।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

14. परिपक्व सिंधु घाटी सभ्यता का सबसे पूर्वी ज्ञात स्थल, आलमगीरपुर, किस नदी के कछार (बेसिन) में स्थित है?
(1) घग्गर
(2) सतलुज
(3) चिनाब
(4) हिंडन
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

15. सूची I के हड़प्पा स्थल को सूची II में इसकी प्रमुख खोज के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर का चयन कीजिए:
सूची I: (हड़प्पा स्थल)
A. चन्हुदड़ो
B. सुरकोटदा
C. बनावली
D. राखीगढ़ी

सूची II: (प्रमुख खोज)
i. हल की मिट्टी की प्रतिकृति
ii. मनके बनाने के उद्योग के प्रमाण
iii. भारत में सबसे बड़ी हड़प्पा बस्ती
iv. घोड़े की अस्थियां

Click Here to Buy book on Amazon

(1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(2) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

16. हड़प्पा कालीन नगर नियोजन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. सड़कें सामान्यतः एक-दूसरे को समकोण पर काटती थीं।
II. मकान मुख्य रूप से मानकीकृत अनुपात वाली पकी हुई ईंटों से निर्मित थे।
III. द्वार और खिड़कियां सामान्यतः बगल की गलियों के बजाय मुख्य सड़कों पर खुलती थीं।
IV. नगर प्रायः एक ऊंचे दुर्ग और एक निचले नगर में विभाजित था।
V. जल निकासी प्रणाली में स्वच्छता हेतु नियमित अंतराल पर मेनहोल बनाए गए थे।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा कथन गलत है?
(1) केवल I और V
(2) केवल III
(3) केवल II और IV
(4) केवल III और V
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

17. उस संरचना की पहचान कीजिए जो मोहनजोदड़ो में पाई गई प्रमुख स्थापत्य विशेषताओं से संबंधित नहीं है:
(1) विशाल स्नानागार
(2) पाषाण निर्मित सूचना पट्ट
(3) महाविद्यालय भवन
(4) स्तंभों वाला सभा भवन
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

18. सिंधु लिपि मुख्य रूप से एक ऐसी शैली में लिखी गई थी जहाँ पहली पंक्ति दाएं से बाएं और दूसरी पंक्ति बाएं से दाएं लिखी जाती थी। इस लेखन शैली को क्या कहा जाता है?
(1) बूस्ट्रोफेडन
(2) क्यूनीफ़ॉर्म (कीलाक्षर)
(3) हीरोग्लिफ़िक (चित्रलिपि)
(4) खरोष्ठी
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

19. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। सही विकल्प का चयन कीजिए:
अभिकथन (A): हड़प्पा के लोग वृक्षों और पशुओं सहित विभिन्न रूपों में प्रकृति की पूजा करते थे।
कारण (R): पशुओं से घिरे योग मुद्रा में बैठे देवता को दर्शाने वाली मुहरों की व्याख्या भगवान शिव (पशुपति) के प्रारंभिक रूप के रूप में की गई है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

20. लोथल स्थल के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही सुमेलित है?
(1) अवस्थिति - सिंधु नदी का तट
(2) शवाधान प्रथा - युगल शवाधान का पूर्ण अभाव
(3) प्रमुख शिल्प - विशेष रूप से लोहे के उपकरणों का उत्पादन
(4) खोज - ईंटों से निर्मित कृत्रिम गोदीवाड़ा (डॉकयार्ड)
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

21. सूची I में पतन के सिद्धांत को सूची II में उसके प्रतिपादक विद्वान के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर का चयन कीजिए:
सूची I: (पतन का सिद्धांत)
A. आर्य आक्रमण
B. पारिस्थितिक असंतुलन
C. विवर्तनिक विक्षोभ
D. सिंधु नदी का मार्ग परिवर्तन
सूची II: (प्रतिपादक विद्वान)
i. एच. टी. लैम्ब्रिक
ii. मोंटिमर व्हीलर
iii. फेयरसर्विस
iv. रॉबर्ट राइक्स
(1) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(2) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(3) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

NODIA

22. वह सबसे महत्वपूर्ण कारक क्या था जिसने सिंधु घाटी सभ्यता के व्यापक आंतरिक और बाह्य व्यापार तंत्र को सुगम बनाया?
(1) व्यापारी काफिलों की रक्षा के लिए एक सुदृढ़ स्थायी सेना।
(2) कृषि अधिशेष और अत्यधिक विकसित विशिष्ट शिल्प उत्पादन।
(3) मेसोपोटामिया के साथ साझा की गई धातु मुद्रा प्रणाली।
(4) लंबी दूरी की तीर्थयात्राओं की आवश्यकता वाला धार्मिक आदेश।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

23. भौगोलिक रूप से उत्तर से दक्षिण की ओर हड़प्पा स्थलों के सही क्रम की पहचान कीजिए:
(1) मांडा, हड़प्पा, कालीबंगन, लोथल
(2) मांडा, कालीबंगन, हड़प्पा, लोथल
(3) हड़प्पा, मांडा, लोथल, कालीबंगन
(4) हड़प्पा, कालीबंगन, मांडा, लोथल

(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

24. कालीबंगन में मिले साक्ष्यों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. अग्नि वेदिकाओं के साक्ष्य अग्नि पूजा के प्रचलन का संकेत देते हैं।
II. यहाँ प्राक्-हड़प्पा और परिपक्व हड़प्पा दोनों चरणों के साक्ष्य मिले हैं।
III. यहाँ मोहनजोदड़ो के समान एक विशाल अन्नागार खोजा गया था।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा संयोजन सही है?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

25. हड़प्पा कालीन मृदभांडों (बर्तनों) के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) हड़प्पा के लोग मृदभांड निर्माण के लिए मुख्य रूप से कुम्हार के चाक का उपयोग करते थे।
(2) विशिष्ट मृदभांड लाल रंग के थे जिन पर काले रंग की आकृतियां चित्रित थीं।
(3) बहुरंगी मृदभांड अत्यंत सामान्य थे और लगभग प्रत्येक घर में पाए जाते थे।
(4) सामान्य रूपांकनों में प्रतिच्छेदी वृत्त, पीपल के पत्ते और मछली के शल्क शामिल थे।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

26. हड़प्पा नगर नियोजन के संदर्भ में, ग्रिड प्रणाली मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किसे संदर्भित करती है?
(1) खंड (ब्लॉक) बनाने के लिए एक-दूसरे को समकोण पर काटने वाली सड़कों और गलियों का विन्यास।
(2) व्यवसाय के आधार पर विशिष्ट पदानुक्रमित वर्गों में समाज का कठोर विभाजन।
(3) निचले नगर को नदी से जोड़ने वाले भूमिगत जल चैनलों का जाल।
(4) नगर के विभिन्न क्षेत्रों में अन्नागारों का समान वितरण।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

27. सूची I की फसल या कृषि साक्ष्य को सूची II में उसके संबंधित हड़प्पा स्थल के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर का चयन कीजिए:
सूची I: (फसल/कृषि साक्ष्य)
A. धान की भूसी
B. मिट्टी का हल (टेराकोटा हल)
C. जुते हुए खेत की सतह
D. नहरों के अवशेष
सूची II: (संबंधित हड़प्पा स्थल)
i. कालीबंगन
ii. शोर्टुघई
iii. बनावली
iv. लोथल
(1) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(2) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(3) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(4) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

28. सिंधु घाटी में अलंकृत शिरोवस्त्र पहने हुए महिलाओं की प्रचुर मृण्मूर्तियों की खोज किस धार्मिक प्रथा की ओर संकेत करती है?
(1) सभी नगरों में केवल एक पुरुष आकाश देवता की एकेश्वरवादी पूजा।
(2) उर्वरता से जुड़ी मातृदेवी की व्यापक पूजा।
(3) शासक वर्गों के बीच कन्या शिशु हत्या की प्रथा।
(4) बिना किसी धार्मिक प्रतिमा वाला विशुद्ध रूप से धर्मनिरपेक्ष समाज।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

29. हड़प्पा कालीन व्यापार तंत्र के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. व्यापार मुख्य रूप से वस्तु विनिमय प्रणाली पर आधारित था।
II. बाट प्रायः चर्ट से निर्मित थे और निम्न मानों में द्वि-आधारी प्रणाली का पालन करते थे।
III. धातु मुद्रा और सिक्के विनिमय के प्राथमिक माध्यम थे।
IV. प्रमाणीकरण के लिए सामान की गांठों पर मिट्टी की मुहरों का उपयोग किया जाता था।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा संयोजन सही है?
(1) II, III और IV
(2) I, II और III
(3) I, II और IV
(4) I, III और IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

30. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रुप में अंकित किया गया है। सही विकल्प का चयन कीजिए:
अभिकथन (A): राखीगढ़ी को वर्तमान में सिंधु घाटी सभ्यता का सबसे बड़ा ज्ञात नगर माना जाता है।
कारण (R): हरियाणा में हाल ही में हुए उत्खनन से ज्ञात हुआ है कि इसका विस्तार मोहनजोदड़ो से अधिक है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

Downloaded from www.pdf.tube

31. 1924 में जब सिंधु घाटी सभ्यता की खोज की औपचारिक घोषणा की गई थी, तब भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) के महानिदेशक कौन थे?
(1) जॉन मार्शल
(2) अलेक्जेंडर कनिंघम
(3) मोंटिमर व्हीलर
(4) आर. ई. एम. व्हीलर
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

32. निम्नलिखित में से कौन सा स्थल सिंधु घाटी सभ्यता की सबसे पश्चिमी सीमा का प्रतिनिधित्व करता है?
(1) सुरकोटदा
(2) सुत्कागेनडोर
(3) बालाकोट
(4) सुक्कुर
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

33. सिंधु घाटी के लोगों की धार्मिक प्रथाओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. वे वृक्षों, विशेष रूप से पीपल की पूजा करते थे।
II. उन्होंने मातृदेवी के लिए विशाल पाषाण मंदिरों का निर्माण किया।
III. बड़ी संख्या में तावीज मिले हैं, जो जादू-टोना या बुरी आत्माओं में विश्वास के सूचक हैं।
IV. मृतकों को सामान्यतः उत्तर-दक्षिण दिशा में दफनाया जाता था।
V. कूबड़ वाले बैल जैसे पशु देवताओं की पूजा प्रचलित थी।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा संयोजन सही है?
(1) I, II, III और V
(2) I, III, IV और V
(3) II, III, IV और V
(4) I, II, IV और V
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

34. सूची I की हड़प्पा कालीन विशेषता को सूची II में उसके मुख्य गुण के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर का चयन कीजिए:
सूची I: (हड़प्पा कालीन विशेषता)
A. लिपि
B. मानक बाट
C. मुहरें
D. मनके
सूची II: (मुख्य गुण)
i. सेलखड़ी (स्टीएटाइट)
ii. चर्ट (Chert)
iii. कार्नेलियन (Carnelian)
iv. चित्रात्मक (Pictographic)
(1) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(4) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

35. हड़प्पा स्थल के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
कथन I: हड़प्पा के अन्नागार में ईंटों के ऊंचे चबूतरे पर बने छह-छह अन्नागारों की दो पंक्तियाँ सम्मिलित हैं।
कथन II: हड़प्पा सिंध प्रांत में सिंधु नदी के तट पर स्थित था।
(1) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(2) कथन I गलत है और कथन II सही है।
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

NODIA

36. निम्नलिखित विशेषताओं में से कौन सी एक धोलावीरा के लिए अद्वितीय है?
(1) सभी आवासीय भवनों के लिए मानकीकृत पकी हुई ईंटों का उपयोग।
(2) पशु और पौधों के रूपांकनों को दर्शाने वाली अनेक मुहरें।
(3) निचले नगर के आवासों में स्पष्ट वर्ग पृथक्करण।
(4) पाषाण स्थापत्य और परिष्कृत जल संग्रहण प्रणाली (जलाशय) का उपयोग।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

37. सिंधु घाटी सभ्यता के पतन के लिए प्रस्तावित निम्नलिखित कारणों पर विचार कीजिए:
I. पारिस्थितिक ह्रास और जलवायु परिवर्तन।
II. आर्य आक्रमण का सिद्धांत।
III. नदियों के मार्ग में परिवर्तन और जल विज्ञान संबंधी बदलाव।
सिद्धांतों की लोकप्रियता के तार्किक कालानुक्रमिक क्रम (प्राचीनतम से आधुनिक) का चयन कीजिए:
(1) II, I, III
(2) II, III, I
(3) I, II, III
(4) III, I, II
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

38. निम्नलिखित में से कौन सा कथन हड़प्पा वासियों की कृषि पद्धतियों का सही वर्णन करता है?
(1) गन्ना सबसे अधिक उगाई जाने वाली नकदी फसल थी।
(2) वे विश्व में कपास का उत्पादन करने वाले प्रथम लोग थे।
(3) गहरी जुताई के लिए लोहे के हल का सार्वभौमिक उपयोग किया जाता था।
(4) कृषि पूर्णतः वर्षा पर निर्भर थी और सिंचाई का कोई प्रमाण नहीं मिला है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

39. हड़प्पा कालीन मुहरों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. अधिकांश मुहरें सेलखड़ी (स्टीएटाइट) से निर्मित थीं।

II. इनका उपयोग मुख्य रूप से दैनिक लेनदेन के लिए मुद्रा के रूप में किया जाता था।
III. मुहरों पर सर्वाधिक चित्रित पशु एकश्रृंगी बैल (यूनिकॉर्न) है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा संयोजन सही है?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) I, II और III
(4) केवल I और III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

40. खंभात की खाड़ी के समीप लोथल की रणनीतिक स्थिति का इस बस्ती के लिए क्या मुख्य परिणाम रहा?
(1) एक समुद्री पत्तन और मनके बनाने तथा निर्यात के केंद्र के रूप में विकास।
(2) मेसोपोटामिया के सांस्कृतिक प्रभाव से पूर्ण पृथक्करण।
(3) पर्वतीय हिमस्खलन के कारण बार-बार होने वाला विनाश।
(4) संपूर्ण सभ्यता की एकमात्र धार्मिक राजधानी के रूप में प्रतिष्ठा।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

41. सूची I के हड़प्पा स्थल को सूची II में उसके वर्तमान राज्य या प्रांत के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर का चयन कीजिए:
सूची I: (हड़प्पा स्थल)
A. दैमाबाद
B. कालीबंगन
C. हड़प्पा
D. मोहनजोदड़ो
सूची II: (वर्तमान राज्य/प्रांत)
i. राजस्थान
ii. महाराष्ट्र
iii. सिंध
iv. पंजाब (पाकिस्तान)
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

42. निम्नलिखित में से कौन सी मोहनजोदड़ो के विशाल स्नानागार की विशेषता नहीं थी?
(1) यह जनसाधारण के उपयोग हेतु निचले नगर में स्थित था।
(2) इसमें दो विपरीत दिशाओं से सीढ़ियाँ नीचे की ओर जाती थीं।
(3) फर्श को जिप्सम गारे और बिटुमेन (डामर) की परत से जलसह बनाया गया था।
(4) इसके तीन ओर कक्ष थे, जिनमें से एक में एक बड़ा कुआँ था।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

43. कालीबंगन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसका उत्खनन बी. बी. लाल और बी. के. थापर द्वारा किया गया था।
II. यहाँ लगभग 2600 ईसा पूर्व के भूकंप के साक्ष्य मिले हैं।
III. एक घर के फर्श में अलंकृत ईंटों का उपयोग किया गया था।
IV. यहाँ पत्थर से निर्मित एक अत्यंत परिष्कृत जल निकासी व्यवस्था थी।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा कथन गलत है?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) I, III और IV
(4) केवल IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

44. हड़प्पा वासियों ने तांबा मुख्य रूप से किस क्षेत्र से प्राप्त किया था?
(1) दक्षिण भारत का कोलार क्षेत्र।
(2) राजस्थान का खेतड़ी क्षेत्र और ओमान।
(3) अफगानिस्तान का शोर्टुघई।
(4) वर्तमान ईरान का मगन क्षेत्र।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

45. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। सही विकल्प का चयन कीजिए:
अभिकथन (A): हड़प्पा के नगरों में निचले नगर की सड़कें सावधानीपूर्वक ग्रिड पैटर्न पर बनाई गई थीं।
कारण (R): हड़प्पा सभ्यता में केंद्रीकृत नगरपालिका प्रशासन या नियोजन प्राधिकरण का पूर्ण अभाव था।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

46. प्रसिद्ध पुरोहित-राजा (प्रिस्ट-किंग) की सेलखड़ी से निर्मित मूर्ति, जिसमें एक दाढ़ी वाले व्यक्ति को तिपतिया पैटर्न वाली शॉल पहने दर्शाया गया है, कहाँ मिली थी?
(1) धोलावीरा
(2) लोथल
(3) कालीबंगन
(4) मोहनजोदड़ो
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

47. सिंधु लिपि को पढ़ने में वर्तमान असमर्थता के कारण हड़प्पा समाज की हमारी समझ पूर्णतः किस पर आधारित है?

Click Here to Buy book on Amazon

(1) पुरातात्विक भौतिक संस्कृति और स्थानिक विश्लेषण।
(2) हड़प्पा नियमों का मेसोपोटामियाई अनुवाद।
(3) हड़प्पा अनुष्ठानों के वैदिक साहित्य में संदर्भ।
(4) आधुनिक मरुस्थलीय खानाबदोशों की मौखिक परंपराएँ।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

48. निम्नलिखित पुरातत्वविदों और उनके संबंधित उत्खनन स्थलों पर विचार कीजिए:
I. दयाराम साहनी - हड़प्पा
II. आर.डी. बनर्जी - मोहनजोदड़ो
III. एन.जी. मजूमदार - चन्हुदड़ो
IV. एस.आर. राव - लोथल
V. जे.पी. जोशी - धोलावीरा
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा संयोजन सही है?
(1) केवल I, II और IV
(2) I, II, III, IV और V
(3) केवल I, III, IV और V
(4) केवल I, II, III और V
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

49. सूची I की प्रमुख हड़प्पा पुरावस्तु को सूची II में उसके संबंधित स्थल के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर का चयन कीजिए:
सूची I: (पुरावस्तु/विशेषता)
A. पशुपति मुहर
B. नर्तकी की मूर्ति
C. अग्नि वेदिकाएं
D. गोदीवाड़ा (डॉकयार्ड)
सूची II: (संबंधित स्थल)
i. लोथल
ii. कालीबंगन
iii. मोहनजोदड़ो (सेलखड़ी)
iv. मोहनजोदड़ो (कांस्य)
(1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(2) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(3) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(4) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

50. वर्तमान पुरातात्विक सहमति के अनुसार, परिपक्व हड़प्पा चरण के पतन में किस कारक का सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान था?
(1) जलवायु परिवर्तन जिसके कारण घग्गर-हाकरा तंत्र सूख गया।
(2) लोहे के हथियारों से लैस समूहों द्वारा किया गया अचानक विदेशी आक्रमण।
(3) व्यापार मार्गों के माध्यम से फैली ब्यूबोनिक प्लेग जैसी महामारी।
(4) अभिजात वर्ग के विरुद्ध श्रमिक वर्ग की हिंसक क्रांति।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

51. निम्नलिखित में से कौन सा क्रम सिंधु घाटी सभ्यता के चरणों का सही प्रतिनिधित्व करता है?
(1) प्रारंभिक हड़प्पा, परिपक्व हड़प्पा, उत्तर हड़प्पा
(2) परिपक्व हड़प्पा, प्रारंभिक हड़प्पा, उत्तर हड़प्पा
(3) उत्तर हड़प्पा, परिपक्व हड़प्पा, प्रारंभिक हड़प्पा
(4) प्रारंभिक हड़प्पा, उत्तर हड़प्पा, परिपक्व हड़प्पा
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

52. धोलावीरा के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) यह गुजरात के कच्छ के रण में खादिर द्वीप पर स्थित है।
(2) नगर को तीन पृथक खंडों में विभाजित किया गया था।
(3) यह विशाल पाषाण निर्मित जलाशयों के साथ जल संरक्षण की परिष्कृत प्रणाली प्रदर्शित करता है।
(4) इसके चारों ओर किसी भी प्रकार की रक्षात्मक प्राचीर का अभाव था।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

NODIA

53. हड़प्पा वासियों के आर्थिक जीवन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. मनके बनाना एक विशिष्ट शिल्प था, विशेष रुप से चन्हुदड़ो में।
II. विभिन्न स्थलों पर पाए गए कताई चक्र (स्पिंडल व्हर्ल) कपास और ऊन की कताई का संकेत देते हैं।
III. अर्थव्यवस्था चांदी के सिक्कों के व्यापक उपयोग पर आधारित थी।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा संयोजन सही है?
(1) केवल II और III
(2) केवल I और III
(3) केवल I और II
(4) I, II और III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

54. भारत में सबसे बड़े हड़प्पा स्थल के रूप में मान्यता प्राप्त राखीगढ़ी किस राज्य में स्थित है?
(1) पंजाब
(2) हरियाणा
(3) राजस्थान
(4) गुजरात
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

55. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
कथन I: हड़प्पा वासियों ने मेसोपोटामिया के समान सार्वजनिक पूजा हेतु विशाल मंदिरों का निर्माण किया।
कथन II: कालीबंगन और लोथल में अग्नि वेदिकाओं के साक्ष्य मिले हैं, जो अनुष्ठानिक प्रथाओं का सुझाव देते हैं।
(1) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(2) कथन I गलत है और कथन II सही है।
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।

(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

56. सिंधु घाटी सभ्यता की निर्माण सामग्री के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. हड़प्पा और मोहनजोदड़ो जैसे नगरों में पकी हुई ईंटों का समान रूप से उपयोग किया गया था।
II. धूप में सुखाए गई ईंटों का उपयोग प्रायः प्राचीर की भराई के लिए किया जाता था।
III. सिंध के मैदानों में स्थित नगरों में आवासों के लिए पत्थर का बड़े पैमाने पर उपयोग किया जाता था।
IV. विशाल स्नानागार जैसी संरचनाओं को जलसह बनाने के लिए जिप्सम गारे का उपयोग किया गया था।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा संयोजन सही है?
(1) I, II और IV
(2) I, II और III
(3) II, III और IV
(4) I, III और IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

57. निम्नलिखित में से कौन सी सिंधु लिपि की विशेषता नहीं है?
(1) यह अपनी प्रकृति में मुख्य रूप से चित्रात्मक और शब्द-शब्दांश (लोगो-सिलेबिक) है।
(2) इसे मुहरों, तांबे की पट्टियों और मृदभांडों पर अंकित किया गया था।
(3) यह 26 अक्षरों वाली एक वर्णमाला संरचना प्रदर्शित करती है।
(4) इसे अभी तक निर्णायक रूप से पढ़ा नहीं जा सका है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

58. हड़प्पा स्थल और उसकी संबंधित नदी का निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही सुमेलित है?
(1) कालीबंगन - घग्गर
(2) हड़प्पा - सिंधु
(3) मोहनजोदड़ो - रावी
(4) लोथल - सतलुज
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

59. पॉलिश किए गए पत्थर के स्तंभों के अवशेष, जो उन्नत पाषाण-नक्काशी तकनीक को दर्शाते हैं, किस स्थल की अनूठी विशेषता हैं?
(1) हड़प्पा
(2) कालीबंगन
(3) राखीगढ़ी
(4) धोलावीरा
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

60. हड़प्पा कालीन आयात के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. सोना दक्षिण भारत (कर्नाटक) से प्राप्त किया जाता था।
II. तांबा राजस्थान की खेतड़ी खानों से मंगाया जाता था।
III. लाजवर्त (लैपिस लाजुली) अफगानिस्तान के बदख्शां क्षेत्र से आयात किया जाता था।
IV. जेड (यशब) मध्य एशिया से लाया जाता था।
V. सेलखड़ी (स्टीएटाइट) दक्षिण राजस्थान और उत्तरी गुजरात से प्राप्त की जाती थी।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा संयोजन सही है?
(1) केवल I, II, III और V
(2) I, II, III, IV और V
(3) केवल II, III, IV और V
(4) केवल I, II, IV और V
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

61. कालीबंगन में जुते हुए खेत की खोज किस कृषि पद्धति का सुझाव देती है?
(1) लोहे के हल का उपयोग।
(2) केवल कृत्रिम नहर सिंचाई पर निर्भरता।
(3) दो अलग-अलग फसलों की एक साथ खेती।
(4) झूम कृषि का अभ्यास।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

62. मोहनजोदड़ो के विशाल अन्नागार के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सत्य है?
(1) यह निचले नगर में स्थित है।
(2) यह दुर्ग में खोजी गई सबसे छोटी सार्वजनिक इमारत थी।
(3) यह पूर्णतः मिट्टी के ब्लॉकों से निर्मित था।
(4) यह मोहनजोदड़ो स्थल पर पाई गई सबसे बड़ी इमारत है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

63. सिंधु घाटी सभ्यता के पतन के संदर्भ में, 'उत्तर हड़प्पा चरण' का क्या तात्पर्य है?
(1) ग्रामीण ताम्रपाषाणिक संस्कृतियों द्वारा चिह्नित एक उत्तर-शहरी चरण।
(2) तीव्र तकनीकी प्रगति और शहरी विस्तार की अवधि।
(3) किसी बड़े विस्फोट के बाद का समय।
(4) वह युग जब सभ्यता का मेसोपोटामिया में विलय हो गया।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

NODIA

64. निम्नलिखित में से कौन सी पुरातात्विक खोज लोथल से संबंधित नहीं है?
(1) ईंटों से निर्मित गोदीवाड़ा (डॉकयार्ड)
(2) पुरोहित-राजा की सेलखड़ी की मूर्ति
(3) मनके बनाने के कारखाने के प्रमाण
(4) अग्नि वेदिकाएं
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

65. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
कथन I: सिंधु घाटी सभ्यता का विस्तार वर्तमान पाकिस्तान, भारत और अफगानिस्तान के कुछ हिस्सों में था।
कथन II: सभ्यता का मुख्य भौगोलिक क्षेत्र पूर्णतः केवल

आधुनिक भारत की सीमाओं तक सीमित था।

(1) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(2) कथन I गलत है और कथन II सही है।
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

66. कब्रिस्तान-H और R-37 कब्रिस्तान किस पुरातात्विक स्थल से संबद्ध हैं?

(1) हड़प्पा
(2) लोथल
(3) कालीबंगन
(4) मोहनजोदड़ो
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

67. हड़प्पा कालीन घरों में 'फयॉन्स' से बने अनेक कताई चक्रों की खोज क्या इंगित करती है?

(1) मनोरंजन हेतु जुए का प्रचलन।
(2) सोने के लिए मानकीकृत बाट के रूप में उपयोग।
(3) कताई और बुनाई आम घरेलू गतिविधियाँ थीं।
(4) ये मातृदेवी को अर्पित धार्मिक प्रतीक थे।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

68. मोहनजोदड़ो की प्रसिद्ध पशुपति मुहर पर निम्नलिखित में से किस पशु को चित्रित नहीं किया गया है?

(1) हाथी
(2) बाघ
(3) गैंडा
(4) गाय
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

69. हड़प्पा के कारीगर 'फयॉन्स' (faience) नामक सामग्री का उपयोग मुख्य रूप से किसके लिए करते थे?

(1) कृषि उपकरणों का निर्माण।
(2) सार्वजनिक इमारतों की नींव बनाना।
(3) मनके, चूड़ियाँ और लघु पात्र जैसी सूक्ष्म वस्तुएं बनाना।
(4) प्रशासनिक अभिलेख लिखना।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

70. निम्नलिखित में से कौन सिंधु घाटी सभ्यता की खोज के क्रम का सटीक वर्णन करता है?

(1) मोहनजोदड़ो की खोज हड़प्पा से सदियों पूर्व हुई थी।
(2) हड़प्पा 1921 में उत्खनित होने वाला प्रथम स्थल था, जिसके आधार पर इसे हड़प्पा सभ्यता नाम मिला।
(3) धोलावीरा वह मुख्य स्थल था जिसने 1920 के दशक में सभ्यता को सिद्ध किया।
(4) इसकी खोज द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान हवाई फोटोग्राफी से हुई थी।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

71. मनसर और मनहर धाराओं के बीच धोलावीरा की भौगोलिक स्थिति ने किस बुनियादी ढांचे के विकास को आवश्यक बनाया?

(1) व्यापारिक जहाजों का विशाल बेड़ा।
(2) भवनों के भीतर हीटिंग हेतु टेराकोटा पाइप।
(3) माल परिवहन हेतु ऊंचे रोपवे।
(4) बांधों और विशाल पाषाण जलाशयों की एक जटिल प्रणाली।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

72. हड़प्पा कालीन बाट और माप के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?

(1) निम्न मानों ने कड़ाई से दशमलव माप प्रणाली का पालन किया।
(2) बाट सामान्यतः चर्ट नामक पत्थर से बनाए जाते थे।
(3) वे प्रायः घनाकार होते थे और उन पर कोई निशान नहीं होते थे।
(4) उच्च मानों ने एक मानकीकृत दशमलव प्रणाली का पालन किया।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

73. कालीबंगन नाम का शाब्दिक अर्थ क्या है?

(1) मृतकों का टीला
(2) राख का ढेर
(3) काले रंग की चूड़ियाँ
(4) स्वर्ण बंदरगाह
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

74. कौन सी स्थापत्य विशेषता सिंधु घाटी सभ्यता को मिस्र और मेसोपोटामिया से अलग करती है?

(1) पकी ईंटों और भूमिगत जल निकासी का व्यापक उपयोग।
(2) विशाल शाही समाधियों और पिरामिडों का निर्माण।
(3) मंदिरों के लिए धूप में सुखाई गई ईंटों का उपयोग।
(4) नगरों के चारों ओर प्राचीर की पूर्ण अनुपस्थिति।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

75. राखीगढ़ी कब्रिस्तान के कंकालों के हालिया DNA विश्लेषण ने किस निष्कर्ष का सुझाव दिया है?

(1) हड़प्पा के लोग प्रारंभिक यूरोपीय समूहों के समान थे।
(2) जनसंख्या में केवल मेसोपोटामिया के व्यापारी थे।
(3) सभ्यता एक जैविक हथियार से नष्ट हुई थी।
(4) हड़प्पा वासियों और आधुनिक दक्षिण एशियाई लोगों के बीच आनुवंशिक निरंतरता है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

76. हड़प्पा कालीन शिल्प और उनके केंद्रों के संबंध में सही सुमेलित युग्म की पहचान कीजिए:

(1) मनके बनाना - केवल कालीबंगन
(2) शंख की वस्तुएं - नागेश्वर और बालाकोट
(3) स्वर्ण शोधन - सुत्कागेनडोर

Downloaded from www.pdf.tube

(4) टेराकोटा खिलौने - शोर्टुघई
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

77. सिंधु घाटी सभ्यता के पतन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
कथन I: मोहनजोदड़ो के पतन का कारण अंतिम स्तरों में पाया गया सामूहिक नरसंहार है।
कथन II: आधुनिक विद्वान सभ्यता के पतन के एकमात्र कारण के रूप में 'आर्य आक्रमण सिद्धांत' को स्वीकार नहीं करते हैं।
(1) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(2) कथन I गलत है और कथन II सही है।
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

78. सिंधु घाटी सभ्यता की मुहरों के संबंध में कौन सा कथन सत्य नहीं है?
(1) वे मुख्य रूप से वर्गाकार या आयताकार हैं।
(2) उनमें प्रायः एक पशु आकृति के साथ संक्षिप्त लेख होता है।
(3) कुछ मुहरों के पीछे डोरी पिरोने के लिए एक घुंडी (बॉस) होती है।
(4) इनका उपयोग पुजारियों द्वारा केवल पूजा की वस्तुओं के रूप में किया जाता था।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

79. शोर्टुघई, जो लाजवर्त (लैपिस लाजुली) के व्यापार हेतु प्रसिद्ध था, वर्तमान में कहाँ स्थित है?
(1) अफगानिस्तान
(2) पाकिस्तान
(3) ईरान
(4) तुर्कमेनिस्तान
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

80. लोथल में गोदीवाड़ा (डॉकयार्ड) और फारस की खाड़ी की मुहरों की प्राप्ति क्या संकेत देती है?
(1) यह एक पृथक कृषि प्रधान गाँव था।
(2) यह पश्चिम एशिया के साथ समुद्री व्यापार का एक प्रमुख केंद्र था।
(3) यह हड़प्पा राज्य का केंद्रीय सैन्य मुख्यालय था।
(4) यह केवल शाही अंत्येष्टि हेतु बनी एक बस्ती थी।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

NODIA

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) मांडा
सिंधु घाटी सभ्यता के विस्तार के दौरान मांडा को इसकी सबसे उत्तरी सीमा माना जाता है। यह महत्वपूर्ण पुरातात्विक स्थल जम्मू और कश्मीर में चिनाब नदी के दाहिने तट पर स्थित है। यहाँ से प्राप्त अवशेषों में मिट्टी के बर्तन, हड्डी के तीर और हड़प्पा कालीन विशिष्ट मुहरें प्रमुख हैं। यह स्थल हिमालय की तलहटी में सभ्यता के प्रसार और सीमावर्ती नियंत्रण तंत्र को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

2. (1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
हड़प्पा कालीन प्रमुख स्थलों की खोज विभिन्न समर्पित पुरातत्वविदों द्वारा की गई थी। दयाराम साहनी ने वर्ष 1921 में हड़प्पा की खोज की, जबकि आर.डी. बनर्जी ने 1922 में मोहनजोदड़ो का उत्खनन किया। अमलानंद घोष को राजस्थान के कालीबंगन की पहचान का श्रेय दिया जाता है और एस.आर. राव ने गुजरात में लोथल के महत्वपूर्ण बंदरगाह स्थल की खुदाई की थी। यह सुमेल हड़प्पा संस्कृति के वैज्ञानिक अध्ययन की आधारशिला है।

3. (3) प्रत्येक घर का अपना आंगन और स्नानागार होता था जो सड़क की नालियों से जुड़ा था।
सिंधु घाटी सभ्यता अपनी उत्कृष्ट और सुनियोजित जल निकासी प्रणाली के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ के घरों में निजी स्नानागार और आंगन होते थे, जिनका जल छोटी नालियों के माध्यम से सड़क की बड़ी और ढकी हुई नालियों में प्रवाहित होता था। यह व्यवस्था तत्कालीन स्वच्छता और नागरिक नियोजन के उच्च स्तर को प्रदर्शित करती है। नालियों के निर्माण में पकी हुई ईंटों का प्रभावी उपयोग अत्यंत वैज्ञानिक और उन्नत था।

4. (4) केवल I और II
कालीबंगन राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले में घग्गर नदी के प्राचीन मार्ग पर स्थित एक प्रमुख स्थल है। यहाँ के विशिष्ट साक्ष्यों में दुर्ग की प्राचीर के बाहर मिला एक जुता हुआ खेत शामिल है, जो कृषि की उन्नत तकनीकों को दर्शाता है। लोथल के विपरीत, यहाँ किसी गोदीवाड़ा के प्रमाण नहीं मिले हैं। यहाँ प्राप्त अग्नि वेदिकाएं अनुष्ठानिक प्रथाओं का संकेत देती हैं, जो इस स्थल की विशिष्टता को बढ़ाती हैं।

5. (3) मोहनजोदड़ो
मोहनजोदड़ो से प्राप्त नर्तकी की कांस्य मूर्ति हड़प्पा कालीन धातु कला का एक सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है। यह लगभग 10 सेंटीमीटर लंबी मूर्ति लुप्त-मोम विधि का उपयोग करके बनाई गई थी। इसमें एक महिला को आभूषणों से सज्जित दिखाया गया है, जिसका बायां हाथ पूरी तरह चूड़ियों से भरा हुआ है। यह कलाकृति तत्कालीन समाज की कलात्मक समझ, धातु विज्ञान में निपुणता और सांस्कृतिक गतिविधियों के प्रति उनके विशेष लगाव को प्रमाणित करती है।

6. (3) A सही है लेकिन R गलत है।
सिंधु घाटी सभ्यता को कांस्य युग का हिस्सा माना जाता है क्योंकि यहाँ के लोगों ने तांबे और रांगे को मिलाकर कांस्य बनाने की कला विकसित कर ली थी। हालांकि, हड़प्पा वासियों को लोहे का ज्ञान नहीं था। भारत में लोहे का प्रचलन बहुत बाद में, लगभग 1000 ईसा पूर्व के आसपास हुआ। इसलिए, कृषि या युद्ध में लोहे के उपकरणों के उपयोग का दावा ऐतिहासिक रूप से पूर्णतः गलत और निराधार है।

7. (4) विशाल स्नानागार
हड़प्पा के पुरातात्विक स्थल पर अन्नागार, श्रमिकों के आवास और ईंटों के वृत्ताकार चबूतरे जैसी महत्वपूर्ण संरचनाएं प्राप्त हुई हैं। यहाँ छह-छह कक्षों की दो पंक्तियों वाला एक विशाल अन्नागार मिला है जो अन्न भंडारण की उन्नत व्यवस्था को दर्शाता है। इसके विपरीत, विशाल स्नानागार की अद्वितीय संरचना केवल मोहनजोदड़ो के दुर्ग क्षेत्र में पाई गई थी। यह संरचना धार्मिक अनुष्ठान और सार्वजनिक स्नान के लिए निर्मित एक विशिष्ट विशेषता थी।

8. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
हड़प्पा सभ्यता के लोग विभिन्न क्षेत्रों से कच्चा माल प्राप्त करते थे। लाजवर्त के लिए उन्होंने अफगानिस्तान के शोर्टुघई में एक व्यापारिक चौकी स्थापित की थी। तांबा राजस्थान के खेतड़ी क्षेत्र से मंगाया जाता था, जबकि सेलखड़ी का मुख्य स्रोत दक्षिण राजस्थान और उत्तरी गुजरात था। कीमती स्वर्ण की आपूर्ति मुख्य रूप से दक्षिण भारत के कर्नाटक में स्थित कोलार की खानों से की जाती थी। यह व्यापार तंत्र उनकी आर्थिक समृद्धि का आधार था।

9. (3) II, IV, III, I
सिंधु घाटी सभ्यता के स्थलों का उत्खनन अलग-अलग कालखंडों में हुआ। सर्वप्रथम 1921 में दयाराम साहनी ने हड़प्पा का उत्खनन किया, जिसके पश्चात 1922 में मोहनजोदड़ो की खोज हुई। लोथल का व्यापक उत्खनन 1950 के दशक में एस.आर. राव द्वारा किया गया था। अंत में, धोलावीरा का विस्तृत उत्खनन 1990 के दशक में जे.पी. जोशी और आर.एस. बिष्ट द्वारा किया गया। यह कालानुक्रमिक क्रम भारतीय पुरातत्व के क्रमिक विकास को प्रदर्शित करता है।

10. (3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
गुजरात में स्थित धोलावीरा हड़प्पा सभ्यता का एक अत्यंत विशिष्ट नगर है। अधिकांश नगरों के दो भागों के विपरीत, यह तीन प्रमुख भागों में विभाजित था: दुर्ग, मध्यम नगर और निचला नगर। यहाँ से एक विशाल पत्थर का शिलालेख भी

Click Here to Buy book on Amazon

प्राप्त हुआ है जिस पर हड़प्पा लिपि के दस बड़े चिह्न अंकित हैं, जिसे प्राचीनतम सूचना पट्ट माना जाता है। ये दोनों विशेषताएं धोलावीरा को अन्य समकालीन स्थलों से पूर्णतः अलग और अद्वितीय बनाती हैं।

11. (4) एक केंद्रीकृत प्रशासन और सख्त वाणिज्यिक नियम
सिंधु घाटी सभ्यता के विशाल भौगोलिक विस्तार में बाट और माप की एकसमान मानकीकृत प्रणाली का मिलना एक महत्वपूर्ण विशेषता है। यह समानता स्पष्ट रूप से एक शक्तिशाली और केंद्रीकृत प्रशासनिक व्यवस्था की उपस्थिति की ओर संकेत करती है। ऐसे नियमों ने व्यापारिक लेनदेन में पारदर्शिता और सुदूर क्षेत्रों के बीच आर्थिक एकीकरण सुनिश्चित करने में सहायता की। यह शासन व्यवस्था के उच्च स्तर, सामाजिक अनुशासन और प्रभावी नागरिक नियंत्रण का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

12. (2) I, II और III
हड़प्पा वासियों के मेसोपोटामिया के साथ गहरे व्यापारिक संबंध थे, जहाँ उन्हें 'मेलुहा' कहा जाता था। फारस की खाड़ी में स्थित बहरीन और ओमान जैसे क्षेत्रों से हड़प्पाई मुहरों का मिलना इन समुद्री व्यापार मार्गों की पुष्टि करता है। दिलमुन उस समय एक प्रमुख व्यापारिक मध्यस्थ के रूप में कार्य करता था। हालांकि, यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि व्यापार केवल थल मार्गों तक सीमित था, क्योंकि गोदीवाड़ा के साक्ष्य उन्नत समुद्री व्यापार को सिद्ध करते हैं।

13. (3) विवर्तनिक हलचल (टेक्टोनिक उत्थान) जिसके कारण सिंधु नदी का मार्ग अवरुद्ध हुआ और दीर्घकालिक बाढ़ आई।
मोहनजोदड़ो के पतन के कारणों पर विद्वानों के विभिन्न मत हैं। प्रमुख भू-वैज्ञानिकों का मानना है कि भीषण विवर्तनिक हलचल के कारण सिंधु नदी का निचला मार्ग अवरुद्ध हो गया था। इसके परिणामस्वरूप नदी का जल स्तर बढ़ गया और नगर में बार-बार विनाशकारी बाढ़ आई। इसी प्राकृतिक आपदा ने धीरे-धीरे नगर के बुनियादी ढांचे को नष्ट कर दिया और अंततः निवासियों को इस ऐतिहासिक स्थल को सदैव के लिए छोड़ने पर विवश कर दिया।

14. (4) हिंडन
आलमगीरपुर सिंधु घाटी सभ्यता का सबसे पूर्वी ज्ञात पुरातात्विक स्थल है, जो उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले में स्थित है। यह स्थल यमुना की सहायक नदी, हिंडन के तट पर स्थित है। यहाँ से प्राप्त मृदभांड और अन्य पुरावस्तुएं हड़प्पा संस्कृति के गंगा-यमुना दोआब क्षेत्र में विस्तार को प्रमाणित करती हैं। यह स्थल सभ्यता के अंतिम चरणों में शहरी जीवन के ग्रामीण क्षेत्रों की ओर स्थानांतरण के अत्यंत महत्वपूर्ण और स्पष्ट साक्ष्य प्रदान करता है।

15. (1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
विभिन्न हड़प्पा स्थलों से प्राप्त वस्तुएं उनकी विशिष्ट गतिविधियों को दर्शाती हैं। चन्हुदड़ो मनके बनाने के कारखानों के लिए प्रसिद्ध था। सुरकोटदा में घोड़े की अस्थियों के संभावित साक्ष्य मिले हैं, जो एक अपवाद स्वरूप है। बनावली से मिट्टी का बना हुआ हल प्राप्त हुआ है, जो कृषि उपकरणों के स्वरूप को स्पष्ट करता है। हरियाणा में स्थित राखीगढ़ी को वर्तमान शोधों के अनुसार भारत में सिंधु घाटी सभ्यता की सबसे बड़ी बस्ती के रूप में मान्यता प्राप्त है।

16. (2) केवल III
हड़प्पा कालीन नगर नियोजन अपनी गोपनीयता और स्वच्छता के लिए विशिष्ट था। यहाँ के घरों के मुख्य द्वार और खिड़कियां कभी भी मुख्य सड़कों की ओर नहीं खुलते थे, बल्कि वे सदैव बगल की छोटी गलियों की ओर खुलते थे। शेष सभी कथन सही हैं, जिनमें सड़कों का ग्रिड पद्धति पर होना, पकी ईंटों का उपयोग और नगर का दुर्ग तथा निचले नगर में विभाजन शामिल है। यह वास्तुकला उनके उच्च नागरिक अनुशासन को दर्शाती है।

NODIA

17. (2) पाषाण निर्मित सूचना पट्ट
मोहनजोदड़ो के उत्खनन से विशाल स्नानागार, महाविद्यालय भवन और स्तंभों वाला सभा भवन प्राप्त हुआ है, जो इसके प्रशासनिक महत्व को दर्शाते हैं। हालांकि, पत्थरों पर तराशा गया प्रसिद्ध सूचना पट्ट मोहनजोदड़ो की विशेषता नहीं है। यह अद्वितीय वस्तु गुजरात के धोलावीरा स्थल से मिली थी, जहाँ हड़प्पा लिपि के दस बड़े अक्षरों को एक श्वेत पत्थर के तख्ते पर अंकित किया गया था। यह साक्ष्य तत्कालीन संचार व्यवस्था और लिपि के उपयोग को दर्शाता है।

18. (1) बूस्ट्रोफेडन
सिंधु घाटी सभ्यता की लेखन शैली को 'बूस्ट्रोफेडन' कहा जाता है। इस विशिष्ट पद्धति में प्रथम पंक्ति को दाईं से बाईं ओर लिखा जाता था और अगली पंक्ति को बाईं से दाईं ओर शुरु किया जाता था। यह शैली आधुनिक लिपि लेखन से भिन्न थी और इसे मुख्य रूप से मुहरों तथा मिट्टी के बर्तनों पर देखा गया है। यद्यपि यह लिपि अभी तक पढ़ी नहीं जा सकी है, परंतु इसकी चित्रात्मक प्रकृति उन्नत कलात्मक संचार को दर्शाती है।

19. (2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
हड़प्पा समाज में प्रकृति पूजा के व्यापक साक्ष्य मिलते हैं, जिसमें पीपल के वृक्ष और कुबड़ वाले बैल जैसे पशुओं की उपासना की जाती थी। इसी संदर्भ में, पशुपति महादेव के रूप में पहचाने जाने वाले देवता की मुहर भी महत्वपूर्ण है, जो योग मुद्रा में बैठे हैं। यद्यपि दोनों कथन धार्मिक जीवन के विभिन्न पहलुओं का वर्णन करते हैं, परंतु पशुपति की पूजा अकेले संपूर्ण विविध प्रकृति पूजा की प्रकृति या उसके कारणों की पूर्ण व्याख्या नहीं करती है।

20. (4) खोज - ईंटों से निर्मित कृत्रिम गोदीवाड़ा (डॉकयार्ड)
लोथल गुजरात में साबरमती नदी की सहायक भोगवा नदी के तट पर स्थित एक प्रमुख बंदरगाह नगर था। यहाँ की सबसे महत्वपूर्ण खोज पकी ईंटों से बना एक विशाल घेरा है, जिसे विश्व का प्राचीनतम कृत्रिम गोदीवाड़ा माना जाता है। यह संरचना सिद्ध करती है कि हड़प्पा वासी उन्नत समुद्री अभियानों और विदेशी व्यापार में सक्रिय रूप से संलग्न थे। यहाँ से प्राप्त

विदेशी मुहरें इस नगर की आर्थिक समृद्धि का ठोस प्रमाण प्रस्तुत करती हैं।

21. (3) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
हड़प्पा सभ्यता के अंत के संबंध में विद्वानों ने भिन्न-भिन्न सिद्धांत दिए हैं। मोंटिमर व्हीलर ने आर्यों के आक्रमण को उत्तरदायी माना, जबकि फेयरसर्विस ने इसे पारिस्थितिक असंतुलन का परिणाम बताया। रॉबर्ट राइक्स के अनुसार विवर्तनिक विक्षोभ के कारण आई बाढ़ पतन का मुख्य कारण थी। दूसरी ओर, एच. टी. लैम्ब्रिक ने सिंधु नदी के मार्ग में हुए अचानक परिवर्तन को इस महान सभ्यता के विनाश और लोगों के पलायन के लिए उत्तरदायी कारक माना है।

22. (2) कृषि अधिशेष और अत्यधिक विकसित विशिष्ट शिल्प उत्पादन।
सिंधु घाटी सभ्यता की आर्थिक शक्ति का आधार ग्रामीण क्षेत्रों से प्राप्त होने वाला कृषि अधिशेष था, जिसने विशाल शहरी जनसंख्या का भरण-पोषण किया। इसके साथ ही, मनके बनाना, शंख का कार्य और धातु शिल्प जैसे क्षेत्रों में उनकी विशेषज्ञता ने व्यापार के लिए उच्च मूल्य वाली वस्तुएं उपलब्ध कराईं। इन्हीं दो कारकों ने मिलकर एक जटिल व्यापार तंत्र को जन्म दिया, जिसने मेसोपोटामिया और मध्य एशिया जैसी सभ्यताओं के साथ निरंतर विनिमय को सुलभ बनाया।

23. (1) मांडा, हड़प्पा, कालीबंगन, लोथल
हड़प्पा सभ्यता के प्रमुख स्थलों का उत्तर से दक्षिण की ओर भौगोलिक क्रम भारतीय उपमहाद्वीप के मानचित्र पर स्पष्ट है। सबसे उत्तर में जम्मू स्थित मांडा आता है, उसके पश्चात पंजाब (पाकिस्तान) में हड़प्पा का स्थान है। इसके दक्षिण में राजस्थान स्थित कालीबंगन आता है और अंत में गुजरात के तटीय क्षेत्र में लोथल स्थित है। यह क्रम सभ्यता के हिमालय की तलहटी से लेकर अरब सागर के तट तक फैले विशाल भौगोलिक विस्तार को प्रदर्शित करता है।

24. (1) केवल I और II
कालीबंगन से प्राप्त अवशेषों में अग्नि वेदिकाएं प्रमुख हैं, जो अनुष्ठानिक पूजा और धार्मिक बलि प्रथाओं की ओर संकेत करती हैं। यहाँ खुदाई में प्राक्-हड़प्पा और परिपक्व हड़प्पा दोनों स्तरों के प्रमाण मिले हैं, जो इस स्थल के निरंतर विकास को दर्शाते हैं। यद्यपि विशाल अन्नागार यहाँ की विशेषता नहीं थी, क्योंकि ऐसे बड़े संरचनात्मक भंडार केवल हड़प्पा और मोहनजोदड़ो के नगरों में ही पाए गए थे। कालीबंगन अपनी विशिष्ट कृषि पहचान के लिए प्रसिद्ध रहा है।

25. (3) बहुरंगी मृदभांड अत्यंत सामान्य थे और लगभग प्रत्येक घर में पाए जाते थे।
हड़प्पा कालीन मृदभांड मुख्य रूप से कुम्हार के चाक पर बनाए जाते थे। इनमें सर्वाधिक प्रचलित लाल रंग के बर्तन थे, जिन पर काले रंग से पीपल के पत्तों और मछली के शल्कों जैसे आकर्षक चित्र बनाए जाते थे। यद्यपि बहुरंगी मृदभांड भी प्राप्त हुए हैं, परंतु वे अत्यंत दुर्लभ थे और सामान्यतः प्रत्येक घर में उपलब्ध नहीं थे। अधिकांश बर्तन उपयोगितावादी और सरल डिज़ाइन वाले होते थे जो दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते थे।

26. (1) खंड (ब्लॉक) बनाने के लिए एक-दूसरे को समकोण पर काटने वाली सड़कों और गलियों का विन्यास।
सिंधु घाटी सभ्यता का नगर नियोजन 'ग्रिड प्रणाली' पर आधारित था, जो उस समय की सभ्यताओं में सर्वाधिक उन्नत थी। इस प्रणाली के अंतर्गत मुख्य सड़कें और गलियां एक-दूसरे को 90 डिग्री के समकोण पर काटती थीं, जिससे पूरा नगर आयताकार खंडों में विभाजित हो जाता था। यह व्यवस्था सुचारु यातायात, प्रभावी जल निकासी और व्यवस्थित आवास निर्माण सुनिश्चित करती थी। यह हड़प्पा वासियों की उत्कृष्ट इंजीनियरिंग और दूरदर्शी शहरी नियोजन का अनुपम उदाहरण है।

27. (4) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
हड़प्पा वासियों की उन्नत कृषि पद्धतियों के साक्ष्य विभिन्न स्थलों से प्राप्त हुए हैं। लोथल से धान की भूसी मिली है, जो चावल की खेती को प्रमाणित करती है। बनावली में मिट्टी का बना हल प्राप्त हुआ है, जबकि कालीबंगन में जुते हुए खेत के साक्ष्य मिले हैं। अफगानिस्तान के शोर्टुघई में नहरों के अवशेष पाए गए हैं, जो शुष्क क्षेत्रों में सिंचाई की व्यवस्था को दर्शाते हैं। ये खोजें सिद्ध करती हैं कि सभ्यता का आधार विविधतापूर्ण कृषि तंत्र था।

28. (2) उर्वरता से जुड़ी मातृदेवी की व्यापक पूजा।
हड़प्पा स्थलों से बड़ी संख्या में महिलाओं की मिट्टी की मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं, जो प्रायः जटिल आभूषणों से सजी होती हैं। इतिहासकारों का मानना है कि ये मूर्तियाँ 'मातृदेवी' का प्रतिनिधित्व करती हैं, जिन्हें उर्वरता और सृष्टि की जननी के रूप में पूजा जाता था। एक विशिष्ट मुहर में स्त्री के गर्भ से पौधा निकलता हुआ भी दिखाया गया है, जो प्रकृति के प्रति उनके धार्मिक सम्मान को पुख्ता करता है। यह साक्ष्य तत्कालीन समाज में स्त्री शक्ति की महत्ता को दर्शाता है।

29. (3) I, II और IV
हड़प्पा कालीन व्यापार मुख्य रूप से वस्तु विनिमय पर आधारित था, जहाँ धातु के सिक्कों का कोई उपयोग नहीं होता था। बाटों के लिए चर्ट पत्थर का प्रयोग किया जाता था, जिसमें द्वि-आधारी प्रणाली का पालन होता था। सामान की शुद्धता और सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए उन पर गीली मिट्टी लगाकर मुहरों की छाप अंकित की जाती थी। यह व्यवस्था लंबी दूरी के व्यापार में भरोसे और पहचान को स्थापित करने के लिए एक परिष्कृत प्रशासनिक और वाणिज्यिक ढांचा प्रदान करती थी।

30. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
हरियाणा के हिसार जिले में स्थित राखीगढ़ी को अब सिंधु घाटी सभ्यता का सबसे विशाल नगर माना जाता है। हालिया उत्खनन और मानचित्रण से यह सिद्ध हुआ है कि इसका कुल क्षेत्रफल मोहनजोदड़ो और हड़प्पा से भी अधिक है। राखीगढ़ी में अनेक विशाल टीले मिले हैं, जो एक अत्यंत सघन और दीर्घकालिक शहरी जनसंख्या की उपस्थिति को दर्शाते हैं। इस खोज ने

Downloaded from www.pdf.tube

हड़प्पा सभ्यता के भौगोलिक केंद्र और विस्तार संबंधी पुरानी धारणाओं को पूर्णतः परिवर्तित कर दिया है।

31. (1) जॉन मार्शल
सर जॉन मार्शल 1902 से 1928 तक भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के महानिदेशक थे। उनके नेतृत्व में ही 1920 के दशक में हड़प्पा और मोहनजोदड़ो का ऐतिहासिक उत्खनन कार्य संपन्न हुआ था। 1924 में उन्होंने ही आधिकारिक रूप से विश्व के समक्ष सिंधु घाटी में एक प्राचीन सभ्यता की खोज की घोषणा की थी। उनके निर्देशन ने भारत के प्राचीन इतिहास को मेसोपोटामिया तथा मिस्र जैसी महान समकालीन सभ्यताओं के समकक्ष लाकर खड़ा कर दिया, जिससे भारतीय गौरव की पुनर्स्थापना हुई।

32. (2) सुत्कागेनडोर
सुत्कागेनडोर सिंधु घाटी सभ्यता का सबसे पश्चिमी पुरातात्विक स्थल है, जो वर्तमान पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रांत में मकरान तट पर स्थित है। यह दस्त नदी के किनारे स्थित था और माना जाता है कि यह मेसोपोटामिया के साथ होने वाले व्यापार के लिए एक महत्वपूर्ण तटीय चौकी के रूप में कार्य करता था। इसकी रणनीतिक स्थिति और वहाँ से प्राप्त हड़प्पाई अवशेष यह दर्शाते हैं कि सभ्यता का व्यापारिक जाल अरब सागर के सुदूर पश्चिमी छोर तक विस्तृत था।

33. (2) I, III, IV और V
हड़प्पा वासियों का धार्मिक जीवन प्रकृति और जीववाद पर आधारित था। वे पीपल जैसे वृक्षों और कूबड़ वाले बैल जैसे शक्तिशाली पशुओं की श्रद्धापूर्वक पूजा करते थे। खुदाई में बड़ी संख्या में तावीज मिले हैं, जो सुरक्षा हेतु किए जाने वाले अनुष्ठानों का संकेत देते हैं। मृतकों का अंतिम संस्कार सामान्यतः उन्हें उत्तर-दक्षिण दिशा में लिटाकर किया जाता था। यद्यपि वे धार्मिक थे, परंतु किसी भी स्थल से विशाल मंदिरों या भव्य पुजारियों के भवनों के ठोस प्रमाण नहीं मिले हैं।

34. (1) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
हड़प्पा सभ्यता की विभिन्न विशेषताएं उनकी उन्नत कला और वाणिज्यिक दक्षता को दर्शाती हैं। यहाँ की लिपि चित्रात्मक थी जिसे अभी तक पढ़ा नहीं जा सका है। बाटों के निर्माण के लिए कठोर चर्ट पत्थर का उपयोग किया जाता था। प्रसिद्ध मुहरें मुख्य रूप से नरम सेलखड़ी पत्थर से बनाई जाती थीं, जिन पर बारीकी से नक्काशी की जाती थी। मनके बनाने के लिए सुंदर कार्नेलियन जैसे पत्थरों का उपयोग किया जाता था, जो उनकी उच्च कलात्मक रुचि का परिचायक है।

35. (1) कथन I सही है और कथन II गलत है।
हड़प्पा में पाए गए अन्नागार की संरचना अत्यंत भव्य थी, जिसमें अनाज सुरक्षित रखने के लिए छह-छह की दो पंक्तियों में ईंटों के ऊंचे चबूतरे बनाए गए थे। यह उनकी खाद्य सुरक्षा की कुशल प्रणाली को प्रदर्शित करता है। यद्यपि हड़प्पा की भौगोलिक स्थिति के संदर्भ में यह जानना आवश्यक है कि यह सिंध में नहीं, बल्कि पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में रावी नदी के बाएं तट पर स्थित है। मोहनजोदड़ो वह स्थल था जो सिंध प्रांत में स्थित था।

36. (4) पाषाण स्थापत्य और परिष्कृत जल संग्रहण प्रणाली (जलाशय) का उपयोग।
धोलावीरा अपनी अद्वितीय स्थापत्य कला और जल प्रबंधन कौशल के लिए प्रसिद्ध है। अन्य हड़प्पा नगरों के विपरीत, जहाँ मुख्य रूप से पकी ईंटों का उपयोग होता था, यहाँ भारी मात्रा में तराशे गए पत्थरों का प्रयोग किया गया है। यहाँ बांधों और 16 से अधिक विशाल जलाशयों की एक जटिल श्रृंखला खोजी गई है, जो वर्षा जल को संचित करने के लिए बनाई गई थी। यह शुष्क कच्छ क्षेत्र में जीवन को बनाए रखने के लिए हड़प्पा वासियों की तकनीकी बुद्धिमत्ता का अनुपम उदाहरण है।

37. (2) II, III, I
सिंधु घाटी सभ्यता के पतन के सिद्धांतों के विकास का एक निश्चित कालक्रम है। प्रारंभिक दौर में मोंटिमर व्हीलर जैसे विद्वानों ने 'आर्य आक्रमण' के सिद्धांत को प्रतिपादित किया था। इसके पश्चात के दशकों में भू-वैज्ञानिकों ने 'नदियों के मार्ग परिवर्तन' और विवर्तनिक हलचलों को मुख्य कारण बताया। सर्वाधिक आधुनिक शोधों में जलवायु परिवर्तन और पारिस्थितिक ह्रास को सर्वमान्य कारण माना जाता है। यह परिवर्तन पुरातात्विक विज्ञान की प्रगति और साक्ष्यों के अधिक सटीक विश्लेषण के साथ विकसित हुआ है।

NODIA

38. (2) वे विश्व में कपास का उत्पादन करने वाले प्रथम लोग थे।
हड़प्पा सभ्यता की कृषि के संबंध में महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि वे विश्व में कपास उगाने वाले प्रथम लोग थे, जिसे यूनानियों ने 'सिंडन' कहा था। वे गेहूं, जौ और मटर जैसी विविध फसलें भी उगाते थे। जुताई के लिए लकड़ी के हल का उपयोग किया जाता था और सिंचाई के लिए नदियों तथा जलाशयों का सहारा लिया जाता था। गन्ने के उत्पादन या लोहे के हल के उपयोग का कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं मिला है, जो इस प्राचीन समाज की सीमाओं को स्पष्ट करता है।

39. (4) केवल I और III
हड़प्पा की मुहरें मुख्य रूप से सेलखड़ी से निर्मित वर्गाकार वस्तुएं थीं। इन मुहरों पर सर्वाधिक बार 'एकश्रृंगी बैल' का चित्र अंकित मिलता है, जो संभवतः किसी विशेष कबीले या आधिकारिक पहचान का प्रतीक था। इन मुहरों का प्राथमिक कार्य व्यापारिक वस्तुओं की गांठों को चिह्नित करना और स्वामित्व सुनिश्चित करना था, न कि उन्हें सिक्के के रूप में उपयोग करना। अधिकांश मुहरों पर एक तरफ संक्षिप्त लेख और दूसरी तरफ धागा पिरोने के लिए घुंडी बनी होती थी।

40. (1) एक समुद्री पत्तन और मनके बनाने तथा निर्यात के केंद्र के रूप में विकास।
लोथल खंभात की खाड़ी के निकट एक रणनीतिक व्यापारिक केंद्र के रूप में उभरा। इसकी तटीय स्थिति ने इसे मेसोपोटामिया और मिस्र के साथ होने वाले विदेशी समुद्री व्यापार का मुख्य द्वार बना दिया। यहाँ से प्राप्त मनके बनाने के कारखाने और गोदीवाड़ा के साक्ष्य यह सिद्ध करते हैं कि यह नगर विनिर्माण और निर्यात का एक अत्यंत सक्रिय केंद्र था। इस भौगोलिक स्थिति ने लोथल को हड़प्पा साम्राज्य की आर्थिक व्यवस्था में एक अत्यंत महत्वपूर्ण और समृद्ध महानगर का दर्जा दिया था।

41. (3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
हड़प्पा सभ्यता के विभिन्न महत्वपूर्ण स्थल आधुनिक राजनीतिक सीमाओं में विस्तृत हैं। दैमाबाद महाराष्ट्र में स्थित इस सभ्यता की सबसे दक्षिणी सीमा है। कालीबंगन राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले में घग्गर नदी के तट पर स्थित है। हड़प्पा का मुख्य स्थल पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में रावी नदी के किनारे है, जबकि मोहनजोदड़ो पाकिस्तान के सिंध प्रांत में सिंधु नदी के तट पर स्थित है। यह वितरण इस प्राचीन नगरीय संस्कृति के व्यापक क्षेत्रीय विस्तार और वर्तमान भौगोलिक स्थिति को स्पष्ट करता है।

42. (1) यह जनसाधारण के उपयोग हेतु निचले नगर में स्थित था।
मोहनजोदड़ो का विशाल स्नानागार एक अत्यंत विशिष्ट संरचना थी, जो नगर के 'दुर्ग' क्षेत्र में स्थित थी, न कि निचले नगर में। इसका उपयोग संभवतः विशेष अनुष्ठानिक स्नान के लिए किया जाता था। इसमें उत्तर और दक्षिण की ओर से ईंटों की सीढ़ियाँ निर्मित थीं। जल निकासी और रिसाव रोकने के लिए फर्श पर बिटुमेन की परत लगाई गई थी। इसके समीप ही एक बड़ा कुआँ और स्नान कक्षों की श्रृंखला थी, जो तत्कालीन इंजीनियरिंग और स्वच्छता के उच्च मानदंडों को सिद्ध करती है।

43. (4) केवल IV
कालीबंगन से प्राप्त पुरातात्विक साक्ष्य अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, जिनमें प्राचीनतम भूकंप के प्रमाण और अलंकृत ईंटों का उपयोग शामिल है। हालांकि, यहाँ की जल निकासी व्यवस्था मोहनजोदड़ो या धोलावीरा जैसी पत्थर निर्मित या अत्यंत परिष्कृत नहीं थी; यहाँ नालियों के लिए मुख्य रूप से लकड़ी के खोखले तनों और कच्ची ईंटों का उपयोग किया गया था। बी. बी. लाल और बी. के. थापर के उत्खनन ने यहाँ के धार्मिक और सामाजिक जीवन के कई अनछुए पहलुओं को उजागर किया था।

44. (2) राजस्थान का खेतड़ी क्षेत्र और ओमान।
हड़प्पा वासियों को तांबे की निरंतर आपूर्ति की आवश्यकता थी, जिसे वे मुख्य रूप से राजस्थान के खेतड़ी क्षेत्र की प्रसिद्ध खानों से प्राप्त करते थे। पुरातात्विक साक्ष्यों और धातु संरचना के विश्लेषण से यह भी ज्ञात हुआ है कि वे ओमान से भी तांबा आयात करते थे। यह दूरगामी व्यापार तंत्र उनकी धातु कर्म विज्ञान की आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए आवश्यक था। इन क्षेत्रों से प्राप्त तांबे का उपयोग कृषि उपकरणों, शस्त्रों और घरेलू बर्तनों के निर्माण में व्यापक स्तर पर किया जाता था।

45. (3) A सही है लेकिन R गलत है।
हड़प्पा के नगरों में सड़कों और नालियों का ग्रिड पद्धति उनकी सर्वाधिक उल्लेखनीय विशेषता है, जो स्पष्ट रूप से एक पूर्व-नियोजित शहरी ढांचे को दर्शाता है। यह व्यवस्था बिना किसी प्रभावी नगरपालिका प्रशासन या एक केंद्रीकृत नियोजन प्राधिकरण के संभव नहीं हो सकती थी। इसलिए, यह कहना कि प्रशासन का पूर्ण अभाव था, त्रुटिपूर्ण है। इसके विपरीत, पूरी सभ्यता में ईंटों के आकार और बाटों में अद्भुत समानता एक अत्यंत शक्तिशाली और व्यवस्थित शासन प्रणाली की उपस्थिति का प्रबल प्रमाण प्रस्तुत करती है।

46. (4) मोहनजोदड़ो
'पुरोहित-राजा' के नाम से प्रसिद्ध सेलखड़ी की प्रतिमा मोहनजोदड़ो के निचले नगर के एक आवास से प्राप्त हुई थी। इस लघु मूर्ति में एक शांत मुद्रा वाले व्यक्ति को दर्शाया गया है, जिसकी दाढ़ी संवारी हुई है और उसने बाएं कंधे पर एक अलंकृत शॉल ओढ़ रखी है जिस पर तिपतिया पुष्प बने हैं। यह मूर्ति हड़प्पा कला की परिपक्वता और तत्कालीन समाज के उच्च वर्ग की वेशभूषा तथा सौंदर्य बोध का उत्कृष्ट उदाहरण है। यह किसी महत्वपूर्ण धार्मिक व्यक्तित्व का प्रतिनिधित्व करती है।

47. (1) पुरातात्विक भौतिक संस्कृति और स्थानिक विश्लेषण।
सिंधु लिपि के रहस्यमयी और अपठित होने के कारण, हड़प्पा सभ्यता के इतिहास का पुनर्निर्माण मुख्य रूप से पुरातात्विक अवशेषों पर आश्रित है। इनमें नगरों का विन्यास, मृदभांड, उपकरण, मुहरें, आभूषण और खाद्यान्न के अवशेष सम्मिलित हैं। पुरातत्वविद इन भौतिक वस्तुओं के वितरण और उनके स्थानिक संदर्भों का वैज्ञानिक विश्लेषण करके ही उस समय की सामाजिक संरचना, अर्थव्यवस्था और धार्मिक विश्वासों के बारे में निष्कर्ष निकालते हैं। लिखित इतिहास के अभाव में, ये मूक अवशेष ही इस सभ्यता के एकमात्र साक्षी हैं।

48. (2) I, II, III, IV और V
हड़प्पा सभ्यता के रहस्यों को उजागर करने में अनेक महान पुरातत्वविदों का योगदान रहा है। दयाराम साहनी और आर.डी. बनर्जी ने इस खोज की नींव रखी। इसके पश्चात एन.जी. मजूमदार ने चन्हुदड़ो और एस.आर. राव ने लोथल के बंदरगाह की खुदाई कर व्यापारिक साक्ष्य एकत्रित किए। जे.पी. जोशी ने धोलावीरा और सुरकोटदा जैसे स्थलों की पहचान की। इन विद्वानों द्वारा भिन्न-भिन्न समय पर किए गए वैज्ञानिक उत्खनन के परिणामस्वरूप ही आज हम इस प्राचीन नगरीय संस्कृति के विभिन्न आयामों को विस्तार से समझ पाते हैं।

49. (2) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
सिंधु सभ्यता के विभिन्न स्थलों से अद्वितीय पुरावस्तुएं प्राप्त हुई हैं। मोहनजोदड़ो से सेलखड़ी की प्रसिद्ध पशुपति मुहर और कांस्य की बनी नर्तकी की मूर्ति मिली है। कालीबंगन अपनी मिट्टी की अग्नि वेदिकाओं के लिए जाना जाता है, जो उनकी धार्मिक क्रियाओं को दर्शाती हैं। लोथल में ईंटों से निर्मित गोदीवाड़ा मिला है, जो प्राचीन काल में उन्नत विदेशी व्यापार का केंद्र था। ये सभी खोजें सामूहिक रूप से हड़प्पा संस्कृति की तकनीकी प्रगति, कलात्मक कौशल और विविध धार्मिक परंपराओं का जीवंत प्रमाण हैं।

50. (1) जलवायु परिवर्तन जिसके कारण घग्गर-हाकरा तंत्र सूख गया।
वर्तमान पुरातात्विक शोधों में यह व्यापक सहमति है कि हड़प्पा सभ्यता का पतन क्रमिक पर्यावरणीय परिवर्तनों से हुआ। जलवायु में शुष्कता आने और वर्षा की कमी के कारण घग्गर-हाकरा जैसी जीवनदायी नदियाँ सूख गईं। इससे कृषि अधिशेष कम हो गया और विशाल नगरों का भरण-पोषण असंभव हो गया। अंततः, जनसंख्या उपजाऊ गंगा के मैदानों

Click Here to Buy book on Amazon

और गुजरात की ओर पलायन कर गई, जिससे शहरी संस्कृति का अंत हुआ और ग्रामीण बस्तियों के नए युग की शुरुआत हुई। यह पतन हिंसक नहीं बल्कि पारिस्थितिक था।

51. (1) प्रारंभिक हड़प्पा, परिपक्व हड़प्पा, उत्तर हड़प्पा
सिंधु घाटी सभ्यता का विकास तीन मुख्य चरणों में हुआ था। प्रथम चरण 'प्रारंभिक हड़प्पा' था जहाँ शहरीकरण के आधार पड़े और क्षेत्रीय संस्कृतियाँ विकसित हुईं। द्वितीय 'परिपक्व हड़प्पा' चरण था, जो अपने पूर्ण विकसित नगर नियोजन, लेखन और सुदूर व्यापार के लिए प्रसिद्ध है। अंतिम 'उत्तर हड़प्पा' चरण में सभ्यता का शहरी स्वरुप धीरे-धीरे लुप्त होने लगा और लोग लघु ग्रामीण बस्तियों में निवास करने लगे। यह विकासवादी क्रम एक महान नगरीय संस्कृति के उदय, चरमोत्कर्ष और क्रमिक पतन की प्रक्रिया को दर्शाता है।

52. (4) इसके चारों ओर किसी भी प्रकार की रक्षात्मक प्राचीर का अभाव था।
धोलावीरा की सुरक्षा व्यवस्था हड़प्पा स्थलों में सर्वाधिक सुदृढ़ मानी जाती है। यहाँ प्रत्येक नगर खंड के चारों ओर पत्थरों की बनी विशाल और ऊंची रक्षात्मक प्राचीरें विद्यमान थीं। इसके विपरीत, अन्य विकल्प जैसे इसकी भौगोलिक स्थिति, तीन भागों में विभाजन और उन्नत जल संचयन प्रणाली, इस स्थल की वास्तविक और अद्वितीय विशेषताएं हैं। यहाँ के पाषाण निर्मित बांध और जलाशय आज भी प्राचीन भारत की उत्कृष्ट सिविल इंजीनियरिंग और पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता का शानदार उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

53. (3) केवल I और II
हड़प्पा अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि और विकसित शिल्पों पर आधारित थी। चन्हुदड़ो जैसे नगर मनके बनाने के विशिष्ट केंद्रों के रूप में उभरे, जहाँ कीमती पत्थरों को तराशा जाता था। घरों में मिले कताई चक्र सिद्ध करते हैं कि कपास और ऊन की कताई एक सामान्य घरेलू गतिविधि थी। हालांकि, उनकी वाणिज्यिक प्रणाली वस्तु विनिमय और मुहरों के उपयोग पर आधारित थी। स्वर्ण या अन्य धातुओं के सिक्कों का उपयोग हड़प्पा वासियों के बीच पूर्णतः अज्ञात था और इसका कोई प्रमाण नहीं मिला है।

54. (2) हरियाणा
राखीगढ़ी हरियाणा के हिसार जिले में सरस्वती और दृषद्वती नदियों के प्राचीन मैदानों में स्थित है। हाल के दशकों में हुए व्यापक उत्खनन ने इसे भारत का सबसे बड़ा हड़प्पा कालीन स्थल घोषित किया है। यहाँ से प्राप्त विशाल आवासीय परिसर, नालियों की प्रणाली और शवाधान स्थल हड़प्पा संस्कृति के चरमोत्कर्ष को प्रदर्शित करते हैं। राखीगढ़ी के टीलों से प्राप्त प्राचीन नमूनों ने भारतीय उपमहाद्वीप के लोगों के आनुवंशिक इतिहास और इस महान सभ्यता के निवासियों के साथ हमारे निरंतर संबंधों को समझने में नई दिशा प्रदान की है।

55. (2) कथन I गलत है और कथन II सही है।
मेसोपोटामिया की सभ्यताओं में जहाँ भव्य मंदिरों का निर्माण होता था, वहीं हड़प्पा सभ्यता में सार्वजनिक पूजा के लिए किसी भी मंदिर जैसी संरचना का साक्ष्य नहीं मिला है। यद्यपि, धार्मिक अनुष्ठानों की उपस्थिति को नकारा नहीं जा सकता। कालीबंगन और लोथल जैसे स्थलों में मिली ईंटों की बनी अग्नि वेदिकाएं इस बात का पुख्ता प्रमाण हैं कि वहाँ के लोग अग्नि पूजा या यज्ञ जैसी बलि प्रथाओं में विश्वास रखते थे। यह हड़प्पा वासियों की धार्मिक आस्थाओं के स्वदेशी और अनुष्ठानिक स्वरुप को दर्शाता है।

56. (1) I, II और IV
हड़प्पा कालीन निर्माण तकनीक अत्यंत उन्नत थी। सिंधु के मैदानी क्षेत्रों में पकी ईंटों का बड़े पैमाने पर उपयोग किया गया, जबकि कच्ची ईंटों का प्रयोग सुरक्षा दीवारों के आंतरिक भागों में भराई के लिए होता था। विशाल संरचनाओं को जलसह बनाने के लिए प्राकृतिक बिटुमेन और जिप्सम के गारे का प्रयोग उनकी तकनीकी श्रेष्ठता को दर्शाता है। हालांकि, सिंध के मैदानी नगरों में पाषाण का उपयोग दुर्लभ था। पत्थरों का व्यापक उपयोग केवल गुजरात के धोलावीरा जैसे पहाड़ी क्षेत्रों वाले स्थलों पर ही प्रचुरता से देखा गया है।

57. (3) यह 26 अक्षरों वाली एक वर्णमाला संरचना प्रदर्शित करती है।
सिंधु लिपि की प्रकृति अभी भी एक पहेली बनी हुई है। यह वर्णमाला आधारित नहीं है, बल्कि इसमें लगभग 400 से 600 के मध्य विभिन्न चिह्न और चित्र मिलते हैं, जो इसे एक चित्रात्मक लिपि बनाते हैं। इसे मुहरों और मिट्टी की पट्टियों पर अंकित किया गया था, परंतु अभी तक इसे संतोषजनक रुप से पढ़ा नहीं जा सका है। 26 अक्षरों वाली वर्णमाला की धारणा पूर्णतः त्रुटिपूर्ण है, क्योंकि हड़प्पा लिपि कहीं अधिक जटिल और प्रतीक-प्रधान थी जो एक विकसित संचार प्रणाली को दर्शाती थी।

58. (1) कालीबंगन - घग्गर
हड़प्पा सभ्यता के नगरों का नदियों से घनिष्ठ संबंध था। राजस्थान स्थित कालीबंगन घग्गर नदी के तट पर स्थित था। अन्य विकल्पों में सुधार अपेक्षित है: हड़प्पा रावी नदी के किनारे स्थित था, मोहनजोदड़ो सिंधु नदी के तट पर विकसित हुआ था, और लोथल भोगवा नदी के तट पर एक समृद्ध बंदरगाह था। नदियों के किनारे इन बस्तियों का विकास कृषि, परिवहन और व्यापार की सुगमता को ध्यान में रखकर किया गया था, जो उनकी आर्थिक और सामाजिक सफलता का मुख्य भौगोलिक आधार था।

59. (4) धोलावीरा
धोलावीरा में मिले पॉलिश किए गए विशाल पाषाण स्तंभ हड़प्पा कालीन पत्थर नक्काशी और इंजीनियरिंग का एक उत्कृष्ट उदाहरण हैं। यह विशेषता अन्य प्रमुख स्थलों जैसे हड़प्पा या मोहनजोदड़ो में देखने को नहीं मिलती, जहाँ मुख्य रुप से ईंटों का ही उपयोग अधिक था। इन स्तंभों की चमक और उनकी परिष्कृत फिनिशिंग यह दर्शाती है कि धोलावीरा के कारीगर पत्थरों को तराशने की कला में अत्यंत निपुण थे। यह स्थल अपनी अनूठी स्थापत्य शैली और पत्थरों के रचनात्मक उपयोग के कारण पूरी सभ्यता में विशिष्ट स्थान रखता है।

Downloaded from www.pdf.tube

60. (2) I, II, III, IV और V
हड़प्पा सभ्यता के लोग कच्चे माल की आपूर्ति के लिए एक विशाल और जटिल व्यापार तंत्र पर निर्भर थे। वे दक्षिण भारत से स्वर्ण, राजस्थान और ओमान से तांबा, तथा मध्य एशिया से कीमती जेड पत्थर मंगाते थे। अफगानिस्तान का शोर्टुघई नीले लाजवर्त मणि का मुख्य स्रोत था, जबकि दक्षिण राजस्थान के क्षेत्रों से मुहरें बनाने के लिए सेलखड़ी प्राप्त की जाती थी। यह विविधतापूर्ण आयात व्यवस्था सिद्ध करती है कि हड़प्पा समाज की आर्थिक जड़ें सुदूर भौगोलिक क्षेत्रों तक विस्तृत थीं और वे अत्यंत संगठित थे।

61. (3) दो अलग-अलग फसलों की एक साथ खेती।
कालीबंगन में खोजे गए जुते हुए खेत की सतह पर एक-दूसरे को काटती हुई दो भिन्न दिशाओं में हल की लकीरें प्राप्त हुई हैं। पुरातत्वविदों के अनुसार, यह प्रारूप दर्शाता है कि किसान एक ही समय में एक ही खेत में दो अलग-अलग फसलें उगाने की तकनीक से परिचित थे। यह 'मिश्रित खेती' का विश्व का प्राचीनतम उदाहरण माना जाता है। यह खोज सिद्ध करती है कि हड़प्पा वासी मिट्टी की उर्वरता और अधिकतम पैदावार की वैज्ञानिक पद्धतियों को भली-भांति जानते थे, जो उनकी समृद्धि का आधार थी।

62. (4) यह मोहनजोदड़ो स्थल पर पाई गई सबसे बड़ी इमारत है।
मोहनजोदड़ो का विशाल अन्नागार यहाँ की सर्वाधिक भव्य और विशालतम संरचना है, जो दुर्ग के पश्चिमी भाग में स्थित है। यह पकी हुई ईंटों के एक ऊंचे चबूतरे पर निर्मित था, जिसमें वायु के संचार के लिए विशेष व्यवस्था की गई थी ताकि अनाज दीर्घकाल तक सुरक्षित रहे। इसका विशाल आकार तत्कालीन शासन द्वारा एकत्रित किए जाने वाले करों और आपातकालीन समय के लिए किए गए अनाज भंडारण की व्यवस्था को दर्शाता है। यह भवन हड़प्पा समाज की आर्थिक स्थिरता और उनके प्रशासनिक कौशल का प्रतीक है।

63. (1) ग्रामीण ताम्रपाषाणिक संस्कृतियों द्वारा चिह्नित एक उत्तर-शहरी चरण।
'उत्तर हड़प्पा चरण' उस समय को संदर्भित करता है जब हड़प्पा सभ्यता के विशिष्ट शहरी तत्व जैसे ग्रिड नियोजन, लिपि और मानकीकृत बाट विलुप्त होने लगे थे। इस काल में जनसंख्या विशाल नगरों को छोड़कर लघु ग्रामीण बस्तियों में बस गई। तकनीकी रूप से, वे कांस्य के स्थान पर स्थानीय ताम्रपाषाणिक परंपराओं की ओर उन्मुख हुए। यह चरण सभ्यता के आकस्मिक अंत को नहीं, बल्कि उसके क्रमिक परिवर्तन और विकेंद्रीकरण को दर्शाता है, जहाँ जीवन का शहरी आधार नष्ट हो गया था परंतु सांस्कृतिक निरंतरता बनी रही।

64. (2) पुरोहित-राजा की सेलखड़ी की मूर्ति
लोथल के उत्खनन से गोदीवाड़ा, मनके बनाने के कारखाने और अग्नि वेदिकाएं जैसे महत्वपूर्ण साक्ष्य प्राप्त हुए हैं, जो इसकी व्यापारिक और धार्मिक महत्ता को पुख्ता करते हैं। हालांकि, दाढ़ी वाले 'पुरोहित-राजा' की प्रसिद्ध सेलखड़ी की मूर्ति लोथल से नहीं, बल्कि मोहनजोदड़ो से प्राप्त हुई थी। यह मूर्ति हड़प्पा कला का उत्कृष्ट नमूना है और मोहनजोदड़ो के विशिष्ट सामाजिक ढांचे को दर्शाती है। लोथल की पहचान मुख्य रूप से एक समुद्री बंदरगाह और औद्योगिक नगर के रूप में थी, जहाँ विनिर्माण गतिविधियाँ प्रधान थीं।

65. (1) कथन I सही है और कथन II गलत है।
सिंधु घाटी सभ्यता एक विशाल अंतरराष्ट्रीय सभ्यता थी, जिसका प्रसार आधुनिक भारत के पंजाब, गुजरात, हरियाणा और राजस्थान के अतिरिक्त पाकिस्तान के सिंध और पंजाब प्रांतों तथा अफगानिस्तान के शोर्टुघई जैसे सुदूर क्षेत्रों तक था। इसलिए, यह कहना कि इसका भौगोलिक क्षेत्र केवल आधुनिक भारत तक सीमित था, ऐतिहासिक रूप से त्रुटिपूर्ण है। इस सभ्यता का कुल क्षेत्रफल तत्कालीन मिस्र और मेसोपोटामिया की सभ्यताओं के सम्मिलित क्षेत्र से भी विशाल था, जो इसके व्यापक प्रभाव और स्वरूप को दर्शाता है।

66. (1) हड़प्पा
हड़प्पा स्थल से शवाधान की दो महत्वपूर्ण पद्धतियों के प्रमाण मिले हैं, जिन्हें पुरातत्वविदों ने कब्रिस्तान-H और R-37 का नाम दिया है। R-37 कब्रिस्तान परिपक्व हड़प्पा काल से संबंधित है, जबकि कब्रिस्तान-H उत्तर-हड़प्पा काल के सांस्कृतिक परिवर्तनों को दर्शाता है। इन स्थलों से प्राप्त ताबूतों, मृदभांडों और अस्थि पंजरों के अध्ययन से हड़प्पा वासियों की सामाजिक संरचना, स्वास्थ्य स्थिति और मृत्यु के पश्चात के जीवन के प्रति उनके धार्मिक विश्वासों के बारे में अत्यंत महत्वपूर्ण जानकारियां प्राप्त होती हैं।

NODIA

67. (3) कताई और बुनाई आम घरेलू गतिविधियाँ थीं।
हड़प्पा के लगभग प्रत्येक घर से 'फयॉन्स' और मिट्टी के बने कताई चक्र प्राप्त हुए हैं। यह प्रचुरता इस बात का ठोस प्रमाण है कि सूत कातना और वस्त्र बुनना उस समय की एक अत्यंत व्यापक और सामान्य घरेलू गतिविधि थी। हड़प्पा वासी कपास और ऊन दोनों का उपयोग करते थे। कताई की इस तकनीक ने न केवल स्थानीय वस्त्र आवश्यकताओं को पूर्ण किया, बल्कि विदेशी बाजारों में हड़प्पाई वस्त्रों के निर्यात के लिए एक सुदृढ़ आर्थिक आधार भी प्रदान किया, जो उनकी नागरिक समृद्धि का प्रमुख कारण था।

68. (4) गाय
मोहनजोदड़ो से प्राप्त प्रसिद्ध पशुपति मुहर पर एक त्रिमुखीय देवता को योग मुद्रा में दर्शाया गया है। इस मुहर पर देवता के चारों ओर हाथी, बाघ, गैंडा और भैंस जैसे पशुओं के चित्र स्पष्ट रूप से अंकित हैं, जबकि उनके चरणों के समीप दो हिरण बैठे हुए दिखाए गए हैं। उल्लेखनीय है कि हड़प्पा कालीन कला और मुहरों पर कहीं भी गाय का चित्रण नहीं मिलता है, यद्यपि वे कूबड़ वाले बैल से भली-भांति परिचित थे। यह धार्मिक चयन उस समय के विशिष्ट वन्य जीवन और पशु पूजा की प्राथमिकताओं को दर्शाता है।

69. (3) मनके, चूड़ियाँ और लघु पात्र जैसी सूक्ष्म वस्तुएं बनाना।
'फयॉन्स' एक कृत्रिम रूप से निर्मित चमकदार सामग्री थी, जिसे रेत या स्फटिक के चूर्ण में गोंद मिलाकर और फिर उसे पकाकर बनाया जाता था। हड़प्पा के शिल्पी इस जटिल सामग्री का

उपयोग मुख्य रूप से विलासिता की वस्तुएं जैसे लघु मनके, सुंदर चूड़ियाँ, कान के कुंडल और इत्र रखने वाले नन्हे पात्र बनाने के लिए करते थे। चूँकि फयॉन्स निर्मित करना कठिन था, इसलिए इससे बनी वस्तुएं संभवतः समाज के संपन्न वर्ग की पहचान मानी जाती थीं, जो उनकी कलात्मक श्रेष्ठता और सामाजिक पदानुक्रम को दर्शाती हैं।

70. (2) हड़प्पा 1921 में उत्खनित होने वाला प्रथम स्थल था, जिसके आधार पर इसे हड़प्पा सभ्यता नाम मिला।
सिंधु घाटी सभ्यता की खोज का इतिहास 1921 में आरंभ हुआ, जब दयाराम साहनी ने सर्वप्रथम हड़प्पा नामक स्थल का वैज्ञानिक उत्खनन किया। चूँकि यह खोजा गया प्रथम प्रमुख स्थल था, इसलिए पुरातत्व की परंपरा के अनुसार संपूर्ण सभ्यता को 'हड़प्पा सभ्यता' के नाम से अभिहित किया जाने लगा। इसके एक वर्ष पश्चात ही मोहनजोदड़ो की खोज हुई। इस खोज ने भारतीय उपमहाद्वीप के इतिहास को अचानक विश्व की प्राचीनतम शहरी सभ्यताओं की श्रेणी में लाकर स्थापित कर दिया, जो तत्कालीन ऐतिहासिक विमर्श में क्रांतिकारी था।

71. (4) बांधों और विशाल पाषाण जलाशयों की एक जटिल प्रणाली।
धोलावीरा दो मौसमी जलधाराओं, मनसर और मनहर के मध्य स्थित था। यहाँ वर्षा अत्यंत न्यून होती थी, इसलिए जल संरक्षण के लिए हड़प्पा वासियों ने अद्वितीय जल प्रबंधन तकनीक विकसित की थी। उन्होंने इन धाराओं पर पाषाण के विशाल बांध निर्मित किए और जल को तराशे हुए जलाशयों में मोड़ने की व्यवस्था की। यह विश्व की प्राचीनतम और प्रभावी जल संचयन प्रणालियों में से एक है। यह बुनियादी ढांचा धोलावीरा को रेगिस्तानी कच्छ क्षेत्र में एक संपन्न महानगर बनाए रखने के लिए अनिवार्य और जीवनदायी संसाधन था।

72. (1) निम्न मानों ने कड़ाई से दशमलव माप प्रणाली का पालन किया।
हड़प्पा सभ्यता के बाटों और माप की प्रणाली अत्यंत वैज्ञानिक और मानकीकृत थी। इसमें निम्न मूल्यों के लिए मुख्य रूप से द्वि-आधारी पद्धति का प्रयोग किया जाता था। दशमलव प्रणाली का उपयोग केवल उच्च मानों या बड़े मापों के लिए किया जाता था। ये बाट प्रायः चर्ट नामक पत्थर से निर्मित होते थे और घनाकार स्वरूप में मिलते थे। मानकीकरण का यह उच्च स्तर सिद्ध करता है कि पूरी सभ्यता में व्यापारिक लेनदेन के लिए एक कठोर प्रशासनिक नियंत्रण व्यवस्था लागू थी, जो आर्थिक सुचारुता सुनिश्चित करती थी।

73. (3) काले रंग की चूड़ियाँ
राजस्थान में स्थित हड़प्पा कालीन स्थल 'कालीबंगन' का शाब्दिक अर्थ 'काले रंग की चूड़ियाँ' है। यह नाम यहाँ उत्खनन के दौरान प्राप्त मिट्टी और पाषाण की प्रचुर काली चूड़ियों के कारण पड़ा। कालीबंगन अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान के लिए प्रसिद्ध है, जिसमें प्राक्-हड़प्पा और परिपक्व हड़प्पा दोनों चरणों के अवशेष मिलते हैं। यहाँ से जुते हुए खेत और अग्नि वेदिकाओं जैसे महत्वपूर्ण साक्ष्य प्राप्त हुए हैं, जो इस क्षेत्र की प्राचीन कृषि पद्धतियों और धार्मिक विश्वासों पर गहरा प्रकाश डालते हैं।

74. (1) पकी ईंटों और भूमिगत जल निकासी का व्यापक उपयोग।
हड़प्पा सभ्यता को उसकी समकालीन सभ्यताओं से पृथक करने वाली सर्वाधिक प्रमुख विशेषता उसकी शहरी इंजीनियरिंग थी। जहाँ मेसोपोटामिया और मिस्र में मुख्य रूप से धूप में सुखाई गई ईंटों और खुले नालों का प्रयोग होता था, वहीं हड़प्पा के नगरों में पकी हुई ईंटों का बड़े पैमाने पर उपयोग और पूर्णतः ढकी हुई भूमिगत जल निकासी प्रणाली विद्यमान थी। स्वच्छता और नागरिक स्वास्थ्य के प्रति ऐसा समर्पण उस काल की किसी भी अन्य सभ्यता में देखने को नहीं मिलता है। यह उनकी तकनीकी श्रेष्ठता का प्रतीक है।

75. (4) हड़प्पा वासियों और आधुनिक दक्षिण एशियाई लोगों के बीच आनुवंशिक निरंतरता है।
राखीगढ़ी में मिले कंकालों के हालिया डीएनए विश्लेषण ने प्राचीन भारतीय इतिहास की हमारी समझ में क्रांतिकारी परिवर्तन किया है। शोध से ज्ञात हुआ है कि हड़प्पा के लोगों में मध्य एशियाई स्टेपी समूहों का कोई आनुवंशिक अंश नहीं था। इसके स्थान पर, यह पाया गया कि हड़प्पा वासियों और आज के दक्षिण एशियाई लोगों के मध्य एक स्पष्ट आनुवंशिक निरंतरता है। यह निष्कर्ष बाहरी आक्रमण के सिद्धांतों को दुर्बल करता है और यह स्थापित करता है कि वर्तमान भारतीय जनसंख्या की जड़ें इसी प्राचीन और गौरवशाली स्वदेशी सभ्यता में समाहित हैं।

76. (2) शंख की वस्तुएं - नागेश्वर और बालाकोट
हड़प्पा सभ्यता में शिल्पों का स्थानीयकरण कच्चे माल की उपलब्धता पर आश्रित था। नागेश्वर और बालाकोट दोनों तटीय क्षेत्रों में स्थित थे, जहाँ प्रचुर मात्रा में शंख उपलब्ध था। इसलिए, ये स्थल चूड़ियाँ और पच्चीकारी जैसी शंख की वस्तुओं के निर्माण के प्रमुख केंद्र बन गए। यहाँ से निर्मित सामग्री को सुदूर शहरों तक प्रेषित किया जाता था। अन्य विकल्प जैसे मनके बनाना चन्हुदड़ो का मुख्य कार्य था। प्रत्येक शिल्प के लिए विशिष्ट बस्तियाँ उनकी विकसित औद्योगिक विशेषज्ञता और संगठित व्यापारिक वितरण प्रणाली को स्पष्ट करती हैं।

77. (2) कथन I गलत है और कथन II सही है।
प्रारंभ में मोर्टिमर व्हीलर जैसे विद्वानों ने मोहनजोदड़ो में मिले कुछ कंकालों के आधार पर 'सामूहिक नरसंहार' और बाहरी आक्रमण की बात कही थी। हालांकि, आधुनिक पुरातात्विक शोधों ने इस सिद्धांत को निरस्त कर दिया है क्योंकि वे कंकाल भिन्न-भिन्न कालखंडों के थे। आज के विद्वान इसे सभ्यता का आकस्मिक विनाश नहीं, बल्कि क्रमिक पर्यावरणीय और आर्थिक ह्रास का परिणाम मानते हैं। इसलिए, आधुनिक सहमति किसी एक हिंसक घटना के स्थान पर दीर्घकालिक जलवायु परिवर्तनों और नदी मार्ग परिवर्तनों को पतन के लिए उत्तरदायी मानती है।

Click Here to Buy book on Amazon

78. (4) इनका उपयोग पुजारियों द्वारा केवल पूजा की वस्तुओं के रुप में किया जाता था।
हड़प्पा की मुहरें मुख्य रूप से वाणिज्यिक उपकरण थीं, न कि केवल धार्मिक वस्तुएं। इनका प्राथमिक उद्देश्य व्यापारिक वस्तुओं की गांठों को मुद्रांकित करना था ताकि उनकी सुरक्षा और प्रेषक की पहचान सुनिश्चित की जा सके। ये मुहरें वर्गाकार होती थीं और इन पर एक ओर पशु आकृति के साथ संक्षिप्त लिपि अंकित होती थी, जबकि दूसरी ओर डोरी पिरोने के लिए एक घुंडी बनी होती थी। यद्यपि मुहरों पर धार्मिक चित्र भी मिलते हैं, परंतु उनका व्यापक उपयोग समाज के विभिन्न वर्गों द्वारा व्यापारिक गतिविधियों में किया जाता था।

NODIA

79. (1) अफगानिस्तान
शोर्टुघई वर्तमान अफगानिस्तान के सुदूर उत्तरी भाग में स्थित एक अत्यंत महत्वपूर्ण हड़प्पा कालीन व्यापारिक चौकी थी। इसे विशेष रूप से 'लाजवर्त' के समृद्ध स्रोतों के समीप स्थापित किया गया था, क्योंकि इस नीले पत्थर की मेसोपोटामिया में भारी मांग थी। इस दुर्गम क्षेत्र में हड़प्पा की बस्ती का होना यह सिद्ध करता है कि सिंधु घाटी के लोग अपने व्यापारिक हितों की रक्षा के लिए और दुर्लभ संसाधनों तक सीधी पहुँच बनाने के लिए अत्यंत साहसी और भौगोलिक रुप से महत्वाकांक्षी थे। यहाँ से प्राप्त नहरें भी उनकी कुशलता दर्शाती हैं।

80. (2) यह पश्चिम एशिया के साथ समुद्री व्यापार का एक प्रमुख केंद्र था।
लोथल के उत्खनन से प्राप्त विशाल ईंटों का गोदीवाड़ा और फारस की खाड़ी की विशिष्ट गोलाकार मुहरें यह निर्विवाद रुप से सिद्ध करती हैं कि यह नगर अंतरराष्ट्रीय समुद्री व्यापार का मुख्य केंद्र था। यहाँ से जलयानों के माध्यम से सामग्री ओमान, बहरीन और मेसोपोटामिया तक भेजी जाती थी। लोथल की भौगोलिक स्थिति ने इसे एक औद्योगिक और वाणिज्यिक केंद्र बना दिया था जहाँ मनके और तांबे की वस्तुओं का उत्पादन निर्यात हेतु किया जाता था। यह स्थल हड़प्पा सभ्यता की वैश्विक आर्थिक पहुँच का सबसे सशक्त प्रमाण है।

अध्याय 02
वैदिक काल : पूर्व एवं उत्तर वैदिक काल

1. निम्नलिखित में से किस विद्वान ने भाषाशास्त्रीय साक्ष्यों के आधार पर भारतीय आर्यों की उत्पत्ति के लिए मध्य एशियाई मूल सिद्धांत का प्रतिपादन किया था?
(1) बाल गंगाधर तिलक
(2) मैक्स मूलर
(3) स्वामी दयानंद सरस्वती
(4) अविनाश चंद्र दास
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

2. बोगाजकोई अभिलेख, जिसमें इंद्र, वरुण, मित्र और नासत्य जैसे वैदिक देवताओं का उल्लेख है, किस आधुनिक देश में खोजा गया था?
(1) तुर्की
(2) ईरान
(3) इराक
(4) अफगानिस्तान
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

3. सप्त सिंधु क्षेत्र की नदियों के प्राचीन और आधुनिक नामों के संबंध में सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची-I: (नदियों के प्राचीन नाम)
A. वितस्ता
B. असिक्नी
C. परुष्णी
D. शुतुद्री
सूची-II: (आधुनिक नाम)
i. रावी
ii. झेलम
iii. सतलुज
iv. चिनाब
नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-i, B-iv, C-ii, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

4. निम्नलिखित में से कौन सा कथन पूर्व वैदिक (ऋग्वैदिक) समाज की प्रकृति को सही ढंग से परिभाषित करता है?
(1) अत्यधिक कठोर और औपचारिक जाति संरचना वाला एक स्थिर कृषि समाज।
(2) व्यापक समुद्री व्यापार की विशेषता वाला उन्नत नगरीय समाज।
(3) विशेष रूप से अनुष्ठानिक मंदिर पूजा और मूर्तियों पर केंद्रित मातृसत्तात्मक समाज।
(4) मुख्य रूप से पशुपालन और गतिशीलता पर आधारित कबीलाई और पशुपालक समाज।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

5. पूर्व वैदिक राजनीतिक संगठन के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सी सभा सबसे प्राचीन थी और इसमें पुरुष और महिलाएं दोनों भाग लेते थे?
(1) सभा
(2) समिति
(3) विदथ
(4) गण
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

6. पूर्व वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति के संबंध में असत्य कथन की पहचान कीजिए।
(1) महिलाओं को शिक्षा का अधिकार था और उन्हें उपनयन संस्कार के माध्यम से दीक्षित किया जा सकता था।
(2) बाल विवाह और सती प्रथा व्यापक रूप से प्रचलित थी।
(3) महिलाएं अपने पति के साथ धार्मिक यज्ञों में भाग लेती थीं।
(4) विधवाएं 'नियोग' प्रथा के माध्यम से पुनर्विवाह कर सकती थीं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

7. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं, एक कथन (A) और एक कारण (R)। उन्हें ध्यान से पढ़ें और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनें:
कथन (A): ऋग्वैदिक काल में, राजा (राजन) की शक्ति निरंकुश नहीं थी।
कारण (R): सभा और समिति जैसी शक्तिशाली कबीलाई सभाओं द्वारा राजा के अधिकार पर नियंत्रण रखा जाता था।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

8. ऋग्वैदिक अर्थव्यवस्था में "गविष्टि" शब्द का मुख्य रूप से क्या अर्थ था?
(1) गायों की खोज, जो अक्सर कबीलाई संघर्षों या युद्धों का

Downloaded from www.pdf.tube

कारण बनती थी
(2) कृषि उर्वरता के लिए किया जाने वाला धार्मिक यज्ञ
(3) पशुपालकों पर लगाया जाने वाला एक विशिष्ट कर
(4) पशु उत्पादों का व्यापार करने वाला एक व्यापारिक संघ
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

9. पूर्व वैदिक अर्थव्यवस्था के संदर्भ में, "निष्क" शब्द निम्नलिखित में से किसे संदर्भित करता था?
(1) उपजाऊ कृषि भूमि मापन की एक विशिष्ट इकाई।
(2) भारी कृषि में उपयोग किया जाने वाला एक विशेष लोहे का हल।
(3) सोने का आभूषण या विनिमय में प्रयुक्त मूल्य की एक इकाई।
(4) कबीलाई मुखिया द्वारा प्रजा से वसूला जाने वाला नियमित कर।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

10. पूर्व वैदिक धर्म के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इंद्र सबसे प्रमुख देवता थे, जिन्हें 'पुरंदर' या किलों का विनाशक कहा जाता था।
II. वरुण को 'ऋत' (ब्रह्मांडीय और नैतिक व्यवस्था) का रक्षक माना जाता था।
III. इस काल के दौरान मंदिर वास्तुकला और मूर्ति पूजा अत्यधिक विकसित थी।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

11. निम्नलिखित में से कौन पूर्व वैदिक से उत्तर वैदिक काल में संक्रमण का सबसे सटीक वर्णन करता है?
(1) गंगा के मैदानों से आर्यों का वापस सिंधु घाटी की ओर पलायन
(2) कठोर जाति व्यवस्था से समतावादी कबीलाई समाज में परिवर्तन
(3) संन्यास के पक्ष में वैदिक अनुष्ठानों का पूर्ण परित्याग
(4) स्थायी कृषि की ओर झुकाव और क्षेत्रीय राज्यों का उदय
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

12. पूर्व वैदिक काल में राजनीतिक इकाइयों का सही क्रम कौन सा है, जो सबसे छोटी से सबसे बड़ी इकाई की ओर व्यवस्थित है?
(1) कुल - विश - ग्राम - जन - राष्ट्र
(2) कुल - ग्राम - विश - जन - राष्ट्र
(3) ग्राम - कुल - जन - विश - राष्ट्र
(4) ग्राम - विश - कुल - राष्ट्र - जन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

13. कौन सी पुरातात्विक संस्कृति उत्तर वैदिक काल और गंगा-यमुना दोआब में विस्तार के साथ सबसे मजबूती से जुड़ी हुई है?
(1) गेरुवर्णी मृदभांड (OCP)
(2) कृष्ण और लोहित मृदभांड (BRW)
(3) चित्रित धूसर मृदभांड (PGW)
(4) उत्तरी काली पॉलिश वाले मृदभांड (NBPW)
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

14. वैदिक देवताओं और उनके गुणों के संबंध में सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची-I: (वैदिक देवता)
A. अग्नि
B. सोम
C. मरुत
D. अश्विन
सूची-II: (गुण/विशेषताएँ)
i. आंधी-तूफान के देवता
ii. देवताओं और मनुष्यों के बीच मध्यस्थ
iii. दिव्य चिकित्सक
iv. वनस्पतियों और मादक पेय के देवता
नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
(1) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-i, B-iv, C-ii, D-iii
(4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

15. उत्तर वैदिक काल में वनों को साफ करने और स्थायी कृषि को प्रोत्साहित करने में किस धातु की खोज ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई?
(1) लोहा (कृष्ण अयस)
(2) तांबा (अयस)
(3) कांसा
(4) चांदी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

16. उत्तर वैदिक काल में, "बलि" शब्द, जिसका मूल अर्थ स्वैच्छिक भेंट था, किस रूप में परिवर्तित हुआ?
(1) धात्विक मुद्रा की एक कड़ाई से विनियमित प्रणाली।
(2) शासक द्वारा वसूला जाने वाला एक अनिवार्य कर।
(3) पुरोहित ब्राह्मणों को दिया जाने वाला स्थायी भूमि अनुदान।
(4) सैन्य सेनापति के लिए एक औपचारिक पदवी।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

17. वैदिक काल के सामाजिक-आर्थिक शब्दावली के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा युग्म असत्य है?
(1) व्रीहि - चावल
(2) तक्षण - बुनकर
(3) गोधूम - गेहूं

(4) यव - जौ
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

18. उत्तर वैदिक राजनीतिक परिवर्तनों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. कबीलाई पहचान (जन) का स्थान क्षेत्रीय पहचान (जनपद) ने लेना प्रारंभ कर दिया।
II. राजसूय और अश्वमेध जैसे विस्तृत यज्ञों ने राजसी शक्ति को बढ़ाया।
III. राजा ने नकद वेतन वाली एक विशाल स्थायी सेना रखी।
IV. सभा और समिति जैसी लोकप्रिय सभाओं की शक्ति में अत्यधिक ह्रास हुआ।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से असत्य है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल III
(3) केवल II और IV
(4) केवल III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

19. वर्ण व्यवस्था निश्चित रूप से चार अलग-अलग वंशानुगत श्रेणियों में किस चरण के दौरान स्थापित हुई?
(1) पूर्व ऋग्वैदिक काल
(2) हड़प्पा काल
(3) उत्तर वैदिक काल
(4) मौर्य काल
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

20. निम्नलिखित आश्रमों (जीवन के चरणों) को उनके सही क्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें जैसा कि उन्हें उत्तर वैदिक और उत्तर-वैदिक ग्रंथों में परिकल्पित किया गया था:
I. वानप्रस्थ
II. संन्यास
III. ब्रह्मचर्य
IV. गृहस्थ
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही क्रम चुनें:
(1) III, I, IV, II
(2) III, IV, I, II
(3) IV, III, I, II
(4) III, IV, II, I
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

21. उत्तर वैदिक देवकुल में ब्रह्मांड के रचयिता के रूप में कौन से देवता सर्वोच्च पद पर आसीन हुए?
(1) इंद्र
(2) अग्नि
(3) प्रजापति
(4) वरुण
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

22. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं, एक कथन (A) और एक कारण (R)। उन्हें ध्यान से पढ़ें और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनें:
कथन (A): उत्तर वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति में उल्लेखनीय गिरावट देखी गई।
कारण (R): महिलाओं को राजनीतिक सभाओं से बाहर कर दिया गया और उन्हें उपनयन संस्कार के अधिकार से वंचित कर दिया गया।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

23. चारों वेदों में से कौन सा मुख्य रूप से यज्ञों के दौरान उपयोग किए जाने वाले स्वरों और संगीतमय मंत्रों का संग्रह है?
(1) ऋग्वेद
(2) यजुर्वेद
(3) अथर्ववेद
(4) सामवेद
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

24. उपनिषदों का केंद्रीय दार्शनिक विषय क्या है?
(1) आत्मा और ब्रह्म की एकता का अनुभव।
(2) विस्तृत पशु बलि आयोजित करने के लिए व्यापक निर्देश।
(3) नकारात्मक शक्तियों को दूर भगाने के लिए जादुई मंत्रों का संग्रह।
(4) कबीलाई युद्धों का ऐतिहासिक वृत्तांत और प्राचीन राजाओं की वंशावली।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

25. वेदों और उनके संबंधित पुरोहितों के संबंध में सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची-I: (वेद)
A. ऋग्वेद
B. सामवेद
C. यजुर्वेद
D. अथर्ववेद
सूची-II: (संबंधित पुरोहित)
i. अध्वर्यु
ii. होतृ
iii. ब्रह्मा
iv. उद्गातृ
नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Click Here to Buy book on Amazon

26. पूर्व वैदिक काल की महिला विद्वानों और ऋचाओं के रचनाकारों के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प भिन्न है?
(1) गार्गी वाचक्रवी
(2) लोपामुद्रा
(3) घोषा
(4) अपाला
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

27. उत्तर वैदिक काल के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. शूद्रों को वेदों के पाठ करने के अधिकार से वंचित कर दिया गया था।
II. गोत्र प्रथा का उदय हुआ, जिसने एक ही गोत्र के भीतर विवाह को प्रतिबंधित कर दिया।
III. पूषन, जो मूल रूप से पशुओं के रक्षक थे, शूद्रों के देवता बन गए।
IV. लोहे को 'श्याम' या 'कृष्ण अयस' कहा जाता था।
V. राजा को पूरी भूमि का पूर्ण स्वामी माना जाता था, जिससे निजी संपत्ति समाप्त हो गई थी।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III और IV
(2) केवल I, III, IV और V
(3) केवल II, III, IV और V
(4) केवल I, II और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

28. स्वामी दयानंद सरस्वती के अनुसार, आर्यों का मूल निवास स्थान था:
(1) मध्य एशिया
(2) तिब्बत
(3) आर्कटिक क्षेत्र
(4) सप्त सिंधु
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

29. दशराज्ञ (दस राजाओं का युद्ध) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह परुष्णी नदी के तट पर लड़ा गया था।
II. यह सुदास के नेतृत्व वाले भरतों और दस राजाओं के संघ के बीच एक संघर्ष था।
III. दस राजाओं की विजय के परिणामस्वरूप तत्काल कुरु साम्राज्य की स्थापना हुई।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

30. ऋग्वैदिक आर्यों के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें:
कथन I: ऋग्वैदिक आर्यों को हिंद महासागर में समुद्री व्यापार और नौवहन का व्यापक ज्ञान था।
कथन II: ऋग्वेद में "समुद्र" के संदर्भों का तात्पर्य सामान्यतः खुले महासागर के बजाय जल के विशाल निकायों या नदियों के संगम से है।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है और कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

31. निम्नलिखित में से कौन "आरण्यक" का सबसे सटीक वर्णन करता है?
(1) वन पुस्तकें जिनमें तपस्वियों के लिए रहस्यमय और दार्शनिक शिक्षाएं हैं।
(2) संस्कृत व्याकरण और ध्वन्यात्मकता का विवरण देने वाली तकनीकी मार्गदर्शिका।
(3) पूर्णतः शासन कला और प्रशासन पर केंद्रित धर्मनिरपेक्ष साहित्य।
(4) प्रारंभिक वैदिक राजाओं के जीवन और कार्यों का वर्णन करने वाले काव्यात्मक महाकाव्य।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

32. ऋग्वैदिक समाज के संबंध में असत्य कथन की पहचान कीजिए।
(1) समाज की बुनियादी इकाई पितृसत्तात्मक परिवार या 'कुल' थी।
(2) समाज स्पष्ट रूप से कठोर, अस्पृश्य जातियों में विभाजित था।
(3) वैदिक लोगों को सोम और सुरा का ज्ञान था।
(4) रथ दौड़ और पासा खेलना लोकप्रिय मनोरंजन थे।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

33. यजुर्वेद के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह एक कर्मकांडीय वेद है जिसमें अध्वर्यु पुरोहित द्वारा पढ़े जाने वाले मंत्र शामिल हैं।
II. इसे शुक्ल और कृष्ण यजुर्वेद में विभाजित किया गया है।
III. इसमें पुनर्जन्म के सिद्धांत के सबसे प्राचीन संदर्भ मिलते हैं।
IV. शतपथ ब्राह्मण, शुक्ल यजुर्वेद से संबद्ध है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, II और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) केवल I, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

34. विदेघ माधव की कथा, जो प्रतीकात्मक रूप से पूर्व की ओर (विदेह क्षेत्र) आर्यों के विस्तार का वर्णन करती है, किस प्राचीन ग्रंथ में मिलती है?
(1) शतपथ ब्राह्मण

(2) ऐतरेय ब्राह्मण
(3) छांदोग्य उपनिषद
(4) मुण्डक उपनिषद
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

35. उत्तर वैदिक प्रशासन में, "रत्निन" कौन थे?
(1) रत्न व्यापारी जो विदेशी व्यापार को नियंत्रित करते थे
(2) शूद्रों की गतिविधियों की निगरानी के लिए नियुक्त गुप्तचर
(3) उच्च राज्य अधिकारी और गणमान्य व्यक्ति जो राजा की सहायता करते थे
(4) विशेष रूप से अथर्ववेद को समर्पित पुरोहित
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

36. वैदिक यज्ञों और उनके उद्देश्यों के संबंध में सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची-I: (वैदिक यज्ञ)
A. राजसूय
B. अश्वमेध
C. वाजपेय
D. अग्निष्टोम
सूची-II: (उद्देश्य)
i. संबंधियों पर राजा का वर्चस्व स्थापित करने हेतु रथ दौड़
ii. सर्वोच्च शक्ति प्रदान करने वाला राज्याभिषेक समारोह
iii. निर्विवाद क्षेत्रीय संप्रभुता का दावा करने हेतु किया जाने वाला अश्व यज्ञ
iv. सोम पान के साथ अग्नि को समर्पित यज्ञ
नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
(1) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(2) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(3) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(4) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

37. निम्नलिखित में से कौन सा उत्तर वैदिक काल के आर्थिक विकास का अपवाद है?
(1) कृषि पर विशेष बल देने के साथ मिश्रित खेती की ओर झुकाव।
(2) धातु कर्म, बुनाई और बढ़ईगिरी जैसी विभिन्न कलाओं और शिल्पों का उदय।
(3) मानकीकृत, राज्य द्वारा जारी धात्विक सिक्कों का व्यापक उपयोग।
(4) चावल और गेहूं जैसी नई फसलों की खेती।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

38. "गोत्र" शब्द का मूल अर्थ क्या था?
(1) एक विशिष्ट समान पुरुष पूर्वज से उत्पन्न होने वाला वंश।
(2) वह स्थान जहाँ पूरे कबीले के पशु रखे जाते थे।
(3) कुछ सामाजिक व्यवसायों से जुड़ी अनुष्ठानिक अशुद्धता।
(4) कृषि उपज के अधिशेष पर लगाया जाने वाला एक विशिष्ट कर।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

39. पूर्व वैदिक देवताओं के संबंध में निम्नलिखित में से सही युग्म की पहचान कीजिए:
(1) अरण्यानी - युद्ध और विनाश की देवी।
(2) उषा - गड़गड़ाहट और बिजली के देवता।
(3) पूषन - शत्रुओं के विनाश के लिए उत्तरदायी देवता।
(4) अदिति - शाश्वतता की देवी और देवताओं की माता।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

40. वेदों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. ऋग्वेद 10 मण्डलों में विभाजित है।
II. 10वें मण्डल में पुरुष सूक्त है, जो चतुर्वर्ण व्यवस्था की रूपरेखा बताता है।
III. तीसरे मण्डल में गायत्री मंत्र है, जो सावित्री को संबोधित है।
IV. अथर्ववेद व्यापक रूप से जादुई मंत्रों और प्राचीन औषधि से संबंधित है।
V. सामवेद शासन कला और राजनीति पर विस्तृत विवरण प्रदान करता है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से असत्य है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल III और IV
(3) केवल V
(4) केवल I, III और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

41. उपनिषदों के दर्शन ने किस दिशा में परिवर्तन को रेखांकित किया?
(1) ज्ञान मार्ग से भक्ति मार्ग की ओर
(2) बहुदेववाद से पूर्ण नास्तिकता की ओर
(3) कर्म मार्ग (अनुष्ठान) से ज्ञान मार्ग की ओर
(4) नगरीय पूजा से खानाबदोश पशुपालन की ओर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

42. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं, एक कथन (A) और एक कारण (R)। उन्हें ध्यान से पढ़ें और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनें:
कथन (A): आरण्यक, ब्राह्मणों के कर्म मार्ग और उपनिषदों के ज्ञान मार्ग के बीच एक सेतु का कार्य करते हैं।
कारण (R): ये ऐसे ग्रंथ थे जिन्हें वन में पढ़ा जाना था और ये यज्ञों के वास्तविक निष्पादन के स्थान पर उनके आध्यात्मिक अर्थ पर केंद्रित थे।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R both correctly but R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

43. उत्तर वैदिक समाज में, "द्विज" (दो बार जन्मा) शब्द किसे संदर्भित करता था?
(1) कुलीन ब्राह्मण जो विशिष्ट राजसी यज्ञ करते थे।
(2) वे कबीले जो सप्त सिंधु से गंगा के मैदानों की ओर विस्थापित हुए।
(3) धनी व्यापारी जिन्होंने समुद्री वाणिज्य हेतु महासागरों को पार किया।
(4) उपनयन संस्कार के पात्र तीन उच्च वर्ण।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

44. उत्तर वैदिक काल में गहन सामाजिक स्तरीकरण और वर्ण व्यवस्था के कठोर होने का मुख्य कारण क्या था?
(1) विदेशी आक्रमणकारियों का निरंतर प्रवाह।
(2) कृषि की ओर झुकाव और अनुष्ठानिक शुद्धता की धारणाएं।
(3) नवनिर्मित स्थायी सेनाओं के आदेश।
(4) पशुपालक संपदा और मवेशियों का पूर्ण विनाश।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

45. पूर्व वैदिक आर्यों के भूगोल के संबंध में असत्य कथन की पहचान कीजिए।
(1) वे हिमालय से परिचित थे, जिसे वे 'हिमवंत' कहते थे।
(2) सरस्वती नदी को सर्वाधिक पवित्र नदी माना जाता था, जिसे 'नदीतमा' कहा जाता था।
(3) उन्होंने पूरे दक्कन के पठार और दक्षिण भारत में निवास किया था।
(4) सिंधु नदी ऋग्वेद में सर्वाधिक बार उल्लेखित नदी है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

46. अतिथि का वर्णन करने के लिए किस पूर्व वैदिक शब्द का प्रयोग किया जाता था, जिसका शाब्दिक अर्थ "वह जिसे गोमांस खिलाया जाता है" होता है?
(1) दुहितृ
(2) व्रजपति
(3) कुलप
(4) गोघ्न
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

47. व्यवसायों या संबंधों के लिए वैदिक शब्दों और उनके अर्थों के संबंध में सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची-I: (वैदिक शब्द)
A. दुहितृ
B. वप्ता
C. तक्षण
D. कर्मार
सूची-II: (अर्थ)
i. नाई
ii. पुत्री (गाय दुहने वाली)
iii. लोहार (धातु शिल्पी)
iv. बढ़ई
नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

48. पूर्व वैदिक काल के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें:
कथन I: पूर्व वैदिक काल में, राजा किसानों से एक नियमित और निश्चित भू-राजस्व प्रणाली वसूलता था।
कथन II: पूर्व वैदिक काल में प्रशासनिक ढांचा सरल था और मुख्यतः कबीलाई संबंधों पर आधारित था।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है और कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

49. ऋग्वेद में, "पणि" शब्द का प्रयोग किस समूह के लिए किया गया था?
(1) पुरोहित जिन्होंने अश्वमेध यज्ञ का संचालन किया।
(2) धनी व्यापारी और पशु चोर।
(3) स्थानीय ग्राम प्रधान जिन्होंने स्वैच्छिक बलि एकत्र की।
(4) सैन्य रथ बनाने में कुशल कारीगर।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

50. पूर्व वैदिक काल के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. समाज पूर्णतः समतावादी था जिसमें कोई सामाजिक असमानता नहीं थी।
II. परिवार की संरचना पितृसत्तात्मक थी, जिसमें सबसे बड़ा पुरुष 'कुलप' कहलाता था।
III. दास प्रथा के साक्ष्य मिलते हैं, जिसमें मुख्य रूप से महिलाएं घरेलू कार्यों में संलग्न थीं।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

51. निम्नलिखित में से कौन से देवता भिन्न हैं, जिनका पूर्व वैदिक काल में अत्यधिक सम्मान था परंतु उत्तर वैदिक काल में उन्होंने अपना महत्व खो दिया?
(1) प्रजापति
(2) विष्णु
(3) इंद्र
(4) रुद्र
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Downloaded from www.pdf.tube

52. उत्तर वैदिक चरण निम्नलिखित में से किस मृदभांड संस्कृति से दृढ़ता से जुड़ा हुआ है?
(1) हड़प्पा के लाल मृदभांड
(2) महापाषाणकालीन कृष्ण और लोहित मृदभांड
(3) रुलेटेड मृदभांड
(4) चित्रित धूसर मृदभांड (PGW)
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

53. वैदिक साहित्य की श्रेणियों को उनकी रचना के सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
I. ब्राह्मण
II. उपनिषद
III. संहिता
IV. आरण्यक
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही क्रम चुनें:
(1) III, I, IV, II
(2) I, III, II, IV
(3) III, IV, I, II
(4) IV, III, I, II
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

54. उत्तर वैदिक काल के अंत में हुए राजनीतिक परिवर्तनों के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।
(1) कबीलाई सभाओं ने राजाओं पर अपना पूर्ण अधिकार पुनः प्राप्त कर लिया।
(2) 'महाजनपद' के रूप में जाने जाने वाले विशाल क्षेत्रीय राज्यों का उदय होने लगा।
(3) वैदिक आर्यों ने पशुपालक खानाबदोश जीवन में लौटने के लिए कृषि छोड़ दी।
(4) राजपद पूर्णतः गैर-वंशानुगत और निर्वाचित हो गया।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

55. उत्तर वैदिक अर्थव्यवस्था के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. कृषि आजीविका का मुख्य साधन बन गई।
II. 'श्रेष्ठिन' जैसे शब्दों द्वारा सूचित व्यापारिक संघ प्रकट होने लगे।
III. वस्तु विनिमय प्रणाली को पूरी तरह से स्वर्ण मुद्राओं द्वारा प्रतिस्थापित कर दिया गया था।
IV. लोहे के फाल (ploughshares) के उपयोग से कृषि उपज में वृद्धि हुई।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, II और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) केवल I, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

56. निम्नलिखित सामाजिक विशेषताओं में से कौन सी एक उत्तर वैदिक काल के दौरान पूर्णतः स्थापित नहीं हुई थी?
(1) अस्पृश्यता की कठोर प्रथा
(2) चार वर्णों की अवधारणा
(3) आश्रम व्यवस्था
(4) गोत्र व्यवस्था
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

57. पूर्व वैदिक धर्म से उत्तर वैदिक धर्म में परिवर्तन की मुख्य विशेषता क्या थी?
(1) एकेश्वरवाद के पक्ष में प्रकृति के देवताओं का पूर्ण परित्याग।
(2) मंदिर-केंद्रित मूर्ति पूजा का उदय।
(3) सरल प्रार्थनाओं से जटिल अनुष्ठानिक यज्ञों की ओर झुकाव।
(4) पारंपरिक ब्राह्मणवादी पुरोहित वर्ग की पूर्ण अस्वीकृति।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

58. उपनिषदों और उनके मुख्य विषयों के संबंध में सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची-I: (उपनिषद)
A. मुण्डक उपनिषद
B. छांदोग्य उपनिषद
C. कठोपनिषद
D. बृहदारण्यक उपनिषद
सूची-II: (मुख्य विषय/वाक्यांश)
i. यम और नचिकेता संवाद
ii. "सत्यमेव जयते"
iii. प्रथम तीन आश्रमों का प्राचीनतम संदर्भ
iv. याज्ञवल्क्य के दार्शनिक संवाद
नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
(1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

59. वेदों को समझने में सहायता के लिए वेदांगों की रचना की गई थी। निम्नलिखित में से कौन सा छह वेदांगों में सम्मिलित नहीं है?
(1) शिक्षा
(2) कल्प
(3) निरुक्त
(4) न्याय
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

60. पूर्व वैदिक सामाजिक प्रथाओं के संबंध में सही युग्म की पहचान कीजिए:
(1) स्वयंवर - अविवाहित महिलाओं पर लगाया जाने वाला कर।
(2) नियोग - विधवा द्वारा संतान प्राप्ति हेतु देवर या निकट संबंधी के साथ रहने की प्रथा।
(3) उपनयन - शूद्र बालकों के लिए आरक्षित अनुष्ठान।
(4) अनुलोम - निम्न वर्ण के पुरुष और उच्च वर्ण की महिला

के बीच विवाह।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

61. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं, एक कथन (A) और एक कारण (R)। उन्हें ध्यान से पढ़ें और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनें:
कथन (A): उत्तर वैदिक काल में महिलाओं ने सभा और विदथ में भाग लेने का अधिकार खो दिया।
कारण (R): पितृसत्तात्मक नियंत्रण का कड़ा होना कृषि समाज के विकास, निजी संपत्ति और क्षेत्रीय राज्यों के उदय से जुड़ा था।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

62. दशराज्ञ युद्ध के दौरान भरत कबीले के राजा सुदास की सहायता किस ऋग्वैदिक ऋषि ने की थी?
(1) विश्वामित्र
(2) अगस्त्य
(3) वाल्मीकि
(4) वशिष्ठ
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

63. उत्तर वैदिक काल का प्रमुख कुरु कबीला किन दो प्रमुख पूर्व वैदिक कबीलों के मेल से बना था?
(1) पुरु और भरत
(2) यदु और तुर्वश
(3) अनु और द्रुह्यु
(4) मत्स्य और चेदि
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

64. पूर्व वैदिक अधिकारियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. सेनानी सेना का प्रमुख था।
II. पुरोहित मुख्य पुजारी और राजा का प्रमुख सलाहकार था।
III. ग्रामिणी ग्राम का मुखिया था।
IV. स्पश गुप्तचरों के रूप में कार्य करते थे।
V. भागदुघ मुख्य न्यायिक अधिकारी था।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III और IV
(2) केवल I, II, III और V
(3) केवल II, III, IV और V
(4) केवल I, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

65. पूर्व वैदिक अर्थव्यवस्था के संबंध में असत्य कथन की पहचान कीजिए।
(1) भूमि को एक स्थापित निजी संपत्ति नहीं माना जाता था।
(2) अर्थव्यवस्था तटीय समुद्री व्यापार और मसालों के निर्यात पर निर्भर थी।
(3) संपत्ति का मापन मुख्यतः पशुओं (मवेशियों) के रूप में किया जाता था।
(4) बढ़ईगिरी और रथ निर्माण सम्मानित पेशे थे।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

66. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें:
कथन I: ऋग्वैदिक समाज ने विधवाओं के पुनर्विवाह पर कड़ा प्रतिबंध लगाया था।
कथन II: पूर्व वैदिक काल में बाल विवाह की प्रथा अनुपस्थित थी।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है और कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

67. ऋग्वैदिक देवताओं को समर्पित भजनों की संख्या के आधार पर उनके महत्व का घटते क्रम में सही अनुक्रम क्या है?
(1) अग्नि - इंद्र - सोम - वरुण
(2) इंद्र - अग्नि - सोम - सूर्य
(3) वरुण - इंद्र - अग्नि - सोम
(4) इंद्र - वरुण - अग्नि - सोम
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

68. उत्तर वैदिक संस्कृति का भौगोलिक केंद्र सप्त सिंधु क्षेत्र से मुख्यतः कहाँ स्थानांतरित हो गया?
(1) नर्मदा घाटी
(2) कावेरी डेल्टा
(3) पूर्वी भारत का मगध क्षेत्र
(4) कुरुक्षेत्र क्षेत्र और गंगा-यमुना दोआब
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

69. उत्तर वैदिक अधिकारियों (रत्निनों) और उनके कार्यों के संबंध में सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची-I: (रत्निन)
A. भागदुघ
B. संग्रहीतृ
C. सूत
D. अक्षवाप
सूची-II: (कार्य)
i. सारथी/दरबारी गायक
ii. कर संग्राहक
iii. कोषाध्यक्ष
iv. पासे के खेल का निरीक्षक
नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
(1) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(2) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(3) A-ii, B-iii, C-i, D-iv

Click Here to Buy book on Amazon

(4) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

70. उत्तर वैदिक काल में लोहे के फाल के व्यापक उपयोग का प्रत्यक्ष आर्थिक प्रभाव क्या था?
(1) पारंपरिक पशुपालन का तत्काल परित्याग।
(2) कठोर मिट्टी की गहरी जुताई जिससे कृषि अधिशेष उत्पन्न हुआ।
(3) लौह मुद्राओं की ढलाई के कारण मुद्रास्फीति।
(4) कृषि को केवल नदी तटों तक सीमित रखना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

71. पुरुष सूक्त के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह ऋग्वेद के 10वें मण्डल में पाया जाता है।
II. यह समाज के चार वर्गों में विभाजन का प्राचीनतम पाठ्य संदर्भ प्रदान करता है।
III. यह स्पष्ट रूप से यज्ञों की प्रथा की निंदा करता है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से असत्य है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल III
(3) केवल II और III
(4) केवल I
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

72. निम्नलिखित में से कौन सा परिवर्तन उत्तर वैदिक काल की सामान्य प्रवृत्तियों का अपवाद है?
(1) ब्रह्मांडीय व्यवस्था के रक्षक के रूप में वरुण का महत्व बढ़ा।
(2) प्रजापति सर्वोच्च रचयिता देवता के रूप में उभरे।
(3) विस्तृत पशु बलि पूजा की एक मुख्य विशेषता बन गई।
(4) पुरोहित वर्ग ने अनुष्ठानों पर अपना एकाधिकार सुदृढ़ किया।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

73. "ब्राह्मण" ग्रंथों में मुख्य रूप से क्या सम्मिलित है?
(1) आत्मा की प्रकृति की दार्शनिक जांच।
(2) प्रारंभिक कबीलाई सरदारों की वंशावली।
(3) यज्ञ अनुष्ठानों और मंत्रों की गद्य व्याख्याएँ।
(4) वैदिक व्याकरण पर वैज्ञानिक ग्रंथ।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

74. उपनिषदिक विचार के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह इस बात पर बल देता है कि मोक्ष ज्ञान से प्राप्त होता है, अनुष्ठानों से नहीं।
II. यह 'माया' या भ्रम की अवधारणा प्रस्तुत करता है।
III. यह आध्यात्मिक मुक्ति हेतु अश्वमेध यज्ञ का समर्थन करता है।
IV. यह कर्म और पुनर्जन्म के सिद्धांत पर केंद्रित है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, II और IV
(4) केवल I और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

75. उत्तर वैदिक आश्रम व्यवस्था के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प भिन्न है?
(1) ब्रह्मचर्य
(2) गृहस्थ
(3) वानप्रस्थ
(4) मोक्ष
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

76. प्रसिद्ध पुस्तक "द आर्कटिक होम इन द वेदाज़", जो आर्यों की उत्पत्ति हेतु खगोलीय गणनाओं का उपयोग करती है, किसके द्वारा लिखी गई थी?
(1) स्वामी विवेकानंद
(2) बाल गंगाधर तिलक
(3) आर.सी. मजूमदार
(4) वी.डी. सावरकर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

77. पूर्व वैदिक भूगोल के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।
(1) ऋग्वैदिक आर्य मरुस्थल से पूर्णतः अनभिज्ञ थे।
(2) ऋग्वेद में विंध्य पर्वत का बार-बार उल्लेख मिलता है।
(3) ऋग्वेद में मरुस्थल का उल्लेख 'धन्व' के रूप में किया गया है।
(4) गंगा नदी का उल्लेख सिंधु नदी की तुलना में अधिक बार हुआ है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

78. अफगानिस्तान क्षेत्र की नदियों के प्राचीन और आधुनिक नामों के संबंध में सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची-I: (प्राचीन नाम)
A. कुभा
B. क्रुमु
C. गोमती
D. सुवास्तु
सूची-II: (आधुनिक नाम)
i. गोमल
ii. काबुल
iii. स्वात
iv. कुर्रम
नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
(1) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

79. वैदिक आहार और रीति-रिवाजों के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें:
कथन I: ऋग्वैदिक आहार में दूध, घी, सब्जियों और मांस का समावेश था, जबकि मछली का सेवन विरल था।
कथन II: सोम एक सम्मानित अनुष्ठानिक पेय था, जबकि सुरा की निंदा की जाती थी।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है और कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

80. वैदिक युग के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. पूर्व वैदिक काल अर्ध-खानाबदोश था, जबकि उत्तर वैदिक काल में क्षेत्रीय राज्यों का उदय हुआ।
II. ऋग्वेद पूर्व वैदिक काल के दौरान रचित एकमात्र वेद था।
III. उत्तर वैदिक काल में शूद्रों की सामाजिक स्थिति में सुधार हुआ।
IV. उत्तर वैदिक काल में महिलाओं ने उपनयन संस्कार का अधिकार खो दिया।
V. पूर्व और उत्तर वैदिक दोनों कालों में लौह तकनीक पूर्णतः अज्ञात थी।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II और IV
(2) केवल I, III और V
(3) केवल II, IV और V
(4) केवल I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Downloaded from www.pdf.tube

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) मैक्स मूलर
मैक्स मूलर ने भाषावैज्ञानिक साक्ष्यों के आधार पर यह सिद्धांत दिया कि आर्य मूलतः मध्य एशिया के निवासी थे। उन्होंने संस्कृत, यूनानी और लैटिन जैसी प्राचीन भाषाओं में गहरी संरचनात्मक समानताएं देखीं। उनके अनुसार, ये सभी भाषाएं एक ही मूल भाषा परिवार से संबंधित थीं। इस सिद्धांत को ऐतिहासिक शोध में प्रमुखता मिली, जिसने आर्यों के प्राचीन प्रवास को समझने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।
भाषावैज्ञानिक साक्ष्य इन क्षेत्रों के निवासियों के मध्य साझा सांस्कृतिक और भाषाई संबंधों की पुष्टि करते हैं। मैक्स मूलर का यह शोध आधुनिक ऐतिहासिक विमर्श का मुख्य आधार बना।

2. (1) तुर्की
बोगाजकोई अभिलेख वर्तमान तुर्की के एशिया माइनर क्षेत्र में स्थित है। यह अभिलेख लगभग 1400 ईसा पूर्व का है, जिसमें मितन्नी और हित्ती शासकों के मध्य हुई संधि का उल्लेख है। विशेष रूप से, इस संधि की पुष्टि हेतु इंद्र, वरुण, मित्र और नासत्य जैसे वैदिक देवताओं को साक्षी माना गया है। यह भारत के बाहर वैदिक देवताओं के प्राचीनतम साक्ष्यों में से एक है।
यह खोज सिद्ध करती है कि वैदिक देवताओं की मान्यता पश्चिम एशिया तक विस्तृत थी। इस अभिलेख ने आर्यों के प्रसार और कालक्रम को समझने में इतिहासकारों की सहायता की है।

3. (3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
ऋग्वैदिक काल में सप्त सिंधु क्षेत्र की नदियों के नाम वर्तमान नामों से भिन्न थे। वितस्ता को झेलम, असिक्नी को चिनाब और परुष्णी को रावी कहा जाता था। शुतुद्री नदी आधुनिक सतलुज नदी का प्राचीन नाम है। ये नदियाँ उत्तर-पश्चिमी भारत की भौगोलिक संरचना का मुख्य आधार थीं। ऋग्वेद में इनका उल्लेख तत्कालीन भूगोल की सटीकता और आर्यों के निवास क्षेत्र को प्रमाणित करता है।
नदियों के नामों में परिवर्तन ऐतिहासिक विकास और भाषाई बदलावों का परिणाम है। ऋग्वेद में इन नदियों का बार-बार उल्लेख तत्कालीन भौगोलिक स्थिति की प्रामाणिकता को पुष्ट करता है।

4. (4) मुख्य रूप से पशुपालन और गतिशीलता पर आधारित कबीलाई और पशुपालक समाज।
पूर्व वैदिक समाज मुख्य रूप से कबीलाई संरचना पर आधारित था। इस काल में जीवन अर्ध-घुमंतू था, जहाँ पशुपालन आजीविका का प्राथमिक साधन था। गायों को सर्वाधिक मूल्यवान संपत्ति माना जाता था और समृद्धि की गणना मवेशियों की संख्या से होती थी। कृषि का महत्व गौण था और समाज में गतिशीलता अधिक थी, जिस कारण स्थायी बस्तियों का प्रायः अभाव देखा गया था। कबीलाई संरचना के कारण समाज में समानता का भाव अधिक था। यह काल भारतीय इतिहास में एक संक्रमणकालीन चरण था, जो कालांतर में स्थायी कृषि और बस्तियों की ओर बढ़ा।

5. (3) विदथ
ऋग्वैदिक काल में 'विदथ' सर्वाधिक प्राचीन कबीलाई परिषद मानी जाती थी। यह संस्था मुख्य रूप से धार्मिक, सैन्य और आर्थिक कार्यों के संपादन के लिए उत्तरदायी थी। इसकी सबसे विशिष्ट विशेषता यह थी कि इसमें पुरुष और महिलाएं दोनों समान रूप से सम्मिलित होते थे। ऋग्वेद में इसका अनेक बार उल्लेख हुआ है, जो पूर्व वैदिक समाज की लोकतांत्रिक और समतावादी जड़ों का प्रतीक है।
विदथ जैसी संस्थाएं दर्शाती हैं कि प्रारंभिक वैदिक समाज में निर्णय प्रक्रिया सामूहिक और समावेशी थी। समय के साथ सुदृढ़ राजतंत्र के उदय से ऐसी संस्थाओं का प्रभाव क्षीण होता गया।

6. (2) बाल विवाह और सती प्रथा व्यापक रूप से प्रचलित थी।
ऋग्वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति सम्मानजनक थी और उस समय बाल विवाह या सती प्रथा जैसी सामाजिक कुरीतियों का कोई प्रमाण नहीं मिलता है। कन्याओं का विवाह सामान्यतः परिपक्व अवस्था में होता था और उन्हें जीवनसाथी चुनने का अधिकार था। वे आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करती थीं और उन्हें उपनयन संस्कार के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने की पूर्ण अनुमति प्राप्त थी।
समाज में महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण थी और वे धार्मिक अनुष्ठानों में सक्रिय भागीदारी करती थीं। पितृसत्तात्मक ढांचा होने के बावजूद महिलाओं को पर्याप्त सामाजिक और धार्मिक स्वतंत्रता प्राप्त थी।

7. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
पूर्व वैदिक काल में राजा निरंकुश शासक नहीं, अपितु कबीले का रक्षक होता था। उसके अधिकार 'सभा' और 'समिति' जैसी संस्थाओं द्वारा नियंत्रित और सीमित थे। समिति एक आम सभा थी जिसमें कबीले के सभी सदस्य भाग लेते थे, जबकि सभा वरिष्ठों की परिषद थी। राजा को अपने निर्णयों के लिए इन संस्थाओं के प्रति उत्तरदायी होना पड़ता था।
राजा की शक्ति मुख्य रूप से युद्ध और कबीले की सुरक्षा तक ही सीमित थी। सभा और समिति ने शासक को तानाशाह बनने से रोकने में एक संवैधानिक अंग के समान कार्य किया।

8. (1) गायों की खोज, जो अक्सर कबीलाई संघर्षों या युद्धों का कारण बनती थी
ऋग्वैदिक अर्थव्यवस्था में गायों का स्थान सर्वोपरि था, जिन्हें प्रमुख संपत्ति माना जाता था। 'गविष्टि' शब्द का शाब्दिक अर्थ 'गायों की खोज' है, जो कालांतर में युद्ध का पर्यायवाची बन

NODIA

गया। चूँकि कबीलों के मध्य मुख्य संघर्ष मवेशियों पर नियंत्रण पाने हेतु होते थे, इसलिए गविष्टि युद्ध का मुख्य कारण थी। इससे ज्ञात होता है कि समाज में पशु संपदा भूमि से अधिक मूल्यवान थी।
मवेशियों के लिए होने वाले ये युद्ध केवल आर्थिक लाभ के लिए नहीं, अपितु कबीले की प्रतिष्ठा से भी जुड़े थे। ऋग्वेद में युद्ध हेतु प्रयुक्त यह शब्द अत्यंत महत्वपूर्ण है।

9. (3) सोने का आभूषण या विनिमय में प्रयुक्त मूल्य की एक इकाई।
पूर्व वैदिक काल में निष्क मूलतः एक स्वर्ण आभूषण था, जिसे गले में पहना जाता था। धीरे-धीरे इसका उपयोग विनिमय के माध्यम के रूप में होने लगा और यह मूल्य की एक विशिष्ट इकाई बन गया। यद्यपि इस काल में नियमित मुद्राओं का अभाव था, किंतु निष्क जैसे आभूषण व्यापार और लेनदेन को सुगम बनाने में सहायक थे। यह आर्थिक विकास और धातु शोधन की प्रगति दर्शाता है।
निष्क का उपयोग दान और पुरस्कार देने के लिए भी किया जाता था। यह तत्कालीन समाज में विनिमय की बढ़ती जटिलता और स्वर्ण के प्रति बढ़ते आकर्षण का स्पष्ट संकेत देता है।

10. (1) केवल I और II
ऋग्वैदिक काल में इंद्र सर्वाधिक शक्तिशाली देवता थे, जिन्हें दुर्गों को नष्ट करने के कारण 'पुरंदर' कहा जाता था। उनके पश्चात वरुण का स्थान था, जो ब्रह्मांडीय नैतिक व्यवस्था 'ऋत' के नियामक माने जाते थे। इस काल के धर्म में यज्ञों की प्रधानता थी, किंतु मंदिर निर्माण या मूर्ति पूजा का कोई साक्ष्य नहीं मिलता है। पूजा मुख्य रुप से प्रकृति की शक्तियों के प्रति कृतज्ञता हेतु की जाती थी।
प्रकृति की शक्तियों का दैवीकरण इस काल की मुख्य विशेषता थी। यज्ञ सरल थे और उनमें किसी जटिल मंदिर वास्तुकला की आवश्यकता नहीं होती थी, जो बाद के कालों में विकसित हुई।

11. (4) स्थायी कृषि की ओर झुकाव और क्षेत्रीय राज्यों का उदय
पूर्व वैदिक से उत्तर वैदिक काल में परिवर्तन की मुख्य विशेषता स्थायी कृषि आधारित जीवन शैली अपनाना था। लोहे के उपयोग ने गंगा के मैदानों में वनों की सफाई और गहरी जुताई को संभव बनाया। इसके परिणामस्वरूप कृषि अधिशेष उत्पन्न हुआ, जिससे जनसंख्या में वृद्धि हुई। कबीलाई पहचान 'जन' का स्थान क्षेत्रीय पहचान 'जनपद' ने ले लिया, जिससे बड़े राज्यों का मार्ग प्रशस्त हुआ।
यह कालखंड कबीलाई संरचना के विघटन और राजतंत्रात्मक राज्यों के सुदृढ़ीकरण का साक्षी बना। कृषि क्रांति ने तत्कालीन सामाजिक और राजनीतिक ढांचे को पूर्णतः परिवर्तित कर दिया था।

12. (2) कुल - ग्राम - विश - जन - राष्ट्र
ऋग्वैदिक काल में राजनीतिक संगठन का ढाँचा सोपानवत था। समाज की आधारभूत इकाई 'कुल' या परिवार थी, जिसके प्रमुख को 'कुलप' कहा जाता था। परिवारों के समूह से 'ग्राम' बनता था और ग्रामों के समूह को 'विश' कहा जाता था। अनेक विश मिलकर 'जन' का निर्माण करते थे, जो कबीले की सबसे बड़ी इकाई थी। उत्तर वैदिक काल में ये जन 'राष्ट्र' के रूप में विकसित हुए।
यह वर्गीकरण कबीलाई प्रशासन को सुचारु रुप से संचालित करने में सहायक था। जैसे-जैसे समाज का विस्तार हुआ, इन लघु इकाइयों ने मिलकर अधिक जटिल और विशाल राजनीतिक संरचनाओं का रूप ले लिया।

13. (3) चित्रित धूसर मृदभांड (PGW)
उत्तर वैदिक काल के पुरातात्विक साक्ष्य मुख्य रुप से चित्रित धूसर मृदभांड संस्कृति में प्राप्त होते हैं। इस संस्कृति के अवशेष पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के ऊपरी गंगा-यमुना दोआब क्षेत्र में मिले हैं। इन पात्रों पर धूसर सतह पर काले रंग के ज्यामितीय डिजाइन बने होते थे। इस काल के लोग लोहे के उपकरणों का प्रयोग करते थे, जो उनके कृषि विस्तार का मुख्य आधार बने।
चित्रित धूसर मृदभांड संस्कृति उत्तर वैदिक समाज की भौतिक प्रगति और बस्तियों के स्थायित्व को प्रदर्शित करती है। यह पुरातात्विक साक्ष्य साहित्यिक स्रोतों के साथ मिलकर ऐतिहासिक सटीकता को बढ़ाते हैं।

14. (4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
वैदिक देवकुल में प्रत्येक देवता के विशिष्ट कार्य निर्धारित थे। अग्नि को देवताओं और मनुष्यों के मध्य माध्यम माना जाता था क्योंकि यज्ञ की आहुति उन्हीं के द्वारा देवताओं तक पहुँचती थी। सोम वनस्पतियों के देवता थे, जबकि मरुत आंधी और तूफ़ान के स्वामी माने जाते थे। अश्विनों को दिव्य चिकित्सक के रूप में पूजा जाता था, जो रोगों का निवारण करते थे और स्वास्थ्य प्रदान करते थे।
देवताओं का यह वर्गीकरण प्रकृति की शक्तियों के प्रति आर्यों के सूक्ष्म अवलोकन को दर्शाता है। अग्नि की मध्यस्थता वैदिक अनुष्ठानों का सबसे केंद्रीय और अनिवार्य भाग मानी जाती थी।

15. (1) लोहा (कृष्ण अयस)
उत्तर वैदिक काल में लोहे के प्रयोग ने क्रांतिकारी परिवर्तन किए। इसे तत्कालीन ग्रंथों में 'कृष्ण अयस' या 'श्याम अयस' कहा गया है। लोहे की कुल्हाड़ियों से घने वनों को साफ करना सुगम हुआ और लोहे के फाल वाले हलों ने कठोर मृदा की जुताई को संभव बनाया। इसने कृषि क्षेत्र का विस्तार किया और अधिशेष उत्पादन के कारण स्थायी बस्तियों के निर्माण की प्रक्रिया को गति प्रदान की।
लोहे के उपयोग ने न केवल कृषि अपितु युद्ध कला को भी उन्नत बनाया। इस धातु ने गंगा घाटी में बस्तियों के सघन विस्तार और आर्थिक समृद्धि के नवीन मार्ग प्रशस्त कर दिए थे।

16. (2) शासक द्वारा वसूला जाने वाला एक अनिवार्य कर।
पूर्व वैदिक काल में 'बलि' एक स्वैच्छिक उपहार था, जिसे कबीले के सदस्य अपने मुखिया को श्रद्धापूर्वक अर्पित करते थे। किंतु उत्तर वैदिक काल में राजपद के शक्तिशाली होने और प्रशासनिक संरचना के जटिल होने पर बलि का स्वरूप परिवर्तित हो गया। अब यह जनता पर आरोपित एक अनिवार्य कर बन गया था। राजा ने इसे नियमित रूप से वसूलना प्रारंभ किया ताकि राज्य के बढ़ते व्यय को वहन किया जा सके।

Click Here to Buy book on Amazon

कर संग्रहण की इस नवीन व्यवस्था ने राजकोष को सुदृढ़ किया और राजा की शक्ति में वृद्धि की। स्वैच्छिक भेंट का अनिवार्य कर में परिवर्तित होना राजनीतिक विकास का प्रमुख संकेत है।

17. (2) तक्षण - बुनकर
वैदिक काल में विभिन्न व्यवसायों हेतु विशिष्ट शब्दावली प्रचलित थी। 'व्रीहि' का प्रयोग चावल हेतु और 'गोधूम' का प्रयोग गेहूं हेतु किया जाता था, जबकि 'यव' का अर्थ जौ था। 'तक्षण' शब्द का प्रयोग वास्तव में बढ़ई के लिए किया जाता था, न कि बुनकर के लिए। ऋग्वैदिक समाज में बढ़ईगिरी एक सम्मानित व्यवसाय था क्योंकि रथों और कृषि उपकरणों का निर्माण समाज की प्रगति हेतु अनिवार्य था।
शब्दावली में यह अंतर व्यवसायों के पारंपरिक वर्गीकरण को स्पष्ट करता है। तत्कालीन समाज में शिल्पी और कृषक अर्थव्यवस्था के दो महत्वपूर्ण स्तंभ थे, जिनकी भूमिका राष्ट्र निर्माण में अद्वितीय मानी जाती थी।

18. (2) केवल III
उत्तर वैदिक काल में क्षेत्रीय पहचान और विशाल यज्ञों के माध्यम से राजा की शक्ति में पर्याप्त वृद्धि हुई। सभा और समिति जैसी कबीलाई संस्थाओं का प्रभाव क्षीण हो गया और उनमें कुलीन वर्ग का वर्चस्व बढ़ गया। यद्यपि राजा शक्तिशाली हुआ, किंतु इस काल में किसी औपचारिक और विशाल स्थायी सेना का गठन नहीं हुआ था। युद्ध के समय अभी भी कबीलाई समूहों या स्थानीय लड़ाकों का सहयोग लिया जाता था।
स्थायी सेना का अभाव यह दर्शाता है कि राज्य अभी विकास के प्रारंभिक चरण में था। राजा अपनी सुरक्षा और सैन्य शक्ति हेतु पूर्णतः अपने कबीले के सरदारों और अनुयायियों के सहयोग पर निर्भर था।

19. (3) उत्तर वैदिक काल
ऋग्वेद के अंतिम चरण में वर्णों का उल्लेख मिलता है, किंतु एक कठोर और जन्म आधारित वर्ण व्यवस्था मुख्य रूप से उत्तर वैदिक काल में स्थापित हुई। इस काल में समाज स्पष्ट रूप से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र नामक चार वर्गों में विभाजित हो गया। व्यवसायों का निर्धारण अब जन्म के आधार पर होने लगा और विभिन्न वर्गों के मध्य सामाजिक दूरी बढ़ गई। इसने दीर्घकालिक भारतीय सामाजिक संरचना को निर्मित किया।
यह विभाजन आर्थिक कार्यों के विशेषीकरण और धार्मिक अनुष्ठानों की बढ़ती जटिलता के कारण हुआ था। इसने समाज में एक सोपानवत व्यवस्था को जन्म दिया, जिसने सदियों तक भारतीय सामाजिक जीवन को प्रभावित किया।

20. (2) III, IV, I, II
हिंदू दर्शन में मानव जीवन को चार चरणों में विभाजित किया गया है, जिन्हें आश्रम कहा जाता है। प्रथम चरण 'ब्रह्मचर्य' है, जो शिक्षा और अनुशासन का काल है। इसके पश्चात 'गृहस्थ' आश्रम आता है, जहाँ व्यक्ति पारिवारिक उत्तरदायित्वों का निर्वहन करता है। तृतीय चरण 'वानप्रस्थ' है, जो सांसारिक मोह से मुक्ति की तैयारी है। अंत में 'संन्यास' आश्रम आता है, जो पूर्ण वैराग्य और मोक्ष हेतु समर्पित है।
आश्रम व्यवस्था का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति के भौतिक और आध्यात्मिक जीवन के मध्य संतुलन स्थापित करना था। यह प्रणाली समाज में अनुशासन और क्रमबद्ध जीवन शैली को प्रोत्साहित करने हेतु विकसित की गई थी।

21. (3) प्रजापति
उत्तर वैदिक काल में धार्मिक दृष्टिकोण में व्यापक परिवर्तन आए। ऋग्वैदिक काल के प्रमुख देवताओं, इंद्र और अग्नि, का प्रभाव कम हुआ और 'प्रजापति' सर्वोच्च स्थान पर प्रतिष्ठित हुए। उन्हें ब्रह्मांड का रचयिता और समस्त जीवों का स्वामी माना जाने लगा। साथ ही, विष्णु और रुद्र जैसे देवताओं का महत्व भी बढ़ने लगा। यज्ञों की प्रक्रिया जटिल हो गई और प्रजापति को प्रसन्न करना ही मुख्य धार्मिक उद्देश्य बन गया।
प्रजापति की प्रधानता ने ब्रह्मांडीय सृजन के दार्शनिक पहलुओं को धर्म का केंद्र बना दिया। यह बदलाव सरल प्रकृति पूजा से अधिक अमूर्त और जटिल आध्यात्मिक चिंतन की ओर संक्रमण का परिचायक है।

22. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
उत्तर वैदिक काल में महिलाओं की सामाजिक स्थिति में उल्लेखनीय गिरावट आई। उन्हें सभा और समिति जैसी महत्वपूर्ण राजनीतिक संस्थाओं से निष्कासित कर दिया गया, जहाँ वे पूर्व में सक्रिय भागीदारी करती थीं। इसके अतिरिक्त, उन्हें उपनयन संस्कार और औपचारिक शिक्षा के अधिकारों से भी वंचित कर दिया गया। समाज में पितृसत्तात्मक प्रवृत्तियाँ प्रभावी होने से महिलाओं की स्वायत्तता सीमित हो गई और वे घरेलू उत्तरदायित्वों तक सिमट गईं।
सामाजिक संरचना में आए इन परिवर्तनों ने महिलाओं की सार्वजनिक भूमिका को समाप्त कर दिया। शिक्षा और राजनीति से बेदखली ने समाज में लैंगिक असमानता की गहरी नींव रख दी थी, जो आगे भी जारी रही।

23. (4) सामवेद
सामवेद को भारतीय संगीत का मूल स्रोत माना जाता है। इसमें मुख्य रूप से ऋग्वेद से ली गई ऋचाएं संकलित हैं, जिन्हें यज्ञों के समय 'उद्गातृ' पुरोहितों द्वारा स्वरबद्ध करके गाया जाता था। इन मंत्रों का संगीतमय गायन अनुष्ठानों को अधिक प्रभावशाली और श्रद्धापूर्ण बनाता था। इस वेद का मुख्य उद्देश्य आध्यात्मिक शांति और संगीत के माध्यम से देवताओं की स्तुति करना था, जो वैदिक कला का उत्कृष्ट उदाहरण है।
सामवेद की ऋचाएं केवल धार्मिक ही नहीं, अपितु कलात्मक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। संगीत और आध्यात्मिकता के इस मेल ने भारतीय सांस्कृतिक परंपराओं को एक विशिष्ट और मधुर स्वरूप प्रदान किया है।

24. (1) आत्मा और ब्रह्म की एकता का अनुभव।
उपनिषद वैदिक साहित्य के अंतिम भाग हैं, जिन्हें 'वेदांत' भी कहा जाता है। इनका मुख्य दर्शन जटिल कर्मकांडों के स्थान पर आध्यात्मिक ज्ञान की खोज पर केंद्रित है। इनमें मुख्य रूप से आत्मा और ब्रह्म की एकता का विवेचन किया गया है। उपनिषदों के अनुसार, आत्म-साक्षात्कार ही मोक्ष का एकमात्र

Downloaded from www.pdf.tube

मार्ग है। इन ग्रंथों ने भारतीय चिंतन परंपरा को समृद्ध किया और बाद के दार्शनिक संप्रदायों का आधार बने।
उपनिषदों ने कर्मकांड की प्रधानता को चुनौती दी और मानव चेतना को गहरे आत्म-मंथन की ओर प्रेरित किया। यह दार्शनिक क्रांति भारतीय इतिहास में बौद्धिक जागृति का एक अत्यंत महत्वपूर्ण सोपान मानी जाती है।

25. (3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
प्रत्येक वेद के विधिवत पाठ और यज्ञ संचालन हेतु विशिष्ट पुरोहित नियुक्त थे। ऋग्वेद के मंत्रों का पाठ करने वाले पुरोहित को 'होतृ' कहा जाता था। सामवेद के भजनों को संगीतमय ढंग से गाने वाले को 'उद्गातृ' कहते थे। यजुर्वेद के अनुष्ठानिक मंत्रों और यज्ञ क्रियाओं को संपन्न करने वाले को 'अध्वर्यु' कहा जाता था। अंत में, अथर्ववेद का निरीक्षण करने वाले सर्वोच्च पुरोहित को 'ब्रह्मा' कहा गया था।
पुरोहितों का यह विशिष्ट वर्गीकरण वैदिक अनुष्ठानों की जटिलता और सटीकता को प्रदर्शित करता है। प्रत्येक पुरोहित का कार्य उसके संबंधित वेद के आध्यात्मिक उद्देश्यों और पद्धतियों के साथ पूर्णतः संरेखित होता था।

26. (1) गार्गी वाचक्रवी
ऋग्वैदिक काल में कई विदुषी महिलाओं ने भजनों की रचना की थी, जिनमें लोपामुद्रा, घोषा और अपाला प्रमुख हैं। ये महिलाएं समाज में उच्च शैक्षणिक और आध्यात्मिक दर्जा रखती थीं। दूसरी ओर, गार्गी वाचक्रवी उत्तर वैदिक काल की प्रसिद्ध दार्शनिक थीं, जिनका उल्लेख उपनिषदों में प्राप्त होता है। उन्होंने राजा जनक की सभा में याज्ञवल्क्य ऋषि के साथ गहन दार्शनिक शास्त्रार्थ किया था, जो उनकी अद्वितीय विद्वत्ता का प्रमाण है।
गार्गी का कालक्रम और उनकी दार्शनिक उपलब्धियां उन्हें ऋग्वैदिक विदुषियों से भिन्न करती हैं। वे उत्तर वैदिक काल की उच्च बौद्धिक परंपरा का प्रतिनिधित्व करती हैं, जहाँ ज्ञान के गूढ़ रहस्यों पर शास्त्रार्थ होता था।

27. (1) केवल I, II, III और IV
उत्तर वैदिक काल में शूद्रों को धार्मिक अनुष्ठानों और वेदों के अध्ययन से वंचित कर दिया गया। इसी समय गोत्र संस्था का विकास हुआ, जिससे सगोत्र विवाह वर्जित हो गए। ऋग्वैदिक देव 'पूषन' अब शूद्रों के विशेष देवता माने जाने लगे और लोहे का प्रयोग 'कृष्ण अयस' के रूप में व्यापक हुआ। यद्यपि राजा शक्तिशाली था, किंतु वह भूमि का पूर्ण स्वामी नहीं था और निजी संपत्ति का अस्तित्व बना रहा।
ये परिवर्तन समाज के कबीलाई ढांचे से एक व्यवस्थित और श्रेणीबद्ध समाज में संक्रमण को दर्शाते हैं। नई धार्मिक और सामाजिक व्यवस्था ने आने वाली सदियों हेतु भारतीय जीवन शैली को स्पष्ट रूप से परिभाषित किया।

28. (2) तिब्बत
आर्यों के मूल निवास स्थान को लेकर विद्वानों में भिन्न मत रहे हैं। आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'सत्यार्थ प्रकाश' में यह तर्क दिया कि आर्यों का मूल निवास स्थान तिब्बत था। उन्होंने अपने दावे का आधार वेदों में वर्णित जलवायु और भौगोलिक परिस्थितियों को बनाया। उनका मानना था कि आर्य यहीं से निकलकर भारत के विभिन्न क्षेत्रों में विस्तृत हुए थे।
स्वामी दयानंद का यह विचार भाषाई और सांस्कृतिक व्याख्याओं पर आधारित था। यद्यपि अन्य विद्वानों के मत भिन्न हैं, किंतु तिब्बत को आर्यों का मूल स्थान मानना एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक और भारतीय दृष्टिकोण रहा है।

29. (1) केवल I और II
दशराज्ञ युद्ध ऋग्वेद में वर्णित एक ऐतिहासिक संघर्ष है, जो परुष्णी (रावी) नदी के तट पर लड़ा गया था। इसमें भरत कबीले के राजा सुदास ने दस अन्य राजाओं के संघ को पराजित किया। इस युद्ध का मुख्य कारण पुरोहितों का विवाद और कबीलाई वर्चस्व की प्रतिस्पर्धा थी। सुदास की विजय के पश्चात भरत कबीले का प्रभाव बढ़ा, जिसने कालांतर में कुरु वंश और साम्राज्य की आधारशिला रखी।
यह युद्ध वैदिक काल की राजनीतिक जटिलताओं और कबीलाई गठबंधनों को समझने में सहायक है। विजय के उपरांत भरत कबीले की सत्ता ने भारतीय उपमहाद्वीप के इतिहास में एक नया और निर्णायक अध्याय प्रारंभ किया।

30. (4) कथन I गलत है और कथन II सही है।
ऋग्वैदिक आर्यों को खुले समुद्र में बड़े पैमाने पर नौवहन का विस्तृत ज्ञान नहीं था। ऋग्वेद में 'समुद्र' शब्द का अनेक बार उल्लेख है, किंतु विद्वानों का मानना है कि इसका तात्पर्य विशाल जलराशि, झीलों या नदियों के संगम से है। वे मुख्य रूप से एक स्थलचर और नदी-केंद्रित समाज थे। उनकी अधिकांश गतिविधियाँ सिंधु और उसकी सहायक नदियों के आसपास केंद्रित थीं और समुद्री व्यापार अत्यंत सीमित था।
आर्यों का प्रारंभिक जीवन भौगोलिक रूप से आंतरिक प्रदेशों तक ही सीमित रहा। समुद्र के प्रति उनकी धारणा आध्यात्मिक अधिक थी और वास्तविक समुद्री विस्तार का ज्ञान उन्हें बाद के ऐतिहासिक कालखंडों में प्राप्त हुआ।

31. (1) वन पुस्तकें जिनमें तपस्वियों के लिए रहस्यमय और दार्शनिक शिक्षाएं हैं।
आरण्यक शब्द 'अरण्य' से व्युत्पन्न है जिसका अर्थ वन होता है। ये ग्रंथ मुख्य रूप से उन ऋषियों हेतु लिखे गए थे जो वनों के एकांत में निवास करते थे। आरण्यकों का ध्यान यज्ञों के बाह्य स्वरूप के स्थान पर उनके दार्शनिक और प्रतीकात्मक अर्थ पर अधिक था। ये ग्रंथ ब्राह्मणों और उपनिषदों के मध्य सेतु की भूमिका निभाते हैं। इनमें प्राण-विद्या और ध्यान जैसे गूढ़ विषयों का विवेचन मिलता है।
आरण्यकों की रचना ने वैदिक कर्मकांडों के आध्यात्मिक आयामों को उद्घाटित किया। एकांत में इनके पठन का उद्देश्य सांसारिक कोलाहल से दूर रहकर सत्य की खोज करना और मानसिक अनुशासन एवं एकाग्रता को विकसित करना था।

32. (2) समाज स्पष्ट रूप से कठोर, अस्पृश्य जातियों में विभाजित था।
ऋग्वैदिक समाज मुख्य रूप से पितृसत्तात्मक था जहाँ परिवार आधारभूत इकाई थी। इस समय अस्पृश्यता की कोई कठोर

NODIA

व्यवस्था नहीं थी, अपितु समाज काफी हद तक समतावादी और लचीला था। लोगों को सोम और सुरा जैसे पेयों का ज्ञान था और मनोरंजन हेतु रथ दौड़ तथा पासा खेलना लोकप्रिय था। सामाजिक भेदभाव मुख्य रूप से आर्यों और दासों के मध्य था, न कि जन्म आधारित जाति व्यवस्था के कारण।
इस काल की सामाजिक व्यवस्था योग्यता और कबीलाई संबंधों पर टिकी थी। वर्णों का उल्लेख होने के बावजूद, व्यवसाय परिवर्तन संभव था और समाज में आपसी सहयोग तथा समरसता का वातावरण व्यापक स्तर पर विद्यमान था।

33. (2) केवल I, II और IV
यजुर्वेद मूलतः एक कर्मकांडीय ग्रंथ है, जिसमें यज्ञों के संपादन हेतु मंत्र और नियम वर्णित हैं। इसे दो मुख्य शाखाओं, शुक्ल यजुर्वेद और कृष्ण यजुर्वेद में विभाजित किया गया है। शतपथ ब्राह्मण, जो सर्वाधिक प्रसिद्ध ब्राह्मण ग्रंथ है, शुक्ल यजुर्वेद से संबंधित है। पुनर्जन्म के सिद्धांतों के स्पष्ट संदर्भ उपनिषदों में प्राप्त होते हैं, न कि यजुर्वेद की मूल संहिताओं में। यह वेद अनुष्ठानिक शुद्धता पर केंद्रित है।
यजुर्वेद की गद्य और पद्य शैली इसे अन्य वेदों से पृथक करती है। यह तत्कालीन पुरोहितों हेतु एक व्यावहारिक मार्गदर्शिका के समान था, जिसने अनुष्ठानों को एक संगठित और सुव्यवस्थित रूप प्रदान करने में सहायता की।

34. (1) शतपथ ब्राह्मण
विदेघ माधव की प्रसिद्ध कथा शतपथ ब्राह्मण में वर्णित है। यह कथा बताती है कि कैसे माधव विदेघ ने वैश्वानर अग्नि की सहायता से सरस्वती नदी से पूर्व की ओर गंडक नदी तक प्रसार किया। यह प्रतीकात्मक रूप से आर्य संस्कृति और कृषि के विस्तार को गंगा के मैदानों की ओर इंगित करता है। इस भौगोलिक विस्तार ने बिहार के विदेह क्षेत्र को वैदिक प्रभाव के अंतर्गत लाया और नवीन बस्तियों को रेखांकित किया।
इस कथा का ऐतिहासिक महत्व आर्यों के विस्थापन और नवीन भूमि पर अधिकार को समझने में निहित है। अग्नि का प्रसार वनों की सफाई और कृषि योग्य भूमि के विस्तार का एक स्पष्ट प्रतीकात्मक वर्णन माना जाता है।

35. (3) उच्च राज्य अधिकारी और गणमान्य व्यक्ति जो राजा की सहायता करते थे
उत्तर वैदिक काल में प्रशासन के विस्तार के साथ राजा की सहायता हेतु 'रत्निन' नामक अधिकारियों का समूह उभरा। इनमें पुरोहित, सेनानी, ग्रामिणी और सूत जैसे प्रभावशाली व्यक्ति सम्मिलित थे। इन्हें रत्निन इसलिए कहा जाता था क्योंकि वे शासन के आधार स्तंभ या रत्न माने जाते थे। राज्याभिषेक के समय राजा इनके निवास पर जाकर भेंट प्रदान करता था, जो इनकी राजनीतिक महत्ता और शासन में अनिवार्य भागीदारी को दर्शाता है।
इन अधिकारियों की मुख्य भूमिका राज्य की प्रशासनिक और वित्तीय व्यवस्था को सुदृढ़ करना था। रत्निनों की उपस्थिति यह सिद्ध करती है कि शासन का स्वरूप अब कबीलाई से अधिक संस्थागत और राजतंत्रीय हो रहा था।

36. (4) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
उत्तर वैदिक राजाओं ने अपनी शक्ति प्रदर्शित करने हेतु विशेष यज्ञों का आयोजन किया। राजसूय यज्ञ राज्याभिषेक के समय राजा को सर्वोच्च शक्ति प्रदान करने हेतु होता था। अश्वमेध यज्ञ में अश्व छोड़ा जाता था जो क्षेत्रीय संप्रभुता का प्रतीक था। वाजपेय यज्ञ में रथ दौड़ आयोजित की जाती थी ताकि राजा का वर्चस्व स्थापित हो सके। अग्निष्टोम यज्ञ एक सोम यज्ञ था जो अग्नि देव को समर्पित था।
ये यज्ञ केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं थे, अपितु राजनीतिक शक्ति के प्रदर्शन के माध्यम भी थे। इनके द्वारा राजा अपनी प्रजा और प्रतिद्वंद्वियों के मध्य अपनी सर्वोच्चता और दैवीय अधिकार को स्थापित करने का प्रयास करता था।

37. (3) मानकीकृत, राज्य द्वारा जारी धात्विक सिक्कों का व्यापक उपयोग।
उत्तर वैदिक काल में अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि और शिल्पों पर आधारित थी। धान, गेहूं और जौ जैसी फसलें उगाई जाती थीं और व्यापारिक संघ भी उभरने लगे थे। यद्यपि निष्क और शतमान जैसे शब्दों का प्रयोग विनिमय की इकाइयों के रूप में होता था, किंतु इस काल में राज्य द्वारा जारी कोई मानकीकृत मुद्रा प्रणाली विद्यमान नहीं थी। अधिकांश व्यापार और लेनदेन अब भी वस्तु विनिमय के माध्यम से ही होते थे।
नियमित सिक्कों का प्रचलन बाद के बुद्ध काल में प्रारंभ हुआ था। उत्तर वैदिक काल में आर्थिक लेनदेन हेतु धातु के टुकड़ों का उपयोग विनिमय को सरल बनाने का एक प्रारंभिक और संक्रमणकालीन प्रयास मात्र प्रतीत होता है।

38. (2) वह स्थान जहाँ पूरे कबीले के पशु रखे जाते थे।
'गोत्र' शब्द का मूल अर्थ 'गोष्ठ' था, जहाँ पूरे कबीले के मवेशियों को सामूहिक रूप से सुरक्षित रखा जाता था। चूँकि पशु समाज की मुख्य संपत्ति थे, इसलिए यह स्थान कबीले की सामूहिक पहचान का केंद्र बन गया। उत्तर वैदिक काल में यह शब्द एक समान पूर्वज से उत्पन्न होने वाले वंश के रूप में विकसित हुआ। सगोत्र विवाह वर्जित होने लगे क्योंकि एक ही गोत्र के लोग परस्पर भाई-बहन माने जाते थे।
गोत्र व्यवस्था ने सामाजिक संगठन को एक नवीन दिशा प्रदान की और वंशानुगत शुद्धता को समाज का आधार बनाया। आज भी यह व्यवस्था हिंदू सामाजिक संरचना में वैवाहिक संबंधों के निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

39. (4) अदिति - शाश्वतता की देवी और देवताओं की माता।
ऋग्वैदिक काल में अदिति को अत्यंत महत्वपूर्ण देवी माना जाता था, जो शाश्वतता का प्रतीक और देवताओं की माता थीं। उषा भोर की देवी थीं, जबकि अरण्यानी वन की देवी मानी जाती थीं। पूषन मुख्य रूप से मवेशियों के रक्षक देवता थे, जिनका महत्व कालांतर में शूद्रों के देवता के रूप में बढ़ा। वैदिक धर्म में प्रकृति की इन शक्तियों का मानवीकरण किया गया था और स्तुति के माध्यम से उन्हें पूजा जाता था।
वैदिक देवताओं का यह स्वरूप मानवीय जीवन और प्रकृति के मध्य गहरे सामंजस्य को प्रदर्शित करता है। प्रत्येक देवी-देवता

Click Here to Buy book on Amazon

का संबंध मानवीय अस्तित्व के किसी न किसी महत्वपूर्ण पहलू या प्राकृतिक घटना के साथ गहराई से जुड़ा था।

40. (3) केवल V
वेदों के विषय में अधिकांश कथन ऐतिहासिक रूप से सटीक हैं। ऋग्वेद के दसवें मण्डल में वर्ण व्यवस्था का वर्णन है और अथर्ववेद में औषधियों तथा जादू-टोने का विवरण मिलता है। सामवेद शासन कला या राजनीति पर कोई विवरण प्रदान नहीं करता है; यह ऋग्वैदिक ऋचाओं का एक संगीतमय संग्रह मात्र है। शासन कला और प्रशासनिक सिद्धांतों की जानकारी बाद के ब्राह्मण, स्मृति और अर्थशास्त्र जैसे ग्रंथों में प्राप्त होती है।
सामवेद का मुख्य योगदान भारतीय शास्त्रीय संगीत परंपरा की नींव रखने में रहा है। राजनीतिक सिद्धांतों के अध्ययन हेतु ऋग्वेद और उत्तर वैदिक काल के अन्य ग्रंथों को अधिक उपयोगी और प्रासंगिक माना जाता है।

41. (3) कर्म मार्ग (अनुष्ठान) से ज्ञान मार्ग की ओर
उपनिषदों ने वैदिक धर्म के विकास में एक निर्णायक मोड़ प्रस्तुत किया। उन्होंने ब्राह्मण ग्रंथों के खर्चीले बाह्य कर्मकांडों पर प्रश्न उठाए और उनके स्थान पर अंतर्ज्ञान तथा दार्शनिक चिंतन को प्राथमिकता दी। उपनिषदों के अनुसार, केवल बाह्य अनुष्ठानों से मोक्ष प्राप्त नहीं किया जा सकता, अपितु इसके लिए ब्रह्म और आत्मा के सत्य का ज्ञान होना अनिवार्य है। इस दृष्टिकोण ने भारतीय चिंतन को नवीन ऊँचाई प्रदान की।
दार्शनिक ज्ञान की इस खोज ने धर्म को बाह्य प्रदर्शन से हटाकर आंतरिक शुद्धि और सत्य की प्राप्ति की ओर मोड़ा। इसने समाज के बौद्धिक वर्ग को गहन आत्म-मंथन और तार्किक जिज्ञासा हेतु निरंतर प्रेरित किया।

42. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
आरण्यक वैदिक साहित्य के वे अंग हैं जो ब्राह्मणों के अनुष्ठानों और उपनिषदों के शुद्ध ज्ञान के मध्य समन्वय स्थापित करते हैं। इनका पठन वनों के शांत वातावरण में किया जाता था। ये ग्रंथ यज्ञों के बाह्य स्वरूप के स्थान पर उनकी आंतरिक भावना और आध्यात्मिक प्रतीकवाद की गहन व्याख्या करते हैं। इस प्रकार ये व्यक्ति को भौतिक संसार से मुक्त कर दार्शनिक चिंतन की ओर अग्रसर करते हैं।
आरण्यकों की शिक्षाएं मुख्य रूप से मानसिक अनुशासन और ध्यान पर केंद्रित थीं। ये ग्रंथ एक ऐसी आध्यात्मिक यात्रा का प्रतिनिधित्व करते हैं जहाँ साधक स्थूल कर्मकांडों को त्यागकर सूक्ष्म सत्य और आत्म-ज्ञान के मार्ग पर बढ़ता है।

43. (4) उपनयन संस्कार के पात्र तीन उच्च वर्ण।
उत्तर वैदिक काल की वर्ण व्यवस्था में 'द्विज' का अर्थ 'द्वितीय जन्म' होता था। इसमें समाज के तीन उच्च वर्ण—ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य—सम्मिलित थे। प्रथम जन्म भौतिक रूप से माता के गर्भ से माना जाता था, जबकि द्वितीय जन्म उपनयन संस्कार के पश्चात आध्यात्मिक माना जाता था। इस संस्कार के पश्चात ही व्यक्ति को वेदों के अध्ययन और पवित्र जनेऊ धारण करने का अधिकार मिलता था।
द्विज की यह अवधारणा समाज में धार्मिक और शैक्षणिक विशेषाधिकारों के असमान वितरण को दर्शाती है। शिक्षा और धार्मिक क्रियाओं तक पहुँच ही समाज के इन तीन वर्णों को शूद्रों से सामाजिक रूप से श्रेष्ठ सिद्ध करती थी।

44. (2) कृषि की ओर झुकाव और अनुष्ठानिक शुद्धता की धारणाएं।
उत्तर वैदिक समाज के कठोर होने का मुख्य कारण कृषि आधारित अर्थव्यवस्था थी। जैसे-जैसे लोग स्थायी रूप से बसने लगे, भूमि और संसाधनों पर नियंत्रण हेतु सामाजिक असमानताएं बढ़ गईं। पुरोहितों ने अपनी सर्वोच्चता बनाए रखने हेतु जटिल अनुष्ठान और शुद्धता की कठोर धारणाएं विकसित कीं। कृषि अधिशेष ने एक ऐसे वर्ग को जन्म दिया जो शासन में संलग्न था, जिससे वर्ण व्यवस्था जन्म आधारित हो गई।
भूमि का स्वामित्व और धार्मिक एकाधिकार ही सामाजिक सोपानतंत्र के मुख्य चालक बन गए थे। इस व्यवस्था ने कबीलाई समानता को समाप्त कर एक जन्म-आधारित असमान सामाजिक संरचना को जन्म दिया जो सदियों तक अपरिवर्तित रही।

NODIA

45. (3) उन्होंने पूरे दक्कन के पठार और दक्षिण भारत में निवास किया था।
ऋग्वैदिक आर्य मुख्य रूप से उत्तर-पश्चिमी भारत और पाकिस्तान के सप्त सिंधु क्षेत्र तक ही सीमित थे। उनके भौगोलिक ज्ञान में हिमालय, सिंधु और सरस्वती नदी प्रमुखता से सम्मिलित थीं। गंगा और यमुना का उल्लेख अत्यंत विरल है, जिससे ज्ञात होता है कि वे मध्य भारत तक नहीं पहुँचे थे। दक्कन के पठार और दक्षिण भारत के विषय में वे पूर्णतः अनभिज्ञ थे। दक्षिण का आर्यकरण बाद में हुआ।
भौगोलिक ज्ञान का यह अभाव प्रारंभिक वैदिक संस्कृति की क्षेत्रीय सीमाओं को स्पष्ट करता है। आर्यों का प्रसार एक क्रमिक प्रक्रिया थी जो कई शताब्दियों के पश्चात प्रायद्वीपीय भारत के सुदूर दक्षिण तक विस्तारित हो सकी।

46. (4) गोघ्न
पूर्व वैदिक काल में अतिथि सत्कार को अत्यंत पवित्र माना जाता था। 'गोघ्न' शब्द का शाब्दिक अर्थ 'वह जिसके लिए गाय का वध किया जाता है' होता है। यह उस प्राचीन प्रथा को दर्शाता है जिसमें विशिष्ट अतिथियों को गोमांस परोसा जाता था। यद्यपि कालांतर में गाय का धार्मिक महत्व बढ़ने और उसे 'अघन्या' (वध न करने योग्य) घोषित करने पर यह प्रथा समाप्त हो गई। यह शब्द तत्कालीन आदतों को स्पष्ट करता है।
अतिथि के प्रति सम्मान की यह पराकाष्ठा वैदिक संस्कृति की उदारता का प्रतीक थी। पशु संपदा के मूल्यवान होने के बावजूद, अतिथि सेवा हेतु उसे त्याग देना समाज की उच्च नैतिक प्राथमिकताओं और मूल्यों को प्रदर्शित करता है।

47. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
ऋग्वैदिक काल की शब्दावली उस समय के सामाजिक संबंधों और व्यवसायों को प्रतिबिंबित करती है। 'दुहितृ' शब्द पुत्री हेतु प्रयुक्त होता था, जिसका अर्थ 'गाय दुहने वाली' था। 'वप्ता' शब्द का प्रयोग नाई हेतु होता था। शिल्पकारों में 'तक्षण' बढ़ई को कहा जाता था, जो रथ निर्माण हेतु अनिवार्य था, और 'कर्मार' धातु शिल्पकार को कहा जाता था। ये संज्ञाएं दर्शाती हैं कि समस्त व्यवसाय ग्रामीण जीवन से संबद्ध थे।

ये शब्द न केवल व्यवसायों को अपितु परिवार के भीतर सदस्यों की विशिष्ट भूमिकाओं को भी परिभाषित करते थे। तत्कालीन समाज में प्रत्येक व्यक्ति का कार्य उसकी पहचान और सामाजिक उपयोगिता का सीधा और स्पष्ट प्रतिबिंब था।

48. (4) कथन I गलत है और कथन II सही है।
पूर्व वैदिक काल में शासन व्यवस्था सरल थी और मुख्य रूप से कबीलाई भाईचारे पर आधारित थी। इस समय राजा के पास कोई स्थायी प्रशासनिक तंत्र या नियमित भू-राजस्व प्रणाली नहीं थी। कृषक स्वेच्छा से राजा को 'बलि' नामक उपहार प्रदान करते थे, जो अनिवार्य कर नहीं था। राजा को मुख्य रूप से युद्ध में प्राप्त लूट और स्वेच्छा से अर्पित वस्तुओं से ही अपनी आय प्राप्त होती थी।
औपचारिक कर प्रणाली का अभाव राजा और प्रजा के मध्य एक स्वैच्छिक और भावनात्मक संबंध को दर्शाता है। प्रशासनिक संरचना का सरल होना कबीले की आंतरिक दृढ़ता और सामूहिक उत्तरदायित्व की भावना का प्रत्यक्ष परिणाम था।

49. (2) धनी व्यापारी और पशु चोर।
ऋग्वेद में 'पणि' नामक समूह का उल्लेख है जो मुख्य रूप से व्यापारिक गतिविधियों में संलग्न था। वे अपने धन और विशेष रूप से मवेशियों के झुंडों हेतु जाने जाते थे। आर्यों के साथ उनके संबंध प्रायः तनावपूर्ण रहते थे क्योंकि पणियों पर आर्यों की गायों की चोरी का आरोप था। उन्हें लोभी माना जाता था क्योंकि वे वैदिक देवताओं की पूजा नहीं करते थे और न ही ब्राह्मणों को दान देते थे।
पणियों का अस्तित्व वैदिक काल में गैर-आर्य आर्थिक समूहों की उपस्थिति को दर्शाता है। उनके और आर्यों के मध्य संघर्ष केवल पशु संपदा हेतु नहीं, अपितु परस्पर विरोधी सांस्कृतिक और धार्मिक मान्यताओं के कारण भी था।

50. (2) केवल II और III
ऋग्वैदिक समाज पूर्णतः समतावादी नहीं था, क्योंकि इसमें आर्यों और दासों के मध्य विभेद विद्यमान था। परिवार पितृसत्तात्मक था जिसका प्रमुख 'कुलप' कहलाता था और उसे व्यापक अधिकार प्राप्त थे। इस काल में दास प्रथा का अस्तित्व था, किंतु यह उदार थी। दासों, विशेषकर महिलाओं का उपयोग घरेलू कार्यों हेतु किया जाता था। यद्यपि इस समय सामाजिक गतिशीलता और लचीलापन भी पर्याप्त मात्रा में विद्यमान था।
दासता की यह व्यवस्था आर्थिक उत्पादन के स्थान पर व्यक्तिगत सेवा पर आधारित थी। समाज में पदानुक्रम होने के बावजूद, कबीलाई एकजुटता और साझा परंपराएं सामाजिक स्थिरता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थीं।

51. (3) इंद्र
पूर्व वैदिक काल में इंद्र सर्वाधिक शक्तिशाली देवता थे, जिन्हें युद्ध का देवता और वर्षा का स्वामी माना जाता था। ऋग्वेद के विशाल भाग में उनकी स्तुति की गई है। किंतु, उत्तर वैदिक काल में धार्मिक मान्यताओं में परिवर्तन आया। इंद्र का महत्व क्षीण हो गया और उनका स्थान प्रजापति, विष्णु और रुद्र ने ले लिया। यह परिवर्तन समाज के युद्ध-केंद्रित जीवन से स्थायी कृषि और दार्शनिक चिंतन की ओर झुकाव को दर्शाता है।
देवों के महत्व में यह बदलाव सामाजिक आवश्यकताओं के परिवर्तन का प्रतिबिंब है। जैसे-जैसे युद्ध कम हुए और बस्तियां स्थायी हुईं, सृजन और संरक्षण के देवता योद्धा देवों की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण और प्रासंगिक हो गए।

52. (4) चित्रित धूसर मृदभांड (PGW)
उत्तर वैदिक काल की पहचान पुरातात्विक दृष्टि से 'चित्रित धूसर मृदभांड' संस्कृति से होती है। इस काल के लोग विशिष्ट धूसर रंग के पात्र निर्मित करते थे जिन पर काले रंग के रेखाचित्र अंकित होते थे। इस संस्कृति के साक्ष्य ऊपरी गंगा घाटी क्षेत्र में प्रचुरता से प्राप्त हुए हैं। इसके साथ ही लोहे के आयुधों की प्राप्ति यह सिद्ध करती है कि यह काल तकनीकी प्रगति का युग था।
मृदभांडों की यह विशिष्ट शैली तत्कालीन शिल्प कौशल और सौंदर्यबोध की परिपक्वता को प्रदर्शित करती है। यह संस्कृति नगरीकरण की पूर्व संध्या पर एक समृद्ध ग्रामीण और संक्रमणकालीन समाज की स्पष्ट झलक प्रस्तुत करती है।

53. (1) III, I, IV, II
वैदिक साहित्य का विकास क्रमिक रहा है। सर्वप्रथम 'संहिता' (चार वेद) रचे गए, जिनमें मंत्रों का संग्रह है। इसके पश्चात 'ब्राह्मण' ग्रंथों की रचना हुई, जो यज्ञों की व्याख्या करते हैं। तृतीय चरण में 'आरण्यक' आए, जो वनों में किए जाने वाले दार्शनिक चिंतन पर आधारित थे। अंत में 'उपनिषद' लिखे गए, जिन्हें 'वेदांत' कहा जाता है क्योंकि ये वेदों के अंतिम दार्शनिक निष्कर्ष और सार माने जाते हैं।
यह कालक्रम वैदिक धर्म के सरल मंत्रोच्चार से लेकर जटिल अनुष्ठानों और अंततः सूक्ष्म आध्यात्मिक चिंतन तक की यात्रा का प्रतीक है। प्रत्येक चरण ने भारतीय दर्शन के विभिन्न आयामों को नवीन गहराई और विस्तार प्रदान किया।

54. (2) 'महाजनपद' के रूप में जाने जाने वाले विशाल क्षेत्रीय राज्यों का उदय होने लगा।
उत्तर वैदिक काल के अंत तक कबीलाई संरचना शिथिल हो गई और क्षेत्रीय पहचान सुदृढ़ हुई। विभिन्न 'जन' परस्पर मिलकर बड़े 'जनपद' बन गए, जो कालांतर में महाजनपदों के रूप में विकसित हुए। राजा अब केवल कबीले का नेता नहीं, अपितु एक विशाल भूभाग का स्वामी बन गया। राजपद वंशानुगत हुआ और प्रशासन सुव्यवस्थित हुआ। इसी समय मगध और कोसल जैसे शक्तिशाली राज्यों की आधारशिला रखी गई।
क्षेत्रीयता की इस भावना ने भारत के राजनीतिक मानचित्र को पुनः परिभाषित किया। अब राजाओं के मध्य संघर्ष केवल पशुओं हेतु नहीं, अपितु साम्राज्य विस्तार और उपजाऊ कृषि भूमि पर नियंत्रण स्थापित करने हेतु होने लगे थे।

55. (2) केवल I, II और IV
उत्तर वैदिक अर्थव्यवस्था में कृषि आजीविका का मुख्य आधार थी और लोहे के प्रयोग से उत्पादन में अत्यधिक वृद्धि हुई। व्यापारिक क्षेत्र में 'श्रेष्ठिन' जैसे व्यापारियों के संघों का उदय हुआ, जो आर्थिक संगठन का प्रमाण है। यद्यपि व्यापार विस्तृत हुआ, किंतु अभी तक पूर्णतः स्वर्ण मुद्राओं वाली अर्थव्यवस्था विकसित नहीं हुई थी। लेनदेन हेतु अब भी वस्तु विनिमय और धातु के टुकड़ों का ही प्रयोग किया जाता था।

Downloaded from www.pdf.tube

कृषि प्रधानता ने समाज में आर्थिक स्थिरता प्रदान की और विभिन्न शिल्पों के विशेषीकरण को प्रोत्साहित किया। स्वर्ण मुद्राओं का अभाव यह संकेत देता है कि व्यापार अभी भी प्राथमिक और क्षेत्रीय स्तर पर अधिक सक्रिय था।

56. (1) अस्पृश्यता की कठोर प्रथा
उत्तर वैदिक काल में वर्ण, आश्रम और गोत्र व्यवस्था जैसी महत्वपूर्ण सामाजिक संस्थाएं स्थापित हो चुकी थीं। समाज चार वर्णों में विभाजित था और पितृसत्तात्मक ढाँचा सुदृढ़ हो चुका था। यद्यपि कुछ समूहों को सामाजिक रूप से निम्न माना जाने लगा था, किंतु अस्पृश्यता की वह कठोर और संस्थागत प्रथा, जो उत्तर-वैदिक काल के बाद देखी गई, इस समय तक पूरी तरह विकसित नहीं हुई थी।
यह काल सामाजिक स्तरीकरण के प्रारंभ का था, जहाँ भेदभाव की जड़ें जम रही थीं। फिर भी, अस्पृश्यता के चरम रूप का विकास बाद की सदियों में हुआ, जब शुद्धता और प्रदूषण के नियम अत्यंत संकीर्ण हो गए थे।

57. (3) सरल प्रार्थनाओं से जटिल अनुष्ठानिक यज्ञों की ओर झुकाव।
पूर्व वैदिक धर्म सरल था, जिसमें स्तुति द्वारा प्रकृति के देवताओं को प्रसन्न किया जाता था। किंतु उत्तर वैदिक काल में धर्म का स्वरुप अत्यंत जटिल और व्ययसाध्य हो गया। अब यज्ञों का महत्व अत्यधिक बढ़ गया और वे विशाल अनुष्ठानों में परिवर्तित हो गए। पशु बलि की प्रथा में वृद्धि हुई और पुरोहितों की भूमिका अनिवार्य हो गई। अब मंत्रों के सटीक उच्चारण को ही सत्य की प्राप्ति माना जाने लगा था।
धर्म का यह बाह्यकरण पुरोहित वर्ग के प्रभाव को सुदृढ़ करने हेतु किया गया था। इस जटिलता ने कालांतर में जनमानस में असंतोष उत्पन्न किया, जिसके फलस्वरूप उपनिषदों के ज्ञान मार्ग और नवीन संप्रदायों का उदय हुआ।

58. (3) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
विभिन्न उपनिषदों में अद्वितीय दार्शनिक विचार प्राप्त होते हैं। 'सत्यमेव जयते' का मंत्र मुण्डक उपनिषद से लिया गया है। छांदोग्य उपनिषद में जीवन के प्रथम तीन आश्रमों का विवरण मिलता है। कठोपनिषद यम और नचिकेता के मध्य आत्मा और मृत्यु पर हुए संवाद हेतु प्रसिद्ध है। बृहदारण्यक उपनिषद में महर्षि याज्ञवल्क्य और मैत्रेयी के मध्य हुए गहन दार्शनिक शास्त्रार्थ का विस्तृत और सूक्ष्म वर्णन प्राप्त होता है।
उपनिषदों के ये विषय भारतीय दर्शन की सूक्ष्मता और गंभीरता को प्रमाणित करते हैं। इन ग्रंथों ने न केवल धार्मिक अपितु नैतिक और मानवीय मूल्यों की स्थापना में वैश्विक और कालजयी योगदान प्रदान किया है।

59. (4) न्याय
वेदों के शुद्ध उच्चारण, व्याख्या और समुचित उपयोग हेतु छह वेदांगों की रचना की गई। इनमें शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद और ज्योतिष सम्मिलित हैं। ये सभी वेदों को समझने में सहायक विज्ञान के समान थे। 'न्याय' वास्तव में भारतीय दर्शन की छह प्रणालियों में से एक है, जिसे गौतम ऋषि ने प्रतिपादित किया था। अतः न्याय वेदांगों का भाग नहीं है, अपितु एक स्वतंत्र दार्शनिक संप्रदाय है।
वेदांगों का विकास वेदों की पवित्रता और उनके सटीक प्रयोग को सुनिश्चित करने हेतु किया गया था। न्याय शास्त्र ने वेदों के अध्ययन के स्थान पर स्वतंत्र तार्किक विश्लेषण और ज्ञान मीमांसा के क्षेत्र में योगदान दिया।

60. (2) नियोग - विधवा द्वारा संतान प्राप्ति हेतु देवर या निकट संबंधी के साथ रहने की प्रथा।
पूर्व वैदिक काल में 'नियोग' एक स्वीकृत सामाजिक प्रथा थी, जिसके अंतर्गत विधवा स्त्री संतान प्राप्ति हेतु अपने देवर या निकट संबंधी के साथ रह सकती थी। यह दर्शाता है कि उस समय महिलाओं को मातृत्व और पुनर्विवाह के कुछ अधिकार प्राप्त थे। स्वयंवर विवाह का प्रकार था जहाँ महिला वर चुनती थी। उपनयन संस्कार उच्च वर्णों हेतु आरक्षित था, जो शिक्षा प्राप्ति का एक महत्वपूर्ण द्वार माना जाता था।
नियोग जैसी प्रथाएं तत्कालीन समाज की व्यवहारिकता और वंश रक्षा के प्रति संवेदनशीलता को दर्शाती हैं। यह प्रथा पितृसत्तात्मक समाज में भी महिलाओं की बुनियादी जैविक और सामाजिक आवश्यकताओं के प्रति सम्मान का परिचायक थी।

61. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
उत्तर वैदिक काल में कृषि की प्रधानता और निजी संपत्ति की अवधारणा सुदृढ़ होने से महिलाओं की स्थिति में गिरावट आई। उन्हें सभा और विदथ जैसी राजनीतिक परिषदों से पृथक कर दिया गया, क्योंकि कबीलाई लोकतंत्र का स्थान क्षेत्रीय राजशाही ने ले लिया था। पितृसत्तात्मक व्यवस्था ने महिलाओं की सामाजिक भूमिका को सीमित किया। यह परिवर्तन आर्थिक संरचना में आए बदलावों और शक्ति के केंद्रीकरण का परिणाम था।
महिलाओं की राजनीतिक उपेक्षा समाज के बढ़ते हुए पुरुष प्रधान चरित्र को प्रदर्शित करती है। आर्थिक अधिशेष पर नियंत्रण और युद्धों की बढ़ती संख्या ने पुरुषों की स्थिति को सामाजिक रूप से अधिक निर्णायक और प्रभावशाली बना दिया था।

NODIA

62. (4) वशिष्ठ
दशराज्ञ युद्ध में भरत कबीले के राजा सुदास के मुख्य पुरोहित ऋषि वशिष्ठ थे। प्रारंभ में विश्वामित्र पुरोहित थे, किंतु राजा ने वशिष्ठ को यह पद प्रदान किया, जिससे विश्वामित्र रुष्ट हो गए। विश्वामित्र ने ही सुदास के विरुद्ध दस राजाओं का संघ निर्मित किया था। इस युद्ध में वशिष्ठ के रणनीतिक और आध्यात्मिक मार्गदर्शन ने सुदास को विजय दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जो एक ऐतिहासिक घटना थी।
वशिष्ठ और विश्वामित्र के मध्य का यह प्रतिद्वंद्व पुरोहितों की राजनीतिक शक्ति और राजा के चयन के अधिकारों को उजागर करता है। सुदास की जीत ने वशिष्ठ की आध्यात्मिक श्रेष्ठता को भी समाज में प्रतिष्ठित किया।

63. (1) पुरु और भरत
उत्तर वैदिक काल में कबीलों के एकीकरण की प्रक्रिया तीव्र हुई। ऋग्वैदिक काल के दो शक्तिशाली कबीले, पुरु और भरत, परस्पर मिल गए और उन्होंने 'कुरु' कबीले का निर्माण किया।

उन्होंने कुरुक्षेत्र में अपना शासन स्थापित किया और हस्तिनापुर को राजधानी बनाया। कुरुओं ने ही उत्तर वैदिक संस्कृति और राजनीति के केंद्र के रूप में कार्य किया। इसी प्रकार अन्य छोटे कबीलों ने भी बड़े जनपदों का गठन किया।

एकीकरण की यह प्रक्रिया कबीलाई संकीर्णता से क्षेत्रीय राष्ट्रवाद की ओर बढ़ने का एक मुख्य सोपान थी। कुरु-पांचाल संस्कृति ने ही उत्तर भारत की कई सामाजिक और सांस्कृतिक परंपराओं का प्रारंभिक ढांचा तैयार किया था।

64. (1) केवल I, II, III और IV

पूर्व वैदिक काल में प्रशासनिक अधिकारियों की संख्या सीमित थी किंतु उनके कार्य स्पष्ट थे। सेनानी सैन्य अभियानों का नेतृत्व करता था और पुरोहित राजा का मुख्य सलाहकार था। ग्रामिणी ग्राम के नागरिक कार्यों का मुखिया था, जबकि 'स्पश' राजा हेतु गुप्तचरों के रूप में कार्य करते थे। 'भागदुघ' वास्तव में कर संग्राहक का पद था जो उत्तर वैदिक काल में अधिक प्रभावी और अनिवार्य हुआ था।

इन पदों का अस्तित्व यह दर्शाता है कि ऋग्वैदिक राजा एक सक्रिय प्रशासनिक तंत्र के साथ कार्य करता था। शासन व्यवस्था का आधार व्यक्तिगत निष्ठा, कबीलाई वफादारी और सामूहिक उत्तरदायित्व की भावना पर टिका हुआ था।

65. (2) अर्थव्यवस्था तटीय समुद्री व्यापार और मसालों के निर्यात पर निर्भर थी।

पूर्व वैदिक अर्थव्यवस्था ग्रामीण, पशुपालन-आधारित और आत्मनिर्भर थी। इस काल में भूमि निजी संपत्ति नहीं थी और समृद्धि का मापन मवेशियों की संख्या से होता था। बढ़ई और रथकार जैसे शिल्पी अत्यंत महत्वपूर्ण थे क्योंकि समाज में युद्ध और परिवहन की आवश्यकता अधिक थी। आर्य उत्तर-पश्चिमी भूभाग में केंद्रित थे और उनके पास तटीय व्यापार या मसालों के निर्यात जैसी कोई विकसित व्यवस्था नहीं थी।

आर्थिक जीवन का सादगीपूर्ण होना उनकी भौगोलिक परिस्थितियों और कबीलाई जीवनशैली का स्वाभाविक परिणाम था। व्यापक अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और मसालों का निर्यात बहुत बाद के ऐतिहासिक कालखंडों में ही मुख्य आर्थिक गतिविधि बन सका।

66. (4) कथन I गलत है और कथन II सही है।

ऋग्वैदिक काल में विधवा विवाह पर कोई कठोर प्रतिबंध नहीं था; नियोग जैसी प्रथाओं के माध्यम से इसे सामाजिक अनुमति प्राप्त थी। साथ ही, इस समय बाल विवाह का कोई ऐतिहासिक साक्ष्य नहीं मिलता है। कन्याओं का विवाह परिपक्व आयु में ही होता था। ऋग्वेद में प्रयुक्त 'अमाजू' शब्द उन महिलाओं को संदर्भित करता है जो आजीवन अविवाहित रहकर शिक्षा प्राप्त करती थीं, जो समाज की उदारता दर्शाता है।

ऋग्वैदिक समाज की यह उदारता बाद के कालखंडों की तुलना में काफी प्रगतिशील प्रतीत होती है। महिलाओं को अपनी जीवन शैली चुनने और बौद्धिक विकास करने का जो अवसर उस समय प्राप्त था, वह कालांतर में अत्यंत दुर्लभ हो गया।

67. (2) इंद्र - अग्नि - सोम - सूर्य

ऋग्वेद में भजनों की संख्या के आधार पर देवताओं के महत्व का स्पष्ट सोपान मिलता है। इंद्र को सर्वाधिक 250 भजन समर्पित हैं, जो उन्हें देवताओं का राजा और शक्तिशाली योद्धा सिद्ध करते हैं। उनके पश्चात अग्नि का स्थान है, जिन्हें लगभग 200 भजन समर्पित हैं क्योंकि वे देवताओं के मुख माने जाते थे। तृतीय स्थान पर सोम हैं, जिन्हें लगभग 120 भजन समर्पित हैं। अन्य देव इनके पश्चात आते हैं।

देवताओं की स्तुति में भजनों की संख्या उनके प्रति समाज की श्रद्धा और निर्भरता का मापदंड थी। इंद्र की सर्वोपरिता यह दर्शाती है कि सुरक्षा और विजय तत्कालीन कबीलों की सबसे बड़ी और प्राथमिक आवश्यकता थी।

68. (4) कुरुक्षेत्र क्षेत्र और गंगा-यमुना दोआब

पूर्व वैदिक काल में आर्य पंजाब और अफगानिस्तान के सप्त सिंधु क्षेत्र में केंद्रित थे। किंतु उत्तर वैदिक काल में वे पूर्व की ओर अग्रसर हुए। अब उनकी संस्कृति का मुख्य केंद्र कुरुक्षेत्र और गंगा-यमुना दोआब क्षेत्र बन गया। उन्होंने वनों को साफ कर नवीन बस्तियां बसाईं और स्थायी कृषि प्रारंभ की। इस भौगोलिक स्थानांतरण के कारण ही कुरु और पांचाल जैसे शक्तिशाली और समृद्ध जनपदों का उदय हुआ।

पश्चिम से पूर्व की ओर यह प्रवास केवल भौगोलिक नहीं, अपितु आर्थिक और सामाजिक रूप से भी निर्णायक था। गंगा की उपजाऊ मृदा ने वैदिक संस्कृति को नवीन जीवन और स्थिरता प्रदान की, जिसने इसे विस्तृत होने दिया।

69. (3) A-ii, B-iii, C-i, D-iv

उत्तर वैदिक प्रशासन में 'रत्निन' राजा के शासन के महत्वपूर्ण अंग थे। 'भागदुघ' का मुख्य कार्य जनता से कर वसूल करना था। 'संग्रहीतृ' कोषाध्यक्ष होता था जो राज्य के धन और संसाधनों का सुव्यवस्थित प्रबंधन करता था। 'सूत' राजा का सारथी होने के साथ-साथ दरबारी कवि और गायक भी था। 'अक्षवाप' पासे के खेल का निरीक्षक होता था, जो तत्कालीन मनोरंजन की व्यवस्था को दर्शाता है।

रत्निनों की यह विविधता शासन व्यवस्था के विस्तार और विशेषीकरण को इंगित करती है। प्रत्येक रत्निन का अपना विशिष्ट विभाग था, जिससे राजा को विशाल क्षेत्र पर प्रभावी नियंत्रण बनाए रखने और शासन संचालित करने में सहायता मिलती थी।

70. (2) कठोर मिट्टी की गहरी जुताई जिससे कृषि अधिशेष उत्पन्न हुआ।

उत्तर वैदिक काल में लोहे के फाल का उपयोग एक युगांतकारी परिवर्तन था। गंगा घाटी की कठोर मृदा को लकड़ी के हलों से जोतना अत्यंत कठिन था। लोहे के सुदृढ़ फालों ने गहरी जुताई को संभव बनाया, जिससे भूमि की उत्पादकता में अभूतपूर्व वृद्धि हुई। इस बढ़ी हुई पैदावार से कृषि अधिशेष उत्पन्न हुआ, जिसने जनसंख्या वृद्धि को सहारा दिया और नवीन कर प्रणाली तथा व्यापार को जन्म दिया।

इस तकनीकी क्रांति ने समाज को केवल जीवन निर्वाह से ऊपर उठाकर आर्थिक समृद्धि के मार्ग पर प्रशस्त किया। अधिशेष

Click Here to Buy book on Amazon

उत्पादन ने उन वर्गों को भी पोषण प्रदान किया जो सीधे तौर पर कृषि कार्यों में संलग्न नहीं थे।

71. (2) केवल III

पुरुष सूक्त ऋग्वेद के दसवें मण्डल का अत्यंत महत्वपूर्ण सूक्त है। यह ब्रह्मांड की उत्पत्ति का वर्णन एक आदि पुरुष की बलि के माध्यम से प्रतीकात्मक रूप से करता है। इसमें प्रथम बार समाज के चार वर्णों—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र—का उल्लेख प्राप्त होता है। यह सूक्त यज्ञों की निंदा नहीं करता, अपितु यज्ञ को ही सृष्टि के निर्माण का मूल और पवित्र आधार मानता है।

पुरुष सूक्त ने समाज के पदानुक्रम को एक दैवीय और धार्मिक स्वीकृति प्रदान की थी। यह विचार सदियों तक भारतीय सामाजिक और धार्मिक दर्शन का केंद्र बना रहा, जिससे वर्ण व्यवस्था को एक सुदृढ़ वैचारिक आधार प्राप्त हुआ।

72. (1) ब्रह्मांडीय व्यवस्था के रक्षक के रूप में वरुण का महत्व बढ़ा।

उत्तर वैदिक काल में धार्मिक प्रवृत्तियों में व्यापक परिवर्तन आए। जहाँ प्रजापति सर्वोच्च रचयिता बने और विष्णु तथा रुद्र का महत्व बढ़ा, वहीं ऋग्वैदिक काल के प्रमुख देवता वरुण का प्रभाव कम हो गया। पूर्व वैदिक काल में वरुण को 'ऋत' का सर्वोच्च रक्षक माना जाता था, किंतु उत्तर वैदिक काल में वे केवल जल के देवता बनकर रह गए। जटिल यज्ञ और पुरोहितों का एकाधिकार इस काल की मुख्य विशेषता थी।

वरुण के प्रभाव में आई यह कमी समाज की बदलती नैतिक और प्राकृतिक धारणाओं का प्रतीक थी। जैसे-जैसे समाज के नियम अधिक मानवीय और कठोर हुए, ब्रह्मांडीय नैतिकता के देवता वरुण का स्थान अन्य नवीन देवों ने ले लिया।

73. (3) यज्ञ अनुष्ठान और मंत्रों की गद्य व्याख्याएँ।

ब्राह्मण ग्रंथ वैदिक साहित्य के वे भाग हैं जो वेदों की संहिताओं पर लिखे गए गद्य ग्रंथ हैं। इनका मुख्य उद्देश्य यज्ञों की विधि, उनके अर्थ और उनके साथ संबंद्ध मंत्रों की विस्तृत व्याख्या करना है। ये ग्रंथ निर्देशित करते हैं कि कौन सा यज्ञ किस समय और किस उद्देश्य हेतु किया जाना चाहिए। इनमें विभिन्न अनुष्ठानों के पीछे की पौराणिक कथाएं भी संकलित हैं जो तत्कालीन समाज का दर्पण हैं।

ब्राह्मण ग्रंथों ने यज्ञों को एक व्यवस्थित विज्ञान के रूप में स्थापित किया, जहाँ प्रत्येक क्रिया का विशिष्ट प्रतीकात्मक अर्थ था। इन ग्रंथों ने पुरोहितों के ज्ञान को संस्थागत बनाया और अनुष्ठानों की शुद्धता पर बल दिया।

74. (3) केवल I, II और IV

उपनिषदों का मुख्य बल आध्यात्मिक ज्ञान के माध्यम से मोक्ष प्राप्ति पर है, न कि बाह्य कर्मकांडों पर। उन्होंने 'माया' और आत्मा के 'ब्रह्म' में विलीन होने के विचार को प्रतिपादित किया। ये ग्रंथ कर्म और पुनर्जन्म के सिद्धांतों का विस्तृत विवेचन करते हैं, जो भारतीय धर्मों का मूल आधार बने। उपनिषद यज्ञों की निरर्थकता पर बल देते हैं, इसलिए वे पशु बलि वाले यज्ञों का समर्थन नहीं करते।

उपनिषदों के विचार व्यक्ति को बाह्य प्रदर्शन के स्थान पर आंतरिक यात्रा हेतु प्रेरित करते हैं। ज्ञान मार्ग की यह प्रधानता भारतीय दर्शन के स्वर्णिम युग की परिचायक है, जिसने वैश्विक स्तर पर विद्वानों और विचारकों को प्रभावित किया है।

75. (4) मोक्ष

उत्तर वैदिक काल में विकसित आश्रम व्यवस्था में जीवन के चार चरणों का वर्णन है: ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास। ये चारों व्यक्ति के जीवन काल के विभिन्न पड़ाव हैं जो अनुशासन और सामाजिक उत्तरदायित्व पर आधारित हैं। दूसरी ओर, 'मोक्ष' कोई आश्रम नहीं है, अपितु यह जीवन का परम लक्ष्य है जिसे 'पुरुषार्थ' कहा जाता है। हिंदू धर्म में चार पुरुषार्थ स्वीकृत हैं: धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष।

आश्रम व्यवस्था का पालन मोक्ष की प्राप्ति को सुगम बनाने हेतु किया जाता था। प्रत्येक आश्रम व्यक्ति को मानसिक और आध्यात्मिक रूप से अगले स्तर हेतु तैयार करता था, जिससे अंततः जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य प्राप्त हो सके।

NODIA

76. (2) बाल गंगाधर तिलक

बाल गंगाधर तिलक ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक में एक विशिष्ट सिद्धांत प्रस्तुत किया। उन्होंने वेदों में वर्णित लंबी उषा और ध्रुवीय खगोलीय स्थितियों का सूक्ष्म विश्लेषण किया। इसके आधार पर उन्होंने तर्क दिया कि आर्यों का मूल निवास स्थान उत्तरी ध्रुव क्षेत्र था। उनके अनुसार, हिमयुग के आगमन के कारण आर्य वहां से दक्षिण की ओर विस्थापित हुए। तिलक का यह शोध वेदों के प्रति उनके गहन अध्ययन का प्रमाण है।

यद्यपि आधुनिक विज्ञान इस मत को पूर्णतः स्वीकार नहीं करता, किंतु ऐतिहासिक विमर्श में उनकी यह व्याख्या अद्वितीय मानी जाती है। यह वेदों की खगोलीय व्याख्याओं के माध्यम से प्राचीन इतिहास को समझने का एक प्रशंसनीय प्रयास था।

77. (3) ऋग्वेद में मरुस्थल का उल्लेख 'धन्व' के रूप में किया गया है।

ऋग्वैदिक आर्य उत्तर-पश्चिमी भारत के भूगोल से पूर्णतः परिचित थे। वे मरुस्थल से अनभिज्ञ नहीं थे और ऋग्वेद में इसके लिए 'धन्व' शब्द का प्रयोग किया गया है। विंध्य पर्वत का ऋग्वेद में कोई स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता, जिससे सिद्ध होता है कि वे तब तक मध्य भारत नहीं पहुँचे थे। सरस्वती को सर्वाधिक पवित्र और सिंधु को सबसे महत्वपूर्ण नदी माना गया था, जबकि गंगा का उल्लेख विरल है।

भौगोलिक संदर्भों की यह सटीकता ऋग्वेद की ऐतिहासिकता को पुख्ता करती है। आर्यों की भौगोलिक दृष्टि तत्कालीन जलवायु और उनके पशुपालक जीवन की आवश्यकताओं के साथ गहराई से जुड़ी हुई थी, जो उनके भजनों में स्पष्ट प्रतिबिंबित होती है।

78. (4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii

ऋग्वेद में अफगानिस्तान की अनेक नदियों का उल्लेख मिलता है, जो आर्यों के वहां निवास का सशक्त प्रमाण हैं। कुभा नदी को आधुनिक काबुल नदी कहा जाता है और क्रुमु को कुर्रम नदी के रूप में पहचाना जाता है। इसी प्रकार गोमती नदी का प्राचीन संदर्भ आज की गोमल नदी से है, जबकि सुवास्तु को स्वात नदी

के नाम से जाना जाता है। ये संदर्भ दर्शाते हैं कि प्रारंभिक वैदिक संस्कृति का विस्तार व्यापक था।
इन नदियों के माध्यम से आर्यों के प्रारंभिक प्रवास मार्गों को चिन्हित करना संभव हुआ है। यह भौगोलिक जानकारी सिद्ध करती है कि सिंधु सभ्यता के पश्चात वैदिक संस्कृति एक विस्तृत भूभाग पर सफलतापूर्वक फैली हुई थी।

NODIA

79. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
वैदिक आर्यों का आहार मुख्य रुप से दूध, घी, धान्य और मांस पर आधारित था। वे नदियों के समीप निवास करते थे, फिर भी मछली का सेवन उनके समाज में प्रचलित नहीं था। पेयों में 'सोम' को अत्यंत पवित्र माना जाता था और इसे यज्ञों के दौरान देवताओं को अर्पित किया जाता था। इसके विपरीत 'सुरा' को समाज में अच्छी दृष्टि से नहीं देखा जाता था और ग्रंथों में इसकी निंदा की गई है।
आहार संबंधी ये प्राथमिकताएं उनके धार्मिक विश्वासों और मवेशियों पर आधारित जीवन शैली को दर्शाती हैं। सोम का आध्यात्मिक महत्व और सुरा के प्रति सामाजिक अरुचि तत्कालीन समाज के उच्च नैतिक और अनुशासनिक स्तर का प्रमाण है।

80. (1) केवल I, II और IV
वैदिक युग के दौरान समाज में गहरे परिवर्तन हुए। ऋग्वेद सबसे प्राचीन वेद है जो पूर्व वैदिक काल की जानकारी देता है, जबकि अन्य तीन वेद उत्तर वैदिक काल से संबंधित हैं। इस काल में महिलाओं ने उपनयन का अधिकार खो दिया और शूद्रों की सामाजिक स्थिति में गिरावट आई। लोहे की तकनीक उत्तर वैदिक काल की सबसे बड़ी उपलब्धि थी, जिसने आर्थिक और सामाजिक संरचना को पूर्णतः बदल दिया।
ये ऐतिहासिक तथ्य वैदिक काल के दो स्पष्ट चरणों के मध्य सामाजिक और तकनीकी अंतर को स्पष्ट करते हैं। कबीलाई समतावाद का अंत और संस्थागत असमानता का उदय इसी कालखंड की सबसे प्रमुख और निर्णायक विशेषता रही है।

अध्याय 03

छठी शताब्दी ईसा पूर्व के धार्मिक आंदोलन : बौद्ध धर्म, जैन धर्म एवं आजीवक संप्रदाय

1. छठी शताब्दी ईसा पूर्व में नास्तिक (श्रवण) संप्रदायों के उदय में मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किस कारक ने योगदान दिया?
(1) कृषि अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण गिरावट, जिसके कारण व्यापक सामाजिक बदलाव आया और लोग पुनः पशुपालन की ओर लौट गए
(2) वर्ण व्यवस्था की कठोरता और वैदिक कर्मकांडों एवं पशु बलि का आर्थिक बोझ
(3) विदेशी जनजातियों का अचानक आक्रमण, जिसने स्थानीय आबादी को नए धार्मिक विश्वासों को खोजने के लिए विवश किया
(4) राजतंत्रों का पूर्ण पतन और पूरे क्षेत्र में लोकतांत्रिक गणराज्यों का सार्वभौमिक उदय
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

2. छठी शताब्दी ईसा पूर्व में ब्राह्मणों के कर्मकांडी प्रभुत्व के विरुद्ध दार्शनिक और धार्मिक विद्रोह का नेतृत्व मुख्य रूप से किस वर्ण द्वारा किया गया था?
(1) क्षत्रिय
(2) वैश्य
(3) शूद्र
(4) अंत्यज
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

3. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं—कथन (A) और कारण (R)। नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
कथन (A): छठी शताब्दी ईसा पूर्व में गंगा घाटी में कई नास्तिक संप्रदायों का उदय हुआ।
कारण (R): कृषि अर्थव्यवस्था और व्यापार के विस्तार के लिए कठोर वैदिक पशु बलि से मुक्ति आवश्यक थी, क्योंकि इससे आवश्यक पशुधन का ह्रास हो रहा था।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

4. निम्नलिखित में से कौन सा कथन छठी शताब्दी ईसा पूर्व के ऐतिहासिक संदर्भ का गलत वर्णन करता है?
(1) लोहे के उपकरणों के प्रयोग से अधिशेष कृषि उत्पादन संभव हुआ।
(2) आहत सिक्कों जैसे सिक्कों का नियमित उपयोग शुरू हुआ जिससे व्यापार सुगम हुआ।
(3) गंगा के मैदानों में नए दार्शनिक विचारकों का प्रसार हुआ।
(4) इस अवधि में शहरी केंद्रों का पतन हुआ और ग्रामीण जनजातीय बस्तियों की ओर वापसी हुई।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

5. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (जैन शब्दावली)
A. जिन
B. निर्ग्रंथ
C. तीर्थंकर
D. केवलिन
सूची II: (अर्थ)
i. संसार रुपी सागर से पार उतारने वाले मार्गदर्शक
ii. सभी बंधनों से मुक्त
iii. इंद्रियों और इच्छाओं का विजेता
iv. सर्वोच्च ज्ञान प्राप्त करने वाला
(1) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(4) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

6. वर्धमान महावीर निम्नलिखित में से किस प्रमुख क्षत्रिय कुल से संबंधित थे?
(1) शाक्य कुल
(2) ज्ञातृक कुल
(3) मल्ल कुल
(4) लिच्छवी कुल
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

7. वर्धमान महावीर के जीवन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

Downloaded from www.pdf.tube

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs,
you are wasting valuable time.

Research shows that learning from **PRINTED BOOKS** has up to **4× HIGHER RETENTION** than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS** move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND** in competition.

In competitive exams,
being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

I. उनका जन्म वैशाली के निकट कुंडग्राम में हुआ था।
II. वे ज्ञातृक क्षत्रिय कुल के थे।
III. उन्होंने कुशीनगर में निर्वाण प्राप्त किया।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

8. जैन तीर्थंकरों और उनके प्रतीक चिह्नों के सही सुमेलित युग्म की पहचान कीजिए।
(1) पार्श्वनाथ - सर्प
(2) ऋषभनाथ - सिंह
(3) महावीर - वृषभ (बैल)
(4) अजितनाथ - कमल
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

9. निम्नलिखित में से कौन वर्धमान महावीर का प्रथम शिष्य था, जिसने बाद में उनके विरुद्ध विद्रोह कर दिया था?
(1) मक्खलि गोसाल
(2) आनंद
(3) जामालि
(4) भद्रबाहु
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

10. वर्धमान महावीर के जीवन की निम्नलिखित घटनाओं पर विचार कीजिए:
I. जृंभिकग्राम में कैवल्य की प्राप्ति
II. कुंडग्राम में जन्म
III. पावा में मृत्यु
IV. तीस वर्ष की आयु में गृहत्याग
उपर्युक्त घटनाओं का सही कालानुक्रमिक क्रम निम्नलिखित में से कौन सा है?
(1) II, IV, I, III
(2) II, I, IV, III
(3) IV, II, I, III
(4) II, IV, III, I
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

11. जैन दार्शनिक सिद्धांत 'अनेकांतवाद' मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किस अवधारणा से संबंधित है?
(1) कठोर तपस्या और प्रायश्चित का सिद्धांत
(2) अत्यधिक अहिंसा का सिद्धांत
(3) नियतिवाद में विश्वास
(4) यथार्थ की बहुआयामी और सापेक्ष प्रकृति
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

12. जैन धर्म के 'स्यादवाद' के सिद्धांत के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसे सप्तभंगी नय या सात प्रकार के कथनों के सिद्धांत के रूप में भी जाना जाता है।
II. यह अनेकांतवाद के सत्तामीमांसीय सिद्धांत का ज्ञानमीमांसीय प्रतिरूप है।
III. यह दावा करता है कि पूर्ण सत्य को सरल कथनों में पूरी तरह से वर्णित किया जा सकता है।
IV. यह मानवीय ज्ञान की सापेक्षता को दर्शाने के लिए 'स्यात्' शब्द का उपयोग करता है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, II और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) केवल I, III और IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

13. जैन ज्ञानमीमांसा में, 'निश्चयवाद' निम्नलिखित में से किस दृष्टिकोण को संदर्भित करता है?
(1) यथार्थ का व्यावहारिक और सोपाधिक दृष्टिकोण
(2) यह विश्वास कि मुक्ति प्राप्त करने में मानवीय प्रयास की कोई भूमिका नहीं है
(3) यथार्थ का निरपेक्ष और अंतिम दृष्टिकोण
(4) वह सिद्धांत जो कर्मकांडों के कड़ाई से पालन पर बल देता है
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

14. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (जैन अवधारणाएं)
A. जीव
B. अजीव
C. आस्त्रव
D. संवर
सूची II: (परिभाषाएं)
i. आत्मा में कर्म पुद्गलों का प्रवेश
ii. कर्म पुद्गलों के प्रवेश का रुकना
iii. सचेतन इकाई या आत्मा
iv. अचेतन या जड़ तत्व
(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(3) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(4) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

15. यदि कोई दार्शनिक तर्क देता है कि किसी वस्तु का वर्णन प्रेक्षक के दृष्टिकोण के आधार पर विभिन्न रूपों में किया जा सकता है, तो वह किस विशिष्ट जैन सिद्धांत का प्रतिपादन कर रहा है?
(1) स्यादवाद
(2) प्रतीत्यसमुत्पाद
(3) नियतिवाद
(4) निश्चयवाद
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

NODIA

16. जैन धर्म के पंच महाव्रतों में से, पार्श्वनाथ द्वारा प्रतिपादित चार व्रतों में वर्धमान महावीर ने कौन सा पाँचवाँ व्रत जोड़ा था?
(1) अहिंसा
(2) ब्रह्मचर्य
(3) सत्य
(4) अपरिग्रह
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

17. जैन नैतिक प्रथाओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. महाव्रत कठोर व्रत हैं जो जैन भिक्षुओं और साध्वियों के लिए अनिवार्य हैं।
II. अणुव्रत कम कठोर व्रत हैं जो जैन गृहस्थों (श्रावकों) के लिए हैं।
III. संलेखना मृत्यु के निकट होने पर किया जाने वाला स्वैच्छिक उपवास है।
IV. अस्तेय का अर्थ अपरिग्रह या अनासक्ति का सिद्धांत है।
V. अहिंसा के अंतर्गत स्थावर (अचल) जीवों सहित जीवन के सभी रूपों की रक्षा की जाती है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III और V
(2) केवल I, II, IV और V
(3) केवल II, III, IV और V
(4) केवल I, III, IV और V
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

18. जैन धर्म द्वारा अपने अनुयायियों को कृषि कार्यों में संलग्न होने से हतोत्साहित करने का सबसे उपयुक्त कारण क्या है?
(1) कृषि कार्यों में सूक्ष्मजीवों की अनजाने में हत्या होती है, जो अहिंसा के सिद्धांत का उल्लंघन है।
(2) प्राचीन ग्रंथों में कृषि को केवल शूद्रों के लिए निर्धारित किया गया था।
(3) कृषि करने वाले व्यक्ति तीर्थस्थलों की लंबी यात्राएं करने में असमर्थ थे।
(4) व्यापार और वाणिज्य से अधिक धन प्राप्त होता था जो मठों के लिए आवश्यक था।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

19. निम्नलिखित विकल्पों में से उसे चुनें, जो जैन धर्म के त्रिरत्न से संबंधित नहीं है:
(1) सम्यक दर्शन
(2) सम्यक ज्ञान
(3) सम्यक स्मृति
(4) सम्यक चरित्र
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

20. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं—कथन (A) और कारण (R)। नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
कथन (A): जैन भिक्षु अपने मुख पर वस्त्र का टुकड़ा बांधते हैं और चलते समय मार्ग को सावधानीपूर्वक झाड़ते हैं।
कारण (R): जैन धर्म के अनुसार अहिंसा का सिद्धांत सूक्ष्म जीवों के प्रति भी हिंसा को कड़ाई से प्रतिबंधित करता है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

21. जैन धर्म का दिगंबर और श्वेतांबर संप्रदायों में विभाजन मुख्य रूप से किस ऐतिहासिक घटना के कारण हुआ था?
(1) प्रथम संगीति के दौरान ईश्वर के अस्तित्व पर सैद्धांतिक विवाद
(2) संघ में महिलाओं के प्रवेश को लेकर मतभेद
(3) मगध में बारह वर्षों का भीषण अकाल और उसके फलस्वरूप दक्षिण की ओर पलायन
(4) विदेशी आक्रमणों के कारण उत्तरी व्यापारिक मार्गों का अवरुद्ध होना
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

22. जैन धर्म के दिगंबर और श्वेतांबर संप्रदायों के बीच अंतर के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।
(1) दिगंबरों का मानना है कि महिलाएं वर्तमान देह में कैवल्य प्राप्त कर सकती हैं।
(2) श्वेतांबरों के अनुसार 19वें तीर्थंकर मल्लिनाथ एक स्त्री थीं।
(3) दिगंबर पाटलिपुत्र की संगीति में संकलित आगम ग्रंथों की प्रामाणिकता स्वीकार करते हैं।
(4) श्वेतांबर भिक्षु पूर्णतः नग्न रहने के नियम का पालन करते हैं।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

23. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (जैन उप-संप्रदाय)
A. स्थानकवासी
B. तेरापंथी
C. बीसपंथी
D. तारणपंथी
सूची II: (विशेषताएं)
i. श्वेतांबर उप-संप्रदाय जो मूर्ति पूजा का निषेध करता है
ii. आचार्य भिक्षु द्वारा स्थापित श्वेतांबर उप-संप्रदाय
iii. दिगंबर उप-संप्रदाय जो मूर्तियों की पूजा करता है
iv. दिगंबर उप-संप्रदाय जो मूर्तियों के स्थान पर ग्रंथों की पूजा करता है
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(4) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

Click Here to Buy book on Amazon

24. स्थूलभद्र की अध्यक्षता में पाटलिपुत्र में आयोजित प्रथम जैन संगीति का मुख्य परिणाम क्या था?
(1) 12 अंगों का संकलन, जिसे दक्षिण से लौटने वाले भिक्षुओं ने अस्वीकार कर दिया।
(2) उत्तरी और दक्षिणी जैन समुदायों का पूर्ण समन्वय।
(3) जैन धर्मग्रंथों के लिए संस्कृत को राजभाषा के रूप में अपनाना।
(4) जैन भिक्षुओं को राजकीय प्रशासन में सक्रिय भूमिका प्रदान करना।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

25. दिगंबर संप्रदाय की मान्यताओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उनका मानना है कि वर्धमान महावीर अविवाहित थे।
II. उनका मानना है कि केवलिन को शरीर धारण करने के लिए भोजन की आवश्यकता नहीं होती।
III. उन्होंने प्रथम जैन संगीति में संकलित ग्रंथों को पूर्णतः स्वीकार किया।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

26. हाथीगुम्फा शिलालेख, जो प्राचीन भारत में जैन धर्म को प्राप्त राजकीय संरक्षण का प्रमुख पुरालेखीय स्रोत है, किस शासक से संबंधित है?
(1) कलिंग नरेश खारवेल
(2) चंद्रगुप्त मौर्य
(3) मगध नरेश बिंबिसार
(4) अमोघवर्ष प्रथम
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

27. माउंट आबू स्थित प्रसिद्ध दिलवाड़ा मंदिर, जो जैनियों का प्रमुख तीर्थ स्थल है, किस वंश के शासनकाल में निर्मित हुए थे?
(1) चंदेल वंश
(2) राष्ट्रकूट वंश
(3) चौहान वंश
(4) सोलंकी (चालुक्य) वंश
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

28. निम्नलिखित में से कौन जैन धर्म के प्रारंभिक राजकीय संरक्षकों का सही कालानुक्रमिक क्रम है?
(1) बिंबिसार, चंद्रगुप्त मौर्य, खारवेल, कुमारपाल
(2) चंद्रगुप्त मौर्य, बिंबिसार, कुमारपाल, खारवेल
(3) बिंबिसार, खारवेल, चंद्रगुप्त मौर्य, कुमारपाल
(4) खारवेल, बिंबिसार, चंद्रगुप्त मौर्य, कुमारपाल
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

29. हर्यंक वंश का वह शासक, जिसे पाटलिपुत्र नगर की स्थापना का श्रेय दिया जाता है और जो जैन ग्रंथों में जैन धर्म के संरक्षक के रूप में वर्णित है, कौन है?
(1) बिंबिसार
(2) अजातशत्रु
(3) उदयिन
(4) शिशुनाग
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

30. जैन धर्म के प्रसार और संरक्षण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. कुषाण काल में मथुरा जैन कला और संस्कृति का प्रमुख केंद्र था।
II. चंद्रगुप्त मौर्य भद्रबाहु के साथ श्रवणबेलगोला गए और वहाँ संलेखना की।
III. राष्ट्रकूट राजा अमोघवर्ष ने जैन ग्रंथ 'रत्नमालिका' और 'कविराजमार्ग' की रचना की।
IV. 5वीं शताब्दी ईस्वी तक जैन धर्म ने श्रीलंका और दक्षिण-पूर्व एशिया से बौद्ध धर्म को विस्थापित कर दिया था।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल III और IV
(3) केवल IV
(4) केवल II और IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

31. निम्नलिखित प्राचीन भारतीय राजवंशों में से किसे जैन धर्म के प्रति कम सक्रिय संरक्षण देने के कारण अपवाद माना जाता है?
(1) गुप्त राजवंश
(2) गंग राजवंश
(3) कदंब राजवंश
(4) चालुक्य राजवंश
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

32. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (बुद्ध के जीवन की घटनाएं)
A. जन्म
B. महाभिनिष्क्रमण (गृहत्याग)
C. निर्वाण (ज्ञान प्राप्ति)
D. धर्मचक्रप्रवर्तन (प्रथम उपदेश)
सूची II: (संबंधित प्रतीक)
i. बोधि वृक्ष
ii. चक्र
iii. कमल और वृषभ
iv. अश्व (घोड़ा)
(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(3) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(4) A-iii, B-i, C-iv, D-ii

NODIA

(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

33. ज्ञान प्राप्ति से पूर्व, सिद्धार्थ गौतम ने किन दो प्रमुख गुरुओं से ध्यान और तप की शिक्षा ली थी?
(1) मक्खलि गोसाल और अजित केशकंबली
(2) अलार कलाम और उद्रक रामपुत्र
(3) पकुध कच्चायन और संजय बेलट्ठिपुत्त
(4) महाकश्यप और उपाली
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

34. गौतम बुद्ध के जीवन से जुड़े स्थानों के संबंध में गलत सुमेलित युग्म की पहचान कीजिए।
(1) सारनाथ - उनकी मृत्यु और महापरिनिर्वाण का स्थल
(2) लुंबिनी - बुद्ध का जन्मस्थान
(3) बोधगया - ज्ञान प्राप्ति का स्थल
(4) श्रावस्ती - वह स्थान जहाँ उन्होंने सर्वाधिक वर्षावास व्यतीत किए
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

35. सिद्धार्थ गौतम के जीवन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. वे शाक्य गणराज्य के क्षत्रिय कुल से थे।
II. उन्होंने 29 वर्ष की आयु में सत्य की खोज में गृहत्याग किया।
III. उन्होंने निरंजना नदी के तट पर ज्ञान प्राप्त किया।
IV. उन्होंने अपना अंतिम उपदेश कुशीनगर में सुभद्द को दिया।
V. महाभिनिष्क्रमण के समय उनके सारथी का नाम देवदत्त था।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III और IV
(2) केवल I, III, IV और V
(3) केवल II, III, IV और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

36. बौद्ध परंपरा के अनुसार, सिद्धार्थ गौतम के प्रिय अश्व और सारथी के नाम क्रमशः क्या थे?
(1) चेतक और चन्ना
(2) कंथक और देवदत्त
(3) चेतक और आनंद
(4) कंथक और चन्ना
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

37. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं—कथन (A) और कारण (R)। नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
कथन (A): बुद्ध ने सारनाथ में पाँच तपस्वियों को अपना प्रथम उपदेश दिया था।
कारण (R): बौद्ध परंपरा में इस घटना को महापरिनिर्वाण के रूप में जाना जाता है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

38. बौद्ध धर्म के चार आर्य सत्यों के अनुसार, दूसरा आर्य सत्य (दुःख समुदय) किसे दुखों का मूल कारण मानता है?
(1) वैदिक कर्मकांडों की अज्ञानता
(2) तृष्णा (लालसा)
(3) शारीरिक मृत्यु का चक्र
(4) ईश्वरीय प्रकोप
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

39. बौद्ध दर्शन में, 'दुःख निरोध गामिनी प्रतिपदा' शब्द का संबंध किस अवधारणा से है?
(1) प्रतीत्यसमुत्पाद का सिद्धांत
(2) अनात्मवाद का सिद्धांत
(3) भिक्षुओं की आचार संहिता
(4) अष्टांगिक मार्ग
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

40. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (अष्टांगिक मार्ग के स्कंध)
A. प्रज्ञा
B. शील
C. समाधि
D. शील का अन्य घटक
सूची II: (विशिष्ट मार्ग)
i. सम्यक दृष्टि
ii. सम्यक वाक
iii. सम्यक स्मृति
iv. सम्यक आजीव
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

41. निम्नलिखित में से कौन सा बौद्ध धर्म के अष्टांगिक मार्ग का भाग नहीं है?
(1) सम्यक संकल्प
(2) सम्यक व्यायाम
(3) सम्यक काम
(4) सम्यक कर्मांत
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

42. अष्टांगिक मार्ग के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. सम्यक वाक को शील (नैतिक अनुशासन) के अंतर्गत

Downloaded from www.pdf.tube

वर्गीकृत किया गया है।
II. सम्यक समाधि को प्रज्ञा के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।
III. सम्यक आजीव घातक शस्त्रों और नशीले पदार्थों के व्यापार का निषेध करता है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?
(1) केवल I
(2) केवल II
(3) केवल III
(4) केवल I और III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

43. बौद्ध धर्म 'अनात्मवाद' (स्थायी आत्मा का अभाव) और 'पुनर्जन्म' के विरोधाभासी विचारों में कैसे सामंजस्य स्थापित करता है?
(1) पुनर्जन्म आनुवंशिक तत्वों द्वारा संचालित होता है।
(2) आत्मा केवल मृत्यु और जन्म के बीच के अल्प समय के लिए अस्तित्व में रहती है।
(3) पुनर्जन्म एक पूर्ण भ्रम है क्योंकि केवल भौतिक जीवन ही सत्य है।
(4) पुनर्जन्म कर्म द्वारा संचालित चेतना का प्रवाह है, जैसे एक दीपक से दूसरा दीपक जलता है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

44. बौद्ध धर्म का मूलभूत दार्शनिक सिद्धांत 'प्रतीत्यसमुत्पाद' क्या है?
(1) अत्यधिक अहिंसा और कायाक्लेश का सिद्धांत
(2) कारण-कार्य सिद्धांत या सापेक्ष उत्पत्ति का नियम
(3) भौतिक पदार्थों का परमाणुओं में विभाजन
(4) सृष्टिकर्ता ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

45. प्रतीत्यसमुत्पाद की कड़ियों (द्वादश निदान) के सही अनुक्रम पर विचार कीजिए:
I. विज्ञान (चेतना)
II. अविद्या (अज्ञानता)
III. नाम-रूप (मन और काय)
IV. संस्कार (मानसिक प्रवृत्तियाँ)
अविद्या से प्रारंभ होने वाला सही अनुक्रम क्या है?
(1) II, IV, I, III
(2) II, I, IV, III
(3) IV, II, I, III
(4) I, II, III, IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

46. बौद्ध दर्शन में 'अनिच्च' (अनित्य) शब्द का क्या अर्थ है?
(1) ब्रह्मांड की शाश्वत प्रकृति
(2) दुखों का पूर्ण अभाव
(3) ब्रह्म की चरम वास्तविकता
(4) संसार की क्षणभंगुरता या क्षणिकवाद का सिद्धांत
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

NODIA

47. बौद्ध दर्शन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह वेदों की प्रामाणिकता को नकारता है।
II. यह निर्वाण प्राप्ति हेतु अत्यधिक कायाक्लेश और तपस्या पर बल देता है।
III. यह आधिकारिक रूप से एक सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता ईश्वर को स्वीकार करता है।
IV. यह भोग-विलास और कठोर तप के बीच 'मध्यम मार्ग' का समर्थन करता है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?
(1) केवल I और IV
(2) केवल II और III
(3) केवल I, II और III
(4) केवल II, III और IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

48. निम्नलिखित में से उसे चुनें, जो बौद्ध धर्म के 'पंच स्कंधों' का भाग नहीं है:
(1) रूप (पदार्थ)
(2) आत्मन (शाश्वत आत्मा)
(3) वेदना (अनुभूति)
(4) विज्ञान (चेतना)
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

49. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (बौद्ध संप्रदाय)
A. हीनयान
B. महायान
C. वज्रयान
D. थेरवाद
सूची II: (मुख्य विशेषता)
i. तांत्रिक अनुष्ठानों और मंत्रों पर बल
ii. पाली आगमों का अनुसरण और श्रीलंका में प्रभाव
iii. बोधिसत्व का आदर्श और संस्कृत का प्रयोग
iv. व्यक्तिगत मोक्ष (अर्हत पद) पर बल और मूर्ति पूजा का अभाव
(1) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(4) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

50. महायान बौद्ध धर्म की वह कौन सी विशेषता है जो इसे प्रारंभिक संप्रदायों से अलग करती है?
(1) बुद्ध को देवता मानना और मूर्ति पूजा का प्रचलन
(2) बुद्ध की मूर्तियों और चित्रों का पूर्ण निषेध
(3) दार्शनिक ग्रंथों के लिए केवल पाली भाषा का प्रयोग
(4) यह विश्वास कि मोक्ष केवल भिक्षुओं तक सीमित है
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

51. महायान बौद्ध धर्म में 'बोधिसत्व' की क्या परिभाषा है?

(1) एक साधक जो गुप्त सिद्धियों के लिए तंत्र-मंत्र का प्रयोग करता है।
(2) एक भिक्षु जो निर्वाण प्राप्त कर संसार का त्याग कर चुका है।
(3) एक करुणाशील सत्ता जो अन्य जीवों की मुक्ति हेतु अपने निर्वाण को विलंबित करती है।
(4) एक धनवान संरक्षक जो विहारों के निर्माण हेतु दान देता है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

52. वज्रयान बौद्ध धर्म के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसका उदय 8वीं शताब्दी के आसपास पूर्वी भारत में हुआ।
II. इसने मंडलों और वज्र प्रतीकों की अवधारणा प्रस्तुत की।
III. इसने स्त्री देवताओं की पूजा को पूर्णतः अस्वीकार कर दिया।
IV. विक्रमशिला विश्वविद्यालय इसके प्रसार का प्रमुख केंद्र था।
V. इसमें देवी तारा की प्रमुखता है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?
(1) केवल I और V
(2) केवल III
(3) केवल II, III और IV
(4) केवल IV और V
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

53. वज्रयान संप्रदाय में किस प्रमुख स्त्री देवी की पूजा की जाती है?
(1) सरस्वती
(2) काली
(3) तारा
(4) लक्ष्मी
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

54. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं—कथन (A) और कारण (R)। नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
कथन (A): चतुर्थ बौद्ध संगीति के उपरांत बौद्ध धर्म हीनयान और महायान संप्रदायों में विभाजित हो गया।
कारण (R): चतुर्थ बौद्ध संगीति अशोक के संरक्षण में पाटलिपुत्र में आयोजित हुई थी।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

55. बुद्ध के महापरिनिर्वाण के तुरंत बाद राजगृह में आयोजित प्रथम बौद्ध संगीति की अध्यक्षता किसने की थी?
(1) उपाली
(2) मोगलीपुत्त तिस्स
(3) वसुमित्र
(4) महाकश्यप
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

56. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (बौद्ध संगीतियाँ)
A. प्रथम बौद्ध संगीति
B. द्वितीय बौद्ध संगीति
C. तृतीय बौद्ध संगीति
D. चतुर्थ बौद्ध संगीति
सूची II: (राजकीय संरक्षक)
i. अशोक
ii. अजातशत्रु
iii. कनिष्क
iv. कालासोक
(1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(2) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

57. दार्शनिक सिद्धांतों के संकलन 'अभिधम्म पिटक' की रचना किस संगीति के दौरान हुई थी?
(1) प्रथम संगीति
(2) द्वितीय संगीति
(3) तृतीय संगीति
(4) चतुर्थ संगीति
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

58. द्वितीय बौद्ध संगीति के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह बुद्ध की मृत्यु के 100 वर्ष बाद वैशाली में आयोजित हुई थी।
II. इसमें स्थविरवादियों और महासांघिकों के बीच प्रथम बड़ा विभाजन हुआ।
III. इसका मुख्य उद्देश्य बौद्ध ग्रंथों का संस्कृत में अनुवाद करना था।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

59. चतुर्थ बौद्ध संगीति, जिसमें महायान संप्रदाय को मान्यता मिली, कहाँ आयोजित की गई थी?
(1) पाटलिपुत्र
(2) वैशाली

Click Here to Buy book on Amazon

(3) राजगृह
(4) कुंडलवन (कश्मीर)
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

60. निम्नलिखित में से किस ग्रंथ का संकलन प्रथम बौद्ध संगीति के समय नहीं हुआ था?
(1) सुत्त पिटक
(2) अभिधम्म पिटक
(3) विनय पिटक
(4) भिक्षु अनुशासन के नियम
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

61. भारत के बाहर बौद्ध धर्म के प्रसार का सही कालानुक्रमिक क्रम क्या है?
(1) श्रीलंका, मध्य एशिया, चीन, जापान
(2) चीन, जापान, श्रीलंका, मध्य एशिया
(3) जापान, चीन, मध्य एशिया, श्रीलंका
(4) मध्य एशिया, श्रीलंका, जापान, चीन
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

62. सम्राट अशोक ने श्रीलंका में बौद्ध धर्म के प्रचार हेतु महेंद्र और संघमित्रा को भेजा। संघमित्रा अपने साथ कौन सा पवित्र अवशेष ले गई थीं?
(1) बुद्ध का भिक्षा पात्र
(2) बुद्ध का दंत अवशेष
(3) सुत्त पिटक की पांडुलिपि
(4) बोधगया के मूल बोधि वृक्ष की एक शाखा (पनीर)
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

63. प्राचीन काल में चीन और पूर्वी एशिया में महायान बौद्ध धर्म के प्रसार में किस व्यापारिक मार्ग की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण थी?
(1) रेशम मार्ग (सिल्क रोड)
(2) मसाला मार्ग
(3) गंध मार्ग (इन्सेन्स रूट)
(4) उत्तर पथ
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

64. दक्षिण-पूर्व एशिया में बौद्ध धर्म के प्रसार के संबंध में सही कथन कौन सा है?
(1) जैन धर्म के प्रभाव के कारण वहाँ बौद्ध धर्म सफल नहीं हो सका।
(2) श्रीविजय साम्राज्य महायान और वज्रयान बौद्ध धर्म की शिक्षा का प्रमुख केंद्र था।
(3) दक्षिण-पूर्व एशियाई बौद्धों ने पाली ग्रंथों को त्याग कर केवल संस्कृत ग्रंथों को अपनाया।
(4) अशोक ने व्यक्तिगत रूप से इंडोनेशिया की यात्रा कर मठों की स्थापना की थी।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

65. बौद्ध धर्म का एक क्षेत्रीय संप्रदाय से वैश्विक धर्म बनने का प्रमुख कारण क्या था?
(1) मौर्य सेना द्वारा किया गया बलपूर्वक धर्मांतरण।
(2) अशोक का राजकीय संरक्षण और धम्म प्रचारकों की नियुक्ति।
(3) समुद्री व्यापार पर बौद्ध भिक्षुओं का एकाधिकार।
(4) बौद्धों द्वारा प्रतिद्वंद्वी हिंदू मंदिरों का विनाश।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

66. छठी शताब्दी ईसा पूर्व में आजीवक संप्रदाय के संस्थापक कौन थे?
(1) मक्खलि गोसाल
(2) पूरण कस्सप
(3) अजित केशकंबली
(4) पकुध कच्चायन
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

67. आजीवक संप्रदाय का मुख्य सिद्धांत 'नियति' किस अवधारणा पर आधारित है?
(1) भौतिकवाद और अनात्मवाद
(2) कर्म पर आधारित पुनर्जन्म
(3) पूर्ण भाग्यवादिता या पूर्व-निर्धारित नियति
(4) सापेक्षिक सत्य
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

68. आजीवक संप्रदाय की मान्यताओं के संबंध में गलत कथन कौन सा है?
(1) उन्होंने मानवीय प्रयासों या स्वतंत्र इच्छा की भूमिका को पूरी तरह नकारा।
(2) वे कठोर तप का पालन करते थे और प्रायः नग्न रहते थे।
(3) उनका मानना था कि प्रत्येक जीव को मुक्ति से पूर्व निश्चित जन्मों से गुजरना ही पड़ता है।
(4) उनका मानना था कि कर्म के माध्यम से भविष्य बदला जा सकता है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

69. सम्राट अशोक और उनके पौत्र दशरथ ने आजीवक तपस्वियों के लिए कहाँ गुफाओं का निर्माण करवाया था?
(1) अजंता और एलोरा
(2) बैराठ (विराटनगर)
(3) बराबर और नागार्जुनी पहाड़ियाँ
(4) उदयगिरि और खंडगिरि
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

70. निम्नलिखित दार्शनिक संप्रदायों में से उसे चुनें जो नास्तिक (अवैदिक) श्रेणी में नहीं आता:
(1) बौद्ध धर्म
(2) न्याय
(3) जैन धर्म
(4) आजीवक
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

Downloaded from www.pdf.tube

71. आजीवक संप्रदाय की स्थापना से पूर्व, मक्खलि गोसाल 6 वर्षों तक किस धर्मगुरु के सहयोगी रहे थे?
(1) सिद्धार्थ गौतम
(2) पार्श्वनाथ
(3) भद्रबाहु
(4) वर्धमान महावीर
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

72. छठी शताब्दी ईसा पूर्व के नास्तिक संप्रदायों (बौद्ध, जैन, आजीवक) के सामाजिक संदर्भ में कौन से कथन गलत हैं?
I. उन्होंने वर्ण व्यवस्था के कठोर सोपानक्रम का विरोध किया।
II. उन्होंने अपने संघों में समानता को बढ़ावा दिया।
III. उन्होंने अनुष्ठानिक पशु बलि का समर्थन किया।
IV. उन्होंने संस्कृत के स्थान पर लोक भाषाओं (प्राकृत, पाली) का प्रयोग किया।
V. उन्हें प्राथमिक संरक्षण केवल ब्राह्मण वर्ग से प्राप्त हुआ।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल III और V
(3) केवल IV और V
(4) केवल I, II और IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

73. वैश्य (व्यापारी) समुदाय द्वारा जैन और बौद्ध धर्म को दिए गए व्यापक संरक्षण का मुख्य कारण क्या था?
(1) व्यापारी वर्ग अपना व्यवसाय छोड़कर भिक्षु बनना चाहता था।
(2) इन धर्मों ने जादुई अनुष्ठानों द्वारा व्यापार में लाभ का वचन दिया था।
(3) अहिंसा के प्रचार से व्यापारिक मार्ग सुरक्षित हुए और वर्ण व्यवस्था की आलोचना से वैश्यों का सामाजिक सम्मान बढ़ा।
(4) ब्राह्मणों ने वैश्यों की समुद्री यात्राओं पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया था।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

74. प्रारंभिक बौद्ध और जैन प्रचारकों द्वारा संस्कृत के स्थान पर पाली और प्राकृत को अपनाने का मुख्य उद्देश्य क्या था?
(1) अपनी शिक्षाओं को जनसाधारण और वंचित वर्गों तक पहुँचाना
(2) अपने सिद्धांतों को गुप्त रखना
(3) विदेशी राजदूतों को प्रभावित करना
(4) शिलालेखों को उकेरने में सुगमता सुनिश्चित करना
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

75. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (संप्रदाय)
A. जैन धर्म
B. बौद्ध धर्म
C. आजीवक
D. चार्वाक
सूची II: (दार्शनिक सिद्धांत)
i. प्रतीत्यसमुत्पाद
ii. अनेकांतवाद
iii. नियतिवाद
iv. लोकायत (भौतिकवाद)
(1) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(2) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(3) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(4) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

76. छठी शताब्दी ईसा पूर्व में नास्तिक संप्रदायों द्वारा पशु बलि का विरोध एक आर्थिक आवश्यकता भी थी, क्योंकि:
(1) सेना को युद्ध के लिए अधिक पशुओं की आवश्यकता थी।
(2) नई कृषि अर्थव्यवस्था पशुधन (बैल आदि) के संरक्षण पर निर्भर थी।
(3) राज्य ने पशुओं की खाल पर भारी कर लगा दिया था।
(4) विदेशी व्यापार हेतु पशुओं का निर्यात अधिक लाभप्रद था।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

77. भारत में बौद्ध धर्म के पतन का प्राथमिक आंतरिक कारण क्या माना जाता है?
(1) भिक्षुओं द्वारा गंगा घाटी के बाहर प्रचार करने में विफलता।
(2) बौद्ध राजाओं द्वारा जनता पर जबरन शाकाहार थोपना।
(3) विहारों में व्याप्त भ्रष्टाचार, नैतिक पतन और अत्यधिक धन का संचय।
(4) महायान संप्रदाय द्वारा मूर्ति पूजा का विरोध।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

78. भारत में बौद्ध धर्म के पतन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. ब्राह्मण धर्म ने बुद्ध को विष्णु का अवतार मानकर बौद्ध तत्वों को आत्मसात कर लिया।
II. पाल राजवंश के बाद बौद्ध धर्म को मिलने वाला राजकीय संरक्षण कम हो गया।
III. तुर्की आक्रमणों के कारण नालंदा जैसे शिक्षण केंद्रों का विनाश हुआ।
IV. गणितीय त्रुटियों के कारण बौद्ध ग्रंथों को अमान्य कर दिया गया।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II और IV
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, II और III
(4) केवल I और III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

NODIA

79. बौद्ध धर्म के पतन में भक्ति आंदोलन और दार्शनिकों की भूमिका के संबंध में सही कथन चुनें।

(1) शंकराचार्य और कुमारिल भट्ट ने शास्त्रार्थों में बौद्ध दर्शन को चुनौती दी और उसे प्रभावित किया।
(2) भक्ति आंदोलन ने कठोर तप पर बल दिया जिससे बौद्ध मार्ग सरल लगने लगा।
(3) भक्ति संतों ने सैन्य बल से विहारों को नष्ट कर दिया।
(4) भक्ति आंदोलन ने बौद्ध ग्रंथों का संस्कृत में अनुवाद कर उनकी पहचान समाप्त कर दी।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

80. निम्नलिखित में से कौन सी भारत में बौद्ध धर्म के पतन की वजह नहीं थी?

(1) महायान भिक्षुओं द्वारा संस्कृत को अपनाना जिससे जनसाधारण से उनकी दूरी बढ़ गई।
(2) 12वीं शताब्दी तक पाली भाषा का कड़ाई से पालन करना और संस्कृत का विरोध करना।
(3) वज्रयान की जटिल तांत्रिक क्रियाओं से मूल नैतिक शिक्षाओं का कमजोर होना।
(4) उत्तर-गुप्त काल में व्यापारिक केंद्रों के पतन से संरक्षण में कमी आना।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

www.nodia.in

Click Here to Buy book on Amazon

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) वर्ण व्यवस्था की कठोरता और वैदिक कर्मकांडों एवं पशु बलि का आर्थिक बोझ
छठी शताब्दी ईसा पूर्व में गंगा घाटी में अनेक धार्मिक संप्रदायों का उदय हुआ। इसका मुख्य कारण तत्कालीन समाज में व्याप्त वर्ण व्यवस्था की जटिलता थी। ब्राह्मणों के बढ़ते वर्चस्व और खर्चीले वैदिक कर्मकांडों ने सामान्य जनमानस पर भारी बोझ डाल दिया था। साथ ही, पशु बलि से कृषि कार्य बाधित हो रहे थे। इन परिस्थितियों ने लोगों को सरल विकल्पों हेतु प्रेरित किया।

2. (1) क्षत्रिय
वैदिक काल के अंत तक समाज में ब्राह्मणों का प्रभुत्व अत्यधिक बढ़ गया था। क्षत्रिय वर्ग अपनी राजनीतिक शक्ति के साथ सामाजिक और धार्मिक क्षेत्र में भी उच्च स्थान प्राप्त करना चाहता था। वर्धमान महावीर और गौतम बुद्ध दोनों क्षत्रिय कुल से संबंधित थे। उनके नेतृत्व ने वैदिक कर्मकांडों को चुनौती दी। इस आंदोलन का मुख्य उद्देश्य सामाजिक समानता स्थापित करना और पुरोहिती नियंत्रण कम करना था।

3. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
कथन और कारण दोनों ऐतिहासिक रूप से सटीक हैं। छठी शताब्दी ईसा पूर्व में लोहे के प्रयोग से कृषि का विस्तार हुआ। इसके लिए भारी संख्या में बैलों की आवश्यकता थी, जबकि वैदिक अनुष्ठानों में बड़े पैमाने पर पशु बलि दी जाती थी। इस पशुधन के ह्रास ने कृषि अर्थव्यवस्था को संकट में डाल दिया। इसीलिए नास्तिक संप्रदायों ने अहिंसा का प्रचार किया, जो आर्थिक उन्नति हेतु आवश्यक था।

4. (4) इस अवधि में शहरी केंद्रों का पतन हुआ और ग्रामीण जनजातीय बस्तियों की ओर वापसी हुई।
छठी शताब्दी ईसा पूर्व भारतीय इतिहास में 'द्वितीय नगरीकरण' के काल के रूप में प्रसिद्ध है। इस दौरान लोहे के प्रयोग ने कृषि उत्पादन में वृद्धि की, जिससे अधिशेष अनाज उपलब्ध हुआ। इसी अधिशेष ने नवीन नगरीय केंद्रों और व्यापारिक मार्गों के विकास का मार्ग प्रशस्त किया। अतः इस अवधि को नगरीय पतन कहना ऐतिहासिक रूप से त्रुटिपूर्ण है। यह काल सुव्यवस्थित नगरों के उत्थान का साक्षी रहा है।

5. (1) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
जैन शब्दावली के प्रत्येक शब्द का गहन आध्यात्मिक अर्थ है। 'जिन' उस व्यक्ति को कहा जाता है जिसने अपनी इंद्रियों पर पूर्ण विजय प्राप्त कर ली हो। 'निर्ग्रंथ' वह है जो सभी भौतिक और सांसारिक बंधनों से मुक्त हो चुका है। 'तीर्थंकर' का अर्थ वह महापुरुष है जो संसार रूपी सागर को पार करने हेतु मार्ग दिखाता है। 'केवलिन' उसे कहते हैं जिसे सर्वोच्च ज्ञान प्राप्त हो चुका हो।

6. (2) ज्ञातृक कुल
जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर वर्धमान महावीर का संबंध ज्ञातृक नामक प्रसिद्ध क्षत्रिय कुल से था। उनके पिता सिद्धार्थ इसी कुल के प्रमुख थे। महावीर के समय में वज्जी महासंघ के अंतर्गत कई शक्तिशाली गणराज्य सक्रिय थे। लिच्छवी नरेश चेटक उनके मामा थे। इस उच्च क्षत्रिय पृष्ठभूमि ने महावीर को अपनी शिक्षाओं के प्रसार और राजकीय संरक्षण प्राप्त करने में महत्वपूर्ण सहायता प्रदान की, जिससे व्यापक विस्तार हुआ।

7. (1) केवल I और II
वर्धमान महावीर का जन्म वैशाली के निकट कुंडग्राम में हुआ था। वे ज्ञातृक क्षत्रिय कुल के सदस्य थे और उनके पिता सिद्धार्थ इस कुल के मुखिया थे। उनके जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं में 30 वर्ष की आयु में गृहत्याग और 12 वर्षों की कठोर तपस्या के पश्चात ज्ञान प्राप्ति शामिल है। उनकी मृत्यु पावापुरी में हुई थी, न कि कुशीनगर में। अतः जन्म और कुल संबंधी तथ्य सत्य हैं।

8. (1) पार्श्वनाथ - सर्प
जैन परंपरा में प्रत्येक तीर्थंकर के साथ एक विशिष्ट प्रतीक चिह्न जुड़ा है। 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ का प्रतीक सर्प है, जो उनके आध्यात्मिक स्वरूप को दर्शाता है। प्रथम तीर्थंकर ऋषभनाथ का प्रतीक वृषभ है, जबकि महावीर स्वामी का प्रतीक सिंह है। अजितनाथ का प्रतीक चिह्न हाथी माना जाता है। ये प्रतीक भक्तों को संबंधित तीर्थंकर की विशिष्टताओं और उनके द्वारा दी गई शिक्षाओं का स्मरण कराते हैं।

9. (3) जामालि
जामालि वर्धमान महावीर के प्रथम शिष्य और उनके दामाद थे। उन्होंने महावीर के सिद्धांतों को स्वीकार किया, किंतु कालांतर में वैचारिक मतभेदों के कारण उन्होंने विद्रोह कर दिया। जामालि ने 'बहुरतवाद' नामक नवीन सिद्धांत प्रस्तुत किया, जो महावीर के दर्शन से भिन्न था। यह विद्रोह जैन संघ के भीतर होने वाला प्रथम वैचारिक मतभेद था। उनके पृथक होने के बावजूद जैन धर्म अपनी दार्शनिक सुदृढ़ता के साथ विकसित होता रहा।

10. (1) II, IV, I, III
वर्धमान महावीर का जीवन सुव्यवस्थित चरणों में विभाजित है। उनका जन्म कुंडग्राम में हुआ। 30 वर्ष की आयु में उन्होंने सत्य की खोज हेतु गृहत्याग किया। इसके पश्चात 12 वर्षों की कठिन साधना के बाद जृंभिकग्राम में उन्हें कैवल्य प्राप्त हुआ। अंत में, 72 वर्ष की आयु में उन्होंने पावापुरी में निर्वाण प्राप्त किया। यह कालक्रम उनके आध्यात्मिक विकास और जैन धर्म के प्रचार की महत्वपूर्ण यात्रा को स्पष्ट करता है।

NODIA

11. (4) यथार्थ की बहुआयामी और सापेक्ष प्रकृति
अनेकांतवाद जैन दर्शन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्धांत है। यह मानता है कि यथार्थ या सत्य केवल एक नहीं, बल्कि अनेक पक्षों वाला होता है। कोई भी अकेला दृष्टिकोण पूर्ण सत्य का वर्णन नहीं कर सकता क्योंकि मानवीय ज्ञान सीमित है। यह सिद्धांत सहिष्णुता और विभिन्न विचारों के प्रति सम्मान को बढ़ावा देता है। सत्य की बहुआयामी प्रकृति को समझने हेतु सभी पक्षों का अवलोकन करना आवश्यक है।

12. (2) केवल I, II और IV
स्यादवाद जैन धर्म का वह सिद्धांत है जो मानवीय ज्ञान की सापेक्षता को स्पष्ट करता है। इसे 'सप्तभंगी नय' भी कहा जाता है क्योंकि यह सात संभावित कथनों के माध्यम से सत्य की व्याख्या करता है। यह अनेकांतवाद के दार्शनिक आधार को व्यावहारिक रूप प्रदान करता है। प्रत्येक कथन के साथ 'स्यात्' शब्द का प्रयोग यह दर्शाता है कि वह ज्ञान किसी निश्चित संदर्भ में ही सत्य है।

13. (3) यथार्थ का निरपेक्ष और अंतिम दृष्टिकोण
निश्चयवाद जैन ज्ञानमीमांसा में यथार्थ के उस दृष्टिकोण को कहते हैं जो परिवर्तनहीन और निरपेक्ष है। जबकि व्यवहारवाद वस्तुओं को उनके सांसारिक रूप में देखता है, निश्चयवाद उनके वास्तविक और आंतरिक स्वरूप पर ध्यान केंद्रित करता है। यह आध्यात्मिक साधना में आत्मा की शुद्धता और उसके वास्तविक स्वभाव को समझने पर बल देता है। यह सिद्धांत साधक को सत्य के उस मूल बिंदु तक पहुँचाता है जो शाश्वत है।

14. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
जैन तत्वमीमांसा के अनुसार ब्रह्मांड जीव और अजीव से निर्मित है। जीव एक चेतन इकाई है जिसे आत्मा कहा जाता है, जबकि अजीव जड़ तत्व है। आस्रव वह प्रक्रिया है जिसमें कर्म के पुद्गल आत्मा में प्रवेश करते हैं। संवर इस प्रवाह को रोकने की क्रिया है, जो मोक्ष की ओर प्रथम चरण है। इन अवधारणाओं के माध्यम से ही व्यक्ति कर्मों के बंधन से मुक्त होकर अनंत ज्ञान प्राप्त करता है।

15. (1) स्यादवाद
जब हम कहते हैं कि किसी वस्तु का वर्णन प्रेक्षक के दृष्टिकोण पर निर्भर करता है, तो हम स्यादवाद का प्रयोग कर रहे होते हैं। यह जैन दर्शन का वह अंग है जो सिखाता है कि सत्य के विभिन्न पहलू हो सकते हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपनी स्थिति के अनुसार सत्य का केवल एक अंश देख पाता है। यह सिद्धांत स्वीकार करता है कि हमारे सभी निर्णय सापेक्ष होते हैं और बौद्धिक उदारता बढ़ाता है।

16. (2) ब्रह्मचर्य
जैन धर्म के प्रारंभिक चार महाव्रत—अहिंसा, सत्य, अस्तेय और अपरिग्रह—23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ द्वारा दिए गए थे। वर्धमान महावीर ने आध्यात्मिक अनुशासन सुदृढ़ करने हेतु इसमें पाँचवाँ व्रत 'ब्रह्मचर्य' जोड़ा। उन्होंने माना कि इंद्रियों पर पूर्ण नियंत्रण और वासनाओं का त्याग मोक्ष प्राप्ति हेतु अनिवार्य है। यह नियम भिक्षुओं हेतु अत्यंत कठोर था। इन पाँच व्रतों के पालन से ही आत्मा जन्म-मरण के बंधन से मुक्त होती है।

17. (1) केवल I, II, III और V
जैन धर्म में नैतिक जीवन के दो स्तर निर्धारित हैं। भिक्षुओं हेतु महाव्रत अनिवार्य हैं, जबकि गृहस्थों हेतु सरल अणुव्रत बनाए गए हैं। संलेखना जीवन के अंत में भोजन त्याग कर शरीर छोड़ने की पवित्र प्रक्रिया है। अहिंसा का पालन अत्यंत सूक्ष्म स्तर पर किया जाता है। 'अस्तेय' का अर्थ चोरी न करना है, जबकि 'अपरिग्रह' का संबंध सांसारिक वस्तुओं के संचय के त्याग से है।

18. (1) कृषि कार्यों में सूक्ष्मजीवों की अनजाने में हत्या होती है, जो अहिंसा के सिद्धांत का उल्लंघन है।
जैन धर्म में अहिंसा को सर्वोपरि स्थान दिया गया है। कृषि कार्यों में भूमि की जुताई के दौरान मिट्टी में रहने वाले असंख्य सूक्ष्म जीवों की अनजाने में हत्या हो जाती है। इस हिंसा से बचने हेतु जैन अनुयायियों को कृषि करने से मना किया गया। यही कारण है कि जैन समुदाय ने स्वयं को व्यापार और वाणिज्य की ओर अधिक केंद्रित किया, जहाँ हिंसा की संभावना न्यूनतम और धार्मिक मूल्यों के अनुकूल है।

19. (3) सम्यक स्मृति
जैन धर्म में मोक्ष प्राप्ति हेतु तीन मार्ग बताए गए हैं, जिन्हें 'त्रिरत्न' कहा जाता है। इनमें सम्यक दर्शन (सही श्रद्धा), सम्यक ज्ञान (सही जानकारी) और सम्यक चरित्र (सही आचरण) शामिल हैं। सम्यक स्मृति बौद्ध धर्म के अष्टांगिक मार्ग का हिस्सा है, जैन धर्म का नहीं। जैन त्रिरत्न का उद्देश्य आत्मा को कर्मों के भार से मुक्त कर उसे अपनी मूल शुद्ध अवस्था में लाना है। इनके पालन से ही जीव मुक्ति पाता है।

20. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
जैन धर्म में अहिंसा के प्रति अटूट निष्ठा देखी जाती है। भिक्षु अपने मुख पर वस्त्र इसलिए बांधते हैं ताकि श्वसन के समय वायु में उपस्थित सूक्ष्म जीवों की मृत्यु न हो। इसी प्रकार, वे चलते समय मार्ग को कोमल झाड़ू से परिष्कृत करते हैं ताकि पैरों के नीचे आकर कोई जीव न मर जाए। यह व्यवहार अहिंसा के उस उच्चतम स्तर को प्रदर्शित करता है जहाँ सूक्ष्म जीवन की रक्षा ही परम धर्म है।

21. (3) मगध में बारह वर्षों का भीषण अकाल और उसके फलस्वरूप दक्षिण की ओर पलायन
चंद्रगुप्त मौर्य के शासनकाल के अंत में मगध में 12 वर्षों का भीषण अकाल पड़ा। भद्रबाहु के नेतृत्व में जैनियों का एक समूह दक्षिण भारत चला गया, जबकि स्थूलभद्र के नेतृत्व में कुछ लोग मगध में ही रहे। अकाल पश्चात जब वे लौटे, तो उनके आचार-व्यवहार और वस्त्र धारण करने की परंपरा में भिन्नता आ गई थी। इसी कारण जैन धर्म अंततः दो संप्रदायों—दिगंबर और श्वेतांबर में विभाजित हो गया।

Downloaded from www.pdf.tube

22. (2) श्वेतांबरों के अनुसार 19वें तीर्थंकर मल्लिनाथ एक स्त्री थीं।
श्वेतांबर और दिगंबर संप्रदायों के मध्य दार्शनिक मान्यताओं को लेकर महत्वपूर्ण अंतर हैं। श्वेतांबर परंपरा के अनुसार 19वें तीर्थंकर मल्लिनाथ एक महिला थीं, जबकि दिगंबर उन्हें पुरुष मानते हैं। इसके अतिरिक्त, श्वेतांबरों का मानना है कि महिलाएं मोक्ष प्राप्त कर सकती हैं। दिगंबर भिक्षु पूर्ण नग्नता को सर्वोच्च अपरिग्रह का प्रतीक मानते हैं, जबकि श्वेतांबर श्वेत वस्त्र धारण करते हैं। यह वैचारिक भिन्नता दोनों संप्रदायों के आधार को स्पष्ट करती है।

23. (1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
जैन धर्म के भीतर कई उप-संप्रदायों का विकास हुआ जिन्होंने पूजा पद्धतियों में भिन्नता प्रस्तुत की। स्थानकवासी श्वेतांबर संप्रदाय से हैं जो मूर्तियों के स्थान पर गुरुओं की सेवा पर बल देते हैं। तेरापंथी भी श्वेतांबर उप-संप्रदाय है जिसकी स्थापना आचार्य भिक्षु ने की थी। दिगंबर परंपरा में बीसपंथी मूर्तियों की पारंपरिक पूजा करते हैं, जबकि तारणपंथी मूर्तियों के स्थान पर पवित्र ग्रंथों की पूजा को प्राथमिकता देते हैं।

24. (1) 12 अंगों का संकलन, जिसे दक्षिण से लौटने वाले भिक्षुओं ने अस्वीकार कर दिया।
मगध के अकाल के पश्चात स्थूलभद्र ने पाटलिपुत्र में प्रथम जैन संगीति बुलाई। इसका मुख्य उद्देश्य लुप्त हो रहे जैन धर्मग्रंथों को संकलित करना था। यहाँ 12 अंगों का संकलन किया गया, जो श्वेतांबरों के मुख्य शास्त्र बने। हालांकि, भद्रबाहु के अनुयायी, जो दक्षिण से लौटे थे, उन्होंने इन ग्रंथों की प्रमाणिकता को अस्वीकार कर दिया। इस घटना ने जैन धर्म के विभाजन की प्रक्रिया को औपचारिक रूप दिया और मतभेद गहरे कर दिए।

25. (3) केवल III
दिगंबर संप्रदाय की मान्यताएं अत्यंत कठोर और अपरिवर्तनीय हैं। वे मानते हैं कि महावीर स्वामी अविवाहित थे और उन्होंने पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन किया। उनके अनुसार, कैवल्य प्राप्त व्यक्ति को भौतिक भोजन की आवश्यकता नहीं होती। दिगंबरों ने पाटलिपुत्र संगीति में संकलित 12 अंगों को पूर्णतः अस्वीकार कर दिया, क्योंकि उनका मानना था कि वास्तविक प्राचीन ज्ञान लुप्त हो चुका है। ये मान्यताएं श्वेतांबर संप्रदाय से भिन्न हैं।

26. (1) कलिंग नरेश खारवेल
उड़ीसा के कलिंग नरेश खारवेल द्वारा उत्कीर्ण हाथीगुम्फा शिलालेख जैन धर्म के इतिहास हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह शिलालेख प्राकृत भाषा में है और खारवेल के शासनकाल की उपलब्धियों का वर्णन करता है। इसमें नंद राजा द्वारा कलिंग से ले जाई गई 'जिन' की प्रतिमा को खारवेल द्वारा वापस लाने का उल्लेख है। यह प्रमाण देता है कि प्राचीन काल में जैन धर्म को राजकीय संरक्षण प्राप्त था और खारवेल इसके प्रति श्रद्धा रखते थे।

27. (4) सोलंकी (चालुक्य) वंश
राजस्थान के माउंट आबू में स्थित दिलवाड़ा के भव्य मंदिर जैन वास्तुकला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। इनका निर्माण 11वीं और 13वीं शताब्दी के मध्य गुजरात के सोलंकी या चालुक्य शासकों के मंत्रियों द्वारा करवाया गया था। ये मंदिर संगमरमर पर की गई अत्यंत सूक्ष्म नक्काशी हेतु विश्व प्रसिद्ध हैं। ये पाँच मंदिरों का समूह हैं जो विभिन्न तीर्थंकरों को समर्पित हैं। यह स्थापत्य कला उस समय की धार्मिक समृद्धि का सजीव प्रमाण है।

28. (1) बिंबिसार, चंद्रगुप्त मौर्य, खारवेल, कुमारपाल
जैन धर्म को प्राचीन भारत के कई महान शासकों का समर्थन मिला। हर्यंक वंश के बिंबिसार महावीर के समकालीन थे। इसके पश्चात चंद्रगुप्त मौर्य ने अपने जीवन के अंतिम वर्षों में जैन धर्म अपना लिया। कलिंग नरेश खारवेल ने ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी में इसे राजधर्म बनाया। अंततः, गुजरात के चालुक्य राजा कुमारपाल ने 12वीं शताब्दी में इसे व्यापक राजकीय संरक्षण प्रदान किया। यह क्रम जैन धर्म के निरंतर प्रभाव को दर्शाता है।

29. (3) उदयिन
उदयिन हर्यंक वंश का प्रतापी शासक था जिसने अपनी राजधानी राजगृह से पाटलिपुत्र स्थानांतरित की। जैन ग्रंथों के अनुसार, वह जैन धर्म का अनुयायी था और उसने पाटलिपुत्र के केंद्र में एक जैन मंदिर का निर्माण करवाया था। जैन साहित्य में उसे एक न्यायप्रिय राजा के रूप में चित्रित किया गया है। उदयिन के शासनकाल में जैन धर्म को मगध साम्राज्य में उच्च स्थान प्राप्त हुआ और पाटलिपुत्र एक प्रमुख सांस्कृतिक केंद्र बना।

NODIA

30. (3) केवल IV
जैन धर्म ने भारत के विभिन्न हिस्सों में अपना प्रभाव स्थापित किया। कुषाण काल में मथुरा जैन कला का प्रमुख केंद्र बना। चंद्रगुप्त मौर्य का श्रवणबेलगोला में संलेखना करना एक ऐतिहासिक सत्य है। राष्ट्रकूट राजा अमोघवर्ष स्वयं एक विद्वान जैन अनुयायी थे। हालांकि, यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि जैन धर्म ने दक्षिण-पूर्व एशिया में बौद्ध धर्म को विस्थापित किया था। जैन धर्म मुख्य रूप से भारतीय सीमाओं के भीतर ही केंद्रित रहा।

31. (1) गुप्त राजवंश
यद्यपि भारत के अनेक राजवंशों ने जैन धर्म को उदारतापूर्वक दान और भूमि प्रदान की, किंतु गुप्त काल को मुख्य रूप से ब्राह्मणवादी हिंदू धर्म के पुनरुत्थान का युग माना जाता है। गुप्त सम्राट स्वयं वैष्णव धर्म के अनुयायी थे। उनके समय में जैन धर्म अस्तित्व में तो था, किंतु उसे वह सक्रिय और व्यापक राजकीय संरक्षण प्राप्त नहीं हुआ जो मौर्यों या चालुक्यों के शासन में मिला था। इस कारण गुप्त काल अपवाद स्वरुप है।

32. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
बुद्ध के जीवन की प्रत्येक महत्वपूर्ण घटना को एक विशिष्ट प्रतीक द्वारा दर्शाया गया है। उनके जन्म को कमल और वृषभ से प्रदर्शित किया जाता है। उनके गृहत्याग की घटना, जिसे महाभिनिष्क्रमण कहते हैं, अश्व द्वारा दर्शाई जाती है क्योंकि उन्होंने अश्व पर सवार होकर ही महल छोड़ा था। ज्ञान प्राप्ति का प्रतीक बोधि वृक्ष है, जिसके नीचे उन्हें निर्वाण मिला। उनके प्रथम उपदेश को धर्मचक्र से सूचित किया जाता है।

33. (2) अलार कलाम और उद्रक रामपुत्र
सत्य की खोज में गृहत्याग के पश्चात सिद्धार्थ गौतम ने सबसे पहले वैशाली के अलार कलाम से दीक्षा ली, जो सांख्य दर्शन के विद्वान थे। वहाँ से उन्हें पूर्ण संतुष्टि नहीं मिली, जिसके बाद वे राजगृह के उद्रक रामपुत्र के पास गए। उद्रक ने उन्हें ध्यान की उच्च अवस्थाओं के विषय में सिखाया। इन गुरुओं के सानिध्य में सिद्धार्थ ने योग को समझा। हालांकि, अंततः उन्होंने अनुभव किया कि परम सत्य की प्राप्ति स्वयं के प्रयासों से ही संभव है।

34. (1) सारनाथ - उनकी मृत्यु और महापरिनिर्वाण का स्थल
बुद्ध के जीवन से जुड़े स्थलों का विशेष धार्मिक महत्व है। लुंबिनी में उनका जन्म हुआ और बोधगया में उन्होंने सर्वोच्च ज्ञान प्राप्त किया। श्रावस्ती वह स्थान है जहाँ उन्होंने सर्वाधिक वर्षावास व्यतीत किए। हालांकि, सारनाथ उनकी मृत्यु का स्थल नहीं है; सारनाथ में उन्होंने अपना प्रथम उपदेश दिया था। बुद्ध का महापरिनिर्वाण कुशीनगर में हुआ था। यह स्थल वर्तमान उत्तर प्रदेश में स्थित है और प्रमुख बौद्ध तीर्थ स्थल है।

35. (1) केवल I, II, III और IV
सिद्धार्थ गौतम का जन्म शाक्य कुल के एक राजपरिवार में हुआ था। सांसारिक दुखों को देखकर 29 वर्ष की आयु में उन्होंने सत्य की खोज हेतु गृहत्याग किया। निरंजना नदी के तट पर बोधि वृक्ष के नीचे उन्हें बुद्धत्व प्राप्त हुआ। उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन धर्म के प्रचार में समर्पित किया और कुशीनगर में अपना अंतिम उपदेश देकर महापरिनिर्वाण प्राप्त किया। उनके जीवन की ये घटनाएं त्याग और करुणा की महान यात्रा को दर्शाती हैं।

36. (4) कंथक और चन्ना
जब सिद्धार्थ गौतम ने सांसारिक जीवन त्यागने का निर्णय लिया, तो वे अपने प्रिय अश्व 'कंथक' पर सवार होकर महल से निकले। उनके साथ उनका निष्ठावान सारथी 'चन्ना' भी था। चन्ना ने ही उन्हें नगर की सीमा तक पहुँचाया और अंत में उनके राजसी आभूषण लेकर वापस लौटा। बौद्ध साहित्य में कंथक और चन्ना की भूमिका को अत्यंत भावुकता के साथ वर्णित किया गया है। यह घटना 'महाभिनिष्क्रमण' के रूप में जानी जाती है।

37. (3) A सही है लेकिन R गलत है।
बुद्ध ने ज्ञान प्राप्ति के पश्चात सारनाथ में अपने पूर्व के पाँच साथियों को प्रथम दीक्षा दी। इस महान ऐतिहासिक घटना को बौद्ध परंपरा में 'धर्मचक्रप्रवर्तन' कहा जाता है। 'महापरिनिर्वाण' शब्द का प्रयोग बुद्ध की मृत्यु के लिए किया जाता है। अतः कथन सही है कि प्रथम उपदेश सारनाथ में हुआ, किंतु कारण गलत है क्योंकि वह घटना चक्र प्रवर्तन कहलाती है। यह उपदेश बौद्ध संघ की स्थापना का आधार बना।

38. (2) तृष्णा (लालसा)
बुद्ध ने चार आर्य सत्यों के माध्यम से संसार के दुखों की व्याख्या की। द्वितीय आर्य सत्य 'दुःख समुदय' है, जो यह स्पष्ट करता है कि प्रत्येक दुःख का एक निश्चित कारण होता है। बुद्ध के अनुसार, यह कारण 'तृष्णा' या अत्यधिक लालसा है। इंद्रिय सुखों की इच्छा और अस्तित्व की चाह ही मनुष्य को जन्म और मरण के चक्र में बांधे रखती है। जब तक मनुष्य इस तृष्णा का त्याग नहीं करता, वह मुक्त नहीं हो सकता।

39. (4) अष्टांगिक मार्ग
चतुर्थ आर्य सत्य 'दुःख निरोध गामिनी प्रतिपदा' के नाम से जाना जाता है, जिसका अर्थ है वह मार्ग जो दुखों के अंत की ओर ले जाता है। बुद्ध ने इस लक्ष्य प्राप्ति हेतु 'अष्टांगिक मार्ग' का प्रतिपादन किया। यह मार्ग आठ चरणों में विभाजित है जो नैतिक आचरण, मानसिक अनुशासन और प्रज्ञा पर बल देते हैं। यह सिद्धांत सिखाता है कि सही सोच और सही कार्य के समन्वय से ही निर्वाण संभव है।

40. (1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
बुद्ध का अष्टांगिक मार्ग तीन मुख्य श्रेणियों में विभाजित है। प्रज्ञा के अंतर्गत सम्यक दृष्टि और सम्यक संकल्प आते हैं, जो वास्तविकता को समझने पर बल देते हैं। शील की श्रेणी में सम्यक वाक, सम्यक कर्मांत और सम्यक आजीव शामिल हैं, जो मनुष्य के नैतिक व्यवहार को शुद्ध करते हैं। समाधि श्रेणी में सम्यक व्यायाम, सम्यक स्मृति और सम्यक समाधि रखे गए हैं, जो चित्त की एकाग्रता हेतु आवश्यक हैं। ये मोक्ष हेतु अनिवार्य हैं।

41. (3) सम्यक काम
अष्टांगिक मार्ग में आठ सूत्र शामिल हैं जो मनुष्य को पवित्र जीवन हेतु प्रेरित करते हैं। सम्यक संकल्प, सम्यक व्यायाम और सम्यक कर्मांत इस मार्ग के महत्वपूर्ण अंग हैं। हालांकि, 'सम्यक काम' जैसा कोई शब्द इस सूची में नहीं है। इसके स्थान पर सम्यक दृष्टि, सम्यक वाक, सम्यक आजीव, सम्यक स्मृति और सम्यक समाधि होते हैं। बुद्ध का यह मार्ग काम के स्थान पर आत्म-नियंत्रण पर आधारित है, जो निर्वाण की ओर ले जाता है।

42. (2) केवल II
बुद्ध के अष्टांगिक मार्ग में प्रत्येक घटक को सावधानीपूर्वक वर्गीकृत किया गया है। शील श्रेणी में सम्यक वाक, सम्यक कर्मांत और सम्यक आजीव आते हैं। समाधि श्रेणी में सम्यक व्यायाम, सम्यक स्मृति और सम्यक समाधि शामिल हैं, जो मानसिक अनुशासन विकसित करते हैं। सम्यक समाधि को प्रज्ञा के अंतर्गत रखना त्रुटिपूर्ण है, क्योंकि प्रज्ञा में केवल सम्यक दृष्टि और सम्यक संकल्प शामिल हैं। सम्यक आजीव अनैतिक व्यापारों का स्पष्ट रूप से निषेध करता है।

43. (4) पुनर्जन्म कर्म द्वारा संचालित चेतना का प्रवाह है, जैसे एक दीपक से दूसरा दीपक जलता है।
बौद्ध दर्शन के अनुसार कोई स्थायी आत्मा नहीं है, फिर भी वे पुनर्जन्म में विश्वास करते हैं। इस विरोधाभास को 'प्रतीत्यसमुत्पाद' के माध्यम से समझाया गया है। उनके अनुसार, पुनर्जन्म किसी स्थायी तत्व का नहीं, बल्कि कर्मों द्वारा संचालित चेतना के प्रवाह का होता है। जैसे एक दीपक की लौ दूसरे दीपक को प्रज्वलित करती है, वैसे ही एक जीवन के कर्म दूसरे जीवन के अस्तित्व का कारण बनते हैं। यह प्रक्रिया निर्वाण तक चलती है।

Click Here to Buy book on Amazon

44. (2) कारण-कार्य सिद्धांत या सापेक्ष उत्पत्ति का नियम
प्रतीत्यसमुत्पाद बौद्ध धर्म का सबसे महत्वपूर्ण दार्शनिक आधार है। इसका अर्थ है "किसी वस्तु के होने पर किसी अन्य वस्तु की उत्पत्ति।" यह कारण-कार्य के उस सार्वभौमिक नियम को बताता है जिसके अनुसार ब्रह्मांड की कोई भी घटना स्वतंत्र नहीं है। प्रत्येक वस्तु किसी न किसी कारण पर निर्भर है। इसी सिद्धांत के आधार पर बुद्ध ने बताया कि यदि अविद्या का नाश हो जाए, तो दुःख भी स्वतः समाप्त हो जाएगा।

45. (1) II, IV, I, III
प्रतीत्यसमुत्पाद के चक्र में 12 कड़ियाँ हैं जिन्हें द्वादश निदान कहते हैं। इसकी शुरुआत अविद्या से होती है। अविद्या के कारण संस्कार उत्पन्न होते हैं। इन संस्कारों से विज्ञान का जन्म होता है, जो आगे चलकर नाम-रूप के विकास का आधार बनता है। यह क्रम आगे बढ़ते हुए स्पर्श, वेदना, तृष्णा और अंततः जन्म और मृत्यु के चक्र तक पहुँचता है। इन कड़ियों को तोड़ना ही निर्वाण प्राप्त करने का एकमात्र मार्ग है।

46. (4) संसार की क्षणभंगुरता या क्षणिकवाद का सिद्धांत
बौद्ध दर्शन में 'अनिच्च' का अर्थ है कि संसार की प्रत्येक वस्तु निरंतर परिवर्तनशील है। कुछ भी स्थायी या शाश्वत नहीं है। यह सिद्धांत 'क्षणिकवाद' पर आधारित है, जिसके अनुसार संसार का प्रत्येक कण प्रति क्षण परिवर्तित हो रहा है। इसी कारण बुद्ध ने सांसारिक वस्तुओं के प्रति मोह को दुखों का मूल बताया। चूंकि सब कुछ अनित्य है, इसलिए उनके प्रति आसक्ति अंततः पीड़ा का कारण बनती है। यह सत्य समझना ही शांति का प्रथम चरण है।

47. (2) केवल II और III
बौद्ध धर्म एक नास्तिक दर्शन है जो वेदों की सर्वोच्च सत्ता और ईश्वर को सृष्टिकर्ता के रूप में नकारता है। बुद्ध ने निर्वाण हेतु न तो विलासितापूर्ण जीवन को सही माना और न ही कठोर तपस्या को। उन्होंने इन दोनों चरम सीमाओं के मध्य 'मध्यम मार्ग' का समर्थन किया। बौद्ध धर्म के अनुसार, आत्म-अनुशासन और सदाचार के माध्यम से ही मुक्ति प्राप्त की जा सकती है। अतः अत्यधिक कायाक्लेश और ईश्वर में विश्वास इसके सिद्धांतों के विपरीत हैं।

48. (2) आत्मन (शाश्वत आत्मा)
बौद्ध मनोविज्ञान के अनुसार, व्यक्ति पाँच स्कंधों का एक अस्थायी योग है। इनमें रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार और विज्ञान शामिल हैं। बुद्ध ने स्पष्ट किया कि इन पाँचों में कोई भी स्थायी या स्वतंत्र 'आत्मा' नहीं है। आत्मा का विचार एक भ्रम है जो अहंकार को जन्म देता है। इन स्कंधों के स्वरूप को समझकर ही मनुष्य आसक्ति से मुक्त हो सकता है और परम शांति प्राप्त कर सकता है। यह अनात्मवाद का मूल सिद्धांत है।

49. (1) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
बौद्ध धर्म समय के साथ विभिन्न संप्रदायों में विभाजित हुआ। हीनयान व्यक्तिगत मोक्ष और बुद्ध की मूल शिक्षाओं पर बल देता है। महायान ने बोधिसत्व के आदर्श को अपनाया और बुद्ध को देवता मानकर उनकी मूर्तियों की पूजा प्रारंभ की। वज्रयान में मंत्रों और तांत्रिक अनुष्ठानों की प्रधानता है। थेरवाद, जो हीनयान का प्राचीन रूप है, पाली भाषा के ग्रंथों का पालन करता है और श्रीलंका तथा दक्षिण-पूर्व एशिया में अत्यंत प्रभावशाली है।

50. (1) बुद्ध को देवता मानना और मूर्ति पूजा का प्रचलन
महायान बौद्ध धर्म का उदय ईसा की प्रथम शताब्दी के आसपास हुआ, जिसने बुद्ध के प्रति दृष्टिकोण को बदल दिया। प्रारंभिक बौद्ध धर्म में बुद्ध को केवल एक महान शिक्षक माना जाता था, किंतु महायानियों ने उन्हें साक्षात ईश्वर का रूप दिया। इसी के साथ बुद्ध की प्रतिमाओं का निर्माण और उनकी भक्तिपूर्ण पूजा प्रारंभ हुई। उन्होंने संस्कृत को अपनी मुख्य भाषा बनाया। यह परिवर्तन बौद्ध धर्म को व्यापक जनप्रिय धर्म बनाने में सहायक रहा।

51. (3) एक करुणाशील सत्ता जो अन्य जीवों की मुक्ति हेतु अपने निर्वाण को विलंबित करती है।
महायान दर्शन में बोधिसत्व एक ऐसी महान आत्मा है जिसने निर्वाण प्राप्त करने की योग्यता प्राप्त कर ली है, किंतु वह स्वयं मोक्ष लेने के स्थान पर संसार में रुकने का निर्णय लेती है। इसका उद्देश्य अपनी करुणा और ज्ञान के माध्यम से अन्य सभी पीड़ित जीवों को मुक्ति के मार्ग पर ले जाना है। बोधिसत्व का आदर्श स्वयं के मोक्ष के स्थान पर सकल मानवता के कल्याण पर आधारित है।

NODIA

52. (2) केवल III
वज्रयान बौद्ध धर्म का एक तांत्रिक संप्रदाय है जिसका विकास 8वीं शताब्दी के आसपास हुआ। इसमें मंत्रों और जटिल अनुष्ठानों का विशेष महत्व है। इस संप्रदाय ने स्त्री ऊर्जा को अत्यंत सम्मान दिया और अनेक देवी-देवताओं, विशेषकर तारा की पूजा प्रारंभ की। विक्रमशिला विश्वविद्यालय वज्रयान शिक्षा का सबसे बड़ा केंद्र था। यह कहना सर्वथा त्रुटिपूर्ण है कि उन्होंने स्त्री देवताओं को अस्वीकार किया; इसके विपरीत, उन्हें केंद्रीय स्थान दिया गया।

53. (3) तारा
वज्रयान संप्रदाय में देवी 'तारा' को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। उन्हें बुद्ध की शक्ति और करुणा का स्त्री अवतार माना जाता है। तारा को 'मुक्ति की देवी' के रूप में पूजा जाता है जो अपने भक्तों को भय और संकटों से उबारती हैं। वज्रयान दर्शन में प्रज्ञा को स्त्री तत्व के रूप में और उपाय को पुरुष तत्व के रूप में देखा जाता है। तारा की विभिन्न रूपों, जैसे श्वेत तारा और हरित तारा, में उपासना की जाती है।

54. (3) A सही है लेकिन R गलत है।
कनिष्क के शासनकाल में कश्मीर के कुंडलवन में चतुर्थ बौद्ध संगीति आयोजित की गई थी। इसका सबसे महत्वपूर्ण परिणाम बौद्ध धर्म का औपचारिक रूप से हीनयान और महायान संप्रदायों में विभाजित होना था। यहाँ दार्शनिक विषयों पर व्यापक चर्चा हुई और 'विभाषा शास्त्र' जैसे ग्रंथों की रचना की गई। कथन सत्य है क्योंकि इसी संगीति में विभाजन हुआ, किंतु कारण गलत है क्योंकि अशोक ने तृतीय संगीति पाटलिपुत्र में बुलाई थी।

55. (4) महाकश्यप
बुद्ध के महापरिनिर्वाण के तुरंत पश्चात अजातशत्रु ने राजगृह की सप्तपर्णी गुफा में प्रथम बौद्ध संगीति का आयोजन किया। इसकी अध्यक्षता विद्वान भिक्षु महाकश्यप ने की थी। इस संगीति का मुख्य उद्देश्य बुद्ध की शिक्षाओं को सुरक्षित रखना और नियमों को संकलित करना था। यहाँ बुद्ध के शिष्य आनंद ने 'सुत्त पिटक' और उपाली ने 'विनय पिटक' का पाठ किया। इस सभा ने भविष्य के प्रचार-प्रसार हेतु ठोस आधार तैयार किया।

56. (1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
चारों बौद्ध संगीतियाँ अलग-अलग राजाओं के संरक्षण में संपन्न हुईं। प्रथम संगीति अजातशत्रु के काल में राजगृह में हुई। द्वितीय संगीति वैशाली में कालासोक के समय आयोजित की गई। तृतीय संगीति सम्राट अशोक के काल में पाटलिपुत्र में हुई, जिसमें धम्म के शुद्धिकरण का प्रयास किया गया। चतुर्थ संगीति कुषाण राजा कनिष्क के काल में कश्मीर में हुई। इन राजाओं के समर्थन ने बौद्ध धर्म को एशिया में एक शक्तिशाली धर्म के रूप में स्थापित किया।

57. (3) तृतीय संगीति
तृतीय बौद्ध संगीति सम्राट अशोक के शासनकाल में पाटलिपुत्र में आयोजित की गई थी, जिसकी अध्यक्षता मोगलीपुत्त तिस्स ने की थी। इस सभा का एक महत्वपूर्ण परिणाम 'अभिधम्म पिटक' का संकलन था। यह ग्रंथ बौद्ध दर्शन के गूढ़ सिद्धांतों और तत्वमीमांसा की विस्तृत व्याख्या करता है। सुत्त और विनय पिटक के साथ मिलकर यह 'त्रिपिटक' को पूर्ण करता है। इस संगीति ने बौद्ध धर्म को राजकीय संरक्षण के साथ विदेशों में प्रचारित करने की योजना बनाई।

58. (1) केवल I और II
द्वितीय बौद्ध संगीति बुद्ध की मृत्यु के लगभग 100 वर्ष पश्चात वैशाली में आयोजित हुई। इस समय मगध पर कालासोक का शासन था। यहाँ भिक्षुओं के मध्य अनुशासन के नियमों को लेकर गहरा विवाद उत्पन्न हो गया। इसके परिणामस्वरूप संघ दो समूहों में विभक्त हो गया—'स्थविर' जो पुराने नियमों के समर्थक थे और 'महासांघिक' जो उदार बदलाव चाहते थे। यह बौद्ध धर्म के इतिहास में प्रथम बड़ा वैचारिक विभाजन था।

59. (4) कुंडलवन (कश्मीर)
चतुर्थ बौद्ध संगीति कश्मीर के कुंडलवन में आयोजित की गई थी। सम्राट कनिष्क ने इसके लिए व्यापक प्रबंध किए थे और वसुमित्र को इसका अध्यक्ष नियुक्त किया गया था। इस संगीति में महायान संप्रदाय को आधिकारिक रूप से मान्यता दी गई, जिससे बौद्ध धर्म में मूर्ति पूजा का समावेश हुआ। यह सभा बौद्ध विद्वानों हेतु एक मील का पत्थर सिद्ध हुई क्योंकि यहाँ संस्कृत भाषा का प्रयोग दार्शनिक चर्चाओं हेतु प्रमुखता से किया गया।

60. (2) अभिधम्म पिटक
राजगृह में हुई प्रथम बौद्ध संगीति के दौरान केवल दो मुख्य पिटकों का संकलन हुआ था। आनंद ने बुद्ध के उपदेशों को 'सुत्त पिटक' में संग्रहित किया और उपाली ने संघ के अनुशासन संबंधी नियमों को 'विनय पिटक' में संकलित किया। दार्शनिक सिद्धांतों पर आधारित तीसरा ग्रंथ, 'अभिधम्म पिटक', अशोक के समय आयोजित तृतीय संगीति में तैयार किया गया था। अतः प्रथम संगीति के समय केवल नैतिक शिक्षाओं और भिक्षु आचरण पर ही ध्यान दिया गया था।

61. (1) श्रीलंका, मध्य एशिया, चीन, जापान
बौद्ध धर्म का वैश्विक प्रसार एक क्रमिक प्रक्रिया थी। सम्राट अशोक के प्रयासों से यह सबसे पहले श्रीलंका पहुँचा। इसके पश्चात, ईसा की प्रारंभिक शताब्दियों में मध्य एशिया के व्यापारिक मार्गों के माध्यम से यह चीन में प्रविष्ट हुआ। चीन से होता हुआ यह धर्म चतुर्थ-पंचम शताब्दी के आसपास कोरिया और फिर छठी शताब्दी में जापान तक पहुँचा। इस प्रसार ने एशिया के विभिन्न क्षेत्रों को एक साझा सांस्कृतिक सूत्र में बांध दिया।

62. (4) बोधगया के मूल बोधि वृक्ष की एक शाखा (पनीर)
सम्राट अशोक ने धम्म के संदेश को विदेशों में प्रसारित करने हेतु अपने पुत्र महेंद्र और पुत्री संघमित्रा को श्रीलंका भेजा। संघमित्रा अपने साथ बोधगया के उस पवित्र बोधि वृक्ष की एक शाखा ले गई थीं, जिसके नीचे बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ था। उन्होंने इसे श्रीलंका की तत्कालीन राजधानी अनुराधापुर में रोपित किया। यह वृक्ष आज भी वहां जीवित है। यह उपहार भारत और श्रीलंका के मध्य गहरे आध्यात्मिक संबंधों का स्थायी प्रतीक बन गया।

63. (1) रेशम मार्ग (सिल्क रोड)
रेशम मार्ग प्राचीन विश्व का सबसे महत्वपूर्ण व्यापारिक मार्ग था, जो चीन को मध्य एशिया से जोड़ता था। व्यापारिक काफिलों के साथ बौद्ध भिक्षुओं ने भी इस मार्ग से यात्रा की। इसी रास्ते से बौद्ध धर्म के विचार, ग्रंथ और कला शैलियाँ चीन और जापान तक पहुँचीं। मध्य एशिया के प्रमुख शहर बौद्ध शिक्षा के बड़े केंद्र बन गए। इस मार्ग ने सांस्कृतिक आदान-प्रदान में सेतु का कार्य किया, जिससे महायान शाखा पूर्वी एशिया का प्रमुख धर्म बनी।

NODIA

64. (2) श्रीविजय साम्राज्य महायान और वज्रयान बौद्ध धर्म की शिक्षा का प्रमुख केंद्र था।
दक्षिण-पूर्व एशिया में बौद्ध धर्म का प्रसार मुख्य रूप से समुद्री व्यापारिक मार्गों के माध्यम से हुआ। इंडोनेशिया में स्थित श्रीविजय साम्राज्य 7वीं से 11वीं शताब्दी के मध्य बौद्ध धर्म का एक अत्यंत शक्तिशाली केंद्र था। यहाँ के मठों में अध्ययन हेतु चीन से इत्सिंग जैसे प्रसिद्ध यात्री भी आए थे। यहाँ बौद्ध धर्म और स्थानीय संस्कृति का सुंदर समन्वय देखने को मिलता है। बोरोबुदुर जैसे विशाल स्तूप इसी युग की धार्मिक समृद्धि के उदाहरण हैं।

65. (2) अशोक का राजकीय संरक्षण और धम्म प्रचारकों की नियुक्ति।
बौद्ध धर्म के विश्व धर्म बनने में सम्राट अशोक की भूमिका सबसे निर्णायक रही। कलिंग युद्ध के पश्चात उन्होंने युद्ध त्याग कर 'धम्म' को अपनी नीति बनाया। उन्होंने न केवल भारत में बल्कि ग्रीस और श्रीलंका जैसे देशों में धम्म महामात्रों को भेजा। अशोक

ने धर्म को सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों, जैसे करुणा और सहिष्णुता, से जोड़ दिया। इस राजकीय संरक्षण ने बौद्ध धर्म को सीमाओं के पार ले जाकर वैश्विक लोकप्रियता प्रदान की।

66. (1) मक्खलि गोसाल
आजीवक संप्रदाय छठी शताब्दी ईसा पूर्व के प्रमुख नास्तिक संप्रदायों में से एक था। इसके संस्थापक मक्खलि गोसाल थे, जो पहले वर्धमान महावीर के सहयोगी रह चुके थे। वैचारिक मतभेदों के कारण उन्होंने अपना पृथक पंथ स्थापित किया। गोसाल ने एक कठोर दार्शनिक ढांचे का निर्माण किया जिसने तत्कालीन समाज को प्रभावित किया। आजीवक संप्रदाय मौर्य काल तक प्रभावशाली रहा। प्राचीन भारतीय दर्शन के इतिहास में इसका अपना एक विशिष्ट स्थान सुरक्षित है।

67. (3) पूर्ण भाग्यवादिता या पूर्व-निर्धारित नियति
आजीवक दर्शन का केंद्र बिंदु 'नियति' का सिद्धांत है। इसके अनुसार, ब्रह्मांड की प्रत्येक घटना और प्रत्येक जीव का भाग्य पहले से ही पूर्णतः निर्धारित है। मनुष्य के अपने कर्म या प्रयास का भविष्य बदलने में कोई योगदान नहीं होता। मोक्ष और दुःख दोनों ही नियति के अधीन हैं। गोसाल का मानना था कि जीवन अपने पूर्व-निर्धारित चक्र को पूरा करके ही समाप्त होता है। यह दर्शन पूर्णतः भाग्यवादी और निश्चयात्मक था।

68. (4) उनका मानना था कि कर्म के माध्यम से भविष्य बदला जा सकता है।
आजीवक संप्रदाय मानवीय प्रयासों को निरर्थक मानता था और उनका विश्वास था कि कर्म से कुछ भी बदला नहीं जा सकता। उनके अनुसार प्रत्येक जीव को मुक्ति पाने से पूर्व जन्मों के एक निश्चित चक्र से गुजरना अनिवार्य है। वे अत्यंत कठोर तपस्या करते थे। यह कहना कि कर्म के माध्यम से भविष्य बदला जा सकता है, उनके मूल सिद्धांतों के विपरीत है। उनके लिए 'नियति' ही सर्वोच्च शक्ति थी, जिसके समक्ष मानवीय इच्छा का कोई मूल्य नहीं था।

69. (3) बराबर और नागार्जुनी पहाड़ियाँ
आजीवक संप्रदाय को मौर्य शासकों का संरक्षण प्राप्त था। सम्राट अशोक और उनके पौत्र दशरथ ने बिहार में स्थित बराबर और नागार्जुनी पहाड़ियों में अत्यंत परिष्कृत गुफाओं का निर्माण करवाया। ये गुफाएं आजीवक तपस्वियों के निवास हेतु समर्पित की गई थीं। 'लोमस ऋषि' और 'सुदामा' गुफाएं इसके उत्कृष्ट उदाहरण हैं। इन गुफाओं के शिलालेख प्रमाण हैं कि प्राचीन भारत में राजा विभिन्न धार्मिक समुदायों के प्रति सहिष्णुता और उदारता का भाव रखते थे।

70. (2) न्याय
भारतीय दर्शन को दो श्रेणियों में विभाजित किया गया है: आस्तिक और नास्तिक। नास्तिक संप्रदाय वे हैं जो वेदों की प्रमाणिकता स्वीकार नहीं करते, जिनमें बौद्ध, जैन, आजीवक और चार्वाक शामिल हैं। इसके विपरीत, 'न्याय' दर्शन उन छह आस्तिक दर्शनों में से एक है जो वेदों को अंतिम प्रमाण मानते हैं। महर्षि गौतम द्वारा प्रवर्तित न्याय दर्शन मुख्य रूप से तर्क और प्रमाण पर आधारित है। यह मोक्ष प्राप्ति हेतु वेदों द्वारा बताए गए आध्यात्मिक मार्ग का समर्थन करता है।

71. (4) वर्धमान महावीर
आजीवक संप्रदाय के संस्थापक मक्खलि गोसाल ने अपने आध्यात्मिक जीवन के शुरुआती छह वर्ष वर्धमान महावीर के साथ व्यतीत किए थे। इस अवधि में दोनों ने मिलकर तपस्या की और दार्शनिक विषयों पर चर्चा की। हालांकि, पश्चात में ज्ञान की व्याख्या और 'नियति' के सिद्धांतों को लेकर उनके मध्य गंभीर मतभेद उत्पन्न हो गए। इसी कारण गोसाल ने महावीर का साथ छोड़ दिया। यह ऐतिहासिक संबंध दर्शाता है कि तत्कालीन नास्तिक संप्रदायों के विचार परस्पर जुड़े थे।

72. (2) केवल III और V
छठी शताब्दी ईसा पूर्व के नास्तिक संप्रदाय सामाजिक क्रांति के अग्रदूत थे। उन्होंने जन्म आधारित वर्ण व्यवस्था और ब्राह्मणों के सोपानक्रम को चुनौती दी। उन्होंने अपने संघों में महिलाओं और निम्न वर्गों को स्थान देकर समानता का संदेश दिया। वे वैदिक पशु बलि के विरोधी थे क्योंकि यह कृषि अर्थव्यवस्था के प्रतिकूल थी। उन्होंने अपने विचार जनसाधारण की भाषाओं में प्रसारित किए। अतः यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि उन्होंने पशु बलि का समर्थन किया था।

73. (3) अहिंसा के प्रचार से व्यापारिक मार्ग सुरक्षित हुए और वर्ण व्यवस्था की आलोचना से वैश्यों का सामाजिक सम्मान बढ़ा।
छठी शताब्दी ईसा पूर्व में वैश्य समुदाय आर्थिक रुप से समृद्ध हो रहा था, किंतु वर्ण व्यवस्था में उनका स्थान नीचे था। जैन और बौद्ध धर्म ने वर्ण व्यवस्था की आलोचना की, जिससे वैश्यों को सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। इसके अतिरिक्त, अहिंसा की नीति ने युद्धों को कम किया, जिससे व्यापारिक मार्ग सुरक्षित हुए। इन धर्मों ने समुद्री यात्राओं और ब्याज का विरोध नहीं किया, जो वैश्यों के व्यवसाय हेतु अत्यंत लाभप्रद सिद्ध हुआ।

74. (1) अपनी शिक्षाओं को जनसाधारण और वंचित वर्गों तक पहुँचाना
उस समय संस्कृत केवल विद्वान ब्राह्मणों की भाषा बन चुकी थी, जिससे आम जनता का जुड़ाव कम हो गया था। बुद्ध और महावीर ने अपनी शिक्षाओं के प्रसार हेतु पाली और प्राकृत जैसी लोक भाषाओं को चुना ताकि समाज का प्रत्येक व्यक्ति उनके उपदेशों को सुगमता से समझ सके। इस भाषाई परिवर्तन ने धार्मिक शिक्षाओं को लोकतांत्रिक बनाया और उन्हें महलों से निकालकर जनमानस तक पहुँचाया। यही कारण था कि ये नवीन धर्म शीघ्र ही लोकप्रिय हो गए।

75. (1) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
प्राचीन भारत के दार्शनिक संप्रदायों के अपने विशिष्ट सिद्धांत थे। बौद्ध धर्म का मूल आधार 'प्रतीत्यसमुत्पाद' है, जो कारण-कार्य संबंध की व्याख्या करता है। जैन धर्म 'अनेकांतवाद' का प्रतिपादन करता है, जिसके अनुसार सत्य के अनेक पक्ष होते हैं। आजीवक संप्रदाय 'नियतिवाद' में विश्वास रखता था, जहाँ सब कुछ पूर्व-निर्धारित माना जाता है। चार्वाक दर्शन भौतिकवाद

Downloaded from www.pdf.tube

का समर्थक था, जो केवल प्रत्यक्ष प्रमाण को महत्व देता था। ये विचारधाराएं समृद्ध बौद्धिक परंपरा का उदाहरण हैं।

76. (2) नई कृषि अर्थव्यवस्था पशुधन (बैल आदि) के संरक्षण पर निर्भर थी।
छठी शताब्दी ईसा पूर्व में लोहे के हल के प्रयोग ने कृषि को नवीन आयाम दिया था। खेती के विस्तार हेतु पशुओं की भारी आवश्यकता थी। दूसरी ओर, वैदिक कर्मकांडों में बड़ी संख्या में पशुओं की बलि दी जाती थी, जिससे कृषि हेतु आवश्यक पशुधन की कमी हो रही थी। नास्तिक संप्रदायों द्वारा पशु बलि का विरोध एक अनिवार्य आर्थिक मांग भी थी। अहिंसा के सिद्धांत ने पशुओं के संरक्षण को बढ़ावा दिया, जिससे तत्कालीन अर्थव्यवस्था सुदृढ़ हुई।

77. (3) विहारों में व्याप्त भ्रष्टाचार, नैतिक पतन और अत्यधिक धन का संचय।
भारत में बौद्ध धर्म के पतन के पीछे कई आंतरिक कारण थे, जिनमें विहारों का नैतिक पतन प्रमुख था। समय के साथ विहारों को प्रचुर मात्रा में दान और भूमि प्राप्त हुई, जिससे भिक्षु विलासी जीवन व्यतीत करने लगे। धन के संचय ने वहाँ भ्रष्टाचार और अनुशासनहीनता को जन्म दिया। जिस सादगी हेतु बुद्ध ने संघ की स्थापना की थी, वह लुप्त हो गई। इसके अतिरिक्त, वज्रयान जैसी शाखाओं के उदय ने मूल सिद्धांतों को जटिल बना दिया।

78. (3) केवल I, II और III
बौद्ध धर्म के पतन में कई सामाजिक और राजनीतिक कारक सम्मिलित थे। हिंदू धर्म ने बुद्ध को भगवान विष्णु के अवतार के रूप में स्वीकार कर लिया, जिससे बौद्ध धर्म की स्वतंत्र पहचान धुंधली हो गई। पाल वंश के अंत के साथ राजकीय संरक्षण भी समाप्त हो गया। 12वीं शताब्दी में तुर्की आक्रमणकारियों ने नालंदा जैसे महान विश्वविद्यालयों को नष्ट कर दिया, जिससे बौद्ध बौद्धिक परंपरा को अपूरणीय क्षति हुई। यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि गणितीय त्रुटियों के कारण ग्रंथों को अमान्य किया गया।

79. (1) शंकराचार्य और कुमारिल भट्ट ने शास्त्रार्थों में बौद्ध दर्शन को चुनौती दी और उसे प्रभावित किया।
मध्यकाल में शंकराचार्य और कुमारिल भट्ट जैसे महान दार्शनिकों ने बौद्ध सिद्धांतों को शास्त्रार्थ में कड़ी चुनौती दी। उन्होंने वेदों की सर्वोच्चता को पुनः स्थापित किया और बौद्ध दर्शन की तार्किक कमियों को उजागर किया। साथ ही, भक्ति आंदोलन के संतों ने ईश्वर के प्रति प्रेम का एक सरल मार्ग प्रस्तुत किया, जो बौद्ध धर्म के शुष्क सिद्धांतों की तुलना में जनता को अधिक आकर्षित लगा। इन प्रयासों ने हिंदू धर्म को पुनर्जीवित किया और बौद्ध धर्म को सीमांत पर धकेल दिया।

80. (2) 12वीं शताब्दी तक पाली भाषा का कड़ाई से पालन करना और संस्कृत का विरोध करना।
भारत में बौद्ध धर्म के कमजोर होने का एक प्रमुख कारण भिक्षुओं द्वारा लोक भाषाओं को त्यागकर संस्कृत को अपनाना था। इससे वे आम जनता की समझ से दूर हो गए। वज्रयान के आने से तांत्रिक क्रियाएं बढ़ गईं, जिसने मूल बौद्ध नैतिकता को प्रभावित किया। साथ ही, विदेशी आक्रमणों ने विहारों की आर्थिक नींव हिला दी। हालांकि, 12वीं शताब्दी तक पाली के कड़ाई से पालन की बात गलत है, क्योंकि तब तक बौद्ध विद्वान स्वयं संस्कृत में ग्रंथ लिख रहे थे।

www.nodia.in

NODIA

अध्याय 04

मौर्य एवं मौर्योत्तर राजवंश : कुषाण, सातवाहन

1. नंद वंश का उन्मूलन कर मौर्य साम्राज्य की स्थापना करने का श्रेय निम्नलिखित में से किसे दिया जाता है?
   (1) बिंदुसार
   (2) चंद्रगुप्त मौर्य
   (3) अशोक
   (4) पुष्यमित्र शुंग
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

2. चंद्रगुप्त मौर्य के शासनकाल के दौरान निम्नलिखित में से कौन सा क्षेत्र मौर्य साम्राज्य में सम्मिलित नहीं था?
   (1) कलिंग
   (2) मगध
   (3) सौराष्ट्र
   (4) उत्तर-पश्चिमी भारत
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

3. सूची-I (उपाधियाँ/नाम) को सूची-II (स्रोत या संदर्भ) के साथ सुमेलित कीजिए।
   सूची I: (उपाधियाँ/नाम)
   A. सैंड्रोकोट्टस
   B. एंड्रोकोट्टस
   C. वृषल
   D. पियदस्सी
   सूची II: (स्रोत या संदर्भ)
   i. प्लूटार्क
   ii. जस्टिन
   iii. अशोक के अभिलेख
   iv. मुद्राराक्षस
   (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
   (2) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
   (3) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
   (4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

4. निम्नलिखित में से कौन सा कथन चंद्रगुप्त मौर्य और सेल्युकस निकेटर के बीच संघर्ष के परिणाम का सही वर्णन करता है?
   (1) चंद्रगुप्त को पूर्ण पराजय का सामना करना पड़ा और उसे सेल्युकस को मगध सौंपना पड़ा।
   (2) सेल्युकस ने गंगा के मैदानों को छोड़कर सिंधु घाटी पर सफलतापूर्वक अधिकार कर लिया।
   (3) सैन्य संघर्ष पूर्णतः गतिरोध में समाप्त हुआ और किसी भी रणनीतिक क्षेत्र का आदान-प्रदान नहीं हुआ।
   (4) एक शांति संधि हुई जिसमें सेल्युकस ने उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र चंद्रगुप्त को सौंप दिए।
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

5. चंद्रगुप्त मौर्य के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
   I. उन्होंने अपने अंतिम वर्षों में जैन धर्म स्वीकार कर लिया था।
   II. उन्होंने जैन मुनि भद्रबाहु के साथ श्रवणबेलगोला की यात्रा की थी।
   III. उन्होंने जैन पद्धति 'सल्लेखना' द्वारा अपने प्राण त्यागे थे।
   उपर्युक्त में से कौन से कथन सही हैं?
   (1) केवल I और II
   (2) केवल II और III
   (3) केवल I और III
   (4) I, II और III
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

6. कौटिल्य का ग्रंथ 'अर्थशास्त्र' मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किस विषय पर आधारित एक शोध-प्रबंध है?
   (1) जटिल धार्मिक अनुष्ठान, प्राचीन धर्मशास्त्र और दार्शनिक प्रणालियाँ
   (2) शासनकला, प्रशासन और सैन्य रणनीति
   (3) खगोल विज्ञान के सिद्धांत, ग्रहों की गति और उन्नत गणित
   (4) सैद्धांतिक काव्यशास्त्र, भाषाविज्ञान और संस्कृत व्याकरण के नियम
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

7. कौटिल्य द्वारा प्रतिपादित राज्य के 'सप्तांग सिद्धांत' के तत्वों में से विषम (जो मेल नहीं खाता) को पहचानिए।
   (1) स्वामी
   (2) अमात्य
   (3) कोश
   (4) पुरोहित
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

8. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
   अभिकथन (A): कौटिल्य का अर्थशास्त्र राज्य के लिए एक व्यापक गुप्तचर प्रणाली की अनुशंसा करता है।
   कारण (R): केंद्रीकृत नियंत्रण बनाए रखने, सूचनाएं एकत्र करने और विद्रोहों को रोकने के लिए गुप्तचरों को आवश्यक माना जाता था।

Click Here to Buy book on Amazon

(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

9. कौटिल्य के मंडल सिद्धांत के अनुसार, अपने निकटतम क्षेत्रीय पड़ोसी के साथ राज्य का स्वाभाविक भू-राजनीतिक संबंध क्या होता है?
(1) स्वाभाविक मित्र
(2) तटस्थ राज्य
(3) स्वाभाविक शत्रु
(4) अधीनस्थ जागीरदार
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

10. कौटिल्य के अर्थशास्त्र के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह संस्कृत में रचित है और 15 अधिकरणों में विभाजित है।
II. यह दीवानी और फौजदारी न्यायालयों के पृथक्करण का समर्थन करता है।
III. यह औपचारिक कराधान प्रणाली के अस्तित्व को पूरी तरह से नकारता है।
IV. इसमें संस्था (स्थिर) और संचरा (भ्रमणशील) दोनों प्रकार के गुप्तचरों का उल्लेख है।
इनमें से कौन सा संयोजन सही है?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, II और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) केवल I, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

11. किस मौर्य शासक को यूनानियों द्वारा 'अमित्रोकेट्स' (अमित्रघात, जिसका अर्थ है शत्रुओं का नाश करने वाला) कहा गया है?
(1) चंद्रगुप्त मौर्य
(2) अशोक
(3) बृहद्रथ
(4) बिंदुसार
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

12. बिंदुसार के शासनकाल के दौरान, किस सीरियाई शासक ने डायमेकस को मौर्य दरबार में राजदूत के रूप में भेजा था?
(1) सेल्युकस निकेटर
(2) एंटियोकस प्रथम
(3) टोलेमी II फिलाडेल्फस
(4) सिकंदर महान
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

13. सूची-I (विदेशी राजदूत) को सूची-II (संबंधित मौर्य सम्राट) के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (विदेशी राजदूत)
A. मेगस्थनीज
B. डायमेकस
C. डायोनिसियस
सूची II: (मौर्य सम्राट)
i. अशोक
ii. चंद्रगुप्त मौर्य
iii. बिंदुसार
(1) A-ii, B-iii, C-i
(2) A-ii, B-i, C-iii
(3) A-iii, B-ii, C-i
(4) A-i, B-iii, C-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

14. बिंदुसार की धार्मिक संबद्धता के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: बिंदुसार अपने पुत्र अशोक की भाँति बौद्ध धर्म का अनुयायी था।
कथन II: ऐतिहासिक साक्ष्य दर्शाते हैं कि बिंदुसार ने आजीविका संप्रदाय को संरक्षण दिया था।
निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?
(1) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(2) कथन I गलत है और कथन II सही है।
(3) दोनों कथन सही हैं।
(4) दोनों कथन गलत हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

15. बिंदुसार के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उसने मौर्य साम्राज्य का प्रायद्वीपीय दक्षिण तक विस्तार किया।
II. उसके शासनकाल के दौरान तक्षशिला में विद्रोह हुआ था, जिसे अशोक ने शांत किया था।
III. उसने सीरियाई राजा से मदिरा, सूखे अंजीर और एक दार्शनिक भेजने का अनुरोध किया था।
IV. चाणक्य ने उसके शासनकाल के प्रारंभिक भाग में मंत्री के रूप में कार्य किया।
V. वह स्वर्ण मुद्राएं जारी करने वाला पहला मौर्य राजा था।
उपर्युक्त में से कौन सा कथन गलत है?
(1) केवल I और V
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल V
(4) केवल I, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

16. अशोक ने अपने राज्याभिषेक के किस वर्ष में प्रसिद्ध कलिंग युद्ध लड़ा था?
(1) चौथे वर्ष
(2) आठवें वर्ष
(3) बारहवें वर्ष

(4) बीसवें वर्ष
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

17. अशोक की राजकीय नीति पर कलिंग युद्ध का सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रभाव क्या था?
(1) उसने संपूर्ण प्रशासनिक ढांचे को प्रांतीय राज्यपालों को विकेंद्रीकृत कर दिया।
(2) उसने भेरीघोष (सैन्य विजय) के स्थान पर धम्मघोष (सांस्कृतिक विजय) की नीति अपनाई।
(3) उसने अहिंसा के प्रचार के लिए स्थायी मौर्य सेना को भंग कर दिया।
(4) उसने बौद्ध धर्म को सभी प्रजा के लिए अनिवार्य राजकीय धर्म घोषित कर दिया।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

18. निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प अशोक के जीवन की घटनाओं का सही कालानुक्रमिक क्रम दर्शाता है?
(1) राज्याभिषेक, कलिंग युद्ध, बोधगया की प्रथम यात्रा, धम्म-महामात्रों की नियुक्ति
(2) कलिंग युद्ध, राज्याभिषेक, धम्म-महामात्रों की नियुक्ति, बोधगया की प्रथम यात्रा
(3) राज्याभिषेक, बोधगया की प्रथम यात्रा, कलिंग युद्ध, धम्म-महामात्रों की नियुक्ति
(4) धम्म-महामात्रों की नियुक्ति, राज्याभिषेक, कलिंग युद्ध, बोधगया की प्रथम यात्रा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

19. अशोक की धम्म नीति के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) इसने विभिन्न धार्मिक संप्रदायों के बीच सहिष्णुता पर बल दिया।
(2) इसने अहिंसा और सेवकों एवं दासों के साथ मानवीय व्यवहार को अनिवार्य बनाया।
(3) यह ब्राह्मणवादी व्यवस्था के विरोध में अशोक द्वारा स्थापित एक नया धर्म था।
(4) इसने माता-पिता की आज्ञाकारिता और गुरुओं के प्रति सम्मान को बढ़ावा दिया।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

20. अशोक द्वारा नियुक्त 'धम्म-महामात्र' नामक अधिकारियों का मुख्य उद्देश्य क्या था?
(1) ग्रामीण करों को एकत्र करना और सार्वजनिक बुनियादी ढांचे का रखरखाव करना।
(2) प्रांतीय विद्रोहों की निगरानी करने के लिए गुप्तचरों के रूप में कार्य करना।
(3) सीमावर्ती प्रांतों में तैनात शाही मौर्य सेना का नेतृत्व करना।
(4) धम्म का प्रचार करना और प्रजा का कल्याण सुनिश्चित करना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

21. अशोक के किस अभिलेख में उसकी सामान्य उपाधियों के स्थान पर व्यक्तिगत नाम 'अशोक' का स्पष्ट उल्लेख मिलता है?
(1) शिलालेख XIII
(2) सारनाथ स्तंभ लेख
(3) मस्की लघु शिलालेख
(4) कलिंग शिलालेख
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

22. अशोक के अभिलेखों में निम्नलिखित में से किस लिपि का प्रयोग नहीं हुआ था?
(1) ब्राह्मी
(2) तमिल-ब्राह्मी
(3) खरोष्ठी
(4) अरामी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

23. सूची-I (अशोक के प्रमुख शिलालेख) को सूची-II (मुख्य विषय) के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (अशोक के प्रमुख शिलालेख)
A. शिलालेख I
B. शिलालेख II
C. शिलालेख VII
D. शिलालेख XIII
सूची II: (मुख्य विषय)
i. मनुष्यों और पशुओं के लिए चिकित्सा व्यवस्था
ii. पशु बलि पर निषेध
iii. कलिंग युद्ध का विवरण
iv. सभी संप्रदायों के बीच सहिष्णुता की अपील
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

24. राजस्थान में स्थित अशोक का कौन सा शिलालेख बौद्ध त्रिरत्न (बुद्ध, धम्म और संघ) के प्रति उसकी श्रद्धा का प्रमाण देता है?
(1) भाब्रू-बैराट शिलालेख
(2) गुजरा शिलालेख
(3) रुम्मिन्देई शिलालेख
(4) कंधार शिलालेख
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

25. अशोक के अभिलेखों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. जेम्स प्रिंसेप ब्राह्मी लिपि को पढ़ने वाले पहले विद्वान थे।
II. उत्तर-पश्चिमी भारत के अभिलेख मुख्य रूप से खरोष्ठी लिपि में हैं।
III. दक्षिण भारत में पाए गए अभिलेख पूर्णतः यूनानी भाषा में हैं।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I

Downloaded from www.pdf.tube

(2) केवल I और II
(3) केवल II और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

26. मौर्य प्रशासन में 'धर्मस्थीय' और 'कंटकशोधन' का संबंध किससे था?
(1) क्रमशः दीवानी और फौजदारी न्यायालय
(2) भू-राजस्व के प्रकार
(3) सैन्य अंग (घुड़सवार और पैदल सेना)
(4) शिल्पकारों और व्यापारियों की श्रेणियाँ
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

27. मौर्य अधिकारियों और उनके कर्तव्यों के सही सुमेलित युग्म की पहचान कीजिए।
(1) समाहर्ता - मुख्य कोषाध्यक्ष
(2) सन्निधाता - मुख्य कर संग्रहकर्ता
(3) पण्याध्यक्ष - सेनापति
(4) सीताध्यक्ष - राजकीय कृषि भूमि का अध्यक्ष
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

28. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): मौर्य साम्राज्य ने एक विशाल और सुसंगठित स्थायी सेना बनाई रखी थी।
कारण (R): मौर्य साम्राज्य सैन्य आवश्यकताओं के लिए पूर्णतः प्रांतीय राज्यपालों द्वारा भेजी गई स्वैच्छिक सेना पर निर्भर था।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

29. मौर्य प्रशासन में 'रज्जुक' का मुख्य कार्य क्या था?
(1) वे विदेशी कूटनीति और शांति संधियों के लिए उत्तरदायी थे।
(2) वे राजपरिवार के मामलों और राजा के अंगरक्षकों की देखरेख करते थे।
(3) वे भूमि मापन और न्याय प्रशासन के लिए उत्तरदायी ग्रामीण अधिकारी थे।
(4) वे पाटलिपुत्र के नगर प्रशासन के सर्वोच्च प्रमुख थे।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

30. मेगस्थनीज द्वारा वर्णित पाटलिपुत्र के नगर प्रशासन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. प्रशासन 30 सदस्यों वाली एक नगर परिषद द्वारा चलाया जाता था।
II. यह परिषद 5-5 सदस्यों की 6 समितियों में विभाजित थी।
III. एक समिति विशेष रूप से जन्म और मृत्यु के पंजीकरण हेतु उत्तरदायी थी।
IV. नगर अधिकारियों को सामूहिक रूप से 'एस्टिनोमोई' (Astynomoi) कहा जाता था।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा संयोजन सही है?
(1) केवल I और II
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

31. मेगस्थनीज के अनुसार, भारतीय समाज व्यवसाय के आधार पर कितने वर्गों में विभाजित था?
(1) सात
(2) चार
(3) पाँच
(4) नौ
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

32. मेगस्थनीज और उनकी कृति 'इंडिका' के बारे में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) मेगस्थनीज ने चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार की यात्रा की थी।
(2) इंडिका की मूल पांडुलिपि आज भी सुरक्षित है।
(3) उन्होंने उल्लेख किया कि भारतीय समाज में दास प्रथा नहीं थी।
(4) उन्होंने देखा कि भारतीय अपने घरों में ताले नहीं लगाते थे और चोरियाँ दुर्लभ थीं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

33. सूची-I (मेगस्थनीज के वर्ग) को सूची-II (विवरण) के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (मेगस्थनीज के वर्ग)
A. दार्शनिक
B. कृषक
C. निरीक्षक
D. पार्षद
सूची II: (विवरण)
i. सबसे बड़ा वर्ग, जिसे सैन्य सेवा से छूट थी
ii. गुप्तचर जो सीधे राजा को सूचना देते थे
iii. सबसे छोटा वर्ग, जिसमें उच्च अधिकारी सम्मिलित थे
iv. ब्राह्मण और तपस्वी
(1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(2) A-i, B-iv, C-iii, D-ii
(3) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(4) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

34. इंडिका में किए गए विवरणों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: मेगस्थनीज ने वर्ण व्यवस्था के जटिल विवरणों को पूर्णतः सही ढंग से समझा और लिपिबद्ध किया।

कथन II: मेगस्थनीज ने दक्षिण के एक पांड्य राज्य का उल्लेख किया जहाँ महिलाओं का शासन था।
निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?
(1) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(2) कथन I गलत है और कथन II सही है।
(3) दोनों कथन सही हैं।
(4) दोनों कथन गलत हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

35. मेगस्थनीज के भारत वृत्तांत के आधार पर निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. भारत में कभी अकाल नहीं पड़ता।
II. अनुबंधों के लिए लेखन कला का व्यापक प्रयोग होता था।
III. भारतीयों द्वारा डायोनिसस और हेराक्लेस की पूजा की जाती थी।
IV. सामान्य जनता में ब्याजखोरी की प्रथा प्रचलित थी।
V. भारतीय सैनिक मुख्य रूप से लंबे धनुषों और चौड़ी तलवारों का प्रयोग करते थे।
कौन सा संयोजन मेगस्थनीज के दावों को सही ढंग से दर्शाता है?
(1) केवल I, III और V
(2) केवल I, II और IV
(3) केवल II, III और V
(4) केवल I, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

36. मौर्य काल में प्रचलित मानक चांदी का सिक्का, जिस पर विभिन्न प्रतीकों के आहत चिह्न होते थे, क्या कहलाता था?
(1) निष्क
(2) शतमान
(3) दीनार
(4) पण (या कार्षापण)
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

37. मौर्यकालीन अर्थव्यवस्था के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(1) राज्य ने व्यावसायिक कृषि गतिविधियों में भागीदारी से कड़ाई से दूरी बनाए रखी।
(2) आंतरिक व्यापार को सभी प्रकार के पथ-करों और सीमा शुल्कों से मुक्त रखा गया था।
(3) खनन और धातु कर्म राज्य के एकाधिकार थे, जिसकी देखरेख 'अकराध्यक्ष' करता था।
(4) अर्थव्यवस्था पूर्णतः वस्तु विनिमय पर आधारित थी और मुद्रा का चलन नहीं था।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

38. मौर्य साम्राज्य के निम्नलिखित प्रशासनिक विभाजनों को अवरोही क्रम (बड़े से छोटे) में व्यवस्थित कीजिए:
I. जनपद
II. आहार (विषय)
III. ग्राम
IV. स्थानीय (800 गाँवों की इकाई)
(1) I, II, IV, III
(2) I, IV, II, III
(3) IV, I, II, III
(4) II, I, IV, III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

39. मौर्य काल में लगाए जाने वाले निम्नलिखित करों में से विषम को पहचानिए।
(1) भाग
(2) बलि
(3) हिरण्य
(4) विष्टि
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

40. मौर्यकालीन अर्थव्यवस्था के संदर्भ में 'श्रेणी' शब्द किसे संदर्भित करता है?
(1) शिल्पकारों और व्यापारियों के संघ
(2) राजकीय कृषि फार्म
(3) राज्य के स्वामित्व वाली वस्त्र कार्यशालाएं
(4) विदेशी व्यापारिक जहाज
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

41. इतिहासकार हरप्रसाद शास्त्री के अनुसार, मौर्य साम्राज्य के पतन का मुख्य कारण क्या था?
(1) विशाल स्थायी सेना के कारण उत्पन्न वित्तीय संकट।
(2) अशोक के पश्चात उत्तराधिकारियों के बीच साम्राज्य का विभाजन।
(3) अशोक की बौद्ध समर्थक नीतियां जिनसे ब्राह्मणों में तीव्र प्रतिक्रिया हुई।
(4) उत्तर-पश्चिमी सीमा पर यूनानियों के निरंतर सैन्य आक्रमण।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

42. आधुनिक इतिहासकारों द्वारा सामान्यतः मौर्य साम्राज्य के पतन का प्रमुख कारण किसे नहीं माना जाता है?
(1) अशोक द्वारा सेना का पूर्णतः विसर्जन कर देना।
(2) नौकरशाही का अत्यधिक केंद्रीकृत स्वरूप।
(3) अत्यधिक राजकीय व्यय से उत्पन्न आर्थिक संकट।
(4) दूरस्थ क्षेत्रों में प्रांतीय राज्यपालों का दमनकारी शासन।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

43. सूची-I (विद्वान) को सूची-II (मौर्य पतन का सिद्धांत) के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (विद्वान)
A. हरप्रसाद शास्त्री
B. एच.सी. रायचौधरी
C. डी.डी. कोसांबी
D. रोमिला थापर
सूची II: (मौर्य पतन का सिद्धांत)

Click Here to Buy book on Amazon

i. आर्थिक संकट और मुद्रा का अवमूल्यन
ii. अशोक की नीतियों के विरुद्ध ब्राह्मणवादी प्रतिक्रिया
iii. अत्यधिक केंद्रीकृत प्रशासन और कमजोर उत्तराधिकारी
iv. अशोक की शांतिवादी नीतियों द्वारा सेना का दुर्बल होना
(1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

44. मौर्य वंश का अंतिम शासक कौन था, जिसकी हत्या उसके सेनापति ने की थी?
(1) दशरथ
(2) बृहद्रथ
(3) संप्रति
(4) शालिशुक
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

45. मौर्य साम्राज्य के पतन के तत्काल बाद की स्थिति के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. साम्राज्य विभाजित हो गया और इसका पूर्वी भाग पुष्यमित्र शुंग के अधिकार में आया।
II. उत्तर-पश्चिमी सीमा हिंद-यवन आक्रमणों के लिए असुरक्षित हो गई।
III. सातवाहनों ने पाटलिपुत्र में तुरंत मौर्यों का स्थान ले लिया।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

46. अयोध्या अभिलेख के अनुसार, पुष्यमित्र शुंग ने कौन सा वैदिक अनुष्ठान दो बार किया था?
(1) राजसूय
(2) वाजपेय
(3) अग्निचयन
(4) अश्वमेध
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

47. शुंग काल के प्रसिद्ध साहित्यकार और उनकी कृति के सही युग्म की पहचान कीजिए।
(1) पतंजलि - महाभाष्य
(2) कालिदास - अर्थशास्त्र
(3) बाणभट्ट - हर्षचरित
(4) अश्वघोष - बुद्धचरित
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

48. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): परवर्ती बौद्ध परंपराएं पुष्यमित्र शुंग को बौद्ध धर्म के उत्पीड़क के रूप में चित्रित करती हैं।
कारण (R): पुरातात्विक साक्ष्य यह सिद्ध करते हैं कि सांची और भरहुत के स्तूप शुंग काल में पूर्णतः नष्ट कर दिए गए थे।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

49. कण्व वंश के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: कण्व वंश की स्थापना वासुदेव ने अंतिम शुंग शासक देवभूति को अपदस्थ कर की थी।
कथन II: कण्वों का शासन संपूर्ण दक्कन प्रायद्वीप तक विस्तृत था।
निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?
(1) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(2) कथन I गलत है और कथन II सही है।
(3) दोनों कथन सही हैं।
(4) दोनों कथन गलत हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

50. मौर्योत्तर शुंग काल के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. शुंगों की राजधानी पाटलिपुत्र रही, यद्यपि विदिशा को भी महत्व मिला।
II. हिंद-यवन शासक मिनांडर ने इसी काल में भारत पर आक्रमण किया था।
III. अग्निमित्र, जो एक शुंग राजकुमार था, कालिदास के एक प्रसिद्ध नाटक का नायक है।
IV. शुंगों ने राजदरबारी भाषा के रूप में संस्कृत के स्थान पर प्राकृत को अपनाया।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II और IV
(2) केवल I, III और IV
(3) केवल I, II और III
(4) केवल II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

51. कुषाण वंश मूलतः मध्य एशिया की किस जनजाति से संबंधित था?
(1) शियोंगनू
(2) शक
(3) यूची
(4) पहलव
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

52. प्रारंभिक कुषाण शासकों के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) कुजुल कडफिसेस भारत में कुषाण वंश का संस्थापक

Downloaded from www.pdf.tube

था।
(2) विम कडफिसेस बड़े पैमाने पर स्वर्ण मुद्राएं जारी करने वाला पहला कुषाण शासक था।
(3) कुषाण साम्राज्य ने मध्य एशिया, चीन और भारत के बीच सेतु का कार्य किया।
(4) प्रारंभिक कुषाणों ने बिना किसी भारतीय प्रभाव के केवल यूनानी देवताओं वाले सिक्के जारी किए।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

53. सूची-I (कुषाण शासक) को सूची-II (ऐतिहासिक महत्व) के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (कुषाण शासक)
A. कुजुल कडफिसेस
B. विम कडफिसेस
C. कनिष्क
D. वासुदेव
सूची II: (ऐतिहासिक महत्व)
i. तांबे के सिक्के जारी किए और 'धम्मठिदा' की उपाधि धारण की
ii. स्वर्ण मुद्राओं पर नंदी के साथ भगवान शिव को अंकित करवाया
iii. 78 ईस्वी में शक संवत का प्रारंभ किया
iv. अंतिम महान कुषाण शासक, जिसका नाम भारतीयकरण को दर्शाता है
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(4) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

54. निम्नलिखित में से कौन सा क्षेत्र कुषाण साम्राज्य के राजनीतिक नियंत्रण में नहीं था?
(1) बैक्ट्रिया
(2) तमिलकम
(3) गांधार
(4) मथुरा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

55. कुषाण साम्राज्य के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. मथुरा उनकी दूसरी राजधानी और कला का प्रमुख केंद्र था।
II. उन्होंने रेशम मार्ग पर नियंत्रण कर अपार धन अर्जित किया।
III. उनके स्वर्ण सिक्के गुप्तकालीन सिक्कों की तुलना में अधिक शुद्ध माने जाते हैं।
IV. कनिष्क ने बौद्ध धर्म के अतिरिक्त अन्य सभी धर्मों का दमन किया।
V. उनका साम्राज्य आधुनिक पाँच राष्ट्रों के क्षेत्रों तक विस्तृत था।
उपर्युक्त में से कौन सा कथन गलत है?
(1) केवल I और V
(2) केवल IV
(3) केवल II, III और V
(4) केवल III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

56. कनिष्क के राज्यारोहण से जुड़े शक संवत का प्रारंभ किस वर्ष हुआ था?
(1) 78 ईस्वी
(2) 58 ईसा पूर्व
(3) 144 ईस्वी
(4) 319 ईस्वी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

57. कनिष्क की वह राजधानी, जिसे उसने शिक्षा और व्यापार का केंद्र बनाया था:
(1) पाटलिपुत्र
(2) उज्जैन
(3) पुरुषपुर (पेशावर)
(4) प्रतिष्ठान
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

58. उत्तर-पश्चिमी भारत पर आक्रमण करने वाले विदेशी समूहों का सही कालक्रम क्या है?
(1) शक, हिंद-यवन, पहलव, कुषाण
(2) हिंद-यवन, शक, पहलव, कुषाण
(3) पहलव, हिंद-यवन, कुषाण, शक
(4) हिंद-यवन, कुषाण, शक, पहलव
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

59. रेशम मार्ग पर कुषाणों के नियंत्रण का मुख्य आर्थिक परिणाम क्या था?
(1) मध्य एशियाई बाजारों से भारतीय व्यापारियों का पूर्ण अलगाव।
(2) सारा समुद्री व्यापार बंद होकर केवल भूमि मार्गों पर स्थानांतरित होना।
(3) विदेशी आयात के कारण स्वदेशी उद्योगों का पूर्ण पतन।
(4) स्वर्ण का भारी आगमन और उत्तर भारत में समृद्ध शहरी केंद्रों का विकास।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

60. कनिष्क के बौद्ध धर्म संरक्षण के संबंध में कौन सा कथन सही है?
(1) उसने पाटलिपुत्र में तीसरी बौद्ध संगीति बुलाई थी।
(2) उसने कश्मीर में चौथी बौद्ध संगीति आयोजित की जिसमें ग्रंथों का संहिताकरण हुआ।
(3) उसने महायान पर प्रतिबंध लगाकर हीनयान संप्रदाय को संरक्षण दिया।
(4) उसने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए अपने पुत्र और पुत्री को श्रीलंका भेजा था।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

61. गांधार कला शैली की मुख्य विशेषता क्या है?
(1) यह पूर्णतः स्वदेशी थी और विदेशी प्रभाव से मुक्त थी।
(2) इसमें लाल बलुआ पत्थर में केवल जैन तीर्थंकरों का चित्रण था।
(3) इसमें बौद्ध विषयों को यूनानी-रोमन शैली के साथ जोड़ा गया था।
(4) यह केवल लकड़ी पर उत्कीर्ण शाही चित्रों तक सीमित थी।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

62. मथुरा कला शैली की विशेषताओं में से कौन सा विकल्प मेल नहीं खाता?
(1) चित्तीदार लाल बलुआ पत्थर का प्रयोग
(2) सुदृढ़ और आध्यात्मिक रूप से शांत प्रतिमाओं का चित्रण
(3) हिंदू, जैन और बौद्ध तीनों धर्मों को संरक्षण
(4) यूनानी शारीरिक यथार्थवाद से गहराई से प्रभावित
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

63. सूची-I (कला शैली) को सूची-II (विशेषता) के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (कला शैली)
A. गांधार शैली
B. मथुरा शैली
C. अमरावती शैली
सूची II: (विशेषता)
i. चित्तीदार लाल बलुआ पत्थर
ii. सफेद संगमरमर और कथात्मक पटल
iii. नीला-धूसर शिस्ट और स्टुको
(1) A-iii, B-i, C-ii
(2) A-i, B-ii, C-iii
(3) A-iii, B-ii, C-i
(4) A-ii, B-i, C-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

64. बुद्ध के प्रारंभिक चित्रणों के संबंध में गलत युग्म की पहचान कीजिए।
(1) गांधार कला: बुद्ध को घुंघराले बाल और रोमन टोगा के साथ दिखाया गया है।
(2) अमरावती कला: बुद्ध को सदैव केवल प्रतीकात्मक रूप में ही दिखाया गया है।
(3) मथुरा कला: बुद्ध को मुंडित सिर और बलिष्ठ शरीर के साथ दिखाया गया है।
(4) शुंग कला: बुद्ध को बोधि वृक्ष या चक्र जैसे प्रतीकों द्वारा दर्शाया गया है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

65. कुषाणकालीन कला के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. गांधार और मथुरा दोनों शैलियों में बुद्ध को पहली बार मानव रूप में दर्शाया गया।
II. मथुरा शैली ने हिंदू देवताओं के चित्रण को पूर्णतः वर्जित रखा था।
III. गांधार शैली मुख्य रूप से बुद्ध के जीवन और जातक कथाओं पर आधारित थी।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

66. निम्नलिखित में से किसे सातवाहन वंश का संस्थापक माना जाता है?
(1) सिमुक
(2) गौतमीपुत्र शातकर्णी
(3) हाल
(4) यज्ञ श्री शातकर्णी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

67. सातवाहन शासकों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: सातवाहन शासकों ने अपने नाम के साथ माताओं के नाम (मातृनाम) जोड़े थे।
कथन II: सातवाहन राजसत्ता का उत्तराधिकार मातृसत्तात्मक था।
निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?
(1) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(2) कथन I गलत है और कथन II सही है।
(3) दोनों कथन सही हैं।
(4) दोनों कथन गलत हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

68. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): सातवाहन ब्राह्मण मतानुयायी थे जिन्होंने वैदिक यज्ञ संपन्न किए।
कारण (R): उन्होंने बौद्ध भिक्षुओं का दमन किया और रॉक-कट चैत्यों को नष्ट किया।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

69. गौतमीपुत्र शातकर्णी के संबंध में कौन सा कथन सही है?
(1) वह सातवाहन वंश का संस्थापक था।
(2) उसने 'गाथा सप्तशती' नामक प्राकृत ग्रंथ की रचना की।
(3) उसने शक शासक नहपान को पराजित कर सातवाहनों की प्रतिष्ठा पुनः स्थापित की।
(4) उसने राजधानी को प्रतिष्ठान से पाटलिपुत्र स्थानांतरित किया।

Click Here to Buy book on Amazon

(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

70. सातवाहन काल के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. नानाघाट अभिलेख शातकर्णी प्रथम की उपलब्धियों का विवरण देता है।
II. नासिक प्रशस्ति की रचना गौतमी बलश्री ने की थी।
III. उन्होंने सीसा और पोटीन के सिक्के बड़ी संख्या में जारी किए।
IV. उन्होंने मौर्यों के 'आहार' प्रशासनिक विभाजन को समाप्त कर दिया था।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

71. किस राजवंश को स्वर्ण के स्थान पर सीसा, तांबा और पोटीन जैसी धातुओं में मुद्रा जारी करने के लिए जाना जाता है?
(1) कुषाण
(2) हिंद-यवन
(3) गुप्त
(4) सातवाहन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

72. सातवाहन साम्राज्य की आर्थिक समृद्धि का मुख्य कारण क्या था?
(1) मानसूनी हवाओं की खोज जिससे रोम के साथ व्यापार में वृद्धि हुई।
(2) ट्रांस-हिमालयी रेशम मार्ग पर राजकीय एकाधिकार।
(3) मगध की विजय से प्राप्त विशाल कृषि संपदा।
(4) मध्य एशिया को लोहे के हथियारों का बड़े पैमाने पर निर्यात।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

73. सूची-I (सातवाहन काल के केंद्र) को सूची-II (आधुनिक संदर्भ) के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (सातवाहन काल के केंद्र)
A. बेरीगाजा (भरुच)
B. सोपारा
C. प्रतिष्ठान (पैठन)
D. अमरावती
सूची II: (आधुनिक संदर्भ)
i. तटीय महाराष्ट्र
ii. गोदावरी तट पर स्थित राजधानी
iii. कृष्णा घाटी का प्रमुख केंद्र
iv. गुजरात में नर्मदा मुहाने पर बंदरगाह
(1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(2) A-i, B-iv, C-iii, D-ii
(3) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(4) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

74. मौर्योत्तर काल में भारतीय बंदरगाहों से रोम को निम्नलिखित में से किसका निर्यात नहीं किया जाता था?
(1) घोड़े
(2) मसाले (काली मिर्च)
(3) महीन वस्त्र और मलमल
(4) रत्न और मोती
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

75. मौर्योत्तर और सातवाहन काल की अर्थव्यवस्था के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. व्यापारिक श्रेणियां (निगम) शक्तिशाली आर्थिक और बैंकिंग संस्थानों के रुप में उभरीं।
II. 'दक्षिणापथ' जैसे मार्गों से आंतरिक व्यापार में वृद्धि हुई।
III. प्लिनी द एल्डर ने भारत में रोम के स्वर्ण के निकास पर दुख व्यक्त किया।
IV. पश्चिमी तट के बंदरगाह मुख्य रुप से चीन के साथ व्यापार करते थे।
V. श्रेणियों ने अपनी मुहरें और सिक्के भी जारी किए।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III और V
(2) केवल I, III, IV और V
(3) केवल II, III, IV और V
(4) केवल I, II और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

76. मौर्य काल को समझने के लिए प्रासंगिक लेखक और उनकी कृति का सही युग्म कौन सा है?
(1) कल्हण - राजतरंगिणी
(2) विशाखदत्त - मुद्राराक्षस
(3) शूद्रक - मृच्छकटिकम्
(4) सोमदेव - कथासरित्सागर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

77. सातवाहन काल में शुरु हुए भूमि अनुदानों (अग्रहार) का ऐतिहासिक महत्व क्या है?
(1) इन्होंने ग्रामीण क्षेत्रों में वर्ण व्यवस्था को समाप्त कर दिया।
(2) इनके कारण कृषि उत्पादन पूर्णतः बंद हो गया।
(3) इनके कारण राजनीतिक विकेंद्रीकरण और सामंतवाद का उदय हुआ।
(4) ये विशेष रुप से विदेशी व्यापारियों को व्यापार केंद्र बनाने के लिए दिए गए थे।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

78. निम्नलिखित सातवाहन शासकों को सही कालानुक्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. यज्ञ श्री शातकर्णी
II. सिमुक

NODIA

III. गौतमीपुत्र शातकर्णी
IV. शातकर्णी प्रथम
(1) II, IV, III, I
(2) II, III, IV, I
(3) IV, II, III, I
(4) II, IV, I, III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

79. रुद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: यह शुद्ध संस्कृत में रचित प्राचीन भारत का पहला प्रमुख अभिलेख है।
कथन II: इसमें सुदर्शन झील के निर्माण और मरम्मत का उल्लेख है, जो मूलतः चंद्रगुप्त मौर्य के समय बनी थी।
निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?
(1) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(2) कथन I गलत है और कथन II सही है।
(3) दोनों कथन सही हैं।
(4) दोनों कथन गलत हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

80. मौर्योत्तर काल के विदेशी आक्रमणों (हिंद-यवन, शक, कुषाण) का प्रमुख सांस्कृतिक परिणाम क्या रहा?
(1) भारतीय विश्वास प्रणालियों और भाषाओं का पूर्ण विनाश।
(2) आक्रमणकारियों का भारतीय समाज में आत्मसातीकरण और एक मिश्रित संस्कृति का विकास।
(3) कठोर अलगाववाद के कारण अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का बंद होना।
(4) राजनीतिक शक्ति का स्थायी रूप से केवल दक्षिण भारत में सीमित हो जाना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

www.nodia.in

Downloaded from www.pdf.tube

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) चंद्रगुप्त मौर्य
चंद्रगुप्त मौर्य ने अपने गुरु चाणक्य की कूटनीतिक सहायता से नंद वंश के अंतिम शासक धनानंद को पराजित किया और 322 ईसा पूर्व में मौर्य साम्राज्य की गौरवशाली नींव रखी। उन्होंने उत्तर-पश्चिमी भारत को यूनानी आधिपत्य से मुक्त कराया और एक सुसंगठित प्रशासनिक व्यवस्था की स्थापना की। उनके शासनकाल में भारत में पहली बार राजनीतिक अखंडता स्थापित हुई, जिसने मगध को एक महान अखिल भारतीय शक्ति बना दिया।

2. (1) कलिंग
चंद्रगुप्त मौर्य का साम्राज्य उत्तर-पश्चिम में अफगानिस्तान से पूर्व में बंगाल और दक्षिण में कर्नाटक के उत्तरी भागों तक विस्तृत था। उनके प्रत्यक्ष नियंत्रण में सौराष्ट्र, मगध और उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र सम्मिलित थे। हालांकि, ओडिशा तट पर स्थित कलिंग का क्षेत्र उस समय मौर्य साम्राज्य का भाग नहीं था। कलिंग को बाद में उनके पौत्र अशोक ने अपने राज्याभिषेक के आठवें वर्ष में एक भीषण युद्ध के उपरांत सफलतापूर्वक जीता था।

3. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
यूनानी लेखक जस्टिन ने चंद्रगुप्त मौर्य हेतु 'सैंड्रोकोट्टस' शब्द का प्रयोग किया है, जबकि प्लूटार्क ने उन्हें 'एंड्रोकोट्टस' कहा। विलियम जोन्स ने सर्वप्रथम इन यूनानी नामों की पहचान ऐतिहासिक चंद्रगुप्त मौर्य से की थी। विशाखदत्त कृत प्रसिद्ध नाटक 'मुद्राराक्षस' में उन्हें 'वृषल' संबोधित किया गया है। 'पियदस्सी' सम्राट अशोक के अभिलेखों में प्रयुक्त उनकी राजकीय उपाधि है, जिसका अर्थ है 'देवताओं का प्रिय' और 'देखने में अत्यंत सुंदर'।

4. (4) एक शांति संधि हुई जिसमें सेल्युकस ने उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र चंद्रगुप्त को सौंप दिए।
चंद्रगुप्त मौर्य और सेल्युकस निकेटर के मध्य लगभग 305 ईसा पूर्व में संघर्ष हुआ था। इस युद्ध का अंत एक महत्वपूर्ण संधि के साथ हुआ, जिसमें सेल्युकस ने अराकोसिया, गेड्रोसिया और एरिया जैसे रणनीतिक उत्तर-पश्चिमी प्रांतों को चंद्रगुप्त को सौंप दिया। बदले में चंद्रगुप्त ने सेल्युकस को 500 शक्तिशाली हाथी उपहार स्वरुप दिए। इस ऐतिहासिक संधि ने दोनों राज्यों के मध्य वैवाहिक संबंधों और स्थाई कूटनीतिक आदान-प्रदान का मार्ग प्रशस्त किया।

5. (4) I, II और III
चंद्रगुप्त मौर्य ने अपने जीवन के अंतिम वर्षों में राजपाट त्यागकर जैन धर्म स्वीकार कर लिया था। उन्होंने जैन मुनि भद्रबाहु के मार्गदर्शन में दक्षिण भारत की यात्रा की और श्रवणबेलगोला में बस गए। वहाँ उन्होंने जैन परंपरा के अनुसार उपवास द्वारा शरीर त्यागने की कठोर पद्धति 'सल्लेखना' का निष्ठापूर्वक पालन किया। यह उनके धार्मिक झुकाव और सांसारिक मोह के परित्याग को प्रमाणित करने वाला एक अत्यंत महत्वपूर्ण ऐतिहासिक साक्ष्य है।

NODIA

6. (2) शासनकला, प्रशासन और सैन्य रणनीति
कौटिल्य द्वारा रचित 'अर्थशास्त्र' राज्य प्रशासन, शासनकला और सैन्य रणनीति पर आधारित एक कालजयी ग्रंथ है। इसमें राज्य के सात अंगों, राजा के कर्तव्यों और जटिल कूटनीति का व्यापक वर्णन मिलता है। यह ग्रंथ केवल आर्थिक सिद्धांतों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह प्राचीन भारतीय राजनीति विज्ञान की एक संपूर्ण नियमावली प्रस्तुत करता है। इसका प्रभाव मौर्य साम्राज्य के अत्यंत कुशल और सुव्यवस्थित प्रशासन पर स्पष्ट रुप से दिखाई देता है।

7. (4) पुरोहित
कौटिल्य ने राज्य के सुचारु संचालन हेतु 'सप्तांग सिद्धांत' प्रतिपादित किया था। इसमें सात मूल तत्व—स्वामी, अमात्य, जनपद, दुर्ग, कोश, दंड और मित्र सम्मिलित थे। यद्यपि मौर्य प्रशासन में पुरोहित का स्थान अत्यंत उच्च और प्रभावशाली था, परंतु वह कौटिल्य द्वारा परिभाषित राज्य के सात अंगों की सूची का औपचारिक हिस्सा नहीं था। यह सिद्धांत राज्य को एक जीवित इकाई के रूप में देखता है जहाँ प्रत्येक अंग की अपनी विशिष्ट भूमिका थी।

8. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
कौटिल्य के अर्थशास्त्र में राज्य की स्थिरता बनाए रखने हेतु एक अत्यंत विस्तृत और संगठित गुप्तचर प्रणाली का प्रबल समर्थन किया गया है। सम्राट के विरुद्ध विद्रोहों को रोकने, प्रशासनिक भ्रष्टाचार की प्रभावी निगरानी करने और शत्रु राज्यों की गोपनीय सूचनाएं एकत्र करने हेतु जासूसों को अनिवार्य माना जाता था। यह केंद्रीकृत नियंत्रण और आंतरिक सुरक्षा सुनिश्चित करने का प्रमुख साधन था। गुप्तचरों को विभिन्न भेष बदलकर कार्य करने का परामर्श दिया गया था।

9. (3) स्वाभाविक शत्रु
कौटिल्य के मंडल सिद्धांत के अनुसार, एक राज्य का अपने निकटतम क्षेत्रीय पड़ोसी के साथ संबंध स्वाभाविक रुप से शत्रुतापूर्ण होता है, जिसे 'अरि' कहा गया है। यह सिद्धांत भू-राजनीति की इस धारणा पर आधारित है कि साझा सीमाओं वाले राज्यों के मध्य हितों का टकराव निश्चित है। इसी क्रम में, शत्रु के बगल वाला राज्य 'मित्र' कहलाता है। यह सिद्धांत प्राचीन भारतीय विदेश नीति और शक्ति संतुलन को समझने का एक महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है।

10. (2) केवल I, II और IV
कौटिल्य का अर्थशास्त्र संस्कृत भाषा में रचित है और 15 अधिकरणों में विभाजित है। यह दीवानी और फौजदारी

न्यायालयों के मध्य स्पष्ट प्रशासनिक अंतर करता है। इसमें 'संस्था' और 'संचरा' नामक दो प्रकार के गुप्तचरों का विस्तृत उल्लेख मिलता है। हालांकि, यह ग्रंथ कर व्यवस्था को नकारता नहीं है, बल्कि राज्य की आय हेतु एक सुव्यवस्थित और न्यायसंगत कराधान प्रणाली का समर्थन करता है। अतः तीसरा कथन ऐतिहासिक रूप से त्रुटिपूर्ण और अन्य सभी सत्य हैं।

11. (4) बिंदुसार
मौर्य सम्राट बिंदुसार को यूनानी लेखकों द्वारा 'अमित्रोकेट्स' या 'अमित्रघात' की उपाधि दी गई थी, जिसका शाब्दिक अर्थ है शत्रुओं का संहार करने वाला। वे चंद्रगुप्त मौर्य के उत्तराधिकारी और महान अशोक के पिता थे। यद्यपि उनके सैन्य अभियानों के विस्तृत लिखित विवरण कम उपलब्ध हैं, परंतु यह उपाधि उनकी सैन्य शक्ति और साम्राज्य की सीमाओं को सुरक्षित रखने की क्षमता को दर्शाती है। उनके शासनकाल में मौर्य साम्राज्य का विस्तार दक्षिण के सुदूर क्षेत्रों तक हुआ था।

12. (2) एंटियोकस प्रथम
सीरिया के शासक एंटियोकस प्रथम ने सम्राट बिंदुसार के दरबार में डायमेकस नामक राजदूत को भेजा था। बिंदुसार ने एंटियोकस से तीन वस्तुओं की मांग की थी, जिनमें मीठी मदिरा, सूखे अंजीर और एक दार्शनिक सम्मिलित थे। एंटियोकस ने मदिरा और अंजीर तो भेज दिए, परंतु यह संदेश दिया कि यूनानी कानूनों के अनुसार दार्शनिकों का क्रय-विक्रय नहीं किया जा सकता। यह घटना मौर्यों के अंतरराष्ट्रीय संबंधों और तत्कालीन कूटनीतिक शिष्टाचार को स्पष्ट रूप से दर्शाती है।

13. (1) A-ii, B-iii, C-i
मेगस्थनीज सेल्युकस निकेटर का राजदूत था जिसने चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार की यात्रा की और 'इंडिका' लिखी। डायमेकस सीरियाई नरेश एंटियोकस प्रथम की ओर से बिंदुसार के दरबार में नियुक्त किया गया था। डायोनिसियस मिस्र के राजा टोलेमी द्वितीय द्वारा भेजा गया राजदूत था, जिसने अशोक के शासनकाल के दौरान मौर्य राजधानी की यात्रा की थी। ये विदेशी वृत्तांत मौर्य साम्राज्य के प्रशासन, समाज और कूटनीतिक संबंधों के अध्ययन हेतु अत्यंत विश्वसनीय और महत्वपूर्ण स्रोत हैं।

14. (2) कथन I गलत है और कथन II सही है।
ऐतिहासिक साक्ष्यों के अनुसार बिंदुसार अपने पुत्र अशोक की भाँति बौद्ध धर्म का अनुयायी नहीं था। वह 'आजीविक' संप्रदाय के प्रति अधिक झुकाव रखता था और उसे सक्रिय राजकीय संरक्षण प्रदान किया था। उनके दरबार में पिंगलवत्स नामक एक आजीविक ज्योतिषी निवास करता था। बौद्ध ग्रंथों के अनुसार बिंदुसार ने बौद्ध धर्म में उतनी गहन रुचि नहीं दिखाई जितनी बाद में अशोक ने दिखाई थी। अतः दोनों शासकों की व्यक्तिगत धार्मिक मान्यताएं एक समान नहीं थीं।

15. (3) केवल V
बिंदुसार ने मौर्य साम्राज्य का विस्तार दक्षिण के प्रायद्वीपीय क्षेत्रों तक किया और तक्षशिला के विद्रोह को अशोक के माध्यम से शांत किया। चाणक्य ने उनके शासन के प्रारंभिक वर्षों में भी महत्वपूर्ण मंत्री के रूप में कार्य किया। हालांकि, मौर्य काल में मुख्य रूप से चांदी के 'आहत' सिक्कों का प्रचलन था और बिंदुसार द्वारा स्वर्ण मुद्राएं जारी करने का कोई ठोस प्रमाण नहीं मिलता है। अतः केवल पाँचवाँ कथन ऐतिहासिक रूप से असत्य और अन्य सभी सत्य हैं।

16. (2) आठवें वर्ष
अशोक ने अपने राज्याभिषेक के आठवें वर्ष, लगभग 261 ईसा पूर्व में कलिंग पर आक्रमण किया था। इस युद्ध का विस्तृत विवरण उनके 13वें शिलालेख में स्पष्ट रूप से मिलता है। युद्ध में हुई भारी हिंसा, व्यापक नरसंहार और विस्थापन ने अशोक के हृदय को गहराई से परिवर्तित कर दिया। यह युद्ध उनके जीवन का निर्णायक मोड़ सिद्ध हुआ, जिसके पश्चात उन्होंने सैन्य विजय की साम्राज्यवादी नीति को सदा हेतु त्यागकर धम्म का मार्ग अपनाया।

17. (2) उसने भेरीघोष (सैन्य विजय) के स्थान पर धम्मघोष (सांस्कृतिक विजय) की नीति अपनाई।
कलिंग युद्ध के विनाशकारी परिणामों ने अशोक की राजकीय नीति को पूरी तरह परिवर्तित कर दिया। उन्होंने 'भेरीघोष' का त्याग कर 'धम्मघोष' की नवीन नीति को अपनाया। इस परिवर्तन के अंतर्गत उन्होंने सैन्य शक्ति के स्थान पर प्रेम, करुणा और नैतिकता के माध्यम से प्रजा का हृदय जीतने का प्रयास किया। यद्यपि उन्होंने सैन्य शक्ति को पूर्णतः समाप्त नहीं किया, परंतु उनका मुख्य ध्यान लोक कल्याण, धार्मिक सहिष्णुता और धम्म के वैश्विक प्रचार-प्रसार पर केंद्रित हो गया।

18. (1) राज्याभिषेक, कलिंग युद्ध, बोधगया की प्रथम यात्रा, धम्म-महामात्रों की नियुक्ति
अशोक के जीवन की प्रमुख घटनाओं का क्रम उनके राज्याभिषेक से प्रारंभ होता है। इसके आठवें वर्ष में कलिंग युद्ध हुआ, जिसने उनके दृष्टिकोण को बदल दिया। इसके उपरांत उन्होंने बौद्ध धर्म की दीक्षा ली और दसवें वर्ष में बोधगया की अपनी प्रथम धम्म यात्रा की। अपने राज्याभिषेक के 13वें वर्ष में उन्होंने धम्म के प्रचार और सामाजिक न्याय सुनिश्चित करने हेतु 'धम्म-महामात्रों' नामक अधिकारियों की नियुक्ति की थी। यह क्रम उनके क्रमिक आध्यात्मिक विकास को दर्शाता है।

19. (3) यह ब्राह्मणवादी व्यवस्था के विरोध में अशोक द्वारा स्थापित एक नया धर्म था।
अशोक का धम्म कोई नया धर्म या संप्रदाय नहीं था और न ही यह ब्राह्मणवादी व्यवस्था के विरोध में था। यह अनिवार्य रूप से एक सार्वभौमिक नैतिक आचार संहिता थी जिसमें माता-पिता की सेवा, गुरुओं का सम्मान, अहिंसा और सभी संप्रदायों के प्रति सहिष्णुता जैसे मानवीय मूल्य सम्मिलित थे। इसका मुख्य उद्देश्य समाज में शांति, सद्भाव और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना जागृत करना था, न कि किसी विशिष्ट धार्मिक दर्शन को प्रजा पर थोपना।

Click Here to Buy book on Amazon

20. (4) धम्म का प्रचार करना और प्रजा का कल्याण सुनिश्चित करना।
अशोक ने अपने शासनकाल के 13वें वर्ष में 'धम्म-महामात्रों' नामक विशेष अधिकारियों की नियुक्ति की थी। इनका प्राथमिक उत्तरदायित्व साम्राज्य के विभिन्न वर्गों के मध्य धम्म का प्रचार करना, लोगों के नैतिक जीवन की देखरेख करना और प्रजा का कल्याण सुनिश्चित करना था। वे कारागार में बंद कैदियों के प्रति मानवीय व्यवहार सुनिश्चित करते थे और विभिन्न धार्मिक संप्रदायों के मध्य सामंजस्य बनाए रखते थे। ये अधिकारी सीधे सम्राट के लोक कल्याणकारी आदर्शों को लागू करते थे।

21. (3) मस्की लघु शिलालेख
अशोक के अधिकांश अभिलेखों में उन्हें 'देवानांपिय' और 'पियदस्सी' जैसी सम्मानजनक उपाधियों से संबोधित किया गया है। उनके व्यक्तिगत नाम 'अशोक' का स्पष्ट उल्लेख केवल कर्नाटक के 'मस्की' लघु शिलालेख और मध्य प्रदेश के 'गुजर्रा' शिलालेख के साथ-साथ नेत्तूर अभिलेखों में मिलता है। इन अभिलेखों की खोज ने इतिहासकारों को यह पुष्टि करने में सहायता की कि 'देवानांपिय पियदस्सी' और मौर्य सम्राट अशोक वास्तव में एक ही महान ऐतिहासिक व्यक्ति थे।

22. (2) तमिल-ब्राह्मी
अशोक के राजकीय अभिलेखों में मुख्य रूप से चार लिपियों का प्रयोग हुआ है। भारतीय उपमहाद्वीप के अधिकांश क्षेत्रों में ब्राह्मी, उत्तर-पश्चिम में खरोष्ठी, और अफगानिस्तान क्षेत्र में अरामी तथा यूनानी लिपि का उपयोग किया गया। 'तमिल-ब्राह्मी' लिपि का प्रयोग दक्षिण भारत के स्थानीय अभिलेखों में मिलता है, परंतु अशोक के शिलालेखों में इसका कोई प्रमाण नहीं है। अशोक ने सदैव स्थानीय स्तर पर समझी जाने वाली लिपियों को प्राथमिकता दी ताकि संदेश जनमानस तक सुगमता से पहुँच सकें।

23. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
अशोक का प्रथम शिलालेख उत्सवों के दौरान होने वाली पशु बलि पर पूर्ण प्रतिबंध लगाता है। द्वितीय शिलालेख में मनुष्यों और पशुओं हेतु चिकित्सालयों की स्थापना और औषधीय पौधों के रोपण का उल्लेख है। सातवाँ शिलालेख सभी धार्मिक संप्रदायों के मध्य सहिष्णुता और आत्म-नियंत्रण की अपील करता है। तेरहवां शिलालेख सबसे महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें कलिंग युद्ध के विवरण के साथ-साथ समकालीन विदेशी राजाओं का वर्णन मिलता है। यह अशोक की वैश्विक दृष्टि को प्रदर्शित करता है।

24. (1) भाब्रू-बैराट शिलालेख
राजस्थान में स्थित 'भाब्रू-बैराट' शिलालेख अशोक के बौद्ध धर्म के प्रति अटूट विश्वास का सबसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक साक्ष्य है। इस शिलालेख में अशोक स्पष्ट रूप से बौद्ध त्रिरत्न—बुद्ध, धम्म और संघ के प्रति अपनी गहरी श्रद्धा व्यक्त करते हैं। इसमें उन्होंने कुछ विशिष्ट बौद्ध ग्रंथों की सूची भी दी है जिनका अध्ययन भिक्षुओं और सामान्य अनुयायियों हेतु अनिवार्य बताया गया है। यह अभिलेख प्रमाणित करता है कि अशोक स्वयं बौद्ध धर्म के एक समर्पित और निष्ठावान अनुयायी थे।

25. (2) केवल I और II
जेम्स प्रिंसेप ने 1837 में सर्वप्रथम अशोक के ब्राह्मी लिपि वाले अभिलेखों को पढ़ने में सफलता प्राप्त की थी। उत्तर-पश्चिमी भारत के अभिलेखों में मुख्य रूप से खरोष्ठी लिपि का प्रयोग किया गया है, जो दाईं से बाईं ओर लिखी जाती थी। हालांकि, दक्षिण भारत में पाए गए अभिलेख प्राकृत भाषा और ब्राह्मी लिपि में हैं, न कि यूनानी भाषा में। यूनानी लिपि का प्रयोग केवल अफगानिस्तान के सुदूर उत्तर-पश्चिमी सीमावर्ती क्षेत्रों में पाए गए विशेष अभिलेखों में ही हुआ था।

26. (1) क्रमशः दीवानी और फौजदारी न्यायालय
मौर्य प्रशासन में न्याय व्यवस्था को दो स्पष्ट भागों में विभाजित किया गया था। 'धर्मस्थीय' न्यायालय दीवानी मामलों, जैसे संपत्ति और अनुबंधों का निपटारा करते थे, जहाँ निर्णय मुख्य रूप से पारंपरिक कानूनों के आधार पर लिए जाते थे। 'कंटकशोधन' न्यायालय फौजदारी या आपराधिक मामलों से संबंधित थे, जिनका उद्देश्य समाज के असामाजिक तत्वों को दंडित कर प्रशासनिक व्यवस्था को सुरक्षित रखना था। यह वर्गीकरण मौर्य काल की सुदृढ़ और अत्यंत सुव्यवस्थित कानूनी संरचना को रेखांकित करता है।

27. (4) सीताध्यक्ष - राजकीय कृषि भूमि का अध्यक्ष
मौर्य प्रशासन में 'सीताध्यक्ष' वह अधिकारी था जो राजकीय कृषि भूमि के प्रबंधन हेतु उत्तरदायी था। 'समाहर्ता' मुख्य कर संग्रहकर्ता का पद था, जबकि 'सन्निधाता' राजकीय कोषाध्यक्ष के रूप में कार्य करता था। 'पण्याध्यक्ष' व्यापार और वाणिज्य का प्रमुख अधिकारी था, न कि सेनापति। यह प्रशासनिक ढांचा कौटिल्य के अर्थशास्त्र के सिद्धांतों के पूर्णतः अनुरूप था, जिसका उद्देश्य राज्य के संसाधनों का अधिकतम उपयोग और आर्थिक गतिविधियों पर प्रभावी राजकीय नियंत्रण सुनिश्चित करना था।

28. (3) A सही है लेकिन R गलत है।
मौर्य साम्राज्य ने एक अत्यंत विशाल और स्थायी पेशेवर सेना बनाए रखी थी, जिसमें पैदल सेना, घुड़सवार, रथ और हाथी सम्मिलित थे। मेगस्थनीज और कौटिल्य दोनों ने इस सुव्यवस्थित सैन्य संगठन की पुष्टि की है। यह कहना सर्वथा गलत है कि मौर्य सेना पूर्णतः प्रांतीय राज्यपालों की स्वैच्छिक टुकड़ियों पर निर्भर थी। साम्राज्य की सुरक्षा और विस्तार हेतु केंद्र द्वारा नियंत्रित एक सुशिक्षित और वेतनभोगी सेना अनिवार्य थी, जिसका प्रबंधन एक विशेष सैन्य परिषद द्वारा किया जाता था।

29. (3) वे भूमि मापन और न्याय प्रशासन के लिए उत्तरदायी ग्रामीण अधिकारी थे।
अशोक के अभिलेखों में वर्णित 'रज्जुक' ग्रामीण प्रशासन के अत्यंत महत्वपूर्ण अधिकारी थे। प्रारंभ में उनका मुख्य कार्य भूमि की पैमाइश और राजस्व सीमाओं का निर्धारण करना था, परंतु बाद में उन्हें व्यापक न्यायिक शक्तियाँ भी प्रदान कर दी गईं। अशोक ने उन्हें अपनी प्रजा के कल्याण हेतु स्वतंत्र रूप से निर्णय लेने और दंड देने का अधिकार दिया था। उनकी भूमिका

NODIA

आधुनिक जिला कलेक्टरों के समान थी, जो राजस्व और न्याय दोनों क्षेत्रों में प्रशासन की मुख्य कड़ी थे।

30. (4) I, II, III और IV
मेगस्थनीज के अनुसार, पाटलिपुत्र का नगर प्रशासन 30 सदस्यों की एक परिषद द्वारा चलाया जाता था, जो छह समितियों में विभक्त थी। ये समितियाँ शिल्प, विदेशियों की देखभाल, जन्म-मृत्यु पंजीकरण, व्यापार और कर संग्रह जैसे कार्यों का प्रबंधन करती थीं। नगर के इन वरिष्ठ अधिकारियों को यूनानी वृत्तांतों में 'एस्टिनोमोई' कहा गया है। यह व्यवस्था उस काल के शहरी प्रशासन की सूक्ष्म योजना और उच्च स्तरीय संगठनात्मक क्षमता को स्पष्ट रूप से रेखांकित करती है।

31. (1) सात
मेगस्थनीज ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'इंडिका' में तत्कालीन भारतीय समाज को उसके व्यवसाय के आधार पर सात वर्गों में विभाजित किया है। ये वर्ग दार्शनिक, कृषक, शिकारी, शिल्पकार, योद्धा, निरीक्षक और पार्षद थे। उन्होंने पारंपरिक वर्ण व्यवस्था के स्थान पर सामाजिक कार्य के आधार पर यह वर्गीकरण किया। उनके अनुसार कृषक समाज का सबसे बड़ा वर्ग थे, जबकि पार्षद सबसे छोटा परंतु प्रभावशाली वर्ग था। यह विभाजन मौर्यकालीन व्यावसायिक विविधता और सामाजिक जटिलता का एक महत्वपूर्ण संकेत देता है।

32. (2) इंडिका की मूल पांडुलिपि आज भी सुरक्षित है।
मेगस्थनीज चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में एक यूनानी राजदूत था। उसकी प्रसिद्ध कृति 'इंडिका' की मूल पांडुलिपि समय के साथ नष्ट हो गई है। आज हमें इस महत्वपूर्ण ग्रंथ की जानकारी केवल बाद के लेखकों के उद्धरणों के माध्यम से मिलती है। मेगस्थनीज ने भारत में दास प्रथा की अनुपस्थिति और चोरी की दुर्लभता जैसे महत्वपूर्ण विवरण दिए थे। हालांकि दास प्रथा के बारे में उनका विचार संभवतः यूनानी दासता की तुलना में भारतीय परिस्थितियों के भिन्न होने के कारण था।

33. (1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
मेगस्थनीज के वर्गीकरण में 'दार्शनिक' वर्ग में ब्राह्मण और तपस्वी सम्मिलित थे, जिन्हें समाज में उच्च सम्मान प्राप्त था। 'कृषक' सबसे बड़ी संख्या वाला वर्ग था जिन्हें सैन्य सेवा से छूट मिली हुई थी। 'निरीक्षक' वे गुप्तचर अधिकारी थे जो राज्य की गतिविधियों पर दृष्टि रखते और सीधे राजा को सूचना देते थे। 'पार्षद' सबसे छोटा वर्ग था जिसमें उच्च प्रशासनिक अधिकारी सम्मिलित थे। यह स्पष्ट करता है कि मौर्य समाज में श्रम विभाजन और प्रशासनिक संरचना काफी विकसित थी।

34. (2) कथन I गलत है और कथन II सही है।
मेगस्थनीज ने भारतीय समाज को यूनानी दृष्टिकोण से देखा, इसलिए वह वर्ण व्यवस्था की जटिलताओं को पूरी तरह समझने में विफल रहा और समाज को व्यवसायों में वर्गीकृत कर दिया। हालांकि, उसका यह उल्लेख अत्यंत रोचक है कि सुदूर दक्षिण के पांड्य राज्य में महिलाओं का शासन था। उन्होंने यह भी बताया कि पांड्य राज्य अपने बहुमूल्य मोतियों हेतु विश्व प्रसिद्ध था। यह दक्षिण भारत के साथ मौर्योत्तर काल के प्रारंभिक संपर्कों और वहां की अद्वितीय सामाजिक संरचना को दर्शाता है।

35. (1) केवल I, III और V
मेगस्थनीज ने दावा किया कि भारत में प्रचुरता के कारण कभी अकाल नहीं पड़ता और लोग घरों में ताले नहीं लगाते। उन्होंने भारतीय देवताओं की पहचान यूनानी देवताओं डायोनिसस और हेराक्लेस से की थी। उन्होंने यह भी लिखा कि भारतीय सैनिक ऊंचे कद के होते थे और लंबे धनुषों का प्रयोग करते थे। हालांकि, उनका यह दावा गलत था कि भारतीयों को लेखन कला का ज्ञान नहीं था, क्योंकि कौटिल्य के अर्थशास्त्र में लिखित राजकीय अभिलेखों और अनुबंधों का स्पष्ट उल्लेख मिलता है।

NODIA

36. (4) पण (या कार्षापण)
मौर्य काल में प्रचलित मुख्य चांदी का मानक सिक्का 'पण' कहलाता था। इन सिक्कों को 'आहत सिक्के' भी कहा जाता था क्योंकि इन पर ठप्पा लगाकर सूर्य, चंद्र, पर्वत और वृक्ष जैसे प्रतीकों को अंकित किया जाता था। पण मौर्य प्रशासन की प्रमुख मुद्रा थी जिसका उपयोग राजकीय वेतन भुगतान और व्यापारिक लेन-देन में व्यापक रूप से किया जाता था। सिक्कों की शुद्धता और वजन का कड़ा नियंत्रण 'रुपदर्शक' नामक अधिकारी द्वारा किया जाता था, जो सुदृढ़ अर्थव्यवस्था का परिचायक है।

37. (3) खनन और धातु कर्म राज्य के एकाधिकार थे, जिसकी देखरेख 'अकराध्यक्ष' करता था।
मौर्य साम्राज्य में खनन और धातु कर्म पर राज्य का पूर्ण एकाधिकार था, जिसका प्रबंधन 'अकराध्यक्ष' द्वारा किया जाता था। राज्य ने कृषि, सिंचाई और व्यापारिक गतिविधियों में भी सक्रिय रूप से भाग लिया। आंतरिक और विदेशी व्यापार पर कड़ा नियंत्रण था और विभिन्न प्रकार के पथ-कर वसूले जाते थे। मौर्य अर्थव्यवस्था एक विकसित मौद्रिक प्रणाली पर आधारित थी जिसमें सिक्कों का व्यापक उपयोग होता था। राज्य ने व्यावसायिक गतिविधियों से दूरी नहीं बनाई, बल्कि उन्हें पूरी तरह से विनियमित किया।

38. (1) I, II, IV, III
मौर्य प्रशासन में सबसे बड़ी क्षेत्रीय इकाई जनपद थी। इसके नीचे 'आहार' या 'विषय' होते थे जो आधुनिक जिलों के समान थे। प्रशासनिक सुविधा हेतु इन्हें और छोटी इकाइयों में विभाजित किया गया था, जैसे 800 गांवों के समूह को 'स्थानीय' कहा जाता था। इसके पश्चात द्रोणमुख और संग्रहण जैसी छोटी इकाइयां आती थीं। प्रशासन की सबसे छोटी और मूलभूत इकाई 'ग्राम' थी जिसका प्रमुख 'ग्रामिक' कहलाता था। यह पदानुक्रम विशाल साम्राज्य के प्रभावी नियंत्रण को सुनिश्चित करता था।

39. (4) विष्टि
'भाग' मुख्य रूप से कृषि उपज का वह हिस्सा था जो किसान राज्य को कर के रूप में देते थे। 'बलि' एक प्रकार का अतिरिक्त कर था, और 'हिरण्य' नकद रूप में लिया जाने वाला कर था। इसके विपरीत, 'विष्टि' कोई वित्तीय कर नहीं था, बल्कि यह

'बेगार' या अनिवार्य श्रम था जो प्रजा को बिना किसी भुगतान के राज्य हेतु करना पड़ता था। अतः, 'विष्टि' अन्य तीनों राजस्व करों से अपनी प्रकृति में पूरी तरह भिन्न होने के कारण इस समूह में विषम है।

40. (1) शिल्पकारों और व्यापारियों के संघ
मौर्य काल में 'श्रेणी' शब्द शिल्पकारों और व्यापारियों के संगठित समूहों या संघों हेतु प्रयुक्त होता था। प्रत्येक विशिष्ट व्यवसाय की अपनी अलग श्रेणी होती थी जो अपने सदस्यों के हितों की रक्षा और गुणवत्ता नियंत्रण का कार्य करती थी। ये श्रेणियाँ स्वायत्त थीं और उनके अपने नियम-कानून होते थे जिन्हें राज्य भी मान्यता देता था। समय के साथ ये श्रेणियाँ बैंकिंग संस्थानों के रूप में भी विकसित हुईं, जिससे आंतरिक व्यापार और शहरी अर्थव्यवस्था को अत्यधिक बल मिला।

41. (3) अशोक की बौद्ध समर्थक नीतियां जिनसे ब्राह्मणों में तीव्र प्रतिक्रिया हुई।
इतिहासकार हरप्रसाद शास्त्री का तर्क है कि मौर्य साम्राज्य के पतन का मुख्य कारण अशोक की बौद्ध धर्म के प्रति अत्यधिक झुकाव वाली नीतियां थीं। उनके अनुसार, पशु बलि पर प्रतिबंध और विशेष अधिकारियों की नियुक्ति जैसी गतिविधियों ने ब्राह्मणों के विशेषाधिकारों और सामाजिक प्रभाव को कम कर दिया। इसके परिणामस्वरूप ब्राह्मणों में तीव्र असंतोष उत्पन्न हुआ, जिसकी परिणति मौर्य सेनापति पुष्यमित्र शुंग द्वारा अंतिम मौर्य राजा की हत्या और शुंग वंश की स्थापना के रूप में हुई।

42. (1) अशोक द्वारा सेना का पूर्णतः विसर्जन कर देना।
आधुनिक इतिहासकार मौर्य साम्राज्य के पतन हेतु नौकरशाही का अत्यधिक केंद्रीकृत होना, कमजोर उत्तराधिकारी और आर्थिक संकट जैसे वास्तविक कारकों को उत्तरदायी मानते हैं। हालांकि, यह धारणा गलत है कि अशोक ने कलिंग युद्ध के उपरांत अपनी विशाल सेना को पूरी तरह विसर्जित कर दिया था। अशोक ने शांति की नीति अवश्य अपनाई, परंतु साम्राज्य की सुरक्षा हेतु उन्होंने सेना को बनाए रखा। सेना का पूर्ण विसर्जन कभी नहीं हुआ, बल्कि पतन का कारण प्रशासनिक दुर्बलता थी।

43. (1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
हरप्रसाद शास्त्री ने ब्राह्मणवादी प्रतिक्रिया को पतन का मुख्य कारण माना। एच.सी. रायचौधरी के अनुसार अशोक की अत्यधिक शांतिवादी नीतियों ने सैन्य शक्ति को कमजोर कर दिया, जिससे विदेशी आक्रमणों का मार्ग प्रशस्त हुआ। डी.डी. कोसांबी ने तर्क दिया कि साम्राज्य के पतन का मूल कारण गहरा आर्थिक संकट था। रोमिला थापर का मानना है कि अत्यधिक केंद्रीकृत प्रशासनिक ढांचा और अयोग्य उत्तराधिकारी इस विशाल साम्राज्य को बिखरने से नहीं बचा सके। यह विविधतापूर्ण विश्लेषण पतन की जटिलता स्पष्ट करता है।

44. (2) बृहद्रथ
मौर्य वंश का अंतिम सम्राट बृहद्रथ था। उसके शासनकाल तक विशाल मौर्य साम्राज्य काफी संकुचित हो गया था और प्रशासनिक नियंत्रण अत्यंत कमजोर पड़ चुका था। 185 ईसा पूर्व में एक सैन्य निरीक्षण के दौरान उसके अपने ही सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने उसकी हत्या कर दी। इस हिंसक घटना ने मौर्य वंश के लगभग 137 वर्षों के महान शासन का अंत कर दिया और मगध के सिंहासन पर शुंग वंश की स्थापना हुई। यह भारत के प्राचीन इतिहास में एक महत्वपूर्ण संक्रमण था।

45. (1) केवल I और II
मौर्य साम्राज्य के पतन के उपरांत मगध का पूर्वी भाग पुष्यमित्र शुंग के नियंत्रण में आ गया, जिससे शुंग वंश की शुरुआत हुई। केंद्रीय शक्ति के कमजोर होने से उत्तर-पश्चिमी सीमा असुरक्षित हो गई, जिसके परिणामस्वरूप हिंद-यवन आक्रमणकारियों ने भारत में प्रवेश किया। हालांकि, सातवाहनों ने पाटलिपुत्र में नहीं, बल्कि दक्कन और मध्य भारत में अपनी स्वतंत्र सत्ता स्थापित की थी। मगध में शुंगों के पश्चात कण्व वंश आया था। अतः तीसरा कथन ऐतिहासिक रूप से पूर्णतः असत्य है।

46. (4) अश्वमेध
अयोध्या अभिलेख से प्राप्त जानकारी के अनुसार, पुष्यमित्र शुंग ने दो बार अश्वमेध यज्ञ संपन्न किए थे। यह अनुष्ठान ब्राह्मण धर्म के पुनरुत्थान और मौर्यों की अहिंसात्मक नीति के उपरांत पुनः क्षत्रिय शौर्य की स्थापना का प्रतीक था। इन यज्ञों के पुरोहित संभवतः महर्षि पतंजलि थे। अश्वमेध यज्ञ का आयोजन पुष्यमित्र की राजनीतिक सर्वोच्चता और विदेशी आक्रमणकारियों, विशेष रूप से यूनानियों के विरुद्ध उनकी सैन्य सफलताओं को प्रमाणित करने हेतु किया गया था। यह उनकी शक्ति का परिचायक था।

47. (1) पतंजलि - महाभाष्य
शुंग काल संस्कृत साहित्य के पुनरुत्थान का समय था। महर्षि पतंजलि इसी काल के महान विद्वान थे जिन्होंने पाणिनि की अष्टाध्यायी पर 'महाभाष्य' नामक प्रसिद्ध टीका लिखी। कालिदास गुप्त काल के कवि थे और बाणभट्ट सम्राट हर्ष के दरबारी थे। पतंजलि को पुष्यमित्र शुंग का समकालीन माना जाता है और उनके कार्यों ने व्याकरण के साथ-साथ हिंदू दर्शन और कर्मकांडों के सुदृढ़ीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। यह बौद्ध धर्म के प्रभाव के बाद वैदिक संस्कृति की वापसी थी।

48. (3) A सही है लेकिन R गलत है।
बौद्ध ग्रंथ 'दिव्यावदान' पुष्यमित्र शुंग को बौद्धों के संहारक के रूप में चित्रित करते हैं। हालांकि, पुरातात्विक साक्ष्य इस उग्र दावे की पुष्टि नहीं करते। इसके विपरीत, शुंग काल के दौरान ही सांची और भरहुत के स्तूपों का विस्तार हुआ और उन पर पत्थर की वेदिकाएं बनाई गईं। यह स्पष्ट संकेत देता है कि पुष्यमित्र स्वयं ब्राह्मण धर्मावलंबी होने के बावजूद बौद्ध धर्म के प्रति पूरी तरह शत्रुतापूर्ण नहीं थे और उनके शासन में बौद्ध केंद्रों का विकास निरंतर जारी रहा था।

49. (1) कथन I सही है और कथन II गलत है।
कण्व वंश की स्थापना वासुदेव ने अंतिम शुंग राजा देवभूति की हत्या करके की थी। यह वंश शुंगों की भाँति ही ब्राह्मण मूल का था। हालांकि, कण्वों का शासनकाल ऐतिहासिक रूप

Downloaded from www.pdf.tube

से संक्षिप्त था और उनका अधिकार क्षेत्र मुख्य रूप से मगध के आसपास के क्षेत्रों तक ही सीमित था। यह कहना गलत है कि उनका शासन संपूर्ण दक्कन प्रायद्वीप तक फैला था, क्योंकि उस समय दक्कन में सातवाहन शक्ति का उदय हो रहा था। लगभग 45 वर्षों के उपरांत उनका अंत हुआ।

50. (3) केवल I, II और III
शुंगों ने पाटलिपुत्र को अपनी मुख्य राजधानी बनाए रखा, परंतु विदिशा उनके साम्राज्य का एक अन्य महत्वपूर्ण राजनीतिक केंद्र बनकर उभरा। इसी काल में हिंद-यवन शासक मिनांडर ने उत्तर भारत पर आक्रमण किया था। कालिदास का प्रसिद्ध नाटक 'मालविकाग्निमित्रम्' शुंग राजकुमार अग्निमित्र के जीवन पर आधारित है। हालांकि, शुंग काल में संस्कृत को राजदरबारी भाषा के रूप में पुनः प्रतिष्ठित किया गया, न कि प्राकृत को। अतः चौथा कथन गलत है। संस्कृत का पुनरुद्धार इस काल की मुख्य विशेषता थी।

51. (3) यूची
कुषाण वंश मूलतः मध्य एशिया की 'यूची' जनजाति की पांच शाखाओं में से एक था। चीन की सीमाओं के समीप से शियोंगनू जनजाति द्वारा खदेड़े जाने के उपरांत ये पश्चिम की ओर बढ़े और अंततः बैक्ट्रिया में बस गए। वहाँ से कुजुल कडफिसेस के नेतृत्व में इन्होंने भारत की ओर विस्तार करना प्रारंभ किया। यूची जनजाति की इस शाखा ने न केवल एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की, बल्कि रेशम मार्ग के माध्यम से भारत को वैश्विक व्यापार और विभिन्न संस्कृतियों से जोड़ा।

52. (4) प्रारंभिक कुषाणों ने बिना किसी भारतीय प्रभाव के केवल यूनानी देवताओं वाले सिक्के जारी किए।
कुजुल कडफिसेस ने कुषाण सत्ता की नींव रखी और विम कडफिसेस ने शुद्ध स्वर्ण सिक्के जारी किए। कुषाणों ने मध्य एशिया और भारत के मध्य एक सांस्कृतिक सेतु का निर्माण किया। यह कहना गलत है कि उनके सिक्कों पर केवल यूनानी प्रभाव था। विम कडफिसेस के सिक्कों पर भगवान शिव और नंदी के चित्र मिलते हैं, जो स्पष्ट रूप से भारतीय धार्मिक प्रभाव को दर्शाते हैं। कुषाणों ने अपनी मुद्राओं में यूनानी, ईरानी और भारतीय तत्वों का अनूठा सम्मिश्रण किया था।

53. (1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
कुजुल कडफिसेस ने तांबे के सिक्के जारी किए और स्वयं को 'धम्मठिदा' कहा। विम कडफिसेस ने स्वर्ण मुद्राओं पर शिव और त्रिशूल को अंकित कर अपनी धार्मिक निष्ठा प्रदर्शित की। कनिष्क ने 78 ईस्वी में अपने राज्याभिषेक के अवसर पर शक संवत की शुरुआत की, जो आज भी भारत का राष्ट्रीय कैलेंडर है। वासुदेव इस वंश के अंतिम महान शासक थे, जिनका नाम हिंदू देवता के नाम पर होना कुषाणों के पूर्ण भारतीयकरण की प्रक्रिया को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

54. (2) तमिलकम
कुषाण साम्राज्य उत्तर-पश्चिम में बैक्ट्रिया से लेकर पूर्व में मथुरा और वाराणसी तक फैला हुआ था। उनके नियंत्रण में गांधार और मध्य एशिया के महत्वपूर्ण रणनीतिक व्यापारिक क्षेत्र भी सम्मिलित थे। हालांकि, दक्षिण भारत का सुदूर क्षेत्र, जिसे 'तमिलकम' कहा जाता है, कुषाणों के राजनीतिक नियंत्रण से बाहर था। वहाँ चेर, चोल और पांड्य जैसे तमिल राजवंशों का स्वतंत्र शासन था। कुषाणों का मुख्य केंद्र उत्तर भारत और रेशम मार्ग के आसपास के क्षेत्र ही रहे।

55. (2) केवल IV
कुषाणों ने मथुरा को अपनी दूसरी राजधानी बनाया और रेशम मार्ग पर नियंत्रण कर अत्यधिक आर्थिक समृद्धि प्राप्त की। उनके स्वर्ण सिक्के अपनी उच्च शुद्धता हेतु विख्यात थे। उनका साम्राज्य वर्तमान भारत, पाकिस्तान और मध्य एशिया तक विस्तृत था। यह कहना गलत है कि कनिष्क ने अन्य धर्मों का दमन किया। हालांकि वे बौद्ध धर्म के महान संरक्षक थे, परंतु उनके सिक्कों पर हिंदू, ईरानी और यूनानी देवताओं का चित्रण उनकी धार्मिक सहिष्णुता और समावेशी नीति का प्रमाण है।

56. (1) 78 ईस्वी
शक संवत का प्रारंभ 78 ईस्वी में हुआ था, जिसे महान कुषाण सम्राट कनिष्क के राज्यारोहण की ऐतिहासिक तिथि माना जाता है। यद्यपि इसे कनिष्क ने प्रारंभ किया था, परंतु बाद के समय में पश्चिमी क्षत्रपों द्वारा इसका लंबे समय तक उपयोग किए जाने के कारण इसे 'शक संवत' के नाम से जाना गया। यह संवत भारत के इतिहास में अत्यंत महत्वपूर्ण है और वर्तमान में भारत सरकार द्वारा इसे आधिकारिक राष्ट्रीय पंचांग के रूप में स्वीकार किया गया है।

57. (3) पुरुषपुर (पेशावर)
कनिष्क ने 'पुरुषपुर' को अपनी मुख्य राजधानी बनाया था। यह शहर अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण मध्य एशिया और भारतीय उपमहाद्वीप के मध्य व्यापार का एक प्रमुख केंद्र था। कनिष्क ने यहाँ एक विशाल बौद्ध स्तूप और विहार का निर्माण करवाया था, जो उस समय की वास्तुकला का अद्भुत उदाहरण था। पुरुषपुर शिक्षा, कला और बौद्ध दर्शन के प्रचार का एक वैश्विक केंद्र बनकर उभरा, जहाँ से शांति और धम्म का संदेश चीन और सुदूर पूर्व तक पहुँचा।

NODIA

58. (2) हिंद-यवन, शक, पहलव, कुषाण
मौर्यों के पतन के उपरांत उत्तर-पश्चिमी भारत पर विदेशी आक्रमणों का एक सिलसिला प्रारंभ हुआ। सर्वप्रथम बैक्टीरिया के हिंद-यवन आए, जिन्होंने सिक्कों पर राजाओं के नाम अंकित करने की प्रथा प्रारंभ की। उनके उपरांत मध्य एशिया से शक आए, जिन्होंने भारत के विभिन्न भागों में अपनी सत्ता स्थापित की। शकों के पश्चात पार्थियाई या पहलव आए, जिनमें गोंडोफर्नीस प्रमुख था। अंत में यूची जनजाति के कुषाणों ने भारत में एक विशाल और अत्यंत शक्तिशाली साम्राज्य की स्थापना की।

59. (4) स्वर्ण का भारी आगमन और उत्तर भारत में समृद्ध शहरी केंद्रों का विकास।
रेशम मार्ग पर नियंत्रण के कारण कुषाणों को मध्य एशिया से गुजरने वाले व्यापारियों से भारी कर वसूलने का अवसर मिला। इसके परिणामस्वरूप भारत में रोमन साम्राज्य से प्रचुर मात्रा में स्वर्ण का आगमन हुआ, जिससे अर्थव्यवस्था अत्यंत समृद्ध

हुई। इस धन ने उत्तर भारत में तक्षशिला और मथुरा जैसे कई नए शहरी केंद्रों के विकास और कला-साहित्य के राजकीय संरक्षण को बढ़ावा दिया। कुषाण काल को आर्थिक समृद्धि और अंतरराष्ट्रीय व्यापार के स्वर्ण युग के रूप में देखा जाता है।

60. (2) उसने कश्मीर में चौथी बौद्ध संगीति आयोजित की जिसमें ग्रंथों का संहिताकरण हुआ।
कनिष्क ने बौद्ध धर्म के इतिहास में एक अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने कश्मीर के कुंडलवन में चौथी बौद्ध संगीति का आयोजन किया, जिसकी अध्यक्षता वसुमित्र ने की थी। इस संगीति में बौद्ध ग्रंथों का संस्कृत में संपादन और 'विभाषा शास्त्र' जैसी महत्वपूर्ण टीकाएं लिखी गईं। इसी समय बौद्ध धर्म औपचारिक रूप से हीनयान और महायान संप्रदायों में विभाजित हो गया। कनिष्क ने महायान संप्रदाय को विशेष संरक्षण दिया और बुद्ध की मूर्तियों के निर्माण को प्रोत्साहित किया।

61. (3) इसमें बौद्ध विषयों को यूनानी-रोमन शैली के साथ जोड़ा गया था।
गांधार कला शैली को 'भारत-यूनानी' शैली के रूप में जाना जाता है। इस शैली की मुख्य विशेषता यह थी कि इसमें बौद्ध विषयों को विदेशी कलात्मक तकनीकों के साथ चित्रित किया गया था। इसमें बुद्ध को यूनानी देवता अपोलो के समान घुंघराले बालों, मांसल शरीर और रोमन टोगा जैसे वस्त्रों में दिखाया गया है। यह शैली मुख्य रूप से उत्तर-पश्चिम भारत में विकसित हुई और इसमें नीले-धूसर पत्थर का प्रयोग किया गया। यह कला सांस्कृतिक समन्वय का उत्कृष्ट उदाहरण है।

62. (4) यूनानी शारीरिक यथार्थवाद से गहराई से प्रभावित
मथुरा कला शैली पूर्णतः स्वदेशी थी और इसमें गांधार शैली की भाँति यूनानी शारीरिक यथार्थवाद का गहरा प्रभाव नहीं था। मथुरा के कलाकारों ने चित्तीदार लाल बलुआ पत्थर का प्रयोग किया और बुद्ध, जैन तीर्थंकरों तथा हिंदू देवी-देवताओं की प्रतिमाएं बनाईं। मथुरा शैली में बुद्ध को शारीरिक यथार्थवाद के स्थान पर आध्यात्मिक शांति, सुदृढ़ शरीर और प्रसन्न मुद्रा में चित्रित किया गया है। यह शैली धार्मिक समन्वय का उत्कृष्ट उदाहरण है जहाँ तीनों प्रमुख धर्मों को संरक्षण प्राप्त था।

63. (1) A-iii, B-i, C-ii
गांधार शैली में मुख्य रूप से नीले-धूसर शिस्ट पत्थर और बाद में 'स्टुको' का प्रयोग किया गया। मथुरा शैली अपनी अनूठी पहचान हेतु चित्तीदार लाल बलुआ पत्थर का उपयोग करती थी। अमरावती शैली, जो दक्षिण भारत की कृष्णा घाटी में विकसित हुई, अपनी विशिष्टता हेतु सफेद संगमरमर के उपयोग और बुद्ध के जीवन से जुड़ी कथाओं के सूक्ष्म उत्कीर्णन हेतु विख्यात है। ये तीनों शैलियाँ मौर्योत्तर काल की उत्कृष्ट सांस्कृतिक और कलात्मक विविधता को सुंदरता से प्रदर्शित करती हैं।

64. (2) अमरावती कला: बुद्ध को सदैव केवल प्रतीकात्मक रूप में ही दिखाया गया है।
शुंग और प्रारंभिक सातवाहन कला में बुद्ध को प्रतीकों जैसे चरण चिह्न या बोधि वृक्ष द्वारा दर्शाया गया था। हालांकि, यह कहना गलत है कि अमरावती कला में बुद्ध को केवल प्रतीकात्मक रूप में ही दिखाया गया। अमरावती शैली के परिपक्व चरण में बुद्ध को मानव रूप और प्रतीकात्मक रूप दोनों में चित्रित किया गया है। गांधार में वे यूनानी प्रभाव वाले हैं, जबकि मथुरा में वे भारतीय आदर्शों के अनुरूप बलिष्ठ और प्रसन्न मुद्रा में दिखाए गए हैं।

65. (3) केवल I और III
कुषाण काल में ही गांधार और मथुरा शैलियों के अंतर्गत बुद्ध को पहली बार प्रतीकों के स्थान पर मानव रूप में दर्शाया गया। गांधार शैली का मुख्य विषय बुद्ध का जीवन चरित्र और उनकी पूर्व जन्मों की जातक कथाएँ थीं। हालांकि, यह कथन गलत है कि मथुरा शैली ने हिंदू देवताओं को वर्जित किया था। वास्तव में, मथुरा शैली ने न केवल बुद्ध, बल्कि विष्णु, शिव और जैन तीर्थंकरों की प्रतिमाओं का निर्माण कर भारतीय मूर्तिशिल्प की मजबूत नींव रखी थी।

66. (1) सिमुक
सातवाहन वंश की स्थापना सिमुक ने लगभग प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व में की थी। उन्होंने कण्व वंश की सत्ता को समाप्त कर दक्कन और मध्य भारत में एक स्वतंत्र और शक्तिशाली राज्य की नींव रखी। सिमुक के उपरांत उनके भाई कृष्ण और फिर शातकर्णी प्रथम ने साम्राज्य का विस्तार किया। सातवाहनों को पुराणों में 'आंध्र' भी कहा गया है। यह राजवंश दक्षिण भारत में राजनीतिक स्थिरता लाने और मौर्यों के पश्चात एक सशक्त क्षेत्रीय शक्ति बनने हेतु प्रसिद्ध है।

67. (1) कथन I सही है और कथन II गलत है।
सातवाहन शासक, जैसे गौतमीपुत्र शातकर्णी, अपने नाम के साथ अपनी माताओं के नाम गर्व से जोड़ते थे। यह परंपरा उस समय के समाज में महिलाओं के उच्च सम्मान को दर्शाती है। हालांकि, यह समझना महत्वपूर्ण है कि सातवाहन राजसत्ता का उत्तराधिकार पितृसत्तात्मक ही था, जहाँ राजा का ज्येष्ठ पुत्र ही अगला शासक बनता था। मातृनामों का प्रयोग केवल एक विशिष्ट सांस्कृतिक परंपरा थी, न कि पूर्ण मातृसत्तात्मक शासन का प्रमाण।

68. (3) A सही है लेकिन R गलत है।
सातवाहन शासक ब्राह्मण धर्मावलंबी थे और उन्होंने अश्वमेध जैसे वैदिक यज्ञों को बड़े उत्साह से पुनर्जीवित किया। हालांकि, उन्होंने अन्य धर्मों के प्रति भी अत्यंत उदारता और सहिष्णुता प्रदर्शित की। उन्होंने न केवल ब्राह्मणों को भूमि दान दी, बल्कि बौद्ध भिक्षुओं को भी बड़ी संख्या में ग्राम दान दिए। उन्होंने कार्ला और नासिक जैसे प्रसिद्ध बौद्ध चैत्यों के निर्माण को संरक्षण दिया, न कि उन्हें नष्ट किया। अतः उनका शासन धार्मिक सद्भाव का काल था।

Click Here to Buy book on Amazon

69. (3) उसने शक शासक नहपान को पराजित कर सातवाहनों की प्रतिष्ठा पुनः स्थापित की।
गौतमीपुत्र शातकर्णी सातवाहन वंश के सबसे महान शासक थे। उन्होंने शक शासक नहपान को युद्ध में पराजित किया और क्षहरात वंश का अंत कर सातवाहनों की खोई हुई प्रतिष्ठा को पुनः स्थापित किया। इस विजय की पुष्टि जोगलथम्बी मुद्राभांड से होती है, जहाँ नहपान के सिक्कों को गौतमीपुत्र द्वारा दोबारा ढलवाया गया है। उन्हें 'एक ब्राह्मण' की उपाधि दी गई है। उन्होंने सातवाहन साम्राज्य को पुनर्जीवित कर उसे राजनीतिक ऊँचाइयों तक पहुँचाया था।

70. (1) केवल I, II और III
शातकर्णी प्रथम की उपलब्धियों का वर्णन नानाघाट अभिलेख में मिलता है। गौतमीपुत्र शातकर्णी की माता गौतमी बलश्री ने नासिक प्रशस्ति में उनकी महान विजयों का उल्लेख किया है। सातवाहनों ने आर्थिक गतिविधियों हेतु तांबे के साथ-साथ विशेष रूप से सीसा और पोटीन के सिक्कों का प्रचुर मात्रा में उपयोग किया। उन्होंने मौर्यों की प्रशासनिक व्यवस्था को जारी रखा और 'आहार' जैसी इकाइयों का उपयोग करना बंद नहीं किया था। अतः चौथा कथन ऐतिहासिक रूप से गलत है।

71. (4) सातवाहन
सातवाहन राजवंश भारतीय इतिहास में अपनी अनूठी मुद्रा प्रणाली हेतु विशेष रूप से प्रसिद्ध है। यद्यपि उन्होंने कुषाणों की भाँति स्वर्ण सिक्कों का प्रयोग नहीं किया, परंतु उन्होंने सीसा, तांबा, कांस्य और पोटीन के सिक्के बड़ी संख्या में जारी किए। सीसे के सिक्कों की प्रचुरता दक्कन में इस धातु की उपलब्धता और विदेशी व्यापार के प्रभाव को दर्शाती है। इन सिक्कों पर जहाज और चैत्य जैसे प्रतीकों का अंकन उनके समुद्री व्यापार और धार्मिक झुकाव की जानकारी देता है।

72. (1) मानसूनी हवाओं की खोज जिससे रोम के साथ व्यापार में वृद्धि हुई।
सातवाहन साम्राज्य की आर्थिक उन्नति का प्रमुख कारण हिंद महासागर में मानसूनी हवाओं की खोज थी। इससे अरब सागर को पार करना सुगम हो गया और रोम के साथ समुद्री व्यापार में भारी वृद्धि हुई। सातवाहनों ने पश्चिमी और पूर्वी दोनों तटों के महत्वपूर्ण बंदरगाहों पर नियंत्रण रखा, जिससे भारतीय मसालों और वस्त्रों के बदले रोम से प्रचुर मात्रा में स्वर्ण प्राप्त हुआ। इस समृद्ध व्यापार ने सातवाहन अर्थव्यवस्था को अत्यंत शक्तिशाली और नगरीकृत बना दिया था।

73. (1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
बेरीगाजा (भरुच) गुजरात में नर्मदा के मुहाने पर स्थित सातवाहन काल का सबसे महत्वपूर्ण बंदरगाह था। सोपारा महाराष्ट्र के कोंकण तट पर स्थित एक अन्य प्रमुख प्राचीन व्यापारिक केंद्र था। प्रतिष्ठान गोदावरी नदी के तट पर स्थित सातवाहनों की प्रसिद्ध राजधानी थी, जो व्यापार और संस्कृति का मुख्य केंद्र बनी। अमरावती आंध्र प्रदेश की कृष्णा घाटी में स्थित था, जो अपने भव्य बौद्ध स्तूप और उत्कृष्ट कला शैली हेतु इतिहास में विशेष स्थान रखता है।

74. (1) घोड़े
मौर्योत्तर काल में भारत और रोम के मध्य व्यापारिक संतुलन भारत के पक्ष में था। भारत से काली मिर्च, मलमल, रेशम, रत्न और मोती जैसे विलासिता के सामानों का भारी निर्यात किया जाता था। इसके विपरीत, घोड़ों का भारत से निर्यात नहीं होता था, बल्कि भारत स्वयं मध्य एशिया और अरब क्षेत्रों से अच्छी नस्ल के घोड़ों का आयात करता था। रोम से भारत मुख्य रूप से स्वर्ण मुद्राएं, मदिरा और कांच के बने सामान का आयात करता था।

NODIA

75. (1) केवल I, II, III और V
इस काल में व्यापारिक श्रेणियाँ अत्यंत शक्तिशाली हो गईं और उन्होंने बैंकिंग कार्य भी प्रारंभ किए। 'दक्षिणापथ' जैसे मार्गों ने उत्तर और दक्षिण भारत के व्यापार को जोड़ा। रोम के लेखक प्लिनी ने भारत द्वारा रोम का स्वर्ण सोख लेने पर गहरी चिंता व्यक्त की थी। श्रेणियों ने अपनी स्वयं की मुद्राएं भी जारी कीं। हालांकि, पश्चिमी तट के बंदरगाह मुख्य रूप से रोम के साथ व्यापार करते थे, चीन के साथ नहीं। अतः चौथा कथन ऐतिहासिक रूप से असत्य है।

76. (2) विशाखदत्त - मुद्राराक्षस
विशाखदत्त द्वारा रचित 'मुद्राराक्षस' मौर्य इतिहास को समझने का एक अत्यंत महत्वपूर्ण साहित्यिक स्रोत है। यद्यपि यह नाटक बाद के काल में लिखा गया था, परंतु यह चंद्रगुप्त मौर्य के उत्थान, चाणक्य की कूटनीतिक रणनीतियों और नंद वंश के विनाश की विस्तृत कथा प्रस्तुत करता है। कल्हण की राजतरंगिणी कश्मीर के इतिहास से संबंधित है। मुद्राराक्षस विशेष रूप से मौर्यों की राजनीतिक जटिलताओं और सत्ता प्राप्ति के ऐतिहासिक संघर्ष का जीवंत चित्रण करता है।

77. (3) इनके कारण राजनीतिक विकेंद्रीकरण और सामंतवाद का उदय हुआ।
सातवाहन काल में प्रारंभ हुई ब्राह्मणों और बौद्ध भिक्षुओं को कर-मुक्त भूमि दान देने की प्रथा के दूरगामी ऐतिहासिक परिणाम हुए। इन अनुदानों के साथ राज्य ने अपने प्रशासनिक और न्यायिक अधिकार भी दानदाताओं को सौंप दिए, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में केंद्र का नियंत्रण धीरे-धीरे कम होने लगा। इस प्रक्रिया ने भारत में राजनीतिक विकेंद्रीकरण और सामंतवाद के उदय की मजबूत नींव रखी। इसके कारण भविष्य में कई छोटे स्वतंत्र राज्यों का उदय हुआ और केंद्रीय सत्ता कमजोर हुई।

78. (1) II, IV, III, I
सातवाहन वंश का सही कालक्रम सिमुक से प्रारंभ होता है जिन्होंने वंश की स्थापना की। उनके उपरांत शातकर्णी प्रथम ने साम्राज्य का विस्तार किया और अश्वमेध यज्ञ किए। एक लंबे अंतराल के पश्चात, गौतमीपुत्र शातकर्णी ने द्वितीय शताब्दी ईस्वी में वंश की शक्ति को पुनः स्थापित किया। यज्ञ श्री शातकर्णी इस वंश के अंतिम महान शासक थे, जिनके सिक्कों पर जहाज का चित्र उनके समुद्री व्यापार और नौसैनिक शक्ति के प्रति लगाव को सुंदर ढंग से प्रदर्शित करता है।

79. (3) दोनों कथन सही हैं।
शक शासक रुद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख भारतीय इतिहास का प्रथम ऐसा प्रमुख शिलालेख है जो शुद्ध संस्कृत भाषा में लिखा गया है। यह अभिलेख अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें सुदर्शन झील के निर्माण का इतिहास मिलता है, जिसे मूल रुप से चंद्रगुप्त मौर्य के समय बनवाया गया था। अभिलेख में अशोक के समय इसमें से नहरें निकालने और रुद्रदामन द्वारा बिना किसी अतिरिक्त कर के इसकी मरम्मत करवाने का विवरण है, जो राजा के लोक कल्याणकारी स्वरुप को दर्शाता है।

80. (2) आक्रमणकारियों का भारतीय समाज में आत्मसातीकरण और एक मिश्रित संस्कृति का विकास।
मौर्योत्तर काल के विदेशी आक्रमणकारियों ने भारतीय संस्कृति को नष्ट नहीं किया, बल्कि वे स्वयं भारतीय समाज और धर्म में पूरी तरह समाहित हो गए। उन्होंने बौद्ध और हिंदू धर्म को अपनाया और अपनी कला तकनीकों को भारतीय विषयों के साथ कुशलता से जोड़ा। इसके परिणामस्वरुप गांधार कला जैसी एक समृद्ध मिश्रित संस्कृति का उदय हुआ। इन विदेशी समूहों ने भारत को वैश्विक व्यापार से जोड़ा और भारतीय समाज के लचीलेपन और सांस्कृतिक आत्मसातीकरण की क्षमता को सिद्ध किया।

www.nodia.in

Downloaded from www.pdf.tube

अध्याय 05
गुप्त साम्राज्य एवं गुप्तोत्तर काल

1. निम्नलिखित गुप्त शासकों में से कौन 'महाराजाधिराज' की राजकीय उपाधि धारण करने वाला पहला शासक था और जिसने अपने, अपनी रानी और लिच्छवि गणराज्य के संयुक्त नामों से सिक्के जारी किए थे?
(1) श्री गुप्त
(2) चंद्रगुप्त प्रथम
(3) घटोत्कच
(4) समुद्रगुप्त
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

2. निम्नलिखित में से कौन सा कथन प्रयाग प्रशस्ति (इलाहाबाद स्तंभ लेख) की प्रकृति का सही वर्णन करता है?
(1) यह हरिषेण द्वारा रचित एक प्रशस्ति है जिसमें समुद्रगुप्त की सैन्य विजयों का विवरण दिया गया है।
(2) यह अशोक द्वारा जारी किया गया एक राजकीय आदेश है जो पशु बलि पर कड़ाई से रोक लगाता है।
(3) यह चंद्रगुप्त द्वितीय द्वारा दिए गए भूमि दान के संबंध में एक विस्तृत आदेश है।
(4) यह स्कंदगुप्त द्वारा लागू किए गए प्रशासनिक सुधारों की प्रशंसा करने वाली एक स्तुति है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

3. चंद्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) उसने पश्चिमी भारत के शक क्षत्रपों को हराया और गुजरात तथा मालवा को अपने साम्राज्य में मिला लिया।
(2) उसने उज्जैन को गुप्त साम्राज्य की दूसरी राजधानी बनाया।
(3) वह दैनिक लेन-देन के लिए व्यापक रूप से तांबे के सिक्के जारी करने वाला पहला गुप्त शासक था।
(4) उसका दरबार 'नवरत्न' के रूप में जाने जाने वाले विशिष्ट विद्वानों और कलाकारों के समूह से सुशोभित था।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

4. गुप्तकालीन भारत के बारे में फाह्यान के विवरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उसने मुख्य रूप से प्रामाणिक बौद्ध ग्रंथों को प्राप्त करने के लिए चंद्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल के दौरान भारत की यात्रा की थी।
II. उसने उल्लेख किया कि चंडाल मुख्य बस्तियों के बाहर रहते थे और उनके साथ अस्पृश्यों जैसा व्यवहार किया जाता था।
III. उसने केंद्रीय गुप्त सरकार की जटिल राजनीतिक और प्रशासनिक संरचना का विस्तृत विवरण प्रदान किया।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

5. गुप्त प्रशासन के संदर्भ में, 'उपरिक' शब्द निम्नलिखित में से किसे संदर्भित करता है?
(1) ग्राम परिषद का वंशानुगत मुखिया जो स्थानीय विवादों के समाधान के लिए उत्तरदायी था
(2) सीमा सुरक्षा और सेना की आपूर्ति का प्रभारी मुख्य सैन्य कमांडर
(3) 'भुक्ति' के प्रशासन के लिए नियुक्त प्रांतीय गवर्नर
(4) केंद्रीय राजकोष के प्रबंधन के लिए उत्तरदायी मुख्य राजस्व संग्रहकर्ता
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

NODIA

6. गुप्त काल के दौरान भूमि वर्गीकरण के लिए उपयोग की जाने वाली शब्दावली के संबंध में गलत युग्म की पहचान कीजिए:
(1) क्षेत्र - खेती योग्य भूमि
(2) अप्रहत - चरागाह भूमि
(3) खिल - बंजर भूमि
(4) वस्ति - निवास योग्य भूमि
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

7. गुप्तकालीन साहित्य के संबंध में सूची-I (साहित्यिक कृति) को सूची-II (लेखक) के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: साहित्यिक कृति
A. मुद्राराक्षस
B. मृच्छकटिकम्
C. किरातार्जुनीयम्
D. ऋतुसंहार
सूची II: लेखक
i. कालिदास
ii. भारवि
iii. शूद्रक
iv. विशाखदत्त
निम्नलिखित में से कौन सा मेल सही है?
(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(3) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i

(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

8. निम्नलिखित सभी विद्वान गुप्त और गुप्तोत्तर काल के दौरान गणित और खगोल विज्ञान की प्रगति से निकटता से जुड़े हैं, सिवाय:
(1) चरक
(2) आर्यभट्ट
(3) वराहमिहिर
(4) ब्रह्मगुप्त
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

9. गुप्त काल की कला और स्थापत्य के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. सारनाथ कला शैली चुनार बलुआ पत्थर से तराशी गई बुद्ध की बैठी हुई मूर्तियों के लिए प्रसिद्ध है।
II. देवगढ़ का दशावतार मंदिर पंचायतन शैली के मंदिर का एक प्रारंभिक उदाहरण है।
III. अजंता के भित्ति चित्र विशेष रूप से रामायण और महाभारत के विषयों को दर्शाते हैं।
IV. शैलकृत गुफाओं से संरचनात्मक मंदिरों की ओर संक्रमण इस युग के दौरान महत्वपूर्ण रूप से शुरु हुआ।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) I, II और III
(2) I, II और IV
(3) II, III और IV
(4) I, III और IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

10. पांचवीं शताब्दी ईस्वी के उत्तरार्ध में हूणों के बार-बार होने वाले आक्रमणों का मुख्य परिणाम निम्नलिखित में से क्या था?
(1) स्थलीय व्यापार मार्गों में व्यवधान और राजकोष पर आर्थिक भार
(2) मध्य एशिया के केंद्र स्थल तक गुप्त साम्राज्य का सफल विस्तार
(3) भारतीय उपमहाद्वीप से बौद्ध धर्म का पूर्ण और स्थायी उन्मूलन
(4) पूरे उत्तर भारत में एक सुदृढ़ केंद्रीकृत सैन्य प्रशासन की स्थापना
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

11. निम्नलिखित में से कौन सी घटना हर्ष के सैन्य अभियानों का हिस्सा नहीं थी?
(1) वल्लभी के शासक के विरुद्ध सफल और रणनीतिक सैन्य अभियान
(2) मगध और शशांक के क्षेत्रों पर विजय और विलय
(3) ओडिशा (उड्र और कंगोडा) के क्षेत्रों पर प्रभुत्व स्थापित करने का अभियान
(4) नर्मदा तट पर चालुक्य राजा पुलकेशिन द्वितीय पर निर्णायक विजय
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

12. निम्नलिखित में से कौन पुष्यभूति वंश के शासकों के सही कालानुक्रमिक क्रम को दर्शाता है?
(1) प्रभाकरवर्धन, राज्यवर्धन, हर्षवर्धन, आदित्यवर्धन
(2) आदित्यवर्धन, प्रभाकरवर्धन, राज्यवर्धन, हर्षवर्धन
(3) नरवर्धन, आदित्यवर्धन, हर्षवर्धन, राज्यवर्धन
(4) राज्यवर्धन, आदित्यवर्धन, प्रभाकरवर्धन, हर्षवर्धन
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

13. हर्षवर्धन द्वारा आयोजित विशाल सभाओं के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन तथ्यात्मक रूप से सही है?
(1) प्रयाग सभा प्रत्येक वर्ष विशेष रूप से बौद्ध भिक्षुओं के बीच धन वितरित करने के लिए आयोजित की जाती थी।
(2) हर्ष ने अपनी सभाओं का आयोजन मुख्य रूप से दक्षिणी राज्यों के विरुद्ध सैन्य रणनीति बनाने के लिए किया था।
(3) कन्नौज सभा ने ह्वेनसांग को सम्मानित किया और महायान बौद्ध धर्म को बढ़ावा दिया।
(4) इन सभाओं की विशेषता ब्राह्मण विद्वानों का पूर्ण निष्कासन था।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

14. हर्ष के शासनकाल के दौरान प्रशासन और अर्थव्यवस्था के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. साम्राज्य को भुक्तियों, विषयों और ग्रामों में विभाजित किया गया था।
II. भू-राजस्व राज्य की आय का मुख्य स्रोत था, जो सामान्यतः उपज का छठा हिस्सा लिया जाता था।
III. हर्ष ने सामंती तत्वों से पूरी तरह मुक्त एक अत्यधिक केंद्रीकृत नौकरशाही तंत्र स्थापित किया।
IV. उच्च पदस्थ अधिकारियों और राज्य के कर्मचारियों को प्रायः नकद वेतन के बजाय भूमि अनुदान के माध्यम से भुगतान किया जाता था।
V. इस अवधि में नियमित व्यावसायिक लेन-देने के लिए सिक्कों के उपयोग में अत्यधिक गिरावट देखी गई।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) I और II
(2) केवल III
(3) IV और V
(4) I, II और III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

15. गुप्त साम्राज्य के पतन के दौरान निम्नलिखित में से किस क्षेत्रीय राजवंश ने सौराष्ट्र में वल्लभी को अपनी राजधानी बनाकर स्वयं को स्थापित किया था?
(1) मैत्रक
(2) मौखरि
(3) वाकाटक
(4) पुष्यभूति
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

Click Here to Buy book on Amazon

16. चंद्रगुप्त प्रथम द्वारा किस शक्तिशाली वंश के साथ स्थापित वैवाहिक गठबंधन ने प्रारंभिक गुप्तों की राजनीतिक स्थिति को अत्यंत सुदृढ़ कर दिया था?
(1) वाकाटक
(2) लिच्छवि
(3) नाग
(4) मौखरि
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

17. प्रयाग प्रशस्ति के आधार पर सूची-I (समुद्रगुप्त की नीति) को सूची-II (प्रभावित क्षेत्र/शासक) के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: समुद्रगुप्त की नीति
A. प्रसभोद्धरण (बलपूर्वक उन्मूलन)
B. ग्रहण-मोक्षानुग्रह (बंदी बनाना और मुक्त करना)
C. सर्वकरदान (सभी प्रकार के कर देना)
D. कन्योपायनदान (कन्याओं का उपहार देना)
सूची II: प्रभावित क्षेत्र/शासक
i. कामरूप और नेपाल जैसे सीमावर्ती राज्य
ii. देवपुत्र शाही शाहानुशाही जैसे विदेशी शासक
iii. दक्षिणापथ (दक्षिण भारत) के शासक
iv. आर्यावर्त (उत्तर भारत) के शासक
निम्नलिखित में से कौन सा मेल सही है?
(1) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(2) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(3) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(4) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

18. कौन सा कथन चंद्रगुप्त द्वितीय के वैवाहिक गठबंधनों के परिणाम की सही पहचान करता है?
(1) उसने अपनी पुत्री प्रभावतीगुप्ता का विवाह वाकाटक राजा रुद्रसेन द्वितीय से किया।
(2) उसने मगध की महत्वपूर्ण पूर्वी सीमाओं को सुरक्षित करने के लिए एक लिच्छवि राजकुमारी से विवाह किया।
(3) उसने अरब सागर में नौसैनिक श्रेष्ठता प्राप्त करने के लिए कदंब राजवंश के साथ विवाह संबंध स्थापित किया।
(4) उसने उत्तर-पश्चिमी मैदानों में हूणों के आक्रमण को रोकने के लिए एक हूण राजकुमारी से विवाह किया।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

19. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): फाह्यान का यात्रा वृत्तांत गुप्त साम्राज्य के राजनीतिक इतिहास और शासक सम्राट के बारे में अत्यंत सीमित जानकारी प्रदान करता है।
कारण (R): फाह्यान मुख्य रूप से एक चीनी बौद्ध तीर्थयात्री था जिसका मुख्य उद्देश्य बौद्ध तीर्थस्थलों के दर्शन करना और प्रामाणिक विनय पिटक ग्रंथों को एकत्र करना था।
निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

20. गुप्त साम्राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था में, 'पुस्तपाल' मुख्य रूप से किस रूप में कार्य करता था?
(1) सभी प्रमुख राजकीय संरचनाओं का प्रभारी मुख्य वास्तुकार
(2) हस्ति सेना और भारी पैदल सेना का मुख्य कमांडर
(3) राजकीय चिकित्सक जो राजपरिवार के स्वास्थ्य का विवरण रखता था
(4) भूमि लेन-देन रजिस्टरों का विवरण रखने वाला अधिकारी
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

21. गुप्त काल में अधिष्ठान अधिकरण (नगर प्रशासन बोर्ड) के सदस्यों के संबंध में गलत युग्म की पहचान कीजिए:
(1) नगरश्रेष्ठी - नगर के व्यापारियों का प्रमुख
(2) प्रथमकुलिक - शिल्पकार समुदाय का प्रमुख
(3) सार्थवाह - शिल्पकार श्रेणियों का मुख्य प्रतिनिधि
(4) प्रथमकायस्थ - लिपिकों का प्रमुख
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

22. निम्नलिखित प्राचीन भारतीय खगोलविदों और गणितज्ञों पर विचार कीजिए:
I. ब्रह्मगुप्त
II. आर्यभट्ट
III. वराहमिहिर
IV. भास्कराचार्य
निम्नलिखित में से कौन उनके कालखंड का सही कालानुक्रमिक क्रम दर्शाता है?
(1) II, III, I, IV
(2) III, II, IV, I
(3) II, I, III, IV
(4) I, II, III, IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

23. गुप्त भू-राजस्व प्रशासन के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन सा शब्द भिन्न है?
(1) उद्रंग
(2) उपरिकर
(3) हिरण्य
(4) संधि विग्रहिक
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

24. गुप्त काल की बुद्ध की सारनाथ प्रतिमा के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह बुद्ध को 'धर्मचक्रप्रवर्तन मुद्रा' में दर्शाती है।
II. इसकी विशेषता कंधों को ढकने वाले स्पष्ट सिलवटों वाले भारी और उभरे हुए वस्त्र हैं।
III. बुद्ध के सिर के चारों ओर का प्रभामंडल पुष्प आकृतियों

Downloaded from www.pdf.tube

से अत्यधिक अलंकृत है।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

25. गुप्तोत्तर काल के दौरान पाटलिपुत्र से कन्नौज की ओर महत्व का स्थानांतरण मुख्य रूप से किसका परिणाम था?

(1) गंगा नदी का सूखना, जिससे पाटलिपुत्र निवास के अयोग्य हो गया
(2) एक भूकंप जिसने मगध की पुरानी राजधानी को पूरी तरह से नष्ट कर दिया
(3) दोआब व्यापार मार्गों पर नियंत्रण और उत्तर-पश्चिमी आक्रमणों के विरुद्ध रक्षा का बढ़ता महत्व
(4) अंतिम गुप्त राजा का एक प्रत्यक्ष आदेश जिसमें बड़े पैमाने पर जनसंख्या स्थानांतरण का निर्देश दिया गया था
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

26. बाणभट्ट के 'हर्षचरित' के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?

(1) यह हर्ष के जीवन और उत्थान का विवरण देने वाली पहली ऐतिहासिक संस्कृत जीवनी है।
(2) इसे ह्वेनसांग द्वारा चीनी भाषा में लिखा गया था और बाद में हर्ष द्वारा संस्कृत में अनुवाद किया गया था।
(3) यह विशेष रूप से ग्राम सीमाओं के संबंध में प्रशासनिक और विधिक नियमों पर केंद्रित है।
(4) यह पुलकेशिन द्वितीय के विरुद्ध हर्ष के सफल दक्षिणी अभियान का विस्तृत विवरण प्रदान करता है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

27. 7वीं शताब्दी में सामाजिक और आर्थिक स्थितियों के संबंध में सूची-I (ह्वेनसांग के वृत्तांत का शब्द) को सूची-II (अर्थ) के साथ सुमेलित कीजिए:

सूची I: ह्वेनसांग के वृत्तांत का शब्द

A. शूद्र
B. चंडाल
C. कौटुम्ब
D. श्रेष्ठी

सूची II: अर्थ

i. कृषक
ii. धनी व्यापारी
iii. कस्बों के बाहर रहने वाले बहिष्कृत लोग
iv. गृहस्थ/पारिवारिक इकाई

निम्नलिखित में से कौन सा मेल सही है?

(1) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(2) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(3) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(4) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

28. निम्नलिखित में से कौन सा नाटक ऐतिहासिक रूप से स्वयं हर्षवर्धन द्वारा रचित माना जाता है?

(1) मालतीमाधव
(2) नागानंद
(3) मत्तविलास प्रहसन
(4) उत्तररामचरित
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

29. हर्ष के साम्राज्य के पतन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. हर्ष की मृत्यु बिना किसी उत्तराधिकारी के हुई, जिससे तत्काल राजनीतिक अस्थिरता उत्पन्न हुई।
II. हर्ष की मृत्यु के कुछ समय बाद एक स्थानीय मंत्री अर्जुन ने कन्नौज के सिंहासन को हड़पने का प्रयास किया।
III. चीनी दूत वांग-ह्वेन-त्से ने तिब्बती सहायता से कन्नौज के उस सत्तालोलुप के विरुद्ध एक सैन्य बल का नेतृत्व किया।
IV. हर्ष की मृत्यु के बाद, चालुक्यों ने सफलतापूर्वक आक्रमण किया और स्थायी रूप से मगध पर अधिकार कर लिया।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

(1) I, II और III
(2) II, III और IV
(3) I, II और IV
(4) I, III और IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

NODIA

30. हर्ष के बाद राजनीतिक विखंडन के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही नहीं है?

(1) उत्तर भारत कन्नौज के नियंत्रण के लिए संघर्ष कर रही कई क्षेत्रीय रियासतों में विभाजित हो गया।
(2) गुर्जर-प्रतिहार बाद में पश्चिमी और मध्य भारत में प्रमुख शक्तियों में से एक के रूप में उभरे।
(3) क्षेत्रीय राज्यों ने ब्राह्मणों और अधिकारियों को भूमि दान देना शुरु कर दिया, जिससे राज्य का सामंतीकरण और बढ़ गया।
(4) मौखरि एक राजनीतिक शक्ति के रूप में पूरी तरह से लुप्त हो गए और चालुक्य राज्य में विलीन हो गए।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

31. निम्नलिखित में से कौन गुप्त काल को 'स्वर्ण युग' कहे जाने का सबसे उपयुक्त विवरण है?

(1) यह शास्त्रीय संस्कृत साहित्य, कला और विज्ञान में महत्वपूर्ण प्रगति को दर्शाता है।
(2) यह वर्ण व्यवस्था के उन्मूलन के साथ पूर्ण सामाजिक समानता का युग था।
(3) इसने भारतीय इतिहास में घरेलू खदानों से सोने के उत्पादन का उच्चतम स्तर देखा।
(4) यह प्राचीन भारतीय इतिहास की एकमात्र ऐसी अवधि है

जो किसी भी विदेशी आक्रमण से मुक्त रही।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

32. निम्नलिखित गुप्त राजाओं में से किसने अपनी सैन्य विजय का उत्सव मनाने के लिए अश्वमेध यज्ञ किया और यज्ञ स्तंभ के सामने खड़े घोड़े को दर्शाने वाले सिक्के जारी किए?
(1) श्री गुप्त
(2) समुद्रगुप्त
(3) रामगुप्त
(4) विष्णुगुप्त
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

33. गुप्त शासकों की धार्मिक नीति के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए:
(1) गुप्त मुख्य रूप से वैष्णव थे और स्वयं को 'परम-भागवत' कहते थे।
(2) उन्होंने जैन धर्म और बौद्ध धर्म के अनुयायियों को सक्रिय रूप से प्रताड़ित किया, जिससे कई विहारों का विनाश हुआ।
(3) ब्राह्मणवाद का प्रमुख पुनरुत्थान देखा गया और मंदिर निर्माण को महत्वपूर्ण गति मिली।
(4) उनके शासनकाल में सारनाथ और नालंदा जैसे केंद्रों में बौद्ध कला और संस्थान समृद्ध होते रहे।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

34. गुप्त काल के दौरान सामाजिक और आर्थिक स्थितियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. शूद्रों की स्थिति में थोड़ा सुधार हुआ क्योंकि उन्हें महाकाव्य और पुराण सुनने की अनुमति दी गई थी।
II. अस्पृश्यों (चंडालों) की संख्या में वृद्धि हुई और उनकी सामाजिक अक्षमताएं और तीव्र हो गईं।
III. व्यापारियों और शिल्पकारों की श्रेणियों (गिल्ड) के पास अपने सदस्यों पर पर्याप्त प्रशासनिक और न्यायिक शक्तियां थीं।
IV. ब्राह्मणों को भूमि दान (अग्रहार) देने से राजस्व संग्रह पर केंद्रीय सत्ता का सीधा नियंत्रण कम हो गया।
V. रोमन व्यापार गुप्त अर्थव्यवस्था का सबसे महत्वपूर्ण कारक था, जो आंतरिक कृषि उत्पादन से कहीं अधिक था।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I और III
(2) केवल IV और V
(3) केवल V
(4) II, III और V
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

35. 'भीतरी स्तंभ लेख' किस गुप्त शासक के शासनकाल से सबसे निकटता से जुड़ा है, जो पुष्यमित्रों तथा हूणों के विरुद्ध उसके संघर्ष का विवरण देता है?
(1) चंद्रगुप्त प्रथम
(2) कुमारगुप्त प्रथम
(3) स्कंदगुप्त
(4) पुरुगुप्त
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

36. गुप्त काल में कृषि फसलों और उनके आर्थिक महत्व के संबंध में गलत युग्म की पहचान कीजिए:
(1) यव - जौ
(2) गोधूम - गेहूं
(3) इक्षु - गन्ना
(4) हिरण्य - कपास
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

37. गुप्त काल से संबंधित सूची-I (ग्रंथ) को सूची-II (विषय) के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: ग्रंथ
A. पंचसिद्धांतिका
B. अष्टांगहृदय
C. अमरकोश
D. आर्यभटीय
सूची II: विषय
i. कोश-विज्ञान (शब्दकोश)
ii. खगोल विज्ञान और गणित
iii. पांच खगोलीय ग्रंथों का संकलन
iv. चिकित्सा (आयुर्वेद)
निम्नलिखित में से कौन सा मेल सही है?
(1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(2) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(3) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(4) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

38. गुप्त और गुप्तोत्तर काल के दौरान भूमि दान (ब्रह्मदेय और अग्रहार) के व्यापक प्रचलन ने प्रभावी रूप से निम्नलिखित में से किसे जन्म दिया?
(1) पूरे साम्राज्य में कृषि करों का पूर्ण उन्मूलन
(2) भू-स्वामी बिचौलियों का उदय और विकेंद्रीकृत राजनीतिक शक्ति
(3) पूरे साम्राज्य में शहरी व्यापारिक श्रेणियों का तत्काल और पूर्ण पतन
(4) अर्थव्यवस्था का कृषि से हटकर विशेष रूप से समुद्री व्यापार पर निर्भरता की ओर संक्रमण
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

39. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): अजंता की गुफा चित्रकारी वाकाटक-गुप्त काल के दौरान अपने उच्चतम परिष्कार स्तर पर पहुँची।
कारण (R): वाकाटक शासकों ने संरचनात्मक मंदिरों को पूरी तरह से त्याग दिया और आदेश दिया कि सभी कलात्मक प्रयास विशेष रूप से शैलकृत स्थापत्य की ओर निर्देशित किए जाएं।

Click Here to Buy book on Amazon

निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

40. निम्नलिखित में से कौन सा कथन तोरमाण की सही पहचान करता है?
(1) एक हूण राजा जिसने पश्चिमी और मध्य भारत के कुछ हिस्सों पर विजय प्राप्त की थी।
(2) वह चंद्रगुप्त द्वितीय के दरबार में एक प्रतिभाशाली खगोलशास्त्री था।
(3) वह वल्लभी में मैत्रक राजवंश का संस्थापक था।
(4) वह हर्ष की नवनिर्मित नौसैनिक टुकड़ी का सेनापति था।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

41. ह्वेनसांग ने उल्लेख किया कि हर्ष के शासनकाल के दौरान दंड प्रणाली की विशेषता थी:
(1) सामान्य दंड और शारीरिक अंग-भंग का कोई उदाहरण नहीं
(2) सभी परिस्थितियों में मृत्युदंड का पूर्ण उन्मूलन
(3) अग्नि या जल परीक्षा द्वारा न्याय और राजा के विरुद्ध राजद्रोह के लिए कठोर दंड
(4) निर्वासन ही सभी आपराधिक गतिविधियों के लिए उपयोग किया जाने वाला एकमात्र दंड था
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

42. उत्तर भारत में गुप्त साम्राज्य के पतन के तुरंत बाद उभरे निम्नलिखित राज्यों में से भिन्न को पहचानिए:
(1) तंजावुर के चोल
(2) कन्नौज के मौखरि
(3) थानेसर के पुष्यभूति
(4) मगध के परवर्ती गुप्त
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

43. निम्नलिखित में से कौन सा 7वीं शताब्दी में ह्वेनसांग द्वारा प्रलेखित सामाजिक स्थितियों की विशेषता को नहीं दर्शाता है?
(1) समाज वर्ण व्यवस्था के आधार पर अत्यधिक विभाजित था।
(2) ब्राह्मण और क्षत्रिय सामान्यतः सादगी, पवित्रता और उच्च नैतिक मानकों का जीवन जीते थे।
(3) उच्च वर्णों द्वारा प्याज और लहसुन के परहेज जैसे आहार प्रतिबंधों का पालन किया जाता था।
(4) राजकीय गठबंधनों के आधार के रूप में अंतर-जातीय विवाहों का उत्सव मनाया जाता था।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

44. हर्ष के साम्राज्य के पतन के बाद की राजनीतिक स्थिति के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उत्तर भारत ने पाटलिपुत्र आधारित एक एकीकृत केंद्रीय सत्ता के तहत स्थिरता की लंबी अवधि का अनुभव किया।
II. अंततः कन्नौज के नियंत्रण के लिए प्रतिहारों, पालों और राष्ट्रकूटों के बीच एक त्रिपक्षीय संघर्ष शुरू हुआ।
III. सामंतवाद और अधिक गहराई तक जड़ें जमा गया क्योंकि क्षेत्रीय स्वामियों ने अपनी स्वतंत्रता की घोषणा की।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

45. गुप्तोत्तर काल के दौरान दैनिक लेन-देन में सोने के सिक्कों के स्थान पर तांबे और कौड़ियों के उपयोग की ओर बदलाव के लिए निम्नलिखित में से कौन सा सबसे अच्छा स्पष्टीकरण प्रदान करता है?
(1) भारतीय उपमहाद्वीप में सोने की सभी खदानों का अचानक समाप्त हो जाना
(2) हर्ष द्वारा सामान्य जन द्वारा कीमती धातुओं के उपयोग पर रोक लगाने वाला एक राजकीय आदेश
(3) लंबी दूरी के व्यापार में गिरावट और आत्मनिर्भर ग्रामीण अर्थव्यवस्थाओं का उदय
(4) हमलावर हूणों द्वारा सभी टंकण सुविधाओं का व्यापक और पूर्ण विनाश
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

NODIA

46. मानक ऐतिहासिक सर्वसम्मति के अनुसार, गुप्त युग निम्नलिखित में से किस वर्ष शुरु हुआ, जो चंद्रगुप्त प्रथम के राज्यारोहण के साथ मेल खाता है?
(1) 78 ईस्वी
(2) 319-320 ईस्वी
(3) 240 ईस्वी
(4) 455 ईस्वी
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

47. सूची-I (गुप्त अधिकारी) को सूची-II (विभाग/कार्य) के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: गुप्त अधिकारी
A. संधि विग्रहिक
B. कुमारमात्य
C. महादंडनायक
D. भाण्डागाराधिकृत
सूची II: विभाग/कार्य
i. मुख्य न्यायिक अधिकारी / पुलिस प्रमुख
ii. शांति और युद्ध का मंत्री
iii. राजकीय राजकोष का प्रमुख

iv. उच्च पदस्थ प्रशासनिक अधिकारी
निम्नलिखित में से कौन सा मेल सही है?
(1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(2) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(3) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(4) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

48. गुप्त राजस्व प्रशासन के संदर्भ में, 'भाग' शब्द को इस प्रकार परिभाषित किया गया है:
(1) ग्रामीणों द्वारा राजा को फलों और जलाऊ लकड़ी की समय-समय पर आपूर्ति
(2) कृषि उपज का पारंपरिक राजा का हिस्सा, जो सामान्यतः छठा हिस्सा होता था
(3) यात्रा करने वाले व्यापारियों से वसूला जाने वाला पथ-कर
(4) विलंब से सामग्री पहुँचाने के लिए श्रेणियों (गिल्ड) पर लगाया जाने वाला दंड
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

49. फाह्यान के प्रेक्षणों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उसने पाया कि 'मध्य देश' के लोग समृद्ध और सुखी थे।
II. उसने उल्लेख किया कि राजा शारीरिक दंड के बिना शासन करते थे और अधिकतर अर्थदंड पर निर्भर थे।
III. उसने उल्लेख किया कि प्रशासन के लिए व्यक्तियों को अनिवार्य सैन्य भर्ती के लिए अपने घरों का पंजीकरण कराना पड़ता था।
IV. उसने देखा कि सम्मानित लोग सामान्यतः मांस या मदिरा के सेवन से बचते थे।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) I, II और III
(2) I, II और IV
(3) II, III और IV
(4) I, III और IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

50. क्षेत्रों और उनके उल्लेखनीय गुप्तोत्तर शासक राजवंशों के संबंध में गलत युग्म की पहचान कीजिए:
(1) वल्लभी - कदंब
(2) थानेसर - पुष्यभूति
(3) कामरुप - वर्मन
(4) कन्नौज - मौखरि
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

51. प्रसिद्ध लौह स्तंभ, जो अपनी जंग-रोधी संरचना के लिए उल्लेखनीय है और जिस पर 'चंद्र' नामक राजा का लेख उत्कीर्ण है, कहाँ स्थित है?
(1) सारनाथ, वाराणसी के समीप
(2) उदयगिरि, मध्य प्रदेश
(3) महरौली, दिल्ली
(4) वैशाली, बिहार
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

52. भारत आने वाले निम्नलिखित चीनी यात्रियों पर विचार कीजिए:
I. ह्वेनसांग
II. फाह्यान
III. इत्सिंग
IV. सुंग युन
निम्नलिखित में से कौन उनकी यात्राओं का सही कालानुक्रमिक क्रम दर्शाता है?
(1) II, IV, I, III
(2) II, I, IV, III
(3) IV, II, I, III
(4) II, IV, III, I
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

53. 6वीं शताब्दी में गुप्त साम्राज्य के तीव्र विघटन का मुख्य कारण निम्नलिखित में से किसे माना जा सकता है?
(1) भारी कराधान के कारण बड़े पैमाने पर हुए किसान विद्रोह जिन्होंने राज्य तंत्र को उखाड़ फेंका।
(2) महामारी के प्रकोप ने जनसंख्या को समाप्त कर दिया, जिससे प्रमुख प्रशासनिक केंद्रों को त्यागना पड़ा।
(3) हूणों के आक्रमणों ने सेना को दुर्बल कर दिया और राजकोष को रिक्त कर दिया, जिससे प्रांतीय स्वतंत्रता का मार्ग प्रशस्त हुआ।
(4) महायान बौद्ध धर्म के शांतिवाद के कारण राजकीय स्थायी सेना पूरी तरह से भंग हो गई।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

54. गुप्त युग की कला और संरचनात्मक विकास के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इस काल में प्रारंभिक स्वतंत्र संरचनात्मक पत्थर के मंदिरों का निर्माण देखा गया।
II. दशावतार मंदिर शेषशायी विष्णु को दर्शाने वाली अपनी जटिल नक्काशी के लिए उल्लेखनीय है।
III. मृण्मय (टेराकोटा) कला परिष्कार के उच्च स्तर पर पहुँच गई थी और मंदिरों एवं भवनों को सजाने के लिए व्यापक रूप से उपयोग की जाती थी।
IV. भीतरगांव मंदिर प्रारंभिक गुप्त ईंट मंदिर का एक उल्लेखनीय उदाहरण है।
V. एलोरा की गुफाएं पूरी तरह से गुप्त काल के दौरान चंद्रगुप्त द्वितीय द्वारा निर्मित की गई थीं।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I और III
(2) केवल V
(3) केवल II और IV
(4) I, IV और V
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

55. गुप्तोत्तर काल के क्षेत्रीय राज्यों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?

Downloaded from www.pdf.tube

(1) गौड़ का शासक शशांक शैव धर्म का कट्टर संरक्षक था।
(2) मौखरियों ने गंगा दोआब क्षेत्र में हूण आक्रमणों का प्रबल विरोध किया।
(3) पुष्यभूति वंश ने प्रारंभ में थानेसर से शासन किया और बाद में हर्ष ने राजधानी को कन्नौज स्थानांतरित कर दिया।
(4) वल्लभी के मैत्रकों को हर्ष द्वारा पूरी तरह से समाप्त कर दिया गया था और उनके क्षेत्रों को स्थायी रूप से मगध में मिला लिया गया था।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

56. आर्यभट्ट के वैज्ञानिक योगदान के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(1) उन्होंने प्रतिपादित किया कि पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है और सूर्य तथा चंद्र ग्रहणों के लिए वैज्ञानिक व्याख्या प्रदान की।
(2) उन्होंने स्थापत्य, ज्योतिष और ग्रहों की गति पर एक विश्वकोश 'वृहद संहिता' की रचना की।
(3) वह मोतियाबिंद का शल्य चिकित्सा करने वाले पहले भारतीय चिकित्सक थे।
(4) उन्होंने शून्य की अवधारणा और दशमलव प्रणाली का कड़ा विरोध किया।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

57. सूची-I (हर्षवर्धन का प्रशासन) को सूची-II (संबंधित विशेषता) के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: हर्षवर्धन का प्रशासन
A. महासंधिविग्रहाधिकृत
B. आयुक्त
C. महाप्रतिहार
D. उद्रंग
सूची II: संबंधित विशेषता
i. जिला प्रशासन के प्रभारी साधारण अधिकारी
ii. राजप्रासाद के रक्षकों का प्रमुख
iii. कृषकों से वसूला जाने वाला कर
iv. युद्ध और शांति का सर्वोच्च निदेशक
निम्नलिखित में से कौन सा मेल सही है?
(1) A-i, B-iv, C-iii, D-ii
(2) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(3) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

58. निम्नलिखित में से कौन सा उत्तर गुप्त और गुप्तोत्तर काल के दौरान अर्थव्यवस्था का सबसे अच्छा वर्णन प्रदान करता है?
(1) लंबी दूरी के व्यापार में गिरावट और भूमि दान में वृद्धि द्वारा चिन्हित एक तेजी से स्थानीयकृत अर्थव्यवस्था
(2) रोमन स्वर्ण व्यापार की बढ़ती मात्रा के साथ एक अत्यधिक मौद्रिक अर्थव्यवस्था
(3) बिना किसी निजी भूमि स्वामित्व वाली पूर्णतः राज्य-नियंत्रित अर्थव्यवस्था
(4) बड़े महानगरों में विशेष शिल्पकार श्रेणियों द्वारा संचालित एक औद्योगिक अर्थव्यवस्था
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

59. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): हर्ष की मृत्यु के बाद, उसका विशाल साम्राज्य तेजी से कई स्वतंत्र क्षेत्रीय राज्यों में विभाजित हो गया।
कारण (R): हर्ष के प्रशासन में एक स्थायी, अत्यधिक केंद्रीकृत नौकरशाही संरचना का अभाव था और यह अधीनस्थ सामंतों की निष्ठा पर अत्यधिक निर्भर था।
निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

NODIA

60. निम्नलिखित में से कौन सा शासक मगध और मालवा के परवर्ती गुप्त राजवंश से संबंधित नहीं है?
(1) कृष्णगुप्त
(2) मिहिरकुल
(3) कुमारगुप्त (परवर्ती गुप्त वंश का)
(4) आदित्यसेन
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

61. निम्नलिखित में से कौन गुप्त वंश का संस्थापक था, यद्यपि उसने 'महाराजाधिराज' की राजकीय उपाधि धारण नहीं की थी?
(1) बिंबिसार
(2) कनिष्क
(3) श्री गुप्त
(4) पुष्यमित्र शुंग
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

62. निम्नलिखित में से कौन समुद्रगुप्त के सैन्य अभियानों की श्रेणियों का सही क्रम प्रदान करता है जैसा कि सामान्यतः प्रयाग प्रशस्ति से ज्ञात होता है?
(1) आर्यावर्त के अभियान, दक्षिणापथ के अभियान, आठविक राज्यों पर विजय, सीमावर्ती राज्यों का दमन, विदेशी शक्तियों के साथ संबंध
(2) दक्षिणापथ के अभियान, आर्यावर्त के अभियान, आठविक राज्यों पर विजय, सीमावर्ती राज्यों का दमन, विदेशी शक्तियों के साथ संबंध
(3) आर्यावर्त के अभियान, आठविक राज्यों पर विजय, दक्षिणापथ के अभियान, विदेशी शक्तियों के साथ संबंध, सीमावर्ती राज्यों का दमन
(4) आठविक राज्यों पर विजय, आर्यावर्त के अभियान, दक्षिणापथ के अभियान, सीमावर्ती राज्यों का दमन, विदेशी शक्तियों के साथ संबंध
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

63. गुप्त और गुप्तोत्तर युग के प्रमुख शिक्षण केंद्रों के संबंध में भिन्न की पहचान कीजिए:
(1) लोथल
(2) नालंदा
(3) वल्लभी
(4) विक्रमशिला
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

64. गुप्त प्रशासन की विकेंद्रीकृत विशेषताओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. प्रांतों और जिलों पर प्रशासनिक नियंत्रण पूर्ण था, ग्राम परिषदों के पास कोई स्वायत्तता नहीं थी।
II. स्थानीय प्रशासनिक बोर्डों में व्यापारी और शिल्पकार श्रेणियों के प्रतिनिधि सम्मिलित थे, जो सत्ता की साझेदारी को दर्शाता है।
III. ब्राह्मणों और मंदिरों को कर-मुक्त भूमि देने की बढ़ती परिपाटी ने स्वायत्त प्रशासनिक क्षेत्र निर्मित किए।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

65. गुप्त अर्थव्यवस्था के संदर्भ में 'श्रेणी' शब्द विशेष रुप से किसे संदर्भित करता है?
(1) पैदल सैनिकों की एक सैन्य टुकड़ी
(2) किसी विशेष व्यापार के व्यापारियों या शिल्पकारों का संघ
(3) स्कंदगुप्त के राजकोष द्वारा जारी किया गया एक विशिष्ट और दुर्लभ प्रकार का सोने का सिक्का
(4) दान में दिए गए गाँव का सीमा स्तंभ
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

66. गुप्तोत्तर साहित्य के संबंध में गलत युग्म की पहचान कीजिए:
(1) भवभूति - सूर्य सिद्धांत
(2) बाणभट्ट - कादंबरी
(3) हर्षवर्धन - रत्नावली
(4) दंडी - दशकुमारचरितम्
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

67. प्राचीन भारतीय विज्ञान के संबंध में सूची-I (ग्रंथ) को सूची-II (लेखक) के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: ग्रंथ
A. वृहद संहिता
B. ब्रह्मस्फुटसिद्धांत
C. सुश्रुत संहिता
D. लीलावती
सूची II: लेखक
i. ब्रह्मगुप्त
ii. भास्कराचार्य
iii. वराहमिहिर
iv. सुश्रुत
निम्नलिखित में से कौन सा मेल सही है?
(1) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
(2) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(3) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(4) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

68. गुप्त साहित्य और प्रशासन में 'विष्टि' शब्द का क्या अर्थ है?
(1) मंत्रियों की सर्वोच्च परिषद
(2) एक विशेष अश्वारोही इकाई
(3) पश्चिमी तट पर प्रमुख व्यापारिक बंदरगाह
(4) राज्य या जमींदारों द्वारा ली जाने वाली अनिवार्य बेगार (निशुल्क मजदूरी)
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

69. हूण आक्रमणों और गुप्तों के पतन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. हूण मध्य एशिया का एक खानाबदोश समूह था जिसने उत्तर-पश्चिम के मार्ग से भारत में प्रवेश किया।
II. स्कंदगुप्त अपनी पहली मुठभेड़ में हूणों से पूरी तरह पराजित हुआ था और उसने पाटलिपुत्र खो दिया था।
III. मिहिरकुल, जो एक प्रमुख हूण राजा था, ऐतिहासिक रुप से बौद्ध धर्म के संरक्षण के लिए जाना जाता है।
IV. हूणों के विरुद्ध दीर्घकालीन प्रतिरोध ने गुप्त साम्राज्य के वित्तीय संसाधनों को गंभीर रुप से रिक्त कर दिया।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) I और IV
(2) I, II और IV
(3) II और III
(4) I, III और IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

70. निम्नलिखित में से कौन सा संस्कृत साहित्य में कालिदास के योगदान का सही वर्णन करता है?
(1) उन्होंने मुख्य रुप से वेदांत पर दार्शनिक ग्रंथ लिखे।
(2) उन्होंने काव्य शैली को उत्कृष्ट बनाया और 'अभिज्ञानशाकुंतलम्' तथा 'मेघदूत' जैसी अमर कृतियाँ लिखीं।
(3) वह गुप्त युग के दौरान पाणिनी की 'अष्टाध्यायी' के सबसे प्रमुख व्याकरणिक टीकाकार थे।
(4) उन्होंने प्रारंभिक यूनानी खगोलीय ग्रंथों का संस्कृत में अनुवाद किया।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

71. गुप्त काल के दौरान व्यापार को सुगम बनाने वाले निम्नलिखित सभी प्रमुख बंदरगाह थे, सिवाय:
(1) ताम्रलिप्ति
(2) भृगुकच्छ (भड़ौच)
(3) कल्याण

Click Here to Buy book on Amazon

(4) पाटलिपुत्र
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

72. निम्नलिखित में से कौन हर्ष के शासनकाल के दौरान धार्मिक वातावरण की सबसे अच्छी समझ प्रदान करता है?
(1) उसने अपने अंतिम वर्षों में हिंदू धर्म और जैन धर्म के प्रति सहिष्णुता बनाए रखते हुए बौद्ध धर्म को संरक्षण दिया।
(2) हर्ष ने जैन धर्म को एकमात्र राजकीय धर्म के रूप में अनिवार्य किया और अन्य सभी मतों का कठोरता से दमन किया।
(3) हर्ष एक धर्मनिष्ठ मुस्लिम था जिसने कन्नौज में इस्लामी स्थापत्य और सांस्कृतिक तत्वों का सूत्रपात किया।
(4) उसने शिव और सूर्य की पूजा पर प्रतिबंध लगा दिया और अपने साम्राज्य के संसाधनों को पूर्णतः हीनयान बौद्ध धर्म पर केंद्रित किया।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

73. गुप्त काल के दौरान महिलाओं की स्थिति के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) उच्च वर्ग की महिलाओं की साहित्यिक शिक्षा तक पहुँच थी।
(2) सती प्रथा का साक्ष्य पहली बार इस काल के एक लेख (एरण लेख) में मिलता है।
(3) महिलाओं को पुरुषों के समान संपत्ति के अधिकारों और उत्तराधिकार में पूर्ण समानता प्राप्त थी।
(4) साहित्यिक कृतियों में, उच्च वर्ग की महिलाएँ और पुरुष संस्कृत बोलते थे, जबकि अन्य महिलाएँ और निम्न वर्ग प्रायः प्राकृत बोलते थे।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

74. गुप्तोत्तर काल में उभरे क्षेत्रीय राज्यों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. शशांक के अधीन गौड़ राज्य पुष्यभूतियों का प्रमुख प्रतिद्वंद्वी था।
II. वर्मनों ने कामरूप (असम) में एक शक्तिशाली राज्य की स्थापना की।
III. मैत्रकों ने वल्लभी को शिक्षा का एक प्रमुख केंद्र बनाया, जिसने नालंदा के साथ प्रतिस्पर्धा की।
IV. हर्ष के राज्यारोहण से पहले मौखरियों ने कन्नौज के रणनीतिक क्षेत्र पर नियंत्रण किया था।
V. राजस्थान का क्षेत्र गुप्तोत्तर राजनीतिक विखंडन से पूरी तरह अछूता था और सीधे गुप्त नियंत्रण में रहा।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल V
(2) केवल I और II
(3) केवल III और IV
(4) I, IV और V
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

NODIA

75. प्रसिद्ध ताम्रपत्र लेख जो प्रायः गुप्त काल के दौरान ब्राह्मणों को दिए गए भूमि दान को अभिलिखित करते हैं, सामान्यतः कहलाते हैं:
(1) प्रशस्तियां
(2) शिलालेख
(3) स्तूप धातु मंजूषा
(4) ताम्रपत्र
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

76. गुप्त काल के दौरान 'भक्ति' की अवधारणा को व्यापक रूप से अपनाने का मुख्य परिणाम क्या था?
(1) मूर्ति पूजा और संरचनात्मक मंदिरों में गिरावट आई।
(2) मूर्ति पूजा लोकप्रिय हुई और स्थानीय पंथों का ब्राह्मणवादी ढांचे में संश्लेषण हुआ।
(3) मुक्ति के एकमात्र साधन के रूप में जटिल वैदिक यज्ञों की ओर झुकाव बढ़ा।
(4) सभी धार्मिक और राजदरबारी अनुष्ठानों में संस्कृत का पाली द्वारा पूर्ण और स्थायी प्रतिस्थापन हुआ।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

77. गुप्तोत्तर युग में सूची-I (ऐतिहासिक व्यक्तित्व) को सूची-II (संबद्ध राज्य/वंश) के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: ऐतिहासिक व्यक्तित्व
A. गृहवर्मन
B. भास्करवर्मन
C. ध्रुवसेन द्वितीय
D. शशांक
सूची II: संबद्ध राज्य/वंश
i. कामरुप
ii. गौड़
iii. मौखरि
iv. मैत्रक
निम्नलिखित में से कौन सा मेल सही है?
(1) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(2) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(3) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(4) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

78. गुप्त काल के निम्नलिखित शब्दों में से कौन सा एक भिन्न श्रेणी से संबंधित होने के कारण अलग है?
(1) दीनार
(2) सुवर्ण
(3) रुपयक
(4) कुमारमात्य
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

79. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रुप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): हर्ष का साम्राज्य मौर्यों की तरह राजनीतिक रुप से एकीकृत और केंद्रीकृत नहीं था।

कारण (R): गुप्तोत्तर राजनीति की विशेषता शक्तिशाली सामंतों की उपस्थिति थी जिनके पास अपनी सैन्य शक्ति और अपने क्षेत्रों पर प्रशासनिक नियंत्रण था।
निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

80. निम्नलिखित में से कौन सा कथन 510 ईस्वी के एरण लेख के ऐतिहासिक महत्व की सही पहचान करता है?
(1) यह मौर्य साम्राज्य के प्रशासनिक प्रभागों का विवरण देता है।
(2) यह सती प्रथा का पहला अभिलेखीय साक्ष्य प्रदान करता है।
(3) यह आर्यभट्ट द्वारा पाई की सटीक गणितीय गणना का वर्णन करता है।
(4) यह हर्ष द्वारा नालंदा विश्वविद्यालय को भूमि दान देने वाला एक आदेश है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

www.nodia.in

NODIA

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) चंद्रगुप्त प्रथम
चंद्रगुप्त प्रथम गुप्त वंश का प्रथम शासक था जिसने 'महाराजाधिराज' की उपाधि धारण की। उसने लिच्छवि राजकुमारी कुमारदेवी से विवाह कर अपनी राजनैतिक शक्ति सुदृढ़ की। इस गठबंधन की स्मृति में उसने विशेष स्वर्ण मुद्राएं जारी कीं, जिन पर राजा-रानी के चित्र और लिच्छवि गणराज्य का नाम अंकित था। यह गुप्त साम्राज्य की बढ़ती प्रतिष्ठा और संप्रभुता का स्पष्ट परिचायक था।

2. (1) यह हरिषेण द्वारा रचित एक प्रशस्ति है जिसमें समुद्रगुप्त की सैन्य विजयों का विवरण दिया गया है।
प्रयाग प्रशस्ति समुद्रगुप्त के शासनकाल का महत्वपूर्ण अभिलेख है, जिसकी रचना दरबारी कवि हरिषेण ने चंपू काव्य शैली में की थी। यह इलाहाबाद स्थित अशोक स्तंभ पर उत्कीर्ण है। इसमें सम्राट की सैन्य विजयों और साम्राज्य विस्तार का विस्तृत वर्णन मिलता है। यह गुप्तकालीन राजनीति और सैन्य इतिहास को समझने का सबसे विश्वसनीय और प्रामाणिक प्राथमिक स्रोत माना जाता है।

3. (3) वह दैनिक लेन-देन के लिए व्यापक रूप से तांबे के सिक्के जारी करने वाला पहला गुप्त शासक था।
चंद्रगुप्त द्वितीय के काल में गुप्त साम्राज्य अपने उत्कर्ष पर पहुँचा। उसने शक शासकों को पराजित कर मालवा और गुजरात पर अधिकार किया तथा उज्जैन को अपनी दूसरी राजधानी बनाया। उसका दरबार नवरत्नों से सुशोभित था। यद्यपि उसने चांदी की मुद्राएं जारी की थीं, किंतु तांबे के सिक्कों का व्यापक प्रचलन उसके शासन की कोई मुख्य विशेषता नहीं मानी जाती है।

4. (1) केवल I और II
चीनी भिक्षु फाह्यान ने चंद्रगुप्त द्वितीय के समय बौद्ध ग्रंथों की खोज में भारत की यात्रा की थी। उसने अपने वृत्तांत में समाज के अछूत वर्ग 'चांडालों' की दयनीय स्थिति का वर्णन किया है। हालांकि, उसने तत्कालीन सम्राट का नाम प्रत्यक्ष रूप से नहीं लिखा और न ही प्रशासन की राजनैतिक संरचना का कोई सूक्ष्म विवरण प्रदान किया। उसका विवरण मुख्य रूप से धार्मिक था।

5. (3) 'भुक्ति' के प्रशासन के लिए नियुक्त प्रांतीय गवर्नर
गुप्त काल में प्रशासनिक कुशलता हेतु साम्राज्य को प्रांतों में विभाजित किया गया था, जिन्हें 'भुक्ति' कहते थे। प्रत्येक भुक्ति के प्रशासन हेतु नियुक्त सर्वोच्च अधिकारी 'उपरिक' कहलाता था। इसकी नियुक्ति प्रायः सम्राट द्वारा राजपरिवार से की जाती थी। उपरिक प्रांतीय स्तर पर विधि-व्यवस्था और राजस्व प्रबंधन के लिए उत्तरदायी था, जो केंद्रीय सत्ता और स्थानीय प्रशासन के मध्य कड़ी था।

6. (2) अप्रहत - चरागाह भूमि
गुप्त काल में भूमि का वर्गीकरण उपयोगिता के आधार पर था। 'क्षेत्र' कृषि योग्य और 'खिल' अनुपजाऊ भूमि थी। 'वस्ति' निवास योग्य भूमि हेतु प्रयुक्त शब्द था। 'अप्रहत' का अर्थ बिना जोती गई जंगली भूमि होता था, जबकि चरागाह हेतु 'गोपथ-सरह' शब्द प्रयुक्त होता था। यह वर्गीकरण तत्कालीन विकसित कृषि व्यवस्था और भूमि अभिलेखों के वैज्ञानिक प्रबंधन को स्पष्ट करता है।

7. (4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
गुप्त काल संस्कृत साहित्य का स्वर्ण युग था। विशाखदत्त ने 'मुद्राराक्षस' की रचना की, जिसमें मौर्य सत्ता के उत्थान का वर्णन है। 'मृच्छकटिकम्' शूद्रक का प्रसिद्ध सामाजिक नाटक है। भारवि ने 'किरातार्जुनीयम्' में अर्जुन और शिव के संवाद को प्रस्तुत किया है। कालिदास की कृति 'ऋतुसंहार' प्रकृति का सुंदर चित्रण करती है। ये ग्रंथ तत्कालीन सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश के दर्पण हैं।

8. (1) चरक
गुप्त काल भारतीय विज्ञान और गणित की प्रगति का साक्षी रहा, जिसमें आर्यभट्ट और वराहमिहिर जैसे मनीषियों ने योगदान दिया। इसके विपरीत, चरक एक सुप्रसिद्ध प्राचीन आयुर्वेद विशेषज्ञ थे। उनका संबंध कुषाण शासक कनिष्क के काल से था, जो गुप्त काल से शताब्दियों पूर्व का समय है। अतः चरक को गुप्तकालीन विज्ञान के विकासक्रम से प्रत्यक्ष रूप से नहीं जोड़ा जा सकता।

9. (2) I, II और IV
गुप्त काल में कला का उत्कृष्ट विकास हुआ, जिसका प्रमाण सारनाथ की शांत बुद्ध प्रतिमाएं और देवगढ़ का पंचायतन शैली का दशावतार मंदिर हैं। इस युग में स्वतंत्र मंदिरों का निर्माण प्रारंभ हुआ। हालांकि, अजंता के भित्ति चित्र मुख्य रूप से बौद्ध जातक कथाओं और बुद्ध के जीवन को दर्शाते हैं। रामायण और महाभारत का अंकन गुप्तकालीन मंदिरों की नक्काशी में अधिक व्यापक था।

10. (1) स्थलीय व्यापार मार्गों में व्यवधान और राजकोष पर आर्थिक भार
पांचवीं शताब्दी में हूणों के आक्रमणों ने गुप्त साम्राज्य को जर्जर कर दिया। इन युद्धों के कारण उत्तर-पश्चिमी व्यापारिक मार्ग बाधित हुए और राजकोष पर भारी आर्थिक भार पड़ा। सैन्य व्यय बढ़ने से अर्थव्यवस्था प्रभावित हुई और केंद्रीय सत्ता कमजोर पड़ गई। इसी अस्थिरता ने अंततः गुप्त साम्राज्य के पतन और उत्तर भारत में राजनैतिक विकेंद्रीकरण की प्रक्रिया को तीव्र कर दिया था।

Downloaded from www.pdf.tube

11. (4) नर्मदा तट पर चालुक्य राजा पुलकेशिन द्वितीय पर निर्णायक विजय
सम्राट हर्ष ने उत्तर भारत में विशाल साम्राज्य स्थापित किया और वल्लभी तथा मगध तक अपना प्रभाव बढ़ाया। उसने पूर्वी भारत में भी सैन्य अभियान चलाए। हालांकि, दक्षिण विस्तार के प्रयास में उसे चालुक्य राजा पुलकेशिन द्वितीय ने नर्मदा तट पर पराजित किया। यह हर्ष के सैन्य जीवन की एकमात्र बड़ी विफलता थी, जिसने उत्तर और दक्षिण भारत के मध्य एक सीमा निर्धारित कर दी।

12. (2) आदित्यवर्धन, प्रभाकरवर्धन, राज्यवर्धन, हर्षवर्धन
वर्धन वंश का उत्थान प्रभाकरवर्धन के काल में हुआ, जिसने 'परमभट्टारक' की उपाधि धारण की। उनके पश्चात राज्यवर्धन सिंहासन पर बैठे, किंतु गौड़ शासक शशांक ने उनकी छल से हत्या कर दी। इसके उपरांत 606 ईस्वी में हर्षवर्धन ने सत्ता संभाली। हर्ष ने अपनी राजधानी थानेसर से कन्नौज स्थानांतरित की और उत्तर भारत के अंतिम महान हिंदू सम्राट के रूप में अपनी पहचान बनाई।

13. (3) कन्नौज सभा ने ह्वेनसांग को सम्मानित किया और महायान बौद्ध धर्म को बढ़ावा दिया।
हर्षवर्धन द्वारा आयोजित कन्नौज सभा का मुख्य उद्देश्य ह्वेनसांग को सम्मानित करना और महायान बौद्ध मत का प्रचार करना था। प्रयाग सभा दान-पुण्य हेतु प्रत्येक पांच वर्ष में आयोजित होती थी, जहाँ हर्ष अपना सर्वस्व दान कर देता था। इन धार्मिक आयोजनों में बौद्धों के अतिरिक्त ब्राह्मण और जैन विद्वान भी सम्मिलित होते थे, जो हर्ष की धार्मिक सहिष्णुता को दर्शाता है।

14. (2) केवल III
हर्ष का प्रशासन भुक्तियों और विषयों में विभक्त था, जहाँ राजस्व उपज का छठा भाग होता था। इस काल में अधिकारियों को वेतन के स्थान पर भूमि दान देने की प्रथा से सामंती तत्वों का प्रभाव बढ़ा। व्यापारिक ह्रास के कारण मुद्राओं का प्रचलन कम हो गया था। हर्ष का शासन पूर्णतः केंद्रीकृत न होकर सामंती व्यवस्था और व्यक्तिगत निष्ठा पर अधिक आधारित था।

15. (1) मैत्रक
गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद सौराष्ट्र में भट्टार्क ने मैत्रक राजवंश की स्थापना की। वल्लभी को राजधानी बनाकर उन्होंने इसे शिक्षा और व्यापार का प्रमुख केंद्र बनाया। मैत्रक शासकों ने अपनी राजनैतिक स्वायत्तता बनाए रखी और हर्ष के काल में भी वे पश्चिमी भारत की एक महत्वपूर्ण शक्ति थे। वल्लभी विश्वविद्यालय इसी काल में नालंदा के समान ख्याति प्राप्त शिक्षा का केंद्र बना।

16. (2) लिच्छवि
गुप्त वंश के प्रारंभिक उत्थान में वैवाहिक संबंधों की मुख्य भूमिका थी। चंद्रगुप्त प्रथम ने वैशाली के प्रतिष्ठित लिच्छवि गणराज्य की राजकुमारी कुमारदेवी से विवाह किया। इस गठबंधन से गुप्तों को राजनैतिक वैधता और मगध में सुदृढ़ स्थिति प्राप्त हुई। इसी गौरव के कारण समुद्रगुप्त को 'लिच्छवि-दौहित्र' कहा गया और चंद्रगुप्त प्रथम ने अपनी मुद्राओं पर लिच्छवि राजकुमारी का नाम अंकित करवाया था।

17. (2) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
समुद्रगुप्त की नीतियां विजित क्षेत्रों के महत्व पर आधारित थीं। आर्यावर्त हेतु उसने 'प्रसभोद्धरण' अर्थात् विनाश की नीति अपनाई। दक्षिणापथ के राजाओं के प्रति 'ग्रहण-मोक्षानुग्रह' की नीति अपनाकर उन्हें मुक्त कर दिया। सीमावर्ती राज्यों से उसने 'सर्वकरदान' प्राप्त किया। वहीं, कुषाण और शक जैसे विदेशी शासकों ने 'कन्योपायनदान' और आज्ञापालन के माध्यम से उसकी अधीनता स्वीकार की। यह उसकी कूटनीतिक दूरदर्शिता का प्रमाण था।

NODIA

18. (1) उसने अपनी पुत्री प्रभावतीगुप्ता का विवाह वाकाटक राजा रुद्रसेन द्वितीय से किया।
चंद्रगुप्त द्वितीय ने साम्राज्य विस्तार हेतु वैवाहिक कूटनीति का प्रयोग किया। उसने अपनी पुत्री प्रभावतीगुप्ता का विवाह वाकाटक राजा रुद्रसेन द्वितीय से किया। इस गठबंधन का मुख्य उद्देश्य पश्चिमी भारत के शक्तिशाली शक क्षत्रपों को पराजित करना था। वाकाटकों के सहयोग से चंद्रगुप्त ने शकों का उन्मूलन कर मालवा और गुजरात के समृद्ध प्रदेशों को गुप्त साम्राज्य में मिला लिया, जिससे उसे समुद्र तक पहुँच मिली।

19. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
फाह्यान एक समर्पित बौद्ध भिक्षु था, जिसका मुख्य उद्देश्य पवित्र स्थलों की यात्रा और विनय पिटक जैसे ग्रंथों का संग्रह करना था। इस धार्मिक दृष्टिकोण के कारण उसने अपने विवरण में तत्कालीन सामाजिक और धार्मिक रीति-रिवाजों पर तो विस्तार से लिखा, किंतु राजनैतिक घटनाओं और सम्राट का उल्लेख नहीं किया। अतः उसका वृत्तांत गुप्तकालीन राजनीति के स्थान पर केवल सांस्कृतिक और धार्मिक इतिहास प्रस्तुत करता है।

20. (4) भूमि लेन-देन रजिस्टरों का विवरण रखने वाला अधिकारी
गुप्त काल में भूमि राजस्व राज्य की आय का मुख्य स्रोत था, जिसके प्रबंधन हेतु 'पुस्तपाल' नामक अधिकारी नियुक्त था। वह जिला प्रशासन के अधीन भूमि के क्रय, विक्रय और दान से संबंधित समस्त विधिक अभिलेखों और पंजिकाओं का विवरण रखता था। किसी भी भूमि हस्तांतरण से पूर्व वह दस्तावेजों की सत्यता की जाँच करता था, जिससे भूमि स्वामित्व और प्रबंधन में पारदर्शिता बनी रहती थी।

21. (3) सार्थवाह - शिल्पकार श्रेणियों का मुख्य प्रतिनिधि
गुप्तकालीन नगर प्रशासन में 'अधिष्ठान अधिकरण' नामक परिषद सक्रिय थी। इसमें 'नगरश्रेष्ठी' व्यापारियों का प्रमुख और 'प्रथमकुलिक' शिल्पकारों का प्रतिनिधि होता था। 'प्रथमकायस्थ' मुख्य लिपिक था। हालांकि, 'सार्थवाह' भ्रमणशील व्यापारियों के कारवां का नेता होता था, न कि शिल्पकार श्रेणियों का प्रतिनिधि। यह व्यवस्था दर्शाती है कि नगरों के प्रबंधन में व्यावसायिक वर्गों की महत्वपूर्ण और स्वायत्त भूमिका थी।

22. (1) II, III, I, IV
भारतीय खगोलविदों का सही क्रम उनके ऐतिहासिक योगदान को दर्शाता है। आर्यभट्ट (5वीं-6वीं सदी) ने पृथ्वी की गति और शून्य का सिद्धांत दिया। वराहमिहिर (6वीं सदी) प्रसिद्ध ज्योतिषी थे। ब्रह्मगुप्त (7वीं सदी) ने गणितीय नियमों और गुरुत्वाकर्षण की चर्चा की। भास्कराचार्य (12वीं सदी) ने मध्यकालीन गणित को शिखर पर पहुँचाया। यह निरंतरता प्राचीन भारत में विज्ञान और तर्क के प्रति गहरी रुचि को प्रमाणित करती है।

23. (4) संधि विग्रहिक
गुप्तकालीन अर्थव्यवस्था में 'उद्रंग' और 'उपरिकर' भूमि करों के प्रकार थे, जबकि 'हिरण्य' नकद रुप में लिया जाने वाला कर था। ये तीनों शब्द प्रत्यक्षतः राजस्व प्रणाली से संबंधित हैं। इसके विपरीत, 'संधि विग्रहिक' युद्ध और शांति का मंत्री होता था, जो विदेश नीति और कूटनीतिक संबंधों का संचालन करता था। यह एक उच्च प्रशासनिक पद था, जिसका राजस्व या कराधान के वर्गीकरण से कोई संबंध नहीं था।

24. (3) केवल I और III
सारनाथ की बुद्ध प्रतिमा गुप्त मूर्तिकला का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है, जिसमें उन्हें 'धर्मचक्रप्रवर्तन मुद्रा' में दिखाया गया है। इसकी मुख्य विशेषता बुद्ध के सिर के पीछे अलंकृत प्रभामंडल और वस्त्रों का अत्यंत महीन चित्रण है। यहाँ वस्त्रों को शरीर से सटा हुआ और पारदर्शी दिखाया गया है, जो कुषाण कालीन भारी वस्त्रों से सर्वथा भिन्न है। यह शैली आध्यात्मिकता और शारीरिक सौंदर्य के अद्भुत समन्वय को दर्शाती है।

25. (3) दोआब व्यापार मार्गों पर नियंत्रण और उत्तर-पश्चिमी आक्रमणों के विरुद्ध रक्षा का बढ़ता महत्व
गुप्त काल के पश्चात राजनैतिक केंद्र पाटलिपुत्र से कन्नौज स्थानांतरित हुआ। कन्नौज गंगा-यमुना दोआब के केंद्र में स्थित था, जहाँ से उपजाऊ क्षेत्रों और व्यापारिक मार्गों पर नियंत्रण सरल था। सामरिक दृष्टि से यह उत्तर-पश्चिमी आक्रमणों के विरुद्ध रक्षा हेतु पाटलिपुत्र से अधिक उपयुक्त था। इन्ही भौगोलिक और रणनीतिक कारणों से कन्नौज आने वाली शताब्दियों तक उत्तर भारतीय सत्ता का प्रतीक और संघर्ष का मुख्य केंद्र बना रहा।

26. (1) यह हर्ष के जीवन और उत्थान का विवरण देने वाली पहली ऐतिहासिक संस्कृत जीवनी है।
'हर्षचरित' महाकवि बाणभट्ट द्वारा रचित एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है, जिसे संस्कृत की प्रथम ऐतिहासिक जीवनी माना जाता है। इसमें सम्राट हर्षवर्धन के पूर्वजों, राज्यारोहण और शासनकाल की प्रारंभिक घटनाओं का विवरण है। बाणभट्ट हर्ष के राजकवि थे, इसलिए उनकी रचना तत्कालीन सामाजिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक परिवेश को समझने का मुख्य स्रोत है। यह ग्रंथ आठ अध्यायों में विभक्त है, जो वर्धन वंश का यशोगान करता है।

27. (4) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
ह्वेनसांग के वृतांत सातवीं शताब्दी की सामाजिक संरचना को स्पष्ट करते हैं। उसने 'शूद्र' शब्द का प्रयोग कृषकों हेतु किया है। 'चांडाल' समाज के बहिष्कृत लोग थे जो नगर सीमा से बाहर रहते थे। 'कौटुम्ब' ग्रामीण समाज के गृहस्थों को कहा जाता था। 'श्रेष्ठी' नगरों के प्रभावशाली और धनी व्यापारियों के लिए प्रयुक्त शब्द था। यह वर्गीकरण स्पष्ट करता है कि तत्कालीन समाज वर्ण और व्यवसाय के आधार पर विभाजित था।

28. (2) नागानंद
सम्राट हर्षवर्धन एक महान योद्धा के साथ उच्च कोटि के विद्वान भी थे। उन्होंने संस्कृत में 'रत्नावली', 'प्रियदर्शिका' और 'नागानंद' जैसे तीन प्रसिद्ध नाटकों की रचना की। 'नागानंद' में बौद्ध धर्म का प्रभाव और त्याग की कथा वर्णित है। अन्य नाटक जैसे 'मालतीमाधव' भवभूति की और 'मत्तविलास प्रहसन' महेंद्रवर्मन की कृतियाँ हैं। हर्ष के नाटक उनकी साहित्यिक अभिरुचि और उनके काल की सांस्कृतिक समृद्धि के परिचायक हैं।

29. (1) I, II और III
हर्षवर्धन की मृत्यु के पश्चात उत्तर भारत में राजनैतिक शून्यता उत्पन्न हुई। इसका लाभ उठाकर अर्जुन नामक मंत्री ने सत्ता हड़पने का प्रयास किया। उस समय आए चीनी दूत वांग-ह्वेन-त्से ने तिब्बती और नेपाली सेना की सहायता से उसे पराजित किया। हालांकि, हर्ष के बाद साम्राज्य कई छोटे स्वतंत्र राज्यों में विभक्त हो गया और चालुक्यों का मगध पर कोई स्थायी अधिकार स्थापित नहीं हो सका था।

30. (4) मौखरि एक राजनीतिक शक्ति के रुप में पूरी तरह से लुप्त हो गए और चालुक्य राज्य में विलीन हो गए।
हर्ष की मृत्यु के उपरांत उत्तर भारत में राजनैतिक विखंडन हुआ और गुर्जर-प्रतिहार जैसी क्षेत्रीय शक्तियाँ उभरीं। इस काल में भूमि दान की प्रथा ने सामंतवाद को सुदृढ़ किया, जिससे स्थानीय शासक शक्तिशाली हो गए। यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि मौखरि राजवंश पूर्णतः समाप्त होकर दक्षिण के चालुक्य राज्य में विलीन हो गया था। वास्तव में, कन्नौज पर प्रभुत्व हेतु विभिन्न शक्तियों के मध्य दीर्घकालिक संघर्ष निरंतर जारी रहा।

31. (1) यह शास्त्रीय संस्कृत साहित्य, कला और विज्ञान में महत्वपूर्ण प्रगति को दर्शाता है।
गुप्त काल को 'स्वर्ण युग' उसकी सांस्कृतिक और बौद्धिक उपलब्धियों के कारण कहा जाता है। इस काल में कालिदास जैसे साहित्यकार, आर्यभट्ट जैसे वैज्ञानिक और उत्कृष्ट मंदिर स्थापत्य का विकास हुआ। शास्त्रीय संस्कृत साहित्य अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँचा और कला के विशिष्ट मानक स्थापित हुए। यह उपाधि सामाजिक समानता के बजाय ज्ञान, विज्ञान और रचनात्मकता के क्षेत्र में हुई अभूतपूर्व प्रगति और भारतीय संस्कृति के पुनरुत्थान का प्रतीक है।

32. (2) समुद्रगुप्त
समुद्रगुप्त ने अपनी विजयों के पश्चात संप्रभुता प्रदर्शित करने हेतु प्राचीन वैदिक परंपरा के अनुसार अश्वमेध यज्ञ किया था। इस उपलक्ष्य में उसने विशेष स्वर्ण मुद्राएं जारी कीं, जिन पर यज्ञ स्तंभ के सम्मुख खड़े घोड़े का चित्र और 'अश्वमेध पराक्रमः' की उपाधि अंकित है। यह उसकी सैन्य श्रेष्ठता और ब्राह्मणवादी

Click Here to Buy book on Amazon

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs,
you are wasting valuable time.

Research shows that learning from
PRINTED BOOKS has up to
4× HIGHER RETENTION
than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS**
move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND**
in competition.

In competitive exams,
being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

धर्म के प्रति निष्ठा को दर्शाता है। समुद्रगुप्त के ये सिक्के उसकी महानता और धार्मिक नीति के जीवंत प्रमाण हैं।

33. (2) उन्होंने जैन धर्म और बौद्ध धर्म के अनुयायियों को सक्रिय रूप से प्रताड़ित किया, जिससे कई विहारों का विनाश हुआ।
गुप्त शासक व्यक्तिगत रूप से वैष्णव मत के अनुयायी थे और उन्होंने 'परम-भागवत' की उपाधि धारण की थी। उनके काल में मंदिर निर्माण और ब्राह्मणवाद का पुनरुत्थान हुआ। हालांकि, उनकी नीति अत्यंत उदार थी और उन्होंने अन्य मतों का कभी उत्पीड़न नहीं किया। उन्होंने बौद्ध और जैन धर्मों को भी पर्याप्त संरक्षण दिया। नालंदा और सारनाथ जैसे केंद्र गुप्त काल में ही शिक्षा और कला के प्रमुख स्तंभ बनकर उभरे थे।

34. (3) केवल V
गुप्त काल में शूद्रों की स्थिति में सुधार हुआ और उन्हें धार्मिक ग्रंथ सुनने का अधिकार मिला। चांडालों जैसी अस्पृश्य श्रेणियों की संख्या बढ़ी और व्यापारिक श्रेणियों को स्वायत्तता प्राप्त हुई। ब्राह्मणों को प्रदत्त 'अग्रहार' दान से केंद्रीय नियंत्रण शिथिल हुआ। हालांकि, इस काल में रोमन व्यापार का पतन प्रारंभ हो गया था, अतः इसे अर्थव्यवस्था का सबसे मुख्य कारक मानना ऐतिहासिक रूप से सही नहीं होगा क्योंकि व्यापार संकुचित हो रहा था।

35. (3) स्कंदगुप्त
'भीतरी स्तंभ लेख' उत्तर प्रदेश के गाजीपुर में स्थित है और गुप्त सम्राट स्कंदगुप्त से संबंधित है। इसमें स्कंदगुप्त की वीरता, विशेषकर पुष्पमित्रों और आक्रमणकारी हूणों के विरुद्ध उसके सफल संघर्ष का विवरण मिलता है। अभिलेख के अनुसार, उसने हूणों को पराजित कर साम्राज्य की रक्षा की थी। यह उसके सैन्य कौशल और साम्राज्य को पतन से बचाने के प्रयासों का महत्वपूर्ण साक्ष्य है, जो तत्कालीन राजनैतिक संकट को स्पष्ट करता है।

36. (4) हिरण्य - कपास
गुप्त काल में कृषि अर्थव्यवस्था का मुख्य स्तंभ थी। 'यव' का अर्थ जौ, 'गोधूम' का गेहूं और 'इक्षु' का तात्पर्य गन्ना था। ये शब्द तत्कालीन कृषि शब्दावली का हिस्सा थे। इसके विपरीत, 'हिरण्य' किसी फसल का नाम न होकर नकद रूप में चुकाए जाने वाले एक प्रकार के राजस्व कर को कहा जाता था। कपास हेतु संस्कृत साहित्य में 'कार्पास' शब्द का प्रयोग मिलता है। अतः हिरण्य का कृषि उपज से संबंध नहीं है।

37. (3) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
गुप्त काल विज्ञान और साहित्य के समन्वय का युग था। वराहमिहिर की 'पंचसिद्धांतिका' खगोलीय पद्धतियों का संकलन है। वाग्भट्ट का 'अष्टांगहृदय' आयुर्वेद का प्रामाणिक ग्रंथ है। अमरसिंह ने संस्कृत शब्दावली हेतु 'अमरकोश' की रचना की। आर्यभट्ट की 'आर्यभटीय' गणित और खगोल विज्ञान में क्रांतिकारी योगदान देती है। ये सभी कृतियाँ भारतीय ज्ञान परंपरा की श्रेष्ठता को विश्व स्तर पर प्रतिस्थापित करती हैं और तत्कालीन बौद्धिक प्रगति का दर्पण हैं।

38. (2) भू-स्वामी बिचौलियों का उदय और विकेंद्रीकृत राजनीतिक शक्ति
गुप्त और गुप्तोत्तर काल में ब्राह्मणों को कर-मुक्त भूमि दान देने की 'अग्रहार' प्रथा से समाज में एक नए भू-स्वामी वर्ग का उदय हुआ। यह वर्ग राज्य और कृषकों के मध्य बिचौलिए के रूप में उभरा, जिससे केंद्रीय सत्ता का भूमि और राजस्व पर नियंत्रण दुर्बल हो गया। राजनैतिक शक्ति स्थानीय सामंतों के हाथों में केंद्रित होने लगी। इस प्रक्रिया ने भारतीय समाज में सामंतवाद की जड़ों को गहरा किया और विकेंद्रीकरण को बढ़ावा दिया।

39. (3) A सही है लेकिन R गलत है।
अजंता की गुफाओं की चित्रकला वाकाटक और गुप्त काल में अपने शिखर पर पहुँची, जो रंगों और रेखाओं के परिष्कृत प्रयोग के लिए प्रसिद्ध है। यह भारतीय चित्रकला का स्वर्णिम अध्याय है। हालांकि, यह कहना पूर्णतः असत्य है कि वाकाटक शासकों ने स्वतंत्र मंदिरों का निर्माण त्याग दिया था। वास्तव में, वाकाटक काल में शैलकृत गुफाओं के साथ-साथ ईंटों और पत्थरों के स्वतंत्र संरचनात्मक मंदिरों के निर्माण के अनेक पुख्ता प्रमाण प्राप्त होते हैं।

40. (1) एक हूण राजा जिसने पश्चिमी और मध्य भारत के कुछ हिस्सों पर विजय प्राप्त की थी।
तोरमाण एक शक्तिशाली हूण शासक था, जिसने पांचवीं शताब्दी के अंत में भारत पर आक्रमण किया। उसने गुप्त साम्राज्य की आंतरिक निर्बलता का लाभ उठाकर पश्चिमी और मध्य भारत के बड़े भाग पर अधिकार कर लिया था। उसके पुत्र मिहिरकुल ने हूण सत्ता का और विस्तार किया। तोरमाण के सिक्कों और अभिलेखों से मालवा तक उसकी प्रभावी उपस्थिति का पता चलता है, जिसने गुप्त साम्राज्य के पतन और राजनैतिक अस्थिरता की गति को तीव्र कर दिया था।

NODIA

41. (3) अग्नि या जल परीक्षा द्वारा न्याय और राजा के विरुद्ध राजद्रोह के लिए कठोर दंड
चीनी यात्री ह्वेनसांग ने हर्ष की न्याय प्रणाली का विस्तृत वर्णन किया है। उसके अनुसार, सत्य के अन्वेषण हेतु अग्नि, जल या विष जैसी कठिन परीक्षाओं का प्रचलन था। यद्यपि सामान्य अपराधों हेतु दंड बहुत कठोर नहीं थे, किंतु राजद्रोह या गंभीर सामाजिक अपराधों के लिए अंग-भंग अथवा आजीवन निर्वासन जैसे कठोर दंड दिए जाते थे। यह व्यवस्था कानून का भय बनाए रखने और सामाजिक मर्यादाओं की रक्षा करने हेतु अत्यंत प्रभावी मानी जाती थी।

42. (1) तंजावुर के चोल
गुप्त साम्राज्य के विघटन के पश्चात उत्तर भारत में मौखरि, पुष्यभूति और परवर्ती गुप्त जैसे क्षेत्रीय राजवंशों का उदय हुआ, जो वर्चस्व हेतु परस्पर संघर्षरत रहे। इसके विपरीत, तंजावुर के चोल राजवंश का संबंध दक्षिण भारत से था। उनका उत्थान उत्तर भारतीय राजनैतिक परिवर्तनों से स्वतंत्र था और वे गुप्तोत्तर काल के काफी समय पश्चात दक्षिण में एक महाशक्ति के रूप में उभरे थे। अतः उन्हें उत्तर भारतीय उत्तराधिकारी राज्यों की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता।

43. (4) राजकीय गठबंधनों के आधार के रूप में अंतर-जातीय विवाहों का उत्सव मनाया जाता था।
ह्वेनसांग के अनुसार, 7वीं शताब्दी का समाज कठोर वर्ण व्यवस्था पर आधारित था। ब्राह्मण और क्षत्रिय अपने उच्च नैतिक आचरण हेतु सम्मानित थे। खान-पान में शुद्धता का विशेष ध्यान रखा जाता था और कुछ विशेष वस्तुओं के सेवन से परहेज किया जाता था। हालांकि, समाज में अंतर-जातीय विवाहों को सामाजिक या राजनैतिक मान्यता प्राप्त नहीं थी और न ही इनका कोई सार्वजनिक उत्सव मनाया जाता था। समाज परंपरावादी था और वर्णों की शुचिता बनाए रखने पर जोर देता था।

44. (2) केवल II और III
हर्षवर्धन की मृत्यु के पश्चात उत्तर भारत में केंद्रीय सत्ता लुप्त हो गई, जिससे राजनैतिक अस्थिरता बढ़ी। कन्नौज पर नियंत्रण हेतु पाल, प्रतिहार और राष्ट्रकूटों के मध्य दीर्घकालिक 'त्रिपक्षीय संघर्ष' हुआ। इसी काल में क्षेत्रीय स्वामियों के स्वतंत्र होने से सामंतवाद की प्रक्रिया तीव्र हुई। यह धारणा असत्य है कि हर्ष के उपरांत पाटलिपुत्र आधारित किसी एकीकृत सत्ता ने शासन किया। वास्तव में, सत्ता का केंद्र अब पाटलिपुत्र से हटकर पूर्णतः कन्नौज की ओर स्थानांतरित हो चुका था।

45. (3) लंबी दूरी के व्यापार में गिरावट और आत्मनिर्भर ग्रामीण अर्थव्यवस्थाओं का उदय
गुप्तोत्तर काल में स्वर्ण मुद्राओं की कमी और कौड़ियों के बढ़ते प्रयोग का मुख्य कारण आर्थिक संकुचन था। रोमन साम्राज्य के पतन और हूणों के आक्रमणों से विदेशी व्यापार मंद पड़ा, जिससे नगरों का ह्रास हुआ। अर्थव्यवस्था धीरे-धीरे कृषि आधारित और स्थानीय रूप से आत्मनिर्भर होने लगी। विनिमय हेतु कीमती धातुओं के स्थान पर स्थानीय मुद्राओं का उपयोग व्यापार के पतन का सूचक था। इस आर्थिक परिवर्तन ने तत्कालीन समाज को अधिक ग्रामीण और सामंती बना दिया था।

46. (2) 319-320 ईस्वी
भारतीय इतिहास में गुप्त संवत का प्रारंभ 319-320 ईस्वी में चंद्रगुप्त प्रथम के राज्यारोहण के साथ माना जाता है। इसी तिथि से गुप्त शासकों ने अपनी वंशावली और प्रमुख घटनाओं का लेखा-जोखा रखना प्रारंभ किया था। यह संवत विदेशी कुषाण सत्ता के अंत और एक शक्तिशाली स्वदेशी साम्राज्य के उदय का प्रतीक है। इसने उत्तर भारत को राजनैतिक एकता प्रदान की और आने वाली कई शताब्दियों तक भारतीय कालक्रम का एक महत्वपूर्ण आधार बना रहा।

47. (1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
गुप्त प्रशासन में 'संधि विग्रहिक' युद्ध और शांति का मंत्री था। 'कुमारमात्य' उच्च प्रशासनिक अधिकारी थे जो केंद्र और प्रांतों के मध्य कड़ी का कार्य करते थे। 'महादंडनायक' न्यायाधीश और पुलिस प्रमुख का पद था, जबकि 'भाण्डागाराधिकृत' राजकोष का प्रबंधक होता था। यह संगठित नौकरशाही तंत्र गुप्त साम्राज्य की प्रशासनिक कुशलता और सुदृढ़ शासन व्यवस्था का प्रमाण था। इन पदों के माध्यम से सम्राट विशाल साम्राज्य पर प्रभावी नियंत्रण बनाए रखने में सफल रहते थे।

48. (2) कृषि उपज का पारंपरिक राजा का हिस्सा, जो सामान्यतः छठा हिस्सा होता था
गुप्त काल में 'भाग' नामक कर राजस्व का प्रमुख आधार था। यह कृषक की कुल उपज का वह हिस्सा था जो उसे पारंपरिक रूप से राजा को कर के रूप में देना पड़ता था। धार्मिक ग्रंथों के अनुसार, यह प्रायः कुल उपज का छठा भाग होता था। चूँकि राज्य की आय मुख्य रूप से कृषि पर निर्भर थी, इसलिए इस कर का संग्रह नियमित और व्यवस्थित था। यह प्रणाली तत्कालीन कृषि आधारित अर्थव्यवस्था के सुचारु संचालन हेतु अत्यंत आवश्यक थी।

49. (2) I, II और IV
चीनी यात्री फाह्यान ने गुप्तकालीन समाज को समृद्ध और शांत बताया है। उसके अनुसार, लोग बिना किसी कठोर राजकीय हस्तक्षेप के रहते थे और प्रशासन उदार था। दंड स्वरूप प्रायः आर्थिक जुर्माने ही लगाए जाते थे और शारीरिक प्रताड़ना अत्यंत दुर्लभ थी। समाज में अहिंसा और शाकाहार का प्रभाव था। हालांकि, उसने अनिवार्य सैन्य सेवा या घरों के पंजीकरण जैसी किसी व्यवस्था का वर्णन नहीं किया है, जो प्रशासन की सहजता और प्रजा की स्वतंत्रता को प्रदर्शित करता है।

50. (1) वल्लभी - कदंब
गुप्तोत्तर काल में थानेसर के पुष्यभूति, कामरूप के वर्मन और कन्नौज के मौखरि प्रमुख शक्तियाँ थे। वल्लभी में मैत्रक राजवंश का शासन था, न कि कदंबों का। कदंब राजवंश का विस्तार मुख्य रूप से दक्षिण भारत के कर्नाटक क्षेत्र में था, जिसकी राजधानी वनवासी थी। वल्लभी के मैत्रक अपनी सहिष्णुता और शिक्षा के संरक्षण हेतु विख्यात थे। अतः वल्लभी और कदंब का मेल ऐतिहासिक रूप से अशुद्ध है, क्योंकि दोनों का भौगोलिक क्षेत्र पूर्णतः भिन्न था।

51. (3) महरौली, दिल्ली
दिल्ली का महरौली लौह स्तंभ गुप्तकालीन धातु विज्ञान की उन्नत अवस्था का बेजोड़ प्रमाण है। इस पर 'चंद्र' नामक राजा की विजयों का उल्लेख है, जिनकी पहचान चंद्रगुप्त द्वितीय से की जाती है। सदियों तक खुले में रहने के बाद भी इस पर जंग न लगना प्राचीन भारतीय रसायन शास्त्रियों और इंजीनियरों की तकनीकी श्रेष्ठता को दर्शाता है। यह स्तंभ आज भी विश्व के वैज्ञानिकों हेतु आश्चर्य का विषय है और तत्कालीन औद्योगिक कौशल का उत्कृष्ट प्रतीक माना जाता है।

52. (1) II, IV, I, III
भारत आने वाले चीनी यात्रियों का क्रम ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। सर्वप्रथम फाह्यान चंद्रगुप्त द्वितीय के काल (5वीं सदी) में आया। तदुपरांत सुंग युन (6वीं सदी) आया। सातवीं शताब्दी में सम्राट हर्ष के समय ह्वेनसांग आया, जिसने नालंदा में अध्ययन किया। अंत में, इत्सिंग (7वीं सदी उत्तरार्ध) ने यात्रा की और बौद्ध विहारों का विवरण दिया। यह क्रम भारत में बौद्ध धर्म के प्रभाव और विभिन्न कालखंडों की सामाजिक-राजनैतिक स्थिति को समझने में सहायक सिद्ध होता है।

Downloaded from www.pdf.tube

53. (3) हूणों के आक्रमणों ने सेना को दुर्बल कर दिया और राजकोष को रिक्त कर दिया, जिससे प्रांतीय स्वतंत्रता का मार्ग प्रशस्त हुआ।
छठी शताब्दी में हूणों के निरंतर आक्रमणों ने गुप्त साम्राज्य के पतन में निर्णायक भूमिका निभाई। इन हमलों ने उत्तर-पश्चिमी रक्षा कवच को ध्वस्त कर दिया और निरंतर युद्धों ने राजकोष को रिक्त कर दिया। केंद्रीय सत्ता के आर्थिक और सैन्य रूप से दुर्बल होते ही प्रांतीय गवर्नरों ने स्वयं को स्वतंत्र घोषित कर दिया। इस आंतरिक विखंडन और बाहरी दबाव के सामूहिक प्रभाव ने अंततः गुप्तों की महान शक्ति को समाप्त कर उत्तर भारत में अस्थिरता उत्पन्न की।

54. (3) केवल V
गुप्त काल में मंदिर स्थापत्य के नए मानक स्थापित हुए, जिसका उदाहरण देवगढ़ का दशावतार मंदिर है। इस युग में पत्थरों की नक्काशी और पौराणिक कथाओं का अंकन प्रारंभ हुआ। हालांकि, एलोरा की गुफाओं का निर्माण चंद्रगुप्त द्वितीय द्वारा नहीं किया गया था। इनका विकास मुख्य रूप से 5वीं से 10वीं शताब्दी के मध्य राष्ट्रकूट और अन्य उत्तरवर्ती राजवंशों के संरक्षण में हुआ था। गुप्त काल मुख्य रूप से स्वतंत्र संरचनात्मक मंदिरों और उत्कृष्ट मूर्तिकला के विकास के लिए विख्यात रहा है।

55. (4) वल्लभी के मैत्रकों को हर्ष द्वारा पूरी तरह से समाप्त कर दिया गया था और उनके क्षेत्रों को स्थायी रूप से मगध में मिला लिया गया था।
हर्षवर्धन के काल में पुष्यभूति वंश ने कन्नौज को अपनी राजधानी बनाकर विशाल साम्राज्य स्थापित किया। हर्ष ने वल्लभी के मैत्रक शासक ध्रुवसेन द्वितीय पर आक्रमण किया, किंतु उसे समाप्त करने के बजाय वैवाहिक संबंध स्थापित कर मित्र बना लिया। मैत्रकों ने वल्लभी से अपना स्वायत्त शासन हर्ष के उपरांत भी जारी रखा। अतः यह कहना कि हर्ष ने मैत्रकों को पूर्णतः नष्ट कर दिया था, ऐतिहासिक रूप से त्रुटिपूर्ण है। हर्ष की नीति प्रायः अधीनता स्वीकार करने वाले राजाओं के प्रति उदार थी।

56. (1) उन्होंने प्रतिपादित किया कि पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है और सूर्य तथा चंद्र ग्रहणों के लिए वैज्ञानिक व्याख्या प्रदान की।
आर्यभट्ट गुप्त काल के महान गणितज्ञ और खगोलशास्त्री थे। उन्होंने अपनी कृति 'आर्यभटीय' में प्रतिपादित किया कि पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है। उन्होंने सूर्य और चंद्र ग्रहणों की वैज्ञानिक व्याख्या की, जो तत्कालीन अंधविश्वासों को चुनौती देती थी। इसके अतिरिक्त, उन्होंने पाई का सटीक मान निकाला और बीजगणित के विकास में अमूल्य योगदान दिया। उनके ये सिद्धांत आज भी खगोल विज्ञान के आधार स्तंभ माने जाते हैं, जो प्राचीन भारत की वैज्ञानिक प्रगति के परिचायक हैं।

57. (3) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
हर्ष के प्रशासन में 'महासंधिविग्रहाधिकृत' युद्ध और शांति का सर्वोच्च अधिकारी था। 'आयुक्त' जिला स्तर पर प्रशासन और राजस्व की देखरेख करते थे। 'महाप्रतिहार' राजप्रासाद और सम्राट की सुरक्षा का प्रमुख था। 'उद्रंग' एक प्रकार का स्थाई कर था जो कृषकों से लिया जाता था। यह प्रशासनिक ढांचा हर्ष के विशाल साम्राज्य पर प्रभावी नियंत्रण रखने हेतु निर्मित किया गया था। इन पदों की व्यवस्था दर्शाती है कि हर्ष का शासन तंत्र व्यवस्थित और सैन्य व्यवस्था पर आधारित था।

58. (1) लंबी दूरी के व्यापार में गिरावट और भूमि दान में वृद्धि द्वारा चिन्हित एक तेजी से स्थानीयकृत अर्थव्यवस्था
उत्तर गुप्त काल में अंतरराष्ट्रीय व्यापार के असुरक्षित होने से नगरों का ह्रास हुआ। इसके स्थान पर अधिकारियों और ब्राह्मणों को दिए गए भूमि दान से एक नए भू-स्वामी वर्ग का उदय हुआ। अर्थव्यवस्था अधिक ग्रामीण और स्थानीय रूप से आत्मनिर्भर हो गई। मुद्राओं का प्रचलन कम होने से वस्तु-विनिमय और कौड़ियों का उपयोग बढ़ा। यह परिवर्तन व्यापारिक संकुचन और सामंतवाद की बढ़ती प्रवृत्ति का संकेत था, जिसने समाज की आर्थिक संरचना को पूर्णतः परिवर्तित कर दिया था।

59. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
हर्षवर्धन ने सैन्य शक्ति से विशाल साम्राज्य बनाया, किंतु उसकी मृत्यु के उपरांत यह बिखर गया। इसका मुख्य कारण एक सुदृढ़ और केंद्रीकृत नौकरशाही का अभाव था। हर्ष की सत्ता सामंतों और विजित राजाओं की व्यक्तिगत निष्ठा पर टिकी थी। जैसे ही केंद्रीय नेतृत्व कमजोर हुआ, इन सामंतों ने अपनी सैन्य शक्ति का प्रयोग स्वतंत्रता हेतु किया। मौर्यों के विपरीत, हर्ष की शासन व्यवस्था में राजनैतिक स्थिरता हेतु आवश्यक प्रशासनिक संस्थाओं का वह स्तर नहीं था जो साम्राज्य को अखंड रख सके।

60. (2) मिहिरकुल
गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद मगध और मालवा में 'परवर्ती गुप्त' राजवंश का उदय हुआ, जिसमें कृष्णगुप्त और आदित्यसेन जैसे शासक थे। इन्होंने अपनी प्रतिष्ठा पुनः स्थापित करने का प्रयास किया। इसके विपरीत, मिहिरकुल इस वंश का अंग नहीं था, बल्कि वह एक क्रूर हूण आक्रमणकारी था। मिहिरकुल ने उत्तर भारत में तबाही मचाई थी, जिसे अंततः यशोधर्मन और नरसिंहगुप्त बालादित्य ने पराजित कर खदेड़ा था। अतः मिहिरकुल का संबंध परवर्ती गुप्तों के स्थान पर हूणों की बर्बर सत्ता से था।

NODIA

61. (3) श्री गुप्त
ऐतिहासिक साक्ष्यों के अनुसार, गुप्त वंश की स्थापना 240 ईस्वी में 'श्री गुप्त' द्वारा की गई थी। वह इस राजवंश का प्रथम पुरुष था, किंतु उसने 'महाराजाधिराज' के स्थान पर केवल 'महाराज' की साधारण उपाधि धारण की थी। यह इंगित करता है कि वह किसी अन्य बड़ी शक्ति का अधीनस्थ सामंत था। उसके पश्चात घटोत्कच ने शासन किया, परंतु गुप्तों का वास्तविक स्वतंत्र साम्राज्य विस्तार और राजनैतिक प्रभुत्व चंद्रगुप्त प्रथम के राज्यारोहण के साथ ही व्यापक रूप से प्रारंभ हुआ था।

62. (1) आर्यावर्त के अभियान, दक्षिणापथ के अभियान, आठविक राज्यों पर विजय, सीमावर्ती राज्यों का दमन, विदेशी शक्तियों के साथ संबंध
समुद्रगुप्त की विजयों का विवरण प्रयाग प्रशस्ति में क्रमबद्ध है। उसने सर्वप्रथम आर्यावर्त के राजाओं का उन्मूलन किया,

फिर दक्षिणापथ के बारह राजाओं को पराजित कर उन्हें मुक्त किया। उसने मध्य भारत के आठविक राज्यों को अपना दास बनाया और सीमावर्ती राज्यों से कर प्राप्त किया। अंततः उत्तर-पश्चिम की विदेशी शक्तियों के साथ कूटनीतिक संबंधों से अपनी सर्वोच्चता सिद्ध की। यह क्रमबद्ध सैन्य अभियान उसे 'भारतीय नेपोलियन' के रूप में प्रतिष्ठित करता है और उसकी साम्राज्यवादी दूरदर्शिता को दर्शाता है।

63. (1) लोथल
गुप्त और गुप्तोत्तर काल शिक्षा के उत्कर्ष हेतु प्रसिद्ध है। नालंदा विश्वविद्यालय इस युग का प्रमुख अंतरराष्ट्रीय केंद्र था। वल्लभी और विक्रमशिला भी उच्च शिक्षा के विख्यात स्थान थे। इसके विपरीत, लोथल एक प्राचीन हड़प्पाकालीन बंदरगाह था, जिसका महत्व कांस्य युग में व्यापारिक दृष्टि से था। गुप्त काल तक लोथल का कोई ऐतिहासिक महत्व एक शैक्षणिक संस्थान के रूप में विद्यमान नहीं था। अतः लोथल को तत्कालीन विश्वविद्यालयों की श्रेणी में रखना ऐतिहासिक तथ्यों के प्रतिकूल होगा।

64. (2) केवल II और III
गुप्त प्रशासन की विशेषता शक्ति का विकेंद्रीकरण था। जिला और नगर प्रशासन में व्यापारियों, श्रेणियों और शिल्पकारों के प्रतिनिधियों की सक्रिय भागीदारी थी। ब्राह्मणों को प्रदत्त 'अग्रहार' भूमि ने स्वायत्त क्षेत्रों को जन्म दिया जहाँ राजकीय हस्तक्षेप न्यूनतम था। यह कहना असत्य है कि ग्राम परिषदों के पास कोई शक्ति नहीं थी, क्योंकि ग्रामीण सभाएं स्थानीय मामलों के प्रबंधन में काफी स्वतंत्र थीं। यह व्यवस्था दर्शाती है कि शासन के विभिन्न स्तरों पर स्थानीय निकायों को पर्याप्त राजनैतिक अधिकार प्राप्त थे।

65. (2) किसी विशेष व्यापार के व्यापारियों या शिल्पकारों का संघ
गुप्तकालीन अर्थव्यवस्था में 'श्रेणी' व्यापारिक गिल्ड या संघों का प्रतिनिधित्व करती थी। ये श्रेणियां विशेष शिल्प या व्यापार से जुड़े व्यक्तियों का समूह थीं, जिनके अपने नियम और न्यायालय होते थे। वे न केवल गुणवत्ता और मूल्यों का निर्धारण करती थीं, बल्कि आधुनिक बैंकों की भांति पूंजी निवेश और ऋण का कार्य भी करती थीं। श्रेणियों की यह स्वायत्तता और आर्थिक शक्ति गुप्त साम्राज्य के राजस्व और व्यापारिक समृद्धि का एक सुदृढ़ स्तंभ मानी जाती थी।

66. (1) भवभूति - सूर्य सिद्धांत
गुप्तोत्तर काल में बाणभट्ट ने 'कादंबरी' और हर्ष ने 'रत्नावली' की रचना की। दंडी की 'दशकुमारचरितम्' प्रसिद्ध गद्य काव्य है। हालांकि, भवभूति का संबंध 'सूर्य सिद्धांत' से नहीं है। उन्होंने 'उत्तररामचरित' जैसे महान नाटकों की रचना की थी। 'सूर्य सिद्धांत' खगोल विज्ञान का प्राचीन ग्रंथ है, जिसका श्रेय किसी नाटककार को नहीं बल्कि भारतीय खगोलविदों की परंपरा को दिया जाता है। यह ग्रंथ ग्रहों की गति और खगोलीय गणनाओं हेतु आज भी भारतीय ज्योतिष में आधारभूत ग्रंथ माना जाता है।

67. (3) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
प्राचीन भारत के वैज्ञानिक ग्रंथ महान मनीषियों की बौद्धिक उपलब्धि हैं। वराहमिहिर की 'वृहद संहिता' एक विशाल विश्वकोश है। ब्रह्मगुप्त का 'ब्रह्मस्फुटसिद्धांत' खगोल और गणित के नियमों का विवेचन करता है। 'सुश्रुत संहिता' शल्य चिकित्सा का आधारभूत आयुर्वेद ग्रंथ है। भास्कराचार्य की 'लीलावती' मध्यकालीन गणित की श्रेष्ठ रचना है, जिसमें जटिल प्रश्नों को काव्यात्मक शैली में सुलझाया गया है। ये ग्रंथ प्राचीन भारत के वैज्ञानिक दृष्टिकोण और शोध परंपरा को वैश्विक स्तर पर प्रतिष्ठित करने में सहायक सिद्ध हुए हैं।

68. (4) राज्य या जमींदारों द्वारा ली जाने वाली अनिवार्य बेगार (निशुल्क मजदूरी)
गुप्त काल में 'विष्टि' शब्द का प्रयोग अनिवार्य या बलात श्रम हेतु किया जाता था। इस प्रथा के अंतर्गत कृषकों और श्रमिकों को राज्य या सामंतों हेतु बिना किसी पारिश्रमिक के कार्य करना अनिवार्य था। यद्यपि मौर्य काल में यह कर का एक रूप था, किंतु गुप्त काल में यह सामंती शोषण का प्रतीक बन गया। अभिलेखों से ज्ञात होता है कि भूमि दान के समय विष्टि का अधिकार भी दानग्राही को दिया जाता था, जो ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर बढ़ते दबाव को दर्शाता है।

69. (1) I और IV
हूण मध्य एशिया के योद्धा थे जिन्होंने खैबर दर्रे से भारत पर आक्रमण किया। स्कंदगुप्त ने अपनी वीरता से उन्हें पराजित कर साम्राज्य की रक्षा की थी। हालांकि, निरंतर हूण हमलों ने गुप्त साम्राज्य के आर्थिक संसाधनों और राजकोष को गंभीर क्षति पहुँचाई। हूण शासक मिहिरकुल अपनी क्रूरता और बौद्ध धर्म के प्रति घृणा हेतु जाना जाता था। ह्वेनसांग के वृत्तांतों के अनुसार, उसने अनेक मठों को नष्ट किया था, जो हूणों की विध्वंसक मानसिकता और धार्मिक असहिष्णुता का प्रत्यक्ष प्रमाण था।

70. (2) उन्होंने काव्य शैली को उत्कृष्ट बनाया और 'अभिज्ञानशाकुंतलम्' तथा 'मेघदूत' जैसी अमर कृतियाँ लिखीं।
महाकवि कालिदास गुप्त काल की महान साहित्यिक विभूति थे। उन्होंने संस्कृत साहित्य को सौंदर्य और अभिव्यक्ति के शिखर पर पहुँचाया। उनकी कृतियों में 'अभिज्ञानशाकुंतलम्' विश्व का सर्वश्रेष्ठ नाटक और 'मेघदूत' प्रकृति वर्णन का अद्भुत काव्य माना जाता है। कालिदास के ग्रंथ तत्कालीन समाज, मानवीय संवेदनाओं और भारतीय संस्कृति की समृद्ध विरासत को सजीव रूप में प्रस्तुत करते हैं। उनका मुख्य योगदान रचनात्मक साहित्य और काव्य कला में है, जिसने उन्हें 'भारत का शेक्सपियर' होने का सम्मान दिलाया है।

71. (4) पाटलिपुत्र
गुप्त काल में भारत का समुद्री व्यापार अत्यंत उन्नत था। पूर्वी तट पर 'ताम्रलिप्ति' और पश्चिमी तट पर 'भृगुकच्छ' तथा 'कल्याण' प्रमुख व्यापारिक बंदरगाह थे, जहाँ से विदेशों के साथ संपर्क होता था। इसके विपरीत, पाटलिपुत्र गुप्त साम्राज्य की विशाल राजधानी और एक प्रमुख प्रशासनिक केंद्र था। यह गंगा नदी के तट पर स्थित था, किंतु यह समुद्र तट पर स्थित कोई समुद्री

Click Here to Buy book on Amazon

बंदरगाह नहीं था। अतः इसे बाह्य समुद्री व्यापार हेतु प्रयुक्त होने वाले तटीय बंदरगाहों की श्रेणी में नहीं गिना जा सकता।

72. (1) उसने अपने अंतिम वर्षों में हिंदू धर्म और जैन धर्म के प्रति सहिष्णुता बनाए रखते हुए बौद्ध धर्म को संरक्षण दिया।
सम्राट हर्षवर्धन का धार्मिक दृष्टिकोण अत्यंत उदार था। वह प्रारंभ में शिव और सूर्य का भक्त था, किंतु ह्वेनसांग के प्रभाव में आकर उसने बौद्ध धर्म के महायान मत को संरक्षण दिया। उसने कन्नौज और प्रयाग में धार्मिक सभाएं आयोजित कीं, जहाँ सभी मतों के विद्वान शास्त्रार्थ करते थे। हर्ष की उदारता का प्रमाण यह है कि उसने बौद्ध धर्म को बढ़ावा देने के साथ-साथ ब्राह्मणों और जैनियों के प्रति भी अपनी सहिष्णुता और दानशीलता सदैव बनाए रखी, जो उसकी महानता का परिचायक है।

73. (3) महिलाओं को पुरुषों के समान संपत्ति के अधिकारों और उत्तराधिकार में पूर्ण समानता प्राप्त थी।
गुप्त काल में महिलाओं की स्थिति मिश्रित थी। उच्च वर्ग की महिलाओं को शिक्षा के अवसर प्राप्त थे और एरण अभिलेख में सती प्रथा का प्रथम साक्ष्य भी मिलता है। साहित्य के अनुसार, सुसंस्कृत महिलाएं संस्कृत बोलती थीं, जबकि अन्य प्राकृत का प्रयोग करती थीं। हालांकि, विधिक रूप से महिलाओं को पुरुषों के समान संपत्ति के उत्तराधिकार का पूर्ण अधिकार प्राप्त नहीं था और वे पूर्णतः अपने संरक्षकों पर निर्भर थीं। यह दर्शाता है कि सांस्कृतिक प्रगति के बावजूद सामाजिक ढांचे में पितृसत्तात्मक मर्यादाएं बनी हुई थीं।

74. (1) केवल V
गुप्तोत्तर काल में क्षेत्रीय शक्तियों का उदय हुआ, जिसमें गौड़ शासक शशांक, कामरूप के वर्मन और वल्लभी के मैत्रक प्रमुख थे। वल्लभी शिक्षा का महत्वपूर्ण केंद्र बना। कन्नौज पर मौखरियों का अधिकार था, जिसे हर्ष ने अपनी सत्ता का केंद्र बनाया। यह धारणा असत्य है कि राजस्थान पूर्णतः गुप्तों के प्रत्यक्ष नियंत्रण में रहा, क्योंकि वहाँ भी अनेक स्थानीय शक्तियों ने अपनी स्वायत्तता स्थापित कर ली थी। यह काल भारतीय राजनीति में एक नई क्षेत्रीय चेतना और राजनैतिक विकेंद्रीकरण के उदय का समय था।

75. (4) ताम्रपत्र
गुप्त और गुप्तोत्तर काल में भूमि दान को स्थायी रूप से अभिलिखित करने हेतु तांबे की चादरों का प्रयोग होता था, जिन्हें 'ताम्रपत्र' कहते हैं। इन पर राजा की वंशावली, दान की गई भूमि और दानग्राही का विवरण उत्कीर्ण होता था। ये ताम्रपत्र शाही मुहर से अंकित और विधिक दस्तावेज के रूप में मान्य थे। आज ये अभिलेख तत्कालीन राजस्व प्रणाली, प्रशासन और वंशावली को समझने के सर्वाधिक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्रोत हैं, जो मध्यकालीन भारत की भूमि व्यवस्था पर व्यापक प्रकाश डालते हैं।

76. (2) मूर्ति पूजा लोकप्रिय हुई और स्थानीय पंथों का ब्राह्मणवादी ढांचे में संश्लेषण हुआ।
गुप्त काल में 'भक्ति' की अवधारणा ने धार्मिक जीवन को परिवर्तित कर दिया। व्यक्तिगत श्रद्धा पर बल देने से वैदिक कर्मकांडों के स्थान पर सरल उपासना लोकप्रिय हुई। इसके फलस्वरूप भव्य मंदिरों का निर्माण और मूर्ति पूजा का प्रसार हुआ। भक्ति आंदोलन के माध्यम से स्थानीय और लोक देवताओं को पौराणिक ढांचे में समाहित कर ब्राह्मणवादी धर्म को एक व्यापक पहचान मिली। यह धार्मिक समन्वय और संश्लेषण की प्रक्रिया थी, जिसने हिंदू धर्म को आधुनिक स्वरुप प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

77. (3) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
7वीं शताब्दी के व्यक्तित्व अपने राज्यों के उत्कर्ष से जुड़े थे। गृहवर्मन कन्नौज के मौखरि शासक थे, जिसका विवाह हर्ष की बहन राज्यश्री से हुआ। भास्करवर्मन कामरुप के शासक और हर्ष के घनिष्ठ सहयोगी थे। ध्रुवसेन द्वितीय वल्लभी के मैत्रक वंश से थे, जिन्होंने हर्ष की अधीनता स्वीकार की। शशांक बंगाल के गौड़ राज्य के कट्टर शैव शासक थे, जिन्होंने हर्ष के विस्तार का प्रबल विरोध किया। ये सभी शासक तत्कालीन उत्तर भारतीय राजनीति के महत्वपूर्ण स्तंभ और संघर्षों के मुख्य केंद्र थे।

78. (4) कुमारमात्य
गुप्त काल में 'दीनार' स्वर्ण मुद्राओं और 'रुपयक' चांदी के सिक्कों को कहा जाता था। चांदी के सिक्कों का प्रचलन चंद्रगुप्त द्वितीय की शक विजय के उपरांत बढ़ा। 'सुवर्ण' भी सोने के सिक्के हेतु प्रयुक्त नाम था। इसके विपरीत, 'कुमारमात्य' किसी मुद्रा का नाम नहीं था, बल्कि यह गुप्त प्रशासन के उच्च श्रेणी के अधिकारियों का एक विशिष्ट पद था। यह अधिकारी प्रायः महत्वपूर्ण प्रशासनिक और प्रांतीय दायित्वों का निर्वहन करते थे, जो शासन की रीढ़ माने जाते थे।

79. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
हर्ष का साम्राज्य विशाल था, किंतु मौर्यों की भांति इसमें केंद्रीकरण का अभाव था। हर्ष का शासन तंत्र सामंती था, जहाँ वह अपनी सैन्य शक्ति हेतु शक्तिशाली सामंतों पर निर्भर था। ये सामंत अपने क्षेत्रों में आंतरिक रूप से स्वायत्त थे। जैसे ही सम्राट का व्यक्तित्व निर्बल हुआ, इन सामंतों ने अपनी स्वतंत्रता घोषित कर दी, जिससे साम्राज्य का शीघ्र विघटन हुआ। यह संरचनात्मक कमजोरी ही हर्ष के साम्राज्य के स्थायित्व में बाधक बनी और मौर्यकालीन व्यवस्था के विपरीत विकेंद्रीकरण को बढ़ावा दिया।

80. (2) यह सती प्रथा का पहला अभिलेखीय साक्ष्य प्रदान करता है।
मध्य प्रदेश के सागर जिले में स्थित एरण अभिलेख (510 ईस्वी) गुप्त शासक भानुगुप्त के काल का है। इस शिलालेख का ऐतिहासिक महत्व यह है कि इसमें भारतीय इतिहास में पहली बार सती प्रथा का स्पष्ट लिखित साक्ष्य प्राप्त होता है। अभिलेख के अनुसार, सेनापति गोपराज की मृत्यु के पश्चात उनकी पत्नी ने अग्नि में प्रवेश कर सती होने का निर्णय लिया था। यह साक्ष्य तत्कालीन समाज में प्रचलित कठोर प्रथाओं और महिलाओं की स्थिति पर महत्वपूर्ण प्रकाश डालता है।

Downloaded from www.pdf.tube

अध्याय 06

दक्षिण भारतीय राजवंश : चालुक्य, पल्लव एवं चोल

NODIA

1. वातापी के चालुक्यों के सबसे प्रसिद्ध शासक, पुलकेशिन द्वितीय ने किस नदी के तट पर उत्तर भारतीय सम्राट हर्षवर्धन को निर्णायक रूप से पराजित किया था?
(1) गोदावरी
(2) नर्मदा
(3) कृष्णा
(4) तुंगभद्रा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

2. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A): हर्षवर्धन अपने साम्राज्य का विस्तार दक्कन से आगे दक्षिण की ओर नहीं कर सका।
कारण (R): पुलकेशिन द्वितीय ने एक निर्णायक युद्ध में हर्षवर्धन को पराजित किया और उसके दक्षिण की ओर बढ़ने के अभियान को रोक दिया।
नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

3. चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उसकी सैन्य उपलब्धियों का विवरण रविकीर्ति द्वारा रचित ऐहोल अभिलेख में मिलता है।
II. उसने पल्लव राजा नरसिंहवर्मन प्रथम को सफलतापूर्वक पराजित किया और कांचीपुरम पर अधिकार कर लिया।
III. उसने फारसी राजा खुसरु द्वितीय के दरबार में एक राजनयिक दूत मंडल भेजा था।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा संयोजन सही है?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

4. चालुक्यों के संबंध में निम्नलिखित दो कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: प्रारंभिक चालुक्यों की पहली राजधानी वातापी स्थानांतरित होने से पूर्व ऐहोल में स्थित थी।
कथन II: पुलकेशिन प्रथम को सामान्यतः वातापी के चालुक्य वंश का वास्तविक संस्थापक माना जाता है।
निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

5. निम्नलिखित में से किस शासक को चालुक्य राजा पुलकेशिन द्वितीय के हाथों सैन्य पराजय का सामना नहीं करना पड़ा था?
(1) कन्नौज का हर्षवर्धन
(2) पल्लव वंश का महेंद्रवर्मन प्रथम
(3) पल्लव वंश का नरसिंहवर्मन प्रथम
(4) बनवासी के कदम्ब
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

6. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (ऐहोल के मंदिर)
A. दुर्गा मंदिर
B. लाड खान मंदिर
C. मेगुती मंदिर
D. हुच्चिमल्ली गुड़ी मंदिर
सूची II: (प्रमुख विशेषता)
i. ऊंचे चबूतरे पर बना जैन मंदिर
ii. बौद्ध चैत्य के समान गज-पृष्ठाकार योजना
iii. इसमें एक रेखा-नागर शिखर है
iv. सपाट छत और लट्ठे के समान पत्थर की पट्टियों वाली पंचायतन शैली
(1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(2) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(3) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(4) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

7. निम्नलिखित में से कौन सा कथन बादामी के शैलकृत गुफा मंदिरों का सही वर्णन करता है?
(1) ये विशेष रूप से जैन तीर्थंकरों को समर्पित हैं जो प्रारंभिक मध्यकालीन कला को दर्शाते हैं।
(2) इनका उत्खनन मुख्य रूप से कल्याणी के परवर्ती चालुक्यों के शासनकाल के दौरान किया गया था।
(3) ये पूरी तरह से संरचनात्मक ग्रेनाइट से निर्मित हैं, इनमें

कोई शैलकृत खुदाई नहीं की गई है।
(4) ये चार गुफाएं हैं जिनमें ब्राह्मणवादी और जैन शैलकृत मंदिर शामिल हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

8. चालुक्य वास्तुकला के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह वेसर शैली के प्रारंभिक चरणों का प्रतिनिधित्व करती है, जिसमें उत्तरी और दक्षिणी वास्तुकला की विशेषताओं का मिश्रण है।
II. इनके संरचनात्मक मंदिरों का निर्माण बिना गारे के, पत्थरों को सटीक रूप से जोड़कर किया गया था।
III. इस वास्तुकला में शैलकृत गुफा मंदिर और स्वतंत्र रूप से निर्मित संरचनात्मक मंदिर दोनों शामिल हैं।
IV. इसमें सभी मंदिरों के शिखरों के लिए विशेष रूप से द्रविड़ शैली का उपयोग किया गया था।
कथनों का निम्नलिखित में से कौन सा संयोजन गलत है?
(1) केवल I और II
(2) केवल III
(3) केवल IV
(4) केवल II और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

9. बादामी की चार शैलकृत गुफाओं में से कौन सी गुफा सबसे बड़ी है और इसमें भगवान विष्णु को समर्पित जटिल नक्काशीदार चित्र हैं?
(1) गुफा 1
(2) गुफा 2
(3) गुफा 3
(4) गुफा 4
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

10. एक पुरातत्वविद् जो एक प्रारंभिक मध्यकालीन संरचनात्मक मंदिर का अध्ययन कर रहा है, जिसकी विशेषता गज-पृष्ठाकार तल योजना, एक प्रदक्षिणा पथ और उत्तरी शैली के शिखर का प्रारंभिक प्रयोग है, वह संभवतः किस स्थल का अध्ययन कर रहा होगा?
(1) दुर्गा मंदिर, ऐहोल
(2) कैलाशनाथ मंदिर, कांचीपुरम
(3) तटीय मंदिर, महाबलीपुरम
(4) बृहदेश्वर मंदिर, तंजावुर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

11. निम्नलिखित चालुक्य राजवंश की शाखाओं को उनकी स्थापना के सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए।
1. वातापी के चालुक्य
2. कल्याणी के परवर्ती चालुक्य
3. वेंगी के पूर्वी चालुक्य
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही अनुक्रम का चयन कीजिए:
(1) 1, 2, 3
(2) 1, 3, 2
(3) 3, 1, 2
(4) 2, 1, 3
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

12. निम्नलिखित में से किसे पुलकेशिन द्वितीय द्वारा वेंगी का प्रतिनिधि नियुक्त किया गया था और बाद में उसने स्वतंत्र पूर्वी चालुक्य वंश की स्थापना की थी?
(1) परवर्ती चालुक्य शाखा का तैलप द्वितीय
(2) कुब्ज विष्णुवर्धन
(3) बादामी वंश का विक्रमादित्य प्रथम
(4) पश्चिमी चालुक्यों का सोमेश्वर प्रथम
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

13. कल्याणी के परवर्ती चालुक्यों के बारे में निम्नलिखित दो कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: इस वंश की स्थापना तैलप द्वितीय ने राष्ट्रकूटों को पदच्युत करने के बाद की थी।
कथन II: इस वंश के राजा विक्रमादित्य षष्ठ ने 1076 ईस्वी में चालुक्य-विक्रम संवत की शुरुआत की थी।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा सही है?
(1) केवल कथन I
(2) केवल कथन II
(3) कथन I और कथन II दोनों
(4) न तो कथन I और न ही कथन II
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

14. कल्याणी के परवर्ती चालुक्यों के साथ उनके संबंध के आधार पर निम्नलिखित साहित्यिक हस्तियों में से विषम की पहचान कीजिए।
(1) बिल्हण
(2) विज्ञानेश्वर
(3) सोमेश्वर तृतीय
(4) रविकीर्ति
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

15. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A): वेंगी का पूर्वी चालुक्य राज्य अंततः चोल साम्राज्य में विलीन हो गया।
कारण (R): कुलोत्तुंग प्रथम, जो 1070 ईस्वी में चोल सिंहासन पर बैठा, एक चोल राजकुमारी से उत्पन्न पूर्वी चालुक्य राजकुमार था।
नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Click Here to Buy book on Amazon

16. पल्लव राजा महेंद्रवर्मन प्रथम के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. उसने संस्कृत प्रहसन 'मत्तविलास प्रहसन' की रचना की थी।
II. वह मूल रूप से जैन था लेकिन संत अप्पर ने उसे शैव धर्म में दीक्षित किया था।
III. उसने पुल्ललुर के युद्ध में चालुक्य राजा पुलकेशिन द्वितीय को निर्णायक रूप से पराजित किया था।
IV. उसे तमिल क्षेत्र में शैलकृत गुफा वास्तुकला की शुरुआत करने का श्रेय दिया जाता है।
V. उसने 'विचित्रचित्त' और 'गुणभर' जैसी उपाधियां धारण की थीं।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा संयोजन सही है?

(1) I, II, III और V
(2) I, II, IV और V
(3) II, III, IV और V
(4) I, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

17. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।

सूची I: (पल्लव राजा)
A. महेंद्रवर्मन प्रथम
B. नरसिंहवर्मन प्रथम
C. नरसिंहवर्मन द्वितीय
D. नन्दिवर्मन द्वितीय

सूची II: (लोकप्रिय उपाधि)
i. राजसिंह
ii. पल्लवमल्ल
iii. मामल्ल
iv. विचित्रचित्त

(1) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(2) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(3) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(4) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

18. किस पल्लव राजा ने चालुक्यों की राजधानी वातापी पर सफलतापूर्वक अधिकार किया, पुलकेशिन द्वितीय का वध किया और 'वातापीकोण्ड' की उपाधि धारण की?

(1) नरसिंहवर्मन प्रथम
(2) महेंद्रवर्मन प्रथम
(3) परमेश्वरवर्मन प्रथम
(4) नरसिंहवर्मन द्वितीय
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

19. प्राचीन दक्षिण भारतीय राजवंशों और उनकी उपलब्धियों के संबंध में गलत सुमेलित युग्म की पहचान कीजिए।

(1) पुलकेशिन द्वितीय - कन्नौज के हर्षवर्धन पर विजय
(2) नरसिंहवर्मन प्रथम - चालुक्यों की राजधानी वातापी पर अधिकार
(3) महेंद्रवर्मन प्रथम - राष्ट्रकूटों की राजधानी का विनाश
(4) राजराज प्रथम - मालदीव की सफल नौसैनिक विजय
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

20. नरसिंहवर्मन प्रथम के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?

(1) उसने तटीय शहर मामल्लपुरम की स्थापना की थी।
(2) चीनी यात्री ह्वेनसांग ने उसके शासनकाल के दौरान कांचीपुरम की यात्रा की थी।
(3) उसने अपने मित्र मानवम्मा की सहायता के लिए श्रीलंका में दो नौसैनिक अभियान भेजे थे।
(4) उसने महाबलीपुरम में संरचनात्मक तटीय मंदिर का निर्माण कराया था।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

21. नरसिंहवर्मन प्रथम द्वारा श्रीलंका में दो नौसैनिक अभियान भेजने का मुख्य कारण क्या था?

(1) हिंद महासागर में मसालों के व्यापार पर एकाधिकार स्थापित करना।
(2) द्वीप में थेरवाद बौद्ध धर्म को हटाकर शैव धर्म का प्रचार करना।
(3) सिंहली राजकुमार मानवम्मा को श्रीलंका के सिंहासन पर पुनः स्थापित करना।
(4) श्रीलंकाई समुद्री लुटेरों द्वारा महाबलीपुरम पर किए गए प्रत्यक्ष नौसैनिक हमले का बदला लेना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

22. पल्लव मंदिर वास्तुकला शैलियों के विकास के सही कालानुक्रमिक क्रम का चयन कीजिए।

(1) महेंद्र शैली, मामल्ल शैली, राजसिंह शैली, नन्दिवर्मन शैली
(2) मामल्ल शैली, महेंद्र शैली, नन्दिवर्मन शैली, राजसिंह शैली
(3) महेंद्र शैली, राजसिंह शैली, मामल्ल शैली, नन्दिवर्मन शैली
(4) राजसिंह शैली, महेंद्र शैली, मामल्ल शैली, नन्दिवर्मन शैली
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

23. महाबलीपुरम का तटीय मंदिर, जो संरचनात्मक पत्थर के मंदिर वास्तुकला का एक उत्कृष्ट उदाहरण है, किस पल्लव राजा के शासनकाल के दौरान निर्मित किया गया था?

(1) महेंद्रवर्मन प्रथम
(2) नरसिंहवर्मन प्रथम
(3) परमेश्वरवर्मन प्रथम
(4) नरसिंहवर्मन द्वितीय (राजसिंह)
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

24. महाबलीपुरम के पंच रथों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. ये एकाश्म संरचनाएं हैं जिन्हें ग्रेनाइट के विशाल खंडों को

NODIA

काटकर बनाया गया है।
II. धर्मराज रथ इन पांचों रथों में सबसे बड़ा है।
III. इनका उत्खनन महेंद्रवर्मन प्रथम के प्रत्यक्ष संरक्षण में किया गया था।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा संयोजन सही है?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

25. पल्लव वास्तुकला की मामल्ल शैली के संदर्भ में, 'मंडप' शब्द मुख्य रूप से किसे संदर्भित करता है?
(1) मुख्य देवता के ठीक ऊपर स्थित एक संरचनात्मक पत्थर का विमान
(2) चट्टान को काटकर बनाई गई एकाश्म रथ के आकार की मंदिर संरचना
(3) स्तंभों वाले हॉल और नक्काशीदार पट्टिकाओं वाली एक खुली शैलकृत गुफा
(4) मंदिर परिसर की विशेषता वाला विशाल बाहरी प्रवेश द्वार
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

26. महाबलीपुरम के तटीय मंदिर के बारे में निम्नलिखित दो कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: यह मुख्य रूप से एक एकाश्म शैलकृत गुफा मंदिर का उदाहरण है।
कथन II: इस परिसर में शिव और विष्णु दोनों को समर्पित अलग-अलग मंदिर हैं।
निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

27. कांचीपुरम का प्रसिद्ध कैलाशनाथ मंदिर, जो पल्लव स्थापत्य उपलब्धि के चरमोत्कर्ष का प्रतीक है, किसके द्वारा बनवाया गया था?
(1) महेंद्रवर्मन प्रथम
(2) नरसिंहवर्मन प्रथम
(3) अपराजितवर्मन
(4) नरसिंहवर्मन द्वितीय (राजसिंह)
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

28. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (मंदिर)
A. कैलाशनाथ मंदिर, कांचीपुरम
B. बृहदेश्वर मंदिर, तंजावुर
C. वैकुंठ पेरुमल मंदिर, कांचीपुरम
D. पंच रथ, महाबलीपुरम
सूची II: (संरक्षक निर्माता)
i. राजराज प्रथम
ii. नन्दिवर्मन द्वितीय
iii. नरसिंहवर्मन प्रथम
iv. नरसिंहवर्मन द्वितीय (राजसिंह)
(1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(2) A-i, B-iv, C-iii, D-ii
(3) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(4) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

29. निम्नलिखित में से कौन सा कथन कांचीपुरम के कैलाशनाथ मंदिर की मुख्य विशेषता की सही पहचान करता है?
(1) इसमें विमान का अभाव है और यह पूरी तरह से अर्ध-बेलनाकार छत पर आधारित है।
(2) यह दक्षिण भारत का पहला मंदिर था जिसमें मुख्य मंदिर से भी ऊंचा एक विशाल गोपुरम् बनाया गया था।
(3) यह मुख्य रूप से बलुआ पत्थर से निर्मित एक संरचनात्मक मंदिर है, जो प्रारंभिक द्रविड़ शैली के चरमोत्कर्ष का प्रतिनिधित्व करता है।
(4) यह पूरी तरह से शैलकृत उत्खनन है जो विशेष रूप से भगवान विष्णु को समर्पित है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

30. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A): कांचीपुरम के कैलाशनाथ मंदिर ने एलोरा के कैलाशनाथ मंदिर के स्वरूप को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया।
कारण (R): राष्ट्रकूट राजा कृष्ण प्रथम, पल्लव क्षेत्र में सफल अभियानों के बाद कांचीपुरम से वास्तुकारों और मूर्तिकारों को अपने साथ ले गया था।
नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

31. निम्नलिखित में से कौन सी कांचीपुरम के कैलाशनाथ मंदिर की प्रमुख विशेषता नहीं है?
(1) मुख्य देवता के गर्भगृह के लिए सफेद संगमरमर का विशेष उपयोग।
(2) उग्र सिंह वाले स्तंभों का व्यापक उपयोग।
(3) बहु-स्तरीय संरचनात्मक छत वाला एक पिरामिडाकार विमान।
(4) एक उप-मंदिर प्राचीर जिसमें कई छोटे मंदिर शामिल हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Downloaded from www.pdf.tube

32. पल्लव काल के साहित्य के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. 'दशकुमारचरित' के लेखक दण्डिन पल्लव दरबार में रहते थे।
II. भारवि, जिन्होंने संस्कृत महाकाव्य 'किरातार्जुनीय' की रचना की थी, पल्लवों से जुड़े थे।
III. राजा महेंद्रवर्मन प्रथम ने संस्कृत कृति 'मत्तविलास प्रहसन' की रचना की थी।
IV. नयनार संत अप्पर ने भजनों की रचना की जो 'तेवरम' का हिस्सा बने।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा संयोजन सही है?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

33. पल्लव काल के दौरान फले-फूले और गहन भक्ति साहित्य की रचना करने वाले आलवार संत मुख्य रूप से किस देवता के भक्त थे?
(1) शिव
(2) विष्णु
(3) मुरुगन
(4) शक्ति
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

34. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (लेखक/संत)
A. दण्डिन
B. पेरुन्देवनार
C. अप्पर
D. महेंद्रवर्मन प्रथम
सूची II: (संबद्ध कार्य/योगदान)
i. भारत वेनबा (महाभारत का तमिल अनुवाद)
ii. मत्तविलास प्रहसन
iii. दशकुमारचरित
iv. तेवरम भजन
(1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(2) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(3) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

35. पल्लव काल के दौरान आलवारों और नयनारों के नेतृत्व में हुए भक्ति आंदोलन का सबसे उपयुक्त समाजशास्त्रीय प्रभाव क्या था?
(1) दक्षिण में जाति व्यवस्था का पूर्ण और स्थायी उन्मूलन।
(2) मुख्यधारा के हिंदू धर्म से बौद्ध धर्म की ओर बड़े पैमाने पर धर्म परिवर्तन।
(3) शैव और वैष्णव धर्म को लोकप्रिय बनाना, जिससे जैन धर्म का पतन हुआ।
(4) राजदरबार के प्रशासन की एकमात्र भाषा के रूप में संस्कृत का स्थान तमिल द्वारा लेना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

36. पल्लव काल के एक प्रमुख संत और उनकी संबंधित भक्ति परंपरा का प्रतिनिधित्व करने वाले सही युग्म की पहचान कीजिए।
(1) अप्पर - आलवार परंपरा
(2) संबंधर - आलवार परंपरा
(3) नम्मालवार - नयनार परंपरा
(4) आंडाल - आलवार परंपरा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

37. चोल राजवंश के संस्थापक, विजयालय ने 850 ईस्वी में तंजावुर शहर को किस शासक परिवार से छीना था?
(1) मदुरै के पांड्य
(2) कांची के पल्लव
(3) मुत्तरैयर
(4) महोदयपुरम के चेर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

38. चोलों के प्रारंभिक इतिहास के संबंध में निम्नलिखित दो कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: विजयालय प्रारंभ में पल्लवों के अधीन एक सामंत प्रमुख था।
कथन II: तंजावुर पर कब्जा करने के बाद, विजयालय ने देवी निशुंभसूदिनी को समर्पित एक मंदिर बनवाया।
निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

39. चोल वंश के उदय के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. आदित्य प्रथम ने अपराजितवर्मन को हराकर पल्लव राज्य का अंत कर दिया।
II. परान्तक प्रथम को तकोलम के युद्ध में राष्ट्रकूटों के हाथों भारी हार का सामना करना पड़ा।
III. विजयालय ने मदुरै के पूरे पांड्य साम्राज्य को सीधे जीतकर चोल साम्राज्य का विस्तार किया।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा संयोजन गलत है?
(1) केवल I
(2) केवल II
(3) केवल III
(4) केवल I और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

40. किस राष्ट्रकूट सम्राट ने 949 ईस्वी में तकोलम के युद्ध में परान्तक प्रथम को पराजित कर प्रारंभिक चोलों के विस्तार को गंभीर रूप से रोक दिया था?
(1) कृष्ण तृतीय
(2) अमोघवर्ष प्रथम
(3) कृष्ण द्वितीय
(4) इंद्र तृतीय
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

41. निम्नलिखित शासकों में से विषम की पहचान कीजिए, क्योंकि वह चोल राजवंश से संबंधित नहीं है।
(1) विजयालय
(2) आदित्य प्रथम
(3) सिंहविष्णु
(4) परान्तक प्रथम
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

42. चोल राजा राजराज प्रथम से जुड़ी निम्नलिखित विजयों और उपलब्धियों पर विचार कीजिए:
I. उसने कांडालूर सालै में चेर नौसेना को नष्ट कर दिया।
II. उसने श्रीलंका के उत्तरी भाग को जीता और उसका नाम 'मुम्मुडिचोल मण्डलम' रखा।
III. उसने मालदीव द्वीपों पर सफलतापूर्वक विजय प्राप्त की।
IV. उसने कई युद्धों में कल्याणी के परवर्ती चालुक्यों को पराजित किया।
V. उसने एक नौसैनिक अभियान शुरू किया और श्रीविजय साम्राज्य पर कब्जा कर लिया।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा संयोजन सही है?
(1) I, II, III और IV
(2) II, III, IV और V
(3) I, III, IV और V
(4) I, II, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

43. राजराज प्रथम द्वारा व्यवस्थित रूप से पुनर्गठित चोल प्रशासनिक व्यवस्था में, 'वलनाडु' शब्द निम्नलिखित में से किसे संदर्भित करता था?
(1) मंदिर की भूमि का प्रबंधन करने वाली ब्राह्मणों की एक स्थानीय ग्राम सभा
(2) राजधानी में तैनात एक विशेष शाही सैन्य टुकड़ी
(3) स्थानीय व्यापारियों और व्यापारिक संघों पर विशेष रूप से लगाया जाने वाला कर
(4) 'नाडु' और 'मण्डलम' के बीच की एक प्रशासनिक इकाई
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

44. राजराज प्रथम को उनके व्यापक प्रशासनिक सुधारों और कई उपाधियां धारण करने के लिए जाना जाता था। निम्नलिखित में से कौन सी उपाधि उनके द्वारा धारण नहीं की गई थी?
(1) जयकोण्ड
(2) गंगैकोण्ड
(3) शिवपादशेखर
(4) मुम्मुडि चोल
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

45. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (चोल प्रशासनिक इकाई)
A. मण्डलम
B. वलनाडु
C. नाडु
D. कुर्रम
सूची II: (विवरण)
i. आस-पास के गांवों का एक समूह
ii. एक प्रांत या बड़ा क्षेत्रीय क्षेत्र
iii. एक कृषि प्रधान जिला
iv. प्रांतों को विभाजित करके बनाई गई एक बड़ी क्षेत्रीय इकाई
(1) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(2) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(3) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(4) A-i, B-iv, C-ii, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

46. राजराज प्रथम के प्रशासन के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) उसने राजस्व संग्रह को मानकीकृत करने के लिए 1000 ईस्वी में एक व्यापक भूमि सर्वेक्षण शुरू किया।
(2) उसने बेहतर प्रशासन के लिए अपने साम्राज्य को कई मण्डलमों में विभाजित किया।
(3) उसने पैदल सेना, घुड़सवार सेना और एक शक्तिशाली गज सेना से युक्त एक स्थायी सेना बनाए रखी।
(4) उसने पूर्ण केंद्रीय निरंकुशता स्थापित करने के लिए सभी स्थानीय ग्राम सभाओं को व्यवस्थित रूप से समाप्त कर दिया।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

47. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A): राजेंद्र प्रथम ने 'गंगैकोण्ड चोल' की प्रतिष्ठित उपाधि धारण की थी।
कारण (R): उसने गंगा नदी तक एक सफल उत्तरी सैन्य अभियान का नेतृत्व किया और बंगाल के पाल राजा महिपाल को पराजित किया।
नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Click Here to Buy book on Amazon

48. दक्षिण-पूर्व एशिया में श्रीविजय साम्राज्य के खिलाफ राजेंद्र चोल के अभूतपूर्व नौसैनिक अभियान के पीछे सबसे महत्वपूर्ण भू-राजनीतिक प्रेरणा क्या थी?
(1) बौद्ध धर्म प्रधान दक्षिण-पूर्व एशियाई क्षेत्रों में मुख्यधारा के हिंदू धर्म का प्रसार करना।
(2) श्रीविजय के मलक्का जलडमरूमध्य के एकाधिकार को तोड़कर चोल व्यापार को सुरक्षित करना।
(3) कावेरी डेल्टा क्षेत्र के लिए बड़ी मात्रा में कृषि श्रमिकों को प्राप्त करना।
(4) श्रीविजय नौसेना द्वारा तमिल तट पर नियोजित आक्रमण को पहले ही विफल करना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

49. राजेंद्र प्रथम के निम्नलिखित सैन्य अभियानों को उनके सामान्यतः स्वीकृत कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. संपूर्ण श्रीलंका की विजय
2. गंगा तक सैन्य अभियान
3. कडारम के लिए नौसैनिक अभियान
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही अनुक्रम का चयन कीजिए:
(1) 2, 1, 3
(2) 1, 2, 3
(3) 3, 1, 2
(4) 1, 3, 2
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

50. राजेंद्र चोल प्रथम की उपलब्धियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उसने 'गंगैकोण्ड चोलपुरम' नामक एक नई राजधानी की स्थापना की।
II. उसने 'चोलगंगम' नामक एक विशाल कृत्रिम सिंचाई जलाशय का निर्माण कराया।
III. उसने एन्नायिरम में एक प्रसिद्ध वैदिक शिक्षण संस्थान की स्थापना की।
IV. उसकी नौसेना को कडारम के शासक ने बुरी तरह पराजित किया था।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा संयोजन सही है?
(1) I, II और III
(2) II, III और IV
(3) I, III और IV
(4) I, II और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

51. दक्षिण भारतीय शासक और उनके उत्तरी या समकालीन प्रतिद्वंद्वी को जोड़ने वाले गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) पुलकेशिन द्वितीय - हर्षवर्धन
(2) राजेंद्र प्रथम - महिपाल
(3) राजराज प्रथम - हर्षवर्धन
(4) नरसिंहवर्मन प्रथम - पुलकेशिन द्वितीय
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

52. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (चोल ग्राम सभा)
A. उर
B. सभा
C. नगरम
D. नाट्टार
सूची II: (सभा की प्रकृति)
i. व्यापारियों और व्यवसायियों की सभा
ii. सामान्य कर भुगतान करने वाले ग्रामीणों की आम सभा
iii. पूरे नाडु जिले की सभा
iv. ब्रह्मदेय गांव में ब्राह्मणों की विशिष्ट सभा
(1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(2) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

53. यदि चोल काल के दौरान किसी ब्रह्मदेय गांव में सिंचाई टैंक के रखरखाव और जल वितरण को लेकर कोई विवाद उत्पन्न होता था, तो कौन सा विशिष्ट प्रशासनिक निकाय संभवतः उसका न्यायनिर्णयन करता था?
(1) पोन-वारियम
(2) तोट्ट-वारियम
(3) एरी-वारियम
(4) न्याय-वारियम
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

54. निम्नलिखित में से कौन सा कथन परान्तक प्रथम के शासनकाल के दौरान जारी उत्तरमेरुर अभिलेखों के ऐतिहासिक महत्व को सही ढंग से उजागर करता है?
(1) दक्षिण-पूर्व एशियाई द्वीपों में चोल नौसैनिक विजयों का विस्तृत विवरण।
(2) ग्राम सभा के सदस्यों के चुनाव के नियम और योग्यताएं।
(3) देवी-देवताओं की कांस्य प्रतिमाओं को ढालने में प्रयुक्त तकनीकों का वर्णन।
(4) स्थानीय जाति व्यवस्था के पूर्ण उन्मूलन के संबंध में दस्तावेज।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

55. चोल सभा की विशिष्ट समितियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. तोट्ट-वारियम गांव के बागानों और उद्यानों के प्रबंधन के लिए जिम्मेदार थी।
II. पोन-वारियम सोने और स्थानीय मुद्रा से संबंधित मामलों का प्रबंधन करती थी।
III. न्याय-वारियम को विशेष रूप से विदेशी समुद्री व्यापार की देखरेख का कार्य सौंपा गया था।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा संयोजन सही है?
(1) केवल I और III
(2) केवल I और II

(3) केवल II और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

56. चोल काल के दौरान ग्राम सभाओं के लिए समिति सदस्यों का चयन करने के लिए उपयोग की जाने वाली लॉटरी-आधारित चुनाव प्रणाली का विशिष्ट नाम क्या था?
(1) कुदवोलई
(2) वेट्टियनकुडी
(3) वारियम
(4) वलनाडु
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

57. उत्तरमेरुर अभिलेखों के अनुसार, ग्राम सभा का वार्ड सदस्य बनने के लिए निम्नलिखित में से कौन सी एक वैध योग्यता नहीं थी?
(1) कम से कम एक-चौथाई 'वेली' कर-योग्य भूमि का स्वामित्व होना।
(2) कानूनी रूप से स्वामित्व वाली भूमि पर बने घर का होना।
(3) 75 वर्ष से अधिक आयु का होना।
(4) वेदों और ब्राह्मणकों का ज्ञान होना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

58. तंजावुर के बृहदेश्वर मंदिर के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह लगभग पूरी तरह से परस्पर जुड़े हुए ग्रेनाइट खंडों से निर्मित है।
II. इसका निर्माण लगभग 1010 ईस्वी में पूरा हुआ था।
III. इसमें मुख्य मंदिर के सामने नंदी की एक विशाल एकाश्म मूर्ति है।
IV. मुख्य विमान की ऊंचाई लगभग 216 फीट है।
V. इसे चोल राजा राजेंद्र प्रथम ने बनवाया था।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा संयोजन सही है?
(1) I, II, III और V
(2) I, II, III और IV
(3) II, III, IV और V
(4) I, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

59. चोल मंदिर वास्तुकला के संदर्भ में, 'गोपुरम्' शब्द विशेष रूप से किसे संदर्भित करता है?
(1) पवित्र गर्भगृह जहाँ मुख्य देवता को स्थापित किया जाता है।
(2) मुख्य गर्भगृह के ठीक ऊपर बना पिरामिडाकार टावर।
(3) अनुष्ठानिक नृत्यों और सार्वजनिक सभाओं के लिए उपयोग किया जाने वाला स्तंभों वाला हॉल।
(4) सीमा की दीवार पर बना विशाल, भव्य रूप से सजाया गया प्रवेश द्वार।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

60. तंजावुर के बृहदेश्वर मंदिर के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) सबसे ऊपरी शिखर एक विशाल अखंड पत्थर के खंड पर टिका हुआ है।
(2) गर्भगृह में स्थापित मुख्य देवता भगवान विष्णु हैं।
(3) मंदिर की दीवारें चोल भित्ति चित्रों से सुसज्जित हैं।
(4) यह द्रविड़ वास्तुकला शैली के परिपक्व चरण का उदाहरण है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

61. निम्नलिखित दो कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: तंजावुर के बृहदेश्वर मंदिर को व्यापक रूप से द्रविड़ मंदिर वास्तुकला शैली के चरमोत्कर्ष के रूप में माना जाता है।
कथन II: इसे "महान जीवंत चोल मंदिरों" के हिस्से के रूप में यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया है।
निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

62. निम्नलिखित प्रसिद्ध दक्षिण भारतीय मंदिरों के निर्माण का सही कालानुक्रमिक क्रम चुनिए:
1. तटीय मंदिर, महाबलीपुरम
2. कैलाशनाथ मंदिर, कांचीपुरम
3. बृहदेश्वर मंदिर, तंजावुर
4. ऐरावतेश्वर मंदिर, दारासुरम
(1) 1, 2, 3, 4
(2) 2, 1, 4, 3
(3) 1, 3, 2, 4
(4) 2, 3, 1, 4
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

63. विश्व प्रसिद्ध चोल कांस्य मूर्तियां मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किस पारंपरिक धातुकर्म तकनीक का उपयोग करके ढाली गई थीं?
(1) लुप्त मोम तकनीक
(2) तांबे का पारंपरिक शीत फोर्जिंग
(3) विशिष्ट सांचों में रेत ढलाई
(4) स्थायी फ्रेम का उपयोग करके डाई ढलाई
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

64. नटराज की प्रतिष्ठित चोल कांस्य मूर्ति में, भगवान शिव के दाहिने पैर के नीचे कुचले जा रहे बौने राक्षस (अपस्मार पुरुष) का क्या प्रतीक है?
(1) जन्म और मृत्यु का चक्र
(2) मानवीय अज्ञानता, अहंकार और भ्रम
(3) ब्रह्मांड का विनाश
(4) ईश्वरीय कृपा की शक्ति
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

65. नटराज कांस्य मूर्ति में दर्शाए गए निम्नलिखित प्रतीकात्मक तत्वों पर विचार कीजिए:

I. ऊपरी दाहिने हाथ में एक डमरु है जो सृजन की आदि ध्वनि का प्रतीक है।
II. ऊपरी बाएं हाथ में ज्वाला है जो विनाश और परिवर्तन का प्रतीक है।
III. निचला दाहिना हाथ अभय मुद्रा में है, जो भक्तों को सुरक्षा प्रदान करता है।
IV. चारों ओर घेरे हुए अग्नि का वलय (प्रभा मण्डल) सृजन और विनाश के निरंतर ब्रह्मांडीय चक्र का प्रतिनिधित्व करता है।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा संयोजन सही है?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

66. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (नटराज की प्रतिमा संबंधी विशेषता)
A. डमरु
B. अग्नि
C. अभय मुद्रा
D. अपस्मार
सूची II: (प्रतीकात्मक अर्थ)
i. सुरक्षा और आश्वासन
ii. पुराने ब्रह्मांड का विनाश
iii. अज्ञानता और भ्रम
iv. सृजन की ध्वनि
(1) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(2) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(3) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(4) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

67. हालांकि नटराज सबसे प्रसिद्ध रूप है, फिर भी चोल काल के दौरान कांस्य ढलाई के लिए निम्नलिखित में से कौन सा एक अत्यधिक लोकप्रिय विषय था?
(1) भूमिस्पर्श मुद्रा में दर्शाए गए बुद्ध
(2) कायोत्सर्ग मुद्रा में खड़े भगवान महावीर
(3) शिव, पार्वती और स्कंद वाली सोमस्कंद मूर्ति
(4) सारनाथ स्तंभ पर पाया गया अशोक का सिंह शीर्ष
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

68. चोल व्यापार और विदेशी विस्तार के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. मणिग्रामम और अय्यावोल प्रमुख और शक्तिशाली व्यापारिक संघ थे।
II. चीन के सोंग वंश के पास सक्रिय रूप से व्यापारिक दूत भेजे गए थे।
III. चोलों ने 'वीरपट्टिनम' के नाम से जाने जाने वाले व्यापारिक छावनियों की स्थापना की थी।
IV. श्रीविजय साम्राज्य मलक्का जलडमरूमध्य के रणनीतिक समुद्री मार्ग को नियंत्रित करता था।
V. चोल अरब जगत को युद्ध के घोड़ों के प्रमुख निर्यातक थे।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा संयोजन सही है?
(1) I, II, III और IV
(2) II, III, IV और V
(3) I, III, IV और V
(4) I, II, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

69. निम्नलिखित में से कौन सा कथन चोल काल के प्रमुख व्यापारिक संघों के बीच सही अंतर स्पष्ट करता है?
(1) मणिग्रामम जमींदारों की एक सभा थी, जबकि अंजुवण्णम सिंचाई का प्रबंधन करता था।
(2) अय्यावोल संघ का गठन राजघरानों द्वारा किया गया था, जबकि वलंजियार किसान थे।
(3) अंजुवण्णम में विदेशी व्यापारी शामिल थे, जबकि मणिग्रामम घरेलू व्यापार में संलग्न था।
(4) नानादेशी डेल्टा के भीतर काम करते थे, जबकि मणिग्रामम रोम के साथ व्यापार का प्रबंधन करता था।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

70. 'ऐन्नूर्रुवर' के नाम से जाने जाने वाले शक्तिशाली व्यापारिक संघ की उत्पत्ति और मुख्यालय किस ऐतिहासिक शहर में था?
(1) कांचीपुरम
(2) ऐहोल
(3) मदुरै
(4) महाबलीपुरम
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

71. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (व्यापारिक संघ)
A. मणिग्रामम
B. अंजुवण्णम
C. अय्यावोल
D. नानादेशी
सूची II: (विवरण)
i. कर्नाटक से उत्पन्न एक शीर्ष व्यापारिक संघ
ii. विभिन्न देशों और क्षेत्रों में काम करने वाले व्यापारियों का एक संघ
iii. मुख्य रूप से विदेशी व्यापारियों और समुद्री व्यापारियों से बना निकाय
iv. मुख्य रूप से घरेलू और क्षेत्रीय वाणिज्य में लगा हुआ संघ
(1) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(2) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(3) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Downloaded from www.pdf.tube

72. चोल सम्राटों (जैसे राजराज प्रथम और कुलोत्तुंग प्रथम) द्वारा चीनी सोंग राजवंश के दरबार में भेजे गए राजनयिक और वाणिज्यिक दूतों का मुख्य परिणाम क्या था?
(1) व्यापारियों के लिए समुद्री व्यापार और वाणिज्यिक विशेषाधिकारों में वृद्धि।
(2) विस्तारवादी मंगोल साम्राज्य के विरुद्ध एक औपचारिक सैन्य गठबंधन।
(3) चीनी राजदरबारी दर्शन में तमिल भक्ति साहित्य का प्रसार।
(4) कैंटन का प्रशासनिक नियंत्रण चोल राज्य को सौंपा जाना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

73. निम्नलिखित दो कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: चोल राज्य ने अपने विस्तृत समुद्री व्यापार मार्गों की रक्षा के लिए एक मजबूत और विशिष्ट नौसैनिक बेड़ा बनाए रखा।
कथन II: बंगाल की खाड़ी को राजेंद्र प्रथम के शासनकाल के दौरान उसकी नौसैनिक सर्वोच्चता के कारण वस्तुतः "चोल झील" में बदल दिया गया था।
निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

74. निम्नलिखित में से कौन चोल राजवंश का अंतिम मान्यता प्राप्त शासक था, जिसकी 1279 ईस्वी में पांड्यों द्वारा पराजय के साथ चोल साम्राज्य का औपचारिक अंत हुआ?
(1) राजेंद्र तृतीय
(2) कुलोत्तुंग तृतीय
(3) राजराज तृतीय
(4) विक्रम चोल
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

75. निम्नलिखित में से कौन सा कथन चोल साम्राज्य के पतन और अंत में योगदान देने वाले कारक की गलत पहचान करता है?
(1) दक्षिण में पांड्य वंश के तीव्र पुनरुत्थान ने चोल सत्ता को गंभीर रूप से कमजोर कर दिया।
(2) उत्तर-पश्चिम में होयसालों के उदय ने द्वि-पक्षीय सैन्य खतरा पैदा कर दिया।
(3) परवर्ती चालुक्यों और उनके उत्तराधिकारियों के साथ निरंतर और थका देने वाले सैन्य संघर्षों ने राज्य के संसाधनों को समाप्त कर दिया।
(4) कोरोमंडल तट पर पुर्तगाली नौसैनिक आक्रमण ने सीधे तौर पर चोल राजधानी को नष्ट कर दिया।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

76. 13वीं शताब्दी के अंत में चोल साम्राज्य के पतन के बाद दक्षिण भारत में तत्काल क्षेत्रीय राजनीतिक परिणाम क्या था?
(1) दक्षिण में दिल्ली सल्तनत के स्थायी शासन की स्थापना।
(2) पांड्यों का पुनरुत्थान और होयसालों तथा काकतीयों का उदय।
(3) स्थानीय सभाओं और व्यापारिक संघों का पूर्ण विघटन।
(4) कावेरी डेल्टा के भीतर बहमनी सल्तनत की तत्काल स्थापना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

77. चोल पतन के बाद के संक्रमण काल के संबंध में निम्नलिखित दो कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: पांड्यों और होयसालों के आगामी पतन से उत्पन्न शक्ति शून्यता ने अंततः विजयनगर साम्राज्य के उदय का मार्ग प्रशस्त किया।
कथन II: हरिहर और बुक्का ने दक्षिण में हिंदू प्रतिरोध को संगठित करने के लिए 1336 ईस्वी में आधिकारिक तौर पर विजयनगर साम्राज्य की स्थापना की।
निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

78. चोलों के पतन के बाद उत्तर-मध्यकालीन दक्षिण भारतीय राजवंशों और उनकी प्राथमिक राजधानी या राजनीतिक केंद्र के संबंध में गलत सुमेलित युग्म की पहचान कीजिए।
(1) परवर्ती चोल - गंगैकोण्ड चोलपुरम
(2) पांड्य - मदुरै
(3) होयसाल - द्वारसमुद्र
(4) काकतीय - तंजावुर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

79. चोलों के पतन का कारण बनने वाली भू-राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले होयसाल वंश ने मुख्य रूप से किस वर्तमान क्षेत्र पर शासन किया था?
(1) कर्नाटक
(2) आंध्र प्रदेश
(3) केरल
(4) ओडिशा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

80. चोल प्रशासन के दौरान, राज्य के राजस्व का मुख्य स्रोत भू-कर था। खेती करने वालों से एकत्र किए गए भू-राजस्व या कर को दर्शाने के लिए किस विशिष्ट शब्द का उपयोग किया जाता था?
(1) वेट्टि
(2) कडमै
(3) उर-नाथम
(4) मणिग्रामम
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) नर्मदा
चालुक्य सम्राट पुलकेशिन द्वितीय ने 618 ईस्वी में नर्मदा नदी के तट पर हर्षवर्धन को पराजित किया था। इस ऐतिहासिक विजय ने हर्षवर्धन के दक्षिणवर्ती विस्तार को स्थायी रूप से रोक दिया। इस युद्ध का सविस्तार वर्णन रविकीर्ति द्वारा रचित ऐहोल अभिलेख में मिलता है। इस महान उपलब्धि के पश्चात पुलकेशिन द्वितीय ने 'परमेश्वर' की उपाधि धारण की थी।

2. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
हर्षवर्धन ने उत्तर भारत पर प्रभुत्व स्थापित किया, किंतु दक्कन की ओर उनका अभियान नर्मदा तट पर पुलकेशिन द्वितीय द्वारा परास्त होने के कारण विफल रहा। इस निर्णायक युद्ध के फलस्वरूप हर्षवर्धन के साम्राज्य की दक्षिणी सीमा निर्धारित हो गई। अतः पुलकेशिन की सैन्य श्रेष्ठता ही हर्षवर्धन के दक्षिणवर्ती विजय अभियान को रोकने का प्रधान कारण बनी।

3. (3) केवल I और III
पुलकेशिन द्वितीय के शासन की जानकारी मुख्य रूप से रविकीर्ति की ऐहोल प्रशस्ति से प्राप्त होती है। उसने फारसी सम्राट खुसरु द्वितीय के दरबार में एक दूतमंडल भेजा था, जिसका चित्रण अजंता की गुफाओं में मिलता है। यद्यपि, पल्लव शासक नरसिंहवर्मन प्रथम ने उसे पराजित कर उसकी राजधानी पर अधिकार किया था, जो पुलकेशिन की एक बड़ी सैन्य विफलता थी।

4. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
चालुक्य वंश की प्रारंभिक राजधानी ऐहोल थी, जो बाद में वातापी स्थानांतरित की गई। पुलकेशिन प्रथम को इस वंश का वास्तविक संस्थापक स्वीकार किया जाता है क्योंकि उसने वातापी में सुदृढ़ दुर्ग का निर्माण कराया और अश्वमेध यज्ञ जैसे महत्वपूर्ण वैदिक अनुष्ठान संपन्न किए। तत्कालीन अभिलेखों और पुरातात्विक साक्ष्यों से इन ऐतिहासिक तथ्यों की स्पष्ट रूप से पुष्टि होती है।

5. (3) पल्लव वंश का नरसिंहवर्मन प्रथम
पुलकेशिन द्वितीय ने हर्षवर्धन और महेंद्रवर्मन जैसे शक्तिशाली राजाओं को पराजित किया, किंतु पल्लव राजा नरसिंहवर्मन प्रथम के विरुद्ध उसे पराजय मिली। नरसिंहवर्मन ने वातापी पर आक्रमण कर पुलकेशिन को परास्त किया और उसका वध कर दिया। इस विजय के पश्चात नरसिंहवर्मन ने 'वातापीकोण्ड' की उपाधि धारण की, जो पल्लव सैन्य शक्ति की श्रेष्ठता का परिचायक और ऐतिहासिक प्रमाण है।

6. (1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
ऐहोल के मंदिरों की वास्तुकला अत्यंत विशिष्ट है। दुर्गा मंदिर अपनी गज-पृष्ठाकार योजना के लिए विख्यात है। लाड खान मंदिर अपनी सपाट छत और पंचायतन शैली के लिए जाना जाता है, जबकि मेगुती मंदिर एक उच्च चबूतरे पर निर्मित महत्वपूर्ण जैन मंदिर है। हुच्चिमल्ली गुड़ी मंदिर में रेखा-नागर शैली का प्रारंभिक शिखर दृष्टव्य है। ये संरचनाएं चालुक्य वास्तुकला के विकास को दर्शाती हैं।

7. (4) ये चार गुफाएं हैं जिनमें ब्राह्मणवादी और जैन शैलकृत मंदिर शामिल हैं।
बादामी के शैलकृत गुफा मंदिर प्रारंभिक चालुक्य वास्तुकला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। यहाँ कुल चार मुख्य गुफाएँ हैं, जिनमें से तीन ब्राह्मणवादी हिंदू धर्म के देवताओं (विष्णु और शिव) को समर्पित हैं और चौथी गुफा जैन धर्म से संबंधित है। इन गुफाओं का निर्माण छठी-सातवीं शताब्दी के दौरान हुआ था। ये अपनी सूक्ष्म नक्काशी, जीवंत मूर्तिकला और वेसर शैली के लिए प्रसिद्ध हैं।

8. (3) केवल IV
चालुक्य वास्तुकला अपनी अनूठी वेसर शैली के लिए प्रसिद्ध है, जो नागर और द्रविड़ शैलियों का सम्मिश्रण है। इनके मंदिरों के निर्माण में गारे का प्रयोग नहीं हुआ, बल्कि पत्थरों को सटीकता से जोड़ा गया। इन्होंने शैलकृत गुफाओं और स्वतंत्र मंदिरों का निर्माण किया। इनके सभी मंदिरों में केवल द्रविड़ शिखर नहीं थे, बल्कि कई संरचनाओं में नागर शैली के शिखर भी प्रमुखता से मिलते हैं।

9. (3) गुफा 3
बादामी गुफा समूह में गुफा संख्या 3 सर्वाधिक विशाल और अलंकृत मानी जाती है। यह मुख्य रूप से भगवान विष्णु को समर्पित है, जिसमें उनके वराह और नरसिंह जैसे अवतारों की भव्य मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं। इसका निर्माण राजा मंगलेश के शासनकाल में हुआ था। यह गुफा अपनी कलात्मक सूक्ष्मता और भव्यता के कारण प्रारंभिक मध्यकालीन भारतीय शैलकृत वास्तुकला का एक अत्यंत महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करती है।

10. (1) दुर्गा मंदिर, ऐहोल
ऐहोल का दुर्गा मंदिर अपनी विशेष स्थापत्य विशेषताओं के कारण महत्वपूर्ण है। इसकी प्रमुख विशेषता गज-पृष्ठाकार या अर्धवृत्ताकार तल योजना है, जो प्राचीन बौद्ध चैत्यों से प्रेरित है। इसमें एक प्रदक्षिणा पथ निर्मित है और इसके शिखर पर नागर शैली का प्रारंभिक स्वरूप देखा जा सकता है। यह मंदिर वास्तुकला के विकासवादी क्रम को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक मील का पत्थर है।

11. (2) 1, 3, 2
चालुक्य वंश की शाखाओं का ऐतिहासिक क्रम अत्यंत स्पष्ट है। सर्वप्रथम छठी शताब्दी में वातापी के चालुक्यों ने सत्ता स्थापित की। तत्पश्चात सातवीं शताब्दी में वेंगी के पूर्वी चालुक्यों का

Click Here to Buy book on Amazon

उदय हुआ। अंत में, 10वीं शताब्दी में राष्ट्रकूटों के पतन के बाद कल्याणी के परवर्ती चालुक्य वंश की स्थापना हुई। यह कालानुक्रम दक्षिण भारत में चालुक्य प्रभाव के विस्तार और निरंतरता को प्रदर्शित करता है।

12. (2) कुब्ज विष्णुवर्धन
पुलकेशिन द्वितीय ने आंध्र क्षेत्र की विजय के पश्चात अपने अनुज कुब्ज विष्णुवर्धन को वहाँ का प्रतिनिधि नियुक्त किया था। कालांतर में, विष्णुवर्धन ने अपनी स्थिति सुदृढ़ कर स्वतंत्र राज्य की घोषणा की, जिसे वेंगी के पूर्वी चालुक्य वंश के रुप में जाना गया। इस शाखा ने कई शताब्दियों तक शासन किया। यह घटना चालुक्य साम्राज्य के क्षेत्रीय विस्तार और प्रशासनिक विभाजन का एक महत्वपूर्ण बिंदु थी।

13. (3) कथन I और कथन II दोनों
कल्याणी के चालुक्य वंश की स्थापना तैलप द्वितीय ने 10वीं शताब्दी में राष्ट्रकूटों को अपदस्थ कर की थी। इस वंश के प्रतापी राजा विक्रमादित्य षष्ठ ने 1076 ईस्वी में अपने राज्याभिषेक पर 'चालुक्य-विक्रम संवत' का प्रारंभ किया। यह वंश अपनी सैन्य शक्ति और साहित्यिक संरक्षण के लिए विख्यात था। विक्रमादित्य षष्ठ का शासनकाल इस राजवंश के इतिहास में सांस्कृतिक और राजनीतिक दृष्टि से स्वर्ण युग माना जाता है।

14. (4) रविकीर्ति
बिल्हण, विज्ञानेश्वर और सोमेश्वर तृतीय का संबंध कल्याणी के चालुक्य दरबार से था। बिल्हण ने 'विक्रमांकदेवचरित' और विज्ञानेश्वर ने 'मिताक्षरा' की रचना की। सोमेश्वर तृतीय ने 'मानसोल्लास' ग्रंथ लिखा। इसके विपरीत, रविकीर्ति वातापी के चालुक्य राजा पुलकेशिन द्वितीय के दरबारी कवि थे, जिन्होंने ऐहोल प्रशस्ति की रचना की थी। अतः रविकीर्ति अपनी ऐतिहासिक अवधि और विशिष्ट राजवंश के आधार पर इस समूह से भिन्न हैं।

15. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
वेंगी का पूर्वी चालुक्य राज्य वैवाहिक संबंधों के कारण चोल साम्राज्य में विलीन हो गया। कुलोत्तुंग प्रथम एक पूर्वी चालुक्य राजकुमार था, जिसकी माता चोल राजकुमारी थी। 1070 ईस्वी में चोल सिंहासन रिक्त होने पर उसने शासन संभाला, जिससे दोनों राजवंशों का पूर्ण विलय हो गया। यह एकीकरण दक्षिण भारतीय राजनीति का महत्वपूर्ण मोड़ था, जिसने चोल शक्ति को उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों में अत्यधिक मजबूती प्रदान की।

16. (2) I, II, IV और V
पल्लव राजा महेंद्रवर्मन प्रथम एक बहुमुखी प्रतिभा संपन्न शासक थे, जिन्होंने तमिल क्षेत्र में शैलकृत वास्तुकला प्रारंभ की। उन्होंने 'मत्तविलास प्रहसन' की रचना की और 'विचित्रचित्त' जैसी उपाधियां धारण कीं। वे पहले जैन थे, किंतु नयनार संत अप्पर के प्रभाव में शैव बन गए। यद्यपि, वे पुलकेशिन द्वितीय से युद्ध में पराजित हुए थे। उनकी साहित्यिक और कलात्मक उपलब्धियां भारतीय इतिहास में अद्वितीय स्थान रखती हैं।

17. (1) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
पल्लव शासकों ने अपनी विशिष्ट उपलब्धियों के आधार पर विभिन्न उपाधियां धारण की थीं। महेंद्रवर्मन प्रथम को उनकी रचनात्मकता के लिए 'विचित्रचित्त' कहा गया। नरसिंहवर्मन प्रथम अपने सैन्य कौशल के कारण 'मामल्ल' के नाम से प्रसिद्ध हुए। नरसिंहवर्मन द्वितीय ने 'राजसिंह' की उपाधि ली और उनके काल में स्थापत्य का व्यापक विकास हुआ। नन्दिवर्मन द्वितीय को 'पल्लवमल्ल' कहा जाता है। ये उपाधियां तत्कालीन शिलालेखों में उनके व्यक्तित्व को परिभाषित करती हैं।

NODIA

18. (1) नरसिंहवर्मन प्रथम
पल्लव सम्राट नरसिंहवर्मन प्रथम ने अपने पिता की पराजय का प्रतिशोध लेने हेतु चालुक्यों पर आक्रमण किया। उन्होंने चालुक्य राजधानी वातापी पर अधिकार कर पुलकेशिन द्वितीय को युद्ध में परास्त किया। इस गौरवशाली विजय के उपलक्ष्य में उन्होंने 'वातापीकोण्ड' (वातापी का विजेता) की उपाधि धारण की। यह घटना पल्लव-चालुक्य संघर्ष के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ थी, जिसने चालुक्य सत्ता को कुछ समय के लिए अस्थिर कर दिया था।

19. (3) महेंद्रवर्मन प्रथम - राष्ट्रकूटों की राजधानी का विनाश
महेंद्रवर्मन प्रथम का शासनकाल सातवीं शताब्दी के आरंभ में था, जबकि राष्ट्रकूट वंश की स्थापना आठवीं शताब्दी के मध्य में हुई थी। अतः महेंद्रवर्मन द्वारा राष्ट्रकूटों की राजधानी का विनाश करना ऐतिहासिक रुप से असंभव है। अन्य विकल्प सही हैं क्योंकि पुलकेशिन द्वितीय ने हर्षवर्धन को हराया था, नरसिंहवर्मन प्रथम ने वातापी जीती थी और राजराज प्रथम ने मालदीव पर विजय प्राप्त की थी। यह कालानुक्रमिक विसंगति है।

20. (4) उसने महाबलीपुरम में संरचनात्मक तटीय मंदिर का निर्माण कराया था।
नरसिंहवर्मन प्रथम के काल में ह्वेनसांग ने कांचीपुरम की यात्रा की और उन्होंने ही मामल्लपुरम नगर की स्थापना की थी। उन्होंने श्रीलंका के राजकुमार मानवम्मा की सहायता हेतु सफल नौसैनिक अभियान भी भेजे थे। किंतु, महाबलीपुरम के संरचनात्मक तटीय मंदिर का निर्माण उनके शासनकाल में नहीं, बल्कि बाद में नरसिंहवर्मन द्वितीय के काल में हुआ था। नरसिंहवर्मन प्रथम के काल की मुख्य पहचान एकाश्म रथ मंदिर हैं।

21. (3) सिंहली राजकुमार मानवम्मा को श्रीलंका के सिंहासन पर पुनः स्थापित करना।
नरसिंहवर्मन प्रथम द्वारा श्रीलंका में नौसैनिक बेड़े भेजने का मुख्य उद्देश्य राजनीतिक मित्रता थी। सिंहली राजकुमार मानवम्मा ने पल्लव दरबार में शरण ली थी और चालुक्यों के विरुद्ध युद्धों में पल्लवों की सहायता की थी। प्रत्युत्तर में, पल्लव राजा ने अपनी नौसैनिक शक्ति का प्रयोग कर मानवम्मा को श्रीलंका के सिंहासन पर पुनः स्थापित किया। यह अभियान पल्लव नौसेना की बढ़ती सामर्थ्य और अंतरराष्ट्रीय प्रभाव को दर्शाता है।

22. (1) महेंद्र शैली, मामल्ल शैली, राजसिंह शैली, नन्दिवर्मन शैली
पल्लव मंदिर वास्तुकला का विकास चार क्रमिक चरणों में हुआ। प्रथम चरण महेंद्र शैली का था, जिसमें शैलकृत गुफाएं बनाई गईं। द्वितीय चरण मामल्ल शैली में एकाश्म रथों का निर्माण हुआ। तृतीय चरण राजसिंह शैली में संरचनात्मक पत्थर के मंदिरों की शुरुआत हुई, जैसे कांचीपुरम का कैलाशनाथ मंदिर। अंतिम नन्दिवर्मन शैली में मंदिरों का आकार छोटा हो गया। यह विकासवादी क्रम भारतीय कला इतिहास में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

23. (4) नरसिंहवर्मन द्वितीय (राजसिंह)
महाबलीपुरम का तटीय मंदिर पल्लव वास्तुकला की राजसिंह शैली का उत्कृष्ट उदाहरण है। इसका निर्माण आठवीं शताब्दी के आरंभ में सम्राट नरसिंहवर्मन द्वितीय (राजसिंह) के संरक्षण में हुआ था। यह संरचनात्मक वास्तुकला की दिशा में एक बड़ा कदम था, जहाँ प्राकृतिक चट्टानों के स्थान पर पत्थर के खंडों का उपयोग किया गया। यह समुद्र तट पर स्थित है और अपनी भव्यता एवं बारीक नक्काशी के लिए विश्व प्रसिद्ध है।

24. (1) केवल I और II
महाबलीपुरम के पंच रथों का निर्माण नरसिंहवर्मन प्रथम के शासनकाल में हुआ था। ये संरचनाएँ एकाश्म हैं, जिन्हें विशाल प्राकृतिक चट्टानों को काटकर तराशा गया है। इन रथों में धर्मराज रथ सर्वाधिक विशाल और विस्तृत है। यद्यपि इन्हें रथ कहा जाता है, किंतु ये वास्तव में तत्कालीन मंदिर डिजाइनों के प्रतिरूप हैं। ये प्राचीन भारतीय वास्तुकला में नवीन प्रयोगों और उत्कृष्ट शिल्प कौशल का अद्वितीय संगम प्रस्तुत करते हैं।

25. (3) स्तंभों वाले हॉल और नक्काशीदार पट्टिकाओं वाली एक खुली शैलकृत गुफा
पल्लव वास्तुकला की मामल्ल शैली के अंतर्गत मंडप शब्द उन विशिष्ट गुफा मंदिरों हेतु प्रयुक्त होता है, जो पहाड़ों को काटकर बनाए गए स्तंभों वाले हॉल होते हैं। इन मंडपों की भित्तियों पर पौराणिक कथाओं की अत्यंत सुंदर और विस्तृत नक्काशीदार पट्टिकाएं उत्कीर्ण हैं। यह शैली मुख्यतः महाबलीपुरम में दृष्टव्य है। यह स्वतंत्र मंदिरों के उद्भव से पूर्व का एक महत्वपूर्ण स्थापत्य चरण है, जो तत्कालीन शिल्पकारों के कौशल को दर्शाता है।

26. (4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
महाबलीपुरम का तटीय मंदिर एक संरचनात्मक मंदिर है, न कि पहाड़ों को काटकर बनाई गई एकाश्म गुफा। यह पत्थरों को जोड़कर निर्मित दक्षिण भारत के प्राचीनतम मंदिरों में से एक है। इस मंदिर की एक विशेषता यह है कि इसमें शिव और विष्णु दोनों को समर्पित पृथक गर्भगृह विद्यमान हैं। यह स्थापत्य कला और प्राचीन धार्मिक समन्वय का श्रेष्ठ उदाहरण है। अतः प्रथम कथन अशुद्ध है और द्वितीय कथन सत्य है।

27. (4) नरसिंहवर्मन द्वितीय (राजसिंह)
कांचीपुरम का कैलाशनाथ मंदिर पल्लव राजा नरसिंहवर्मन द्वितीय द्वारा निर्मित कराया गया था। यह मंदिर पल्लव वास्तुकला की परिपक्वता का प्रतीक है। यह पूर्णतः एक संरचनात्मक मंदिर है, जिसे मुख्यतः बलुआ पत्थर से बनाया गया है। इसकी सूक्ष्म नक्काशी और विशाल विमान ने दक्षिण भारतीय द्रविड़ शैली की आधारशिला रखी। इस मंदिर ने आगामी शताब्दियों में कई अन्य महान मंदिरों के निर्माण हेतु निरंतर प्रेरणा और स्थापत्य आदर्श प्रदान किया।

28. (1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
दक्षिण भारत के इन प्रसिद्ध मंदिरों का निर्माण विभिन्न राजवंशों के संरक्षण में हुआ। कांचीपुरम का कैलाशनाथ मंदिर नरसिंहवर्मन द्वितीय द्वारा, जबकि तंजावुर का बृहदेश्वर मंदिर चोल सम्राट राजराज प्रथम द्वारा बनवाया गया। वैकुंठ पेरुमल मंदिर का निर्माण नन्दिवर्मन द्वितीय के काल में हुआ और महाबलीपुरम के रथ मंदिर नरसिंहवर्मन प्रथम की देन हैं। ये सभी मंदिर भारतीय इतिहास में वास्तुकला और धार्मिक श्रद्धा के महान केंद्र हैं।

29. (3) यह मुख्य रुप से बलुआ पत्थर से निर्मित एक संरचनात्मक मंदिर है, जो प्रारंभिक द्रविड़ शैली के चरमोत्कर्ष का प्रतिनिधित्व करता है।
कांचीपुरम का कैलाशनाथ मंदिर पल्लव कालीन द्रविड़ वास्तुकला के चरमोत्कर्ष को दर्शाता है। यह बलुआ पत्थर से निर्मित एक पूर्ण संरचनात्मक मंदिर है। इसमें बहुमंजिला पिरामिडाकार विमान और छोटे उप-मंदिरों की श्रृंखला है, जो मुख्य प्रांगण को घेरे हुए है। यह मंदिर न केवल अपनी बारीक नक्काशी हेतु प्रसिद्ध है, बल्कि यह दक्षिण भारत में बड़े स्वतंत्र पत्थर के मंदिरों के निर्माण की शुरुआत की एक महत्वपूर्ण कड़ी है।

30. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
कांचीपुरम के कैलाशनाथ मंदिर के डिजाइन ने राष्ट्रकूट राजाओं को इतना प्रभावित किया कि उन्होंने एलोरा में कैलाश मंदिर का निर्माण कराया। राष्ट्रकूट राजा कृष्ण प्रथम ने कांचीपुरम से कुशल वास्तुकारों और मूर्तिकारों को अपने साथ लिया था। इन्हीं शिल्पकारों के मार्गदर्शन में एलोरा के सुप्रसिद्ध एकाश्म कैलाश मंदिर का निर्माण संपन्न हुआ। इस प्रकार, स्थापत्य शैली के इस हस्तांतरण ने भारतीय कला इतिहास में एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक कड़ी जोड़ी।

31. (1) मुख्य देवता के गर्भगृह के लिए सफेद संगमरमर का विशेष उपयोग।
कांचीपुरम के कैलाशनाथ मंदिर के निर्माण में स्थानीय बलुआ पत्थर का उपयोग हुआ है, न कि सफेद संगमरमर का। संगमरमर का प्रयोग दक्षिण भारतीय मंदिर वास्तुकला के इस प्रारंभिक चरण में नहीं मिलता। इस मंदिर की वास्तविक विशेषताओं में स्तंभों पर उत्कीर्ण सिंहों की आकृतियाँ, बहु-स्तरीय पिरामिडाकार विमान और प्रांगण के चारों ओर निर्मित छोटे उप-मंदिरों की श्रृंखला सम्मिलित है। ये तत्व इस मंदिर को अत्यंत प्रभावशाली स्वरुप प्रदान करते हैं।

32. (4) I, II, III और IV
पल्लव काल संस्कृत और तमिल साहित्य के उत्कर्ष का युग था। दण्डिन और भारवि पल्लव दरबार के रत्न थे, जिन्होंने

Downloaded from www.pdf.tube

क्रमशः 'दशकुमारचरित' और 'किरातार्जुनीय' की रचना की। राजा महेंद्रवर्मन प्रथम ने स्वयं 'मत्तविलास प्रहसन' लिखा। इसी काल में भक्ति आंदोलन भी सक्रिय था, जहाँ संत अप्पर जैसे नयनारों ने मधुर भजनों की रचना की, जो 'तेवरम' के भाग बने। यह युग बौद्धिक और आध्यात्मिक चेतना के प्रसार का स्वर्णिम काल था।

33. (2) विष्णु
पल्लव काल में दक्षिण भारत के भक्ति आंदोलन को दो प्रमुख समूहों ने दिशा प्रदान की। इनमें आलवार वे संत थे जो पूर्णतः भगवान विष्णु और उनके अवतारों की भक्ति में समर्पित थे। उन्होंने तमिल भाषा में गहन भक्ति गीतों की रचना की, जिन्हें 'नलायिरा दिव्य प्रबंधम' के रूप में संकलित किया गया। इन संतों के सरल और प्रेमपूर्ण संदेशों ने समाज के सभी वर्गों में वैष्णव धर्म को अत्यधिक लोकप्रिय और सुलभ बना दिया था।

34. (1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
पल्लव काल के विद्वानों ने विभिन्न भाषाओं में उत्कृष्ट साहित्य सृजित किया। दण्डिन ने संस्कृत में 'दशकुमारचरित' लिखा, जबकि पेरुन्देवनार ने 'भारत वेनबा' के माध्यम से महाभारत का तमिल अनुवाद किया। नयनार संत अप्पर अपने भक्तिपूर्ण 'तेवरम' भजनों के लिए प्रसिद्ध हुए। राजा महेंद्रवर्मन प्रथम ने स्वयं 'मत्तविलास प्रहसन' नामक व्यंग्यात्मक नाटक की रचना की। इन कृतियों ने तत्कालीन समाज के धार्मिक और बौद्धिक जीवन को समृद्ध एवं सुव्यवस्थित किया था।

35. (3) शैव और वैष्णव धर्म को लोकप्रिय बनाना, जिससे जैन धर्म का पतन हुआ।
पल्लव काल में आलवारों और नयनारों द्वारा संचालित भक्ति आंदोलन का सर्वाधिक प्रभाव धार्मिक परिदृश्य के परिवर्तन पर पड़ा। इन संतों ने सरल तमिल भाषा और संगीत से ईश्वर के प्रति व्यक्तिगत निष्ठा का प्रचार किया, जिससे जनता शैव और वैष्णव धर्मों की ओर आकर्षित हुई। परिणामस्वरूप, उस समय तक प्रभावी रहे जैन और बौद्ध धर्मों का प्रभाव क्रमिक रूप से क्षीण होने लगा। इस आंदोलन ने हिंदू धर्म को पुनर्जीवित किया।

36. (4) आंडाल - आलवार परंपरा
दक्षिण भारत के भक्ति संतों में आंडाल एकमात्र महिला आलवार संत थीं, जो अपनी अटूट विष्णु भक्ति हेतु प्रसिद्ध हैं। उन्होंने 'तिरुपावै' जैसी रचनाओं से भगवान रंगनाथ के प्रति प्रेम व्यक्त किया। अन्य विकल्पों में, अप्पर और संबंधर नयनार संत थे (शिव उपासक), जबकि नम्मालवार विष्णु भक्त होने के कारण आलवार परंपरा से थे। अतः केवल आंडाल का आलवार परंपरा के साथ सुमेलित होना ही ऐतिहासिक रुप से पूर्णतः सही है।

37. (3) मुत्तरैयर
मध्यकालीन चोल राजवंश की स्थापना विजयालय ने नौवीं शताब्दी में की थी। 850 ईस्वी के आसपास, उसने कावेरी डेल्टा में मुत्तरैयर नामक स्थानीय शासक परिवार को पराजित कर तंजावुर पर अधिकार कर लिया। उस समय मुत्तरैयर शासक पल्लव और पांड्य राजाओं के बीच प्रतिद्वंद्विता का लाभ उठाकर शासन कर रहे थे। विजयालय की इस विजय ने चोल साम्राज्य की सुदृढ़ नींव रखी, जो आगे चलकर दक्षिण भारत का सर्वाधिक शक्तिशाली साम्राज्य बना।

NODIA

38. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
चोल संस्थापक विजयालय प्रारंभ में पल्लव राजाओं के अधीन एक सामंत थे। जब पल्लवों और पांड्यों में संघर्ष चल रहा था, तब विजयालय ने अवसर पाकर तंजावुर को जीत लिया। इस ऐतिहासिक विजय और सत्ता के अभ्युदय की स्मृति में उन्होंने तंजावुर में देवी निशुंभसूदिनी का एक भव्य मंदिर बनवाया। ये दोनों तथ्य प्रमाणित करते हैं कि चोल साम्राज्य का उदय एक सामंत की महत्वाकांक्षा और धार्मिक निष्ठा का परिणाम था।

39. (3) केवल III
चोल इतिहास के प्रारंभिक चरण में आदित्य प्रथम ने अंतिम पल्लव राजा अपराजितवर्मन को पराजित कर पल्लव सत्ता समाप्त की। कालांतर में, परान्तक प्रथम को तकोलम के भीषण युद्ध में राष्ट्रकूटों के हाथों पराजय मिली। हालाँकि, विजयालय ने संपूर्ण पांड्य साम्राज्य को नहीं जीता था; उन्होंने केवल तंजावुर और निकटवर्ती क्षेत्रों पर नियंत्रण किया था। पांड्य साम्राज्य की पूर्ण विजय बाद के शक्तिशाली चोल शासकों के शासनकाल में संपन्न हुई थी।

40. (1) कृष्ण तृतीय
949 ईस्वी में हुआ तकोलम का युद्ध चोलों के लिए एक भीषण आघात था। इस युद्ध में राष्ट्रकूट सम्राट कृष्ण तृतीय ने चोल राजा परान्तक प्रथम की सेना को निर्णायक रूप से पराजित किया। इस पराजय के कारण चोलों ने अपने उत्तरी क्षेत्रों, विशेषकर तोंडाइमंडलम पर से नियंत्रण खो दिया और उनके विस्तार की गति दशकों के लिए रुक गई। यह राष्ट्रकूटों की सैन्य श्रेष्ठता का प्रमाण था जिसने चोलों को रणनीतिक पुनर्विचार हेतु विवश किया।

41. (3) सिंहविष्णु
विजयालय, आदित्य प्रथम और परान्तक प्रथम चोल राजवंश के महत्वपूर्ण शासक थे, जिन्होंने साम्राज्य के प्रारंभिक विस्तार में योगदान दिया। इसके विपरीत, सिंहविष्णु पल्लव राजवंश के प्रतापी राजा थे, जिन्होंने छठी शताब्दी के अंत में पल्लव शक्ति को पुनर्जीवित किया था। वे कांचीपुरम को राजधानी बनाने और अपनी विजयों के लिए प्रसिद्ध हैं। अतः राजवंश की भिन्नता के कारण सिंहविष्णु इस समूह में बेमेल हैं और वे चोल राजाओं की श्रेणी में नहीं आते।

42. (1) I, II, III और IV
चोल सम्राट राजराज प्रथम अपनी महान सैन्य उपलब्धियों हेतु विख्यात हैं। उन्होंने चेर नौसेना को ध्वस्त किया, उत्तरी श्रीलंका को जीतकर चोल प्रांत बनाया और मालदीव द्वीपों पर अधिकार किया। उन्होंने पश्चिमी चालुक्यों के विरुद्ध भी सफल अभियान चलाए। यद्यपि, दक्षिण-पूर्व एशिया के श्रीविजय साम्राज्य के विरुद्ध मुख्य नौसैनिक विजय उनके पुत्र राजेंद्र प्रथम के काल में हुई थी। राजराज प्रथम ने मुख्यतः भारतीय तटीय क्षेत्रों में अपना प्रभुत्व स्थापित किया था।

43. (4) 'नाडु' और 'मण्डलम' के बीच की एक प्रशासनिक इकाई
राजराज प्रथम के शासनकाल में साम्राज्य को विभिन्न स्तरों पर विभाजित किया गया था। वलनाडु एक ऐसी प्रशासनिक इकाई थी जो प्रांत (मण्डलम) और जिले (नाडु) के मध्य स्थित थी। कई नाडु मिलकर एक वलनाडु का निर्माण करते थे। इस विभाजन का उद्देश्य राजस्व संग्रह और स्थानीय शासन को सुव्यवस्थित करना था। यह चोलों की सूक्ष्म शासन पद्धति का उत्कृष्ट उदाहरण है, जिसने इतने विशाल साम्राज्य को स्थायित्व और प्रशासनिक सुगमता प्रदान की।

44. (2) गंगैकोण्ड
राजराज प्रथम ने अपनी विजयों के उपलक्ष्य में मुम्मुडि चोल, जयकोण्ड और शिवपादशेखर जैसी उपाधियां धारण की थीं। इसके विपरीत, 'गंगैकोण्ड' की उपाधि उनके पुत्र राजेंद्र प्रथम ने धारण की थी, जब उन्होंने गंगा नदी तक सफल सैन्य अभियान संचालित किया था। राजराज प्रथम की उपाधियां उनके धार्मिक रुझान और दक्षिण भारत में उनकी सैन्य सर्वोच्चता को प्रदर्शित करती हैं। यह तथ्य चोल शासकों की पृथक विजयों के ऐतिहासिक महत्व को स्पष्ट करता है।

45. (1) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
चोल साम्राज्य का प्रशासन एक पिरामिडनुमा संरचना में व्यवस्थित था। सर्वोच्च स्तर पर मण्डलम (प्रांत) थे, जो वलनाडु में विभाजित थे। नाडु एक कृषि प्रधान जिला था, जबकि कुर्रम या कोट्टम गांवों का एक छोटा समूह होता था। यह विस्तृत वर्गीकरण चोलों को स्थानीय स्तर पर नियंत्रण बनाए रखने और राजस्व कार्यों को पारदर्शिता से करने में सहायता करता था। इस व्यवस्था ने ग्रामीण स्वायत्तता और केंद्रीय नियंत्रण में संतुलन स्थापित किया।

46. (4) उसने पूर्ण केंद्रीय निरंकुशता स्थापित करने के लिए सभी स्थानीय ग्राम सभाओं को व्यवस्थित रुप से समाप्त कर दिया।
राजराज प्रथम ने व्यवस्थित भूमि सर्वेक्षण द्वारा राजस्व व्यवस्था सुधारी और साम्राज्य को मण्डलमों में विभाजित किया। उन्होंने एक शक्तिशाली स्थायी नौसेना भी गठित की। हालाँकि, यह कहना सर्वथा अनुचित है कि उन्होंने स्थानीय ग्राम सभाओं को समाप्त किया। इसके विपरीत, उनके शासन में स्थानीय स्वशासन और ग्राम सभाएं अधिक शक्तिशाली एवं स्वायत्त हुईं, जो चोल शासन की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विशेषता और आधारभूत मजबूती मानी जाती हैं।

47. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
राजेंद्र प्रथम ने अपने पिता के विस्तारवादी अभियान को उत्तर भारत तक पहुँचाया। उन्होंने एक शक्तिशाली सेना भेजी जिसने बंगाल के पाल राजा महिपाल को पराजित कर गंगा नदी तक अधिकार किया। इस अभूतपूर्व सैन्य सफलता और गंगा जल को अपनी नई राजधानी लाने की उपलब्धि के उपलक्ष्य में उन्होंने 'गंगैकोण्ड चोल' की उपाधि धारण की। अतः कथन और कारण दोनों सत्य हैं और कारण कथन की उचित व्याख्या प्रस्तुत करता है।

48. (2) श्रीविजय के मलक्का जलडमरुमध्य के एकाधिकार को तोड़कर चोल व्यापार को सुरक्षित करना।
राजेंद्र चोल द्वारा श्रीविजय साम्राज्य के विरुद्ध नौसैनिक अभियान का मुख्य कारण आर्थिक और रणनीतिक था। श्रीविजय साम्राज्य मलक्का जलडमरुमध्य के महत्वपूर्ण समुद्री मार्ग को नियंत्रित करता था, जो चीन के साथ चोल व्यापार में बाधक था। चोल साम्राज्य ने अपने व्यापारियों के हितों की सुरक्षा और व्यापारिक मार्ग सुगम बनाने हेतु यह युद्ध लड़ा। इस विजय ने चोल नौसेना की अजेयता को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्थापित किया और व्यापार को नई ऊंचाइयां दीं।

49. (2) 1, 2, 3
राजेंद्र प्रथम के सैन्य अभियानों का क्रम उनके साम्राज्य विस्तार की रणनीति स्पष्ट करता है। शासन के प्रारंभिक वर्षों में उन्होंने संपूर्ण श्रीलंका को जीतकर चोल नियंत्रण में लिया। तत्पश्चात, उन्होंने उत्तर भारत की ओर प्रस्थान किया और गंगा अभियान पूर्ण कर 'गंगैकोण्ड' की उपाधि ली। अंत में, उन्होंने दक्षिण-पूर्व एशिया के श्रीविजय साम्राज्य के विरुद्ध ऐतिहासिक नौसैनिक अभियान चलाया। यह कालक्रम चोलों की निरंतर बढ़ती सैन्य शक्ति और भौगोलिक विस्तार को दर्शाता है।

50. (1) I, II और III
राजेंद्र चोल प्रथम ने गंगा विजय के पश्चात गंगैकोण्ड चोलपुरम राजधानी बसाई और वहाँ 'चोलगंगम' नामक विशाल जलाशय निर्मित कराया। उन्होंने एन्नायिरम में एक प्रमुख वैदिक शिक्षा केंद्र भी स्थापित किया। हालाँकि, उनकी नौसेना कडारम के शासक से नहीं हारी थी; वास्तव में, उन्होंने कडारम को पराजित किया था। उनकी ये उपलब्धियां उन्हें एक महान निर्माता और शिक्षा के संरक्षक के रूप में इतिहास में प्रतिष्ठित करती हैं।

51. (3) राजराज प्रथम - हर्षवर्धन
सम्राट हर्षवर्धन का शासनकाल सातवीं शताब्दी में था, जबकि चोल राजा राजराज प्रथम का शासनकाल 10वीं-11वीं शताब्दी के दौरान था। अतः ये दोनों शासक समकालीन नहीं थे। अन्य विकल्प सही हैं क्योंकि पुलकेशिन द्वितीय ने हर्षवर्धन को हराया था, राजेंद्र प्रथम ने पाल शासक महिपाल के विरुद्ध युद्ध किया था और नरसिंहवर्मन प्रथम का पुलकेशिन द्वितीय से संघर्ष हुआ था। यह कालानुक्रमिक अंतर विकल्प तीन को गलत सिद्ध करता है।

52. (1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
चोल काल में स्थानीय शासन अत्यंत व्यवस्थित था। 'उर' सामान्य गांवों की सभा थी जिसमें करदाता किसान सम्मिलित थे। 'सभा' या 'महासभा' ब्राह्मणों को दान में दिए गए गांवों की संस्था थी। 'नगरम' व्यापारियों और वाणिज्यिक केंद्रों की सभा थी जो व्यापारिक हितों का प्रबंधन करती थी। 'नाट्टार' जिला स्तर पर कार्य करने वाली प्रभावशाली परिषद थी। यह वर्गीकरण समाज के विभिन्न वर्गों की शासन में सक्रिय भागीदारी को सुनिश्चित करता था।

Click Here to Buy book on Amazon

53. (3) एरी-वारियम
चोल प्रशासन में ग्राम सभाओं के कार्यों हेतु विशेष समितियां गठित थीं, जिन्हें 'वारियम' कहा जाता था। सिंचाई तालाबों के रखरखाव, नहरों की सफाई और जल वितरण संबंधी कार्यों का प्रबंधन 'एरी-वारियम' द्वारा किया जाता था। दक्षिण भारत की कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था में जल प्रबंधन अत्यंत महत्वपूर्ण था, अतः इस समिति की भूमिका निर्णायक होती थी। यह समिति कृषि हेतु जल का न्यायपूर्ण और समान वितरण सुनिश्चित करती थी।

54. (2) ग्राम सभा के सदस्यों के चुनाव के नियम और योग्यताएं।
परान्तक प्रथम के शासनकाल के उत्तरमेरुर शिलालेख भारतीय लोकतांत्रिक इतिहास में मील का पत्थर हैं। ये शिलालेख विशेष रूप से चोल कालीन ग्राम सभाओं के सदस्यों की चुनाव प्रक्रिया, उम्मीदवारों की आवश्यक योग्यताएं और अयोग्यता की शर्तों का सविस्तार विवरण प्रदान करते हैं। यह साक्ष्य प्रमाणित करता है कि 10वीं शताब्दी में भी भारत में स्थानीय स्तर पर अत्यंत व्यवस्थित और पारदर्शी चुनावी प्रणाली विद्यमान थी, जो आज भी प्रेरणादायक है।

55. (2) केवल I और II
चोल शासन में ग्राम समितियां विशिष्ट उत्तरदायित्व निभाती थीं। 'तोट्ट-वारियम' सार्वजनिक उद्यानों की देखरेख करती थी, जबकि 'पोन-वारियम' स्वर्ण की शुद्धता और वित्तीय मामलों का प्रबंधन करती थी। हालाँकि, 'न्याय-वारियम' का कार्य विदेशी व्यापार नहीं, बल्कि ग्रामीण न्यायिक मामलों को सुलझाना था। विदेशी व्यापार मुख्य रूप से 'नगरम' और व्यापारिक संघों द्वारा नियंत्रित होता था। अतः तीसरा कथन ऐतिहासिक रूप से सर्वथा अशुद्ध है।

56. (1) कुदवोलई
चोल काल में ग्राम सभा के सदस्यों के चयन हेतु एक निष्पक्ष लॉटरी पद्धति प्रचलित थी, जिसे 'कुदवोलई' कहा जाता था। इसमें पात्र उम्मीदवारों के नाम ताड़पत्रों पर लिखकर एक मिट्टी के पात्र में डाले जाते थे। तत्पश्चात, एक बालक से रैंडम विधि से पत्र निकलवाया जाता था। जिस उम्मीदवार का नाम निकलता, उसे उस वर्ष हेतु समिति का सदस्य घोषित किया जाता था। यह व्यवस्था भ्रष्टाचार मुक्त चुनाव का एक प्राचीन और श्रेष्ठ उदाहरण थी।

57. (3) 75 वर्ष से अधिक आयु का होना।
उत्तरमेरुर अभिलेखों के अनुसार, ग्राम सभा का सदस्य बनने हेतु कड़े नियम थे। उम्मीदवार के पास स्वयं की कर-योग्य भूमि और आवास होना अनिवार्य था। उसे वेदों और प्रशासनिक कार्यों का ज्ञान होना चाहिए था। आयु सीमा के संबंध में नियम था कि उम्मीदवार 35 से 70 वर्ष के मध्य हो। अतः 75 वर्ष की आयु एक योग्यता नहीं, बल्कि अयोग्यता थी। यह सीमा अनुभव और कार्यक्षमता के संतुलन को सुनिश्चित करने हेतु निर्धारित थी।

58. (2) I, II, III और IV
तंजावुर का बृहदेश्वर मंदिर चोल सम्राट राजराज प्रथम द्वारा निर्मित कराया गया था। यह वास्तुकला का अनुपम चमत्कार है, जो पूर्णतः कठोर ग्रेनाइट पत्थरों से बना है। इसका 216 फीट ऊँचा भव्य विमान और सम्मुख स्थित नंदी की विशाल एकाश्म मूर्ति विस्मयकारी है। 1010 ईस्वी में पूर्ण हुआ यह मंदिर अपनी इंजीनियरिंग और सूक्ष्म नक्काशी के लिए प्रसिद्ध है। राजराज प्रथम ने इसे अपनी शक्ति और धार्मिक निष्ठा के प्रतीक स्वरूप स्थापित किया था।

59. (4) सीमा की दीवार पर बना विशाल, भव्य रूप से सजाया गया प्रवेश द्वार।
चोल मंदिर वास्तुकला में 'गोपुरम्' मंदिर परिसर की बाह्य सुरक्षा भित्ति पर निर्मित विशाल और अलंकृत प्रवेश द्वार को कहते हैं। पल्लव काल की तुलना में चोल काल में ये द्वार अत्यंत भव्य और ऊंचे होने लगे। इन द्वारों पर देवताओं और पौराणिक आख्यानों की सुंदर मूर्तियां उत्कीर्ण की जाती थीं। गोपुरम् न केवल प्रवेश मार्ग था, बल्कि यह मंदिर की भव्यता और शासक की समृद्धि का एक प्रमुख स्थापत्य प्रतीक भी था।

60. (2) गर्भगृह में स्थापित मुख्य देवता भगवान विष्णु हैं।
तंजावुर का बृहदेश्वर मंदिर पूर्णतः भगवान शिव को समर्पित है, जहाँ उन्हें 'राजराजेश्वर' के रूप में पूजा जाता है। मुख्य गर्भगृह में एक विशाल शिवलिंग स्थापित है, न कि भगवान विष्णु। अन्य कथन सत्य हैं क्योंकि मंदिर के शिखर पर एक भारी अखंड पाषाण रखा गया है, इसकी भित्तियाँ चोल कालीन उत्कृष्ट चित्रों से सुसज्जित हैं और यह द्रविड़ स्थापत्य शैली के परिपक्व चरण का प्रतिनिधित्व करता है।

61. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
तंजावुर के बृहदेश्वर मंदिर को कला समीक्षक द्रविड़ वास्तुकला की पराकाष्ठा स्वीकार करते हैं। इसकी भव्य संरचना और सटीक इंजीनियरिंग प्राचीन भारतीय वास्तुकला की सर्वोच्च उपलब्धि है। इसके ऐतिहासिक महत्व के कारण यूनेस्को ने इसे 'महान जीवंत चोल मंदिरों' की श्रेणी में विश्व धरोहर स्थल घोषित किया है। ये दोनों कथन चोल स्थापत्य की वैश्विक महत्ता और ऐतिहासिक सच्चाई को पुष्ट करते हैं, जो आज भी शोधकर्ताओं हेतु प्रेरणा स्रोत है।

62. (1) 1, 2, 3, 4
इन मंदिरों का निर्माण दक्षिण भारतीय स्थापत्य के क्रमिक विकास को दर्शाता है। महाबलीपुरम का तटीय मंदिर पल्लव कालीन प्रारंभिक संरचनात्मक कृति है। तत्पश्चात कांचीपुरम का कैलाशनाथ मंदिर बना। सदियों बाद, 11वीं शताब्दी में चोल राजा राजराज प्रथम ने तंजावुर का बृहदेश्वर मंदिर निर्मित कराया। अंत में, 12वीं शताब्दी में राजराज द्वितीय द्वारा दारासुरम का ऐरावतेश्वर मंदिर बना। यह क्रम पल्लव से चोल काल तक के कलात्मक उत्कर्ष को स्पष्ट करता है।

63. (1) लुप्त मोम तकनीक
चोल कालीन कांस्य मूर्तियों का निर्माण 'लुप्त मोम तकनीक' नामक परिष्कृत विधि से होता था। इस प्रक्रिया में पहले मोम की विस्तृत आकृति बनाई जाती थी, जिस पर मृदा का लेप लगाकर सांचा तैयार होता था। फिर मोम को पिघलाकर निकाल दिया जाता और रिक्त स्थान में द्रवित कांस्य भरा

Downloaded from www.pdf.tube

जाता था। ठंडा होने पर मृदा का सांचा तोड़ दिया जाता था। इस तकनीक से प्रत्येक मूर्ति अपने आप में अद्वितीय और सूक्ष्म विवरणों से युक्त बनती थी।

64. (2) मानवीय अज्ञानता, अहंकार और भ्रम
नटराज की चोल प्रतिमा में भगवान शिव के चरणों के नीचे कुचला जा रहा बौना राक्षस 'अपस्मार पुरुष' का प्रतीक है। यह प्रतीकात्मक रूप से मानवीय अज्ञानता, अहंकार और उस भ्रम को दर्शाता है जो व्यक्ति को सत्य मार्ग से विचलित करता है। शिव का उस पर नृत्य यह संदेश देता है कि ज्ञान और आध्यात्मिक अनुशासन से ही इन विकारों पर विजय संभव है। यह मूर्ति गहरे दार्शनिक सिद्धांतों का एक उत्कृष्ट दृश्य प्रतिनिधित्व है।

65. (4) I, II, III और IV
नटराज की प्रतिमा का प्रत्येक प्रतीक गहरा अर्थ रखता है। डमरू ब्रह्मांड के सृजन की आदि ध्वनि है, जबकि अग्नि विनाश और शुद्धिकरण का प्रतीक है। अभय मुद्रा भक्तों को सुरक्षा का आश्वासन देती है। इसके चारों ओर व्याप्त अग्नि का वलय समय और ब्रह्मांड के निरंतर सृजन एवं विनाश के चक्र को प्रदर्शित करता है। ये सभी तत्व मिलकर भगवान शिव के पंचकृत्यों को एक ही प्रतिमा में समाहित कर ब्रह्मांडीय शक्ति को दर्शाते हैं।

66. (1) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
नटराज प्रतिमा के प्रतीकों का आध्यात्मिक अर्थ अत्यंत सटीक है। डमरू सृष्टि के आरंभ की ध्वनि का सूचक है और अग्नि पुराने ब्रह्मांड के लय का प्रतीक है। अभय मुद्रा दैवीय सुरक्षा प्रदान करती है, जबकि शिव के चरणों के नीचे दबा अपस्मार मानव मन की अज्ञानता को प्रदर्शित करता है। यह समग्र संरचना ब्रह्मांडीय संतुलन और आध्यात्मिक मुक्ति के मार्ग को कलात्मक माध्यम से अत्यंत सुंदरता के साथ प्रस्तुत करती है।

67. (3) शिव, पार्वती और स्कंद वाली सोमस्कंद मूर्ति
नटराज के अतिरिक्त 'सोमस्कंद' मूर्ति भी चोल काल की कला और भक्ति परंपरा में अत्यंत लोकप्रिय थी। सोमस्कंद प्रतिमा में भगवान शिव, देवी पार्वती और उनके पुत्र स्कंद को एक साथ एक ही आसन पर विराजित दिखाया जाता है। यह पारिवारिक सामंजस्य और ईश्वरीय अनुग्रह का प्रतीक है। चोल शिल्पकारों ने इन मूर्तियों के माध्यम से मानवीय संवेदनाओं और ईश्वरीय भव्यता का अत्यंत सुंदर और भक्तिपूर्ण चित्रण प्रस्तुत किया है।

68. (1) I, II, III और IV
चोल काल में 'मणिग्रामम' और 'अय्यावोल' जैसे शक्तिशाली व्यापारिक संघों ने अंतरराष्ट्रीय वाणिज्य का संचालन किया। चोलों के चीन के सोंग राजवंश के साथ राजनयिक संबंध थे और उन्होंने विदेशों में व्यापारिक चौकियां स्थापित की थीं। श्रीविजय साम्राज्य मलक्का जलडमरूमध्य पर नियंत्रण रखता था, जिससे चोलों का संघर्ष हुआ। चोल अश्वों के निर्यातक नहीं थे, बल्कि वे अरब जगत से अपनी सेना हेतु बड़ी संख्या में युद्ध के अश्वों का नियमित आयात करते थे।

69. (3) अंजुवण्णम में विदेशी व्यापारी शामिल थे, जबकि मणिग्रामम घरेलू व्यापार में संलग्न था।
चोल साम्राज्य के व्यापारिक संघों की भूमिकाएं स्पष्ट थीं। 'अंजुवण्णम' मुख्य रूप से तटीय क्षेत्रों का संघ था, जिसमें अरब और यहूदी जैसे विदेशी व्यापारियों की प्रधानता थी, जो समुद्री व्यापार देखते थे। इसके विपरीत, 'मणिग्रामम' आंतरिक और क्षेत्रीय व्यापारिक गतिविधियों का संचालन करने वाला शक्तिशाली संघ था। यह कार्य विभाजन विदेशी मुद्रा अर्जन और घरेलू बाजार को स्थिर रखने में प्रभावी था, जिससे आर्थिक समृद्धि सुनिश्चित हुई।

70. (2) ऐहोल
'ऐन्नूर्रुवर' या 'पांच सौ के स्वामी' नामक प्रसिद्ध व्यापारिक संघ का उद्भव कर्नाटक के ऐतिहासिक नगर ऐहोल में हुआ था। यह संघ भारत के अतिरिक्त दक्षिण-पूर्व एशिया के विभिन्न देशों में सक्रिय था। ऐहोल उस समय चालुक्य साम्राज्य का प्रमुख वाणिज्यिक केंद्र था, जहाँ से इन व्यापारियों ने अपने प्रभाव का विस्तार किया। चोल काल में इस संघ को विशेष शाही संरक्षण प्राप्त था, जिससे उन्होंने अंतरराष्ट्रीय समुद्री व्यापार में अपनी धाक जमाई थी।

71. (1) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
दक्षिण भारतीय व्यापारिक संघों की प्रकृति उनके कार्यक्षेत्र से निर्धारित थी। 'मणिग्रामम' घरेलू वाणिज्य में अग्रणी था, जबकि 'अंजुवण्णम' में विदेशी व्यापारियों का समावेश था। 'अय्यावोल' संघ अपनी उत्पत्ति ऐहोल से मानता था और एक शीर्ष निकाय था। 'नानादेशी' संघ उन व्यापारियों का समूह था जो विभिन्न देशों और दूर-दराज के क्षेत्रों में व्यापारिक काफिलों का संचालन करते थे। इन संघों के सहयोग ने दक्षिण भारत को प्रमुख वैश्विक व्यापारिक केंद्र बनाया।

72. (1) व्यापारियों के लिए समुद्री व्यापार और वाणिज्यिक विशेषाधिकारों में वृद्धि।
चोल सम्राटों द्वारा चीन के सोंग राजवंश के दरबार में भेजे गए दूतमंडलों का प्राथमिक लाभ आर्थिक था। इनके कारण तमिल व्यापारियों को चीनी बंदरगाहों पर विशेष व्यापारिक अधिकार प्राप्त हुए और रेशम एवं मसालों का विनिमय सुगम हुआ। यद्यपि इसके सांस्कृतिक प्रभाव भी थे, किंतु मुख्य सफलता अंतरराष्ट्रीय समुद्री मार्ग को सुरक्षित करने और चोल कोष को व्यापारिक करों से समृद्ध करने में मिली। इसने चोलों को वैश्विक आर्थिक शक्ति बनाया।

73. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
चोल साम्राज्य की वास्तविक शक्ति उसकी अजेय नौसेना थी, जिसका उपयोग रक्षा और विस्तार दोनों हेतु हुआ। राजराज प्रथम और राजेंद्र प्रथम के काल में चोल नौसेना ने बंगाल की खाड़ी पर पूर्ण आधिपत्य स्थापित कर लिया था। इस समुद्री क्षेत्र में उनके निर्बाध नियंत्रण और निरंतर विजयों के कारण ही इतिहासकारों ने बंगाल की खाड़ी को 'चोल झील' की संज्ञा दी है। ये तथ्य चोलों की समुद्री युद्धकला और भू-राजनीतिक प्रभाव को पुष्ट करते हैं।

NODIA

74. (1) राजेंद्र तृतीय
राजेंद्र तृतीय चोल राजवंश के अंतिम ज्ञात और मान्यता प्राप्त शासक थे। उनके शासनकाल में चोल साम्राज्य की शक्ति अत्यंत क्षीण हो चुकी थी और वह आंतरिक विद्रोहों एवं बाहरी आक्रमणों से त्रस्त था। अंततः, 1279 ईस्वी में पांड्य राजाओं ने उन्हें पराजित किया, जिसके साथ ही गौरवशाली चोल साम्राज्य का औपचारिक अंत हो गया। इस पतन के पश्चात चोल क्षेत्र पांड्यों के अधीन चला गया, जिससे दक्षिण भारतीय राजनीति में नवीन युग का प्रारंभ हुआ।

75. (4) कोरोमंडल तट पर पुर्तगाली नौसैनिक आक्रमण ने सीधे तौर पर चोल राजधानी को नष्ट कर दिया।
चोल साम्राज्य के पतन के कारणों में पांड्यों का पुनरुत्थान, होयसालों का उदय और चालुक्यों के साथ निरंतर युद्ध सम्मिलित थे। इन कारकों ने साम्राज्य के संसाधनों को रिक्त कर दिया था। किंतु, पुर्तगाली आक्रमण की बात ऐतिहासिक रूप से पूर्णतः अशुद्ध है, क्योंकि पुर्तगाली भारत में 15वीं शताब्दी में आए थे, जबकि चोल साम्राज्य 13वीं शताब्दी में ही समाप्त हो चुका था। अतः पुर्तगाली हस्तक्षेप चोलों के पतन का कारण नहीं हो सकता था।

76. (2) पांड्यों का पुनरुत्थान और होयसालों तथा काकतीयों का उदय।
13वीं शताब्दी में चोल साम्राज्य के विघटन के पश्चात दक्षिण भारत में शक्तियों का पुनर्संतुलन हुआ। मदुरै के पांड्य पुनः प्रमुख शक्ति बने और चोल क्षेत्रों पर नियंत्रण स्थापित किया। इसी काल में कर्नाटक में होयसाल और आंध्र में काकतीय राजवंशों ने भी अपनी शक्ति का विस्तार किया। यह युग क्षेत्रीय राज्यों के मध्य तीव्र संघर्ष का था, जिसने कालांतर में विजयनगर जैसे विशाल साम्राज्य के उदय हेतु आवश्यक राजनीतिक परिस्थितियाँ निर्मित कीं।

77. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
चोलों के पतन के पश्चात पांड्यों और होयसालों में वर्चस्व का संघर्ष हुआ, किंतु उत्तर से मुस्लिम आक्रमणों ने इन्हें दुर्बल कर दिया। इस राजनीतिक अस्थिरता में दक्षिण की संस्कृति और धर्म की सुरक्षा हेतु एक सुदृढ़ शक्ति की आवश्यकता उत्पन्न हुई। इसी पृष्ठभूमि में हरिहर और बुक्का ने 1336 ईस्वी में विजयनगर साम्राज्य की स्थापना की। अतः दोनों कथन ऐतिहासिक रूप से सत्य हैं और दक्षिण भारत के एक महत्वपूर्ण परिवर्तनकारी दौर को स्पष्ट करते हैं।

78. (4) काकतीय - तंजावुर
परवर्ती चोलों की राजधानी गंगैकोण्ड चोलपुरम थी, पांड्यों की मदुरै और होयसालों का केंद्र द्वारसमुद्र था। ये सुमेलित हैं। किंतु, काकतीय राजवंश की राजधानी वारंगल थी, न कि तंजावुर। तंजावुर ऐतिहासिक रूप से चोलों का मुख्य केंद्र रहा था। यह भौगोलिक विसंगति विकल्प चार को अशुद्ध बनाती है। काकतीयों का प्रभाव मुख्यतः दक्कन के पूर्वी भाग में केंद्रित था, जो तंजावुर से काफी अधिक दूरी पर स्थित है।

79. (1) कर्नाटक
होयसाल राजवंश ने मुख्यतः वर्तमान कर्नाटक क्षेत्र पर शासन किया था। उनकी राजधानी द्वारसमुद्र थी, जो कला और संस्कृति का प्रमुख केंद्र बनी। होयसालों ने चोलों के पतन के दौरान सहयोगी और प्रतिद्वंद्वी के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी वास्तुकला, विशेषकर बेलूर और हलेबिडु के मंदिर, अपनी जटिल नक्काशी और विशिष्ट तल योजना हेतु प्रसिद्ध हैं। कर्नाटक की भूमि पर होयसालों का शासन मध्यकालीन भारतीय इतिहास का एक गौरवशाली अध्याय है।

80. (2) कडमै
चोल अर्थव्यवस्था का आधार कृषि थी और राज्य की आय का प्रमुख स्रोत भू-राजस्व था। किसानों से एकत्र किए जाने वाले इस अनिवार्य भू-कर को विशिष्ट रूप से 'कडमै' कहा जाता था। इसके अतिरिक्त 'वेट्टि' का अर्थ जबरन श्रम (बेगार) होता था। चोल शासकों ने भूमि की उर्वरता के आधार पर राजस्व निर्धारण हेतु सटीक सर्वेक्षण प्रणालियाँ अपनाई थीं। कडमै का भुगतान सामान्यतः नकद अथवा अनाज के रूप में स्वीकार किया जाता था।

www.nodia.in

Click Here to Buy book on Amazon

अध्याय 07

प्राचीन भारत में कला, स्थापत्य एवं वैज्ञानिक विकास

1. निम्नलिखित में से कौन अजंता की गुफाओं की मूलभूत संरचनात्मक विशेषता का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(1) ये ग्रेनाइट और संगमरमर के इंटरलॉकिंग ब्लॉकों का उपयोग करके बनाए गए संरचनात्मक मंदिर हैं।
(2) ये घोड़े की नाल के आकार की नदी घाटी में चट्टानों को काटकर बनाए गए स्मारक हैं।
(3) ये मौर्य काल की स्थापत्य शैली के विशिष्ट ईंट-आधारित निर्माण हैं।
(4) ये प्रारंभिक बौद्ध मठवासी आवास के लिए अनुकूलित प्राकृतिक चूना पत्थर की गुफाएं हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

2. एलोरा की गुफाओं के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) इनका उत्खनन पूरी तरह से अशोक के अधीन मौर्य साम्राज्य के शासनकाल के दौरान किया गया था।
(2) इस स्थल पर बौद्ध, हिंदू और जैन धर्म से जुड़े स्मारक हैं।
(3) इनका उत्खनन चरणंद्री पहाड़ियों की ऊर्ध्वाधर सतह को काटकर किया गया था।
(4) कैलाशनाथ मंदिर यहाँ पाई जाने वाली एक उल्लेखनीय एकाश्म शैलकृत संरचना है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

3. सही स्थापत्य संयोजन की पहचान करने के लिए सूची I का सूची II के साथ मिलान करें:
सूची I: (प्राचीन मंदिर स्थापत्य शैलियाँ)
A. नागर
B. द्रविड़
C. वेसर
D. पंचायतन
सूची II: (परिभाषित विशेषताएं)
i. पिरामिडाकार विमान और प्रमुख गोपुरम
ii. उत्तरी और दक्षिणी तत्वों के संयोजन वाली मिश्रित शैली
iii. वक्राकार शिखर और उत्तर भारत में प्रचलित
iv. चार सहायक मंदिरों से घिरा एक केंद्रीय मंदिर
(1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(2) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
(3) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

4. भरहुत का प्राचीन स्तूप मुख्य रूप से अपनी किस कलात्मक विशेषता के लिए प्रसिद्ध है?
(1) इसके विशाल एकाश्म स्तंभ जिन पर विशिष्ट पशु-शीर्ष बने हैं।
(2) इसके मुख्य निर्माण में पॉलिश किए गए सफेद संगमरमर की पट्टियों का व्यापक उपयोग।
(3) इसके विशाल आंतरिक गुंबद पर चित्रित विस्तृत बहु-रंगीन भित्ति चित्र।
(4) जातक कथाओं और बुद्ध के जीवन को दर्शाने वाली विस्तृत कथात्मक नक्काशी।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

5. सांची स्तूप के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. महान स्तूप के मूल ईंट निर्मित आंतरिक भाग का निर्माण सम्राट अशोक द्वारा करवाया गया था।
II. विस्तृत नक्काशीदार पत्थर के प्रवेश द्वार (तोरण) गुप्त काल के दौरान जोड़े गए थे।
III. इसमें बुद्ध और उनके प्रमुख शिष्यों के शारीरिक अवशेष सुरक्षित हैं।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

6. निम्नलिखित में से कौन गांधार कला शैली की विशेषता नहीं है?
(1) नीले-धूसर शिस्ट और स्टुको का व्यापक उपयोग।
(2) बुद्ध का केवल पदचिह्नों जैसे प्रतीकात्मक रूपों के माध्यम से चित्रण।
(3) मानव शरीर रचना और मांसपेशियों के विवरण का यथार्थवादी चित्रण।
(4) ग्रीको-रोमन शैलियों के समान मोटी, यथार्थवादी परतों वाली वस्त्र सज्जा।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

7. प्राचीन भारत में उनके प्राथमिक भौगोलिक और शैलीगत मूल के आधार पर निम्नलिखित मूर्तिकला परंपराओं में से विषम को पहचानिए:
(1) गांधार शैली
(2) मथुरा शैली
(3) अमरावती शैली
(4) वेसर शैली
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

8. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं — अभिकथन (A) और कारण (R)। उचित विकल्प चुनकर प्रश्न का उत्तर दें:
अभिकथन (A): गांधार कला शैली को अक्सर 'ग्रीको-बुद्धिस्ट' कला के रूप में जाना जाता है।
कारण (R): इसने भारतीय बौद्ध विषयों को हेलेनिस्टिक और रोमन सौंदर्य तकनीकों के साथ संयोजित किया।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

9. अजंता के भित्ति चित्रों के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
कथन I: इन चित्रों को 'फ्रेस्को' तकनीक का उपयोग करके बनाया गया था जहाँ गीले प्लास्टर पर रंग लगाए जाते हैं।
कथन II: इन चित्रों के मुख्य विषय जातक कथाएं और गौतम बुद्ध का जीवन हैं।
निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?
(1) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(2) कथन II सही है और कथन I गलत है।
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

10. प्राचीन भारतीय गणित के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. आर्यभट्ट ने मौलिक ग्रंथ 'आर्यभटीय' की रचना की।
II. आर्यभट्ट ने पाई (pi) के अनुमानित मान की गणना दशमलव के चार स्थानों तक की।
III. बख्शाली पांडुलिपि में शून्य के स्थानधारक के रूप में उपयोग के प्रारंभिक प्रमाण मिलते हैं।
IV. ब्रह्मगुप्त शून्य के साथ गणना करने के नियम देने वाले पहले व्यक्ति थे।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?
(1) केवल I और III
(2) केवल II और IV
(3) केवल III
(4) कोई भी कथन गलत नहीं है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

11. प्राचीन भारतीय चिकित्सा ग्रंथों और उनके प्राथमिक विषय का निम्नलिखित में से कौन सा जोड़ा सही सुमेलित है?
(1) चरक संहिता - शल्य प्रक्रियाएं और उपकरण
(2) सुश्रुत संहिता - आंतरिक चिकित्सा और जड़ी-बूटियों का उपयोग
(3) अष्टांग हृदय - विशेष रूप से हाथियों के लिए पशु चिकित्सा विज्ञान
(4) माधव निदान - रोगों का निदान
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

12. प्राचीन भारत के धातुकर्म कौशल का सबसे अच्छा उदाहरण दिल्ली का लौह स्तंभ है। इसके असाधारण संक्षारण प्रतिरोध का सबसे उपयुक्त कारण निम्नलिखित में से कौन सा है?
(1) इसके बाहरी हिस्से पर सीसे की मोटी परत का लेप।
(2) मिसावाइट की एक सुरक्षात्मक निष्क्रिय परत का निर्माण।
(3) रोमन साम्राज्य से प्राप्त उच्च-कार्बन इस्पात से इसका निर्माण।
(4) स्तंभ पर सुरक्षात्मक तेलों का निरंतर लेपन।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

13. सही शैक्षिक संबंधों की पहचान करने के लिए सूची I का सूची II के साथ मिलान करें:
सूची I: (प्राचीन शैक्षणिक संस्थान)
A. नालंदा
B. विक्रमशिला
C. तक्षशिला
D. वल्लभी
सूची II: (संरक्षक राजवंश या प्रमुख व्यक्तित्व)
i. पाल राजवंश के धर्मपाल
ii. मैत्रक राजवंश
iii. गुप्त राजवंश के कुमारगुप्त I
iv. चाणक्य (प्रसिद्ध शिक्षक के रूप में संबद्ध)
(1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(2) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(3) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(4) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

14. एक पुरातत्वविद् को जावर, राजस्थान में प्राचीन और मध्यकालीन समय की रिटॉर्ट्स और आसवन भट्टियाँ मिलती हैं। यह पुरातात्विक साक्ष्य मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किस धातुकर्म प्रक्रिया में प्राचीन भारत की उन्नत क्षमताओं को दर्शाता है?
(1) स्वर्ण शुद्धिकरण
(2) लौह निर्माण
(3) कांस्य ढलाई
(4) जस्ता प्रगलन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

15. प्राचीन भारतीय खगोल विज्ञान के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. वराहमिहिर ने 'बृहत संहिता' की रचना की, जो खगोल विज्ञान सहित विभिन्न विषयों पर एक विश्वकोश है।
II. वराहमिहिर की 'पंचसिद्धांतिका' पांच पूर्ववर्ती खगोलीय ग्रंथों का सार प्रस्तुत करती है।
III. 'रोमक सिद्धांत' ग्रीक खगोलीय प्रभाव के स्पष्ट प्रमाण दर्शाता है।
IV. आर्यभट्ट ने पौराणिक मान्यताओं को खारिज करते हुए सूर्य और चंद्र ग्रहण की वैज्ञानिक व्याख्या प्रदान की।
V. आर्यभट्ट ने बताया कि आकाश का आभासी घूर्णन पृथ्वी

Downloaded from www.pdf.tube

के अक्षीय घूर्णन के कारण होता है।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

(1) केवल I, II, III और IV
(2) केवल II, III, IV और V
(3) केवल I, III, IV और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

16. शुल्ब सूत्र वेदों के परिशिष्ट हैं जो विस्तृत ज्यामितीय निर्देश प्रदान करते हैं। प्राचीन भारत में इन गणितीय ग्रंथों के विकास का प्राथमिक कारण क्या था?

(1) कराधान के उद्देश्यों के लिए कृषि भूमि को मापने की आवश्यकता।
(2) जटिल वैदिक यज्ञ वेदियों के निर्माण में सटीक माप की आवश्यकता।
(3) उपमहाद्वीप में विस्तृत भूमि व्यापार मार्गों के मानचित्रण की आवश्यकता।
(4) शहरी बाजारों के लिए बाट और माप को मानकीकृत करने की इच्छा।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

17. प्राचीन भारतीय मंदिर स्थापत्य के संदर्भ में, "आमलक" शब्द को निम्नलिखित में से कौन सबसे अच्छी तरह परिभाषित करता है?

(1) सार्वजनिक सभाओं के लिए उपयोग किया जाने वाला बड़ा स्तंभों वाला सभा भवन।
(2) नागर शैली के शिखर के शीर्ष पर रखी गई बड़ी, खांचों वाली पत्थर की डिस्क।
(3) सबसे आंतरिक गर्भगृह जहाँ मुख्य देवता को स्थापित किया जाता है।
(4) मुख्य मंदिर के चारों ओर परिक्रमा पथ।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

18. नीचे दिए गए विकल्पों में से प्राचीन भारत में मूर्तिकला शैलियों के विकास के सही कालानुक्रमिक क्रम का चयन करें:

(1) मौर्य कला, शुंग कला, कुषाण कला, गुप्त कला
(2) कुषाण कला, मौर्य कला, गुप्त कला, शुंग कला
(3) मौर्य कला, गुप्त कला, शुंग कला, कुषाण कला
(4) शुंग कला, कुषाण कला, मौर्य कला, गुप्त कला
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

19. प्राचीन भारतीय गणित के प्रणेता आर्यभट्ट को निम्नलिखित में से किस संक्रिया के नियम स्थापित करने का श्रेय दिया जाता है?

(1) अवकल समीकरणों को हल करना
(2) गैर-यूक्लिडियन ज्यामिति का विकास
(3) वर्गमूल और घनमूल निकालना
(4) फाइबोनैचि अनुक्रम का प्रतिपादन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

20. निचली कृष्णा घाटी में स्थित अमरावती स्तूप अपनी जटिल संगमरमर की मूर्तियों के लिए प्रसिद्ध है। निम्नलिखित में से किस राजवंश के अधीन इसे सबसे महत्वपूर्ण संरक्षण और संरचनात्मक स्वरूप प्राप्त हुआ?

(1) मौर्य राजवंश
(2) गुप्त राजवंश
(3) चोल राजवंश
(4) सातवाहन राजवंश
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

21. निम्नलिखित में से कौन सा कथन अजंता और एलोरा की शैलकृत गुफाओं के बीच सही ढंग से अंतर करता है?

(1) अजंता की गुफाएं एक समतल मैदान पर स्थित हैं, जबकि एलोरा की गुफाएं एक गहरी घाटी में स्थित हैं।
(2) अजंता की गुफाएं मुख्य रूप से राष्ट्रकूट काल में बनाई गई थीं, जबकि एलोरा वाकाटक काल से संबंधित है।
(3) अजंता में केवल बौद्ध स्मारक हैं, जबकि एलोरा में बौद्ध, हिंदू और जैन स्मारक हैं।
(4) अजंता विशेष रूप से बिना चित्रों वाली मूर्तियों के लिए जाना जाता है, जबकि एलोरा अपने भित्ति चित्रों के लिए प्रसिद्ध है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

22. निम्नलिखित में से कौन सा तत्व पारंपरिक रूप से मंदिर स्थापत्य की द्रविड़ शैली से जुड़ा नहीं है?

(1) विमान
(2) वक्राकार शिखर
(3) गोपुरम
(4) मंडप
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

23. सही विद्वतापूर्ण योगदानों की पहचान करने के लिए सूची I का सूची II के साथ मिलान करें:

सूची I: (वैज्ञानिक विद्वान)

A. सुश्रुत
B. चरक
C. वराहमिहिर
D. नागार्जुन

सूची II: (उल्लेखनीय योगदान या ग्रंथ)

i. रस रत्नाकर (रसायन विज्ञान)
ii. बृहत संहिता
iii. नासिका-संधान और शल्य चिकित्सा उपकरण
iv. आयुर्वेद और आंतरिक चिकित्सा पर मौलिक ग्रंथ

(1) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(2) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(3) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(4) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

24. गांधार कला शैली के प्रमुख केंद्रों के संबंध में विषम विकल्प की पहचान करें:

(1) सारनाथ
(2) तक्षशिला
(3) पेशावर
(4) बामियान
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

25. मथुरा कला शैली के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. यह बिना किसी महत्वपूर्ण विदेशी शैलीगत प्रभाव के स्वदेशी रूप से विकसित हुई।
II. इसने अपनी मूर्तियों के लिए मुख्य रूप से चित्तीदार लाल बलुआ पत्थर का उपयोग किया।
III. इसने विशेष रूप से केवल बौद्ध देवताओं की मूर्तियों का निर्माण किया।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?
(1) केवल I
(2) केवल II
(3) केवल III
(4) केवल I और II
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

26. गांधार मूर्तियों में अक्सर बुद्ध को घुंघराले बाल, एथलेटिक शरीर और लहराती वस्त्र सज्जा के साथ चित्रित किया जाता है। इस विशिष्ट सौंदर्य चित्रण का सबसे उपयुक्त कारण निम्नलिखित में से कौन सा है?
(1) हेलेनिस्टिक और रोमन कलात्मक परंपराओं का प्रभाव।
(2) स्वदेशी शुंग राजवंश द्वारा प्रत्यक्ष संरक्षण।
(3) प्राचीन वैदिक ग्रंथों के मूर्तिकला निर्देशों का सख्त पालन।
(4) नरम सोपस्टोन का अनन्य उपयोग जिसके कारण ऐसी विस्तृत विशेषताओं की आवश्यकता हुई।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

27. प्राचीन भारतीय चिकित्सा विज्ञान के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
कथन I: सुश्रुत संहिता में नासिका-संधान और मोतियाबिंद सर्जरी सहित जटिल शल्य चिकित्सा प्रक्रियाओं का विस्तृत वर्णन है।
कथन II: चरक संहिता निवारक चिकित्सा, निदान और पाचन एवं प्रतिरक्षा की अवधारणा पर जोर देती है।
निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?
(1) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(2) कथन II सही है और कथन I गलत है।
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

28. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं — अभिकथन (A) और कारण (R)। उचित विकल्प चुनकर प्रश्न का उत्तर दें:
अभिकथन (A): मंदिर स्थापत्य की वेसर शैली प्रमुख रूप से दक्कन क्षेत्र में देखी जाती है।
कारण (R): वेसर शैली एक स्वतंत्र स्थापत्य शैली के रूप में उत्पन्न हुई जो नागर और द्रविड़ शैलियों से पूरी तरह अप्रभावित थी।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

29. स्तूप स्थापत्य के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा जोड़ा गलत सुमेलित है?
(1) मेधि - स्तूप के गुंबद को सहारा देने वाला आधार
(2) अंड - स्तूप का अर्धगोलाकार गुंबद
(3) छत्र - आधार के चारों ओर बना परिक्रमा पथ
(4) हर्मिका - गुंबद के शीर्ष पर स्थित एक बालकनी जैसी संरचना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

30. प्राचीन भारत में वैज्ञानिक विकास के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. अंकन की दशमलव प्रणाली भारत में विकसित हुई थी।
II. प्राचीन भारतीय रसायनविदों ने यूरोप से बहुत पहले जस्ता प्रगलन की प्रक्रिया का सफलतापूर्वक अभ्यास किया था।
III. प्राचीन भारत में कीमिया का आयुर्वेद और 'जीवन के अमृत' की खोज के साथ गहरा संबंध था।
IV. दिल्ली का लौह स्तंभ मौर्य काल के दौरान बनाया गया था।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, III और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

31. एक छात्र प्राचीन भारतीय कला के एक नमूने का अवलोकन करते हुए उसमें गतिशील गति, सघन संरचना और जातक कथाओं को दर्शाने वाली कथात्मक नक्काशी देखता है, जो मुख्य रूप से सफेद चूना पत्थर में खुदी हुई है। ये विशेषताएँ किस कला शैली को दर्शाती हैं?
(1) अमरावती शैली
(2) गांधार शैली
(3) मथुरा शैली
(4) सारनाथ शैली
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

32. राजस्थान के अरावली क्षेत्र में प्राचीन धातुकर्मीय अवशेषों की खोज बड़े पैमाने पर धातुकर्म गतिविधियों का संकेत देती है। प्राचीन भारत में जस्ता निष्कर्षण तकनीकों में महारत हासिल करने का सीधा प्रभाव क्या था?
(1) इससे हल्के वजन वाले सुरक्षात्मक लोहे के कवच का

Click Here to Buy book on Amazon

बड़े पैमाने पर उत्पादन हुआ।
(2) इसने उच्च गुणवत्ता वाले पीतल के उत्पादन को सक्षम बनाया।
(3) इसने अशोक स्तंभों जैसे विशाल संरचनात्मक स्तंभों की ढलाई की अनुमति दी।
(4) इसने सिक्कों के निर्माण में तांबे के उपयोग को पूरी तरह से प्रतिस्थापित कर दिया।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

33. स्थापत्य पदों की सही परिभाषाओं की पहचान करने के लिए सूची I का सूची II के साथ मिलान करें:
सूची I: (शैलकृत स्थापत्य पद)
A. चैत्य
B. विहार
C. स्तूप
D. तोरण
सूची II: (सटीक परिभाषाएं)
i. भिक्षुओं के लिए एक आवासीय मठ
ii. एक प्रार्थना कक्ष जिसके एक सिरे पर स्तूप होता है
iii. एक अत्यधिक अलंकृत प्रवेश द्वार
iv. एक ठोस अर्धगोलाकार टीला जिसमें अवशेष रखे होते हैं
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

34. प्राचीन भारतीय खगोल विज्ञान के संदर्भ में, "सिद्धांत" शब्द को सबसे अच्छी तरह से इस प्रकार परिभाषित किया गया है:
(1) एक व्यापक खगोलीय या गणितीय ग्रंथ।
(2) खगोलीय घटनाओं के अवलोकन को विनियमित करने वाला एक शाही आदेश।
(3) ब्रह्मांड की उत्पत्ति का वर्णन करने वाला एक पौराणिक पाठ।
(4) समुद्री नौवहन के लिए उपयोग किया जाने वाला एक प्राचीन यंत्र।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

35. प्राचीन भारत में रसायन विज्ञान और भौतिक विज्ञान के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. रस शास्त्र ज्ञान की एक विशेष शाखा थी जो पारे और अन्य धातुओं से संबंधित थी।
II. नागार्जुन को पारंपरिक रूप से प्राचीन भारतीय कीमिया का एक प्रगाढ़ विद्वान माना जाता है।
III. प्राचीन भारतीयों में प्राकृतिक रंग तैयार करने के ज्ञान की कमी थी।
IV. कांच बनाना प्राचीन भारत में प्रचलित था जैसा कि हस्तिनापुर की पुरातात्विक खोजों से सिद्ध होता है।
V. प्राचीन शल्य ग्रंथों में क्षारों की तैयारी का विवरण दिया गया था।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल III
(3) केवल IV और V
(4) केवल III और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

36. किस प्रमुख प्राचीन भारतीय गणितज्ञ ने सबसे पहले यह प्रतिपादित किया था कि पृथ्वी एक गोला है जो अपने अक्ष पर घूमती है, जिससे तारों की आभासी गति होती है?
(1) ब्रह्मगुप्त
(2) भास्कराचार्य
(3) वराहमिहिर
(4) आर्यभट्ट
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

37. खगोल विज्ञान और गणित पर महत्वपूर्ण प्राचीन ग्रंथ, 'खंडखाद्यक' की रचना निम्नलिखित में से किसने की थी?
(1) आर्यभट्ट
(2) महावीर
(3) ब्रह्मगुप्त
(4) लल्ला
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

38. प्राचीन भारत के निम्नलिखित स्थापत्य विकासों को उनके सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
I. एलोरा में एकाश्म कैलाशनाथ मंदिर का निर्माण
II. बराबर की पहाड़ियों में शैलकृत गुफाओं का उत्खनन
III. देवगढ़ में संरचनात्मक दशावतार मंदिर का निर्माण
IV. अशोक द्वारा सांची में ईंटों के स्तूप के आंतरिक भाग का निर्माण
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही क्रम चुनें:
(1) II, IV, III, I
(2) IV, II, I, III
(3) II, IV, I, III
(4) IV, III, II, I
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

39. गुप्त काल के दौरान मूर्तिकला के विकास के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) गुप्त मूर्तिकला आध्यात्मिक शांति और संतुलित शारीरिक अनुपात द्वारा पहचानी जाती है।
(2) सुल्तानगंज बुद्ध गुप्त काल की कांस्य मूर्तिकला का एक प्रमुख उदाहरण है।
(3) देवताओं के सिर के चारों ओर विस्तृत प्रभामंडल एक सामान्य विशेषता बन गया।
(4) गांधार प्रभाव अत्यधिक स्पष्ट हो गया, जिसने स्वदेशी शैलियों को पूरी तरह से प्रतिस्थापित कर दिया।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

40. निम्नलिखित में से कौन सा कथन प्राचीन भारतीय ग्रंथ "सूर्य सिद्धांत" के योगदान की सही पहचान करता है?

NODIA

(1) यह ग्रहों की गति और ग्रहण के समय की गणना के नियम प्रदान करता है।
(2) यह मुख्य रूप से रोगों के उपचार का विवरण देने वाली एक चिकित्सा नियमावली है।
(3) यह शास्त्रीय भारतीय संगीत और नृत्य पर सबसे प्राचीन ज्ञात ग्रंथ है।
(4) यह विशेष रूप से द्रविड़ मंदिरों के निर्माण के स्थापत्य नियमों का विवरण देता है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

41. निम्नलिखित में से कौन सी विशेषता अजंता की गुफा चित्रों से संबंधित नहीं है?
(1) गहराई का भ्रम पैदा करने के लिए 'रैखिक परिप्रेक्ष्य' का उपयोग।
(2) सूखे प्लास्टर पर 'टेम्पेरा' तकनीक का प्रयोग।
(3) प्राथमिक विषयों के रूप में रामायण के दृश्यों का चित्रण।
(4) रंग प्राप्त करने के लिए स्थानीय खनिजों और पौधों का उपयोग।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

42. प्राचीन भारत के निम्नलिखित संरचनात्मक मंदिरों में से उनकी स्थापत्य शैली के आधार पर विषम की पहचान करें:
(1) बृहदेश्वर मंदिर, तंजावुर
(2) कंदारिया महादेव मंदिर, खजुराहो
(3) लिंगराज मंदिर, भुवनेश्वर
(4) सूर्य मंदिर, कोणार्क
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

43. स्तूप स्थापत्य में प्रतीकात्मक अर्थों की पहचान करने के लिए सूची I का सूची II के साथ मिलान करें:
सूची I: (स्तूप की विशेषताएं)
A. अंड
B. हर्मिका
C. छत्र
D. प्रदक्षिणा पथ
सूची II: (प्रतीकात्मक अर्थ)
i. देवताओं का निवास स्थान
ii. श्रद्धा और आध्यात्मिक प्रगति का मार्ग
iii. बौद्ध धर्म के तीन रत्न (बुद्ध, धम्म, संघ)
iv. ब्रह्मांड या ब्रह्मांडीय टीला
(1) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(2) A-i, B-iv, C-ii, D-iii
(3) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

44. अजंता में "पद्मपाणि बोधिसत्व" का प्रसिद्ध चित्र प्राचीन भारतीय कला का उत्कृष्ट नमूना है। इसके विषय में कौन सा कथन सही है?
(1) यह गुफा 16 में पाया जाता है और बोधिसत्व को वज्र धारण किए हुए दर्शाता है।
(2) यह गुफा 1 में स्थित है और दयालु बोधिसत्व को नीला कमल धारण किए हुए चित्रित करता है।
(3) यह गुफा 10 में पत्थर पर सीधे चित्रित एक चित्र है जो बुद्ध के जन्म को दर्शाता है।
(4) यह गुफा 26 में पाया गया ब्रह्मांड का एक अमूर्त ज्यामितीय चित्रण है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

45. वैदिक और उत्तर-वैदिक ग्रंथों में पाए जाने वाले वैज्ञानिक ज्ञान के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. अथर्ववेद में रोगों और उनके उपचार से संबंधित सूक्त हैं।
II. वेदांग ज्योतिष खगोल विज्ञान को समर्पित सबसे पुराने भारतीय ग्रंथों में से एक है।
III. ऋग्वेद में नौवहन के लिए उपयोग किए जाने वाले स्पष्ट और उन्नत त्रिकोणमितीय सूत्र हैं।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

46. मथुरा और गांधार कला शैलियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
कथन I: मथुरा शैली धूसर बलुआ पत्थर पर निर्भर थी और यथार्थवादी शारीरिक संरचना पर केंद्रित थी।
कथन II: गांधार शैली ने मुख्य रूप से चित्तीदार लाल बलुआ पत्थर का उपयोग किया और आध्यात्मिक शांति को दर्शाया।
निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?
(1) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(2) कथन II सही है और कथन I गलत है।
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

47. प्राचीन भारतीय धातुकर्म से संबंधित निम्नलिखित में से कौन सी विशेषता सही सुमेलित है?
(1) वूट्ज़ इस्पात - एक क्रूसिबल इस्पात जिसमें विशिष्ट धारियां होती हैं।
(2) दिल्ली का लौह स्तंभ - लुप्त मोम पद्धति का उपयोग करके निर्मित।
(3) जावर खदानें - प्राकृतिक एल्यूमीनियम निकालने का प्राचीन केंद्र।
(4) सुल्तानगंज बुद्ध - ठोस कच्चा लोहा मूर्तिकला का एक उदाहरण।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

48. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं — अभिकथन (A) और कारण (R)। उचित विकल्प चुनकर प्रश्न का उत्तर दें:
अभिकथन (A): गुप्तोत्तर काल के दौरान नालंदा एक

अंतरराष्ट्रीय शिक्षण केंद्र के रूप में उभरा।
कारण (R): इसे पाल राजवंश के शासकों और श्रीविजय के बालपुत्रदेव जैसे विदेशी राजाओं से व्यापक संरक्षण प्राप्त हुआ।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

49. प्राचीन निर्माण तकनीकों का अध्ययन करने वाला एक वास्तुकार देखता है कि प्राचीन भारतीय शिल्पकारों ने आनुपातिक ज्यामिति और सटीक दिशात्मक संरेखण का उपयोग किया था। ये अवधारणाएं मुख्य रूप से किन ग्रंथों में संहिताबद्ध थीं?
(1) उपनिषद
(2) शुल्ब सूत्र
(3) आरण्यक
(4) पुराण
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

50. प्राचीन भारतीय विश्वविद्यालयों के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. तक्षशिला चिकित्सा, सैन्य विज्ञान और कानून के अध्ययन के केंद्र के रूप में प्रसिद्ध था।
II. माना जाता है कि चाणक्य ने तक्षशिला में अध्यापन किया था।
III. नालंदा विशेष रूप से हीनयान बौद्ध धर्म के अध्ययन के लिए समर्पित था।
IV. विक्रमशिला की स्थापना धर्मपाल ने की थी।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल III
(3) केवल III और IV
(4) केवल II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

51. प्राचीन भारत में चिकित्सा के अभ्यास पर चरक संहिता के संकलन का सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव क्या था?
(1) इसने चिकित्सा के ध्यान को शल्य चिकित्सा की ओर स्थानांतरित कर दिया।
(2) इसने प्राथमिक उपचार के रूप में पारे के उपयोग को अनिवार्य कर दिया।
(3) इसने ज्ञान को आठ तर्कसंगत शाखाओं (अष्टांग) में व्यवस्थित किया।
(4) इसने चिकित्सा अभ्यास को केवल पुरोहित वर्ग तक सीमित कर दिया।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

52. प्राचीन भारतीय मंदिर स्थापत्य के संदर्भ में, "गर्भगृह" क्या है?
(1) प्रार्थनाओं और सभाओं के लिए उपयोग किया जाने वाला बड़ा सभा भवन।
(2) मंदिर परिसर के भीतर स्थित पवित्र जलाशय।
(3) प्रवेश द्वार के ऊपर ऊंची पिरामिडाकार छत।
(4) वह मुख्य कक्ष जहाँ मुख्य देवता स्थापित होते हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

53. वैज्ञानिक विशेषज्ञता के क्षेत्रों की पहचान करने के लिए सूची I का सूची II के साथ मिलान करें:
सूची I: (प्राचीन विद्वान)
A. ब्रह्मगुप्त
B. पालकाप्य
C. शालिहोत्र
D. सुश्रुत
सूची II: (वैज्ञानिक विशेषज्ञता का क्षेत्र)
i. अश्व चिकित्सा विज्ञान
ii. गणित और खगोल विज्ञान
iii. शल्य चिकित्सा
iv. गज चिकित्सा विज्ञान
(1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

54. अजंता में चित्रकारी का बाद का, अधिक विस्तृत चरण मुख्य रूप से किस राजवंश के दौरान संपन्न हुआ था?
(1) मौर्य राजवंश
(2) वाकाटक राजवंश
(3) चोल राजवंश
(4) शुंग राजवंश
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

55. दिल्ली के लौह स्तंभ के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. इस पर 'चंद्र' नामक राजा का उल्लेख करने वाला एक शिलालेख है।
II. यह मूल रूप से विष्णुपदगिरि में स्थापित किया गया था।
III. उच्च फास्फोरस सामग्री के कारण यह संक्षारण के प्रति उच्च प्रतिरोध प्रदर्शित करता है।
IV. यह पूरी तरह से जंग मुक्त है क्योंकि यह शुद्ध टाइटेनियम से बना है।
V. यह वर्तमान में दिल्ली के कुतुब परिसर में स्थित है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?
(1) केवल III
(2) केवल IV
(3) केवल II और IV
(4) केवल I, III और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Downloaded from www.pdf.tube

56. आंध्र प्रदेश के अमरावती स्तूप में महाचैत्य के विकास के साथ पारंपरिक रूप से कौन सा प्रमुख बौद्ध संप्रदाय जुड़ा हुआ है?
(1) महासंघिक
(2) थेरवाद
(3) वज्रयान
(4) ज़ेन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

57. निम्नलिखित में से कौन सा कथन गणित में आर्यभट्ट के प्रमुख योगदान को सही ढंग से दर्शाता है?
(1) उन्होंने ऋणात्मक संख्याओं की अवधारणा का आविष्कार किया।
(2) वे द्विपद प्रमेय विकसित करने वाले पहले व्यक्ति थे।
(3) उन्होंने पाई (pi) के लिए 3.1416 के रूप में एक सन्निकटन प्रदान किया।
(4) उन्होंने अंकगणित पर मौलिक ग्रंथ 'लीलावती' की रचना की।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

58. प्राचीन काल से बौद्ध संरचनाओं के स्थापत्य विकास के सही क्रम का चयन करें:
(1) सांची स्तूप (मूल आंतरिक भाग), भरहुत स्तूप, अमरावती स्तूप अलंकरण, अजंता महायान गुफाएं
(2) भरहुत स्तूप, सांची स्तूप (मूल आंतरिक भाग), अजंता महायान गुफाएं, अमरावती स्तूप अलंकरण
(3) अमरावती स्तूप अलंकरण, अजंता महायान गुफाएं, सांची स्तूप (मूल आंतरिक भाग), भरहुत स्तूप
(4) अजंता महायान गुफाएं, सांची स्तूप (मूल आंतरिक भाग), भरहुत स्तूप, अमरावती स्तूप अलंकरण
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

59. प्राचीन भारत में रसायन विज्ञान के विकास के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) प्राचीन भारतीयों ने कांच और साबुन बनाने के लिए क्षारीय मिश्रण विकसित किए थे।
(2) सुगंधित द्रव्यों का आसवन और प्राकृतिक रंगों की तैयारी व्यापक रूप से प्रचलित थी।
(3) तांबा, लोहा और जस्ता जैसी धातुओं के निष्कर्षण ने व्यावहारिक रासायनिक ज्ञान का प्रदर्शन किया।
(4) यूरोपियों के आगमन तक भारत में सीमेंटेशन प्रक्रियाएं पूरी तरह से अज्ञात थीं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

60. द्रविड़ शैली के मंदिर निर्माण में निम्नलिखित में से कौन सा तत्व नहीं पाया जाता है?
(1) विमान
(2) आमलक
(3) मंडप
(4) गोपुरम
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

61. भौगोलिक स्थिति के आधार पर निम्नलिखित प्राचीन शिक्षण संस्थानों में से विषम को पहचानिए:
(1) नालंदा
(2) विक्रमशिला
(3) तक्षशिला
(4) ओदंतपुरी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

62. भारतीय उपमहाद्वीप में मथुरा कला शैली की विशिष्टताओं के प्रसार के लिए निम्नलिखित में से कौन सा स्पष्टीकरण सबसे उपयुक्त है?
(1) मौर्य प्रशासकों द्वारा शिल्पकारों का बलपूर्वक स्थानांतरण।
(2) स्थानीय यूनानी राजाओं द्वारा अपनी शैली को सख्ती से लागू करना।
(3) मूर्तियों के लिए केवल हाथी दांत का उपयोग करना।
(4) इसकी स्वदेशी शैली कई धार्मिक परंपराओं के अनुकूल थी।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

63. प्राचीन ग्रंथों के सही विषयों की पहचान करने के लिए सूची I का सूची II के साथ मिलान करें:
सूची I: (प्राचीन ग्रंथ)
A. आर्यभटीय
B. अष्टांग हृदय
C. रसरत्नसमुच्चय
D. मानसारा
सूची II: (विषय वस्तु)
i. कीमिया और धातुकर्म
ii. वास्तुकला और नगर नियोजन
iii. खगोल विज्ञान और गणित
iv. आयुर्वेद और आंतरिक चिकित्सा
(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(3) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

64. प्रारंभिक प्राचीन भारतीय स्थापत्य के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
कथन I: बराबर की पहाड़ियों में स्थित लोमस ऋषि गुफा में सूक्ष्म रूप से पॉलिश किया गया आंतरिक भाग और अलंकृत प्रवेश द्वार है।
कथन II: इसका उत्खनन अशोक के संरक्षण में आजीवक संप्रदाय के भिक्षुओं के लिए किया गया था।
निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?
(1) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(2) कथन II सही है और कथन I गलत है।
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

65. प्राचीन भारत में खगोल विज्ञान के विकास के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. ब्रह्मगुप्त ने 'ब्रह्मस्फुटसिद्धान्त' की रचना की।
II. प्राचीन भारतीय खगोलविदों ने सौर वर्ष की अवधि की सटीक गणना की थी।
III. सूर्यकेंद्रितवाद की अवधारणा को सभी प्राचीन वैदिक ग्रंथों में संहिताबद्ध किया गया था।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?
(1) केवल I
(2) केवल II
(3) केवल III
(4) केवल I और II
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

66. प्राचीन भारतीय मूर्तिकला के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा जोड़ा सही सुमेलित है?
(1) दीदारगंज चामरधारिणी - मौर्य काल की पॉलिशदार मूर्ति।
(2) यक्ष और यक्षिणी की आकृतियाँ - केवल गांधार कला में पाई जाती हैं।
(3) कनिष्क की शिरविहीन मूर्ति - अमरावती शैली का उदाहरण।
(4) एलीफेंटा के विशाल शिव - शुंग काल में निर्मित।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

67. एक प्राचीन संस्कृत ग्रंथ शल्य चिकित्सा के लिए चूना पत्थर और राख का उपयोग करके क्षारों की तैयारी का वर्णन करता है। यह विवरण किस ग्रंथ में मिलता है?
(1) सूर्य सिद्धांत
(2) आर्यभटीय
(3) सुश्रुत संहिता
(4) ऋग्वेद
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

68. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं — अभिकथन (A) और कारण (R)। उचित विकल्प चुनकर प्रश्न का उत्तर दें:
अभिकथन (A): अमरावती कला शैली अपनी गतिशील कथात्मक नक्काशी के लिए प्रसिद्ध है।
कारण (R): यह सातवाहनों के संरक्षण में विकसित हुई, जो किसी भी स्वदेशी भारतीय प्रभाव से मुक्त थी।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

69. प्राचीन भारत में बड़े पैमाने पर विहारों की स्थापना का प्राथमिक कारण क्या था?
(1) विदेशी आक्रमणों के विरुद्ध सीमाओं की रक्षा करना।
(2) कर के रूप में एकत्र अनाज को संग्रहीत करना।
(3) वर्षा ऋतु (वर्षावास) के दौरान भिक्षुओं के लिए स्थायी आवास उपलब्ध कराना।
(4) प्रांतीय प्रशासकों के लिए प्रशासनिक केंद्र बनाना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

70. वैदिक ग्रंथों में वैज्ञानिक ज्ञान के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. ऋग्वेद चंद्र और सौर चक्रों पर आधारित कैलेंडर प्रणाली का वर्णन करता है।
II. अथर्ववेद में मानव शरीर की शारीरिक रचना के संदर्भ मिलते हैं।
III. वैदिक काल के लोगों के पास तांबा और कांस्य जैसी धातुओं का ज्ञान था।
IV. प्रारंभिक ऋग्वैदिक सूक्तों में शून्य के प्रतीक को गणितीय रूप से औपचारिक बनाया गया था।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

71. प्राचीन भारतीय स्थापत्य ग्रंथों में "मंडप" शब्द क्या दर्शाता है?
(1) गर्भगृह के ऊपर स्थित मुख्य शिखर।
(2) स्तूप के प्रवेश द्वार पर सजावटी मेहराब।
(3) द्रविड़ मंदिरों में पाए जाने वाले एकाश्म रथ।
(4) अनुष्ठानों के लिए गर्भगृह के सामने स्थित स्तंभों वाला हॉल।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

72. किस प्रसिद्ध चीनी यात्री ने नालंदा के शैक्षणिक जीवन और उसकी सख्त प्रवेश प्रक्रियाओं का विस्तृत विवरण प्रदान किया था?
(1) ह्वेन त्सांग
(2) फाह्यान
(3) इत्सिंग
(4) मेगास्थनीज
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

73. कलात्मक केंद्रों और उनकी प्रमुख शैलियों की पहचान करने के लिए सूची I का सूची II के साथ मिलान करें:
सूची I: (प्राचीन क्षेत्र)
A. सांची
B. मथुरा
C. महाबलीपुरम
D. खजुराहो
सूची II: (प्रमुख कला या स्थापत्य शैली)
i. नागर शैली के संरचनात्मक मंदिर
ii. स्वदेशी लाल बलुआ पत्थर की मूर्तियाँ
iii. एकाश्म रथ मंदिर और शैलकृत नक्काशी
iv. प्रारंभिक स्तूप वास्तुकला

Click Here to Buy book on Amazon

(1) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(2) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

74. कौन सा प्राचीन भारतीय ग्रंथ विभिन्न मिश्र धातुओं और धात्विक लवणों की तैयारी पर चर्चा करता है?
(1) रसरत्नाकर
(2) नाट्य शास्त्र
(3) पंचतंत्र
(4) महाभाष्य
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

75. प्राचीन भारत में मंदिर स्थापत्य के विकास के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. प्रारंभिक गुप्त मंदिर साधारण, सपाट छत वाली संरचनाएं थीं।
II. देवगढ़ का दशावतार मंदिर शिखर वाले मंदिर का प्रारंभिक उदाहरण है।
III. पंचायतन शैली में एक केंद्रीय मंदिर चार सहायक मंदिरों से घिरा होता है।
IV. गुप्त काल के दौरान ईंटों के मंदिर पूरी तरह से अज्ञात थे।
V. शैलकृत गुफाओं से संरचनात्मक मंदिरों की ओर परिवर्तन गुप्त काल में महत्वपूर्ण रूप से शुरु हुआ।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?
(1) केवल IV
(2) केवल I और IV
(3) केवल III और V
(4) केवल II, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

76. निम्नलिखित में से कौन सा कथन मंदिर स्थापत्य की "वेसर" शैली का सही वर्णन करता है?
(1) यह केवल ऊंचे गोपुरम और मंदिर जलाशय द्वारा पहचानी जाती है।
(2) इसमें उत्तरी (नागर) और दक्षिणी (द्रविड़) शैलियों का मिश्रण पाया जाता है।
(3) यह केवल लकड़ी और बांस के निर्माण पर निर्भर है।
(4) यह मध्य एशिया से आई एक शैली है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

77. प्राचीन भारत में वैज्ञानिक विकास के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) आर्यभट्ट ने पहचान की थी कि चंद्रमा और ग्रह परावर्तित सूर्य के प्रकाश से चमकते हैं।
(2) सुश्रुत ने शारीरिक अध्ययन के लिए मृत शरीरों के संरक्षण की विधियों का वर्णन किया था।
(3) गुरुत्वाकर्षण की अवधारणा मूल रूप से चरक द्वारा खोजी और गणितीय रूप से प्रतिपादित की गई थी।
(4) प्राचीन भारतीयों ने कांस्य मूर्तियों के लिए लुप्त मोम पद्धति का उपयोग किया था।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

78. निम्नलिखित प्राचीन भारतीय विद्वानों को उनके कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
I. आर्यभट्ट
II. चरक
III. भास्कराचार्य
IV. ब्रह्मगुप्त
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही क्रम चुनें:
(1) II, I, IV, III
(2) I, II, III, IV
(3) II, IV, I, III
(4) I, IV, II, III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

79. निम्नलिखित में से कौन सी विशेषता अमरावती कला शैली की नहीं है?
(1) पूरी तरह से स्थिर आकृतियों के साथ केवल ध्यानपूर्ण मुद्राओं का उपयोग।
(2) सफेद संगमरमर का प्रचुर उपयोग।
(3) गतिशील रचनाओं में राजसी जीवन का चित्रण।
(4) स्तूप के ड्रम और गुंबद पर जटिल कथात्मक नक्काशी।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

80. एलोरा के कैलाशनाथ मंदिर की निर्माण तकनीक का सबसे उपयुक्त वर्णन कौन सा है?
(1) इसे अलग-अलग पत्थर के ब्लॉकों को जोड़कर बनाया गया था।
(2) इसे चट्टान को ऊपर से नीचे की ओर तराश कर बनाया गया था।
(3) इसे ईंटों से बनाया गया था जिसे बाद में चट्टान जैसा रूप दिया गया।
(4) यह पहाड़ में क्षैतिज सुरंग बनाकर बनाया गया था।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) ये घोड़े की नाल के आकार की नदी घाटी में चट्टानों को काटकर बनाए गए स्मारक हैं।
अजंता की गुफाएं महाराष्ट्र के संभाजीनगर (औरंगाबाद) जिले में वाघोरा नदी के समीप स्थित हैं। ये गुफाएं घोड़े की नाल के आकार वाले पहाड़ी क्षेत्र को काटकर निर्मित की गई हैं। इनमें कुल 29 गुफाएं हैं जो बौद्ध धर्म के विभिन्न चरणों का प्रतिनिधित्व करती हैं। इनका निर्माण मुख्य रूप से सातवाहन और वाकाटक राजवंशों के शासनकाल में हुआ था। यह स्थल अपनी उत्कृष्ट वास्तुकला और भित्ति चित्रों हेतु विश्व विख्यात है।

2. (1) इनका उत्खनन पूरी तरह से अशोक के अधीन मौर्य साम्राज्य के शासनकाल के दौरान किया गया था।
एलोरा की गुफाएं 6वीं से 10वीं शताब्दी के मध्य विकसित हुई थीं। इनका निर्माण मुख्य रूप से राष्ट्रकूट और यादव राजवंशों के शासनकाल में हुआ था, न कि मौर्य काल में। इस स्थल पर कुल 34 गुफाएं हैं जिनमें बौद्ध, हिंदू और जैन धर्म से संबंधित स्मारक समाहित हैं। यहाँ का कैलाशनाथ मंदिर वास्तुकला का अनुपम उदाहरण है, जिसे एक ही विशाल चट्टान को ऊपर से नीचे काटकर निर्मित किया गया है।

3. (1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
नागर शैली उत्तर भारत में प्रचलित थी, जिसकी मुख्य विशेषता वक्राकार शिखर है। द्रविड़ शैली दक्षिण भारत की विशेषता है, जिसमें पिरामिडाकार विमान और विशाल गोपुरम पाए जाते हैं। वेसर शैली इन दोनों शैलियों का मिश्रित रूप है जो मुख्य रूप से दक्कन क्षेत्र में विकसित हुई थी। पंचायतन शैली में एक मुख्य मंदिर चार सहायक मंदिरों से घिरा होता है, जो मंदिर की भव्यता और संरचनात्मक विस्तार को बढ़ाते हैं।

4. (4) जातक कथाओं और बुद्ध के जीवन को दर्शाने वाली विस्तृत कथात्मक नक्काशी।
मध्य प्रदेश में स्थित भरहुत स्तूप शुंग कालीन कला का एक महत्वपूर्ण केंद्र है। यह अपनी वेदिकाओं और तोरणों पर की गई सूक्ष्म नक्काशी हेतु जाना जाता है। इसमें बुद्ध के पूर्व जन्मों से संबंधित जातक कथाओं को अत्यंत सजीव रीति से उत्कीर्ण किया गया है। यह प्रारंभिक भारतीय मूर्तिकला में कथात्मक चित्रण की परंपरा का श्रेष्ठतम उदाहरण है। इन मूर्तियों के माध्यम से उस काल के धार्मिक संदेश प्रसारित किए गए थे।

5. (3) केवल I और III
सांची के महान स्तूप की मूल संरचना सम्राट अशोक द्वारा ईंटों से निर्मित कराई गई थी। कालांतर में शुंग और सातवाहन काल में इसका विस्तार किया गया। पाषाण के नक्काशीदार तोरण सातवाहन शासकों द्वारा जोड़े गए थे, न कि गुप्तों द्वारा। इस स्तूप परिसर में भगवान बुद्ध और उनके शिष्यों के अवशेष पवित्र मंजूषाओं में सुरक्षित रखे गए हैं। यह स्थल मौर्यकालीन स्थापत्य कला और बौद्ध परंपराओं का एक उत्कृष्ट प्रतीक माना जाता है।

6. (2) बुद्ध का केवल पदचिह्नों जैसे प्रतीकात्मक रुपों के माध्यम से चित्रण।
गांधार कला शैली में बुद्ध को प्रथम बार मानवीय रूप में चित्रित किया गया था। यह शैली यूनानी और रोमन कला तकनीकों से गहराई से प्रभावित थी। इसमें बुद्ध के शारीरिक विवरण जैसे मांसपेशियां, घुंघराले बाल और शरीर पर लहराते भारी वस्त्रों को यथार्थवादी ढंग से प्रदर्शित किया गया है। प्रतीकात्मक चित्रण जैसे पदचिह्न या चक्र प्रारंभिक बौद्ध कला की विशेषता थी, जबकि गांधार शैली में बुद्ध का मानवीय चित्रण सर्वोपरि था।

7. (4) वेसर शैली
गांधार, मथुरा और अमरावती प्राचीन भारत की तीन प्रमुख मूर्तिकला शैलियाँ थीं जो विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में विकसित हुईं। गांधार उत्तर-पश्चिम में, मथुरा उत्तर भारत में और अमरावती दक्षिण भारत की कृष्णा घाटी में केंद्रित थी। इसके विपरीत, वेसर शैली मूर्तिकला की नहीं बल्कि मंदिर वास्तुकला की एक विशिष्ट शैली है। यह नागर और द्रविड़ मंदिर निर्माण शैलियों का मिश्रण है, अतः यह अन्य तीनों विकल्पों से भिन्न श्रेणी में आती है।

8. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
गांधार शैली को ग्रीको-बुद्धिस्ट कला कहा जाता है क्योंकि इसमें भारतीय विषयों को यूनानी सौंदर्यशास्त्र के साथ समन्वित किया गया था। यह कला शैली कुषाण काल के दौरान भारत के उत्तर-पश्चिमी भाग में पल्लवित हुई। इसमें बुद्ध की मूर्तियों में अपोलो जैसे यूनानी देवताओं के शारीरिक लक्षण और रोमन वस्त्रों का प्रभाव दिखाई देता है। अतः कारण स्पष्ट करता है कि क्यों इस विशिष्ट शैली को एक संकर कला परंपरा माना जाता है।

9. (2) कथन II सही है और कथन I गलत है।
अजंता के चित्रों को 'टेम्पेरा' विधि से निर्मित किया गया था, जिसमें शुष्क प्लास्टर पर रंगों की परत चढ़ाई जाती थी। यह वास्तविक 'फ्रेस्को' तकनीक नहीं है क्योंकि इसमें आर्द्र प्लास्टर का उपयोग नहीं किया गया था। इन भित्ति चित्रों के मुख्य विषय बुद्ध के जीवन की घटनाएं और जातक कथाएं हैं। कलाकार स्थानीय खनिजों और वनस्पतियों से निर्मित प्राकृतिक रंगों का उपयोग करते थे। इन चित्रों में मानवीय करुणा का सुंदर चित्रण है।

10. (4) कोई भी कथन गलत नहीं है
प्राचीन भारत में गणितीय विज्ञान अत्यंत उन्नत था। आर्यभट्ट ने पाई का मान 3.1416 प्रतिपादित किया और पृथ्वी के घूर्णन

Downloaded from www.pdf.tube

की वैज्ञानिक व्याख्या की। बख्शाली पांडुलिपि शून्य के प्रारंभिक प्रयोग को दर्शाती है, जो भारतीय गणित की एक महान उपलब्धि है। ब्रह्मगुप्त ने शून्य के साथ योग, घटाव और गुणन जैसे गणितीय नियमों को परिभाषित किया था। ये सभी कार्य भारतीय गणित के स्वर्ण युग का प्रतिनिधित्व करते हैं और आधुनिक विज्ञान हेतु आधारभूत हैं।

11. (4) माधव निदान - रोगों का निदान
प्राचीन भारत में आयुर्वेद के ग्रंथों ने चिकित्सा क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। चरक संहिता आंतरिक चिकित्सा पर केंद्रित है, जबकि सुश्रुत संहिता मुख्य रूप से शल्य चिकित्सा और उपकरणों का विवरण प्रदान करती है। अष्टांग हृदय चिकित्सा की विभिन्न शाखाओं का एक संक्षिप्त संग्रह है। माधव निदान विशेष रूप से रोगों के लक्षणों और उनके सटीक निदान की विस्तृत व्याख्या करने हेतु प्रसिद्ध है। यह ग्रंथ प्राचीन भारतीय चिकित्सकों हेतु एक महत्वपूर्ण निर्देशिका रहा है।

12. (2) मिसावाइट की एक सुरक्षात्मक निष्क्रिय परत का निर्माण।
दिल्ली के कुतुब परिसर में स्थित लौह स्तंभ गुप्तकालीन उन्नत धातुकर्म का प्रतीक है। लगभग 1600 वर्षों से खुले वातावरण में रहने के उपरांत भी इसमें जंग नहीं लगा है। इसका मुख्य कारण लोहे में फास्फोरस की उच्च मात्रा है, जिससे इसकी सतह पर 'मिसावाइट' नामक लौह हाइड्रोजन फास्फेट की एक सुरक्षात्मक परत निर्मित हो गई है। यह परत स्तंभ को क्षरण से बचाती है। यह प्राचीन भारतीयों की परिष्कृत लौह निर्माण क्षमता का अकाट्य प्रमाण है।

13. (1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना गुप्त शासक कुमारगुप्त प्रथम ने की थी और यह उच्च शिक्षा का वैश्विक केंद्र बना। विक्रमशिला की स्थापना पाल वंश के धर्मपाल ने बौद्ध शिक्षा के संवर्धन हेतु की थी। तक्षशिला एक प्राचीन विश्वविद्यालय था जहाँ चाणक्य जैसे महान विद्वानों ने अध्यापन किया था। वल्लभी गुजरात में स्थित था जिसे मैत्रक राजाओं का संरक्षण प्राप्त था। ये सभी संस्थान प्राचीन भारत की समृद्ध बौद्धिक और शैक्षिक परंपरा के आधार स्तंभ रहे हैं।

14. (4) जस्ता प्रगलन
राजस्थान के जावर में प्राप्त पुरातात्विक साक्ष्य प्राचीन भारत में जस्ता निष्कर्षण की उन्नत तकनीक को प्रदर्शित करते हैं। यहाँ प्राप्त विशेष भट्टियाँ और मृदभांड यह सिद्ध करते हैं कि भारतीय धातुकर्मियों ने आसवन की प्रक्रिया के माध्यम से जस्ता प्राप्त करने में कुशलता प्राप्त कर ली थी। यह तकनीक यूरोप में विकसित होने से कई शताब्दियों पूर्व भारत में प्रचलित थी। जस्ते का उपयोग मुख्य रूप से पीतल निर्माण हेतु किया जाता था, जो एक महत्वपूर्ण धातु थी।

15. (4) I, II, III, IV और V
प्राचीन भारतीय खगोल विज्ञान वराहमिहिर और आर्यभट्ट जैसे विद्वानों के कार्यों से समृद्ध था। वराहमिहिर ने पूर्ववर्ती प्रणालियों को संकलित किया और बाह्य प्रभावों को भी स्वीकार किया। आर्यभट्ट ने खगोलीय घटनाओं के पीछे के वैज्ञानिक कारणों की व्याख्या की और बताया कि पृथ्वी अपनी धुरी पर घूर्णन करती है। उन्होंने ग्रहणों हेतु पौराणिक धारणाओं के स्थान पर छाया के सिद्धांत को प्रस्तुत किया। ये तथ्य भारतीय वैज्ञानिक दृष्टिकोण की गहराई को रेखांकित करते हैं।

16. (2) जटिल वैदिक यज्ञ वेदियों के निर्माण में सटीक माप की आवश्यकता।
शुल्ब सूत्र प्राचीन भारतीय ज्यामिति के प्राचीनतम ग्रंथ हैं। इनका शाब्दिक अर्थ मापने की डोरी है। वैदिक काल में धार्मिक अनुष्ठानों हेतु यज्ञ वेदियों का निर्माण सटीक ज्यामितीय आकारों में करना अनिवार्य था। इन वेदियों के क्षेत्रफल और विन्यास को बनाए रखने हेतु जटिल गणितीय गणनाओं की आवश्यकता होती थी। इसी आवश्यकता ने पाइथागोरस प्रमेय जैसे सिद्धांतों के प्रारंभिक स्वरूप और अन्य ज्यामितीय नियमों के विकास को भारत में जन्म दिया था।

17. (2) नागर शैली के शिखर के शीर्ष पर रखी गई बड़ी, खांचों वाली पत्थर की डिस्क।
उत्तर भारतीय या नागर शैली के मंदिरों में शिखर के सर्वोच्च भाग पर एक पाषाण की गोलाकार संरचना होती है, जिसे आमलक कहा जाता है। इसके ऊपर कलश और ध्वज स्थापित किए जाते हैं। आमलक का आकार आंवले के फल जैसा होता है और यह मंदिर की वास्तुकला में महत्वपूर्ण सौंदर्यपरक स्थान रखता है। यह गर्भगृह की ऊर्ध्वाधर धुरी को पूर्ण करने का कार्य करता है और मंदिर के शिखर को संरचनात्मक पूर्णता प्रदान करता है।

NODIA

18. (1) मौर्य कला, शुंग कला, कुषाण कला, गुप्त कला
भारतीय मूर्तिकला का विकास एक क्रमिक ऐतिहासिक प्रक्रिया रही है। मौर्य काल में पाषाण की पॉलिशदार मूर्तियों और स्तंभों का प्रचलन प्रारंभ हुआ। शुंग काल के दौरान भरहुत और सांची में कथात्मक नक्काशी का विस्तार हुआ। कुषाण काल में गांधार और मथुरा जैसी महान कला शैलियाँ विकसित हुईं जिन्होंने बुद्ध को मानवीय स्वरूप प्रदान किया। अंततः गुप्त काल में यह कला अपनी शास्त्रीय पूर्णता तक पहुँची, जहाँ मूर्तियों में आध्यात्मिक शांति और शारीरिक संतुलन का संगम मिलता है।

19. (3) वर्गमूल और घनमूल निकालना
आर्यभट्ट ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ 'आर्यभटीय' में गणित के कई महत्वपूर्ण सिद्धांतों का प्रतिपादन किया था। उन्होंने वर्ग और घन के क्षेत्रफल के साथ-साथ वर्गमूल और घनमूल निकालने की विधियों को व्यवस्थित रूप से समझाया था। उन्होंने अंकन की दशमलव प्रणाली का उपयोग किया और शून्य के महत्व को रेखांकित किया। उनके कार्यों ने न केवल भारतीय गणित को नई ऊँचाइयों पर पहुँचाया, बल्कि कालांतर में वैश्विक गणितीय विकास को भी व्यापक रूप से प्रभावित किया।

20. (4) सातवाहन राजवंश
आंध्र प्रदेश के अमरावती में स्थित स्तूप दक्षिण भारत की बौद्ध कला का एक प्रमुख केंद्र था। यद्यपि इसकी नींव पूर्व में ही पड़ चुकी थी, किंतु सातवाहन शासकों के संरक्षण में इसे अपना भव्य स्वरूप और संगमरमर जैसी नक्काशी प्राप्त हुई। इस शैली

में बुद्ध के जीवन और जातक कथाओं को अत्यंत गतिशीलता और सघन दृश्यों के माध्यम से दर्शाया गया है। अमरावती शैली की मुख्य विशेषता सफेद चूना पत्थर का प्रचुर उपयोग और आकृतियों का लचीलापन है।

21. (3) अजंता में केवल बौद्ध स्मारक हैं, जबकि एलोरा में बौद्ध, हिंदू और जैन स्मारक हैं।
अजंता की गुफाएं पूर्णतः बौद्ध धर्म को समर्पित हैं और इनमें मुख्य रूप से चित्रकारी व चैत्य गृह सम्मिलित हैं। दूसरी ओर, एलोरा की गुफाएं धार्मिक सहिष्णुता का प्रतीक हैं क्योंकि यहाँ बौद्ध, हिंदू और जैन धर्मों से संबंधित 34 गुफाएं एक साथ स्थित हैं। अजंता के चित्र जातक कथाओं पर आधारित हैं, जबकि एलोरा अपनी विशाल पाषाण मूर्तियों और स्थापत्य कला हेतु प्रसिद्ध है। इन दोनों स्थलों के निर्माण काल और कलात्मक शैली में भी स्पष्ट अंतर है।

22. (2) वक्राकार शिखर
मंदिर वास्तुकला की द्रविड़ शैली दक्षिण भारत में प्रचलित है। इसकी मुख्य विशेषताओं में पिरामिडाकार बहुमंजिला छत जिसे विमान कहते हैं, विशाल प्रवेश द्वार जिसे गोपुरम कहते हैं और स्तंभों वाला सभा कक्ष जिसे मंडप कहते हैं, सम्मिलित हैं। वक्राकार शिखर उत्तर भारतीय नागर शैली की विशिष्ट पहचान है, जहाँ मंदिर की छत ऊपर की ओर मुड़ते हुए एक बिंदु पर मिलती है। द्रविड़ शैली में मंदिर संरचना प्रायः एक विस्तृत प्रांगण के भीतर होती है।

23. (1) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
प्राचीन भारतीय विद्वानों ने विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में अमूल्य योगदान दिया। सुश्रुत को शल्य चिकित्सा का जनक माना जाता है जिन्होंने नासिका-संधान और शल्य उपकरणों का वर्णन किया। चरक ने आयुर्वेद के सिद्धांतों को संकलित किया जो आज भी प्रासंगिक हैं। वराहमिहिर ने अपनी रचना 'बृहत संहिता' में खगोल विज्ञान और प्रकृति का वर्णन किया। नागार्जुन एक प्रसिद्ध रसायनशास्त्री थे जिन्होंने धातुओं के शोधन और पारे के औषधीय उपयोग पर व्यापक शोध कार्य किया था।

24. (1) सारनाथ
गांधार कला शैली मुख्य रूप से भारत के उत्तर-पश्चिमी सीमावर्ती क्षेत्रों जैसे तक्षशिला, पेशावर और बामियान में विकसित हुई थी। यह क्षेत्र रेशम मार्ग पर स्थित होने के कारण विदेशी प्रभावों हेतु सुलभ था। इसके विपरीत, सारनाथ उत्तर भारत का एक प्रमुख कला केंद्र था जो गुप्त काल के दौरान अपनी स्वतंत्र और परिष्कृत शैली हेतु प्रसिद्ध हुआ। सारनाथ की मूर्तियों में गांधार जैसी विदेशी विशेषताएं नहीं थीं, अपितु वहाँ स्वदेशी भारतीय कला तत्वों का प्रभुत्व था।

25. (3) केवल III
मथुरा कला शैली कुषाण काल में विकसित हुई एक स्वदेशी भारतीय शैली थी। इसमें स्थानीय रूप से उपलब्ध चित्तीदार लाल बलुआ पत्थर का उपयोग मूर्तियों के निर्माण हेतु किया जाता था। यह शैली केवल बौद्ध धर्म तक सीमित नहीं थी, बल्कि इसमें हिंदू देवताओं जैसे विष्णु और शिव के साथ-साथ जैन तीर्थंकरों की मूर्तियों का भी बड़ी मात्रा में निर्माण किया गया था। मथुरा एक महत्वपूर्ण धार्मिक और व्यापारिक केंद्र था, जहाँ विभिन्न संप्रदायों की कला परंपराएं एक साथ विकसित हुईं।

26. (1) हेलेनिस्टिक और रोमन कलात्मक परंपराओं का प्रभाव।
गांधार मूर्तिकला में बुद्ध का चित्रण यूनानी देवता अपोलो के समान किया गया है। उत्तर-पश्चिमी भारत में यूनानी और रोमन सांस्कृतिक संपर्कों के फलस्वरूप इस शैली का जन्म हुआ। इसमें बुद्ध की शारीरिक बनावट में यथार्थवाद, घुंघराले बाल और उनके वस्त्रों में गहरी सिलवटें दिखाई देती हैं जो शास्त्रीय यूरोपीय कला की स्मृति दिलाती हैं। यह शैली भारतीय बौद्ध दर्शन और पश्चिमी कला तकनीकों के अनूठे समन्वय का प्रतिनिधित्व करती है, जिसे ग्रीको-बुद्धिस्ट कला कहा जाता है।

27. (3) दोनों कथन सही हैं।
प्राचीन भारत में चिकित्सा विज्ञान अत्यंत विकसित था। सुश्रुत संहिता को शल्य चिकित्सा का प्राचीनतम प्रमाण माना जाता है, जिसमें जटिल ऑपरेशनों और उपकरणों का विस्तार से वर्णन है। दूसरी ओर, चरक संहिता स्वस्थ जीवन शैली, उचित आहार और औषधियों के माध्यम से रोगों की रोकथाम पर केंद्रित है। ये दोनों ग्रंथ आयुर्वेद के आधार स्तंभ हैं और इन्होंने शताब्दियों तक न केवल भारत बल्कि विश्व के अन्य भागों में भी चिकित्सा पद्धति को प्रभावित किया है।

28. (3) A सही है लेकिन R गलत है।
मंदिर स्थापत्य की वेसर शैली मुख्य रूप से दक्कन क्षेत्र में चालुक्य और होयसल राजाओं के अधीन विकसित हुई थी। यह शैली पूर्णतः स्वतंत्र नहीं थी, बल्कि यह उत्तर की नागर शैली और दक्षिण की द्रविड़ शैली का एक अनूठा संगम थी। इसमें नागर शैली के शिखर और द्रविड़ शैली के विमान व मंडप के तत्वों को मिश्रित कर एक नवीन रूप दिया गया था। अतः यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि यह अन्य शैलियों से पूर्णतः अप्रभावित या स्वतंत्र रूप से विकसित हुई।

29. (3) छत्र - आधार के चारों ओर बना परिक्रमा पथ
स्तूप वास्तुकला के प्रत्येक भाग का अपना धार्मिक महत्व है। 'अंड' ब्रह्मांड का प्रतीक है, जबकि 'हर्मिका' देवताओं के निवास को दर्शाती है। 'छत्र' स्तूप के शीर्ष पर एक तीन-स्तरीय छतरी होती है जो बौद्ध धर्म के त्रिरत्नों को प्रदर्शित करती है। आधार के चारों ओर बना मार्ग 'प्रदक्षिणा पथ' कहलाता है। 'छत्र' का अर्थ परिक्रमा पथ नहीं है, बल्कि यह राजसी सम्मान और आध्यात्मिक संप्रभुता का प्रतीक है।

30. (1) केवल I, II और III
प्राचीन भारत विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में अग्रणी था। दशमलव प्रणाली और शून्य का आविष्कार यहीं हुआ था। जस्ता निष्कर्षण की जटिल प्रक्रिया में भारतीय धातुकर्मी विश्व में अग्रणी थे। कीमिया या रस-शास्त्र का उपयोग स्वास्थ्य हेतु औषधियां बनाने में किया जाता था। हालांकि, दिल्ली का प्रसिद्ध लौह स्तंभ मौर्य काल का नहीं बल्कि गुप्त काल का है,

Click Here to Buy book on Amazon

जैसा कि उस पर अंकित शिलालेखों और उसकी विशिष्ट निर्माण शैली से प्रमाणित होता है।

31. (1) अमरावती शैली
अमरावती कला शैली की प्रमुख पहचान सफेद संगमरमर या चूना पत्थर का उपयोग है। इसमें मूर्तियों को अत्यंत गतिशील और जीवंत मुद्राओं में प्रदर्शित किया गया है, जो प्रायः समूह में होती हैं। इस शैली में जातक कथाओं का वर्णन विस्तार के साथ किया गया है, जो स्तूप की वेदिकाओं पर दृष्टिगोचर होता है। यह शैली दक्षिण भारत के कृष्णा घाटी क्षेत्र में सातवाहन शासकों के काल में अपने चरमोत्कर्ष पर थी और इसमें मानवीय भावनाओं का प्रचुर चित्रण मिलता है।

32. (2) इसने उच्च गुणवत्ता वाले पीतल के उत्पादन को सक्षम बनाया।
प्राचीन भारत में जस्ते का शुद्ध रूप में निष्कर्षण एक बड़ी वैज्ञानिक उपलब्धि थी। जस्ते को तांबे के साथ मिश्रित कर पीतल निर्मित किया जाता था, जो क्षरण प्रतिरोधी और चमकदार होता था। राजस्थान की जावर खदानों में इसके साक्ष्य मिले हैं जहाँ आसवन विधि द्वारा जस्ता प्राप्त किया जाता था। पीतल का उपयोग सिक्के, मूर्तियाँ और पात्र बनाने हेतु व्यापक रूप से किया जाता था। इस धातुकर्मीय कौशल ने भारत को शिल्प के क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर विशिष्ट स्थान दिलाया।

33. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
प्राचीन बौद्ध वास्तुकला में विभिन्न संरचनाओं का विशिष्ट महत्व था। चैत्य एक प्रार्थना कक्ष होता था जहाँ भिक्षु एकत्रित होकर उपासना करते थे। विहार भिक्षुओं के निवास हेतु निर्मित मठ थे। स्तूप एक अर्धगोलाकार संरचना थी जिसमें बुद्ध या अन्य पवित्र भिक्षुओं के अवशेष सुरक्षित रखे जाते थे। तोरण स्तूप के प्रवेश द्वारों को कहा जाता है, जो प्रायः अत्यंत सुंदर और अलंकृत नक्काशी से सज्जित होते थे। ये सभी संरचनाएं बौद्ध धर्म के प्रसार में सहायक सिद्ध हुईं।

34. (1) एक व्यापक खगोलीय या गणितीय ग्रंथ।
"सिद्धांत" शब्द प्राचीन भारतीय विज्ञान में उन ग्रंथों हेतु प्रयुक्त होता है जो खगोल विज्ञान और गणित के स्थापित नियमों को व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत करते हैं। ये ग्रंथ ग्रहों की गति, ग्रहण की भविष्यवाणी और काल मापन जैसे विषयों पर वैज्ञानिक आधार प्रदान करते हैं। सूर्य सिद्धांत और ब्रह्मस्फुटसिद्धान्त इसके प्रमुख उदाहरण हैं। ये ग्रंथ केवल धार्मिक नहीं थे, अपितु वे प्रेक्षण और कठोर गणितीय गणनाओं पर आधारित थे, जिसने भारतीय विज्ञान को प्रतिष्ठा दिलाई।

35. (2) केवल III
प्राचीन भारत में रसायन विज्ञान का ज्ञान अत्यंत गहन था। भारतीयों ने प्राकृतिक स्रोतों जैसे नील और हल्दी से रंग बनाने की कला में महारत प्राप्त की थी, जिनका निर्यात विश्व भर में किया जाता था। 'रस शास्त्र' के अंतर्गत पारे और धातुओं के औषधीय गुणों का अध्ययन किया जाता था। काँच निर्माण के साक्ष्य प्राचीन पुरातात्विक स्थलों से प्राप्त हुए हैं। शल्य ग्रंथों में रासायनिक क्षारों के उपयोग का विवरण मिलता है। अतः यह कहना कि उनमें प्राकृतिक रंगों के ज्ञान का अभाव था, ऐतिहासिक रूप से असत्य है।

36. (4) आर्यभट्ट
महान गणितज्ञ और खगोलशास्त्री आर्यभट्ट ने 5वीं शताब्दी में यह क्रांतिकारी विचार प्रस्तुत किया था कि पृथ्वी स्थिर नहीं है, अपितु वह अपनी धुरी पर पश्चिम से पूर्व की ओर घूर्णन करती है। उन्होंने समझाया कि जिस प्रकार नौका में बैठा व्यक्ति तट के वृक्षों को पीछे जाता हुआ देखता है, उसी प्रकार पृथ्वी के घूमने के कारण हमें तारे गतिमान प्रतीत होते हैं। उन्होंने पृथ्वी को गोलाकार बताया था, जो उस समय के प्रचलित धार्मिक विश्वासों से बहुत आगे की वैज्ञानिक सोच थी।

37. (3) ब्रह्मगुप्त
'खंडखाद्यक' खगोल विज्ञान पर आधारित एक अत्यंत महत्वपूर्ण ग्रंथ है जिसकी रचना 7वीं शताब्दी में ब्रह्मगुप्त द्वारा की गई थी। इस ग्रंथ में उन्होंने आर्यभट्ट द्वारा प्रतिपादित खगोलीय सिद्धांतों को अधिक सरल और व्यावहारिक रूप में प्रस्तुत किया है। इसमें ग्रहों की स्थिति, ग्रहण के समय की गणना और काल मापन की विधियों का विस्तार से वर्णन है। ब्रह्मगुप्त का यह कार्य कालांतर में अरबी अनुवादों के माध्यम से पश्चिमी विश्व तक पहुँचा और खगोल विज्ञान के विकास में मील का पत्थर सिद्ध हुआ।

38. (1) II, IV, III, I
भारतीय वास्तुकला का विकास सरल से जटिल की ओर हुआ है। मौर्य काल में बराबर की पहाड़ियों में प्रथम बार चट्टानों को काटकर गुफाएं निर्मित की गईं। उसके उपरांत अशोक ने सांची के स्तूप की नींव रखी। गुप्त काल में पत्थरों से निर्मित स्वतंत्र मंदिरों जैसे देवगढ़ के मंदिर का विकास हुआ। अंत में, मध्यकाल के प्रारंभ में राष्ट्रकूटों ने एलोरा के कैलाश मंदिर जैसी भव्य एकाश्म संरचना का निर्माण किया। यह क्रम भारत में निर्माण शैलियों के क्रमिक विकास और तकनीकी उन्नति को प्रदर्शित करता है।

39. (4) गांधार प्रभाव अत्यधिक स्पष्ट हो गया, जिसने स्वदेशी शैलियों को पूरी तरह से प्रतिस्थापित कर दिया।
गुप्त काल को भारतीय कला का स्वर्ण युग माना जाता है। इस दौरान मूर्तिकला में गांधार और मथुरा शैलियों का समन्वय हुआ, जिससे एक शुद्ध भारतीय शास्त्रीय शैली का जन्म हुआ। गुप्त कला में शारीरिक विवरणों की अपेक्षा चेहरे की आध्यात्मिक शांति और आंतरिक सौंदर्य पर अधिक बल दिया गया। बुद्ध की सुल्तानगंज कांस्य मूर्ति और सारनाथ की मूर्तियाँ इसके श्रेष्ठ उदाहरण हैं। यहाँ विदेशी प्रभाव न्यून हो गया और मूर्तिकला में एक नवीन कोमलता और परिष्कृत स्वरूप का उदय हुआ।

40. (1) यह ग्रहों की गति और ग्रहण के समय की गणना के नियम प्रदान करता है।
'सूर्य सिद्धांत' प्राचीन भारतीय खगोल विज्ञान का एक आधारभूत ग्रंथ है। इसमें काल मापन की विभिन्न इकाइयों, ग्रहों के व्यास, उनकी पृथ्वी से दूरी और उनकी सटीक गति की गणना करने की विधियाँ दी गई हैं। यह ग्रंथ सूर्य और चंद्र ग्रहण की

Downloaded from www.pdf.tube

भविष्यवाणी हेतु गणितीय सूत्र भी प्रदान करता है। शताब्दियों से भारतीय पंचांगों के निर्माण में इस ग्रंथ का उपयोग किया जाता रहा है। यह प्राचीन भारतीयों की उच्च स्तरीय गणितीय और खगोलीय समझ का सशक्त प्रमाण प्रस्तुत करता है।

41. (3) प्राथमिक विषयों के रूप में रामायण के दृश्यों का चित्रण।
अजंता की गुफाओं में की गई चित्रकारी मुख्य रूप से बौद्ध धर्म से प्रेरित है। इनमें भगवान बुद्ध के जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं और उनके पूर्व जन्मों की जातक कथाओं को दर्शाया गया है। यद्यपि यहाँ कुछ अन्य दृश्य भी हैं, किंतु रामायण इस स्थल का प्राथमिक विषय नहीं है। यहाँ के चित्रकारों ने त्रिविमीय प्रभाव उत्पन्न करने हेतु रेखाओं और रंगों के छायांकन का अत्यंत सुंदर प्रयोग किया है। स्थानीय वनस्पतियों और खनिजों से निर्मित रंगों ने इन्हें शताब्दियों तक जीवंत बनाए रखा है।

42. (1) बृहदेश्वर मंदिर, तंजावुर
खजुराहो, भुवनेश्वर और कोणार्क के मंदिर उत्तर भारतीय स्थापत्य की नागर शैली में निर्मित हैं, जिसमें ऊंचे वक्राकार शिखर मुख्य विशेषता हैं। इसके विपरीत, तंजावुर का बृहदेश्वर मंदिर दक्षिण भारतीय द्रविड़ शैली का उत्कृष्ट उदाहरण है। इसमें एक विशाल पिरामिडाकार विमान और भव्य प्रवेश द्वार (गोपुरम) है। द्रविड़ शैली की संरचना नागर शैली से पूर्णतः भिन्न होती है। चोल शासकों द्वारा निर्मित यह मंदिर अपनी भव्यता और विशालता के कारण अन्य उत्तर भारतीय मंदिरों से स्थापत्य की दृष्टि से भिन्न श्रेणी में आता है।

43. (1) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
स्तूप का प्रत्येक स्थापत्य घटक गहरे आध्यात्मिक प्रतीकवाद को समाहित करता है। विशाल गुंबद या 'अंड' संपूर्ण ब्रह्मांड का प्रतिनिधित्व करता है। इसके ऊपर स्थित 'हर्मिका' पवित्रता और देवताओं के स्थान को दर्शाती है। तीन परतों वाली छतरी या 'छत्र' बुद्ध, धर्म और संघ के प्रति सम्मान का प्रतीक है। 'प्रदक्षिणा पथ' पर चलकर श्रद्धालु अपनी आध्यात्मिक श्रद्धा प्रकट करते हैं। इस प्रकार, स्तूप केवल एक स्मारक नहीं, अपितु बौद्ध दर्शन का एक दृश्य चित्रण भी है।

44. (2) यह गुफा 1 में स्थित है और दयालु बोधिसत्व को नीला कमल धारण किए हुए चित्रित करता है।
अजंता की गुफा संख्या 1 में स्थित पद्मपाणि बोधिसत्व का चित्र विश्व विख्यात है। इसमें बोधिसत्व को अत्यंत सौम्य और करुणामयी मुद्रा में प्रदर्शित किया गया है, जिनके हाथ में एक नीला कमल (पद्म) है। उनके शरीर में लचीलापन और मुखमंडल पर शांति का भाव कलाकार की उच्च स्तरीय निपुणता को दर्शाता है। यह चित्र भारतीय चित्रकला के शास्त्रीय सौंदर्य का प्रतीक है। यह बोधिसत्व के उस स्वरूप को दर्शाता है जो समस्त प्राणियों के कल्याण हेतु समर्पित है।

45. (1) केवल I और II
वैदिक साहित्य में विज्ञान के प्रारंभिक तत्व स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। अथर्ववेद में विभिन्न रोगों, जड़ी-बूटियों और उपचारों का वर्णन मिलता है, जो चिकित्सा के प्रति प्रारंभिक दृष्टिकोण को दर्शाता है। 'वेदांग ज्योतिष' खगोलीय गणनाओं हेतु प्राचीनतम ग्रंथों में से एक है, जिसका उपयोग अनुष्ठानों के समय निर्धारण हेतु किया जाता था। यद्यपि ऋग्वेद में नौवहन का उल्लेख है, किंतु आधुनिक त्रिकोणमिति जैसे जटिल गणितीय सूत्र बहुत बाद के काल के ग्रंथों में व्यवस्थित रूप से विकसित हुए थे।

46. (4) दोनों कथन गलत हैं।
मथुरा शैली ने स्थानीय लाल बलुआ पत्थर का उपयोग किया और इसमें मूर्तियों को प्रायः शक्तिशाली और मांसल दिखाया गया। इसके विपरीत, गांधार शैली में धूसर शिस्ट पत्थर का प्रयोग हुआ और यह यूनानी प्रभाव के कारण अधिक यथार्थवादी शारीरिक बनावट पर केंद्रित थी। प्रश्न के कथनों में इन दोनों शैलियों की विशेषताओं को परस्पर बदल दिया गया है। मथुरा शैली ने भारतीय परंपराओं को सुदृढ़ किया, जबकि गांधार शैली ने विदेशी तकनीकों को भारतीय विषयों के साथ जोड़कर नवीन स्वरूप प्रदान किया।

47. (1) वूट्ज़ इस्पात - एक क्रूसिबल इस्पात जिसमें विशिष्ट धारियां होती हैं।
वूट्ज़ इस्पात प्राचीन भारत की एक महान धातुकर्मीय उपलब्धि थी। इसे मूषा (क्रूसिबल) पद्धति से निर्मित किया जाता था और यह अपनी सुदृढ़ता एवं सतह पर लहरदार धारियों हेतु विश्व प्रसिद्ध था। मध्य पूर्व की प्रसिद्ध दमिश्क तलवारें इसी भारतीय इस्पात से निर्मित की जाती थीं। दिल्ली का लौह स्तंभ ढलाई के स्थान पर फोर्ज वेल्डिंग से निर्मित है। सुल्तानगंज की बुद्ध प्रतिमा कांस्य की है। जस्ता निष्कर्षण हेतु जावर प्रसिद्ध है। अतः वूट्ज़ इस्पात का मिलान पूर्णतः सही है।

48. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
नालंदा विश्वविद्यालय गुप्त काल के उपरांत भी शिक्षा का एक महान केंद्र बना रहा। पाल राजाओं ने इसे उदारतापूर्वक संरक्षण प्रदान किया। इसकी ख्याति इतनी अधिक थी कि दक्षिण-पूर्व एशिया के श्रीविजय साम्राज्य के राजा बालपुत्रदेव ने यहाँ एक मठ निर्मित करवाया और उसके व्यय हेतु गाँवों का दान माँगा। इस अंतरराष्ट्रीय समर्थन और राजकीय संरक्षण ने नालंदा को विश्व भर के छात्रों और विद्वानों हेतु आकर्षण का केंद्र बना दिया, जिससे यह एक वैश्विक विश्वविद्यालय के रूप में स्थापित हुआ।

49. (1) शुल्ब सूत्र
शुल्ब सूत्र प्राचीन भारतीय वैदिक ग्रंथ हैं, जिनमें यज्ञ वेदियों के निर्माण के लिए आवश्यक ज्यामितीय नियमों और माप-तौल का विस्तृत वर्णन मिलता है। इनमें समकोण त्रिभुज, वर्ग और वृत्त जैसी आकृतियों के सटीक निर्माण की विधियाँ दी गई हैं। साथ ही, दिशात्मक संरेखण और अनुपातिक ज्यामिति का भी उल्लेख है, जो प्राचीन वास्तुकला की उन्नत समझ को दर्शाता है।

50. (2) केवल III
प्राचीन भारत के विश्वविद्यालय ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में विशेषज्ञता रखते थे। तक्षशिला अपनी व्यावहारिक शिक्षा जैसे चिकित्सा और राजनीति शास्त्र हेतु विख्यात था। नालंदा एक विशाल विश्वविद्यालय था जहाँ न केवल महायान बौद्ध धर्म अपितु वेद, तर्कशास्त्र और व्याकरण भी पढ़ाए जाते थे।

NODIA

विक्रमशिला बौद्ध शिक्षा और तंत्र विद्या का प्रमुख केंद्र था। यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि नालंदा केवल हीनयान हेतु था, क्योंकि यह समस्त विचारधाराओं और धर्मनिरपेक्ष विषयों के अध्ययन का एक समावेशी संस्थान था।

51. (3) इसने ज्ञान को आठ तर्कसंगत शाखाओं (अष्टांग) में व्यवस्थित किया।
चरक संहिता आयुर्वेद का एक मौलिक ग्रंथ है जिसने चिकित्सा पद्धति को वैज्ञानिक आधार प्रदान किया। इसमें चिकित्सा विज्ञान को आठ अंगों या शाखाओं में विभाजित किया गया है, जिसमें आंतरिक चिकित्सा, शरीर विज्ञान और विष विज्ञान जैसे विषय सम्मिलित हैं। इस ग्रंथ ने रोगों के केवल लक्षणों के स्थान पर उनके मूल कारणों, पाचन तंत्र की भूमिका और रोग प्रतिरोधक क्षमता पर बल दिया। इसके व्यवस्थित दृष्टिकोण ने आयुर्वेद को एक पूर्ण और तर्कसंगत चिकित्सा पद्धति के रूप में स्थापित किया।

52. (4) वह मुख्य कक्ष जहाँ मुख्य देवता स्थापित होते हैं।
हिंदू मंदिर वास्तुकला में गर्भगृह सर्वाधिक पवित्र और महत्वपूर्ण स्थान होता है। यह एक लघु और अंधकारमय कक्ष होता है जहाँ मंदिर के मुख्य आराध्य की मूर्ति स्थापित की जाती है। मंदिर की संपूर्ण संरचना और उसका शिखर इसी कक्ष के ऊपर केंद्रित होते हैं। श्रद्धालु इसी स्थान के समक्ष प्रार्थना करते हैं। गर्भगृह का शांत और सादा वातावरण ईश्वर के साथ एकाग्रता में ध्यान लगाने हेतु निर्मित किया गया है, जो मंदिर की बाह्य भव्यता के पूर्णतः विपरीत होता है।

53. (1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
प्राचीन भारत में विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में विशिष्ट विद्वान हुए। ब्रह्मगुप्त ने गणित और खगोल विज्ञान में शून्य के प्रयोग एवं ग्रहों की गणना पर कार्य किया। पालकाप्य को गज चिकित्सा (हाथियों के उपचार) का विशेषज्ञ माना जाता है। शालिहोत्र ने अश्व चिकित्सा (घोड़ों के उपचार) पर विस्तृत ग्रंथ लिखा। सुश्रुत अपने शल्य चिकित्सा कौशल हेतु विश्व विख्यात थे। इन विद्वानों के कार्य यह प्रदर्शित करते हैं कि प्राचीन काल में पशु चिकित्सा और शल्य विज्ञान दोनों ही अत्यंत उन्नत अवस्था में थे।

54. (2) वाकाटक राजवंश
अजंता की गुफाओं के विकास का द्वितीय और सर्वाधिक महत्वपूर्ण चरण 5वीं शताब्दी ईस्वी के दौरान हुआ था। यह कार्य मुख्य रूप से वाकाटक शासक हरिसेण के संरक्षण में संपन्न हुआ। इस काल में गुफाओं का विन्यास विस्तृत हुआ और चित्रकारी अधिक परिष्कृत हो गई। महायान बौद्ध धर्म के प्रभाव में बुद्ध और बोधिसत्वों की भव्य प्रतिमाएं एवं चित्र निर्मित किए गए। इस चरण की कला में रंगों का प्रयोग और मानवीय भावनाओं की अभिव्यक्ति अपने उच्चतम शिखर पर पहुँच गई थी।

55. (2) केवल IV
दिल्ली का लौह स्तंभ प्राचीन धातुकर्म का एक विस्मयकारी उदाहरण है। इस पर 'चंद्र' नामक राजा का उल्लेख है, जिनकी पहचान प्रायः गुप्त शासक चंद्रगुप्त द्वितीय से की जाती है। यह शुद्ध टाइटेनियम से नहीं अपितु उच्च गुणवत्ता वाले लोहे से निर्मित है। इसमें उपस्थित फास्फोरस की उच्च मात्रा और फोर्ज वेल्डिंग की तकनीक ने इसे शताब्दियों तक जंग से सुरक्षित रखा है। यह कहना कि यह टाइटेनियम से निर्मित है, वैज्ञानिक रूप से पूर्णतः गलत है, क्योंकि वह धातु बहुत बाद में खोजी गई थी।

56. (1) महासंघिक
अमरावती का महाचैत्य दक्षिण भारत के सर्वाधिक महत्वपूर्ण बौद्ध स्थलों में से एक था। इसे 'महासंघिक' संप्रदाय की एक शाखा 'चैत्यक' के साथ गहराई से जोड़ा गया है। इन भिक्षुओं ने बुद्ध के प्रतीकों की उपासना और स्तूप के भव्य अलंकरण को प्रोत्साहित किया। उनके प्रभाव के फलस्वरुप ही अमरावती शैली में बुद्ध के जीवन की घटनाओं को इतनी जटिलता और कलात्मकता के साथ उत्कीर्ण किया गया है। इस संप्रदाय ने हीनयान से महायान की ओर संक्रमण के काल में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

57. (3) उन्होंने पाई (pi) के लिए 3.1416 के रूप में एक सन्निकटन प्रदान किया।
आर्यभट्ट ने गणित के क्षेत्र में कई युगांतरकारी योगदान दिए। उन्होंने वृत्त की परिधि और व्यास के अनुपात अर्थात 'पाई' का मान दशमलव के चार स्थानों तक अत्यंत सटीक रूप से प्राप्त किया था। उन्होंने स्पष्ट किया कि यह एक सन्निकटन है। इसके अतिरिक्त, उन्होंने 'आर्यभटीय' में ज्या (साइन) सारणी और बीजगणितीय सूत्रों का भी प्रतिपादन किया। उनके द्वारा प्रतिपादित दशमलव स्थान मान प्रणाली ने वैश्विक स्तर पर गणना की पद्धतियों में क्रांतिकारी परिवर्तन किया और आधुनिक गणित का आधार निर्मित किया।

58. (1) सांची स्तूप (मूल आंतरिक भाग), भरहुत स्तूप, अमरावती स्तूप अलंकरण, अजंता महायान गुफाएं
बौद्ध वास्तुकला का विकास कालक्रम के साथ सरल से अलंकृत होता गया। सर्वप्रथम मौर्य काल में सांची स्तूप की ईंटों वाली मूल संरचना निर्मित हुई। इसके उपरांत शुंग काल में भरहुत में पाषाण उत्कीर्णन प्रारंभ हुआ। सातवाहन काल के दौरान अमरावती में संगमरमर जैसी नक्काशी और भव्यता का विस्तार हुआ। अंत में, गुप्त और वाकाटक काल के दौरान अजंता में महायान परंपरा के अंतर्गत चित्रकारी और मूर्तिकला का पूर्ण विकास हुआ। यह क्रम बौद्ध धर्म के वैचारिक और कलात्मक विकास को दर्शाता है।

59. (4) यूरोपियों के आगमन तक भारत में सीमेंटेशन प्रक्रियाएं पूरी तरह से अज्ञात थीं।
प्राचीन भारत में रसायन विज्ञान एक व्यावहारिक विज्ञान के रूप में अत्यंत उन्नत था। भारतीयों ने बहुत पूर्व ही धातुओं के द्रवीकरण, उनके शुद्धिकरण और मिश्र धातु निर्माण की प्रक्रियाओं में कुशलता प्राप्त कर ली थी। सीमेंटेशन और आसवन जैसी जटिल तकनीकें शताब्दियों से यहाँ प्रचलित थीं, जिनका उपयोग जस्ता निष्कर्षण और इस्पात निर्माण में किया जाता था। साबुनीकरण और रंगों के निर्माण में भी भारतीयों के पास

Click Here to Buy book on Amazon

गहन ज्ञान था। अतः यह कहना कि ये तकनीकें यूरोपीय प्रभाव से आईं, पूर्णतः असत्य है।

60. (2) आमलक
द्रविड़ शैली के मंदिरों में विमान, मंडप और विशाल गोपुरम प्रमुख विशेषताएं हैं। 'विमान' मुख्य गर्भगृह के ऊपर एक बहुमंजिला पिरामिडाकार संरचना होती है। गोपुरम मंदिर के बाह्य घेरे में निर्मित भव्य प्रवेश द्वार होता है। दूसरी ओर, 'आमलक' एक गोलाकार खांचों वाली पाषाण डिस्क होती है जो विशेष रूप से उत्तर भारतीय या नागर शैली के मंदिरों के शिखर के ऊपर पाई जाती है। द्रविड़ शैली में शिखर के शीर्ष पर प्रायः एक गुंबद जैसा 'शिखरम' और उसके ऊपर कलश स्थापित किया जाता है।

61. (3) तक्षशिला
भौगोलिक दृष्टिकोण से नालंदा, विक्रमशिला और ओदंतपुरी तीनों प्राचीन मगध क्षेत्र अर्थात वर्तमान बिहार में स्थित थे। ये पाल और गुप्त काल के दौरान पूर्वी भारत के महान बौद्ध शिक्षा केंद्र रहे। इसके विपरीत, तक्षशिला भारतीय उपमहाद्वीप के सुदूर उत्तर-पश्चिम में, वर्तमान पाकिस्तान के रावलपिंडी के समीप स्थित था। यह प्राचीन गांधार क्षेत्र का भाग था और रेशम मार्ग के निकट होने के कारण एक महत्वपूर्ण व्यापारिक एवं सांस्कृतिक केंद्र था। इस प्रकार तक्षशिला भौगोलिक रूप से भिन्न है।

62. (4) इसकी स्वदेशी शैली कई धार्मिक परंपराओं के अनुकूल थी।
मथुरा कला शैली अपनी व्यापक धार्मिक अपील के कारण अत्यंत सफल रही। यहाँ के कलाकारों ने न केवल बुद्ध की मूर्तियों का निर्माण किया, बल्कि उन्होंने हिंदू धर्म के देवताओं जैसे कृष्ण, विष्णु, शिव और जैन तीर्थंकरों की मूर्तियों को भी कुशलतापूर्वक निर्मित किया। यह शैली स्थानीय रूप से विकसित हुई थी और इसमें भारतीय सौंदर्य बोध की प्रधानता थी। इसकी सहजता और लचीलेपन ने इसे विभिन्न धार्मिक संप्रदायों के मध्य लोकप्रिय बनाया, जिससे यह शैली उत्तर भारत के विस्तृत क्षेत्रों में प्रसारित हुई।

63. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
प्राचीन भारतीय ग्रंथों ने ज्ञान के विविध क्षेत्रों को संहिताबद्ध किया। 'आर्यभटीय' खगोल विज्ञान और गणित का एक महान कार्य है। 'अष्टांग हृदय' वाग्भट द्वारा लिखित आयुर्वेद का एक व्यापक ग्रंथ है। 'रसरत्नसमुच्चय' कीमिया, धातुकर्म और औषधीय रसायनों के ज्ञान पर केंद्रित है। 'मानसारा' एक महत्वपूर्ण स्थापत्य ग्रंथ है जो वास्तुकला, मूर्तिकला और नगर नियोजन के नियमों का विस्तार से वर्णन करता है। ये ग्रंथ प्राचीन भारत के व्यवस्थित और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को प्रदर्शित करते हैं।

64. (3) दोनों कथन सही हैं।
बराबर की पहाड़ियों में स्थित लोमस ऋषि गुफा मौर्यकालीन स्थापत्य का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। इसकी मुख्य विशेषता इसका अलंकृत प्रवेश द्वार है जिसमें हाथियों की नक्काशी की गई है। इसके आंतरिक भाग को दर्पण जैसी चमक देने हेतु सूक्ष्मता से पॉलिश किया गया है, जो मौर्य कला की विशिष्ट पहचान है। सम्राट अशोक ने इस गुफा का निर्माण आजीवक संप्रदाय के भिक्षुओं के निवास हेतु करवाया था। यह गुफा भारत में चट्टानों को काटकर निर्मित स्थापत्य के प्रारंभिक विकास को प्रदर्शित करती है।

65. (3) केवल III
प्राचीन भारतीय खगोलविदों ने ग्रहों की गति और सौर वर्ष की अवधि की गणना में विस्मयकारी सटीकता प्राप्त की थी। ब्रह्मगुप्त ने गुरुत्वाकर्षण और गणित के जटिल सिद्धांतों पर कार्य किया। हालांकि, सूर्यकेंद्रितवाद अर्थात यह विचार कि सूर्य केंद्र में है और पृथ्वी उसके चारों ओर घूमती है, सभी प्राचीन वैदिक ग्रंथों में औपचारिक रूप से संहिताबद्ध नहीं था। अधिकांश प्रारंभिक ग्रंथ पृथ्वी को केंद्र में मानते थे। आर्यभट्ट जैसे विद्वानों ने पृथ्वी के घूर्णन की बात की थी, किंतु सूर्यकेंद्रित मॉडल का पूर्ण विकास बाद में हुआ।

66. (1) दीदारगंज चामरधारिणी - मौर्य काल की पॉलिशदार मूर्ति।
दीदारगंज चामरधारिणी मौर्य काल की प्रसिद्ध मूर्ति है, जो अपनी अत्यंत चमकदार पॉलिश और उत्कृष्ट शिल्पकला के लिए जानी जाती है। यह मूर्ति उस समय की उन्नत तकनीक, सौंदर्यबोध और यथार्थवादी शैली को दर्शाती है। अन्य विकल्प गलत हैं क्योंकि यक्ष-यक्षिणी केवल गांधार तक सीमित नहीं थे, कनिष्क की मूर्ति मथुरा शैली की है, और एलीफेंटा गुफाएँ गुप्तोत्तर काल में निर्मित हुई थीं।

NODIA

67. (3) सुश्रुत संहिता
सुश्रुत संहिता प्राचीन भारत का एक महान चिकित्सा और शल्य चिकित्सा ग्रंथ है। इसमें शल्य चिकित्सा के दौरान रक्तस्राव को रोकने और घावों के उपचार हेतु विभिन्न प्रकार के रासायनिक क्षारों की तैयारी और उनके उपयोग का विस्तृत विवरण मिलता है। सुश्रुत ने चूना पत्थर और भस्म जैसे प्राकृतिक पदार्थों से क्षार निर्मित करने की विधि बताई थी। यह वर्णन न केवल चिकित्सा में उनके कौशल को दर्शाता है, बल्कि यह भी सिद्ध करता है कि प्राचीन भारतीयों को व्यावहारिक रसायन विज्ञान की गहन समझ थी।

68. (3) A सही है लेकिन R गलत है।
अमरावती कला शैली सातवाहन शासकों के संरक्षण में दक्षिण भारत में पल्लवित हुई। यह अपनी जटिल कथात्मक नक्काशी और सफेद चूना पत्थर के उपयोग हेतु जानी जाती है। हालांकि, यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि यह किसी भी स्वदेशी भारतीय प्रभाव से मुक्त थी। वास्तव में, यह पूर्णतः स्वदेशी परंपराओं पर आधारित थी और इसमें स्थानीय लोक कला के तत्वों का समावेश था। इसमें बुद्ध के जीवन को भारतीय राजसी परिवेश और सामान्य जनजीवन के माध्यम से अत्यंत प्रभावी ढंग से प्रदर्शित किया गया है।

69. (3) वर्षा ऋतु (वर्षावास) के दौरान भिक्षुओं के लिए स्थायी आवास उपलब्ध कराना।
प्राचीन भारत में बौद्ध और जैन भिक्षु प्रायः परिव्राजक जीवन व्यतीत करते थे और धर्म का प्रचार करते थे। किंतु मानसून के चार महीनों के दौरान यात्रा करना दुष्कर और सूक्ष्म जीवों हेतु हानिकारक माना जाता था। इसी 'वर्षावास' की अवधि के दौरान भिक्षुओं के विश्राम हेतु विहारों या मठों का निर्माण किया गया था। समय के साथ ये विहार केवल वर्षाकालीन निवास न रहकर शिक्षा, ध्यान और धार्मिक विमर्श के स्थायी केंद्रों के रूप में विकसित हो गए, जहाँ भिक्षु निवास करते थे।

70. (1) केवल I, II और III
वैदिक साहित्य खगोलीय और शरीर विज्ञान के ज्ञान से आपूरित है। ऋग्वेद में ऋतुओं और काल मापन हेतु सौर-चंद्र कैलेंडर का उल्लेख है। अथर्ववेद में मानव शरीर के अंगों और व्याधियों के नाम मिलते हैं, जो प्रारंभिक चिकित्सा समझ को दर्शाते हैं। वैदिक काल के लोग धातुओं के निष्कर्षण और उनके उपयोग से भली-भांति परिचित थे। हालांकि, शून्य का गणितीय औपचारिकरण और उसके प्रतीक का विकास कालांतर में हुआ, न कि प्रारंभिक ऋग्वैदिक काल के दौरान।

71. (4) अनुष्ठानों के लिए गर्भगृह के सामने स्थित स्तंभों वाला हॉल।
भारतीय मंदिर वास्तुकला में 'मंडप' एक महत्वपूर्ण संरचना है। यह गर्भगृह के ठीक समक्ष निर्मित एक विस्तृत स्तंभों वाला कक्ष होता है जहाँ श्रद्धालु एकत्रित होते हैं। इसका उपयोग विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों, प्रार्थनाओं और सभाओं हेतु किया जाता था। बड़े मंदिरों में मुख्य मंडप के अतिरिक्त कई अन्य लघु मंडप जैसे महामंडप और अर्द्धमंडप भी हो सकते हैं। यह मंदिर के प्रवेश द्वार और मुख्य देवता के स्थान के मध्य एक सेतु के रूप में कार्य करता है, जो स्थापत्य की भव्यता बढ़ाता है।

72. (1) ह्वेन त्सांग
चीनी यात्री ह्वेन त्सांग 7वीं शताब्दी में राजा हर्षवर्धन के शासनकाल के दौरान भारत आए थे। उन्होंने नालंदा विश्वविद्यालय में कई वर्ष व्यतीत किए और वहाँ की शिक्षा प्रणाली का सजीव वर्णन किया। उन्होंने बताया कि नालंदा में प्रवेश अत्यंत कठिन था और द्वारपाल स्वयं छात्रों की परीक्षा लेते थे। उनके लेखों से हमें नालंदा के विशाल पुस्तकालयों, बौद्धिक विमर्श और वहाँ पढ़ाए जाने वाले विविध विषयों की विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है, जिसने नालंदा को तत्कालीन विश्व का श्रेष्ठ शैक्षणिक केंद्र बनाया था।

73. (1) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
सांची अपनी प्राचीन स्तूप वास्तुकला और मौर्यकालीन आधार हेतु प्रसिद्ध है। मथुरा लाल बलुआ पत्थर से निर्मित स्वदेशी मूर्तियों का प्रमुख केंद्र रहा है जिसने तीनों धर्मों को प्रभावित किया। महाबलीपुरम अपने पल्लवकालीन एकाश्म रथों और विशाल पाषाण नक्काशी हेतु दक्षिण भारत का गौरव है। खजुराहो के मंदिर अपनी जटिल नागर शैली की वास्तुकला और ऊंचे शिखरों हेतु जाने जाते हैं। ये सभी स्थल भारतीय कला के विभिन्न चरणों और विविधतापूर्ण शैलियों का श्रेष्ठ प्रतिनिधित्व करते हैं।

74. (1) रसरत्नाकर
'रसरत्नाकर' नागार्जुन द्वारा रचित एक महत्वपूर्ण रसायनशास्त्रीय ग्रंथ है। इसमें विविध धातुओं के शोधन, पारे के यौगिक निर्मित करने और स्वर्ण-रजत जैसी धातुओं के निष्कर्षण की विधियों का वर्णन किया गया है। यह ग्रंथ मिश्र धातुओं के निर्माण और उनके रासायनिक गुणों की वैज्ञानिक व्याख्या करता है। यह प्राचीन भारत में 'रस शास्त्र' के विकास का एक प्रमुख दस्तावेज है, जो चिकित्सा और धातुकर्म दोनों क्षेत्रों में भारतीयों की उन्नत समझ और उनके प्रयोगात्मक दृष्टिकोण का ठोस प्रमाण प्रस्तुत करता है।

75. (1) केवल IV
गुप्त काल के दौरान मंदिर वास्तुकला ने अपनी प्रारंभिक अवस्था से पूर्ण संरचनात्मक स्वरूप तक का मार्ग तय किया। इस काल में पाषाण के साथ-साथ ईंटों का भी प्रचुर मात्रा में उपयोग किया गया था। कानपुर का भीतरगाँव मंदिर और छत्तीसगढ़ का सिरपुर मंदिर गुप्तकालीन ईंटों से निर्मित मंदिरों के श्रेष्ठ उदाहरण हैं। अतः यह कहना कि इस काल में ईंटों के मंदिर अज्ञात थे, पूर्णतः त्रुटिपूर्ण है। गुप्त काल ने ही भारतीय मंदिर निर्माण की आधारभूत विशेषताओं जैसे गर्भगृह और शिखर की नींव रखी थी।

76. (2) इसमें उत्तरी (नागर) और दक्षिणी (द्रविड़) शैलियों का मिश्रण पाया जाता है।
वेसर शैली मंदिर निर्माण की एक संकर शैली है जो मध्य भारत और दक्कन क्षेत्र में चालुक्य शासकों के अधीन विकसित हुई। इसमें उत्तर भारत की नागर शैली के शिखर और दक्षिण भारत की द्रविड़ शैली के विमान व अलंकृत मंडप के तत्वों का समन्वय किया गया है। इस शैली के मंदिरों में प्रायः तारकीय आकार का आधार होता है। यह स्थापत्य कला में क्षेत्रीय विविधता और विभिन्न सांस्कृतिक प्रभावों के सामंजस्य का एक अनूठा उदाहरण प्रस्तुत करती है।

77. (3) गुरुत्वाकर्षण की अवधारणा मूल रूप से चरक द्वारा खोजी और गणितीय रूप से प्रतिपादित की गई थी।
प्राचीन भारत के वैज्ञानिकों ने खगोल विज्ञान और चिकित्सा में आश्चर्यजनक प्रगति की थी। आर्यभट्ट ने खगोलीय पिंडों की ज्योति और उनके पीछे के वैज्ञानिक कारणों को समझा। सुश्रुत ने शरीर विज्ञान की शिक्षा हेतु वैज्ञानिक पद्धतियाँ विकसित कीं। हालांकि, गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत की प्रारंभिक अवधारणा और उसके गणितीय आधार का उल्लेख ब्रह्मगुप्त और भास्कराचार्य जैसे गणितज्ञों के कार्यों में मिलता है, न कि चरक के ग्रंथों में। चरक का मुख्य योगदान चिकित्सा और आयुर्वेद के क्षेत्र में था।

78. (1) II, I, IV, III
भारतीय वैज्ञानिक परंपरा के विकास का एक स्पष्ट कालक्रम है। चरक कुषाण काल के दौरान हुए जिन्होंने चिकित्सा शास्त्र को संकलित किया। उनके उपरांत गुप्त काल में आर्यभट्ट आए जिन्होंने खगोल विज्ञान और गणित को नवीन दिशा प्रदान की। 7वीं शताब्दी में ब्रह्मगुप्त ने शून्य के नियमों और बीजगणित पर महत्वपूर्ण कार्य किया। अंत में, मध्यकाल के दौरान

Downloaded from www.pdf.tube

भास्कराचार्य हुए जिन्होंने 'लीलावती' जैसे प्रसिद्ध ग्रंथों की रचना की। यह क्रम भारत में वैज्ञानिक सोच के निरंतर और व्यवस्थित विकास को प्रदर्शित करता है।

79. (1) पूरी तरह से स्थिर आकृतियों के साथ केवल ध्यानपूर्ण मुद्राओं का उपयोग।
अमरावती कला शैली अपनी गतिशीलता और सजीवता हेतु विख्यात है। इसमें आकृतियों को केवल स्थिर या ध्यानपूर्ण मुद्रा में प्रदर्शित नहीं किया गया है, बल्कि उनमें मानवीय भावनाएं, नृत्य, उल्लास और पीड़ा का अत्यंत प्रभावी चित्रण है। इस शैली में आकृतियां प्रायः परस्पर संवाद करती हुई और अत्यंत लचीले शरीर के साथ दृष्टिगोचर होती हैं। सफेद चूना पत्थर पर की गई यह नक्काशी भारतीय मूर्तिकला में एक नवीन शैली लेकर आई, जो कथात्मक दृश्यों को सूक्ष्मता से प्रदर्शित करती है।

NODIA

80. (2) इसे चट्टान को ऊपर से नीचे की ओर तराश कर बनाया गया था।
एलोरा का कैलाशनाथ मंदिर वास्तुकला का एक विस्मयकारी चमत्कार है। इसे राष्ट्रकूट राजा कृष्ण प्रथम के शासनकाल में एक ही विशाल पहाड़ी को काटकर निर्मित किया गया था। इसकी सर्वाधिक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसे सामान्य मंदिरों की भाँति नीचे से ऊपर नहीं, अपितु पर्वत के शीर्ष से प्रारंभ कर नीचे की ओर तराशा गया था। शिल्पकारों ने त्रुटिहीन कौशल से एक ही चट्टान से मंदिर के शिखर, स्तंभ, मंडप और मूर्तियों को निर्मित किया, जो उनकी उच्च स्तरीय अभियांत्रिकी का प्रमाण है।

अध्याय 08
भारतीय ज्ञान एवं मूल्य प्रणाली

1. प्राचीन भारतीय ग्रंथों के संदर्भ में, ऋग्वेद का निम्नलिखित में से कौन-सा सूक्त चार वर्णों की उत्पत्ति का सबसे प्राचीन वैचारिक संदर्भ प्रदान करता है?
(1) नासदीय सूक्त
(2) पुरुष सूक्त
(3) हिरण्यगर्भ सूक्त
(4) नदीस्तुति सूक्त
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

2. प्राचीन भारत में वर्ण व्यवस्था के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसने मूल रूप से व्यक्ति की योग्यता और अंतर्निहित गुणों (गुण और कर्म) के आधार पर श्रम विभाजन पर बल दिया था।
II. उत्तर वैदिक काल के दौरान, यह व्यवस्था पूर्णतः वंशानुगत और कठोर हो गई, जो जाति व्यवस्था की ओर विकसित हुई।
III. वर्ण व्यवस्था का प्राथमिक उद्देश्य विशिष्ट सामाजिक भूमिकाओं का आवंटन करके आर्थिक और सामाजिक स्थिरता सुनिश्चित करना था।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

3. वर्ण व्यवस्था के संबंध में दिए गए कथनों को पढ़िए और सही उत्तर का चयन कीजिए:
कथन I: भगवद गीता में कहा गया है कि चार वर्णों की व्यवस्था का सृजन ईश्वर द्वारा गुणों (गुण) और कार्यों (कर्म) के विभेदन के आधार पर किया गया था।
कथन II: शास्त्रीय वर्ण व्यवस्था ने प्रारंभिक ऋग्वैदिक काल से ही सामाजिक व्यवस्था के एक आधारभूत स्तंभ के रूप में अस्पृश्यता की स्पष्ट वकालत की थी।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

4. निम्नलिखित में से कौन-सा प्राचीन भारतीय सामाजिक व्यवस्था में मान्यता प्राप्त चार पारंपरिक वर्णों में से एक नहीं है?
(1) ब्राह्मण
(2) क्षत्रिय
(3) वैश्य
(4) चांडाल
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

5. निम्नलिखित सूचियों को पढ़िए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (वर्ण)
A. ब्राह्मण
B. क्षत्रिय
C. वैश्य
D. शूद्र
सूची II: (पारंपरिक प्राथमिक कर्तव्य)
i. व्यापार, कृषि और वाणिज्य
ii. सेवा और अन्य वर्णों की सहायता करना
iii. अध्यापन, अध्ययन और यज्ञ करना
iv. रक्षा, प्रशासन और युद्ध
कूट:
(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(3) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

6. शास्त्रीय भारतीय ग्रंथों के अनुसार, निम्नलिखित आश्रमों को मानव जीवन के सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. वानप्रस्थ
II. संन्यास
III. ब्रह्मचर्य
IV. गृहस्थ
(1) I, II, III, IV
(2) III, IV, I, II
(3) III, I, IV, II
(4) IV, III, I, II
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Click Here to Buy book on Amazon

7. आश्रम व्यवस्था के अनुसार, 'उपनयन' नामक दीक्षा संस्कार औपचारिक रुप से व्यक्ति के जीवन के निम्नलिखित में से किस चरण में प्रवेश का प्रतीक है?
(1) गृहस्थ
(2) वानप्रस्थ
(3) संन्यास
(4) ब्रह्मचर्य
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

8. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। दोनों कथनों को पढ़िए और सही उत्तर चुनिए:
अभिकथन (A): पारंपरिक भारतीय ग्रंथों में, गृहस्थ आश्रम को अक्सर चारों आश्रमों में सबसे महत्वपूर्ण बताया गया है।
कारण (R): गृहस्थ अन्य तीन आश्रमों के व्यक्तियों को आर्थिक पोषण, भोजन और सहायता प्रदान करता है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

9. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन वानप्रस्थ आश्रम की मूलभूत विशेषता का सही वर्णन करता है?
(1) वह चरण जो मुख्य रूप से धन संचय और शारीरिक इच्छाओं की पूर्ति के लिए समर्पित है।
(2) शिक्षा के बाद सभी सामाजिक, पारिवारिक और अनुष्ठानिक संबंधों को पूरी तरह से तोड़ने की अवधि।
(3) आध्यात्मिक चिंतन और सांसारिक बंधनों से धीरे-धीरे अलग होने का एक संक्रमणकालीन चरण।
(4) एक वन आश्रम की सीमाओं के भीतर गुरु के सानिध्य में कठोर औपचारिक शिक्षा की अवधि।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

10. आश्रम व्यवस्था के संदर्भ में, संन्यास आश्रम को सफलतापूर्वक पूरा करने का अंतिम प्रत्याशित प्रभाव क्या है?
(1) मोक्ष, या जन्म और मृत्यु के चक्र से पूर्ण मुक्ति।
(2) अत्यधिक सामाजिक शक्ति और राजपद की महिमा की प्राप्ति।
(3) उच्च वर्ण में पुनर्जन्म और अधिक समृद्ध अगला जीवन।
(4) सभी भौतिक तृष्णाओं और सांसारिक इंद्रिय सुखों की पूर्ति।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

11. पुरुषार्थ के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. पुरुषार्थ का अर्थ "मानव जीवन के लक्ष्य या उद्देश्य" है।
II. अर्थ का तात्पर्य केवल राजनीतिक शक्ति की प्राप्ति से है और यह स्पष्ट रूप से धन के अर्जन को प्रतिबंधित करता है।
III. काम भावनात्मक, सौंदर्यपरक और भौतिक इच्छाओं की पूर्ति का प्रतिनिधित्व करता है।
IV. मोक्ष को परम लक्ष्य (परमार्थ) माना जाता है जो अन्य तीन लक्ष्यों से परे है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

12. शास्त्रीय भारतीय दर्शन के ढांचे में, 'पुरुषार्थ' की अवधारणा को सबसे अच्छी तरह से परिभाषित किया जा सकता है:
(1) क्षेत्रीय विस्तार के उद्देश्य से राजाओं द्वारा किए गए अनुष्ठानिक यज्ञ।
(2) मानव जीवन को अर्थ और दिशा प्रदान करने वाले चार मूलभूत उद्देश्य।
(3) मनुष्य में शारीरिक विकास और शारीरिक वृद्धि के चरण।
(4) जन्म के विशिष्ट समय पर सौंपा गया पूर्व निर्धारित भाग्य या नियति।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

13. पुरुषार्थ के संबंध में निम्नलिखित सूचियों को पढ़िए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (पुरुषार्थ)
A. धर्म
B. अर्थ
C. काम
D. मोक्ष
सूची II: (मुख्य विषय)
i. भौतिक समृद्धि और सांसारिक सफलता
ii. आध्यात्मिक मुक्ति और आत्म-साक्षात्कार
iii. नैतिक आचरण और नैतिक कर्तव्य
iv. सुख, इच्छाएं और भावनात्मक पूर्ति
कूट:
(1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(2) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(3) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

14. निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प सबसे अच्छी व्याख्या करता है कि शास्त्रीय भारतीय दर्शन धर्म, अर्थ और काम (त्रिवर्ग) के एकीकृत अनुसरण की वकालत क्यों करता है?
(1) यह सुनिश्चित करने के लिए कि व्यक्ति वृद्धावस्था तक आध्यात्मिक गतिविधियों को पूरी तरह से त्याग दे।
(2) एक कठोर पदानुक्रम को लागू करने के लिए जहां धन को नैतिक आचरण से बहुत अधिक महत्व दिया जाता है।
(3) जन्म के समय से ही व्यक्तियों को विशेष रूप से एक तपस्वी के जीवन के लिए तैयार करना।
(4) एक संतुलित और समग्र जीवन को बढ़ावा देने के लिए

जहां आवश्यकताओं की पूर्ति नैतिक रूप से हो।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

15. निम्नलिखित अवधारणाओं में से बेमेल की पहचान कीजिए, जो पुरुषार्थ ढांचे में 'त्रिवर्ग' के रूप में जाने जाने वाले समूह से मौलिक रूप से भिन्न है:
(1) मोक्ष
(2) धर्म
(3) अर्थ
(4) काम
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

16. निम्नलिखित में से पुरुषार्थ और उसके आधारभूत शास्त्रीय ग्रंथ का कौन-सा जोड़ा गलत सुमेलित है?
(1) अर्थ - कौटिल्य कृत अर्थशास्त्र
(2) मोक्ष - भरत मुनि कृत नाट्यशास्त्र
(3) काम - वात्स्यायन कृत कामसूत्र
(4) धर्म - मनु कृत मनुस्मृति
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

17. धर्म की अवधारणा के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह संस्कृत मूल 'धृ' से बना है, जिसका अर्थ है धारण करना, समर्थन करना या बनाए रखना।
II. साधारण धर्म का तात्पर्य सभी मनुष्यों पर लागू होने वाले सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांतों से है, जैसे अहिंसा और सत्यनिष्ठा।
III. स्वधर्म का तात्पर्य व्यक्ति की प्रकृति, जीवन के चरण और सामाजिक भूमिका के आधार पर उसके विशिष्ट कर्तव्यों से है।
IV. आपद धर्म अत्यधिक संकट या जीवन रक्षा के समय में नियमित कर्तव्यों के अस्थायी निलंबन की अनुमति देता है।
V. शास्त्रीय ग्रंथ यह दावा करते हैं कि धर्म पूरी तरह से स्थिर है और इसे बदलते समय या परिस्थितियों (युग धर्म) के अनुसार अनुकूलित नहीं किया जा सकता है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III और V
(2) केवल I, II, III और IV
(3) केवल II, III, IV और V
(4) केवल I, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

18. शास्त्रीय भारतीय दर्शन में 'धर्म' की अवधारणा को सबसे सटीक रूप से वर्णित किया गया है:
(1) वह अंतर्निहित नियम या ब्रह्मांडीय व्यवस्था जो ब्रह्मांड और समाज को बनाए रखती है।
(2) धार्मिक सिद्धांतों का एक कठोर समूह जिसका बिना किसी प्रश्न के पालन किया जाना चाहिए।
(3) सभी सांसारिक गतिविधियों और आवश्यक पारिवारिक संबंधों का पूर्ण त्याग।
(4) स्वास्थ्य और दीर्घायु के लिए निर्मित विशुद्ध रूप से शारीरिक अभ्यासों की एक प्रणाली।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

19. महामारी के दौरान व्यक्तिगत सुख-सुविधाओं को त्याग कर रोगियों के उपचार के लिए निरंतर परिश्रम करने वाला एक चिकित्सक धर्म के किस विशिष्ट प्रकार के अनुप्रयोग का सर्वोत्तम प्रदर्शन कर रहा है?
(1) वर्ण धर्म
(2) आश्रम धर्म
(3) स्वधर्म
(4) आपद धर्म
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

20. धर्म के संबंध में निम्नलिखित सूचियों को पढ़िए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (धर्म के प्रकार)
A. युग धर्म
B. साधारण धर्म
C. आश्रम धर्म
D. स्वधर्म
सूची II: (अर्थ)
i. जीवन के चरण के अनुसार कर्तव्य
ii. विशिष्ट युग या काल द्वारा निर्धारित कर्तव्य
iii. सभी मनुष्यों के लिए सार्वभौमिक नैतिक गुण
iv. व्यक्ति का अपना विशिष्ट व्यक्तिगत कर्तव्य
कूट:
(1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(2) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(3) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

21. निम्नलिखित में से किसे सामान्यतः 'धर्म' की वैध अभिव्यक्ति के रूप में वर्गीकृत नहीं किया गया है?
(1) राजधर्म (राजा के कर्तव्य और उत्तरदायित्व)
(2) स्त्रीधर्म (एक महिला के पारंपरिक कर्तव्य)
(3) दानधर्म (दान का नैतिक कर्तव्य)
(4) अधर्म (अधर्म या नियम का उल्लंघन)
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

22. अर्थ के संबंध में दिए गए कथनों को पढ़िए और सही उत्तर का चयन कीजिए:
कथन I: पुरुषार्थ के संदर्भ में, अर्थ का तात्पर्य धन के सृजन, भौतिक समृद्धि और राजनीतिक स्थिरता से है।
कथन II: शास्त्रीय भारतीय विचार अर्थ के अनुसरण की कड़ी निंदा करते हैं और धन संचय को सभी व्यक्तियों के लिए पूर्णतः पाप मानते हैं।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।

(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

23. कौटिल्य की शासनकला (अर्थ) की अवधारणा के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. अर्थशास्त्र में सप्तांग सिद्धांत का प्रस्ताव दिया गया है, जिसमें राज्य के सात अंगों की कल्पना की गई है।
II. स्वामी (राजा) और अमात्य (मंत्री) सप्तांग सिद्धांत के मूलभूत घटक हैं।
III. कौटिल्य का सुझाव है कि विदेश नीति और गुप्तचरी, अर्थ के रखरखाव के लिए अप्रासंगिक हैं।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

24. किस प्राचीन भारतीय दार्शनिक को ऐतिहासिक रुप से शासनकला, प्रशासन और अर्थशास्त्र के संबंध में अर्थ के सिद्धांतों को व्यापक रूप से व्यवस्थित करने का श्रेय दिया जाता है?
(1) चाणक्य (कौटिल्य)
(2) वात्स्यायन
(3) कपिल
(4) गौतम
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

25. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। दोनों कथनों को पढ़िए और सही उत्तर चुनिए:
अभिकथन (A): अर्थ का वैध अनुसरण एक समृद्ध समाज के संचालन के लिए आवश्यक माना जाता है।
कारण (R): पर्याप्त भौतिक संसाधनों (अर्थ) के बिना, अपने धर्म का पालन करना और काम की इच्छाओं को पूरा करना अत्यंत कठिन है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

26. त्रिवर्ग ढांचे में अर्थ के अनुसरण के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा दार्शनिक दृष्टिकोण सबसे उपयुक्त है?
(1) अर्थ का अर्जन धर्म के सिद्धांतों के कड़ाई से पालन के साथ किया जाना चाहिए।
(2) नैतिक विचारों की परवाह किए बिना, किसी भी मूल्य पर अर्थ का अनुसरण किया जाना चाहिए।
(3) अर्थ केवल राजाओं के लिए है, जबकि अन्य को पूर्ण दरिद्रता में रहना चाहिए।
(4) अर्थ एक भ्रम है और मोक्ष की शीघ्र प्राप्ति के लिए इसे त्याग देना चाहिए।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

27. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन एक पुरुषार्थ के रूप में 'काम' के सार को सही ढंग से दर्शाता है?
(1) यह केवल शारीरिक और संवेदी सुखों के तपस्वी निषेध को संदर्भित करता है।
(2) यह राजा द्वारा प्रशासित कानूनी संहिताओं और दंडों का प्रतिनिधित्व करता है।
(3) यह अनियंत्रित भोग की वकालत करता है जिससे सामाजिक अव्यवस्था फैलती है।
(4) सौंदर्यबोध और संवेदी सुख सहित जीवन का समग्र आनंद।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

28. काम के संबंध में निम्नलिखित सूचियों को पढ़िए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (काम से संबंधित शब्द)
A. कामसूत्र
B. वात्स्यायन
C. चौसठ कलाएं
D. त्रिवर्ग
सूची II: (विवरण)
i. एक सुसंस्कृत जीवन के लिए आवश्यक 64 पारंपरिक कलाएं
ii. काम के दर्शन और व्यवहार पर चर्चा करने वाला आधारभूत ग्रंथ
iii. धर्म, अर्थ और काम का सामूहिक समूह
iv. प्राचीन भारतीय दार्शनिक जिन्होंने काम पर प्राथमिक ग्रंथ की रचना की
कूट:
(1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(2) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

29. शास्त्रीय दर्शन के अनुसार, धर्म द्वारा स्थापित सीमाओं के भीतर काम का अनुसरण करने का प्राथमिक प्रभाव क्या है?
(1) तत्काल आध्यात्मिक मुक्ति और सांसारिक अस्तित्व से अंतिम विमुक्ति।
(2) नैतिक पतन और सामाजिक व्यवधान को रोकते हुए व्यक्तिगत संतुष्टि।
(3) व्यक्ति का स्वतः ही वन-वासी संन्यासी के रूप में रूपांतरण।
(4) भविष्य के सभी कर्मिक परिणामों और आत्मा के बंधन का पूर्ण उन्मूलन।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Downloaded from www.pdf.tube

30. शास्त्रीय भारतीय विचार में काम के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. इसे केवल तभी वैध पुरुषार्थ माना जाता है जब इसका अनुसरण धर्म के अनुसार किया जाए।
II. वात्स्यायन का कामसूत्र विशेष रूप से केवल कामुकता से संबंधित है और सामाजिक आचरण एवं सौंदर्यशास्त्र की पूरी तरह उपेक्षा करता है।
III. काम के अंतर्गत साहित्य, ललित कलाओं की सराहना और जीवन का सामान्य आनंद शामिल है।
IV. गृहस्थ आश्रम के व्यक्तियों के लिए काम का अनुसरण पूर्णतः वर्जित है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I और III
(2) केवल II और IV
(3) केवल I, II और III
(4) केवल II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

31. बेमेल की पहचान कीजिए। निम्नलिखित में से किसे 64 कलाओं पर पारंपरिक ग्रंथों में वर्णित काम के अनुसरण वाले परिष्कृत जीवन की वैध अभिव्यक्ति नहीं माना जाता है?
(1) छल-कपट के माध्यम से धन संचय करना
(2) गायन और वाद्य यंत्र बजाना
(3) पुष्प सज्जा और चित्रकला
(4) इत्र निर्माण और प्रसाधन सामग्री तैयार करना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

32. एक व्यक्ति जो गहन बौद्धिक जांच के माध्यम से सार्वभौमिक वास्तविकता (ब्रह्म) के साथ अपनी आत्मा (आत्मन) की मौलिक एकता को अनुभव करके अंतिम मुक्ति चाहता है, वह मुख्य रूप से मोक्ष के किस मार्ग का अनुसरण कर रहा है?
(1) कर्म योग
(2) ज्ञान योग
(3) भक्ति योग
(4) हठ योग
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

33. मोक्ष के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. यह संसार, अर्थात् जन्म और मृत्यु के निरंतर चक्र से अंतिम मुक्ति का प्रतिनिधित्व करता है।
II. ज्ञान योग का मार्ग ज्ञान के स्थान पर अनन्य भक्ति और भावनात्मक समर्पण पर बल देता है।
III. चार्वाक दर्शन मोक्ष को सर्वोच्च और सबसे महत्वपूर्ण पुरुषार्थ मानता है।
IV. जीवन्मुक्ति आध्यात्मिक मुक्ति की उस अवस्था को संदर्भित करती है जो भौतिक शरीर में रहते हुए प्राप्त की जाती है।
V. विदेहमुक्ति देह त्याग के पश्चात प्राप्त मुक्ति को संदर्भित करती है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I और IV
(2) केवल II और III
(3) केवल III, IV और V
(4) केवल I, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

34. निम्नलिखित में से कौन-सा दार्शनिक संप्रदाय स्पष्ट रूप से मोक्ष के अस्तित्व को नकारता है, और तर्क देता है कि मृत्यु ही व्यक्ति का अंतिम अंत है?
(1) लोकायत/चार्वाक
(2) अद्वैत वेदांत
(3) न्याय दर्शन
(4) सांख्य संप्रदाय
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

35. मोक्ष के मार्गों के संबंध में निम्नलिखित सूचियों को पढ़िए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:

सूची I: (मोक्ष का मार्ग)
A. कर्म योग
B. ज्ञान योग
C. भक्ति योग
D. राज योग

सूची II: (मुख्य पद्धति)
i. ईश्वर के प्रति अनन्य प्रेम और समर्पण का विकास
ii. फल की आसक्ति के बिना कर्तव्य का पालन
iii. ध्यान प्रथाओं के माध्यम से मन और इंद्रियों का नियंत्रण
iv. सच्चे दार्शनिक ज्ञान और साक्षात्कार के माध्यम से मुक्ति का अनुसरण

कूट:
(1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(2) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

36. वेदांत दर्शन के संदर्भ में, एक व्यक्ति जो आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त कर लेता है और अज्ञान से मुक्त हो जाता है, फिर भी अपना शेष जैविक जीवन जीना जारी रखता है, उसे क्या कहा जाता है?
(1) विदेहमुक्त
(2) बद्धजीव
(3) मुमुक्षु
(4) जीवन्मुक्त
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

37. सोलह संस्कारों के पारंपरिक ढांचे में, जन्म-पूर्व अनुष्ठानों से शुरु होने वाले पहले चार संस्कारों का सही क्रम निम्नलिखित में से कौन-सा है?
(1) पुंसवन, गर्भाधान, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म
(2) गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म
(3) जातकर्म, गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन
(4) गर्भाधान, सीमन्तोन्नयन, पुंसवन, जातकर्म

(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

38. पारंपरिक स्मृति ग्रंथों के अनुसार, गर्भाधान से मृत्यु तक फैले प्रमुख संस्कारों की सामान्यतः स्वीकृत संख्या कितनी है?
(1) 12
(2) 16
(3) 24
(4) 40
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

39. उपनयन संस्कार के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह गुरु के सानिध्य में वेदों के अध्ययन के लिए बालक की औपचारिक दीक्षा का प्रतीक है।
II. पारंपरिक व्यवस्था में इसे प्रतीकात्मक रूप से व्यक्ति का दूसरा आध्यात्मिक जन्म (द्विज) माना जाता है।
III. यह ब्रह्मचर्य आश्रम के औपचारिक प्रारंभ का प्रतीक है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

40. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। दोनों कथनों को पढ़िए और सही उत्तर चुनिए:
अभिकथन (A): अन्त्येष्टि को एक हिंदू के जीवन का अंतिम संस्कार माना जाता है।
कारण (R): इसमें दाह संस्कार सम्मिलित होता है जहां भौतिक शरीर को अंतिम यज्ञ के रूप में पंचतत्वों को सौंप दिया जाता है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

41. निम्नलिखित में से संस्कार और उसके प्राथमिक उद्देश्य का कौन-सा जोड़ा सही सुमेलित है?
(1) विद्यारंभ - विवाह के समय किया जाने वाला अनुष्ठान
(2) चूड़ाकरण - शिशु को पहली बार ठोस आहार खिलाना
(3) नामकरण - नवजात शिशु के नामकरण का औपचारिक समारोह
(4) अन्नप्राशन - बच्चे के सिर के बाल मुंडवाने की रस्म
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

42. पारंपरिक भारतीय मूल्यों में, 'संस्कार' को सबसे अच्छी तरह से परिभाषित किया जा सकता है:
(1) व्यक्ति को आध्यात्मिक रूप से उन्नत करने हेतु एक शुद्धिकरण अनुष्ठान।
(2) राजा और मंदिर के पुजारियों के बीच एक वित्तीय लेनदेन।
(3) प्राचीन राजदरबारों में आयोजित दार्शनिक शास्त्रार्थ का एक रूप।
(4) मुक्ति की अंतिम अवस्था जहां सभी कर्म समाप्त हो जाते हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

43. शिक्षा की पारंपरिक गुरुकुल प्रणाली के संबंध में दिए गए कथनों को पढ़िए और सही उत्तर चुनिए:
कथन I: गुरुकुल आमतौर पर एक आवासीय शिक्षण प्रणाली थी जहाँ छात्र अपने परिवारों से दूर शिक्षक (गुरु) के साथ निवास करते थे।
कथन II: गुरुकुल प्रणाली विशेष रूप से केवल आधुनिक धर्मनिरपेक्ष विज्ञानों पर केंद्रित थी और दर्शन के शिक्षण को पूरी तरह प्रतिबंधित करती थी।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

44. गुरुकुल प्रणाली की विशेषताओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. शिक्षा मुख्य रूप से मौखिक परंपराओं (श्रुति और स्मृति) के माध्यम से प्रदान की जाती थी।
II. छात्रों से गुरु के लिए दैनिक घरेलू कार्य करने की अपेक्षा की जाती थी, जिससे विनम्रता को बढ़ावा मिलता था।
III. दक्षिणा वह स्वैच्छिक भेंट थी जो छात्र द्वारा अध्ययन पूर्ण होने पर गुरु को दी जाती थी।
IV. पाठ्यक्रम का उद्देश्य आध्यात्मिक (परा) और सांसारिक (अपरा) दोनों ज्ञान को एकीकृत करते हुए छात्र का समग्र विकास करना था।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और IV
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, II और III
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

45. एक प्राचीन गुरुकुल में एक छात्र उपनिषदों के साथ-साथ धनुर्विद्या (धनुर्वेद), गणित और प्रशासन का अध्ययन कर रहा है। यह पाठ्यक्रम गुरुकुल प्रणाली के किस मूल सिद्धांत को दर्शाता है?
(1) मोक्ष के पक्ष में सांसारिक ज्ञान का पूर्ण परित्याग।
(2) वर्ण-आधारित भेदभावपूर्ण प्रथाओं को शक्ति से लागू करना।
(3) आध्यात्मिक ज्ञान और भौतिक ज्ञान का समन्वय।
(4) छात्रों को विशेष रूप से केवल संन्यास आश्रम के लिए तैयार करना।

Click Here to Buy book on Amazon

(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

46. गुरुकुल शब्दावली के संबंध में निम्नलिखित सूचियों को पढ़िए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:

सूची I: (गुरुकुल शब्दावली)

A. गुरु
B. ब्रह्मचारी
C. गुरु दक्षिणा
D. समावर्तन

सूची II: (अर्थ)

i. औपचारिक शिक्षा की समाप्ति का प्रतीक दीक्षांत समारोह
ii. ब्रह्मचर्य और अध्ययन का जीवन जीने वाला छात्र
iii. आध्यात्मिक शिक्षक जो अज्ञान के अंधकार को दूर करता है
iv. अध्ययन पूर्ण होने पर शिक्षक को अर्पित की गई कृतज्ञता की भेंट

कूट:

(1) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(2) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(3) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

47. निम्नलिखित में से कौन प्राचीन गुरुकुल प्रणाली की विशेषता नहीं थी?

(1) मूल्यांकन के लिए मुद्रित प्रश्न पत्रों का उपयोग करके मानकीकृत लिखित परीक्षाएं
(2) गुरु द्वारा अनुभवात्मक और निरंतर मूल्यांकन
(3) उच्च नैतिक चरित्र और अनुशासन का विकास
(4) कम छात्र-शिक्षक अनुपात के कारण व्यक्तिगत ध्यान
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

48. शास्त्रीय भारतीय दर्शन में, छह संप्रदायों (षड् दर्शन) को सामूहिक रूप से 'आस्तिक' के रूप में वर्गीकृत किया गया है। इस संदर्भ में किसी संप्रदाय को 'आस्तिक' माने जाने का प्राथमिक मानदंड क्या है?

(1) एक व्यक्तिगत, सृष्टिकर्ता ईश्वर में विश्वास।
(2) वेदों के सर्वोच्च प्रामाण्य को स्वीकार करना।
(3) कर्म और पुनर्जन्म की अवधारणा का परित्याग।
(4) यह विश्वास कि भौतिक जगत ही एकमात्र वास्तविकता है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

49. भारतीय दर्शन के छह संप्रदायों (षड् दर्शन) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. न्याय तर्क और ज्ञानमीमांसा पर बल देता है।
II. वैशेषिक अपने बहुलवादी यथार्थवाद और परमाणु सिद्धांत के लिए प्रसिद्ध है।
III. सांख्य पुरुष और प्रकृति का द्वैतवादी दर्शन प्रस्तुत करता है।
IV. मीमांसा मुख्य रूप से वैदिक अनुष्ठानों और कर्तव्यों की व्याख्या पर केंद्रित है।
V. वेदांत ब्रह्म की प्रकृति की खोज करता है जैसा कि उपनिषदों में प्रस्तुत किया गया है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(1) केवल I, II, III और V
(2) केवल I, III, IV और V
(3) केवल II, III, IV और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

50. संस्कृत शब्द 'दर्शन' का शाब्दिक अर्थ है:

(1) दृष्टि या सत्य का प्रत्यक्ष साक्षात्कार
(2) धार्मिक सिद्धांतों में अंधविश्वास
(3) शारीरिक तपस्या और प्रायश्चित
(4) देवताओं के लिए अनुष्ठानिक यज्ञ
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

51. सांख्य दर्शन के अनुसार ब्रह्मांडीय विकास के सही क्रम में निम्नलिखित आध्यात्मिक सत्ताओं को व्यवस्थित कीजिए:

I. अहंकार
II. प्रकृति (आदिम मूल तत्व)
III. महत्/बुद्धि
IV. मनस (मन)

(1) II, III, I, IV
(2) II, I, III, IV
(3) III, II, IV, I
(4) I, II, III, IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

52. पारंपरिक आस्तिक/नास्तिक वर्गीकरण के आधार पर दर्शन के निम्नलिखित संप्रदायों में से बेमेल की पहचान कीजिए:

(1) न्याय
(2) सांख्य
(3) मीमांसा
(4) चार्वाक
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

53. भारतीय दर्शन का कौन-सा संप्रदाय मुख्य रूप से तर्कशास्त्र (तर्क-शास्त्र) के रूप में जाना जाता है और वैध ज्ञान प्राप्त करने के लिए तर्क की एक जटिल प्रणाली की रूपरेखा तैयार करता है?

(1) योग
(2) वेदांत
(3) न्याय
(4) वैशेषिक
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

54. न्याय प्रमाणों के संबंध में निम्नलिखित सूचियों को पढ़िए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:

सूची I: (न्याय प्रमाण)
A. प्रत्यक्ष
B. अनुमान
C. उपमान
D. शब्द
सूची II: (अर्थ)
i. विश्वसनीय अधिकारी का मौखिक साक्ष्य
ii. प्रत्यक्ष संवेदी बोध
iii. पूर्व प्रत्यक्ष पर आधारित निष्कर्ष
iv. तुलना या सादृश्य
कूट:
(1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(2) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(3) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(4) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

55. वैशेषिक दर्शन संप्रदाय निम्नलिखित में से किस सिद्धांत को प्रतिपादित करने के लिए सर्वाधिक जाना जाता है?
(1) संसार की मायावी प्रकृति।
(2) ध्यान का अष्टांग मार्ग।
(3) आत्मा का पूर्ण अद्वैतवाद।
(4) पदार्थ का परमाणु सिद्धांत और वास्तविकता की श्रेणियां।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

56. न्याय और वैशेषिक दर्शन के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. दोनों संप्रदायों को नास्तिक दर्शन के रूप में वर्गीकृत किया गया है क्योंकि वे तर्क पर निर्भर हैं।
II. वैशेषिक केवल प्रत्यक्ष और अनुमान को ही ज्ञान के वैध स्रोतों के रूप में स्वीकार करता है।
III. न्याय चार प्रमाणों को स्वीकार करता है: प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I
(2) केवल II
(3) केवल I और III
(4) केवल II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

57. वैशेषिक दर्शन के अनुसार, परमाणुओं की वह प्रारंभिक गति जो ब्रह्मांड के निर्माण की ओर ले जाती है, एक अदृश्य नैतिक शक्ति के कारण होती है। इस कारण-प्रभाव सिद्धांत के लिए प्रयुक्त शब्द क्या है?
(1) माया
(2) सत्त्व
(3) अदृष्ट
(4) पुरुष
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

58. निम्नलिखित में से किस अवधारणा को न्याय-वैशेषिक संप्रदायों द्वारा स्पष्ट रूप से अस्वीकार किया गया है?
(1) यह सिद्धांत कि भौतिक जगत केवल मन का एक प्रक्षेपण है।
(2) पूरे ब्रह्मांड के निर्माण खंड के रूप में परमाणुओं का अस्तित्व।
(3) ब्रह्मांड के कुशल कारण के रूप में ईश्वर का अस्तित्व।
(4) सभी सांसारिक दुखों से मुक्ति की अवधारणा।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

59. सांख्य दर्शन के संबंध में दिए गए कथनों को पढ़िए और सही उत्तर चुनिए:
कथन I: सांख्य एक द्वैतवादी दर्शन है जो दो परम शाश्वत सत्ताओं को स्वीकार करता है: पुरुष (शुद्ध चेतना) और प्रकृति (पदार्थ)।
कथन II: सांख्य के अनुसार, पुरुष सक्रिय है और निरंतर रुपांतरण से गुजरता है, जबकि प्रकृति निष्क्रिय पर्यवेक्षक है।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

60. सांख्य दर्शन के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह दावा करता है कि प्रकृति तीन गुणों: सत्त्व, रजस और तमस से निर्मित है।
II. प्रकृति को शुद्ध, अनासक्त चेतना के रूप में वर्णित किया गया है जो भौतिक गुणों से रहित है।
III. ब्रह्मांड का विकास तब प्रारंभ होता है जब तीनों गुणों का साम्यावस्था भंग हो जाती है।
IV. शास्त्रीय सांख्य गुणों के अंतिम सृष्टिकर्ता और नियंत्रक के रूप में ईश्वर पर निर्भर है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I और III
(2) केवल II और IV
(3) केवल I, II और IV
(4) केवल III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

61. निम्नलिखित में से किस प्राचीन ऋषि को पारंपरिक रुप से योग दर्शन को 'योग सूत्र' नामक ग्रंथ में व्यवस्थित करने का श्रेय दिया जाता है?
(1) कपिल
(2) जैमिनी
(3) पतंजलि
(4) बादरायण
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

62. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। दोनों कथनों को पढ़िए और सही उत्तर चुनिए:

Downloaded from www.pdf.tube

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs,
you are wasting valuable time.

Research shows that learning from
PRINTED BOOKS has up to
4× HIGHER RETENTION
than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS**
move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND**
in competition.

In competitive exams,
being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

अभिकथन (A): योग दर्शन का प्राथमिक लक्ष्य चित्त की वृत्तियों का निरोध है।
कारण (R): मन को शांत करके, व्यक्तिगत चेतना (पुरुष) अपने वास्तविक मुक्त स्वरुप में स्थित हो जाती है, जो प्रकृति के बंधनों से परे है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

63. सत्य, अहिंसा और अस्तेय का अभ्यास करने वाला व्यक्ति पतंजलि के अष्टांग योग के किस विशिष्ट अंग का पालन कर रहा है?
(1) यम
(2) आसन
(3) नियम
(4) प्राणायाम
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

64. दार्शनिक संप्रदायों और उनके आधारभूत ऋषियों के निम्नलिखित युग्मों में से कौन-सा सही सुमेलित है?
(1) उत्तर मीमांसा (वेदांत) - गौतम
(2) पूर्व मीमांसा - जैमिनी
(3) न्याय - कणाद
(4) वैशेषिक - कपिल
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

65. वेदांत और उसके उप-संप्रदायों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. आदि शंकराचार्य द्वारा प्रतिपादित अद्वैत वेदांत, पूर्ण अद्वैतवाद की वकालत करता है।
II. रामानुज का विशिष्टाद्वैत दावा करता है कि जगत एक पूर्ण भ्रम है और व्यक्तिगत आत्माओं का पृथक अस्तित्व नहीं है।
III. मध्वाचार्य का द्वैत वेदांत व्यक्तिगत आत्मा और ब्रह्म के बीच शाश्वत भेद का दावा करता है।
IV. वेदांत के विपरीत, पूर्व मीमांसा वेदों के ज्ञान-काण्ड पर विशेष ध्यान केंद्रित करता है।
V. ब्रह्म सूत्र सभी प्रमुख वेदांत संप्रदायों के लिए आधारभूत ग्रंथों (प्रस्थानत्रयी) में से एक है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I और V
(2) केवल II और IV
(3) केवल III और V
(4) केवल I, III और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

66. पूर्व मीमांसा संप्रदाय मुख्य रूप से वैदिक ग्रंथों के किस पहलू से संबंधित है?
(1) वैदिक विधियों की व्याख्या और अनुष्ठानों की कार्यप्रणाली।
(2) उपनिषदों (ज्ञान-काण्ड) में पाए जाने वाले दार्शनिक विचार।
(3) प्राचीन आरण्यकों में वर्णित योगिक श्वसन अभ्यास।
(4) वैदिक संस्कृत भाषा की व्याकरणिक संरचना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

67. वेदांत दार्शनिकों के संबंध में निम्नलिखित सूचियों को पढ़िए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (वेदांत दार्शनिक)
A. शंकराचार्य
B. रामानुजाचार्य
C. मध्वाचार्य
D. निम्बार्काचार्य
सूची II: (दार्शनिक उप-संप्रदाय)
i. द्वैत
ii. अद्वैत
iii. द्वैताद्वैत
iv. विशिष्टाद्वैत
कूट:
(1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(4) A-i, B-iv, C-iii, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

68. तीन शास्त्रीय ग्रंथों का कौन-सा समूह वेदांत दर्शन के आधारभूत त्रय 'प्रस्थानत्रयी' का निर्माण करता है?
(1) ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद
(2) रामायण, महाभारत, पुराण
(3) न्याय सूत्र, योग सूत्र, सांख्य कारिका
(4) उपनिषद, ब्रह्म सूत्र, भगवद गीता
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

69. निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प चेतना की उन चार अवस्थाओं को दर्शाता है जिनका विश्लेषण वेदांत में किया जाता है?
(1) जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरीय
(2) सत्त्व, रजस, तमस, निर्गुण
(3) संचित, आगामी, प्रारब्ध, क्रियमाण
(4) अर्थ, काम, धर्म, मोक्ष
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

70. लोकायत/चार्वाक दर्शन के संबंध में दिए गए कथनों को पढ़िए और सही उत्तर चुनिए:
कथन I: चार्वाक एक भौतिकवादी दर्शन है जो प्रत्यक्ष प्रमाण को ज्ञान का एकमात्र वैध स्रोत स्वीकार करता है।
कथन II: चार्वाक ईश्वर के अस्तित्व और परलोक को सिद्ध करने के लिए अनुमान प्रमाण को स्वीकार करता है।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।

लिए वर्जित मानना और केवल कामुकता से जोड़ना शास्त्रीय दृष्टिकोण से सर्वथा त्रुटिपूर्ण है।

31. (1) छल-कपट के माध्यम से धन संचय करना
पारंपरिक चौसठ कलाओं में गायन, वादन, चित्रकला और शिल्प जैसे रचनात्मक कार्यों को सम्मिलित किया गया है। ये कलाएं व्यक्ति की संवेदनाओं को परिष्कृत करती हैं और उसे एक सभ्य समाज का अंग बनाती हैं। छल-कपट या वंचना के माध्यम से धन प्राप्त करना पूर्णतः अनैतिक और अधर्म की श्रेणी में आता है। इसे किसी भी रूप में सुसंस्कृत जीवन की वैध अभिव्यक्ति नहीं माना जा सकता। काम का वास्तविक उद्देश्य सौंदर्य और आनंद का प्रसार करना है।

32. (2) ज्ञान योग
ज्ञान योग एक आध्यात्मिक मार्ग है जो विवेक और दार्शनिक चिंतन पर आधारित है। इसमें साधक यह समझने का प्रयत्न करता है कि उसकी व्यक्तिगत आत्मा और ब्रह्मांडीय वास्तविकता एक ही हैं। 'अहं ब्रह्मास्मि' जैसे महावाक्यों का साक्षात्कार करके अज्ञान का नाश किया जाता है। यह मार्ग उन लोगों के लिए है जो तर्क और गहन चिंतन के माध्यम से सत्य तक पहुँचना चाहते हैं। अज्ञान के हटने से बंधन समाप्त होकर शाश्वत मुक्ति का अनुभव होता है।

33. (2) केवल II और III
मोक्ष जन्म-मृत्यु के चक्र से अंतिम मुक्ति का नाम है। भक्ति योग ज्ञान के स्थान पर ईश्वर के प्रति अनन्य प्रेम और पूर्ण समर्पण पर केंद्रित है, जबकि ज्ञान योग विवेक पर बल देता है। चार्वाक दर्शन भौतिकवादी है, अतः वह मोक्ष और आत्मा के अस्तित्व को पूरी तरह नकारता है। जीवन्मुक्ति जीवित रहते हुए प्राप्त होने वाली मुक्ति है और विदेहमुक्ति देह त्याग के उपरांत की स्थिति है। अतः भक्ति और चार्वाक के विषय में दिए गए विचार असंगत हैं।

34. (1) लोकायत/चार्वाक
चार्वाक या लोकायत दर्शन पूर्णतः भौतिकवादी है और यह केवल उन्हीं वस्तुओं को सत्य मानता है जिन्हें प्रत्यक्ष अनुभव किया जा सके। इसके अनुसार मृत्यु ही जीवन का अंतिम छोर है और इसके पश्चात न कोई आत्मा शेष रहती है, न स्वर्ग और न ही मोक्ष की प्राप्ति होती है। यह संप्रदाय पुनर्जन्म के सिद्धांत को भी पूर्णतः अस्वीकार करता है। उनके लिए वर्तमान जीवन का आनंद ही एकमात्र उद्देश्य है। यह विचारधारा अन्य सभी भारतीय दर्शनों से भिन्न है।

35. (1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
कर्म योग फल की इच्छा किए बिना कर्तव्य निर्वहन का मार्ग है। ज्ञान योग दार्शनिक विवेक और आध्यात्मिक ज्ञान के माध्यम से मुक्ति की बात करता है। भक्ति योग का आधार ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण है। राज योग ध्यान और अनुशासन के माध्यम से मन पर नियंत्रण पाने का मार्ग है। ये चारों मार्ग विभिन्न प्रवृत्तियों के मनुष्यों के लिए बनाए गए हैं ताकि वे अपनी रुचि के अनुसार मोक्ष के परम लक्ष्य की ओर बढ़ सकें।

36. (4) जीवन्मुक्त
वेदांत दर्शन में जीवन्मुक्त उस व्यक्ति को कहा जाता है जिसने अज्ञान मिटाकर आत्म-ज्ञान प्राप्त कर लिया है और जिसे जीवित रहते ही मुक्ति मिल चुकी है। यद्यपि उसका भौतिक शरीर विद्यमान रहता है, किंतु वह कर्मफल या सुख-दुखों से विचलित नहीं होता। वह अपने शेष जीवन को केवल प्रारब्ध कर्मों के क्षय के लिए व्यतीत करता है। उसकी चेतना सदैव ब्रह्म में स्थित रहती है और वह लोक कल्याण हेतु एक आदर्श जीवन जीता है।

37. (2) गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म
पारंपरिक संस्कारों में गर्भाधान प्रथम संस्कार है जो संतान प्राप्ति के संकल्प के साथ किया जाता है। इसके पश्चात पुंसवन संस्कार गर्भस्थ शिशु के स्वास्थ्य हेतु होता है। तृतीय सीमन्तोन्नयन संस्कार माता के मानसिक स्वास्थ्य और बच्चे के मानसिक विकास के लिए किया जाता है। जन्म के समय जातकर्म संस्कार होता है, जिसमें शिशु का स्वागत किया जाता है। यह वैज्ञानिक क्रम शिशु के विकास के विभिन्न चरणों में उसके कल्याण को सुनिश्चित करने हेतु निर्धारित है।

38. (2) 16
भारतीय स्मृति ग्रंथों में मनुष्य के जीवन को शुद्ध और परिष्कृत करने हेतु सोलह संस्कारों का विधान है, जिन्हें 'षोडश संस्कार' कहा जाता है। ये संस्कार जन्म पूर्व गर्भाधान से प्रारंभ होकर मृत्यु के पश्चात अंत्येष्टि तक चलते हैं। प्रत्येक संस्कार का विशिष्ट समय और उद्देश्य होता है, जो व्यक्ति को उसके सामाजिक और आध्यात्मिक विकास में सहायता करता है। ये अनुष्ठान व्यक्ति के चरित्र निर्माण और दायित्वों को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से निर्मित किए गए हैं।

39. (4) I, II और III
उपनयन संस्कार बालक के शैक्षिक जीवन की औपचारिक शुरुआत है। इसे धारण करने के बाद बालक का दूसरा जन्म माना जाता है, जिससे वह 'द्विज' की श्रेणी में आता है। यह संस्कार उसे ब्रह्मचर्य आश्रम के नियमों का पालन करने और वेदों का अध्ययन करने के योग्य बनाता है। यह गुरु और शिष्य के बीच पवित्र संबंध की स्थापना करता है।

40. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
अंत्येष्टि संस्कार हिंदू धर्म में जीवन का अंतिम संस्कार है, जो मृत्यु के पश्चात किया जाता है। इसमें मृत शरीर का दाह संस्कार किया जाता है, जिसे 'अंतिम यज्ञ' माना गया है। इस प्रक्रिया में भौतिक देह को उन पांच मूल तत्वों—पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश—में विलीन कर दिया जाता है जिनसे वह निर्मित थी। यह संस्कार आत्मा की शांति और उसे सांसारिक बंधनों से मुक्त करने की कामना के साथ गरिमापूर्ण ढंग से संपन्न किया जाता है।

41. (3) नामकरण - नवजात शिशु के नामकरण का औपचारिक समारोह
नामकरण संस्कार शिशु के जन्म के पश्चात उसे एक विशिष्ट पहचान देने हेतु किया जाने वाला समारोह है। विद्यारंभ शिक्षा

Click Here to Buy book on Amazon

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) पुरुष सूक्त
ऋग्वेद के दसवें मंडल में वर्णित 'पुरुष सूक्त' प्राचीन भारतीय वर्ण व्यवस्था का मूल वैचारिक स्रोत है। इस सूक्त में एक विराट पुरुष के प्रतीकात्मक यज्ञ का वर्णन है, जिससे संपूर्ण ब्रह्मांड की उत्पत्ति हुई। इसी संदर्भ में चारों वर्णों—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र—की उत्पत्ति उस विराट पुरुष के विभिन्न अंगों से बताई गई है। यह सूक्त सामाजिक संरचना को एक व्यापक ब्रह्मांडीय व्यवस्था के साथ जोड़ता है।

2. (4) I, II और III
प्राचीन भारत की वर्ण व्यवस्था प्रारंभ में गुण और कर्म के आधार पर श्रम विभाजन पर आधारित थी। इसका मुख्य उद्देश्य समाज में स्थिरता और कुशलता सुनिश्चित करना था। यह व्यवस्था लचीली थी और योग्यता को महत्व देती थी। उत्तर वैदिक काल में यह जन्म आधारित और कठोर हो गई, जिससे कालांतर में जटिल जाति व्यवस्था का उदय हुआ। ये कथन सामाजिक इतिहास के क्रमिक विकास को दर्शाते हैं।

3. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
भगवद गीता के अनुसार वर्णों का सृजन जन्म के स्थान पर व्यक्ति के स्वाभाविक गुणों और कर्मों के आधार पर हुआ है। यह सिद्धांत सामाजिक गतिशीलता और व्यक्तिगत योग्यता को प्राथमिकता देता है। इसके विपरीत, अस्पृश्यता की अवधारणा ऋग्वैदिक काल की मूलभूत विशेषता नहीं थी, बल्कि यह सामाजिक जटिलताओं के बढ़ने के साथ बाद में विकसित हुई। शास्त्र केवल गुण-आधारित वर्ण विभाजन का समर्थन करते हैं, न कि अस्पृश्यता का।

4. (4) चांडाल
पारंपरिक भारतीय सामाजिक व्यवस्था में केवल चार वर्णों—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र को मान्यता प्राप्त थी। ये समूह समाज के बौद्धिक, प्रशासनिक, आर्थिक और सेवा संबंधी कार्यों का निर्वहन करते थे। चांडालों को ऐतिहासिक रूप से इन चार वर्णों की श्रेणी से पृथक रखा गया था और उन्हें 'अवर्ण' माना जाता था। वे वैदिक शास्त्रों में वर्णित मूल सामाजिक ढांचे का हिस्सा नहीं थे, बल्कि समाज के हाशिए पर स्थित थे।

5. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
प्राचीन सामाजिक ढांचे में ब्राह्मणों का प्राथमिक कर्तव्य अध्ययन, अध्यापन और यज्ञ करना था। क्षत्रियों को समाज की रक्षा और प्रशासन के लिए उत्तरदायी माना गया था। वैश्यों का मुख्य कार्य कृषि, पशुपालन और व्यापार के माध्यम से आर्थिक समृद्धि सुनिश्चित करना था। शूद्रों का कर्तव्य अन्य तीन वर्णों की सेवा करना निर्धारित था। कर्तव्यों का यह विभाजन समाज के सुचारु संचालन के लिए किया गया था, जहाँ प्रत्येक की विशिष्ट भूमिका थी।

6. (2) III, IV, I, II
भारतीय आश्रम व्यवस्था मानव जीवन को चार क्रमिक चरणों में विभाजित करती है। प्रथम चरण 'ब्रह्मचर्य' शिक्षा के लिए समर्पित है। द्वितीय 'गृहस्थ' आश्रम में सामाजिक और पारिवारिक उत्तरदायित्वों का निर्वहन होता है। तृतीय 'वानप्रस्थ' में व्यक्ति सांसारिक मोह त्यागकर आध्यात्मिक चिंतन की ओर बढ़ता है। अंतिम चरण 'संन्यास' पूर्ण त्याग और मोक्ष प्राप्ति के लिए निर्धारित है। यह व्यवस्था व्यक्ति के सर्वांगीण विकास और सामाजिक संतुलन को सुनिश्चित करती है।

7. (4) ब्रह्मचर्य
'उपनयन' संस्कार व्यक्ति के जीवन में औपचारिक शिक्षा के प्रारंभ का प्रतीक है। इस संस्कार के माध्यम से बालक गुरु के सान्निध्य में 'ब्रह्मचर्य' आश्रम में प्रवेश करता है। इसे व्यक्ति का दूसरा आध्यात्मिक जन्म माना जाता है, इसलिए उसे 'द्विज' कहा जाता है। इस चरण में अनुशासन, वेदों का अध्ययन और इंद्रिय संयम पर बल दिया जाता है। यह संस्कार व्यक्ति को समाज के जिम्मेदार और ज्ञानवान सदस्य के रूप में विकसित करता है।

8. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
गृहस्थ आश्रम को सभी आश्रमों में श्रेष्ठ माना गया है क्योंकि यह अन्य तीनों आश्रमों—ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और संन्यास—का पोषक है। गृहस्थ ही अपने श्रम और संसाधनों से विद्यार्थियों, वानप्रस्थियों और संन्यासियों को भोजन, वस्त्र और आश्रय प्रदान करता है। समाज की निरंतरता और आर्थिक स्थिरता सुनिश्चित करने में गृहस्थ की भूमिका अपरिहार्य है। बिना गृहस्थ के सहयोग के अन्य आश्रमों का अस्तित्व और उनके आध्यात्मिक लक्ष्यों की प्राप्ति संभव नहीं है।

9. (3) आध्यात्मिक चिंतन और सांसारिक बंधनों से धीरे-धीरे अलग होने का एक संक्रमणकालीन चरण।
वानप्रस्थ आश्रम गृहस्थ के सक्रिय जीवन और संन्यास के पूर्ण त्याग के बीच एक सेतु है। इस अवस्था में व्यक्ति पारिवारिक जिम्मेदारियों को अगली पीढ़ी को सौंपकर मानसिक रूप से विरक्त होने का अभ्यास करता है। इसका मुख्य उद्देश्य आत्म-निरीक्षण, ध्यान और ईश्वर की भक्ति करना है। यह चरण व्यक्ति को भौतिक इच्छाओं से मुक्त कर आध्यात्मिक स्वतंत्रता की ओर ले जाता है, जिससे अंततः संन्यास ग्रहण करने की आंतरिक तैयारी पूर्ण होती है।

10. (1) मोक्ष, या जन्म और मृत्यु के चक्र से पूर्ण मुक्ति।
संन्यास आश्रम का परम लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति है, जिसे भारतीय दर्शन में मानव जीवन का सर्वोच्च उद्देश्य माना गया है। इस अवस्था में संन्यासी समस्त सांसारिक पहचानों, इच्छाओं और संपत्ति का त्याग कर देता है। वह निरंतर सत्य की खोज और आत्म-साक्षात्कार में लीन रहता है। अज्ञान का नाश होने और

Downloaded from www.pdf.tube

ब्रह्म के साथ एकात्मता अनुभव करने पर वह पुनर्जन्म के चक्र से मुक्त हो जाता है। यह अवस्था शाश्वत शांति का प्रतिनिधित्व करती है।

11. (3) केवल I, III और IV
पुरुषार्थ मानव जीवन के चार मुख्य लक्ष्यों को परिभाषित करते हैं। धर्म नैतिक आधार प्रदान करता है, जबकि काम मानवीय इच्छाओं और सौंदर्यपरक सुखों की संतुष्टि का प्रतिनिधित्व करता है। मोक्ष को जीवन का अंतिम लक्ष्य माना गया है जो सांसारिक बंधनों से मुक्ति दिलाता है। अर्थ का तात्पर्य केवल राजनीतिक शक्ति नहीं, बल्कि भौतिक समृद्धि और धन का अर्जन है, जो समाज संचालन के लिए आवश्यक है। ये लक्ष्य संतुलित जीवन का मार्ग बताते हैं।

12. (2) मानव जीवन को अर्थ और दिशा प्रदान करने वाले चार मूलभूत उद्देश्य।
पुरुषार्थ की अवधारणा भारतीय दर्शन का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है जो मानव जीवन को उद्देश्यपूर्ण बनाती है। इसके अंतर्गत धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को चार अनिवार्य लक्ष्यों के रूप में स्वीकार किया गया है। ये लक्ष्य सुनिश्चित करते हैं कि मनुष्य अपनी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए भी नैतिक मूल्यों से विचलित न हो। यह ढांचा व्यक्ति को समाज के प्रति उत्तरदायी बनाने के साथ आध्यात्मिक पूर्णता और अंतिम मुक्ति की ओर अग्रसर करता है।

13. (1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
धर्म का मुख्य विषय नैतिक आचरण और कर्तव्य पालन है। अर्थ का संबंध भौतिक समृद्धि और सांसारिक सफलता प्राप्त करने से है। काम मानवीय इच्छाओं, सौंदर्य की सराहना और भावनात्मक सुखों की पूर्ति को दर्शाता है। मोक्ष आध्यात्मिक मुक्ति और आत्मा के वास्तविक स्वरूप के साक्षात्कार का लक्ष्य है। ये चार पुरुषार्थ मिलकर व्यक्ति के सर्वांगीण विकास का मार्ग प्रशस्त करते हैं, जहाँ भौतिक प्रगति और आध्यात्मिक शांति के बीच एक सुदृढ़ संतुलन स्थापित रहता है।

14. (4) एक संतुलित और समग्र जीवन को बढ़ावा देने के लिए जहां आवश्यकताओं की पूर्ति नैतिक रूप से हो।
भारतीय दर्शन धर्म, अर्थ और काम के एकीकृत अनुसरण पर बल देता है ताकि जीवन में असंतुलन न आए। 'त्रिवर्ग' का यह सिद्धांत सिखाता है कि धन का अर्जन और इच्छाओं की पूर्ति सदैव धर्म के दायरे में होनी चाहिए। यदि अर्थ और काम का अनुसरण नैतिकता के बिना किया जाए, तो वह समाज में अराजकता और व्यक्तिगत पतन का कारण बनता है। यह समग्र दृष्टिकोण मनुष्य को शारीरिक, मानसिक और नैतिक रूप से परिपक्व बनाता है।

15. (1) मोक्ष
धर्म, अर्थ और काम को सामूहिक रूप से 'त्रिवर्ग' कहा जाता है क्योंकि ये मुख्य रूप से संसार में रहते हुए सामाजिक और भौतिक जीवन से संबंधित हैं। इसके विपरीत, मोक्ष को 'अपवर्ग' या परम पुरुषार्थ माना जाता है, क्योंकि यह सांसारिक जगत से परे और आध्यात्मिक मुक्ति का प्रतीक है। त्रिवर्ग के लक्ष्यों की प्राप्ति जीवन के व्यावहारिक चरणों में की जाती है, जबकि मोक्ष अंतिम लक्ष्य है जो जन्म-मृत्यु के चक्र को समाप्त करता है।

16. (2) मोक्ष - भरत मुनि कृत नाट्यशास्त्र
कौटिल्य का अर्थशास्त्र राज्य संचालन के सिद्धांतों का मुख्य ग्रंथ है। मनुस्मृति धर्म और सामाजिक नियमों की व्याख्या करती है, जबकि वात्स्यायन का कामसूत्र सौंदर्यशास्त्र और काम पर आधारित है। भरत मुनि का नाट्यशास्त्र कला, नृत्य और नाटक का शास्त्रीय ग्रंथ है, इसका प्राथमिक विषय मोक्ष नहीं है। मोक्ष की विस्तृत चर्चा उपनिषदों और भगवद गीता जैसे आध्यात्मिक ग्रंथों में मिलती है। अतः नाट्यशास्त्र और मोक्ष का मेल पारंपरिक वर्गीकरण के अनुसार त्रुटिपूर्ण है।

17. (2) केवल I, II, III और IV
धर्म शब्द 'धृ' धातु से उत्पन्न है, जिसका अर्थ धारण करना है। इसमें सार्वभौमिक नैतिक गुण और व्यक्तिगत कर्तव्य दोनों समाहित हैं। संकट के समय मर्यादाओं में परिवर्तन 'आपद धर्म' कहलाता है। यह धारणा त्रुटिपूर्ण है कि धर्म पूर्णतः स्थिर है; वास्तव में यह समय और परिस्थिति के अनुसार अनुकूलित होता है, जिसे 'युग धर्म' कहा जाता है। यह परिवर्तनशीलता धर्म को प्रासंगिक और जीवंत बनाए रखती है, जिससे सामाजिक और ब्रह्मांडीय व्यवस्था बनी रहती है।

NODIA

18. (1) वह अंतर्निहित नियम या ब्रह्मांडीय व्यवस्था जो ब्रह्मांड और समाज को बनाए रखती है।
शास्त्रीय भारतीय दर्शन में 'धर्म' केवल पूजा पद्धति नहीं, बल्कि वह व्यापक नैतिक नियम है जो अस्तित्व को संतुलित करता है। यह ब्रह्मांडीय व्यवस्था 'ऋत' का सामाजिक स्तर पर प्रतिबिंब है। धर्म व्यक्ति को उसके कर्तव्यों के प्रति जागरूक करता है और समाज में न्याय व सद्भाव स्थापित करने का आधार प्रदान करता है। यह एक ऐसा मार्गदर्शक सिद्धांत है जो मनुष्य को उचित और अनुचित के बीच भेद करने की क्षमता प्रदान करता है।

19. (3) स्वधर्म
स्वधर्म का अर्थ है व्यक्ति की अपनी प्रकृति, योग्यता और विशिष्ट व्यवसाय द्वारा निर्धारित कर्तव्य। जब एक चिकित्सक आपदा की स्थिति में निस्वार्थ भाव से रोगियों की सेवा करता है, तो वह वास्तव में अपने स्वधर्म का पालन कर रहा होता है। यह कर्तव्य उसके व्यावसायिक उत्तरदायित्वों और नैतिक मूल्यों का मिश्रण है। स्वधर्म पर अडिग रहना व्यक्ति के चरित्र को शुद्ध करता है और सामाजिक कल्याण में योगदान देता है। यह व्यक्तिगत निष्ठा का सर्वोत्तम उदाहरण है।

20. (1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
युग धर्म का संबंध समय की बदलती परिस्थितियों के अनुसार निर्धारित कर्तव्यों से है। साधारण धर्म उन सार्वभौमिक मूल्यों जैसे सत्य और अहिंसा को दर्शाता है जो सभी के लिए अनिवार्य हैं। आश्रम धर्म जीवन के विभिन्न चरणों के अनुसार विशिष्ट नियमों का निर्धारण करता है। स्वधर्म प्रत्येक व्यक्ति का अपना अनूठा कर्तव्य है जो उसकी आंतरिक प्रकृति पर आधारित होता

है। ये विभिन्न रूप मिलकर धर्म के एक व्यापक और गतिशील स्वरूप का निर्माण करते हैं।

21. (4) अधर्म (अधर्म या नियम का उल्लंघन)
राजधर्म राजा के शासन संबंधी कर्तव्यों को और दानधर्म परोपकार के नैतिक महत्व को स्पष्ट करते हैं। ये सभी धर्म के विभिन्न सकारात्मक स्वरूप हैं जो समाज को संगठित करते हैं। अधर्म, धर्म का विलोम है, जिसका अर्थ है नैतिकता का त्याग और नियमों का उल्लंघन। अधर्म को कभी भी धर्म की अभिव्यक्ति के रूप में वर्गीकृत नहीं किया जा सकता, क्योंकि यह समाज में अव्यवस्था और पतन का कारण बनता है। अतः अधर्म धार्मिक आचरण का भाग नहीं है।

22. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
अर्थ का अर्थ केवल धन संचय नहीं, बल्कि भौतिक संसाधनों का अर्जन और आर्थिक स्थिरता है। भारतीय दर्शन धन को अनैतिक नहीं मानता, बल्कि इसे जीवन जीने के लिए आवश्यक साधन स्वीकार करता है। उचित तरीके से अर्जित धन व्यक्ति को अपने धार्मिक कर्तव्यों को पूर्ण करने और परिवार का पालन करने में सक्षम बनाता है। केवल अनैतिक साधनों से प्राप्त धन की निंदा की गई है। अतः अर्थ को एक वैध और अनिवार्य पुरुषार्थ माना गया है।

23. (1) केवल I और II
कौटिल्य के सप्तांग सिद्धांत के अनुसार राज्य के सात महत्वपूर्ण अंग हैं, जिनमें राजा और उसके अमात्य केंद्र में होते हैं। अन्य अंगों में जनपद, दुर्ग, कोश, दंड और मित्र सम्मिलित हैं। कौटिल्य ने माना है कि राज्य की सुरक्षा और समृद्धि के लिए कुशल विदेश नीति और गुप्तचरी तंत्र अत्यंत आवश्यक हैं। इन्हें अर्थ के संरक्षण के लिए अप्रासंगिक मानना त्रुटिपूर्ण है। यह सिद्धांत प्राचीन भारतीय राजनीति में राज्य की शक्ति और स्थिरता का आधार प्रदान करता है।

24. (1) चाणक्य (कौटिल्य)
चाणक्य, जिन्हें कौटिल्य और विष्णुगुप्त भी कहा जाता है, ने 'अर्थशास्त्र' नामक ग्रंथ की रचना की। उन्होंने शासनकला, कूटनीति, प्रशासन और अर्थशास्त्र के जटिल सिद्धांतों को एक व्यवस्थित रूप प्रदान किया। उनके कार्यों ने प्राचीन भारत में एक शक्तिशाली साम्राज्य की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कौटिल्य के सिद्धांत आज भी शासन और प्रबंधन के क्षेत्र में प्रासंगिक हैं। उन्होंने अर्थ के सफल अर्जन और वितरण को राज्य का प्राथमिक उद्देश्य बताया, जिससे लोक कल्याण सुनिश्चित हो।

25. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
अर्थ का न्यायपूर्ण अर्जन एक समृद्ध समाज के सुचारु संचालन के लिए अनिवार्य है। संसाधनों के बिना मनुष्य न तो अपने सामाजिक कर्तव्यों का निर्वहन कर सकता है और न ही अपनी स्वाभाविक इच्छाओं को तृप्त कर सकता है। अर्थ के अभाव में धर्म और काम का संतुलन बिगड़ जाता है, जिससे जीवन में असंतोष उत्पन्न होता है। इसलिए, भौतिक संसाधनों की उपलब्धि अन्य पुरुषार्थों की सिद्धि का आधार बनती है, जिससे व्यक्ति का जीवन सर्वांगीण रूप से पूर्ण होता है।

26. (1) अर्थ का अर्जन धर्म के सिद्धांतों के कड़ाई से पालन के साथ किया जाना चाहिए।
भारतीय दर्शन के अनुसार अर्थ की प्राप्ति का मार्ग सदैव धर्म द्वारा निर्देशित होना चाहिए। इसका तात्पर्य है कि धन का अर्जन केवल न्यायपूर्ण और नैतिक पद्धतियों से ही किया जाना चाहिए। बिना धर्म के अर्थ का अनुसरण समाज में शोषण और अनैतिकता को बढ़ावा देता है। जब आर्थिक गतिविधियाँ नैतिक मूल्यों के अधीन होती हैं, तभी वे व्यक्तिगत शांति और सामाजिक कल्याण का आधार बनती हैं। यह दृष्टिकोण धन को सेवा और उत्तरदायित्व का साधन बनाता है।

27. (4) सौंदर्यबोध और संवेदी सुख सहित जीवन का समग्र आनंद।
काम पुरुषार्थ का तात्पर्य केवल शारीरिक सुख नहीं, बल्कि जीवन की सभी कलाओं और संवेदनाओं का आनंद लेना है। इसमें साहित्य, संगीत, नृत्य और प्रकृति की सुंदरता का अनुभव सम्मिलित है। यह मनुष्य की भावनात्मक और सृजनात्मक आवश्यकताओं की पूर्ति को मान्यता प्रदान करता है। एक सुसंस्कृत जीवन के लिए काम का परिष्कृत रूप अनिवार्य है। यह सिद्धांत सिखाता है कि इच्छाओं को दबाने के स्थान पर उन्हें नैतिकता के साथ संतुलित करना चाहिए।

28. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-iii
कामसूत्र एक प्रसिद्ध ग्रंथ है जो काम के दर्शन और व्यवहार पर गहन चर्चा करता है, जिसकी रचना ऋषि वात्स्यायन ने की थी। इस ग्रंथ में चौसठ कलाओं का वर्णन है, जो व्यक्तित्व विकास के लिए आवश्यक मानी जाती हैं। त्रिवर्ग के अंतर्गत धर्म, अर्थ और काम का सामूहिक अध्ययन किया जाता है। यह वर्गीकरण स्पष्ट करता है कि मानवीय सुख-सुविधाएं और कलात्मक उपलब्धियां भी आध्यात्मिक प्रगति जितनी ही महत्वपूर्ण हैं, बशर्ते वे मर्यादित और परिष्कृत हों।

29. (2) नैतिक पतन और सामाजिक व्यवधान को रोकते हुए व्यक्तिगत संतुष्टि।
जब कोई व्यक्ति धर्म द्वारा निर्धारित सीमाओं के भीतर काम का अनुसरण करता है, तो वह अनैतिकता से बचते हुए व्यक्तिगत प्रसन्नता प्राप्त करता है। यह मर्यादित भोग मन को शांत रखता है और समाज में किसी भी प्रकार की अव्यवस्था उत्पन्न नहीं करता। ऐसा संतुलित आचरण व्यक्ति को मानसिक रूप से स्थिर बनाता है और उसे भविष्य के आध्यात्मिक लक्ष्यों की ओर बढ़ने के लिए तैयार करता है। अतः धर्मयुक्त काम ही वास्तविक संतोष और सामाजिक सद्भाव का आधार है।

30. (2) केवल II और IV
काम को एक वैध पुरुषार्थ माना गया है, विशेषतः गृहस्थों के लिए जो परिवार के प्रति उत्तरदायी हैं। वात्स्यायन का कामसूत्र केवल कामुकता तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें नागरिक जीवन, कला और सौंदर्यशास्त्र के पहलुओं का वर्णन है। काम के अंतर्गत ललित कलाओं का समावेश व्यक्ति के बौद्धिक और भावनात्मक विकास में सहायक होता है। इसे गृहस्थ आश्रम के

Click Here to Buy book on Amazon

(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

71. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन चार्वाक संप्रदाय के नैतिक दृष्टिकोण को सबसे सटीक रूप से दर्शाता है?
(1) सामान्य सामाजिक कल्याण के लिए अनुष्ठानिक यज्ञ आवश्यक हैं।
(2) भावी पीढ़ियों के लिए धन संचय करना सर्वोच्च गुण है।
(3) कठोर तपस्या से ही आध्यात्मिक साक्षात्कार संभव है।
(4) इंद्रिय सुख ही मानव जीवन का वैध और सर्वोच्च लक्ष्य है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

72. बेमेल की पहचान कीजिए। चार्वाक दर्शन केवल चार मूलभूत तत्वों की भौतिक वास्तविकता को स्वीकार करता है। चार्वाक द्वारा निम्नलिखित में से किस पारंपरिक तत्व को अस्वीकार किया गया है?
(1) आकाश
(2) पृथ्वी
(3) जल
(4) तेज (अग्नि)
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

73. निम्नलिखित में से कौन-सी अवधारणा लोकायत (चार्वाक) दर्शन द्वारा खारिज नहीं की गई है?
(1) वेदों की अचूकता और अधिकार
(2) कर्म और पुनर्जन्म का नियम
(3) भौतिक शरीर का अस्तित्व
(4) अमर आत्मा का अस्तित्व
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

74. 'लोकायत' शब्द, जिसका ऐतिहासिक रूप से चार्वाक के पर्याय के रूप में उपयोग किया जाता है, का शाब्दिक अर्थ है:
(1) सामान्य जनों में प्रचलित या इस अनुभवजन्य जगत से संबंधित।
(2) मुक्ति के लिए स्वर्ग लोकों की ओर निर्देशित।
(3) परम दिव्य वास्तविकता और सर्वोच्च ब्रह्म का ज्ञान।
(4) पारंपरिक ग्रंथों द्वारा निर्धारित शाश्वत कर्तव्यों का मार्ग।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

75. एक व्यक्ति पूर्व कर्मों के परिणामस्वरूप कुछ गुणों के साथ उत्पन्न होता है और वर्तमान विकल्पों से नए कर्म उत्पन्न करता है। कर्म का कौन-सा प्रकार विशेष रूप से पूर्व कार्यों के उस भाग को संदर्भित करता है जिसने वर्तमान जीवन में फल देना प्रारंभ कर दिया है?
(1) संचित कर्म
(2) आगामी कर्म
(3) क्रियमाण कर्म
(4) प्रारब्ध कर्म
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

76. कर्म और पुनर्जन्म के भारतीय सिद्धांत के अनुसार, वह प्राथमिक कारण क्या है जो संसार के चक्र को बनाए रखता है?
(1) एक शक्तिशाली दिव्य देवता द्वारा सभी पापों की पूर्ण क्षमा।
(2) अज्ञानता और आसक्ति से उत्पन्न अनसुलझा कर्म संस्कार।
(3) मृत्यु के समय भौतिक शरीर का पूर्ण विनाश।
(4) फल की आसक्ति के बिना निष्काम कर्म का अनुष्ठान।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

77. भारतीय दर्शन में कर्म के सिद्धांत को सबसे अच्छी तरह से समझा जा सकता है:
(1) एक भाग्यवादी व्यवस्था जहाँ मानवीय इच्छाशक्ति का जीवन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।
(2) विभिन्न कार्यों के लिए दिव्य पुरस्कार और दंड की एक मनमानी व्यवस्था।
(3) कार्य-कारण का एक नैतिक नियम जहाँ जानबूझकर किया गया कार्य परिणाम उत्पन्न करता है।
(4) वर्ण पदानुक्रम को लागू करने के लिए निर्मित विशुद्ध रूप से सामाजिक तंत्र।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

78. कर्म के प्रकारों से संबंधित निम्नलिखित में से कौन-सा जोड़ा गलत सुमेलित है?
(1) संचित कर्म - पूर्व के सभी कर्मों का संचित भंडार
(2) आगामी कर्म - वे कार्य जो भविष्य में किए जाएंगे
(3) क्रियमाण कर्म - वे कार्य जो वर्तमान में किए जा रहे हैं
(4) प्रारब्ध कर्म - बिना किसी फल की इच्छा के किए गए कार्य
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

79. भगवद गीता बंधनकारी कर्म के संचय को रोकने के लिए कर्म के एक विशिष्ट दृष्टिकोण को बढ़ावा देती है। इस अवधारणा को क्या कहा जाता है?
(1) निष्काम कर्म
(2) सकाम कर्म
(3) विकर्म
(4) अकर्म
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

80. सभी प्रमुख भारतीय दार्शनिक परंपराओं (चार्वाक को छोड़कर) में, कर्म और पुनर्जन्म के निरंतर चक्र को समाप्त करने का अंतिम समाधान किसे माना जाता है?
(1) अत्यधिक धन और भौतिक समृद्धि संचित करना।
(2) मुक्ति या मोक्ष प्राप्त करना।
(3) अस्थायी रूप से स्वर्गीय लोकों तक पहुँचना।
(4) 64 पारंपरिक कलाओं और विज्ञानों में महारत प्राप्त करना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

के प्रारंभ को कहते हैं, न कि विवाह को। चूड़ाकरण मुंडन की रस्म है, जबकि अन्नप्राशन शिशु को पहली बार ठोस आहार देने का संस्कार है। अतः केवल नामकरण ही अपने उद्देश्य के साथ सही सुमेलित है। ये सभी संस्कार बालक के बचपन के विकास को चिह्नित करते हैं और उसे सामाजिक ढांचे में एकीकृत करते हैं।

42. (1) व्यक्ति को आध्यात्मिक रूप से उन्नत करने हेतु एक शुद्धिकरण अनुष्ठान।
संस्कार का शाब्दिक अर्थ शुद्धिकरण या परिष्करण है। प्राचीन भारतीय मूल्यों के अनुसार, संस्कार वे धार्मिक और मनोवैज्ञानिक क्रियाएं हैं जो व्यक्ति के दोषों को दूर कर उसमें सद्गुणों का संचार करती हैं। ये व्यक्ति को समाज का योग्य, अनुशासित और आध्यात्मिक रूप से जागरुक सदस्य बनाने हेतु निर्मित हैं। जीवन के प्रत्येक महत्वपूर्ण मोड़ पर संस्कार करके मनुष्य को उसके अस्तित्व के उच्चतर उद्देश्यों का स्मरण कराया जाता है, जिससे व्यक्तित्व निखरता है।

43. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
प्राचीन गुरुकुल प्रणाली अनिवार्य रूप से आवासीय थी, जहाँ विद्यार्थी गुरु के आश्रम में रहकर शिक्षा प्राप्त करते थे। यह केवल आधुनिक विज्ञान तक सीमित नहीं थी, बल्कि इसमें वेदों, उपनिषदों और दर्शन का गहन अध्ययन सम्मिलित था। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य केवल सूचना देना नहीं, बल्कि विद्यार्थी का चारित्रिक और आध्यात्मिक विकास करना था। इसमें आध्यात्मिक और व्यावहारिक ज्ञान के बीच कोई विभाजन नहीं था, बल्कि दोनों को एक साथ सिखाया जाता था।

44. (4) I, II, III और IV
गुरुकुल प्रणाली में शिक्षा मुख्य रूप से मौखिक थी, जिसमें विद्यार्थी मंत्रों को सुनकर कंठस्थ करते थे। गुरु की सेवा करना शिक्षा का अभिन्न अंग था, जो विद्यार्थियों में विनम्रता और सेवा भाव जागृत करता था। शिक्षा पूर्ण होने पर विद्यार्थी अपनी सामर्थ्य के अनुसार गुरु दक्षिणा प्रदान करते थे। पाठ्यक्रम अत्यंत व्यापक था, जिसमें आध्यात्मिक विद्या के साथ-साथ व्यावहारिक विषयों का भी समावेश था। यह प्रणाली व्यक्ति को संतुलित और गुणवान मनुष्य बनाने हेतु समर्पित थी।

45. (3) आध्यात्मिक ज्ञान और भौतिक ज्ञान का समन्वय।
गुरुकुलों में उपनिषदों के साथ धनुर्विद्या और गणित का शिक्षण यह दर्शाता है कि प्राचीन भारत में धर्म और विज्ञान को पृथक नहीं देखा जाता था। शिक्षा का उद्देश्य 'पूर्ण पुरुष' का निर्माण करना था जो युद्ध, प्रशासन और आध्यात्मिकता सभी में निपुण हो। यह समन्वय विद्यार्थी को जीवन की समस्त चुनौतियों के लिए तैयार करता था। इससे सिद्ध होता है कि प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति व्यावहारिक थी और भौतिक उन्नति को आध्यात्मिक उत्थान के साथ जोड़ती थी।

46. (1) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
गुरु वह शिक्षक है जो शिष्य के अज्ञान रुपी अंधकार को ज्ञान के प्रकाश से दूर करता है। ब्रह्मचारी वह विद्यार्थी है जो कठोर अनुशासन और संयम के साथ अध्ययन करता है। गुरु दक्षिणा शिष्य द्वारा अपनी शिक्षा पूरी होने पर गुरु के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने हेतु दी जाने वाली भेंट है। समावर्तन संस्कार शिक्षा की समाप्ति और गृहस्थ जीवन में प्रवेश का प्रतीक है। ये शब्द गुरुकुल शिक्षा पद्धति के विभिन्न आधारभूत स्तंभों को स्पष्ट करते हैं।

47. (1) मूल्यांकन के लिए मुद्रित प्रश्न पत्रों का उपयोग करके मानकीकृत लिखित परीक्षाएं
प्राचीन गुरुकुल प्रणाली में मूल्यांकन का प्रकार मौखिक और व्यावहारिक था। गुरु छात्र की प्रगति का निरंतर और व्यक्तिगत रूप से निरीक्षण करते थे। यहाँ मानकीकृत लिखित परीक्षाओं का कोई स्थान नहीं था। इसके स्थान पर छात्र का चरित्र, अनुशासन और ज्ञान का व्यावहारिक प्रयोग ही उसकी योग्यता की कसौटी थी। न्यून छात्र-शिक्षक अनुपात के कारण प्रत्येक विद्यार्थी पर व्यक्तिगत ध्यान दिया जाता था। यह पद्धति सुनिश्चित करती थी कि विद्यार्थी वास्तव में ज्ञान प्राप्त करें।

48. (2) वेदों के सर्वोच्च प्रामाण्य को स्वीकार करना।
भारतीय दर्शन में 'आस्तिक' और 'नास्तिक' का वर्गीकरण ईश्वर के अस्तित्व के आधार पर नहीं, बल्कि वेदों की प्रामाणिकता के आधार पर किया गया है। वे संप्रदाय जो वेदों को ज्ञान का अंतिम स्रोत मानते हैं, आस्तिक कहलाते हैं। इसमें न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा और वेदांत सम्मिलित हैं। जो वेदों के अधिकार को स्वीकार नहीं करते, जैसे जैन, बौद्ध और चार्वाक, उन्हें नास्तिक की श्रेणी में रखा जाता है। अतः वेदों के प्रति निष्ठा ही इसका मूल आधार है।

49. (4) I, II, III, IV और V
भारतीय दर्शन के छह आस्तिक संप्रदाय (षड्दर्शन) ब्रह्मांड और सत्य के विभिन्न पहलुओं की व्याख्या करते हैं। न्याय तर्क पर, वैशेषिक परमाणु पर, सांख्य प्रकृति और पुरुष के विवेक पर, योग मन के नियंत्रण पर, मीमांसा वैदिक कर्मकांडों पर और वेदांत ब्रह्म के वास्तविक स्वरुप पर केंद्रित है। ये सभी संप्रदाय भिन्न दृष्टिकोण होने के पश्चात भी वेदों की मर्यादा स्वीकार करते हैं। ये दर्शन मिलकर प्राचीन भारतीय बौद्धिक चिंतन की समृद्धि का प्रतिनिधित्व करते हैं।

50. (1) दृष्टि या सत्य का प्रत्यक्ष साक्षात्कार
संस्कृत में 'दर्शन' शब्द का अर्थ देखना है, किंतु दार्शनिक संदर्भ में इसका तात्पर्य सत्य को प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करना है। यह केवल बौद्धिक चर्चा नहीं है, बल्कि वास्तविकता का साक्षात अनुभव करने की प्रक्रिया है। दर्शन का उद्देश्य मनुष्य को अज्ञान से मुक्त कर सत्य के दर्शन कराना है ताकि वह दुखों से निवृत्ति पा सके। प्रत्येक भारतीय दर्शन व्यक्ति को तर्क और अनुभव के माध्यम से परम वास्तविकता को समझने के लिए एक विशिष्ट मार्ग प्रदान करता है।

51. (2) II, I, III, IV
सांख्य दर्शन के अनुसार ब्रह्मांड का विकास प्रकृति से प्रारंभ होता है। प्रकृति से सर्वप्रथम 'महत्' या बुद्धि उत्पन्न होती है। महत् से 'अहंकार' का जन्म होता है, जो व्यक्तित्व और कर्तापन की भावना विकसित करता है। अहंकार से आगे चलकर मन

Downloaded from www.pdf.tube

और अन्य इंद्रियों का विकास होता है। विकास का यह सूक्ष्म क्रम बताता है कि कैसे अव्यक्त पदार्थ धीरे-धीरे चेतना के संपर्क में आकर जटिल मानसिक और भौतिक जगत में परिवर्तित हो जाता है। यह प्रक्रिया तर्कसंगत है।

52. (4) चार्वाक
न्याय, सांख्य और मीमांसा आस्तिक दर्शन हैं क्योंकि ये वेदों की सर्वोच्चता को स्वीकार करते हैं। इसके विपरीत, चार्वाक दर्शन एक नास्तिक संप्रदाय है। चार्वाक वेदों को पूर्णतः अस्वीकार करता है और केवल उसी को सत्य मानता है जिसे इंद्रियों से प्रत्यक्ष देखा जा सके। यह दर्शन परलोक, आत्मा और ईश्वर की अवधारणाओं का खंडन करता है और केवल भौतिक संसार की वास्तविकता पर बल देता है। इसलिए, यह अन्य तीनों संप्रदायों से मौलिक रूप से भिन्न है।

53. (3) न्याय
न्याय दर्शन को विशेष रूप से 'तर्क-शास्त्र' के रूप में जाना जाता है क्योंकि यह यथार्थ ज्ञान प्राप्त करने के लिए तर्क और प्रमाणों की एक सुव्यवस्थित प्रणाली प्रस्तुत करता है। इस दर्शन के अनुसार, दुखों से मुक्ति केवल वास्तविक ज्ञान के माध्यम से ही संभव है, और वास्तविक ज्ञान तर्कसंगत परीक्षण के बिना प्राप्त नहीं किया जा सकता। न्याय ने भारतीय बौद्धिक परंपरा में विवेचना के कठोर नियम स्थापित किए हैं, जो किसी भी दावे की सत्यता को परखने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

54. (1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
न्याय दर्शन के अनुसार ज्ञान के चार प्रमुख स्रोत हैं। प्रत्यक्ष वह है जो सीधे इंद्रियों से अनुभव किया जाए। अनुमान पूर्व अनुभवों के आधार पर निकाला गया तार्किक निष्कर्ष है। उपमान किसी प्रसिद्ध वस्तु से समानता के आधार पर नई वस्तु को समझने की प्रक्रिया है। शब्द किसी विश्वसनीय व्यक्ति या शास्त्र के कथनों पर आधारित ज्ञान है। ये चारों प्रमाण मिलकर मनुष्य को वास्तविकता को सही ढंग से समझने में सहायता करते हैं और अज्ञानता को दूर करते हैं।

55. (4) पदार्थ का परमाणु सिद्धांत और वास्तविकता की श्रेणियां।
वैशेषिक दर्शन अपनी सूक्ष्म विश्लेषण क्षमता के लिए जाना जाता है, जिसमें संसार की प्रत्येक वस्तु को सात श्रेणियों में विभाजित किया गया है। इसने प्रतिपादित किया कि भौतिक जगत अविभाज्य परमाणुओं से निर्मित है। यह प्राचीन भारत का भौतिक विज्ञान था जिसने पदार्थ की संरचना को समझने का प्रयास किया। वैशेषिक का मानना है कि इन श्रेणियों और परमाणुओं के सही ज्ञान से ही व्यक्ति मोह से मुक्त हो सकता है। यह दर्शन यथार्थवाद और तर्क पर आधारित एक सुदृढ़ संरचना है।

56. (1) केवल I
न्याय और वैशेषिक दोनों ही आस्तिक दर्शन हैं क्योंकि वे वेदों के अधिकार को स्वीकार करते हैं। वैशेषिक मुख्य रूप से प्रत्यक्ष और अनुमान को ही स्वतंत्र प्रमाण मानता है, जबकि न्याय चार प्रमाणों—प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द को स्वीकार करता है। ये दोनों संप्रदाय आपस में बहुत निकट हैं और अक्सर इन्हें एक ही तंत्र के रूप में देखा जाता है। इनका मूल उद्देश्य तर्कसंगत सोच के माध्यम से अज्ञानता को नष्ट करना और जीवन के अंतिम सत्य तक पहुँचना है।

57. (3) अदृष्ट
वैशेषिक दर्शन में 'अदृष्ट' उस अदृश्य नैतिक शक्ति को कहा जाता है जो प्राणियों के पूर्व कर्मों का परिणाम होती है। यह माना जाता है कि परमाणुओं में होने वाली वह गति, जो सृष्टि के निर्माण का कारण बनती है, इसी अदृष्ट द्वारा निर्देशित होती है। यह शक्ति सुनिश्चित करती है कि ब्रह्मांड का विकास आकस्मिक न होकर नैतिक नियमों के अनुसार हो। इस प्रकार, वैशेषिक भौतिक परमाणुवाद को कर्म के नैतिक सिद्धांत के साथ जोड़कर एक पूर्ण ब्रह्मांडीय व्याख्या प्रस्तुत करता है।

NODIA

58. (1) यह सिद्धांत कि भौतिक जगत केवल मन का एक प्रक्षेपण है।
न्याय और वैशेषिक दोनों यथार्थवादी दर्शन हैं जो मानते हैं कि बाह्य जगत का स्वतंत्र और वास्तविक अस्तित्व है। वे इस विचार को दृढ़ता से नकारते हैं कि संसार केवल मन की कल्पना या भ्रम है। उनके अनुसार, परमाणु और पदार्थ उतने ही वास्तविक हैं जितनी कि आत्मा। वे ईश्वर को सृष्टि का निमित्त कारण और दुखों से मुक्ति को जीवन का लक्ष्य मानते हैं। यह दृष्टिकोण उन्हें उन संप्रदायों से पृथक करता है जो जगत को केवल माया का भाग मानते हैं।

59. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
सांख्य दर्शन दो शाश्वत सिद्धांतों, पुरुष और प्रकृति के द्वैत पर आधारित है। पुरुष शुद्ध चेतना है जो स्वयं निष्क्रिय रहता है किंतु समस्त गतिविधियों का साक्षी होता है। प्रकृति जड़ पदार्थ है जो सक्रिय है और निरंतर विकसित होती रहती है। विकास तब होता है जब पुरुष के सान्निध्य में प्रकृति क्रियाशील होती है। पुरुष कभी भी रूपांतरित नहीं होता; समस्त परिवर्तन केवल प्रकृति और उसके गुणों में होते हैं। सांख्य दर्शन चेतना और पदार्थ के बीच अंतर स्थापित करता है।

60. (2) केवल II और IV
सांख्य के अनुसार प्रकृति सत्व, रजस और तमस गुणों से निर्मित है, जबकि पुरुष निर्गुण और शुद्ध चेतना है। सृष्टि का विकास तब होता है जब इन गुणों का साम्य भंग हो जाता है। शास्त्रीय सांख्य को अनिश्वरवादी माना जाता है क्योंकि यह ईश्वर की सहायता के बिना ही प्रकृति और पुरुष के माध्यम से विकास की व्याख्या करता है। प्रकृति को शुद्ध चेतना कहना या सांख्य को ईश्वर पर आश्रित बताना इस दर्शन के मूल सिद्धांतों के विपरीत है।

61. (3) पतंजलि
महर्षि पतंजलि ने 'योग सूत्र' के माध्यम से योग के ज्ञान को एक व्यवस्थित दार्शनिक संप्रदाय के रूप में संकलित किया। उनके द्वारा प्रतिपादित योग दर्शन मन और इंद्रियों के अनुशासन पर बल देता है। पतंजलि ने अष्टांग योग के आठ सोपानों का वर्णन किया है जो शारीरिक और मानसिक शुद्धि के माध्यम से आध्यात्मिक ऊंचाइयों तक ले जाते हैं। उनका कार्य केवल

व्यायाम तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक संपूर्ण जीवन पद्धति है जिसका अंतिम उद्देश्य आत्मा को मुक्त करना है।

62. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
योग दर्शन का मूल सूत्र 'योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः' है, जिसका अर्थ मन की चंचल वृत्तियों को रोकना है। जब अभ्यास के माध्यम से मन शांत और स्थिर हो जाता है, तब व्यक्ति अपनी वास्तविक स्वरूप को पहचान लेता है। मन की शांति ही वह अवस्था है जहाँ पुरुष (आत्मा) प्रकृति के भ्रम से मुक्त होकर अपने शुद्ध स्वरूप में प्रकाशित होता है। यह मुक्ति का मार्ग है क्योंकि विचलित मन ही दुखों का कारण है। अतः मन का निग्रह ही योग साधना का सर्वोच्च लक्ष्य है।

63. (1) यम
पतंजलि के अष्टांग योग में 'यम' प्रथम सोपान है, जिसमें सामाजिक और व्यक्तिगत नैतिकता के पांच नियम सम्मिलित हैं: अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह। इन नियमों का पालन करने वाला व्यक्ति अपनी मानसिक और नैतिक नींव को सुदृढ़ करता है। यम का अभ्यास मनुष्य को बाह्य जगत के साथ सामंजस्य स्थापित करने और स्वयं को आंतरिक साधना हेतु तैयार करने में सहायता करता है। सत्य और अहिंसा का पालन आध्यात्मिक यात्रा की अनिवार्य प्रारंभिक आवश्यकताएं हैं।

64. (2) पूर्व मीमांसा - जैमिनी
ऋषि जैमिनी पूर्व मीमांसा दर्शन के संस्थापक हैं, जिन्होंने वेदों के कर्मकांड पक्ष की व्याख्या की। न्याय दर्शन के प्रणेता गौतम ऋषि हैं। वैशेषिक दर्शन कणाद ऋषि द्वारा प्रतिपादित किया गया है। सांख्य दर्शन के प्रवर्तक कपिल मुनि हैं। उत्तर मीमांसा या वेदांत बादरायण द्वारा व्यवस्थित किया गया था। इस प्रकार, केवल जैमिनी और पूर्व मीमांसा का युग्म ही ऐतिहासिक और दार्शनिक रूप से सत्य है। ये सभी ऋषि भारतीय दार्शनिक परंपरा के महान स्तंभ हैं।

65. (2) केवल II और IV
अद्वैत वेदांत के अनुसार ब्रह्म ही एकमात्र सत्य है, जबकि विशिष्टाद्वैत मानता है कि जगत और आत्मा ब्रह्म के वास्तविक विशेषण हैं। द्वैत वेदांत ईश्वर और जीव के बीच पूर्ण भेद पर बल देता है। पूर्व मीमांसा वेदों के अनुष्ठान भाग पर केंद्रित है, जबकि वेदांत ज्ञान भाग की व्याख्या करता है। ब्रह्म सूत्र सभी वेदांत शाखाओं के लिए आधारभूत ग्रंथ है। विशिष्टाद्वैत और पूर्व मीमांसा के विषय में दिए गए विपरीत कथन शास्त्रीय तथ्यों के साथ मेल नहीं खाते हैं।

66. (1) वैदिक विधियों की व्याख्या और अनुष्ठानों की कार्यप्रणाली।
पूर्व मीमांसा दर्शन मुख्य रूप से वेदों के संहिता और ब्राह्मण भाग पर आधारित है। इसका मुख्य उद्देश्य वैदिक यज्ञों और कर्मकांडों के सही अर्थ और विधि को स्पष्ट करना है। इस संप्रदाय का मानना है कि वेदों में दिए गए आदेशों का पालन करना ही परम धर्म है। यह कर्म के सिद्धांत में अटूट विश्वास रखता है और मानता है कि उचित अनुष्ठानों के माध्यम से सुख प्राप्त किए जा सकते हैं। यह दर्शन वेदों को अपौरुषेय और शाश्वत ज्ञान मानता है।

67. (1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
शंकराचार्य ने अद्वैतवाद का प्रतिपादन किया, जो मानता है कि आत्मा और ब्रह्म में कोई भेद नहीं है। रामानुजाचार्य ने विशिष्टाद्वैत का प्रचार किया, जो भक्त और ईश्वर के विशिष्ट संबंध को दर्शाता है। मध्वाचार्य द्वैतवाद के प्रवर्तक थे, जो ईश्वर और जीव को पृथक मानते हैं। निम्बार्काचार्य ने द्वैताद्वैत का सिद्धांत दिया, जो भेद और अभेद दोनों को स्वीकार करता है। ये विभिन्न दृष्टिकोण भक्ति और ज्ञान के समन्वय द्वारा ईश्वर प्राप्ति के अलग-अलग दार्शनिक मार्ग प्रस्तुत करते हैं।

68. (4) उपनिषद, ब्रह्म सूत्र, भगवद गीता
'प्रस्थानत्रयी' वेदांत दर्शन के तीन सबसे महत्वपूर्ण आधार स्तंभ हैं। उपनिषदों को 'श्रुति प्रस्थान' कहा जाता है क्योंकि वे वेदों का सार हैं। ब्रह्म सूत्र 'न्याय प्रस्थान' है क्योंकि यह दार्शनिक तर्क प्रदान करता है। भगवद गीता 'स्मृति प्रस्थान' है क्योंकि यह व्यावहारिक जीवन में ज्ञान का प्रयोग सिखाती है। किसी भी नए वेदांत संप्रदाय की स्थापना हेतु इन तीनों ग्रंथों पर भाष्य लिखना अनिवार्य है। ये ग्रंथ भारतीय आध्यात्मिकता की पराकाष्ठा को व्यक्त करते हैं।

69. (1) जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरीय
वेदांत दर्शन में मानवीय चेतना का विश्लेषण चार अवस्थाओं के माध्यम से किया गया है। जाग्रत अवस्था बाह्य जगत का अनुभव है। स्वप्न अवस्था में मन आंतरिक दृश्यों को देखता है। सुषुप्ति गहरी और स्वप्नहीन निद्रा की स्थिति है। तुरीय इन तीनों से परे वह शुद्ध चेतना है जो सदैव विद्यमान रहती है और आत्मा का वास्तविक स्वरूप है। इन अवस्थाओं का अध्ययन व्यक्ति को यह समझने में सहायता करता है कि वह केवल शरीर नहीं, बल्कि एक अविनाशी चैतन्य है।

70. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
चार्वाक एक कट्टर भौतिकवादी दर्शन है जो मानता है कि प्रत्यक्ष अनुभव ही ज्ञान की एकमात्र कसौटी है। यह किसी भी ऐसी वस्तु को स्वीकार नहीं करता जिसे देखा न जा सके। चार्वाक अनुमान प्रमाण को पूर्णतः नकारता है, क्योंकि उसका मानना है कि अनुमान में त्रुटि की संभावना रहती है। इसलिए, वह ईश्वर, स्वर्ग या परलोक को सिद्ध करने के लिए किसी भी तर्क को स्वीकार नहीं करता। उनके लिए जो प्रत्यक्ष है, वही सत्य है और शेष सब कल्पना है।

71. (4) इंद्रिय सुख ही मानव जीवन का वैध और सर्वोच्च लक्ष्य है।
चार्वाक दर्शन का नैतिक दृष्टिकोण पूर्णतः सुखवाद पर आधारित है। उनके अनुसार, चूंकि मृत्यु के पश्चात कुछ भी शेष नहीं रहता, इसलिए मनुष्य को वर्तमान जीवन में जितना संभव हो सुख प्राप्त करना चाहिए। वे भविष्य की चिंता किए बिना वर्तमान के आनंद को प्राथमिकता देते हैं। वे किसी भी प्रकार की तपस्या या धार्मिक कर्मकांड को व्यर्थ मानते हैं। उनकी दृष्टि में भौतिक सुख और शारीरिक तृप्ति ही जीवन की सार्थकता का एकमात्र मापदंड है।

Click Here to Buy book on Amazon

72. (1) आकाश
चार्वाक दर्शन केवल चार तत्वों—पृथ्वी, जल, अग्नि और वायु—की वास्तविकता को स्वीकार करता है क्योंकि इन्हें प्रत्यक्ष रूप से देखा और अनुभव किया जा सकता है। वह 'आकाश' को एक स्वतंत्र तत्व के रूप में स्वीकार नहीं करता क्योंकि यह दृष्टिगोचर नहीं है। चार्वाक का मानना है कि संसार की सभी जड़ और चेतन वस्तुएं इन चार तत्वों के निश्चित अनुपात में मिलने से निर्मित हैं। यह दृष्टिकोण उनकी उस विचारशैली को पुष्ट करता है जो केवल प्रत्यक्ष अनुभव को सत्य मानती है।

73. (3) भौतिक शरीर का अस्तित्व
चार्वाक दर्शन उन सभी आध्यात्मिक अवधारणाओं को अस्वीकार करता है जिन्हें इंद्रियों से प्रमाणित नहीं किया जा सकता, जैसे कि अमर आत्मा और कर्मफल। हालांकि, वह भौतिक शरीर के अस्तित्व को पूर्णतः स्वीकार करता है क्योंकि शरीर को प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है। चार्वाक के लिए शरीर ही आत्मा है और चेतना शरीर के तत्वों का एक संयोगिक परिणाम है। जब शरीर नष्ट होता है, तो चेतना भी समाप्त हो जाती है। अतः भौतिक देह ही एकमात्र अनुभवसिद्ध वास्तविकता है।

74. (1) सामान्य जनों में प्रचलित या इस अनुभवजन्य जगत से संबंधित।
'लोकायत' शब्द 'लोक' से बना है, जिसका अर्थ यह संसार या जनसाधारण है। यह दर्शन इस बात पर बल देता है कि मनुष्य को केवल इसी जगत की चिंताओं और सुखों पर ध्यान देना चाहिए। यह परलोक या अदृश्य शक्तियों की काल्पनिक दुनिया को महत्व नहीं देता। चूंकि यह विचारधारा सामान्य लोगों के स्वाभाविक झुकाव और सांसारिक अनुभवों के निकट थी, इसलिए इसे लोकायत कहा गया। यह पूर्णतः अनुभवजन्य जगत की यथार्थता को अपना आधार मानता है।

75. (4) प्रारब्ध कर्म
प्रारब्ध कर्म उन संचित कर्मों का वह भाग है जिसने वर्तमान जीवन की दिशा निर्धारित कर दी है और फल देना प्रारंभ कर दिया है। इसे परिवर्तित नहीं किया जा सकता, बल्कि इसे भोगकर ही समाप्त किया जाता है। जैसे धनुष से मुक्त हुआ तीर लक्ष्य की ओर बढ़ता है, वैसे ही प्रारब्ध कर्म अपने परिणामों को प्रकट करते हैं। यह हमारे जन्म, शारीरिक संरचना और जीवन की उन घटनाओं के लिए उत्तरदायी है जिन पर हमारा नियंत्रण नहीं होता।

76. (2) अज्ञानता और आसक्ति से उत्पन्न अनसुलझा कर्म संस्कार।
भारतीय दर्शन के अनुसार, संसार का चक्र मुख्य रूप से 'अविद्या' या अज्ञानता के कारण निरंतर चलता रहता है। जब मनुष्य स्वयं को कर्ता मानकर कार्यों और उनके परिणामों से जुड़ जाता है, तो कर्मों के संस्कार उसकी आत्मा पर संचित हो जाते हैं। ये संस्कार ही उसे पुनः जन्म लेने के लिए विवश करते हैं ताकि वह अपने पूर्व कार्यों के फलों को भोग सके। जब तक यह अज्ञान और आसक्ति बनी रहती है, तब तक आत्मा इस जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्त नहीं हो पाती।

77. (3) कार्य-कारण का एक नैतिक नियम जहाँ जानबूझकर किया गया कार्य परिणाम उत्पन्न करता है।
कर्म का सिद्धांत एक न्यायपूर्ण व्यवस्था है जहाँ प्रत्येक क्रिया की समान प्रतिक्रिया होती है। यह कोई भाग्यवादी अंधविश्वास नहीं है, बल्कि एक नैतिक कार्य-कारण का नियम है। इसके अनुसार, मनुष्य अपने भविष्य का स्वयं निर्माता है और उसके वर्तमान कार्य ही उसके आगामी जीवन को आकार देते हैं। यह सिद्धांत व्यक्ति को उत्तरदायित्व का बोध कराता है और उसे श्रेष्ठ आचरण हेतु प्रेरित करता है। यह सिखाता है कि अच्छे कार्यों से शांति और बुरे कार्यों से दुख सुनिश्चित है।

78. (4) प्रारब्ध कर्म - बिना किसी फल की इच्छा के किए गए कार्य
संचित कर्म पूर्व जन्मों के सभी कार्यों का कुल भंडार है। आगामी कर्म वे हैं जो भविष्य में किए जाएंगे, और क्रियमाण कर्म वर्तमान में किए जा रहे कार्य हैं। प्रारब्ध कर्म का अर्थ फल की इच्छा के बिना कार्य करना नहीं है, बल्कि यह वह कर्म है जो वर्तमान में फल दे रहा है। बिना फल की इच्छा के कार्य करने को 'निष्काम कर्म' कहा जाता है। अतः प्रारब्ध कर्म की दी गई व्याख्या त्रुटिपूर्ण है क्योंकि यह अनिवार्य फल से संबंधित है।

79. (1) निष्काम कर्म
भगवद गीता में श्रीकृष्ण ने 'निष्काम कर्म' का संदेश दिया है, जिसका अर्थ है कि मनुष्य को अपने कर्तव्य का पालन बिना किसी फल की लालसा के करना चाहिए। जब कोई व्यक्ति अपनी इच्छाओं को त्यागकर केवल धर्म हेतु कार्य करता है, तो वे कार्य उसे नए कर्मों के बंधन में नहीं बांधते। यह मार्ग व्यक्ति को सक्रिय रहते हुए भी मानसिक शांति और आध्यात्मिक स्वतंत्रता प्रदान करता है। निष्काम कर्म ही वह कुंजी है जो कर्मों के संचय को रोककर मोक्ष का मार्ग प्रशस्त करती है।

NODIA

80. (2) मुक्ति या मोक्ष प्राप्त करना।
भारतीय दार्शनिक परंपराओं में मोक्ष को ही दुखों के अंत और कर्म के बंधन से छूटने का एकमात्र उपाय माना गया है। मोक्ष प्राप्त करने का अर्थ स्वयं के वास्तविक स्वरूप को पहचानना और परमात्मा के साथ एकात्म होना है। एक बार मोक्ष प्राप्त होने पर, व्यक्ति पुनर्जन्म के चक्र से सदा के लिए मुक्त हो जाता है। यह अवस्था सांसारिक सुख-दुखों और धन की प्राप्ति से कहीं उच्च है। सभी आध्यात्मिक साधनाओं का अंतिम उद्देश्य इसी परम पद की प्राप्ति है।

अध्याय 09
दिल्ली सल्तनत

NODIA

1. निम्नलिखित में से किसे राजधानी को लाहौर से दिल्ली स्थानांतरित करने और अब्बासी खलीफा से अधिकार-पत्र (मंसूर) प्राप्त करने के लिए दिल्ली सल्तनत का वास्तविक संस्थापक माना जाता है?
   (1) कुतुबुद्दीन ऐबक
   (2) शम्सुद्दीन इल्तुतमिश
   (3) गयासुद्दीन बलबन
   (4) अलाउद्दीन खलजी
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

2. दिल्ली सल्तनत के दौरान स्थापित इक्ता प्रणाली का प्राथमिक उद्देश्य क्या था?
   (1) नकद वेतन के बदले सैन्य कमांडरों को भू-राजस्व आवंटित करना
   (2) खेतिहर किसानों को वंशानुगत भूमि स्वामित्व प्रदान करना
   (3) समस्त भू-राजस्व को सीधे शाही कोष में केंद्रित करना
   (4) विशेष रुप से धार्मिक विद्वानों और संस्थानों को कर-मुक्त भूमि प्रदान करना
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

3. कुतुबुद्दीन ऐबक के संबंध में असत्य कथन की पहचान करें।
   (1) वह मुहम्मद गोरी का एक तुर्क दास था जो बाद में दिल्ली का पहला सुल्तान बना।
   (2) उसकी उदारता के कारण उसे 'लाख बख्श' की उपाधि दी गई थी।
   (3) उसने अपने शासनकाल के दौरान दिल्ली में कुतुब मीनार का निर्माण कार्य पूरा करवाया था।
   (4) 1210 ईस्वी में लाहौर में चौगान (पोलो) खेलते समय उसकी मृत्यु हो गई थी।
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

4. सूची I (प्रशासनिक विभाग) को सूची II (संस्थापक सुल्तान) के साथ सुमेलित करें और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनें।
   सूची I: (प्रशासनिक विभाग)
   A. दीवान-ए-अर्ज़
   B. दीवान-ए-रियासत
   C. दीवान-ए-कोही
   D. दीवान-ए-बंदगान
   सूची II: (संस्थापक सुल्तान)
   i. अलाउद्दीन खलजी
   ii. फिरोज शाह तुगलक
   iii. गयासुद्दीन बलबन
   iv. मुहम्मद बिन तुगलक
   (1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
   (2) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
   (3) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
   (4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

5. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं — कथन (A) और कारण (R)। उनके बीच संबंध का वर्णन करने के लिए सही विकल्प चुनें।
   कथन (A): बलबन ने दिल्ली सल्तनत में सिजदा और पायबोस की कठोर दरबारी रस्में शुरु कीं।
   कारण (R): बलबन सुल्तान के दैवीय सिद्धांत पर बल देना चाहता था और 'तुर्कान-ए-चहलगानी' की शक्ति को नष्ट करना चाहता था।
   (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
   (2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
   (3) A सही है लेकिन R गलत है।
   (4) A गलत है लेकिन R सही है।
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

6. रजिया सुल्तान के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
   I. उसे उसके पिता इल्तुतमिश ने अपने पुत्रों के स्थान पर अपना उत्तराधिकारी नामित किया था।
   II. उसने महिला परिधानों का त्याग कर दिया और बिना पर्दे के दरबार में बैठती थी।
   III. रुढ़िवादी तुर्क रईसों ने उसके राज्याभिषेक का पूर्ण समर्थन किया और उसके पूरे शासनकाल में सहयोग किया।
   उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
   (1) केवल I और II
   (2) केवल II और III
   (3) केवल I और III
   (4) I, II और III
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

7. निम्नलिखित में से कौन सा शासक दिल्ली सल्तनत के गुलाम वंश से संबंधित नहीं है?
   (1) आराम शाह
   (2) मुइज़ुद्दीन बहराम शाह
   (3) नसीरुद्दीन महमूद

मुद्रा → खुरासान अभियान
(2) राजधानी परिवर्तन → दोआब में कराधान → खुरासान अभियान → सांकेतिक मुद्रा
(3) सांकेतिक मुद्रा → दोआब में कराधान → राजधानी परिवर्तन → खुरासान अभियान
(4) खुरासान अभियान → सांकेतिक मुद्रा → राजधानी परिवर्तन → दोआब में कराधान
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

40. दिल्ली सल्तनत में इक्ता प्रणाली के बारे में गलत कथन की पहचान करें।
(1) इल्तुतमिश द्वारा इसकी शुरुआत से ही इक्ता प्रणाली पूर्णतः वंशानुगत थी।
(2) इक्ता प्रशासनिक और सैन्य अधिकारियों को दिया जाने वाला एक क्षेत्रीय आवंटन था।
(3) इक्तादार या मुक्ती से इक्ता के राजस्व से सेना बनाए रखने की अपेक्षा की जाती थी।
(4) निर्धारित व्ययों को पूरा करने के बाद इक्ता से एकत्र किए गए अतिरिक्त राजस्व को 'फवाज़िल' कहा जाता था और उसे राज्य को भेजा जाता था।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

41. सूची I (अलाउद्दीन के बाजार अधिकारी) को सूची II (भूमिकाएं) के साथ सुमेलित करें और सही उत्तर चुनें।
सूची I: (अलाउद्दीन के बाजार अधिकारी)
A. दीवान-ए-रियासत
B. शहना-ए-मंडी
C. बरीद
D. मुनहियान
सूची II: (भूमिकाएं)
i. खुफिया अधिकारी / जासूस
ii. वाणिज्य प्रभारी मंत्री
iii. बाजार का अधीक्षक
iv. बाट और माप की जांच करने वाले गुप्त एजेंट
(1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(4) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

42. फिरोज शाह तुगलक द्वारा बसाए गए शहरों के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन सा विषम है?
(1) तुगलकाबाद
(2) जौनपुर
(3) हिसार
(4) फतेहाबाद
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

43. गयासुद्दीन तुगलक के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. वह तुगलक वंश का संस्थापक था।
II. उसने तुगलकाबाद के किलेबंद नगर का निर्माण करवाया।
III. सूफी संत निजामुद्दीन औलिया के साथ उसके संबंध कटु थे।
IV. उसने सैन्य कमान को केंद्रित करने के लिए इक्ता प्रणाली को पूर्णतः समाप्त कर दिया था।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से संयोजन सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, III और IV
(4) केवल I और II
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

44. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं — कथन (A) और कारण (R)। उनके बीच संबंध का वर्णन करने के लिए सही विकल्प चुनें।
कथन (A): मुहम्मद बिन तुगलक ने अपनी राजधानी दिल्ली से दौलताबाद (देवगिरी) स्थानांतरित की।
कारण (R): वह दक्षिण भारत में नए विजित क्षेत्रों को कुशलतापूर्वक प्रशासित और नियंत्रित करने के लिए एक केंद्रीय स्थान चाहता था।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

45. निम्नलिखित में से किस संरचना का निर्माण अलाउद्दीन खलजी द्वारा नहीं करवाया गया था?
(1) अलाई दरवाजा
(2) हौज खास
(3) मोठ की मस्जिद
(4) सीरी का किला
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

46. दिल्ली सल्तनत की राजस्व प्रणाली के अंतर्गत, 'जकात' शब्द का अर्थ क्या था?
(1) हिंदू पवित्र स्थलों की यात्रा करने वाले तीर्थयात्रियों पर राज्य द्वारा लगाया जाने वाला एक विशेष कर।
(2) सल्तनत क्षेत्रों में प्रवेश करने वाले सभी विदेशी व्यापारियों पर समान रूप से लागू एक मानक शुल्क।
(3) एक सैन्य अभियान के दौरान राज्य द्वारा प्राप्त लूट का अनुपातिक हिस्सा।
(4) धर्मार्थ गतिविधियों के उद्देश्य से धनी मुसलमानों से एकत्र किया जाने वाला एक धार्मिक कर।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

47. मध्य एशियाई विजेता तैमूर ने किस वर्ष भारत पर आक्रमण किया और दिल्ली को लूटा, जिससे सल्तनत गंभीर रूप से कमजोर हो गई?

Downloaded from www.pdf.tube

प्रमुख प्रयोगात्मक परियोजनाओं का सही प्रतिनिधित्व करता है?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल II, III, IV और V
(3) केवल I, III, IV और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

16. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं — कथन (A) और कारण (R)। उनके बीच संबंध का वर्णन करने के लिए सही विकल्प चुनें।
कथन (A): फिरोज शाह तुगलक ने इक्ता प्रणाली को वंशानुगत बना दिया।
कारण (R): वह भ्रष्टाचार को रोकने के लिए सेना और प्रशासन में एक कठोर योग्यता-आधारित प्रणाली लागू करना चाहता था।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

17. सूची I (दिल्ली सल्तनत में कर) को सूची II (विवरण) के साथ सुमेलित करें और सही उत्तर चुनें।
सूची I: (दिल्ली सल्तनत में कर)
A. खराज
B. खुम्स
C. जजिया
D. जकात
सूची II: (विवरण)
i. गैर-मुसलमानों पर लगाया जाने वाला कर
ii. दान के लिए मुसलमानों से एकत्र किया जाने वाला धार्मिक कर
iii. युद्ध में लूटे गए माल का राज्य का हिस्सा
iv. किसानों से एकत्र किया जाने वाला भूमि कर
(1) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(2) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(3) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(4) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

18. दिल्ली सल्तनत के दौरान 'आमिल' (या आमिन) का कार्य क्या था?
(1) वह परगना स्तर का राजस्व अधिकारी था।
(2) वह शाही अंगरक्षकों का कमांडर था।
(3) वह मुख्य काजी था जो न्याय करता था।
(4) वह शाही पत्राचार का प्रभारी अधिकारी था।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

19. सैयद वंश के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. खिज्र खाँ सैयद वंश का संस्थापक था।
II. खिज्र खाँ ने पैगंबर मुहम्मद का वंशज होने का दावा किया था।
III. सैयद शासकों ने सुल्तान की उपाधि धारण की और तैमूर के उत्तराधिकारियों से संबंध पूर्णतः विच्छेद कर लिए।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

20. निम्नलिखित में से कौन दिल्ली सल्तनत के राजवंशों का सही कालानुक्रमिक क्रम दर्शाता है?
(1) गुलाम - तुगलक - खलजी - सैयद - लोदी
(2) गुलाम - खलजी - तुगलक - सैयद - लोदी
(3) खलजी - गुलाम - तुगलक - लोदी - सैयद
(4) गुलाम - खलजी - सैयद - तुगलक - लोदी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

21. दिल्ली के सुल्तान और उनकी संबंधित उपलब्धि/घटना का कौन सा युग्म गलत सुमेलित है?
(1) सिकंदर लोदी - सामरिक शहर आगरा की स्थापना और औपचारिक आधारशिला।
(2) इब्राहिम लोदी - पानीपत के प्रथम युद्ध के दौरान बाबर की सेना द्वारा उसकी निर्णायक हार।
(3) बहलोल लोदी - भूमि माप के लिए 'गज-ए-सिकंदरी' प्रणाली की शुरुआत।
(4) कुतुबुद्दीन ऐबक - अजमेर में अढ़ाई दिन का झोंपड़ा मस्जिद का प्रारंभिक निर्माण।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

22. निम्नलिखित में से कौन दिल्ली सल्तनत के दौरान 'खालसा' भूमि को सर्वोत्तम रुप से परिभाषित करता है?
(1) धार्मिक या शैक्षणिक संस्थानों को उनके दीर्घकालिक रख-रखाव के लिए दी गई विशिष्ट भूमि।
(2) शाही कोष के लिए केंद्र सरकार द्वारा प्रशासित राज्य के स्वामित्व वाली भूमि।
(3) सैनिकों की एक निर्दिष्ट संख्या बनाए रखने के लिए सैन्य कमांडरों को दिए गए राजस्व आवंटन।
(4) प्रत्यक्ष राज्य सहायता के अंतर्गत स्थानीय किसानों द्वारा कृषि योग्य बनाई गई बंजर भूमि।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

23. भारत में प्रथम अफगान साम्राज्य की स्थापना किस वंश द्वारा की गई थी?
(1) खलजी वंश
(2) तुगलक वंश
(3) सैयद वंश
(4) लोदी वंश
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

55. दिल्ली सल्तनत के दौरान व्यापार और वाणिज्य के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) मुल्तानी और गुजराती बनिया उस काल के सबसे प्रमुख व्यापारिक समूहों के रूप में पहचाने जाते थे।
(2) एक विकसित आंतरिक व्यापार नेटवर्क ने प्रमुख शहरी केंद्रों तक अनाज की निरंतर आपूर्ति को सुगम बनाया।
(3) स्थानीय स्तर पर 'हुंडी' (विनिमय पत्र) के प्रचलन ने लंबी दूरी के वित्तीय सौदों को सरल बना दिया।
(4) मध्य पूर्व और दक्षिण-पूर्व एशिया को भारतीय वस्त्रों और मसालों के निर्यात का पूर्णतः बंद हो जाना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

56. दिल्ली सल्तनत की वास्तुकला के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद का निर्माण ध्वस्त हिंदू और जैन मंदिरों की सामग्री का उपयोग करके किया गया था।
II. अलाई दरवाजा भारत में वैज्ञानिक रूप से सटीक शुद्ध मेहराब और गुंबद का उपयोग करने वाली प्रथम संरचनाओं में से एक है।
III. तुगलक वास्तुकला की विशेषता ढलवां दीवारें और सजावटी तत्वों का न्यूनतम उपयोग है।
IV. लोदी मकबरे विशेष रूप से वर्गाकार हैं और उनमें अष्टकोणीय डिजाइन का पूर्णतः अभाव है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से संयोजन सही है/हैं?
(1) केवल I, II और IV
(2) केवल I, II और III
(3) केवल II, III और IV
(4) केवल I, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

57. सूची I (सल्तनत प्रशासनिक शब्द) को सूची II (अर्थ) के साथ सुमेलित करें और सही उत्तर चुनें।
सूची I: (सल्तनत प्रशासनिक शब्द)
A. वज़ीर
B. आरिज़-ए-मुमालिक
C. काज़ी-उल-कुज़ात
D. सद्र-उस-सुदुर
सूची II: (अर्थ)
i. धार्मिक मामलों और बंदोबस्ती का मंत्री
ii. मुख्य न्यायाधीश
iii. प्रधान मंत्री / वित्त मंत्री
iv. सैन्य विभाग का प्रमुख
(1) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(2) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(3) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(4) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

58. मध्यकालीन भारतीय कृषि कराधान और सल्तनत की कृषि नीतियों के संदर्भ में विषम को चुनें।
(1) दीवान-ए-इंशा
(2) सोंधर
(3) तकावी
(4) दीवान-ए-कोही
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

59. अलाउद्दीन खलजी द्वारा निर्मित अलाई दरवाजा का वास्तुशिल्प महत्व क्या है?
(1) यह बिना भारतीय शिल्पकारों के बनाया गया प्रथम विशुद्ध इस्लामी स्मारक था।
(2) यह मुख्य रूप से चांदी के टंका जारी करने के लिए केंद्रीय शाही टकसाल के रूप में कार्य करता था।
(3) इसका निर्माण गुजरात की विजय के उपलक्ष्य में एक भव्य विजय स्मारक के रूप में किया गया था।
(4) यह कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद का दक्षिणी प्रवेश द्वार था और इसमें परिपक्व सेल्जुक विशेषताएं प्रदर्शित थीं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

60. नर्मदा नदी पार करने और दक्षिण भारत में सैन्य अभियान चलाने वाला दिल्ली का प्रथम सुल्तान कौन था?
(1) इल्तुतमिश
(2) अलाउद्दीन खलजी
(3) बलबन
(4) मुहम्मद बिन तुगलक
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

61. निम्नलिखित प्रशासनिक विशेषताओं पर consider करें:
I. साम्राज्य का इक्ताओं में विभाजन
II. मुक्ती या वाली की नियुक्ति
III. केवल नकद वेतन पाने वाली केंद्रीय स्थायी सेना का सुदृढ़ीकरण
IV. सैनिकों का हुलिया रखना
V. मनसबदारी प्रणाली की शुरुआत
कौन सा संयोजन अलाउद्दीन खलजी द्वारा शुरु किए गए सैन्य और प्रशासनिक सुधारों का सही प्रतिनिधित्व करता है?
(1) केवल I, II, III और V
(2) केवल II, III, IV और V
(3) केवल I, II, III और IV
(4) केवल I, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

62. दिल्ली सल्तनत में उलेमाओं का काफी प्रभाव था क्योंकि:
(1) वे विशाल निजी सेनाएं रखते थे जो किसी भी सुल्तान को पदच्युत करने में सक्षम थीं।
(2) समस्त अंतरराष्ट्रीय व्यापार मार्गों और सीमा शुल्क के संग्रह पर उनका सीधा नियंत्रण था।
(3) सुल्तान के शाही उत्तराधिकार के संबंध में किसी भी निर्णय को निरस्त करने की कानूनी शक्ति उन्हें प्राप्त थी।
(4) वे इस्लामी कानून (शरिया) की व्याख्या करते थे, जिसने

Click Here to Buy book on Amazon

शाही कारखानों को भंग कर दिया।
IV. उसने राज्य की नहरों का उपयोग करने वाले किसानों पर 'शर्ब' (सिंचाई कर) लगाया।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से संयोजन सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, II और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) केवल I, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

32. अलाउद्दीन खलजी के दरबार में वह प्रसिद्ध कवि कौन था, जिसे सितार और तबला के आविष्कार का श्रेय दिया जाता है और जिसे 'भारत का तोता' (तूतिए-ए-हिन्द) कहा जाता है?
(1) मलिक मुहम्मद जायसी
(2) अमीर खुसरो
(3) अल-बिरूनी
(4) हसन निजामी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

33. सूची I (यात्री) को सूची II (उनकी यात्रा के दौरान सुल्तान) के साथ सुमेलित करें और सही उत्तर चुनें।
सूची I: (यात्री)
A. इब्न बतूता
B. मार्को पोलो
C. अब्दुर रज्जाक
D. अल-बिरूनी

सूची II: (उनकी यात्रा के दौरान सुल्तान)
i. महमूद गजनवी
ii. मुहम्मद बिन तुगलक
iii. जलालुद्दीन खलजी / पांड्य साम्राज्य काल
iv. देव राय II (विजयनगर)

(1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

34. निम्नलिखित वास्तुशिल्प विशेषताओं पर विचार करें:
I. शुद्ध मेहराब का व्यापक उपयोग
II. विशाल गुंबदों का निर्माण
III. जोड़ने वाली सामग्री के रूप में चूने के गारे का प्रयोग
IV. सजावटी रूपांकनों में मानवीय आकृतियों का व्यापक उपयोग
V. अरबस्क और ज्यामितीय पैटर्न का समावेश

उपरोक्त विशेषताओं का कौन सा संयोजन दिल्ली सल्तनत की वास्तुकला का सही वर्णन करता है?
(1) केवल I, II, III और V
(2) केवल I, II, IV और V
(3) केवल II, III, IV और V
(4) केवल I, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

35. दिल्ली सल्तनत की आर्थिक नीतियों के संबंध में सही कथन की पहचान करें।
(1) केंद्रीय राज्य ने गुजरात के प्रमुख बंदरगाहों से विदेशी समुद्री व्यापार के समस्त रूपों को कड़ाई से प्रतिबंधित कर दिया था।
(2) स्थानीय स्तर पर चरखे के प्रचलन के कारण वस्त्र उत्पादन में आकस्मिक और भारी गिरावट आई।
(3) कारखाने शाही कार्यशालाएँ थीं जो सुल्तान और सेना के लिए विलासिता की वस्तुएं और सैन्य उपकरण बनाती थीं।
(4) मुहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल के दौरान सभी स्वर्ण मुद्राओं को व्यापारिक प्रचलन से पूर्णतः प्रतिबंधित कर दिया गया था।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

36. किस सुल्तान ने स्वयं को 'ईश्वर का प्रतिनिधि' (नियाबत-ए-खुदाई) कहा और राजा को 'ईश्वर की छाया' (जिल्ल-ए-इलाही) माना?
(1) इल्तुतमिश
(2) अलाउद्दीन खलजी
(3) सिकंदर लोदी
(4) गयासुद्दीन बलबन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

37. दिल्ली सल्तनत के दौरान आंतरिक व्यापार के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. गांवों से शहरों तक कृषि उपज पहुंचाने में बंजारों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
II. दिल्ली के मुल्तानी और साह लंबी दूरी के व्यापार में संलग्न प्रमुख समुदाय थे।
III. सुल्तानों द्वारा निर्मित सरायों (विश्राम गृहों) ने भारी शुल्क लगाकर व्यापारियों के आवागमन में बाधा उत्पन्न की।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा संयोजन गलत है?
(1) केवल I
(2) केवल III
(3) केवल I और II
(4) केवल II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

38. सत्ता के केंद्रीकरण के लिए किस शासक द्वारा 'तुर्कान-ए-चहलगानी' (चालीस दासों का समूह) का व्यवस्थित विनाश किया गया था?
(1) रजिया सुल्तान
(2) गयासुद्दीन बलबन
(3) अलाउद्दीन खलजी
(4) मुहम्मद बिन तुगलक
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

39. निम्नलिखित में से कौन सा क्रम मुहम्मद बिन तुगलक के प्रमुख प्रशासनिक प्रयोगों के सही क्रम को दर्शाता है?
(1) दोआब में कराधान → राजधानी परिवर्तन → सांकेतिक

24. सूची I (साहित्यिक कृतियां) को सूची II (लेखक) के साथ सुमेलित करें और सही उत्तर चुनें।

सूची I: (साहित्यिक कृतियां)

A. तबकात-ए-नासिरी

B. तारीख-ए-फिरोज शाही

C. खजाइन-उल-फुतूह

D. ताज-उल-मासिर

सूची II: (लेखक)

i. अमीर खुसरो

ii. मिन्हाज-उस-सिराज

iii. हसन निजामी

iv. जियाउद्दीन बरनी

(1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii

(2) A-iv, B-ii, C-iii, D-i

(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii

(4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii

(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

25. दिल्ली सल्तनत की अर्थव्यवस्था से संबंधित निम्नलिखित शब्दों में से विषम को चुनें।

(1) टंका

(2) जीतल

(3) दाम

(4) अधा

(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

26. निम्नलिखित में से किसे 15वीं शताब्दी में दिल्ली सल्तनत के पतन का सबसे उपयुक्त कारण माना जाता है?

(1) उत्तराधिकार के निश्चित कानून का अभाव जिससे गृह युद्ध और क्षेत्रीय स्वतंत्रता की स्थिति बनी।

(2) दिल्ली की स्थानीय राजनीति में अब्बासी खलीफा का निरंतर और प्रत्यक्ष प्रशासनिक हस्तक्षेप।

(3) पूर्णतः धर्मनिरपेक्ष राज्य नीति को अपनाना जिससे प्रभावशाली और रूढ़िवादी उलेमा पृथक हो गए।

(4) स्थायी मंगोल उपस्थिति के कारण मध्य एशिया के साथ महत्वपूर्ण थल व्यापार का पूर्णतः बंद हो जाना।

(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

27. निम्नलिखित वास्तुशिल्प स्मारकों पर विचार करें:

I. अलाई दरवाजा

II. गयासुद्दीन तुगलक का मकबरा

III. हौज खास

IV. सीरी का किला

उपरोक्त वास्तुशिल्प परियोजनाओं में से कौन सी अलाउद्दीन खलजी के शासनकाल से संबंधित हैं?

(1) केवल I, II और IV

(2) केवल I, III और IV

(3) केवल II और III

(4) केवल I और IV

(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

28. इल्तुतमिश के मुद्रा सुधारों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

कथन I: इल्तुतमिश ने चांदी का 'टंका' और तांबे का 'जीतल' प्रचलित किया, जो सल्तनत की मानक मुद्रा बन गई।

कथन II: इल्तुतमिश भारत में विशुद्ध रूप से अरबी मुद्रा चलाने वाला पहला तुर्क शासक था।

उपरोक्त कथनों के संबंध में सही उत्तर चुनें:

(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।

(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।

(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।

(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।

(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

29. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं — कथन (A) और कारण (R)। उनके बीच संबंध का वर्णन करने के लिए सही विकल्प चुनें।

कथन (A): अलाउद्दीन खलजी ने जागीर प्रणाली को समाप्त कर दिया और अपने सैनिकों को नकद भुगतान करना शुरू किया।

कारण (R): उसे मंगोल आक्रमणों से बचाव और अपने साम्राज्य के विस्तार के लिए एक विशाल स्थायी सेना बनाए रखने की आवश्यकता थी, जिसके लिए राज्य के राजस्व पर प्रत्यक्ष नियंत्रण आवश्यक था।

(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।

(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।

(3) A सही है लेकिन R गलत है।

(4) A गलत है लेकिन R सही है।

(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

30. निम्नलिखित स्मारकों को उनके निर्माण के सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:

I. सीरी का किला

II. कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद

III. लोदी गार्डन (मकबरे)

IV. तुगलकाबाद का किला

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही क्रम चुनें:

(1) II, I, IV, III

(2) I, II, III, IV

(3) II, IV, I, III

(4) IV, II, I, III

(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

31. फिरोज शाह तुगलक के प्रशासन के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

I. उसने निर्धन मुस्लिम बालिकाओं के विवाह के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करने हेतु 'दीवान-ए-खैरात' बनाया।

II. उसने नहरों और नगरों के निर्माण के लिए एक लोक निर्माण विभाग की स्थापना की।

III. उसने दास प्रथा पर कड़ाई से प्रतिबंध लगा दिया और

Downloaded from www.pdf.tube

(1) 1388 ई.
(2) 1398 ई.
(3) 1414 ई.
(4) 1451 ई.
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

48. बलबन की प्रशासनिक नीतियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. उसने 'दीवान-ए-अर्ज़' नामक एक पृथक सैन्य विभाग की स्थापना की।
II. उसने रईसों के बारे में स्वयं को सूचित रखने के लिए 'बरीद' नामक जासूस नियुक्त किए।
III. उसने विद्रोहों को दबाने के लिए 'लौह और रक्त' की नीति का कड़ाई से पालन किया।
IV. उसने शाही प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए पौराणिक ईरानी राजा अफ़रासियाब के वंशज होने का दावा किया।
V. उसने आम जनता के लिए अधिक सुलभ होने के लिए दरबारी शिष्टाचार के कठोर नियमों को समाप्त कर दिया।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से संयोजन सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III और IV
(2) केवल II, III, IV और V
(3) केवल I, III, IV और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

49. सूची I (उपाधियाँ/नाम) को सूची II (सुल्तान) के साथ सुमेलित करें और सही उत्तर चुनें।
सूची I: (उपाधियाँ/नाम)
A. लाख बख्श
B. सिकंदर-ए-सानी
C. सिक्कों का राजकुमार
D. उलूग खाँ
सूची II: (सुल्तान)
i. अलाउद्दीन खलजी
ii. कुतुबुद्दीन ऐबक
iii. गयासुद्दीन बलबन
iv. मुहम्मद बिन तुगलक
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

50. दिल्ली सल्तनत के शासक और उनके संबंधित प्रशासनिक उपाय के गलत युग्म की पहचान करें।
(1) 'दीवान-ए-अमीर कोही' (कृषि विभाग) की स्थापना - फिरोज शाह तुगलक
(2) इल्तुतमिश - 'तुर्कान-ए-चहलगानी' का गठन
(3) अलाउद्दीन खलजी - 'दाग' (घोड़ों को दागना) और 'चेहरा' (सैनिकों का विवरण) की शुरुआत
(4) सिकंदर लोदी - राजधानी को दिल्ली से आगरा स्थानांतरित करना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

51. वह कौन सी तत्काल पृष्ठभूमि की घटना थी जिसने कुतुबुद्दीन ऐबक को भारत में स्वतंत्र शासन स्थापित करने की अनुमति दी?
(1) सिंधु नदी पर मंगोलों की करारी हार
(2) बगदाद में अब्बासी खिलाफत का पतन
(3) 1206 ईस्वी में मुहम्मद गोरी की हत्या
(4) इल्तुतमिश के विरुद्ध एक सफल सैन्य तख्तापलट
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

52. उत्तरवर्ती तुगलक और सैयद काल के दौरान कमजोर केंद्रीय सत्ता का प्रमुख राजनीतिक परिणाम क्या था?
(1) धार्मिक उलेमाओं के हाथों में समस्त कार्यकारी शक्तियों का पूर्ण केंद्रीकरण।
(2) अधिकांश उत्तर भारत में एक एकीकृत राजपूत साम्राज्य की सफल स्थापना।
(3) आने वाली पुर्तगाली नौसेना द्वारा भारतीय उपमहाद्वीप की तत्काल विजय।
(4) गुजरात, मालवा और जौनपुर जैसे स्वतंत्र प्रांतीय राज्यों का उदय।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

53. रजिया सुल्तान के प्रति रईसों के विरोध के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. वे उसके स्वतंत्र तौर-तरीकों और कठपुतली शासक बनने से इनकार करने से क्षुब्ध थे।
II. जमालुद्दीन याकूत जैसे गैर-तुर्कों की उसकी नियुक्तियों ने तुर्की एकाधिकार को क्रोधित कर दिया।
III. उसने खिलाफत पर अकारण आक्रमण किया, जिससे उसकी धार्मिक वैधता समाप्त हो गई।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से संयोजन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

54. अलाउद्दीन खलजी के अधीन भू-राजस्व प्रणाली के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
कथन I: अलाउद्दीन खलजी के शासन में, राज्य ने दोआब क्षेत्र में कृषि उपज का आधा भाग भू-राजस्व (खराज) के रूप में निर्धारित किया था।
कथन II: अलाउद्दीन खलजी की भू-राजस्व प्रणाली फसल-बंटवारे के स्थान पर भूमि की माप (मसाहत) पर आधारित थी।
उपरोक्त कथनों के संबंध में सही उत्तर चुनें:
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।

(4) जलालुद्दीन खलजी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

8. अलाउद्दीन खलजी ने किस वर्ष चौहान शासक हम्मीर देव से रणथंभौर का किला जीता था?
(1) 1299 ई.
(2) 1301 ई.
(3) 1303 ई.
(4) 1311 ई.
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

9. सूची I (अलाउद्दीन खलजी के राजपुताना अभियान) को सूची II (पराजित शासक) के साथ सुमेलित करें और सही उत्तर चुनें।
सूची I: (अलाउद्दीन खलजी के राजपुताना अभियान)
A. रणथंभौर
B. चित्तौड़
C. सिवाना
D. जालौर
सूची II: (पराजित शासक)
i. रावल रतन सिंह
ii. हम्मीर देव चौहान
iii. कान्हड़ देव
iv. सीतल देव
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

10. अलाउद्दीन खलजी के निम्नलिखित अभियानों को सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
I. चित्तौड़ की विजय
II. गुजरात की विजय
III. जालौर की विजय
IV. रणथंभौर की विजय
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही क्रम चुनें:
(1) II, IV, I, III
(2) IV, II, I, III
(3) II, I, IV, III
(4) I, II, III, IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

11. दिल्ली के बाजारों को कड़ाई से नियंत्रित करने और यह सुनिश्चित करने के लिए कि सामग्री निश्चित मूल्यों पर बेची जाए, अलाउद्दीन खलजी द्वारा किस अधिकारी को नियुक्त किया गया था?
(1) अमीर-ए-आखुर
(2) बरीद-ए-मुमालिक
(3) वाकया-नवीस
(4) शहना-ए-मंडी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

12. फिरोज शाह तुगलक के शासनकाल के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. उसने दासों के लिए 'दीवान-ए-बंदगान' नामक एक पृथक विभाग की स्थापना की।
II. उसने सिंचाई के लिए नहरों का जाल बिछाया, जिसमें सतलुज से हांसी तक की एक नहर भी शामिल थी।
III. उसने धार्मिक सद्भाव को बढ़ावा देने के लिए ब्राह्मणों पर से जजिया कर हटा दिया था।
IV. उसने दिल्ली में 'दार-उल-शफा' नामक एक धर्मार्थ चिकित्सालय की स्थापना की।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा संयोजन गलत है?
(1) केवल I और II
(2) केवल III
(3) केवल II और IV
(4) केवल I, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

13. मुहम्मद बिन तुगलक की नीतियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
कथन I: मुहम्मद बिन तुगलक द्वारा सांकेतिक मुद्रा का प्रचलन विफल रहा क्योंकि राज्य के पास सिक्कों की ढलाई पर एकाधिकार नहीं था।
कथन II: मुहम्मद बिन तुगलक द्वारा जारी तांबे के सिक्के इतने जटिल रुपांकन के थे कि स्थानीय सुनार उनकी जाली प्रति नहीं बना सकते थे।
उपरोक्त कथनों के संबंध में सही उत्तर चुनें:
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

14. मुहम्मद बिन तुगलक के खुरासान अभियान की विफलता का प्राथमिक कारण क्या था?
(1) प्लेग का भीषण प्रकोप जिसने शाही सेना के एक बड़े भाग को नष्ट कर दिया।
(2) सेना के प्रस्थान की पूर्व संध्या पर सुल्तान की आकस्मिक और अप्रत्याशित मृत्यु।
(3) बंगाल और दक्कन में विभिन्न प्रांतीय गवर्नरों द्वारा किए गए व्यापक आंतरिक विद्रोह।
(4) मध्य एशिया में राजनीतिक स्थिरता की बहाली और क्षेत्रीय सहयोगियों की वापसी।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

15. निम्नलिखित नीतियों और परियोजनाओं पर विचार करें:
I. सांकेतिक मुद्रा का प्रचलन
II. दौलताबाद को राजधानी का स्थानांतरण
III. दोआब क्षेत्र में कराधान
IV. खुरासान अभियान
V. कराचिल अभियान
कौन सा संयोजन मुहम्मद बिन तुगलक द्वारा शुरू की गई

Click Here to Buy book on Amazon

सुल्तान के शासन को सैद्धांतिक आधार प्रदान किया।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

63. सैयद वंश के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
कथन I: सैयद वंश के शासकों ने कभी भी अपने नाम से सिक्के नहीं ढाले, वे तुगलक शासकों या तैमूर के वंशजों के नामों का उपयोग करते रहे।
कथन II: सैयद वंश ने खलजियों की तुलना में विस्तृत साम्राज्य पर नियंत्रण रखा था।
उपरोक्त कथनों के संबंध में सही उत्तर चुनें:
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

64. बहलोल लोदी का राजत्व सिद्धांत तुर्क सुल्तानों से मौलिक रूप से भिन्न था क्योंकि:
(1) उसने शासन करने के दैवीय अधिकार का दावा किया और प्रशासन पर पूर्ण तानाशाही नियंत्रण रखा।
(2) वह अफगान रईसों के साथ समान व्यवहार करता था, और स्वयं को 'समानों में प्रथम' (मसनद-ए-आली) कहता था।
(3) उसने समस्त राज्य नीतियों को मिस्र के खलीफा के प्रत्यक्ष अधिकार के अधीन कर दिया था।
(4) उसने शक्तिशाली स्थानीय आदिवासी सरदारों को प्रसन्न करने के लिए पारंपरिक राजपूत दरबारी रीतियों को अपनाया।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

65. दिल्ली सल्तनत पर तैमूर के आक्रमण (1398) का प्रत्यक्ष आर्थिक परिणाम क्या था?
(1) मध्य एशियाई चांदी का सल्तनत के शाही कोष में बड़े पैमाने पर आगमन।
(2) दिल्ली की समृद्धि का पतन, जिससे शिल्पकारों और व्यापारियों का प्रांतीय राज्यों की ओर पलायन हुआ।
(3) गुजरात के बंदरगाहों से होने वाले विदेशी व्यापार की मात्रा में तत्काल वृद्धि।
(4) सुदूर मालाबार तट का दिल्ली सल्तनत के क्षेत्र में स्थायी विलय।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

66. दिल्ली सल्तनत काल के दौरान कारखानों के संबंध में सही कथन की पहचान करें।
(1) वे शाही कार्यशालाएँ थीं जहाँ राजघराने और राज्य के विभागों के लिए आवश्यक सामग्री निर्मित की जाती थी।
(2) वे पूर्णतः उन विदेशी यूरोपीय व्यापारियों द्वारा प्रबंधित थे जिनके पास विशिष्ट शाही व्यापार पत्र था।
(3) उन्हें विशेष रूप से मध्य एशियाई अश्व व्यापारियों के लिए निर्मित मुक्त व्यापार क्षेत्रों के रूप में स्थापित किया गया था।
(4) वे विशुद्ध रूप से अकाल के समय निःशुल्क भोजन प्रदान करने वाले धर्मार्थ संस्थान थे।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

67. 'दीवान-ए-विज़ारत' के नाम से जाना जाने वाला केंद्रीय विभाग मुख्य रूप से किससे संबंधित था?
(1) धार्मिक बंदोबस्ती और दान
(2) शाही सेना का संगठन
(3) वित्तीय और राजस्व मामले
(4) विदेशी पत्राचार और खुफिया जानकारी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

68. किसी विद्रोह और उस सुल्तान, जिसके शासनकाल में वह घटित हुआ, के गलत युग्म की पहचान करें।
(1) बंगाल में तुगरिल खाँ का विद्रोह - गयासुद्दीन बलबन
(2) कुतलुग ख्वाजा के नेतृत्व में मंगोल आक्रमण - अलाउद्दीन खलजी
(3) सीधी मौला का विद्रोह - जलालुद्दीन खलजी
(4) दक्कन में 'अमीरान-ए-सादा' का विद्रोह - फिरोज शाह तुगलक
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

69. दिल्ली सल्तनत के प्रांतीय प्रशासन में 'शिकदार' की प्राथमिक जिम्मेदारी क्या थी?
(1) वह प्रांत के भीतर आध्यात्मिक मार्गदर्शन के लिए उत्तरदायी मुख्य धार्मिक अधिकारी था।
(2) वह स्थानीय ग्राम स्तर पर संचालित खुफिया और जासूसी नेटवर्क का प्रमुख था।
(3) वह एक शिक (जिले) के भीतर विधि और व्यवस्था बनाए रखने का प्रभारी कार्यकारी अधिकारी था।
(4) उसे विशेष रूप से वृहद सिंचाई नहरों के अभियांत्रिकी और निर्माण का कार्य सौंपा गया था।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

70. फिरोज शाह तुगलक ने एक अनुवाद विभाग की स्थापना किसलिए की थी?
(1) यूरोपीय वैज्ञानिक ग्रंथों का फारसी में अनुवाद करने के लिए
(2) आयुर्वेद और संगीत पर संस्कृत ग्रंथों का फारसी में अनुवाद करने के लिए
(3) कुरान का स्थानीय भारतीय भाषाओं में अनुवाद करने के लिए
(4) मंगोल सैन्य नियमावलियों का अरबी में अनुवाद करने के लिए
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

71. कुतुब मीनार की वास्तुकला के संबंध में गलत कथन की पहचान करें।
(1) इसका निर्माण कुतुबुद्दीन ऐबक द्वारा प्रारंभ और इल्तुतमिश द्वारा पूर्ण किया गया था।
(2) वज्रपात से क्षतिग्रस्त होने के बाद फिरोज शाह तुगलक

Downloaded from www.pdf.tube

57. (1) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
दिल्ली सल्तनत के केंद्रीय प्रशासन में वज़ीर प्रधान मंत्री होता था जो मुख्य रूप से वित्तीय और राजस्व मामलों का प्रबंधन करता था। आरिज़-ए-मुमालिक सैन्य विभाग का प्रमुख था, जिसका कार्य सेना की भर्ती और रसद की देखभाल करना था। काज़ी-उल-कुज़ात राज्य का मुख्य न्यायाधीश था, जबकि सद्र-उस-सुदुर धार्मिक मामलों, दान और बंदोबस्ती का प्रभारी होता था। यह सुव्यवस्थित प्रशासनिक ढांचा राज्य की स्थिरता और शासन के विभिन्न पहलुओं के कुशल संचालन को सुनिश्चित करने के लिए अत्यंत आवश्यक माना जाता था।

58. (1) दीवान-ए-इंशा
दीवान-ए-इंशा शाही पत्राचार और सरकारी दस्तावेजों के प्रारूप तैयार करने वाला विभाग था, जिसका कृषि नीतियों से कोई सीधा संबंध नहीं था। इसके विपरीत, सोंधर और तकावी कृषकों को दिए जाने वाले अल्पकालिक ऋण थे, और दीवान-ए-कोही मुहम्मद बिन तुगलक द्वारा स्थापित समर्पित कृषि विभाग था। अतः कृषि कराधान और ग्रामीण विकास के संदर्भ में दीवान-ए-इंशा एक विषम विकल्प है। अन्य तीन शब्द प्रत्यक्ष रूप से सल्तनत काल की कृषि व्यवस्था और कृषकों की आर्थिक सहायता से संबंधित महत्वपूर्ण प्रशासनिक शब्दावली हैं।

59. (4) यह कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद का दक्षिणी प्रवेश द्वार था और इसमें परिपक्व सेल्जुक विशेषताएं प्रदर्शित थीं।
1311 ई. में निर्मित अलाई दरवाजा दिल्ली सल्तनत की वास्तुकला का एक मील का पत्थर है। यह कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद के दक्षिणी प्रवेश द्वार के रूप में बनाया गया था और इसमें परिपक्व इस्लामी स्थापत्य शैलियों का समावेश है। यह भारत की पहली ऐसी इमारत है जिसमें वैज्ञानिक रूप से सटीक गुंबद और मेहराब का निर्माण किया गया है। इसके लाल बलुआ पत्थर और सफेद संगमरमर का संयोजन तथा जटिल नक्काशी इसे अद्वितीय बनाती है। इसकी बनावट में मध्य एशियाई प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

60. (2) अलाउद्दीन खलजी
अलाउद्दीन खलजी दिल्ली का पहला सुल्तान था जिसने विंध्य पर्वतमाला और नर्मदा नदी को पार कर दक्षिण भारत में बड़े पैमाने पर सैन्य अभियान संचालित किए। उसके सेनापति मलिक काफूर ने देवगिरी, वारंगल, द्वारसमुद्र और मदुरै तक विजय पताका फहराई थी। इन अभियानों का मुख्य उद्देश्य दक्षिणी राज्यों को अधीन करना और वहां से भारी मात्रा में धन और संपत्ति प्राप्त करना था। अलाउद्दीन ने इन क्षेत्रों को सीधे शासन में मिलाने के बजाय उन्हें कर देने वाले अधीनस्थ राज्यों के रूप में बनाए रखा था।

61. (3) केवल I, II, III और IV
अलाउद्दीन खलजी ने सल्तनत के प्रशासनिक और सैन्य ढांचे में क्रांतिकारी सुधार किए थे। उसने साम्राज्य को सुनियोजित इक्ताओं में विभाजित किया और विश्वसनीय अधिकारी नियुक्त किए। उसने एक विशाल केंद्रीय स्थायी सेना का गठन किया जिसे सीधे कोष से नकद वेतन दिया जाता था। घोड़ों की अदला-बदली रोकने के लिए दाग प्रथा और सैनिकों के पहचान विवरण के लिए चेहरा प्रणाली शुरू की गई। मनसबदारी प्रणाली का प्रयोग इस काल में नहीं हुआ था, क्योंकि वह बहुत बाद में मुगलों द्वारा शुरू की गई थी।

62. (4) वे इस्लामी कानून (शरिया) की व्याख्या करते थे, जिसने सुल्तान के शासन को सैद्धांतिक आधार प्रदान किया।
दिल्ली सल्तनत एक धर्मप्रधान राज्य की प्रकृति रखती थी, जहाँ धार्मिक वर्ग का सुल्तान पर गहरा प्रभाव था। उलेमाओं की मुख्य शक्ति इस्लामी कानून की व्याख्या करने में निहित थी, जो राज्य के शासन और न्याय व्यवस्था का आधार था। सुल्तान को अपनी वैधता बनाए रखने के लिए उलेमाओं का समर्थन आवश्यक था, विशेषकर धार्मिक और कानूनी मामलों में। यद्यपि अलाउद्दीन और मुहम्मद बिन तुगलक जैसे सुल्तानों ने उनके राजनीतिक प्रभाव को कम करने का प्रयास किया, किंतु वे सामाजिक रूप से प्रभावशाली बने रहे।

63. (2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
सैयद वंश के शासकों के बारे में दिए गए दोनों कथन ऐतिहासिक रूप से गलत हैं। सैयद शासकों ने अपने स्वयं के सिक्के ढाले थे, यद्यपि उन पर पूर्ववर्ती तुगलक राजाओं के नामों का भी उल्लेख मिलता था। साथ ही, सैयद वंश का साम्राज्य अत्यंत सीमित था और वह केवल दिल्ली और आसपास के कुछ क्षेत्रों तक ही सिमट गया था, जो खलजी वंश के विशाल साम्राज्य के सामने बहुत छोटा था। सैयद काल वास्तव में दिल्ली सल्तनत के निरंतर विघटन और संकुचन का एक कमजोर राजनीतिक दौर माना जाता है।

64. (2) वह अफगान कुलीनों के साथ समान व्यवहार करता था, और स्वयं को 'समानों में प्रथम' कहता था।
बहलोल लोदी का राजत्व सिद्धांत तुर्की सुल्तानों के निरंकुश और दैवीय सिद्धांतों से बिल्कुल अलग था। उसने अफगान कबीलाई परंपराओं का सम्मान करते हुए खुद को एक निरंकुश शासक के बजाय 'समानों में प्रथम' के रूप में प्रस्तुत किया। वह अपने कुलीनों के साथ कालीन पर बैठता था और उन्हें 'मसनद-ए-आली' कहकर संबोधित करता था। उसका मुख्य उद्देश्य शक्तिशाली अफगान सरदारों का विश्वास और सहयोग प्राप्त करना था ताकि दिल्ली की सत्ता को फिर से स्थापित और सुदृढ़ किया जा सके।

65. (2) दिल्ली की समृद्धि का पतन, जिससे शिल्पकारों और व्यापारियों का प्रांतीय राज्यों की ओर पलायन हुआ।
तैमूर के 1398 ई. के आक्रमण ने दिल्ली की आर्थिक और सांस्कृतिक नींव को हिलाकर रख दिया। बड़े पैमाने पर लूटपाट और विनाश के कारण दिल्ली की सदियों पुरानी समृद्धि समाप्त हो गई। इस अराजकता के कारण कुशल शिल्पकार, विद्वान और व्यापारी दिल्ली छोड़कर उभरते हुए प्रांतीय राज्यों जैसे गुजरात, मालवा और जौनपुर की ओर पलायन कर गए। इससे दिल्ली की केंद्रीयता समाप्त हो गई और क्षेत्रीय संस्कृतियों तथा अर्थव्यवस्थाओं का विकास हुआ। यह दिल्ली के लिए एक महान आर्थिक और मानवीय आपदा सिद्ध हुई थी।

NODIA

कथन (A): अलाउद्दीन खलजी ने दिल्ली में कड़े मूल्य नियंत्रण लागू किए और अनाज की राशनिंग की।
कारण (R): वह सामान्य किसानों की निर्धनता दूर करना और धन का समान वितरण करना चाहता था।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

80. प्रसिद्ध सूफी संत निजामुद्दीन औलिया दिल्ली के कई सुल्तानों के शासनकाल के साक्षी रहे। किस सुल्तान ने उन्हें धमकी दी थी, जिसके उत्तर में संत ने "हुनूज़ दिल्ली दूर अस्त" कहा था?
(1) अलाउद्दीन खलजी
(2) गयासुद्दीन तुगलक
(3) मुबारक शाह खलजी
(4) मुहम्मद बिन तुगलक
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

www.nodia.in

Click Here to Buy book on Amazon

समूह का सदस्य था, ने सुल्तान बनने के बाद इस शक्ति को अपनी सत्ता के लिए खतरा माना। उसने बहुत ही क्रूरता और कूटनीति से इस समूह के सदस्यों का दमन किया और उनकी शक्तियों को पूर्णतः समाप्त कर दिया। इस कदम से सुल्तान का प्रशासन पर सीधा और निरंकुश नियंत्रण स्थापित होना संभव हो सका।

39. (1) दोआब में कराधान → राजधानी परिवर्तन → सांकेतिक मुद्रा → खुरासान अभियान
मुहम्मद बिन तुगलक के प्रशासनिक प्रयोगों का सही क्रम उसके शासन के प्रारंभिक वर्षों से निर्धारित है। उसने सर्वप्रथम राजकोष को भरने के लिए उपजाऊ दोआब क्षेत्र में करों में अत्यधिक वृद्धि की थी। इसके बाद उसने 1327 ई. में राजधानी को दिल्ली से दौलताबाद स्थानांतरित करने का निर्णय लिया। 1329-30 ई. में सांकेतिक मुद्रा का प्रयोग किया गया और इसके पश्चात खुरासान अभियान की योजना बनाई गई। इन सभी योजनाओं की असफलता ने उसके शासनकाल को विवादित और चुनौतीपूर्ण बना दिया था।

40. (1) इल्तुतमिश द्वारा इसकी शुरुआत से ही इक्ता प्रणाली पूर्णतः वंशानुगत थी।
इल्तुतमिश ने जब इक्ता प्रणाली की शुरुआत की थी, तब यह पूर्णतः गैर-वंशानुगत थी और इक्तादारों का नियमित स्थानांतरण किया जाता था। इसका उद्देश्य स्थानीय अधिकारियों को अत्यधिक शक्तिशाली होने से रोकना था। इक्ता मुख्य रूप से राजस्व आवंटन की एक व्यवस्था थी जिसके बदले में सैन्य सेवा प्रदान करनी होती थी। इक्ता प्रणाली को वंशानुगत बनाने का कार्य बाद में फिरोज शाह तुगलक द्वारा किया गया था। अतः इल्तुतमिश के काल में इसे वंशानुगत कहना ऐतिहासिक रूप से गलत है।

41. (1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
अलाउद्दीन खलजी के बाजार नियंत्रण विभाग में दीवान-ए-रियासत वाणिज्य का प्रभारी मंत्री होता था। शहना-ए-मंडी बाजार का अधीक्षक था जो प्रतिदिन की गतिविधियों की निगरानी करता था। बरीद वे गुप्तचर अधिकारी थे जो सुल्तान को बाजार की स्थिति की रिपोर्ट देते थे। मुनहियान गुप्त एजेंट थे जो बाट, माप और धोखाधड़ी की जांच करते थे। यह विस्तृत और त्रिस्तरीय निगरानी प्रणाली यह सुनिश्चित करने के लिए बनाई गई थी कि सुल्तान द्वारा निर्धारित मूल्यों का कड़ाई से पालन हो।

42. (1) तुगलकाबाद
तुगलकाबाद नगर की स्थापना गयासुद्दीन तुगलक ने की थी, जो तुगलक वंश का संस्थापक था। इसके विपरीत, जौनपुर, हिसार और फतेहाबाद जैसे नगरों को फिरोज शाह तुगलक ने अपने शासनकाल के दौरान बसाया था। जौनपुर का नाम उसने अपने भाई जौना खाँ (मुहम्मद बिन तुगलक) की स्मृति में रखा था। फिरोज शाह को नए नगरों के निर्माण और नहरों के विकास के लिए विशेष रूप से याद किया जाता है। अतः तुगलकाबाद इस सूची में संस्थापक शासक के आधार पर विषम है।

43. (1) केवल I, II और III
गयासुद्दीन तुगलक ने 1320 ई. में तुगलक वंश की स्थापना की और तुगलकाबाद नामक विशाल किलेबंद नगर का निर्माण करवाया। उसके प्रसिद्ध सूफी संत निजामुद्दीन औलिया के साथ संबंध काफी तनावपूर्ण और कटु थे। उसने कृषि को बढ़ावा देने के लिए उदार नीतियां अपनाई थीं, किंतु उसने इक्ता प्रणाली को पूर्णतः समाप्त नहीं किया था। अतः चौथा कथन गलत है क्योंकि इक्ता व्यवस्था उसके समय में भी जारी रही थी। प्रथम तीन कथन उसके शासनकाल की महत्वपूर्ण और सटीक ऐतिहासिक घटनाएं हैं।

44. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
मुहम्मद बिन तुगलक ने 1327 ई. में अपनी राजधानी को दिल्ली से दक्षिण भारत के दौलताबाद स्थानांतरित किया था। इस निर्णय का प्राथमिक उद्देश्य दक्षिण के विजित राज्यों पर बेहतर प्रशासनिक नियंत्रण स्थापित करना था, क्योंकि दौलताबाद भौगोलिक रूप से साम्राज्य के केंद्र में स्थित था। वह इसे एक विशाल और समृद्ध सांस्कृतिक केंद्र के रूप में भी विकसित करना चाहता था। अतः कथन और कारण दोनों सत्य हैं और यह स्पष्ट करते हैं कि स्थानांतरण का उद्देश्य प्रशासनिक सुगमता और केंद्रीकरण था।

45. (3) मोठ की मस्जिद
अलाई दरवाजा, हौज खास और सीरी का दुर्ग अलाउद्दीन खलजी द्वारा निर्मित प्रसिद्ध वास्तुशिल्प स्मारक हैं। अलाई दरवाजा को वैज्ञानिक विधि से बने गुंबद के लिए जाना जाता है। इसके विपरीत, 'मोठ की मस्जिद' का निर्माण लोदी वंश के शासनकाल के दौरान सिकंदर लोदी के प्रधानमंत्री वजीर मियाँ भुइया ने करवाया था। यह मस्जिद लोदी स्थापत्य कला का एक उत्कृष्ट उदाहरण है और अलाउद्दीन के शासनकाल से लगभग दो शताब्दी बाद बनी थी। अतः यह अलाउद्दीन की परियोजनाओं में शामिल नहीं है।

46. (4) धर्मार्थ गतिविधियों के उद्देश्य से धनी मुसलमानों से एकत्र किया जाने वाला एक धार्मिक कर।
दिल्ली सल्तनत के राजस्व प्रशासन में 'जकात' एक अनिवार्य धार्मिक कर था जो केवल संपन्न मुसलमानों पर उनकी संपत्ति और आय पर लगाया जाता था। यह कर मुख्य रूप से समुदाय के निर्धन लोगों की सहायता, विधवाओं और अनाथों के कल्याण जैसे धर्मार्थ कार्यों के लिए सुरक्षित रखा जाता था। यह इस्लामी अर्थशास्त्र के पांच स्तंभों में से एक है। अन्य कर जैसे जजिया गैर-मुसलमानों पर था और खराज भूमि पर था, किंतु जकात पूर्णतः एक धार्मिक और सामाजिक दायित्व के रूप में वसूला जाता था।

NODIA

47. (2) 1398 ई.
मध्य एशियाई विजेता तैमूर लंग ने 1398 ई. में भारत पर भयानक आक्रमण किया और दिल्ली को बुरी तरह लूटा। उस समय दिल्ली पर तुगलक वंश के सुल्तान नसीरुद्दीन महमूद का शासन था। इस आक्रमण ने दिल्ली की शक्ति और प्रतिष्ठा को इतना कम कर दिया कि सल्तनत का पतन अवश्यंभावी हो गया। तैमूर के जाने के पश्चात उत्तर भारत में अराजकता फैल

10. (1) II, IV, I, III
अलाउद्दीन खलजी के सैन्य अभियानों का सही कालक्रम गुजरात से प्रारंभ होकर जालौर तक विस्तृत है। उसने सर्वप्रथम 1299 ई. में गुजरात पर विजय प्राप्त की थी। इसके पश्चात 1301 ई. में रणथंभौर का पतन हुआ और 1303 ई. में चित्तौड़ पर अधिकार किया गया। जालौर की विजय 1311 ई. में पूर्ण हुई थी। यह क्रम अलाउद्दीन की सुनियोजित साम्राज्य विस्तार की नीति को स्पष्ट करता है, जिसके माध्यम से उसने लगभग संपूर्ण उत्तर और मध्य भारत पर अपना प्रभुत्व स्थापित किया था।

11. (4) शहना-ए-मंडी
अलाउद्दीन खलजी ने अपनी विशाल सेना के भरण-पोषण के लिए दिल्ली में कड़े बाजार नियंत्रण और मूल्य निर्धारण की व्यवस्था लागू की थी। इस व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाने और नियमों का उल्लंघन रोकने के लिए 'शहना-ए-मंडी' नामक उच्चाधिकारी की नियुक्ति की गई थी। प्रत्येक बाजार का एक अधीक्षक होता था जो मूल्य सूची और व्यापारियों की गतिविधियों पर दृष्टि रखता था। जमाखोरी रोकने और निश्चित मूल्य पर वस्तुओं की बिक्री सुनिश्चित करना इस अधिकारी का अनिवार्य प्रशासनिक उत्तरदायित्व था।

12. (2) केवल III
फिरोज शाह तुगलक ने ब्राह्मणों पर जजिया कर लगाया था, जिन्हें पूर्व में इस कर से मुक्त रखा गया था। अतः यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि उसने ब्राह्मणों पर से जजिया हटा दिया था। फिरोज शाह ने दासों के लिए पृथक विभाग बनाया और सिंचाई हेतु नहरों का निर्माण कराया। उसने दिल्ली में दार-उल-शफा नामक चिकित्सालय स्थापित किया जहाँ निःशुल्क उपचार मिलता था। उसकी नीतियाँ धार्मिक रूप से रुढ़िवादी थीं और उसने धार्मिक वर्ग को प्रसन्न करने के लिए कई कड़े नियम लागू किए थे।

13. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
मुहम्मद बिन तुगलक द्वारा शुरु की गई सांकेतिक मुद्रा योजना विफल रही क्योंकि राज्य सिक्कों की ढलाई पर नियंत्रण नहीं रख सका। सुल्तान द्वारा जारी तांबे के सिक्के अत्यधिक सरल थे, जिसका लाभ उठाकर स्थानीय लोगों ने बड़े पैमाने पर जाली सिक्के बनाना शुरु कर दिया। प्रत्येक हिंदू का घर एक टकसाल बन गया था, जिससे अर्थव्यवस्था में अराजकता फैल गई। सुल्तान को अंततः इन सिक्कों को वापस लेना पड़ा और उनके बदले राजकोष से स्वर्ण और रजत मुद्राएं देनी पड़ीं।

14. (4) मध्य एशिया में राजनीतिक स्थिरता की बहाली और क्षेत्रीय सहयोगियों की वापसी।
मुहम्मद बिन तुगलक के खुरासान अभियान की विफलता का मुख्य कारण मध्य एशिया की परिवर्तित राजनीतिक स्थितियाँ थीं। जब सुल्तान ने अभियान की तैयारी की, तब वहां अस्थिरता थी, किंतु प्रस्थान से पूर्व ही वहां शांति स्थापित हो गई। साथ ही, सुल्तान के क्षेत्रीय सहयोगियों ने अपना समर्थन वापस ले लिया था। इस योजना के लिए एकत्रित की गई विशाल सेना को एक वर्ष का अग्रिम वेतन दिया गया था, जिससे राजकोष पर अत्यधिक बोझ पड़ा और सुल्तान को यह योजना त्यागनी पड़ी।

15. (4) I, II, III, IV और V
मुहम्मद बिन तुगलक अपने शासनकाल में किए गए विविध प्रयोगात्मक कार्यों के लिए जाना जाता है। उसने सांकेतिक मुद्रा का प्रचलन किया और राजधानी को दिल्ली से दौलताबाद स्थानांतरित किया। उसने दोआब क्षेत्र में करों में वृद्धि की और खुरासान तथा कराचिल जैसे कठिन सैन्य अभियानों की योजना बनाई। यद्यपि ये परियोजनाएं दूरदर्शी थीं, किंतु उनके त्रुटिपूर्ण कार्यान्वयन और प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण वे विफल रहीं। इन असफलताओं ने सुल्तान की प्रतिष्ठा को हानि पहुँचाई और सल्तनत के पतन का मार्ग प्रशस्त किया।

16. (3) A सही है लेकिन R गलत है।
फिरोज शाह तुगलक ने कुलीनों और सैन्य अधिकारियों को प्रसन्न करने के लिए इक्ता प्रणाली को वंशानुगत बना दिया था। यह निर्णय योग्यता-आधारित प्रशासन के सिद्धांतों के विरुद्ध था और इससे सैन्य क्षमता में गिरावट आई। सुल्तान ने यह कदम भ्रष्टाचार रोकने के लिए नहीं, बल्कि मुहम्मद बिन तुगलक के समय हुए असंतोष को शांत करने के लिए उठाया था। अतः कथन सत्य है कि इक्ता वंशानुगत हुई, किंतु कारण गलत है क्योंकि यह सुधार के बजाय मात्र एक समझौतावादी नीति थी।

17. (1) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
दिल्ली सल्तनत की राजस्व प्रणाली में खराज वह भूमि कर था जो मुख्य रुप से कृषकों से वसूला जाता था। खुम्स युद्ध में लूटे गए धन का वह भाग था जिसमें राज्य का हिस्सा निर्धारित होता था। जजिया कर गैर-मुसलमानों पर उनकी सुरक्षा के बदले लगाया जाने वाला कर था। जकात एक अनिवार्य धार्मिक कर था जो केवल संपन्न मुसलमानों से उनकी संपत्ति पर दान के उद्देश्य से एकत्र किया जाता था। ये कर सल्तनत की अर्थव्यवस्था और सामाजिक संरचना के प्रमुख आधार थे।

18. (1) वह परगना स्तर का राजस्व अधिकारी था।
दिल्ली सल्तनत के प्रशासनिक ढांचे में 'आमिल' एक महत्वपूर्ण राजस्व अधिकारी होता था जो परगना स्तर पर कार्य करता था। उसका प्राथमिक कार्य कृषकों से भू-राजस्व एकत्र करना और कृषि उत्पादन का उचित विवरण रखना था। वह स्थानीय प्रशासन और केंद्र के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य करता था। आमिल की कार्यकुशलता पर ही राज्य की आय और आर्थिक स्थिरता निर्भर करती थी। उसने ग्रामीण अर्थव्यवस्था और शाही राजस्व के बीच समन्वय स्थापित करने में अहम भूमिका निभाई।

19. (1) केवल I और II
खिज्र खाँ ने 1414 ई. में सैयद वंश की नींव रखी और स्वयं को पैगंबर मुहम्मद का वंशज बताया। हालांकि, उसने कभी भी 'सुल्तान' की उपाधि धारण नहीं की और 'रैयत-ए-आला' की पदवी से ही संतुष्ट रहा। उसने तैमूर के उत्तराधिकारी शाहरुख के नाम से सिक्के जारी किए और उसे कर भेजता रहा। सैयद

Downloaded from www.pdf.tube

शासकों ने तैमूर वंश के साथ अपने संबंध पूरी तरह से विच्छेद नहीं किए थे। अतः तीसरा कथन गलत है क्योंकि उन्होंने अपनी स्वायत्तता के बावजूद तैमूर के प्रति निष्ठा बनाए रखी।

20. (2) गुलाम - खलजी - तुगलक - सैयद - लोदी
दिल्ली सल्तनत के राजवंशों का सही कालानुक्रमिक क्रम दास वंश से प्रारंभ होकर लोदी वंश पर समाप्त होता है। दास वंश ने 1206 से 1290 ई. तक शासन किया, जिसके पश्चात खलजी वंश सत्ता में आया। तुगलक वंश ने 1320 से 1414 ई. तक शासन किया, फिर सैयद वंश का उदय हुआ। अंततः लोदी वंश ने 1451 से 1526 ई. तक शासन किया, जब पानीपत के प्रथम युद्ध में बाबर ने इब्राहिम लोदी को पराजित कर मुगल साम्राज्य की नींव रखी।

21. (3) बहलोल लोदी - भूमि माप के लिए 'गज-ए-सिकंदरी' प्रणाली की शुरुआत।
भूमि मापन के लिए 'गज-ए-सिकंदरी' प्रणाली की शुरुआत सिकंदर लोदी द्वारा की गई थी, न कि बहलोल लोदी द्वारा। बहलोल लोदी ने लोदी वंश की स्थापना की थी, जबकि सिकंदर लोदी ने आगरा नगर बसाया और प्रशासनिक सुधार किए। इब्राहिम लोदी पानीपत के प्रथम युद्ध में बाबर के विरुद्ध लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुआ। कुतुबुद्दीन ऐबक ने अजमेर में अढ़ाई दिन का झोंपड़ा नामक मस्जिद का निर्माण करवाया था। इस प्रकार, बहलोल लोदी वाला युग्म ऐतिहासिक रूप से गलत सुमेलित है।

22. (2) शाही कोष के लिए केंद्र सरकार द्वारा प्रशासित राज्य के स्वामित्व वाली भूमि।
दिल्ली सल्तनत में 'खालसा' वह भूमि थी जिसका प्रबंधन प्रत्यक्ष रूप से केंद्र सरकार या सुल्तान के नियंत्रण में होता था। इस भूमि से प्राप्त होने वाला संपूर्ण राजस्व सीधे शाही कोष में जमा किया जाता था। इसका उपयोग सुल्तान के व्यक्तिगत व्यय, शाही दरबार और केंद्रीय सेना के रखरखाव के लिए किया जाता था। खालसा भूमि इक्ता प्रणाली से भिन्न थी, क्योंकि इक्ता में राजस्व का भाग अधिकारियों को आवंटित होता था, जबकि खालसा भूमि पूर्णतः राज्य के अधीन थी।

23. (4) लोदी वंश
भारत में प्रथम अफगान साम्राज्य की स्थापना लोदी वंश द्वारा की गई थी, जिसकी नींव बहलोल लोदी ने 1451 ई. में रखी थी। इससे पूर्व के राजवंश जैसे दास, खलजी और तुगलक मूल रूप से तुर्की मूल के थे। लोदी शासकों ने दिल्ली सल्तनत के अंतिम चरण में शासन किया। बहलोल लोदी के पश्चात सिकंदर लोदी और इब्राहिम लोदी इस वंश के प्रमुख शासक हुए। यह साम्राज्य 1526 ई. तक अस्तित्व में रहा, जब मुगल शासक बाबर ने इस वंश के अंतिम सुल्तान को पराजित किया।

24. (1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
तबकात-ए-नासिरी के लेखक मिन्हाज-उस-सिराज हैं, जो इल्तुतमिश और उसके उत्तराधिकारियों के काल के प्रमुख इतिहासकार थे। तारीख-ए-फिरोज शाही जियाउद्दीन बरनी की महत्वपूर्ण कृति है, जो तुगलक काल का विस्तृत विवरण देती है। खजाइन-उल-फुतूह अमीर खुसरो द्वारा रचित है, जिसमें अलाउद्दीन खलजी की विजयों का वर्णन है। ताज-उल-मासिर हसन निजामी की रचना है, जो प्रारंभिक सुल्तानों के इतिहास पर प्रकाश डालती है। ये साहित्यिक कृतियाँ दिल्ली सल्तनत के इतिहास के अध्ययन हेतु विश्वसनीय और प्राथमिक स्रोत मानी जाती हैं।

25. (3) दाम
टंका, जीतल और अधा दिल्ली सल्तनत काल के प्रचलित सिक्के थे, जबकि 'दाम' मुख्य रूप से शेरशाह सूरी और बाद में मुगल काल के दौरान जारी किया गया तांबे का सिक्का था। इल्तुतमिश ने रजत का टंका और तांबे का जीतल प्रचलित किया था, जो सल्तनत की मानक मुद्रा व्यवस्था का आधार बने। फिरोज शाह तुगलक ने भी तांबे और चांदी के मिश्रण से बने अधा जैसे छोटे सिक्के चलाए थे। इस प्रकार, 'दाम' आर्थिक शब्दावली के संदर्भ में सल्तनत काल से भिन्न और विषम है।

26. (1) उत्तराधिकार के निश्चित कानून का अभाव जिससे गृह युद्ध और क्षेत्रीय स्वतंत्रता की स्थिति बनी।
दिल्ली सल्तनत के पतन का एक प्रमुख कारण उत्तराधिकार के किसी निश्चित कानून का न होना था। सुल्तान की मृत्यु के पश्चात प्रायः राजकुमारों और शक्तिशाली कुलीनों के बीच संघर्ष होते थे। इस अस्थिरता ने केंद्रीय सत्ता को दुर्बल कर दिया और दूरस्थ प्रांतों के राज्यपालों को अपनी स्वतंत्रता घोषित करने का अवसर प्रदान किया। निरंतर होने वाले इन गृहयुद्धों ने सैन्य और आर्थिक संसाधनों को नष्ट कर दिया, जिससे सल्तनत विदेशी आक्रमणों और आंतरिक विघटन के प्रति अत्यंत संवेदनशील हो गई।

27. (2) केवल I, III और IV
अलाउद्दीन खलजी ने अपनी वास्तुकला संबंधी परियोजनाओं के अंतर्गत अलाई दरवाजा, हौज खास और सीरी का दुर्ग निर्मित करवाया था। अलाई दरवाजा कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद के विस्तार का भाग था और सीरी का दुर्ग मंगोल आक्रमणों से सुरक्षा हेतु बनाया गया था। हौज खास एक विशाल जलाशय था जो नगर की जल आवश्यकताओं को पूरा करता था। गयासुद्दीन तुगलक का मकबरा तुगलक वंश के संस्थापक द्वारा बनवाया गया था, अतः वह अलाउद्दीन खलजी के शासनकाल की संरचनाओं में सम्मिलित नहीं है।

NODIA

28. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
इल्तुतमिश ने दिल्ली सल्तनत की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए महत्वपूर्ण मुद्रा सुधार किए थे। उसने रजत का 'टंका' और तांबे का 'जीतल' नामक नए सिक्के जारी किए, जिन्होंने तत्कालीन मौद्रिक प्रणाली को एक मानक स्वरूप प्रदान किया। वह भारत में शुद्ध अरबी लिपि वाले सिक्के चलाने वाला प्रथम तुर्क सुल्तान था। उसके द्वारा स्थापित यह मुद्रा प्रणाली भविष्य के शासकों के लिए आधार बनी। अतः दिए गए दोनों कथन ऐतिहासिक रूप से सत्य हैं और इल्तुतमिश के आर्थिक योगदान को उचित रूप से दर्शाते हैं।

29. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
अलाउद्दीन खलजी ने जागीर या इक्ता प्रणाली के स्थान पर अपने सैनिकों को नकद वेतन देने की नीति अपनाई थी। उसे मंगोलों के निरंतर आक्रमणों और दक्षिण भारत के सैन्य अभियानों के लिए एक विशाल और अनुशासित स्थायी सेना की आवश्यकता थी। राजकोष पर सीधा नियंत्रण और राजस्व में वृद्धि सुनिश्चित करने के लिए उसने बिचौलियों को हटाकर नकद भुगतान शुरु किया। अतः कथन और कारण दोनों सत्य हैं, क्योंकि सैन्य आवश्यकताओं ने ही सुल्तान को इस महत्वपूर्ण आर्थिक और प्रशासनिक परिवर्तन के लिए प्रेरित किया था।

30. (1) II, I, IV, III
दिल्ली सल्तनत के स्मारकों के निर्माण का सही क्रम उनके संबंधित राजवंशों के उत्थान पर आधारित है। कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद का निर्माण दास वंश के प्रारंभिक काल में हुआ था। सीरी का दुर्ग अलाउद्दीन खलजी के शासनकाल में निर्मित हुआ। तुगलकाबाद का दुर्ग गयासुद्दीन तुगलक द्वारा बनवाया गया था, और लोदी गार्डन के मकबरे लोदी वंश के अंतिम चरण की स्थापत्य कला के उदाहरण हैं। यह क्रम सल्तनत काल की वास्तुकला के क्रमिक विकास और विभिन्न शैलियों के प्रभाव को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करता है।

31. (2) केवल I, II और IV
फिरोज शाह तुगलक ने जनकल्याण के लिए कई विभाग और सुविधाएं स्थापित की थीं। उसने निर्धन मुस्लिम बालिकाओं के विवाह हेतु 'दीवान-ए-खैरात' और सिंचाई तथा लोक निर्माण के लिए एक समर्पित विभाग बनाया। उसने कृषकों पर सिंचाई कर 'शर्ब' भी लगाया था। हालांकि, उसने दास प्रथा पर प्रतिबंध नहीं लगाया था, बल्कि उसके पास दासों की एक विशाल संख्या थी जिनके लिए उसने 'दीवान-ए-बंदगान' नामक अलग विभाग गठित किया था। अतः तीसरा कथन गलत है और शेष तीनों कथन सही हैं।

32. (2) अमीर खुसरो
अमीर खुसरो अलाउद्दीन खलजी के दरबार के सर्वाधिक प्रसिद्ध कवि और विद्वान थे। उन्हें 'तूतिए-ए-हिन्द' या भारत का तोता कहा जाता है। उन्होंने फारसी और हिंदी (हिंदवी) में महत्वपूर्ण रचनाएँ कीं। खुसरो को सितार और तबला जैसे संगीत वाद्यों के आविष्कार का श्रेय भी दिया जाता है। उन्होंने दिल्ली के कई सुल्तानों का शासन देखा था और उनकी रचनाएँ तत्कालीन सामाजिक और राजनीतिक इतिहास पर गहरा प्रकाश डालती हैं। वे भारतीय और फारसी संस्कृतियों के मिलन के महान प्रतीक माने जाते हैं।

33. (1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
प्रसिद्ध मोरक्कन यात्री इब्न बतूता मुहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल में भारत आया था और उसे दिल्ली का काजी नियुक्त किया गया था। मार्को पोलो ने जलालुद्दीन खलजी के समय दक्षिण भारत के पांड्य साम्राज्य की यात्रा की थी। फारसी राजदूत अब्दुर रज्जाक ने विजयनगर के शासक देव राय द्वितीय के दरबार का दौरा किया था। अल-बिरुनी महमूद गजनवी के साथ भारत आया और उसने 'किताब-उल-हिंद' की रचना की। ये सभी यात्री मध्यकालीन भारत के विभिन्न कालखंडों के इतिहास के महत्वपूर्ण प्रत्यक्षदर्शी गवाह हैं।

34. (1) केवल I, II, III और V
दिल्ली सल्तनत की वास्तुकला में शुद्ध मेहराब, गुंबद और जोड़ने के लिए चूने के गारे का व्यापक प्रयोग किया गया था। सजावट के लिए ज्यामितीय आकृतियों का उपयोग किया जाता था। इस्लामी सिद्धांतों के अनुसार, इन इमारतों में मानवीय या पशु आकृतियों का चित्रण वर्जित था, इसलिए चौथा कथन गलत है। इसके स्थान पर कुरान की आयतें और पुष्प आकृतियों का प्रयोग प्रमुखता से किया जाता था। यह शैली भारतीय और इस्लामी वास्तुकला के अनूठे समन्वय का प्रतिनिधित्व करती है।

35. (3) कारखाने शाही कार्यशालाएँ थीं जो सुल्तान और सेना के लिए विलासिता की वस्तुएं और सैन्य उपकरण बनाती थीं।
सल्तनत काल में कारखाने अत्यंत महत्वपूर्ण राजकीय संस्थान थे, जहाँ सुल्तान के विलासिता के सामान और सैन्य सामग्री तैयार की जाती थी। इन कार्यशालाओं में बड़ी संख्या में कुशल कारीगर नियोजित थे जो रेशम के वस्त्र, अस्त्र-शस्त्र और आभूषण बनाते थे। मुहम्मद बिन तुगलक और फिरोज शाह तुगलक के समय में इन कारखानों का अत्यधिक विस्तार हुआ था। यह व्यवस्था राज्य की आर्थिक आत्मनिर्भरता और शाही शान-शौकत को बनाए रखने में सहायक थी। अन्य विकल्प ऐतिहासिक तथ्यों के अनुरूप नहीं हैं।

36. (4) गयासुद्दीन बलबन
गयासुद्दीन बलबन ने राजत्व की प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए स्वयं को 'नियाबत-ए-खुदाई' (ईश्वर का प्रतिनिधि) घोषित किया था। उसने राजा को 'जिल्ल-ए-इलाही' या ईश्वर की छाया माना, जिसका उद्देश्य सुल्तान की सत्ता को चुनौती से परे बनाना था। बलबन का मानना था कि सुल्तान का हृदय ईश्वर की कृपा का भंडार है और उसकी आज्ञा का उल्लंघन धार्मिक अपराध के समान है। इस कठोर राजत्व सिद्धांत के माध्यम से उसने विद्रोही कुलीनों को नियंत्रित किया और सल्तनत में अनुशासन स्थापित किया।

37. (2) केवल III
दिल्ली सल्तनत के दौरान बंजारों ने कृषि उत्पादों को गाँवों से शहरी मंडियों तक पहुँचाने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। मुल्तानी व्यापारी और साहूकार लंबी दूरी के व्यापार और बैंकिंग कार्यों में संलग्न थे। सुल्तानों द्वारा निर्मित सरायों ने व्यापारियों को सुरक्षित आश्रय प्रदान कर व्यापार को प्रोत्साहित किया, न कि उसमें बाधा डाली। अतः तीसरा कथन गलत है क्योंकि सरायों का मुख्य उद्देश्य यात्रियों और व्यापारियों की सुविधा बढ़ाना था। व्यापारिक शुल्क तो राजस्व का साधन थे, बाधा नहीं।

38. (2) गयासुद्दीन बलबन
इल्तुतमिश द्वारा गठित 'तुर्कान-ए-चहलगानी' या चालीस दास कुलीनों का समूह समय के साथ अत्यधिक शक्तिशाली और विद्रोही हो गया था। गयासुद्दीन बलबन, जो स्वयं कभी इस

Click Here to Buy book on Amazon

ने इसकी मरम्मत करवाई और ऊपरी दो मंजिलें जुड़वाईं।
(3) मीनार पर कुरान की आयतों की जटिल नक्काशी की गई है।
(4) यह मूल रूप से दिल्ली की ओर आने वाली मंगोल सेनाओं की निगरानी हेतु एक प्रहरीदुर्ग के रूप में बनाया गया था।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

72. राजधानी को दौलताबाद स्थानांतरित करने में मुहम्मद बिन तुगलक की विफलता के कारणों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. बलात् पलायन ने दिल्ली के नागरिकों के मध्य अपार कष्ट और आक्रोश उत्पन्न किया।
II. उत्तर-पश्चिम सीमा की मंगोलों से रक्षा करने के लिए दौलताबाद अत्यधिक दूर सिद्ध हुआ।
III. दौलताबाद में जल की भारी कमी ने विशाल जनसंख्या का भरण-पोषण असंभव बना दिया था।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से संयोजन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

73. दिल्ली सल्तनत के पतन के दौरान प्रमुखता से उभरे स्वतंत्र प्रांतीय राज्यों में से विषम को चुनें।
(1) बहमनी साम्राज्य
(2) विजयनगर साम्राज्य
(3) चोल साम्राज्य
(4) जौनपुर साम्राज्य
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

74. सूची I (वास्तुशिल्प तत्व) को सूची II (विवरण) के साथ सुमेलित करें और सही उत्तर चुनें।
सूची I: (वास्तुशिल्प तत्व)
A. मिहराब
B. मिम्बर
C. सहन
D. मकसूरा
सूची II: (विवरण)
i. उपदेश हेतु मस्जिद में एक सीढ़ीदार मंच
ii. मस्जिद के भीतर एक खुला प्रांगण
iii. मस्जिद की दीवार में एक ताक जो मक्का की दिशा दर्शाता है
iv. मिहराब के निकट शासक हेतु आरक्षित एक घेरा
(1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(2) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
(3) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(4) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

75. निम्नलिखित में से कौन सा कथन दिल्ली सल्तनत पर निरंतर मंगोल आक्रमणों के प्रभाव का श्रेष्ठ वर्णन करता है?
(1) उन्होंने सुल्तानों को उत्तर भारत छोड़ने और अपनी राजधानी को दक्कन ले जाने हेतु विवश किया।
(2) उनके परिणामस्वरूप रईसों में मंगोलों का शांतिपूर्ण समावेश हुआ, जिससे सामाजिक संरचना परिवर्तित हो गई।
(3) उन्होंने समस्त थल व्यापार मार्गों को अवरुद्ध कर दिया, जिससे सल्तनत को नौसेना विकसित करनी पड़ी।
(4) इसके लिए एक विशाल स्थायी सेना और किलेबंद सीमा की आवश्यकता थी, जिसने राज्य की अर्थव्यवस्था को दुर्बल कर दिया।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

76. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं — कथन (A) और कारण (R)। उनके बीच संबंध का वर्णन करने के लिए सही विकल्प चुनें।
कथन (A): फिरोज शाह तुगलक रईसों और उलेमाओं के प्रति उदार था।
कारण (R): वह उनके समर्थन से सिंहासन पर बैठा था और मुहम्मद बिन तुगलक के अशांत शासनकाल के पश्चात उन्हें शांत करना आवश्यक था।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

77. दिल्ली सल्तनत के संदर्भ में 'खुत्बा' शब्द का अर्थ है:
(1) सुल्तान द्वारा जारी एक औपचारिक शाही फरमान जिसमें कर छूट दी गई हो।
(2) प्रशासन के लिए स्थानीय अधिकारी द्वारा तैयार भू-राजस्व दस्तावेज।
(3) शुक्रवार का धार्मिक प्रवचन जहाँ शासक की राजनीतिक वैधता दर्शाने हेतु उसका नाम पढ़ा जाता था।
(4) सुल्तान के व्यक्तिगत अंगरक्षक के रूप में सेवा करने वाली एक विशेष सैन्य इकाई।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

78. दिल्ली के किस सुल्तान ने दरबार में 'पायबोस' (भूमि स्पर्श कर अभिवादन) की प्रथा प्रारंभ की थी?
(1) इल्तुतमिश
(2) अलाउद्दीन खलजी
(3) सिकंदर लोदी
(4) गयासुद्दीन बलबन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

79. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं — कथन (A) और कारण (R)। उनके बीच संबंध का वर्णन करने के लिए सही विकल्प चुनें।

गई, जिससे आगे चलकर सैयद वंश के उदय का मार्ग प्रशस्त हुआ। यह आक्रमण सल्तनत काल की सर्वाधिक विनाशकारी घटनाओं में से एक है।

48. (1) केवल I, II, III और IV
गयासुद्दीन बलबन ने सैन्य प्रशासन को सुदृढ़ करने के लिए 'दीवान-ए-अर्ज़' का गठन किया और सूचना तंत्र के लिए 'बरीद' तैनात किए। उसने विद्रोहियों के दमन हेतु 'लौह और रक्त' की नीति अपनाई और स्वयं को पौराणिक अफ़रासियाब का वंशज बताकर उच्च कुलीनता का दावा किया। हालांकि, उसने दरबारी नियमों को शिथिल करने के बजाय उन्हें और अधिक कठोर बनाया ताकि सुल्तान की भव्यता बनी रहे। अतः पांचवां कथन गलत है क्योंकि उसने जनता से दूरी बनाए रखने की नीति अपनाई थी।

49. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
कुतुबुद्दीन ऐबक को उसकी अत्यधिक उदारता के कारण 'लाख बख्श' कहा जाता था। अलाउद्दीन खलजी ने विश्व विजेता बनने की अपनी आकांक्षा के कारण 'सिकंदर-ए-सानी' की उपाधि धारण की थी। मुहम्मद बिन तुगलक को उसके द्वारा किए गए विविध मौद्रिक प्रयोगों के कारण 'सिक्कों का राजकुमार' कहा जाता है। गयासुद्दीन बलबन का वास्तविक नाम बहाउद्दीन था, और उलूग खाँ की उपाधि उसे सुल्तान नसीरुद्दीन महमूद ने प्रदान की थी। ये उपाधियाँ इन सुल्तानों के व्यक्तिगत गुणों और उनकी विशिष्ट राजनैतिक महत्वाकांक्षाओं को दर्शाती हैं।

50. (1) 'दीवान-ए-अमीर कोही' (कृषि विभाग) की स्थापना - फिरोज शाह तुगलक
'दीवान-ए-अमीर कोही' नामक समर्पित कृषि विभाग की स्थापना मुहम्मद बिन तुगलक ने की थी, न कि फिरोज शाह तुगलक ने। इस विभाग का उद्देश्य बंजर भूमि को खेती के योग्य बनाना और कृषकों को प्रत्यक्ष ऋण (तकावी) प्रदान करना था। इल्तुतमिश ने तुर्कान-ए-चहलगानी का गठन किया था और अलाउद्दीन खलजी ने सेना में दाग और चेहरा प्रथा शुरू की थी। सिकंदर लोदी ने आगरा को अपनी राजधानी बनाया था। अतः पहला युग्म ऐतिहासिक रूप से गलत है क्योंकि संस्थापक सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक था।

51. (3) 1206 ईस्वी में मुहम्मद गोरी की हत्या
1206 ई. में मुहम्मद गोरी की अचानक हत्या ने उत्तर भारत में एक राजनीतिक शून्यता उत्पन्न कर दी, जिसका लाभ उठाकर कुतुबुद्दीन ऐबक ने स्वयं को स्वतंत्र घोषित कर दिया। इससे पूर्व वह गोरी के प्रतिनिधि के रूप में शासन कर रहा था। इस घटना के पश्चात उसने लाहौर को अपनी शक्ति का केंद्र बनाया और भारत में प्रथम स्वतंत्र मुस्लिम राजवंश, जिसे दास वंश कहा जाता है, की आधारशिला रखी। गोरी की मृत्यु ने भारतीय क्षेत्रों का मध्य एशिया से प्रशासनिक संबंध विच्छेद कर दिया।

52. (4) गुजरात, मालवा और जौनपुर जैसे स्वतंत्र प्रांतीय राज्यों का उदय।
तुगलक वंश के अंतिम चरण और सैयद काल के दौरान केंद्रीय सत्ता के दुर्बल होने का सबसे महत्वपूर्ण परिणाम क्षेत्रीय शक्तियों का उदय था। दिल्ली के नियंत्रण में कमी आने के कारण गुजरात, मालवा, जौनपुर और बंगाल जैसे समृद्ध प्रांतों के राज्यपालों ने अपनी स्वतंत्रता घोषित कर दी। इसके अतिरिक्त, दक्षिण में बहमनी और विजयनगर जैसे शक्तिशाली साम्राज्यों का विकास हुआ। सल्तनत का प्रभावी अधिकार क्षेत्र केवल दिल्ली और उसके आसपास के कुछ क्षेत्रों तक ही सीमित रह गया, जिससे उसकी अखिल भारतीय छवि समाप्त हो गई।

53. (1) केवल I और II
रजिया सुल्तान के प्रति तुर्क कुलीनों के विरोध के प्रमुख कारण उसकी स्वतंत्र कार्यशैली और प्रशासनिक मामलों में उनका हस्तक्षेप न स्वीकार करना था। कुलीनों को यह भी स्वीकार नहीं था कि एक महिला उन पर शासन करे। जमालुद्दीन याकूत जैसे गैर-तुर्क अधिकारियों को उच्च पद देना उनके तुर्की एकाधिकार के लिए बड़ी चुनौती थी। रजिया ने कभी भी खिलाफत पर आक्रमण नहीं किया था, इसलिए तीसरा कथन निराधार है। उसका पतन मुख्य रूप से तुर्क कुलीन वर्ग और सुल्तान के बीच सत्ता संघर्ष का परिणाम था।

54. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
अलाउद्दीन खलजी ने अपनी विशाल सेना के खर्चों को पूरा करने के लिए दोआब क्षेत्र में भू-राजस्व की दर बढ़ाकर उपज का 50% कर दी थी। वह पहला सुल्तान था जिसने राजस्व निर्धारण के लिए भूमि की वैज्ञानिक माप (मसाहत) की पद्धति अपनाई। उसने पारंपरिक फसल-बंटवारे के स्थान पर प्रति विश्वास उत्पादन के आधार पर कर निर्धारित किया। यह प्रणाली अत्यधिक कठोर थी और इससे बिचौलियों की शक्ति समाप्त हो गई। अतः दोनों कथन उसकी राजस्व सुधार नीति के महत्वपूर्ण और सत्य पहलुओं को उजागर करते हैं।

55. (4) मध्य पूर्व और दक्षिण-पूर्व एशिया को भारतीय वस्त्रों और मसालों के निर्यात का पूर्णतः बंद हो जाना।
दिल्ली सल्तनत काल में भारत का विदेशी व्यापार अत्यंत समृद्ध था और मध्य पूर्व तथा दक्षिण-पूर्व एशिया को होने वाला निर्यात कभी बंद नहीं हुआ। भारतीय वस्त्रों, विशेषकर सूती और रेशमी कपड़ों, तथा मसालों की अंतरराष्ट्रीय बाजार में भारी मांग बनी रही। मुल्तानी और गुजराती व्यापारियों ने इस वैश्विक व्यापार नेटवर्क में सक्रिय भूमिका निभाई थी। अतः यह कहना कि निर्यात पूरी तरह बंद हो गया था, ऐतिहासिक रूप से गलत है। आंतरिक व्यापार के लिए हुंडी और सरायों की व्यवस्था भी अत्यंत सुदृढ़ थी।

56. (2) केवल I, II और III
दिल्ली सल्तनत की वास्तुकला में कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद का निर्माण पूर्ववर्ती मंदिरों की सामग्री से किया गया था। अलाई दरवाजा वैज्ञानिक रूप से निर्मित प्रथम शुद्ध मेहराब और गुंबद का उदाहरण है। तुगलक काल की इमारतों में ढलवां दीवारें और सादगी देखी जाती है। हालांकि, लोदी काल के मकबरे वर्गाकार और अष्टकोणीय दोनों प्रकार के हैं, इसलिए चौथा कथन गलत है। लोदी शैली में अष्टकोणीय मकबरे इस काल की एक प्रमुख और विशिष्ट विशेषता माने जाते हैं, न कि उनका अभाव है।

NODIA

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) शम्सुद्दीन इल्तुतमिश
शम्सुद्दीन इल्तुतमिश को दिल्ली सल्तनत का वास्तविक संस्थापक माना जाता है क्योंकि उसने राजधानी को लाहौर से दिल्ली स्थानांतरित किया था। उसने 1229 ई. में बगदाद के अब्बासी खलीफा से अधिकार पत्र प्राप्त किया, जिससे उसे वैधानिक सुल्तान की मान्यता मिली। उसके शासनकाल में दिल्ली का महत्व अत्यधिक बढ़ा और सुव्यवस्थित प्रशासनिक व्यवस्था की नींव रखी गई। उसने उत्तर भारत में तुर्की प्रभुत्व को स्थायित्व प्रदान कर सल्तनत को सुदृढ़ किया।

2. (1) नकद वेतन के बदले सैन्य कमांडरों को भू-राजस्व आवंटित करना
दिल्ली सल्तनत में इक्ता प्रणाली का मुख्य उद्देश्य नकद वेतन के स्थान पर अधिकारियों को भू-राजस्व का अधिकार देना था। इसके अंतर्गत सैन्य नायकों और कुलीनों को विशिष्ट क्षेत्रीय इकाइयाँ प्रदान की जाती थीं, जिन्हें इक्ता कहा जाता था। इन इक्तादारों से अपेक्षा की जाती थी कि वे आवंटित क्षेत्र से कर एकत्र करें और उस राजस्व से सुल्तान के लिए एक स्थायी सेना का रखरखाव सुनिश्चित करें। यह व्यवस्था प्रशासनिक विकेंद्रीकरण का प्रमुख साधन थी।

3. (3) उसने अपने शासनकाल के दौरान दिल्ली में कुतुब मीनार का निर्माण कार्य पूरा करवाया था।
कुतुबुद्दीन ऐबक ने दिल्ली में कुतुब मीनार का निर्माण कार्य केवल प्रारंभ करवाया था, जबकि इसे पूर्ण कराने का श्रेय उसके उत्तराधिकारी इल्तुतमिश को जाता है। ऐबक मोहम्मद गोरी का एक निष्ठावान दास था और उसने भारत में दास वंश की स्थापना की थी। वह अपनी अत्यधिक दानशीलता और उदारता के लिए इतिहास में लाख बख्श के नाम से विख्यात हुआ। 1210 ई. में लाहौर में पोलो खेलते समय उसकी मृत्यु हुई।

4. (1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
दिल्ली सल्तनत के प्रशासनिक ढांचे में गयासुद्दीन बलबन ने सैन्य विभाग दीवान-ए-अर्ज़ का गठन किया था। अलाउद्दीन खलजी ने बाजार नियंत्रण हेतु दीवान-ए-रियासत विभाग बनाया था। मुहम्मद बिन तुगलक ने कृषि सुधारों के लिए दीवान-ए-कोही विभाग की स्थापना की थी। फिरोज शाह तुगलक ने दासों की देखभाल के लिए दीवान-ए-बंदगान विभाग बनाया था। ये विभाग सल्तनत काल के कुशल शासन प्रबंधन का महत्वपूर्ण आधार स्तंभ माने जाते थे और राज्य की शक्ति को बढ़ाते थे।

5. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
गयासुद्दीन बलबन ने सुल्तान की प्रतिष्ठा को पुनर्जीवित करने के लिए दरबारी शिष्टाचार के रूप में सिजदा और पायबोस की शुरुआत की थी। वह राजत्व के दैवीय सिद्धांत का समर्थक था और स्वयं को ईश्वर का प्रतिनिधि मानता था। उसका मुख्य उद्देश्य तुर्कान-ए-चहलगानी के प्रभाव को समाप्त कर सुल्तान की सत्ता को सर्वोच्च बनाना था। अतः कथन और कारण दोनों सत्य हैं और तर्कपूर्ण व्याख्या प्रस्तुत करते हैं कि ये रस्में राजशाही को सुदृढ़ करने के लिए थीं।

6. (1) केवल I और II
रजिया सुल्तान दिल्ली की पहली महिला शासिका थी जिसे इल्तुतमिश ने अपने पुत्रों की अक्षमता के कारण अपना उत्तराधिकारी चुना था। उसने रुढ़िवादी परंपराओं को चुनौती देते हुए महिला परिधान त्याग दिए और कुबा तथा कुलाह पहनकर दरबार का संचालन किया। हालांकि, तुर्क कुलीनों ने उसके स्वतंत्र शासन का कभी समर्थन नहीं किया और निरंतर उसके विरुद्ध षड्यंत्र रचते रहे। रजिया का पतन मुख्य रूप से तुर्क सामंतों की सत्ता और प्रभुत्व की रक्षा की आकांक्षा का परिणाम था।

7. (4) जलालुद्दीन खलजी
जलालुद्दीन खलजी दिल्ली सल्तनत के खलजी वंश का संस्थापक था और वह दास वंश से संबंधित नहीं था। दास वंश के शासकों में कुतुबुद्दीन ऐबक, इल्तुतमिश, रजिया सुल्तान, आराम शाह, मुइज़ुद्दीन बहराम शाह और नसीरुद्दीन महमूद जैसे शासक प्रमुख थे। जलालुद्दीन ने 1290 ई. में अंतिम दास सुल्तान क्यूमर्स की हत्या कर सत्ता प्राप्त की थी। यह सत्ता परिवर्तन इतिहास में खलजी क्रांति के नाम से प्रसिद्ध है, जिसने तुर्की कुलीनतंत्र के एकाधिकार को पूर्णतः समाप्त कर दिया था।

8. (2) 1301 ई.
अलाउद्दीन खलजी ने 1301 ई. में चौहान शासक हम्मीर देव को पराजित कर रणथंभौर के दुर्ग पर अधिकार किया था। यह अभियान अलाउद्दीन के साम्राज्य विस्तार की नीति का एक महत्वपूर्ण भाग था। रणथंभौर की सामरिक स्थिति उत्तर भारत में नियंत्रण बनाए रखने के लिए अत्यंत आवश्यक थी। इस युद्ध के दौरान राजपूत महिलाओं ने जौहर किया था, जो राजस्थान के इतिहास की प्रमुख घटना मानी जाती है। इस विजय के पश्चात अलाउद्दीन ने रणथंभौर का शासन उलूग खाँ को सौंपा था।

9. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
अलाउद्दीन खलजी के राजपुताना अभियानों में रणथंभौर के शासक हम्मीर देव चौहान 1301 ई. में पराजित हुए थे। चित्तौड़ के अभियान में 1303 ई. में रावल रतन सिंह को हार का सामना करना पड़ा था। 1308 ई. में सिवाना के दुर्ग पर विजय प्राप्त करते समय सीतल देव पराजित हुए थे। अंत में 1311 ई. में जालौर के शासक कान्हड़ देव को पराजित कर अलाउद्दीन ने इस क्षेत्र पर अधिकार किया था। ये विजय अभियान अलाउद्दीन की महत्वाकांक्षी सैन्य विस्तारवादी नीति के जीवंत उदाहरण हैं।

Downloaded from www.pdf.tube

66. (1) वे शाही कार्यशालाएँ थीं जहाँ राजघराने और राज्य के विभागों के लिए आवश्यक सामग्री निर्मित की जाती थी।
सल्तनत काल में कारखाने अत्यंत संगठित सरकारी उत्पादन केंद्र थे जो सीधे सुल्तान के नियंत्रण में कार्य करते थे। इन कार्यशालाओं में शाही परिवार की आवश्यकताओं के लिए रेशमी वस्त्र, बहुमूल्य आभूषण और सेना के लिए उन्नत हथियार तैयार किए जाते थे। इतिहासकार अफीफ के अनुसार, फिरोज शाह तुगलक के समय में इन कारखानों का विशेष महत्व था और उन्हें दो श्रेणियों, 'रतीबी' और 'गैर-रतीबी' में बांटा गया था। यह व्यवस्था राज्य की सैन्य क्षमता और विलासिता की मांगों को पूरा करने का मुख्य माध्यम थी।

67. (3) वित्तीय और राजस्व मामले
'दीवान-ए-विज़ारत' दिल्ली सल्तनत का सबसे महत्वपूर्ण विभाग था जो राज्य की वित्त व्यवस्था और राजस्व संग्रह का निरीक्षण करता था। इसका प्रमुख 'वज़ीर' होता था, जो सुल्तान का मुख्य सलाहकार और प्रशासन का केंद्र बिंदु माना जाता था। इस विभाग का कार्य करों का निर्धारण करना, व्यय का लेखा-जोखा रखना और शाही खजाने की रक्षा करना था। सल्तनत की आर्थिक स्थिरता और सैन्य अभियानों का वित्तपोषण इसी विभाग की कार्यकुशलता पर निर्भर करता था, जिससे इसका महत्व शासन में सर्वोपरि हो गया था।

68. (4) दक्कन में 'अमीरान-ए-सादा' का विद्रोह - फिरोज शाह तुगलक
दक्कन में 'अमीरान-ए-सादा' का प्रसिद्ध विद्रोह मुहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल के दौरान हुआ था, न कि फिरोज शाह तुगलक के समय। इस विद्रोह के परिणामस्वरूप ही 1347 ई. में दक्षिण भारत में स्वतंत्र बहमनी साम्राज्य की स्थापना हुई थी। अन्य विकल्प जैसे तुगरिल खाँ का विद्रोह बलबन के समय और सीधी मौला का विद्रोह जलालुद्दीन खलजी के समय की वास्तविक घटनाएं हैं। अतः चौथा युग्म शासक और संबंधित विद्रोह के संदर्भ में ऐतिहासिक रूप से पूर्णतः असत्य है।

69. (3) वह एक शिक (जिले) के भीतर विधि और व्यवस्था बनाए रखने का प्रभारी कार्यकारी अधिकारी था।
दिल्ली सल्तनत के प्रांतीय प्रशासन के अंतर्गत प्रांतों को 'शिक' (जिलों) में विभाजित किया गया था, जिसका प्रशासनिक प्रमुख 'शिकदार' होता था। उसकी प्राथमिक जिम्मेदारी अपने क्षेत्र में शांति और कानून-व्यवस्था बनाए रखना और कर संग्रह में राजस्व अधिकारियों की सहायता करना था। वह एक सैन्य-सह-प्रशासनिक अधिकारी के रूप में कार्य करता था। शिकदार की भूमिका स्थानीय स्तर पर सुल्तान की सत्ता को प्रभावी बनाने और विद्रोहों को रोकने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण थी, जिससे शासन की स्थिरता सुनिश्चित होती थी।

70. (2) आयुर्वेद और संगीत पर संस्कृत ग्रंथों का फारसी में अनुवाद करने के लिए
फिरोज शाह तुगलक को ज्ञान और साहित्य में गहरी रुचि थी, इसलिए उसने एक समर्पित अनुवाद विभाग की स्थापना की थी। इस विभाग का मुख्य उद्देश्य भारतीय ज्ञान परंपरा के महत्वपूर्ण ग्रंथों, विशेषकर आयुर्वेद, दर्शन और संगीत से संबंधित संस्कृत पुस्तकों का फारसी भाषा में अनुवाद करना था। उसने ज्वालामुखी मंदिर से प्राप्त कई पांडुलिपियों का फारसी में अनुवाद करवाया, जिनमें से 'दलायल-ए-फिरोज शाही' अत्यंत प्रसिद्ध है। यह प्रयास भारतीय ज्ञान और इस्लामी संस्कृति के बीच संवाद स्थापित करने का एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक कदम था।

71. (4) यह मूल रूप से दिल्ली की ओर आने वाली मंगोल सेनाओं की निगरानी हेतु एक प्रहरीदुर्ग के रूप में बनाया गया था।
कुतुब मीनार के बारे में यह कथन गलत है कि इसे मंगोलों की निगरानी के लिए प्रहरीदुर्ग के रूप में बनाया गया था। वास्तव में, यह एक विजय स्तंभ और मुअज्जिन के लिए अज़ान देने हेतु बनाई गई मीनार थी। इसका निर्माण कुतुबुद्दीन ऐबक ने शुरू किया और इल्तुतमिश ने पूरा किया। फिरोज शाह तुगलक ने बाद में इसकी चौथी और पांचवीं मंजिल की मरम्मत करवाई थी। मीनार पर कुरान की आयतों और नक्काशी का सुंदर प्रयोग किया गया है, जो इसे उत्कृष्ट इस्लामी स्थापत्य का प्रतीक बनाता है।

72. (4) I, II और III
मुहम्मद बिन तुगलक की राजधानी परिवर्तन की योजना कई कारणों से विफल रही। दिल्ली से दौलताबाद की लंबी यात्रा के दौरान जनता को असहनीय कष्ट और आक्रोश झेलना पड़ा, जिससे सुल्तान के विरुद्ध असंतोष बढ़ा। सामरिक रूप से दौलताबाद उत्तर-पश्चिमी सीमा पर मंगोल हमलों की निगरानी के लिए बहुत दूर था। इसके अतिरिक्त, वहां जल संसाधनों की कमी के कारण इतनी विशाल आबादी का स्थायी भरण-पोषण कठिन हो गया था। इन विषम परिस्थितियों ने सुल्तान को अंततः पुनः दिल्ली लौटने का निर्णय लेने पर विवश किया।

73. (3) चोल साम्राज्य
चोल साम्राज्य दिल्ली सल्तनत के उदय से बहुत पहले ही समाप्त हो चुका था, अतः वह सल्तनत के पतन के दौरान उभरने वाले राज्यों में शामिल नहीं है। इसके विपरीत, बहमनी और विजयनगर साम्राज्यों का उदय 14वीं शताब्दी में मुहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल के दौरान हुआ था। जौनपुर साम्राज्य भी तुगलक काल के बाद स्वतंत्र हुआ। चोल काल मुख्य रूप से प्राचीन और प्रारंभिक मध्यकालीन दक्षिण भारतीय इतिहास का हिस्सा है, जबकि अन्य विकल्प सल्तनत काल के विघटन से सीधे जुड़े हुए हैं।

74. (1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
मस्जिद की वास्तुकला में मिहराब वह अर्धवृत्ताकार स्थान है जो मक्का की दिशा को दर्शाता है। मिम्बर वह सीढ़ीदार मंच है जहाँ से इमाम शुक्रवार की प्रार्थना के दौरान प्रवचन देते हैं। सहन मस्जिद का खुला केंद्रीय प्रांगण होता है जहाँ नमाजी एकत्रित होते हैं। मकसूरा मिहराब के पास का वह घेरा है जो शासक या महत्वपूर्ण व्यक्तियों के लिए आरक्षित होता है। ये तत्व इस्लामी धार्मिक वास्तुकला के अनिवार्य अंग हैं और दिल्ली सल्तनत की मस्जिदों में स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं।

NODIA

8. संगम वंश के तहत राजनीतिक सुदृढ़ीकरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. बुक्का I ने मदुरई सल्तनत का अंत किया और इसे विजयनगर साम्राज्य में सम्मिलित कर लिया।
II. देव राय II ने विजयनगर सेना में मुस्लिम अश्वारोहियों की भर्ती की प्रथा प्रारंभ की।
III. संगम शासकों ने केवल शैव धर्म को संरक्षण दिया और जैन विद्वानों को प्रताड़ित किया।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

9. निम्नलिखित में से कौन सा क्षेत्र विजयनगर के संगम शासकों और बहमनी राज्य के बीच क्षेत्रीय संघर्ष का प्रमुख स्रोत नहीं था?
(1) रायचूर दोआब
(2) कृष्ण-गोदावरी डेल्टा
(3) मराठवाड़ा क्षेत्र
(4) कोंकण क्षेत्र
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

10. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। सही विकल्प चुनें।
अभिकथन (A): देव राय II ने अपनी सेना में बड़ी संख्या में मुस्लिम धनुर्धरों और अश्वारोहियों को भर्ती किया।
कारण (R): उन्होंने अनुभव किया था कि बहमनी सेना की श्रेष्ठता उनकी अश्वारोही सेना और कुशल तीरंदाजी में थी, जिसका मुकाबला करने के लिए उन्हें इसकी आवश्यकता थी।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

11. सलुव नरसिंह, जिन्होंने सिंहासन प्राप्त कर सलुव वंश की स्थापना की, मूल रूप से संगम शासकों के अधीन किस प्रशासनिक पद पर थे?
(1) प्रधानमंत्री (प्रधानी)
(2) नौसेना बेड़े के अधिपति
(3) विरुपाक्ष मंदिर के मुख्य पुजारी
(4) चंद्रगिरि के प्रांतीय गवर्नर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

12. सलुव वंश से तुलुव वंश में संक्रमण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. सलुव वंश विजयनगर साम्राज्य का सबसे कम समय तक चलने वाला वंश था।
II. इम्माडि नरसिंह सलुव वंश के अंतिम शासक थे।
III. वीर नरसिंह ने तुलुव वंश की स्थापना की।
IV. वीर नरसिंह द्वारा सत्ता हथियाने को ऐतिहासिक रूप से 'द्वितीय बलात्-ग्रहण' कहा जाता है।
V. तुलुव वंश अच्युत देव राय के शासनकाल के दौरान अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँचा।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल V
(3) केवल III और IV
(4) केवल I, III और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

13. सलुव नरसिंह द्वारा 'प्रथम बलात्-ग्रहण' का प्राथमिक राजनीतिक परिणाम क्या था?
(1) इसके कारण साम्राज्य का तत्काल पांच स्वतंत्र दक्कन राज्यों में विखंडन हो गया
(2) इसके परिणामस्वरूप ओडिशा के गजपतियों के विरुद्ध बहमनी राज्य के साथ एक स्थायी गठबंधन हुआ
(3) इसने विजयनगर साम्राज्य को बाद के निर्बल संगम शासकों के कारण होने वाले विघटन से बचा लिया
(4) इसने शाही राजधानी को स्थायी रूप से हम्पी से पेनुकोंडा स्थानांतरित कर दिया
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

14. विजयनगर के राजवंशों और उनके संबंधित संस्थापकों का निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही सुमेलित है?
(1) संगम - देव राय I
(2) तुलुव - कृष्णदेव राय
(3) आरविडु - राम राय
(4) सलुव - सलुव नरसिंह
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

15. सूची I की मदों को सूची II की मदों के साथ सुमेलित करें और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनें।
सूची I: (विजयनगर राजवंश)
A. संगम
B. सलुव
C. तुलुव
D. आरविडु
सूची II: (प्रमुख घटना/विशेषता)
i. तालिकोटा का प्रसिद्ध युद्ध इनके नाममात्र के शासन के दौरान हुआ था
ii. राजधानी को पेनुकोंडा और बाद में चंद्रगिरि स्थानांतरित कर दिया
iii. साम्राज्य का सबसे लंबे समय तक शासन करने वाला राजवंश
iv. सबसे कम समय तक शासन करने वाला राजवंश जिसने साम्राज्य को पतन से बचाया
(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii

Click Here to Buy book on Amazon

अध्याय 10
विजयनगर साम्राज्य एवं क्षेत्रीय राज्य

NODIA

1. ऐतिहासिक परंपरा के अनुसार, विजयनगर साम्राज्य के संस्थापक, हरिहर और बुक्का, काम्पिली राज्य की सेवा करने से पहले प्रारंभ में निम्नलिखित में से किस राज्य के सामंत थे?
(1) होयसाल
(2) काकतीय
(3) पाण्ड्य
(4) यादव
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

2. निम्नलिखित में से कौन सा कथन 1336 ईस्वी में हरिहर और बुक्का द्वारा विजयनगर साम्राज्य की स्थापना के पीछे के प्रारंभिक उद्देश्य को सही ढंग से परिभाषित करता है?
(1) दक्षिणी राज्यों के विस्तार के विरुद्ध हिंदू परंपराओं की रक्षा करना
(2) दिल्ली सल्तनत के अधीन एक निष्ठावान प्रशासनिक जागीरदार राज्य के रूप में कार्य करना
(3) अरब सागर पर केंद्रित एक रणनीतिक समुद्री व्यापार तंत्र बनाना
(4) चोल वंश को समाप्त करना और चालुक्य संप्रभु शासन को पुनः स्थापित करना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

3. विजयनगर साम्राज्य की स्थापना के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: एक प्रमुख ऋषि, विद्यारण्य को पारंपरिक रूप से हरिहर और बुक्का को विजयनगर साम्राज्य स्थापित करने के लिए प्रेरित करने का श्रेय दिया जाता है।
कथन II: राजधानी का नाम प्रारंभ में ऋषि के सम्मान में विद्यानगर रखा गया था, जो बाद में विजयनगर के नाम से जाना गया।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(3) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

4. विजयनगर की स्थापना के संदर्भ में, तुंगभद्रा नदी घाटी का प्राथमिक भौगोलिक महत्व क्या था?
(1) इसने विजयनगर को चोलों से अलग करने वाली प्राथमिक प्राकृतिक सीमा बनाई
(2) इसने पश्चिमी बंदरगाहों से जुड़ने वाले प्रमुख नौगम्य जलमार्ग के रूप में कार्य किया
(3) यह दक्षिण में उच्च गुणवत्ता वाले हीरे के निक्षेपों का एकमात्र स्रोत था
(4) इसमें रणनीतिक रायचूर दोआब सम्मिलित था, जो बहमनी साम्राज्य के साथ संघर्ष का क्षेत्र था
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

5. सूची I की मदों को सूची II की मदों के साथ सुमेलित करें और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनें।
सूची I: (विदेशी यात्री)
A. निकोलो कोंटी
B. अब्दुर रज्जाक
C. डोमिंगोस पेस
D. फर्नाओ नुनीज़
सूची II: (विजयनगर का शासक जिसके समय दौरा किया)
i. देव राय II
ii. देव राय I
iii. अच्युत देव राय
iv. कृष्णदेव राय
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

6. संगम वंश के निम्नलिखित शासकों में से किसने 'गजवेटकर' (हाथियों का शिकारी) की उपाधि धारण की थी?
(1) हरिहर I
(2) देव राय II
(3) बुक्का I
(4) देव राय I
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

7. संगम वंश के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) बुक्का I ने चीन के मिंग साम्राज्य में एक शिष्टमंडल भेजा था।
(2) देव राय I ने सिंचाई व्यवस्था सुधारने के लिए तुंगभद्रा नदी पर एक बांध का निर्माण करवाया था।
(3) हरिहर II 'महाराजाधिराज' की उपाधि धारण करने वाले पहले विजयनगर शासक थे।
(4) संगम वंश की स्थापना कृष्णदेव राय ने बहमनी सुल्तान को हराने के बाद की थी।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

75. (4) इसके लिए एक विशाल स्थायी सेना और किलेबंद सीमा की आवश्यकता थी, जिसने राज्य की अर्थव्यवस्था को दुर्बल कर दिया।
निरंतर होने वाले मंगोल आक्रमणों ने दिल्ली सल्तनत की नीतियों को गहराई से प्रभावित किया। इनसे सुरक्षा के लिए सुल्तानों को उत्तर-पश्चिमी सीमा पर दुर्गों की एक विशाल श्रृंखला बनानी पड़ी और एक विशाल स्थायी सेना का रखरखाव करना पड़ा। इस अत्यधिक सैन्य व्यय ने राज्य के कोष पर भारी दबाव डाला और अर्थव्यवस्था को कमजोर किया। अलाउद्दीन खलजी के बाजार नियंत्रण और बलबन की सैन्य सुधार नीतियां काफी हद तक इसी मंगोल खतरे का सामना करने की आवश्यकताओं से प्रेरित और संचालित थीं।

76. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
फिरोज शाह तुगलक ने अपने शासनकाल में कुलीनों और धार्मिक वर्ग के प्रति अत्यंत समझौतावादी और उदार नीति अपनाई थी। इसके पीछे मुख्य कारण यह था कि उसने मुहम्मद बिन तुगलक की मृत्यु के बाद अराजकतापूर्ण स्थिति में कुलीनों के समर्थन से सत्ता प्राप्त की थी। अपनी स्थिति को सुरक्षित करने और कुलीनों के पुराने असंतोष को शांत करने के लिए उसने इक्ता को वंशानुगत बना दिया और धार्मिक वर्ग को शासन में महत्व दिया। अतः कथन और कारण दोनों सत्य हैं और उसकी राजनीतिक विवशता को दर्शाते हैं।

77. (3) शुक्रवार का धार्मिक प्रवचन जहाँ शासक की राजनीतिक वैधता दर्शाने हेतु उसका नाम पढ़ा जाता था।
दिल्ली सल्तनत में 'खुत्बा' वह औपचारिक धार्मिक प्रवचन था जो शुक्रवार की प्रार्थना और विशेष पर्वों के अवसर पर दिया जाता था। इस प्रवचन में वर्तमान सुल्तान के नाम का उल्लेख करना उसकी राजनीतिक संप्रभुता और वैधानिकता का प्रतीक माना जाता था। किसी सुल्तान के नाम का खुत्बे से हटाया जाना उसकी सत्ता के अंत का संकेत होता था। यह परंपरा मध्यकालीन इस्लामी राज्यों में शासक के अधिकार को धार्मिक और सामाजिक मान्यता प्रदान करने का एक अनिवार्य और अत्यंत महत्वपूर्ण राजनीतिक माध्यम थी।

78. (4) गयासुद्दीन बलबन
गयासुद्दीन बलबन ने सुल्तान के पद की गरिमा और निरंकुशता को पुनर्स्थापित करने के लिए दरबार में 'सजदा' (घुटने टेककर अभिवादन) और 'पायबोस' (सुल्तान के चरण चूमना) जैसी ईरानी रस्में शुरु की थीं। उसका उद्देश्य यह स्पष्ट करना था कि सुल्तान अन्य कुलीनों के समान नहीं है, बल्कि वह ईश्वर का प्रतिनिधि है। इन कठोर नियमों के माध्यम से उसने शक्तिशाली तुर्क सरदारों के अहंकार को कुचला और दरबार में अनुशासन स्थापित किया। यह उसके 'रक्त और लौह' के राजत्व सिद्धांत का एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक भाग था।

79. (3) A सही है लेकिन R गलत है।
अलाउद्दीन खलजी ने दिल्ली में कड़े मूल्य नियंत्रण और राशनिंग व्यवस्था लागू की थी, किंतु इसका उद्देश्य निर्धनता दूर करना या धन का समान वितरण करना नहीं था। उसका वास्तविक उद्देश्य एक विशाल स्थायी सेना को कम वेतन में बनाए रखना था ताकि वह मंगोल आक्रमणों से रक्षा कर सके। उसने अनाज के दाम जानबूझकर कम रखे ताकि सैनिकों का खर्च कम रहे। अतः कथन सत्य है, लेकिन कारण गलत है क्योंकि उसकी नीतियां जनकल्याण के बजाय सैन्य और प्रशासनिक आवश्यकताओं से प्रेरित थीं।

80. (2) गयासुद्दीन तुगलक
गयासुद्दीन तुगलक और प्रसिद्ध सूफी संत निजामुद्दीन औलिया के बीच संबंध अत्यंत तनावपूर्ण थे। जब सुल्तान बंगाल अभियान से लौट रहा था, तब उसने संत को दिल्ली छोड़ने का आदेश भेजा था। इसके उत्तर में निजामुद्दीन औलिया ने "हुनूज़ दिल्ली दूर अस्त" (अभी दिल्ली दूर है) कहा था। संयोगवश, दिल्ली पहुँचने से पूर्व ही अफगानपुर में एक लकड़ी के महल के गिरने से सुल्तान की मृत्यु हो गई और वह कभी दिल्ली नहीं पहुँच सका। यह घटना इतिहास में एक प्रसिद्ध लोकोक्ति के रूप में अमर हो गई।

www.nodia.in

Downloaded from www.pdf.tube

(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

16. अपने सैन्य अभियानों के दौरान, कृष्णदेव राय ने ओडिशा के गजपति शासक को हराया था। उनके द्वारा पराजित गजपति राजा कौन था?
(1) कपिलेंद्र देव
(2) प्रतापरुद्र देव
(3) पुरुषोत्तम देव
(4) मुकुंद देव
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

17. कृष्णदेव राय की सैन्य उपलब्धियों का विश्लेषण करने वाला एक अभ्यर्थी इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि 1520 में रायचूर दोआब पर उनका अधिकार उनकी सबसे बड़ी विजय थी। रायचूर के युद्ध में कृष्णदेव राय ने किस ऐतिहासिक व्यक्तित्व को हराया था?
(1) गोलकुंडा के कुली कुतुब शाह
(2) बीजापुर के इस्माइल आदिल शाह
(3) बीदर के महमूद गवां
(4) अहमदनगर के बुरहान निजाम शाह
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

18. कृष्णदेव राय के सैन्य अभियानों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. उन्होंने उम्मत्तूर के प्रमुख गंगाराज के विद्रोह को सफलतापूर्वक दबा दिया।
II. उन्होंने ओडिशा के गजपतियों के विरुद्ध एक विजयी अभियान चलाया और उदयगिरि तथा कोंडाविडु पर अधिकार कर लिया।
III. उन्होंने दीव के युद्ध में दक्कन की सल्तनतों की संयुक्त सेना को हराया।
IV. उन्होंने बहमनी सुल्तान महमूद शाह को उनके सिंहासन पर पुनः प्रतिष्ठित किया और 'यवनराज्य स्थापनाचार्य' की उपाधि धारण की।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II और IV
(2) केवल I, II और III
(3) केवल II, III और IV
(4) केवल I, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

19. विद्रोही सामंतों को हराने और विजयनगर साम्राज्य की सीमाओं को स्थिर करने के बाद कृष्णदेव राय द्वारा कौन सी उपाधि धारण की गई थी?
(1) आंध्र पितामह
(2) यवनराज्य स्थापनाचार्य
(3) अभिनव भोज
(4) मुवेन्दवेलन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

20. कृष्णदेव राय के अभियानों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा युग्म गलत सुमेलित है?
(1) उदयगिरि अभियान - गजपतियों की हार
(2) रायचूर अभियान - इस्माइल आदिल शाह की हार
(3) उम्मत्तूर अभियान - स्थानीय विद्रोही प्रमुख का दमन
(4) मालाबार अभियान - गोवा से पुर्तगालियों का निष्कासन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

21. कृष्णदेव राय साहित्य के महान संरक्षक थे और उन्होंने 'आमुक्तमाल्यद' की रचना की थी। यह प्रसिद्ध कृति किस भाषा में लिखी गई थी?
(1) संस्कृत
(2) कन्नड़
(3) तेलुगु
(4) तमिल
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

22. विजयनगर साम्राज्य पर शासन करने वाले राजवंशों का प्राचीनतम से नवीनतम तक सही अनुक्रम चुनें:
(1) संगम, तुलुव, सलुव, आरविडु
(2) संगम, सलुव, तुलुव, आरविडु
(3) सलुव, संगम, आरविडु, तुलुव
(4) संगम, सलुव, आरविडु, तुलुव
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

23. कृष्णदेव राय के साहित्यिक योगदान के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: उन्होंने अपने दरबार में आठ प्रसिद्ध विद्वानों के समूह 'अष्टदिग्गज' को संरक्षण दिया।
कथन II: कृष्णदेव राय ने केवल तेलुगु साहित्य को प्रोत्साहित किया और संस्कृत विद्वानों की उपेक्षा की।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(3) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

24. कृष्णदेव राय के दरबार के अष्टदिग्गजों में किसे सबसे प्रमुख कवि माना जाता था और वे 'आंध्र कविता पितामह' के रूप में जाने जाते थे?
(1) अल्लासानी पेदन्ना
(2) तेनाली रामकृष्ण
(3) नंदी थिम्मना
(4) धूर्जटी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

25. सूची I की मदों को सूची II की मदों के साथ सुमेलित करें और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनें।
सूची I: (अष्टदिग्गज विद्वान)

(1) टंका
(2) जीतल
(3) वराह
(4) दीनार
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

42. विजयनगर साम्राज्य की यात्रा करने वाले निम्नलिखित विदेशी यात्रियों को सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
I. डोमिंगोस पेस
II. निकोलो कोंटी
III. फर्नाओ नुनीज़
IV. अब्दुर रज्जाक
सही क्रम चुनें:
(1) II, IV, I, III
(2) IV, II, III, I
(3) II, I, IV, III
(4) I, II, III, IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

43. विजयनगर साम्राज्य की स्थापत्य शैली का अध्ययन करने पर किस विशिष्ट विशेषता को इस काल के एक अलग नवाचार के रूप में पहचाना जाता है, जो इसे चोल वास्तुकला से अलग करती है?
(1) दक्कन में अखंड चट्टानों को काटकर बनाई गई गुफा मंदिरों का व्यापक विकास
(2) गर्भगृहों में संरचनात्मक मेहराबों और गुंबदों का अभिनव समावेश
(3) मंदिर डिजाइन से ऊंचे गोपुरों का पूर्ण निष्कासन
(4) जटिल नक्काशीदार पत्थर के स्तंभों वाले विस्तृत 'कल्याण मंडप'
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

44. प्रसिद्ध हज़ारा राम मंदिर, जो रामायण के दृश्यों को दर्शाने वाली अपनी जटिल नक्काशी के लिए जाना जाता है, किस विजयनगर शासक द्वारा निर्मित करवाया गया था?
(1) बुक्का I
(2) कृष्णदेव राय
(3) देव राय II
(4) अच्युत देव राय
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

45. सूची I की मदों को सूची II की मदों के साथ सुमेलित करें और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनें।
सूची I: (विजयनगर स्मारक)
A. विट्ठलस्वामी मंदिर
B. विरुपाक्ष मंदिर
C. लोटस महल
D. महानवमी डिब्बा
सूची II: (प्रमुख स्थापत्य विशेषता)
i. हिंदू और इस्लामी स्थापत्य तत्वों का मिश्रण
ii. संगीतमय स्तंभ और एक पत्थर का रथ
iii. नवरात्रि के दौरान शाही समारोहों के लिए उपयोग किया जाने वाला विशाल मंच
iv. प्राचीनतम मंदिर जिसका कृष्णदेव राय द्वारा महत्वपूर्ण विस्तार किया गया
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

46. विजयनगर वास्तुकला के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही सुमेलित है?
(1) महानवमी डिब्बा - राज्य के अनाज को रखने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला अन्नागार
(2) गजशाला (हाथी अस्तबल) - बिना किसी इस्लामी प्रभाव वाली शुद्ध द्रविड़ वास्तुकला का उदाहरण
(3) राय गोपुरम् - हरिहर I द्वारा शुरू किया गया एक छोटा प्रवेश द्वार
(4) पत्थर का रथ - विट्ठलस्वामी मंदिर परिसर के भीतर स्थित
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

47. निम्नलिखित में से कौन सा कथन हम्पी स्मारकों की प्राथमिक स्थापत्य शैली का सर्वोत्तम वर्णन करता है?
(1) ऊंचे गोपुरों, स्तंभों वाले मंडपों और संयुक्त स्तंभों वाली द्रविड़ शैली
(2) उत्तर भारत के स्मारकों में पाई जाने वाली पारंपरिक नागर शैली की वास्तुकला
(3) दिल्ली सल्तनत के स्मारकों में पाए जाने वाले रूपों के समान संरचनात्मक रूप
(4) तारा के आकार के मंचों और सोपस्टोन के उपयोग वाली वेसर शैली के डिजाइन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

48. तालिकोटा के युद्ध (1565) के कारणों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. राम राय की आक्रामक कूटनीति ने दक्कन की सल्तनतों को संगठित होने के लिए प्रेरित किया।
II. राम राय अक्सर सल्तनतों के आंतरिक संघर्षों में हस्तक्षेप करते थे, और उन्हें एक-दूसरे के विरुद्ध करते थे।
III. इसका तात्कालिक कारण गोलकुंडा में हीरे के व्यापार के एकाधिकार को लेकर विवाद था।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल II और III
(2) केवल I और II
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Click Here to Buy book on Amazon

(3) केवल II, IV और V
(4) केवल I, II, III और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

33. निम्नलिखित में से कौन सी परिभाषा विजयनगर साम्राज्य के संदर्भ में 'शिष्ट' (Sist) शब्द की सर्वोत्तम व्याख्या करती है?
(1) विदेशी दूतों द्वारा दिया जाने वाला औपचारिक उपहार
(2) किसानों से वसूला जाने वाला मानक भू-राजस्व कर
(3) तीर्थयात्रियों पर लगाया जाने वाला धार्मिक कर
(4) शांति काल के दौरान सैनिकों को दिया जाने वाला मौद्रिक पारिश्रमिक
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

34. निम्नलिखित में से कौन सा कर विजयनगर राज्य द्वारा सामान्यतः नहीं लगाया जाता था?
(1) गैर-हिंदुओं पर जज़िया
(2) विवाहों पर कर
(3) व्यवसायों पर कर
(4) बंदरगाहों पर सीमा शुल्क
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

35. सूची I की मदों को सूची II की मदों के साथ सुमेलित करें और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनें।
सूची I: (आर्थिक/राजस्व शब्द)
A. अथवन
B. कंदाचार
C. पैगोडा/वराह
D. अमरम्
सूची II: (अर्थ)
i. सैन्य विभाग
ii. साम्राज्य का मानक स्वर्ण सिक्का
iii. राजस्व विभाग
iv. सैन्य सेवा के लिए दी गई भूमि
(1) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
(2) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(3) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(4) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

36. कृषि और आर्थिक स्थिरता को बढ़ावा देने के लिए, विजयनगर के राजाओं ने तालाबों और नहरों के निर्माण में भारी निवेश किया। प्रसिद्ध 'कोरागल' बांध और 'बसवन्ना' नहर का निर्माण किस शासक ने करवाया था?
(1) हरिहर I
(2) कृष्णदेव राय
(3) अच्युत देव राय
(4) देव राय I
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

37. विजयनगर साम्राज्य में व्यापार के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: पश्चिमी बंदरगाहों पर पहुँचने वाले घोड़ों के व्यापार पर पुर्तगालियों का महत्वपूर्ण नियंत्रण था।
कथन II: कृष्णदेव राय ने घोड़ों पर पुर्तगालियों के एकाधिकार को रोकने के लिए उनके साथ शत्रुतापूर्ण संबंध बनाए रखे।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(3) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

38. विजयनगर साम्राज्य में व्यापार और वाणिज्य के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. भटकल और मैंगलोर पश्चिमी तट पर महत्वपूर्ण बंदरगाह थे।
II. पुलिकट पूर्वी तट पर एक प्रमुख वाणिज्यिक केंद्र के रूप में कार्य करता था।
III. मुख्य निर्यात वस्तुओं में सूती वस्त्र, मसाले और लोहा सम्मिलित थे।
IV. अरबी घोड़े सेना के लिए आवश्यक एक महत्वपूर्ण आयात वस्तु थे।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) I, II, III और IV
(3) केवल I, III और IV
(4) केवल II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

39. विजयनगर वाणिज्य के विदेशी वृत्तांतों के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) अब्दुर रज्जाक ने उल्लेख किया कि साम्राज्य में ठीक 300 बंदरगाह सक्रिय थे।
(2) डोमिंगोस पेस ने हम्पी के बाजारों को बहुमूल्य रत्नों और समृद्ध वस्त्रों से परिपूर्ण बताया।
(3) फर्नाओ नुनीज़ ने अच्युत देव राय के अधीन कराधान और व्यापार प्रणालियों के बारे में विस्तृत विवरण दर्ज किया।
(4) इब्न बतूता ने अपने यात्रा वृत्तांत में कृष्णदेव राय के आर्थिक सुधारों का विस्तृत विवरण दिया।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

40. विदेशी यात्रियों के विवरण के अनुसार, विजयनगर साम्राज्य में कौन सा व्यापारी समुदाय मुख्य रूप से आंतरिक व्यापार और श्रेणियों (guilds) को नियंत्रित करता था?
(1) चेट्टी और बनजीगा
(2) बोहरा और खोजा
(3) मारवाड़ी और खत्री
(4) अरब और फारसी मध्यस्थ
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

41. विजयनगर के शासकों ने बड़ी संख्या में सोने के सिक्के जारी किए जो अंतरराष्ट्रीय व्यापार में व्यापक रूप से स्वीकार किए जाते थे। इन सोने के सिक्कों का मानक नाम क्या था?

Downloaded from www.pdf.tube

57. बहमनी राज्य में महमुद गवां की भूमिका के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: महमुद गवां ने राज्य को आठ प्रांतों (तरफों) में विभाजित करके महत्वपूर्ण प्रशासनिक सुधार किए।
कथन II: 'दक्कनी' अमीरों द्वारा रची गई साजिश के कारण सुल्तान मुहम्मद शाह III द्वारा उन्हें मृत्युदंड दिया गया था।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(3) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

58. बहमनी राज्य के उत्तराधिकारी राज्यों (पांच दक्कन सल्तनतों) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. बरार बहमनी राज्य से अलग होने वाला प्रथम राज्य था।
II. अकबर के शासनकाल के दौरान गोलकुंडा को मुगल साम्राज्य में मिला लिया गया था।
III. अहमदनगर ने चाँद बीबी के नेतृत्व में मुगल आक्रमणों के विरुद्ध सफलतापूर्वक अपना बचाव किया।
IV. बीदर अपनी स्वतंत्रता घोषित करने वाली पांच सल्तनतों में से अंतिम थी।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, III और IV
(2) केवल I, II और III
(3) केवल II, III और IV
(4) केवल I, II और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

59. निम्नलिखित में से किस दक्कन सल्तनत ने तालिकोटा के युद्ध में विजयनगर साम्राज्य को हराने वाले गठबंधन में भाग नहीं लिया था?
(1) अहमदनगर
(2) बीजापुर
(3) गोलकुंडा
(4) बरार
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

60. गोलकुंडा का कुतुब शाही वंश किस प्रसिद्ध स्मारक के निर्माण के लिए विख्यात है?
(1) इब्राहिम रौज़ा
(2) चारमीनार
(3) चाँद मीनार
(4) महमुद गवां का मदरसा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

61. बहमनी राज्य की आंतरिक राजनीति के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(1) एक शासन मॉडल जहाँ हिंदू और मुस्लिम नेताओं के बीच भूमिकाएँ समान रूप से वितरित थीं
(2) एक केंद्रीकृत निरंकुशता जहाँ अमीरों के पास किसी भी सैन्य या कार्यकारी नियंत्रण का अभाव था
(3) 'दक्कनी' (स्वदेशी) और 'अफाकी' (विदेशी) अमीरों के बीच निरंतर सत्ता संघर्ष
(4) उलेमाओं द्वारा कड़ाई से शासित राज्य जहाँ नागरिक कानूनों को हटा दिया गया था
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

62. विघटित होते बहमनी साम्राज्य से स्वतंत्र राज्यों के रूप में दक्कन सल्तनतों की स्थापना का सही क्रम चुनें:
(1) बरार, बीजापुर, अहमदनगर, गोलकुंडा, बीदर
(2) बीजापुर, बरार, गोलकुंडा, अहमदनगर, बीदर
(3) अहमदनगर, बीजापुर, बरार, बीदर, गोलकुंडा
(4) गोलकुंडा, अहमदनगर, बीजापुर, बरार, बीदर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

63. दक्कन सल्तनतों के राजवंशों के आधार पर निम्नलिखित शासकों में से विषम को पहचानें:
(1) फिरोज शाह बहमनी
(2) इब्राहिम आदिल शाह II
(3) बुरहान निजाम शाह
(4) मुहम्मद कुली कुतुब शाह
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

64. पांडुआ में अदीना मस्जिद, जिसे भारतीय उपमहाद्वीप की सबसे बड़ी मस्जिदों में से एक माना जाता है, किस बंगाल सुल्तान के शासनकाल के दौरान निर्मित हुई थी?
(1) शम्सुद्दीन इलियास शाह
(2) सिकंदर शाह
(3) गयासुद्दीन आज़म शाह
(4) अलाउद्दीन हुसैन शाह
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

65. सूची I की मदों को सूची II की मदों के साथ सुमेलित करें और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनें।
सूची I: (क्षेत्रीय राज्य)
A. मालवा
B. गुजरात
C. जौनपुर
D. बंगाल
सूची II: (प्रमुख शासक/संस्थापक)
i. महमुद बेगड़ा
ii. होशंग शाह
iii. शम्सुद्दीन इलियास शाह
iv. मलिक सरवर (ख्वाजा जहाँ)
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

49. तालिकोटा का युद्ध, जिसने विजयनगर साम्राज्य के पतन का मार्ग प्रशस्त किया, ऐतिहासिक रूप से निम्नलिखित में से किस नाम से भी जाना जाता है?
(1) रायचूर का युद्ध
(2) रक्कासा-तंगड़ी का युद्ध
(3) दीव का युद्ध
(4) शोलिंगुर का युद्ध
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

50. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। सही विकल्प चुनें।
अभिकथन (A): 1565 में तालिकोटा के युद्ध के परिणामस्वरुप विजयनगर साम्राज्य का तत्काल और पूर्ण पतन हो गया।
कारण (R): विजयी दक्कन सेनाओं द्वारा राजधानी हम्पी को व्यवस्थित रूप से नष्ट कर दिया गया और लूटा गया।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

51. तालिकोटा के युद्ध के दौरान विजयनगर साम्राज्य का शासक कौन था, जबकि वास्तविक शक्ति राम राय के पास थी?
(1) अच्युत देव राय
(2) तिरुमल देव राय
(3) सदाशिव राय
(4) वेंकट II
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

52. तालिकोटा के युद्ध के परिणामों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. विजयनगर (हम्पी) शहर को पूरी तरह से विनष्ट कर दिया गया और त्याग दिया गया।
II. युद्ध के दौरान राम राय को बंदी बना लिया गया और मार दिया गया।
III. तिरुमल ने राजधानी को पेनुकोंडा स्थानांतरित कर दिया और आरविडु वंश की स्थापना की।
IV. पुर्तगालियों ने बिना किसी प्रतिरोध के पूरे कोंकण तट पर नियंत्रण प्राप्त कर लिया।
V. मदुरई, तंजौर और गिंगी के नायकों ने इसके तुरंत बाद अपनी पूर्ण स्वतंत्रता घोषित कर दी।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, III, IV और V
(2) केवल II, III, IV और V
(3) I, II, III, IV और V
(4) केवल I, II, III और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

53. वह प्राथमिक राजनीतिक कारक क्या था जिसने 1347 ईस्वी में बहमनी राज्य के उदय को सुगम बनाया?
(1) तैमूर का आक्रमण जिसने दिल्ली में केंद्रीय सत्ता को निर्बल कर दिया
(2) चोल संरचना का पतन जिसने एक राजनीतिक शून्यता उत्पन्न की
(3) मुहम्मद बिन तुगलक की नीतियों के विरुद्ध अमीर-ए-सदा का विद्रोह
(4) सफाविद साम्राज्य से पर्याप्त सैन्य संसाधनों का प्रावधान
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

54. बहमनी राज्य से संबंधित निम्नलिखित में से कौन सा युग्म गलत सुमेलित है?
(1) अलाउद्दीन हसन बहमन शाह - बहमनी राज्य के संस्थापक
(2) अहमद शाह वली - राजधानी को बीदर से गुलबर्गा स्थानांतरित किया
(3) गुलबर्गा - बहमनी राज्य की प्रथम राजधानी
(4) महमुद गवां - एक फारसी व्यापारी जो शक्तिशाली प्रधानमंत्री बना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

55. सूची I की मदों को सूची II की मदों के साथ सुमेलित करें और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनें।
सूची I: (दक्कन सल्तनत)
A. बीजापुर
B. अहमदनगर
C. गोलकुंडा
D. बीदर
सूची II: (सत्तारूढ़ राजवंश)
i. निज़ाम शाही
ii. आदिल शाही
iii. बरीद शाही
iv. कुतुब शाही
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

56. स्थापत्य कला का चमत्कार 'गोल गुंबज़', जो अपने विशाल गुंबद और गूँजने वाली दीर्घा के लिए प्रसिद्ध है, बहमनी राज्य के किस उत्तराधिकारी राज्य में स्थित है?
(1) बीजापुर
(2) अहमदनगर
(3) गोलकुंडा
(4) बीदर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Click Here to Buy book on Amazon

A. अल्लासानी पेदन्ना
B. नंदी थिम्मना
C. तेनाली रामकृष्ण
D. धूर्जटी

सूची II: (साहित्यिक कृति)
i. पांडुरंग महात्म्यम्
ii. मनुचरितम्
iii. कालहस्ती महात्म्यम्
iv. पारिजातपहरणाम्

(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

26. विजयनगर प्रशासन के तहत, नयनकर प्रणाली में 'अमरम्' शब्द का क्या अर्थ था?
(1) राज्य सेवा के बदले सैन्य नायकों को दिया जाने वाला भूमि आवंटन
(2) प्रमुख सैन्य अभियानों के दौरान लगाया जाने वाला एक विशेष कृषि कर
(3) वरिष्ठतम मंत्रियों से बनी उच्च स्तरीय सलाहकार परिषद
(4) शाही खजाने की सुरक्षा का उत्तरदायित्व संभालने वाली एक विशिष्ट पैदल सेना इकाई
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

27. निम्नलिखित में से कौन सा कथन विजयनगर साम्राज्य की नयनकर प्रणाली का सही वर्णन करता है?
(1) एक केंद्रीकृत नौकरशाही संरचना जहाँ सभी अधिकारियों को निश्चित वेतन मिलता था
(2) चोल ग्राम सभाओं से व्युत्पन्न ग्रामीण स्वशासन का एक स्थानीय मॉडल
(3) विरूपाक्ष मंदिर के पुजारियों द्वारा प्रबंधित एक धार्मिक प्रशासनिक ढांचा
(4) एक क्षेत्रीय प्रशासन जहाँ नायक भूमि का शासन करते थे और सैन्य सेवा प्रदान करते थे
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

28. विजयनगर साम्राज्य के प्रशासन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. आयगर प्रणाली ग्राम प्रशासन का प्रमुख तंत्र थी।
II. राजा सर्वोच्च न्यायिक अधिकारी था और धर्मशास्त्रों के आधार पर शासन करता था।
III. साम्राज्य को 'मंडलम' नामक प्रांतों में विभाजित किया गया था, जिन्हें आगे 'नाडु' और 'स्थल' में विभाजित किया गया था।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) I, II और III
(3) केवल II और III
(4) केवल I और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

29. विजयनगर ग्राम प्रशासन के संदर्भ में, 'आयगरों' की प्राथमिक भूमिका क्या थी?
(1) केंद्रीय शाही कमान द्वारा निगरानी किए जाने वाले वरिष्ठ प्रांतीय प्रशासक
(2) शाही अश्वारोही सेना के लिए उत्तरदायी उच्च पदस्थ सैन्य अधिकारी
(3) बारह ग्राम अधिकारियों का एक समूह जो स्थानीय ग्रामीण प्रशासन का प्रबंधन करता था
(4) प्रमुख बंदरगाह नगरों में संचालित होने वाले श्रेणी-आधारित विदेशी व्यापारी समुदाय
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

30. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रुप में अंकित किया गया है। सही विकल्प चुनें।
अभिकथन (A): विजयनगर साम्राज्य के तहत नायक अक्सर निर्बल राजाओं के शासनकाल के दौरान केंद्रीय सत्ता के लिए संकट बन जाते थे।
कारण (R): नायक अपनी सेनाएँ रखते थे, अपने क्षेत्रों में कर वसूलते थे और अनिवार्य रुप से स्वायत्त क्षेत्रीय शक्तियाँ थे।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

31. विजयनगर साम्राज्य के क्षेत्रीय विभाजनों से संबंधित निम्नलिखित शब्दों में से विषम को पहचानें:
(1) परगना
(2) मंडलम
(3) वलनाडु
(4) नाडु
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

32. विजयनगर की राजस्व और आर्थिक व्यवस्था के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. भू-राजस्व राज्य की आय का प्राथमिक स्रोत था।
II. केंद्रीय राजस्व विभाग को 'अथवन' के नाम से जाना जाता था।
III. भू-राजस्व सामान्यतः कुल कृषि उपज के आधे हिस्से पर तय किया गया था।
IV. कुम्हारों और मोचियों जैसे व्यवसायों पर लगने वाले व्यावसायिक करों को पूर्णतः समाप्त कर दिया गया था।
V. वाणिज्यिक कर बाज़ार वाले नगरों और बंदरगाहों पर एकत्र किए जाते थे।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, III और IV
(2) केवल I, II और V

66. जौनपुर का क्षेत्रीय राज्य कला और संस्कृति के एक प्रमुख केंद्र के रूप में उभरा, जिसे 'पूर्व का शिराज' कहा गया। इस पर किस वंश का शासन था?
(1) शर्की वंश
(2) इलियास शाही वंश
(3) मालवा का खिलजी वंश
(4) मुज़फ्फरिद वंश
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

67. निम्नलिखित में से कौन बंगाल सल्तनत में हुसैन शाही वंश के सांस्कृतिक योगदान का सटीक वर्णन करता है?
(1) फारसी को एकमात्र दरबारी भाषा के रूप में लागू करना और स्थानीय बोली पर प्रतिबंध
(2) स्थानीय वैष्णव भक्ति केंद्रों को लक्षित करने वाली धार्मिक असहिष्णुता की नीति
(3) बंगाली साहित्य का संरक्षण और चैतन्य महाप्रभु के प्रति सम्मानजनक दृष्टिकोण
(4) बंगाल डेल्टा में दक्षिण भारतीय द्रविड़ मंदिर स्थापत्य शैलियों का समावेश
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

68. गुजरात के क्षेत्रीय राज्य के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. अहमद शाह I ने अहमदाबाद नगर की स्थापना की और इसे अपनी राजधानी बनाया।
II. महमुद बेगड़ा गिरनार और चांपानेर के दुर्गों की विजय के लिए जाने जाते थे।
III. बहादुर शाह के शासनकाल के दौरान पुर्तगालियों ने दीव पर अधिकार कर लिया था।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

69. कश्मीर के सुल्तान ज़ैन-उल-आबिदीन ने 'बुड शाह' (महान राजा) की उपाधि प्राप्त की। उनके शासन के ऐतिहासिक संदर्भ में यह उपाधि क्या दर्शाती है?
(1) मध्य एशिया के क्षेत्रों तक पहुँचने वाले उनके व्यापक सैन्य अभियान
(2) प्रारंभिक इस्लामी विधानों पर आधारित एक कठोर रुढ़िवादी राज्य संरचना
(3) उनकी प्रशासनिक उदारता, सार्वजनिक बुनियादी ढांचा और धार्मिक समावेशिता
(4) मंगोलों के निरंतर खतरे के विरुद्ध पहाड़ी दर्रों का उनका सफल बचाव
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

70. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रुप में अंकित किया गया है। सही विकल्प चुनें।
अभिकथन (A): सुल्तान ज़ैन-उल-आबिदीन को प्रायः 'कश्मीर का अकबर' कहा जाता है।
कारण (R): उन्होंने जज़िया कर को समाप्त किया, गोवध प्रतिबंधित किया, और संस्कृत तथा फारसी दोनों विद्वानों को संरक्षण दिया।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

71. ज़ैन-उल-आबिदीन के अधीन कश्मीर सल्तनत के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) उन्होंने महाभारत और राजतरंगिणी का फारसी में अनुवाद करवाया था।
(2) उन्होंने कश्मीर में कागज निर्माण और जिल्दसाजी की कला का सूत्रपात किया।
(3) उन्होंने वुलर झील पर 'ज़ैना लंका' नामक कृत्रिम द्वीप का निर्माण करवाया।
(4) उन्होंने कश्मीरी पंडितों को प्रताड़ित किया और उन्हें घाटी से निष्कासित किया।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

72. कश्मीर में ज़ैन-उल-आबिदीन के योगदान के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. उन्होंने सिंचाई के लिए नहरों का एक विस्तृत जाल विकसित किया।
II. उन्होंने मध्य एशिया से बुनकरों को आमंत्रित करके शॉल उद्योग को पुनर्जीवित किया।
III. उन्होंने धर्म का विचार किए बिना अपनी सभी प्रजा पर इस्लामी दंड संहिता कड़ाई से लागू की।
IV. उन्होंने अपने चिकित्सक श्री भट्ट जैसे हिंदुओं को उच्च प्रशासनिक पदों पर नियुक्त किया।
V. उन्होंने इतिहासकार श्रीवर को संरक्षण दिया, जिन्होंने कल्हण की राजतरंगिणी को आगे बढ़ाया।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II, IV और V
(2) केवल I, II, III और IV
(3) केवल II, III, IV और V
(4) केवल I, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

73. ज़ैन-उल-आबिदीन के राज्याभिषेक से पहले, शाह मीर वंश का कौन सा शासक कश्मीर में मंदिरों के विनाश के लिए कुख्यात था?
(1) शाह मीर
(2) अली शाह

Downloaded from www.pdf.tube

10. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
देवराय द्वितीय ने अनुभव किया कि बहमनी सेना की सफलता उनके कुशल अश्वारोहियों और सटीक धनुर्विद्या पर आधारित थी। इस सैन्य श्रेष्ठता का सामना करने के लिए उन्होंने अपनी सेना में हजारों प्रशिक्षित मुस्लिम सैनिकों को सम्मिलित किया। उन्होंने उनके लिए राजधानी में एक उपासना स्थल निर्मित करवाया और उन्हें जागीरें प्रदान कीं। यह एक दूरदर्शी रणनीतिक निर्णय था जिसने विजयनगर की युद्ध शक्ति को संतुलित किया, जिससे कथन और कारण दोनों सत्य सिद्ध होते हैं।

11. (4) चंद्रगिरि के प्रांतीय गवर्नर
सलुव नरसिंह मूलतः विजयनगर के संगम शासकों के अधीन चंद्रगिरि के एक शक्तिशाली प्रांतीय गवर्नर थे। जब संगम वंश के अंतिम शासक निर्बल हो गए और साम्राज्य आंतरिक अशांति तथा बाह्य आक्रमणों से घिर गया, तब उन्होंने व्यवस्था सुदृढ़ करने हेतु सत्ता अधिग्रहित की। 1485 ईस्वी में उन्होंने सिंहासन पर अधिकार कर सलुव वंश की नींव रखी। इतिहास में यह घटना 'प्रथम बलात्-ग्रहण' के नाम से जानी जाती है, जिसने साम्राज्य को विखंडन से सुरक्षित किया।

12. (2) केवल V
तुलुव वंश अपने उत्कर्ष पर कृष्णदेव राय के शासनकाल में पहुँचा था, न कि अच्युत देव राय के समय। अन्य सभी कथन सत्य हैं। सलुव वंश का शासनकाल अत्यंत अल्प था और इम्माडि नरसिंह इसके अंतिम शासक थे। वीर नरसिंह ने सत्ता हस्तगत कर तुलुव वंश की स्थापना की, जिसे 'द्वितीय बलात्-ग्रहण' कहा जाता है। अच्युत देव राय कृष्णदेव राय के उत्तराधिकारी थे, परंतु उनके समय में सामंत स्वतंत्र होने लगे और केंद्रीय शक्ति क्षीण हुई।

13. (3) इसने विजयनगर साम्राज्य को बाद के निर्बल संगम शासकों के कारण होने वाले विघटन से बचा लिया
15वीं शताब्दी के अंत में संगम वंश के शासक अत्यंत निर्बल हो गए थे, जिससे बहमनी और उड़ीसा के गजपति शासकों ने विजयनगर की सीमाओं पर अतिक्रमण आरंभ कर दिया था। ऐसी संकटपूर्ण परिस्थिति में सलुव नरसिंह द्वारा सत्ता का अधिग्रहण एक रणनीतिक अनिवार्यता बन गई थी। उनके इस साहसिक कदम ने साम्राज्य के प्रशासन को पुनर्गठित किया और सैन्य व्यवस्था को सुदृढ़ बनाया। इस राजनीतिक परिवर्तन ने विजयनगर को तत्काल पतन से बचाकर भविष्य हेतु सुदृढ़ नेतृत्व प्रदान किया।

14. (4) सलुव - सलुव नरसिंह
विजयनगर साम्राज्य के राजवंशों में सलुव वंश की स्थापना सलुव नरसिंह ने 1485 में की थी। संगम वंश की स्थापना हरिहर और बुक्का ने की थी। तुलुव वंश के वास्तविक संस्थापक वीर नरसिंह थे, जबकि कृष्णदेव राय इस वंश के महानतम शासक हुए। आरविडु वंश की स्थापना तिरुमल देव राय ने की थी, जबकि राम राय केवल एक शक्तिशाली सेनापति और संरक्षक थे। अतः ऐतिहासिक दृष्टि से केवल विकल्प 4 ही सही सुमेलित युग्म है।

15. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
संगम वंश विजयनगर का सर्वाधिक दीर्घकालिक शासन करने वाला राजवंश था। सलुव वंश ने न्यूनतम अवधि तक शासन किया परंतु साम्राज्य को अराजकता से सुरक्षित किया। तुलुव वंश के औपचारिक शासन के दौरान 1565 में तालिकोटा का युद्ध हुआ, जिसमें राम राय वास्तविक शक्ति थे। आरविडु वंश ने विजयनगर के पतन के पश्चात राजधानी को पेनुकोंडा और फिर चंद्रगिरि स्थानांतरित किया। यह वर्गीकरण विजयनगर साम्राज्य के विभिन्न चरणों और उनकी विशिष्टताओं को पूर्णतः स्पष्ट करता है।

16. (2) प्रतापरुद्र देव
कृष्णदेव राय ने अपने शासनकाल में उड़ीसा के गजपति शासक प्रतापरुद्र देव को निरंतर पराजित किया। उन्होंने उदयगिरि और कोंडाविडु जैसे महत्वपूर्ण दुर्गों पर अधिकार कर लिया। अंततः प्रतापरुद्र देव को संधि हेतु विवश होना पड़ा और उन्होंने अपनी पुत्री का विवाह कृष्णदेव राय से कर दिया। इस विजय ने विजयनगर की पूर्वी सीमाओं को पूर्णतः सुरक्षित किया और गजपतियों की शक्ति को सीमित कर दिया, जिससे कृष्णदेव राय की सैन्य कीर्ति संपूर्ण भारत में स्थापित हो गई।

NODIA

17. (2) बीजापुर के इस्माइल आदिल शाह
1520 ईस्वी में रायचूर का युद्ध कृष्णदेव राय की सर्वाधिक महत्वपूर्ण सैन्य उपलब्धि मानी जाती है। इस युद्ध में उन्होंने बीजापुर के सुल्तान इस्माइल आदिल शाह को निर्णायक रूप से पराजित किया था। रायचूर दोआब पर पुनः अधिकार के पश्चात विजयनगर साम्राज्य की सीमाएं और अधिक सुदृढ़ हो गईं। इस युद्ध में कृष्णदेव राय ने उत्कृष्ट सैन्य व्यूह-रचना और साहस का परिचय दिया था। इस विजय ने दक्कन की सल्तनतों पर विजयनगर के प्रभुत्व को सर्वोच्च और स्थायी बना दिया।

18. (1) केवल I, II और IV
कृष्णदेव राय ने उम्मत्तूर के विद्रोही गंगाराज का दमन किया और गजपतियों से उदयगिरि जीता। उन्होंने बहमनी सुल्तान को पुनः सिंहासन पर स्थापित कर 'यवनराज्य स्थापनाचार्य' की उपाधि धारण की। तृतीय कथन असत्य है क्योंकि दीव का युद्ध (1509) पुर्तगालियों और गुजरात, मिस्र तथा तुर्की की संयुक्त सेना के मध्य हुआ था, जिसमें विजयनगर की कोई भूमिका नहीं थी। कृष्णदेव राय की नीतियां मुख्य रूप से दक्कन सल्तनतों को नियंत्रित करने और साम्राज्य के आंतरिक विद्रोहों को समाप्त करने पर केंद्रित थीं।

19. (3) अभिनव भोज
कृष्णदेव राय न केवल महान योद्धा थे, अपितु वे साहित्य और कला के महान संरक्षक भी थे। उनकी विद्वत्ता और कवियों को दिए गए आश्रय के कारण उन्हें 'अभिनव भोज' और 'आंध्र पितामह' जैसी उपाधियों से विभूषित किया गया। 'अभिनव भोज' की उपाधि उन्हें प्राचीन राजा भोज की भाँति विद्वानों को संरक्षण प्रदान करने के कारण मिली। उन्होंने स्वयं तेलुगु में 'आमुक्तमाल्यद' और संस्कृत में 'जाम्बवती कल्याणम' की रचना की, जो उनके बहुआयामी व्यक्तित्व और उच्च साहित्यिक ज्ञान को दर्शाती है।

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) काकतीय
विजयनगर साम्राज्य की स्थापना से पूर्व हरिहर और बुक्का वारंगल के काकतीय शासक प्रतापरुद्र द्वितीय के यहाँ कार्यरत थे। जब दिल्ली सल्तनत ने काकतीय वंश का अंत किया, तब वे काम्पिली राज्य में चले गए। बाद में उन्हें बंदी बनाकर दिल्ली ले जाया गया, जहाँ उन्होंने इस्लाम स्वीकार किया। अंततः ऋषि विद्यारण्य के मार्गदर्शन में उन्होंने पुनः हिंदू धर्म अपनाया और तुंगभद्रा नदी के तट पर विजयनगर की नींव रखी।

2. (1) दक्षिणी राज्यों के विस्तार के विरुद्ध हिंदू परंपराओं की रक्षा करना
विजयनगर साम्राज्य की स्थापना 1336 ईस्वी में दक्षिण भारत में दिल्ली सल्तनत के बढ़ते राजनीतिक और सांस्कृतिक प्रसार को रोकने के लिए की गई थी। हरिहर और बुक्का का मुख्य उद्देश्य हिंदू धर्म, संस्कृति और वैदिक परंपराओं की रक्षा करना था। यह साम्राज्य कई शताब्दियों तक एक सशक्त रक्षक के रूप में बना रहा, जिसने दक्षिण की कला, स्थापत्य और धार्मिक परंपराओं को विदेशी आक्रमणों से सुरक्षित रखते हुए उन्हें पुनर्जीवित किया।

3. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
पारंपरिक इतिहास के अनुसार, श्रृंगेरी मठ के महान ऋषि विद्यारण्य ने ही हरिहर और बुक्का को स्वधर्म में लौटने और एक स्वतंत्र हिंदू राज्य स्थापित करने की प्रेरणा दी थी। उनके इस अतुलनीय मार्गदर्शन के प्रति सम्मान प्रकट करने हेतु साम्राज्य की प्रारंभिक राजधानी का नाम 'विद्यानगर' रखा गया। यही नगर कालांतर में अपनी सैन्य और सांस्कृतिक सफलताओं के कारण विजयनगर के नाम से विख्यात हुआ, जिसका शाब्दिक अर्थ विजय का नगर है।

4. (4) इसमें रणनीतिक रायचूर दोआब सम्मिलित था, जो बहमनी साम्राज्य के साथ संघर्ष का क्षेत्र था
तुंगभद्रा नदी घाटी, विशेष रूप से कृष्णा और तुंगभद्रा नदियों के मध्य स्थित उपजाऊ रायचूर दोआब क्षेत्र, अपनी उच्च कृषि उत्पादकता के कारण सामरिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण था। यह क्षेत्र विजयनगर और बहमनी राज्यों के मध्य निरंतर संघर्ष का प्रमुख कारण बना रहा। दोनों साम्राज्य इस क्षेत्र के प्रचुर संसाधनों और व्यापारिक मार्गों पर पूर्ण नियंत्रण चाहते थे। भौगोलिक रूप से यह घाटी साम्राज्य की आर्थिक समृद्धि के लिए मुख्य आधार थी।

5. (3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
निकोलो कोंटी ने देवराय प्रथम के शासनकाल में यात्रा कर विजयनगर के सामाजिक जीवन का विवरण दिया। अब्दुर रज्जाक ने देवराय द्वितीय के समय दरबार के वैभव का वर्णन किया। डोमिंगोस पेस कृष्णदेव राय के शासनकाल में आया और उसने राजा के व्यक्तित्व तथा सैन्य शक्ति की सराहना की। पुर्तगाली अश्व व्यापारी फर्नाओ नुनीज़, अच्युत देव राय के समय आया और उसने विजयनगर के इतिहास तथा प्रशासन का विस्तृत वृत्तांत लिपिबद्ध किया।

6. (2) देव राय II
संगम वंश के महानतम शासक देवराय द्वितीय ने 'गजबेटकर' की उपाधि धारण की थी, जिसका अर्थ है 'हाथियों का शिकारी'। यह उपाधि उनके असाधारण सैन्य कौशल और पराक्रम का प्रतीक थी। उनके शासनकाल में साम्राज्य अपनी सैन्य और सांस्कृतिक पराकाष्ठा पर पहुँचा। उन्होंने अपनी सेना को आधुनिक बनाने के लिए कुशल धनुर्धरों और अश्वारोहियों को नियुक्त किया, जिससे विजयनगर की सैन्य क्षमता बहमनी सुल्तानों के विरुद्ध और अधिक प्रभावी तथा सुदृढ़ हो गई।

7. (4) संगम वंश की स्थापना कृष्णदेव राय ने बहमनी सुल्तान को हराने के बाद की थी।
संगम वंश विजयनगर साम्राज्य का प्रथम राजवंश था, जिसकी स्थापना 1336 में हरिहर और बुक्का ने की थी, जबकि कृष्णदेव राय तुलुव वंश के शासक थे। अन्य विकल्प सत्य हैं क्योंकि बुक्का प्रथम ने चीन में दूत भेजे और देवराय प्रथम ने सिंचाई हेतु तुंगभद्रा पर बांध निर्मित करवाया। हरिहर द्वितीय ने 'महाराजाधिराज' की पदवी धारण की थी। अतः विकल्प 4 असत्य है क्योंकि कृष्णदेव राय और संगम वंश के मध्य लंबा समय अंतराल है।

8. (1) केवल I और II
बुक्का प्रथम ने मदुरई सल्तनत पर विजय प्राप्त कर उसे साम्राज्य में सम्मिलित किया, जिसका वर्णन 'मधुरा विजयम' ग्रंथ में मिलता है। देवराय द्वितीय ने सैन्य दक्षता बढ़ाने हेतु मुस्लिम सैनिकों को नियुक्त किया था। तीसरा कथन त्रुटिपूर्ण है क्योंकि संगम शासक धार्मिक रूप से अत्यंत उदार थे। उन्होंने शैव धर्म के साथ-साथ वैष्णव, जैन और अन्य मतों को भी समान संरक्षण दिया। उनके काल में समाज में धार्मिक सहिष्णुता की परंपरा अत्यंत सुदृढ़ थी।

9. (3) मराठवाड़ा क्षेत्र
विजयनगर और बहमनी राज्यों के मध्य संघर्ष के मुख्य क्षेत्र रायचूर दोआब, कृष्णा-गोदावरी डेल्टा और कोंकण का तटीय भाग थे। रायचूर दोआब अपनी उर्वरता के लिए, कृष्णा-गोदावरी डेल्टा जल संसाधनों और पत्तनों के लिए, तथा कोंकण क्षेत्र विदेशी व्यापार और अश्व आयात के नियंत्रण के लिए विवादित रहे। मराठवाड़ा क्षेत्र इन दोनों शक्तियों के मध्य मुख्य क्षेत्रीय संघर्ष का केंद्र नहीं था, क्योंकि उनका ध्यान समृद्ध दक्षिणी संसाधनों पर अधिक केंद्रित था।

Click Here to Buy book on Amazon

48. (2) केवल I और II
तालिकोटा युद्ध का मुख्य कारण राम राय की आक्रामक और हस्तक्षेपकारी विदेश नीति थी। वे दक्कन की सल्तनतों को परस्पर संघर्षरत रखकर विजयनगर का प्रभाव विस्तारित करना चाहते थे। इस कूटनीति ने सल्तनतों को उनके विरुद्ध एकजुट होने हेतु विवश कर दिया। हालांकि, गोलकुंडा के हीरा व्यापार का विवाद इस युद्ध का तात्कालिक कारण नहीं था। राम राय के अत्यधिक आत्मविश्वास और सल्तनतों के आंतरिक मामलों में निरंतर हस्तक्षेप ने अंततः एक ऐसा संघ बनाया जिसने विजयनगर की सत्ता को निर्णायक रूप से ध्वस्त कर दिया।

49. (2) रक्कासा-तंगड़ी का युद्ध
1565 ईस्वी में लड़ा गया तालिकोटा का युद्ध इतिहास में 'रक्कासा-तंगड़ी के युद्ध' के नाम से भी विख्यात है क्योंकि यह रक्कासा और तंगड़ी नामक दो ग्रामों के मध्य हुआ था। इस भीषण संघर्ष में बीजापुर, अहमदनगर, गोलकुंडा और बीदर की संयुक्त सेनाओं ने विजयनगर साम्राज्य की सेना को पराजित किया। यह युद्ध दक्षिण भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण विभाजक सिद्ध हुआ, क्योंकि इसके कारण वैभवशाली राजधानी हम्पी का पूर्ण विनाश हुआ और विजयनगर के राजनीतिक वर्चस्व का अंत आरंभ हो गया।

50. (4) A गलत है लेकिन R सही है
तालिकोटा के युद्ध के पश्चात राजधानी हम्पी को विजयी सेनाओं द्वारा क्रूरतापूर्वक लूटा और नष्ट किया गया, जिससे वह खंडहरों में परिवर्तित हो गई। हालांकि, यह युद्ध साम्राज्य का तात्कालिक और पूर्ण अंत नहीं था। राम राय के भ्राता तिरुमल ने राजधानी को पेनुकोंडा स्थानांतरित किया और आरविडु वंश के अंतर्गत साम्राज्य लगभग एक शताब्दी तक और अस्तित्व में रहा। अतः अभिकथन असत्य है क्योंकि साम्राज्य पूर्णतः समाप्त नहीं हुआ था, जबकि कारण सत्य है क्योंकि हम्पी का विध्वंस ऐतिहासिक रूप से प्रमाणित है।

51. (3) सदाशिव राय
तालिकोटा के युद्ध (1565) के समय विजयनगर का औपचारिक शासक सदाशिव राय था। हालांकि, वह केवल एक नाममात्र का राजा था और साम्राज्य की वास्तविक सत्ता उसके शक्तिशाली सेनापति और मंत्री राम राय के अधीन थी। राम राय ने ही साम्राज्य की विदेश नीति और सैन्य अभियानों का संचालन किया था। युद्ध भूमि में भी राम राय ने ही सेना का नेतृत्व किया, किंतु उनकी पराजय और मृत्यु के पश्चात सदाशिव राय को तिरुमल के साथ पलायन करना पड़ा, जिससे साम्राज्य का गौरव सदैव हेतु समाप्त हो गया।

52. (4) केवल I, II, III और V
तालिकोटा युद्ध के उपरांत हम्पी का विनाश हुआ, राम राय वीरगति को प्राप्त हुए और तिरुमल ने पेनुकोंडा में आरविडु वंश की स्थापना की। साथ ही, साम्राज्य की पकड़ शिथिल होने पर मदुरई और तंजौर जैसे नायकों ने स्वतंत्रता का मार्ग चुना। हालांकि, पुर्तगालियों ने संपूर्ण कोंकण तट पर अधिकार प्राप्त नहीं किया था, बल्कि उनकी शक्ति तटीय व्यापार तक ही सीमित रही। इस युद्ध ने विजयनगर के केंद्रीय नियंत्रण को इतना दुर्बल कर दिया कि दक्षिण भारत के मानचित्र पर अनेक स्वतंत्र शक्तियां उदित होने लगीं।

53. (3) मुहम्मद बिन तुगलक की नीतियों के विरुद्ध अमीर-ए-सदा का विद्रोह
1347 ईस्वी में बहमनी साम्राज्य की स्थापना मुहम्मद बिन तुगलक की दमनकारी नीतियों के विरुद्ध 'अमीर-ए-सदा' के सफल विद्रोह का परिणाम थी। इस विद्रोह का नेतृत्व हसन गंगू ने किया, जिन्होंने अलाउद्दीन हसन बहमन शाह के नाम से राजसिंहासन ग्रहण किया। तुगलक साम्राज्य की आंतरिक अस्थिरता और दक्कन के रईसों के असंतोष ने एक स्वतंत्र मुस्लिम राज्य के उदय हेतु आधार प्रदान किया। इस नवगठित राज्य ने आगामी डेढ़ शताब्दियों तक दक्षिण भारत की राजनीति और संस्कृति में अत्यंत प्रभावशाली भूमिका निभाई।

54. (2) अहमद शाह वली - राजधानी को बीदर से गुलबर्गा स्थानांतरित किया
अहमद शाह वली के संबंध में प्रस्तुत विवरण त्रुटिपूर्ण है क्योंकि उन्होंने राजधानी को गुलबर्गा से बीदर स्थानांतरित किया था, न कि इसके विपरीत। अन्य विकल्प सत्य हैं क्योंकि अलाउद्दीन हसन बहमन शाह संस्थापक थे और गुलबर्गा उनकी प्रथम राजधानी थी। महमूद गवां वास्तव में एक विदेशी व्यापारी थे जो अपनी योग्यता से बहमनी साम्राज्य के अत्यंत शक्तिशाली प्रधानमंत्री बने। राजधानी का बीदर स्थानांतरण रणनीतिक और जलवायु की दृष्टि से उत्कृष्ट माना गया था, जिसने साम्राज्य के प्रशासनिक केंद्र को उत्तर की ओर मोड़ा।

55. (4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
बहमनी साम्राज्य के विखंडन के पश्चात पांच स्वतंत्र सल्तनतें उदित हुईं। बीजापुर में आदिल शाही वंश का शासन था, जबकि अहमदनगर में निजाम शाही वंश स्थापित हुआ। गोलकुंडा में कुतुब शाही वंश ने अपनी सत्ता स्थापित की और बीदर में बरीद शाही वंश का शासन रहा। इन राज्यों के मध्य प्रायः सीमा विवाद और वर्चस्व का संघर्ष होता रहता था, किंतु विजयनगर के विरुद्ध वे सामूहिक रूप से एकजुट हो गए थे। यह वर्गीकरण दक्कन के इतिहास में सल्तनत कालीन राजनीतिक संरचना को समझने हेतु अनिवार्य है।

56. (1) बीजापुर
'गोल गुंबज़' बीजापुर की आदिल शाही वास्तुकला का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। यह सुल्तान मोहम्मद आदिल शाह का मकबरा है और अपने विशाल गुंबद हेतु प्रसिद्ध है, जो बिना किसी स्तंभ के सहारे निर्मित विश्व के विशालतम गुंबदों में से एक है। इसकी 'गूँजती दीर्घा' एक अद्वितीय विशेषता है, जहाँ मंद ध्वनि भी सात बार प्रतिध्वनित होती है। यह स्मारक तत्कालीन भारतीय-इस्लामी अभियान्त्रिकी और स्थापत्य कला की श्रेष्ठता का अनुपम प्रतीक है, जो आज भी पर्यटकों और इतिहासकारों को आश्चर्यचकित करता है।

57. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
महमूद गवां बहमनी साम्राज्य के इतिहास में सर्वाधिक सक्षम प्रशासक और सैन्य रणनीतिकार माने जाते हैं। उन्होंने साम्राज्य

NODIA

20. (4) मालाबार अभियान - गोवा से पुर्तगालियों का निष्कासन
कृष्णदेव राय ने कभी भी गोवा से पुर्तगालियों को निष्कासित करने का प्रयास नहीं किया, बल्कि उनके पुर्तगालियों के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध थे। उन्होंने पुर्तगालियों के साथ अश्वों की आपूर्ति हेतु व्यापारिक अनुबंध किए थे ताकि शत्रुओं को अश्वों की प्राप्ति रोकी जा सके। उदयगिरि, रायचूर और उम्मत्तूर के अभियान उनकी ऐतिहासिक विजयों में सम्मिलित हैं। अतः विकल्प 4 त्रुटिपूर्ण है क्योंकि उन्होंने पुर्तगालियों के साथ सहयोग की नीति अपनाई थी, जो उनकी सैन्य आधुनिकीकरण योजना हेतु अनिवार्य थी।

21. (3) तेलुगु
'आमुक्तमाल्यद' कृष्णदेव राय द्वारा रचित एक सुप्रसिद्ध महाकाव्य है, जो तेलुगु साहित्य की सर्वश्रेष्ठ कृतियों में गिना जाता है। इस ग्रंथ में भगवान विष्णु की भक्त अण्डाल की कथा के साथ-साथ शासन व्यवस्था, राजनीति और राजा के कर्तव्यों का विस्तृत वर्णन है। कृष्णदेव राय का काल तेलुगु साहित्य का 'स्वर्ण युग' कहलाता है। यद्यपि वे संस्कृत के भी ज्ञाता थे, किंतु तेलुगु भाषा के प्रति उनके अनुराग ने दक्षिण भारतीय साहित्य के क्षेत्र में एक नवीन युग का सूत्रपात किया।

22. (2) संगम, सलुव, तुलुव, आरविडु
विजयनगर साम्राज्य पर शासन करने वाले चार प्रमुख राजवंशों का सही कालानुक्रमिक क्रम संगम, सलुव, तुलुव और आरविडु है। संगम वंश (1336-1485) की स्थापना हरिहर और बुक्का ने की थी। इसके पश्चात सलुव वंश (1485-1505) आया, जिसकी नींव सलुव नरसिंह ने रखी। तत्पश्चात तुलुव वंश (1505-1570) का शासन रहा, जिसमें कृष्णदेव राय महानतम हुए। अंततः 1565 के तालिकोटा युद्ध के बाद आरविडु वंश (1570-1646) ने सत्ता संभाली और साम्राज्य की राजधानी को अन्य सुरक्षित स्थानों पर स्थानांतरित किया।

23. (2) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
कृष्णदेव राय के दरबार में आठ महान तेलुगु कवियों का समूह 'अष्टदिग्गज' सुशोभित था, जो तत्कालीन साहित्य के आधार स्तंभ थे। हालांकि, यह कहना असत्य है कि उन्होंने संस्कृत विद्वानों की उपेक्षा की। वे स्वयं संस्कृत के प्रकांड पंडित थे और उन्होंने 'जाम्बवती कल्याणम' जैसे नाटकों की रचना की थी। उन्होंने अपने दरबार में विभिन्न भाषाओं के कवियों और दार्शनिकों को समान रूप से संरक्षण दिया, जिससे उनका शासनकाल दक्षिण भारतीय संस्कृति के सर्वांगीण विकास का केंद्र बना।

24. (1) अल्लासानी पेदन्ना
अल्लासानी पेदन्ना को कृष्णदेव राय के दरबार के अष्टदिग्गजों में सर्वोच्च स्थान प्राप्त था। उन्हें 'आंध्र कविता पितामह' की उपाधि प्रदान की गई थी, जिसका अर्थ है तेलुगु कविता के पितामह। उनकी सर्वाधिक प्रसिद्ध कृति 'मनुचरितम्' है, जिसे तेलुगु साहित्य का एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर माना जाता है। पेदन्ना राजा के इतने प्रिय पात्र थे कि स्वयं कृष्णदेव राय ने एक बार उनकी पालकी को कंधा दिया था। उनकी काव्य शैली ने आगामी पीढ़ियों के कवियों हेतु उच्च मानक स्थापित किए।

25. (3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
अल्लासानी पेदन्ना ने 'मनुचरितम्' की रचना की, जो तेलुगु साहित्य का श्रेष्ठ महाकाव्य है। नंदी थिम्मना ने 'पारिजातपहरणाम्' लिखकर ख्याति अर्जित की। तेनाली रामकृष्ण अपनी तीक्ष्ण बुद्धि और 'पांडुरंग महात्म्यम्' जैसी गंभीर रचनाओं हेतु प्रसिद्ध हैं। धूर्जटी ने 'कालहस्ती महात्म्यम्' के माध्यम से भगवान शिव के प्रति अटूट भक्ति प्रकट की। ये सभी विद्वान कृष्णदेव राय के अष्टदिग्गजों में सम्मिलित थे और उनकी इन कृतियों ने दक्षिण भारतीय साहित्य और संस्कृति को समृद्ध बनाने में अनुपम योगदान दिया है।

26. (1) राज्य सेवा के बदले सैन्य नायकों को दिया जाने वाला भूमि आवंटन
विजयनगर साम्राज्य की नयनकर व्यवस्था के अंतर्गत, राजा सैन्य नायकों को उनकी सेवाओं के बदले में भूमि का एक विशेष भाग प्रदान करता था जिसे 'अमरम्' कहा जाता था। इन नायकों को इस भूमि से राजस्व एकत्र करने और एक निश्चित संख्या में सैनिक, हाथी तथा अश्व रखने का अधिकार प्राप्त था। बदले में, उन्हें युद्ध के समय सम्राट को सैन्य सहायता उपलब्ध करानी पड़ती थी और प्रतिवर्ष राजदरबार में निर्धारित उपहार तथा कर समर्पित करने होते थे।

NODIA

27. (4) एक क्षेत्रीय प्रशासन जहाँ नायक भूमि का शासन करते थे और सैन्य सेवा प्रदान करते थे
नयनकर प्रणाली विजयनगर प्रशासन की विशिष्ट पहचान थी, जो दिल्ली सल्तनत की इक्ता व्यवस्था के समरूप थी। इसमें राजा नायकों को उनके सैन्य दायित्वों के बदले विशिष्ट भू-क्षेत्र आवंटित करता था। ये नायक अपने क्षेत्रों में विधि-व्यवस्था बनाए रखने और राजस्व संग्रह हेतु उत्तरदायी थे। वे मूलतः सैन्य सेनापति थे जिन्होंने साम्राज्य के प्रसार और सुरक्षा में निर्णायक भूमिका निभाई। यह प्रणाली सत्ता के विकेंद्रीकरण और एक विशाल अनुशासित सेना के कुशल रखरखाव का प्रभावी माध्यम सिद्ध हुई।

28. (2) I, II और III
विजयनगर साम्राज्य का प्रशासन अत्यंत सुव्यवस्थित था। ग्रामीण स्तर पर 'आयगर' व्यवस्था प्रचलित थी, जिसमें बारह अधिकारियों का समूह ग्राम प्रशासन का संचालन करता था। राजा न्याय का सर्वोच्च स्रोत था और धर्मशास्त्रों के अनुकूल निष्पक्ष निर्णय देता था। प्रशासनिक सुगमता हेतु साम्राज्य को मंडलम (प्रांत), नाडु (जनपद) और स्थल (उप-जनपद) में विभाजित किया गया था। ये तीनों कथन विजयनगर की प्रशासनिक कार्यकुशलता और सुदृढ़ संरचना को सही ढंग से परिभाषित करते हैं, जिसने साम्राज्य को दीर्घकालिक स्थिरता प्रदान की।

29. (3) बारह ग्राम अधिकारियों का एक समूह जो स्थानीय ग्रामीण प्रशासन का प्रबंधन करता था
विजयनगर साम्राज्य में ग्रामीण प्रशासन के सुचारु संचालन हेतु 'आयगर' प्रणाली कार्यान्वित थी। इसके अंतर्गत बारह व्यक्तियों का एक विशिष्ट समूह नियुक्त होता था, जिन्हें उनके कार्यों के प्रतिफल के रूप में कर-मुक्त भूमि प्रदान की जाती

थी। इन अधिकारियों में कर्णम (लेखाकार), तलारी (रक्षक) और बेगम (जल निरीक्षक) जैसे महत्वपूर्ण पद सम्मिलित थे। ग्राम प्रशासन के ये पद प्रायः वंशानुगत थे और इन अधिकारियों की सहमति के बिना ग्राम की किसी भी भूमि का विक्रय अथवा दान संभव नहीं था।

30. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
नयनकर प्रणाली में नायकों को अपने क्षेत्रों में व्यापक स्वायत्तता प्राप्त थी, वे अपनी स्वतंत्र सेना रखते थे और राजस्व संग्रह स्वयं करते थे। जब तक केंद्र में शक्तिशाली सम्राट रहा, ये नायक पूर्ण नियंत्रण में रहे। किंतु निर्बल उत्तराधिकारियों के शासनकाल में, इन नायकों की आर्थिक और सैन्य शक्ति ने उन्हें विद्रोही बना दिया, जिससे केंद्रीय सत्ता हेतु संकट उत्पन्न हुआ। इस प्रकार, कारण स्पष्ट करता है कि इन नायकों की अत्यधिक स्वायत्तता अंततः साम्राज्य की अखंडता हेतु खतरा बन गई।

31. (1) परगना
विजयनगर साम्राज्य के प्रशासनिक विभाजनों में मंडलम, वलनाडु और नाडु शब्द दक्षिण भारतीय शासन पद्धतियों के अभिन्न अंग हैं। मंडलम सबसे बड़ी प्रशासनिक इकाई थी, जिसे आगे नाडु और वलनाडु में विभक्त किया गया था। इसके विपरीत, 'परगना' एक फारसी शब्द है जिसका उपयोग मुख्य रूप से दिल्ली सल्तनत और मुगल प्रशासन में लघु क्षेत्रीय इकाइयों हेतु किया जाता था। विजयनगर की मूल प्रशासनिक शब्दावली में 'परगना' का प्रचलन नहीं था, अतः यह अन्य तीनों विकल्पों से पूर्णतः भिन्न और असंगत है।

32. (2) केवल I, II और V
विजयनगर साम्राज्य में भू-राजस्व आय का मुख्य स्रोत था और 'अथवन' राजस्व विभाग को कहा जाता था। वाणिज्यिक कर पत्तनों और विपणन केंद्रों पर वसूले जाते थे। तृतीय कथन असत्य है क्योंकि भू-राजस्व सामान्यतः उपज का 1/6 भाग था। चतुर्थ कथन भी त्रुटिपूर्ण है क्योंकि विभिन्न व्यवसायों पर कर आरोपित था, जिसमें शिल्पकार भी सम्मिलित थे। राज्य की आर्थिक नीति कृषि और वाणिज्य दोनों को प्रोत्साहित करने पर केंद्रित थी, जिससे राजकोष समृद्ध रहता था और सैन्य व्यय की सहज पूर्ति होती थी।

33. (2) किसानों से वसूला जाने वाला मानक भू-राजस्व कर
विजयनगर साम्राज्य की आर्थिक शब्दावली में 'शिष्ट' शब्द का प्रयोग उस मानक भू-राजस्व हेतु किया जाता था जो कृषकों को राज्य को अर्पित करना पड़ता था। यह कर भूमि की उर्वरता और सिंचाई सुविधाओं के आधार पर निर्धारित होता था। सामान्यतः यह कुल कृषि उपज का छठा भाग होता था, यद्यपि विशेष परिस्थितियों में इसमें संशोधन संभव था। राजस्व का यह नियमित प्रवाह साम्राज्य के विशाल सैन्य व्यय और भव्य स्मारकों के निर्माण हेतु आवश्यक वित्तीय आधार तैयार करने में अत्यंत सहायक था।

34. (1) गैर-हिंदुओं पर जज़िया
विजयनगर के शासक अपनी धार्मिक उदारता और सहिष्णुता हेतु विख्यात थे। उन्होंने अपनी मुस्लिम प्रजा अथवा अन्य गैर-हिंदू समुदायों पर कभी भी 'जज़िया' जैसा भेदभावपूर्ण धार्मिक कर नहीं लगाया। इसके विपरीत, राज्य में विवाह कर, व्यावसायिक कर और विदेशी व्यापार पर सीमा शुल्क प्रचलित थे। विजयनगर प्रशासन का मुख्य लक्ष्य आर्थिक समृद्धि और सामाजिक समरसता बनाए रखना था। धार्मिक आधार पर करों की अनुपस्थिति इस साम्राज्य की एक प्रगतिशील और समावेशी शासन नीति को स्पष्ट रूप से प्रतिबिंबित करती है।

35. (3) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
'अथवन' विजयनगर साम्राज्य का महत्वपूर्ण राजस्व विभाग था जो करों का विवरण रखता था। 'कंदाचार' सैन्य विभाग को कहा जाता था जो सेना के प्रबंधन हेतु उत्तरदायी था। 'पैगोडा' अथवा 'वराह' साम्राज्य का प्रसिद्ध स्वर्ण सिक्का था जिसका अंतरराष्ट्रीय व्यापार में अत्यधिक महत्व था। 'अमरम्' वह भूमि थी जो सैन्य सेवाओं के बदले नायकों को आवंटित की जाती थी। यह मिलान विजयनगर की सुव्यवस्थित प्रशासनिक और आर्थिक संरचना को प्रदर्शित करता है, जिसने साम्राज्य को सदियों तक स्थिरता और वैभव प्रदान किया।

36. (4) देव राय I
देवराय प्रथम ने विजयनगर में कृषि उत्पादन में वृद्धि हेतु सिंचाई व्यवस्था पर विशेष ध्यान दिया। उन्होंने तुंगभद्रा नदी पर एक विशाल बांध निर्मित करवाया और वहाँ से राजधानी तक जल पहुँचाने हेतु कई मील लंबी नहरें खुदवाईं। प्रसिद्ध 'कोरागल' बांध और 'बसवन्ना' नहर उनके इन्हीं भगीरथ प्रयासों के परिणाम थे। इन सिंचाई परियोजनाओं ने न केवल जल संकट का निवारण किया अपितु निकटवर्ती भूमि को अत्यधिक उपजाऊ बना दिया, जिससे साम्राज्य की आर्थिक स्थिति और खाद्य सुरक्षा में अभूतपूर्व सुधार हुआ।

37. (2) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
पश्चिमी तट पर अरबी अश्वों के व्यापार पर पुर्तगालियों का पूर्ण एकाधिकार था, जो युद्ध हेतु अपरिहार्य थे। कृष्णदेव राय ने पुर्तगालियों के साथ शत्रुता के स्थान पर अत्यंत मैत्रीपूर्ण संबंध बनाए रखे। उन्होंने पुर्तगालियों को विशेष व्यापारिक सुविधाएँ प्रदान कीं ताकि वे केवल विजयनगर को ही उच्च नस्ल के अश्व बेचें और बहमनी सुल्तानों की आपूर्ति बाधित कर दें। इस कूटनीति ने विजयनगर की अश्वारोही सेना को श्रेष्ठ बनाया और सैन्य अभियानों में शत्रुओं पर तकनीकी बढ़त प्रदान करने में सहायता की।

38. (2) I, II, III और IV
विजयनगर साम्राज्य का विदेशी व्यापार अत्यंत उन्नत था। भटकल, मैंगलोर और पुलिकट जैसे पत्तनों से मसाले, सूती वस्त्र और चावल का प्रचुर मात्रा में निर्यात होता था। सेना की सुदृढ़ता हेतु अरब और फारस से उत्तम अश्वों का आयात एक अनिवार्य आवश्यकता थी। अंतरराष्ट्रीय व्यापार ने साम्राज्य की अर्थव्यवस्था को वैश्विक पटल पर जोड़ा और स्वर्ण मुद्राओं के व्यापक प्रचलन को प्रोत्साहन दिया। ये चारों कथन विजयनगर की व्यापारिक शक्ति और उसके वैश्विक आर्थिक संबंधों की बिल्कुल सटीक और स्पष्ट व्याख्या करते हैं।

Downloaded from www.pdf.tube

39. (4) इब्न बतूता ने अपने यात्रा वृत्तांत में कृष्णदेव राय के आर्थिक सुधारों का विस्तृत विवरण दिया।
इब्न बतूता ने 14वीं शताब्दी के मध्य में विजयनगर की यात्रा की थी, जब साम्राज्य स्थापना के प्रारंभिक चरण में था। कृष्णदेव राय का शासनकाल 16वीं शताब्दी का है, अतः इब्न बतूता उनके आर्थिक सुधारों का विवरण नहीं दे सकते थे। अन्य विकल्प सत्य हैं क्योंकि अब्दुर रज्जाक, पेस और नुनीज़ ने अपने काल के आर्थिक और व्यापारिक पहलुओं का प्रत्यक्ष विवरण प्रस्तुत किया है। अतः विकल्प 4 कालानुक्रमिक रुप से असंगत है क्योंकि इन दोनों ऐतिहासिक व्यक्तित्वों के मध्य लगभग पौने दो सौ वर्षों का अंतराल है।

40. (1) चेट्टी और बनजीगा
विजयनगर साम्राज्य में 'चेट्टी' और 'बनजीगा' दो प्रमुख व्यापारी समुदाय थे जो आंतरिक और विदेशी वाणिज्य का संचालन करते थे। ये समुदाय अत्यंत संगठित श्रेणियों के माध्यम से कार्य करते थे, जो मूल्यों के निर्धारण, गुणवत्ता नियंत्रण और व्यापारिक विवादों के समाधान में निर्णायक भूमिका निभाती थीं। उनकी आर्थिक शक्ति इतनी प्रचुर थी कि वे प्रायः मंदिरों को दान देते थे और राज्य की आर्थिक नीतियों को प्रभावित करते थे। इन समुदायों ने विजयनगर को तत्कालीन विश्व का एक संपन्न व्यापारिक केंद्र बनाया।

41. (3) वराह
विजयनगर के शासकों द्वारा जारी किए गए सोने के मानक सिक्कों को 'वराह' अथवा 'पैगोडा' कहा जाता था। इन सिक्कों पर प्रायः हिंदू देवी-देवताओं और पशुओं, विशेष रूप से वराह के चित्र अंकित होते थे। अपनी शुद्धता और भार के कारण इन्हें अंतरराष्ट्रीय बाजारों में व्यापक मान्यता प्राप्त थी। इन स्वर्ण मुद्राओं के प्रचलन ने साम्राज्य की सुदृढ़ आर्थिक स्थिति और विदेशी व्यापार की संपन्नता को प्रमाणित किया। इसके छोटे सिक्कों को 'प्रताप' और 'फनम' के नाम से भी जाना जाता था, जो दैनिक विनिमय में प्रयुक्त थे।

42. (1) II, IV, I, III
विदेशी यात्रियों के आगमन का सही कालानुक्रमिक क्रम निकोलो कोंटी (1420), अब्दुर रज्जाक (1443), डोमिंगोस पेस (1520) और फर्नाओ नुनीज़ (1535) है। निकोलो कोंटी इतालवी यात्री थे जो देवराय प्रथम के समय आए। अब्दुर रज्जाक फारसी राजदूत थे जो देवराय द्वितीय के दरबार में पहुँचे। डोमिंगोस पेस ने कृष्णदेव राय के वैभव का वर्णन किया और फर्नाओ नुनीज़ अच्युत देव राय के समय उपस्थित हुए। यह क्रम विजयनगर साम्राज्य के उत्कर्ष और विकास के विभिन्न चरणों को समझने हेतु अत्यंत सहायक है।

43. (4) जटिल नक्काशीदार पत्थर के स्तंभों वाले विस्तृत 'कल्याण मंडप'
विजयनगर वास्तुकला की सर्वाधिक अनूठी और विशिष्ट विशेषता 'कल्याण मंडप' का निर्माण है। ये नक्काशीदार स्तंभों वाले विस्तृत कक्ष थे जिनका उपयोग देवताओं के प्रतीकात्मक विवाह समारोहों हेतु किया जाता था। इन मंडपों के स्तंभों पर अत्यंत जटिल नक्काशी, विशेष रूप से छलांग लगाते अश्वों और पौराणिक जीवों के चित्र उत्कीर्ण थे। यद्यपि विजयनगर शैली द्रविड़ परंपरा पर आधारित थी, किंतु इन भव्य मंडपों और संगीतमय स्तंभों के समावेश ने इसे एक नवीन पहचान प्रदान की, जो इसे पूर्ववर्ती चोल वास्तुकला से पृथक करती है।

44. (2) कृष्णदेव राय
हम्पी का प्रसिद्ध हज़ारा राम मंदिर कृष्णदेव राय के शासनकाल में निर्मित हुआ था। यह मंदिर राजपरिवार के निजी उपयोग हेतु था और अपनी भित्तियों पर रामायण के दृश्यों को दर्शाने वाली सुंदर नक्काशी हेतु विश्व विख्यात है। मंदिर की दीवारों पर हाथियों, अश्वों और नर्तकियों के जुलूसों के साथ भगवान राम के जीवन के विभिन्न प्रसंगों को पाषाण पर सूक्ष्मता से उत्कीर्ण किया गया है। यह मंदिर विजयनगर काल की उत्कृष्ट मूर्तिकला और स्थापत्य का एक जीवंत ऐतिहासिक उदाहरण माना जाता है।

45. (3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
विट्ठलस्वामी मंदिर अपने प्रसिद्ध पाषाण रथ और संगीतमय स्तंभों हेतु जाना जाता है। विरुपाक्ष मंदिर एक प्राचीन देवालय है जिसका कृष्णदेव राय ने भव्य गोपुरम बनवाकर विस्तार किया। लोटस महल हिंदू और इस्लामिक स्थापत्य शैली के सुंदर समन्वय का प्रतीक है। महानवमी डिब्बा वह विशाल पाषाण मंच है जहाँ से राजा नवरात्रि के भव्य उत्सवों और सैन्य परेडों का निरीक्षण करते थे। ये सभी संरचनाएं हम्पी की वास्तुकला की विविधता और विजयनगर के शासकों की सृजनात्मकता को प्रभावशाली ढंग से प्रदर्शित करती हैं।

46. (4) पत्थर का रथ - विट्ठलस्वामी मंदिर परिसर के भीतर स्थित
विट्ठलस्वामी मंदिर परिसर के प्रांगण में स्थित पाषाण रथ विजयनगर वास्तुकला का सर्वाधिक प्रसिद्ध प्रतीक है। यह रथ वास्तव में एक मंदिर है जिसे गरुड़ को समर्पित किया गया है और इसे एक ही विशाल शिला को तराशकर बनाया गया है। अन्य विकल्प त्रुटिपूर्ण हैं क्योंकि महानवमी डिब्बा उत्सवों हेतु एक मंच था। गजशाला पर स्पष्ट इस्लामिक प्रभाव परिलक्षित होता है और 'राय गोपुरम' विजयनगर शासकों द्वारा निर्मित विशाल प्रवेश द्वार थे। अतः विकल्प 4 ही ऐतिहासिक रूप से सत्य और सुमेलित है।

47. (1) ऊंचे गोपुरों, स्तंभों वाले मंडपों और संयुक्त स्तंभों वाली द्रविड़ शैली
हम्पी के स्मारकों की प्राथमिक स्थापत्य शैली द्रविड़ वास्तुकला का एक परिष्कृत रुप है। इसकी मुख्य विशेषताओं में तुंग और भव्य 'राय गोपुरम', नक्काशीदार स्तंभों वाले विस्तृत मंडप और ऊंचे अधिष्ठान सम्मिलित हैं। मंदिरों के निर्माण में स्थानीय कठोर ग्रेनाइट पत्थर का प्रचुर उपयोग किया गया था। इस शैली में अलंकृत नक्काशी और विशालता पर विशेष बल दिया गया, जो साम्राज्य की शक्ति और भक्ति भाव को दर्शाता है। यह वास्तुकला दक्षिण भारतीय परंपराओं के निरंतरता और नवीन प्रयोगों का एक अद्भुत संगम है।

NODIA

'पूर्व का शिराज' की संज्ञा दी गई। अटाला मस्जिद और झांझरी मस्जिद जैसी विख्यात संरचनाएं शर्की वास्तुकला की विशिष्ट शैली को प्रतिबिंबित करती हैं। यह वंश लगभग एक शताब्दी तक उत्तर भारत की राजनीति और संस्कृति में अपना महत्वपूर्ण और प्रभावशाली स्थान बनाए रखने में सफल रहा।

67. (3) बंगाली साहित्य का संरक्षण और चैतन्य महाप्रभु के प्रति सम्मानजनक दृष्टिकोण
बंगाल के हुसैन शाही वंश, विशेष रूप से अलाउद्दीन हुसैन शाह का शासनकाल, बंगाली संस्कृति के विकास का 'स्वर्ण युग' माना जाता है। उन्होंने बंगाली साहित्य को उदारतापूर्वक संरक्षण प्रदान किया और श्रीकर नंदी जैसे कवियों को महाभारत का बंगाली अनुवाद करने हेतु प्रेरित किया। उन्होंने सुप्रसिद्ध भक्ति संत चैतन्य महाप्रभु के प्रति भी अगाध सम्मान प्रदर्शित किया, जिससे समाज में हिंदू-मुस्लिम समरसता को बल मिला। यह उदार सांस्कृतिक नीति ही बंगाल को एक एकीकृत भाषाई और सांस्कृतिक पहचान प्रदान करने में अत्यंत सहायक सिद्ध हुई।

68. (4) I, II और III
गुजरात सल्तनत के दौरान अहमद शाह प्रथम ने अहमदाबाद की स्थापना कर उसे अपनी राजधानी बनाया। महमूद बेगड़ा ने गिरनार और चांपानेर की अजेय विजयों के कारण 'बेगड़ा' (दो दुर्गों का विजेता) की उपाधि अर्जित की। बहादुर शाह के समय में पुर्तगालियों के साथ तीव्र संघर्ष हुआ और अंततः उन्होंने दीव पर अधिकार कर लिया। ये तीनों कथन गुजरात के इतिहास के सर्वाधिक महत्वपूर्ण सैन्य और प्रशासनिक मील के पत्थरों को सही ढंग से दर्शाते हैं, जिसने गुजरात को तत्कालीन भारत का एक अत्यंत समृद्ध और शक्तिशाली राज्य बनाया।

69. (3) उनकी प्रशासनिक उदारता, सार्वजनिक बुनियादी ढांचा और धार्मिक समावेशिता
सुल्तान ज़ैन-उल-आबिदीन को उनकी दयालुता और प्रजावत्सलता के कारण कश्मीरी जनता 'बुड शाह' (महान राजा) कहकर पुकारती थी। उन्होंने पूर्ववर्ती शासकों की कट्टरपंथी नीतियों को त्यागकर धार्मिक सहिष्णुता का मार्ग प्रशस्त किया। उन्होंने कृषि हेतु नहरों का निर्माण करवाया, वाणिज्य को प्रोत्साहित किया और हिंदुओं को प्रशासन में उच्च पदों पर आसीन किया। उनकी यह उपाधि उनके द्वारा किए गए व्यापक सुधारों, न्यायप्रिय शासन और कश्मीर को एक समृद्ध तथा शांत घाटी बनाने के उनके निरंतर और ईमानदार प्रयासों का ऐतिहासिक सम्मान है।

70. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
सुल्तान ज़ैन-उल-आबिदीन को 'कश्मीर का अकबर' कहा जाता है क्योंकि उन्होंने अकबर से भी कई दशक पूर्व जज़िया कर को समाप्त कर धार्मिक स्वतंत्रता प्रदान की थी। उन्होंने गोवध पर प्रतिबंध लगाया और कश्मीर से पलायन कर चुके ब्राह्मणों को सादर वापस बुलाकर उनके मंदिरों का जीर्णोद्धार करवाया। उन्होंने संस्कृत के प्राचीन ग्रंथों का फारसी में अनुवाद करवाकर ज्ञान के आदान-प्रदान को गति दी। अकबर की भाँति उनकी उदारता और समावेशी नीतियों के कारण ही उन्हें इतिहास में यह गौरवशाली तुलनात्मक स्थान प्राप्त है।

71. (4) उन्होंने कश्मीरी पंडितों को प्रताड़ित किया और उन्हें घाटी से निष्कासित किया।
सुल्तान ज़ैन-उल-आबिदीन कश्मीरी पंडितों के प्रति अत्यंत दयालु और उदार थे। उन्होंने उन पंडितों को पुनः कश्मीर आमंत्रित किया जिन्हें उनके पूर्ववर्ती सुल्तान सिकंदर ने घाटी त्यागने हेतु विवश किया था। उन्होंने उन्हें राजकीय सेवाओं में उच्च स्थान प्रदान किया और उनकी धार्मिक स्वायत्तता बहाल की। अन्य विकल्प सत्य हैं क्योंकि उन्होंने राजतरंगिणी का अनुवाद करवाया और वुलर झील में कृत्रिम द्वीप निर्मित किया। अतः विकल्प 4 पूर्णतः असत्य है क्योंकि वे अपनी धार्मिक सहिष्णुता और कश्मीरी ब्राह्मणों के प्रति सद्भावना हेतु प्रसिद्ध थे।

72. (1) केवल I, II, IV और V
सुल्तान ज़ैन-उल-आबिदीन ने कश्मीर में सिंचाई हेतु 'लचम कुल' जैसी महत्वपूर्ण नहरें बनवाईं और शॉल उद्योग को नवीन तकनीक देकर पुनर्जीवित किया। उन्होंने हिंदुओं को प्रशासन में महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व सौंपे और राजतरंगिणी जैसे ऐतिहासिक ग्रंथों का संरक्षण किया। तृतीय कथन त्रुटिपूर्ण है क्योंकि उन्होंने कठोर दंड संहिता के स्थान पर उदारता और न्याय पर आधारित कानून व्यवस्था कार्यान्वित की थी, जिसमें सभी मतों के प्रति सम्मान था। उनकी इन दूरदर्शी नीतियों ने ही कश्मीर को मध्यकालीन युग में कला, साहित्य और शांति का केंद्र बनाया था।

73. (3) सुल्तान सिकंदर (बुतशिकन)
ज़ैन-उल-आबिदीन के पिता सुल्तान सिकंदर को इतिहास में 'बुतशिकन' (मूर्तियों का भंजक) के रूप में जाना जाता है। उनके शासनकाल में कश्मीर के अनेक प्रसिद्ध मंदिरों, जिनमें मार्तंड सूर्य मंदिर भी सम्मिलित था, को अपार क्षति पहुँचाई गई थी। उन्होंने गैर-मुसलमानों पर कठोर धार्मिक प्रतिबंध लगाए और उनके बलात् धर्मांतरण का कुत्सित प्रयास किया। ज़ैन-उल-आबिदीन ने सत्ता ग्रहण करने के पश्चात अपने पिता की इन विनाशकारी नीतियों को पूर्णतः पलट दिया और समाज में धार्मिक सहिष्णुता तथा स्थायी शांति स्थापित करने के सफल प्रयास किए।

74. (1) महाराणा कुंभा ने मालवा के महमूद खिलजी को हराया था
चित्तौड़गढ़ का भव्य 'विजय स्तंभ' महाराणा कुंभा द्वारा 1448 ईस्वी में मालवा के सुल्तान महमूद खिलजी पर अपनी शानदार विजय की स्मृति में निर्मित करवाया गया था। यह नौ मंजिला स्तंभ भारतीय वास्तुकला का अनुपम निदर्शन है और हिंदू देवी-देवताओं की सुंदर प्रतिमाओं से सुसज्जित है। इसे 'भारतीय मूर्तिकला का विश्वकोश' भी कहा जाता है। यह स्तंभ न केवल महाराणा कुंभा की सैन्य सफलता का प्रतीक है, अपितु यह मेवाड़ की तत्कालीन शक्ति, कलात्मक श्रेष्ठता और सांस्कृतिक स्वाभिमान को भी गर्व के साथ प्रदर्शित करता है।

75. (4) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
मेवाड़ के गौरव महाराणा सांगा ने अपनी अद्वितीय वीरता से इसे भारत की प्रमुख शक्ति बनाया। मारवाड़ में राव जोधा ने जोधपुर नगर की स्थापना की और सुदृढ़ मेहरानगढ़ दुर्ग बनवाया। आमेर

Click Here to Buy book on Amazon

को आठ प्रशासनिक प्रांतों में विभाजित किया ताकि शासन पर प्रभावी नियंत्रण रखा जा सके। उन्होंने शिक्षा और कला को भी प्रोत्साहित किया, जिसका ज्वलंत प्रमाण बीदर में उनके द्वारा निर्मित भव्य मदरसा है। दुर्भाग्यवश, उनकी बढ़ती शक्ति से ईर्ष्यालु 'दक्कनी' अमीरों ने सुल्तान को उनके विरुद्ध भ्रमित कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप 1481 में उन्हें मृत्युदंड दिया गया, जो बहमनी साम्राज्य के पतन का कारक बना।

58. (1) केवल I, III और IV
बहमनी साम्राज्य से पृथक होने वाला प्रथम राज्य बरार (1490) था और बीदर अंतिम (1528) था। अहमदनगर की चाँद बीबी ने मुगलों के विरुद्ध वीरतापूर्ण प्रतिरोध किया था। द्वितीय कथन असत्य है क्योंकि गोलकुंडा को अकबर के समय नहीं, अपितु बहुत बाद में औरंगजेब के शासनकाल (1687) में मुगल साम्राज्य में सम्मिलित किया गया था। इन सल्तनतों ने दक्कन की राजनीति और संस्कृति पर गहरा प्रभाव डाला, और उनकी पारस्परिक प्रतिद्वंद्विता ने ही अंततः मुगलों को दक्षिण में विस्तार का स्वर्ण अवसर प्रदान किया।

59. (4) बरार
1565 के तालिकोटा युद्ध में विजयनगर के विरुद्ध बीजापुर, अहमदनगर, गोलकुंडा और बीदर की सल्तनतों ने एक शक्तिशाली संघ बनाया था। बरार की सल्तनत इस ऐतिहासिक गठबंधन का भाग नहीं थी क्योंकि बीजापुर और अहमदनगर के साथ उसके पुरातन सीमा विवाद और वैमनस्य थे। बरार की अनुपस्थिति के उपरांत भी, अन्य चार सल्तनतों की संयुक्त सैन्य शक्ति विजयनगर की विशाल सेना को पराजित करने और दक्षिण भारत की राजनीतिक दिशा परिवर्तित करने हेतु पर्याप्त सिद्ध हुई, जिससे विजयनगर का वैभव सदैव हेतु विलीन हो गया।

60. (2) चारमीनार
हैदराबाद की सुप्रसिद्ध चारमीनार का निर्माण 1591 ईस्वी में गोलकुंडा के कुतुब शाही वंश के पांचवें सुल्तान मुहम्मद कुली कुतुब शाह ने करवाया था। यह स्मारक नगर में प्लेग की समाप्ति की स्मृति में निर्मित किया गया था और यह भारतीय-इस्लामी स्थापत्य शैली का एक अद्भुत निदर्शन है। इसकी चार तुंग मीनारें और मेहराबदार संरचनाएं इसे वैश्विक ख्याति दिलाती हैं। कुतुब शाही शासकों ने न केवल इस भव्य संरचना का निर्माण किया, अपितु वे कला, साहित्य और संस्कृति के भी महान संरक्षक और संवर्धक थे।

61. (3) 'दक्कनी' (स्वदेशी) और 'अफाकी' (विदेशी) अमीरों के बीच निरंतर सत्ता संघर्ष
बहमनी साम्राज्य की आंतरिक राजनीति 'दक्कनी' (स्थानीय मुस्लिम रईस) और 'अफाकी' (विदेशी रईस) गुटों के मध्य तीव्र प्रतिद्वंद्विता से ग्रस्त थी। इन दोनों समूहों के मध्य सत्ता, प्रभाव और उच्च पदों हेतु होने वाले निरंतर संघर्ष ने साम्राज्य की नींव को खोखला कर दिया। महमूद गवां जैसे योग्य प्रधानमंत्रियों की हत्या भी इसी गुटीय राजनीति का घातक परिणाम थी। अंततः इसी आंतरिक कलह और पारस्परिक अविश्वास ने एक शक्तिशाली साम्राज्य को पांच लघु और परस्पर प्रतिद्वंद्वी सल्तनतों में विभाजित कर दिया।

NODIA

62. (1) बरार, बीजापुर, अहमदनगर, गोलकुंडा, बीदर
बहमनी साम्राज्य के विघटन के दौरान स्वतंत्र होने वाली सल्तनतों का सही क्रम बरार, बीजापुर, अहमदनगर, गोलकुंडा और अंत में बीदर है। 1490 ईस्वी के समीप बरार, बीजापुर और अहमदनगर ने अपनी स्वायत्तता घोषित करना प्रारंभ कर दिया था। इसके पश्चात 1512 में गोलकुंडा स्वतंत्र हुआ और सर्वाधिक अंत में 1528 में बीदर एक स्वतंत्र राज्य के रूप में उभरा। यह क्रमिक विखंडन दक्कन में केंद्रीय बहमनी सत्ता के दुर्बल होने और क्षेत्रीय सूबेदारों की बढ़ती राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं को स्पष्ट रूप से परिलक्षित करता है।

63. (1) फिरोज शाह बहमनी
फिरोज शाह बहमनी मुख्य बहमनी राजवंश के सुल्तान थे, जबकि इब्राहिम आदिल शाह द्वितीय, बुरहान निजाम शाह और मुहम्मद कुली कुतुब शाह उन उत्तराधिकारी राज्यों के शासक थे जो साम्राज्य के विखंडन के पश्चात निर्मित हुए थे। फिरोज शाह बहमनी अपने समय के एक महान विद्वान और उदार शासक थे जिन्होंने साम्राज्य के विस्तार और सांस्कृतिक विकास में योगदान दिया। इस प्रकार, फिरोज शाह बहमनी का संबंध मूल अविभाजित साम्राज्य से होने के कारण वे अन्य शासकों से भिन्न श्रेणी में आते हैं।

64. (2) सिकंदर शाह
पांडुआ में स्थित अदीना मस्जिद का निर्माण 1374 ईस्वी में बंगाल के सुल्तान सिकंदर शाह के शासनकाल में किया गया था। यह मस्जिद अपनी विशालता और भव्यता के कारण संपूर्ण भारतीय उपमहाद्वीप की महत्वपूर्ण इस्लामिक संरचनाओं में से एक मानी जाती है। इसका निर्माण दिल्ली सल्तनत से बंगाल की स्वतंत्रता और आर्थिक समृद्धि को प्रदर्शित करने हेतु किया गया था। इस मस्जिद की वास्तुकला में स्वदेशी बंगाली तत्वों और पारंपरिक इस्लामी अभिकल्पों का सुंदर संगम देखने को मिलता है, जो बंगाल सल्तनत के वैभव का प्रतीक है।

65. (2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
मालवा में होशंग शाह ने शासन कर मांडू को कला का प्रमुख केंद्र बनाया। गुजरात में महमूद बेगड़ा अपनी सैन्य विजयों और अहमदाबाद के विकास हेतु प्रसिद्ध हुए। जौनपुर में मलिक सरवर ने शर्की वंश की स्थापना की, जिसे कालांतर में 'पूर्व का शिराज' कहा गया। बंगाल में शम्सुद्दीन इलियास शाह ने एक स्वतंत्र और शक्तिशाली सल्तनत को सुदृढ़ किया। यह मिलान 14वीं और 15वीं शताब्दी के दौरान उत्तर तथा मध्य भारत में उदित विभिन्न क्षेत्रीय शक्तियों और उनके प्रमुख नेतृत्वकर्ताओं के ऐतिहासिक योगदान को सटीक रूप से जोड़ता है।

66. (1) शर्की वंश
जौनपुर के स्वतंत्र राज्य पर शर्की वंश का शासन था, जिसकी नींव मलिक सरवर ने रखी थी। शर्की सुल्तानों के संरक्षण में जौनपुर शिक्षा, कला और विशेष रूप से वास्तुकला का एक महान केंद्र बन गया। इसकी सांस्कृतिक प्रचुरता के कारण इसे

(3) सुल्तान सिकंदर (बुतशिकन)
(4) शिहाबुद्दीन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

74. क्षेत्रीय शक्तियों का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि एक राजपूत शासक ने सैन्य विजय की स्मृति में चित्तौड़गढ़ में विजय स्तंभ बनवाया था। वह शासक कौन था और उसने किसे पराजित किया था?
(1) महाराणा कुंभा ने मालवा के महमूद खिलजी को हराया था
(2) महाराणा सांगा ने बाबर को हराया था
(3) राव जोधा ने गुजरात के सुल्तान को हराया था
(4) महाराणा प्रताप ने अकबर के सेनापति मान सिंह को हराया था
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

75. सूची I की मदों को सूची II की मदों के साथ सुमेलित करें और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनें।
सूची I: (राजपूत राज्य/वंश)
A. मेवाड़
B. मारवाड़
C. आमेर
D. बीकानेर
सूची II: (प्रमुख शासक/संस्थापक)
i. राव बीका
ii. महाराणा सांगा
iii. राव जोधा
iv. राजा भारमल
(1) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(4) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

76. 15वीं और 16वीं शताब्दी में क्षेत्रीय शक्तियों के संदर्भ में, खातौली का युद्ध किन दो शासकों के बीच लड़ा गया था?
(1) महाराणा कुंभा और महमुद बेगड़ा
(2) महाराणा सांगा और इब्राहिम लोदी
(3) राव मालदेव और शेर शाह सूरी
(4) बाबर और मेदिनी राय
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

77. राजपूत राज्यों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: 15वीं शताब्दी के दौरान, महाराणा कुंभा के अधीन मेवाड़ एक शक्तिशाली शक्ति के रूप में उभरा जिसने मालवा और गुजरात सल्तनतों के विस्तार को रोका।
कथन II: महाराणा कुंभा कला के महान संरक्षक थे और उन्होंने 'संगीत राज' जैसे ग्रंथों की रचना की थी।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(3) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

78. महाराणा कुंभा की उपलब्धियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. उन्होंने अनेक दुर्गों का निर्माण किया, जिनमें कुंभलगढ़ सर्वाधिक प्रमुख है।
II. उन्होंने संगीत पर 'संगीत राज' सहित कई विद्वत्तापूर्ण कृतियाँ लिखीं।
III. उन्होंने गुजरात सल्तनत को हराने के लिए दिल्ली सल्तनत के साथ गठबंधन किया।
IV. उन्होंने चित्तौड़गढ़ में विजय स्तंभ का निर्माण करवाया।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, III और IV
(2) केवल II, III और IV
(3) I, II, III और IV
(4) केवल I, II और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

79. मेवाड़ के गुहिल/सिसोदिया वंश के निम्नलिखित शासकों को उनके शासनकाल के सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
I. महाराणा सांगा
II. राणा हम्मीर
III. महाराणा प्रताप
IV. महाराणा कुंभा
सही क्रम चुनें:
(1) II, IV, I, III
(2) II, I, IV, III
(3) IV, II, I, III
(4) I, II, III, IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

80. निम्नलिखित में से कौन सा कथन 16वीं शताब्दी की शुरुआत में मेवाड़ और मारवाड़ के राजपूत राज्यों की भू-राजनीतिक रणनीति की सटीक विशेषता बताता है?
(1) एक स्थायी राजपूत संघ का गठन जिसने सभी कुलों को एक साम्राज्य में एकीकृत किया
(2) दिल्ली और गुजरात के बाहरी खतरों के विरुद्ध सामयिक गठबंधनों के साथ आपसी प्रतिद्वंद्विता
(3) मालवा की सल्तनत को नियमित कर देकर तुष्टिकरण की नीति अपनाना
(4) आंतरिक पहाड़ी दर्रों की रक्षा की अनदेखी करते हुए विशेष रूप से समुद्री व्यापार मार्गों पर ध्यान केंद्रित करना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

www.nodia.in

Downloaded from www.pdf.tube

के राजा भारमल मुगलों के साथ वैवाहिक गठबंधन करने वाले प्रथम राजपूत शासक थे। बीकानेर की स्थापना राव जोधा के पुत्र राव बीका ने की थी। यह मिलान राजस्थान के प्रमुख राजपूत राज्यों और उनके निर्माण अथवा विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले प्रसिद्ध शासकों के ऐतिहासिक और गौरवशाली योगदान को बिल्कुल सटीक रूप से दर्शाता है।

76. (2) महाराणा सांगा और इब्राहिम लोदी
1517 ईस्वी में खातौली का युद्ध मेवाड़ के महाराणा सांगा और दिल्ली के लोदी सुल्तान इब्राहिम लोदी के मध्य लड़ा गया था। इस युद्ध में महाराणा सांगा ने इब्राहिम लोदी की विशाल सेना को करारी शिकस्त प्रदान की थी। इस विजय के फलस्वरुप मेवाड़ का राजनीतिक प्रभाव दिल्ली की सीमाओं तक विस्तृत हो गया और सांगा उत्तर भारत के सर्वाधिक शक्तिशाली हिंदू नरेश के रूप में उभरे। यद्यपि इस युद्ध में सांगा ने अपना एक हाथ खो दिया था, किंतु उनकी सैन्य प्रतिभा ने मेवाड़ को सर्वोच्च गौरव प्रदान किया।

77. (2) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
महाराणा कुंभा के तेजस्वी नेतृत्व में मेवाड़ वास्तव में एक अजेय शक्ति के रूप में उभरा, जिसने मालवा और गुजरात के सुल्तानों के संयुक्त आक्रमणों को भी सफलतापूर्वक विफल कर दिया। यद्यपि वे कला और संगीत के महान संरक्षक थे, किंतु ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में उनके राजनीतिक और सैन्य योगदान को सर्वोपरि माना जाता है। उन्होंने कुंभलगढ़ जैसे अभेद्य दुर्गों का निर्माण करवाया जो सामरिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण थे। विकल्प 2 के अनुसार, उनके सैन्य विस्तार की सत्यता पर अधिक बल दिया गया है, जो उनकी प्रमुख विशेषता है।

78. (4) केवल I, II और IV
महाराणा कुंभा एक विलक्षण और बहुआयामी व्यक्तित्व के स्वामी थे। उन्होंने कुंभलगढ़ सहित 32 सुदृढ़ दुर्गों का निर्माण करवाया और चित्तौड़ में विजय स्तंभ स्थापित किया। वे 'संगीत राज' जैसे उच्च कोटि के ग्रंथों के रचयिता भी थे। तृतीय कथन असत्य है क्योंकि उन्होंने कभी भी दिल्ली सल्तनत के साथ कोई गठबंधन नहीं किया, अपितु वे सदैव उनके विरुद्ध स्वतंत्र रूप से संघर्षरत रहे। कुंभा ने मेवाड़ को न केवल सैन्य रूप से सशक्त किया, बल्कि उसे ज्ञान, संगीत और वास्तुकला का एक अनुपम केंद्र बनाया।

79. (1) II, IV, I, III
मेवाड़ के सिसोदिया राजवंश के शासकों का सही कालानुक्रमिक क्रम राणा हम्मीर, महाराणा कुंभा, महाराणा सांगा और अंत में महाराणा प्रताप है। राणा हम्मीर ने 14वीं शताब्दी में मेवाड़ को पुनः विजित कर राजवंश की प्रतिष्ठा स्थापित की। 15वीं शताब्दी में कुंभा ने इसे कला और दुर्गों का केंद्र बनाया। 16वीं शताब्दी के प्रारंभ में सांगा के नेतृत्व में मेवाड़ अपनी सैन्य शक्ति के चरमोत्कर्ष पर पहुँचा। अंततः 16वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में महाराणा प्रताप ने मुगलों के विरुद्ध अपने ऐतिहासिक और अविस्मरणीय संघर्ष से स्वतंत्रता की अलख जगाई।

80. (2) दिल्ली और गुजरात के बाहरी खतरों के विरुद्ध सामयिक गठबंधनों के साथ आपसी प्रतिद्वंद्विता
16वीं शताब्दी के आरंभ में राजस्थान के राजपूत राज्य, विशेषकर मेवाड़ और मारवाड़, एक जटिल राजनीतिक परिस्थिति में थे। वे प्रायः क्षेत्रीय वर्चस्व हेतु परस्पर संघर्षरत रहते थे, किंतु जब दिल्ली सल्तनत अथवा गुजरात जैसे वृहद बाह्य खतरे सम्मुख आते थे, तो वे सुरक्षा हेतु अस्थाई गठबंधन भी कर लेते थे। उनकी रणनीति मुख्य रूप से अपने स्वाभिमान की रक्षा और स्वतंत्र सत्ता अक्षुण्ण बनाए रखने पर केंद्रित थी। इस पारस्परिक प्रतिद्वंद्विता ने उन्हें पूर्णतः एकीकृत तो नहीं होने दिया, किंतु निरंतर युद्धों ने उन्हें सैन्य रूप से दक्ष बनाए रखा।

www.nodia.in

NODIA

50. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): औरंगजेब के लंबे दक्कन अभियानों ने मुगल साम्राज्य के पतन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
कारण (R): इन अभियानों ने शाही खजाने को रिक्त कर दिया, उत्तरी अभिजात वर्ग को असंतुष्ट किया और साम्राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था को क्षीण कर दिया।
उपरोक्त दो कथनों के संदर्भ में, सही विकल्प चुनिए:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

51. औरंगजेब की धार्मिक नीतियों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(1) उसने विदेशी व्यापार को बढ़ावा देने के लिए गैर-मुस्लिम व्यापारियों पर सभी कर समाप्त कर दिए।
(2) उसने सक्रिय रूप से हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत को संरक्षण दिया।
(3) उसने 1679 में गैर-मुसलमानों पर जजिया कर पुनः लगा दिया।
(4) उसने अपने पूरे शासनकाल में नौरोज़ और झरोखा दर्शन के उत्सवों को जारी रखा।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

52. औरंगजेब द्वारा लागू की गई निम्नलिखित नीतियों पर विचार कीजिए:
I. शाही दरबार में संगीत के सार्वजनिक गायन पर प्रतिबंध लगाना।
II. झरोखा दर्शन की प्रथा को समाप्त करना।
III. नैतिक आचरण लागू करने के लिए 'मुहतसिबों' की नियुक्ति करना।
IV. दक्कन में नए हिंदू मंदिरों का व्यापक निर्माण कराना।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा विकल्प गलत (INCORRECT) है?
(1) केवल I
(2) केवल II और III
(3) केवल IV
(4) केवल I और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

53. औरंगजेब ने दक्षिण में मुगल साम्राज्य का सर्वाधिक विस्तार किया। बीजापुर और गोलकुंडा का विलय क्रमशः किन वर्षों में हुआ था?
(1) 1686 और 1687
(2) 1636 और 1656
(3) 1681 और 1685
(4) 1689 और 1691
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

54. निम्नलिखित में से कौन सा राजपूत राज्य एक अपवाद था जिसने अपने शासक की मृत्यु के उपरांत औरंगजेब के विरुद्ध बड़ा विद्रोह नहीं किया?
(1) मारवाड़
(2) मेवाड़
(3) आमेर
(4) उपरोक्त में से कोई नहीं
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

55. औरंगजेब के शासनकाल के दौरान हुए विद्रोहों (सूची I) का उनके संबंधित नेताओं (सूची II) के साथ मिलान कीजिए:
सूची I (विद्रोह):
A. जाट विद्रोह
B. सतनामी विद्रोह
C. बुंदेला विद्रोह
D. सिख विद्रोह
सूची II (नेता):
i. बीरभान
ii. छत्रसाल
iii. गुरु गोबिंद सिंह
iv. गोकुला
सही कूट चुनिए:
(1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

56. मुगल केंद्रीय प्रशासन की संरचना में 'दीवान-ए-आला' (वज़ीर) का कार्यालय मुख्य रूप से किसके लिए उत्तरदायी था?
(1) राजस्व और वित्तीय प्रशासन
(2) सैन्य संगठन और गुप्तचर विभाग
(3) धार्मिक बंदोबस्त और न्याय व्यवस्था
(4) शाही परिवार का प्रबंधन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

57. 'मीर बख्शी' की मुगल प्रशासन में प्राथमिक जिम्मेदारी क्या थी?
(1) मुख्य न्यायाधीश के रूप में कार्य करना
(2) शाही कारखानों का प्रबंधन करना
(3) सैन्य विभाग का नेतृत्व और मनसबदारों का रिकॉर्ड रखना
(4) खालसा भूमि से लगान वसूल करना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

58. मुगल प्रशासन के केंद्रीय विभागों और उनके प्रमुखों के संबंध में निम्नलिखित पर विचार कीजिए:
I. दीवान-ए-आला - राजस्व विभाग
II. मीर बख्शी - सैन्य विभाग
III. मीर समां - शाही घराना
IV. सद्र-उस-सुदूर - धार्मिक एवं धर्मार्थ दान

Click Here to Buy book on Amazon

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs, you are wasting valuable time.

Research shows that learning from **PRINTED BOOKS** has up to **4× HIGHER RETENTION** than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS** move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND** in competition.

In competitive exams, being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

युद्ध लड़ते हुए उसकी मृत्यु हो गई।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

9. निम्नलिखित व्यक्तियों में से उस विकल्प का चयन करें जो हुमायूँ का भाई नहीं था:

(1) कामरान
(2) अस्करी
(3) दानियाल
(4) हिंदाल
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

10. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:

अभिकथन (A): हुमायूँ के शासनकाल ने मुगल चित्रकला शैली की नींव रखी।

कारण (R): फारस में अपने निर्वासन के दौरान, हुमायूँ ने दो सफ़वी चित्रकारों, मीर सैयद अली और अब्दुल समद की सेवाएँ प्राप्त कीं, जो उसके साथ भारत आए।

उपरोक्त दो कथनों के संदर्भ में, सही विकल्प चुनिए:

(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

11. शेरशाह सूरी के प्रशासनिक सुधारों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?

(1) उसने सत्ता का विकेंद्रीकरण किया और प्रांतीय गवर्नरों को पूर्ण स्वायत्तता प्रदान की।
(2) उसने सेना में घोड़ों को दागने (दाग) की प्रणाली को समाप्त कर दिया।
(3) उसने अपने अभिजात वर्ग को संगठित करने के लिए मनसबदारी प्रणाली की शुरुआत की।
(4) उसने अपने साम्राज्य को 'सरकारों' में विभाजित किया, जिन्हें आगे 'परगना' में उपविभाजित किया गया।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

12. शेरशाह सूरी की आर्थिक और आधारभूत संरचना संबंधी नीतियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. उसने 'रुपया' नामक एक मानक रजत मुद्रा शुरु की।
II. उसने सोनारगाँव को सिंधु नदी से जोड़ने वाली 'सड़क-ए-आज़म' (ग्रैंड ट्रंक रोड) का निर्माण कराया।
III. उसने मुक्त व्यापार को बढ़ावा देने के लिए सभी आंतरिक सीमा शुल्कों को समाप्त कर दिया।
IV. उसने राजस्व प्रशासन के लिए 'पट्टा' और 'कबूलियत' प्रणाली की शुरुआत की।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा कूट सही है?

(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, II और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) केवल I, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

13. शेरशाह के स्थानीय प्रशासन में, परगना में कानून-व्यवस्था बनाए रखने के लिए मुख्य रूप से उत्तरदायी अधिकारी को किस नाम से जाना जाता था?

(1) मुंसिफ
(2) कानूनगो
(3) शिकदार
(4) आमिल
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

14. शेरशाह सूरी ने पट्टा और कबूलियत की प्रणाली शुरु की। इस अवधारणा का मुख्य उद्देश्य क्या था?

(1) धार्मिक विद्वानों को भूमि अनुदान प्रदान करना
(2) सैन्य कमांडरों की वंशावली पंजीकृत करना
(3) स्थानीय बाजारों में उपयोग किए जाने वाले बाटों का मानकीकरण करना
(4) किसानों के अधिकारों और लगान संबंधी दायित्वों को स्पष्ट करना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

15. शेरशाह सूरी के प्रशासनिक विभागों (सूची I) का उनके संबंधित कार्यों (सूची II) के साथ मिलान कीजिए:

सूची I (विभाग):

A. दीवान-ए-विज़ारत
B. दीवान-ए-आरिज़
C. दीवान-ए-रसालत
D. दीवान-ए-इंशा

सूची II (कार्य):

i. सैन्य विभाग
ii. शाही पत्राचार
iii. राजस्व और वित्त
iv. विदेश मामले और धार्मिक अपील

सही कूट चुनिए:

(1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(2) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(3) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(4) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

16. शेरशाह सूरी द्वारा निर्मित स्मारकों और उनके स्थानों के संबंध में असत्य युग्म की पहचान कीजिए:

(1) शेरशाह का मकबरा - सासाराम
(2) बुलंद दरवाजा - फतेहपुर सीकरी
(3) पुराना किला - दिल्ली

Downloaded from www.pdf.tube

अध्याय 11
मुगल साम्राज्य : प्रशासन एवं नीतियाँ

1. 1526 में पानीपत के प्रथम युद्ध में, बाबर ने एक विशिष्ट सैन्य रणनीति का उपयोग किया था जिसमें शत्रु को चारों ओर से घेरने के लिए अपनी सेना को विभिन्न टुकड़ियों में विभाजित करना शामिल था। इस पार्श्वीय घेराबंदी की रणनीति को क्या कहा जाता था?
(1) अराबा
(2) तुलुगमा
(3) रूमी
(4) गज़वा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

2. खानवा का युद्ध (1527) भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ था क्योंकि इसने उत्तरी भारत में मुगल शासन को सुदृढ़ता से स्थापित किया। इस युद्ध में बाबर का मुख्य प्रतिद्वंद्वी कौन था?
(1) राणा सांगा
(2) इब्राहिम लोदी
(3) महमूद लोदी
(4) मेदिनी राय
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

3. 'तुजुक-ए-बाबरी' (बाबरनामा) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: यह मूल रूप से बाबर द्वारा तुर्की भाषा में लिखा गया था।
कथन II: यह भारत की वनस्पति, प्राणी जगत और भूगोल का विस्तृत विवरण प्रदान करता है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल कथन I
(2) केवल कथन II
(3) कथन I और कथन II दोनों
(4) न तो कथन I और न ही कथन II
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

4. निम्नलिखित में से कौन सा युद्ध एक अपवाद था और भारत में अपने अभियानों के दौरान बाबर द्वारा नहीं लड़ा गया था?
(1) चंदेरी का युद्ध
(2) घाघरा का युद्ध
(3) खानवा का युद्ध
(4) चौसा का युद्ध
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

5. बाबर द्वारा लड़े गए युद्धों (सूची I) का उनके संबंधित वर्षों (सूची II) के साथ मिलान कीजिए:
सूची I (युद्ध):
A. पानीपत का प्रथम युद्ध
B. खानवा का युद्ध
C. चंदेरी का युद्ध
D. घाघरा का युद्ध
सूची II (वर्ष):
i. 1527
ii. 1529
iii. 1526
iv. 1528
सही कूट चुनिए:
(1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(2) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(3) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

6. हुमायूँ को किस युद्ध में ऐसी निर्णायक हार का सामना करना पड़ा जिसने उसे निर्वासन के लिए विवश कर दिया और सूरी वंश को दिल्ली पर नियंत्रण का अवसर दिया?
(1) सरहिंद का युद्ध
(2) कन्नौज का युद्ध (बिलग्राम)
(3) चौसा का युद्ध
(4) माछीवाड़ा का युद्ध
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

7. बाबर द्वारा छोड़े गए मुगल साम्राज्य को सुदृढ़ करने में हुमायूँ की प्रारंभिक विफलता का प्रमुख कारण क्या था?
(1) किसी भी संगठित सैन्य बल का पूर्ण अभाव
(2) राजपूत राज्यों का तत्काल विद्रोह
(3) उसके सेनापति बैरम खान द्वारा विश्वासघात
(4) अपने भाइयों के बीच साम्राज्य का विभाजन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

8. हुमायूँ के निर्वासन काल और पुनर्स्थापना के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उसने फारस में शाह तहमास्प के सफ़वी दरबार में शरण ली थी।
II. उसने 1555 में सिकंदर शाह सूरी को हराकर दिल्ली और आगरा पर पुनः अधिकार कर लिया।
III. अपनी पुनर्स्थापना के कुछ ही समय बाद हेमू के विरुद्ध

(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(4) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

26. अकबर की राजपूत नीति के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: अकबर ने उन राजपूत शासकों को उच्च मनसब और महत्वपूर्ण प्रशासनिक पद प्रदान किए जिन्होंने उसके साथ गठबंधन किया था।
कथन II: अकबर ने सभी राजपूत शासकों के लिए अपनी पैतृक भूमि बनाए रखने की अनिवार्य शर्त के रूप में वैवाहिक गठबंधन को बाध्यकारी बनाया।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल कथन I
(2) केवल कथन II
(3) कथन I और कथन II दोनों
(4) न तो कथन I और न ही कथन II
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

27. अकबर द्वारा उदारवादी राजपूत नीति तैयार करने के पीछे सबसे उपयुक्त कारण क्या था?
(1) वह राजपूतों को दीन-ए-इलाही में दीक्षित करना चाहता था।
(2) उसके पास कुशल सेनापतियों की कमी थी और वह पूर्णतः राजपूत सेनाओं पर आश्रित था।
(3) वह सांस्कृतिक रूप से सभी राजपूत परंपराओं को आत्मसात करना चाहता था।
(4) वह एक सुदृढ़ साम्राज्य के निर्माण के लिए वफादार सैन्य सहयोगी चाहता था।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

28. मनसबदारी व्यवस्था के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. 'ज़ात' रैंक अभिजात की व्यक्तिगत स्थिति और वेतन को निर्धारित करती थी।
II. 'सवार' रैंक उस अभिजात द्वारा रखे जाने वाले घुड़सवारों की संख्या को दर्शाती थी।
III. मनसबदारी रैंक पूर्णतः वंशानुगत थी और पिता से पुत्र को हस्तांतरित होती थी।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा गलत (INCORRECT) है?
(1) केवल I
(2) केवल II
(3) केवल III
(4) केवल I और II
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

29. मुगल मनसबदारी व्यवस्था के संदर्भ में, 'मशरुत' शब्द का अर्थ है:
(1) प्रशासन द्वारा किसी अभिजात की भूमि की जब्ती।
(2) राजस्व का वह हिस्सा जो सम्राट के लिए आरक्षित होता था।
(3) सवार रैंक में की जाने वाली एक सशर्त वृद्धि।
(4) निरीक्षण के समय सैन्य टुकड़ी प्रस्तुत करने में विफलता।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

30. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): मुगलों के अधीन मनसबदारी व्यवस्था वंशानुगत नहीं थी।
कारण (R): किसी मनसबदार की मृत्यु पर, उसकी संपत्ति और जागीरें 'जब्ती के नियम' (एस्चीट) के तहत राज्य द्वारा अधिग्रहित कर ली जाती थीं।
उपरोक्त दो कथनों के संदर्भ में, सही विकल्प चुनिए:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

31. मनसबदारी व्यवस्था के अंतर्गत वेतन प्रणाली के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(1) जिन मनसबदारों को भू-राजस्व के आवंटन के माध्यम से वेतन दिया जाता था, उन्हें जागीरदार कहा जाता था।
(2) सभी मनसबदारों को अनिवार्य रूप से शाही खजाने से नकद में भुगतान किया जाता था।
(3) एक जागीरदार के पास अपनी जागीर के किसानों पर पूर्ण प्रशासनिक और न्यायिक अधिकार होते थे।
(4) 'वतन जागीर' हर तीन वर्ष में एक मनसबदार से दूसरे को हस्तांतरित की जाती थी।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

32. मनसबदारी व्यवस्था की निम्नलिखित विशेषताओं पर विचार कीजिए:
I. इसमें नागरिक और सैन्य प्रशासन दोनों सम्मिलित थे।
II. अकबर के शासनकाल के दौरान मनसबदारों को 33 श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया था।
III. सैनिकों का हुलिया (चेहरा) और घोड़ों को दागने (दाग) की प्रथा इसमें एकीकृत थी।
IV. केवल विदेशी मूल के मुसलमानों को ही मनसब प्रदान किया जाता था।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा कूट सही है?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, III और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) केवल I, II और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

33. अकबर ने किस वर्ष गैर-मुस्लिम प्रजा पर लगाए गए जजिया कर को औपचारिक रूप से समाप्त कर दिया था?

Click Here to Buy book on Amazon

(4) रोहतासगढ़ किला - उत्तर-पश्चिमी सीमा (झेलम के पास)
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

17. पानीपत का द्वितीय युद्ध (1556) अकबर की सेना और हेमू के बीच लड़ा गया था। विक्रमादित्य की उपाधि धारण करने से पहले हेमू की क्या स्थिति थी?
(1) हुमायूँ के अधीन पंजाब का सूबेदार
(2) आदिल शाह सूरी का वज़ीर और सेनापति
(3) मालवा का स्वतंत्र शासक
(4) राजपूत संघ का सेनापति
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

18. अकबर की निम्नलिखित प्रारंभिक विजयों पर विचार कीजिए:
I. मालवा की विजय
II. गोंडवाना की विजय
III. चित्तौड़ पर अधिकार
IV. रणथंभौर पर अधिकार
V. गुजरात की विजय
निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प इन विजयों के सही कालानुक्रमिक क्रम का प्रतिनिधित्व करता है?
(1) I, II, III, IV, V
(2) II, I, IV, III, V
(3) I, III, II, V, IV
(4) III, I, II, IV, V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

19. अकबर के प्रारंभिक शासनकाल और बैरम खान के संरक्षण काल (Regency) के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) बैरम खान के पास 'खान-ए-खाना' की उपाधि थी और उसने अकबर के संरक्षक के रूप में कार्य किया।
(2) पानीपत का द्वितीय युद्ध मुख्य रूप से बैरम खान के सैन्य नेतृत्व के कारण जीता गया था।
(3) बैरम खान ने अपनी पदमुक्ति के बाद मालवा में सफलतापूर्वक एक स्वतंत्र साम्राज्य स्थापित किया।
(4) अकबर ने 1560 में बैरम खान को पदमुक्त कर दिया और उसे मक्का जाने का सुझाव दिया।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

20. 1579 में अकबर द्वारा जारी 'महज़र' नामक दस्तावेज को सबसे अच्छी तरह परिभाषित किया गया है:
(1) एक आदेश जिसने गैर-मुसलमानों पर जजिया कर को समाप्त कर दिया।
(2) टोडरमल द्वारा तैयार किया गया साम्राज्य का नया राजस्व मैनुअल।
(3) समन्वयात्मक विचारधारा 'दीन-ए-इलाही' का आधारभूत ग्रंथ।
(4) एक घोषणा जिसने धार्मिक मामलों में अकबर को अंतिम निर्णायक बना दिया।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

21. बैरम खान की पदमुक्ति के बाद, अकबर के प्रशासन में एक संक्षिप्त चरण आया जो महाम अनगा और उनके संबंधियों से अत्यधिक प्रभावित था। इस अवधि (1560-1562) को ऐतिहासिक रूप से क्या कहा जाता है?
(1) उलेमाओं का शासन
(2) तुरानियों का शासन
(3) पेटीकोट सरकार (अन्तःपुर शासन)
(4) मनसबदारी संक्रमण चरण
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

22. कालानुक्रमिक क्रम में अकबर की अधीनता स्वीकार करने वाले राजपूत राज्यों के सही क्रम का चयन कीजिए:
(1) आमेर, रणथंभौर, मारवाड़, मेवाड़
(2) आमेर, मेड़ता, गोंडवाना, रणथंभौर
(3) आमेर, मेड़ता, चित्तौड़, रणथंभौर
(4) मेड़ता, आमेर, रणथंभौर, चित्तौड़
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

23. स्वेच्छा से अकबर का आधिपत्य स्वीकार करने वाला और उसके साथ वैवाहिक संबंध स्थापित करने वाला प्रथम राजपूत शासक कौन था?
(1) मेवाड़ के महाराणा प्रताप
(2) मारवाड़ के राव चंद्रसेन
(3) रणथंभौर के राव सुरजन हाड़ा
(4) आमेर के राजा भारमल
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

24. निम्नलिखित में से कौन सा राजपूत शासक अकबर के समक्ष समर्पण करने से निरंतर इनकार करने के लिए जाना जाता है, जिसके कारण उन्हें "मारवाड़ का भूला-बिसरा नायक" (Forgotten Hero of Marwar) कहा जाता है?
(1) राव चंद्रसेन
(2) उदय सिंह
(3) राव मालदेव
(4) सवाई जय सिंह
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

25. अकबर के शासनकाल के दौरान राजपूत शासकों (सूची I) का उनके संबंधित राज्यों (सूची II) के साथ मिलान कीजिए:
सूची I (शासक):
A. राजा भगवंत दास
B. राव सुरजन हाड़ा
C. महाराणा प्रताप
D. कल्याणमल
सूची II (राज्य):
i. मेवाड़
ii. बीकानेर
iii. आमेर
iv. रणथंभौर
सही कूट चुनिए:
(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii

42. जहाँगीर के शासनकाल की निम्नलिखित घटनाओं को सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. मेहरुन्निसा (नूरजहाँ) से विवाह
II. शहजादा खुसरो का विद्रोह
III. मेवाड़ के साथ शांति संधि
IV. सफ़वियों द्वारा कंधार पर अधिकार
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही क्रम चुनिए:
(1) II, I, III, IV
(2) I, II, IV, III
(3) II, III, I, IV
(4) III, I, II, IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

43. 'नूरजहाँ गुट' (Nur Jahan Junta) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: यह जहाँगीर के दरबार में एक शक्तिशाली समूह था जिसमें नूरजहाँ, एतमाद-उद-दौला, आसफ खान और शहजादा खुर्रम सम्मिलित थे।
कथन II: जहाँगीर के संपूर्ण शासनकाल में यह गुट पूर्णतः संगठित रहा, जिससे शहजादा खुर्रम का उत्तराधिकार सुगम हुआ।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल कथन I
(2) केवल कथन II
(3) कथन I और कथन II दोनों
(4) न तो कथन I और न ही कथन II
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

44. जहाँगीर के शासनकाल के दौरान हुई राजनीतिक घटनाओं के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए:
(1) उसने 1615 में राणा अमर सिंह के साथ शांति संधि की थी।
(2) उसने एक सफल सैन्य अभियान का नेतृत्व कर 'ट्रांसऑक्सियाना' क्षेत्र को विजित किया।
(3) उसने मनसबदारी व्यवस्था में 'दु-अस्पा सी-अस्पा' प्रणाली की शुरुआत की।
(4) कैप्टन हॉकिन्स और सर थॉमस रो व्यापारिक रियासतें प्राप्त करने हेतु उसके दरबार में आए थे।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

45. शाहजहाँ के शासनकाल के दौरान निर्मित स्थापत्य स्मारकों (सूची I) का उनके संबंधित स्थानों (सूची II) के साथ मिलान कीजिए:
सूची I (स्मारक):
A. ताजमहल
B. जामा मस्जिद
C. मोती मस्जिद
D. शालीमार बाग
सूची II (स्थान):
i. आगरा किला
ii. लाहौर
iii. दिल्ली
iv. आगरा
सही कूट चुनिए:
(1) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(2) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(3) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

46. शाहजहाँ ने अपनी नई राजधानी शाहजहानाबाद की नींव किस वर्ष रखी थी, जिससे मुगल सत्ता का केंद्र आगरा से दिल्ली स्थानांतरित हो गया?
(1) 1628
(2) 1632
(3) 1639
(4) 1648
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

47. शाहजहाँ की दक्कन नीति का एक महत्वपूर्ण चरण 1633 में किस दक्षिणी सल्तनत का मुगल साम्राज्य में विलय था?
(1) अहमदनगर
(2) बीजापुर
(3) गोलकुंडा
(4) बीदर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

48. शाहजहाँ के पुत्रों के बीच उत्तराधिकार के युद्ध के दौरान लड़े गए निम्नलिखित युद्धों का सही कालानुक्रमिक क्रम क्या है?
I. धरमत का युद्ध
II. सामूगढ़ का युद्ध
III. देवराई का युद्ध
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही कूट चुनिए:
(1) I, II, III
(2) II, I, III
(3) III, II, I
(4) I, III, II
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

49. बल्ख और बदख्शां में शाहजहाँ के महत्वाकांक्षी सैन्य अभियानों का मुख्य परिणाम क्या रहा?
(1) इसके फलस्वरूप मध्य एशियाई धन का मुगल खजाने में भारी आगमन हुआ।
(2) इससे मुगल राजकोष पर भारी आर्थिक बोझ पड़ा और कोई स्थायी सामरिक लाभ नहीं हुआ।
(3) इसने सफ़वी आक्रमणों के विरुद्ध उत्तर-पश्चिमी सीमा को सदैव के लिए सुरक्षित कर दिया।
(4) इससे सीधे तौर पर उसके पुत्रों के बीच उत्तराधिकार का युद्ध आरंभ हुआ।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Downloaded from www.pdf.tube

68. मुगल प्रांतीय प्रशासन की संरचना के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. साम्राज्य को सूबों में विभाजित किया गया था।
II. सूबों को सरकारों (जिलों) में विभाजित किया गया था।
III. सरकारों को परगनाओं में विभाजित किया गया था।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा असत्य (INCORRECT) है?

(1) केवल I
(2) केवल II
(3) केवल III
(4) उपरोक्त में से कोई नहीं (सभी सत्य हैं)
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

69. मुगल प्रशासन में एक 'सरकार' के भीतर कानून-व्यवस्था बनाए रखने और स्थानीय विद्रोहों को शांत करने के लिए मुख्य उत्तरदायी अधिकारी कौन था?

(1) सूबेदार
(2) शिकदार
(3) फौजदार
(4) कोतवाल
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

70. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:

अभिकथन (A): अकबर ने जानबूझकर सूबेदार (गवर्नर) और प्रांतीय दीवान के पदों को पृथक रखा था।

कारण (R): यह विभाजन शक्ति संतुलन (checks and balances) के लिए किया गया था ताकि प्रांतीय गवर्नर अधिक शक्तिशाली होकर विद्रोह न कर सकें।

उपरोक्त दो कथनों के संदर्भ में, सही विकल्प चुनिए:

(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

71. मुगल नगरीय प्रशासन में 'कोतवाल' के कर्तव्यों के संबंध में कौन सा कथन गलत है?

(1) वह नगरों में कानून-व्यवस्था के लिए जिम्मेदार मुख्य पुलिस अधिकारी था।
(2) वह बाजारों को नियंत्रित करता था और नाप-तौल के उपकरणों की जाँच करता था।
(3) वह आगंतुकों की निगरानी के लिए नागरिकों का रजिस्टर रखता था।
(4) वह युद्ध के समय प्रांतीय सेना का सर्वोच्च कमांडर होता था।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

72. मुगल स्थानीय प्रशासन की निम्नलिखित विशेषताओं पर विचार कीजिए:

I. गाँव सबसे छोटी प्रशासनिक इकाई थी, जो आंतरिक मामलों में स्वायत्त थी।
II. पटवारी ग्रामीण राजस्व के रिकॉर्ड रखने के लिए जिम्मेदार था।
III. मुकद्दम गाँव का मुखिया होता था जो राजस्व संग्रह में सहायता करता था।
IV. स्थानीय प्रशासन ने पारंपरिक ज़मींदारी अधिकारों को पूर्णतः समाप्त कर दिया था।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा कूट सही है?

(1) केवल I, II और IV
(2) केवल I, II और III
(3) केवल II, III और IV
(4) केवल I, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

73. मुगल काल के दौरान भारत से निर्यात की जाने वाली सर्वाधिक महत्वपूर्ण वस्तु कौन सी थी जिसकी वैश्विक स्तर पर अत्यधिक मांग थी?

(1) मसाले
(2) नील
(3) सूती वस्त्र
(4) शोरा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

74. यूरोपीय यात्री और संबंधित मुगल सम्राट के सही युग्म की पहचान कीजिए:

(1) फ्रांसुआ बर्नियर - औरंगजेब
(2) राल्फ फिच - बाबर
(3) सर थॉमस रो - अकबर
(4) जीन-बैप्टिस्ट टैवर्नियर - हुमायूँ
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

75. प्रमुख यूरोपीय यात्रियों (सूची I) का उनकी राष्ट्रीयता (सूची II) के साथ मिलान कीजिए:

सूची I (यात्री):

A. सर थॉमस रो
B. फ्रांसुआ बर्नियर
C. निकोलो मनूची
D. फ्रांसिस्को पेलसार्ट

सूची II (राष्ट्रीयता):

i. फ्रांसीसी
ii. ब्रिटिश
iii. डच
iv. इतालवी

सही कूट चुनिए:

(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

V. काजी-उल-कुज़ात - मुख्य न्यायाधीश
ऊपर दिए गए युग्मों में से कौन सा गलत (INCORRECT) है?
(1) केवल I और II
(2) केवल III और IV
(3) केवल V
(4) उपरोक्त में से कोई नहीं (सभी सुमेलित हैं)
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

59. मुगल केंद्रीय प्रशासन में 'सद्र-उस-सुदूर' का मुख्य कार्य क्या था?
(1) शाही तोपखाने का संचालन करना।
(2) विदेशी शक्तियों के साथ राजनयिक वार्ता करना।
(3) टकसालों का प्रबंधन और मुद्राओं का मानकीकरण।
(4) धार्मिक अनुदानों और स्थानीय काजियों की नियुक्ति का प्रबंधन।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

60. मुगल अधिकारी और उनके कर्तव्य का कौन सा युग्म सही सुमेलित है?
(1) वाकिया-नवीस - प्रांतीय राजस्व संग्राहक
(2) बरीद - गुप्तचर अधिकारी या समाचार लेखक
(3) कोतवाल - प्रांतीय सेना का सेनापति
(4) अमलगुज़ार - शाही रसोइया
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

61. मुगल केंद्रीय प्रशासन में शाही घराने और कारखानों के प्रभारी अधिकारी को क्या कहा जाता था?
(1) मीर बख्शी
(2) मुहतसिब
(3) मीर समां
(4) मुशरिफ
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

62. टोडरमल की जब्ती प्रणाली के अंतर्गत, कृषि की निरंतरता के आधार पर भूमि के वर्गीकरण का सही क्रम (निरंतर खेती से पांच वर्ष या उससे अधिक खाली भूमि तक) क्या है?
(1) पोलाज, चाचर, परौती, बंजर
(2) पोलाज, परौती, चाचर, बंजर
(3) परौती, पोलाज, बंजर, चाचर
(4) चाचर, परौती, पोलाज, बंजर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

63. टोडरमल द्वारा प्रवर्तित 'दहसाला व्यवस्था' में राज्य के लगान की गणना किस आधार पर की जाती थी?
(1) पिछले दस वर्षों की औसत उपज और औसत कीमतों के आधार पर
(2) आगामी फसल की संभावित उपज के अनुमान के आधार पर
(3) फसल के प्रकार पर ध्यान दिए बिना एक निश्चित कर दर पर
(4) व्यक्तिगत किसान की सामाजिक आर्थिक स्थिति के आधार पर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

64. अकबर ने भूमि मापन में एकरुपता लाने के लिए किस इकाई का प्रचलन किया था?
(1) सिकंदरी गज़
(2) इलाही गज़
(3) बीघा-ए-दफ्तरी
(4) ज़रीब
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

65. मुगल राजस्व और स्थानीय प्रशासन के अधिकारियों (सूची I) का उनकी भूमिकाओं (सूची II) के साथ मिलान कीजिए:
सूची I (अधिकारी):
A. अमलगुज़ार
B. बितिकची
C. कानूनगो
D. मुकद्दम
सूची II (भूमिका):
i. स्थानीय राजस्व रिकॉर्ड का संरक्षक
ii. गाँव का मुखिया
iii. राजस्व लिपिक/लेखाकार
iv. जिले (सरकार) का राजस्व संग्राहक
सही कूट चुनिए:
(1) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

66. निम्नलिखित में से कौन सा कथन मुगल राजस्व प्रशासन की 'बटाई' (गल्ला-बख्शी) प्रणाली का सही वर्णन करता है?
(1) इसमें फसल की कटाई के बाद उपज का विभाजन राज्य और किसान के बीच किया जाता था।
(2) इसमें केवल नकद रूप में राजस्व का संग्रह किया जाता था।
(3) इसमें पूरे गाँव को राजस्व की उगाही के लिए ठेके पर दिया जाता था।
(4) इसमें किसान द्वारा एक निश्चित वार्षिक नजराना दिया जाता था।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

67. मुगल काल में खेती को प्रोत्साहन देने और आपदा के समय सहायता हेतु किसानों को दिए जाने वाले कृषि ऋण को क्या कहा जाता था?
(1) नज़रानी
(2) ज़कात
(3) तकावी
(4) खुम्स
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Click Here to Buy book on Amazon

(1) 1562
(2) 1563
(3) 1564
(4) 1575
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

34. अकबर की धार्मिक नीति की निम्नलिखित घटनाओं और उनके संबंधित वर्षों के सही युग्म की पहचान कीजिए:
(1) इबादतखाना की स्थापना - 1575
(2) तीर्थयात्रा कर की समाप्ति - 1564
(3) महज़र का जारी होना - 1582
(4) दीन-ए-इलाही की घोषणा - 1579
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

35. अकबर के इबादतखाना में आने वाले विद्वानों (सूची I) का उन धर्मों (सूची II) के साथ मिलान कीजिए जिनका वे प्रतिनिधित्व करते थे:
सूची I (विद्वान):
A. हरि विजय सूरी
B. दस्तूर मेहरजी राणा
C. फादर मॉन्सरेट
D. पुरुषोत्तम
सूची II (धर्म):
i. हिंदू धर्म
ii. ईसाई धर्म
iii. पारसी धर्म
iv. जैन धर्म
सही कूट चुनिए:
(1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

36. अकबर के प्रशासन और उसके धार्मिक दृष्टिकोण का आधारभूत सिद्धांत 'सुलह-ए-कुल' वैचारिक रूप से क्या अर्थ रखता है?
(1) राजाओं का दैवीय अधिकार
(2) इस्लामी कानून की सर्वोच्चता
(3) अधर्मियों के विरुद्ध धर्मयुद्ध
(4) सार्वभौमिक शांति और सहिष्णुता
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

37. निम्नलिखित में से कौन सा कथन अकबर के 'दीन-ए-इलाही' को सबसे अच्छी तरह परिभाषित करता है?
(1) यह एक पवित्र पुस्तक और पुरोहित वर्ग वाला एक नया धर्म था।
(2) यह सुन्नी इस्लाम का एक संप्रदाय था जिसे आस्था की शुद्धि के लिए बनाया गया था।
(3) यह एक नैतिक आचार संहिता थी जो वफादारी और सद्गुणों पर आधारित थी।
(4) यह नैतिक कर्तव्यों का विवरण देने वाला एक प्रशासनिक नियमावली थी।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

38. दीन-ए-इलाही से जुड़े निम्नलिखित तत्वों पर विचार कीजिए:
I. "अल्लाहु अकबर" के साथ एक-दूसरे का अभिवादन करना।
II. सूर्य और प्रकाश के प्रति श्रद्धा प्रकट करना।
III. शाकाहार को प्रोत्साहन और मांस भक्षण से परहेज।
IV. 1000 से ऊपर के सभी मनसबदारों के लिए अनिवार्य धर्मांतरण।
V. दीक्षा समारोह प्रायः रविवार को आयोजित किए जाते थे।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा कूट सही है?
(1) केवल I, II, III और V
(2) केवल I, II, IV और V
(3) केवल II, III, IV और V
(4) केवल I, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

39. 1579 में अकबर द्वारा 'महज़र' (अचूकता की घोषणा) जारी करने का सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रभाव क्या था?
(1) इसके फलस्वरुप राजपूत अभिजातों का व्यापक विद्रोह हुआ।
(2) इससे इबादतखाना तत्काल प्रभाव से भंग हो गया।
(3) इसके कारण भूमि अनुदान रद्द होने से संकट उत्पन्न हुआ।
(4) इसने अकबर को धार्मिक कानूनों का अंतिम व्याख्याकार बना दिया।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

40. जहाँगीर के शासनकाल के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(1) मुगल चित्रकला प्रकृतिवाद और छवि चित्रण (portraiture) के साथ अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँची।
(2) उसने चित्रकला को गैर-इस्लामी मानकर प्रतिबंधित कर दिया था।
(3) उसने हिंदुस्तानी को राजदरबार की आधिकारिक भाषा बनाया।
(4) उसने ललित कलाओं की उपेक्षा कर केवल स्थापत्य पर ध्यान दिया।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

41. जहाँगीर के शासनकाल के आरंभ में, उसे अपने पुत्र शहजादा खुसरो के विद्रोह का सामना करना पड़ा। खुसरो को कथित रूप से आशीर्वाद देने के लिए जहाँगीर ने किस सिख गुरु को मृत्युदंड दिया था?
(1) शेख अहमद सरहिंदी
(2) गुरु राम दास
(3) गुरु अर्जुन देव
(4) मियाँ मीर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

76. मुगल अर्थव्यवस्था और आंतरिक व्यापार के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: 'हुंडी' विनिमय पत्रों की एक विकसित व्यवस्था थी जिसने लंबी दूरी के व्यापार को सरल बनाया।
कथन II: आंतरिक व्यापार पर पूर्णतः राज्य का एकाधिकार था और निजी व्यापारियों का प्रवेश वर्जित था।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल कथन I
(2) केवल कथन II
(3) कथन I और कथन II दोनों
(4) न तो कथन I और न ही कथन II
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

77. निम्नलिखित यूरोपीय शक्तियों को भारत में उनके प्रथम व्यापारिक केंद्रों की स्थापना के सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. डच
II. पुर्तगाली
III. फ्रांसीसी
IV. ब्रिटिश
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही क्रम चुनिए:
(1) II, I, IV, III
(2) II, IV, I, III
(3) I, II, III, IV
(4) IV, I, II, III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

78. मुगल साम्राज्य के पतन के लिए उत्तरदायी निम्नलिखित कारकों पर विचार कीजिए:
I. उत्तराधिकार के लिए होने वाले निरंतर युद्ध।
II. जागीरदारी संकट का उदय।
III. औरंगजेब की नीतियां और थका देने वाले दक्कन अभियान।
IV. नादिर शाह और अहमद शाह अब्दाली के विदेशी आक्रमण।
V. मराठा, सिख और जाट जैसी क्षेत्रीय शक्तियों का उदय।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा कूट सही है?
(1) केवल I, II, III और V
(2) केवल II, III, IV और V
(3) केवल I, III, IV और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

79. इतिहासकारों द्वारा उल्लेखित "जागीरदारी संकट" का सर्वाधिक सटीक वर्णन क्या है?
(1) मनसबदारों की बढ़ती संख्या के सापेक्ष अच्छी जागीरों की कमी, जिससे गुटबाजी बढ़ी।
(2) नील की खेती को लेकर किसानों द्वारा किया गया विद्रोह।
(3) जागीरदारों द्वारा दक्षिण भारत में भूमि आवंटन लेने से इनकार करना।
(4) मुद्रास्फीति के कारण जागीरों से होने वाली आय का मूल्यहीन हो जाना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

80. 1739 में किसने दिल्ली पर आक्रमण किया और अपने साथ 'मयूर सिंहासन' तथा 'कोहिनूर' हीरा ले गया?
(1) अहमद शाह अब्दाली
(2) नादिर शाह
(3) सुल्तान महमूद
(4) तैमूर लंग
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

www.nodia.in

NODIA

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) तुलुगमा
1526 में पानीपत के प्रथम युद्ध के दौरान बाबर ने तुर्क-मंगोल सैन्य पद्धति 'तुलुगमा' का सफलतापूर्वक उपयोग किया। इस युद्ध नीति के अंतर्गत सेना को मध्य, बाएँ और दाएँ पार्श्व जैसी विभिन्न इकाइयों में विभाजित किया जाता था। इसका मुख्य उद्देश्य शत्रु सेना को चारों ओर से घेरकर उन पर अचानक प्रहार करना था। इस अद्वितीय पार्श्वीय घेराबंदी ने इब्राहिम लोदी की विशाल सेना को पराजित करने में अत्यंत निर्णायक भूमिका निभाई थी।

2. (1) राणा सांगा
1527 में लड़ा गया खानवा का युद्ध मुगल साम्राज्य के विस्तार की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण था। इस युद्ध में बाबर का सामना मेवाड़ के शक्तिशाली शासक राणा सांगा से हुआ था। सांगा ने राजपूतों और अफगानों का एक विशाल गठबंधन निर्मित किया था, किंतु बाबर की उन्नत तोपखाने की तकनीक और उत्कृष्ट रणनीतिक कौशल के कारण राजपूत सेना की हार हुई। इस विजय ने उत्तरी भारत में मुगल सत्ता को अधिक सुदृढ़ और स्थायी बना दिया था।

3. (2) केवल कथन II
बाबर द्वारा रचित आत्मचरित 'तुजुक-ए-बाबरी' मुगलकालीन भारत के इतिहास का एक अत्यंत प्रामाणिक और विस्तृत स्रोत है। इस ग्रंथ में बाबर ने भारतीय उपमहाद्वीप की जलवायु, भौगोलिक परिस्थितियों, वनस्पतियों तथा यहाँ के जीव-जंतुओं का सूक्ष्म वर्णन प्रस्तुत किया है। यह विवरण उस समय के प्राकृतिक परिवेश और पारिस्थितिकी को समझने में सहायक है। यद्यपि यह मूलतः चग़ताई तुर्की में लिखा गया था, तथापि इसकी विषय-वस्तु मुख्य रूप से भारत के प्राकृतिक सौंदर्य और पर्यावरण पर केंद्रित है।

4. (4) चौसा का युद्ध
मुगल सम्राट बाबर ने भारत में अपने संक्षिप्त शासनकाल के दौरान पानीपत, खानवा, चंदेरी और घाघरा जैसे महत्वपूर्ण युद्ध लड़े थे। चौसा का युद्ध ऐतिहासिक रूप से इस क्रम का भाग नहीं है, क्योंकि यह 1539 में बाबर के पुत्र हुमायूँ और अफगान शासक शेरशाह सूरी के मध्य लड़ा गया था। इस युद्ध में हुमायूँ की निर्णायक पराजय हुई थी। बाबर द्वारा लड़े गए अन्य सभी युद्धों ने भारत में प्रारंभिक मुगल राजवंश की सुदृढ़ आधारशिला रखने का कार्य किया था।

5. (1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
बाबर के सैन्य अभियानों का सही कालक्रम भारतीय इतिहास की महत्वपूर्ण घटनाओं को दर्शाता है। 1526 में पानीपत का प्रथम युद्ध हुआ, जिसने दिल्ली सल्तनत का अंत किया। इसके पश्चात 1527 में खानवा का युद्ध लड़ा गया। 1528 में चंदेरी का युद्ध मेदिनी राय के विरुद्ध हुआ और अंततः 1529 में घाघरा का युद्ध लड़ा गया, जहाँ बाबर ने अफगान सेना को पराजित किया। यह क्रम भारत में मुगल शासन की स्थापना और उसके क्षेत्रीय विस्तार की प्रक्रिया को स्पष्ट करता है।

6. (2) कन्नौज का युद्ध (बिलग्राम)
1540 में लड़ा गया कन्नौज का युद्ध, जिसे बिलग्राम का युद्ध भी कहा जाता है, हुमायूँ के लिए विनाशकारी सिद्ध हुआ। इस युद्ध में शेरशाह सूरी ने हुमायूँ को निर्णायक रूप से पराजित किया, जिसके परिणामस्वरूप हुमायूँ को भारत छोड़कर लगभग 15 वर्षों के लिए निर्वासित जीवन व्यतीत करना पड़ा। इस विजय के साथ ही शेरशाह ने दिल्ली और आगरा पर अधिकार कर सूरी वंश की स्थापना की। यह युद्ध भारतीय इतिहास में मुगल सत्ता के अस्थायी अंत का प्रतीक माना जाता है।

7. (4) अपने भाइयों के बीच साम्राज्य का विभाजन
हुमायूँ को अपने शासनकाल के प्रारंभिक वर्षों में अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ा, जिनमें सबसे प्रमुख उसके पिता बाबर की वसीयत का अक्षरशः पालन करना था। हुमायूँ ने अपने भाइयों कामरान, अस्करी और हिंदाल के बीच साम्राज्य का विभाजन कर दिया। इस निर्णय ने मुगल साम्राज्य की केंद्रीय शक्ति को दुर्बल कर दिया और संसाधनों का भारी बिखराव हुआ। भाइयों के बीच आपसी सहयोग की कमी और निरंतर प्रतिद्वंद्विता ने हुमायूँ की प्रशासनिक और सैन्य स्थिति को अत्यधिक अस्थिर बना दिया था।

8. (1) केवल I और II
हुमायूँ ने अपने निर्वासन काल के दौरान फारस के शाह तहमास्प के दरबार में शरण ली थी, जहाँ से उसे महत्वपूर्ण सैन्य सहायता प्राप्त हुई। इसी सहायता के बल पर उसने 1555 में सरहिंद के युद्ध में सिकंदर शाह सूरी को पराजित कर दिल्ली और आगरा पर पुनः अधिकार प्राप्त किया। तीसरा कथन गलत है क्योंकि हुमायूँ की मृत्यु 1556 में अपने पुस्तकालय की सीढ़ियों से गिरने के कारण हुई थी। अतः प्रथम दो कथन ऐतिहासिक रूप से पूर्णतः सत्य और तथ्यपूर्ण हैं।

9. (3) दानियाल
मुगल सम्राट हुमायूँ के तीन सगे भाई थे, जिनके नाम कामरान, अस्करी और हिंदाल थे। हुमायूँ ने अपने पिता की अंतिम इच्छा का सम्मान करते हुए विशाल मुगल साम्राज्य का विभाजन इन्हीं तीनों भाइयों के मध्य किया था। दानियाल इस सूची में सम्मिलित नहीं है क्योंकि वह अकबर का पुत्र था, न कि हुमायूँ का भाई। कामरान को काबुल और कंधार का शासन सौंपा गया था, जबकि अस्करी और हिंदाल को भी विभिन्न महत्वपूर्ण क्षेत्रों का प्रशासन दिया गया था।

Downloaded from www.pdf.tube

10. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
हुमायूँ के शासनकाल को भारत में मुगल चित्रकला की नींव रखने का श्रेय दिया जाता है। फारस में अपने निर्वासन के दौरान वह वहाँ की उन्नत कला और संस्कृति से अत्यधिक प्रभावित हुआ था। जब वह पुनः भारत लौटा, तो अपने साथ प्रसिद्ध सफ़वी चित्रकार मीर सैयद अली और अब्दुल समद को लाया। इन महान कलाकारों ने भारत में विशिष्ट मुगल चित्रकला शैली के विकास में आधारभूत भूमिका निभाई। अतः अभिकथन और कारण दोनों सत्य हैं और सटीक व्याख्या करते हैं।

11. (4) उसने अपने साम्राज्य को 'सरकारों' में विभाजित किया, जिन्हें आगे 'परगना' में उपविभाजित किया गया।
शेरशाह सूरी अपनी प्रशासनिक कुशलता के लिए इतिहास में प्रसिद्ध है। उसने सत्ता के अत्यधिक विकेंद्रीकरण के स्थान पर उसे सुव्यवस्थित किया और संपूर्ण साम्राज्य को 47 'सरकारों' में विभाजित किया। प्रत्येक सरकार को आगे कई 'परगना' में बाँटा गया था, जहाँ विभिन्न सक्षम अधिकारी नियुक्त थे। उसने सैन्य सुधारों के तहत घोड़ों को दागने की प्रणाली को और अधिक सुदृढ़ किया था। मनसबदारी व्यवस्था उसके काल में नहीं बल्कि अकबर के शासनकाल में विकसित हुई थी।

12. (2) केवल I, II और IV
शेरशाह सूरी ने आर्थिक क्षेत्र में अभूतपूर्व सुधार किए, जिसमें शुद्ध चांदी के सिक्के 'रुपया' का प्रचलन अत्यंत महत्वपूर्ण था। उसने संचार व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए बंगाल से उत्तर-पश्चिम सीमा तक प्रसिद्ध 'सड़क-ए-आज़म' का निर्माण कराया। साथ ही, उसने कृषि सुधार के लिए 'पट्टा' और 'कबूलियत' प्रणाली का सूत्रपात किया। तृतीय कथन गलत है क्योंकि उसने सभी आंतरिक शुल्क समाप्त नहीं किए थे, बल्कि केवल दो विशिष्ट बिंदुओं पर ही शुल्क वसूलने की न्यायोचित नीति अपनाई थी।

13. (3) शिकदार
शेरशाह सूरी के स्थानीय प्रशासन में 'परगना' एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक इकाई के रूप में स्थापित थी। परगना स्तर पर शांति, कानून और व्यवस्था बनाए रखने की मुख्य जिम्मेदारी 'शिकदार' नामक अधिकारी की होती थी। वह एक सैन्य अधिकारी के रूप में कार्य करता था और क्षेत्र में प्रशासनिक अनुशासन सुनिश्चित करता था। मुंसिफ मुख्य रूप से नागरिक और दीवानी मामलों को देखता था, जबकि आमिल और कानूनगो राजस्व प्रशासन से संबंधित थे। शिकदार का पद आंतरिक सुरक्षा हेतु अनिवार्य था।

14. (4) किसानों के अधिकारों और लगान संबंधी दायित्वों को स्पष्ट करना
शेरशाह सूरी ने कृषि प्रशासन में पारदर्शिता लाने के उद्देश्य से 'पट्टा' और 'कबूलियत' की प्रणाली लागू की थी। पट्टा एक औपचारिक राजकीय दस्तावेज था जिसमें भूमि का क्षेत्रफल और उस पर देय लगान का पूर्ण विवरण होता था। कबूलियत वह दस्तावेज था जिसके माध्यम से किसान इन शर्तों को स्वीकार करता था। इस व्यवस्था का मुख्य लक्ष्य किसानों को बिचौलियों के शोषण से बचाना और राज्य के राजस्व अधिकारों को स्पष्ट करना था, जिससे कर संग्रह में स्थिरता आई।

15. (1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
शेरशाह सूरी के शासनकाल में प्रशासनिक विभागों का वर्गीकरण अत्यंत वैज्ञानिक और कुशल था। दीवान-ए-विज़ारत राजस्व और वित्त संबंधी मामलों का प्रबंधन करता था, जबकि दीवान-ए-आरिज़ संपूर्ण सैन्य संगठन के लिए उत्तरदायी था। दीवान-ए-रसालत का मुख्य कार्य विदेशी मामलों और धार्मिक अपीलों का समाधान करना था। इसके अतिरिक्त, दीवान-ए-इंशा शाही पत्राचार और सरकारी आदेशों को जारी करने का कार्य देखता था। यह संतुलित विभागीय संरचना शेरशाह की प्रशासनिक निपुणता और दूरदर्शिता को प्रमाणित करती है।

NODIA

16. (2) बुलंद दरवाजा - फतेहपुर सीकरी
स्थापत्य कला के क्षेत्र में शेरशाह सूरी का योगदान अतुलनीय है, जिसमें सासाराम स्थित उसका भव्य मकबरा और दिल्ली का पुराना किला प्रमुख हैं। उसने उत्तर-पश्चिमी सीमा की सुरक्षा हेतु झेलम के निकट शक्तिशाली रोहतासगढ़ किले का निर्माण भी करवाया था। बुलंद दरवाजा शेरशाह द्वारा नहीं, बल्कि सम्राट अकबर द्वारा अपनी गुजरात विजय की स्मृति में फतेहपुर सीकरी में निर्मित करवाया गया था। अतः यह युग्म शेरशाह के निर्माण कार्यों के संदर्भ में ऐतिहासिक रूप से असत्य और त्रुटिपूर्ण प्रतीत होता है।

17. (2) आदिल शाह सूरी का वज़ीर और सेनापति
हेमू, जिसे हेमचंद्र विक्रमादित्य के नाम से भी जाना जाता है, मध्यकालीन भारतीय इतिहास का एक अत्यंत पराक्रमी व्यक्तित्व था। 1556 में पानीपत के द्वितीय युद्ध में अकबर का सामना करने से पूर्व, वह अफगान शासक आदिल शाह सूरी का अत्यंत विश्वसनीय वज़ीर और प्रधान सेनापति था। उसने अपने सैन्य जीवन में कुल 22 युद्ध जीते थे और दिल्ली पर अधिकार करने के पश्चात स्वयं को विक्रमादित्य की उपाधि से विभूषित किया। उसका उत्थान उसकी व्यक्तिगत योग्यता का परिणाम था।

18. (1) I, II, III, IV, V
अकबर की सैन्य विजयों का कालक्रम उसके विशाल साम्राज्य विस्तार की गाथा कहता है। सर्वप्रथम 1561 में मालवा की विजय हुई, जिसके पश्चात 1564 में रानी दुर्गावती के विरुद्ध गोंडवाना पर अधिकार किया गया। 1568 में चित्तौड़ के अभेद्य दुर्ग का पतन हुआ और 1569 में रणथंभौर को विजित किया गया। अंततः 1572-73 में अकबर ने गुजरात पर पूर्ण विजय प्राप्त की। यह अनुक्रम अकबर द्वारा भारतीय उपमहाद्वीप पर अपनी संप्रभुता स्थापित करने के सुव्यवस्थित प्रयासों का सटीक ऐतिहासिक विवरण प्रस्तुत करता है।

19. (3) बैरम खान ने अपनी पदमुक्ति के बाद मालवा में सफलतापूर्वक एक स्वतंत्र साम्राज्य स्थापित किया।
बैरम खान ने अकबर के प्रारंभिक शासनकाल में एक शक्तिशाली संरक्षक और 'खान-ए-खाना' के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। 1556 में पानीपत की जीत उसके उत्कृष्ट सैन्य नेतृत्व

57. (3) सैन्य विभाग का नेतृत्व और मनसबदारों का रिकॉर्ड रखना
मुगल शासन व्यवस्था में 'मीर बख्शी' सैन्य विभाग का सर्वोच्च अधिकारी होता था। उसका मुख्य कार्य सैनिकों की भर्ती करना, सेना का नियमित निरीक्षण करना और मनसबदारों के पद एवं वेतन के रिकॉर्ड बनाए रखना था। यद्यपि वह सेना का प्रशासनिक प्रमुख था, किंतु वह स्वयं प्रधान सेनापति नहीं होता था। युद्ध के समय वह सेना का कुशल प्रबंधन देखता था और मनसबदारों को उनकी सेवा के अनुसार वेतन के आदेश जारी करता था। सैन्य अनुशासन बनाए रखने में उसकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण थी।

58. (4) उपरोक्त में से कोई नहीं (सभी सुमेलित हैं)
मुगल केंद्रीय प्रशासन एक सुव्यवस्थित और जटिल प्रणाली पर आधारित था जहाँ विभिन्न विभागों के प्रमुख निर्धारित थे। दीवान-ए-आला मुख्य रूप से राजस्व और वित्त का प्रबंधन देखता था, जबकि मीर बख्शी सैन्य नियुक्तियों और मनसबदारों के विवरण हेतु जिम्मेदार था। मीर समां शाही घराने की आवश्यकताओं की पूर्ति करता था। सद्र-उस-सुदूर धार्मिक अनुदानों का निरीक्षण करता था और काजी-उल-कुज़ात न्याय व्यवस्था का नेतृत्व करता था। ये सभी पद और उनके संबंधित कार्य ऐतिहासिक रूप से पूर्णतः सुमेलित और सही हैं।

59. (4) धार्मिक अनुदानों और स्थानीय काजियों की नियुक्ति का प्रबंधन।
'सद्र-उस-सुदूर' मुगल प्रशासन का वह उच्च अधिकारी था जो धार्मिक और धर्मार्थ मामलों का प्रधान होता था। उसका मुख्य उत्तरदायित्व विद्वानों और धार्मिक संस्थानों को दिए जाने वाले राजस्व मुक्त भूमि अनुदानों का निरीक्षण करना था। वह इस्लामी कानूनों के संरक्षण और स्थानीय स्तर पर काजियों की नियुक्ति की सिफारिश भी करता था। सम्राट उसे धार्मिक परामर्शदाता के रूप में देखता था। यह पद समाज के धार्मिक ताने-बाने और न्याय प्रणाली के निचले स्तर को नियंत्रित करने हेतु अनिवार्य था।

60. (2) बरीद - गुप्तचर अधिकारी या समाचार लेखक
मुगल प्रशासन में सूचना तंत्र को सुदृढ़ बनाने हेतु विभिन्न अधिकारियों की नियुक्ति की गई थी। 'बरीद' वह अधिकारी था जो गुप्तचर विभाग का नेतृत्व करता था और महत्वपूर्ण समाचारों को एकत्र कर सम्राट तक पहुँचाता था। वाकिया-नवीस घटनाओं का आधिकारिक लेखक होता था, न कि राजस्व संग्राहक। कोतवाल नगर की पुलिस का प्रमुख था और अमलगुज़ार राजस्व संग्रह से जुड़ा जिला स्तर का अधिकारी था। अतः केवल बरीद वाला युग्म ही अपनी सही परिभाषा और कार्य के साथ सटीक सुमेलित है।

61. (3) मीर समां
'मीर समां' मुगल शासन का एक अत्यंत प्रभावशाली अधिकारी था जो सम्राट के घरेलू मामलों और शाही कारखानों का प्रभारी था। उसकी जिम्मेदारी शाही महल की दैनिक आवश्यकताओं, भोजन, वस्त्र और साज-सज्जा का समुचित प्रबंध करना था। इसके अतिरिक्त, वह राज्य के कारखानों में होने वाले उत्पादन और उनके विशाल भंडार का भी निरीक्षण करता था। यह पद सम्राट की व्यक्तिगत सुरक्षा और महल की सुचारु व्यवस्था से सीधे जुड़ा हुआ था, इसलिए इसे प्रशासन के प्रमुख स्तंभों में से एक माना जाता था।

62. (2) पोलाज, परौती, चाचर, बंजर
राजा टोडरमल ने भूमि की उर्वरता और खेती की निरंतरता के आधार पर उसका वैज्ञानिक वर्गीकरण किया था। 'पोलाज' वह भूमि थी जिस पर प्रतिवर्ष नियमित खेती होती थी। 'परौती' को उसकी उर्वरता बनाए रखने हेतु एक-दो वर्ष खाली छोड़ा जाता था। 'चाचर' तीन या चार वर्षों तक बिना खेती के रहती थी, और 'बंजर' वह भूमि थी जो पाँच या उससे अधिक वर्षों से खेती रहित होती थी। यह वर्गीकरण लगान के न्यायोचित निर्धारण और कृषि प्रबंधन के लिए अत्यंत आवश्यक था।

63. (1) पिछले दस वर्षों की औसत उपज और औसत कीमतों के आधार पर
अकबर के शासनकाल में लागू 'दहसाला व्यवस्था' राजा टोडरमल की एक क्रांतिकारी राजस्व नीति थी। इसमें राज्य के लगान का निर्धारण पिछले दस वर्षों के दौरान विभिन्न फसलों की औसत उपज और उनके औसत बाजार मूल्यों की गणना करके किया जाता था। इस औसत का एक-तिहाई हिस्सा राज्य के कर के रूप में नकद लिया जाता था। इस पद्धति ने राजस्व प्रणाली में स्थिरता और पूर्वानुमान लाने का कार्य किया, जिससे किसान और राज्य दोनों को आकस्मिक आर्थिक उतार-चढ़ाव से सुरक्षा मिली।

64. (2) इलाही गज़
भूमि मापन में सटीकता और एकरूपता लाने के उद्देश्य से अकबर ने 'इलाही गज़' का प्रचलन किया था। इसकी लंबाई लगभग 33 इंच होती थी। इससे पूर्व प्रयोग होने वाले 'सिकंदरी गज़' में विभिन्नताएँ थीं, जिन्हें अकबर ने दूर किया। उसने रस्सी के स्थान पर बाँस के टुकड़ों और लोहे के छल्लों से बनी 'ज़रीब' का उपयोग शुरू किया, ताकि मौसम के प्रभाव से माप में अंतर न आए। इन सुधारों ने भू-राजस्व के मापन को अधिक विश्वसनीय, पारदर्शी और वैज्ञानिक आधार प्रदान किया।

65. (1) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
मुगल राजस्व प्रशासन जिला, परगना और गाँव स्तर पर सुसंगठित था। 'अमलगुज़ार' जिले का प्रमुख राजस्व अधिकारी था, जबकि 'बितिकची' राजस्व रिकॉर्ड बनाए रखने वाला मुख्य लिपिक था। 'कानूनगो' परगना स्तर पर स्थानीय राजस्व अभिलेखों का संरक्षक था, जिसकी जानकारी कर निर्धारण में सहायक होती थी। 'मुकद्दम' गाँव का पारंपरिक मुखिया था जो सरकारी लगान वसूलने में सहायता करता था। यह पदक्रम मुगल काल की जमीनी स्तर की प्रशासनिक मजबूती और कर संग्रहण की सुचारु व्यवस्था को दर्शाता है।

66. (1) इसमें फसल की कटाई के बाद उपज का विभाजन राज्य और किसान के बीच किया जाता था।
'बटाई' या 'गल्ला-बख्शी' राजस्व निर्धारण की एक पारंपरिक प्रणाली थी, जिसमें राज्य का हिस्सा प्रत्यक्ष रूप से फसल के रूप में लिया जाता था। फसल कटने के पश्चात, अनाज के ढेर

Click Here to Buy book on Amazon

अतः प्रथम दो कथन सही हैं, किंतु तीसरा कथन पूरी तरह गलत है क्योंकि यह व्यवस्था पूर्णतः सम्राट की इच्छा और व्यक्तिगत योग्यता पर आधारित थी।

29. (3) सवार रैंक में की जाने वाली एक सशर्त वृद्धि।
मुगल मनसबदारी व्यवस्था में 'मशरुत' एक विशेष प्रावधान था जिसका अर्थ "सशर्त वृद्धि" होता है। यह मनसबदार के 'सवार' पद में तब की जाती थी जब उसे किसी विशेष सैन्य अभियान या आपातकालीन प्रशासनिक कार्य के लिए अतिरिक्त घुड़सवारों की आवश्यकता होती थी। यह वृद्धि स्थायी नहीं होती थी और कार्य पूर्ण होने के पश्चात इसे वापस ले लिया जाता था। इस व्यवस्था ने सैन्य प्रशासन में लचीलापन प्रदान किया, जिससे राज्य अपनी तत्कालीन सैन्य आवश्यकताओं को बिना स्थायी वित्तीय बोझ बढ़ाए पूरा कर सकता था।

30. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
मुगल काल में मनसबदारी व्यवस्था एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक पद श्रेणी थी जो पूर्णतः गैर-वंशानुगत थी। सम्राट किसी भी मनसबदार की पदोन्नति, अवनति या बर्खास्तगी करने हेतु स्वतंत्र था। 'राजकीय अधिग्रहण के नियम' के अनुसार, किसी मनसबदार की मृत्यु के पश्चात उसकी समस्त संपत्ति और जागीरें राज्य द्वारा अधिग्रहित कर ली जाती थीं। यह व्यवस्था यह सुनिश्चित करने के लिए थी कि अभिजात वर्ग अत्यधिक स्वतंत्र और शक्तिशाली न हो सके और सत्ता का केंद्र सदैव सम्राट बना रहे।

31. (1) जिन मनसबदारों को भू-राजस्व के आवंटन के माध्यम से वेतन दिया जाता था, उन्हें जागीरदार कहा जाता था।
मनसबदारी व्यवस्था के अंतर्गत वेतन भुगतान की दो प्रणालियाँ प्रचलित थीं। 'नक्दी' मनसबदारों को सीधे शाही खजाने से नकद भुगतान किया जाता था, जबकि 'जागीरदारों' को उनके वेतन के बदले भूमि का राजस्व आवंटित किया जाता था। जागीरदार केवल राजस्व संग्रह के अधिकारी थे, उन्हें भूमि पर मालिकाना या न्यायिक अधिकार प्राप्त नहीं थे। 'वतन जागीर' का हस्तांतरण नहीं होता था, किंतु सामान्य जागीरें प्रशासनिक कारणों से नियमित रूप से परिवर्तित की जाती थीं। अतः प्रथम कथन ही सत्य है।

32. (2) केवल I, II और III
अकबर की मनसबदारी व्यवस्था एक एकीकृत प्रशासनिक ढांचा था जिसमें नागरिक और सैन्य दोनों जिम्मेदारियाँ सम्मिलित थीं। अबुल फज़ल के अनुसार अकबर ने मनसबदारों को 33 श्रेणियों में विभाजित किया था, जिससे पद सोपान स्पष्ट बना रहे। इसमें पारदर्शिता और कार्यकुशलता हेतु घोड़ों को दागने और हुलिया रखने की प्रथा अनिवार्य थी। चतुर्थ कथन गलत है क्योंकि मनसब केवल मुसलमानों तक सीमित नहीं थे; बड़ी संख्या में हिंदुओं और राजपूतों को भी उच्च मनसब प्रदान किए गए थे।

33. (3) 1564
अकबर की धार्मिक उदारता का सबसे महत्वपूर्ण प्रमाण 1564 में गैर-मुस्लिम प्रजा पर लगाए गए जजिया कर की समाप्ति थी। जजिया एक भेदभावपूर्ण कर था जिसने हिंदू प्रजा के मन में असंतोष उत्पन्न किया था। इसे हटाकर अकबर ने सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय एकता की दिशा में एक बड़ा कदम उठाया। इससे पूर्व 1563 में उसने तीर्थयात्रा कर को भी समाप्त किया था। इन महत्वपूर्ण निर्णयों ने अकबर को एक समावेशी और जनप्रिय शासक के रूप में संपूर्ण भारत में प्रतिष्ठित किया।

34. (1) इबादतखाना की स्थापना - 1575
अकबर के धार्मिक विकास के चरणों में 1575 में फतेहपुर सीकरी में इबादतखाना की स्थापना एक मील का पत्थर थी, जहाँ प्रारंभ में केवल मुस्लिम विद्वान चर्चा करते थे। अन्य विकल्पों का मिलान अशुद्ध है क्योंकि तीर्थयात्रा कर 1563 में समाप्त हुआ था, महज़र 1579 में जारी किया गया था और दीन-ए-इलाही की आधिकारिक घोषणा 1582 में हुई थी। इबादतखाना के माध्यम से अकबर ने विभिन्न धर्मों की मौलिक सच्चाइयों को समझने का सफल प्रयास किया, जिससे उसके दृष्टिकोण में व्यापकता आई।

35. (1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
अकबर ने इबादतखाना में विभिन्न धर्मों के विद्वानों को आमंत्रित कर धार्मिक विमर्श को प्रोत्साहित किया। जैन धर्म का प्रतिनिधित्व हरि विजय सूरी ने किया, जिन्हें अकबर ने 'जगत गुरु' की उपाधि प्रदान की। पारसी धर्म से दस्तूर मेहरजी राणा आए, जिनके प्रभाव से अकबर ने सूर्य पूजा आरंभ की। ईसाई धर्म की ओर से फादर मॉन्सरेट ने चर्चा में भाग लिया और हिंदू धर्म का पक्ष पुरुषोत्तम और देवी ने रखा। यह विविधता अकबर की जिज्ञासु प्रवृत्ति और सर्वधर्म समभाव को दर्शाती है।

36. (4) सार्वभौमिक शांति और सहिष्णुता
'सुलह-ए-कुल' अकबर के शासन दर्शन का आधारभूत सिद्धांत था, जिसका शाब्दिक अर्थ "सार्वभौमिक शांति" या "सभी के साथ सद्भाव" है। इस विचार के माध्यम से अकबर ने एक ऐसा राज्य निर्मित करने का प्रयास किया जहाँ किसी भी धर्म या संप्रदाय के साथ भेदभाव न हो। यह सिद्धांत सामाजिक समरसता को बढ़ावा देने और विविध भारतीय समाज को एकता के सूत्र में पिरोने के लिए विकसित किया गया था। इसने मुगल प्रशासन को धार्मिक कट्टरता से मुक्त कर एक उदार छवि प्रदान की।

NODIA

37. (3) यह एक नैतिक आचार संहिता थी जो वफादारी और सद्गुणों पर आधारित थी।
अकबर द्वारा प्रवर्तित 'दीन-ए-इलाही' वस्तुतः कोई नया धर्म नहीं था जिसमें पूजा की विशिष्ट पद्धतियाँ या पुरोहित वर्ग हो। यह मुख्य रूप से एक नैतिक और आध्यात्मिक आचार संहिता थी, जिसका उद्देश्य सम्राट के प्रति अटूट वफादारी और मानवीय सद्गुणों को विकसित करना था। इसमें विभिन्न धर्मों के श्रेष्ठ तत्वों का समावेश किया गया था। इसका पालन स्वैच्छिक था और यह सामाजिक समरसता तथा व्यक्तिगत चरित्र के उत्थान पर केंद्रित था, न कि किसी संप्रदाय विशेष के संकीर्ण प्रचार पर।

38. (1) केवल I, II, III और V
अकबर द्वारा प्रवर्तित दीन-ए-इलाही में विभिन्न नैतिक और आध्यात्मिक सिद्धांतों का समावेश किया गया था। इसके

का ही परिणाम थी। हालांकि, 1560 में अकबर ने उसे पदमुक्त कर मक्का जाने का आदेश दिया। मार्ग में ही उसकी हत्या कर दी गई थी, इसलिए उसके द्वारा मालवा में स्वतंत्र साम्राज्य स्थापित करने का दावा पूर्णतः निराधार है। अन्य सभी कथन उसके जीवन और कार्यों से संबंधित ऐतिहासिक सत्य हैं।

20. (4) एक घोषणा जिसने धार्मिक मामलों में अकबर को अंतिम निर्णायक बना दिया।
1579 में जारी किया गया 'महज़र' अकबर के धार्मिक सुधारों का एक क्रांतिकारी पड़ाव था। इस दस्तावेज के माध्यम से अकबर ने स्वयं को धार्मिक विवादों और कानूनों का अंतिम व्याख्याकार घोषित कर दिया। इसने रूढ़िवादी उलेमाओं के प्रभाव को काफी कम किया और सम्राट की सत्ता को सर्वोच्च बनाया। महज़र का मुख्य उद्देश्य धार्मिक कट्टरता को समाप्त कर प्रशासन में अधिक सहिष्णुता और वैचारिक स्पष्टता लाना था। यह अकबर को एक न्यायप्रिय और धर्मनिरपेक्ष शासक के रूप में प्रतिष्ठित करने का प्रयास था।

21. (3) पेटीकोट सरकार (अन्तःपुर शासन)
बैरम खान के पतन के पश्चात 1560 से 1562 के मध्य अकबर के प्रशासन पर उसकी धाय माँ महाम अनगा और उनके परिवार का गहरा प्रभाव रहा। इस विशिष्ट कालखंड को इतिहासकारों ने "पेटीकोट सरकार" या "अन्तःपुर शासन" की संज्ञा दी है क्योंकि इस दौरान राजनैतिक निर्णयों में हरम की महिलाओं का वर्चस्व था। अकबर ने शीघ्र ही इस प्रभाव को समाप्त कर स्वयं सत्ता की बागडोर अपने हाथों में ली और स्वतंत्र रूप से शासन करना आरंभ किया। यह चरण संक्रमण का काल था।

22. (3) आमेर, मेड़ता, चित्तौड़, रणथंभौर
अकबर के शासनकाल के दौरान राजपूत राज्यों द्वारा मुगल अधीनता स्वीकार करने का एक निश्चित ऐतिहासिक कालक्रम रहा है। सर्वप्रथम 1562 में आमेर के राजा भारमल ने स्वेच्छा से अकबर की अधीनता स्वीकार की। इसके पश्चात उसी वर्ष मेड़ता पर मुगल अधिकार हुआ। मेवाड़ के विरुद्ध अभियान के क्रम में 1568 में चित्तौड़ के सुदृढ़ दुर्ग पर मुगलों का अधिकार हुआ और अंततः 1569 में रणथंभौर के शासक ने समर्पण किया। यह अनुक्रम राजस्थान में मुगल साम्राज्य के क्रमिक विस्तार को दर्शाता है।

23. (4) आमेर के राजा भारमल
आमेर के कछवाहा राजपूत राजा भारमल प्रथम ऐसे शासक थे जिन्होंने 1562 में स्वेच्छा से अकबर की अधीनता स्वीकार की। उन्होंने न केवल मुगलों के साथ राजनैतिक गठबंधन किया, बल्कि अपनी पुत्री हरखा बाई का विवाह अकबर से कर वैवाहिक संबंध भी स्थापित किए। इस घटना ने मुगल-राजपूत संबंधों में एक नवीन युग का सूत्रपात किया, जिससे मुगलों को राजपूताना में एक अत्यंत शक्तिशाली और विश्वसनीय सहयोगी प्राप्त हुआ। राजा भारमल का यह निर्णय दूरदर्शी था, जिसने उनके राज्य की सुरक्षा सुनिश्चित की।

24. (1) राव चंद्रसेन
मारवाड़ के राव चंद्रसेन ने अकबर की अधीनता स्वीकार करने के स्थान पर निरंतर संघर्ष और प्रतिरोध का मार्ग चुना। उन्हें "मारवाड़ का भूला-बिसरा नायक" कहा जाता है क्योंकि उन्होंने महाराणा प्रताप से भी पूर्व मुगलों के विरुद्ध छापामार युद्ध पद्धति को सफलतापूर्वक अपनाया था। उन्होंने नागौर दरबार के दौरान भी अकबर के समक्ष समर्पण करने से स्पष्ट इनकार कर दिया था। जीवन भर वनों और पहाड़ियों में भटकते हुए भी उन्होंने अपनी स्वतंत्रता को अक्षुण्ण रखा, जो उनके अदम्य साहस का प्रतीक है।

25. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
अकबर के काल में विभिन्न राजपूत शासकों का उनके राज्यों के साथ संबंध अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। आमेर के राजा भगवंत दास मुगलों के घनिष्ठ सहयोगी थे, जबकि रणथंभौर के राव सुरजन हाड़ा ने एक संधि के पश्चात अकबर की संप्रभुता स्वीकार की थी। मेवाड़ के महाराणा प्रताप ने जीवन भर मुगलों से संघर्ष किया और कभी समर्पण नहीं किया। बीकानेर के शासक कल्याणमल ने 1570 के नागौर दरबार में मुगल अधीनता स्वीकार की थी। यह मिलान अकबर की राजपूत नीति की व्यापकता को दर्शाता है।

26. (1) केवल कथन I
अकबर की राजपूत नीति अत्यंत प्रगतिशील थी, जहाँ उसने सहयोगी राजपूत शासकों को उच्च मनसब और महत्वपूर्ण प्रशासनिक पदों से नवाजा। राजा मानसिंह और राजा टोडरमल जैसे व्यक्तित्व इसके उत्कृष्ट उदाहरण हैं। हालांकि, द्वितीय कथन गलत है क्योंकि अकबर ने कभी भी वैवाहिक गठबंधन को एक अनिवार्य शर्त या बाध्यकारी नियम के रूप में लागू नहीं किया था। कई राजपूत राज्यों ने बिना किसी वैवाहिक संबंध के भी मुगलों की अधीनता स्वीकार की थी। अतः केवल प्रथम कथन ही सत्य है।

27. (4) वह एक सुदृढ़ साम्राज्य के निर्माण के लिए वफादार सैन्य सहयोगी चाहता था।
अकबर एक अत्यंत चतुर राजनीतिज्ञ था और वह भली-भांति समझता था कि भारत में एक स्थायी और विशाल साम्राज्य की स्थापना के लिए स्थानीय शक्तियों का सहयोग अनिवार्य है। राजपूत अपनी वीरता और वफादारी के लिए विख्यात थे, इसलिए अकबर ने उन्हें अपना स्थायी सैन्य सहयोगी बनाने के लिए उदारवादी नीति अपनाई। इस गठबंधन ने मुगल सेना को अजेय बनाया और साम्राज्य को आंतरिक विद्रोहों से सुरक्षा प्रदान की। यह नीति मुख्य रूप से साम्राज्य की स्थिरता और सुदृढ़ीकरण के उद्देश्य से प्रेरित थी।

28. (3) केवल III
मनसबदारी व्यवस्था की मुख्य विशेषता इसका गैर-वंशानुगत होना था। किसी मनसबदार की मृत्यु के पश्चात उसका पद स्वतः ही उसके पुत्र को हस्तांतरित नहीं होता था, बल्कि सम्राट योग्यता के आधार पर नवीन नियुक्ति करता था। 'ज़ात' रैंक व्यक्तिगत प्रतिष्ठा और वेतन का निर्धारण करती थी, जबकि 'सवार' रैंक घुड़सवारों की आवश्यक संख्या को दर्शाती थी।

Downloaded from www.pdf.tube

दिशा में एक निर्णायक कदम था। इससे मुगल साम्राज्य की सीमाएँ सुदूर दक्षिण की ओर विस्तृत हुईं और क्षेत्रीय शक्तियों पर उनका नियंत्रण बढ़ा।

48. (1) I, II, III
शाहजहाँ के बीमार होने के पश्चात उसके पुत्रों के बीच उत्तराधिकार हेतु भीषण युद्ध हुए। इस क्रम में सर्वप्रथम अप्रैल 1658 में धरमत का युद्ध लड़ा गया जहाँ औरंगजेब ने शाही सेना को पराजित किया। इसके पश्चात मई 1658 में सामूगढ़ का निर्णायक युद्ध हुआ जिसने दारा शिकोह की हार सुनिश्चित की। अंततः 1659 में देवराई के युद्ध में औरंगजेब ने दारा को अंतिम रूप से पराजित कर सत्ता पर पूर्ण नियंत्रण स्थापित किया। यह कालक्रम मुगल इतिहास के संघर्षपूर्ण चरण का प्रतीक है।

49. (2) इससे मुगल राजकोष पर भारी आर्थिक बोझ पड़ा और कोई स्थायी सामरिक लाभ नहीं हुआ।
शाहजहाँ ने अपनी पैतृक भूमि मध्य एशिया को पुनः प्राप्त करने हेतु बल्ख और बदख्शां में महत्वाकांक्षी सैन्य अभियान भेजे। यद्यपि प्रारंभिक तौर पर मुगलों को कुछ सफलता मिली, किंतु प्रतिकूल जलवायु, भौगोलिक बाधाओं और स्थानीय कबीलों के तीव्र प्रतिरोध के कारण वे वहाँ टिक नहीं सके। इन अभियानों ने शाही खजाने पर अत्यधिक वित्तीय भार डाला और जन-धन की भारी हानि हुई। अंततः मुगलों को बिना किसी स्थायी भू-भागीय लाभ के पीछे हटना पड़ा, जो एक रणनीतिक विफलता थी।

50. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
औरंगजेब ने अपने शासनकाल के अंतिम 25 वर्ष दक्कन में युद्ध करते हुए व्यतीत किए, जिसे "दक्कन का फोड़ा" भी कहा जाता है। इन निरंतर युद्धों ने मुगल साम्राज्य के संसाधनों और सैन्य शक्ति को पूरी तरह निचोड़ लिया। राजकोष रिक्त हो गया और उत्तर भारत के प्रशासन पर केंद्रीय पकड़ कमजोर हो गई। मराठों के विरुद्ध दीर्घकालिक संघर्ष ने साम्राज्य की कमर तोड़ दी। अतः अभिकथन और कारण दोनों सही हैं, क्योंकि इन अभियानों ने ही अप्रत्यक्ष रूप से साम्राज्य के पतन का मार्ग प्रशस्त किया।

51. (3) उसने 1679 में गैर-मुसलमानों पर जजिया कर पुनः लगा दिया।
औरंगजेब की धार्मिक नीतियां उसके पूर्वजों की तुलना में अधिक रुढ़िवादी और कट्टर थीं। उसने 1679 में गैर-मुसलमानों पर जजिया कर पुनः लागू कर दिया, जिसे अकबर ने एक शताब्दी पूर्व समाप्त किया था। इसके अतिरिक्त, उसने दरबार में संगीत और झरोखा दर्शन जैसी प्रथाओं को इस्लामी सिद्धांतों के विरुद्ध मानकर प्रतिबंधित कर दिया। उसकी इन नीतियों ने साम्राज्य की हिंदू प्रजा और सहयोगी राजपूत शासकों के बीच व्यापक असंतोष पैदा किया, जिससे भविष्य में अनेक क्षेत्रीय विद्रोहों का सूत्रपात हुआ।

52. (3) केवल IV
औरंगजेब ने अपने शासनकाल में कठोर इस्लामी आचरण लागू करने के प्रयास किए। उसने दरबार में संगीत और गायन पर रोक लगाई, झरोखा दर्शन को समाप्त किया और मुहतसिबों की नियुक्ति की ताकि प्रजा का नैतिक आचरण सुधारा जा सके। चतुर्थ कथन पूरी तरह गलत है क्योंकि औरंगजेब की नीति मंदिरों के निर्माण के पक्ष में नहीं थी; बल्कि उसने अनेक पुराने मंदिरों को ध्वस्त करने का आदेश दिया था। अतः प्रारंभिक तीन कथन उसकी वास्तविक नीतियों को दर्शाते हैं, जबकि चौथा कथन ऐतिहासिक सत्य के विपरीत है।

53. (1) 1686 और 1687
औरंगजेब की दक्षिण नीति का मुख्य लक्ष्य बीजापुर और गोलकुंडा की स्वतंत्र सल्तनतों का अंत करना था। उसने 1686 में बीजापुर के शासक सिकंदर आदिल शाह को पराजित कर उसका साम्राज्य मुगल शासन में मिला लिया। इसके ठीक एक वर्ष पश्चात 1687 में उसने गोलकुंडा के कुतुबशाही वंश का अंत कर उसे भी विजित किया। इन विजयों ने मुगल साम्राज्य के भौगोलिक विस्तार को उसकी चरम सीमा तक पहुँचा दिया, किंतु इसके साथ ही गंभीर प्रशासनिक और आर्थिक संकटों की भी शुरुआत हुई।

54. (3) आमेर
औरंगजेब के शासनकाल में मारवाड़ और मेवाड़ ने उत्तराधिकार और धार्मिक नीतियों के कारण बड़े विद्रोह किए थे। मारवाड़ के अजीत सिंह और मेवाड़ के राजसिंह ने मुगलों को कड़ी चुनौती दी। इसके विपरीत, आमेर का कछवाहा राजवंश औरंगजेब के शासनकाल के दौरान काफी हद तक वफादार बना रहा। मिर्जा राजा जयसिंह और उनके उत्तराधिकारियों ने मुगल सेना में महत्वपूर्ण सेनापतियों के रूप में सेवा की। हालांकि बाद में कुछ मतभेद उभरे, किंतु उन्होंने अन्य राज्यों की भांति खुला और दीर्घकालिक विद्रोह नहीं किया।

55. (1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
औरंगजेब के काल में विभिन्न समुदायों ने राजनैतिक और धार्मिक कारणों से विद्रोह किए। गोकुला के नेतृत्व में जाटों ने सर्वप्रथम संगठित विद्रोह किया। नारनौल क्षेत्र में बीरभान के नेतृत्व में सतनामियों ने सशस्त्र संघर्ष किया। बुंदेलखंड में छत्रसाल ने मुगलों की सत्ता को चुनौती दी और अपनी स्वतंत्रता की घोषणा की। पंजाब में गुरु गोबिंद सिंह के नेतृत्व में सिखों ने मुगलों के अत्याचारों के विरुद्ध लंबा और वीरतापूर्ण संघर्ष लड़ा। यह मिलान औरंगजेब की आंतरिक चुनौतियों और व्यापक जन-असंतोष का स्पष्ट चित्र है।

56. (1) राजस्व और वित्तीय प्रशासन
मुगल केंद्रीय प्रशासन में 'दीवान-ए-आला' का पद अत्यंत महत्वपूर्ण और शक्तिशाली था, जिसे वज़ीर भी कहा जाता था। उसकी प्राथमिक जिम्मेदारी साम्राज्य के समस्त राजस्व और वित्तीय मामलों का प्रबंधन करना था। वह शाही खजाने की आय और व्यय का पूर्ण लेखा-जोखा रखता था और कृषि कर की नीतियों का निर्धारण करता था। सम्राट के पश्चात प्रशासन में उसका स्थान सर्वोच्च था और वह साम्राज्य की आर्थिक स्थिरता सुनिश्चित करने वाला मुख्य अधिकारी था। उसकी सलाह के बिना बड़े वित्तीय निर्णय नहीं लिए जाते थे।

NODIA

सूक्ष्म वर्णन किया। यह मिलान उन वैश्विक संपर्कों को दर्शाता है जो मुगल साम्राज्य ने अपनी चरम समृद्धि के समय बनाए थे।

76. (1) केवल कथन I
मुगल काल में वाणिज्यिक गतिविधियाँ अत्यंत विकसित थीं, जहाँ 'हुंडी' का उपयोग व्यापक रूप से होता था। हुंडी एक प्रकार का साख पत्र था जिसके माध्यम से व्यापारी नकदी ले जाने के जोखिम के बिना लंबी दूरी का व्यापार कर सकते थे। द्वितीय कथन पूर्णतः गलत है क्योंकि मुगल आंतरिक व्यापार पर राज्य का कोई एकाधिकार नहीं था; निजी व्यापारी, बंजारे और स्थानीय सेठ-साहूकार स्वतंत्र रूप से व्यापारिक गतिविधियों में संलग्न थे। अतः केवल प्रथम कथन ही मुगलकालीन व्यापारिक उन्नति की सटीक व्याख्या करता है।

77. (1) II, I, IV, III
यूरोपीय शक्तियों का भारत आगमन और उनके व्यापारिक केंद्रों की स्थापना का एक निश्चित कालक्रम है। सर्वप्रथम पुर्तगालियों ने 1498 में कालीकट में दस्तक दी और अपने केंद्र स्थापित किए। इसके पश्चात 17वीं शताब्दी के आरंभ में डच (1605) आए। ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने 1612-13 में सूरत में अपना प्रथम स्थायी कारखाना स्थापित किया। अंततः 1668 में फ्रांसीसी भारत आए। यह अनुक्रम भारतीय समुद्री व्यापार पर यूरोपीय आधिपत्य के क्रमिक विस्तार और उनके बीच होने वाली औपनिवेशिक प्रतिद्वंद्विता को दर्शाता है।

78. (4) I, II, III, IV और V
मुगल साम्राज्य का पतन किसी एक कारण का परिणाम नहीं था, बल्कि इसमें अनेक जटिल कारकों का योगदान था। उत्तराधिकार के निरंतर युद्धों ने राजनैतिक स्थिरता को नष्ट किया, जबकि जागीरदारी संकट ने प्रशासनिक व्यवस्था को पंगु बना दिया। औरंगजेब के दक्कन अभियानों ने वित्तीय संसाधन समाप्त कर दिए। नादिर शाह और अब्दाली के बाहरी आक्रमणों ने साम्राज्य की मान-प्रतिष्ठा धूल में मिला दी। साथ ही, मराठा, सिख और जाट शक्तियों के उदय ने मुगल सत्ता के विघटन को पूर्ण कर दिया।

79. (1) मनसबदारों की बढ़ती संख्या के सापेक्ष अच्छी जागीरों की कमी, जिससे गुटबाजी बढ़ी।
"जागीरदारी संकट" मुगल साम्राज्य के पतन का एक प्रमुख आंतरिक कारण माना जाता है। औरंगजेब के शासनकाल के अंतिम चरण में मनसबदारों की संख्या में अत्यधिक वृद्धि हुई, किंतु उनके वेतन के बदले दी जाने वाली उपजाऊ जागीरों की भारी कमी हो गई। इस असंतुलन के कारण अमीरों के बीच गुटबाजी बढ़ी और वे अपने स्वार्थों के लिए किसानों का शोषण करने लगे। इस संकट ने मुगल प्रशासनिक ढांचे को भीतर से खोखला कर दिया और केंद्रीय सत्ता के प्रति निष्ठा को कमजोर किया।

80. (2) नादिर शाह
वर्ष 1739 में फारस के शासक नादिर शाह ने भारत पर आक्रमण किया और मुगल सेना को करनाल के युद्ध में पराजित किया। इस आक्रमण के दौरान उसने दिल्ली में भीषण कत्लेआम मचाया और अपार धन-संपत्ति लूटी। वह अपने साथ शाहजहाँ द्वारा निर्मित प्रसिद्ध मयूर सिंहासन और बहुमूल्य कोहिनूर हीरा भी ले गया। इस विनाशकारी आक्रमण ने मुगल साम्राज्य की रही-सही प्रतिष्ठा को पूर्णतः समाप्त कर दिया और साम्राज्य के पतन की प्रक्रिया को और अधिक तीव्र कर दिया।

www.nodia.in

Click Here to Buy book on Amazon

का निश्चित अनुपात राज्य और किसान के बीच बाँट लिया जाता था। यह प्रणाली उन क्षेत्रों में लोकप्रिय थी जहाँ फसल की पैदावार अनिश्चित थी। यद्यपि यह किसानों के लिए सुरक्षित थी, किंतु राज्य के लिए अनाज का परिवहन और भंडारण एक कठिन प्रशासनिक चुनौती सिद्ध होती थी।

67. (3) तकावी
मुगल शासक कृषि उत्पादन बढ़ाने और संकट के समय किसानों को सहायता प्रदान करने के प्रति जागरूक थे। 'तकावी' एक प्रकार का कृषि ऋण था जो किसानों को बीज, उपकरण खरीदने या कुएँ खोदने हेतु अग्रिम दिया जाता था। अकाल या प्राकृतिक आपदा के समय राज्य की ओर से यह ऋण उदारतापूर्वक प्रदान किया जाता था। तकावी का मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना था कि खेती निरंतर जारी रहे और किसान आर्थिक तंगी के कारण भूमि न छोड़ें। यह मुगल लोक-कल्याणकारी प्रशासन का अभिन्न हिस्सा था।

68. (4) उपरोक्त में से कोई नहीं (सभी सत्य हैं)
मुगल साम्राज्य का प्रशासनिक ढांचा अत्यंत श्रेणीबद्ध और सुव्यवस्थित था। अकबर ने संपूर्ण साम्राज्य को कई 'सूबों' में विभाजित किया था। प्रत्येक सूबे को आगे प्रशासनिक सुविधा और बेहतर नियंत्रण हेतु 'सरकारों' में बाँटा गया था। इन सरकारों को पुनः छोटी इकाइयों, जिन्हें 'परगना' कहा जाता था, में उपविभाजित किया गया था। सबसे छोटी इकाई गाँव थी। यह त्रिस्तरीय संरचना केंद्रीय आदेशों के क्रियान्वयन और स्थानीय प्रशासन के सुचारु संचालन के लिए ऐतिहासिक रुप से पूर्णतः सत्य और सटीक है।

69. (3) फौजदार
मुगल प्रांतीय प्रशासन के अंतर्गत जिला स्तर पर कानून-व्यवस्था बनाए रखने की मुख्य जिम्मेदारी 'फौजदार' की होती थी। वह एक उच्च सैन्य अधिकारी होता था जिसे विद्रोहों को कुचलने, सड़कों को सुरक्षित रखने और स्थानीय ज़मींदारों पर नियंत्रण रखने का अधिकार प्राप्त था। वह राजस्व संग्रह में अमलगुज़ार की सहायता भी करता था। फौजदार का पद साम्राज्य की आंतरिक स्थिरता सुनिश्चित करने और शाही सत्ता को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए जिला प्रशासन का आधार स्तंभ माना जाता था।

70. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
अकबर ने प्रांतीय प्रशासन में शक्ति के दुरुपयोग को रोकने के लिए 'नियंत्रण और संतुलन' की नीति अपनाई थी। उसने सूबेदार और दीवान के पदों को एक-दूसरे से स्वतंत्र रखा था। दोनों ही सीधे केंद्र के प्रति उत्तरदायी थे, जिससे कोई भी एक अधिकारी प्रांत में निरंकुश न हो सके। यह व्यवस्था प्रशासनिक भ्रष्टाचार को कम करने और प्रांतीय विद्रोहों की संभावना को समाप्त करने के उद्देश्य से की गई थी। अतः अभिकथन और कारण दोनों ऐतिहासिक रुप से सत्य और तार्किक हैं।

71. (4) वह युद्ध के समय प्रांतीय सेना का सर्वोच्च कमांडर होता था।
मुगल नगरीय प्रशासन में 'कोतवाल' की भूमिका आज के नगर आयुक्त और पुलिस प्रमुख के समान थी। वह नगर की सुरक्षा, रात्रि गश्त और बाजारों के नियंत्रण हेतु उत्तरदायी था। वह आगंतुकों का विवरण रखता था ताकि असामाजिक तत्वों पर नजर रखी जा सके। हालांकि, चतुर्थ कथन गलत है क्योंकि कोतवाल का अधिकार क्षेत्र केवल नगर प्रशासन तक सीमित था; वह सैन्य अभियानों या प्रांतीय सेना का कमांडर नहीं होता था। सैन्य नेतृत्व का कार्य सूबेदार या विशिष्ट सेनापतियों द्वारा किया जाता था।

72. (2) केवल I, II और III
मुगल स्थानीय प्रशासन में गाँव एक स्वायत्त इकाई के रुप में कार्य करता था जहाँ आंतरिक विवादों का निपटारा पंचायतों द्वारा किया जाता था। पटवारी और मुकद्दम जैसे ग्रामीण अधिकारी राजस्व रिकॉर्ड रखने और कर संग्रह में राज्य की सहायता करते थे। चतुर्थ कथन असत्य है क्योंकि मुगलों ने ज़मींदारी अधिकारों को समाप्त नहीं किया था, बल्कि ज़मींदार ग्रामीण संरचना का एक अभिन्न अंग बने रहे। वे वंशानुगत भू-स्वामी थे जिन्होंने राजस्व वसूली में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और प्रशासन का सहयोग किया।

73. (3) सूती वस्त्र
मुगल काल में भारत विश्व के प्रमुख व्यापारिक केंद्रों में से एक था, और भारतीय सूती वस्त्रों की वैश्विक बाजार में अत्यधिक मांग थी। ढाका की मलमल और कोरोमंडल तट के वस्त्र अपनी गुणवत्ता के लिए प्रसिद्ध थे। यूरोपीय शक्तियाँ मुख्य रूप से इन्हीं वस्त्रों के बदले भारत में सोना और चांदी लाती थीं। यद्यपि मसाले और नील भी निर्यात किए जाते थे, किंतु सूती वस्त्रों का व्यापार मात्रा और मूल्य दोनों दृष्टि से सर्वाधिक महत्वपूर्ण था, जिसने भारतीय अर्थव्यवस्था को अत्यंत समृद्ध बनाया।

74. (1) फ्रांसुआ बर्नियर - औरंगजेब
विदेशी यात्रियों के विवरण मुगल इतिहास के महत्वपूर्ण स्रोत हैं। फ्रांसुआ बर्नियर एक फ्रांसीसी चिकित्सक था जो औरंगजेब के शासनकाल में भारत आया और लगभग बारह वर्षों तक रहा। उसने मुगल दरबार की राजनीति और सामाजिक स्थितियों का विस्तृत विवरण दिया है। अन्य युग्म गलत हैं क्योंकि राल्फ फिच अकबर के काल में आया था, सर थॉमस रो जहाँगीर के दरबार में आया था, और टैवर्नियर ने शाहजहाँ तथा औरंगजेब दोनों का शासनकाल देखा था। अतः प्रथम विकल्प ही ऐतिहासिक रुप से सही है।

75. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
मुगल काल में विभिन्न देशों के यात्रियों ने भारत की यात्रा की और अपने वृत्तांत लिखे। सर थॉमस रो एक ब्रिटिश राजदूत थे जो जहाँगीर के दरबार में आए। फ्रांसुआ बर्नियर एक फ्रांसीसी यात्री और चिकित्सक थे। निकोलो मनूची इटली से आए थे और उन्होंने मुगल दरबार में लंबी सेवा दी। फ्रांसिस्को पेलसार्ट एक डच व्यापारी थे जिन्होंने भारतीय समाज की आर्थिक स्थिति का

Downloaded from www.pdf.tube

अनुयायी एक-दूसरे का अभिवादन "अल्लाहु अकबर" से करते थे और सूर्य तथा प्रकाश के प्रति विशेष श्रद्धा रखते थे। इसमें मांस भक्षण से परहेज और शाकाहार को बढ़ावा दिया गया था। दीक्षा हेतु विशेष रूप से रविवार का दिन निर्धारित था। चतुर्थ कथन असत्य है क्योंकि यह किसी भी मनसबदार हेतु अनिवार्य नहीं था, बल्कि पूर्णतः स्वैच्छिक और सम्राट के प्रति व्यक्तिगत निष्ठा पर आधारित था।

39. (4) इसने अकबर को धार्मिक कानूनों का अंतिम व्याख्याकार बना दिया।
1579 के महज़रनामा, जिसे 'अचूकता की घोषणा' भी कहा जाता है, का सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रभाव यह था कि इसने अकबर की धार्मिक सत्ता को उलेमाओं के प्रभाव से मुक्त कर दिया। यदि किसी धार्मिक कानून पर विभिन्न विद्वानों में मतभेद होता, तो अकबर का निर्णय अंतिम और सर्वोपरि माना जाता था। इससे सम्राट की स्थिति केवल एक राजनैतिक शासक के स्थान पर एक सर्वोच्च धार्मिक मार्गदर्शक की भी हो गई। इसने राज्य के प्रशासन में धर्मनिरपेक्षता के तत्वों को दृढ़ता से स्थापित किया।

40. (1) मुगल चित्रकला प्रकृतिवाद और छवि चित्रण (portraiture) के साथ अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँची।
जहाँगीर स्वयं एक महान कला पारखी और अत्यंत कुशल चित्रकार था, जिसके शासनकाल में मुगल चित्रकला अपनी श्रेष्ठता के शिखर पर पहुँची। उसके समय में चित्रकला में सूक्ष्म विवरणों, प्रकृतिवाद और व्यक्तियों के सटीक छवि चित्रण पर विशेष बल दिया गया। मंसूर और अबुल हसन जैसे विश्व प्रसिद्ध चित्रकार उसी के दरबार की शोभा थे। जहाँगीर ने स्थापत्य की तुलना में ललित कलाओं और मनोरम बाग-बगीचों के निर्माण में अधिक रुचि दिखाई, जो उसकी सौंदर्यपरक और कलात्मक संवेदनशीलता का परिचायक है।

41. (3) गुरु अर्जुन देव
जहाँगीर के शासनकाल के आरंभ में उसके ज्येष्ठ पुत्र शहजादा खुसरो ने विद्रोह कर दिया था। इस विद्रोह के दौरान सिखों के पाँचवें गुरु, गुरु अर्जुन देव पर खुसरो को आशीर्वाद देने और आर्थिक सहायता प्रदान करने का आरोप लगा। जहाँगीर ने इसे राजद्रोह माना और गुरु अर्जुन देव को मृत्युदंड दिया। यह घटना मुगल-सिख संबंधों में एक दुखद मोड़ थी, जिसने भविष्य में दोनों समुदायों के बीच संघर्ष और सैन्यीकरण की आधारशिला रखी। गुरु अर्जुन देव की शहादत ऐतिहासिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

42. (1) II, I, III, IV
जहाँगीर के शासनकाल की प्रमुख घटनाओं का कालक्रम उसके राजनैतिक उतार-चढ़ाव को दर्शाता है। 1606 में खुसरो का विद्रोह हुआ, जो सत्ता हेतु प्रथम बड़ा संघर्ष था। इसके पश्चात 1611 में मेहरुन्निसा से उसका विवाह हुआ, जिन्हें नूरजहाँ की उपाधि मिली। 1615 में मेवाड़ के साथ ऐतिहासिक संधि हुई जिसने लंबे संघर्ष का अंत किया। अंततः 1622 में सफ़वियों ने कंधार पर पुनः अधिकार कर लिया। यह अनुक्रम जहाँगीर के शासन की आंतरिक और बाह्य चुनौतियों को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करता है।

43. (1) केवल कथन I
नूरजहाँ गुट, जिसे 'जुंटा' कहा जाता है, जहाँगीर के शासनकाल के मध्य में एक अत्यंत प्रभावशाली राजनीतिक समूह था। इसमें नूरजहाँ के साथ उसके पिता एतमाद-उद-दौला, भाई आसफ खान और शहजादा खुर्रम सम्मिलित थे। हालांकि, द्वितीय कथन गलत है क्योंकि खुर्रम की बढ़ती महत्वाकांक्षाओं और नूरजहाँ के हस्तक्षेप के कारण यह गुट बाद में बिखर गया। खुर्रम ने अंततः विद्रोह कर दिया था, जिससे उत्तराधिकार का मार्ग सुगम होने के स्थान पर अत्यधिक संघर्षपूर्ण और जटिल हो गया था।

NODIA

44. (2) उसने एक सफल सैन्य अभियान का नेतृत्व कर 'ट्रांसऑक्सियाना' क्षेत्र को विजित किया।
जहाँगीर ने अपने शासनकाल में मेवाड़ के साथ स्थायी शांति स्थापित की और दक्षिण में भी कुछ सफलताएँ प्राप्त कीं। उसने मनसबदारी में 'दु-अस्पा सी-अस्पा' जैसे नवीन सुधार किए और उसके काल में ही यूरोपीय व्यापारियों का आगमन हुआ। हालांकि, ट्रांसऑक्सियाना (मध्य एशिया) को विजित करने का दावा पूर्णतः गलत है। मुगलों ने अपनी पैतृक भूमि को वापस पाने के प्रयास अवश्य किए, किंतु वे कभी भी वहाँ स्थायी विजय प्राप्त नहीं कर सके। अन्य सभी कथन ऐतिहासिक तथ्यों के अनुकूल हैं।

45. (1) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
शाहजहाँ का शासनकाल मुगल स्थापत्य का स्वर्ण युग माना जाता है, जहाँ प्रत्येक स्मारक अपनी विशिष्ट पहचान रखता है। आगरा में स्थित ताजमहल विश्व प्रसिद्ध है, जबकि दिल्ली की जामा मस्जिद उसकी धार्मिक भव्यता का प्रतीक है। आगरा किले के भीतर सफेद संगमरमर से निर्मित मोती मस्जिद अत्यंत कलात्मक है। शालीमार बाग का निर्माण उसने लाहौर में अपनी सौंदर्य रुचि के प्रदर्शन हेतु करवाया था। यह वर्गीकरण शाहजहाँ की स्थापत्य कला के प्रति गहरी रुचि और उसके भौगोलिक विस्तार को दर्शाता है।

46. (3) 1639
शाहजहाँ ने अपनी भव्यता और प्रशासनिक सुविधा हेतु 1639 में दिल्ली के निकट शाहजहानाबाद नामक नवीन राजधानी की नींव रखी। इसके निर्माण में लगभग नौ वर्ष लगे और 1648 तक यह पूर्णतः तैयार हो गई। यहाँ लाल किले और जामा मस्जिद जैसे विशाल स्मारकों का निर्माण कराया गया। इस स्थानांतरण का मुख्य उद्देश्य मुगल सत्ता के केंद्र को आगरा से हटाकर अधिक सुरक्षित और व्यवस्थित स्थान पर स्थापित करना था। शाहजहानाबाद मध्यकालीन भारत के सबसे समृद्ध नगरों में से एक बना।

47. (1) अहमदनगर
शाहजहाँ की दक्कन नीति आक्रामक और विस्तारवादी थी। 1633 में उसने अहमदनगर की निज़ामशाही सल्तनत को मुगल साम्राज्य में पूर्णतः विलीन कर दिया, जो एक बड़ी सामरिक सफलता थी। इसके पश्चात उसने बीजापुर और गोलकुंडा पर दबाव बनाया और उन्हें संधि करने हेतु विवश किया। अहमदनगर का विलय दक्षिण भारत में मुगल प्रभाव को सुदृढ़ करने की

अध्याय 12

मराठा

1. महाराष्ट्र क्षेत्र की भौगोलिक विशेषताओं ने निम्नलिखित में से कौन सा रणनीतिक लाभ प्रदान करके मराठा शक्ति के उदय में महत्वपूर्ण योगदान दिया?
   (1) आंतरिक सैन्य गतिविधियों के लिए व्यापक नौगम्य नदी प्रणालियाँ
   (2) छापामार युद्ध के अनुकूल दुर्गम भूभाग और प्राकृतिक पहाड़ी किले
   (3) एक विशाल स्थायी घुड़सवार सेना को बनाए रखने के लिए उपयुक्त विशाल उपजाऊ मैदान
   (4) यूरोपीय तोपखाने तक निर्बाध पहुंच प्रदान करने वाले खुले तटीय मैदान
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

2. महाराष्ट्र में किस सामाजिक आंदोलन ने शिवाजी के उदय से पहले मराठों की राजनीतिक एकता के लिए एक सुदृढ़ सांस्कृतिक और वैचारिक आधार प्रदान किया?
   (1) तुकाराम और रामदास जैसे संतों के नेतृत्व में भक्ति आंदोलन
   (2) संन्यास पर बल देने वाला महानुभाव आंदोलन
   (3) समन्वयवादी रहस्यवाद पर केंद्रित सूफी आंदोलन
   (4) जाति-विरोधी समतावाद को बढ़ावा देने वाला वीरशैव आंदोलन
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

3. शिवाजी के शुरुआती सैन्य अभियान 1646 में एक रणनीतिक दुर्ग पर कब्जे के साथ शुरू हुए। युवा शिवाजी द्वारा विजित प्रथम किला कौन सा था?
   (1) रायगढ़
   (2) प्रतापगढ़
   (3) तोरणा
   (4) पुरंदर
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

4. शिवाजी के प्रारंभिक सैन्य अभियानों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
   I. उन्होंने मोरे वंश से जावली का दुर्ग प्राप्त किया, जिससे कोंकण क्षेत्र का मार्ग प्रशस्त हुआ।
   II. उन्होंने प्रतापगढ़ के युद्ध में बीजापुरी सेनापति अफजल खान को पराजित किया।
   III. उन्होंने मुगलों का मुकाबला करने के लिए पुर्तगालियों के साथ एक स्थायी सैन्य गठबंधन बनाया।
   उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
   (1) केवल I और II
   (2) केवल II और III
   (3) केवल I और III
   (4) I, II और III
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

5. शिवाजी के राज्याभिषेक के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
   (1) यह 1674 में रायगढ़ के विशाल दुर्ग परिसर में आयोजित किया गया था।
   (2) इसकी अध्यक्षता वाराणसी के प्रतिष्ठित विद्वान गंगा भट्ट ने की थी।
   (3) यह मुगल सम्राट के प्रति शिवाजी की औपचारिक अधीनता का प्रतीक था।
   (4) अपनी संप्रभुता को चिह्नित करने के लिए शिवाजी ने 'छत्रपति' की उपाधि धारण की थी।
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

6. शिवाजी की प्रशासनिक व्यवस्था के संदर्भ में, 'अष्टप्रधान' शब्द निम्नलिखित में से किसे संदर्भित करता है?
   (1) सीमा सुरक्षा के लिए उत्तरदायी आठ क्षेत्रीय सेनापति
   (2) राजा की सहायता और परामर्श के लिए आठ मंत्रियों की एक परिषद
   (3) मराठा रक्षा के केंद्र बनाने वाले आठ मुख्य किले
   (4) कृषकों पर लगाए गए आठ अलग-अलग करों की प्रणाली
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

7. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। कथनों को पढ़िए और सही विकल्प चुनिए।
   अभिकथन (A): शिवाजी की प्रशासनिक प्रणाली के तहत, अष्टप्रधान के पद न तो वंशानुगत थे और न ही स्थायी।
   कारण (R): शिवाजी कुछ कुलीन परिवारों में सत्ता के संकेंद्रण को रोकना और योग्यता-आधारित नियुक्तियां सुनिश्चित करना चाहते थे।
   (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
   (2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
   (3) A सही है लेकिन R गलत है।
   (4) A गलत है लेकिन R सही है।
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Click Here to Buy book on Amazon

8. अष्टप्रधान में मराठा अधिकारियों और उनकी संबंधित भूमिकाओं का निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही सुमेलित है?
(1) पंडितराव - धार्मिक मामलों के मंत्री
(2) अमात्य - विदेश मंत्री
(3) सचिव - प्रधान सेनापति
(4) सुमंत - शाही पत्राचार मंत्री
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

9. शिवाजी की राजस्व प्रणाली के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. भू-राजस्व का निर्धारण 'काठी' नामक एक मानक छड़ी का उपयोग करके सावधानीपूर्वक किए गए माप पर आधारित था।
II. इस प्रणाली ने कृषकों के साथ सीधा संपर्क स्थापित करने के लिए देशमुख जैसे बिचौलियों के प्रभाव को कम किया।
III. उपज में राज्य का हिस्सा प्रारंभ में 30 प्रतिशत निर्धारित किया गया था और बाद में इसे बढ़ाकर 40 प्रतिशत कर दिया गया।
IV. राजस्व विशेष रूप से नकद में एकत्र किया जाता था, और वस्तु के रूप में भुगतान पर पूर्ण प्रतिबंध था।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) I, II और III
(2) I, III और IV
(3) II, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

10. 'चौथ' मराठा राजस्व प्रणाली का एक महत्वपूर्ण घटक था। यह वास्तव में किसका प्रतिनिधित्व करता था?
(1) मराठा आक्रमणों से सुरक्षा के बदले पड़ोसियों द्वारा भुगतान किया गया राजस्व का एक चौथाई हिस्सा
(2) सैन्य तैयारी बनाए रखने के लिए कुलीनों पर लगाया गया दस प्रतिशत का अधिभार
(3) विभिन्न तटीय व्यापारिक केंद्रों से एकत्र किया गया एक विशेष पत्तन कर
(4) स्वराज्य के भीतर गैर-हिंदू निवासियों पर लगाया गया एक धार्मिक कर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

11. नीचे दो कथन दिए गए हैं। कथनों को पढ़िए और सही विकल्प चुनिए।
कथन I: सरदेशमुखी शिवाजी द्वारा उनके प्रत्यक्ष नियंत्रण से बाहर के क्षेत्रों पर लगाया गया दस प्रतिशत का अतिरिक्त कर था।
कथन II: शिवाजी ने महाराष्ट्र के सर्वोच्च प्रमुख या वंशानुगत सरदेशमुख होने के नाते इस कर का दावा किया था।
(1) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(2) कथन II सही है लेकिन कथन I गलत है।
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

12. सूची-I (मराठा सैन्य शब्दावली) को सूची-II (विवरण) के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (मराठा सैन्य शब्दावली)
A. पागा
B. सिलाहदार
C. हवलदार
D. मावली
सूची II: (विवरण)
i. पहाड़ी क्षेत्रों के पैदल सैनिक
ii. राज्य द्वारा घोड़ों और शस्त्रों से सुसज्जित राजकीय घुड़सवार सेना
iii. स्वतंत्र घुड़सवार सैनिक जो अपने घोड़े स्वयं लाते थे
iv. एक दुर्ग या सैन्य इकाई का प्रभारी अधिकारी
(1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(2) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

13. निम्नलिखित में से कौन सी शिवाजी के सैन्य प्रशासन की प्रमुख विशेषता नहीं थी?
(1) कठोर अनुशासन का पालन, जिसमें सैन्य अभियानों पर महिलाओं को ले जाने पर प्रतिबंध शामिल था
(2) कान्होजी आंग्रे जैसे सेनापतियों के अधीन एक स्वदेशी नौसैनिक बेड़े का विकास
(3) सैनिकों को मुख्य रूप से जागीरों के आवंटन के माध्यम से वेतन का भुगतान
(4) हवलदार, सबनिस और कारखानीस जैसे विभिन्न अधिकारियों के साथ दुर्ग-आधारित रक्षा रणनीति
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

14. शिवाजी के अधीन मराठा नौसेना के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. नौसेना की स्थापना जंजीरा के सिद्दियों और पुर्तगालियों से कोंकण तट की रक्षा के लिए की गई थी।
II. नौसैनिक बेड़े में 'गुराब' और 'गैलीवत' जैसे विभिन्न आकारों के पोत शामिल थे।
III. प्राथमिक नौसैनिक केंद्रों में सिंधुदुर्ग और विजयदुर्ग शामिल थे।
IV. शिवाजी के शासनकाल के दौरान मराठा नौसेना ने अरब सागर में ब्रिटिश नौसैनिक उपस्थिति को पूर्णतः समाप्त कर दिया था।
V. कान्होजी आंग्रे एक प्रमुख नौसेना प्रमुख थे जिन्होंने बाद के समय में मराठा समुद्री शक्ति को सुदृढ़ किया।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) I, II, III और V
(2) I, II, IV और V
(3) II, III, IV और V

NODIA

(4) I, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

15. वह तात्कालिक कारण क्या था जिसने शिवाजी को 1665 में पुरंदर की संधि पर हस्ताक्षर करने के लिए विवश किया?
(1) मुगल सेनापति जय सिंह द्वारा पुरंदर दुर्ग की सफल घेराबंदी
(2) सामूगढ़ के युद्ध में मराठों की विनाशकारी पराजय
(3) गोलकुंडा के सुल्तान द्वारा मराठा क्षेत्रों पर आकस्मिक आक्रमण
(4) असंतुष्ट देशमुखों द्वारा मराठा सेना के भीतर किया गया विद्रोह
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

16. पुरंदर की संधि (1665) की शर्तों के अधीन, शिवाजी मुगल साम्राज्य को कितने दुर्ग सौंपने के लिए सहमत हुए थे?
(1) 12 दुर्ग
(2) 23 दुर्ग
(3) 35 दुर्ग
(4) 40 दुर्ग
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

17. मुगल साम्राज्य के साथ शिवाजी के संघर्ष की घटनाओं का सही कालानुक्रमिक क्रम निम्नलिखित में से कौन सा है?
(1) शाइस्ता खान पर आक्रमण → पुरंदर की संधि → सूरत की प्रथम लूट → आगरा की यात्रा
(2) सूरत की प्रथम लूट → शाइस्ता खान पर आक्रमण → आगरा की यात्रा → पुरंदर की संधि
(3) शाइस्ता खान पर आक्रमण → सूरत की प्रथम लूट → पुरंदर की संधि → आगरा की यात्रा
(4) पुरंदर की संधि → सूरत की प्रथम लूट → आगरा की यात्रा → शाइस्ता खान पर आक्रमण
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

18. विशाल शाही सेनाओं के विरुद्ध शिवाजी द्वारा 'गनिमी कावा' का उपयोग अत्यंत सफल रहा था। यह अवधारणा किसे संदर्भित करती है?
(1) छापामार युद्ध कौशल की रणनीतिक तैनाती
(2) आक्रमणकारी सेनाओं को रसद न मिलने देने के लिए प्रयुक्त 'भस्म-धरा' (स्कॉर्च्ड-अर्थ) नीति
(3) नदी तटों की किलेबंदी की एक पारंपरिक प्रणाली
(4) दो शत्रुओं को एक-दूसरे के विरुद्ध लड़ाने की कूटनीतिक चाल
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

19. 1680 में शिवाजी की मृत्यु के पश्चात, उनके पुत्रों के मध्य उत्तराधिकार का युद्ध छिड़ गया। कौन विजयी हुआ और शिवाजी के पश्चात छत्रपति बना?
(1) राजाराम
(2) शाहू
(3) संभाजी
(4) शिवाजी II
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

20. औरंगजेब के विरुद्ध मराठा प्रतिरोध से उनके जुड़ाव के आधार पर, निम्नलिखित ऐतिहासिक व्यक्तित्वों में से विषम की पहचान करें।
(1) संताजी घोरपड़े
(2) धनाजी जाधव
(3) ताराबाई
(4) जुल्फिकार खान
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

21. संभाजी के शासनकाल के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही नहीं है?
(1) उन्होंने अपने पिता की विस्तारवादी नीतियों को जारी रखा और पुर्तगालियों तथा सिद्दियों के विरुद्ध युद्ध किया।
(2) उन्होंने औरंगजेब के विद्रोही पुत्र, शहजादा अकबर को आश्रय दिया।
(3) उन्होंने 1689 में सम्राट औरंगजेब के साथ सफलतापूर्वक एक स्थायी शांति संधि की थी।
(4) उन्हें संगमेश्वर में मुगल सेनापति मुकर्रब खान ने बंदी बना लिया था।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

22. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। कथनों को पढ़िए और सही विकल्प चुनिए।
अभिकथन (A): 1689 में संभाजी की मृत्यु के पश्चात, मुगलों के विरुद्ध मराठा प्रतिरोध एक विकेंद्रीकृत जनयुद्ध के रूप में तीव्र हो गया।
कारण (R): राजाराम के जिंजी पलायन के साथ मराठा केंद्रीय सत्ता विखंडित हो गई, जिससे स्थानीय मराठा प्रमुखों को मुगलों से स्वतंत्र रूप से लड़ने की प्रेरणा मिली।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

23. दीर्घकाल तक चले मुगल-मराठा युद्ध के दौरान, राजाराम की मृत्यु के पश्चात किस मराठा रानी ने ओजस्वी नेतृत्व प्रदान किया और कोल्हापुर में एक समानांतर दरबार स्थापित किया?
(1) सोयराबाई
(2) येसुबाई
(3) राधाबाई
(4) ताराबाई
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Downloaded from www.pdf.tube

73. अन्य शक्तियों के साथ मराठा संबंधों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. मराठों ने कोंकण के कुछ भागों में पुर्तगालियों से चौथ वसूल की थी।
II. मराठों ने जंजीरा के सिद्दियों को पराजित कर उनकी नौसैनिक उपस्थिति को पूर्णतः समाप्त कर दिया।
III. बाजीराव प्रथम ने 1739 में पुर्तगालियों से बेसिन विजित किया था।
IV. दक्कन में वर्चस्व हेतु मराठों की हैदराबाद के निजाम के साथ दीर्घकालिक प्रतिस्पर्धा रही।
V. मैसूर के हैदर अली और टीपू सुल्तान का प्रायः मराठों के साथ संघर्ष होता था।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

(1) I, II, III और IV
(2) II, III, IV और V
(3) I, III, IV और V
(4) I, II, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

74. मराठा प्रशासनिक शब्दावली में, 'चौथ' राजस्व के एक-चौथाई हिस्से को संदर्भित करता है। इस चौथ के भीतर, 25 प्रतिशत भाग छत्रपति हेतु आरक्षित था। इस विशिष्ट भाग को क्या कहा जाता था?

(1) बाबती
(2) सहोत्रा
(3) नाडगौंडा
(4) मोकासा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

75. सूची-I (मुगल/अफगान सेनापति) को सूची-II (मराठा इतिहास की संबद्ध घटना) के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर चुनिए:

सूची I: (मुगल/अफगान सेनापति)

A. शाइस्ता खान
B. अफजल खान
C. जय सिंह
D. अहमद शाह अब्दाली

सूची II: (मराठा इतिहास की संबद्ध घटना)

i. प्रतापगढ़ का युद्ध
ii. पुणे में रात्रि आक्रमण
iii. पानीपत का तीसरा युद्ध
iv. पुरंदर की संधि

(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

76. मराठा राजस्व प्रशासन से संबंधित निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सुमेलित नहीं है?

(1) चौथ - मराठा आक्रमणों से सुरक्षा हेतु पड़ोसियों द्वारा देय कर
(2) देशमुख - राजकीय भूमि के प्रबंधन हेतु पेशवा द्वारा नियुक्त राजस्व अधिकारी
(3) सरदेशमुखी - वंशानुगत अधिकार के आधार पर दावा किया गया दस प्रतिशत अतिरिक्त शुल्क
(4) मीरासदार - भूमि पर वंशानुगत स्वामित्व रखने वाला कृषक
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

77. किस ब्रिटिश गवर्नर-जनरल ने आक्रामक विस्तार की नीति अपनाई, जो 1818 में मराठा परिसंघ के विनाश के रूप में परिणत हुई?

(1) लॉर्ड वेलेज़ली
(2) लॉर्ड कॉर्नवालिस
(3) लॉर्ड हेस्टिंग्स
(4) लॉर्ड डलहौजी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

78. 1819 में असीरगढ़ के दुर्ग पर अंग्रेजों के अधिकार का रणनीतिक महत्व क्या था?

(1) उत्तरी अरब सागर के नौसैनिक मार्गों पर नियंत्रण
(2) निज़ाम पर सहायक संधि हेतु दबाव डालना
(3) फ्रांसीसी सेना के पश्चिमी भारत में आगमन को रोकना
(4) मराठा प्रतिरोध का अंत, जिससे तृतीय युद्ध समाप्त हुआ
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

79. सूची-I (मराठा नेता) को सूची-II (तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध का परिणाम) के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर चुनिए:

सूची I: (मराठा नेता)

A. पेशवा बाजीराव द्वितीय
B. अप्पा साहब (भोंसले)
C. मल्हार राव होल्कर द्वितीय
D. प्रताप सिंह

सूची II: (तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध का परिणाम)

i. महिदपुर में पराजित होकर मंदसौर की संधि की
ii. नागपुर में पदच्युत किए गए और अंततः पलायन किया
iii. पेंशन देकर बिठूर निर्वासित कर दिए गए
iv. अंग्रेजों द्वारा सतारा में नाममात्र के शासक के रूप में स्थापित किए गए

(1) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(2) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(3) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(4) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

80. शिवाजी से लेकर पेशवाओं के पतन तक के मराठा इतिहास के आलोक में, निम्नलिखित में से कौन सा मराठा राज्य की प्रकृति का सर्वोत्तम वर्णन करता है?

(1) धार्मिक धर्मांतरण पर केंद्रित एक अत्यधिक केंद्रीकृत राज्य
(2) व्यक्तिगत क्षेत्रीय महत्वाकांक्षाओं द्वारा संचालित एक

32. सरंजाम प्रणाली, जिसका पेशवा काल के दौरान व्यापक विस्तार हुआ, मुख्य रूप से मराठा प्रशासन के किस पक्ष से संबंधित थी?
(1) अंतर-क्षेत्रीय व्यापार पर विभिन्न वाणिज्यिक करों का निर्धारण
(2) सैन्य टुकड़ियों के रखरखाव हेतु मराठा प्रमुखों को भू-राजस्व अनुदान
(3) कुलीनों के मध्य वैधानिक विवादों को सुलझाने का न्यायिक तंत्र
(4) यूरोपीय शक्तियों के साथ कूटनीतिक संबंध स्थापित करने का औपचारिक शिष्टाचार
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

33. 1737 में भोपाल के युद्ध के पश्चात मराठों और हैदराबाद के निज़ाम के मध्य कौन सी संधि हुई थी?
(1) वारणा की संधि
(2) दोराहा सराय की संधि
(3) सालाबाई की संधि
(4) बेसिन की संधि
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

34. पेशवाओं के अधीन मराठा विस्तार के दौरान लक्षित निम्नलिखित क्षेत्रों पर विचार कीजिए:
I. मालवा
II. गुजरात
III. बुंदेलखंड
IV. बंगाल
V. पंजाब
वर्ष 1758 तक इनमें से कौन से क्षेत्र प्रत्यक्ष रूप से सम्मिलित किए गए थे या निरंतर मराठा सैन्य अभियानों के अधीन रहे थे?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, II, III और V
(3) केवल II, IV और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

35. मराठा परिसंघ के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) यह मराठा प्रमुखों का एक शिथिल गठबंधन था जो छत्रपति को अपने नाममात्र के प्रमुख के रूप में स्वीकार करते थे।
(2) पेशवा परिसंघ के कार्यकारी प्रमुख के रूप में कार्य करते थे।
(3) परिसंघ एक अत्यधिक केंद्रीकृत राजकोष और एक एकीकृत स्थायी सेना बनाए रखता था।
(4) प्रमुख अपने संबंधित क्षेत्रों के भीतर पूर्ण आंतरिक स्वायत्तता का उपभोग करते थे।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

36. मराठा प्रशासनिक शब्दावली में, 'मोकासा' शब्द का तात्पर्य था:
(1) समस्त मराठा पैदल सेना का प्रभारी सर्वोच्च सैन्य सेनापति
(2) सीमाओं के पार जाने वाले व्यापारिक सामानों पर लगाया जाने वाला पारगमन शुल्क
(3) आधिकारिक संधियों और अनुदानों पर अंकित राजकीय मुहर
(4) सैन्य सेवा के बदले प्रमुखों को प्रदान किए गए चौथ के हिस्से
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

37. सूची-I (मराठा संधियां/समझौते) को सूची-II (वर्ष) के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (मराठा संधियां/समझौते)
A. पुरंदर की संधि (मुगलों के साथ)
B. वारणा की संधि
C. सालाबाई की संधि
D. बेसिन की संधि
सूची II: (वर्ष)
i. 1731
ii. 1802
iii. 1665
iv. 1782
(1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(2) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(3) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(4) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

38. पानीपत के तीसरे युद्ध (1761) का प्राथमिक कारण क्या था?
(1) बंगाल में ब्रिटिश सैन्य आधार को विजित करने का मराठा प्रयास
(2) पंजाब में विस्तार, जिससे अफगान शासक अहमद शाह अब्दाली क्षुब्ध हुआ
(3) मराठा करों के विरुद्ध राजपूत राज्यों द्वारा किया गया एक व्यापक विद्रोह
(4) मुगल सम्राट द्वारा पुणे को देय चौथ के भुगतान से इनकार करना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

39. नीचे दो कथन दिए गए हैं। कथनों को पढ़िए और सही विकल्प चुनिए।
कथन I: पानीपत के तीसरे युद्ध के दौरान, मराठा राजपूतों, जाटों और सिखों के साथ सुदृढ़ सैन्य गठबंधन सुनिश्चित करने में सफल रहे थे।
कथन II: मराठों की अनियंत्रित कर वसूली की नीति ने युद्ध से पूर्व प्रमुख उत्तर भारतीय शक्तियों को उनसे विमुख कर दिया था।
(1) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(2) कथन II सही है लेकिन कथन I गलत है।
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।

Click Here to Buy book on Amazon

24. 1707 में, मुगल सम्राट बहादुर शाह प्रथम द्वारा शाहू की रिहाई से मराठा पक्ष के भीतर गृहयुद्ध छिड़ गया। यह संघर्ष 1707 में किस निर्णायक युद्ध के रूप में परिणत हुआ?
(1) खेड़ का युद्ध
(2) पालखेड़ का युद्ध
(3) राक्षसभुवन का युद्ध
(4) उदगीर का युद्ध
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

25. बालाजी विश्वनाथ के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. वे पेशवा के पद को वंशानुगत बनाने वाले प्रथम व्यक्ति थे।
II. उन्होंने शाहू की माता को मुगल कारावास से मुक्त करवाया।
III. उन्होंने पानीपत के युद्ध के दौरान मराठा सेना का नेतृत्व किया था।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

26. 1719 में सैयद बंधुओं से पेशवा बालाजी विश्वनाथ द्वारा प्राप्त समझौते के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. मुगल सम्राट ने शाहू को शिवाजी के स्वराज्य के वैध शासक के रूप में मान्यता दी।
II. मराठों को दक्कन के छह मुगल सूबों से चौथ और सरदेशमुखी वसूलने का अधिकार दिया गया।
III. बदले में, शाहू मुगल सम्राट की सेवा हेतु 15,000 सैनिकों की एक टुकड़ी बनाए रखने के लिए सहमत हुए।
IV. संधि ने स्पष्ट रूप से मराठों को अवध के क्षेत्र पर अधिकार करने की अनुमति दी।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल III और IV
(3) केवल IV
(4) केवल II और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

27. दक्कन में मराठों को अधिकार देने वाले 1719 में हस्ताक्षरित प्रलेख को एक ब्रिटिश इतिहासकार द्वारा "मराठा साम्राज्य का मैग्ना कार्टा" कहा गया था। वह इतिहासकार कौन था?
(1) जेम्स ग्रांट डफ
(2) माउंटस्टुअर्ट एल्फिंस्टन
(3) विंसेंट स्मिथ
(4) रिचर्ड टेम्पल
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

28. बाजीराव प्रथम की उत्तर की ओर विस्तार की नीति का सबसे महत्वपूर्ण राजनीतिक परिणाम क्या था?
(1) दक्कन में निजाम की राजनीतिक शक्ति का पूर्ण उन्मूलन
(2) मराठा राज्य का एक अखिल भारतीय साम्राज्य के रूप में विस्तार
(3) प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध का तत्काल प्रारंभ होना
(4) उत्तरी अफगानिस्तान में मराठा बस्तियों की स्थापना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

29. सूची-I (मराठा प्रमुख) को सूची-II (सत्ता का केंद्र) के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (मराठा प्रमुख)
A. सिंधिया
B. होल्कर
C. भोंसले
D. गायकवाड़
सूची II: (सत्ता का केंद्र)
i. इंदौर
ii. बड़ौदा
iii. ग्वालियर
iv. नागपुर
(1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(2) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(3) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

30. अपने अभियानों के दौरान, बाजीराव प्रथम ने कहा था, "आइए हम सूखते हुए वृक्ष के तने पर प्रहार करें, शाखाएं स्वतः ही गिर जाएंगी।" वे किस साम्राज्य की ओर संकेत कर रहे थे?
(1) आदिल शाही वंश
(2) हैदराबाद का निजाम राज्य
(3) पुर्तगाली साम्राज्य
(4) मुगल साम्राज्य
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

31. बाजीराव प्रथम के निम्नलिखित सैन्य अभियानों और संधियों को सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. पालखेड़ का युद्ध
II. मुंगी शेवगाँव की संधि
III. भोपाल का युद्ध
IV. दिल्ली पर अभियान
निम्नलिखित में से कौन सा सही कालानुक्रमिक क्रम का प्रतिनिधित्व करता है?
(1) I, II, IV, III
(2) II, I, III, IV
(3) I, IV, II, III
(4) IV, I, III, II
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

iii. होल्कर
iv. सिंधिया (उत्तरी सेना)
(1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(4) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

49. सालाबाई की संधि (1782) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसने प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध को समाप्त किया।
II. इसने पुरंदर की संधि के पश्चात विजित क्षेत्रों की पारस्परिक वापसी सुनिश्चित की।
III. इसने अंग्रेजों को साल्सेट द्वीप प्रदान किया।
IV. इसके तहत मराठों को ईस्ट इंडिया कंपनी के साथ सहायक संधि स्वीकार करना अनिवार्य था।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) I, II और III
(2) I, III और IV
(3) II, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

50. द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध 1802 में बेसिन की संधि पर हस्ताक्षर होने से प्रारंभ हुआ था। यह संधि किसके मध्य हुई थी?
(1) पेशवा बाजीराव द्वितीय और लॉर्ड वेलेज़ली
(2) महादजी सिंधिया और लॉर्ड वेलेज़ली
(3) यशवंतराव होल्कर और लॉर्ड कॉर्नवालिस
(4) दौलतराव सिंधिया और लॉर्ड हेस्टिंग्स
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

51. द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध को समाप्त करने वाली संधियों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सुमेलित नहीं है?
(1) देवगाँव की संधि (1803) - भोंसले
(2) सुरजी-अंजनगाँव की संधि (1803) - सिंधिया
(3) ग्वालियर की संधि (1817) - गायकवाड़
(4) राजघाट की संधि (1805) - होल्कर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

52. ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा मराठों की अंतिम पराजय में योगदान देने वाला सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारक क्या था?
(1) मराठा सेनाओं में घुड़सवार सेना का पूर्ण अभाव
(2) अंग्रेजों के पक्ष में फ्रांसीसियों का हस्तक्षेप
(3) युद्धों के दौरान अफगानों द्वारा मराठा क्षेत्र पर अकारण आक्रमण
(4) मराठा प्रमुखों के मध्य आंतरिक विभाजन और आपसी वैमनस्य
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

53. तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध (1817-1818) अंग्रेजों की किस तात्कालिक कार्यवाही से प्रारंभ हुआ था?
(1) 1818 में सतारा के लघु राज्य का ब्रिटिश साम्राज्य में विलय
(2) पेशवा के दत्तक पुत्र के अधिकारों को मान्यता देने से इनकार करना
(3) संप्रभुता का उल्लंघन करते हुए पिंडारियों के विरुद्ध सैन्य अभियान
(4) विजयदुर्ग दुर्ग में मराठा नौसैनिक अड्डे पर अंग्रेजों का अधिकार
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

54. सूची-I (मराठा प्रशासनिक कर्मचारी) को सूची-II (कार्य) के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (मराठा प्रशासनिक कर्मचारी)
A. कमाविसदार
B. मामलेदार
C. फड़नवीस
D. पोतनीस
सूची II: (कार्य)
i. प्रांतीय प्रशासन और राजस्व संग्रह का प्रमुख
ii. स्थानीय स्तर का राजस्व अधिकारी
iii. कोषागार का प्रभारी अधिकारी
iv. मुख्य लिपिक या उप लेखा परीक्षक
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(4) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

55. मराठा ग्रामीण अर्थव्यवस्था के संदर्भ में, 'बारा बलुतेदार' कौन थे?
(1) राजधानी की रक्षा के लिए उत्तरदायी प्रमुख मराठा सेनापति
(2) ग्रामीण जिलों के प्रबंधन हेतु पेशवा द्वारा नियुक्त राजस्व संग्रहकर्ता
(3) राजकीय खजाने के भंडारण हेतु समर्पित विशेष दुर्ग
(4) आवश्यक सेवाएँ प्रदान करने वाले ग्रामीण शिल्पी और सेवक
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

56. मराठा शक्ति के पतन के संबंध में निम्नलिखित कारकों पर विचार कीजिए:
I. उनकी राज्य अर्थव्यवस्था की स्थिरता का अभाव, जो लूट और खंडानी (नजराने) पर अत्यधिक निर्भर थी।
II. आधुनिक, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और स्वदेशी सैन्य तकनीक विकसित करने में विफलता।
III. उत्तराधिकार की एक व्यवस्थित प्रणाली का अभाव, जिससे बार-बार आंतरिक संघर्ष हुए।
IV. जागीरदारी (सरंजाम) प्रणाली का व्यापक उपयोग जिससे केंद्रीय सत्ता दुर्बल हुई।

V. पारंपरिक छापामार युद्ध नीति का पूर्ण परित्याग।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II और IV
(2) केवल II, III, IV और V
(3) केवल I, II, III और IV
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

57. किस संघर्ष के पश्चात पेशवा के पद को अंततः समाप्त कर दिया गया और अंतिम पेशवा, बाजीराव द्वितीय को कानपुर के समीप बिठूर भेज दिया गया?
(1) प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध
(2) द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध
(3) तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध
(4) 1857 का विद्रोह
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

58. निम्नलिखित पेशवाओं के उत्तराधिकार को सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. माधव राव प्रथम
II. बालाजी विश्वनाथ
III. बाजीराव प्रथम
IV. बालाजी बाजीराव (नाना साहब)
निम्नलिखित में से कौन सा सही कालानुक्रमिक क्रम का प्रतिनिधित्व करता है?
(1) II, III, IV, I
(2) II, IV, III, I
(3) III, II, IV, I
(4) II, III, I, IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

59. किस पेशवा के शासनकाल में मराठा सेनाओं ने सिंधु नदी को पार किया और 1758 में अटक तथा पेशावर पर अधिकार कर लिया था?
(1) बाजीराव प्रथम
(2) माधव राव प्रथम
(3) बाजीराव द्वितीय
(4) बालाजी बाजीराव
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

60. पेशवा काल के दौरान छत्रपति की स्थिति के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. छत्रपति सतारा के महल तक सीमित एक नाममात्र के प्रमुख बन गए थे।
II. पेशवा सभी महत्वपूर्ण निर्णय लेते थे, यद्यपि औपचारिक रूप से वे छत्रपति के नाम पर होते थे।
III. मराठा साम्राज्य की राजधानी वास्तविक रूप से सतारा से पुणे स्थानांतरित हो गई थी।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

61. 18वीं शताब्दी के दौरान मराठों ने राजपूताना में निरंतर हस्तक्षेप किया। निम्नलिखित में से किस राजपूत राज्य को भारी कर देने हेतु विवश किया गया था, जिसके कारण महादजी सिंधिया के विरुद्ध तुंगा का युद्ध (1787) हुआ था?
(1) मेवाड़ (उदयपुर)
(2) मारवाड़ (जोधपुर)
(3) जयपुर
(4) बीकानेर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

62. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। कथनों को पढ़िए और सही विकल्प चुनिए।
अभिकथन (A): 18वीं शताब्दी में राजस्थान में मराठा घुसपैठ ने राजपूत राज्यों की अर्थव्यवस्था और स्थिरता को गंभीर रूप से प्रभावित किया।
कारण (R): मराठों ने 'खंडानी' (नजराने) के लिए बल प्रयोग किया और राजपूताना के आंतरिक उत्तराधिकार विवादों में निरंतर हस्तक्षेप किया।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

63. नीचे दो कथन दिए गए हैं। कथनों को पढ़िए और सही विकल्प चुनिए।
कथन I: 1734 का हुरड़ा सम्मेलन राजपूत शासकों द्वारा राजस्थान में मराठा विस्तार के विरुद्ध एक संयुक्त मोर्चा बनाने हेतु आयोजित किया गया था।
कथन II: हुरड़ा सम्मेलन अपने उद्देश्य में सफल रहा और राजपूताना में मराठा छापों को स्थायी रूप से रोक दिया।
(1) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(2) कथन II सही है लेकिन कथन I गलत है।
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

64. प्रमुख मराठा नेता नाना फड़नवीस को अंग्रेजों द्वारा अक्सर "मराठा मैकियावेली" कहा जाता था। 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध के दौरान उनकी प्राथमिक भूमिका क्या थी?
(1) मैसूर साम्राज्य के विरुद्ध सर्वोच्च सैन्य सेनापति
(2) परिसंघ के कार्यों का प्रबंधन करने वाले पुणे के प्रमुख राजनीतिज्ञ
(3) मराठा नौसेना के एडमिरल जिन्होंने पुर्तगालियों को पराजित किया था

Downloaded from www.pdf.tube

(4) बेसिन की सहायक संधि के प्रमुख शिल्पकार
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

65. निम्नलिखित में से कौन सा मराठा इतिहास में 'बखर' का सही वर्णन करता है?
(1) युद्ध हेतु पेशवाओं द्वारा निर्मित विशेष घुड़सवार इकाइयाँ
(2) मराठी भाषा में ऐतिहासिक कथाएँ और जीवनवृत्त
(3) सत्तारूढ़ छत्रपति द्वारा जारी किए गए शाही फरमान
(4) मंदिरों के रखरखाव हेतु प्रदान किए गए भूमि अनुदान
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

66. मराठा समाज और प्रशासन के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. न्याय प्रणाली मुख्य रूप से प्राचीन स्मृतियों और रूढ़िगत कानूनों पर आधारित थी।
II. आपराधिक न्याय का प्रबंधन स्थानीय स्तर पर पाटिल द्वारा किया जाता था, जो प्रायः पंचायतों का सहयोग लेते थे।
III. कठोर व्यवस्था बनाए रखने के लिए सामान्य अपराधों हेतु भी अक्सर मृत्युदंड दिया जाता था।
IV. वित्तीय आपातकाल के समय कभी-कभी 'कुर्जा-पट्टी' नामक विशेष कर लगाया जाता था।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) I, II और III
(2) I, II और IV
(3) II, III और IV
(4) I, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

67. छत्रपति या पेशवा के अधीन मराठा प्रशासन में सर्वोच्च न्यायिक अधिकारी मुख्य न्यायाधीश होता था। अष्टप्रधान में इस अधिकारी को क्या कहा जाता था?
(1) अमात्य
(2) सुमंत
(3) न्यायाधीश
(4) सचिव
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

68. 18वीं शताब्दी में मराठा साम्राज्य के सर्वाधिक विस्तार के दौरान निम्नलिखित में से कौन सा क्षेत्र कभी भी स्थायी रूप से सम्मिलित नहीं किया गया था?
(1) मालवा
(2) गुजरात
(3) बुंदेलखंड
(4) अवध
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

69. सूची-I (मराठा शासक/व्यक्तित्व) को सूची-II (प्रमुख घटना/संबद्धता) के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (मराठा शासक/व्यक्तित्व)
A. अहिल्याबाई होल्कर
B. रघुनाथ राव
C. विश्वासराव
D. शाहजी भोंसले
सूची II: (प्रमुख घटना/संबद्धता)
i. अंग्रेजों से सहायता की याचना जिससे प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध हुआ
ii. पानीपत के तीसरे युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए
iii. आदिल शाही और निजाम शाही दरबारों में सेवा की
iv. मालवा के उत्कृष्ट प्रशासन हेतु विख्यात
(1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(2) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(3) A-i, B-iv, C-ii, D-iii
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

70. 18वीं शताब्दी के अंत में मराठा सैन्य तंत्र अनेक दुर्बलताओं से ग्रस्त था। निम्नलिखित में से कौन सी एक दुर्बलता नहीं थी?
(1) तोपखाने और प्रशिक्षित पैदल सेना हेतु यूरोपीय भाड़े के सैनिकों पर अत्यधिक निर्भरता
(2) नौसैनिक बल के विस्तार हेतु अपनी पैदल सेना का पूर्ण विसर्जन
(3) पारंपरिक हल्की घुड़सवार सेना की रणनीति की उपेक्षा, जो उनकी मूल शक्ति थी
(4) रसद आपूर्ति श्रृंखला का अभाव, जिससे लूटपाट पर निर्भरता बढ़ी और स्थानीय जनता विमुख हुई
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

71. निम्नलिखित में से कौन सा प्रमुख आंग्ल-मराठा संधियों का सही कालानुक्रमिक क्रम दर्शाता है?
(1) सूरत की संधि → पुरंदर की संधि → सालाबाई की संधि → बेसिन की संधि
(2) पुरंदर की संधि → सूरत की संधि → बेसिन की संधि → सालाबाई की संधि
(3) सूरत की संधि → सालाबाई की संधि → पुरंदर की संधि → बेसिन की संधि
(4) सालाबाई की संधि → सूरत की संधि → बेसिन की संधि → पुरंदर की संधि
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

72. पेशवा काल के दौरान, पुणे में स्थित "हुजूर दफ्तर" प्रशासन का एक अनिवार्य अंग था। इसका प्राथमिक कार्य क्या था?
(1) वित्तीय अभिलेखों और प्रांतीय खातों का प्रबंधन करने वाला सचिवालय
(2) समस्त आपराधिक मामलों के निवारण हेतु सर्वोच्च न्यायालय
(3) केंद्रीय शस्त्रागार जहाँ यूरोपीय शस्त्र निर्मित किए जाते थे
(4) मानक मराठा मुद्रा जारी करने हेतु उत्तरदायी राजकीय टकसाल
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

40. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। कथनों को पढ़िए और सही विकल्प चुनिए।
अभिकथन (A): पानीपत के तीसरे युद्ध ने यह निर्धारित नहीं किया कि भारत पर शासन कौन करेगा, अपितु यह तय किया कि कौन नहीं करेगा।
कारण (R): मराठों और अफगानों की आपसी थकावट ने भारत में ब्रिटिश शक्ति के अभ्युदय का मार्ग प्रशस्त किया।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

41. 1761 में पानीपत के विनाशकारी तीसरे युद्ध के दौरान मराठा सेना का वास्तविक सेनापति कौन था?
(1) पेशवा बालाजी बाजीराव
(2) महादजी सिंधिया
(3) सदाशिवराव भाऊ
(4) मल्हार राव होल्कर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

42. पानीपत के तीसरे युद्ध के दौरान, मराठा सेना की एक महत्वपूर्ण तोपखाना इकाई का नेतृत्व एक मुस्लिम सेनापति द्वारा किया गया था, जो अंत तक वीरतापूर्वक लड़ा। वह कौन था?
(1) इब्राहिम खान गार्दी
(2) नजीब-उद-दौला
(3) शुजा-उद-दौला
(4) मुजफ्फर जंग
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

43. निम्नलिखित में से कौन सा पानीपत के तीसरे युद्ध में मराठों की पराजय का परिणाम नहीं था?
(1) उत्तर भारत में मराठा साम्राज्य की प्रतिष्ठा को भारी क्षति
(2) विश्वासराव और सदाशिवराव भाऊ जैसे प्रमुख मराठा नेताओं का वीरगति को प्राप्त होना
(3) ईस्ट इंडिया कंपनी को बंगाल में अपनी स्थिति सुदृढ़ करने हेतु महत्वपूर्ण समय मिलना
(4) परिसंघ का तत्काल परस्पर युद्धरत राज्यों में विखंडन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

44. निम्नलिखित में से कौन सा कथन मराठा साम्राज्य में पेशवा माधव राव के योगदान का सर्वोत्तम वर्णन करता है?
(1) पश्चिमी तट पर एक स्थायी मराठा नौसैनिक शक्ति की स्थापना
(2) पानीपत के युद्ध के एक दशक के भीतर मराठा शक्ति और प्रतिष्ठा की पुनर्स्थापना
(3) अंग्रेजों के सहायक के रूप में बेसिन की संधि पर हस्ताक्षर करना
(4) मैसूर के टीपू सुल्तान के विरुद्ध प्रमुख मराठा अभियानों का प्रारंभ
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

45. पानीपत के पश्चात की अवधि में महादजी सिंधिया की भूमिका के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उन्होंने बेनोइट डी बोइग्ने जैसे यूरोपीय अधिकारियों की सहायता से अपनी सेना को पुनर्गठित किया।
II. वे 1771 में मुगल सम्राट शाह आलम द्वितीय को पुनः दिल्ली ले गए और उनके संरक्षक बने।
III. उन्होंने पेशवा के पद को समाप्त कर स्वयं को छत्रपति घोषित कर दिया।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

46. मराठों के आंतरिक उत्तराधिकार विवादों में अंग्रेजों के हस्तक्षेप ने प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध को जन्म दिया। पेशवा पद के किस विवादित दावेदार ने सूरत की संधि (1775) के माध्यम से अंग्रेजों से सहायता मांगी थी?
(1) नारायण राव
(2) माधव राव द्वितीय
(3) बाजीराव द्वितीय
(4) रघुनाथ राव
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

47. प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध के दौरान, ब्रिटिश सेना को मराठों के हाथों अपमानजनक पराजय का सामना करना पड़ा, जिसके फलस्वरूप 1779 में एक समझौते पर हस्ताक्षर हुए। उस समझौते का नाम बताइए।
(1) वडगाँव का समझौता
(2) पुरंदर का समझौता
(3) सूरत का समझौता
(4) मंदसौर का समझौता
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

48. सूची-I (आंग्ल-मराठा युद्धों के युद्ध) को सूची-II (पराजित मराठा प्रमुख) के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (आंग्ल-मराठा युद्धों के युद्ध)
A. असई का युद्ध
B. लासवाड़ी का युद्ध
C. किरकी का युद्ध
D. महिदपुर का युद्ध
सूची II: (पराजित मराठा प्रमुख)
i. पेशवा बाजीराव द्वितीय
ii. सिंधिया और भोंसले

Click Here to Buy book on Amazon

शिथिल परिसंघ
(3) ग्रामीण शिल्पियों की निर्वाचित परिषदों द्वारा शासित एक लोकतांत्रिक गणराज्य
(4) एक विशुद्ध समुद्री साम्राज्य जिसने आंतरिक क्षेत्रीय विकास की पूर्ण उपेक्षा की
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

www.nodia.in

NODIA

जिसने संघर्ष को अस्थायी रुप से रोका। 1731 में वारणा की संधि ने कोल्हापुर और सतारा के मध्य के आंतरिक विवादों को सुलझाया। प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध का अंत 1782 में सालाबाई की संधि से हुआ, जिसने मराठों को बीस वर्षों की शांति प्रदान की। अंततः 1802 में बेसिन की संधि ने मराठा संप्रभुता को गंभीर आघात पहुँचाया, जब पेशवा ने अंग्रेजों की सहायक संधि स्वीकार कर ली थी।

38. (2) पंजाब में विस्तार, जिससे अफगान शासक अहमद शाह अब्दाली क्षुब्ध हुआ
पानीपत के तीसरे युद्ध का मुख्य कारण मराठों का उत्तर-पश्चिमी भारत, विशेषकर पंजाब में बढ़ता प्रभाव था। 1758 में मराठों द्वारा अटक पर अधिकार करने और अहमद शाह अब्दाली के प्रतिनिधि को निष्कासित करने से अफगान शासक अत्यंत रुष्ट हुआ। अब्दाली ने अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा और क्षेत्रों को पुनः प्राप्त करने हेतु भारत पर आक्रमण किया। मुगलों की निर्बलता के कारण मराठों ने दिल्ली के संरक्षक की भूमिका निभाई, जिससे दो महत्वाकांक्षी शक्तियों के मध्य टकराव अपरिहार्य हो गया। यह संघर्ष एक निर्णायक मोड़ सिद्ध हुआ।

39. (2) कथन II सही है लेकिन कथन I गलत है।
पानीपत के युद्ध के समय मराठों की सबसे बड़ी कूटनीतिक विफलता अन्य क्षेत्रीय शक्तियों का समर्थन न मिल पाना था। पूर्व के दशकों में मराठों द्वारा राजपूतों, जाटों और सिखों से चौथ की कठोर वसूली ने उन्हें शत्रु बना दिया था, जिसके कारण संकट काल में ये शक्तियाँ तटस्थ रहीं या उन्होंने अब्दाली का साथ दिया। मराठों को एकाकी होकर अफगान सेना का सामना करना पड़ा। इस अलगाव ने न केवल उनकी सैन्य शक्ति को प्रभावित किया, बल्कि उनकी रसद आपूर्ति श्रृंखला को भी बाधित कर दिया था।

40. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
पानीपत के तीसरे युद्ध ने भारतीय इतिहास की दिशा बदल दी क्योंकि इसने मराठों के अखिल भारतीय साम्राज्य के स्वप्न को ध्वस्त कर दिया। यद्यपि अब्दाली विजयी हुआ, किंतु वह भारत पर शासन नहीं कर सका और उसकी सेना भी थक चुकी थी। इस युद्ध के परिणामस्वरूप भारत की दो सबसे बड़ी सैन्य शक्तियों का ह्रास हुआ, जिससे उत्पन्न राजनीतिक शून्यता का लाभ ईस्ट इंडिया कंपनी ने उठाया। इस युद्ध ने यह निश्चित कर दिया कि कौन भारत पर शासन नहीं करेगा, जिससे ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना सुगम हो गई।

41. (3) सदाशिवराव भाऊ
1761 के पानीपत युद्ध में मराठा सेना का वास्तविक नेतृत्व सदाशिवराव भाऊ ने किया था, जो पेशवा बालाजी बाजीराव के चचेरे भाई थे। उनके साथ पेशवा के युवा पुत्र विश्वासराव भी थे, जो सेना के औपचारिक सेनापति थे। सदाशिवराव एक कुशल प्रशासक थे, किंतु उत्तर भारतीय युद्ध कौशल और कूटनीति में उन्हें अब्दाली के अनुभव का सामना करना पड़ा। उन्होंने अंत तक अत्यंत वीरता और साहस के साथ अफगान सेना का मुकाबला किया और युद्ध के मैदान में लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।

42. (1) इब्राहिम खान गार्दी
इब्राहिम खान गार्दी पानीपत के तीसरे युद्ध में मराठा तोपखाने के अत्यंत कुशल और निष्ठावान सेनापति थे। उन्होंने फ्रांसीसी पद्धति पर प्रशिक्षित अपनी तोपखाना इकाई के माध्यम से अफगान सेना को भारी क्षति पहुँचाई। अफगान पक्ष से उन्हें पक्ष बदलने के प्रलोभन दिए गए, किंतु उन्होंने मराठा राज्य के प्रति अपनी निष्ठा नहीं छोड़ी। युद्ध के अंतिम क्षणों तक वे वीरतापूर्वक लड़े और अंततः बंदी बनाए जाने के पश्चात मार दिए गए। उनका बलिदान मराठा इतिहास में साम्प्रदायिक सद्भाव और स्वामीभक्ति का अद्वितीय उदाहरण है।

43. (4) परिसंघ का तत्काल परस्पर युद्धरत राज्यों में विखंडन
पानीपत की पराजय से मराठों को अपूरणीय सैन्य और नेतृत्व की क्षति हुई। योग्य सेनापतियों की मृत्यु से पेशवा का प्रभाव कम हुआ और उत्तर भारत में उनकी प्रतिष्ठा धूमिल हो गई। अंग्रेजों को इस स्थिति का लाभ मिला और उन्होंने बंगाल में अपनी जड़ें सुदृढ़ कीं। हालांकि, मराठा परिसंघ का तत्काल पूर्ण विखंडन नहीं हुआ; पेशवा माधव राव प्रथम के कुशल नेतृत्व में मराठों ने एक दशक के भीतर आश्चर्यजनक रुप से अपनी खोई हुई शक्ति पुनः प्राप्त कर ली और एक बार फिर उत्तर भारतीय राजनीति को प्रभावित किया।

44. (2) पानीपत के युद्ध के एक दशक के भीतर मराठा शक्ति और प्रतिष्ठा की पुनर्स्थापना
पेशवा माधव राव प्रथम को मराठा इतिहास के महानतम पेशवाओं में गिना जाता है, जिन्होंने पानीपत की विनाशकारी हार के पश्चात साम्राज्य को पुनर्जीवित किया। उन्होंने आंतरिक विद्रोहों का दमन किया, राजस्व व्यवस्था में सुधार किया और निजाम तथा हैदर अली को पराजित कर मराठा वर्चस्व को पुनः स्थापित किया। उनके शासनकाल में ही मराठा सेनाओं ने पुनः उत्तर भारत में प्रवेश कर दिल्ली पर अपना प्रभाव जमाया। इतिहासकारों का मानना है कि इस युवा पेशवा की अकाल मृत्यु मराठा साम्राज्य हेतु पानीपत से भी अधिक घातक सिद्ध हुई।

45. (1) केवल I और II
महादजी सिंधिया पानीपत के पश्चात मराठा पुनरुत्थान के सबसे शक्तिशाली स्तंभ बनकर उभरे। उन्होंने फ्रांसीसी सेनापति की सहायता से अपनी सेना को आधुनिक यूरोपीय पद्धति पर पुनर्गठित किया, जिससे उनकी पैदल सेना और तोपखाना अत्यंत प्रभावी हो गया। 1771 में उन्होंने ऐतिहासिक कार्य किया जब वे निर्वासित मुगल सम्राट शाह आलम द्वितीय को पुनः दिल्ली ले गए और उनके संरक्षक बने। इस प्रकार उन्होंने अप्रत्यक्ष रूप से दिल्ली की सत्ता पर मराठा नियंत्रण स्थापित किया, यद्यपि उन्होंने कभी स्वयं को छत्रपति घोषित नहीं किया।

46. (4) रघुनाथ राव
पेशवा माधव राव की मृत्यु के पश्चात मराठा दरबार में सत्ता संघर्ष तीव्र हो गया। रघुनाथ राव ने नारायण राव की हत्या के उपरांत स्वयं को पेशवा घोषित किया, किंतु मराठा सरदारों ने इसे स्वीकार नहीं किया। विरोध से घबराकर रघुनाथ राव ने अंग्रेजों की सहायता मांगी और 1775 में बंबई की ब्रिटिश

Downloaded from www.pdf.tube

30 प्रतिशत था जिसे बाद में बढ़ाकर 40 प्रतिशत किया गया। यद्यपि राजस्व नकद रूप में देना प्राथमिकता थी, किंतु अकाल या विशेष परिस्थितियों में वस्तु के रूप में भी भुगतान स्वीकार्य था।

10. (1) मराठा आक्रमणों से सुरक्षा के बदले पड़ोसियों द्वारा भुगतान किया गया राजस्व का एक चौथाई हिस्सा
चौथ एक ऐसा सैन्य कर था जो मराठा आक्रमणों से सुरक्षा के बदले पड़ोसी क्षेत्रों और मुगल सूबों से वसूला जाता था। यह क्षेत्र के कुल वार्षिक भू-राजस्व का एक-चौथाई या 25 प्रतिशत होता था। इस कर के भुगतान का अर्थ था कि मराठा उस क्षेत्र पर न तो स्वयं आक्रमण करेंगे और न ही किसी अन्य बाहरी शक्ति को वहां लूटपाट करने देंगे। यह मराठा राज्य के विस्तार और अपनी विशाल सेना के रखरखाव हेतु राजस्व का एक अत्यंत महत्वपूर्ण स्रोत था।

11. (3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
सरदेशमुखी एक अतिरिक्त कर था जो क्षेत्र के भू-राजस्व के दस प्रतिशत के बराबर होता था। शिवाजी ने स्वयं को महाराष्ट्र का सर्वोच्च वंशानुगत प्रमुख या 'सरदेशमुख' बताते हुए इस कर को लागू किया था। यह कर चौथ से पृथक था और उन क्षेत्रों पर लगाया जाता था जिन्हें मराठा अपना पैतृक विधिक अधिकार मानते थे। इन दोनों करों के माध्यम से मराठों ने अपनी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ की और पड़ोसी राज्यों पर अपना राजनीतिक तथा सैन्य प्रभुत्व स्थापित करने का सफल प्रयास किया।

12. (1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
मराठा सेना में 'पागा' वे राजकीय घुड़सवार थे जिन्हें राज्य द्वारा घोड़े और अस्त्र-शस्त्र प्रदान किए जाते थे। इसके विपरीत, 'सिलाहदार' स्वतंत्र सैनिक थे जो स्वयं के संसाधनों के साथ सेना में सम्मिलित होते थे। पहाड़ी क्षेत्रों में सेवा देने वाले पैदल सैनिकों को 'मावली' कहा जाता था, जिन्होंने शिवाजी के प्रारंभिक अभियानों में अपूर्व वीरता प्रदर्शित की थी। 'हवलदार' एक महत्वपूर्ण अधिकारी था जो किसी विशिष्ट सैन्य इकाई या रणनीतिक दुर्ग के प्रबंधन और सुरक्षा का उत्तरदायी होता था।

13. (3) सैनिकों को मुख्य रूप से जागीरों के आवंटन के माध्यम से वेतन का भुगतान
शिवाजी महाराज ने अपने सैन्य प्रशासन में अत्यंत कठोर अनुशासन और नैतिकता के मानक स्थापित किए थे। उन्होंने सैनिकों को जागीरों के रूप में भुगतान करने की मध्यकालीन परंपरा को समाप्त कर दिया और उन्हें राजकीय कोष से नकद वेतन देना प्रारंभ किया। यह कदम सेना को सामंती नियंत्रण से मुक्त रखने और राजा के प्रति निष्ठा सुनिश्चित करने के लिए उठाया गया था। इसके अतिरिक्त, अभियानों के दौरान लूटपाट पर पूर्ण प्रतिबंध और महिलाओं के प्रति सम्मान का निर्देश अनिवार्य था।

14. (1) I, II, III और V
शिवाजी ने कोंकण तट की रक्षा और जंजीरा के सिद्दियों की शक्ति को नियंत्रित करने हेतु एक स्वदेशी नौसैनिक बेड़े का निर्माण किया। उन्होंने गुराब और गैलीवत जैसे विविध आकारों के पोतों का निर्माण कराया और सिंधुदुर्ग जैसे जलदुर्गों को अपना मुख्य आधार बनाया। यद्यपि मराठा नौसेना ने पश्चिमी तट पर अपना प्रभुत्व स्थापित किया और यूरोपीय शक्तियों को कड़ी चुनौती दी, किंतु वे अरब सागर से ब्रिटिश उपस्थिति को पूर्णतः समाप्त नहीं कर सके थे। कान्होजी आंग्रे ने इसे और सुदृढ़ बनाया।

15. (1) मुगल सेनापति जय सिंह द्वारा पुरंदर दुर्ग की सफल घेराबंदी
1665 में मुगल सम्राट औरंगजेब ने आमीर के राजा जय सिंह को विशाल सेना के साथ शिवाजी के विरुद्ध भेजा। जय सिंह ने रणनीतिक कुशलता से पुरंदर के अभेद्य दुर्ग की घेराबंदी कर ली, जहाँ मराठों का महत्वपूर्ण कोष और परिवार सुरक्षित थे। मराठा सेना के लिए घेराबंदी को भंग करना कठिन हो गया और मुगल सेना ने समीपवर्ती क्षेत्रों में भारी क्षति पहुँचाई। अपनी प्रजा की सुरक्षा और सैन्य संसाधनों को बचाने के उद्देश्य से शिवाजी को विवश होकर पुरंदर की संधि करनी पड़ी।

16. (2) 23 दुर्ग
पुरंदर की संधि की शर्तों के अनुसार, शिवाजी को मुगलों को अपने कुल 35 किलों में से 23 प्रमुख दुर्ग सौंपने पड़े, जिनसे वार्षिक रूप से लगभग चार लाख हूण का राजस्व प्राप्त होता था। शिवाजी ने केवल 12 किले अपने पास रखे और मुगलों के प्रति अपनी निष्ठा का वचन दिया। यह उनके जीवन का एक अत्यंत कठिन समय था, किंतु इस संधि ने उन्हें भविष्य की रणनीतियों हेतु समय प्रदान किया। इस समझौते के अंतर्गत उनके पुत्र संभाजी को मुगल दरबार में मनसब प्रदान किया गया था।

17. (3) शाइस्ता खान पर आक्रमण → सूरत की प्रथम लूट → पुरंदर की संधि → आगरा की यात्रा
शिवाजी और मुगलों के संघर्ष का घटनाक्रम ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। सर्वप्रथम 1663 में उन्होंने पुणे में शाइस्ता खान के शिविर पर साहसिक रात्रि आक्रमण किया। इसके पश्चात 1664 में मुगलों की आर्थिक स्थिति दुर्बल करने हेतु सूरत की प्रथम लूट को अंजाम दिया। इन घटनाओं से क्षुब्ध होकर औरंगजेब ने जय सिंह को भेजा, जिसके परिणामस्वरूप 1665 में पुरंदर की संधि हुई। अंततः 1666 में शिवाजी ने आगरा की यात्रा की, जहाँ उन्हें और उनके पुत्र को बंदी बनाया गया था।

NODIA

18. (1) छापामार युद्ध कौशल की रणनीतिक तैनाती
'गनिमी कावा' मराठों की विशिष्ट छापामार युद्ध तकनीक थी, जिसका उपयोग शिवाजी महाराज ने बड़ी मुगल सेनाओं के विरुद्ध अत्यंत प्रभावी ढंग से किया। इस रणनीति के अंतर्गत मराठा सैनिक प्रत्यक्ष युद्ध के स्थान पर अचानक आक्रमण करने, रसद आपूर्ति बाधित करने और शत्रुओं को दुर्गम पहाड़ी क्षेत्रों में घेरने पर ध्यान केंद्रित करते थे। यह कौशल भौगोलिक विशेषताओं का लाभ उठाते हुए शत्रु को मनोवैज्ञानिक रूप से हतोत्साहित करने में सहायक था, जिससे मराठों ने अल्प संख्या में भी सफलताएँ प्राप्त कीं।

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) छापामार युद्ध के अनुकूल दुर्गम भूभाग और प्राकृतिक पहाड़ी किले
महाराष्ट्र का विषम भूभाग और पश्चिमी घाट की पर्वत श्रृंखलाएं मराठों के लिए प्राकृतिक सुरक्षा कवच थीं। सह्याद्रि श्रेणी के दुर्गम किलों ने छापामार युद्ध प्रणाली, जिसे 'गनिमी कावा' कहा जाता था, के संचालन को अत्यंत प्रभावी बनाया। यह भौगोलिक बनावट मुगल सेना के भारी तोपखाने की गति को बाधित करती थी और मराठा घुड़सवारों को रणनीतिक बढ़त प्रदान करती थी, जिससे वे सीमित संसाधनों में भी शक्तिशाली शत्रुओं का सफलतापूर्वक सामना करने में सक्षम हुए।

2. (1) तुकाराम और रामदास जैसे संतों के नेतृत्व में भक्ती आंदोलन
मध्यकालीन महाराष्ट्र में तुकाराम, नामदेव और समर्थ रामदास जैसे संतों के नेतृत्व में विकसित भक्ति आंदोलन ने जातिगत बंधनों को शिथिल किया। इस आंदोलन ने क्षेत्रीय मराठी भाषा के माध्यम से जनमानस में सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक चेतना का संचार किया। संतों के नैतिक उपदेशों ने मराठों के मध्य एक साझा पहचान और वैचारिक आधार तैयार किया, जिसने कालांतर में छत्रपति शिवाजी के स्वराज्य की स्थापना हेतु आवश्यक जनसमर्थन और एकता को सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

3. (3) तोरणा
छत्रपति शिवाजी महाराज ने मात्र 16 वर्ष की अल्पायु में अपनी सैन्य विजयों का श्रीगणेश किया। 1646 में उन्होंने बीजापुर सल्तनत के अधिकार वाले तोरणा किले पर विजय प्राप्त की, जो उनके साम्राज्य विस्तार की प्रथम महत्वपूर्ण सफलता थी। इस दुर्ग की रणनीतिक स्थिति ने उन्हें कोंकण और पुणे क्षेत्रों में अपनी शक्ति सुदृढ़ करने का सुअवसर प्रदान किया। इस विजय के पश्चात उन्होंने दुर्ग का नाम बदलकर प्रचंडगढ़ रखा और प्राप्त धन का उपयोग राजगढ़ के निर्माण में किया।

4. (1) केवल I और II
जावली के चंद्रराव मोरे को पराजित करना शिवाजी की रणनीतिक सफलता थी, क्योंकि इससे कोंकण क्षेत्र और कृष्णा नदी घाटी में उनके प्रभाव का विस्तार हुआ। प्रतापगढ़ के युद्ध में बीजापुर के शक्तिशाली सेनापति अफजल खान को पराजित करने से मराठों की प्रतिष्ठा में अभूतपूर्व वृद्धि हुई। हालांकि, शिवाजी ने मुगलों का सामना करने के लिए पुर्तगालियों के साथ कोई स्थायी सैन्य गठबंधन नहीं किया था, बल्कि वे विदेशी शक्तियों की गतिविधियों पर सदैव कड़ी दृष्टि रखते थे।

5. (3) यह मुगल सम्राट के प्रति शिवाजी की औपचारिक अधीनता का प्रतीक था।
शिवाजी का राज्याभिषेक 1674 में रायगढ़ के दुर्ग में संपन्न हुआ था, जो एक स्वतंत्र और संप्रभु राज्य की घोषणा का प्रतीक था। इस समारोह की अध्यक्षता काशी के प्रसिद्ध विद्वान गंगा भट्ट ने की, जिन्होंने उन्हें 'क्षत्रिय कुलवंतस' और 'छत्रपति' की उपाधि से विभूषित किया। यह आयोजन मुगल सम्राट की अधीनता स्वीकार करने के विपरीत मराठा राज्य की पूर्ण स्वायत्तता और संप्रभुता को स्थापित करने का सफल प्रयास था, जिसने मराठा प्रशासन को एक औपचारिक विधिक दर्जा प्रदान किया।

6. (2) राजा की सहायता और परामर्श के लिए आठ मंत्रियों की एक परिषद
शिवाजी महाराज ने प्रशासनिक कुशलता सुनिश्चित करने के लिए 'अष्टप्रधान' नामक आठ मंत्रियों के एक समूह की स्थापना की थी। यह परिषद राजा को शासन के विभिन्न कार्यों जैसे राजस्व संग्रह, सैन्य योजना, धार्मिक अनुष्ठान और कूटनीतिक संबंधों में परामर्श प्रदान करती थी। प्रत्येक मंत्री सीधे छत्रपति के प्रति उत्तरदायी था और उनके कार्यक्षेत्र का स्पष्ट विभाजन किया गया था। इस व्यवस्था ने मराठा प्रशासन को एक सुसंगठित स्वरूप प्रदान किया और राज्य के सुचारु संचालन में महत्वपूर्ण सहायता की।

7. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
शिवाजी ने अष्टप्रधान के पदों को वंशानुगत न बनाकर यह सुनिश्चित किया कि नियुक्तियाँ केवल योग्यता और निष्ठा के आधार पर हों। वे जानते थे कि यदि पद पैतृक हो गए तो कुछ प्रभावशाली परिवारों के हाथों में सत्ता का संकेंद्रण हो जाएगा, जो भविष्य में राजतंत्र के लिए चुनौती बन सकता था। इस नीति ने कुशल प्रशासकों के चयन को प्रोत्साहित किया और मंत्रियों के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा तथा उत्तरदायित्व की भावना को बनाए रखा, जिससे प्रशासनिक तंत्र अधिक प्रभावी बना रहा।

8. (1) पंडितराव - धार्मिक मामलों के मंत्री
अष्टप्रधान परिषद में प्रत्येक मंत्री का विशिष्ट दायित्व निर्धारित था। पंडितराव धार्मिक अनुष्ठानों, दान और सामाजिक नियमों के अनुपालन की देखरेख करते थे। इसके विपरीत, अमात्य का मुख्य कार्य राजस्व और वित्त प्रबंधन का निरीक्षण करना था, जबकि सुमंत विदेशी संबंधों और कूटनीतिक पत्राचार का प्रभारी था। सचिव राजकीय पत्राचार और शासकीय आदेशों के प्रारुप तैयार करने हेतु उत्तरदायी थे। यह सुव्यवस्थित कार्य विभाजन प्रशासन में पारदर्शिता और कार्यकुशलता सुनिश्चित करने के लिए किया गया था ताकि निर्णय लेना सुगम हो।

9. (1) I, II और III
शिवाजी ने राजस्व संग्रह के लिए मलिक अंबर की प्रणाली को अपनाया, जिसमें भूमि मापन हेतु 'काठी' का उपयोग किया गया। उन्होंने मध्यस्थों के प्रभाव को कम करते हुए कृषकों के साथ प्रत्यक्ष संबंध स्थापित किया, जिसे रैयतवाड़ी व्यवस्था का प्रारंभिक रुप माना जा सकता है। प्रारंभ में राज्य का हिस्सा

Click Here to Buy book on Amazon

उन्होंने मराठा शक्ति को केवल दक्कन तक सीमित न रखकर उसे एक अखिल भारतीय साम्राज्य के रूप में परिवर्तित करने का सफल प्रयास किया। उनकी तीव्र सैन्य गतिविधियों ने मुगल साम्राज्य की नींव हिला दी और मालवा, बुंदेलखंड तथा गुजरात जैसे क्षेत्रों में मराठा प्रभुत्व स्थापित किया। इस नीति के परिणामस्वरूप मराठा साम्राज्य भारत की सबसे बड़ी राजनीतिक शक्ति बन गया, जिसने दिल्ली को प्रत्यक्ष प्रभावित किया।

29. (1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
मराठा साम्राज्य के विस्तार के साथ विभिन्न शक्तिशाली परिवारों ने विशिष्ट क्षेत्रों में अपनी सत्ता स्थापित की। सिंधिया राजवंश ने ग्वालियर को अपना मुख्य केंद्र बनाया, जबकि होल्करों ने इंदौर में अपनी शक्ति सुदृढ़ की। भोंसले परिवार नागपुर से शासन करता था और गायकवाड़ वंश ने गुजरात के बड़ौदा को अपना मुख्यालय बनाया। ये प्रमुख एक परिसंघ के रूप में कार्य करते थे, जो सिद्धांत रूप में पेशवा और छत्रपति के प्रति निष्ठावान थे। यह क्षेत्रीय विभाजन मराठा साम्राज्य की विकेंद्रीकृत प्रशासनिक व्यवस्था का आधार बना।

30. (4) मुगल साम्राज्य
बाजीराव प्रथम ने यह प्रसिद्ध कथन मुगल साम्राज्य के संदर्भ में कहा था। वे मानते थे कि मुगलों की केंद्रीय सत्ता अब अत्यंत निर्बल हो चुकी है और यदि इसके मूल आधार अर्थात दिल्ली पर प्रहार किया जाए, तो इसके अधीन आने वाले अन्य प्रांत स्वतः ही मराठों के अधिकार में आ जाएंगे। उन्होंने मराठा सरदारों को प्रोत्साहित किया कि वे अपनी सीमाओं का विस्तार उत्तर की ओर करें। इस दूरदर्शी रणनीति ने मराठों को एक क्षेत्रीय शक्ति से ऊपर उठाकर भारत के भविष्य के नियंता के रूप में स्थापित किया।

31. (1) I, II, IV, III
बाजीराव प्रथम के सैन्य अभियानों का क्रम उनकी रणनीतिक प्रतिभा को दर्शाता है। 1728 में पालखेड़ के युद्ध में उन्होंने हैदराबाद के निज़ाम को पराजित किया, जिसके पश्चात मुंगी शेवगाँव की संधि हुई। इसके उपरांत उन्होंने अपनी सेनाओं का रुख उत्तर की ओर किया और 1737 में दिल्ली पर साहसिक अभियान चलाया, जिससे मुगल सम्राट भयभीत हो गया। अंततः 1738 में भोपाल के युद्ध में उन्होंने निज़ाम और मुगलों की संयुक्त सेनाओं को पराजित किया। यह कालक्रम मराठा साम्राज्य के चरमोत्कर्ष का स्पष्ट प्रमाण है।

32. (2) सैन्य टुकड़ियों के रखरखाव हेतु मराठा प्रमुखों को भू-राजस्व अनुदान
सरंजाम प्रणाली मराठा प्रशासन की एक विशिष्ट सैन्य-सामंती व्यवस्था थी, जिसका विस्तार विशेष रूप से पेशवा काल में हुआ। इस प्रणाली के अंतर्गत मराठा सरदारों को अपनी सैन्य टुकड़ियों के रखरखाव और व्यक्तिगत सेवाओं के बदले विशिष्ट क्षेत्रों से भू-राजस्व वसूलने का अधिकार दिया जाता था। यह अनुदान आनुवंशिक नहीं था, किंतु कालांतर में यह वंशानुगत रूप लेने लगा। यद्यपि इसने साम्राज्य के त्वरित विस्तार में सहायता की, परंतु इसने केंद्रीय सत्ता को कमजोर कर विभिन्न क्षेत्रीय केंद्रों को जन्म दिया, जिससे आंतरिक कलह बढ़ी।

33. (2) दोराहा सराय की संधि
1737-38 में भोपाल के युद्ध में पेशवा बाजीराव प्रथम ने हैदराबाद के निज़ाम को बुरी तरह पराजित किया था। इस विजय के परिणामस्वरूप जनवरी 1738 में 'दोराहा सराय की संधि' पर हस्ताक्षर किए गए। इस संधि के तहत निज़ाम को नर्मदा और चंबल नदियों के मध्य के संपूर्ण मालवा क्षेत्र पर मराठों के अधिकार को औपचारिक रूप से स्वीकार करना पड़ा। साथ ही, निज़ाम ने मराठों को युद्ध की क्षतिपूर्ति के रूप में 50 लाख रुपये देने का भी वचन दिया। इस समझौते ने उत्तर भारत में मराठा प्रभुत्व सुदृढ़ कर दिया।

34. (4) I, II, III, IV और V
पेशवा बालाजी बाजीराव के शासनकाल में मराठा साम्राज्य अपनी भौगोलिक सीमाओं के चरम पर था। 1758 तक मराठों ने मालवा, गुजरात और बुंदेलखंड पर अपना पूर्ण नियंत्रण स्थापित कर लिया था। उन्होंने बंगाल के नवाब को भी चौथ देने हेतु विवश किया और रघुनाथ राव के नेतृत्व में पंजाब पर आक्रमण कर अटक के दुर्ग पर अपना ध्वज फहराया। इस प्रकार उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी तक और पूर्व में कटक से पश्चिम में अटक तक मराठा सैन्य अभियानों का राजनीतिक वर्चस्व पूरी तरह स्थापित हो चुका था।

35. (3) परिसंघ एक अत्यधिक केंद्रीकृत राजकोष और एक एकीकृत स्थायी सेना बनाए रखता था।
मराठा परिसंघ वास्तव में विभिन्न शक्तिशाली सरदारों का एक शिथिल गठबंधन था, जो नाममात्र हेतु छत्रपति को अपना प्रमुख मानते थे और व्यावहारिक रूप से पेशवा के निर्देशन में कार्य करते थे। इस परिसंघ में कोई अत्यधिक केंद्रीकृत राजकोष या एकीकृत स्थायी सेना नहीं थी। प्रत्येक प्रमुख जैसे सिंधिया, होल्कर और गायकवाड़ अपने क्षेत्रों में आंतरिक रूप से स्वतंत्र थे और उनकी अपनी पृथक सेनाएँ तथा राजस्व व्यवस्थाएँ थीं। केंद्रीय नियंत्रण की इसी कमी ने अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष के समय मराठा शक्ति को दुर्बल बना दिया।

36. (4) सैन्य सेवा के बदले प्रमुखों को प्रदान किए गए चौथ के हिस्से
मराठा राजस्व प्रशासन में 'मोकासा' वह हिस्सा था जो एकत्रित की गई चौथ का एक बड़ा भाग होता था और सैन्य सेवा के बदले मराठा सरदारों को प्रदान किया जाता था। सामान्यतः एकत्रित राजस्व को विभिन्न भागों में विभाजित किया जाता था, जिसमें मोकासा का उपयोग सैनिकों के वेतन और युद्ध व्यय को पूरा करने हेतु किया जाता था। यह व्यवस्था सरदारों को अपने क्षेत्र में संसाधन जुटाने और साम्राज्य की सैन्य शक्ति को बनाए रखने हेतु प्रोत्साहित करती थी। यह मराठों की विकेंद्रीकृत वित्तीय संरचना का एक अभिन्न अंग था।

37. (1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
मराठा इतिहास की महत्वपूर्ण संधियाँ विभिन्न युगों की सूचक हैं। 1665 में मुगलों और शिवाजी के मध्य पुरंदर की संधि हुई,

Downloaded from www.pdf.tube

कर सके, जो समुद्र में उनके लिए एक स्थायी चुनौती बने रहे। यह क्षेत्रीय प्रतिस्पर्धा निरंतर बनी रही।

74. (1) बाबती
मराठा राजस्व प्रणाली में एकत्रित की गई चौथ का विभाजन अत्यंत व्यवस्थित ढंग से किया जाता था। चौथ के कुल संग्रह का 25 प्रतिशत भाग सीधे छत्रपति हेतु आरक्षित होता था, जिसे 'बाबती' कहा जाता था। शेष हिस्से को सैनिकों, सचिवों और अन्य अधिकारियों के मध्य विभाजित किया जाता था। बाबती के माध्यम से राजा की व्यक्तिगत प्रतिष्ठा और उनके परिवार के व्यय हेतु निश्चित आय सुनिश्चित की जाती थी। यह विभाजन न केवल राजस्व के वितरण को स्पष्ट करता था, बल्कि यह छत्रपति की सर्वोच्चता और प्रशासनिक तंत्र के मध्य संतुलन बनाए रखने का साधन था।

75. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
मराठा इतिहास के निर्णायक मोड़ विभिन्न शत्रुओं के साथ संघर्ष से जुड़े हैं। शाइस्ता खान पर शिवाजी द्वारा किया गया साहसिक रात्रि आक्रमण पुणे की प्रसिद्ध घटना है। प्रतापगढ़ के युद्ध में अफजल खान की पराजय ने शिवाजी की सैन्य प्रतिभा को वैश्विक पहचान दिलाई। राजा जय सिंह ने अपनी कूटनीति से शिवाजी को पुरंदर की संधि हेतु विवश किया, जो मराठों के लिए एक रणनीतिक पीछे हटना था। अंततः अहमद शाह अब्दाली ने पानीपत के तीसरे युद्ध में मराठों को पराजित किया, जिसने भारतीय इतिहास के भविष्य की दिशा को सदैव के लिए परिवर्तित कर दिया।

76. (2) देशमुख - राजकीय भूमि के प्रबंधन हेतु पेशवा द्वारा नियुक्त राजस्व अधिकारी
मराठा राजस्व शब्दावली में चौथ और सरदेशमुखी क्रमशः सुरक्षा और वंशानुगत अधिकारों के बदले वसूले जाने वाले कर थे। मीरासदार वे कृषक थे जिनके पास भूमि पर स्थायी मालिकाना हक होता था। हालांकि, देशमुख का पद पेशवा द्वारा नियुक्त अधिकारी का नहीं था; बल्कि यह एक प्राचीन, वंशानुगत स्थानीय पद था जो परगना स्तर पर राजस्व और कानून व्यवस्था हेतु उत्तरदायी होता था। शिवाजी ने अपनी केंद्रीय सत्ता को सुदृढ़ करने हेतु इन शक्तिशाली देशमुखों के प्रभाव को कम करने का प्रयास किया था, ताकि प्रशासन सीधे किसानों से जुड़ सके।

77. (3) लॉर्ड हेस्टिंग्स
लॉर्ड हेस्टिंग्स, जो 1813 में भारत के गवर्नर-जनरल बने, ने ब्रिटिश साम्राज्य के विस्तार हेतु अत्यंत आक्रामक नीति अपनाई। उन्होंने पिंडारियों के दमन के बहाने मराठा सरदारों को घेरने की रणनीति तैयार की और उन पर अपमानजनक संधियाँ थोपीं। हेस्टिंग्स की इन सैन्य और कूटनीतिक कार्यवाहियों ने अंततः तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध को जन्म दिया। उनकी रणनीतिक कुशलता के परिणामस्वरूप 1818 तक मराठा परिसंघ पूरी तरह ध्वस्त हो गया और पेशवा पद का अंत हुआ। इस प्रकार हेस्टिंग्स ने मराठा शक्ति को समाप्त कर ब्रिटिश सर्वोच्चता को अंतिम रूप प्रदान किया।

78. (4) मराठा प्रतिरोध का अंत, जिससे तृतीय युद्ध समाप्त हुआ
असीरगढ़ के अभेद्य दुर्ग पर 1819 में अंग्रेजों का अधिकार मराठा प्रतिरोध के अंतिम अध्याय के रूप में महत्वपूर्ण है। यह दुर्ग दक्कन के द्वार के रूप में जाना जाता था और सामरिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण था। इसके पतन ने मध्य भारत में मराठों और उनके समर्थकों की बची हुई सैन्य शक्ति को पूरी तरह समाप्त कर दिया। इस विजय के साथ ही तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध औपचारिक रूप से समाप्त हुआ और अंग्रेजों के विरुद्ध संगठित सशस्त्र विद्रोह की सभी संभावनाएँ क्षीण हो गईं। यह घटना मराठा साम्राज्य के विलोपन का प्रतीक बनी।

79. (1) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध के पश्चात मराठा नेताओं के भाग्य का निर्धारण अंग्रेजों द्वारा किया गया। पेशवा बाजीराव द्वितीय को पेंशन देकर बिठूर निर्वासित कर दिया गया, जिससे पेशवा वंश का शासन समाप्त हुआ। नागपुर के अप्पा साहब को पदच्युत किया गया और वे अंततः भागने में सफल रहे। होल्कर शासक मल्हार राव द्वितीय ने महिदपुर की हार के बाद मंदसौर की संधि की और ब्रिटिश संरक्षण स्वीकार किया। अंत में, अंग्रेजों ने मराठा भावनाओं को संतुष्ट करने हेतु शिवाजी के वंशज प्रताप सिंह को सतारा के एक छोटे से राज्य में शासक के रूप में स्थापित किया।

80. (2) व्यक्तिगत क्षेत्रीय महत्वाकांक्षाओं द्वारा संचालित एक शिथिल परिसंघ
मराठा साम्राज्य अपनी प्रकृति में एक शिथिल परिसंघ था, जो विशेष रूप से पेशवा काल में उभरा। यद्यपि छत्रपति और पेशवा केंद्रीय सत्ता के प्रतीक थे, किंतु व्यावहारिक रूप से सिंधिया, होल्कर और भोंसले जैसे सरदार अपने क्षेत्रों में पूर्णतः स्वतंत्र थे। उनकी व्यक्तिगत क्षेत्रीय महत्वाकांक्षाएँ अक्सर राष्ट्रीय हितों से ऊपर होती थीं, जिसके कारण उनमें आंतरिक समन्वय का अभाव रहा। यह व्यवस्था प्रारंभिक विस्तार हेतु तो प्रभावी थी, किंतु एक संगठित ब्रिटिश शक्ति का सामना करने में विफल रही। अंततः इसी खंडित स्वरुप ने मराठा साम्राज्य के पतन का मार्ग प्रशस्त किया।

NODIA

www.nodia.in

सरकार के साथ 'सूरत की संधि' की। इस संधि के तहत उन्होंने साल्सेट और बेसिन के क्षेत्र अंग्रेजों को सौंपने का वचन दिया, जिससे प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध का सूत्रपात हुआ और मराठा राजनीति में ब्रिटिश हस्तक्षेप बढ़ गया।

47. (1) वड्गाँव का समझौता
प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध के दौरान, 1779 में महादजी सिंधिया और नाना फड़नवीस के नेतृत्व में मराठा सेना ने ब्रिटिश सेना को वडगाँव के पास घेर लिया और उन्हें करारी शिकस्त दी। रसद की कमी और मराठों के तीव्र प्रहारों से विवश होकर ब्रिटिश कमांडरों को 'वडगाँव के समझौते' पर हस्ताक्षर करने पड़े। इस अपमानजनक समझौते के तहत अंग्रेजों को 1773 के पश्चात जीते गए सभी क्षेत्र वापस करने और रघुनाथ राव का साथ छोड़ने का वचन देना पड़ा। इसने मराठा सैन्य शक्ति की श्रेष्ठता सिद्ध कर दी।

48. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
आंग्ल-मराठा युद्धों के दौरान विभिन्न निर्णायक लड़ाइयाँ लड़ी गईं। 1803 में असई के युद्ध में आर्थर वेलेज़्ली ने सिंधिया और भोंसले की संयुक्त सेना को पराजित किया। लासवाड़ी के युद्ध में सिंधिया की उत्तरी सेना को अंग्रेजों ने शिकस्त दी। तृतीय युद्ध के दौरान 1817 में किरकी के युद्ध में अंतिम पेशवा बाजीराव द्वितीय की पराजय हुई, जबकि महिदपुर के युद्ध में होल्कर सेना को हार का सामना करना पड़ा। इन पराजयों ने मराठा सरदारों की सैन्य शक्ति को नष्ट कर ब्रिटिश सर्वोच्चता की स्थापना का मार्ग प्रशस्त किया।

49. (1) I, II और III
सालाबाई की संधि ने प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध को समाप्त किया और अंग्रेजों तथा मराठों के मध्य लगभग बीस वर्षों की शांति स्थापित की। इस संधि के माध्यम से दोनों पक्षों ने एक-दूसरे के विजित क्षेत्रों को वापस कर दिया, यद्यपि अंग्रेजों ने साल्सेट द्वीप पर अपना अधिकार बनाए रखा। मराठों ने रघुनाथ राव का समर्थन न करने का वचन दिया और अंग्रेजों ने माधव राव द्वितीय को वैध पेशवा के रूप में मान्यता दी। इस समय मराठों ने कोई सहायक संधि स्वीकार नहीं की थी, जिससे उनकी स्वायत्तता सुरक्षित रही।

50. (1) पेशवा बाजीराव द्वितीय और लॉर्ड वेलेज़्ली
1802 में अपनी ही सेना और होल्कर के आक्रमण से भयभीत होकर पेशवा बाजीराव द्वितीय ने अंग्रेजों की शरण ली। उन्होंने लॉर्ड वेलेज़्ली के साथ 'बेसिन की संधि' पर हस्ताक्षर किए, जो वास्तव में एक अपमानजनक सहायक संधि थी। इसके तहत पेशवा ने अपनी स्वतंत्रता खो दी और पुणे में एक ब्रिटिश रेजिडेंट रखने तथा ब्रिटिश सेना के व्यय हेतु क्षेत्र देने पर सहमत हुए। इस संधि ने मराठा सरदारों के स्वाभिमान को गहरी चोट पहुँचाई, जिसके परिणामस्वरूप द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध का आरंभ हुआ।

51. (3) ग्वालियर की संधि (1817) - गायकवाड़
द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध के पश्चात विभिन्न सरदारों को पृथक संधियों हेतु विवश किया गया। भोंसले ने देवगाँव और सिंधिया ने सुरजी-अंजनगाँव की संधि की, जबकि होल्कर ने राजघाट की संधि पर हस्ताक्षर किए। 1817 में हुई ग्वालियर की संधि वास्तव में दौलतराव सिंधिया के साथ की गई थी, जिसके माध्यम से अंग्रेजों ने उन्हें पिंडारियों के विरुद्ध सहयोग हेतु विवश किया। गायकवाड़ पहले ही अंग्रेजों के साथ मित्रतापूर्ण संबंध बना चुके थे और वे इन युद्धों में प्रत्यक्ष सम्मिलित नहीं थे। यह युग्म पूर्णतः त्रुटिपूर्ण है।

52. (4) मराठा प्रमुखों के मध्य आंतरिक विभाजन और आपसी वैमनस्य
मराठों की अंतिम पराजय का सबसे प्रमुख कारक उनके शक्तिशाली सरदारों के मध्य व्याप्त पारस्परिक ईर्ष्या, अविश्वास और आंतरिक कलह थी। सिंधिया, होल्कर और भोंसले जैसे प्रमुख अक्सर एक-दूसरे के विरुद्ध षड्यंत्र करते थे और साझा शत्रु अंग्रेजों के विरुद्ध एकजुट होने में विफल रहे। इस राजनीतिक अस्थिरता और एकीकृत नेतृत्व के अभाव का अंग्रेजों ने अपनी 'फूट डालो और राज करो' की नीति से भरपूर लाभ उठाया। यदि मराठा सरदार एकजुट रहते, तो अंग्रेजों हेतु उन्हें पराजित करना अत्यंत दुष्कर होता।

53. (3) संप्रभुता का उल्लंघन करते हुए पिंडारियों के विरुद्ध सैन्य अभियान
तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध का तात्कालिक कारण लॉर्ड हेस्टिंग्स द्वारा पिंडारियों के विरुद्ध छेड़ा गया आक्रामक सैन्य अभियान था। पिंडारी अनियमित सैनिक थे जो प्रायः मराठा सेनाओं के साथ मिलकर कार्य करते थे और मराठा सरदारों का उन्हें संरक्षण प्राप्त था। जब अंग्रेजों ने मराठा क्षेत्रों की संप्रभुता का उल्लंघन करते हुए इन क्षेत्रों में सेनाएँ भेजीं, तो इसे मराठों ने अपनी स्वतंत्रता पर प्रहार माना। इससे उत्पन्न तनाव ने पेशवा और अन्य सरदारों को अंग्रेजों के विरुद्ध अंतिम विद्रोह हेतु प्रेरित किया।

54. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
मराठा प्रशासन में पदों का स्पष्ट वर्गीकरण था। मामलेदार प्रांतीय स्तर का मुख्य अधिकारी होता था जो राजस्व और सामान्य प्रशासन की देखरेख करता था। कमाविसदार स्थानीय स्तर पर इसी प्रकार के कार्यों का संपादन करता था। केंद्रीय स्तर पर फड़नवीस का पद अत्यंत महत्वपूर्ण था, जो मुख्य लिपिक के रूप में सभी वित्तीय खातों और पत्राचार की जाँच करता था। पोतनीस कोषागार का प्रभारी होता था, जिसका कार्य राजकीय धन के आय-व्यय का व्यवस्थित विवरण रखना था। यह सुव्यवस्थित नौकरशाही वित्तीय स्थायित्व का आधार थी।

55. (4) आवश्यक सेवाएँ प्रदान करने वाले ग्रामीण शिल्पी और सेवक
'बारा बलुतेदार' प्रणाली मराठा काल की ग्रामीण अर्थव्यवस्था और सामाजिक संरचना की एक विशिष्ट विशेषता थी। इसके अंतर्गत गाँव के बारह विभिन्न शिल्पी और सेवक जैसे सुतार, लोहार और कुम्हार सम्मिलित थे, जो ग्रामीणों को आवश्यक सेवाएँ प्रदान करते थे। इन सेवाओं के बदले उन्हें कृषकों से उपज का एक निश्चित हिस्सा प्राप्त होता था। यह व्यवस्था

Click Here to Buy book on Amazon

ग्रामीण समुदायों को आत्मनिर्भर बनाती थी और सामाजिक स्थिरता सुनिश्चित करती थी। इसने मराठा काल में ग्रामीण जीवन की निरंतरता बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

56. (3) केवल I, II, III और IV
मराठा साम्राज्य के पतन के पीछे कई गहरे संरचनात्मक कारण थे। उनकी अर्थव्यवस्था लूटपाट और अनिश्चित करों पर अत्यधिक निर्भर थी, जिससे स्थायी वित्तीय आधार विकसित नहीं हो सका। उन्होंने आधुनिक विज्ञान और तकनीक की उपेक्षा की, जिसके कारण उनकी सैन्य शक्ति अंग्रेजों की तुलना में पिछड़ गई। इसके अतिरिक्त, उत्तराधिकार के स्पष्ट नियमों के अभाव ने बार-बार गृहयुद्धों को जन्म दिया। जागीरदारी प्रथा के पुनरुत्थान ने केंद्रीय सत्ता को निर्बल कर दिया। उन्होंने छापामार युद्ध नीति का सही समन्वय नहीं किया।

57. (3) तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध
1817-1818 के तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध में मराठों की अंतिम और निर्णायक पराजय हुई। अंग्रेजों ने पेशवा बाजीराव द्वितीय को आत्मसमर्पण हेतु विवश किया और मराठा साम्राज्य के गौरवपूर्ण पेशवा पद को स्थायी रूप से समाप्त कर दिया। बाजीराव द्वितीय को पदच्युत कर आठ लाख रुपये की वार्षिक पेंशन के साथ कानपुर के निकट बिठूर निर्वासित कर दिया गया। उनके अधिकांश क्षेत्रों को बॉम्बे प्रेसीडेंसी में सम्मिलित कर लिया गया, जिससे भारत में मराठा संप्रभुता का अंत हुआ और ब्रिटिश सर्वोच्चता निर्विवाद रूप से स्थापित हो गई।

58. (1) II, III, IV, I
पेशवाओं का कालक्रम मराठा शक्ति के उत्थान और विकास की गाथा है। बालाजी विश्वनाथ ने इस पद को प्रभावशाली बनाकर वंशानुगत बनाया। उनके पुत्र बाजीराव प्रथम ने अपनी सैन्य प्रतिभा से मराठा साम्राज्य का भारत भर में विस्तार किया। इसके पश्चात बालाजी बाजीराव के काल में साम्राज्य अपनी चरम सीमा पर पहुँचा, किंतु इसी दौरान पानीपत की पराजय हुई। अंततः माधव राव प्रथम ने अत्यंत अल्प समय में अपनी सूझबूझ से साम्राज्य की खोई हुई प्रतिष्ठा को पुनः स्थापित करने का ऐतिहासिक कार्य किया।

59. (4) बालाजी बाजीराव
पेशवा बालाजी बाजीराव के शासनकाल में मराठा सैन्य शक्ति अपने चरमोत्कर्ष पर थी। 1758 में रघुनाथ राव के नेतृत्व में मराठा सेनाओं ने एक अभूतपूर्व साहसिक अभियान किया, जिसके तहत उन्होंने न केवल दिल्ली पर अपना नियंत्रण सुदृढ़ किया बल्कि पंजाब में आगे बढ़ते हुए सिंधु नदी को पार किया। उन्होंने अटक जैसे रणनीतिक स्थानों पर अधिकार कर लिया, जहाँ पहली बार मराठा ध्वज फहराया गया। इस प्रकार उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी तक मराठा सैन्य अभियानों का राजनीतिक वर्चस्व पूरी तरह स्थापित हो चुका था।

60. (4) I, II और III
1749 में शाहू की मृत्यु के पश्चात और सांगोला के समझौते के फलस्वरूप छत्रपति की शक्तियाँ पूर्णतः औपचारिक रह गईं। छत्रपति सतारा के राजमहल तक सीमित हो गए और वे केवल एक नाममात्र के प्रमुख बन गए थे। वास्तविक कार्यकारी और प्रशासनिक शक्तियाँ पेशवा के हाथों में केंद्रित हो गईं, जो पुणे से शासन करते थे। इसी कारण साम्राज्य की राजधानी व्यवहार में सतारा से पुणे स्थानांतरित हो गई। सभी राजकीय निर्णय औपचारिक रूप से छत्रपति के नाम पर होते थे, किंतु उनका निर्धारण पेशवा द्वारा ही किया जाता था।

61. (3) जयपुर
18वीं शताब्दी में मराठों ने राजपूताना के राज्यों से भारी कर वसूलना प्रारंभ कर दिया था। जयपुर राज्य विशेष रूप से मराठा मांगों का केंद्र रहा, जहाँ आंतरिक उत्तराधिकार विवादों ने मराठों को हस्तक्षेप का अवसर दिया। महादजी सिंधिया द्वारा निरंतर बढ़ते वित्तीय दबाव और कर की मांगों के कारण जयपुर के महाराजा ने जोधपुर के सहयोग से विरोध किया। इसके परिणामस्वरूप 1787 में तुंगा का युद्ध हुआ, जहाँ राजपूत सेनाओं ने मराठों को पीछे हटने पर विवश किया। यह घटना मराठों के उत्तर भारतीय प्रभुत्व के विरुद्ध महत्वपूर्ण प्रतिरोध थी।

62. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
राजस्थान में मराठों की निरंतर घुसपैठ और भारी कर की वसूली ने वहाँ के राज्यों की आर्थिक स्थिति दयनीय कर दी। मराठा सरदारों ने राजपूत शासकों के आपसी विवादों का लाभ उठाकर निरंतर हस्तक्षेप किया, जिससे राजपूताना में राजनीतिक अस्थिरता उत्पन्न हुई। इन परिस्थितियों ने न केवल कृषि और व्यापार को प्रभावित किया बल्कि राजपूतों के स्वाभिमान को भी चोट पहुँचाई। इसी असंतोष के कारण अंततः राजपूत राज्यों ने मराठों के विरुद्ध अंग्रेजों के साथ संधियाँ करना अधिक श्रेयस्कर समझा, जो उनके भविष्य हेतु निर्णायक सिद्ध हुआ।

63. (1) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
1734 में मेवाड़ के महाराजा की अध्यक्षता में हुरड़ा सम्मेलन का आयोजन राजस्थान के प्रमुख शासकों द्वारा किया गया था। इसका मुख्य उद्देश्य मराठों के बढ़ते छापों और हस्तक्षेप के विरुद्ध एक संयुक्त मोर्चा बनाना था। यद्यपि सभी शासक एकजुट होने पर सहमत हुए, किंतु पारस्परिक अविश्वास और नेतृत्व के अभाव के कारण यह योजना कभी धरातल पर नहीं उतर सकी। परिणामस्वरूप, यह सम्मेलन विफल रहा और राजपूताना में मराठा प्रभाव निर्बाध रूप से बढ़ता रहा, जिससे क्षेत्र की राजनीतिक स्थिति और अधिक जटिल हो गई।

64. (2) परिसंघ के कार्यों का प्रबंधन करने वाले पुणे के प्रमुख राजनीतिज्ञ
नाना फड़नवीस मराठा साम्राज्य के एक अत्यंत प्रभावशाली राजनीतिज्ञ और कूटनीतिज्ञ थे, जिन्होंने पानीपत के पश्चात पुणे दरबार में स्थिरता बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्हें उनकी तीक्ष्ण बुद्धि के कारण अंग्रेजों द्वारा "मराठा मैकियावेली" कहा जाता था। उन्होंने मराठा परिसंघ के विभिन्न सरदारों के मध्य संतुलन बनाए रखा और ब्रिटिश विस्तारवाद के विरुद्ध एक सशक्त गठबंधन का नेतृत्व किया। उनकी मृत्यु के साथ

NODIA

ही मराठा राजनीति का वह बौद्धिक युग समाप्त हो गया जिसने दशकों तक साम्राज्य को बिखरने से बचाए रखा था।

65. (2) मराठी भाषा में ऐतिहासिक कथाएँ और जीवनवृत्त
'बखर' मराठी भाषा में लिखे गए ऐतिहासिक जीवनवृत्त हैं, जो मराठा काल के इतिहास के पुनर्निर्माण हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण स्रोत हैं। इन प्रलेखों में राजाओं की विजयों, युद्धों के विवरण और प्रमुख ऐतिहासिक व्यक्तित्वों के जीवन का वर्णन वीरतापूर्ण शैली में किया गया है। यद्यपि इनमें कहीं-कहीं अतिशयोक्ति मिलती है, फिर भी ये उस समय की सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक स्थितियों को समझने में सहायक हैं। सभासद बखर जैसे ग्रंथ मराठा इतिहास के गौरवशाली अध्यायों पर प्रकाश डालते हैं, जो शोधकर्ताओं हेतु अमूल्य हैं।

66. (2) I, II और IV
मराठा न्याय प्रणाली प्राचीन स्मृतियों और स्थानीय परंपराओं का मिश्रण थी। स्थानीय स्तर पर पाटिल पंचायतों की सहायता से विवादों को सुलझाते थे, जहाँ न्याय सुलभ था। वित्तीय संकट के समय 'कुर्जा-पट्टी' जैसे विशेष कर लगाए जाते थे जो उनकी प्रशासनिक लचीलेपन को दर्शाते हैं। हालांकि, उनकी दंड प्रणाली आधुनिक धारणाओं के विपरीत बहुत अधिक कठोर नहीं थी; मृत्युदंड अत्यंत दुर्लभ था और प्रायः जुर्माना जैसे दंड दिए जाते थे। यह व्यवस्था ग्रामीण समाज में न्याय के प्रति जनविश्वास सुदृढ़ करने हेतु संचालित की जाती थी।

67. (3) न्यायाधीश
अष्टप्रधान परिषद में 'न्यायाधीश' सर्वोच्च न्यायिक अधिकारी होता था, जो दीवानी और फौजदारी दोनों प्रकार के मामलों की सुनवाई करता था। राजा के पश्चात वह राज्य का सबसे बड़ा न्यायविद माना जाता था और उसके निर्णय प्रायः हिंदू विधि संहिताओं पर आधारित होते थे। वह स्थानीय पंचायतों से आए अपीलीय मामलों का निपटारा करता था और यह सुनिश्चित करता था कि पूरे साम्राज्य में कानून का शासन बना रहे। इस पद की गरिमा मराठा प्रशासन में न्याय के उच्च आदर्शों को प्रतिबिंबित करती थी, जिससे समाज में स्थिरता बनी रहती थी।

68. (4) अवध
अपने चरमोत्कर्ष के दौरान मराठों ने भारत के विशाल भूभाग पर अपना प्रभाव स्थापित किया था। उन्होंने मालवा, गुजरात और बुंदेलखंड जैसे क्षेत्रों को प्रत्यक्ष रूप से अपने साम्राज्य में सम्मिलित किया और वहां अपनी प्रशासनिक व्यवस्था लागू की। हालांकि, अवध का क्षेत्र कभी भी स्थायी रूप से मराठा साम्राज्य का भाग नहीं बना। यद्यपि मराठों ने उत्तर भारत के अभियानों के दौरान अवध के नवाबों के साथ युद्ध किए और उन्हें कर देने हेतु विवश किया, किंतु वे वहां अपनी स्थायी सत्ता या प्रत्यक्ष शासन स्थापित करने में कभी सफल नहीं हो सके।

69. (1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
मराठा इतिहास के विभिन्न व्यक्तित्वों ने अपनी विशिष्ट भूमिकाएँ निभाईं। अहिल्याबाई होल्कर ने मालवा में अपने कुशल और न्यायपूर्ण शासन से आदर्श स्थापित किया। रघुनाथ राव की व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं के कारण प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध हुआ। विश्वासराव, जो पेशवा के ज्येष्ठ पुत्र थे, पानीपत के युद्ध में वीरता से लड़ते हुए शहीद हुए। शाहजी भोंसले ने शिवाजी के उत्थान से पूर्व दक्कन के सुल्तानों की सेवा में एक अनुभवी सेनापति के रूप में ख्याति प्राप्त की थी, जिससे मराठों के भविष्य का सशक्त आधार तैयार हुआ।

70. (2) नौसैनिक बल के विस्तार हेतु अपनी पैदल सेना का पूर्ण विसर्जन
18वीं शताब्दी के अंत में मराठा सैन्य तंत्र में कई गंभीर कमियाँ उत्पन्न हो गई थीं। उन्होंने अपनी पारंपरिक और प्रभावी हल्की घुड़सवार सेना की रणनीति को त्यागकर भारी यूरोपीय तोपखाने और प्रशिक्षित पैदल सेना पर ध्यान केंद्रित किया, जिसके लिए वे विदेशी भाड़े के सैनिकों पर निर्भर हो गए। इससे उनकी युद्ध शैली की मौलिकता नष्ट हो गई। रसद आपूर्ति की उचित व्यवस्था न होने के कारण स्थानीय जनता उनके विरुद्ध हो गई। हालांकि, उन्होंने नौसेना के विस्तार के लिए कभी भी अपनी पैदल सेना का परित्याग नहीं किया था।

71. (1) सूरत की संधि → पुरंदर की संधि → सालाबाई की संधि → बेसिन की संधि
आंग्ल-मराठा संबंधों की संधियों का क्रम ऐतिहासिक परिवर्तनों को दर्शाता है। सर्वप्रथम 1775 में रघुनाथ राव और अंग्रेजों के मध्य सूरत की संधि हुई, जिसने युद्ध प्रारंभ किया। इसके उपरांत 1776 में पुरंदर की संधि हुई, जिसे बॉम्बे सरकार ने नहीं माना। लंबे संघर्ष के पश्चात 1782 में सालाबाई की संधि ने प्रथम युद्ध को समाप्त कर शांति स्थापित की। अंततः 1802 में बेसिन की संधि ने मराठा स्वायत्तता को समाप्त कर उन्हें ब्रिटिश सहायक संधि के जाल में उलझा दिया, जिससे द्वितीय युद्ध की पृष्ठभूमि तैयार हुई।

72. (1) वित्तीय अभिलेखों और प्रांतीय खातों का प्रबंधन करने वाला सचिवालय
पेशवा काल के दौरान पुणे में स्थित "हुजूर कार्यालय" (दफ्तर) मराठा प्रशासन का केंद्रीय सचिवालय था। इसका प्राथमिक उत्तरदायित्व साम्राज्य के वित्तीय विवरणों, राजस्व संग्रह के आंकड़ों और प्रांतीय अधिकारियों द्वारा भेजे गए खातों का सावधानीपूर्वक प्रबंधन करना था। यहाँ अनेक लिपिक और अधिकारी कार्य करते थे जो राज्य के आय-व्यय का सूक्ष्म विवरण रखते थे। इस कार्यालय की कार्यकुशलता ने पेशवाओं को एक विशाल साम्राज्य पर प्रभावी वित्तीय नियंत्रण बनाए रखने में सक्षम बनाया। यह उस समय का सर्वाधिक संगठित प्रशासनिक केंद्र माना जाता था।

73. (3) I, III, IV और V
मराठों के अन्य शक्तियों के साथ संबंध अत्यंत जटिल थे। उन्होंने पुर्तगालियों के साथ संघर्ष किया और 1739 में बाजीराव प्रथम के नेतृत्व में बेसिन पर विजय प्राप्त की। दक्कन में प्रभुत्व हेतु हैदराबाद के निजाम और मैसूर के सुल्तानों के साथ उनके निरंतर युद्ध होते रहे। मराठों ने पश्चिमी तट पर अपनी शक्ति बढ़ाई और कुछ पुर्तगाली क्षेत्रों से कर भी वसूला। हालांकि, वे जंजीरा के सिद्दियों की नौसैनिक उपस्थिति को कभी पूर्णतः समाप्त नहीं

Downloaded from www.pdf.tube

19. (3) संभाजी
1680 में छत्रपति शिवाजी की मृत्यु के पश्चात उत्तराधिकार हेतु संक्षिप्त विवाद हुआ, जिसमें सोयराबाई ने अपने पुत्र राजाराम को सिंहासन पर बिठाने का प्रयास किया। हालांकि, शिवाजी के ज्येष्ठ पुत्र संभाजी ने अपने सैन्य कौशल और निष्ठावान समर्थकों की सहायता से शीघ्र ही सत्ता पर अधिकार कर लिया। संभाजी महाराज ने विषम परिस्थितियों में भी अपने पिता के स्वराज्य की विरासत को आगे बढ़ाया और मुगलों तथा अन्य बाह्य शक्तियों के विरुद्ध वीरतापूर्वक संघर्ष जारी रखा। उनके शासन ने मराठा प्रतिरोध को नई ऊर्जा दी।

20. (4) जुल्फिकार खान
संताजी घोरपड़े, धनाजी जाधव और महारानी ताराबाई मराठा साम्राज्य के वे प्रमुख व्यक्तित्व थे जिन्होंने मुगल सम्राट औरंगजेब के विरुद्ध अत्यंत कठिन समय में मराठा प्रतिरोध का सफल नेतृत्व किया। इन तीनों ने छापामार युद्ध पद्धति के माध्यम से मुगलों को दक्कन में उलझाए रखा और स्वराज्य की रक्षा की। इसके विपरीत, जुल्फिकार खान एक मुगल सेनापति था जिसने औरंगजेब के आदेश पर मराठा क्षेत्रों पर आक्रमण किया और जिंजी के दुर्ग की प्रसिद्ध घेराबंदी का नेतृत्व किया था, जो उसे इस समूह से पृथक करता है।

21. (3) उन्होंने 1689 में सम्राट औरंगजेब के साथ सफलतापूर्वक एक स्थायी शांति संधि की थी।
संभाजी महाराज का शासनकाल मुगलों के साथ निरंतर और भीषण संघर्ष के लिए विख्यात है। उन्होंने कभी भी औरंगजेब के साथ कोई स्थायी शांति संधि नहीं की, बल्कि औरंगजेब के विद्रोही पुत्र शहजादा अकबर को शरण देकर मुगल सम्राट को सीधी चुनौती दी। अंततः 1689 में संगमेश्वर के स्थान पर मुगल सेनापति मुकर्रब खान ने उन्हें छल से बंदी बना लिया। कारावास के दौरान उन्होंने भीषण यातनाओं के पश्चात भी आत्मसमर्पण से इनकार कर दिया और सर्वोच्च बलिदान देकर धर्मवीर के रूप में अमर हो गए।

22. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
1689 में संभाजी के बलिदान के पश्चात मराठा सत्ता का कोई एक निश्चित केंद्र नहीं रहा, जिससे मुगलों के विरुद्ध संघर्ष एक जनयुद्ध में परिवर्तित हो गया। जब राजाराम को जिंजी की ओर प्रस्थान करना पड़ा, तब स्थानीय मराठा सरदार स्वतंत्र रूप से मुगल सेनाओं पर आक्रमण करने लगे। इस विकेंद्रीकरण ने औरंगजेब की सेना को भ्रमित कर दिया क्योंकि उन्हें एक विशाल सेना के स्थान पर अनगिनत छोटे समूहों से लड़ना पड़ा। इस अप्रत्याशित सामूहिक प्रतिरोध ने मुगल साम्राज्य के विस्तारवादी स्वप्न को ध्वस्त कर दिया।

23. (4) ताराबाई
राजाराम की मृत्यु के पश्चात उनकी विधवा ताराबाई ने अपने अल्पायु पुत्र शिवाजी द्वितीय के नाम पर मराठा प्रशासन का उत्तरदायित्व संभाला। उन्होंने मुगलों के विरुद्ध संघर्ष को अत्यंत कुशलता और साहस के साथ जारी रखा, जिससे वे मराठा स्वतंत्रता संग्राम की एक प्रमुख स्तंभ बन गईं। ताराबाई ने न केवल दुर्गों की रक्षा की बल्कि मुगलों के अधीन क्षेत्रों पर प्रति-आक्रमण भी किए। उन्होंने कोल्हापुर को अपना केंद्र बनाया और अपनी प्रशासनिक सूझबूझ से मराठा सरदारों को एकजुट रखकर औरंगजेब की नीतियों को विफल कर दिया।

NODIA

24. (1) खेड़ का युद्ध
1707 में औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात मुगलों ने शाहू को मुक्त कर दिया, जिससे मराठों के मध्य उत्तराधिकार का गृहयुद्ध आरंभ हो गया। शाहू और ताराबाई की सेनाओं के मध्य पुणे के निकट खेड़ नामक स्थान पर निर्णायक युद्ध हुआ। इस संघर्ष में शाहू को बालाजी विश्वनाथ जैसे कुशल राजनीतिज्ञों का समर्थन प्राप्त हुआ, जिसके परिणामस्वरूप उनकी विजय हुई। इस जीत ने शाहू को मराठा साम्राज्य के वैध छत्रपति के रूप में स्थापित किया और इसी कालखंड से पेशवाओं की शक्ति का अभ्युदय प्रारंभ हुआ।

25. (1) केवल I और II
बालाजी विश्वनाथ को मराठा साम्राज्य का द्वितीय संस्थापक माना जाता है क्योंकि उन्होंने शाहू के शासन को स्थिरता प्रदान की। उन्होंने पेशवा के पद को अत्यंत प्रभावशाली बनाया और इसे अपने परिवार के लिए वंशानुगत करने की नींव रखी। अपनी कूटनीतिक कुशलता के माध्यम से उन्होंने मुगलों से शाहू की माता येसुबाई को मुक्त कराने में सफलता प्राप्त की। हालांकि, पानीपत का युद्ध उनके प्रपौत्र के शासनकाल में हुआ था, अतः उनका उससे कोई संबंध नहीं था। उन्होंने मराठा सरदारों को एकजुट करने में मुख्य भूमिका निभाई।

26. (3) केवल IV
1719 में बालाजी विश्वनाथ ने सैयद बंधुओं के साथ एक ऐतिहासिक संधि की, जिसके तहत मुगलों ने शाहू को स्वराज्य के वैध शासक के रूप में मान्यता दी। मराठों को दक्कन के छह सूबों से चौथ और सरदेशमुखी वसूलने का विधिक अधिकार मिला, जिसके बदले में वे मुगल सेवा हेतु सैन्य सहायता देने पर सहमत हुए। इस संधि ने उत्तर भारत में मराठों के प्रभाव का द्वार खोल दिया। हालांकि, इस समझौते में अवध जैसे उत्तर भारतीय क्षेत्रों पर अधिकार का कोई प्रावधान सम्मिलित नहीं था, जो इसे असत्य बनाता है।

27. (4) रिचर्ड टेम्पल
ब्रिटिश इतिहासकार सर रिचर्ड टेम्पल ने 1719 की संधि को मराठा साम्राज्य का 'महाधिकार पत्र' (मैग्ना कार्टा) कहा था। इसका कारण यह था कि इस प्रलेख ने मराठों को मुगल साम्राज्य के भीतर एक वैधानिक और स्वायत्त शक्ति के रूप में स्थापित कर दिया था। इसके माध्यम से मराठों को न केवल स्वराज्य पर पूर्ण नियंत्रण मिला, बल्कि दक्कन के विस्तृत क्षेत्रों से कर वसूलने का विधिक अधिकार भी प्राप्त हुआ। इसने मराठों की बढ़ती सैन्य शक्ति को राजनीतिक और प्रशासनिक मान्यता प्रदान की।

28. (2) मराठा राज्य का एक अखिल भारतीय साम्राज्य के रूप में विस्तार
पेशवा बाजीराव प्रथम ने 'हिंदू पद पादशाही' की विचारधारा के साथ उत्तर की ओर विस्तार की महत्वाकांक्षी नीति अपनाई।

अध्याय 13
मध्यकालीन कला, स्थापत्य, साहित्य एवं संगीत

1. इस्लामी निर्माताओं द्वारा भारत में शुरू की गई वास्तुकला की चापकीय प्रणाली को क्या परिभाषित करता है?
(1) दो ऊर्ध्वाधर स्तंभों के बीच क्षैतिज शहतीरों का उपयोग
(2) शीर्ष-प्रस्तर (कीस्टोन) का उपयोग करके भार वहन करने वाले मेहराबों और गुंबदों का निर्माण
(3) बिना किसी गारे के परस्पर जुड़े हुए पत्थर के ब्लॉकों का विशेष उपयोग
(4) एक-दूसरे पर टिके क्षैतिज स्लैब के साथ कोणीय छतों का निर्माण
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

2. भारत-इस्लामी स्थापत्य संश्लेषण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: दिल्ली सल्तनत की स्थापना के कुछ ही दशकों के भीतर स्वदेशी शहतीरी प्रणाली को पूरी तरह से चापकीय प्रणाली द्वारा प्रतिस्थापित कर दिया गया था।
कथन II: भारतीय राजगीरों ने कठोर ज्यामितीय सतही डिजाइनों में पुष्प रूपांकनों को शामिल करके इस्लामी वास्तुकला की आवश्यकताओं के अनुरूप खुद को ढाल लिया।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

3. भारत-इस्लामी वास्तुकला के संश्लेषण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इस्लामी स्थापत्य परंपरा भारत में शहतीरी संरचनात्मक प्रणालियों का व्यापक उपयोग लेकर आई।
II. मध्यकाल से पहले स्वदेशी भारतीय परंपरा मुख्य रूप से चापकीय प्रणाली का उपयोग करती थी।
III. सांस्कृतिक संश्लेषण के कारण विशाल पत्थर की संरचनाओं में योजक सामग्री के रूप में गारे का व्यापक उपयोग हुआ।
ऊपर दिए गए संयोजनों में से कौन-सा सही है?
(1) केवल I और II
(2) केवल III
(3) केवल II और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

4. भारत-इस्लामी वास्तुकला के प्रारंभिक चरण के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
(1) बड़े पत्थरों को एक साथ जोड़ने के लिए प्रारंभिक सल्तनतकालीन इमारतों में योजक सामग्री के रूप में गारे का व्यापक रूप से उपयोग किया गया था।
(2) सजीव प्राणियों के चित्रण के स्थान पर सतही सजावट के लिए सुलेखन का व्यापक रूप से उपयोग किया गया था।
(3) अरबेस्क ज्यामितीय पैटर्न को कमल जैसे पारंपरिक भारतीय पुष्प रूपांकनों के साथ सफलतापूर्वक मिश्रित किया गया था।
(4) दिल्ली की सबसे पुरानी मस्जिदों का निर्माण संरचनात्मक शुद्धता सुनिश्चित करने के लिए पूरी तरह से नई खनन की गई चट्टानों से किया गया था।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

5. सूची I (वास्तुकला शब्दावली) को सूची II (परिभाषा) के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (वास्तुकला शब्दावली)
A. मिहराब
B. मिंबर
C. किबला
D. सहन
सूची II: (परिभाषा)
i. मक्का की ओर प्रार्थना की दिशा
ii. दीवार में एक आला जो प्रार्थना की दिशा को दर्शाता है
iii. मस्जिद में एक खुला प्रांगण
iv. एक मंच जहाँ से शुक्रवार का धार्मिक उपदेश (खुतबा) दिया जाता है
सही कोड का चयन कीजिए:
(1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

6. किस प्रमुख सल्तनतकालीन स्मारक को इतिहासकारों द्वारा व्यापक रूप से इसके निर्माण में 'सच्चे मेहराब' की विशेषता वाला पहला स्मारक माना जाता है?
(1) कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद
(2) गयासुद्दीन बलबन का मकबरा
(3) इल्तुतमिश का मकबरा

Click Here to Buy book on Amazon

अनुपात का विवरण देने वाला आधिकारिक दरबारी मैनुअल।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

36. सूची I (मुगल चित्रकार) को सूची II (विशेषता/संबद्ध कार्य) के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (मुगल चित्रकार)
A. बसावन
B. दसवंत
C. उस्ताद मंसूर
D. अबुल हसन
सूची II: (विशेषता/संबद्ध कार्य)
i. वनस्पतियों और जीवों के चित्रण के उस्ताद
ii. व्यक्ति चित्रण के लिए प्रसिद्ध और 'नादिर-उज़-ज़मान' की उपाधि से सम्मानित
iii. पृष्ठभूमि के परिदृश्यों के लिए प्रसिद्ध और 'रज़्मनामा' के चित्रकार
iv. एक प्रतिभाशाली चित्रकार जिसने 'हमजानामा' के चित्रण में योगदान दिया
सही कोड का चयन कीजिए:
(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(3) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

37. अकबर की चित्रशाला की सबसे महत्वाकांक्षी परियोजनाओं में से एक, 'हमजानामा', विशिष्ट रूप से निम्नलिखित में से किस भौतिक विशेषता द्वारा पहचानी जाती है?
(1) इसे प्राचीन पश्चिमी भारतीय परंपरा के अनुसार ताड़ के पत्तों की पट्टियों पर चित्रित किया गया था।
(2) इसे सैन्य विजय के दृश्यों को दर्शाने वाले विशाल भित्ति चित्रों के रूप में महल की दीवारों पर चित्रित किया गया था।
(3) इसे मानक पांडुलिपि कागज के बजाय कपड़े की बड़ी चादरों पर चित्रित किया गया था।
(4) इसे मुगल सम्राट के लिए हाथी दांत की पट्टियों पर उकेरा गया था।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

38. अकबर की चित्रशाला के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. 'रज़्मनामा' महाभारत का फारसी अनुवाद और विस्तृत रूप से चित्रित संस्करण है।
II. अकबर की चित्रशाला के चित्रकारों को यूरोपीय कलाकृतियों का अध्ययन करने की पूरी स्वतंत्रता थी।
III. अकबर की शाही चित्रशाला में स्वदेशी हिंदू कलाकारों की संख्या फारसी कलाकारों से काफी अधिक थी।
ऊपर दिए गए संयोजनों में से कौन-सा सही है?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

39. निम्नलिखित प्रमुख मध्यकालीन चित्रकारों में से कौन-सा एक अपवाद है, जो अकबर की शाही चित्रशाला का हिस्सा नहीं था?
(1) फर्रुख बेग
(2) मुकुंद
(3) केसु दास
(4) नैनसुख
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

40. अकबर के दरबार में 'रज़्मनामा' के अनुवाद और चित्रण ने मुख्य रूप से किस सांस्कृतिक उद्देश्य को पूरा किया?
(1) एक संश्लेषित भारत-फारसी संस्कृति को बढ़ावा देना और अभिजात वर्ग के बीच स्वदेशी महाकाव्यों की समझ बढ़ाना।
(2) राजपूत राज्यों पर मुगलों की सैन्य श्रेष्ठता और सांस्कृतिक प्रभुत्व का प्रदर्शन करना।
(3) मुगल अभिजात वर्ग के लिए शाही शैक्षिक पाठ्यक्रम के भीतर पारंपरिक इस्लामी ग्रंथों को पूरी तरह से प्रतिस्थापित करना।
(4) यूरोपीय सम्राटों के लिए विशेष रूप से राजनयिक उपहार तैयार करना।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

41. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): जहांगीर के शासनकाल के दौरान, विशाल सचित्र ऐतिहासिक पांडुलिपियों के उत्पादन में गिरावट आई थी।
कारण (R): जहांगीर का व्यक्तिगत सौंदर्यबोध व्यक्ति चित्रण, प्रकृतिवादी अध्ययन और अलग-अलग चित्रों के एल्बम के संकलन को प्राथमिकता देता था।
नीचे दिए गए कोड से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

42. जहांगीर के दरबार के किस चित्रकर को पक्षियों, जानवरों और फूलों के चित्रण में उनके कौशल के लिए 'नादिर-उल-अस्त्र' की उपाधि दी गई थी?
(1) उस्ताद मंसूर
(2) बिसनदास
(3) मनोहर
(4) गोवर्धन
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

NODIA

(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

15. निम्नलिखित मध्यकालीन स्मारकों में से कौन-सा एक अपवाद है, जिसका निर्माण सम्राट अकबर के शासनकाल के दौरान नहीं किया गया था?
(1) पुराना किला
(2) आगरा का किला
(3) लाहौर का किला
(4) फतेहपुर सीकरी
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

16. ताजमहल के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसका मौलिक स्थापत्य डिजाइन तैमूरी 'हश्त-बिहिश्त' योजना पर आधारित है।
II. यह संरचना स्वदेशी भारतीय रुपांकनों से पूरी तरह रहित है, जिसमें जानबूझकर कमल के कलश जैसे तत्वों से बचा गया है।
III. मुख्य मकबरा एक विशाल दोहरे गुंबद की संरचनात्मक अवधारणा का उपयोग करता है।
IV. संगमरमर पर फूलों की जड़ाई के काम के लिए परिष्कृत पेत्रा ड्यूरा तकनीक का व्यापक रूप से उपयोग किया गया था।
V. मुख्य चबूतरे के कोनों पर स्थित चार मीनारें भूकंप की स्थिति में क्षति को रोकने के लिए थोड़ा बाहर की ओर झुकी हुई हैं।
ऊपर दिए गए संयोजनों में से कौन-सा सही है?
(1) I, II, III और V
(2) I, III, IV और V
(3) II, IV और V
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

17. ताजमहल के स्थापत्य प्रतीकवाद के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?
(1) उद्यान और मकबरे का विन्यास दक्कन अभियानों के दौरान मुगल सेना के सैन्य शिविरों का प्रतीक है।
(2) यह परिसर स्वर्ग की एक पार्थिव प्रतिकृति का प्रतिनिधित्व करता है जिसमें मकबरा ईश्वर के सिंहासन का प्रतीक है।
(3) लाल बलुआ पत्थर की सहायक इमारतों के सामने सफेद संगमरमर का मकबरा निर्माण सामग्री के पारंपरिक हिंदू वर्ण पदानुक्रम को दर्शाता है।
(4) मीनारों की स्थिति मुगल संदर्भ में रुढ़िवादी सुन्नी इस्लाम के चार खलीफाओं का प्रतीक थी।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

NODIA

18. पूर्ववर्ती मुगल संरचनाओं के विपरीत, ताजमहल के केंद्रीय मकबरे में सफेद संगमरमर के अनन्य और व्यापक उपयोग के पीछे प्राथमिक कारण क्या था?
(1) मुमताज महल के सम्मान में स्वर्ग की शुद्ध और दिव्य प्रकृति को प्रतिबिंबित करने की शाहजहाँ की इच्छा।
(2) निर्माण चरण के दौरान धौलपुर क्षेत्र में स्थित लाल बलुआ पत्थर की खदानों का पूरी तरह से समाप्त हो जाना।
(3) उलेमाओं द्वारा जारी एक सख्त धार्मिक आदेश जिसने शाही परिवार के मकबरों में रंगीन पत्थरों के उपयोग पर प्रतिबंध लगा दिया था।
(4) अकबर युग की तुलना में शाहजहाँ के शासनकाल के दौरान लाल बलुआ पत्थर को तराशने में सक्षम कुशल कारीगरों की कमी।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

19. सूची I (ताजमहल की विशेषता/योगदानकर्ता) को सूची II (विवरण) के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (ताजमहल की विशेषता/योगदानकर्ता)
A. उस्ताद अहमद लाहौरी
B. मकराना
C. पेत्रा ड्यूरा
D. चारबाग
सूची II: (विवरण)
i. उच्च गुणवत्ता वाले सफेद संगमरमर का स्रोत
ii. अर्ध-कीमती पत्थरों की जड़ाई की तकनीक
iii. चार भागों वाला औपचारिक फारसी उद्यान विन्यास
iv. स्मारक के मुख्य वास्तुकार
सही कोड का चयन कीजिए:
(1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(2) A-i, B-iv, C-iii, D-ii
(3) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(4) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

20. एक विशिष्ट दृष्टि-भ्रम पैदा करने के लिए ताजमहल में जानबूझकर निम्नलिखित में से किस डिजाइन तत्व का उपयोग किया गया था?
(1) मीनारें आधार की तुलना में शीर्ष पर अधिक चौड़ी हैं ताकि उद्यान के स्तर से वे समान रूप से बेलनाकार दिखाई दें।
(2) रात के दौरान चांदनी को प्रतिबिंबित करने के लिए केंद्रीय गुंबद को सफेद संगमरमर से बनाने के बजाय सफेद रंग से रंगा गया है।
(3) पानी की धाराएं थोड़ी घुमावदार हैं ताकि मकबरे का प्रतिबिंब स्वयं संरचना से बड़ा दिखाई दे।
(4) अग्रभाग पर की गई सुलेखन का आकार ऊपर की ओर बढ़ता जाता है ताकि ज़मीन के स्तर से वह एक समान दिखाई दे।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

अनुवाद की देखरेख की।
(3) उन्हें सम्राट अकबर द्वारा 'मलिक-उश-शुआरा' (राजकवि) के रूप में नियुक्त किया गया था।
(4) उन्होंने हिंदू महाकाव्यों के अनुवाद में भाग लेने से मना कर दिया था।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

65. सूची I (फारसी साहित्यिक कृति) को सूची II (लेखक) के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (फारसी साहित्यिक कृति)
A. मुंतखब-उत-तवारीख
B. आइन-ए-अकबरी
C. मुंतखब-उल-लुबाब
D. पादशाहनामा
सूची II: (लेखक)
i. अब्दुल हमीद लाहौरी
ii. खफी खान
iii. अब्दुल कादिर बदायुनी
iv. अबुल फज़ल
सही कोड का चयन कीजिए:
(1) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(2) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(3) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(4) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

66. 'उर्दू' शब्द मौलिक रूप से एक तुर्की शब्द से निकला है। इस मूल शब्द का अर्थ क्या है?
(1) सैन्य शिविर (लश्कर)
(2) कविता
(3) बाजार
(4) दरबार
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

67. मध्यकाल में अपने प्रारंभिक चरण के दौरान, दक्कन में सूफी संतों द्वारा उपयोग किए जाने वाले उर्दू भाषा के प्रारंभिक काव्य रूप को क्या कहा जाता था?
(1) डिंगल
(2) अपभ्रंश
(3) रेखता
(4) संस्कृतनिष्ठ हिंदी
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

68. उर्दू/हिंदवी भाषा के विकास से जुड़े प्रारंभिक व्यक्तित्वों के संबंध में गलत सुमेलित युग्म की पहचान कीजिए:
(1) अमीर खुसरो - अपनी कविता और पहेलियों में हिंदवी के प्रारंभिक उपयोग का श्रेय दिया जाता है
(2) वली दक्कनी - अक्सर दिल्ली में शास्त्रीय उर्दू गजल के प्रणेता के रूप में माने जाते हैं
(3) मीर तकी मीर - 18वीं शताब्दी के उर्दू कविता के दिल्ली स्कूल की एक प्रमुख हस्ती
(4) मुहम्मद कुली कुतुब शाह - पूरी तरह से शास्त्रीय अरबी में राजआदेश जारी करने वाले पहले शासक
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

69. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन उर्दू भाषा की भाषाई नींव का सबसे उपयुक्त वर्णन करता है?
(1) यह पूरी तरह से द्रविड़ वाक्य विन्यास और व्याकरणिक संरचनाओं से विकसित हुई है।
(2) यह क्षेत्रीय अदालतों में फारसी को प्रतिस्थापित करने के लिए ब्रिटिश प्रशासकों द्वारा बनाई गई थी।
(3) यह खड़ी बोली के व्याकरण से विकसित हुई है, जिसमें फारसी, अरबी और तुर्की शब्दावली को शामिल किया गया है।
(4) यह विशुद्ध रूप से शास्त्रीय फारसी की एक बोली है जिसमें कोई स्वदेशी भारतीय भाषाई जड़ें नहीं हैं।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

70. निम्नलिखित क्षेत्रों को उर्दू साहित्य के केंद्रों के रूप में उनके ऐतिहासिक उदय के कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. दिल्ली
II. दक्कन (गोलकुंडा/बीजापुर)
III. लखनऊ
उपर्युक्त में से कौन-सा क्रम सही है?
(1) I, II, III
(2) II, I, III
(3) III, I, II
(4) II, III, I
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

71. सूची I (शास्त्रीय संगीत रूप/शब्दावली) को सूची II (विवरण) के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (शास्त्रीय संगीत रूप/शब्दावली)
A. ध्रुपद
B. ख्याल
C. तराना
D. ठुमरी
सूची II: (विवरण)
i. अपनी रुमानी अभिव्यक्ति के लिए जानी जाने वाली एक अर्ध-शास्त्रीय शैली
ii. एक राजसी, कठोर और आध्यात्मिक रूप से केंद्रित शास्त्रीय गायन शैली
iii. अर्थहीन शब्दांशों का उपयोग करने वाला एक लयबद्ध गायन रूप
iv. एक लचीली शास्त्रीय शैली जिसका शाब्दिक अर्थ 'कल्पना' है
सही कोड का चयन कीजिए:
(1) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(2) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-ii, B-i, C-iii, D-iv

Downloaded from www.pdf.tube

I. पत्थर की कमी के कारण बंगाल शैली में सतह की सजावट के लिए अक्सर टेराकोटा टाइलों और ईंटों का उपयोग किया जाता था।
II. जौनपुर शैली की विशेषता मुख्य मस्जिद के अग्रभाग पर विशाल ढालू तोरण हैं।
III. जौनपुर की मस्जिदों में उनके प्रांगणों के कोनों पर ऊँची और विस्तृत मीनारें प्रमुखता से दिखाई देती थीं।
IV. बीजापुर शैली में विस्तृत पत्थर के ब्रैकेट द्वारा समर्थित गहराई से झुकी हुई छज्जों का उपयोग किया गया था।

ऊपर दिए गए संयोजनों में से कौन-सा गलत है?
(1) केवल I और II
(2) केवल III
(3) केवल II और IV
(4) I, III और IV
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

29. निम्नलिखित ऐतिहासिक स्मारकों में से उनके क्षेत्रीय स्थापत्य वर्गीकरण के आधार पर विषम को पहचानिए:
(1) इब्राहिम रौज़ा
(2) बीजापुर की जामा मस्जिद
(3) बड़ा गुंबद
(4) गोल गुंबज
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

30. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): बीजापुर का गोल गुंबज अपनी प्रतिध्वनि दीर्घा के लिए प्रसिद्ध है जहाँ गुंबद के एक छोर से की गई धीमी आवाज़ भी दूसरे छोर पर सुनी जा सकती है।
कारण (R): यह संरचना आदिल शाहियों द्वारा विकसित परस्पर काटते हुए मेहराबों की एक अत्यंत जटिल प्रणाली का उपयोग करती है।
नीचे दिए गए कोड से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

31. प्रारंभिक मुगल चित्रकला शैली के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: प्रारंभिक मुगल चित्रकला शुरू में विदेशी कलात्मक परंपराओं से स्वतंत्र विशुद्ध रूप से स्वदेशी परंपरा के रूप में विकसित हुई।
कथन II: प्रारंभिक शैली मौलिक रूप से पांडुलिपि चित्रण की एक कला थी, जो फारसी सफ़वी तकनीकों से प्रभावित थी।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

32. सम्राट हुमायूँ द्वारा किन दो फारसी मास्टर चित्रकारों को भारत लाया गया था, जिन्होंने बाद में मुगल चित्रशाला की आधारभूत शैली की नींव रखी?
(1) दसवंत और बसावन
(2) मीर सैयद अली और अब्द अल-समद
(3) उस्ताद मंसूर और अबुल हसन
(4) बिसनदास और गोवर्धन
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

33. प्रारंभिक मुगल चित्रकला के संबंध में निम्नलिखित विशेषताओं पर विचार कीजिए:
I. इसकी उत्पत्ति मुख्य रूप से भव्य ऐतिहासिक और पौराणिक पांडुलिपियों को चित्रित करने के लिए हुई थी।
II. इस काल की सबसे पहली प्रमुख परियोजना भव्य 'हमज़ानामा' है।
III. इसने जीवंत रंगों के उपयोग को पूरी तरह से खारिज कर दिया, और केवल शांत फारसी रंगों को प्राथमिकता दी।
IV. यह शैली सफ़वी लालित्य और गतिशील भारतीय परंपराओं के संश्लेषण को दर्शाती है।
V. विस्तृत सजावटी हाशिये का समावेश इस शैली की एक पहचान बन गया।

ऊपर दिए गए संयोजनों में से कौन-सा सही है?
(1) I, II, IV और V
(2) I, III, IV और V
(3) II, III और IV
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

NODIA

34. मुगल दरबार में एक औपचारिक शाही चित्रशाला (तस्वीर खाना) की स्थापना किस सम्राट के शासनकाल के दौरान शुरू की गई थी?
(1) अकबर
(2) बाबर
(3) हुमायूँ
(4) जहांगीर
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

35. मध्यकालीन पांडुलिपि 'निमत नामा' के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?
(1) सुल्तान सिकंदर लोदी के शासनकाल का एक प्रसिद्ध वृत्तांत जो बिना किसी दृश्य चित्रण के तैयार किया गया था।
(2) अबुल फज़ल द्वारा रचित एक धार्मिक ग्रंथ जो मुगल अभिजात वर्ग के लिए दीन-ए-इलाही के सिद्धांतों को निर्धारित करता है।
(3) यह मालवा सल्तनत की एक पाक-विधि पुस्तक है जिसमें प्रारंभिक फारसी-प्रभावित लघु चित्र शामिल हैं।
(4) सल्तनत काल में मुगल गुंबदों और मेहराबों के स्थापत्य

ऊपर दिए गए संयोजनों में से कौन-सा गलत है?
(1) केवल I
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, III और V
(4) केवल I, IV और V
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

50. मुगल और राजपूत चित्रकला परंपराओं के बीच अंतर को उजागर करने वाले निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा गलत है?
(1) राजपूत चित्रकारों ने कागज का पूरी तरह से त्याग कर दिया था और अपने लघु चित्रों के लिए केवल कपड़े का उपयोग किया था।
(2) मुगल चित्रकला मुख्य रूप से दरबारी थी, जबकि राजपूत चित्रकला अक्सर धार्मिक रहस्यवाद से जुड़ी थी।
(3) राजपूत चित्रों में खंडित स्थानों और सपाट रंग की पृष्ठभूमियों का उपयोग किया गया था, जबकि मुगल कला यथार्थवादी गहराई पर केंद्रित हुई।
(4) मुगल चित्र अक्सर ऐतिहासिक दस्तावेजीकरण पर केंद्रित थे, जबकि राजपूत कला काव्य और रुमानी आदर्शवाद की ओर झुकी हुई थी।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

51. 12वीं शताब्दी में रचित मध्यकालीन संस्कृत ग्रंथ 'राजतरंगिणी' मुख्य रूप से किस विषय पर केंद्रित है?
(1) उपनिषदों पर एक दार्शनिक भाष्य
(2) शास्त्रीय भारतीय संगीत और नृत्य पर एक विस्तृत ग्रंथ
(3) कश्मीर के राजाओं का कालानुक्रमिक इतिहास
(4) दक्षिण भारत में मंदिर वास्तुकला का विवरण देने वाला एक मैनुअल
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

52. मध्यकालीन संस्कृत साहित्य के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: राजभाषा के रूप में फारसी के उदय के कारण मध्यकाल में संस्कृत दार्शनिक ग्रंथों का उत्पादन पूरी तरह रुक गया था।
कथन II: प्राचीन कानूनी ग्रंथों पर महत्वपूर्ण संस्कृत भाष्य विजयनगर और मिथिला जैसे राज्यों में रचे जाते रहे।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

53. सूची I (मध्यकालीन संस्कृत लेखक) को सूची II (उल्लेखनीय कार्य) के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (मध्यकालीन संस्कृत लेखक)
A. जयदेव
B. कल्हण
C. सोमदेव
D. बिल्हण
सूची II: (उल्लेखनीय कार्य)
i. राजतरंगिणी
ii. गीत गोविंद
iii. विक्रमांकदेवचरित
iv. कथासरित्सागर
सही कोड का चयन कीजिए:
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

54. मध्यकालीन संस्कृत साहित्य के विषयों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. प्रत्यक्ष सल्तनत नियंत्रण से मुक्त क्षेत्रों में अलंकृत दरबारी कविता का निर्माण जारी रहा।
II. इस अवधि के दौरान केरल में खगोल विज्ञान और गणित के वैज्ञानिक ग्रंथों में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई।
III. इस युग के सभी संस्कृत कार्यों को हिंदू धार्मिक विषयों से पूरी तरह मुक्त कर दिया गया था।
ऊपर दिए गए संयोजनों में से कौन-सा गलत है?
(1) केवल I
(2) केवल II और III
(3) केवल III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

55. दिल्ली सल्तनत और मुगल साम्राज्य की स्थापना का संस्कृत साहित्य की स्थिति पर क्या प्रभाव पड़ा?
(1) संस्कृत ने उपमहाद्वीप में इस्लामी धर्मशास्त्र की प्राथमिक भाषा के रूप में अरबी की जगह ले ली।
(2) इस पर व्यवस्थित रूप से प्रतिबंध लगा दिया गया था, जिससे प्राचीन संस्कृत पांडुलिपियों का विनाश हुआ।
(3) यह फारसी के साथ विलीन हो गया जिससे एक नई संकर भाषा बनी।
(4) यह मुख्य प्रशासनिक भाषा नहीं रही लेकिन धर्म, दर्शन और क्षेत्रीय दरबारों में फलती-फूलती रही।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

56. मध्यकाल के दौरान अवधी साहित्यिक परंपरा के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?
(1) मलिक मुहम्मद जायसी ने अवधी भाषा में सूफी रुपक और राजपूत रुमानी प्रेम के मिश्रण के साथ महाकाव्य 'पद्मावत' की रचना की।
(2) इसका उपयोग संतों द्वारा भक्ति कार्यों के लिए किया जाता था और सूफी संतों ने इसका बहिष्कार किया था।
(3) तुलसीदास ने धार्मिक विषयों के लिए अवधी के उपयोग का विरोध किया और केवल संस्कृत को प्राथमिकता दी।

43. जहांगीर के चित्रकारों और उनकी विशिष्टताओं के संबंध में निम्नलिखित में से गलत सुमेलित युग्म की पहचान कीजिए:
(1) उस्ताद मंसूर - शाही एल्बमों के लिए वानस्पतिक और प्राणि संबंधी अध्ययन।
(2) बिसनदास - व्यक्ति चित्रण में विशेषज्ञ जिन्हें फारस में एक आधिकारिक मिशन पर भेजा गया था।
(3) अबुल हसन - साम्राज्य के महिमामंडन के लिए जहांगीर के रूपक और स्वप्न चित्रों को चित्रित किया।
(4) मीर सैयद अली - जहांगीर के शासनकाल के उत्तरार्ध में यूरोपीय छाया-प्रकाश तकनीक में महारत हासिल की।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

44. जहांगीर की चित्रकला शैली के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. बड़े कथा दृश्यों के स्थान पर व्यक्तिगत चित्रों और स्थिर दरबारी दृश्यों की ओर बदलाव आया।
II. वनस्पतियों और जीवों के चित्रण ने वैज्ञानिक सटीकता का अभूतपूर्व स्तर प्राप्त किया।
III. सम्राट के सिर के पीछे दिव्य प्रभामंडल की अवधारणा यूरोपीय कला से ली गई थी।
IV. जहांगीर ने यथार्थवादी स्थानिक परिप्रेक्ष्य के स्थान पर अमूर्त फारसी परिदृश्यों को प्राथमिकता दी।
ऊपर दिए गए संयोजनों में से कौन-सा गलत है?
(1) केवल I और II
(2) केवल III और IV
(3) केवल IV
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

45. मुगल चित्रकला पर यूरोपीय प्रभाव के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: यूरोपीय उत्कीर्णन ने मुगल चित्रकारों को रेखीय परिप्रेक्ष्य और त्रि-आयामी मॉडलिंग की अवधारणाओं से परिचित कराया।
कथन II: छाया-प्रकाश चित्रण (चियारोस्क्यूरो) की तकनीक को मुगल कलाकारों ने पूरी तरह से अपनाया था।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

46. सूची I (राजपूत चित्रकला शैली) को सूची II (विशिष्ट विशेषता/विषय) के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (राजपूत चित्रकला शैली)
A. मेवाड़ शैली
B. किशनगढ़ शैली
C. बूंदी शैली
D. कांगड़ा शैली
सूची II: (विशिष्ट विशेषता/विषय)
i. लम्बी आँखें जैसी अतिरंजित विशेषताएं और बनी-ठनी का चित्र
ii. भावनात्मक तीव्रता के साथ गहरे रंग, जो 'चौरपंचाशिका' को चित्रित करते हैं
iii. पहाड़ी क्षेत्र में राधा-कृष्ण के प्रेम को दर्शाती कोमल रेखाएं
iv. हरे-भरे परिदृश्य, वर्षा के चित्रण और गतिशील शिकार के दृश्य
सही कोड का चयन कीजिए:
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

47. मध्यकालीन भारत में निम्नलिखित कलात्मक परंपराओं को उनके ऐतिहासिक उद्भव के आधार पर कालानुक्रमिक रूप से व्यवस्थित कीजिए:
I. अकबर के अधीन औपचारिक मुगल शाही चित्रशाला की स्थापना
II. पहाड़ी चित्रकला की परिष्कृत कांगड़ा शैली का चरमोत्कर्ष
III. पूर्व-मुगल पश्चिमी भारतीय पांडुलिपि चित्रण का विकास
IV. जहांगीर के प्रकृतिवादी एल्बम चित्रों की परिपक्वता
उपर्युक्त में से कौन-सा क्रम सही है?
(1) III, I, IV, II
(2) I, III, II, IV
(3) III, IV, I, II
(4) I, IV, III, II
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

48. प्रसिद्ध लघु चित्र 'बनी ठनी' निहाल चंद द्वारा किस राजपूत शासक के संरक्षण में चित्रित किया गया था?
(1) मेवाड़ के महाराणा प्रताप
(2) किशनगढ़ के राजा सावंत सिंह
(3) जयपुर के सवाई जय सिंह
(4) मारवाड़ के राव जोधा
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

NODIA

49. राजपूत चित्रकला परंपरा के संबंध में निम्नलिखित विशेषताओं पर विचार कीजिए:
I. यह पूरी तरह से एकांत में विकसित हुई, और मुगल शैली से अछूती रही।
II. धार्मिक और पौराणिक विषय, विशेष रूप से कृष्ण लीला, इसमें अत्यंत प्रमुख थे।
III. 'रागमाला' श्रृंखला ने भारतीय संगीत के रागों को दृश्य रूप में चित्रित करने का प्रयास किया।
IV. मानव आकृतियों को अक्सर पूर्ण पार्श्व चित्र में चित्रित किया जाता था।
V. लघु चित्र प्रारूप के साथ कलाकारों ने किलों और महलों के अंदर विशाल भित्ति चित्र भी चित्रित किए।

(4) कुतुब मीनार
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

7. निम्नलिखित सल्तनतकालीन स्मारकों को उनके निर्माण के कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. अलाई दरवाजा
II. कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद
III. गयासुद्दीन तुगलक का मकबरा
IV. सिकंदर लोदी का मकबरा
उपर्युक्त में से कौन-सा क्रम सही है?
(1) II, I, III, IV
(2) II, III, I, IV
(3) I, II, IV, III
(4) I, III, II, IV
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

8. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): तुगलक काल की इमारतों की विशेषता अत्यधिक ढालू दीवारें हैं।
कारण (R): ढालू दीवारें, जिन्हें 'बैटर' के रूप में जाना जाता है, संरचनात्मक नींव को मजबूती और स्थिरता प्रदान करने के लिए शुरू की गई थीं।
नीचे दिए गए कोड से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

9. सल्तनतकालीन वास्तुकला में दोहरे गुंबद की शुरुआत ने एक विशिष्ट संरचनात्मक और सौंदर्य संबंधी उद्देश्य को पूरा किया। निम्नलिखित में से कौन लोदी स्थापत्य काल में इस अनुप्रयोग की सबसे अच्छी व्याख्या करता है?
(1) छत के स्तर से सीधे तहखाने में प्राकृतिक प्रकाश को आने की अनुमति देना।
(2) समारोहों के दौरान प्रार्थनाओं की गूंज के लिए डिजाइन किया गया एक ध्वनि कक्ष बनाना।
(3) आंतरिक छत को दृष्टिगत रूप से उपयुक्त स्तर पर रखते हुए बाहरी ऊंचाई को संतुलित करना।
(4) किले में सैन्य घेराबंदी के दौरान अनाज और पानी जमा करने के लिए एक तापरोधी, छिपी हुई परत प्रदान करना।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

10. निम्नलिखित दिल्ली सुल्तानों में से किसने कुतुब मीनार के प्रारंभिक निर्माण, विस्तार या प्रमुख मरम्मत में योगदान नहीं दिया?
(1) अलाउद्दीन खिलजी
(2) कुतुबुद्दीन ऐबक
(3) इल्तुतमिश
(4) फिरोज शाह तुगलक
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

11. मुगल वास्तुकला के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. बाबर ने भारत में औपचारिक रूप से व्यवस्थित चारबाग उद्यान की अवधारणा पेश की।
II. हुमायूँ के मकबरे को फारसी वास्तुकार मिराक मिर्जा गियास ने डिजाइन किया था।
III. अकबर की स्थापत्य परियोजनाएं विशेष रूप से सफेद संगमरमर का उपयोग करके बनाई गई थीं।
IV. आगरा का किला मुख्य रूप से अकबर के शासनकाल के दौरान लाल बलुआ पत्थर का उपयोग करके बनाया गया था।
ऊपर दिए गए संयोजनों में से कौन-सा गलत है?
(1) केवल I और II
(2) केवल III
(3) केवल II और IV
(4) I, III और IV
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

12. क्षेत्रीय गुजराती और मालवा वास्तुकला की कौन-सी विशिष्ट विशेषता अकबर द्वारा फतेहपुर सीकरी के आवासीय भवनों में व्यापक रूप से शामिल की गई थी?
(1) पुष्प पैटर्न को दर्शाने वाला जटिल सफेद संगमरमर पेत्रा ड्यूरा जड़ाई का काम।
(2) विस्तृत लाल बलुआ पत्थर के ब्रैकेट और जटिल नक्काशीदार शहतीरी स्तंभ।
(3) संकरी गर्दन और सजावटी कलश वाले कंद के आकार के गुंबद।
(4) दीवारों पर ज्यामितीय और अमूर्त पैटर्न को दर्शाने वाला चमकदार मोज़ेक टाइल का काम।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

13. निम्नलिखित ऐतिहासिक स्मारकों में से उन्हें बनवाने वाले मुख्य संरक्षक के आधार पर विषम को पहचानिए:
(1) बुलंद दरवाजा
(2) जहांगीरी महल
(3) एत्मादुद्दौला का मकबरा
(4) इलाहाबाद का किला
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

14. हुमायूँ के मकबरे के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: यह भारतीय उपमहाद्वीप पर निर्मित पहला भव्य उद्यान-मकबरा था।
कथन II: इसकी स्थापत्य शैली पूरी तरह से स्वदेशी शहतीरी तकनीकों पर निर्भर करती है, जिसमें फारसी प्रभाव बिल्कुल नहीं दिखता है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

Downloaded from www.pdf.tube

(4) अवधी साहित्य में दोहे और चौपाई जैसी काव्य संरचनाओं का पूरी तरह से अभाव था।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

57. प्रमुख मध्यकालीन कवि सूरदास को किस क्षेत्रीय साहित्यिक परंपरा में उनके योगदान के लिए जाना जाता है?
(1) अवधी
(2) मैथिली
(3) ब्रज भाषा
(4) डिंगल
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

58. मध्यकालीन भारत में क्षेत्रीय साहित्य के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. चंद बरदाई का 'पृथ्वीराज रासो' राजस्थानी-हिंदी साहित्यिक परंपरा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है।
II. विद्यापति ने मैथिली भाषा में राधा और कृष्ण के प्रेम पर व्यापक रूप से लिखा।
III. 'मंगलकाव्य' बंगाल में स्वदेशी स्थानीय देवताओं की महिमा के लिए लिखी गई कविताएँ थीं।
IV. अल्वार और नयनार संतों के भक्ति कार्यों ने मध्यकालीन अवधी साहित्य की नींव रखी।
ऊपर दिए गए संयोजनों में से कौन-सा गलत है?
(1) केवल I और II
(2) केवल III और IV
(3) केवल IV
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

59. निम्नलिखित मध्यकालीन साहित्यिक विभूतियों में से उनकी भक्ति रचनाओं की प्राथमिक भाषा के आधार पर विषम को पहचानिए:
(1) तुलसीदास
(2) मलिक मुहम्मद जायसी
(3) कुतुबन
(4) सूरदास
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

60. निम्नलिखित प्रमुख मध्यकालीन ग्रंथों में से कौन-सा एक अपवाद है, जिसकी रचना भारत की किसी क्षेत्रीय लोक भाषा में नहीं की गई थी?
(1) रामचरितमानस
(2) मुंतखब-उत-तवारीख
(3) चैतन्य चरितामृत
(4) कीर्तिलता
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

61. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): पूरे मुगल साम्राज्य में फारसी प्रशासन, कूटनीति और उच्च संस्कृति की प्रमुख भाषा के रूप में उभरी।
कारण (R): सम्राट अकबर ने राजस्व प्रशासन की आधिकारिक भाषा के रूप में फारसी को अनिवार्य कर दिया, जिससे स्थानीय 'हिंदवी' का स्थान फारसी ने ले लिया।
नीचे दिए गए कोड से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

62. अबुल फज़ल द्वारा रचित फारसी साहित्य के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: उनकी गद्य शैली की सादगी और जटिल अलंकारिक युक्तियों से बचाव के लिए सराहना की गई थी।
कथन II: उन्होंने 'अकबरनामा' लिखा, जिसने अकबर को आध्यात्मिक और लौकिक संप्रभु के रूप में महिमामंडित किया।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

63. मुगल दरबार के फारसी साहित्य की निम्नलिखित कृतियों पर विचार कीजिए:
I. 'आइन-ए-अकबरी' अकबर के साम्राज्य के प्रशासनिक और सांख्यिकीय विवरण के रूप में कार्य करती है।
II. 'मुंतखब-उत-तवारीख' अब्दुल कादिर बदायुनी द्वारा अकबर की धार्मिक नीतियों के आधिकारिक इतिहास के रूप में लिखी गई थी।
III. अकबर के दरबार के राजकवि फैजी ने गणितीय ग्रंथ 'लीलावती' का फारसी में अनुवाद किया।
IV. 'पादशाहनामा' सम्राट शाहजहाँ के शासनकाल के आधिकारिक दरबारी वृत्तांत के रूप में कार्य करता है।
V. 'बाबरनामा' शुरु में चगताई तुर्की में लिखा गया था और बाद में अब्दुल रहीम खान-ए-खाना द्वारा फारसी में अनुवाद किया गया था।
ऊपर दिए गए संयोजनों में से कौन-सा गलत है?
(1) केवल I और IV
(2) केवल II
(3) केवल III, IV और V
(4) केवल I, II और III
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

64. मुगल दरबार की प्रमुख हस्ती फैजी के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
(1) वह अबुल फज़ल के बड़े भाई और अकबर के 'नवरत्नों' के सदस्य थे।
(2) उन्होंने अकबर द्वारा शुरु किए गए महाभारत के फारसी

NODIA

21. निम्नलिखित में से कौन-सा संरचनाओं का सही स्थानिक क्रम है जो बुलंद दरवाजे के माध्यम से फतेहपुर सीकरी में प्रवेश करने और शाही परिसर की ओर बढ़ते समय मिलता है?
(1) सलीम चिश्ती का मकबरा
(2) पंच महल
(3) जामा मस्जिद → सलीम चिश्ती का मकबरा → पंच महल → दीवान-ए-खास
(4) दीवान-ए-खास
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

22. फतेहपुर सीकरी में विशाल बुलंद दरवाजे का निर्माण सम्राट अकबर ने मुख्य रूप से किस ऐतिहासिक घटना की स्मृति में करवाया था?
(1) उनके उत्तराधिकारी, राजकुमार सलीम का जन्म
(2) गुजरात प्रांत पर सफल विजय
(3) हल्दीघाटी में महाराणा प्रताप की पराजय
(4) नए संश्लेषित धर्म, दीन-ए-इलाही की स्थापना
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

23. फतेहपुर सीकरी के विन्यास और महत्व के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. शहर की योजना एक सटीक, सममित ग्रिड पैटर्न के साथ बनाई गई थी जिसमें चौड़ी और एक-दूसरे को काटती हुई सड़कें थीं।
II. स्थापत्य डिजाइन तैमूरी संरचनात्मक रूपों और स्वदेशी भारतीय सजावटी शैलियों के संश्लेषण को गहराई से दर्शाते हैं।
III. इसकी स्थापना के कुछ दशकों बाद इस राजधानी को छोड़ दिया गया था, जिसका मुख्य कारण पानी की भारी कमी को माना जाता है।
ऊपर दिए गए संयोजनों में से कौन-sa सही है?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

24. फतेहपुर सीकरी में पंच महल के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
(1) इसे विशेष रूप से अकबर के साम्राज्य के मुख्य खजाने और टकसाल के रूप में उपयोग के लिए डिजाइन किया गया था।
(2) यह एक पांच मंजिला संरचना है जो ऊपर की ओर बढ़ने पर आकार में कम होती जाती है।
(3) इस संरचना में दीवारों का पूरी तरह से अभाव है और यह पूरी तरह से जटिल नक्काशीदार स्तंभों पर टिकी हुई है।
(4) स्थापत्य डिजाइन से पता चलता है कि यह बौद्ध विहारों या पारंपरिक भारतीय मंडपों से प्रेरित था।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

25. निम्नलिखित में से कौन फतेहपुर सीकरी के निर्माण में अकबर द्वारा लागू किए गए समग्र स्थापत्य दर्शन का सबसे उपयुक्त वर्णन करता है?
(1) तैमूरी के मध्य एशियाई मॉडलों से सीधे प्राप्त रुढ़िवादी इस्लामी स्थापत्य मानदंडों का कठोर अनुपालन।
(2) सौंदर्य डिजाइन और कलात्मक अभिव्यक्ति के बजाय रक्षात्मक सैन्य किलाबंदी पर केंद्रित एक उपयोगितावादी दृष्टिकोण।
(3) विविध क्षेत्रीय भारतीय स्थापत्य तत्वों का एक प्रयोगात्मक संलयन, जो उनके समावेशी राजनीतिक दृष्टिकोण का प्रतीक है।
(4) दरबार में आने वाले यूरोपीय मिशनरियों से देखी गई यूरोपीय स्थापत्य शैलियों की जानबूझकर की गई प्रतिकृति।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

26. सूची I (क्षेत्रीय मध्यकालीन स्मारक) को सूची II (संबद्ध क्षेत्रीय शैली/स्थान) के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (क्षेत्रीय मध्यकालीन स्मारक)
A. अदीना मस्जिद
B. अटाला मस्जिद
C. गोल गुंबज
D. हिंडोला महल
सूची II: (संबद्ध क्षेत्रीय शैली/स्थान)
i. जौनपुर वास्तुकला
ii. बंगाल वास्तुकला
iii. मालवा वास्तुकला
iv. बीजापुर वास्तुकला
सही कोड का चयन कीजिए:
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

27. बंगाल की मध्यकालीन स्थापत्य शैली को निम्नलिखित में से किस स्वदेशी तत्व को अपनाने से विशिष्ट रूप से पहचाना जाता है?
(1) स्थानीय ईंटों से निर्मित और पकी मिट्टी (टेराकोटा) की टाइलों से सजी हुई अत्यंत ऊँची स्वतंत्र मीनारें।
(2) मस्जिदों की संरचनात्मक स्थिरता पर जोर देने के लिए मुख्य द्वारों के पास स्थित विशाल पत्थर के तोरण।
(3) दिल्ली के सुल्तानों की शाही शैली का अनुकरण करने के लिए सभी धार्मिक संरचनाओं के लिए सफेद संगमरमर का व्यापक उपयोग।
(4) 'बंगला' छत, जिसमें पारंपरिक फूस की झोपड़ियों से ली गई एक विशिष्ट ढालू और उत्तल आकृति होती है।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

28. मध्यकालीन भारत में क्षेत्रीय स्थापत्य शैलियों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

Click Here to Buy book on Amazon

(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

72. मध्यकालीन भारतीय शास्त्रीय संगीत के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन गायन की 'ख्याल' शैली को परिभाषित करता है?
(1) एक अत्यधिक कल्पनाशील गायन रूप जो कलाकार को ध्रुपद की तुलना में अधिक स्वतंत्रता प्रदान करता है।
(2) एक कठोर संगीत रचना जो पूरी तरह से संस्कृत मंत्रों पर केंद्रित है।
(3) एक अनन्य वाद्य प्रदर्शन जो विशेष रूप से वीणा का उपयोग करता है।
(4) राजस्थान के राजपूत दरबारों में प्रचलित एक लोक नृत्य परंपरा।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

73. अकबर के दरबार के महान संगीतकार तानसेन ने अपना प्रारंभिक संगीत प्रशिक्षण किस प्रसिद्ध संत-संगीतकार के मार्गदर्शन में प्राप्त किया था?
(1) अमीर खुसरो
(2) बैजू बावरा
(3) स्वामी हरिदास
(4) पुरंदर दास
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

74. शास्त्रीय संगीत की ध्रुपद शैली के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
(1) यह प्रदर्शन के दौरान पखावज या किसी भी ताल वाद्ययंत्र के उपयोग को पूरी तरह से प्रतिबंधित करता है।
(2) इसे उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत के सबसे पुराने मौजूदा रूपों में से एक माना जाता है।
(3) यह आध्यात्मिक और भक्ति विषयों पर जोर देता है, जिसमें अक्सर हिंदू देवताओं की स्तुति की जाती है।
(4) ग्वालियर के राजा मानसिंह तोमर ने इसके संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

75. मध्यकालीन भारत में संगीत के संश्लेषण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: अमीर खुसरो को शास्त्रीय संगीत में 'ऐमन' और 'साज़गिरी' जैसे कई फारसी-अरबी रागों को पेश करने का श्रेय दिया जाता है।
कथन II: मुगल सम्राट औरंगज़ेब ने शास्त्रीय संगीत को भारी संरक्षण दिया, जिससे इसका सबसे बड़ा विस्तार हुआ।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

76. कव्वाली का आध्यात्मिक संगीत रूप भारत में मौलिक रूप से निम्नलिखित में से किस समूह द्वारा लोकप्रिय बनाया गया था?
(1) दक्षिण के शैव नयनार संतों द्वारा।
(2) सूफी संतों, विशेष रूप से चिश्ती संप्रदाय द्वारा।
(3) गोवा में पुर्तगाली मिशनरियों द्वारा।
(4) पश्चिमी भारत के जैन भिक्षुओं द्वारा।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

77. शाहजहाँ के शासनकाल के दौरान मुगल वास्तुकला के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: अकबर की लाल बलुआ पत्थर की वास्तुकला से सफेद संगमरमर की भव्यता की ओर एक स्पष्ट संक्रमण हुआ।
कथन II: कस्तूरी मेहराब और कंद के आकार के गुंबद का उपयोग अत्यंत प्रमुख हो गया।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

78. निम्नलिखित वाद्ययंत्रों में से उस परंपरा के आधार पर विषम को पहचानिए जिसका आविष्कार करने का श्रेय अमीर खुसरो को दिया जाता है:
(1) सितार
(2) तबला
(3) वीणा
(4) दोनों (1) और (2)
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

79. निम्नलिखित में से कौन-सा राग पारंपरिक रूप से मियां तानसेन की रचना नहीं माना जाता है?
(1) राग भैरवी
(2) मियां की मल्हार
(3) मियां की तोड़ी
(4) दरबारी कानडा
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

80. मध्यकालीन संगीत ग्रंथ 'मान कौतूहल' के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?
(1) यह अथर्ववेद का फारसी अनुवाद है।
(2) इसे ग्वालियर के राजा मानसिंह तोमर के संरक्षण में संगीत ज्ञान को संकलित करने के लिए तैयार किया गया था।
(3) इसे तानसेन द्वारा स्वामी हरिदास की जीवनी के रूप में लिखा गया था।
(4) यह सल्तनत स्मारकों में प्रतिध्वनि दीर्घा बनाने के लिए आवश्यक स्थापत्य डिजाइन का विवरण देता है।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

Downloaded from www.pdf.tube

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) शीर्ष-प्रस्तर (कीस्टोन) का उपयोग करके भार वहन करने वाले मेहराबों और गुंबदों का निर्माण
भारत में इस्लामी शासकों द्वारा चापकीय प्रणाली की शुरुआत वास्तुकला में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन था। इसमें शीर्ष-प्रस्तर का उपयोग करके भार वहन करने वाले मेहराबों और गुंबदों का निर्माण किया जाता था। यह तकनीक इमारतों को अधिक मजबूती प्रदान करती थी। पुराने स्तंभों के स्थान पर मेहराबों का उपयोग स्थापत्य की दृष्टि से वैज्ञानिक रूप से उन्नत माना जाता था, जो संरचनात्मक विस्तार में सहायक था।

2. (4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है
भारत-इस्लामी वास्तुकला का विकास एक क्रमिक प्रक्रिया थी, जिसमें स्वदेशी प्रविधियों और नई चापकीय प्रणालियों का समन्वय हुआ। दिल्ली सल्तनत के शुरुआती दौर में स्वदेशी शहतीरी प्रणाली पूरी तरह समाप्त नहीं हुई थी। भारतीय कारीगरों ने इस्लामी वास्तुकला की आवश्यकताओं को समझा और उनमें पारंपरिक भारतीय पुष्प आकृतियों को शामिल कर एक अद्वितीय और सुंदर स्थापत्य शैली विकसित करने में सफलता प्राप्त की थी।

3. (2) केवल III
मध्यकालीन भारत में सांस्कृतिक समन्वय के परिणामस्वरूप निर्माण सामग्री और प्रविधियों में महत्वपूर्ण सुधार हुए। इस युग में विशाल पत्थर की संरचनाओं के लिए योजक सामग्री के रूप में गारे का व्यापक उपयोग शुरू हुआ। इससे पूर्व की स्वदेशी परंपराएँ मुख्य रूप से पत्थर पर पत्थर रखकर संरचनाएँ बनाती थीं। गारे के प्रयोग ने मेहराबों और गुंबदों को मजबूती दी, जिससे ऊँचे सार्वजनिक भवनों का निर्माण संभव हुआ।

4. (4) दिल्ली की सबसे पुरानी मस्जिदों का निर्माण संरचनात्मक शुद्धता सुनिश्चित करने के लिए पूरी तरह से नई खनन की गई चट्टानों से किया गया था।
दिल्ली सल्तनत की प्रारंभिक इमारतों में निर्माण के लिए अक्सर स्थानीय स्तर पर उपलब्ध पुराने संसाधनों का उपयोग किया गया। दिल्ली की सबसे पुरानी मस्जिदों के लिए पूरी तरह नई चट्टानों का उपयोग नहीं हुआ था, बल्कि पुरानी संरचनाओं की सामग्री को पुनः उपयोग में लाया गया था। गारे का प्रयोग, सुलेखन द्वारा सजावट और भारतीय रूपांकनों का समावेशन उस काल के स्थापत्य में प्रमुखता से दिखाई देता था।

5. (1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
मस्जिद वास्तुकला के विभिन्न तत्वों के विशिष्ट धार्मिक और कार्यात्मक महत्व होते हैं। मिहराब प्रार्थना की दिशा दर्शाने वाला स्थान है, जबकि मिंबर वह स्थान है जहाँ से धार्मिक उपदेश दिया जाता है। किबला वह दिशा है जिसकी ओर मुख करके प्रार्थना की जाती है और सहन मस्जिद का खुला प्रांगण होता है। ये सभी तत्व मिलकर सामूहिक पूजा और धार्मिक विमर्श के लिए आध्यात्मिक वातावरण तैयार करते हैं।

6. (2) गयासुद्दीन बलबन का मकबरा
दिल्ली स्थित गयासुद्दीन बलबन का मकबरा भारतीय वास्तुकला के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इतिहासकारों द्वारा इसे भारत में 'सच्चे मेहराब' की विशेषता वाला पहला स्मारक माना जाता है। इससे पूर्व के स्मारकों में मेहराबों का निर्माण अक्सर कोणीय तकनीकों के माध्यम से किया जाता था। बलबन के मकबरे ने वैज्ञानिक चापकीय प्रणाली की शुरुआत की, जिसने आगे चलकर खिलजी और तुगलक काल के लिए मार्ग प्रशस्त किया।

7. (1) II, I, III, IV
दिल्ली सल्तनत के स्मारकों का निर्माण उनके राजवंशों के शासनकाल के अनुसार हुआ। कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद का निर्माण 12वीं शताब्दी के अंत में हुआ। अलाउद्दीन खिलजी ने 1311 में अलाई दरवाजा बनवाया और गयासुद्दीन तुगलक का मकबरा 1325 के आसपास बना। सिकंदर लोदी का मकबरा 1517 में निर्मित हुआ। यह क्रम भारतीय स्थापत्य के क्रमिक विकास और विभिन्न शैलियों के प्रभाव को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

8. (1) A-1 और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
तुगलक काल की वास्तुकला अपनी मजबूती और सादगी के लिए प्रसिद्ध है। इस काल की इमारतों की प्रमुख विशेषता उनकी ढालू दीवारें हैं, जिन्हें 'बैटर' कहा जाता है। यह तकनीक विशाल संरचनाओं की नींव को अतिरिक्त मजबूती और स्थिरता प्रदान करने के लिए अपनाई गई थी। यह शैली गयासुद्दीन तुगलक के मकबरे में स्पष्ट दिखाई देती है, जो तत्कालीन सैन्य और शाही वास्तुकला की सुरक्षात्मक आवश्यकताओं को पूरा करती थी।

9. (3) आंतरिक छत को दृष्टिगत रूप से उपयुक्त स्तर पर रखते हुए बाहरी ऊंचाई को संतुलित करना।
लोदी काल में दोहरे गुंबद की शुरुआत स्थापत्य कला में एक बड़ा तकनीकी सुधार था। यह पद्धति सौंदर्य संबंधी उद्देश्य को पूरा करती थी। यह तकनीक आंतरिक छत को भीतर से देखने पर उपयुक्त ऊँचाई पर रखने में सहायक थी, जबकि बाहर से इमारत को भव्यता देने के लिए गुंबद की ऊँचाई को बढ़ा दिया जाता था। इससे संरचना का बाहरी संतुलन बना रहता था और गूँज भी नियंत्रित रहती थी।

10. (1) अलाउद्दीन खिलजी
कुतुब मीनार के निर्माण और रखरखाव में कई सुल्तानों का ऐतिहासिक योगदान रहा है। कुतुबुद्दीन ऐबक ने इसका आधार बनवाया, इल्तुतमिश ने इसे तीन मंजिलों तक बढ़ाया और

NODIA

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs,
you are wasting valuable time.

Research shows that learning from
PRINTED BOOKS has up to
4× HIGHER RETENTION
than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS**
move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND**
in competition.

In competitive exams,
being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

फिरोज शाह तुगलक ने इसकी ऊपरी मंजिलों की मरम्मत करवाई। अलाउद्दीन खिलजी ने उसी परिसर में अलाई दरवाजा और एक अधूरी मीनार बनवाई थी, किंतु उन्होंने कुतुब मीनार की मुख्य संरचना के विस्तार या मरम्मत में कोई प्रत्यक्ष योगदान नहीं दिया था।

11. (2) केवल III
मुगल वास्तुकला सम्राट अकबर के शासनकाल में लाल बलुआ पत्थर के व्यापक उपयोग के लिए जानी जाती है। यह कथन कि अकबर की परियोजनाएँ केवल सफेद संगमरमर से बनी थीं, गलत है क्योंकि उन्होंने मुख्य रूप से लाल बलुआ पत्थर का उपयोग किया था। सफेद संगमरमर का अनन्य उपयोग बाद में शाहजहाँ के काल में हुआ। बाबर द्वारा चारबाग उद्यान और फारसी वास्तुकारों का चयन मुगल परंपरा की विशेषताएँ हैं।

12. (2) विस्तृत लाल बलुआ पत्थर के ब्रैकेट और जटिल नक्काशीदार शहतीरी स्तंभ।
सम्राट अकबर ने फतेहपुर सीकरी के निर्माण में भारत की विभिन्न क्षेत्रीय स्थापत्य शैलियों का समावेश किया था। उन्होंने गुजरात और मालवा की वास्तुकला से प्रेरित होकर लाल बलुआ पत्थर के ब्रैकेट और नक्काशीदार स्तंभों का उपयोग किया। यह समन्वय उनके आवासीय भवनों, जैसे जोधाबाई महल में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। यह दृष्टिकोण न केवल सौंदर्य की दृष्टि से श्रेष्ठ था, बल्कि अकबर के समावेशी दर्शन का प्रतिबिंब भी था।

13. (3) एत्मादुद्दौला का मकबरा
ऐतिहासिक स्मारकों के संरक्षण के आधार पर एत्मादुद्दौला का मकबरा अन्य विकल्पों से अलग है। बुलंद दरवाजा और इलाहाबाद का किला सीधे सम्राट अकबर के संरक्षण में निर्मित हुए थे। इसके विपरीत, एत्मादुद्दौला के मकबरे का निर्माण जहाँगीर के शासनकाल में नूरजहाँ द्वारा करवाया गया था। यह मकबरा सफेद संगमरमर और पेत्रा ड्यूरा तकनीक के व्यापक उपयोग के लिए प्रसिद्ध है, जो मुगल स्थापत्य में एक नए युग का प्रतीक था।

14. (3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है
हुमायूँ का मकबरा भारतीय उपद्वीप में निर्मित पहला भव्य उद्यान-मकबरा है, जो मुगल स्थापत्य की नई परंपरा थी। हालाँकि, यह कहना गलत है कि इसमें फारसी प्रभाव नहीं है। इसकी रूपरेखा फारसी वास्तुकार मिराक मिर्जा गियास द्वारा तैयार की गई थी। यह स्मारक स्वदेशी भारतीय कारीगरी और फारसी स्थापत्य सिद्धांतों के सफल मेल का उत्कृष्ट उदाहरण है, जिसमें दोहरे गुंबद की तकनीक का प्रयोग किया गया है।

15. (1) पुराना किला
सम्राट अकबर ने अपने शासनकाल में आगरा का किला, लाहौर का किला और फतेहपुर सीकरी जैसे विशाल परिसरों का निर्माण करवाया था। दिल्ली में स्थित पुराना किला अकबर द्वारा निर्मित नहीं था। इसकी नींव हुमायूँ ने रखी थी और बाद में शेर शाह सूरी ने इसका विस्तार किया था। अकबर का योगदान मुख्य रूप से आगरा और निकटवर्ती क्षेत्रों में केंद्रित था, जहाँ उन्होंने नई स्थापत्य शैली विकसित की थी।

16. (2) I, III, IV और V
ताजमहल का स्थापत्य हष्ट-बिहिश्त योजना और दोहरे गुंबद जैसी संरचनात्मक अवधारणाओं का मिश्रण है। इसमें कमल के कलश जैसे स्वदेशी भारतीय रूपांकनों का सुंदर उपयोग किया गया है। इसकी मीनारें भूकंप जैसी आपदाओं से सुरक्षा के लिए बाहर की ओर झुकी हुई हैं ताकि वे मुख्य मकबरे पर न गिरें। सफेद संगमरमर पर की गई पेत्रा ड्यूरा नक्काशी इसकी भव्यता को और अधिक बढ़ाती है।

17. (2) यह परिसर स्वर्ग की एक पार्थिव प्रतिकृति का प्रतिनिधित्व करता है जिसमें मकबरा ईश्वर के सिंहासन का प्रतीक है।
ताजमहल का स्थापत्य विन्यास आध्यात्मिक प्रतीकवाद से गहराई से जुड़ा है। पूरे परिसर की योजना स्वर्ग की एक पार्थिव प्रतिकृति के रूप में बनाई गई थी, जहाँ उद्यान और धाराएँ 'जन्नत' का दृश्य प्रस्तुत करते हैं। इस रूपक में केंद्रीय मकबरा ईश्वर के सिंहासन का प्रतिनिधित्व करता है। लाल बलुआ पत्थर की इमारतों के बीच सफेद संगमरमर की स्थिति दिव्य शुद्धता को स्पष्ट करती है, जो धार्मिक विचारों को दर्शाती है।

18. (1) मुमताज महल के सम्मान में स्वर्ग की शुद्ध और दिव्य प्रकृति को प्रतिबिंबित करने की शाहजहाँ की इच्छा।
ताजमहल के केंद्रीय मकबरे के लिए सफेद संगमरमर का अनन्य उपयोग प्रतीकात्मक और सौंदर्यात्मक कारणों से प्रेरित था। शाहजहाँ मुमताज महल के सम्मान में ऐसी संरचना चाहते थे जो स्वर्ग की शुद्धता और दिव्य शांति को प्रतिबिंबित करे। यद्यपि लाल बलुआ पत्थर पहले सामान्य था, लेकिन यहाँ इसका उपयोग सहायक इमारतों तक सीमित रखा गया ताकि मुख्य मकबरे की चमक और पवित्रता को विशेष रूप से उभारा जा सके।

19. (1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
ताजमहल के निर्माण में विभिन्न विशेषज्ञों का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण था। उस्ताद अहमद लाहौरी इस स्मारक के मुख्य वास्तुकार माने जाते हैं। भवन के लिए सफेद संगमरमर राजस्थान के मकराना से लाया गया था। अर्ध-कीमती पत्थरों को संगमरमर में जड़ने की कला को पेत्रा ड्यूरा कहा जाता है। साथ ही, मकबरे के चारों ओर चार भागों वाला औपचारिक फारसी उद्यान विन्यास इसकी सुंदरता और संतुलन को पूर्णता प्रदान करता है।

20. (4) अग्रभाग पर की गई सुलेखन का आकार ऊपर की ओर बढ़ता जाता है ताकि ज़मीन के स्तर से वह एक समान दिखाई दे।
ताजमहल के निर्माण में शिल्पकारों ने दृष्टि-भ्रम को नियंत्रित करने के लिए अद्भुत गणितीय सटीकता का उपयोग किया था। मुख्य प्रवेश द्वार और मकबरे के अग्रभाग पर की गई सुलेखन का आकार ऊपर की ओर थोड़ा बड़ा रखा गया है। यह इसलिए किया गया ताकि नीचे खड़े होकर देखने वाले व्यक्ति को पूरी

Click Here to Buy book on Amazon

अध्याय 14
भक्ति एवं सूफी आंदोलन

1. प्रारंभिक मध्यकालीन भारत में भक्ति आंदोलन के उदय का प्राथमिक कारण निम्नलिखित में से कौन सा था?
(1) अभिजात वर्ग द्वारा जनसाधारण के बीच संस्कृत को लोकप्रिय बनाने की इच्छा
(2) बढ़ती जातिगत कठोरता और वैदिक कर्मकांडों की बहिष्कारी प्रकृति
(3) दिल्ली सल्तनत के शासकों द्वारा क्षेत्रीय भाषाओं को दिया गया संरक्षण
(4) दक्षिण भारत में यूरोपीय मिशनरी गतिविधियों का प्रसार
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

2. भक्ति आंदोलन ने भारत में धार्मिक पूजा पद्धति को मौलिक रुप से बदल दिया। निम्नलिखित में से कौन सा इस आंदोलन के मूल दर्शन को सबसे सटीक रूप से परिभाषित करता है?
(1) भक्त और ईश्वर के बीच भक्ति का एक व्यक्तिगत और भावनात्मक संबंध
(2) कठोर शारीरिक तपस्या के माध्यम से परम ज्ञान की प्राप्ति
(3) धर्मशास्त्रों के श्रेणीबद्ध अनुष्ठानों का सख्ती से पालन करना
(4) निराकार ध्यान के पक्ष में व्यक्तिगत देवताओं का पूर्ण परित्याग
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

3. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: उत्तर भारत में भक्ति आंदोलन इस्लाम के समतावादी सिद्धांतों और सूफी रहस्यवाद से अत्यधिक प्रभावित था।
कथन II: उत्तर भारत के सभी भक्ति संतों ने इस्लामी प्रभाव के कारण मूर्ति पूजा की अवधारणा को समान रूप से त्याग दिया था।
उपरोक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

4. भक्ति आंदोलन की सामान्य विशेषताओं के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) जाति या लिंग की परवाह किए बिना सभी व्यक्तियों के लिए सामाजिक समानता की वकालत।
(2) आध्यात्मिक मोक्ष प्राप्त करने में गुरु या मार्गदर्शक की अनिवार्य भूमिका पर बल।
(3) ईश्वर से सीधे जुड़ने के लिए जटिल यज्ञों और कर्मकांडों का परित्याग।
(4) आध्यात्मिक और धार्मिक प्रसार की शुद्धता सुनिश्चित करने के लिए संस्कृत पर अत्यधिक निर्भरता।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

5. दक्षिण की भक्ति परंपरा के आधारभूत ग्रंथों और उनके धार्मिक झुकाव के संबंध में निम्नलिखित सूचियों पर विचार कीजिए:
सूची I: (ग्रंथ या समूह)
A. दिव्य प्रबंधम
B. तेवरम
C. अलवार
D. नयनार
सूची II: (धार्मिक झुकाव)
i. भगवान शिव के भक्त
ii. शैव भजनों का संकलन
iii. वैष्णव भजनों का संकलन
iv. भगवान विष्णु के भक्त
निम्नलिखित में से कौन सा कूट सही सुमेलित है?
(1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(2) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(3) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(4) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

6. दक्षिण भारत में शैव धर्म को लोकप्रिय बनाने में नयनारों की महत्वपूर्ण भूमिका थी। इस आंदोलन में पारंपरिक रूप से कितने नयनार संतों को मान्यता दी गई है?
(1) 12
(2) 63
(3) 72
(4) 108
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

7. दक्षिण की भक्ति परंपरा के निम्नलिखित संतों में से विषम का चयन कीजिए।
(1) अप्पार
(2) सम्बंदर
(3) सुंदरर
(4) नम्मालवार
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

31. (4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है
प्रारंभिक मुगल चित्रकला शैली पूरी तरह स्वदेशी नहीं थी, बल्कि यह विदेशी और स्थानीय कलात्मक परंपराओं के मिलन से विकसित हुई थी। इसकी शुरुआत पांडुलिपि चित्रण की कला के रूप में हुई, जो फारस की तकनीकों से प्रभावित थी। जब हुमायूँ फारस से लौटे, तो वे अपने साथ कुशल चित्रकारों को लाए जिन्होंने भारतीय कलाकारों के साथ काम किया। इसी सहयोग से एक नई शैली का जन्म हुआ जिसने स्वतंत्र पहचान बनाई।

32. (2) मीर सैयद अली और अब्द अल-समद
मुगल चित्रकला की नींव रखने में सम्राट हुमायूँ की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। फारस से भारत लौटते समय वे दो महान उस्ताद चित्रकारों, मीर सैयद अली और अब्द अल-समद को अपने साथ लाए थे। इन कलाकारों ने अकबर के शासनकाल के दौरान शाही चित्रशाला का नेतृत्व किया और मुगल चित्रकला की आधारभूत शैली को आकार दिया। उनके मार्गदर्शन में ही 'हमजानामा' जैसी विशाल और महत्वपूर्ण परियोजनाओं पर कार्य शुरु किया गया था।

33. (1) I, II, IV और V
प्रारंभिक मुगल चित्रकला ऐतिहासिक और पौराणिक पांडुलिपियों को चित्रित करने के लिए विकसित हुई थी। इसमें शांत फारसी रंगों के साथ जीवंत भारतीय रंगों का कुशलतापूर्वक उपयोग किया गया, जिससे यह एक मिश्रित शैली बन गई। चित्रों के चारों ओर विस्तृत सजावटी हाशिये बनाना इस कला की प्रमुख पहचान बन गई। यह शैली केवल दरबारी दृश्यों तक सीमित नहीं थी, बल्कि इसमें व्यापक कथात्मक विस्तार भी शामिल किया गया था।

34. (1) अकबर
मुगल सम्राट अकबर के शासनकाल के दौरान कला और साहित्य को संस्थागत रूप दिया गया था। उन्होंने ही सबसे पहले एक औपचारिक शाही चित्रशाला की स्थापना की, जिसे 'तस्वीर खाना' कहा जाता था। यहाँ भारत और फारस के सैकड़ों कलाकारों ने मिलकर काम किया, जिससे एक नई चित्रकला शैली का जन्म हुआ। अकबर की व्यक्तिगत रुचि के कारण ही 'रज्मनामा' और 'अकबरनामा' जैसी प्रसिद्ध पांडुलिपियों का चित्रण संभव हो सका था।

35. (3) यह मालवा सल्तनत की एक पाक-विधि पुस्तक है जिसमें प्रारंभिक फारसी-प्रभावित लघु चित्र शामिल हैं।
'निमत नामा' मध्यकालीन भारत की एक अत्यंत महत्वपूर्ण पांडुलिपि है। यह मालवा सल्तनत के सुल्तान गयासुद्दीन खिलजी के शासनकाल के दौरान तैयार की गई एक पाक-विधि पुस्तक है। इसमें विभिन्न प्रकार के व्यंजनों और औषधियों को बनाने की विधियों का विवरण दिया गया है। ऐतिहासिक दृष्टि से यह महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें प्रारंभिक फारसी शैली और स्थानीय भारतीय परंपरा के मिश्रण वाले लघु चित्र मिलते हैं, जो सामाजिक झलक प्रस्तुत करते हैं।

36. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
मुगल चित्रशाला के कलाकार अपनी विशिष्ट विधाओं के लिए प्रसिद्ध थे। बसावन पृष्ठभूमि के परिदृश्यों और मानवीय भावनाओं को चित्रित करने में कुशल थे। दसवंत ने 'हमजानामा' जैसी प्रारंभिक कृतियों में योगदान दिया। उस्ताद मंसूर को जहांगीर के काल में वनस्पतियों और जीवों के अद्वितीय चित्रण के लिए जाना जाता है। अबुल हसन व्यक्ति चित्रण के उस्ताद थे। इन कलाकारों ने मिलकर मुगल चित्रकला को विश्व स्तर पर प्रतिष्ठित किया।

37. (3) इसे मानक पांडुलिपि कागज के बजाय कपड़े की बड़ी चादरों पर चित्रित किया गया था।
अकबर की चित्रशाला की प्रारंभिक परियोजनाओं में से एक 'हमजानामा' अपनी अनूठी विशेषताओं के कारण विशिष्ट है। सामान्य पांडुलिपियों के विपरीत, इसे कागज के बजाय सूती कपड़े की बड़ी चादरों पर चित्रित किया गया था। इसके चित्रों का आकार भी सामान्य लघु चित्रों की तुलना में काफी बड़ा था। इसमें अमीर हमजा के साहसिक कारनामों को दर्शाया गया है। यह परियोजना मुगल चित्रकला के विकास के शुरुआती चरण को दर्शाती है।

38. (3) केवल I और III
अकबर की शाही चित्रशाला सांस्कृतिक समन्वय का केंद्र थी। यहाँ 'रज्मनामा' के रूप में महाभारत का फारसी अनुवाद और चित्रण किया गया, जो भारतीय महाकाव्यों के प्रति अकबर की रुचि को दर्शाता है। यह भी सत्य है कि उनकी चित्रशाला में स्वदेशी हिंदू कलाकारों की संख्या फारसी कलाकारों से अधिक थी, जिससे कला में भारतीय प्रभाव बढ़ा। हालाँकि, कलाकार शाही आदेशों और विषयों के चयन में पूरी तरह स्वतंत्र नहीं थे।

39. (4) नैनसुख
मुगल चित्रकला के स्वर्ण युग के दौरान अकबर की चित्रशाला में फर्रुख बेग, मुकुंद और केसु दास जैसे अनेक प्रसिद्ध कलाकारों ने कार्य किया। नैनसुख इस सूची में एक अपवाद हैं क्योंकि वे अकबर के दरबार का हिस्सा नहीं थे। नैनसुख 18वीं शताब्दी के एक प्रसिद्ध पहाड़ी चित्रकार थे, जिन्होंने मुख्य रूप से जम्मू क्षेत्र के छोटे राज्यों के संरक्षण में काम किया था। उनकी शैली को कोमल रेखाओं के लिए पहचाना जाता है।

40. (1) एक संश्लेषित भारत-फारसी संस्कृति को बढ़ावा देना और अभिजात वर्ग के बीच स्वदेशी महाकाव्यों की समझ बढ़ाना।
अकबर के दरबार में 'रज्मनामा' के अनुवाद और चित्रण का मुख्य उद्देश्य एक संश्लेषित भारत-फारसी संस्कृति का निर्माण करना था। इस परियोजना के माध्यम से अकबर चाहते थे कि मुगल अभिजात वर्ग भारत के प्राचीन महाकाव्यों और धार्मिक परंपराओं को बेहतर ढंग से समझ सके। यह उनके 'सुलह-ए-कुल' के दर्शन का हिस्सा था, जो साम्राज्य के समुदायों के बीच सांस्कृतिक संवाद बढ़ाकर राजनीतिक स्थिरता सुनिश्चित करने का प्रयास था।

Downloaded from www.pdf.tube

41. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
जहांगीर के शासनकाल में मुगल चित्रकला में महत्वपूर्ण बदलाव आया। अकबर के समय की ऐतिहासिक पांडुलिपियों के स्थान पर अब व्यक्तिगत चित्रों और प्रकृतिवादी अध्ययनों को महत्व दिया जाने लगा। इसका कारण जहांगीर का व्यक्तिगत सौंदर्यबोध था, जो सूक्ष्म विवरणों और फूलों के चित्रण को पसंद करते थे। उन्होंने अलग चित्रों के एल्बम यानी 'मुरक्का' को प्रोत्साहित किया, जिससे इस काल की कला परिष्कृत और वैज्ञानिक रूप से सटीक हुई।

42. (1) उस्ताद मंसूर
जहांगीर के दरबार में उस्ताद मंसूर एक असाधारण चित्रकार थे, जिन्हें प्रकृति के सटीक चित्रण में महारत हासिल थी। उन्होंने दुर्लभ पक्षियों और कश्मीर की वनस्पतियों के अनेक जीवंत चित्र बनाए। उनकी विलक्षण प्रतिभा से प्रभावित होकर सम्राट जहांगीर ने उन्हें 'नादिर-उल-अस्र' की प्रतिष्ठित उपाधि से सम्मानित किया था। उनके द्वारा बनाए गए साइबेरियाई सारस के चित्र आज भी कला जगत में वैज्ञानिक शुद्धता का श्रेष्ठ उदाहरण माने जाते हैं।

43. (4) मीर सैयद अली - जहांगीर के शासनकाल के उत्तरार्ध में यूरोपीय छाया-प्रकाश तकनीक में महारत हासिल की।
जहांगीर के काल के चित्रकारों के संबंध में मीर सैयद अली का नाम गलत है। मीर सैयद अली हुमायूँ और अकबर के समय के प्रारंभिक उस्ताद कलाकार थे। जहांगीर के समय में उस्ताद मंसूर प्रकृति चित्रण के लिए, बिसनदास व्यक्ति चित्रण के लिए और अबुल हसन रूपक चित्रों के लिए प्रसिद्ध थे। यूरोपीय छाया-प्रकाश तकनीक को बाद के कलाकारों ने अपनाया था, जो मुगल कला में यथार्थवाद लाने के लिए उपयोग की गई थी।

44. (3) केवल IV
जहांगीर की चित्रकला शैली में यथार्थवाद की ओर स्पष्ट झुकाव दिखाई देता है। इस काल में व्यक्तिगत चित्रों और वैज्ञानिक रूप से सटीक वनस्पतियों के चित्रण पर अधिक जोर दिया गया। सम्राट के पीछे दिव्य प्रभामंडल की अवधारणा का उपयोग भी इसी समय शुरु हुआ, जो यूरोपीय ईसाई कला से प्रेरित था। यह कहना गलत है कि जहांगीर ने अमूर्त फारसी परिदृश्यों को प्राथमिकता दी; उन्होंने सूक्ष्म विवरणों को अधिक महत्व दिया था।

45. (3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है
मुगल चित्रकला पर यूरोपीय प्रभाव ने तकनीकी दृष्टि से इसे समृद्ध किया। यूरोपीय चित्रों के माध्यम से मुगल कलाकारों ने रेखीय परिप्रेक्ष्य और त्रि-आयामी मॉडलिंग की अवधारणाओं को सीखा, जिससे चित्रों में गहराई का अनुभव होने लगा। हालाँकि, छाया-प्रकाश चित्रण की तकनीक को मुगल कलाकारों ने पूरी तरह उसी रूप में नहीं अपनाया जैसा वह यूरोप में था; उन्होंने इसे अपनी शैलियों के साथ मिश्रित करके नया स्वरुप प्रदान किया।

46. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
राजपूत चित्रकला की विभिन्न शैलियाँ अपने क्षेत्रीय रंगों के लिए प्रसिद्ध हैं। मेवाड़ शैली गहरे रंगों के लिए जानी जाती है, जबकि किशनगढ़ शैली में 'बनी-ठनी' के रूप में महिलाओं की अतिरंजित सुंदरता का चित्रण मिलता है। बूंदी शैली हरे-भरे परिदृश्यों के लिए पहचानी जाती है। वहीं, पहाड़ी क्षेत्र की कांगड़ा शैली अपनी कोमल रेखाओं और राधा-कृष्ण के प्रेम के काव्यमय चित्रण के लिए विश्व प्रसिद्ध है, जो भारतीय कला की श्रेष्ठता है।

47. (1) III, I, IV, II
भारतीय चित्रकला का इतिहास विभिन्न चरणों से होकर गुजरा है। सबसे पहले पूर्व-मुगल काल में पश्चिमी भारतीय पांडुलिपि चित्रण का विकास हुआ। इसके बाद 16वीं शताब्दी में अकबर ने औपचारिक शाही चित्रशाला की नींव रखी। 17वीं शताब्दी की शुरुआत में जहांगीर के काल में प्रकृतिवादी एल्बम चित्रों ने परिपक्वता प्राप्त की। अंत में, 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में पहाड़ी क्षेत्रों में कांगड़ा शैली अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँची, जो निरंतर विकास को दर्शाती है।

48. (2) किशनगढ़ के राजा सावंत सिंह
प्रसिद्ध लघु चित्र 'बनी ठनी' को अक्सर भारतीय कला का श्रेष्ठ उदाहरण माना जाता है। इसे कलाकार निहाल चंद ने 18वीं शताब्दी में किशनगढ़ के राजा सावंत सिंह के संरक्षण में चित्रित किया था। यह चित्र किशनगढ़ शैली की विशिष्टताओं जैसे धनुषाकार भौहें और लंबी आँखों का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। यह चित्रण राजा सावंत सिंह और उनकी प्रेमिका बनी ठनी की आध्यात्मिक और सौंदर्यात्मक भावनाओं से गहराई से प्रेरित था।

49. (1) केवल I
राजपूत चित्रकला परंपरा के बारे में यह कहना गलत है कि यह मुगल शैली से अछूती रही। वास्तव में, राजपूत कला ने मुगल दरबार से अनेक तकनीकी बारीकियों को सीखा और उन्हें अपने धार्मिक विषयों के साथ आत्मसात किया। इस शैली में कृष्ण लीला और पौराणिक कथाओं का प्रमुखता से चित्रण हुआ। महलों की दीवारों पर विशाल भित्ति चित्रों का निर्माण इसकी अन्य महत्वपूर्ण पहचान थी, जो सांस्कृतिक समन्वय का परिणाम थी।

50. (1) राजपूत चित्रकारों ने कागज का पूरी तरह से त्याग कर दिया था और अपने लघु चित्रों के लिए केवल कपड़े का उपयोग किया था।
मुगल और राजपूत चित्रकला के बीच अंतर को स्पष्ट करते समय यह कहना गलत है कि राजपूत कलाकारों ने कागज का त्याग कर दिया था। वास्तव में, राजपूत लघु चित्रों के लिए कागज का व्यापक उपयोग किया गया था, जिसे स्थानीय स्तर पर 'वस्ली' कहा जाता था। जहाँ मुगल कला ऐतिहासिक यथार्थवाद पर केंद्रित थी, वहीं राजपूत कला अक्सर धार्मिक रहस्यवाद और काव्य की ओर झुकी हुई थी, जिसमें भावनात्मक गहराई मिलती है।

51. (3) कश्मीर के राजाओं का कालानुक्रमिक इतिहास
12वीं शताब्दी में कल्हण द्वारा रचित 'राजतरंगिणी' संस्कृत साहित्य की एक अत्यंत महत्वपूर्ण कृति है। यह ग्रंथ मुख्य रूप

NODIA

से कश्मीर के राजाओं का विस्तृत और कालानुक्रमिक इतिहास प्रस्तुत करता है। ऐतिहासिक लेखन की दृष्टि से इसे भारत का पहला वैज्ञानिक इतिहास ग्रंथ माना जाता है क्योंकि कल्हण ने इसमें साक्ष्यों की जाँच और घटनाओं के क्रमबद्ध विवरण पर विशेष बल दिया है, जो तत्कालीन समाज को समझने का विश्वसनीय स्रोत है।

52. (4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है
मध्यकाल में राजभाषा के रूप में फारसी के वर्चस्व के बावजूद संस्कृत साहित्य का सृजन पूरी तरह नहीं रुका था। यह कहना गलत है कि संस्कृत में लेखन बंद हो गया था; इसके विपरीत, धर्म, दर्शन और कानून के क्षेत्रों में महत्वपूर्ण कार्य जारी रहे। विजयनगर साम्राज्य जैसे क्षेत्रीय केंद्रों में प्राचीन कानूनी ग्रंथों पर महत्वपूर्ण संस्कृत भाष्य रचे गए। यह दर्शाता है कि संस्कृत ने अपनी शैक्षणिक महत्ता को बनाए रखा था।

53. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
मध्यकालीन संस्कृत साहित्य के लेखकों का भारतीय संस्कृति में अमूल्य योगदान है। जयदेव ने 'गीत गोविंद' के माध्यम से भक्ति की नई धारा प्रवाहित की। कल्हण की 'राजतरंगिणी' ऐतिहासिक लेखन का उत्कृष्ट उदाहरण है। सोमदेव द्वारा रचित 'कथासरित्सागर' कहानियों का विशाल संग्रह है। इसी प्रकार, बिल्हण ने 'विक्रमांकदेवचरित' में चालुक्य राजा का वर्णन किया है। ये रचनाएँ उस काल के साहित्य और सामाजिक परिवेश को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण आधार प्रदान करती हैं।

54. (3) केवल III
मध्यकालीन संस्कृत साहित्य पूरी तरह से धार्मिक विषयों से मुक्त नहीं था; वास्तव में, इस काल की अधिकांश रचनाएँ धर्म और दर्शन पर आधारित रहीं। सल्तनत काल के दौरान भी स्वतंत्र क्षेत्रीय दरबारों में अलंकृत दरबारी कविताएँ और शास्त्रीय ग्रंथों का निर्माण जारी रहा। विशेष रूप से दक्षिण भारत में वैज्ञानिक विषयों जैसे गणित और खगोल विज्ञान पर महत्वपूर्ण संस्कृत ग्रंथ लिखे गए, जो भारतीय ज्ञान परंपरा की निरंतरता को दर्शाते हैं।

55. (4) यह मुख्य प्रशासनिक भाषा नहीं रही लेकिन धर्म, दर्शन और क्षेत्रीय दरबारों में फलती-फूलती रही।
मध्यकाल में दिल्ली सल्तनत और मुगल साम्राज्य के दौरान संस्कृत की स्थिति में बदलाव आए। यद्यपि इसने प्रशासनिक भाषा के रूप में अपना स्थान खो दिया, लेकिन यह पूरी तरह समाप्त नहीं हुई। संस्कृत धर्म, दर्शन और न्यायशास्त्र की भाषा के रूप में प्रतिष्ठित बनी रही। कई क्षेत्रीय हिंदू दरबारों में इसे संरक्षण मिलता रहा। कुछ मुगल सम्राटों ने भी संस्कृत विद्वानों का सम्मान किया और ग्रंथों के अनुवाद को प्रोत्साहित किया था।

56. (1) मलिक मुहम्मद जायसी ने अवधी भाषा में सूफी रूपक और राजपूत रुमानी प्रेम के मिश्रण के साथ महाकाव्य 'पद्मावत' की रचना की।
मध्यकाल में अवधी साहित्य ने अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाई। मलिक मुहम्मद जायसी द्वारा रचित 'पद्मावत' इसका उत्कृष्ट उदाहरण है, जिसमें उन्होंने सूफी विचारों को राजपूत प्रेम कथा के माध्यम से प्रस्तुत किया है। अवधी केवल संतों तक सीमित नहीं थी, बल्कि सूफी कवियों ने भी इसे अपनाया। तुलसीदास ने भी 'रामचरितमानस' के लिए अवधी को ही चुना। दोहा और चौपाई जैसी छंद रचनाएँ इस समृद्ध परंपरा का आधार थीं।

57. (3) ब्रज भाषा
मध्यकालीन भक्ति आंदोलन के महान कवि सूरदास को मुख्य रुप से ब्रज भाषा के विकास और उसकी लोकप्रियता के लिए जाना जाता है। उन्होंने अपनी रचना 'सूरसागर' में भगवान कृष्ण की बाल लीलाओं का अत्यंत मार्मिक वर्णन किया है। ब्रज भाषा, जो मथुरा के आसपास की बोली थी, सूरदास के काव्य के प्रभाव से एक प्रमुख साहित्यिक भाषा बन गई। उनकी मधुर काव्य शैली ने कृष्ण भक्ति मार्ग को जन-जन तक पहुँचाया।

58. (3) केवल IV
मध्यकालीन भारत में क्षेत्रीय साहित्य का विकास विविधतापूर्ण था। चंद बरदाई ने 'पृथ्वीराज रासो' के माध्यम से वीरता की गाथाएँ लिखीं, जबकि विद्यापति ने मैथिली में भक्ति का वर्णन किया। बंगाल में 'मंगलकाव्य' स्वदेशी देवताओं की स्तुति के लिए प्रसिद्ध हुए। यह कहना गलत है कि दक्षिण के संतों ने अवधी साहित्य की नींव रखी; उनका योगदान तमिल साहित्य में था। अवधी का विकास उत्तर भारत के सूफी और कवियों से हुआ था।

59. (4) सूरदास
मध्यकालीन कवियों के बीच भाषाई आधार पर सूरदास अन्य तीनों से अलग हैं। जहाँ तुलसीदास, मलिक मुहम्मद जायसी और कुतुबन ने अपनी रचनाओं के लिए मुख्य रूप से अवधी भाषा को माध्यम बनाया, वहीं सूरदास ने अपनी समस्त भक्ति रचनाएँ ब्रज भाषा में लिखी थीं। तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' के माध्यम से अवधी को प्रतिष्ठित किया था। सूरदास की ब्रज भाषा ने कृष्ण काव्य परंपरा को एक नई और ऊँची दिशा प्रदान की थी।

60. (2) मुंतखब-उत-तवारीख
मध्यकाल में रचित साहित्य को उनकी भाषा के आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है। 'रामचरितमानस' अवधी में और 'कीर्तिलता' मैथिली में लिखी गई लोक भाषा की कृतियाँ हैं। इसके विपरीत, अब्दुल कादिर बदायुनी द्वारा रचित 'मुंतखब-उत-तवारीख' एक शास्त्रीय फारसी ग्रंथ है। यह मुगल दरबार की आधिकारिक भाषा में लिखा गया इतिहास है, न कि क्षेत्रीय लोक भाषा में। यह अंतर तत्कालीन भाषाई विविधता को स्पष्ट रूप से उजागर करता है।

Click Here to Buy book on Amazon

लिखावट एक समान आकार की दिखाई दे। यह तकनीक उस समय के वास्तुकारों की उच्च समझ का प्रमाण है।

21. (3) जामा मस्जिद → सलीम चिश्ती का मकबरा → पंच महल → दीवान-ए-खास
फतेहपुर सीकरी में बुलंद दरवाजे से प्रवेश करने पर संरचनाओं का एक विशिष्ट क्रम मिलता है। सबसे पहले जामा मस्जिद का विशाल प्रांगण आता है, जिसके भीतर शेख सलीम चिश्ती का सफेद संगमरमर का मकबरा स्थित है। इसके बाद शाही परिसर की ओर बढ़ने पर पंच महल जैसी बहुमंजिला संरचना दिखाई देती है। अंत में प्रशासनिक केंद्र की ओर पहुँचने पर दीवान-ए-खास मिलता है, जो राजकीय कार्यों का केंद्र था।

22. (2) गुजरात प्रांत पर सफल विजय
फतेहपुर सीकरी में स्थित विशाल बुलंद दरवाजा मुगल स्थापत्य कला का एक बेजोड़ नमूना है। सम्राट अकबर ने इस भव्य द्वार का निर्माण 1572-73 में गुजरात प्रांत पर अपनी ऐतिहासिक और सफल विजय की स्मृति में करवाया था। यह दरवाजा अपनी विशाल ऊँचाई और प्रभावशाली शिल्प के माध्यम से मुगल साम्राज्य की शक्ति का प्रतीक माना जाता है। इसके शिलालेख अकबर के शासनकाल की सैन्य उपलब्धियों को दर्शाते हैं।

23. (2) केवल II और III
फतेहपुर सीकरी का स्थापत्य प्रारूप तैमूरी संरचनात्मक रूपों और स्वदेशी भारतीय सजावटी शैलियों के गहरे समन्वय को प्रदर्शित करता है। यह शहर मुगल कला के प्रयोगधर्मी स्वभाव का उत्कृष्ट उदाहरण है। हालाँकि, इसकी स्थापना के कुछ ही दशकों बाद इसे छोड़ दिया गया था, जिसका मुख्य कारण स्थानीय क्षेत्र में पानी की निरंतर कमी को माना जाता है। इस शहर की योजना स्थलाकृति के अनुसार विकसित की गई थी।

24. (1) इसे विशेष रुप से अकबर के साम्राज्य के मुख्य खजाने और टकसाल के रूप में उपयोग के लिए डिजाइन किया गया था।
फतेहपुर सीकरी का पंच महल एक अद्वितीय पांच मंजिला संरचना है जो ऊपर की ओर बढ़ने पर आकार में छोटी होती जाती है। यह पूरी तरह से स्तंभों पर आधारित है और इसमें दीवारों का अभाव है। इसका उपयोग मुख्य रूप से मनोरंजन और ठंडी हवा का आनंद लेने के लिए किया जाता था। इसकी स्थापत्य शैली प्राचीन भारतीय विहारों की याद दिलाती है। खजाना और टकसाल जैसी गतिविधियाँ अन्य इमारतों में होती थीं।

25. (3) विविध क्षेत्रीय भारतीय स्थापत्य तत्वों का एक प्रयोगात्मक संलयन, जो उनके समावेशी राजनीतिक दृष्टिकोण का प्रतीक है।
फतेहपुर सीकरी के निर्माण में अकबर का स्थापत्य दर्शन उनके समावेशी दृष्टिकोण को दर्शाता है। उन्होंने गुजरात, राजस्थान और बंगाल के स्थापत्य तत्वों का एक प्रयोगात्मक संलयन किया। यह प्रयास न केवल नए कलात्मक रुपों को जन्म देने के लिए था, बल्कि यह साम्राज्य की सांस्कृतिक विविधता को जोड़ने का राजनीतिक संदेश भी था। यहाँ की इमारतें क्षेत्रीय सीमाओं से परे एक नई पहचान स्थापित करती हैं।

26. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
मध्यकालीन भारत में क्षेत्रीय स्थापत्य शैलियाँ अपनी विशिष्ट पहचान रखती थीं। बंगाल में अदीना मस्जिद अपनी विशालता के लिए प्रसिद्ध है। जौनपुर की अटाला मस्जिद अपने ऊँचे तोरणों और स्थानीय प्रभाव को दर्शाती है। बीजापुर का गोल गुंबद अपनी विशाल गुंबद संरचना के लिए विश्व प्रसिद्ध है। इसी प्रकार, मालवा शैली में हिंडोला महल अपनी ढालू दीवारों के लिए जाना जाता है। ये सभी स्मारक क्षेत्रीय कलात्मक अभिरुचि के प्रतीक हैं।

27. (4) 'बंगला' छत, जिसमें पारंपरिक फूस की झोपड़ियों से ली गई एक विशिष्ट ढालू और उत्तल आकृति होती है।
बंगाल की क्षेत्रीय स्थापत्य शैली अपनी स्थानीय पहचान के लिए प्रसिद्ध है। इस शैली की सबसे प्रमुख विशेषता 'बंगला' छत का उपयोग है, जो पारंपरिक ग्रामीण फूस की झोपड़ियों की ढालू आकृति से प्रेरित थी। यह प्रारुप भारी वर्षा वाले क्षेत्र की भौगोलिक आवश्यकताओं के अनुकूल था। इसके साथ ही, स्थानीय ईंटों और टेराकोटा की टाइलों से इमारतों को सजाना बंगाल की मध्यकालीन कला की महत्वपूर्ण विशेषता थी।

NODIA

28. (2) केवल III
जौनपुर की स्थापत्य शैली अपनी विशिष्ट विशेषताओं के कारण पहचानी जाती है, जिसमें मस्जिदों के अग्रभाग पर विशाल तोरण प्रमुख हैं। जौनपुर की मस्जिदों के बारे में यह कहना गलत है कि उनमें ऊँची मीनारें होती थीं; वास्तव में, इस शैली में मीनारों का अभाव देखा जाता है। बंगाल शैली में टेराकोटा का उपयोग और बीजापुर शैली में विस्तृत पत्थरों के ब्रैकेट इस युग की अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्रीय विशेषताएँ थीं।

29. (3) बड़ा गुंबद
क्षेत्रीय स्थापत्य वर्गीकरण के आधार पर बड़ा गुंबद अन्य स्मारकों से अलग है। बड़ा गुंबद दिल्ली में स्थित है और यह लोदी काल की विशिष्ट शैली का प्रतिनिधित्व करता है। इसके विपरीत, इब्राहिम रौज़ा, बीजापुर की जामा मस्जिद और गोल गुंबज सभी बीजापुर की आदिल शाही वास्तुकला के उदाहरण हैं। बीजापुर शैली अपनी सजावटी सूक्ष्मता के लिए प्रसिद्ध है, जबकि लोदी शैली में दिल्ली सल्तनत की सादगी प्रमुखता से दिखाई देती है।

30. (3) A सही है लेकिन R गलत है।
बीजापुर का गोल गुंबज अपनी अनूठी प्रतिध्वनि दीर्घा के लिए प्रसिद्ध है, जहाँ धीमी आवाज भी स्पष्ट रूप से सुनी जा सकती है। यह ध्वनि संबंधी विशेषता इसकी वास्तुकला का एक चमत्कार है। हालाँकि, इसका कारण परस्पर काटते हुए मेहराब नहीं, बल्कि गुंबद का विशाल आंतरिक स्थान और उसकी विशिष्ट गोलाकार बनावट है। मेहराबों की प्रणाली का उपयोग मुख्य रूप से गुंबद के भारी भार को संभालने के लिए किया गया था।

रूप से केंद्रित शैली है। ख्याल का अर्थ 'कल्पना' है, जो कलाकार को अधिक रचनात्मकता प्रदान करता है। तराना लयबद्ध शब्दांशों के माध्यम से गति का संचार करता है। वहीं, ठुमरी अपनी रुमानी भावनाओं और अर्ध-शास्त्रीय अभिव्यक्ति के लिए लोकप्रिय है। ये सभी शैलियाँ मध्यकालीन भारत में संगीत के क्रमिक विकास का प्रतीक हैं।

72. (1) एक अत्यधिक कल्पनाशील गायन रूप जो कलाकार को ध्रुपद की तुलना में अधिक स्वतंत्रता प्रदान करता है।
'ख्याल' गायन शैली भारतीय शास्त्रीय संगीत के सबसे लोकप्रिय रूपों में से एक है। 'ख्याल' शब्द का अर्थ ही 'कल्पना' है, जो कलाकार को राग की सीमाओं के भीतर अपनी रचनात्मकता दिखाने की स्वतंत्रता प्रदान करता है। ध्रुपद की तुलना में यह अधिक लचीली शैली है, जिसमें तानों का सुंदर उपयोग किया जाता है। इसकी लोकप्रियता मुगल काल के उत्तरार्ध में बढ़ी और आज यह उत्तर भारतीय संगीत की मुख्य पद्धति है।

73. (3) स्वामी हरिदास
मुगल सम्राट अकबर के दरबार के महान संगीतकार मियां तानसेन ने अपनी संगीत साधना की नींव स्वामी हरिदास के मार्गदर्शन में रखी थी। स्वामी हरिदास वृंदावन के एक प्रतिष्ठित संत थे, जिन्होंने तानसेन को संगीत की आध्यात्मिक गहराई और ध्रुपद गायन की बारीकियों से परिचित कराया। तानसेन का प्रारंभिक प्रशिक्षण वृंदावन के भक्तिमय वातावरण में हुआ। यही शिक्षा आगे चलकर तानसेन को अपने समय का अद्वितीय संगीत सम्राट बनाने में सहायक सिद्ध हुई थी।

74. (1) यह प्रदर्शन के दौरान पखावज या किसी भी ताल वाद्ययंत्र के उपयोग को पूरी तरह से प्रतिबंधित करता है।
ध्रुपद गायन शैली के बारे में यह कहना गलत है कि इसमें ताल वाद्ययंत्रों का उपयोग प्रतिबंधित है। वास्तव में, पखावज ध्रुपद प्रदर्शन का एक अनिवार्य हिस्सा है, जो इसे एक मजबूत लय प्रदान करता है। ध्रुपद उत्तर भारत की सबसे प्राचीन शास्त्रीय शैलियों में से एक है, जो अपने गंभीर विषयों के लिए जानी जाती है। ग्वालियर के राजा मानसिंह तोमर ने इसे संरक्षण देकर काफी लोकप्रिय बनाया था। यह शैली अनुशासन पर आधारित है।

75. (3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है
मध्यकालीन भारत में संगीत का संश्लेषण अमीर खुसरो जैसे विद्वानों के प्रयासों का परिणाम था, जिन्होंने भारतीय संगीत में अनेक फारसी रागों को शामिल किया। हालाँकि, औरंगज़ेब के बारे में यह कहना गलत है कि उन्होंने संगीत को भारी संरक्षण दिया। वास्तव में, औरंगज़ेब ने अपने शासनकाल में दरबारी संगीत पर प्रतिबंध लगा दिया था। उनके इस निर्णय के कारण अनेक संगीतकार क्षेत्रीय राज्यों की ओर चले गए, जिससे क्षेत्रीय शैलियों का विकास हुआ।

76. (2) सूफी संतों, विशेष रूप से चिश्ती संपरदाय द्वारा।
कव्वाली का आध्यात्मिक संगीत रूप भारत में सूफी संतों, विशेष रूप से चिश्ती संप्रदाय के प्रयासों से लोकप्रिय हुआ। अमीर खुसरो को इस शैली को व्यवस्थित करने और इसमें भारतीय तत्वों का मेल करने का श्रेय दिया जाता है। सूफी खानकाहों में 'समा' के आयोजन के दौरान कव्वाली का उपयोग ईश्वर के प्रति प्रेम के माध्यम के रूप में किया जाता था। अपनी सरल भाषा और लयबद्धता के कारण यह शैली आम लोगों के बीच अत्यंत प्रिय बन गई।

77. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
शाहजहाँ का शासनकाल मुगल वास्तुकला के 'स्वर्ण युग' के रूप में जाना जाता है, जिसमें लाल बलुआ पत्थर के स्थान पर सफेद संगमरमर के उपयोग की ओर झुकाव दिखाई देता है। इस काल में इमारतों के स्वरूप में बदलाव आया और दांतेदार मेहराब तथा भव्य गुंबद स्थापत्य की प्रमुख पहचान बन गए। ये विशेषताएँ न केवल संरचनाओं को सौंदर्य प्रदान करती थीं, बल्कि सम्राट के वैभव को भी दर्शाती थीं। ताजमहल इसका उत्कृष्ट उदाहरण है।

78. (3) वीणा
मध्यकालीन संगीत के इतिहास में अमीर खुसरो को एक क्रांतिकारी संगीतकार माना जाता है। उन्हें सितार और तबला जैसे वाद्ययंत्रों के विकास या उनमें सुधार करने का श्रेय दिया जाता है, जो भारतीय और फारसी परंपराओं के मिलन का परिणाम थे। इसके विपरीत, वीणा एक प्राचीन भारतीय वाद्ययंत्र है जिसकी जड़ें वैदिक काल में मिलती हैं। यह बहुत पहले से ही भारतीय शास्त्रीय संगीत का आधार रहा है। अमीर खुसरो ने नवीन रागों के माध्यम से इसे आधुनिक स्वरुप दिया।

NODIA

79. (1) राग भैरवी
मियां तानसेन को अनेक रागों की रचना का श्रेय दिया जाता है, जिनमें मियां की मल्हार और दरबारी कानडा प्रसिद्ध हैं। ये राग उनकी मौलिकता को दर्शाते हैं। हालाँकि, राग भैरवी को पारंपरिक रूप से तानसेन की निजी रचना नहीं माना जाता है। राग भैरवी एक अत्यंत प्राचीन और मौलिक राग है, जिसका उपयोग भारतीय संगीत में सदियों से होता आ रहा है। तानसेन ने प्रचलित रागों को परिष्कृत किया, लेकिन भैरवी की उत्पत्ति उनसे काफी पहले की है।

80. (2) इसे ग्वालियर के राजा मानसिंह तोमर के संरक्षण में संगीत ज्ञान को संकलित करने के लिए तैयार किया गया था।
'मान कौतूहल' मध्यकालीन भारत में संगीत के दस्तावेजीकरण का एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रयास था। इसे ग्वालियर के राजा मानसिंह तोमर के संरक्षण में विद्वानों की सभा द्वारा तैयार किया गया था। इस ग्रंथ का मुख्य उद्देश्य उस समय के रागों, गायन पद्धतियों और संगीत के सैद्धांतिक ज्ञान को एक स्थान पर संकलित करना था। यह कार्य भविष्य के कलाकारों के लिए एक मार्गदर्शक बना। यह ग्रंथ तत्कालीन भारतीय संस्कृति की उन्नति का प्रतीक है।

www.nodia.in

61. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
मुगल काल में फारसी भाषा का उत्थान एक सोची-समझी प्रशासनिक नीति का परिणाम था। सम्राट अकबर ने राजस्व प्रशासन की आधिकारिक भाषा के रूप में फारसी को अनिवार्य कर दिया था। इस निर्णय का उद्देश्य पूरे साम्राज्य में प्रशासनिक एकरूपता लाना और एक ऐसी भाषा को बढ़ावा देना था जो विभिन्न समूहों को जोड़ सके। परिणामस्वरूप, फारसी कूटनीति और विद्वता की प्रमुख भाषा बनकर उभरी, जिसने भारतीय साहित्य को प्रभावित किया।

62. (4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है
अबुल फज़ल मुगल दरबार के एक प्रभावशाली लेखक और इतिहासकार थे। उनका प्रमुख कार्य 'अकबरनामा' है, जिसमें उन्होंने सम्राट अकबर को एक दिव्य प्रकाश से प्रेरित शासक के रूप में महिमामंडित किया है। हालाँकि, उनकी गद्य शैली के बारे में यह कहना गलत है कि वह सरल थी। इसके विपरीत, अबुल फज़ल की भाषा अपनी जटिलता और भारी शब्दों के उपयोग के लिए जानी जाती है, जो बौद्धिक गरिमा का प्रतीक थी।

63. (2) केवल II
मुगल काल के फारसी साहित्य के संबंध में अब्दुल कादिर बदायुनी की कृति 'मुंतखब-उत-तवारीख' को आधिकारिक इतिहास कहना गलत है। वास्तव में, यह एक आलोचनात्मक ग्रंथ था जिसमें बदायुनी ने अकबर की नीतियों का गुप्त रूप से विरोध किया था। इसके विपरीत, 'आइन-ए-अकबरी' आधिकारिक प्रशासनिक दस्तावेज था। अब्दुल रहीम द्वारा 'बाबरनामा' का फारसी अनुवाद इस काल की अन्य महत्वपूर्ण उपलब्धि है, जो मुगल इतिहास लेखन को दर्शाता है।

64. (4) उन्होंने हिंदू महाकाव्यों के अनुवाद में भाग लेने से मना कर दिया था।
मुगल दरबार के राजकवि फैजी के संबंध में यह कथन गलत है कि उन्होंने हिंदू महाकाव्यों के अनुवाद में भाग लेने से मना किया था। वास्तव में, वे अकबर द्वारा शुरु किए गए अनुवाद विभाग के प्रमुख सदस्य थे। उन्होंने स्वयं महाभारत के फारसी अनुवाद की देखरेख की और 'लीलावती' जैसे गणितीय ग्रंथ का भी अनुवाद किया। उन्होंने भारतीय ज्ञान और फारसी साहित्य के बीच सांस्कृतिक सेतु बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

65. (1) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
मुगल काल के ऐतिहासिक ग्रंथ तत्कालीन इतिहास लेखन की समृद्ध परंपरा को दर्शाते हैं। अब्दुल कादिर बदायुनी ने 'मुंतखब-उत-तवारीख' के माध्यम से अकबर के काल का आलोचनात्मक विवरण दिया। अबुल फज़ल की 'आइन-ए-अकबरी' साम्राज्य का विस्तृत प्रशासनिक दस्तावेज है। अब्दुल हमीद लाहौरी का 'पादशाहनामा' शाहजहाँ के शासनकाल की महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है। ये ग्रंथ आज भी मध्यकालीन भारतीय इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए प्राथमिक और विश्वसनीय स्रोत हैं।

66. (1) सैन्य शिविर (लश्कर)
'उर्दू' शब्द की भाषाई उत्पत्ति सांस्कृतिक संश्लेषण का एक रोचक परिणाम है। यह मूल रूप से एक तुर्की शब्द है जिसका अर्थ 'सैन्य शिविर' होता है। मध्यकाल में जब विभिन्न भाषाओं के सैनिक एक साथ रहते थे, तो उनके बीच संवाद के लिए एक मिली-जुली भाषा विकसित हुई। प्रारंभ में इसे शाही शिविर की भाषा कहा गया। समय के साथ, यही भाषा परिष्कृत होकर एक समृद्ध साहित्यिक माध्यम बनी, जिसे आज हम जानते हैं।

67. (3) रेखता
उर्दू भाषा के विकास के प्रारंभिक चरणों में इसे एक विशिष्ट नाम से जाना जाता था। सूफी संतों ने अपने संदेशों को जन-जन तक पहुँचाने के लिए जिस भाषा का उपयोग किया, उसे 'रेखता' कहा जाता था। इसका शाब्दिक अर्थ 'मिश्रित' होता है, जो फारसी और स्थानीय भारतीय बोलियों के मेल को दर्शाता है। दक्कन में यह 'दक्खनी' के रूप में फली-फूली और बाद में आधुनिक उर्दू के साहित्यिक स्वरूप का आधार बनी, जो अत्यंत प्रभावशाली रही।

68. (4) मुहम्मद कुली कुतुब शाह - पूरी तरह से शास्त्रीय अरबी में राजआदेश जारी करने वाले पहले शासक
मुहम्मद कुली कुतुब शाह के संबंध में दिया गया विवरण गलत है क्योंकि वे केवल अरबी तक सीमित नहीं थे। वे दक्कनी उर्दू के महान संरक्षक और स्वयं एक कुशल कवि थे, जिन्होंने क्षेत्रीय भाषा को बढ़ावा दिया। अमीर खुसरो ने हिंदवी में कविताएँ लिखकर इसकी नींव रखी, जबकि वली दक्कनी ने दिल्ली में उर्दू गजल को लोकप्रिय बनाया। मीर तकी मीर उर्दू साहित्य के प्रमुख स्तंभ माने जाते हैं।

69. (3) यह खड़ी बोली के व्याकरण से विकसित हुई है, जिसमें फारसी, अरबी और तुर्की शब्दावली को शामिल किया गया है।
उर्दू भाषा की संरचना भारत के बहुसांस्कृतिक इतिहास का प्रतिबिंब है। यह मौलिक रूप से दिल्ली के आसपास बोली जाने वाली 'खड़ी बोली' के व्याकरण पर आधारित है। समय के साथ, इसमें फारसी, अरबी और तुर्की भाषाओं के शब्दों का समावेश हुआ, जिससे इसकी शब्दावली समृद्ध हुई। यह एक स्वदेशी विकास है, जो विभिन्न संस्कृतियों के आपसी मेलजोल और प्रशासनिक आवश्यकताओं के कारण एक नई साहित्यिक भाषा के रूप में उभरी।

70. (2) II, I, III
उर्दू साहित्य के केंद्रों का उदय एक क्रमिक ऐतिहासिक प्रक्रिया रही है। सबसे पहले 15वीं शताब्दी में दक्कन के राज्यों में 'दक्खनी' के रूप में इसका विकास हुआ। इसके बाद, 18वीं शताब्दी की शुरुआत में वली दक्कनी के दिल्ली आगमन के साथ यह दिल्ली में शास्त्रीय उर्दू के रूप में फली-फूली। अंततः, 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में जब दिल्ली की शक्ति कम हुई, तब लखनऊ उर्दू संस्कृति के परिष्कृत केंद्र के रूप में उभरा।

71. (1) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
भारतीय शास्त्रीय संगीत की विभिन्न गायन शैलियाँ अपने विशिष्ट चरित्र के लिए प्रसिद्ध हैं। ध्रुपद एक प्राचीन और आध्यात्मिक

Downloaded from www.pdf.tube

8. दक्षिण भारत में प्रारंभिक भक्ति आंदोलन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. आंडाल एक प्रमुख महिला अलवार संत थीं, जो भगवान कृष्ण के प्रति अपनी प्रगाढ़ भक्ति के लिए जानी जाती थीं।

II. अलवार और नयनार संत विशेष रूप से उच्च जातियों से संबंधित थे और वे शूद्रों को इससे बाहर रखते थे।

III. वे अपने देवताओं की स्तुति में तमिल में भजन गाते हुए एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करते थे।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II, और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

9. भक्ति संतों और उनके विशिष्ट शाही संरक्षण या संघर्ष का निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही सुमेलित है?

(1) नम्मालवार - चोल राजा राजराजा प्रथम के मुख्य मंत्री के रूप में सेवा की
(2) कुलशेखर अलवार - अपने वैष्णव विश्वासों के कारण पांड्य शासकों द्वारा सताए गए
(3) अप्पार - शैव धर्म अपनाने से पहले पल्लव शासक के साथ संघर्ष
(4) सम्बंदर - राष्ट्रकूट वंश के लिए एक सैन्य सेनापति के रूप में कार्य किया
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

10. तमिल भक्ति परंपराओं के संदर्भ में, 'तिरुमुरै' (Tirumurai) शब्द किसे संदर्भित करता है?

(1) तमिल शैव भक्ति कविता का बारह खंडों वाला संग्रह
(2) भगवान शिव के मंदिरों को समर्पित एक अद्वितीय स्थापत्य शैली
(3) अलवार संतों द्वारा लिखित भजनों का एक व्यापक संकलन
(4) जैन और बौद्ध भिक्षुओं की आलोचना करने वाला एक विस्तृत दार्शनिक ग्रंथ
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

11. नीचे दिए गए प्रश्न में, अभिकथन (A) और कारण (R) के रूप में दो कथन दिए गए हैं। कथनों को पढ़िए और सही विकल्प चुनिए:

अभिकथन (A): रामानुज ने भौतिक जगत की वास्तविकता को स्वीकार करते हुए मोक्ष प्राप्त करने के लिए भक्ति मार्ग की वकालत की।

कारण (R): उनके विशिष्टाद्वैत दर्शन के अनुसार, जीवात्मा और भौतिक जगत वास्तविक हैं, लेकिन वे पूरी तरह से ब्रह्म पर निर्भर हैं।

(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

12. रामानुज ने ब्रह्म सूत्र पर एक अत्यंत प्रभावशाली भाष्य लिखा था। इस प्रसिद्ध दार्शनिक ग्रंथ का नाम क्या है?

(1) गीता भाष्य
(2) श्री भाष्य
(3) वेदार्थ संग्रह
(4) तत्त्वमुक्तावली
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

13. एक साधक उस दर्शन का अनुसरण करता है जो कहता है कि ईश्वर (ब्रह्म) अंतिम सत्य है, लेकिन आत्मा (चित्) और जगत (अचित्) इसके वास्तविक, अविभाज्य गुण हैं, ठीक वैसे ही जैसे शरीर आत्मा के लिए होता है। वह साधक किस दर्शन का अनुसरण कर रहा है?

(1) अद्वैत
(2) द्वैत
(3) विशिष्टाद्वैत
(4) शुद्धाद्वैत
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

14. रामानुज के जीवन और शिक्षाओं के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।

(1) वे अलवारों के पवित्र भक्ति भजनों से गहरे प्रभावित थे।
(2) उन्होंने आदि शंकराचार्य के अद्वैत दर्शन का वैचारिक रूप से विरोध किया।
(3) उन्होंने अपने जीवन का एक बड़ा हिस्सा तमिलनाडु के श्रीरंगम मंदिर में व्यतीत किया।
(4) उन्होंने सिखाया कि निराकार ध्यान ही मोक्ष का एकमात्र सत्य मार्ग है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

15. माध्वाचार्य के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. वे वेदांत के द्वैतवाद मत के मुख्य प्रतिपादक थे।

II. उन्होंने प्रतिपादित किया कि जीवात्मा और ईश्वर (ब्रह्म) शाश्वत रूप से भिन्न हैं।

III. उन्होंने उडुपी में कृष्ण मठ की स्थापना की।

IV. उनका मानना था कि भौतिक जगत एक भ्रम (माया) है और इसका कोई वास्तविक अस्तित्व नहीं है।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

(1) केवल I, II, और III
(2) केवल I, III, और IV
(3) केवल II, III, और IV
(4) I, II, III, और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

16. माध्वाचार्य द्वारा प्रतिपादित द्वैतवाद को दार्शनिक साहित्य में सामान्यतः निम्नलिखित में से किस शब्द से भी जाना जाता है?

(1) केवलाद्वैत

(2) तत्त्ववाद
(3) भेदाभेद
(4) अचिंत्य भेदाभेद
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

17. निम्नलिखित में से कौन सी माध्वाचार्य के धर्मशास्त्र की एक मान्यता प्राप्त विशेषता नहीं है?
(1) आत्माओं का उन वर्गों में वर्गीकरण जो मुक्ति, पुनर्जन्म और नरक के लिए निर्धारित हैं।
(2) सर्वोच्च सत्ता के रूप में भगवान विष्णु का पूर्ण परित्याग।
(3) यह दावा कि ईश्वर और भौतिक जगत मौलिक रूप से भिन्न सत्ताएँ हैं।
(4) यह विश्वास कि भगवान हरि की भक्ति ही मुक्ति प्राप्त करने का प्राथमिक साधन है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

18. रामानंद के प्रमुख शिष्यों और उनकी पारंपरिक सामाजिक पृष्ठभूमि के संबंध में निम्नलिखित सूचियों पर विचार कीजिए:
सूची I: (शिष्य)
A. कबीर
B. रविदास
C. सेना
D. धन्ना
सूची II: (सामाजिक पृष्ठभूमि)
i. नाई
ii. किसान
iii. जुलाहा
iv. चर्मकार
निम्नलिखित में से कौन सा कूट सही सुमेलित है?
(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(3) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(4) A-i, B-iv, C-iii, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

19. रामानंद के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. वे मूल रूप से रामानुज द्वारा स्थापित श्री वैष्णव संप्रदाय से संबंधित थे।
II. उन्होंने भक्ति के केंद्र को भगवान विष्णु से बदलकर भगवान राम कर दिया।
III. उन्होंने उत्तर भारत में अपनी शिक्षाओं का प्रचार करने के लिए विशेष रूप से संस्कृत का उपयोग किया।
IV. उन्होंने मुख्य रूप से दक्षिण और उत्तर भारत की भक्ति परंपराओं के बीच एक सेतु के रूप में कार्य किया।
V. उन्होंने सभी जातियों के लोगों और महिलाओं के लिए भी भक्ति के द्वार खोल दिए।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?
(1) केवल I और III
(2) केवल III
(3) केवल II और IV
(4) केवल III और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

20. निम्नलिखित में से कौन सा कथन दक्षिण और उत्तर भारत के बीच एक सेतु के रूप में रामानंद की भूमिका का सबसे सटीक वर्णन करता है?
(1) उन्होंने अलवार समुदाय के उत्तरी वाराणसी में प्रवास का आयोजन किया।
(2) उन्होंने सल्तनत शासकों के लिए तमिल तेवरम का फारसी में अनुवाद किया।
(3) उन्होंने उत्तरी वैष्णव संप्रदायों पर विशिष्ट शैव अनुष्ठान लागू किए।
(4) वे स्थानीय लोकभाषा का उपयोग करके दक्षिण की भक्ति को उत्तर में लाए।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

21. उत्तर भारत के जनसाधारण के बीच रामानंद की अपार लोकप्रियता का सबसे उपयुक्त कारण क्या था?
(1) लोदी वंश के शासकों के साथ उनका मजबूत राजनीतिक संबंध।
(2) पारंपरिक वर्णाश्रम धर्म का उनका कठोर अनुपालन।
(3) संस्कृत के बजाय हिंदी में आध्यात्मिक शिक्षा देने का उनका निर्णय।
(4) गंगा के मैदानी इलाकों में उनके द्वारा विशाल मंदिर परिसरों की स्थापना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

22. कबीर के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. वे सगुण भक्ति के समर्थक थे और भगवान राम की मानवीय अवतार के रूप में पूजा करते थे।
II. उन्होंने हिंदू धर्म और इस्लाम दोनों में बाह्य कर्मकांडों, मूर्ति पूजा और जातिगत भेदभाव की कड़ी निंदा की।
III. उनकी शिक्षाओं को छोटे और सरल दोहों के माध्यम से व्यक्त किया गया था।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II, और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

23. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: कबीर की शिक्षाओं ने वेदांत दर्शन और इस्लामी सूफीवाद दोनों से महत्वपूर्ण प्रेरणा ली।
कथन II: कबीर का मानना था कि अल्लाह और राम एक ही निराकार परम सत्ता के विभिन्न नाम हैं।
उपरोक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Click Here to Buy book on Amazon

24. भक्ति आंदोलन की निम्नलिखित प्रभावशाली विभूतियों के उदय के सही कालानुक्रमिक क्रम का चयन कीजिए।
(1) माध्वाचार्य, रामानुज, कबीर, रामानंद
(2) रामानुज, माध्वाचार्य, रामानंद, कबीर
(3) रामानंद, रामानुज, माध्वाचार्य, कबीर
(4) रामानुज, रामानंद, माध्वाचार्य, कबीर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

25. कबीर के आध्यात्मिक पदों और शिक्षाओं का संकलन मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किस ग्रंथ में सुरक्षित है?
(1) दासबोध
(2) सूरसागर
(3) बीजक
(4) पदावली
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

26. एक जुलाहे के रूप में कबीर की व्यावसायिक पृष्ठभूमि का उनकी आध्यात्मिक शिक्षाओं पर प्राथमिक प्रभाव क्या था?
(1) उन्होंने जनसाधारण को आध्यात्मिक अवधारणाएँ समझाने के लिए बुनाई के रूपकों का उपयोग किया।
(2) उन्होंने अपनी आध्यात्मिक दीक्षा को वाराणसी के शिल्पकार और बुनकर वर्गों तक ही सीमित रखा।
(3) उन्होंने यह अनिवार्य किया कि उनके सभी अनुयायी बुनाई को अपने प्राथमिक व्यवसाय के रूप में अपनाएं।
(4) उन्होंने धार्मिक सुधार के बजाय बुनकरों के आर्थिक उत्थान पर ध्यान केंद्रित किया।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

27. नीचे दिए गए प्रश्न में, अभिकथन (A) और कारण (R) के रूप में दो कथन दिए गए हैं। कथनों को पढ़िए और सही विकल्प चुनिए:
अभिकथन (A): मीराबाई की भक्ति कविता निराकार ध्यान पर केंद्रित, निर्गुण भक्ति का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।
कारण (R): उन्होंने स्पष्ट रूप से अपने समय के पितृसत्तात्मक सामाजिक मानदंडों को चुनौती दी और भगवान कृष्ण को ही अपना एकमात्र पति माना।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

28. राजस्थान के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भ में, मीराबाई का विवाह मेवाड़ के राजघराने में हुआ था। उनके पति कौन थे?
(1) राणा सांगा
(2) भोजराज
(3) महाराणा प्रताप
(4) उदय सिंह
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

29. मीराबाई ने भगवान कृष्ण के प्रति अपने प्रगाढ़ प्रेम को व्यक्त करने वाले अनेक भक्ति गीतों की रचना की। इन गेय रचनाओं को लोकप्रिय रूप से किस नाम से जाना जाता है?
(1) अभंग
(2) कीर्तन
(3) पदावली
(4) वाख
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

30. मीराबाई के जीवन और भक्ति से जुड़े निम्नलिखित स्थानों में से विषम का चयन कीजिए।
(1) मेड़ता
(2) चित्तौड़
(3) वृंदावन
(4) पंढरपुर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

31. निम्नलिखित साहित्यिक कृतियों पर विचार कीजिए:
I. रामचरितमानस
II. विनय पत्रिका
III. कवितावली
IV. सूरसागर
उपरोक्त में से कौन सी कृतियाँ गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित थीं?
(1) केवल I, II, और III
(2) केवल I, III, और IV
(3) केवल II, III, और IV
(4) केवल I और II
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

32. भगवान राम की भक्ति के प्रणेता और पूज्य संत-कवि गोस्वामी तुलसीदास, किस मुगल सम्राट के समकालीन थे?
(1) बाबर
(2) अकबर
(3) हुमायूँ
(4) औरंगजेब
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

33. तुलसीदास और उनकी कालजयी कृति रामचरितमानस के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) इस ग्रंथ की रचना हिंदी की एक बोली अवधी में की गई थी।
(2) तुलसीदास ने इस ग्रंथ में सक्रिय रूप से भक्ति की निर्गुण विचारधारा का प्रचार किया।
(3) इसने संस्कृत रामायण को जनसाधारण के लिए सुलभ ग्रंथ के रूप में परिवर्तित कर दिया।
(4) रामचरितमानस एक ऐसे साकार ईश्वर की भक्ति पर बल देती है जो धर्म की रक्षा करते हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

34. भक्ति संतों और उनकी रचनाओं के लिए प्रयुक्त प्राथमिक क्षेत्रीय भाषा के संबंध में निम्नलिखित सूचियों पर विचार कीजिए:

सूची I: (संत)
A. चैतन्य महाप्रभु
B. मीराबाई
C. तुकाराम
D. तुलसीदास

सूची II: (भाषाएं)
i. अवधी
ii. बंगाली
iii. मराठी
iv. राजस्थानी / ब्रज भाषा

निम्नलिखित में से कौन सा कूट सही सुमेलित है?
(1) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(2) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(3) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(4) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

35. भगवान कृष्ण की भक्ति के लिए प्रसिद्ध दृष्टिहीन संत-कवि सूरदास, 'पुष्टिमार्ग' दर्शन से गहरे प्रभावित थे। इस दार्शनिक मार्ग की स्थापना किसने की थी?
(1) रामानुज
(2) माध्वाचार्य
(3) वल्लभाचार्य
(4) निम्बार्काचार्य
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

36. निम्नलिखित में से कौन सी रचना सूरदास की नहीं मानी जाती है?
(1) सूरसागर
(2) सूर सारावली
(3) साहित्य लहरी
(4) गीतावली
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

37. भक्ति आंदोलन की निम्नलिखित विभूतियों पर विचार कीजिए:
I. सूरदास
II. रामानुज
III. तुलसीदास
IV. रामानंद

निम्नलिखित में से कौन सा उनके सक्रिय काल के सही कालानुक्रमिक क्रम का प्रतिनिधित्व करता है?
(1) II, IV, I, III
(2) II, I, IV, III
(3) IV, II, III, I
(4) IV, III, I, II
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

38. गुरु नानक की शिक्षाओं में, परम सत्य या ईश्वर को 'अकाल पुरख' के रूप में वर्णित किया गया है। यह शब्द मूल रूप से क्या दर्शाता है?
(1) संपूर्ण भौतिक ब्रह्मांड का स्वामी
(2) काल से परे, निराकार और अमर सत्ता
(3) जाति व्यवस्था का दिव्य निर्माता
(4) परम दिव्य शक्ति का मानवीय अवतार
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

39. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

कथन I: गुरु नानक ने अपने अनुयायियों के बीच सामाजिक समानता को बढ़ावा देने के लिए 'संगत' और 'लंगर' संस्थाओं की स्थापना की।

कथन II: 'लंगर' ने यह अनिवार्य किया कि सामुदायिक रसोई में केवल एक ही जाति के लोग एक साथ भोजन कर सकते हैं।

उपरोक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

40. गुरु नानक के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उनका जन्म तलवंडी में हुआ था, जो अब पाकिस्तान में है।
II. उन्होंने वेदों और कुरान के अधिकार को मोक्ष के अंतिम मार्ग के रूप में स्वीकार नहीं किया।
III. उनकी शिक्षाओं ने दिव्य नाम के जप (नाम जपो) पर बल दिया।
IV. उन्होंने अपने संदेश को फैलाने के लिए 'उदासी' के नाम से जानी जाने वाली लंबी यात्राएं कीं।
V. उन्होंने कड़ाई से तपस्वी जीवन और गृहस्थ कर्तव्यों से अलग रहने की वकालत की।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III, और V
(2) केवल I, II, III, और IV
(3) केवल II, III, IV, और V
(4) केवल I, III, IV, और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

41. गुरु नानक द्वारा रखी गई सिख धर्म की नींव के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।
(1) उन्होंने अपने पुत्र श्री चंद को अपना तत्काल आध्यात्मिक उत्तराधिकारी नियुक्त किया।
(2) उन्होंने सिखाया कि मोक्ष कठोर शारीरिक तपस्या के माध्यम से प्राप्त किया जाता है।
(3) वे महिलाओं की समानता में विश्वास करते थे और भेदभावपूर्ण प्रथाओं का विरोध करते थे।
(4) उन्होंने अपने संदेश की शुद्धता बनाए रखने के लिए संस्कृत में भजनों की रचना की।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Downloaded from www.pdf.tube

42. गुरु नानक की मूलभूत शिक्षाओं से विकसित दसवें गुरु द्वारा 'खालसा' की स्थापना का सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव क्या था?
(1) इसने अनुशासन की एक सख्त संहिता से बंधे एक योद्धा समुदाय का निर्माण किया।
(2) इसने सिखों को समाज से अलग एक शांतिप्रिय संप्रदाय में बदल दिया।
(3) इसके परिणामस्वरूप सिख धर्म का पुनः रूढ़िवादी हिंदू धर्म में विलय हो गया।
(4) इसके परिणामस्वरूप भारत में मुगल साम्राज्य का तत्काल पतन हो गया।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

43. भक्ति संतों और उन क्षेत्रों के संबंध में निम्नलिखित सूचियों पर विचार कीजिए जहाँ उन्होंने मुख्य रुप से प्रचार किया:
सूची I: (संत)
A. चैतन्य महाप्रभु
B. शंकरदेव
C. नरसिंह मेहता
D. बसवन्ना
सूची II: (क्षेत्र)
i. असम
ii. कर्नाटक
iii. बंगाल
iv. गुजरात
निम्नलिखित में से कौन सा कूट सही सुमेलित है?
(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

44. चैतन्य महाप्रभु ने ईश्वर और जीवात्मा के बीच संबंध के संबंध में एक अद्वितीय दर्शन का प्रचार किया। इस दार्शनिक सिद्धांत का नाम क्या है?
(1) शुद्धाद्वैत
(2) अचिंत्य भेदाभेद
(3) द्वैताद्वैत
(4) विशिष्टाद्वैत
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

45. चैतन्य महाप्रभु के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उन्होंने 'संकीर्तन' की प्रथा को लोकप्रिय बनाया, जिसमें भगवान कृष्ण की स्तुति में सामूहिक गायन और नृत्य शामिल था।
II. वे आदि शंकराचार्य के अद्वैत वेदांत से अत्यधिक प्रभावित थे और उन्होंने ईश्वर की पूर्ण निराकारता का उपदेश दिया।
III. उनकी शिक्षाओं ने बंगाल में गौड़ीय वैष्णववाद परंपरा की नींव रखी।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II, और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

46. चैतन्य महाप्रभु ने अपने जीवन के उत्तरार्ध का एक महत्वपूर्ण हिस्सा किस तीर्थ केंद्र में अपने भक्ति आंदोलन को बढ़ावा देने में व्यतीत किया?
(1) वाराणसी
(2) द्वारका
(3) मथुरा
(4) पुरी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

47. भक्ति संतों और उनके लोकप्रिय उपनामों या उपाधियों का निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही सुमेलित है?
(1) चैतन्य महाप्रभु - गौरांग
(2) तुकाराम - आगरा का अंधा कवि
(3) कबीर - द्वैतवाद का पैगंबर
(4) तुलसीदास - निर्गुण के अग्रदूत
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

48. महाराष्ट्र के वारकरी संतों की भक्ति कविता, जो अपनी भावनात्मक गहराई और सरलता के लिए जानी जाती है, किस विशिष्ट शब्द से पहचानी जाती है?
(1) वाख
(2) अभंग
(3) दोहा
(4) श्लोक
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

49. नीचे दिए गए प्रश्न में, अभिकथन (A) और कारण (R) के रूप में दो कथन दिए गए हैं। कथनों को पढ़िए और सही विकल्प चुनिए:
अभिकथन (A): महाराष्ट्र के वारकरी आंदोलन ने धार्मिक भक्ति और व्यावहारिक पारिवारिक जीवन के बीच की दूरी को सफलतापूर्वक कम किया।
कारण (R): वारकरी परंपरा के संत, जैसे तुकाराम और एकनाथ, संसार का त्याग करने के बजाय साधारण गृहस्थों के रूप में रहे।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

50. महाराष्ट्र भक्ति परंपरा के संत एकनाथ को एक प्रमुख हिंदू ग्रंथ पर उनकी क्षेत्रीय भाषा की टिप्पणी के लिए व्यापक रूप से जाना जाता है। उन्होंने किस ग्रंथ पर टिप्पणी की थी?

67. निम्नलिखित प्रमुख सूफी विभूतियों में से कौन चिश्ती सिलसिले से संबंधित नहीं है?
(1) शेख सलीम
(2) सैयद मुहम्मद गेसूदराज
(3) शेख अहमद सरहिंदी
(4) कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

68. अजमेर के ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उनकी शिक्षाओं ने सामाजिक समानता और निर्धनों के प्रति दया पर बल दिया।
II. उनके जीवनकाल के दौरान मुगल सम्राट अकबर ने उन्हें भारी संरक्षण प्रदान किया था।
III. अजमेर में उनकी दरगाह मुसलमानों और हिंदुओं दोनों के लिए तीर्थयात्रा का एक प्रमुख केंद्र बन गई।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II, और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

69. चिश्ती संत अक्सर आध्यात्मिक परमानंद की स्थिति प्राप्त करने के लिए संगीत का उपयोग करते थे। भारतीय उपमहाद्वीप में इन सभाओं में गाई जाने वाली रहस्यमयी कविता के लिए किस विशिष्ट शब्द का उपयोग किया जाता है?
(1) ग़ज़ल
(2) मरसिया
(3) कव्वाली
(4) रुबाइयात
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

70. चिश्ती सिलसिले के निम्नलिखित प्रतिष्ठित संतों पर विचार कीजिए:
I. निज़ामुद्दीन औलिया
II. ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती
III. कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी
IV. फरीदुद्दीन गंज-ए-शकर
निम्नलिखित में से कौन उनके आध्यात्मिक नेतृत्व के सही कालानुक्रमिक क्रम का प्रतिनिधित्व करता है?
(1) II, III, I, IV
(2) II, IV, III, I
(3) II, III, IV, I
(4) III, II, IV, I
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

71. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: प्रसिद्ध चिश्ती संत बाबा फरीद (फरीदुद्दीन गंज-ए-शकर) के पद गुरु ग्रंथ साहिब में सम्मिलित हैं।
कथन II: सिख धर्मग्रंथों में सूफी कविता का समावेश दोनों समुदायों के बीच तीव्र प्रतिद्वंद्विता और धार्मिक विवादों को दर्शाता है।
उपरोक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

72. सूफी संस्थाओं से संबंधित शब्दों और उनके अर्थों के संबंध में निम्नलिखित सूचियों पर विचार कीजिए:
सूची I: (सूफी शब्द)
A. खानकाह
B. खलीफा
C. बरकत
D. वली
सूची II: (अर्थ)
i. आध्यात्मिक कृपा या आशीर्वाद
ii. एक नामित उत्तराधिकारी या प्रतिनिधि
iii. ईश्वर का मित्र (संत)
iv. सूफी सभा का केंद्र या आश्रम
निम्नलिखित में से कौन सा कूट सही सुमेलित है?
(1) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(2) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(3) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(4) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

73. भक्ति और सूफी आंदोलनों के बीच अंतःक्रिया का एक प्रमुख परिणाम क्षेत्रीय भाषाओं का तीव्र विकास था। इन आंदोलनों ने मुख्य रूप से इस भाषाई विकास को कैसे सुगम बनाया?
(1) शाही दरबारों को अपनी आधिकारिक भाषा फारसी से बदलने के लिए विवश करके।
(2) स्थानीय बोलियों को बढ़ावा देने के लिए जानबूझकर शास्त्रीय ग्रंथों को जलाकर।
(3) जनसाधारण की भाषा में भजनों और कविता की रचना करके।
(4) औपचारिक भाषाविज्ञान को समर्पित आधुनिक विश्वविद्यालयों की स्थापना करके।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

74. भक्ति और सूफी परंपराओं के पारस्परिक प्रभाव के कारण मध्यकालीन भारत में समन्वयवादी संप्रदायों का उदय हुआ। ऐसे संप्रदायों की लोकप्रियता का मूल कारण क्या था?
(1) निराकार ईश्वर पर साझा बल और पुरोहिती सत्ता का परित्याग।
(2) एक समान राजकीय धर्म बनाने के लिए सल्तनत द्वारा राज्य का दबाव।
(3) वैदिक कर्मकांडों में इस्लामी धर्मशास्त्र को सम्मिलित करने की ब्राह्मणों की इच्छा।
(4) निचली जाति के हिंदुओं को सूफी खानकाहों द्वारा दिए

Click Here to Buy book on Amazon

(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

59. कादिरी सिलसिले के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसकी स्थापना बगदाद के शेख अब्दुल कादिर जिलानी ने की थी।
II. इसने मुगल काल के दौरान भारत में अपार लोकप्रियता प्राप्त की।
III. राजकुमार दारा शिकोह इस सिलसिले के अनुयायी थे।
IV. कादिरी सिलसिले का मुख्य उद्देश्य सैन्य माध्यमों से राजपूतों को इस्लाम में परिवर्तित करना था।
V. लाहौर के मियां मीर इस सिलसिले के एक प्रसिद्ध संत थे।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल IV
(3) केवल III और V
(4) केवल II, IV, और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

60. ईश्वर के साथ एकाकार होने की दिशा में सूफी मार्ग के आध्यात्मिक चरणों के सही अनुक्रम का चयन कीजिए।
(1) शरीयत → तरीक़त → हक़ीक़त → मारिफ़त
(2) तरीक़त → शरीयत → मारिफ़त → हक़ीक़त
(3) हक़ीक़त → मारिफ़त → शरीयत → तरीक़त
(4) शरीयत → मारिफ़त → हक़ीक़त → तरीक़त
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

61. इब्न अरबी द्वारा प्रतिपादित 'वहदत-उल-वजूद' (अस्तित्व की एकता) के दार्शनिक सिद्धांत ने भारतीय सूफीवाद को गहराई से प्रभावित किया। यह अवधारणा हिंदू दर्शन में किसके सर्वाधिक समान है?
(1) द्वैत वेदांत
(2) सांख्य
(3) अद्वैत वेदांत
(4) चार्वाक
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

62. सूफी शब्दावली से संबंधित निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही सुमेलित है?
(1) खानकाह - किसी दिवंगत सूफी संत का पवित्र मकबरा।
(2) मुर्शिद - इस मार्ग में एक समर्पित शिष्य या साधक।
(3) उर्स - सूफी संत की वार्षिक जन्म वर्षगांठ।
(4) सिलसिला - उत्तराधिकार की एक निरंतर आध्यात्मिक श्रृंखला।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

63. नीचे दिए गए प्रश्न में, अभिकथन (A) और कारण (R) के रूप में दो कथन दिए गए हैं। कथनों को पढ़िए और सही विकल्प चुनिए:
अभिकथन (A): भारत में चिश्ती सिलसिले के प्रारंभिक संतों ने जानबूझकर राजदरबार और राजनेताओं के साथ संपर्क से परहेज किया।
कारण (R): उनका मानना था कि राजकीय संरक्षण स्वीकार करने और राजनीतिक संलिप्तता से आध्यात्मिक जीवन की शुद्धता नष्ट होती है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

64. ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती, जिन्होंने भारत में चिश्ती सिलसिले की स्थापना की थी, किस प्रमुख शासक के शासनकाल के दौरान अजमेर आए थे?
(1) कुतुबुद्दीन ऐबक
(2) पृथ्वीराज चौहान
(3) इल्तुतमिश
(4) महाराणा कुंभा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

65. चिश्ती संतों और उनकी लोकप्रिय उपाधियों या उनके स्थानों के संबंध में निम्नलिखित सूचियों पर विचार कीजिए:
सूची I: (चिश्ती संत)
A. निज़ामुद्दीन औलिया
B. फरीदुद्दीन गंज-ए-शकर
C. कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी
D. नसीरुद्दीन महमूद
सूची II: (उपाधियाँ या स्थान)
i. चिराग-ए-देहली
ii. महबूब-ए-इलाही
iii. अजोधन (पाकपट्टन)
iv. महरौली, दिल्ली
निम्नलिखित में से कौन सा कूट सही सुमेलित है?
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(3) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(4) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

66. शेख निज़ामुद्दीन औलिया के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।
(1) उन्होंने कई शासकों का शासन देखा लेकिन उनके राजदरबार में जाने से कड़ाई से इनकार कर दिया।
(2) उन्होंने 'तारीख-ए-फिरोज शाही' के नाम से प्रसिद्ध ऐतिहासिक वृत्तांत लिखा।
(3) उन्हें अलाउद्दीन खिलजी ने दिल्ली से निर्वासित कर दिया था।
(4) उन्होंने 'समा' की प्रथा का कड़ा विरोध किया और अपनी खानकाह में इसे प्रतिबंधित कर दिया।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Downloaded from www.pdf.tube

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) बढ़ती जातिगत कठोरता और वैदिक कर्मकांडों की बहिष्कारी प्रकृति
प्रारंभिक मध्यकालीन भारत में भक्ति आंदोलन का प्रादुर्भाव मुख्य रूप से तत्कालीन सामाजिक विसंगतियों के विरुद्ध एक प्रतिक्रिया थी। उस समय हिंदू समाज में वर्ण व्यवस्था की कठोरता बढ़ गई थी और जटिल वैदिक कर्मकांडों ने सामान्य जनमानस को मुख्यधारा के धर्म से पृथक कर दिया था। इस आंदोलन ने ईश्वर के प्रति सरल भक्ति और प्रेम पर आधारित मार्ग प्रस्तुत किया, जो सभी के लिए सुलभ था।

2. (1) भक्त और ईश्वर के बीच भक्ति का एक व्यक्तिगत और भावनात्मक संबंध
भक्ति आंदोलन का मूल दर्शन भक्त और ईश्वर के मध्य एक अटूट, व्यक्तिगत और भावनात्मक संबंध पर आधारित है। यह विचारधारा स्वीकार करती है कि ईश्वर की प्राप्ति के लिए किसी जटिल कर्मकांड या मध्यस्थ की आवश्यकता नहीं होती है। इसके स्थान पर, प्रेम और अटूट श्रद्धा के माध्यम से साधक सीधे परमात्मा से जुड़ सकता है। इसमें आत्मिक शुद्धता को सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना गया है।

3. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
उत्तर भारत में भक्ति आंदोलन पर इस्लाम के समतावादी विचारों और सूफी रहस्यवाद का स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित हुआ। इसी प्रभाव के कारण कबीर और गुरु नानक जैसे संतों ने निराकार ईश्वर की उपासना पर बल दिया। यद्यपि, सभी संतों ने मूर्ति पूजा का परित्याग नहीं किया था। सूरदास और तुलसीदास जैसे प्रसिद्ध संतों ने सगुण भक्ति धारा को अपनाया और मूर्तियों के माध्यम से उपासना जारी रखी।

4. (4) आध्यात्मिक और धार्मिक प्रसार की शुद्धता सुनिश्चित करने के लिए संस्कृत पर अत्यधिक निर्भरता।
भक्ति आंदोलन की एक प्रमुख विशेषता यह थी कि संतों ने अपने संदेशों के प्रसार हेतु संस्कृत के स्थान पर स्थानीय क्षेत्रीय भाषाओं को प्राथमिकता दी। उन्होंने जटिल दार्शनिक सिद्धांतों को सरल जनभाषा में प्रस्तुत किया ताकि आम जनता उन्हें सुगमता से समझ सके। सामाजिक समानता, गुरु की महत्ता और बाह्य आडंबरों का त्याग इस आंदोलन के मुख्य आधार स्तंभ थे, जिसने व्यापक समाज को प्रभावित किया।

5. (3) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
दक्षिण भारत की भक्ति परंपरा में वैष्णव और शैव संतों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया था। 'दिव्य प्रबंधम' वैष्णव संतों के भजनों का संकलन है, जबकि 'तेवरम' शैव संतों की रचनाओं का संग्रह माना जाता है। अलवार संत भगवान विष्णु के अनन्य उपासक थे और नयनार संत भगवान शिव की भक्ति में लीन रहते थे। इन ग्रंथों ने तमिल भाषी क्षेत्रों में भक्ति मार्ग को जन-जन तक पहुँचाया।

NODIA

6. (2) 63
दक्षिण भारत के तमिल क्षेत्र में शैव धर्म के प्रसार और लोकप्रियता में नयनार संतों का योगदान अतुलनीय है। पारंपरिक मान्यताओं और ऐतिहासिक ग्रंथों के अनुसार, कुल 63 नयनार संतों की पहचान की गई है। ये संत विभिन्न सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि से संबंधित थे, जिन्होंने अपनी भावपूर्ण रचनाओं के माध्यम से भगवान शिव की स्तुति की। उनकी शिक्षाओं ने तत्कालीन समाज में धार्मिक कट्टरता को कम किया।

7. (4) नम्मालवार
अप्पार, सम्बंदर और सुंदरर दक्षिण भारत के प्रसिद्ध नयनार संत थे, जिन्होंने अपनी भक्ति रचनाओं के माध्यम से भगवान शिव की आराधना की और शैव मत को लोकप्रिय बनाया। इसके विपरीत, नम्मालवार एक प्रमुख अलवार संत थे, जिनका झुकाव वैष्णव धर्म की ओर था। उन्होंने भगवान विष्णु की स्तुति में अनेक भजनों की रचना की थी। अतः, नम्मालवार का धार्मिक संप्रदाय अन्य तीन संतों से पृथक है।

8. (3) केवल I और III
दक्षिण भारत के प्रारंभिक भक्ति आंदोलन में आंडाल एक अद्वितीय महिला संत थीं, जिन्हें दक्षिण की मीरा भी कहा जाता है। उन्होंने भगवान कृष्ण के प्रति अपनी अटूट भक्ति व्यक्त की। ये संत घूम-घूमकर तमिल भाषा में ईश्वर की स्तुति करते थे। यह आंदोलन पूर्णतः समावेशी था, जिसमें समाज के सभी वर्गों की सक्रिय भागीदारी थी। अतः यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि उन्होंने किसी वर्ग को वंचित रखा।

9. (3) अप्पार - शैव धर्म अपनाने से पहले पल्लव शासक के साथ संघर्ष
संत अप्पार का जीवन ऐतिहासिक रूप से पल्लव राजवंश के साथ उनके वैचारिक संघर्ष हेतु जाना जाता है। वे पूर्व में जैन धर्म के अनुयायी थे, किंतु बाद में उन्होंने शैव धर्म स्वीकार कर लिया, जिसके कारण उन्हें पल्लव शासक महेंद्रवर्मन प्रथम के विरोध का सामना करना पड़ा। उनके प्रभाव से कालांतर में वह शासक स्वयं शैव बन गया। अन्य संतों के राजनीतिक संबंध ऐतिहासिक रूप से प्रमाणित नहीं हैं।

10. (1) तमिल शैव भक्ति कविता का बारह खंडों वाला संग्रह
'तिरुमुरै' तमिल भाषा में रचित शैव भक्ति साहित्य का एक विशाल और पवित्र संकलन है। इसे कुल बारह खंडों में विभाजित किया गया है, जिसमें नयनार संतों द्वारा रचित भजनों और कविताओं को संरक्षित किया गया है। यह ग्रंथ दक्षिण भारत के धार्मिक और सांस्कृतिक इतिहास में अत्यंत महत्वपूर्ण

गए आर्थिक प्रोत्साहन।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

75. निम्नलिखित विशेषताओं पर विचार कीजिए:
I. ईश्वर की मौलिक एकता में विश्वास।
II. आध्यात्मिक मार्गदर्शक या गुरु/पीर की आवश्यकता।
III. कठोर उपवास और आत्म-दमन का कड़ाई से अनुपालन।
IV. कर्मकांड के बजाय प्रेम और भक्ति पर बल।
उपरोक्त में से कौन सा संयोजन भक्ति और सूफी दोनों आंदोलनों द्वारा साझा की गई समानताओं को दर्शाता है?
(1) केवल I, II, और III
(2) केवल I, II, और IV
(3) केवल II, III, और IV
(4) केवल I, III, और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

76. मध्यकालीन भारत में हिंदू और इस्लामी रहस्यवादी परंपराओं के बीच अंतःक्रिया के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।
(1) सूफीवाद ने पुनर्जन्म की हिंदू अवधारणा को पूरी तरह से अपना लिया था।
(2) शासकों द्वारा संस्कृत ग्रंथों का फारसी में अनुवाद कराया गया और उन्हें संरक्षित किया गया।
(3) तीर्थ स्थलों के नियंत्रण को लेकर दोनों आंदोलनों में हिंसक संघर्ष हुआ।
(4) विभिन्न सूफी विचारों के संपर्क में आने के बाद भक्ति संतों ने अहिंसा का त्याग कर दिया।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

77. 'सत्यपीर' संप्रदाय, जो हिंदू और मुस्लिम विश्वासों के समन्वय का एक आदर्श उदाहरण है, मुख्य रुप से भारत के किस क्षेत्र में विकसित हुआ?
(1) राजस्थान
(2) पंजाब
(3) बंगाल
(4) महाराष्ट्र
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

78. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: भक्ति और सूफी आंदोलनों की संयुक्त विरासत ने जाति व्यवस्था की कठोरता को कम किया और जनसाधारण के बीच हिंदू-मुस्लिम सद्भाव को बढ़ावा दिया।
कथन II: ये आंदोलन भारतीय समाज से जाति व्यवस्था और रुढ़िवादी कर्मकांडों को स्थायी रुप से समाप्त करने में सफल रहे।
उपरोक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

79. भक्ति और सूफी आंदोलनों की व्यापक विरासत के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उन्होंने मोक्ष को महिलाओं और निचली जातियों के लिए सुलभ बनाकर धर्म का लोकतंत्रीकरण किया।
II. उन्होंने कीर्तन और कव्वाली जैसी विधाओं के विकास के माध्यम से भारतीय संगीत को समृद्ध किया।
III. उन्होंने धार्मिक सहिष्णुता के वातावरण को बढ़ावा दिया जिसने अकबर जैसे शासकों की राजकीय नीतियों को प्रभावित किया।
IV. इसके कारण पारंपरिक संस्कृत विद्वत्ता पूर्णतः समाप्त हो गई।
V. उन्होंने मानवीय मूल्यों और दान पर बल दिया, जिसका प्रमाण लंगर और खानकाह जैसी संस्थाओं से मिलता है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III, और IV
(2) केवल I, II, III, और V
(3) केवल II, III, IV, और V
(4) केवल I, III, IV, और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

80. आधारभूत अवधारणाओं या ग्रंथों और उनसे जुड़ी दार्शनिक परंपरा के संबंध में निम्नलिखित सूचियों पर विचार कीजिए:
सूची I: (अवधारणाएं या ग्रंथ)
A. श्रीभाष्य
B. वहदत-उल-वजूद
C. तत्त्ववाद
D. बीजक
सूची II: (दार्शनिक परंपराएं)
i. सूफी रहस्यवाद
ii. विशिष्टाद्वैत
iii. निर्गुण भक्ति
iv. द्वैत वेदांत
निम्नलिखित में से कौन सा कूट सही सुमेलित है?
(1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

www.nodia.in

Click Here to Buy book on Amazon

(1) भागवत पुराण
(2) भगवद गीता
(3) रामायण
(4) ऋग्वेद
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

51. निम्नलिखित में से कौन से संत ऐतिहासिक रूप से पंढरपुर के भगवान विठोबा के इर्द-गिर्द केंद्रित महाराष्ट्र की वारकरी परंपरा से नहीं जुड़े हैं?
(1) नामदेव
(2) ज्ञानेश्वर
(3) निम्बार्काचार्य
(4) तुकाराम
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

52. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: संत तुकाराम शूद्र जाति के थे और उन्हें अक्सर अपने समय के रुढ़िवादी ब्राह्मणों के विरोध का सामना करना पड़ा।
कथन II: विरोध के बावजूद, तुकाराम ने मराठी में लिखने से इनकार कर दिया और अपने अभंगों की रचना कड़ाई से संस्कृत में की।
उपरोक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

53. महाराष्ट्र के भक्ति संतों से जुड़े निम्नलिखित ग्रंथों और अवधारणाओं में से विषम का चयन कीजिए।
(1) ज्ञानेश्वरी
(2) दासबोध
(3) बीजक
(4) अभंग
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

54. सूफीवाद में आध्यात्मिक साधनाओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. 'ज़िक्र' ईश्वर के नामों के निरंतर जाप को संदर्भित करता है।
II. 'समा' में आध्यात्मिक संगीत सभाएँ शामिल हैं जिनका उद्देश्य रहस्यमयी आनंद प्राप्त करना है।
III. 'फ़ना' स्वयं के अस्तित्व के विसर्जन और सर्वशक्तिमान के साथ आध्यात्मिक विलय का प्रतिनिधित्व करता है।
IV. 'तरीक़ा' वह इस्लामी कानूनी संहिता है जिसे सभी सूफियों ने पूर्णतः अस्वीकार कर दिया था।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II, और III
(2) केवल II, III, और IV
(3) केवल I, III, और IV
(4) I, II, III, और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

55. भारत में सूफीवाद के संदर्भ में, 'बा-शरा' और 'बे-शरा' परंपराओं के बीच प्राथमिक अंतर क्या था?
(1) बा-शरा राजकीय सहायता पर निर्भर थे, जबकि बे-शरा सार्वजनिक दान पर निर्भर थे।
(2) बा-शरा सुहरावर्दी थे, जबकि बे-शरा चिश्ती परंपरा के भीतर थे।
(3) बा-शरा सैन्य विस्तार चाहते थे, जबकि बे-शरा धर्म परिवर्तन चाहते थे।
(4) बा-शरा इस्लामी कानून का पालन करते थे, जबकि बे-शरा उससे बंधे नहीं थे।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

56. भारतीय उपमहाद्वीप में सूफी सिलसिलों और उनके प्रमुख व्यक्तित्वों के संबंध में निम्नलिखित सूचियों पर विचार कीजिए:
सूची I: (सूफी सिलसिले)
A. चिश्ती
B. सुहरावर्दी
C. कादिरी
D. नक्शबंदी
सूची II: (प्रमुख व्यक्तित्व)
i. बहाउद्दीन ज़करिया
ii. ख्वाजा बाकी बिल्लाह
iii. मोइनुद्दीन चिश्ती
iv. शाह नियामतुल्लाह
निम्नलिखित में से कौन सा कूट सही सुमेलित है?
(1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(2) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(3) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

57. भारत में कौन सा सूफी सिलसिला शरीयत के कड़ाई से पालन और संगीत (समा) तथा नृत्य जैसी प्रथाओं के कड़े विरोध के लिए जाना जाता था?
(1) चिश्ती
(2) सुहरावर्दी
(3) नक्शबंदी
(4) कादिरी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

58. भारत में सुहरावर्दी सूफी सिलसिले के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) सुहरावर्दी संत निर्धनता में रहते थे और उन्होंने राजकीय संरक्षण को पूर्णतः अस्वीकार कर दिया था।
(2) यह पंजाब और सिंध क्षेत्रों में अत्यधिक प्रभावशाली था।
(3) उनका मानना था कि राजकीय संबंध आध्यात्मिक मार्ग में बाधा नहीं हैं।
(4) बहाउद्दीन ज़करिया इस परंपरा के एक प्रमुख प्रारंभिक व्यक्तित्व थे।

NODIA

स्थान रखता है। इसके माध्यम से शैव दर्शन और भक्ति के विभिन्न पहलुओं को व्यवस्थित रूप से संकलित किया गया।

11. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
रामानुज ने विशिष्टाद्वैत दर्शन प्रतिपादित किया, जो यह स्वीकार करता है कि ब्रह्म ही सर्वोच्च सत्य है। उनके अनुसार, जीवात्मा और भौतिक जगत ब्रह्म के ही अभिन्न अंग हैं, किंतु उनका अपना स्वतंत्र अस्तित्व भी है। यह दर्शन आदि शंकराचार्य के मायावाद के विपरीत संसार को मिथ्या नहीं मानता। अतः मोक्ष प्राप्ति हेतु उन्होंने भक्ति को सबसे श्रेष्ठ मार्ग बताया है, जहाँ जीवात्मा परमात्मा की शरण लेती है।

12. (2) श्री भाष्य
रामानुज ने बादरायण के 'ब्रह्म सूत्र' पर एक विस्तृत और अत्यंत प्रभावशाली टीका लिखी थी, जिसे 'श्री भाष्य' के नाम से जाना जाता है। इस ग्रंथ में उन्होंने विशिष्टाद्वैत दर्शन की तार्किक व्याख्या की और अद्वैतवाद की कतिपय धारणाओं का खंडन किया। यह ग्रंथ न केवल धार्मिक अपितु दार्शनिक दृष्टिकोण से भी भारतीय साहित्य में अद्वितीय है। इसके माध्यम से उन्होंने भक्ति को तार्किक आधार प्रदान किया।

13. (3) विशिष्टाद्वैत
विशिष्टाद्वैत दर्शन के अनुसार, ब्रह्म एक है किंतु वह चित् (जीवात्मा) और अचित् (भौतिक जगत) नामक दो गुणों से युक्त है। यह दर्शन समझाता है कि जिस प्रकार शरीर आत्मा के अधीन होता है, उसी प्रकार संपूर्ण जगत और जीव ईश्वर पर पूर्णतः आश्रित हैं। रामानुज द्वारा प्रतिपादित यह सिद्धांत अद्वैत की निर्गुणता और द्वैत की पूर्ण भिन्नता के मध्य एक प्रभावी समन्वयकारी मार्ग प्रस्तुत करता है।

14. (4) उन्होंने सिखाया कि निराकार ध्यान ही मोक्ष का एकमात्र सत्य मार्ग है।
रामानुज का दर्शन मुख्य रूप से सगुण भक्ति पर आधारित था, जहाँ भगवान विष्णु को सर्वोच्च आराध्य स्वीकार किया गया है। उन्होंने निराकार ध्यान के स्थान पर ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण और उनकी कृपा को मोक्ष का माध्यम बताया। वे अलवारों की भक्ति परंपरा से गहराई से सम्बद्ध थे और उन्होंने श्रीरंगम मंदिर में रहकर सिद्धांतों का प्रचार किया। उनके अनुसार, भक्ति का मार्ग सभी हेतु सदैव खुला है।

15. (1) केवल I, II, और III
माध्वाचार्य द्वैतवाद के प्रमुख प्रतिपादक थे, जो ईश्वर और जीवात्मा को मौलिक रूप से एक-दूसरे से भिन्न मानते हैं। उन्होंने उडुपी में कृष्ण मठ की स्थापना की, जो आज भी वैष्णव धर्म का प्रमुख केंद्र है। अन्य दार्शनिकों के विपरीत, उन्होंने भौतिक जगत को पूर्णतः सत्य माना और इसे भ्रम कहने का विरोध किया। उनके अनुसार, भगवान विष्णु ही सर्वोच्च सत्ता हैं और उनकी भक्ति ही परम लक्ष्य है।

16. (2) तत्त्ववाद
माध्वाचार्य द्वारा प्रतिपादित द्वैतवादी विचारधारा को दार्शनिक ग्रंथों में 'तत्त्ववाद' के नाम से भी संबोधित किया जाता है। इस दर्शन का मुख्य आधार यथार्थवाद है, जो पाँच प्रकार के मौलिक भेदों पर बल देता है। यह सिद्धांत मानता है कि ईश्वर, जीव और प्रकृति के मध्य का अंतर वास्तविक और शाश्वत है। 'तत्त्ववाद' शब्द इस सत्य का प्रतीक है कि यह दर्शन जगत और आत्मा की स्वतंत्र वास्तविकताओं को स्वीकारता है।

17. (2) सर्वोच्च सत्ता के रूप में भगवान विष्णु का पूर्ण परित्याग।
माध्वाचार्य के दर्शन में भगवान विष्णु को ही सर्वोच्च और पूर्ण स्वतंत्र सत्ता स्वीकार किया गया है, अतः उनका परित्याग करने का विचार पूर्णतः त्रुटिपूर्ण है। उन्होंने स्पष्ट किया कि ईश्वर और भौतिक जगत के मध्य मौलिक अंतर विद्यमान है। उनके सिद्धांतों के अनुसार, जीवात्माएं अपने कर्मों के आधार पर विभाजित होती हैं। भगवान हरि की निरंतर भक्ति ही उनके मत में परम पद प्राप्त करने का एकमात्र साधन है।

18. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
स्वामी रामानंद के शिष्यों की विविधता तत्कालीन समाज में उनके क्रांतिकारी विचारों का सशक्त प्रमाण है। कबीर जुलाहा समुदाय से थे, जबकि रविदास चर्मकार पृष्ठभूमि से संबंध रखते थे। इसी प्रकार, सेना नाई थे और धन्ना किसान परिवार से थे। रामानंद ने जातिगत बंधनों का उन्मूलन कर इन सभी को अपना शिष्य बनाया। इससे सिद्ध होता है कि भक्ति मार्ग में सामाजिक पृष्ठभूमि कभी भी बाधक नहीं बनती है।

19. (2) केवल III
रामानंद ने उत्तर भारत में भक्ति के प्रचार हेतु संस्कृत के स्थान पर हिंदी और अन्य लोकभाषाओं का उपयोग किया, ताकि आम जनता उनकी शिक्षाओं को आत्मसात कर सके। उन्होंने भक्ति के केंद्र में भगवान राम को प्रतिष्ठित किया और समाज के सभी वर्गों, विशेषकर महिलाओं और वंचित जातियों के लिए भक्ति के द्वार खोले। उन्होंने दक्षिण की दार्शनिक गहराई और उत्तर की भक्ति भावनाओं के मध्य सेतु का कार्य किया।

20. (4) वे स्थानीय लोकभाषा का उपयोग करके दक्षिण की भक्ति को उत्तर में लाए।
रामानंद को दक्षिण भारत की भक्ति परंपरा और उत्तर भारत की जनचेतना के मध्य महत्वपूर्ण कड़ी माना जाता है। उन्होंने दक्षिण के विशिष्टाद्वैत दर्शन से प्रेरणा ली, किंतु उसका व्यापक प्रचार उत्तर भारत की स्थानीय लोकभाषाओं में किया। इस भाषाई परिवर्तन ने भक्ति आंदोलन को एक जनांदोलन बना दिया। उन्होंने जटिल अनुष्ठानों के स्थान पर सरल भक्ति को लोकप्रिय बनाया, जिससे आध्यात्मिक विरासत जनमानस में समाहित हो गई।

21. (3) संस्कृत के बजाय हिंदी में आध्यात्मिक शिक्षा देने का उनका निर्णय।
उत्तर भारत में रामानंद की लोकप्रियता का सर्वाधिक प्रमुख कारण उनका भाषाई दृष्टिकोण था। उन्होंने कठिन संस्कृत के स्थान पर तत्कालीन जनभाषा हिंदी को शिक्षा का माध्यम बनाया। इससे उन लोगों तक भी आध्यात्मिक संदेश पहुँचा, जो शास्त्रों के ज्ञान से वंचित थे। उन्होंने ईश्वर के प्रति प्रेम को

Downloaded from www.pdf.tube

15. सूची I (इलाहाबाद की संधियों के प्रावधान) को सूची II (संबंधित पक्ष) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (इलाहाबाद की संधियों के प्रावधान)
A. इलाहाबाद और कड़ा का समर्पण
B. युद्ध क्षतिपूर्ति के रूप में 50 लाख रुपये का भुगतान
C. बंगाल, बिहार और उड़ीसा की दीवानी का अनुदान
D. 26 लाख रुपये की वार्षिक पेंशन का प्रावधान
सूची II: (संबंधित पक्ष)
i. शुजाउद्दौला द्वारा शाह आलम द्वितीय को
ii. शुजाउद्दौला द्वारा ईस्ट इंडिया कंपनी को
iii. शाह आलम द्वितीय द्वारा ईस्ट इंडिया कंपनी को
iv. ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा शाह आलम द्वितीय को
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

16. बंगाल में स्थापित "द्वैध शासन" (Dual Government) प्रणाली किन दो कार्यों के पृथक्करण को संदर्भित करती है?
(1) कंपनी की परिषद के भीतर विधायी और कार्यकारी शक्तियों का पृथक्करण।
(2) दीवानी (राजस्व) और निजामत (पुलिस और न्यायिक) कार्य।
(3) नागरिक प्रशासन और सैन्य उच्च कमान के बीच उत्तरदायित्वों का विभाजन।
(4) प्रत्यक्ष वाणिज्यिक व्यापार और राजनीतिक राजनयिक संबंधों के बीच अंतर।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

17. उस कथन की पहचान कीजिए जो बंगाल में द्वैध शासन के प्रभाव को नहीं दर्शाता है:
(1) कानून और व्यवस्था का पूर्णतः ध्वस्त होना
(2) तीव्र कृषि विकास और किसानों की समृद्धि
(3) स्थानीय बुनकरों और कारीगरों का गंभीर शोषण
(4) 1770 का विनाशकारी बंगाल अकाल
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

18. बंगाल में द्वैध शासन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसे 1765 में रॉबर्ट क्लाइव द्वारा स्थापित किया गया था।
II. ईस्ट इंडिया कंपनी के पास दीवानी अधिकार थे।
III. बंगाल का नवाब निजामत कार्यों के लिए उत्तरदायी था।
IV. इसके कारण अत्यधिक कुशल और भ्रष्टाचार मुक्त राजस्व संग्रह हुआ।
V. इसे अंततः 1772 में वॉरेन हेस्टिंग्स द्वारा समाप्त कर दिया गया था।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III और V
(2) केवल I, III, IV और V
(3) केवल II, III, IV और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

19. बंगाल में प्रशासनिक परिवर्तनों के संबंध में सही सुमेलित युग्म की पहचान कीजिए:
(1) रॉबर्ट क्लाइव - संसद के एक अधिनियम के माध्यम से द्वैध शासन प्रणाली को समाप्त किया।
(2) वॉरेन हेस्टिंग्स - मुगल सम्राट शाह आलम द्वितीय से सीधे दीवानी अधिकार प्राप्त किए।
(3) नज्म-उद-दौला - द्वैध शासन की शुरुआत के समय नवाब।
(4) मीर जाफर - प्रशासनिक राजधानी को मुर्शिदाबाद से मुंगेर के दुर्ग में स्थानांतरित किया।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

20. निम्नलिखित में से किस गवर्नर ने बंगाल में द्वैध शासन की प्रणाली को समाप्त किया था?
(1) लॉर्ड कॉर्नवालिस
(2) सर जॉन मैकफर्सन
(3) लॉर्ड वेलेजली
(4) वॉरेन हेस्टिंग्स
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

21. निम्नलिखित में से कौन सा कथन मैसूर में हैदर अली की सत्ता में वृद्धि के लिए उठाए गए एक महत्वपूर्ण प्रारंभिक कदम की सही पहचान करता है?
(1) उन्होंने सिंहासन संभालने से पहले मराठा परिसंघ को पूरी तरह से पराजित किया था।
(2) उन्होंने अपनी स्थिति सुरक्षित करने के लिए अंग्रेजों के साथ सहायक संधि पर हस्ताक्षर किए।
(3) उन्होंने फ्रांसीसी विशेषज्ञों की सहायता से डिंडीगुल में एक आधुनिक शस्त्रागार स्थापित किया।
(4) उन्होंने यूरोपीय सैन्य सहायता प्राप्त करने के लिए ईसाई धर्म अपना लिया था।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

22. सूची I (व्यक्तित्व) को सूची II (मैसूर के संदर्भ में भूमिका/विवरण) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (व्यक्तित्व)
A. नंजराज
B. हैदर अली
C. चिक्का कृष्णराज वाडियार
D. माधवराव
सूची II: (मैसूर के संदर्भ में भूमिका/विवरण)
i. मैसूर के नाममात्र के शासक
ii. दलवाई जिसने हैदर अली से पहले मैसूर को नियंत्रित किया था
iii. मराठा पेशवा जिसने हैदर अली को बार-बार पराजित किया

NODIA

पूर्ण की थी। उनके समकालीनों में अब्दुल रहीम खान-ए-खाना जैसे विद्वान भी सम्मिलित थे, जो उनकी प्रतिभा का सम्मान करते थे। अकबर का युग सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत समृद्ध था, जिसमें तुलसीदास का योगदान अतुलनीय है।

33. (2) तुलसीदास ने इस ग्रंथ में सक्रिय रूप से भक्ति की निर्गुण विचारधारा का प्रचार किया।
'रामचरितमानस' सगुण भक्ति धारा का एक उत्कृष्ट ग्रंथ है, जिसमें भगवान राम को विष्णु के अवतार और मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में चित्रित किया गया है। तुलसीदास ने निर्गुण के स्थान पर सगुण ईश्वर की उपासना पर बल दिया, जो आम जनता हेतु अधिक सहज थी। उन्होंने अवधी भाषा का प्रयोग कर रामायण की कथा को जन-जन तक पहुँचाया। यह ग्रंथ नैतिक मूल्यों और धर्म की रक्षा करने वाले ईश्वर की भक्ति सिखाता है।

34. (1) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
भक्ति संतों ने अपने संदेशों हेतु स्थानीय भाषाओं का चयन किया, जिससे क्षेत्रीय साहित्य समृद्ध हुआ। चैतन्य महाप्रभु ने बंगाल में बंगाली भाषा के माध्यम से कृष्ण भक्ति का प्रचार किया। मीराबाई की रचनाएँ राजस्थानी और ब्रजभाषा का मिश्रण हैं। तुकाराम ने मराठी में अपने प्रसिद्ध 'अभंग' लिखे, जो आज भी महाराष्ट्र में पूजनीय हैं। तुलसीदास ने अवधी में रामचरितमानस की रचना कर इसे प्रत्येक घर तक पहुँचाने में सफलता प्राप्त की।

35. (3) वल्लभाचार्य
सूरदास 'पुष्टिमार्ग' परंपरा के एक प्रमुख स्तंभ थे, जिसकी स्थापना महाप्रभु वल्लभाचार्य ने की थी। पुष्टिमार्ग का दर्शन ईश्वर के अनुग्रह या कृपा पर आधारित है, जिसे 'पुष्टि' कहा जाता है। वल्लभाचार्य ने शुद्धाद्वैत दर्शन प्रतिपादित किया, जिसमें भगवान कृष्ण की सेवा और भक्ति को ही मोक्ष का परम साधन स्वीकार किया गया है। सूरदास ने इसी मार्ग का अनुसरण करते हुए कृष्ण की बाल लीलाओं का अपनी रचनाओं में अद्भुत वर्णन किया।

36. (4) गीतावली
'सूरसागर', 'सूर सारावली' और 'साहित्य लहरी' सूरदास की प्रमुख रचनाएँ हैं, जिनमें उन्होंने भगवान कृष्ण की भक्ति का विस्तार से वर्णन किया है। इन ग्रंथों में कृष्ण की बाल लीलाओं और गोपी-विरह का मार्मिक चित्रण मिलता है। इसके विपरीत, 'गीतावली' गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित एक काव्य ग्रंथ है, जिसमें भगवान राम के जीवन की घटनाओं को पदों के रूप में पिरोया गया है। अतः गीतावली का संबंध सूरदास की कृतियों से नहीं है।

37. (1) II, IV, I, III
भक्ति आंदोलन का ऐतिहासिक विकास क्रमिक रहा है। सर्वप्रथम रामानुज (11वीं-12वीं शताब्दी) आए, जिन्होंने दक्षिण में दार्शनिक आधार निर्मित किया। उनके पश्चात रामानंद (14वीं-15वीं शताब्दी) ने उत्तर भारत में भक्ति को नया स्वरूप प्रदान किया। सूरदास (15वीं-16वीं शताब्दी) ने कृष्ण भक्ति शाखा को अपनी रचनाओं से समृद्ध किया। अंततः तुलसीदास (16वीं शताब्दी) ने राम भक्ति को जन-जन में प्रतिष्ठित किया। यह क्रम भारत में भक्ति परंपरा के निरंतर प्रवाह को दर्शाता है।

38. (2) काल से परे, निराकार और अमर सत्ता
गुरु नानक देव जी की शिक्षाओं में 'अकाल पुरख' शब्द का उपयोग उस परम सत्ता हेतु किया गया है जो समय की सीमाओं से मुक्त है। 'अकाल' का अर्थ है जिसका कभी अंत न हो और 'पुरख' का तात्पर्य पूर्ण सत्ता से है। यह अवधारणा एक ऐसे निराकार ईश्वर को दर्शाती है जो जन्म और मृत्यु के चक्र से परे है। उनके अनुसार, यह शक्ति सर्वव्यापी है और इसे किसी विशिष्ट मूर्ति में सीमित नहीं किया जा सकता है।

39. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
गुरु नानक ने समाज में व्याप्त भेदभाव मिटाने हेतु 'संगत' और 'लंगर' जैसी क्रांतिकारी संस्थाओं की नींव रखी। लंगर का मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना था कि सभी जातियों के लोग एक साथ बैठकर भोजन करें। यह प्रथा उच्च और निम्न जातियों के मध्य की खाई को पाटने का एक सशक्त माध्यम बनी। अतः यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि लंगर में जातिगत प्रतिबंध थे। इसके विपरीत, इसने सामुदायिक समानता का संदेश दिया।

40. (2) केवल I, II, III, और IV
गुरु नानक का जन्म आधुनिक पाकिस्तान के तलवंडी में हुआ था। उन्होंने किसी विशेष शास्त्र के एकाधिकार को नकारते हुए आंतरिक भक्ति और ईश्वर के नाम जप पर बल दिया। उन्होंने मानवता को जोड़ने हेतु चार लंबी यात्राएं कीं, जिन्हें 'उदासी' कहा जाता है। वे गृहस्थ जीवन के प्रबल समर्थक थे और उन्होंने कभी भी तपस्वी बनकर संसार त्यागने की वकालत नहीं की। उनके अनुसार, परिवार में रहकर भी ईश्वर प्राप्त किया जा सकता है।

41. (3) वे महिलाओं की समानता में विश्वास करते थे और भेदभावपूर्ण प्रथाओं का विरोध करते थे।
गुरु नानक देव जी ने तत्कालीन समाज में महिलाओं की स्थिति सुधारने हेतु प्रबल आवाज उठाई और उन्हें आध्यात्मिक रूप से पुरुषों के समान माना। उन्होंने किसी भी प्रकार की छुआछूत या कठोर तपस्या का विरोध किया और सरल जीवन की शिक्षा दी। उन्होंने अपने पुत्रों के स्थान पर समर्पित शिष्य भाई लहणा (गुरु अंगद) को उत्तराधिकारी चुना। उनके भजन जनभाषा में थे, जिससे उनका संदेश समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुँचा।

42. (1) इसने अनुशासन की एक सख्त संहिता से बंधे एक योद्धा समुदाय का निर्माण किया।
गुरु गोविंद सिंह जी द्वारा खालसा पंथ की स्थापना ने सिखों को एक संगठित और स्वाभिमानी समुदाय के रूप में परिवर्तित कर दिया। यह केवल धार्मिक परिवर्तन नहीं था, बल्कि अन्याय के विरुद्ध संघर्ष हेतु एक सैन्य संरचना का उदय भी था। खालसा के अनुयायियों हेतु एक विशिष्ट पहचान और कठोर अनुशासन का पालन अनिवार्य था। इसने सिखों के भीतर वीरता और बलिदान की भावना भर दी, जिससे वे भविष्य की चुनौतियों हेतु सक्षम हुए।

Click Here to Buy book on Amazon

की जड़ें जमाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आज उनकी दरगाह साम्प्रदायिक सौहार्द का वैश्विक प्रतीक है।

65. (2) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
चिश्ती संतों ने विभिन्न उपाधियों और स्थानों के माध्यम से अपनी पहचान निर्मित की। निज़ामुद्दीन औलिया को उनके आध्यात्मिक प्रेम के कारण 'महबूब-ए-इलाही' कहा जाता था। बाबा फरीद ने पंजाब के पाकपट्टन को अपना केंद्र बनाया। कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी की दरगाह दिल्ली के महरौली में स्थित है। नसीरुद्दीन महमूद को 'चिराग-ए-देहली' के नाम से जाना जाता है, क्योंकि उन्होंने दिल्ली में चिश्ती परंपरा को जीवंत रखा। इन संतों ने समाज को आध्यात्मिक रूप से समृद्ध किया।

66. (1) उन्होंने कई शासकों का शासन देखा लेकिन उनके राजदरबार में जाने से कड़ाई से इनकार कर दिया।
शेख निज़ामुद्दीन औलिया ने दिल्ली के सात से अधिक सुल्तानों का शासनकाल देखा, किंतु उन्होंने कभी भी किसी सुल्तान के दरबार में पद ग्रहण नहीं किया। जब सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी ने उनसे मिलने की इच्छा व्यक्त की, तो उन्होंने स्पष्ट कहा कि यदि सुल्तान एक द्वार से आएगा तो वे दूसरे से बाहर चले जाएंगे। उन्होंने 'समा' का समर्थन किया और अपनी खानकाह में सभी हेतु प्रेम का मार्ग खुला रखा।

67. (3) शेख अहमद सरहिंदी
शेख सलीम चिश्ती, सैयद मुहम्मद गेसूदराज और कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी सभी प्रसिद्ध चिश्ती संत थे, जिन्होंने प्रेम और मानवता का संदेश प्रसारित किया। इसके विपरीत, शेख अहमद सरहिंदी नक्शबंदी सिलसिले से संबंधित थे। वे अपनी कट्टरवादी विचारधारा और मुगल सम्राट अकबर की उदार धार्मिक नीतियों के कड़े विरोध हेतु जाने जाते हैं। उन्होंने सूफीवाद को शरीयत के सख्त नियमों के भीतर सीमित करने का प्रयास किया, जो चिश्ती परंपरा से भिन्न था।

68. (3) केवल I और III
ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती ने 12वीं-13वीं शताब्दी में सामाजिक समानता और मानवता का उपदेश दिया था। उनकी दरगाह सदियों से हिंदू और मुस्लिम दोनों समुदायों के लिए समान रूप से पूजनीय तीर्थस्थल रही है। सम्राट अकबर उनके प्रति अगाध श्रद्धा रखते थे और कई बार पैदल यात्रा कर उनकी दरगाह पर उपस्थित हुए थे, किंतु वे अकबर के समकालीन नहीं थे। अकबर का कालखंड उनसे कई शताब्दियों पश्चात का है। उनकी शिक्षाओं ने सहिष्णुता की नींव रखी।

69. (3) कव्वाली
चिश्ती सिलसिले के संतों ने संगीत को ईश्वर से जुड़ने और आध्यात्मिक परमानंद प्राप्त करने का एक सशक्त माध्यम स्वीकार किया। इन आध्यात्मिक संगीत सभाओं में गाई जाने वाली रहस्यमयी कविता को 'कव्वाली' कहा जाता है। अमीर खुसरो को कव्वाली विधा को व्यवस्थित और लोकप्रिय बनाने का श्रेय प्राप्त है। इसमें सूफी कलामों को विभिन्न वाद्ययंत्रों के साथ गाया जाता है, जिससे श्रोताओं पर गहरा प्रभाव पड़ता है। कव्वाली आज भी हमारी सांस्कृतिक पहचान का हिस्सा है।

NODIA

70. (3) II, III, IV, I
चिश्ती सिलसिले का नेतृत्व एक सुव्यवस्थित गुरु-शिष्य परंपरा के माध्यम से विकसित हुआ। सर्वप्रथम ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती ने भारत में इसकी नींव रखी। उनके उत्तराधिकारी कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी हुए, जिन्होंने दिल्ली में इस परंपरा को विस्तारित किया। उनके शिष्य बाबा फरीद ने पंजाब में चिश्ती मत को जनप्रिय बनाया। अंततः, बाबा फरीद के सबसे प्रसिद्ध शिष्य निज़ामुद्दीन औलिया ने इस सिलसिले को लोकप्रियता के चरमोत्कर्ष पर पहुँचाया। यह क्रम इसके ऐतिहासिक विस्तार को दर्शाता है।

71. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
प्रसिद्ध सूफी संत बाबा फरीद के अनेक पदों और श्लोकों को सिखों के पवित्र ग्रंथ 'गुरु ग्रंथ साहिब' में ससम्मान सम्मिलित किया गया है। यह इस तथ्य का प्रमाण है कि मध्यकालीन भारत में सूफी संतों और सिख गुरुओं के मध्य गहरे वैचारिक संबंध और आपसी सम्मान विद्यमान था। यह समावेश दोनों समुदायों के मध्य प्रतिद्वंद्विता को नहीं, बल्कि उनकी आध्यात्मिक एकता और साझा मानवीय मूल्यों को दर्शाता है। यह धार्मिक समन्वय का सुंदर उदाहरण है।

72. (1) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
सूफी संस्थाओं और उनके अर्थों का एक स्पष्ट ढांचा विद्यमान था। 'खानकाह' वह स्थान था जहाँ सूफी संत निवास करते थे और अपने शिष्यों को शिक्षित करते थे। 'खलीफा' संत का वह नामित उत्तराधिकारी होता था जो उनकी आध्यात्मिक विरासत को आगे बढ़ाता था। 'बरकत' का अर्थ संत की आध्यात्मिक शक्ति या उनके आशीर्वाद से प्राप्त होने वाली कृपा है। 'वली' शब्द का प्रयोग ईश्वर के मित्र या सिद्ध पुरुष (संत) हेतु किया जाता है।

73. (3) जनसाधारण की भाषा में भजनों और कविता की रचना करके।
भक्ति और सूफी संतों ने अपने उपदेशों हेतु संस्कृत या फारसी के स्थान पर स्थानीय बोलियों का चयन किया। उन्होंने जनसाधारण की भाषा में भजनों और कविताओं की रचना की, जिससे आम लोग आध्यात्मिक ज्ञान से प्रत्यक्ष जुड़ सके। इस प्रक्रिया ने न केवल धर्म का लोकतंत्रीकरण किया, बल्कि हिंदी, बंगाली, मराठी, पंजाबी और तमिल जैसी क्षेत्रीय भाषाओं के साहित्य को भी अत्यंत समृद्ध बनाया। इन आंदोलनों ने क्षेत्रीय भाषाओं को नई शक्ति प्रदान की।

74. (1) निराकार ईश्वर पर साझा बल और पुरोहिती सत्ता का परित्याग।
मध्यकालीन भारत में समन्वयवादी संप्रदायों की लोकप्रियता का मुख्य कारण उनका सरल और समावेशी दृष्टिकोण था। इन संप्रदायों ने जटिल कर्मकांडों और पुरोहितों के वर्चस्व को पूर्णतः नकार दिया। उन्होंने निराकार ईश्वर की भक्ति और सभी मनुष्यों की समानता पर साझा बल दिया। सूफी और भक्ति दोनों ही धाराओं में ईश्वर के प्रति प्रेम ही सर्वोपरि था, जिसने विभिन्न धर्मों के लोगों को एक साझा मंच प्रदान किया। इसने सामाजिक सद्भाव को सुदृढ़ किया।

54. (1) केवल I, II, और III
सूफी मत में 'ज़िक्र' ईश्वर के नाम जप को और 'समा' संगीत के माध्यम से आध्यात्मिक आनंद प्राप्त करने को कहा जाता है। 'फ़ना' वह अवस्था है जहाँ साधक का अहंकार समाप्त होकर वह ईश्वर में विलीन हो जाता है। 'तरीक़ा' वास्तव में वह आध्यात्मिक मार्ग है जिसे सूफी अपनाते हैं। सूफीवाद ने आंतरिक प्रेम और ईश्वर के साथ प्रत्यक्ष संबंध पर बल दिया, जिसने भारतीय समाज और संस्कृति को गहराई से प्रभावित किया था।

55. (4) बा-शरा इस्लामी कानून का पालन करते थे, जबकि बे-शरा उससे बंधे नहीं थे।
भारत में सूफी संतों को मुख्यतः दो श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया था। 'बा-शरा' वे सूफी थे जो इस्लामी धर्मशास्त्र 'शरीयत' का कड़ाई से पालन करते थे और सुव्यवस्थित सिलसिलों से जुड़े होते थे। इसके विपरीत, 'बे-शरा' सूफी भ्रमणशील होते थे और वे सामाजिक अथवा धार्मिक कानूनों की अधिक परवाह नहीं करते थे। दोनों ही धाराओं का अंतिम लक्ष्य ईश्वर प्राप्ति था, किंतु उनके मार्ग और जीवन पद्धति भिन्न थे।

56. (1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
भारत में सूफी सिलसिलों ने विभिन्न क्षेत्रों में अपने विचार प्रसारित किए। ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती ने अजमेर को अपना मुख्य केंद्र बनाया। सुहरावर्दी सिलसिले को बहाउद्दीन ज़करिया ने मुल्तान और पंजाब में लोकप्रिय किया। कादिरी सिलसिले का प्रसार शाह नियामतुल्लाह और मियाँ मीर जैसे संतों ने किया। नक्शबंदी सिलसिले के मुख्य प्रचारक ख्वाजा बाकी बिल्लाह थे, जिन्होंने शरीयत के सख्त पालन पर बल दिया। इन सिलसिलों ने भारतीय संस्कृति को नई दिशा दी।

57. (3) नक्शबंदी
नक्शबंदी सिलसिला भारत में अपनी रुढ़िवादी प्रवृत्तियों हेतु जाना जाता था। इस सिलसिले के संतों ने शरीयत के कड़ाई से पालन पर विशेष बल दिया और वे संगीत (समा) तथा नृत्य जैसी प्रथाओं के घोर विरोधी थे, जो चिश्ती सिलसिले में प्रचलित थीं। शेख अहमद सरहिंदी इस सिलसिले के एक प्रभावशाली नेता थे, जिन्होंने उदारवादी धार्मिक नीतियों का विरोध किया। उनका मानना था कि सूफीवाद को पूर्णतः इस्लामी कानूनी ढांचे के भीतर ही रहना चाहिए।

58. (1) सुहरावर्दी संत निर्धनता में रहते थे और उन्होंने राजकीय संरक्षण को पूर्णतः अस्वीकार कर दिया था।
चिश्ती संतों के विपरीत, सुहरावर्दी सिलसिले के संत निर्धनता को अनिवार्य नहीं मानते थे। उनका विचार था कि एक सूफी के पास धन और राजकीय संरक्षण हो सकता है, बशर्ते उसका मन ईश्वर में अनुरक्त हो। उन्होंने सक्रिय रुप से सुल्तानों के दरबार में पद स्वीकार किए और राजकीय कार्यों में परामर्श भी दिया। यह सिलसिला पंजाब और सिंध में बहुत प्रभावशाली था और बहाउद्दीन ज़करिया इसके प्रमुख स्तंभ माने जाते थे।

59. (2) केवल IV
कादिरी सिलसिला बगदाद के अब्दुल कादिर जिलानी द्वारा स्थापित किया गया था और भारत में यह अत्यंत लोकप्रिय हुआ। मुगल राजकुमार दारा शिकोह इस सिलसिले के प्रसिद्ध अनुयायी थे, जिन्होंने हिंदू और सूफी दर्शन में समानताएं खोजीं। मियाँ मीर भी इसी परंपरा के श्रद्धेय संत थे। यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि इस सिलसिले का उद्देश्य सैन्य शक्ति से धर्म परिवर्तन करना था। इसके स्थान पर, यह आध्यात्मिक गहराई के माध्यम से जनप्रिय हुआ।

60. (1) शरीयत → तरीक़त → हक़ीक़त → मारिफ़त
सूफी मार्ग में ईश्वर तक पहुँचने के चार क्रमिक चरण स्वीकार किए गए हैं। प्रथम चरण 'शरीयत' है, जो धार्मिक कानूनों का पालन है। इसके पश्चात 'तरीक़त' आता है, जो आध्यात्मिक साधना का मार्ग है। तृतीय चरण 'हक़ीक़त' है, जहाँ साधक को सत्य का साक्षात्कार होता है। अंतिम चरण 'मारिफ़त' है, जो ईश्वर का संपूर्ण ज्ञान और उसके साथ एकाकार होना है। यह अनुक्रम साधक की आंतरिक सत्य तक की यात्रा दर्शाता है।

61. (3) अद्वैत वेदांत
इब्न अरबी के 'वहदत-उल-वजूद' का सिद्धांत यह मानता है कि ईश्वर और उसकी सृष्टि के मध्य कोई वास्तविक अंतर नहीं है और सब कुछ ईश्वर का ही प्रतिबिंब है। यह अवधारणा हिंदू दर्शन के 'अद्वैत वेदांत' के अत्यंत निकट है, जो 'अहं ब्रह्मास्मि' और जगत की परमात्मा के साथ एकता की व्याख्या करता है। इन विचारधाराओं ने भारत में सूफी संतों और हिंदू रहस्यवादियों के मध्य वैचारिक समन्वय का एक सुदृढ़ आधार निर्मित किया।

62. (4) सिलसिला - उत्तराधिकार की एक निरंतर आध्यात्मिक श्रृंखला।
सूफी शब्दावली में 'सिलसिला' का अर्थ है एक निरंतर श्रृंखला, जो शिष्य को उसके गुरु के माध्यम से सीधे पैगंबर तक जोड़ती है। 'खानकाह' सूफी संतों के निवास और सभा का स्थान होता है, जबकि उनके मकबरे को 'दरगाह' कहा जाता है। 'मुर्शिद' गुरु को और 'मुरीद' शिष्य को कहते हैं। 'उर्स' सूफी संत की पुण्यतिथि पर आयोजित होने वाला उत्सव है। अतः सिलसिला ही वह शब्द है जो गुरु-शिष्य परंपरा की निरंतरता दर्शाता है।

NODIA

63. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
प्रारंभिक चिश्ती संतों ने जानबूझकर राजसी ठाट-बाट और राजनीतिक गलियारों से दूरी बनाए रखी थी। उनका मानना था कि शासकों के समीप जाने या राजकीय अनुदान स्वीकार करने से उनके आध्यात्मिक जीवन की शुद्धता और स्वतंत्रता प्रभावित हो सकती है। वे जनता के मध्य रहकर सादगी से जीवन जीने में विश्वास करते थे। यह दूरी उन्हें समाज के वंचित वर्गों के अधिक निकट ले आई। उन्होंने सदैव मानवीय सेवा को प्राथमिकता दी।

64. (2) पृथ्वीराज चौहान
ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती 12वीं शताब्दी के अंत में भारत आए थे, जब अजमेर पर चौहान वंश के शासक पृथ्वीराज चौहान का शासन था। उन्होंने अजमेर को अपना मुख्य केंद्र बनाया और वहीं से अपने आध्यात्मिक संदेशों का प्रसार किया। उनकी सादगी और मानवतावादी दृष्टिकोण ने स्थानीय जनमानस को अत्यधिक प्रभावित किया। उनके आगमन ने भारत में सूफी मत

43. (4) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
विभिन्न संतों ने भारत के प्रत्येक कोने में भक्ति की लहर प्रसारित की। चैतन्य महाप्रभु ने बंगाल में संकीर्तन आंदोलन चलाया, जबकि शंकरदेव ने असम के सामाजिक जीवन को पुनर्जीवित किया। नरसिंह मेहता ने गुजरात में वैष्णव भक्ति को लोकप्रिय बनाया और उनके भजन आज भी श्रद्धेय हैं। बसवन्ना ने कर्नाटक में वीरशैव आंदोलन का नेतृत्व किया, जिसने जाति व्यवस्था को चुनौती दी। इन संतों ने क्षेत्रीय पहचान के साथ आध्यात्मिक एकता सुदृढ़ की।

44. (2) अचिंत्य भेदाभेद
चैतन्य महाप्रभु ने 'अचिंत्य भेदाभेद' के दर्शन का प्रचार किया, जिसका अर्थ है कि जीवात्मा और ईश्वर के मध्य का संबंध एक साथ भिन्न और अभिन्न दोनों है। यह संबंध मानवीय बुद्धि हेतु 'अचिंत्य' अर्थात् समझ से परे माना गया है। जैसे सूर्य और उसकी किरणें पृथक होकर भी एक ही हैं, वैसे ही आत्मा ईश्वर का अंश है। यह दर्शन प्रेमपूर्ण सेवा के माध्यम से ईश्वर से जुड़ने पर बल देता है।

45. (3) केवल I और III
चैतन्य महाप्रभु ने 'संकीर्तन' को भक्ति का मुख्य आधार बनाया, जिसमें सामूहिक रुप से गायन और नृत्य द्वारा ईश्वर का गुणगान किया जाता था। उन्होंने बंगाल और ओडिशा में गौड़ीय वैष्णव परंपरा को स्थापित किया, जो पूर्णतः कृष्ण भक्ति पर केंद्रित है। वे अद्वैतवाद के स्थान पर सगुण प्रेम भक्ति के समर्थक थे, जहाँ ईश्वर को प्रेम के साकार स्वरुप में देखा जाता है। उनके इस आंदोलन ने समाज के सभी वर्गों को आकर्षित किया।

46. (4) पुरी
चैतन्य महाप्रभु ने अपने जीवन का उत्तरार्ध मुख्य रुप से ओडिशा के पुरी में व्यतीत किया, जहाँ वे भगवान जगन्नाथ की भक्ति में लीन रहते थे। पुरी उनके आध्यात्मिक अनुभवों का मुख्य केंद्र बन गया और यहीं से उनके प्रेम और भक्ति का संदेश पूरे पूर्वी भारत में विस्तारित हुआ। उन्होंने यहाँ रहकर अनेक भक्तों को प्रशिक्षित किया और भक्ति की एक ऐसी धारा प्रवाहित की जिसने तत्कालीन सामाजिक सीमाओं को तोड़ दिया।

47. (1) चैतन्य महाप्रभु - गौरांग
चैतन्य महाप्रभु को उनके सुनहरे वर्ण और दिव्य कांति के कारण 'गौरांग' या 'गौर हरि' के नाम से जाना जाता है। वे बंगाल के एक महान संत थे जिन्होंने कृष्ण भक्ति को नया आयाम प्रदान किया। इसके विपरीत, 'आगरा का अंधा कवि' सूरदास हेतु उपयोग किया जाता है। कबीर निर्गुण विचारधारा के अग्रणी थे, न कि द्वैतवाद के। तुलसीदास भी सगुण राम भक्ति के प्रमुख कवि थे। अतः चैतन्य महाप्रभु और गौरांग का युग्म पूर्णतः सही है।

48. (2) अभंग
महाराष्ट्र के वारकरी संतों द्वारा रचित भक्ति गीतों को 'अभंग' कहा जाता है। 'अभंग' का शाब्दिक अर्थ है जिसका कभी विनाश न हो, अर्थात् जो शाश्वत हो। इन रचनाओं में संत तुकाराम, नामदेव और ज्ञानेश्वर ने विठोबा के प्रति अपनी प्रगाढ़ भक्ति और सामाजिक संदेशों को पिरोया है। ये पद अत्यंत सरल मराठी भाषा में लिखे गए हैं, जिससे ये आम जनता के मध्य लोकप्रिय हुए। आज भी श्रद्धालु इन अभंगों को भक्तिभाव से गाते हैं।

49. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
महाराष्ट्र के वारकरी आंदोलन की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि इसने भक्ति को गृहस्थ जीवन के साथ सम्बद्ध किया। इस परंपरा के प्रमुख संतों ने संसार का त्याग कर वनों में जाने के स्थान पर अपने परिवारों के साथ रहकर और दैनिक कार्य करते हुए ईश्वर की साधना की। उन्होंने सिखाया कि आध्यात्मिक उन्नति हेतु सामाजिक जिम्मेदारियों का परित्याग आवश्यक नहीं है। इस व्यवहारिक दृष्टिकोण ने भक्ति को सामान्य जनों हेतु सुलभ बनाया।

50. (1) भागवत पुराण
संत एकनाथ महाराष्ट्र के एक महान संत और समाज सुधारक थे। उन्होंने 'भागवत पुराण' के ग्यारहवें स्कंध पर एक विस्तृत और सरल मराठी टीका लिखी, जिसे 'एकनाथी भागवत' कहा जाता है। इसके माध्यम से उन्होंने उच्च कोटि के दार्शनिक ज्ञान को आम जनमानस की भाषा में सुलभ कराया। उन्होंने सामाजिक समानता का संदेश दिया और अपनी रचनाओं द्वारा जातिगत भेदभाव पर प्रहार किया। उनकी यह कृति मराठी साहित्य की अमूल्य धरोहर है।

51. (3) निम्बार्काचार्य
नामदेव, ज्ञानेश्वर और तुकाराम महाराष्ट्र की वारकरी परंपरा के प्रमुख संत रहे हैं, जिनकी भक्ति का केंद्र पंढरपुर के भगवान विठोबा थे। इन संतों ने महाराष्ट्र में एक व्यापक सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना जागृत की थी। इसके विपरीत, निम्बार्काचार्य दक्षिण भारत के एक दार्शनिक थे, जिन्होंने 'द्वैताद्वैत' मत प्रतिपादित किया और उनका कार्यक्षेत्र मुख्य रुप से उत्तर भारत का ब्रज क्षेत्र रहा है। उनका वारकरी आंदोलन से सीधा संबंध नहीं रहा है।

52. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
संत तुकाराम शूद्र पृष्ठभूमि से थे और उन्हें अपनी भक्ति तथा रचनाओं के कारण तत्कालीन रुढ़िवादी वर्ग के कड़े विरोध का सामना करना पड़ा। यहाँ तक कि उनकी रचनाओं को नष्ट करने का प्रयास भी किया गया। इसके बावजूद, तुकाराम ने कभी अपनी मातृभाषा मराठी का त्याग नहीं किया। उन्होंने अपने सभी 'अभंग' मराठी में ही रचे, क्योंकि वे संदेश को जन-जन तक पहुँचाना चाहते थे। उनकी अटूट आस्था ने उन्हें सम्मानित बनाया।

53. (3) बीजक
'ज्ञानेश्वरी', 'दासबोध' और 'अभंग' सभी का संबंध महाराष्ट्र की समृद्ध भक्ति परंपरा और मराठी साहित्य से है। ज्ञानेश्वरी संत ज्ञानेश्वर की गीता पर टीका है, दासबोध समर्थ रामदास का ग्रंथ है और अभंग वारकरी संतों की काव्य विधा है। इसके विपरीत, 'बीजक' उत्तर भारत के महान संत कबीर की शिक्षाओं का संग्रह है। कबीर की विचारधारा और कार्यक्षेत्र महाराष्ट्र के संतों से भिन्न था, अतः 'बीजक' इस समूह में विषम है।

Downloaded from www.pdf.tube

75. (2) केवल I, II, और IV
भक्ति और सूफी आंदोलन कई मूलभूत सिद्धांतों में समानता रखते थे। दोनों ने ईश्वर की मौलिक एकता (एकेश्वरवाद) को स्वीकार किया और माना कि सत्य केवल एक है। आध्यात्मिक मार्ग में गुरु या पीर की भूमिका को दोनों ने अनिवार्य बताया। सर्वाधिक महत्वपूर्ण समानता प्रेम और अटूट भक्ति पर बल देना था, जहाँ बाह्य आडंबरों का कोई स्थान नहीं था। यद्यपि, शरीर को अत्यधिक पीड़ा देने वाली कठोर तपस्या इन आंदोलनों का अनिवार्य अंग नहीं थी।

76. (2) शासकों द्वारा संस्कृत ग्रंथों का फारसी में अनुवाद कराया गया और उन्हें संरक्षित किया गया।
मध्यकालीन भारत में हिंदू और मुस्लिम संस्कृतियों के मिलन का एक महत्वपूर्ण परिणाम ज्ञान का आदान-प्रदान था। कई शासकों ने प्राचीन संस्कृत ग्रंथों की महत्ता को समझा और उनका फारसी में अनुवाद कराया ताकि विद्वान उन्हें पढ़ सकें। इसमें उपनिषद, रामायण और महाभारत जैसे ग्रंथ सम्मिलित थे। इस अनुवाद कार्य ने दोनों समुदायों के मध्य दार्शनिक समझ को बढ़ाया और एक ऐसी समन्वयवादी संस्कृति को जन्म दिया जो धार्मिक संकीर्णता से परे थी।

77. (3) बंगाल
'सत्यपीर' संप्रदाय बंगाल के सांस्कृतिक और धार्मिक इतिहास का एक अद्भुत उदाहरण है। इस संप्रदाय में 'सत्य' शब्द हिंदू देवता सत्यनारायण का और 'पीर' शब्द मुस्लिम सूफी संत का प्रतीक माना जाता है। बंगाल के ग्रामीण क्षेत्रों में हिंदू और मुस्लिम दोनों ही समुदायों के लोग समान श्रद्धा के साथ सत्यपीर की उपासना करते थे। यह संप्रदाय इस तथ्य को दर्शाता है कि किस प्रकार लोकस्तर पर दोनों धर्मों की परंपराएं मिलकर एक नई पहचान निर्मित करती थीं।

78. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
भक्ति और सूफी आंदोलनों ने निश्चित रुप से समाज में व्याप्त जातिगत भेदभाव की कठोरता को कम किया और आम जनता के मध्य धार्मिक सद्भाव का वातावरण निर्मित किया। इन आंदोलनों के प्रभाव से मानवतावादी मूल्यों को अत्यधिक बढ़ावा मिला। यद्यपि, यह कहना अतिशयोक्ति होगी कि ये आंदोलन भारतीय समाज से जाति व्यवस्था और रुढ़ियों को पूर्णतः समाप्त कर सके। सामाजिक ढांचा समाज में बना रहा, यद्यपि दृष्टिकोण में व्यापक सुधार और लचीलापन अवश्य आया।

79. (2) केवल I, II, III, और V
भक्ति और सूफी आंदोलनों ने धर्म को आम आदमी, महिलाओं और वंचित जातियों हेतु सुलभ बनाकर उसे लोकतांत्रिक रुप प्रदान किया। कव्वाली और कीर्तन जैसी संगीत विधाओं ने भारतीय कला को नई ऊंचाइयां प्रदान कीं। इन आंदोलनों की सहिष्णुता ने अकबर जैसे शासकों की नीतियों को भी प्रभावित किया। लंगर और खानकाह जैसी संस्थाओं ने सेवा के मानवीय मूल्यों को जीवंत रखा। यद्यपि, इन आंदोलनों से संस्कृत विद्वत्ता कभी समाप्त नहीं हुई, बल्कि वह निरंतर चलती रही।

80. (2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
भारतीय दर्शन की विभिन्न धाराओं के अपने विशिष्ट ग्रंथ और सिद्धांत विद्यमान हैं। 'श्रीभाष्य' रामानुज द्वारा रचित विशिष्टाद्वैत का मुख्य ग्रंथ है। 'वहदत-उल-वजूद' सूफी रहस्यवाद का वह सिद्धांत है जो अस्तित्व की एकता पर बल देता है। 'तत्त्ववाद' माध्वाचार्य के द्वैत वेदांत का दूसरा नाम है, जो ईश्वर और जीव के भेद को वास्तविक मानता है। 'बीजक' कबीर की शिक्षाओं का संकलन है, जो निर्गुण परंपरा का प्रतिनिधित्व करता है। ये तत्व भारतीय आध्यात्मिक गहराई को प्रदर्शित करते हैं।

www.nodia.in

NODIA

अध्याय 15

ब्रिटिश साम्राज्यवाद, प्रारंभिक प्रतिरोध : मैसूर एवं मराठा

1. निम्नलिखित में से किस राजकीय चार्टर द्वारा प्रारंभ में इंग्लिश ईस्ट इंडिया कंपनी को ईस्ट इंडीज के साथ व्यापार करने का एकाधिकार प्रदान किया गया था?
(1) 1599 का चार्टर
(2) 1600 का चार्टर
(3) 1609 का चार्टर
(4) 1615 का चार्टर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

2. भारत में अपने प्रारंभिक दशकों के दौरान इंग्लिश ईस्ट इंडिया कंपनी का प्राथमिक उद्देश्य क्या था?
(1) व्यापारिक विशेषाधिकार प्राप्त करना और फैक्ट्रियां स्थापित करना
(2) क्षेत्रीय विजय और साम्राज्य निर्माण
(3) मूल निवासियों के बीच ईसाई धर्म का प्रचार करना
(4) स्थानीय शासकों के उत्तराधिकार विवादों में हस्तक्षेप करना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

3. निम्नलिखित में से कौन सा कथन ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा स्थापित एक प्रमुख प्रारंभिक फैक्ट्री की सही पहचान करता है?
(1) कंपनी ने 1633 में बंगाल में अपनी पहली फैक्ट्री कलकत्ता में स्थापित की थी।
(2) बॉम्बे भारत में कंपनी द्वारा स्थापित पहली फैक्ट्री थी।
(3) दक्षिण में पहली स्थायी अंग्रेजी फैक्ट्री मसुलीपत्तनम में स्थापित की गई थी।
(4) कंपनी ने 1639 में मुगलों से मद्रास प्राप्त किया था।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

4. सूची I (प्रमुख व्यक्तित्व) को सूची II (संबद्ध घटनाएं/स्थान) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (प्रमुख व्यक्तित्व)
A. थॉमस रो
B. जॉब चारनॉक
C. फ्रांस्वा मार्टिन
D. गेराल्ड औंगियर
सूची II: (संबद्ध घटनाएं/स्थान)
i. कलकत्ता में अंग्रेजी बस्ती के संस्थापक
ii. जहाँगीर के दरबार में राजदूत
iii. गवर्नर जिसने बॉम्बे की दुर्गबंदी की
iv. पांडिचेरी में फ्रांसीसी बस्ती के संस्थापक
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

5. 1687 में ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा अपना पश्चिमी मुख्यालय सूरत से बॉम्बे स्थानांतरित करने का प्राथमिक कारण क्या था?
(1) सूरत विनाशकारी भूकंपों की एक श्रृंखला से प्रभावित हुआ था जिसने ब्रिटिश गोदामों को नष्ट कर दिया था।
(2) मुगल सम्राट ने एक राजकीय आदेश जारी कर अंग्रेजी व्यापारियों को पूर्ण रूप से हटने की मांग की थी।
(3) बॉम्बे ने सूरत की तुलना में एक बेहतर प्राकृतिक बंदरगाह और अधिक सुरक्षा प्रदान की।
(4) पुर्तगाली नौसेना ने एक स्थायी नाकाबंदी स्थापित कर दी थी जिससे सभी अंग्रेजी समुद्री व्यापार रुक गए थे।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

6. प्लासी के युद्ध से पहले ईस्ट इंडिया कंपनी के विरुद्ध नवाब सिराजुद्दौला की मुख्य आपत्ति क्या थी?
(1) नवाब के पूर्ववर्ती को दिए जाने वाले वार्षिक उपहार का भुगतान करने में कंपनी की विफलता।
(2) कंपनी के अधिकारियों द्वारा निजी व्यापार के लिए व्यापार अनुमति-पत्र (दस्तक) का दुरुपयोग।
(3) नवाब को पदच्युत करने के लिए मराठा पेशवा के साथ कंपनी का गुप्त सैन्य गठबंधन।
(4) बंगाल के बंदरगाहों में ब्रिटिश व्यापारिक जहाजों के प्रवेश पर पूर्ण प्रतिबंध।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

7. प्लासी के युद्ध की पृष्ठभूमि के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. ब्लैक होल त्रासदी का उपयोग अंग्रेजों द्वारा नवाब के विरुद्ध आक्रामक कार्रवाई के नैतिक औचित्य के रूप में किया गया था।
II. मीर जाफर सिराजुद्दौला की सेना का प्रधान सेनापति था

Click Here to Buy book on Amazon

और उसने प्लासी में अंग्रेजों के विरुद्ध सक्रिय रूप से युद्ध लड़ा था।

III. युद्ध से पूर्व सिराजुद्दौला और अंग्रेजों के बीच अलीनगर की संधि पर हस्ताक्षर किए गए थे।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

8. प्लासी के युद्ध (1757) के परिणाम के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए:

(1) मुगल सम्राट ने युद्ध के तुरंत बाद कंपनी को बंगाल के दीवानी अधिकार प्रदान कर दिए थे।
(2) रॉबर्ट क्लाइव के निर्देशन में मीर जाफर को आधिकारिक तौर पर बंगाल के नवाब के रूप में स्थापित किया गया था।
(3) ईस्ट इंडिया कंपनी ने बंगाल, बिहार और उड़ीसा में मुक्त व्यापार करने का पूर्ण अधिकार प्राप्त कर लिया।
(4) ब्रिटिश प्रशासन ने 24 परगना जिले के राजस्व एकत्र करने के जमींदारी अधिकार प्राप्त कर लिए।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

9. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:

अभिकथन (A): प्लासी का युद्ध राजनीतिक रूप से निर्णायक था लेकिन सैन्य दृष्टि से नगण्य था।

कारण (R): यह युद्ध बड़े सैन्य मुकाबले के बजाय मुख्य रूप से षड्यंत्र और नवाब के प्रमुख सेनापतियों के विश्वासघात के माध्यम से जीता गया था।

(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

10. निम्नलिखित में से किसने प्लासी के युद्ध में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना का नेतृत्व कर विजय प्राप्त की थी?

(1) रॉबर्ट क्लाइव
(2) वॉरेन हेस्टिंग्स
(3) हेक्टर मुनरो
(4) आर्थर वेलेजली
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

11. बंगाल में ब्रिटिश शक्ति की स्थापना से जुड़ी निम्नलिखित घटनाओं को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:

I. बक्सर का युद्ध
II. ब्लैक होल त्रासदी
III. इलाहाबाद की संधि
IV. प्लासी का युद्ध

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही क्रम चुनिए:

(1) II, IV, I, III
(2) IV, II, I, III
(3) II, I, IV, III
(4) I, II, IV, III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

12. बक्सर के युद्ध (1764) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. यह ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी और मीर कासिम, शुजाउद्दौला तथा शाह आलम द्वितीय की संयुक्त सेनाओं के बीच लड़ा गया था।
II. ब्रिटिश सेना का नेतृत्व मेजर हेक्टर मुनरो ने किया था।
III. इसने उत्तर भारत में ब्रिटिश राजनीतिक प्रभुत्व को सुदृढ़ता से स्थापित किया।
IV. इस युद्ध के बाद मीर जाफर को पुनः बंगाल का नवाब बनाया गया।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

(1) केवल I, II और III
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

13. निम्नलिखित में से कौन सा कथन प्लासी के युद्ध की तुलना में बक्सर के युद्ध के महत्व को सटीक रूप से स्पष्ट करता है?

(1) प्लासी मुगल सम्राट पर पूर्ण विजय थी, जबकि बक्सर केवल एक स्थानीय शासक पर विजय थी।
(2) प्लासी के परिणामस्वरूप अवध का तत्काल विलय हो गया, जबकि बक्सर ने केवल सीमित व्यापार अधिकार दिए।
(3) बक्सर ने एक संयुक्त भारतीय सेना पर ब्रिटिश सैन्य श्रेष्ठता सिद्ध की, जो प्लासी के षड्यंत्र के विपरीत थी।
(4) बक्सर ने भारत से फ्रांसीसी सेनाओं को स्थायी रूप से निष्कासित करने के लिए विवश किया, जो प्लासी में संभव नहीं हो पाया था।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

14. ईस्ट इंडिया कंपनी के लिए इलाहाबाद की संधि (1765) का सबसे महत्वपूर्ण कानूनी और राजनीतिक परिणाम क्या था?

(1) इसने मुगल सम्राट को रॉबर्ट क्लाइव के पक्ष में सिंहासन छोड़ने के लिए विवश किया।
(2) इसने अवध के नवाब के साथ सहायक संधि प्रणाली की शुरुआत की।
(3) इसने अवध का प्रत्यक्ष प्रशासनिक नियंत्रण अंग्रेजों को हस्तांतरित कर दिया।
(4) इसने कंपनी को बंगाल, बिहार और उड़ीसा के दीवानी अधिकार प्रदान किए।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

जातिगत गर्व से ऊपर रखा। उनके सरल उपदेशों और समावेशी स्वभाव ने उन्हें समाज में श्रद्धेय बना दिया।

22. (2) केवल II और III
कबीर निर्गुण भक्ति के उपासक थे, अतः उन्होंने भगवान राम को मानवीय अवतार के स्थान पर एक निराकार परम सत्ता के रूप में देखा। उन्होंने बाह्य आडंबरों, जैसे मूर्ति पूजा और कठोर अनुष्ठानों की तीव्र आलोचना की। उनकी शिक्षाएं सरल दोहों और 'सबद' के माध्यम से व्यक्त की गईं, जो सीधे हृदय तक पहुँचती थीं। कबीर ने समाज में व्याप्त धार्मिक संकीर्णता और भेदभाव को दूर करने का सफल प्रयास किया।

23. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
कबीर की विचारधारा में उपनिषदों के वेदांत दर्शन और सूफी संतों के प्रेम मार्ग का अनूठा संगम मिलता है। उनका मानना था कि सत्य एक ही है और मनुष्य ने उसे पृथक नामों में विभाजित कर दिया है। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि राम और अल्लाह एक ही निराकार ईश्वर के विविध संबोधन हैं। कबीर ने धार्मिक सीमाओं से ऊपर उठकर मानवता और आंतरिक शुद्धता पर विशेष बल दिया था।

24. (2) रामानुज, माध्वाचार्य, रामानंद, कबीर
भक्ति आंदोलन के संतों का कालक्रम भारतीय इतिहास की आध्यात्मिक प्रगति को दर्शाता है। रामानुज 11वीं-12वीं शताब्दी में सक्रिय थे, जिन्होंने विशिष्टाद्वैत की नींव रखी। उनके पश्चात 13वीं शताब्दी में माध्वाचार्य आए, जिन्होंने द्वैतवाद का प्रचार किया। 14वीं-15वीं शताब्दी में रामानंद ने इस परंपरा को उत्तर भारत में विस्तारित किया। अंततः, 15वीं शताब्दी के कबीर ने निर्गुण भक्ति के माध्यम से समाज सुधार और भक्ति को नई दिशा प्रदान की।

25. (3) बीजक
कबीर की आध्यात्मिक शिक्षाओं और उनके क्रांतिकारी विचारों का मुख्य संग्रह 'बीजक' के नाम से प्रसिद्ध है। इस ग्रंथ में उनके दोहे, साखियाँ और पद संकलित हैं, जो समाज में व्याप्त कुरीतियों पर प्रहार करते हैं। 'बीजक' कबीरपंथियों हेतु सर्वाधिक पवित्र ग्रंथ माना जाता है। इसमें संकलित उनकी वाणी अत्यंत प्रभावशाली है, जो आत्मा की शुद्धि और निराकार ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण का मार्ग प्रशस्त करती है।

26. (1) उन्होंने जनसाधारण को आध्यात्मिक अवधारणाएँ समझाने के लिए बुनाई के रूपकों का उपयोग किया।
कबीर ने अपने जुलाहा व्यवसाय को आध्यात्मिक साधना का अंग बनाया और बुनाई की प्रक्रिया से जुड़े प्रतीकों का उपयोग ईश्वर के गुण समझाने हेतु किया। उनके पदों में 'झीनी झीनी बीनी चदरिया' जैसे रूपक मिलते हैं, जो जीवन और आत्मा की जटिलता को सरलता से समझाते हैं। उन्होंने यह सिद्ध किया कि आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने हेतु सांसारिक कार्यों का त्याग आवश्यक नहीं है, बल्कि कर्म करते हुए भी भक्ति संभव है।

27. (4) A गलत है लेकिन R सही है।
मीराबाई की भक्ति सगुण धारा की थी, जहाँ उन्होंने भगवान कृष्ण को एक जीवंत और साकार सत्ता के रूप में पूजा। उनकी कविता निराकार ध्यान पर नहीं, बल्कि कृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम और विरह पर आधारित है। उन्होंने तत्कालीन रुढ़िवादी समाज और राजसी सुखों का त्याग किया। पितृसत्तात्मक मर्यादाओं को चुनौती देते हुए उन्होंने भक्ति के माध्यम से व्यक्तिगत स्वतंत्रता और अटूट आस्था का एक अनुपम उदाहरण समाज के समक्ष रखा।

28. (2) भोजराज
मीराबाई का विवाह मेवाड़ के राणा सांगा के ज्येष्ठ पुत्र कुँवर भोजराज के साथ हुआ था। यद्यपि, वे सांसारिक वैवाहिक जीवन में कभी भी पूर्णतः संलग्न नहीं हो पाईं, क्योंकि उनका हृदय बाल्यकाल से ही भगवान कृष्ण के प्रति समर्पित था। विवाह के कुछ वर्षों पश्चात उनके पति का देहांत हो गया, जिसके उपरांत उनकी भक्ति और भी तीव्र हो गई। उन्होंने राजसी सुख-सुविधाओं को त्यागकर अपना जीवन पूर्णतः कृष्ण भक्ति में लगा दिया।

29. (3) पदावली
मीराबाई द्वारा रचित भक्ति गीतों को सामूहिक रूप से 'पदावली' कहा जाता है। ये पद मुख्य रूप से राजस्थानी मिश्रित ब्रजभाषा में लिखे गए हैं और अपनी गेयता तथा भावनात्मक गहराई हेतु प्रसिद्ध हैं। इनमें कृष्ण के प्रति समर्पण, प्रेम और आध्यात्मिक व्याकुलता का सजीव वर्णन प्राप्त होता है। ये पद आज भी भारतीय लोक संगीत का अभिन्न अंग हैं। इनकी सरलता और भक्ति भाव ने इन्हें सदियों से जनमानस में जीवित रखा है।

30. (4) पंढरपुर
मीराबाई का जन्म मेड़ता में हुआ और विवाह चित्तौड़ के राजघराने में हुआ था। कालांतर में, वे भक्ति की खोज में वृंदावन और फिर द्वारका चली गईं, जहाँ उनका जीवन समाप्त हुआ। पंढरपुर महाराष्ट्र में स्थित है और यह वारकरी संप्रदाय के विठोबा मंदिर हेतु प्रसिद्ध है। मीराबाई का ऐतिहासिक संबंध पंढरपुर से नहीं रहा है, जबकि मेड़ता, चित्तौड़ और वृंदावन उनके जीवन के महत्वपूर्ण पड़ाव रहे हैं।

31. (1) केवल I, II, और III
गोस्वामी तुलसीदास ने हिंदी साहित्य को 'रामचरितमानस', 'विनय पत्रिका' और 'कवितावली' जैसे अनमोल ग्रंथ दिए हैं। रामचरितमानस जहाँ भगवान राम के आदर्श जीवन का महाकाव्य है, वहीं विनय पत्रिका में उनकी व्यक्तिगत विनय और भक्ति का रस है। कवितावली में राम कथा को सुंदर छंदों में प्रस्तुत किया गया है। 'सूरसागर' महान कवि सूरदास की रचना है, जिसमें भगवान कृष्ण की बाल लीलाओं का विस्तार से वर्णन प्राप्त होता है।

32. (2) अकबर
तुलसीदास मुगल सम्राट अकबर के शासनकाल के दौरान सक्रिय थे। यद्यपि वे राजदरबार से दूर रहे, किंतु उनके समकालीन साहित्य और समाज पर उनका गहरा प्रभाव था। इसी कालखंड में उन्होंने अपनी प्रसिद्ध कृति 'रामचरितमानस'

Downloaded from www.pdf.tube

iv. सेनापति जो मैसूर का वास्तविक शासक बना
(1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

23. निम्नलिखित में से कौन सा क्षेत्र हैदर अली के क्षेत्रीय विस्तार का प्रारंभिक लक्ष्य नहीं था?
(1) मालाबार
(2) सिरा
(3) बिदनूर
(4) अवध
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

24. 1764 और 1771 के बीच हैदर अली के विरुद्ध मराठों द्वारा सैन्य अभियान चलाने का प्राथमिक कारण क्या था?
(1) हैदर अली ने मराठों को पारंपरिक 'चौथ' देने से मना कर दिया था।
(2) अंग्रेजों ने मैसूर पर आक्रमण करने के लिए मराठों को धन का प्रलोभन दिया था।
(3) हैदर अली ने पुणे पर आक्रमण कर उस पर अधिकार कर लिया था।
(4) फ्रांसीसियों ने हैदर अली के विरुद्ध मराठों से सहायता मांगी थी।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

25. प्रथम आंग्ल-मैसूर युद्ध (1767-1769) के दौरान गठबंधनों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. अंग्रेजों ने प्रारंभ में हैदर अली के विरुद्ध हैदराबाद के निजाम और मराठों के साथ एक त्रिदलीय गठबंधन बनाया था।
II. हैदर अली ने ब्रिटिश गठबंधन को तोड़ने के लिए कूटनीति का सफलतापूर्वक उपयोग किया, और मराठों तथा निजाम को अपनी ओर कर लिया।
III. युद्ध श्रीरंगपट्टनम में ब्रिटिश सेना की पूर्ण हार के साथ समाप्त हुआ।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

26. किस संधि ने प्रथम आंग्ल-मैसूर युद्ध को सफलतापूर्वक समाप्त किया?
(1) मद्रास की संधि
(2) मंगलौर की संधि
(3) श्रीरंगपट्टनम की संधि
(4) सालबाई की संधि
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

27. मद्रास की संधि (1769) का एक प्रमुख प्रावधान क्या था?
(1) ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा मैसूर के क्षेत्रों का पूर्ण और प्रत्यक्ष विलय।
(2) हैदर अली द्वारा ब्रिटिश राजकोष को भारी युद्ध क्षतिपूर्ति का भुगतान।
(3) मैसूर के राजदरबार में एक स्थायी ब्रिटिश रेजिडेंट की अनिवार्य नियुक्ति।
(4) एक पारस्परिक रक्षा समझौता जिसमें अंग्रेजों ने किसी तीसरी शक्ति द्वारा आक्रमण किए जाने पर मैसूर की सहायता करने का वचन दिया।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

28. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
अभिकथन (A): मद्रास की संधि को ईस्ट इंडिया कंपनी के लिए अत्यधिक अपमानजनक माना गया था।
कारण (R): हैदर अली ने अपनी सेना को मद्रास के द्वारों तक पहुँचाने के बाद संधि की शर्तें स्वयं निर्धारित की थीं।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

29. प्रथम आंग्ल-मैसूर युद्ध के परिणामों के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए:
(1) हैदर अली भविष्य के सभी ब्रिटिश राजनयिक आश्वासनों के प्रति अत्यधिक संदिग्ध हो गए।
(2) मराठा आक्रमणों ने मैसूर राज्य को भारी क्षेत्रीय और वित्तीय हानि पहुँचाई।
(3) जब 1771 में मराठों ने मैसूर पर आक्रमण किया, तो अंग्रेजों ने रक्षात्मक उपबंध का कड़ाई से पालन किया।
(4) हैदर अली उन्नत सैन्य आपूर्ति और परामर्श के लिए फ्रांसीसियों पर अधिक निर्भर होने लगे।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

30. वह तात्कालिक कारण क्या था जिसने हैदर अली को द्वितीय आंग्ल-मैसूर युद्ध (1780-1784) प्रारंभ करने के लिए प्रेरित किया?
(1) ब्रिटिश खुफिया एजेंटों द्वारा कर्नाटक के नवाब की कथित हत्या।
(2) ब्रिटिश सहयोगी त्रावणकोर के राजा पर टीपू सुल्तान का सैन्य आक्रमण।
(3) मैसूर के पड़ोसी रियासतों में व्यपगत के सिद्धांत (Doctrine of Lapse) का आक्रामक कार्यान्वयन।
(4) अंग्रेजों द्वारा माहे के फ्रांसीसी बंदरगाह पर अधिकार करना, जो हैदर अली के संरक्षण में था।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

48. चतुर्थ आंग्ल-मैसूर युद्ध के बाद मैसूर के राजनीतिक निपटारे के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए:
(1) मैसूर का मुख्य क्षेत्र आधिकारिक तौर पर पारंपरिक वाडियार राजवंश के एक युवा राजकुमार को सौंप दिया गया था।
(2) मराठों को उनकी सैन्य सहायता के लिए टीपू के साम्राज्य का उत्तरी आधा हिस्सा प्रदान किया गया था।
(3) पुनर्गठित मैसूर राज्य को तत्काल एक कठोर सहायक संधि (Subsidiary Alliance) पर हस्ताक्षर करने के लिए विवश किया गया था।
(4) ब्रिटिश सरकार ने कनारा, वायनाड और कोयंबटूर के रणनीतिक क्षेत्रों का सीधे विलय कर लिया।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

49. टीपू सुल्तान के पतन के बाद निम्नलिखित में से किसे मैसूर के नए वाडियार शासक के राजदरबार में ब्रिटिश रेजिडेंट के रूप में नियुक्त किया गया था?
(1) थॉमस मुनरो
(2) बैरी क्लोज
(3) चार्ल्स मेटकाफ
(4) जॉन मैल्कम
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

50. प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध से जुड़ी संधियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. सूरत की संधि पर बॉम्बे में रघुनाथराव और अंग्रेजों के बीच हस्ताक्षर किए गए थे।
II. कलकत्ता परिषद द्वारा पुरंदर की संधि पर हस्ताक्षर किए गए थे, जिसने सूरत की संधि को अमान्य कर दिया था।
III. बड़गाँव का सम्मेलन अंग्रेजों के लिए एक अपमानजनक हार थी।
IV. सालबाई की संधि ने रघुनाथराव को स्थायी रूप से पेशवा के रूप में बहाल कर दिया।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

51. निम्नलिखित कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़ें:
कथन I: प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध का प्राथमिक कारण पेशवा नारायणराव की हत्या के बाद पुणे में आंतरिक उत्तराधिकार विवाद था।
कथन II: रघुनाथराव ने पेशवा का पद सुरक्षित करने के लिए बॉम्बे में अंग्रेजों की सहायता मांगी थी।
निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, और II, I की व्याख्या करता है।
(2) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, लेकिन II, I की व्याख्या नहीं करता है।
(3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

52. ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के लिए सालबाई की संधि (1782) का सर्वाधिक महत्व क्या था?
(1) ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा मराठा साम्राज्य का पूर्ण और बिना शर्त विलय।
(2) मालवा के उपजाऊ प्रांत पर दीवानी अधिकारों की तत्काल प्राप्ति।
(3) तत्कालीन पेशवा पर सहायक संधि प्रणाली का सफल कार्यान्वयन।
(4) मराठों के साथ बीस वर्षों की शांति सुनिश्चित करना, जिससे मैसूर युद्धों पर ध्यान केंद्रित करने की अनुमति मिली।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

53. प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध से संबंधित निम्नलिखित संधियों को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. बड़गाँव का सम्मेलन (Convention of Wadgaon)
II. पुरंदर की संधि
III. सालबाई की संधि
IV. सूरत की संधि
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही क्रम चुनिए:
(1) IV, II, I, III
(2) II, IV, III, I
(3) IV, I, II, III
(4) II, I, IV, III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

54. निम्नलिखित में से कौन सा सालबाई की संधि (1782) का प्रावधान नहीं था?
(1) अंग्रेजों ने माधवराव द्वितीय को वैध पेशवा के रूप में मान्यता दी।
(2) रघुनाथराव को गुजरात में एक स्वतंत्र राज्य प्रदान किया गया।
(3) सालसेट अंग्रेजों के अधिकार में ही रहा।
(4) मराठे फ्रांसीसियों को क्षेत्रीय बस्तियां न देने पर सहमत हुए।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

55. द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध (1803-1805) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह इसलिए लड़ा गया था क्योंकि मराठा सरदारों ने बेसिन की संधि को स्वीकार करने से मना कर दिया था।
II. अंग्रेजों ने असाये (Assaye) में सिंधिया और भोंसले की संयुक्त सेनाओं को पराजित किया।
III. भोंसले सरदार द्वारा देवगाँव की संधि पर हस्ताक्षर किए

Click Here to Buy book on Amazon

iii. व्यापार और उद्योग को बढ़ावा देने के लिए स्थापित
iv. मौलूदी युग पर आधारित
(1) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(2) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(3) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(4) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

40. टीपू सुल्तान की विदेशी कूटनीति के संबंध में सही सुमेलित युग्म की पहचान कीजिए:
(1) फ्रांस में दूतावास - नेपोलियन बोनापार्ट से सहायता प्राप्त करने के लिए
(2) कुस्तुनतुनिया में दूतावास - ओटोमन खलीफा से वैधता की सनद प्राप्त करने के लिए
(3) काबुल में दूतावास - अंग्रेजों के विरुद्ध जमान शाह के साथ संधि करने के लिए
(4) उपर्युक्त सभी सही सुमेलित हैं
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

41. उस कथन की पहचान कीजिए जो टीपू सुल्तान द्वारा शुरू किए गए सैन्य और प्रशासनिक सुधारों को नहीं दर्शाता है:
(1) उन्होंने अपनी पैदल सेना को यूरोपीय पद्धति पर संगठित किया।
(2) उन्होंने राज्य के राजस्व को बढ़ाने के लिए जागीरदारी प्रथा को पूरी तरह से समाप्त कर दिया।
(3) उन्होंने आधुनिक तोपखाने के उपयोग पर प्रतिबंध लगा दिया और केवल पारंपरिक घुड़सवार सेना पर निर्भर रहे।
(4) उन्होंने सिक्का ढलाई की एक नई प्रणाली प्रारंभ की।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

42. टीपू सुल्तान ने अंग्रेजों के विरुद्ध निम्नलिखित में से किस यूरोपीय शक्ति से सक्रिय रूप से सैन्य सहायता नहीं मांगी थी?
(1) स्पेन
(2) फ्रांस
(3) ओटोमन साम्राज्य
(4) मॉरीशस में फ्रांसीसी सेना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

43. टीपू सुल्तान की आर्थिक नीतियों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उन्होंने श्रीरंगपट्टनम में 'स्वतंत्रता का वृक्ष' (Tree of Liberty) लगाया।
II. उन्होंने चंदन और काली मिर्च जैसी प्रमुख निर्यात वस्तुओं पर राज्य का एकाधिकार स्थापित करने का प्रयास किया।
III. उन्होंने रेशम कीट पालन (सेरीकल्चर) को प्रतिबंधित कर दिया था।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

44. टीपू सुल्तान के प्रशासन और आर्थिक प्रबंधन की पद्धति को आधुनिक इतिहासकारों द्वारा अक्सर किसके प्रारंभिक प्रयास के रूप में वर्णित किया जाता है?
(1) अहस्तक्षेपवादी पूंजीवाद
(2) राजकीय पूंजीवाद
(3) लोकतांत्रिक समाजवाद
(4) सामंती विकेंद्रीकरण
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

45. सूची I (आंग्ल-मैसूर युद्ध) को सूची II (तत्कालीन ब्रिटिश गवर्नर-जनरल/गवर्नर) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (आंग्ल-मैसूर युद्ध)
A. प्रथम आंग्ल-मैसूर युद्ध
B. द्वितीय आंग्ल-मैसूर युद्ध
C. तृतीय आंग्ल-मैसूर युद्ध
D. चतुर्थ आंग्ल-मैसूर युद्ध
सूची II: (तत्कालीन ब्रिटिश गवर्नर-जनरल/गवर्नर)
i. लॉर्ड कॉर्नवालिस
ii. हैरी वेरेल्स्ट
iii. लॉर्ड वेलेजली
iv. वॉरेन हेस्टिंग्स
(1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(2) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-i, B-iv, C-ii, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

46. चतुर्थ आंग्ल-मैसूर युद्ध (1799) के दौरान श्रीरंगपट्टनम पर आक्रमण का सफलतापूर्वक नेतृत्व करने वाला ब्रिटिश कमांडर कौन था?
(1) आर्थर वेलेजली
(2) हेक्टर मुनरो
(3) आयर कूट
(4) डेविड बेयर्ड
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

47. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
अभिकथन (A): लॉर्ड वेलेजली ने 1799 में टीपू सुल्तान के विरुद्ध चतुर्थ आंग्ल-मैसूर युद्ध की उद्घोषणा की थी।
कारण (R): टीपू सुल्तान ने 1798 में ब्रिटिश सहयोगी हैदराबाद के निजाम पर आक्रमण किया था।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।

Downloaded from www.pdf.tube

(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

63. पेशवा बाजीराव द्वितीय की अंतिम हार के बाद उनकी स्थिति के संबंध में निम्नलिखित कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़ें:
कथन I: उन्हें राजद्रोह के लिए अंग्रेजों द्वारा मृत्युदंड दिया गया था।
कथन II: उन्हें पेंशन देकर कानपुर के पास बिठूर में रहने के लिए भेज दिया गया था।
निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

64. ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध मराठा प्रतिरोध के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए:
(1) मराठा सरदारों ने एक एकीकृत राज्य के बजाय एक विकेंद्रीकृत परिसंघ के रूप में कार्य किया।
(2) तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध में, सभी सरदार पेशवा के अधीन सफलतापूर्वक एकजुट हुए।
(3) महादजी सिंधिया ने यूरोपीय सहायता से अपनी सेना को आधुनिक बनाने के ठोस प्रयास किए।
(4) नाना फड़नवीस 1800 में अपने निधन तक मराठा शक्ति को बनाए रखने वाले प्रमुख व्यक्ति थे।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

65. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
अभिकथन (A): लॉर्ड वेलेजली की सहायक संधि प्रणाली मुख्य रूप से भारतीय रियासतों के आंतरिक नागरिक प्रशासन में सुधार के लिए बनाई गई थी।
कारण (R): इस प्रणाली का उद्देश्य भारत से फ्रांसीसी प्रभाव को बाहर रखना और भारतीय शासकों की कीमत पर ब्रिटिश सैन्य वर्चस्व बनाए रखना था।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

66. निम्नलिखित में से कौन सा सहायक संधि (Subsidiary Alliance) प्रणाली की मुख्य विशेषता को परिभाषित करता है?
(1) भारतीय शासक अपने व्यय पर ब्रिटिश सेना के रखरखाव के लिए अपनी सेना को भंग कर देता है।
(2) भारतीय शासक को अंग्रेजों के लिए पड़ोसी शत्रु राज्यों का विलय और प्रशासन करना होगा।
(3) भारतीय शासक को उसकी स्वतंत्र विदेश नीति पर पूर्ण संप्रभुता प्रदान की जाती है।
(4) ब्रिटिश सरकार राज्य के प्रत्यक्ष दैनिक प्रशासनिक नियंत्रण को अपने हाथ में ले लेती है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

67. निम्नलिखित में से किस प्रमुख राज्य ने अपनी अंतिम पराजय तक सहायक संधि प्रणाली को स्वीकार करने से स्पष्ट रूप से मना कर दिया था?
(1) हैदराबाद राज्य
(2) अवध का राज्य
(3) मराठा परिसंघ
(4) मैसूर का राज्य
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

68. सहायक संधि प्रणाली के निम्नलिखित प्रावधानों पर विचार कीजिए:
I. सहयोगी राज्य को अपनी राजधानी में एक ब्रिटिश रेजिडेंट रखना पड़ता था।
II. राज्य ब्रिटिश अनुमति के बिना किसी भी यूरोपीय को सेवा में नियुक्त नहीं कर सकता था।
III. राज्य अन्य भारतीय शासकों के साथ संधियां करने के लिए पूरी तरह स्वतंत्र था।
IV. अंग्रेजों ने बाहरी आक्रमणों और आंतरिक विद्रोहों से राज्य की रक्षा करने का वचन दिया।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, II और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

69. भारतीय रियासतों के दृष्टिकोण से, सहायक संधि में प्रवेश करने का सबसे हानिकारक दीर्घकालिक परिणाम क्या था?
(1) शासकों को ईसाई धर्म को आधिकारिक राज्य धर्म के रूप में अपनाने का आदेश दिया गया था।
(2) राज्यों को सभी पारंपरिक कृषि पद्धतियों को पूरी तरह से समाप्त करने की आवश्यकता थी।
(3) उन्होंने राजनीतिक स्वतंत्रता और विदेशी संबंध संचालित करने का संप्रभु अधिकार खो दिया।
(4) भारतीय शासकों को तुरंत बंदी बनाकर स्थायी रूप से ब्रिटेन निर्वासित कर दिया गया।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

70. सूची I (राज्य) को सूची II (वह वर्ष जब वे सहायक संधि में सम्मिलित हुए) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (राज्य)
A. हैदराबाद
B. मैसूर
C. अवध
D. पेशवा

गए थे।
IV. सिंधिया सरदार द्वारा सुरजी-अंजनगाँव की संधि पर हस्ताक्षर किए गए थे।
V. होलकरों ने अंग्रेजों के विरुद्ध एक भी युद्ध लड़े बिना आत्मसमर्पण कर दिया।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III और IV
(2) केवल I, III, IV और V
(3) केवल II, III, IV और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

56. किस तात्कालिक घटना ने पेशवा बाजीराव द्वितीय को बेसिन भागने और 1802 में अंग्रेजों के साथ संधि करने के लिए विवश किया?
(1) पुणे के युद्ध में यशवंतराव होलकर द्वारा पेशवा और सिंधिया की पराजय।
(2) प्रतिद्वंद्वी सिंधिया गुट के एजेंटों द्वारा नाना फड़नवीस की राजनीतिक हत्या।
(3) लॉर्ड वेलेजली की सेना द्वारा पुणे पर अचानक और अकारण सैन्य आक्रमण।
(4) दक्कन भर में पिंडारी अनियमित बलों के नेतृत्व में एक व्यापक विद्रोह।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

57. बेसिन की संधि (1802) के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए:
(1) आंतरिक मामलों में आपसी गैर-हस्तक्षेप के सिद्धांत पर आधारित संधि।
(2) दीर्घकालिक क्षेत्रीय स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए मराठा सरदारों द्वारा सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत समझौता।
(3) पेशवा ने एक ब्रिटिश सहायक सेना के रखरखाव के लिए क्षेत्र अंग्रेजों को सौंपे।
(4) एक समझौता जिसने मराठा राजधानी को पुणे से बॉम्बे स्थायी रूप से स्थानांतरित कर दिया।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

58. सूची I (मराठा सरदार) को सूची II (द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध में उनकी पराजय के बाद हस्ताक्षरित संधियाँ) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (मराठा सरदार)
A. पेशवा
B. भोंसले
C. सिंधिया
D. होलकर
सूची II: (द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध में उनकी पराजय के बाद हस्ताक्षरित संधियाँ)
i. देवगाँव की संधि
ii. राजपुरघाट की संधि
iii. बेसिन की संधि
iv. सुरजी-अंजनगाँव की संधि
(1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(2) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(3) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(4) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

59. अंग्रेजों द्वारा मराठों की अंतिम पराजय का सबसे उपयुक्त कारण कौन सा है?
(1) मराठा सेनाओं ने पूरी तरह से अप्रचलित हथियारों का उपयोग किया जो ब्रिटिश तकनीक का सामना नहीं कर सके।
(2) ब्रिटिश सेना प्रत्येक महत्वपूर्ण युद्ध में संख्या की दृष्टि से मराठा सेनाओं से अधिक थी।
(3) पारंपरिक मराठा सैन्य ढांचे के भीतर घुड़सवार सेना का पूर्ण अभाव।
(4) मराठा सरदारों में एकता की कमी थी और वे एक सुसंगत राजनीतिक या सैन्य रणनीति बनाने में विफल रहे।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

60. तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध (1817-1818) निम्नलिखित में से किस समूह के विरुद्ध ब्रिटिश अभियान से निकटता से जुड़ा था?
(1) जाट
(2) पिंडारी
(3) सिख
(4) रुहेला
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

61. तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध के दौरान लड़े गए युद्धों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. पेशवा की सेना को खड़की और कोरेगाँव में पराजित किया गया था।
II. होलकर सेना को महिदपुर में पराजित किया गया था।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I
(2) केवल II
(3) I और II दोनों
(4) न तो I और न ही II
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

62. तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध का सबसे महत्वपूर्ण राजनीतिक परिणाम निम्नलिखित में से कौन सा था?
(1) मराठा साम्राज्य एक अधिक शक्तिशाली पेशवा के अधीन एकीकृत हो गया।
(2) मराठों को ईस्ट इंडिया कंपनी को 'चौथ' देने के लिए विवश किया गया।
(3) अंग्रेजों ने सभी मराठा क्षेत्रों को उनके संबंधित सरदारों को वापस कर दिया।
(4) पेशवा के पद को स्थायी रूप से समाप्त कर दिया गया।

Click Here to Buy book on Amazon

10. (1) रॉबर्ट क्लाइव
रॉबर्ट क्लाइव ने 1757 में प्लासी के युद्ध के दौरान ब्रिटिश सेना का सफल नेतृत्व किया था। उनकी रणनीतिक कूटनीति और नवाब के सेनापतियों के साथ किए गए गुप्त समझौतों ने युद्ध का परिणाम निर्धारित कर दिया। इस जीत के बाद क्लाइव को बंगाल का अधिपति नियुक्त किया गया और उन्हें भारत में ब्रिटिश साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक माना गया। उनकी नेतृत्व शैली ने कंपनी को व्यापारिक इकाई से राजनीतिक शक्ति में बदला।

11. (1) II, IV, I, III
बंगाल में ब्रिटिश सत्ता का क्रम ब्लैक होल घटना से आरंभ हुआ, जिसके बाद 1757 में प्लासी का युद्ध लड़ा गया। इसके पश्चात 1764 में बक्सर का युद्ध हुआ, जिसने कंपनी की सैन्य श्रेष्ठता को पूरी तरह स्थापित कर दिया। अंततः 1765 में इलाहाबाद की संधि पर हस्ताक्षर किए गए, जिसने अंग्रेजों को बंगाल, बिहार और उड़ीसा के राजस्व अधिकार प्रदान किए। यह क्रम भारत में औपनिवेशिक नियंत्रण के क्रमिक विकास को दर्शाता है।

12. (1) केवल I, II और III
बक्सर का युद्ध मेजर हेक्टर मुनरो के नेतृत्व वाली ब्रिटिश सेना और मीर कासिम, शुजाउद्दौला तथा शाह आलम द्वितीय की संयुक्त भारतीय सेना के बीच हुआ था। अंग्रेजों की जीत ने उत्तर भारत में उनकी अजेय सैन्य शक्ति को प्रमाणित किया। इस युद्ध के बाद मुगल सम्राट अंग्रेजों के पेंशनभोगी बन गए और बंगाल में द्वैध शासन की शुरुआत हुई। युद्ध के बाद मीर जाफर के उत्तराधिकारियों को औपचारिक नवाब बनाया गया।

13. (3) बक्सर ने एक संयुक्त भारतीय सेना पर ब्रिटिश सैन्य श्रेष्ठता सिद्ध की, जो प्लासी के षड्यंत्र के विपरीत थी।
प्लासी का युद्ध मुख्य रूप से विश्वासघात और षड्यंत्र के माध्यम से जीता गया था, जबकि बक्सर के युद्ध में अंग्रेजों ने अपनी वास्तविक सैन्य श्रेष्ठता का प्रदर्शन किया। बक्सर में उन्होंने तीन प्रमुख भारतीय शक्तियों के संयुक्त मोर्चे को पराजित किया, जिससे स्पष्ट हो गया कि वे अब भारत की सबसे बड़ी सैन्य शक्ति हैं। इसने कंपनी को न केवल बंगाल का शासक बनाया बल्कि उत्तर भारत में उनकी राजनीतिक धाक जमा दी।

14. (4) इसने कंपनी को बंगाल, बिहार और उड़ीसा के दीवानी अधिकार प्रदान किए।
इलाहाबाद की संधि का सबसे महत्वपूर्ण परिणाम ईस्ट इंडिया कंपनी को बंगाल, बिहार और उड़ीसा के दीवानी अधिकार प्राप्त होना था। इस संधि ने कंपनी को इन क्षेत्रों से राजस्व वसूलने का कानूनी और प्रशासनिक अधिकार प्रदान किया। इसके माध्यम से ब्रिटिश सत्ता को मुगल सम्राट द्वारा औपचारिक मान्यता मिली, जिससे वे भारत के वास्तविक आर्थिक स्वामी बन गए। इसने बंगाल में द्वैध शासन की नींव को सुदृढ़ किया था।

15. (1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
इलाहाबाद की संधि के तहत शुजाउद्दौला ने कड़ा और इलाहाबाद के जिले मुगल सम्राट शाह आलम द्वितीय को सौंप दिए। साथ ही अवध के नवाब ने अंग्रेजों को युद्ध क्षतिपूर्ति के रूप में 50 लाख रुपये का भुगतान किया। मुगल सम्राट ने कंपनी को बंगाल, बिहार और उड़ीसा की दीवानी प्रदान की, जिसके बदले अंग्रेजों ने सम्राट को 26 लाख रुपये की वार्षिक पेंशन देने का वचन दिया। यह ब्रिटिश कूटनीति की सफलता थी।

16. (2) दीवानी (राजस्व) और निजामत (पुलिस और न्यायिक) कार्य।
बंगाल में द्वैध शासन प्रणाली राजस्व संग्रह के अधिकार और प्रशासनिक उत्तरदायित्व के बीच विभाजन को संदर्भित करती है। ईस्ट इंडिया कंपनी ने 'दीवानी' अधिकारों के माध्यम से राजस्व वसूली का पूर्ण नियंत्रण अपने पास रखा, जबकि कानून व्यवस्था और न्याय जैसे 'निजामत' कार्यों को नवाब के जिम्मे छोड़ दिया। इसका अर्थ था कि अंग्रेजों के पास बिना उत्तरदायित्व के शक्ति थी, जबकि नवाब के पास बिना संसाधनों के जिम्मेदारी थी।

17. (2) तीव्र कृषि विकास और किसानों की समृद्धि
द्वैध शासन के दौरान बंगाल की अर्थव्यवस्था और कृषि व्यवस्था पूरी तरह चरमरा गई थी, जिससे किसानों का अत्यधिक शोषण हुआ। इसके कारण 1770 में बंगाल में भीषण अकाल पड़ा जिसने कुल आबादी का एक तिहाई हिस्सा नष्ट कर दिया। कानून और व्यवस्था का पतन हो गया और स्थानीय कारीगरों को अपनी वस्तुएं अत्यंत कम मूल्यों पर बेचने के लिए विवश किया गया। अतः कृषि विकास या समृद्धि का दावा सर्वथा असत्य है।

18. (1) केवल I, II, III और V
रॉबर्ट क्लाइव ने 1765 में द्वैध शासन की स्थापना की थी, जिसमें कंपनी के पास वित्तीय शक्ति और नवाब के पास प्रशासनिक उत्तरदायित्व था। यह प्रणाली अत्यधिक भ्रष्टाचार और प्रशासनिक अराजकता का कारण बनी, जिससे बंगाल की जनता को भारी कष्ट झेलने पड़े। अंततः 1772 में वॉरेन हेस्टिंग्स ने इस दोषपूर्ण व्यवस्था को समाप्त कर बंगाल का प्रत्यक्ष शासन संभाला। यह प्रणाली भारतीय इतिहास में कंपनी के कुशासन का काला अध्याय है।

19. (3) नज्म-उद-दौला - द्वैध शासन की शुरुआत के समय नवाब।
नज्म-उद-दौला वह नवाब था जिसके शासनकाल में बंगाल में द्वैध शासन का आरंभ हुआ था। ऐतिहासिक तथ्यों के अनुसार रॉबर्ट क्लाइव ने इस प्रणाली को लागू किया था, न कि समाप्त। वॉरेन हेस्टिंग्स ने वास्तव में द्वैध शासन को समाप्त कर कंपनी को वास्तविक शासक बनाया था। मीर कासिम ने अपनी प्रशासनिक राजधानी को मुर्शिदाबाद से मुंगेर स्थानांतरित किया था। अतः नज्म-उद-दौला से संबंधित विकल्प ही ऐतिहासिक रूप से सटीक है।

20. (4) वॉरेन हेस्टिंग्स
वॉरेन हेस्टिंग्स ने 1772 में बंगाल में प्रचलित द्वैध शासन प्रणाली को पूरी तरह समाप्त कर दिया था। उन्होंने अनुभव किया कि यह व्यवस्था भ्रष्टाचार और प्रशासनिक विफलता का मुख्य

NODIA

सूची II: (वर्ष जब वे सहायक संधि में सम्मिलित हुए)
i. 1798
ii. 1799
iii. 1801
iv. 1802
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(4) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

71. उस कथन की पहचान कीजिए जो ईस्ट इंडिया कंपनी के लिए सहायक संधि के लाभ को नहीं दर्शाता है:
(1) इसने अंग्रेजों को भारतीय शासकों के व्यय पर एक बड़ी स्थायी सेना बनाए रखने की अनुमति दी।
(2) इसने भारत में फ्रांसीसी पुनरुत्थान के खतरे को दूर रखा।
(3) इसने अंग्रेजों को प्रमुख भारतीय राज्यों की रक्षा और विदेश मामलों पर रणनीतिक नियंत्रण प्रदान किया।
(4) इसने भारतीय रियासतों में शासन की गुणवत्ता और लोगों के कल्याण में महत्वपूर्ण सुधार किया।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

72. लॉर्ड डलहौजी द्वारा व्यपगत के सिद्धांत (Doctrine of Lapse) के अनुप्रयोग के अनुसार, निम्नलिखित राज्यों के विलय को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
(1) सतारा, जैतपुर, झाँसी, नागपुर
(2) जैतपुर, सतारा, नागपुर, झाँसी
(3) सतारा, झाँसी, जैतपुर, नागपुर
(4) नागपुर, सतारा, जैतपुर, झाँसी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

73. निम्नलिखित में से किस राज्य का विलय लॉर्ड डलहौजी ने व्यपगत के सिद्धांत के आधार पर नहीं, बल्कि "कुशासन" के आधार पर किया था?
(1) संबलपुर
(2) बघाट
(3) अवध
(4) उदयपुर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

74. व्यपगत के सिद्धांत (Doctrine of Lapse) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसे लॉर्ड डलहौजी द्वारा प्रतिपादित और पहली बार लागू किया गया था।
II. इसमें कहा गया था कि यदि किसी आश्रित राज्य के शासक की मृत्यु बिना किसी प्राकृतिक उत्तराधिकारी के होती है, तो वह राज्य सर्वोच्च शक्ति (अंग्रेजों) के अधिकार में चला जाएगा।
III. इसने ब्रिटिश सहमति के बिना उत्तराधिकारी गोद लेने की पारंपरिक हिंदू प्रथा को पूरी तरह से अमान्य कर दिया।
IV. अवध का विलय विशुद्ध रूप से व्यपगत के सिद्धांत के नियमों के अंतर्गत किया गया था।
V. यह 1857 के विद्रोह में योगदान देने वाली एक प्रमुख शिकायत थी।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III और V
(2) केवल II, III और V
(3) केवल I, II, IV और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

75. व्यपगत के सिद्धांत का कानूनी आधार किन दो प्रकार के राज्यों के बीच अंतर करने पर टिका था?
(1) स्थापित इस्लामी राज्यों और पारंपरिक हिंदू राज्यों के बीच कानूनी अंतर।
(2) तटीय व्यापारिक राज्यों और अंतर्देशीय राज्यों के बीच रणनीतिक अंतर।
(3) स्थायी सेना वाले राज्यों और बिना सेना वाले राज्यों की सैन्य स्थिति।
(4) संप्रभु स्वतंत्र राज्य बनाम वे आश्रित राज्य जो अंग्रेजों द्वारा बनाए गए थे या उन्हें कर देते थे।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

76. डलहौजी के विलय और दिए गए कारण के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए:
(1) सतारा - प्राकृतिक उत्तराधिकारी के बिना अप्पा साहिब की मृत्यु
(2) पंजाब - व्यपगत के सिद्धांत (Doctrine of Lapse) के माध्यम से विलय
(3) झाँसी - गंगाधर राव की मृत्यु और उनके दत्तक पुत्र की अस्वीकृति
(4) अवध - कुप्रशासन के आरोपों पर विलय
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

77. व्यपगत के सिद्धांत का प्रत्यक्ष संबंध 1857 के विद्रोह में किस प्रमुख नेता की भागीदारी में देखा जा सकता है?
(1) कुंवर सिंह
(2) बहादुर शाह जफर
(3) रानी लक्ष्मीबाई
(4) बेगम हजरत महल
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

78. सूची I (विलय किया गया क्षेत्र/राज्य) को सूची II (डलहौजी के अंतर्गत विलय की विधि/आधार) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (विलय किया गया क्षेत्र/राज्य)
A. पंजाब
B. अवध
C. सतारा
D. पेगू (निचला बर्मा)
सूची II: (डलहौजी के अंतर्गत विलय की विधि/आधार)
i. व्यपगत का सिद्धांत (Doctrine of Lapse)

Downloaded from www.pdf.tube

31. द्वितीय आंग्ल-मैसूर युद्ध के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. युद्ध तब प्रारंभ हुआ जब अंग्रेजों ने माहे पर अधिकार कर लिया।
II. हैदर अली ने पोल्लिलुर में कर्नल बेली के नेतृत्व वाली ब्रिटिश सेना को पूरी तरह से पराजित किया।
III. युद्ध के दौरान 1782 में हैदर अली की मृत्यु हो गई।
IV. युद्ध के परिणामस्वरूप अंग्रेजों की निर्णायक विजय हुई, जिन्होंने मैसूर के आधे हिस्से का विलय कर लिया।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

32. 1781 में पोर्टो नोवो के युद्ध में हैदर अली को हराने वाली ब्रिटिश सेना का नेतृत्व किसने किया था?
(1) हेक्टर मुनरो
(2) आयर कूट
(3) लॉर्ड कॉर्नवालिस
(4) आर्थर वेलेजली
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

33. द्वितीय आंग्ल-मैसूर युद्ध के दौरान लड़े गए निम्नलिखित युद्धों का सही कालानुक्रमिक क्रम चुनिए:
(1) पोल्लिलुर, पोर्टो नोवो, शोलिंगपुर
(2) पोर्टो नोवो, पोल्लिलुर, शोलिंगपुर
(3) शोलिंगपुर, पोर्टो नोवो, पोल्लिलुर
(4) पोल्लिलुर, शोलिंगपुर, पोर्टो नोवो
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

34. ऐतिहासिक घटनाओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: मंगलौर की संधि (1784) पर टीपू सुल्तान और ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा हस्ताक्षर किए गए थे।
कथन II: मंगलौर की संधि (1784) में विजित क्षेत्रों की आपसी वापसी का प्रावधान था, जो युद्ध पूर्व की स्थिति को बहाल करता था।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

35. तृतीय आंग्ल-मैसूर युद्ध (1790-1792) का तात्कालिक कारण टीपू सुल्तान का किस पर आक्रमण था?
(1) हैदराबाद के निजाम पर
(2) मराठा साम्राज्य पर
(3) त्रावणकोर के राजा पर
(4) कर्नाटक के नवाब पर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

36. तृतीय आंग्ल-मैसूर युद्ध और श्रीरंगपट्टनम की संधि के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. लॉर्ड कॉर्नवालिस ने व्यक्तिगत रुप से ब्रिटिश सेना की कमान संभाली थी।
II. मराठों और निजाम ने अंग्रेजों के विरुद्ध टीपू सुल्तान के साथ गठबंधन किया।
III. टीपू सुल्तान को अपना आधा राज्य विजेताओं को सौंपना पड़ा।
IV. टीपू पर 3 करोड़ रुपये से अधिक की भारी क्षतिपूर्ति राशि लगाई गई थी।
V. टीपू सुल्तान के दो पुत्रों को अंग्रेजों ने बंधक बना लिया था।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, III, IV और V
(2) केवल I, II, III और IV
(3) केवल II, III, IV और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

37. श्रीरंगपट्टनम की संधि के अंतर्गत टीपू सुल्तान द्वारा अंग्रेजों को निम्नलिखित में से कौन सा क्षेत्र नहीं सौंपा गया था?
(1) मालाबार
(2) डिंडीगुल
(3) श्रीरंगपट्टनम शहर
(4) बारा महल
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

38. किस ब्रिटिश गवर्नर-जनरल ने तृतीय आंग्ल-मैसूर युद्ध के बाद यह टिप्पणी की थी, "हमने अपने शत्रुओं को प्रभावी ढंग से पंगु बना दिया है और अपने मित्रों को भी बहुत शक्तिशाली नहीं होने दिया"?
(1) वॉरेन हेस्टिंग्स
(2) लॉर्ड कॉर्नवालिस
(3) लॉर्ड वेलेजली
(4) सर जॉन शोर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

39. सूची I (टीपू सुल्तान के नवाचार) को सूची II (विवरण) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (टीपू सुल्तान के नवाचार)
A. नए कैलेंडर की शुरुआत
B. जैकोबिन क्लब
C. एडमिरल्टी बोर्ड
D. वाणिज्यिक बोर्ड
सूची II: (विवरण)
i. आधुनिक नौसेना बनाने के लिए गठित
ii. फ्रांसीसी सैनिकों द्वारा श्रीरंगपट्टनम में स्थापित

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) 1600 का राजपत्र (चार्टर)
महारानी एलिजाबेथ प्रथम द्वारा 31 दिसंबर 1600 को जारी शाही राजपत्र ने व्यापारिक संघ को पूर्वी देशों के साथ व्यापार का एकाधिकार प्रदान किया। यह अधिकार आरंभ में 15 वर्षों के लिए वैध था और इसने भारत सहित दक्षिण-पूर्वी एशिया में व्यापारिक विस्तार की नींव रखी। इससे ब्रिटिश व्यापारियों को अन्य यूरोपीय शक्तियों की प्रतिस्पर्धा से सुरक्षा मिली और संगठित व्यापारिक गतिविधियों को व्यापक प्रोत्साहन प्राप्त हुआ।

2. (1) व्यापारिक विशेषाधिकार प्राप्त करना और कोठियाँ स्थापित करना
प्रारंभिक दशकों में इंग्लिश ईस्ट इंडिया कंपनी का मुख्य लक्ष्य भारतीय उपमहाद्वीप में व्यापारिक लाभ को अधिकतम करना था। वे स्थानीय शासकों से विशेष व्यापारिक रियायतें प्राप्त करने और विभिन्न तटीय क्षेत्रों में अपनी व्यापारिक कोठियाँ स्थापित करने पर केंद्रित थे। इस चरण में कंपनी का उद्देश्य साम्राज्य निर्माण या राजनीतिक विजय के स्थान पर एक कुशल व्यापारिक तंत्र विकसित करना था ताकि वे बहुमूल्य वस्तुएं भेज सकें।

3. (3) दक्षिण में पहली स्थायी अंग्रेजी कोठी मसुलीपत्तनम में स्थापित की गई थी।
दक्षिण भारत में अंग्रेजों ने अपनी प्रथम स्थायी व्यापारिक कोठी 1611 में मसुलीपत्तनम में स्थापित की थी। यह क्षेत्र उनके व्यापारिक तंत्र के लिए रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण था। यद्यपि उन्होंने बाद में मद्रास में अपनी स्थिति सुदृढ़ की, किंतु मसुलीपत्तनम ने दक्षिण में कंपनी की प्रारंभिक उपस्थिति दर्ज की। यह कोठी कोरोमंडल तट पर ब्रिटिश व्यापारिक गतिविधियों का केंद्र बनी और भविष्य के प्रशासनिक विस्तार का मुख्य आधार सिद्ध हुई।

4. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
सर थॉमस रो ने जहाँगीर के दरबार में ब्रिटिश राजदूत के रूप में कार्य किया था। जॉब चारनॉक को कलकत्ता में अंग्रेजी बस्ती की नींव रखने का श्रेय दिया जाता है। फ्रांस्वा मार्टिन पांडिचेरी में फ्रांसीसी बस्ती के संस्थापक थे, जबकि गेराल्ड औंगियर ने बॉम्बे के अधिपति के रूप में शहर की किलेबंदी और आधुनिक प्रशासन की शुरुआत की थी। ये सभी व्यक्ति भारत में यूरोपीय शक्तियों के विकास में सहायक रहे थे।

5. (3) बॉम्बे ने सूरत की तुलना में एक बेहतर प्राकृतिक बंदरगाह और अधिक सुरक्षा प्रदान की।
व्यापारिक संघ ने 1687 में अपना पश्चिमी तट का मुख्यालय सूरत से बॉम्बे स्थानांतरित कर दिया क्योंकि बॉम्बे एक उत्कृष्ट प्राकृतिक बंदरगाह था। सूरत में मराठा छापों और मुगल अधिकारियों के हस्तक्षेप के कारण असुरक्षा बढ़ गई थी। बॉम्बे की रणनीतिक स्थिति और इसकी किलेबंदी ने अंग्रेजों को समुद्री व्यापार पर बेहतर नियंत्रण और सुरक्षा प्रदान की। इस स्थानांतरण ने बॉम्बे को भारत में ब्रिटिश नौसैनिक शक्ति का केंद्र बनाया।

6. (2) कंपनी के अधिकारियों द्वारा निजी व्यापार के लिए व्यापार पास (दस्तक) का दुरुपयोग।
प्लासी के युद्ध से पूर्व नवाब सिराजुद्दौला और ईस्ट इंडिया कंपनी के बीच विवाद का मुख्य कारण अधिकारियों द्वारा 'दस्तक' का दुरुपयोग था। यह व्यापार पास केवल संघ के आधिकारिक व्यापार के लिए था, किंतु कर्मचारी इसका उपयोग निजी व्यापार हेतु कर रहे थे, जिससे राज्य को भारी राजस्व हानि हो रही थी। इसके अतिरिक्त, बिना अनुमति के कलकत्ता की किलेबंदी ने नवाब की संप्रभुता को सीधे चुनौती दी थी।

7. (3) केवल I और III
ब्लैक होल घटना ने अंग्रेजों को बंगाल के नवाब के विरुद्ध आक्रामक रुख अपनाने का भावनात्मक और नैतिक आधार दिया था। युद्ध से पूर्व रॉबर्ट क्लाइव और सिराजुद्दौला के बीच अलीनगर की संधि हुई थी, जिसमें नवाब ने अंग्रेजों के विशेषाधिकार बहाल किए थे। यद्यपि मीर जाफर सेनापति था, किंतु उसने युद्ध में विश्वासघात किया और अंग्रेजों की सहायता की, जिससे नवाब की सेना सक्रिय रूप से नहीं लड़ी।

8. (1) मुगल सम्राट ने युद्ध के तुरंत बाद कंपनी को बंगाल के दीवानी अधिकार प्रदान कर दिए थे।
प्लासी के युद्ध के तुरंत बाद मुगल सम्राट ने कंपनी को दीवानी अधिकार नहीं दिए थे। यह अधिकार 1765 में बक्सर के युद्ध के पश्चात इलाहाबाद की संधि से प्राप्त हुए थे। प्लासी के परिणाम स्वरूप मीर जाफर को नवाब बनाया गया और कंपनी ने 24 परगना क्षेत्र की जमींदारी प्राप्त की। इस विजय ने बंगाल में ब्रिटिश राजनीतिक वर्चस्व की नींव रखी और कंपनी हेतु भारतीय संसाधनों के दोहन का मार्ग प्रशस्त किया।

9. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
प्लासी का युद्ध एक बड़े सैन्य मुकाबले के स्थान पर गुप्त षड्यंत्रों और विश्वासघात का परिणाम था। रॉबर्ट क्लाइव ने मीर जाफर और अन्य प्रमुख दरबारियों के साथ मिलकर नवाब के विरुद्ध गठबंधन बनाया था। इस कारण नवाब की विशाल सेना का बड़ा हिस्सा युद्ध में सक्रिय नहीं हुआ। यद्यपि सैन्य रूप से यह नगण्य था, किंतु राजनीतिक रूप से इसने भारत में ब्रिटिश साम्राज्य विस्तार हेतु बंगाल का द्वार खोल दिया।

Click Here to Buy book on Amazon

ii. युद्ध के बाद विजय
iii. कुशासन का आधार
iv. द्वितीय आंग्ल-बर्मी युद्ध के बाद विजय
(1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

79. व्यपगत के सिद्धांत के अनुप्रयोग के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए:
(1) इस सिद्धांत का उपयोग पेशवा और कर्नाटक के नवाब की राजकीय उपाधियों और पेंशन को समाप्त करने के लिए किया गया था।
(2) लंदन में कोर्ट ऑफ डायरेक्टर्स ने सार्वभौमिक रूप से डलहौजी की नीति की निंदा की और सभी व्यपगत राज्यों की बहाली का आदेश दिया।
(3) डलहौजी ने इस सिद्धांत को सभी राज्यों पर समान रूप से लागू किया, चाहे उनकी स्थिति आश्रित हो या स्वतंत्र सहयोगी।
(4) इस सिद्धांत को प्राचीन हिंदू धर्मग्रंथों और परंपराओं द्वारा स्पष्ट रूप से समर्थन दिया गया था।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

80. लॉर्ड डलहौजी द्वारा व्यपगत के सिद्धांत के कठोर अनुप्रयोग के पीछे सबसे उपयुक्त साम्राज्यवादी उद्देश्य क्या था?
(1) पारंपरिक राज्यों में पश्चिमी शैक्षिक प्रणाली और सामाजिक सुधारों को लागू करना।
(2) प्रशासनिक नियंत्रण, व्यापार और रेलवे विस्तार के लिए क्षेत्रों को एकीकृत करना।
(3) सामंती नेतृत्व को हटाकर भारतीय क्षेत्रों को स्वशासन के लिए तैयार करना।
(4) उन भारतीय शासकों को दंडित करना जिन्होंने गुप्त रूप से रूसी साम्राज्य के साथ सहयोग किया था।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

कारण थी। हेस्टिंग्स ने राजस्व वसूली का कार्य सीधे कंपनी के अधिकारियों को सौंप दिया और कलकत्ता को मुख्य प्रशासनिक केंद्र बनाया। उनके इस कदम ने बंगाल में कंपनी के प्रत्यक्ष शासन की नींव रखी और राजस्व प्रशासन में महत्वपूर्ण सुधार किए।

21. (3) उन्होंने फ्रांसीसी विशेषज्ञों की सहायता से डिंडीगुल में एक आधुनिक शस्त्रागार स्थापित किया।
हैदर अली ने अपनी सैन्य शक्ति को सुदृढ़ करने के लिए फ्रांसीसी विशेषज्ञों की तकनीकी सहायता से 1755 में डिंडीगुल में एक आधुनिक शस्त्रागार स्थापित किया। यह उनके द्वारा उठाया गया एक क्रांतिकारी कदम था जिसने मैसूर की सेना को यूरोपीय पद्धति पर तैयार करने में सहायता की। इस शस्त्रागार के माध्यम से उन्होंने उन्नत हथियारों का निर्माण सुनिश्चित किया, जिससे वे अपने प्रतिद्वंद्वियों और ब्रिटिश सेना का प्रभावी सामना कर सके।

22. (1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
नंजराज मैसूर के शक्तिशाली प्रधान थे जिन्होंने हैदर अली के उदय से पूर्व राज्य के प्रशासन को नियंत्रित किया था। चिक्का कृष्णराज वाडियार उस समय मैसूर के नाममात्र के शासक थे। हैदर अली ने अपनी योग्यता से सेनापति के पद से उठकर मैसूर का वास्तविक शासन संभाला। मराठा पेशवा माधवराव ने हैदर अली की बढ़ती शक्ति को नियंत्रित करने के लिए उन पर कई बार आक्रमण किए और उन्हें संधि हेतु विवश किया।

23. (4) अवध
हैदर अली ने अपने क्षेत्रीय विस्तार के दौरान मुख्य रूप से दक्षिण भारत के निकटवर्ती क्षेत्रों जैसे मालाबार, सिरा और बिदनूर पर ध्यान केंद्रित किया था। इन क्षेत्रों की विजय ने उनके संसाधनों और राजस्व में भारी वृद्धि की। अवध का राज्य उत्तर भारत में स्थित था, जो मैसूर की भौगोलिक सीमाओं से अत्यंत दूर था, इसलिए वह हैदर अली के क्षेत्रीय विस्तार का लक्ष्य कभी नहीं रहा। उनका संघर्ष दक्षिण में ही सीमित था।

24. (1) हैदर अली ने मराठों को पारंपरिक 'चौथ' देने से मना कर दिया था।
हैदर अली के विरुद्ध मराठों के सैन्य अभियानों का प्राथमिक कारण मैसूर द्वारा पारंपरिक 'चौथ' कर का भुगतान न करना था। मराठा पेशवा माधवराव ने हैदर अली की क्षेत्रीय महत्वाकांक्षाओं को चुनौती दी और उसे अपनी संप्रभुता स्वीकार करने हेतु विवश किया। 1764 से 1771 के मध्य हुए इन हमलों ने हैदर अली को भारी वित्तीय क्षति पहुँचाई। यह संघर्ष दक्षिण भारत में क्षेत्रीय और राजनीतिक वर्चस्व की लड़ाई का एक प्रमुख हिस्सा था।

25. (1) केवल I और II
प्रथम आंग्ल-मैसूर युद्ध के आरंभ में अंग्रेजों ने हैदर अली को घेरने के लिए हैदराबाद के निजाम और मराठों के साथ त्रिदलीय गठबंधन बनाया था। किंतु हैदर अली ने अपनी कूटनीतिक चतुरता से मराठों को धन देकर और निजाम को क्षेत्रीय लाभ का लालच देकर अपनी ओर कर लिया। इस प्रकार उन्होंने ब्रिटिश गठबंधन को तोड़ दिया। युद्ध का अंत अंग्रेजों की पराजय के साथ मद्रास की संधि के रूप में हुआ, न कि श्रीरंगपट्टनम की संधि से।

26. (1) मद्रास की संधि
प्रथम आंग्ल-मैसूर युद्ध का समापन 1769 में हस्ताक्षरित मद्रास की संधि के साथ हुआ। यह संधि हैदर अली की सैन्य और कूटनीतिक विजय का परिणाम थी, क्योंकि उन्होंने अपनी सेना को मद्रास के निकट पहुँचा दिया था। इस संधि ने युद्ध के दौरान जीते गए क्षेत्रों की वापसी सुनिश्चित की और दोनों पक्षों के मध्य शांति स्थापित की। यह प्रथम अवसर था जब किसी भारतीय शक्ति ने ब्रिटिश कंपनी को अपनी शर्तों पर संधि हेतु विवश किया।

27. (4) एक पारस्परिक रक्षा समझौता जिसमें अंग्रेजों ने किसी तीसरी शक्ति द्वारा आक्रमण किए जाने पर मैसूर की सहायता करने का वचन दिया।
मद्रास की संधि का सबसे महत्वपूर्ण प्रावधान एक पारस्परिक रक्षा समझौता था। इसके अंतर्गत अंग्रेजों और हैदर अली ने यह वचन दिया कि यदि किसी तीसरी शक्ति द्वारा उन पर आक्रमण किया जाता है, तो वे एक-दूसरे की सैन्य सहायता करेंगे। यह समझौता हैदर अली की सुरक्षा हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण था, किंतु बाद में अंग्रेजों ने 1771 में मराठा आक्रमण के समय इस वचन का पालन नहीं किया, जिससे भविष्य के संघर्ष उत्पन्न हुए।

28. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
मद्रास की संधि को ईस्ट इंडिया कंपनी के लिए अपमानजनक माना जाता है क्योंकि हैदर अली ने अपनी विजयी सेना को मद्रास तक पहुँचाकर कंपनी को भयभीत कर दिया था। विवश होकर अंग्रेजों को हैदर अली द्वारा निर्धारित कठोर शर्तों को स्वीकार करना पड़ा। इस संधि ने दक्षिण भारत में अंग्रेजों की अजेयता के भ्रम को पूरी तरह तोड़ दिया। यह हार ब्रिटिश प्रतिष्ठा हेतु बड़ा धक्का थी और उनकी सैन्य दुर्बलता को उजागर करती थी।

NODIA

29. (3) जब 1771 में मराठों ने मैसूर पर आक्रमण किया, तो अंग्रेजों ने रक्षात्मक उपबंध का कड़ाई से पालन किया।
प्रथम आंग्ल-मैसूर युद्ध के पश्चात, जब 1771 में मराठों ने मैसूर पर आक्रमण किया, तो अंग्रेजों ने मद्रास की संधि के रक्षात्मक उपबंध का पालन नहीं किया और सहायता देने से इनकार कर दिया। इस विश्वासघात ने हैदर अली को अंग्रेजों का कट्टर शत्रु बना दिया और उन्होंने भविष्य की सुरक्षा हेतु फ्रांसीसियों के साथ संबंध सुदृढ़ किए। यह घटना द्वितीय आंग्ल-मैसूर युद्ध की पृष्ठभूमि तैयार करने में एक निर्णायक कारक सिद्ध हुई।

30. (4) अंग्रेजों द्वारा माहे के फ्रांसीसी बंदरगाह पर अधिकार करना, जो हैदर अली के संरक्षण में था।
द्वितीय आंग्ल-मैसूर युद्ध का तात्कालिक कारण अंग्रेजों द्वारा माहे के फ्रांसीसी बंदरगाह पर अधिकार करना था। माहे हैदर अली के संरक्षण में था और उनकी सैन्य रसद की आपूर्ति का मुख्य केंद्र था। अंग्रेजों की इस कार्रवाई को हैदर अली ने अपनी संप्रभुता का उल्लंघन माना। इस उत्तेजना के कारण उन्होंने निजाम और मराठों के साथ मिलकर अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध का

16. महाराजा रणजीत सिंह की मृत्यु के बाद राजनीतिक अस्थिरता की अवधि के दौरान निम्नलिखित में से कौन लाहौर के सिंहासन पर आसीन नहीं हुआ था?
(1) खड़क सिंह
(2) गुलाब सिंह
(3) नौ निहाल सिंह
(4) शेर सिंह
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

17. महाराजा रणजीत सिंह की मृत्यु के बाद लाहौर के सिंहासन के उत्तराधिकार का सही कालानुक्रमिक क्रम चुनिए:
(1) नौ निहाल सिंह, खड़क सिंह, शेर सिंह, दलीप सिंह
(2) खड़क सिंह, नौ निहाल सिंह, शेर सिंह, दलीप सिंह
(3) खड़क सिंह, शेर सिंह, नौ निहाल सिंह, दलीप सिंह
(4) शेर सिंह, खड़क सिंह, दलीप सिंह, नौ निहाल सिंह
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

18. महाराजा रणजीत सिंह की मृत्यु के बाद, खालसा सेना की भूमिका राजनीतिक रूप से किस प्रकार परिवर्तित हुई?
(1) एक 'किंगमेकर' (शासक निर्माता) के रूप में इसका विकास हुआ, जिसने केंद्र सरकार को अपनी शर्तें मानने के लिए विवश करने हेतु सैन्य पंचायतों का उपयोग किया।
(2) लाहौर दरबार में स्थायी रूप से तैनात ब्रिटिश रेजिडेंट के अधिकार के प्रति इसका पूर्ण समर्पण।
(3) इसका स्वेच्छा से विघटन और इसके सैनिकों का पंजाब के ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि कार्यों के लिए वापस लौटना।
(4) उत्तर-पश्चिमी सीमावर्ती क्षेत्रों के लिए रक्षात्मक आवरण प्रदान करने हेतु अफगान सेनाओं के साथ इसका एकीकरण।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

19. पंजाब में 1839 और 1845 के बीच की घटनाओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. खड़क सिंह को पदच्युत कर दिया गया और बाद में उनकी हत्या कर दी गई।
II. नौ निहाल सिंह की उनके पिता के अंतिम संस्कार के तुरंत बाद संदिग्ध परिस्थितियों में मृत्यु हो गई।
III. रानी जिंदाँ ने अपने अल्पवयस्क पुत्र दलीप सिंह के लिए संरक्षिका (रीजेंट) की भूमिका ग्रहण की।
IV. ध्यान सिंह सहित डोगरा भाइयों ने लाहौर की दरबारी राजनीति में अत्यंत गौण भूमिका निभाई।
V. अंग्रेजों ने सतलुज सीमा पर आक्रामक सैन्य जमावड़े की नीति बनाए रखी।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I और III
(2) केवल II और V
(3) केवल IV
(4) केवल III और IV
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

20. 1839 के बाद लाहौर के दरबारी गुटों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(1) संधावालिया सरदारों और डोगरा भाइयों के बीच एक शांतिपूर्ण गठबंधन का गठन।
(2) गुटबाजी को दबाने के लिए यूरोपीय अधिकारियों द्वारा नागरिक और न्यायिक प्रशासन का पूर्ण नियंत्रण।
(3) अकालियों द्वारा राज्य के कोष पर अधिकार और उसके तुरंत बाद राजशाही का उन्मूलन।
(4) संधावालिया और डोगरा गुटों के बीच हिंसक प्रतिद्वंद्विता जिसके परिणामस्वरूप कई राजनीतिक हत्याएं हुईं।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

21. किस घटना ने सीधे तौर पर सिख सेना के भय और संदेह को बढ़ाया, जिससे अंततः प्रथम आंग्ल-सिख युद्ध का प्रारंभ हुआ?
(1) सिख क्षेत्रों के भीतर भैरोवाल की संधि पर औपचारिक हस्ताक्षर और कार्यान्वयन।
(2) आधुनिक खालसा इकाइयों द्वारा अफगान क्षेत्रों पर सफल और महत्वपूर्ण आक्रमण।
(3) 1843 में सिंध का विलय और फिरोजपुर के निकट ब्रिटिश सैनिकों का जमावड़ा।
(4) असंतुष्ट रईसों के एक समूह द्वारा लाहौर में ब्रिटिश रेजिडेंट की उच्च स्तरीय हत्या।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

22. प्रथम आंग्ल-sikh युद्ध की हस्तियों और भूमिकाओं के संबंध में सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (हस्ती)
A. रानी जिंदाँ
B. लाल सिंह
C. तेज सिंह
D. लॉर्ड हार्डिंग
सूची II: (भूमिका)
i. सिख साम्राज्य का वज़ीर
ii. सिख सेना का प्रधान सेनापति
iii. भारत का गवर्नर-जनरल
iv. सिख साम्राज्य की संरक्षिका
(1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(2) A-i, B-iv, C-iii, D-ii
(3) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(4) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

23. दिसंबर 1845 में सिख सेना द्वारा किस नदी को पार करने को अंग्रेजों ने शत्रुतापूर्ण कार्य घोषित किया, जिससे प्रथम आंग्ल-सिख युद्ध प्रारंभ हुआ?
(1) रावी
(2) चिनाब
(3) ब्यास
(4) सतलुज
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

Downloaded from www.pdf.tube

41. (3) उन्होंने आधुनिक तोपखाने के उपयोग पर प्रतिबंध लगा दिया और केवल पारंपरिक घुड़सवार सेना पर निर्भर रहे।
टीपू सुल्तान ने आधुनिक तोपखाने पर कभी प्रतिबंध नहीं लगाया, बल्कि इसे अपनी सेना का सबसे शक्तिशाली अंग बनाया। वे अपनी उन्नत रॉकेट तकनीक और तोपखाने हेतु विख्यात थे, जिसे उन्होंने यूरोपीय पद्धति पर विकसित किया था। उन्होंने जागीरदारी प्रथा को कम कर सीधे राजस्व संग्रह को प्रोत्साहन दिया और नए सिक्के जारी किए। अतः यह कहना असत्य है कि वे केवल पारंपरिक घुड़सवार सेना पर निर्भर थे या आधुनिक तकनीकों के विरोधी थे।

42. (1) स्पेन
टीपू सुल्तान ने ब्रिटिश शक्ति का सामना करने के लिए फ्रांस, तुर्की और मॉरीशस में तैनात फ्रांसीसी अधिकारियों से सक्रिय रूप से सैन्य और कूटनीतिक सहायता मांगी थी। उन्होंने इन देशों में अपने राजदूत भेजे और रणनीतिक संधियाँ करने के प्रयास किए। किंतु स्पेन उन यूरोपीय शक्तियों में सम्मिलित नहीं था जिनसे टीपू ने अंग्रेजों के विरुद्ध कोई सैन्य सहायता मांगी हो। उनका विदेशी संपर्क मुख्य रूप से उन देशों तक सीमित था जिनका भारत में हित था।

43. (1) केवल I और II
टीपू सुल्तान ने श्रीरंगपट्टनम में फ्रांसीसी क्रांति के प्रति एकजुटता दिखाने हेतु 'स्वतंत्रता का वृक्ष' लगाया था। आर्थिक रूप से उन्होंने चंदन और काली मिर्च जैसी कीमती वस्तुओं पर राज्य का एकाधिकार स्थापित किया ताकि राजस्व में वृद्धि हो सके। इसके विपरीत, उन्होंने रेशम कीट पालन (सेरीकल्चर) को प्रतिबंधित करने के स्थान पर इसे मैसूर में बड़े पैमाने पर प्रोत्साहन दिया। अतः सेरीकल्चर पर प्रतिबंध वाला कथन ऐतिहासिक रूप से पूर्णतः गलत है।

44. (2) राजकीय पूंजीवाद
आधुनिक इतिहासकारों ने टीपू सुल्तान की आर्थिक और प्रशासनिक नीतियों को प्रायः 'राजकीय पूंजीवाद' के प्रारंभिक प्रयास के रूप में वर्णित किया है। उन्होंने व्यापार और उद्योग को सीधे राज्य के नियंत्रण में लाने और उसे विकसित करने हेतु अनेक कदम उठाए। टीपू ने स्वयं को एक बड़े व्यापारी के रूप में स्थापित किया और विदेशी व्यापार हेतु अपनी कोठियाँ भी बनाईं। उनकी यह रणनीति राज्य की वित्तीय आत्मनिर्भरता सुनिश्चित करने हेतु बनाई गई थी।

45. (1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
प्रथम आंग्ल-मैसूर युद्ध के दौरान हैरी वेरेल्स्ट बंगाल के अधिपति थे। द्वितीय युद्ध के समय वॉरेन हेस्टिंग्स शासन प्रमुख थे, जिन्होंने युद्ध का संचालन किया। तृतीय आंग्ल-मैसूर युद्ध लॉर्ड कॉर्नवालिस के नेतृत्व में लड़ा गया, जिन्होंने स्वयं सैन्य कमान संभाली थी। चतुर्थ और अंतिम आंग्ल-मैसूर युद्ध लॉर्ड वेलेजली के काल में हुआ, जिसके परिणाम स्वरुप टीपू सुल्तान वीरगति को प्राप्त हुए और मैसूर पर ब्रिटिश प्रभाव पूर्णतः स्थापित हो गया।

46. (4) डेविड बेयर्ड
1799 में चतुर्थ आंग्ल-मैसूर युद्ध के दौरान श्रीरंगपट्टनम के दुर्ग पर अंतिम सफल आक्रमण का नेतृत्व जनरल डेविड बेयर्ड ने किया था। यद्यपि आर्थर वेलेजली भी इस अभियान का भाग थे, किंतु बेयर्ड ने व्यक्तिगत रूप से उस टुकड़ी की अगुवाई की जिसने दुर्ग की प्राचीर को पार किया। इस निर्णायक हमले में टीपू सुल्तान वीरतापूर्वक लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। इस विजय ने मैसूर की स्वतंत्रता को समाप्त कर उसे एक आश्रित राज्य बना दिया।

47. (3) A सही है लेकिन R गलत है।
लॉर्ड वेलेजली ने 1799 में टीपू सुल्तान के विरुद्ध युद्ध की घोषणा इसलिए की थी क्योंकि उन्हें टीपू के फ्रांसीसियों के साथ बढ़ते संबंधों पर गहरा संदेह था। वे अंग्रेजों को भारत से बाहर निकालने की टीपू की योजनाओं से भयभीत थे। किंतु यह कारण असत्य है कि टीपू ने 1798 में हैदराबाद के निजाम पर आक्रमण किया था; वास्तव में निजाम तो स्वयं अंग्रेजों का सहयोगी बनकर टीपू के विरुद्ध खड़ा था। अतः अभिकथन सत्य है किंतु कारण असत्य है।

48. (2) मराठों को उनकी सैन्य सहायता के लिए टीपू के साम्राज्य का उत्तरी आधा हिस्सा प्रदान किया गया था।
चतुर्थ आंग्ल-मैसूर युद्ध के पश्चात मराठों ने टीपू के साम्राज्य के उत्तरी हिस्से को स्वीकार करने से इनकार कर दिया था क्योंकि वे अंग्रेजों की सहायक संधि की शर्तों से सहमत नहीं थे। इसके पश्चात अंग्रेजों ने उन क्षेत्रों को स्वयं और निजाम के मध्य विभाजित कर लिया। मैसूर के मुख्य भाग पर वाडियार राजवंश के एक बालक को शासक बनाया गया और उस पर सहायक संधि थोपी गई। अंग्रेजों ने महत्वपूर्ण तटीय क्षेत्रों का प्रत्यक्ष विलय कर लिया था।

49. (2) बैरी क्लोज
टीपू सुल्तान के पतन के पश्चात जब मैसूर को वाडियार राजवंश के अधीन एक आश्रित राज्य के रूप में पुनर्गठित किया गया, तब बैरी क्लोज को वहां का प्रथम ब्रिटिश प्रतिनिधि (रेजिडेंट) नियुक्त किया गया था। प्रतिनिधि का मुख्य कार्य राज्य के आंतरिक प्रशासन की निगरानी करना और यह सुनिश्चित करना था कि नया शासक ब्रिटिश हितों के विरुद्ध कार्य न करे। यह नियुक्ति सहायक संधि प्रणाली का अनिवार्य अंग थी, जिसने मैसूर की वास्तविक स्वतंत्रता समाप्त कर दी।

50. (1) केवल I, II और III
प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध का आरंभ रघुनाथराव और बॉम्बे प्रशासन के बीच 1775 की सूरत की संधि से हुआ था। बाद में कलकत्ता परिषद ने इसे अस्वीकार कर मराठों के साथ पुरंदर की संधि की। युद्ध के दौरान बड़गाँव का सम्मेलन अंग्रेजों के लिए एक बड़ी सैन्य विफलता और अपमानजनक समझौता सिद्ध हुआ। सालबाई की संधि (1782) ने अंततः युद्ध समाप्त किया, किंतु इसमें माधवराव द्वितीय को ही वैध पेशवा के रूप में मान्यता दी गई थी।

NODIA

71. (4) इसने भारतीय रियासतों में शासन की गुणवत्ता और लोगों के कल्याण में महत्वपूर्ण सुधार किया।
सहायक संधि का उद्देश्य कभी भी भारतीय रियासतों में शासन की गुणवत्ता में सुधार या जनकल्याण नहीं था। इसके विपरीत, इस प्रणाली के कारण प्रशासन में गिरावट आई क्योंकि शासकों ने अपनी रक्षा की चिंता त्याग दी और अंग्रेजों के हस्तक्षेप ने शासन को जटिल बना दिया। कंपनी हेतु इसके मुख्य लाभ भारतीय धन से एक बड़ी सेना का निर्माण, फ्रांसीसी भय का अंत और भारतीय राज्यों की विदेश नीति पर नियंत्रण था। शासन में सुधार का दावा केवल एक आवरण मात्र था।

72. (1) सतारा, जैतपुर, झाँसी, नागपुर
लॉर्ड डलहौजी द्वारा व्यपगत के सिद्धांत (गोद निषेध नीति) के तहत राज्यों के विलय का सही कालक्रम 1848 में सतारा से आरंभ होता है। इसके पश्चात 1849 में जैतपुर और संबलपुर का विलय किया गया। 1853 में झाँसी और 1854 में नागपुर को इसी आधार पर ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया गया कि उनके शासकों का कोई प्राकृतिक उत्तराधिकारी नहीं था। यह क्रमिक विलय डलहौजी की विस्तारवादी नीति का अंग था, जिसने अनेक पारंपरिक भारतीय राजवंशों को समाप्त कर दिया।

73. (3) अवध
लॉर्ड डलहौजी ने 1856 में अवध का विलय व्यपगत के सिद्धांत के आधार पर नहीं किया था, क्योंकि वहां के नवाब वाजिद अली शाह के उत्तराधिकारी उपस्थित थे। इसके स्थान पर, अंग्रेजों ने "कुशासन" और प्रशासनिक विफलता का आरोप लगाकर इस समृद्ध राज्य को अपने अधिकार में ले लिया। यह कार्रवाई भारतीय रियासतों के मध्य अत्यंत अलोकप्रिय सिद्ध हुई और इसे एक बड़े विश्वासघात के रूप में देखा गया। अवध का यह अन्यायपूर्ण विलय 1857 के महान विद्रोह के प्रमुख कारणों में से एक बना।

74. (2) केवल II, III और V
व्यपगत का सिद्धांत उन आश्रित राज्यों पर लागू होता था जिनके शासकों की मृत्यु बिना किसी प्राकृतिक वारिस के होती थी। डलहौजी ने इस नीति का उपयोग दत्तक पुत्रों के उत्तराधिकार के अधिकार को अस्वीकार करने हेतु किया। यद्यपि अवध का विलय इस सिद्धांत के तहत नहीं बल्कि कुशासन के आधार पर हुआ था। यह नीति भारतीय शासकों के मध्य भारी असंतोष का कारण बनी और 1857 के विद्रोह की ज्वाला भड़काने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, क्योंकि इसने पारंपरिक नियमों को चुनौती दी थी।

75. (4) संप्रभु स्वतंत्र राज्य बनाम वे आश्रित राज्य जो अंग्रेजों द्वारा बनाए गए थे या उन्हें कर देते थे।
व्यपगत के सिद्धांत का कानूनी तर्क इस बात पर आधारित था कि अंग्रेजों ने राज्यों को श्रेणियों में विभाजित किया था। यह सिद्धांत विशेष रूप से उन 'आश्रित' राज्यों पर लागू किया गया जिन्हें अंग्रेजों ने स्वयं निर्मित किया था या जो अंग्रेजों को कर देते थे। डलहौजी का तर्क था कि सर्वोच्च शक्ति होने के नाते अंग्रेजों को ऐसे राज्यों के उत्तराधिकार को स्वीकृति देने या उन्हें अपने साम्राज्य में मिलाने का पूर्ण अधिकार है। यह संप्रभु और आश्रित राज्यों के मध्य एक मनमाना भेद था।

76. (2) पंजाब - व्यपगत के सिद्धांत (Doctrine of Lapse) के माध्यम से विलय
पंजाब का विलय लॉर्ड डलहौजी ने व्यपगत के सिद्धांत के माध्यम से नहीं, बल्कि द्वितीय आंग्ल-सिख युद्ध (1849) में सैन्य विजय के पश्चात किया था। सतारा, झाँसी और नागपुर जैसे राज्यों का विलय वास्तव में बिना उत्तराधिकारी के शासकों की मृत्यु के कारण इस सिद्धांत के तहत हुआ था। पंजाब का प्रकरण एक संप्रभु राज्य पर सीधे आक्रमण और युद्ध द्वारा अधिग्रहण का था। अतः पंजाब के संबंध में दिया गया विवरण ऐतिहासिक तथ्यों के अनुसार पूर्णतः त्रुटिपूर्ण और भ्रामक है।

77. (3) रानी लक्ष्मीबाई
व्यपगत के सिद्धांत का सीधा प्रभाव झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई पर पड़ा, क्योंकि डलहौजी ने उनके दत्तक पुत्र को वैध उत्तराधिकारी मानने से इनकार कर दिया और 1853 में झाँसी का विलय कर लिया। इस अन्याय के कारण रानी लक्ष्मीबाई 1857 के विद्रोह की एक प्रमुख नेत्री बनीं और उन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध वीरतापूर्वक संघर्ष किया। उनकी भागीदारी स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि कैसे डलहौजी की साम्राज्यवादी नीतियों ने भारतीय शासकों को सशस्त्र विद्रोह के मार्ग पर चलने हेतु विवश किया था।

78. (1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
लॉर्ड डलहौजी ने विभिन्न क्षेत्रों को अलग-अलग विधियों से ब्रिटिश साम्राज्य में मिलाया। पंजाब को 1849 में युद्ध में विजय के पश्चात अधिग्रहित किया गया। अवध का विलय 1856 में कुशासन के आरोपों के आधार पर हुआ। सतारा को 1848 में व्यपगत के सिद्धांत के तहत मिलाया गया, जबकि निचला बर्मा (पेगू) द्वितीय आंग्ल-बर्मी युद्ध में जीत के पश्चात ब्रिटिश नियंत्रण में आया। ये विधियां डलहौजी की उस आक्रामक नीति को दर्शाती हैं जिसका उद्देश्य ब्रिटिश प्रशासन को सुदृढ़ करना था।

79. (1) इस सिद्धांत का उपयोग पेशवा और कर्नाटक के नवाब की राजकीय उपाधियों और पेंशन को समाप्त करने के लिए किया गया था।
व्यपगत के सिद्धांत का विस्तार केवल राज्यों के विलय तक सीमित नहीं था, बल्कि इसका उपयोग पेशवा और कर्नाटक के नवाब जैसी राजकीय उपाधियों और पेंशनों को समाप्त करने हेतु भी किया गया। डलहौजी का मानना था कि इन पुरानी संस्थाओं को बनाए रखना अनावश्यक वित्तीय बोझ है। यद्यपि यह सिद्धांत पारंपरिक भारतीय रीति-रिवाजों के विरुद्ध था, फिर भी इसे शक्ति के बल पर लागू किया गया। ब्रिटिश अधिकारियों ने इन नीतियों का समर्थन किया क्योंकि इससे साम्राज्य का राजस्व बढ़ा था।

Click Here to Buy book on Amazon

61. (3) I और II दोनों
तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध के दौरान निर्णायक संघर्ष हुए जिनमें मराठा सेनाओं को भारी हार का सामना करना पड़ा। पेशवा बाजीराव द्वितीय की सेना को खड़की और कोरेगाँव के युद्धों में अंग्रेजों ने पराजित किया। इसी प्रकार, होलकर की सेना को महिदपुर के युद्ध में भारी शिकस्त मिली। इन पराजयों ने यह स्पष्ट कर दिया कि मराठा अब ब्रिटिश सैन्य शक्ति का सामना करने में सक्षम नहीं हैं। इन युद्धों के पश्चात सभी प्रमुख मराठा सरदारों ने आत्मसमर्पण कर ब्रिटिश सर्वोच्चता स्वीकार कर ली।

62. (4) पेशवा के पद को स्थायी रूप से समाप्त कर दिया गया।
तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध का सर्वाधिक दूरगामी राजनीतिक परिणाम पेशवा के पद को स्थायी रूप से समाप्त करना था। अंग्रेजों ने पेशवा के समस्त क्षेत्रों का बॉम्बे प्रेसीडेंसी में विलय कर लिया और बाजीराव द्वितीय को कानपुर के निकट बिठूर भेज दिया। इस कार्रवाई ने मराठा परिसंघ के प्रमुख को हटाकर उनकी शक्ति को पूरी तरह नष्ट कर दिया। इसके साथ ही भारत में ब्रिटिश सर्वोच्चता निर्विवाद रूप से स्थापित हो गई और कोई बड़ी चुनौती देने वाली भारतीय शक्ति शेष नहीं रही।

63. (4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
अपनी अंतिम पराजय के पश्चात पेशवा बाजीराव द्वितीय ने अंग्रेजों के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया था। अंग्रेजों ने उन्हें उनके पद से च्युत कर एक वार्षिक पेंशन दी और महाराष्ट्र से दूर उत्तर भारत में कानपुर के निकट बिठूर नामक स्थान पर रहने हेतु निर्वासित कर दिया। उन्हें किसी भी राजनीतिक गतिविधि में भाग लेने से पूर्णतः प्रतिबंधित कर दिया गया था। यह कदम मराठा प्रभाव को उनके मूल क्षेत्र से समाप्त करने और भविष्य के किसी भी विद्रोह की संभावना को रोकने हेतु उठाया गया था।

64. (2) तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध में, सभी सरदार पेशवा के अधीन सफलतापूर्वक एकजुट हुए।
तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध के दौरान भी सभी मराठा सरदार पेशवा के नेतृत्व में पूर्णतः एकजुट होने में विफल रहे थे। यद्यपि पेशवा, भोंसले और होलकर ने पृथक समय पर अंग्रेजों को चुनौती दी, किंतु उनके मध्य कोई ठोस समन्वय या संयुक्त सैन्य योजना नहीं थी। गायकवाड़ और सिंधिया जैसे महत्वपूर्ण सरदार इस संघर्ष से पृथक रहे या अंग्रेजों के प्रति निष्ठावान बने रहे। अतः यह कहना असत्य है कि वे सफलतापूर्वक एकजुट हुए थे, और इसी फूट ने उनकी पराजय सुनिश्चित की।

65. (4) A गलत है लेकिन R सही है।
लॉर्ड वेलेजली की सहायक संधि प्रणाली का वास्तविक उद्देश्य भारतीय रियासतों में सुधार करना नहीं था, बल्कि भारत में ब्रिटिश साम्राज्य का विस्तार करना और फ्रांसीसी प्रभाव को समाप्त करना था। इस प्रणाली के माध्यम से अंग्रेजों ने भारतीय राजाओं के व्यय पर अपनी विशाल सेना निर्मित की और उन्हें रक्षा के नाम पर पूरी तरह पंगु बना दिया। अतः अभिकथन गलत है क्योंकि यह एक साम्राज्यवादी नीति थी, जबकि कारण सत्य है क्योंकि इसका उद्देश्य ब्रिटिश सैन्य वर्चस्व स्थापित करना था।

66. (1) भारतीय शासक अपने व्यय पर ब्रिटिश सेना के रखरखाव के लिए अपनी सेना को भंग कर देता है।
सहायक संधि की एक मुख्य विशेषता यह थी कि संधि करने वाले भारतीय शासक को अपनी पारंपरिक सेना को भंग करना पड़ता था। इसके स्थान पर उसे अपने राज्य की रक्षा हेतु ब्रिटिश सेना की एक टुकड़ी को बनाए रखना पड़ता था, जिसका संपूर्ण व्यय शासक को नकद या अपने क्षेत्र के एक भाग के रूप में देना होता था। इस व्यवस्था ने भारतीय राज्यों को अपनी सैन्य शक्ति से वंचित कर दिया और उन्हें सुरक्षा हेतु पूर्णतः अंग्रेजों पर निर्भर बना दिया था।

NODIA

67. (3) मराठा परिसंघ
हैदराबाद, अवध और मैसूर जैसे राज्यों ने विभिन्न परिस्थितियों में सहायक संधि को स्वीकार कर लिया था, किंतु मराठा परिसंघ के प्रमुख सरदारों ने अपनी अंतिम पराजय तक इसे पूर्णतः अपनाने से निरंतर इनकार किया। यद्यपि पेशवा ने 1802 में बेसिन की संधि के तहत इसे स्वीकार किया था, किंतु सिंधिया, होलकर और भोंसले ने अपनी स्वतंत्रता बनाए रखने हेतु अंग्रेजों के विरुद्ध लंबा संघर्ष किया। मराठों का यह कड़ा प्रतिरोध ही ब्रिटिश विस्तार हेतु सबसे बड़ी चुनौती सिद्ध हुआ था।

68. (2) केवल I, II और IV
सहायक संधि के अंतर्गत सहयोगी राज्य को अपनी राजधानी में एक ब्रिटिश प्रतिनिधि (रेजिडेंट) रखना अनिवार्य था। शासक किसी भी अन्य यूरोपीय को अंग्रेजों की अनुमति के बिना सेवा में नियुक्त नहीं कर सकता था। इसके बदले अंग्रेजों ने बाहरी आक्रमणों और आंतरिक अशांति से राज्य की रक्षा का वचन दिया। यद्यपि राज्य अन्य शासकों के साथ स्वतंत्र रूप से संधियाँ करने का अधिकार खो देता था, जिससे उसकी संप्रभुता समाप्त हो जाती थी। यह कंपनी के नियंत्रण का एक प्रभावी उपकरण था।

69. (3) उन्होंने राजनीतिक स्वतंत्रता और विदेशी संबंध संचालित करने का संप्रभु अधिकार खो दिया।
भारतीय रियासतों हेतु सहायक संधि का सबसे विनाशकारी परिणाम उनकी राजनीतिक स्वतंत्रता और संप्रभुता का लोप था। इस संधि पर हस्ताक्षर करने के पश्चात वे अपनी इच्छा से न तो किसी के साथ युद्ध कर सकते थे और न ही किसी विदेशी शक्ति से संबंध रख सकते थे। वे अपने ही राज्य में अंग्रेजों के एक प्रकार के 'उप-शासक' बनकर रह गए। प्रतिनिधि का हस्तक्षेप और भारी सैन्य व्यय ने इन राज्यों को आर्थिक रूप से निर्बल और प्रशासनिक रूप से पंगु बना दिया था।

70. (1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
सहायक संधि प्रणाली को अपनाने वाले राज्यों का सही कालक्रम भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण है। हैदराबाद का निजाम 1798 में इस संधि में सम्मिलित होने वाला प्रथम शासक था। इसके पश्चात 1799 में टीपू सुल्तान की पराजय के पश्चात मैसूर पर इसे थोपा गया। 1801 में अवध के नवाब ने और 1802 में पेशवा बाजीराव द्वितीय ने बेसिन की संधि के माध्यम से इसे स्वीकार किया। यह क्रम दर्शाता है कि कैसे अंग्रेजों ने सुव्यवस्थित ढंग से भारतीय राज्यों को अपने नियंत्रण में लिया।

51. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, और II, I की व्याख्या करता है।
प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध का मूल कारण पेशवा नारायणराव की हत्या के पश्चात पुणे दरबार में उत्पन्न उत्तराधिकार का संकट था। उनके चाचा रघुनाथराव ने पेशवा बनने की अपनी व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा हेतु अंग्रेजों से सैन्य सहायता मांगी, जिससे अंग्रेजों को मराठा राजनीति में सीधा हस्तक्षेप करने का अवसर प्राप्त हो गया। इस कारण कंपनी और मराठा परिसंघ के मध्य एक लंबा संघर्ष आरंभ हुआ। यह दर्शाता है कि कैसे आंतरिक कलह ने विदेशी शक्ति को मार्ग दिया।

52. (4) मराठों के साथ बीस वर्षों की शांति सुनिश्चित करना, जिससे मैसूर युद्धों पर ध्यान केंद्रित करने की अनुमति मिली।
सालबाई की संधि (1782) का सर्वाधिक महत्व यह था कि इसने अंग्रेजों और मराठों के मध्य अगले बीस वर्षों हेतु शांति सुनिश्चित की। इस लंबी अवधि ने कंपनी को दक्षिण में हैदर अली और टीपू सुल्तान के विरुद्ध अपनी पूर्ण सैन्य शक्ति लगाने का अवसर प्रदान किया। यद्यपि अंग्रेजों को कोई बड़ा क्षेत्रीय लाभ नहीं हुआ, किंतु कूटनीतिक रूप से यह संधि उनके लिए बहुत लाभदायक रही क्योंकि इससे उनकी सबसे शक्तिशाली भारतीय चुनौती कुछ समय हेतु शांत हो गई।

53. (1) IV, II, I, III
मराठा युद्धों से संबंधित संधियों का सही कालक्रम 1775 की सूरत की संधि से आरंभ होता है, जिसके पश्चात 1776 में पुरंदर की संधि हुई। इसके बाद 1779 में अंग्रेजों की पराजय के पश्चात बड़गाँव का सम्मेलन हुआ। अंततः 1782 में सालबाई की संधि पर हस्ताक्षर किए गए, जिसने इस लंबे युद्ध का औपचारिक अंत किया। यह क्रम दर्शाता है कि कैसे ब्रिटिश परिषदों के मध्य मतभेद और युद्ध की परिस्थितियों ने विभिन्न कूटनीतिक समझौतों को जन्म दिया था।

54. (2) रघुनाथराव को गुजरात में एक स्वतंत्र राज्य प्रदान किया गया।
सालबाई की संधि के तहत रघुनाथराव को कोई स्वतंत्र राज्य प्रदान नहीं किया गया था, बल्कि उन्हें केवल पेंशन दी गई और राजनीति से पृथक होने हेतु विवश किया गया। संधि के मुख्य प्रावधानों में माधवराव द्वितीय को वैध पेशवा मानना, सालसेट पर अंग्रेजों का नियंत्रण बने रहना और मराठों द्वारा फ्रांसीसियों को शरण न देने का वचन सम्मिलित था। यह समझौता मराठों और अंग्रेजों के मध्य यथास्थिति बनाए रखने और आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करने पर आधारित था।

55. (1) केवल I, II, III और IV
द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध तब आरंभ हुआ जब सिंधिया और भोंसले ने बेसिन की संधि की शर्तों को मानने से इनकार कर दिया। अंग्रेजों ने असाये के युद्ध में संयुक्त मराठा सेनाओं को पराजित किया। इसके पश्चात भोंसले ने देवगाँव और सिंधिया ने सुरजी-अंजनगाँव की संधि पर हस्ताक्षर किए। होलकर ने भी बाद में युद्ध लड़ा और पराजित होने के पश्चात ही संधि की थी। अतः यह कहना गलत है कि होलकरों ने बिना लड़े आत्मसमर्पण किया। इसने मराठा एकता नष्ट कर दी।

56. (1) पुणे के युद्ध में यशवंतराव होलकर द्वारा पेशवा और सिंधिया की पराजय।
1802 में पुणे के युद्ध में यशवंतराव होलकर ने पेशवा बाजीराव द्वितीय और सिंधिया की संयुक्त सेनाओं को बुरी तरह पराजित किया था। अपनी जान बचाने हेतु पेशवा भागकर बेसिन चले गए और वहां अंग्रेजों की शरण ली। इसी हताशा में उन्होंने अंग्रेजों के साथ बेसिन की संधि की, जिसमें उन्होंने मराठा स्वतंत्रता की बलि देकर ब्रिटिश संरक्षण और सहायक संधि को स्वीकार किया। इस घटना ने मराठा परिसंघ के पतन की प्रक्रिया को अत्यंत तीव्र कर दिया था।

57. (3) पेशवा ने एक ब्रिटिश सहायक सेना के रखरखाव के लिए क्षेत्र अंग्रेजों को सौंपे।
बेसिन की संधि (1802) एक महत्वपूर्ण दस्तावेज था जिसके माध्यम से पेशवा बाजीराव द्वितीय ने आधिकारिक तौर पर ब्रिटिश सहायक संधि प्रणाली को स्वीकार किया। इसके तहत पेशवा ने ब्रिटिश सेना के व्यय हेतु अपने उपजाऊ क्षेत्रों को अंग्रेजों को सौंप दिया और अपनी स्वतंत्र विदेश नीति का त्याग कर दिया। इस संधि ने मराठा साम्राज्य के प्रमुख को अंग्रेजों का एक आश्रित बना दिया, जिससे अन्य मराठा सरदार अत्यंत रुष्ट हुए और द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध आरंभ हुआ।

58. (1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध के पश्चात विभिन्न मराठा सरदारों को अपमानजनक संधियाँ करने हेतु विवश किया गया। पेशवा ने बेसिन की संधि की, भोंसले ने देवगाँव की संधि के माध्यम से कटक जैसे क्षेत्र सौंपे, और सिंधिया ने सुरजी-अंजनगाँव की संधि के साथ गंगा-यमुना दोआब का नियंत्रण खो दिया। अंत में होलकर ने राजपुरघाट की संधि पर हस्ताक्षर किए। इन संधियों ने मराठा शक्ति को पूरी तरह पंगु बना दिया और भारत के बड़े भाग पर ब्रिटिश नियंत्रण स्थापित किया।

59. (4) मराठा सरदारों में एकता की कमी थी और वे एक सुसंगत राजनीतिक या सैन्य रणनीति बनाने में विफल रहे।
अंग्रेजों द्वारा मराठों की अंतिम पराजय का मुख्य कारण मराठा सरदारों के मध्य आपसी एकता का पूर्ण अभाव था। वे एक एकीकृत राष्ट्र के स्थान पर स्वार्थों से प्रेरित एक ढीले परिसंघ के रूप में कार्य कर रहे थे, जिससे अंग्रेज उन्हें आसानी से पराजित कर सके। इसके अतिरिक्त, मराठा नेतृत्व एक आधुनिक और सुसंगत राजनीतिक-सैन्य रणनीति विकसित करने में विफल रहा, जबकि ब्रिटिश प्रशासन संगठित और तकनीकी रूप से अधिक उन्नत था।

60. (2) पिंडारी
तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध का सीधा संबंध अंग्रेजों द्वारा पिंडारियों के विरुद्ध चलाए गए दमनकारी अभियान से था। पिंडारी अनियमित सैन्य बल थे जो पूर्व में मराठा सेनाओं की सहायता करते थे। जब लॉर्ड हेस्टिंग्स ने पिंडारियों को कुचलने के लिए सेना भेजी, तो इसे मराठा संप्रभुता पर आक्रमण माना गया। इसने पेशवा, भोंसले और होलकर को अंग्रेजों के विरुद्ध अंतिम विद्रोह हेतु प्रेरित किया। इस युद्ध ने मराठा शक्ति को पूरी तरह समाप्त कर पेशवा का पद खत्म कर दिया।

Downloaded from www.pdf.tube

80. (2) प्रशासनिक नियंत्रण, व्यापार और रेलवे विस्तार के लिए क्षेत्रों को एकीकृत करना।
लॉर्ड डलहौजी द्वारा व्यपगत के सिद्धांत को इतनी कठोरता से लागू करने के पीछे मुख्य उद्देश्य ब्रिटिश प्रशासनिक और आर्थिक नियंत्रण को सुदृढ़ करना था। वे चाहते थे कि संपूर्ण भारत में एक समान प्रशासनिक व्यवस्था हो जिससे ब्रिटिश व्यापार, माल की आवाजाही और रेलवे के विस्तार में कोई बाधा न आए। बिखरे हुए स्वतंत्र राज्यों को हटाकर सीधे ब्रिटिश शासन के अंतर्गत लाने से राजस्व वसूली सरल हो जाती थी। यह नीति पूर्णतः ब्रिटिश व्यावसायिक हितों को साधने हेतु थी।

www.nodia.in

NODIA

अध्याय 16
आंग्ल-सिख युद्ध एवं व्यपगत का सिद्धांत

1. महाराजा रणजीत सिंह निम्नलिखित में से किस मिसल से संबंधित थे, जिसने उनके सिख साम्राज्य के सुदृढ़ीकरण की आधारशिला रखी थी?
(1) भंगी मिसल
(2) सुकरचकिया मिसल
(3) अहलूवालिया मिसल
(4) कन्हैया मिसल
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

2. महाराजा रणजीत सिंह ने किस वर्ष भंगी मिसल से लाहौर पर अधिकार किया था, जो उनके साम्राज्य की स्थापना में एक महत्वपूर्ण कदम था?
(1) 1792
(2) 1799
(3) 1802
(4) 1809
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

3. घटनाओं और उनके संबंधित वर्षों के निम्नलिखित युग्मों में से कौन सा गलत सुमेलित है?
(1) रणजीत सिंह द्वारा अमृतसर पर अधिकार - 1802
(2) अमृतसर की संधि पर हस्ताक्षर - 1809
(3) महाराजा रणजीत सिंह की मृत्यु - 1845
(4) त्रिपक्षीय संधि पर हस्ताक्षर - 1838
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

4. महाराजा रणजीत सिंह के उत्कर्ष के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उन्होंने कूटनीति और सैन्य विजय के माध्यम से विभिन्न सिख मिसलों को सफलतापूर्वक एकीकृत किया।
II. उन्होंने सिख साम्राज्य की सीमाओं का विस्तार करने के लिए मुल्तान, कश्मीर और पेशावर पर अधिकार किया।
III. उन्होंने अपने प्रशासन और सेना में हिंदुओं और मुस्लिमों की भर्ती को कड़ाई से प्रतिबंधित किया था।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

5. पंजाब पर ज़मान शाह के आक्रमण का रणजीत सिंह के राजनीतिक जीवन पर तात्कालिक प्रभाव क्या पड़ा?
(1) एक व्यापक पराजय जिसने उन्हें निकटवर्ती पहाड़ी राज्यों में अस्थायी शरण लेने के लिए विवश किया।
(2) अफगान सेनाओं के विरुद्ध जवाबी हमला करने के लिए अंग्रेजों के साथ एक रणनीतिक सैन्य गठबंधन।
(3) ज़मान शाह की खोई हुई तोपें वापस करने के बाद उन्हें लाहौर के सूबेदार के रूप में मान्यता मिली।
(4) प्रतिद्वंद्वी भंगी मिसल के प्रमुखों के हाथों सुकरचकिया मिसल की पैतृक भूमि की पूर्ण हानि।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

6. महाराजा रणजीत सिंह के प्रशासन के संदर्भ में, 'फौज-ए-खास' शब्द किसे संदर्भित करता था?
(1) निहंगों और अकालियों की अनियमित घुड़सवार सेना।
(2) खालसा सेना की विशिष्ट, यूरोपीय पद्धति से प्रशिक्षित नियमित ब्रिगेड।
(3) आंतरिक सुरक्षा के लिए नए विजित क्षेत्रों में तैनात स्थानीय पुलिस बल।
(4) प्रधानमंत्री और शाही परिवार को सौंपे गए व्यक्तिगत अंगरक्षक।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

7. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): महाराजा रणजीत सिंह की खालसा सेना एशिया की दूसरी सबसे प्रभावशाली सैन्य शक्ति बन गई थी, जो केवल ब्रिटिश भारतीय सेना के बाद थी।
कारण (R): उन्होंने अपनी पैदल सेना और घुड़सवार सेना को पश्चिमी पद्धति पर आधुनिक बनाने के लिए वेंचुरा और एलार्ड जैसे यूरोपीय कमांडरों को नियुक्त किया था।
नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

8. महाराजा रणजीत सिंह के दरबार में सेवा देने वाले निम्नलिखित यूरोपीय अधिकारियों में से भिन्न की पहचान कीजिए।
(1) चार्ल्स नेपियर
(2) जीन-बैप्टिस्ट वेंचुरा
(3) जीन-फ्रेंकोइस एलार्ड
(4) पाओलो डी एविटेबाइल

Click Here to Buy book on Amazon

(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

9. रणजीत सिंह की खालसा सेना के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. सेना को फौज-ए-आइन (नियमित सेना) और फौज-ए-बे-आइन (अनियमित सेना) में विभाजित किया गया था।
II. उन्होंने तोपों के आधुनिक निर्माण के लिए लाहौर में कारखाने स्थापित किए।
III. घुड़सवार सेना सेना की सबसे प्रभावशाली और बेहतर वेतन पाने वाली शाखा बनी रही, जिसने पैदल सेना को पूरी तरह से पीछे छोड़ दिया था।
IV. नियमित सेना के लिए मासिक नकद वेतन की शुरुआत की गई, जिसने पारंपरिक जागीर प्रणाली का स्थान लिया।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, II और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) केवल I, III और IV
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

10. महाराजा रणजीत सिंह के नागरिक प्रशासन के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) उन्होंने अपनी पूर्ण संप्रभु शक्ति प्रदर्शित करने के लिए अपने स्वयं के नाम पर सिक्के चलाए।
(2) उनकी सरकार अत्यधिक केंद्रीकृत थी लेकिन 'सरकार-ए-खालसा' के नाम पर कार्य करती थी।
(3) साम्राज्य को सूबों के नाम से जाने जाने वाले प्रांतों में विभाजित किया गया था।
(4) न्याय का प्रशासन व्यापक रूप से प्रथागत कानूनों और स्थानीय पंचायतों पर निर्भर था।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

11. निम्नलिखित ब्रिटिश अधिकारियों में से किसने ईस्ट इंडिया कंपनी की ओर से महाराजा रणजीत सिंह के साथ अमृतसर की संधि (1809) पर वार्ता की और हस्ताक्षर किए?
(1) लॉर्ड मिंटो
(2) डेविड ओक्टरलोनी
(3) विलियम बेंटिक
(4) चार्ल्स मेटकाफ
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

12. सिख साम्राज्य की घटनाओं के संबंध में सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (घटना)
A. अमृतसर की संधि
B. त्रिपक्षीय संधि
C. महाराजा रणजीत सिंह की मृत्यु
D. प्रथम आंग्ल-सिख युद्ध का प्रारंभ
सूची II: (वर्ष)
i. 1838
ii. 1809
iii. 1845
iv. 1839
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

13. अमृतसर की संधि (1809) के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: इसने सतलुज नदी को सिख साम्राज्य और ब्रिटिश क्षेत्रों के बीच की सीमा के रूप में निर्धारित किया।
कथन II: इसने रणजीत सिंह को उत्तर और पश्चिम की ओर अपने साम्राज्य का विस्तार करने से पूरी तरह से प्रतिबंधित कर दिया।
सही विकल्प चुनें:
(1) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(2) कथन I गलत है और कथन II सही है।
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

14. अमृतसर की संधि (1809) के प्रावधानों और प्रभाव के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसने एक ऐसी सीमा स्थापित की जिसने सभी सिख राज्यों को अपने अधीन एकीकृत करने की रणजीत सिंह की महत्वाकांक्षाओं पर रोक लगा दी।
II. इसने रणजीत सिंह को अपनी फ्रांसीसी-प्रशिक्षित बटालियनों को भंग करने के लिए विवश किया।
III. इसने संभावित फ्रांसीसी-रूसी खतरों से अंग्रेजों की उत्तर-पश्चिमी सीमा को सुरक्षित कर दिया।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

15. अंग्रेजों के लिए 1838 की त्रिपक्षीय संधि का सबसे उपयुक्त रणनीतिक परिणाम क्या था?
(1) रूसी प्रभाव के विरुद्ध एक प्रतिरोधक के रूप में काबुल के सिंहासन पर शाह शुजा को बैठाने हेतु समर्थन सुनिश्चित करना।
(2) बिना किसी प्रत्यक्ष सैन्य संघर्ष के अंग्रेजों को पंजाब के क्षेत्रों पर अधिकार करने की अनुमति मिलना।
(3) ईस्ट इंडिया कंपनी के नियंत्रण में खालसा सेना को एक सहायक इकाई के रूप में औपचारिक मान्यता देना।
(4) सिख साम्राज्य से ब्रिटिश अधिकारियों को कश्मीर के प्रशासन का तत्काल हस्तांतरण।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

Downloaded from www.pdf.tube

निर्णय लिया, जिससे दक्षिण भारत में एक व्यापक संघर्ष का सूत्रपात हुआ।

31. (1) केवल I, II और III
द्वितीय आंग्ल-मैसूर युद्ध 1780 में माहे पर ब्रिटिश नियंत्रण के कारण आरंभ हुआ। हैदर अली ने युद्ध के प्रारंभिक चरण में पोल्लिलुर में ब्रिटिश सेना को पराजित कर बड़ी सफलता प्राप्त की। यद्यपि युद्ध के दौरान 1782 में हैदर अली की मृत्यु हो गई, जिसके बाद टीपू सुल्तान ने कमान संभाली। यह युद्ध किसी भी पक्ष की निर्णायक जीत के बिना समाप्त हुआ और दोनों पक्षों ने विजित क्षेत्र वापस करने का समझौता किया।

32. (2) सर आयर कूट
1781 में पोर्टो नोवो के युद्ध में सर आयर कूट ने ब्रिटिश सेना का नेतृत्व करते हुए हैदर अली को पराजित किया था। इस जीत ने अंग्रेजों के गिरते मनोबल को पुनः जाग्रत किया और हैदर अली के विजयी अभियान को कुछ समय हेतु रोक दिया। आयर कूट की रणनीतिक सूझबूझ ने कंपनी को एक अत्यंत कठिन स्थिति से उबारा, क्योंकि इससे पूर्व मैसूर की सेना ने ब्रिटिश सेना को भारी क्षति पहुँचाई थी। यह एक निर्णायक संघर्ष था।

33. (1) पोल्लिलुर, पोर्टो नोवो, शोलिंगपुर
द्वितीय आंग्ल-मैसूर युद्ध के दौरान लड़े गए प्रमुख युद्धों का सही कालानुक्रमिक क्रम पोल्लिलुर, पोर्टो नोवो और फिर शोलिंगपुर है। 1780 में पोल्लिलुर के युद्ध में हैदर अली ने अंग्रेजों को पराजित किया था। इसके पश्चात 1781 में पोर्टो नोवो में सर आयर कूट ने हैदर अली पर जीत दर्ज की, और उसी वर्ष शोलिंगपुर के युद्ध में भी अंग्रेजों का प्रभाव रहा। इन युद्धों ने मैसूर और अंग्रेजों के मध्य बदलते सैन्य संतुलन को दर्शाया।

34. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
द्वितीय आंग्ल-मैसूर युद्ध का अंत 1784 में मंगलौर की संधि के साथ हुआ, जिस पर टीपू सुल्तान और ब्रिटिश कंपनी ने हस्ताक्षर किए। इस संधि का मुख्य प्रावधान युद्ध पूर्व की स्थिति को बहाल करना था, जिसके तहत दोनों पक्षों ने एक-दूसरे के विजित क्षेत्रों और युद्धबंदियों को वापस करने पर सहमति व्यक्त की। यद्यपि वॉरेन हेस्टिंग्स इस समझौते से पूर्णतः संतुष्ट नहीं थे, किंतु इससे दक्षिण में कुछ समय हेतु शांति स्थापित हुई।

35. (3) त्रावणकोर के राजा पर
तृतीय आंग्ल-मैसूर युद्ध का तात्कालिक कारण 1789 में टीपू सुल्तान द्वारा त्रावणकोर के राजा पर किया गया आक्रमण था। त्रावणकोर अंग्रेजों का एक महत्वपूर्ण और संरक्षित सहयोगी राज्य था। टीपू सुल्तान त्रावणकोर द्वारा खरीदे गए दो डच किलों पर अपना दावा कर रहे थे। जब टीपू ने सैन्य कार्रवाई की, तो लॉर्ड कॉर्नवालिस ने इसे अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध की घोषणा मानकर मराठों तथा निजाम के साथ मिलकर टीपू के विरुद्ध मोर्चा खोल दिया।

NODIA

36. (1) केवल I, III, IV और V
लॉर्ड कॉर्नवालिस ने स्वयं युद्ध का नेतृत्व करते हुए टीपू सुल्तान को श्रीरंगपट्टनम की संधि (1792) हेतु विवश किया। इस संधि के तहत टीपू को अपना आधा राज्य अंग्रेजों और उनके सहयोगियों को देना पड़ा। इसके अतिरिक्त उन पर 3.3 करोड़ रुपये का भारी जुर्माना लगाया गया, और राशि के भुगतान हेतु उनके दो बेटों को बंधक बना लिया गया। यद्यपि मराठों और निजाम ने टीपू का नहीं, बल्कि अंग्रेजों का साथ दिया था।

37. (3) श्रीरंगपट्टनम शहर
श्रीरंगपट्टनम की संधि के अनुसार टीपू सुल्तान ने मालाबार, डिंडीगुल और बारा महल जैसे महत्वपूर्ण रणनीतिक क्षेत्र अंग्रेजों को सौंप दिए थे। किंतु श्रीरंगपट्टनम शहर टीपू के अधिकार में ही रहा और यह उनकी आधिकारिक राजधानी बना रहा। इस संधि का मुख्य उद्देश्य टीपू को पूर्णतः समाप्त करने के स्थान पर उन्हें इतना निर्बल करना था कि वे फिर से अंग्रेजों के लिए चुनौती न बन सकें। शहर पर अंतिम ब्रिटिश कब्जा 1799 में हुआ।

38. (2) लॉर्ड कॉर्नवालिस
लॉर्ड कॉर्नवालिस ने तृतीय आंग्ल-मैसूर युद्ध के पश्चात यह प्रसिद्ध टिप्पणी की थी कि "हमने अपने शत्रुओं को प्रभावी ढंग से पंगु बना दिया है और अपने मित्रों को भी बहुत शक्तिशाली नहीं होने दिया।" उन्होंने विजित क्षेत्रों को इस प्रकार विभाजित किया कि अंग्रेजों को रणनीतिक लाभ मिले, जबकि उनके सहयोगियों को केवल सीमावर्ती क्षेत्र प्राप्त हुए। यह नीति ब्रिटिश कूटनीति की चतुरता को दर्शाती है, जहाँ उन्होंने सहयोगियों के प्रभाव को संतुलित रखा।

39. (1) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
टीपू सुल्तान ने एक नया कैलेंडर प्रस्तुत किया जो 'मौलूदी' युग पर आधारित था। उन्होंने श्रीरंगपट्टनम में फ्रांसीसी क्रांतिकारी विचारों से प्रभावित होकर 'जैकोबिन संघ' की स्थापना की। एक आधुनिक नौसेना विकसित करने के लिए उन्होंने 'नौसेना परिषद' का गठन किया और राज्य के व्यापार को वैश्विक स्तर पर बढ़ावा देने के लिए एक 'वाणिज्यिक परिषद' की स्थापना की। ये सुधार टीपू की प्रगतिशील सोच और आधुनिक शक्ति बनने के प्रयासों को दर्शाते हैं।

40. (4) उपर्युक्त सभी सही सुमेलित हैं
टीपू सुल्तान ने अंग्रेजों को भारत से बाहर निकालने हेतु व्यापक अंतरराष्ट्रीय समर्थन प्राप्त करने का प्रयास किया। उन्होंने नेपोलियन बोनापार्ट और फ्रांसीसी सरकार से सैन्य सहायता मांगी, तुर्की के खलीफा को शिष्टमंडल भेजकर अपने शासन की वैधता चाही, और अफगानिस्तान के शासक जमान शाह के साथ गठबंधन की चेष्टा की। उनके ये प्रयास दर्शाते हैं कि वे एक दूरदर्शी शासक थे जिन्होंने ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध वैश्विक स्तर पर मोर्चेबंदी की थी।

24. प्रथम आंग्ल-सिख युद्ध के दौरान ब्रिटिश गवर्नर-जनरल कौन था?
(1) लॉर्ड हार्डिंग
(2) लॉर्ड एलेनबरो
(3) लॉर्ड डलहौजी
(4) लॉर्ड ऑकलैंड
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

25. प्रथम आंग्ल-सिख युद्ध की निम्नलिखित लड़ाइयों को सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
A. आलीवाल की लड़ाई
B. सोबराओं की लड़ाई
C. मुदकी की लड़ाई
D. फिरोजशाह की लड़ाई
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही क्रम चुनिए:
(1) C, D, A, B
(2) C, A, D, B
(3) D, C, B, A
(4) A, C, D, B
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

26. प्रथम आंग्ल-सिख युद्ध की लड़ाइयों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही सुमेलित है?
(1) सोबराओं की लड़ाई - अंग्रेजों के लिए अंतिम और निर्णायक विजय
(2) मुदकी की लड़ाई - सिख सेना के लिए निर्णायक विजय
(3) फिरोजशाह की लड़ाई - सिख सेना ने अंग्रेजों को पंजाब से सफलतापूर्वक बाहर खदेड़ा
(4) आलीवाल की लड़ाई - रणजोत सिंह द्वारा ब्रिटिश सेना पूरी तरह से नष्ट कर दी गई
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

27. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): भैरोवाल की संधि (1846) ने व्यावहारिक रूप से सिख राज्य की संप्रभुता को समाप्त कर दिया।
कारण (R): इसने लाहौर में ब्रिटिश रेजिडेंट के प्रत्यक्ष नियंत्रण और मार्गदर्शन में कार्य करने वाली एक 'संरक्षक परिषद' (काउंसिल ऑफ रीजेंसी) की स्थापना की।
सही उत्तर चुनिए:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

28. प्रथम आंग्ल-सिख युद्ध के बाद सिख राज्य पर आरोपित प्रावधानों में से भिन्न की पहचान कीजिए।
(1) ब्रिटिश सरकार के कोष में युद्ध की भारी क्षतिपूर्ति का अनिवार्य भुगतान।
(2) ब्रिटिश भारतीय साम्राज्य में पंजाब का पूर्ण और तत्काल विलय।
(3) सिख स्थायी सेना के कुल आकार और शक्ति में एक महत्वपूर्ण और अनिवार्य कमी।
(4) उपजाऊ जालंधर दोआब क्षेत्रों का ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी को स्थायी समर्पण।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

29. लाहौर की संधि (मार्च 1846) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसने औपचारिक रूप से दलीप सिंह को पंजाब के महाराजा के रूप में मान्यता दी।
II. अंग्रेजों ने ब्यास और सतलुज के बीच के क्षेत्रों को अधिग्रहित किया।
III. युद्ध क्षतिपूर्ति का भुगतान करने के लिए सिख राज्य को कश्मीर गुलाब सिंह को बेचना पड़ा।
IV. रानी जिंदाँ को उनके संरक्षिका के पद से हटा दिया गया था।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II और IV
(2) केवल I, II और III
(3) केवल II, III और IV
(4) केवल I, III और IV
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

30. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: प्रथम आंग्ल-सिख युद्ध में सिख सेना की पराजय मुख्य रूप से उनके अपने सेनापतियों के विश्वासघात के कारण हुई थी।
कथन II: लाल सिंह और तेज सिंह ने गुप्त रूप से अंग्रेजों के साथ संपर्क किया और महत्वपूर्ण युद्धों के दौरान अपनी सेना को छोड़ दिया।
सही विकल्प चुनिए:
(1) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(2) कथन I गलत है और कथन II सही है।
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, और II, I की व्याख्या करता है।
(4) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, लेकिन II, I की व्याख्या नहीं करता है।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

31. द्वितीय आंग्ल-सिख युद्ध के प्रारंभ होने का सबसे उपयुक्त तात्कालिक कारण क्या था?
(1) मुल्तान में दीवान मूलराज का विद्रोह और दो ब्रिटिश अधिकारियों की हत्या।
(2) 'संरक्षक परिषद' द्वारा ब्रिटिश सैनिकों को भुगतान करने से इनकार करना।
(3) दोस्त मोहम्मद के नेतृत्व में अफगान सेनाओं द्वारा पंजाब पर अचानक आक्रमण।
(4) ब्रिटिश रेजिडेंट द्वारा रानी जिंदाँ की हत्या।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

Click Here to Buy book on Amazon

थे।
सही उत्तर चुनिए:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

48. निम्नलिखित में से उस राज्य की पहचान कीजिए जिसका विलय लॉर्ड डलहौजी द्वारा 'व्यपगत के सिद्धांत' के तहत नहीं किया गया था।
(1) सतारा
(2) अवध
(3) बघाट
(4) उदयपुर (छत्तीसगढ़)
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

49. सतारा के विलय के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह व्यपगत के सिद्धांत के तहत लॉर्ड डलहौजी द्वारा विलय किया गया पहला राज्य था।
II. पेशवा की पराजय के बाद 1818 में अंग्रेजों द्वारा स्पष्ट रूप से इस राज्य का निर्माण किया गया था।
III. राजा अप्पा साहिब की मृत्यु के बाद एक स्वाभाविक उत्तराधिकारी बचा था, लेकिन डलहौजी ने उसे मान्यता देने से इनकार कर दिया।
IV. लंदन में 'कोर्ट ऑफ डायरेक्टर्स' ने राज्य के विलय के डलहौजी के निर्णय का पूर्ण समर्थन किया।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II और IV
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, III और IV
(4) केवल I, II और III
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

50. दामोदर राव को झाँसी के शासक के रूप में मान्यता देने से इनकार करने के लिए लॉर्ड डलहौजी द्वारा दिया गया प्राथमिक तर्क क्या था?
(1) झाँसी की एक आश्रित राज्य के रूप में स्थिति ने सर्वोपरि शक्ति को राजनीतिक उत्तराधिकारी को गोद लेने की अनुमति देने से इनकार करने का अधिकार दिया।
(2) इस साक्ष्य की खोज कि झाँसी ने 1818 के संघर्ष के दौरान गुप्त रूप से मराठा विद्रोहियों को सैन्य सहायता प्रदान की थी।
(3) यह आरोप कि दामोदर राव व्यक्तिगत रूप से ब्रिटिश रेजिडेंट अधिकारी के विरुद्ध एक हिंसक षड्यंत्र में सम्मिलित थे।
(4) निरंतर और गंभीर वित्तीय कुप्रबंधन के कारण झाँसी में प्रशासन का पूर्ण और स्थायी पतन।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

51. व्यापक कुशासन और भ्रष्टाचार का विवरण देने वाली कौन सी रिपोर्ट अवध के विलय के लिए तात्कालिक आधार के रूप में कार्य करती थी?
(1) स्लीमैन रिपोर्ट
(2) मैकाले मिनट
(3) ऑट्रम रिपोर्ट
(4) वुड्स डिस्पैच
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

52. अवध से संबंधित हस्तियों और उनकी भूमिकाओं के संबंध में सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (हस्ती)
A. नवाब वाजिद अली शाह
B. कर्नल स्लीमैन
C. जेम्स ऑट्रम
D. लॉर्ड डलहौजी
सूची II: (भूमिका)
i. अवध के कुशासन पर अंतिम रिपोर्ट तैयार की
ii. पदच्युत शासक जिन्हें कलकत्ता निर्वासित कर दिया गया था
iii. गवर्नर-जनरल जिन्होंने विलय को क्रियान्वित किया
iv. ब्रिटिश रेजिडेंट जिन्होंने अवध का व्यापक दौरा किया और अव्यवस्था की रिपोर्ट दी
(1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(2) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

53. ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा अवध साम्राज्य का औपचारिक विलय किस वर्ष किया गया था?
(1) 1848
(2) 1853
(3) 1854
(4) 1856
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

54. अवध के विलय के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) नवाब वाजिद अली शाह ने पदत्याग की संधि पर हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया।
(2) इसका विलय कड़ाई से व्यपगत के सिद्धांत के प्रावधानों के तहत किया गया था।
(3) लंदन में कोर्ट ऑफ डायरेक्टर्स ने डलहौजी को अवध का प्रशासन संभालने का आदेश दिया था।
(4) नवाब को 12 लाख रुपये प्रति वर्ष की पेंशन दी गई और कलकत्ता भेज दिया गया।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

55. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: वहां से भर्ती किए गए सिपाहियों की अधिक संख्या

NODIA

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs,
you are wasting valuable time.

Research shows that learning from
PRINTED BOOKS has up to
4× HIGHER RETENTION
than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS**
move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND**
in competition.

In competitive exams,
being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

(4) केवल I, II, IV और V
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

40. निम्नलिखित में से कौन सा कथन 1853 में पंजाब में हुए प्रशासनिक परिवर्तनों का सही वर्णन करता है?
(1) प्रशासनिक बोर्ड को समाप्त कर दिया गया और जॉन लॉरेंस को पहले मुख्य आयुक्त (चीफ कमिश्नर) के रूप में नियुक्त किया गया।
(2) ब्रिटिश आधिपत्य और मार्गदर्शन में कार्य करने वाली 'संरक्षक परिषद' को प्रांत की वापसी।
(3) सर ह्यू गफ द्वारा पंजाब के पूर्ण तानाशाह के रूप में कार्य करते हुए पूर्ण सैन्य शासन की घोषणा।
(4) पंजाब का उत्तर-पश्चिमी प्रांतों में विलय और आगरा शहर से उसका प्रत्यक्ष शासन।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

41. लॉर्ड डलहौजी के "व्यपगत के सिद्धांत" (Doctrine of Lapse) का मूल वैधानिक आधार क्या था?
(1) हिंदू कानून की एक ऐसी प्रणाली के रूप में व्याख्या जो वैधानिक उत्तराधिकारी को गोद लेने को पूरी तरह से प्रतिबंधित करती थी।
(2) यह नीति कि महत्वपूर्ण आंतरिक विद्रोहों का सामना करने वाले किसी भी राज्य को सर्वोपरि शक्ति के अधीन विलीन घोषित कर दिया जाएगा।
(3) यह मान्यता कि उत्तराधिकारी व्यक्तिगत संपत्ति के वारिस तो हो सकते हैं लेकिन राजनीतिक अधिकारों के उत्तराधिकार के लिए ब्रिटिश सहमति आवश्यक थी।
(4) आवश्यक सहायक कर देने में विफल रहने वाले किसी भी देशी राज्य को अधिग्रहित करने का ब्रिटिश क्राउन का अधिकार।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

42. व्यपगत के सिद्धांत के तहत विलय किए गए राज्यों के संबंध में सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (राज्य)
A. सतारा
B. जैतपुर
C. झाँसी
D. नागपुर
सूची II: (विलय का वर्ष)
i. 1854
ii. 1849
iii. 1848
iv. 1853
(1) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(4) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

43. व्यपगत के सिद्धांत के दायरे के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: यह केवल उन्हीं आश्रित राज्यों पर सख्ती से लागू होता था जिनका निर्माण या पुनरुद्धार ब्रिटिश अनुदानों द्वारा किया गया था।
कथन II: इसे ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के सभी स्वतंत्र संबद्ध राज्यों पर बिना किसी भेदभाव के लागू किया गया था।
सही विकल्प चुनिए:
(1) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(2) कथन I गलत है और कथन II सही है।
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

44. ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने गोद लेने के अधिकार के संबंध में देशी राज्यों को तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया था। निम्नलिखित में से किस श्रेणी में वैध राजनीतिक उत्तराधिकारी गोद लेने के लिए ब्रिटिश सहमति की आवश्यकता नहीं थी?
(1) ब्रिटिश सरकार द्वारा निर्मित अधीनस्थ राज्य।
(2) स्वतंत्र राज्य जो कभी किसी सर्वोपरि शक्ति के अधीनस्थ नहीं रहे थे।
(3) संरक्षित सहयोगी जो कंपनी को कर देते थे।
(4) ब्रिटिश रेजिडेंटों के साथ सहायक संधि के तहत कार्य करने वाले राज्य।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

45. "व्यपगत के सिद्धांत" का अविष्कार पूरी तरह से लॉर्ड डलहौजी द्वारा नहीं किया गया था। निम्नलिखित में से किस निकाय ने पहले इस सिद्धांत को स्पष्ट किया था कि आश्रित राज्यों में गोद लेने को अधिकार के रूप में नहीं माना जाना चाहिए?
(1) 1833 के चार्टर एक्ट के माध्यम से ब्रिटिश संसद।
(2) फोर्ट विलियम स्थित सर्वोच्च न्यायालय।
(3) 1834 में ईस्ट इंडिया कंपनी का 'कोर्ट ऑफ डायरेक्टर्स'।
(4) 1784 में 'बोर्ड ऑफ कंट्रोल'।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

46. निम्नलिखित में से कौन सा युग्म शासक और उसके राज्य के संबंध में गलत सुमेलित है, जिसकी मृत्यु ने व्यपगत के सिद्धांत को प्रभावी कर दिया?
(1) अप्पा साहिब - सतारा
(2) गंगाधर राव - झाँसी
(3) रघुजी भोंसले III - नागपुर
(4) वाजिद अली शाह - संबलपुर
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

47. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): नागपुर का विलय ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के लिए अत्यधिक आर्थिक महत्व का था।
कारण (R): नागपुर में विशाल और उपजाऊ कपास उत्पादक क्षेत्र थे जो लंकाशायर के कपड़ा मिलों को आपूर्ति कर सकते

Downloaded from www.pdf.tube

गया था। इस समझौते के द्वारा सतलुज नदी को दोनों शक्तियों के मध्य की औपचारिक सीमा निर्धारित किया गया। इस संधि ने पंजाब और अंग्रेजों के बीच लंबे समय तक शांति सुनिश्चित की।

12. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
सिख इतिहास में महत्वपूर्ण घटनाओं का कालक्रम अत्यंत विशिष्ट है। 1809 में अमृतसर की संधि हुई, जबकि 1838 में अंग्रेजों और शाह शुजा के साथ त्रिपक्षीय संधि संपन्न हुई। 1839 में महाराजा रणजीत सिंह का निधन हुआ, जिससे नेतृत्व का संकट उत्पन्न हो गया। अंततः 1845 में प्रथम आंग्ल-सिख युद्ध प्रारंभ हुआ, जो सिख साम्राज्य के पतन का कारण बना।

13. (1) कथन I सही है और कथन II गलत है।
1809 की अमृतसर की संधि ने सतलुज नदी को सिख और ब्रिटिश क्षेत्रों के मध्य की सीमा निर्धारित किया था। इस संधि ने रणजीत सिंह के पूर्व की ओर विस्तार पर रोक लगा दी, किंतु इसने उन्हें उत्तर और पश्चिम की ओर विस्तार करने से नहीं रोका। इसी के पश्चात उन्होंने मुल्तान, कश्मीर और पेशावर पर विजय प्राप्त कर अपने साम्राज्य का विस्तार किया था।

14. (3) केवल I और III
अमृतसर की संधि ने रणजीत सिंह की सतलुज के पूर्वी सिख राज्यों को एकीकृत करने की योजना को बाधित किया। इस संधि से अंग्रेजों ने अपनी उत्तर-पश्चिमी सीमा सुरक्षित की। हालांकि, अंग्रेजों ने रणजीत सिंह को कभी अपनी यूरोपीय प्रशिक्षित सेना भंग करने हेतु विवश नहीं किया। इसके विपरीत, उन्होंने अपनी सेना को और अधिक शक्तिशाली बनाना जारी रखा। अतः दूसरा कथन पूर्णतः असत्य है।

15. (1) रूसी प्रभाव के विरुद्ध एक प्रतिरोधक के रूप में काबुल के सिंहासन पर शाह शुजा को बैठाने हेतु समर्थन सुनिश्चित करना।
1838 की त्रिपक्षीय संधि महाराजा रणजीत सिंह, अंग्रेजों और शाह शुजा के मध्य हुई थी। इसका प्राथमिक उद्देश्य अफगानिस्तान में बढ़ते रूसी प्रभाव को रोकना था। अंग्रेज चाहते थे कि दोस्त मोहम्मद के स्थान पर शाह शुजा काबुल के शासक बनें। यह संधि ब्रिटिश नीति के 'ग्रेट गेम' का हिस्सा थी, जिससे वे मध्य एशिया में अपनी स्थिति सुदृढ़ करना चाहते थे।

16. (2) गुलाब सिंह
1839 में महाराजा रणजीत सिंह की मृत्यु के पश्चात लाहौर में सत्ता हेतु तीव्र संघर्ष छिड़ गया। इस दौरान खड़क सिंह, नौ निहाल सिंह और शेर सिंह ने शासन किया। दलीप सिंह साम्राज्य के अंतिम महाराजा थे। गुलाब सिंह डोगरा जम्मू के शक्तिशाली शासक थे, किंतु वे कभी लाहौर के सिंहासन पर नहीं बैठे। उन्होंने 1846 में अंग्रेजों से कश्मीर प्राप्त कर स्वतंत्र रियासत बनाई।

17. (2) खड़क सिंह, नौ निहाल सिंह, शेर सिंह, दलीप सिंह
महाराजा रणजीत सिंह के पश्चात उनके ज्येष्ठ पुत्र खड़क सिंह राजा बने। उनके बाद नौ निहाल सिंह ने सत्ता संभाली, किंतु उनकी अल्पायु में मृत्यु हो गई। तत्पश्चात शेर सिंह महाराजा बने, जिनकी हत्या के बाद बालक दलीप सिंह को शासक घोषित किया गया। यह कालक्रम साम्राज्य के भीतर बढ़ती राजनीतिक अस्थिरता को दर्शाता है, जिसका लाभ उठाकर अंततः अंग्रेजों ने पंजाब पर अधिकार कर लिया।

18. (1) एक 'किंगमेकर' (शासक निर्माता) के रूप में इसका विकास हुआ, जिसने केंद्र सरकार को अपनी शर्तें मानने के लिए विवश करने हेतु सैन्य पंचायतों का उपयोग किया।
महाराजा रणजीत सिंह के पश्चात सिख सेना अत्यधिक शक्तिशाली और राजनीतिक रूप से सक्रिय हो गई। सेना के भीतर 'पंचायतों' का गठन हुआ, जो सरकारी निर्णयों में हस्तक्षेप करने लगीं। सेना अब प्रशासन के नियंत्रण से बाहर होकर स्वयं शासक चुनने और हटाने की भूमिका में आ गई। इस 'किंगमेकर' की स्थिति और सैन्य हस्तक्षेप ने लाहौर दरबार को प्रशासनिक रूप से पंगु बना दिया।

19. (3) केवल IV
रणजीत सिंह के पश्चात खड़क सिंह और नौ निहाल सिंह की मृत्यु से गहरा संकट उत्पन्न हुआ। रानी जिंदाँ ने दलीप सिंह की संरक्षिका के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ध्यान सिंह सहित डोगरा भाइयों ने लाहौर की राजनीति में अत्यंत प्रभावी और विवादास्पद भूमिका निभाई थी। डोगरा भाइयों की भूमिका गौण नहीं थी, अतः चौथा कथन गलत है। अंग्रेजों ने इस अस्थिरता का लाभ उठाया।

NODIA

20. (4) संधावालिया और डोगरा गुटों के बीच हिंसक प्रतिद्वंद्विता जिसके परिणामस्वरूप कई राजनीतिक हत्याएं हुईं।
1839 के पश्चात लाहौर दरबार संधावालिया सरदारों और डोगरा भाइयों के मध्य हिंसक गुटीय संघर्ष का केंद्र बन गया। इन समूहों ने सत्ता पर नियंत्रण हेतु निरंतर षड्यंत्र रचे। इस प्रतिद्वंद्विता के कारण महाराजा शेर सिंह और वज़ीर ध्यान सिंह जैसे प्रमुख नेताओं की हत्या कर दी गई। इस आंतरिक अराजकता ने राज्य के प्रशासन और सैन्य अनुशासन को नष्ट कर अंग्रेजों के हस्तक्षेप का मार्ग प्रशस्त किया।

21. (3) 1843 में सिंध का विलय और फिरोजपुर के निकट ब्रिटिश सैनिकों का जमावड़ा।
1843 में अंग्रेजों द्वारा सिंध के विलय ने सिख सेना में यह भय उत्पन्न कर दिया कि अगला लक्ष्य पंजाब होगा। साथ ही, फिरोजपुर में ब्रिटिश सैनिकों की संख्या में भारी वृद्धि को सिखों ने अपने विरुद्ध खतरे के रूप में देखा। लॉर्ड हार्डिंग की सैन्य तैयारियों ने इस संदेह को पुख्ता कर दिया। इस असुरक्षा की भावना ने सिखों को रक्षात्मक युद्ध हेतु प्रेरित किया।

22. (1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
प्रथम आंग्ल-सिख युद्ध के दौरान रानी जिंदाँ ने दलीप सिंह की संरक्षिका के रूप में कार्य किया। लाल सिंह राज्य के वज़ीर थे और तेज सिंह सेना के प्रधान सेनापति थे। लॉर्ड हार्डिंग उस समय भारत के गवर्नर-जनरल थे। ऐतिहासिक साक्ष्यों के अनुसार, लाल सिंह और तेज सिंह की भूमिका संदेहास्पद थी और उन पर अंग्रेजों के साथ गुप्त रूप से मिले होने के आरोप लगे थे।

के कारण अवध को "बंगाल सेना की पौधशाला" के रूप में जाना जाता था।
कथन II: अवध के विलय ने उनके पैतृक गाँवों में सिपाहियों की सामाजिक स्थिति और विशेषाधिकारों में भारी सुधार किया।
सही विकल्प चुनिए:
(1) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(2) कथन I गलत है और कथन II सही है।
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

56. ब्रिटिश विलय की नीतियों ने स्वदेशी कारीगरों और शिल्पकारों को आर्थिक रूप से कैसे नष्ट कर दिया?
(1) देशी शाही दरबारों के विनाश से विलासिता की वस्तुओं और पारंपरिक शिल्प के प्राथमिक संरक्षकों का अंत हो गया।
(2) सख्त राजकीय कानूनों का पारित होना जिन्होंने औपचारिक रूप से किसी भी स्थानीय हस्तशिल्प वस्तुओं के निरंतर उत्पादन को प्रतिबंधित कर दिया।
(3) ऐसी नीतियों का क्रियान्वयन जिसने कुशल भारतीय कारीगरों को औद्योगिक कारखानों में कार्य करने के लिए इंग्लैंड प्रवास हेतु विवश किया।
(4) स्वदेशी वस्तुओं को भारी सरकारी सहायता प्रदान करना जब तक कि पूरी स्थानीय बाजार संरचना ध्वस्त न हो गई।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

57. नए विजित क्षेत्रों में सामान्यतः लागू किए जाने वाले निम्नलिखित आर्थिक और प्रशासनिक कार्यों को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
A. देशी सेना का विघटन
B. नए भू-राजस्व बंदोबस्त का प्रारंभ
C. निर्यात के लिए कृषि का व्यवसायीकरण
D. एक प्रशासनिक बोर्ड या आयोग का गठन
सही क्रम चुनिए:
(1) A, D, B, C
(2) D, A, B, C
(3) A, B, D, C
(4) D, B, A, C
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

58. बॉम्बे प्रेसीडेंसी में 1852 का इनाम कमीशन मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किस आर्थिक नीति से जुड़ा है?
(1) हजारों कर-मुक्त जागीरों और संपदाओं की जब्ती।
(2) पारगमन शुल्कों का उन्मूलन।
(3) ग्रामीण सहकारी ऋण समितियों की स्थापना।
(4) पदच्युत शासकों को पेंशन का प्रावधान।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

59. ब्रिटिश विलय की नीतियों के आर्थिक परिणामों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. देशी सेनाओं के विसैन्यीकरण के कारण सैनिकों में व्यापक बेरोजगारी फैल गई।
II. भू-राजस्व की नई मांग कठोर थी और नकद में भुगतान की जानी थी, जिसने किसानों को साहूकारों के चंगुल में धकेल दिया।
III. एकमुश्त बंदोबस्त प्रायः खेती करने वालों से सीधे व्यवहार करने के लिए पारंपरिक जमींदारों की अनदेखी करते थे।
IV. विलय के कारण विजित क्षेत्रों में तत्काल औद्योगिक क्रांति हुई।
V. पारंपरिक कुलीन वर्ग ने अपनी आय और संरक्षण के स्रोत खो दिए।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III और V
(2) केवल II, III, IV और V
(3) केवल I, II, IV और V
(4) केवल I, III, IV और V
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

60. अवध में 1856 के एकमुश्त बंदोबस्त (Summary Settlement) के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(1) स्थानीय ताल्लुकदार वर्ग द्वारा धारित महत्वपूर्ण राजनीतिक और आर्थिक शक्ति का सुदृढीकरण और वैधानिक मान्यता।
(2) ताल्लुकदारों को संपदाओं से वंचित करना ताकि खेती करने वालों को भूमि दी जा सके, साथ ही राजस्व की मांग का अत्यधिक निर्धारण करना।
(3) दस वर्षों की प्रारंभिक अवधि के लिए सभी कृषि भूमि को किसी भी प्रकार के राजस्व कराधान से पूर्ण छूट।
(4) उन पैतृक भूमियों की पूर्ण बहाली जिन्हें पहले वाजिद अली शाह द्वारा ताल्लुकदारों से जब्त कर लिया गया था।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

61. विलय के बाद अवध के ताल्लुकदारों द्वारा अपनी भूमि और किलों को खोने का प्रत्यक्ष सामाजिक-राजनीतिक प्रभाव क्या था?
(1) उन्होंने कृषि त्याग दी और कारखानों में कार्य करने के लिए शहरी केंद्रों की ओर पलायन किया।
(2) नवाब से उनकी रक्षा करने के लिए वे ब्रिटिश प्रशासन के वफादार समर्थक बन गए।
(3) उन्हें स्थानीय प्रतिष्ठा की भारी हानि हुई और वे 1857 के दौरान ग्रामीण विद्रोह के सक्रिय नेता बन गए।
(4) उन्होंने ब्रिटिश संसद में याचिका दायर की और वैधानिक लड़ाई के माध्यम से शांतिपूर्वक अपनी सारी भूमि वापस पा ली।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

Click Here to Buy book on Amazon

62. ब्रिटिश नीतियों और उन समूहों के संबंध में सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए जिन पर उनका सबसे नकारात्मक प्रभाव पड़ा:
सूची I: (नीति)
A. 1856 का एकमुश्त बंदोबस्त
B. खालसा और अवध सेनाओं का विघटन
C. देशी दरबारों का पतन
D. व्यपगत का सिद्धांत
सूची II: (प्रभावित समूह)
i. कारीगर और शिल्पकार
ii. शाही राजकुमार और पारंपरिक शासक
iii. ताल्लुकदार और जमींदार
iv. देशी सिपाही और सैन्य वर्ग
(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(3) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

63. लॉर्ड डलहौजी द्वारा समाप्त की गई उपाधियों और पेंशनों में से भिन्न की पहचान कीजिए।
(1) हैदराबाद के निज़ाम की उपाधि
(2) नाना साहिब को मिलने वाली पेशवा बाजीराव II की पेंशन
(3) कर्नाटक के नवाब की उपाधि
(4) तंजौर के राजा की उपाधि
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

64. भारतीय कुलीन वर्ग पर डलहौजी की नीतियों के सामाजिक प्रभाव के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उन्होंने पेशवा बाजीराव II के दत्तक पुत्र नाना साहिब को 8 लाख रुपये की पेंशन जारी रखने से इनकार कर दिया।
II. उन्होंने मुगल सम्राट बहादुर शाह जफर को लाल किले से कुतुब साहिब स्थानांतरित करने की योजना बनाई।
III. उन्होंने दक्कन में मुस्लिम अभिजात वर्ग के वंशानुगत अधिकारों की कड़ाई से रक्षा की।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

65. लॉर्ड डलहौजी द्वारा किए गए निम्नलिखित विलयों को सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
A. झाँसी का विलय
B. अवध का विलय
C. सतारा का विलय
D. नागपुर का विलय
सही क्रम चुनिए:
(1) C, D, A, B
(2) C, A, D, B
(3) A, C, B, D
(4) B, A, C, D
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

66. निम्नलिखित में से कौन सा कथन अवध के विलय और 1857 के सिपाही विद्रोह के बीच की कड़ी को सही ढंग से उजागर करता है?
(1) अवध में सिपाहियों के परिवारों के लिए विशेष वैधानिक विशेषाधिकारों को हटाना, जिससे व्यापक असंतोष उत्पन्न हुआ।
(2) नए विलय किए गए राज्य के प्रशासन के लिए धन उपलब्ध कराने हेतु सैन्य वेतनमान में तत्काल कमी।
(3) सिपाहियों को अपने परिवारों को बंगाल प्रेसीडेंसी क्षेत्र में ले जाने के लिए अनिवार्य स्थानांतरण आदेशों का क्रियान्वयन।
(4) पदच्युत नवाब द्वारा सिपाहियों को ब्रिटेन के विरुद्ध विद्रोह करने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु बड़े वित्तीय प्रलोभन देना।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

67. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): डलहौजी की आक्रामक विलय नीतियों ने 1857 के विद्रोह के लिए राजनीतिक बीज बोए।
कारण (R): व्यपगत के सिद्धांत और अवध के विलय ने सभी भारतीय राजकुमारों के बीच, उनकी वफादारी के बावजूद, असुरक्षा और संदेह की गहरी भावना उत्पन्न कर दी।
सही उत्तर चुनिए:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

68. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: ब्रिटिश विलय की नीति को कई भारतीयों द्वारा जनता के ईसाई धर्म में सामूहिक धर्मांतरण की प्रस्तावना के रूप में देखा गया था।
कथन II: पश्चिमी शिक्षा, रेलवे और टेलीग्राफ की एक साथ शुरुआत ने इस भय को और बढ़ा दिया कि पारंपरिक धर्म और समाज संकट में थे।
सही विकल्प चुनिए:
(1) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(2) कथन I गलत है और कथन II सही है।
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, और II, I का पूरक है।
(4) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, लेकिन वे पूरी तरह से असंबंधित हैं।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

NODIA

69. निम्नलिखित नीतियों/घटनाओं पर विचार कीजिए:
I. व्यपगत के सिद्धांत का क्रियान्वयन।
II. कुशासन के आधार पर अवध का विलय।
III. पूर्व शासकों की पेंशन और उपाधियों को रोकना।
IV. सहायक संधि प्रणाली की शुरुआत।
उपर्युक्त में से कौन सा/से सीधे तौर पर लॉर्ड डलहौजी के लिए 1857 के विद्रोह के राजनीतिक कारणों के रूप में उत्तरदायी माना जाता है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, III और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

70. निम्नलिखित भारतीय हस्तियों में से किसने व्यपगत के सिद्धांत या विलय की नीतियों का शिकार होने की प्रत्यक्ष प्रतिक्रिया के रूप में 1857 के विद्रोह में भाग नहीं लिया था?
(1) झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई
(2) ग्वालियर के महाराजा जयाजीराव सिंधिया
(3) नाना साहिब
(4) अवध की बेगम हजरत महल
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

71. डलहौजी की विरासत पर चर्चा में, भारत में रेलवे और टेलीग्राफ के उनके तीव्र विकास के पीछे प्राथमिक साम्राज्यवादी प्रेरणा क्या थी?
(1) भारतीयों के बीच स्थायी राजनीतिक एकता को बढ़ावा देना ताकि उन्हें भविष्य के स्व-शासन के लिए तैयार किया जा सके।
(2) सहायक संधि पर हस्ताक्षर करने के दौरान विभिन्न भारतीय राजकुमारों से किए गए विशिष्ट सैन्य वादों को पूरा करना।
(3) पूर्व खालसा और अवध सेनाओं के हजारों विसैन्यीकृत सैनिकों को गारंटीकृत दीर्घकालिक रोजगार प्रदान करना।
(4) तीव्र सैन्य आवागमन और ब्रिटिश औद्योगिक उपयोग के लिए कच्चे माल की कुशल निकासी की सुविधा प्रदान करना।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

72. लॉर्ड डलहौजी के सुधारों के संबंध में सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (सुधार)
A. पहली रेलवे लाइन
B. टेलीग्राफ लाइन
C. पोस्टल एक्ट
D. वुड्स डिस्पैच
सूची II: (विवरण)
i. 1854
ii. आगरा को कलकत्ता से जोड़ा
iii. बॉम्बे को ठाणे से जोड़ा (1853)
iv. भारत में अंग्रेजी शिक्षा का मैग्ना कार्टा
(1) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

73. सड़क, नहर और पुल जैसी बुनियादी ढांचा परियोजनाओं को निष्पादित करने के लिए लॉर्ड डलहौजी द्वारा किस विशिष्ट प्रशासनिक विभाग की स्थापना की गई थी?
(1) बोर्ड ऑफ कंट्रोल
(2) इंपीरियल इंफ्रास्ट्रक्चर विभाग
(3) सार्वजनिक निर्माण विभाग (PWD)
(4) इनाम कमीशन
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

74. लॉर्ड डलहौजी की शैक्षिक विरासत के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) विद्यालयों में स्थानीय भाषाओं के उपयोग पर पूर्ण प्रतिबंध, प्रत्येक शैक्षिक स्तर पर अंग्रेजी को अनिवार्य करना।
(2) 1854 में वुड्स डिस्पैच का औपचारिक जारी होना, जो भारत के गवर्नर-जनरल के रूप में उनके कार्यकाल के दौरान हुआ था।
(3) कलकत्ता, बॉम्बे और मद्रास शहरों में प्रमुख विश्वविद्यालयों की प्रारंभिक स्थापना का प्रस्ताव।
(4) उनकी विभिन्न सार्वजनिक निर्माण पहलों के लिए तकनीकी सहायता प्रदान करने हेतु रुड़की इंजीनियरिंग कॉलेज की स्थापना।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

NODIA

75. लॉर्ड डलहौजी की विरासत के संबंध में "प्रगतिशील बनाम शोषणकारी" बहस का सबसे उपयुक्त निष्कर्ष क्या है?
(1) उन्होंने एक परोपकारी आधुनिकीकरणकर्ता के रूप में कार्य किया जिनकी नीतियों और प्रशासनिक परिवर्तनों का भारतीय समाज के अधिकांश वर्गों द्वारा स्वागत किया गया।
(2) वे एक शोषणकारी विजेता थे जिन्होंने केवल क्षेत्रीय विस्तार पर ध्यान केंद्रित किया और भारत में कोई स्थायी संरचनात्मक योगदान नहीं दिया।
(3) उन्होंने ब्रिटिश भारतीय साम्राज्य के विस्तार और सुरक्षा की पूरी तरह से अनदेखी करते हुए सामाजिक और शैक्षिक सुधारों को प्राथमिकता दी।
(4) बुनियादी ढाँचे और प्रशासनिक सुधार आधुनिक स्वरूप के थे लेकिन साम्राज्यवादी लक्ष्यों की पूर्ति करते थे, जिससे बड़े पैमाने पर प्रतिरोध हुआ।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

76. संधियों और ब्रिटिश गवर्नर-जनरल के निम्नलिखित में से कौन सा युग्म गलत सुमेलित है?
(1) अमृतसर की संधि (1809) - लॉर्ड मिंटो

32. द्वितीय आंग्ल-सिख युद्ध की हस्तियों और घटनाओं के संबंध में सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (हस्ती)
A. दीवान मूलराज
B. चत्तर सिंह अटारीवाला
C. वेंस एग्न्यू
D. लॉर्ड डलहौजी
सूची II: (घटना/विवरण)
i. मुल्तान में हत्या कर दी गई
ii. हजारा में विद्रोह किया
iii. गवर्नर-जनरल जिसने युद्ध की घोषणा की
iv. मुल्तान का गवर्नर जिसने विद्रोह किया
(1) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(2) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(3) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(4) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

33. द्वितीय आंग्ल-सिख युद्ध की उत्पत्ति के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) प्रथम युद्ध के बाद जो सिख सैनिक सेवामुक्त कर दिए गए थे, वे अंग्रेजों के प्रति गहरा रोष रखते थे।
(2) लॉर्ड डलहौजी युद्ध में सम्मिलित होने के लिए अनिच्छुक थे और उन्होंने सिख विद्रोहियों को शांत करने के लिए सभी कूटनीतिक साधनों का प्रयास किया।
(3) रानी जिंदाँ को पंजाब से निर्वासित कर दिया गया था, जिससे सिख भावनाओं को गहरा आघात पहुँचा।
(4) हजारा में चत्तर सिंह के विद्रोह ने संघर्ष के दायरे को काफी बढ़ा दिया।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

34. सिखों के बीच असंतोष के निम्नलिखित कारणों पर विचार कीजिए, जिसके कारण द्वितीय आंग्ल-सिख युद्ध हुआ:
I. पंजाब के आंतरिक प्रशासन में ब्रिटिश रेजिडेंट का अत्यधिक हस्तक्षेप।
II. हजारों खालसा सैनिकों को सेना से निकालने के कारण उत्पन्न गंभीर आर्थिक संकट।
III. ब्रिटिश रेजिडेंट द्वारा सिख पंचायतों को संप्रभु शक्तियों की बहाली।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

35. द्वितीय आंग्ल-सिख युद्ध के दौरान, सिखों ने अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ने के लिए अपने किस पूर्व शत्रु के साथ एक अप्रत्याशित गठबंधन बनाया था?
(1) ग्वालियर के मराठा
(2) सिंध के अमीर
(3) दोस्त मोहम्मद खान के नेतृत्व में अफगान
(4) नेपाल के गोरखा
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

36. द्वितीय आंग्ल-सिख युद्ध के दौरान चिलियाँवाला की लड़ाई का क्या परिणाम रहा?
(1) अंग्रेजों के लिए एक त्वरित और निर्णायक विजय, जिसके परिणामस्वरूप उनके सैनिकों को बहुत कम क्षति हुई।
(2) लॉर्ड गफ की कमान में सभी सिख सैन्य बलों का तत्काल और बिना शर्त आत्मसमर्पण।
(3) अस्थिर पंजाब क्षेत्र से सभी ब्रिटिश सैन्य इकाइयों की एक समन्वित रणनीतिक वापसी।
(4) एक अनिर्णायक युद्ध जिसके परिणामस्वरूप ब्रिटिश सेना को अत्यधिक भारी क्षति हुई।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

37. द्वितीय आंग्ल-सिख युद्ध की किस लड़ाई को भीषण तोपखाने की गोलाबारी के कारण "तोपों की लड़ाई" के रूप में जाना जाता है?
(1) रामनगर की लड़ाई
(2) चिलियाँवाला की लड़ाई
(3) गुजरात की लड़ाई
(4) मुल्तान की लड़ाई
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

38. विलय के बाद पंजाब पर शासन करने के लिए लॉर्ड डलहौजी द्वारा स्थापित 'प्रशासनिक बोर्ड' (Board of Administration) का सदस्य निम्नलिखित में से कौन नहीं था?
(1) सर हेनरी लॉरेंस
(2) लॉर्ड ह्यू गफ
(3) जॉन लॉरेंस
(4) चार्ल्स मैन्सेल
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

39. द्वितीय आंग्ल-सिख युद्ध के परिणामों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. गुजरात की लड़ाई अंतिम और निर्णायक सिद्ध हुई।
II. 1849 में पंजाब को औपचारिक रूप से ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया गया।
III. महाराजा दलीप सिंह को पेंशन दी गई और उन्हें इंग्लैंड भेज दिया गया।
IV. प्रसिद्ध कोहिनूर हीरा ले लिया गया और ब्रिटिश क्राउन को भेंट किया गया।
V. खालसा सेना को बिना किसी विघटन के पूरी तरह से ब्रिटिश सेना में एकीकृत कर दिया गया।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III और IV
(2) केवल II, III, IV और V
(3) केवल I, III, IV और V

Downloaded from www.pdf.tube

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) सुकरचकिया मिसल
महाराजा रणजीत सिंह का जन्म 1780 में सुकरचकिया मिसल के प्रमुख महा सिंह के यहाँ हुआ था। यह पंजाब की 12 महत्वपूर्ण सिख मिसलों में से एक थी। रणजीत सिंह ने अपनी वीरता और कुशल युद्ध कौशल से इन बिखरी हुई मिसलों को एकजुट किया। सुकरचकिया मिसल की सैन्य शक्ति ने एक विशाल और शक्तिशाली सिख साम्राज्य की स्थापना हेतु सुदृढ़ आधार प्रदान किया।

2. (2) 1799
महाराजा रणजीत सिंह ने 1799 में भंगी मिसल को पराजित कर लाहौर पर अधिकार किया। यह विजय उनके राजनीतिक उत्थान में एक निर्णायक मोड़ सिद्ध हुई। इसके पश्चात लाहौर उनके बढ़ते साम्राज्य की राजधानी और शक्ति का केंद्र बना। अफगान शासक ज़मान शाह ने भी उन्हें लाहौर के शासक के रूप में मान्यता दी, जिससे उनके प्रभुत्व को वैधानिकता प्राप्त हुई।

3. (3) महाराजा रणजीत सिंह की मृत्यु - 1845
सिख इतिहास में महाराजा रणजीत सिंह की मृत्यु 1839 में हुई थी, न कि 1845 में। उनके निधन के पश्चात सिख साम्राज्य में उत्तराधिकार का तीव्र संघर्ष और राजनीतिक अस्थिरता उत्पन्न हो गई। अन्य तथ्य सही हैं: 1802 में अमृतसर पर अधिकार, 1809 में अंग्रेजों के साथ अमृतसर की संधि और 1838 में ऐतिहासिक त्रिपक्षीय संधि संपन्न हुई थी।

4. (1) केवल I और II
महाराजा रणजीत सिंह ने अपनी सैन्य शक्ति से विभिन्न सिख मिसलों को संगठित कर एक विशाल साम्राज्य खड़ा किया। उन्होंने मुल्तान, कश्मीर और पेशावर जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों पर विजय प्राप्त की। उनका शासन धर्मनिरपेक्ष और समावेशी था। उन्होंने अपनी सेना तथा प्रशासन में हिंदुओं, मुस्लिमों और यहाँ तक कि यूरोपीय अधिकारियों को भी उच्च पदों पर नियुक्त किया था। तीसरा कथन गलत है।

5. (3) ज़मान शाह की खोई हुई तोपें वापस करने के बाद उन्हें लाहौर के सूबेदार के रूप में मान्यता मिली।
1798 में अफगान शासक ज़मान शाह के आक्रमण के दौरान उसकी कुछ तोपें झेलम नदी में गिर गई थीं। रणजीत सिंह ने उन तोपों को निकलवाकर सम्मानपूर्वक वापस भेज दिया। इस कार्य से प्रसन्न होकर ज़मान शाह ने उन्हें लाहौर का सूबेदार नियुक्त किया और 'राजा' की उपाधि दी। इस घटना ने रणजीत सिंह के लाहौर पर अधिकार को वैधानिक आधार प्रदान किया।

6. (2) खालसा सेना की विशिष्ट, यूरोपीय पद्धति से प्रशिक्षित नियमित ब्रिगेड।
महाराजा रणजीत सिंह ने अपनी सेना के आधुनिकीकरण हेतु 'फौज-ए-खास' नामक एक विशिष्ट सैन्य दल गठित किया था। यह ब्रिगेड यूरोपीय पद्धति, विशेषकर फ्रांसीसी सैन्य शैली में प्रशिक्षित थी। इसमें पैदल, घुड़सवार और तोपखाना विभाग शामिल थे। इस अनुशासित और शक्तिशाली सेना ने सिख साम्राज्य के विस्तार तथा सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिससे यह एशिया की सर्वोत्तम सेनाओं में गिनी गई।

7. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
महाराजा रणजीत सिंह की खालसा सेना ब्रिटिश सेना के पश्चात एशिया की दूसरी सबसे बड़ी और शक्तिशाली सैन्य शक्ति थी। उन्होंने अपनी सेना को पश्चिमी देशों की तर्ज पर आधुनिक बनाने हेतु वेंचुरा और एलार्ड जैसे कुशल यूरोपीय अधिकारियों को नियुक्त किया था। इन अधिकारियों ने सिख सैनिकों को आधुनिक युद्ध तकनीकों में प्रशिक्षित किया, जिससे सेना अत्यंत प्रभावशाली और अनुशासित बनी।

8. (1) चार्ल्स नेपियर
महाराजा रणजीत सिंह के दरबार में कई यूरोपीय अधिकारियों ने अपनी सेवाएँ दी थीं। इनमें जीन-बैप्टिस्ट वेंचुरा, जीन-फ्रेंकोइस एलार्ड और एविटेबाइल प्रमुख थे, जिन्होंने सिख सेना को आधुनिक बनाया। इसके विपरीत, चार्ल्स नेपियर एक ब्रिटिश जनरल थे, जिन्होंने सिंध के विलय में भूमिका निभाई थी। नेपियर कभी भी रणजीत सिंह की सेवा में नियुक्त नहीं रहे, अतः वे अन्य अधिकारियों से भिन्न हैं।

9. (2) केवल I, II और IV
रणजीत सिंह की सेना नियमित और अनियमित दो भागों में विभाजित थी। उन्होंने तोपखाने के विकास हेतु लाहौर में आधुनिक कारखाने स्थापित किए और सैनिकों को नकद वेतन देने की व्यवस्था की। यद्यपि घुड़सवार सेना महत्वपूर्ण थी, किंतु उन्होंने पैदल सेना को अधिक प्राथमिकता दी और उसे विशेष प्रशिक्षण प्रदान किया। उनके काल में पैदल सेना ही साम्राज्य की शक्ति का मुख्य आधार थी।

10. (1) उन्होंने अपनी पूर्ण संप्रभु शक्ति प्रदर्शित करने के लिए अपने स्वयं के नाम पर सिक्के चलाए।
महाराजा रणजीत सिंह ने कभी भी अपने नाम पर सिक्के नहीं चलाए। उन्होंने गुरु नानक देव और गुरु गोविंद सिंह के प्रति श्रद्धा व्यक्त करते हुए 'नानकशाही' और 'गोविंदशाही' सिक्के जारी किए। उनका प्रशासन 'सरकार-ए-खालसा' के नाम से जाना जाता था। उन्होंने साम्राज्य को प्रशासनिक सुगमता हेतु सूबों में विभाजित किया और स्थानीय स्तर पर न्याय हेतु पंचायतों को प्रोत्साहित किया।

11. (4) चार्ल्स मेटकाफ
1809 में अमृतसर की ऐतिहासिक संधि ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी और महाराजा रणजीत सिंह के मध्य संपन्न हुई थी। इस संधि हेतु ब्रिटिश वार्ताकार के रूप में चार्ल्स मेटकाफ को भेजा

NODIA

(2) भैरोवाल की संधि (1846) - लॉर्ड डलहौजी
(3) लाहौर की संधि (1846) - लॉर्ड हार्डिंग
(4) त्रिपक्षीय संधि (1838) - लॉर्ड ऑकलैंड
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

77. युद्धों और उनके संबंधित आंग्ल-सिख संघर्षों के संबंध में सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (लड़ाई)
A. मुदकी की लड़ाई
B. चिलियाँवाला की लड़ाई
C. गुजरात की लड़ाई
D. सोबराओं की लड़ाई
सूची II: (युद्ध)
i. प्रथम आंग्ल-सिख युद्ध
ii. द्वितीय आंग्ल-सिख युद्ध
iii. द्वितीय आंग्ल-सिख युद्ध
iv. प्रथम आंग्ल-सिख युद्ध
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

78. पदच्युत होने और पंजाब के विलय के बाद, अंग्रेजों द्वारा युवा महाराजा दलीप सिंह के लिए कितनी वार्षिक पेंशन राशि निर्धारित की गई थी?
(1) £10,000 से £20,000 प्रति वर्ष
(2) £40,000 से £50,000 प्रति वर्ष
(3) 1 लाख रुपये प्रति वर्ष
(4) 12 लाख रुपये प्रति वर्ष
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

79. ब्रिटिश शासन के डलहौजी द्वारा किए गए व्यापक सुदृढीकरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उन्होंने देशी राजकुमारों के माध्यम से अप्रत्यक्ष शासन की प्रणाली के स्थान पर प्रत्यक्ष ब्रिटिश प्रशासन को प्राथमिकता दी।
II. उन्होंने द्वितीय आंग्ल-बर्मी युद्ध के बाद लोअर बर्मा (पेगु) का विलय किया।
III. उन्होंने विशेष रुप से केवल मुस्लिम शासित राज्यों के विरुद्ध ही व्यपगत के सिद्धांत का उपयोग किया।
IV. उन्होंने ब्रिटिश शासन की तुलना में भारतीय रियासतों के प्रशासन को स्वाभाविक रुप से भ्रष्ट और अक्षम माना।
V. उनकी नीतियों ने ब्रिटिश भारत की सीमाओं को उत्तर-पश्चिम में उनकी प्राकृतिक सीमाओं तक पहुँचा दिया।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II, IV और V
(2) केवल II, III, IV और V
(3) केवल I, III, IV और V
(4) केवल I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

80. निम्नलिखित में से कौन सा कथन 1849 में पंजाब के विलय के भू-राजनीतिक महत्व का सही वर्णन करता है?
(1) ब्रिटिश सेना और शेष मराठा शक्तियों के बीच एक अनिवार्य और रक्षात्मक सैन्य गठबंधन का निर्माण।
(2) उपमहाद्वीप की विजय का समापन, जिससे साम्राज्य का विस्तार उत्तर-पश्चिम की प्राकृतिक सीमाओं तक हो गया।
(3) सिंध और बलूचिस्तान के क्षेत्रों से सभी ब्रिटिश सैन्य और प्रशासनिक बलों की तत्काल और स्थायी वापसी।
(4) ब्रिटिश भारतीय साम्राज्य और विस्तारवादी रूसी साम्राज्य के बीच एक स्थिर और स्थायी बफर राज्य की स्थापना।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

www.nodia.in

Click Here to Buy book on Amazon

23. (4) सतलुज
दिसंबर 1845 में सिख सेना द्वारा सतलुज नदी पार करने को अंग्रेजों ने 1809 की संधि का उल्लंघन माना। सतलुज नदी उस समय दोनों साम्राज्यों के मध्य की औपचारिक सीमा थी। अंग्रेजों ने इस कदम को युद्ध की घोषणा के रूप में लिया। गवर्नर-जनरल लॉर्ड हार्डिंग ने तुरंत जवाबी सैन्य कार्रवाई का आदेश दिया, जिससे प्रथम आंग्ल-सिख युद्ध की विधिवत शुरुआत हुई।

24. (1) लॉर्ड हार्डिंग
प्रथम आंग्ल-सिख युद्ध के समय लॉर्ड हार्डिंग भारत के गवर्नर-जनरल थे। उनके कार्यकाल में ही सिखों और अंग्रेजों के मध्य तनाव चरम पर पहुँचा। हार्डिंग ने स्वयं युद्ध क्षेत्र में उपस्थित रहकर रणनीतियों का मार्गदर्शन किया। युद्ध की समाप्ति पर उन्होंने ही लाहौर की संधि की शर्तें निर्धारित की थीं। प्रारंभ में उन्होंने पंजाब को पूर्णतः मिलाने के स्थान पर उसे आश्रित राज्य बनाया।

25. (1) C, D, A, B
प्रथम आंग्ल-सिख युद्ध की लड़ाइयों का सही कालक्रम मुदकी की लड़ाई से प्रारंभ होता है। दिसंबर 1845 में मुदकी के पश्चात फिरोजशाह का भीषण संघर्ष हुआ। जनवरी 1846 में आलीवाल की लड़ाई में सिख सेना को पराजय झेलनी पड़ी। अंततः फरवरी 1846 में सोबराओं की निर्णायक लड़ाई हुई, जिसने युद्ध का अंत किया और लाहौर दरबार को संधि हेतु विवश किया।

26. (1) सोबराओं की लड़ाई - अंग्रेजों के लिए अंतिम और निर्णायक विजय
10 फरवरी 1846 को हुई सोबराओं की लड़ाई प्रथम आंग्ल-सिख युद्ध की अंतिम और सर्वाधिक महत्वपूर्ण लड़ाई थी। इस युद्ध में सिख सेना की पराजय ने अंग्रेजों के लिए लाहौर का मार्ग प्रशस्त कर दिया। यद्यपि मुदकी और फिरोजशाह में सिखों ने वीरतापूर्ण प्रतिरोध किया था, किंतु सोबराओं की हार निर्णायक सिद्ध हुई। इसी के पश्चात मार्च 1846 में लाहौर की संधि हुई थी।

27. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
दिसंबर 1846 की भैरोवाल की संधि ने सिख साम्राज्य की स्वायत्तता को समाप्त कर दिया। इस संधि के अंतर्गत लाहौर में एक ब्रिटिश रेजिडेंट नियुक्त किया गया, जिसे असीमित प्रशासनिक शक्तियाँ दी गईं। आठ सिख सरदारों की एक 'संरक्षक परिषद' बनाई गई, जिसे रेजिडेंट के अधीन कार्य करना था। इससे रानी जिंदाँ को सत्ता से दूर कर दिया गया और पंजाब पर ब्रिटिश नियंत्रण औपचारिक हो गया।

28. (2) ब्रिटिश भारतीय साम्राज्य में पंजाब का पूर्ण और तत्काल विलय।
प्रथम आंग्ल-सिख युद्ध के पश्चात पंजाब का पूर्ण विलय नहीं किया गया था, अपितु उसे एक आश्रित राज्य के रूप में रखा गया। क्षतिपूर्ति के रूप में सिखों को विशाल धनराशि देनी पड़ी और जालंधर दोआब का क्षेत्र अंग्रेजों को सौंपना पड़ा। सिख सेना की संख्या में भी कटौती की गई। पंजाब का पूर्ण विलय लॉर्ड डलहौजी ने द्वितीय युद्ध के पश्चात 1849 में किया था।

29. (2) केवल I, II और III
लाहौर की संधि ने दलीप सिंह को महाराजा और रानी जिंदाँ को उनकी संरक्षिका के रूप में मान्यता दी। अंग्रेजों ने सतलुज और ब्यास नदियों के मध्य के उपजाऊ क्षेत्र पर अधिकार कर लिया। युद्ध हर्जाने की भारी राशि न चुका पाने के कारण सिखों को कश्मीर अंग्रेजों को देना पड़ा, जिसे बाद में गुलाब सिंह को बेच दिया गया। रानी जिंदाँ को भैरोवाल संधि द्वारा हटाया गया था।

30. (3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, और II, I की व्याख्या करता है।
प्रथम आंग्ल-सिख युद्ध में सामान्य सिख सैनिकों ने अपूर्व वीरता का परिचय दिया, किंतु उनके सेनापतियों, लाल सिंह और तेज सिंह, ने उनके साथ विश्वासघात किया। ये नेता गुप्त रूप से अंग्रेजों के संपर्क में थे और उन्होंने युद्ध के दौरान जानबूझकर रणनीतिक भूलें कीं। उनकी गद्दारी के कारण ही अनुकूल परिस्थितियों के बावजूद सिख सेना पराजित हुई। नेतृत्व की ईमानदारी युद्ध का परिणाम बदल सकती थी।

31. (1) मुल्तान में दीवान मूलराज का विद्रोह और दो ब्रिटिश अधिकारियों की हत्या।
द्वितीय आंग्ल-सिख युद्ध का तात्कालिक कारण मुल्तान के गवर्नर दीवान मूलराज का विद्रोह था। भारी कर और पद छोड़ने के दबाव के कारण वहां असंतोष व्याप्त था। इस दौरान दो ब्रिटिश अधिकारियों, वेंस एग्न्यू और विलियम एंडरसन की हत्या कर दी गई। लॉर्ड डलहौजी ने इस स्थानीय घटना को पूरे पंजाब का विद्रोह मानकर युद्ध की घोषणा कर दी और सैन्य कार्रवाई प्रारंभ की।

NODIA

32. (1) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
द्वितीय आंग्ल-सिख युद्ध में विभिन्न पात्रों की महत्वपूर्ण भूमिका थी। दीवान मूलराज ने मुल्तान में विद्रोह का नेतृत्व किया, जबकि चत्तर सिंह अटारीवाला ने हजारा क्षेत्र में अंग्रेजों का प्रतिरोध किया। ब्रिटिश अधिकारी वेंस एग्न्यू की हत्या युद्ध का तात्कालिक कारण बनी। लॉर्ड डलहौजी ने इस अवसर का लाभ उठाकर सिखों के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की और अंततः पंजाब का पूर्ण विलय कर लिया।

33. (2) लॉर्ड डलहौजी युद्ध में सम्मिलित होने के लिए अनिच्छुक थे और उन्होंने सिख विद्रोहियों को शांत करने के लिए सभी कूटनीतिक साधनों का प्रयास किया।
लॉर्ड डलहौजी पंजाब के पूर्ण विलय के प्रबल पक्षधर थे और वे युद्ध हेतु तनिक भी अनिच्छुक नहीं थे। मुल्तान विद्रोह होते ही उन्होंने कूटनीतिक समाधान के स्थान पर सैन्य शक्ति को प्राथमिकता दी। उन्होंने स्पष्ट रूप से पंजाब को ब्रिटिश साम्राज्य का अंग बनाने की घोषणा की थी। रानी जिंदाँ का निर्वासन और सैनिकों का रोष सिखों के बीच व्याप्त असंतोष के वास्तविक ऐतिहासिक कारण थे।

II. ग्वालियर के सिंधिया और इंदौर के होल्कर जैसे देशी रियासतों के शासकों ने विद्रोही सेना का सक्रिय नेतृत्व किया।
III. अंग्रेजों के पास बेहतर हथियार और अच्छी संचार प्रणाली थी।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

26. किस ब्रिटिश राजनीतिज्ञ ने हाउस ऑफ कॉमन्स में 1857 के विद्रोह को एक "राष्ट्रीय विद्रोह" के रूप में वर्णित किया था?
(1) बेंजामिन डिज़रायली
(2) लॉर्ड पामर्स्टन
(3) विलियम ग्लैडस्टोन
(4) विंस्टन चर्चिल
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

27. ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन के अंत को चिह्नित करने वाली प्रसिद्ध 'महारानी की उद्घोषणा' 1 नवंबर, 1858 को किस स्थान पर पढ़ी गई थी?
(1) कलकत्ता
(2) दिल्ली
(3) बॉम्बे
(4) इलाहाबाद
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

28. 1857 के विद्रोह के परिणामों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. भारत सरकार अधिनियम 1858 ने बोर्ड ऑफ कंट्रोल और कोर्ट ऑफ डायरेक्टर्स को समाप्त कर दिया।
II. 'भारत के राज्य सचिव' का पद बनाया गया।
III. अंग्रेजों ने भारतीय रियासतों के विलय की नीति को त्याग दिया।
IV. ब्रिटिश भारतीय सेना में भारतीय सैनिकों का अनुपात अत्यधिक बढ़ा दिया गया।
V. ब्रिटिश क्राउन ने भारतीय लोगों के धार्मिक विश्वासों में हस्तक्षेप न करने का वादा किया।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) I, II, III और V
(2) I, II, IV और V
(3) II, III, IV और V
(4) I, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

29. 1857 के विद्रोह के दौरान उनके रुख के संदर्भ में निम्नलिखित शासकों में से कौन सा अन्य से भिन्न था?
(1) कश्मीर के महाराजा गुलाब सिंह
(2) हैदराबाद के सालार जंग
(3) आऊवा के ठाकुर कुशाल सिंह
(4) भोपाल के नवाब
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

30. सूची I में लेखकों को सूची II में 1857 के विद्रोह पर आधारित उनकी पुस्तकों के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: लेखक
A. वी. डी. सावरकर
B. एस. एन. सेन
C. आर. सी. मजूमदार
D. सैयद अहमद खान

सूची II: 1857 के विद्रोह पर पुस्तकें
i. द सिपाही म्यूटिनी एंड द रिबेलियन ऑफ 1857
ii. एटीन फिफ्टी-सेवन
iii. द इंडियन वार ऑफ इंडिपेंडेंस
iv. असबाब-ए-बगावत-ए-हिंद

(1) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(2) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(3) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

31. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: 1857 के विद्रोह के बाद, अंग्रेजों ने भारतीय सेना का मौलिक रूप से पुनर्गठन किया।
कथन II: पील कमीशन ने भारतीय सैनिकों की तुलना में ब्रिटिश सैनिकों का अनुपात बढ़ाने और तोपखाने पर ब्रिटिश नियंत्रण बनाए रखने की सिफारिश की।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं और कथन II, कथन I की सही व्याख्या करता है।
(2) कथन I और कथन II दोनों सही हैं लेकिन कथन II, कथन I की सही व्याख्या नहीं करता है।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

32. निम्नलिखित अभिकथन (A) और कारण (R) को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): 1857 के विद्रोह को अक्सर भारतीय स्वतंत्रता का पहला युद्ध माना जाता है।
कारण (R): यह पहला अवसर था जहाँ सैनिकों, किसानों और शासकों ने ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेंकने के लिए बड़े पैमाने पर एकजुट होकर संघर्ष किया।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Downloaded from www.pdf.tube

45. (3) 1834 में ईस्ट इंडिया कंपनी का 'कोर्ट ऑफ डायरेक्टर्स'।
यद्यपि लॉर्ड डलहौजी ने व्यपगत के सिद्धांत को आक्रामक रूप से लागू किया, किंतु इसकी मूल अवधारणा 1834 में ही ईस्ट इंडिया कंपनी के 'कोर्ट ऑफ डायरेक्टर्स' ने स्पष्ट कर दी थी। उन्होंने निर्देश दिया था कि आश्रित राज्यों में गोद लेने की अनुमति केवल एक 'अनुग्रह' है, अधिकार नहीं। डलहौजी ने इसी विचार को एक व्यवस्थित विस्तारवादी नीति के रूप में उपयोग कर साम्राज्य की सीमाएं बढ़ाईं।

46. (4) वाजिद अली शाह - संबलपुर
संबलपुर का विलय 1849 में वहां के शासक नारायण सिंह की नि:संतान मृत्यु के कारण हुआ था। वाजिद अली शाह अवध के अंतिम नवाब थे और उनके राज्य का विलय 1856 में 'कुशासन' के आधार पर किया गया था, न कि व्यपगत के सिद्धांत के तहत। अन्य सभी विकल्प सही सुमेलित हैं: अप्पा साहिब सतारा के, गंगाधर राव झाँसी के और रघुजी भोंसले III नागपुर के शासक थे।

47. (1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
1854 में नागपुर का विलय ब्रिटिश कंपनी के लिए आर्थिक दृष्टि से अत्यंत लाभकारी रहा। नागपुर का क्षेत्र कपास के उत्पादन हेतु प्रसिद्ध था। इंग्लैंड की कपड़ा मिलों को कच्चे कपास की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित करने हेतु डलहौजी ने इस विलय को प्राथमिकता दी। इस प्रकार, राजनीतिक विस्तार के साथ-साथ अंग्रेजों ने भारत के प्राकृतिक और आर्थिक संसाधनों पर पूर्ण नियंत्रण स्थापित करने की नीति अपनाई।

48. (2) अवध
लॉर्ड डलहौजी ने अवध का विलय व्यपगत के सिद्धांत के अंतर्गत नहीं, अपितु 'कुशासन' के आधार पर किया था। नवाब वाजिद अली शाह के पास प्राकृतिक उत्तराधिकारी मौजूद थे, अतः वहां गोद लेने का विवाद नहीं था। सतारा, बघाट और उदयपुर जैसे राज्यों का विलय सीधे तौर पर व्यपगत के सिद्धांत के कारण हुआ था। अवध का मामला अंग्रेजों की साम्राज्यवादी नीति का एक विशिष्ट उदाहरण था।

49. (1) केवल I, II और IV
सतारा 1848 में व्यपगत के सिद्धांत द्वारा विलय किया गया प्रथम राज्य था। अंग्रेजों ने 1818 में मराठों की पराजय के पश्चात इस राज्य को पुनर्जीवित किया था। राजा अप्पा साहिब के नि:संतान होने के कारण उन्होंने एक पुत्र गोद लिया, जिसे डलहौजी ने मान्यता देने से मना कर दिया। 'कोर्ट ऑफ डायरेक्टर्स' ने इस विलय का पूर्ण समर्थन किया। अतः तीसरा कथन ऐतिहासिक रूप से गलत है।

50. (1) झाँसी की एक आश्रित राज्य के रूप में स्थिति ने सर्वोपरि शक्ति को राजनीतिक उत्तराधिकारी को गोद लेने की अनुमति देने से इनकार करने का अधिकार दिया।
राजा गंगाधर राव की मृत्यु के पश्चात रानी लक्ष्मीबाई ने दामोदर राव को गोद लिया था। लॉर्ड डलहौजी ने तर्क दिया कि झाँसी ब्रिटिश सरकार द्वारा सृजित एक अधीनस्थ राज्य था, इसलिए उत्तराधिकार हेतु ब्रिटिश अनुमति अनिवार्य थी। उन्होंने गोद लेने की प्रक्रिया को अवैध घोषित कर झाँसी को ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया। इस अन्यायपूर्ण निर्णय ने ही रानी लक्ष्मीबाई को विद्रोह हेतु प्रेरित किया था।

51. (3) ऑट्रम रिपोर्ट
अवध के विलय का मुख्य आधार जेम्स ऑट्रम द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट थी। इस रिपोर्ट में अवध के प्रशासन में व्याप्त भ्रष्टाचार और अव्यवस्था का बढ़ा-चढ़ाकर विवरण दिया गया था। अंग्रेजों ने इसी कुशासन को समाप्त करने का बहाना बनाकर साम्राज्यवादी विस्तार किया। हालांकि कर्नल स्लीमैन ने भी प्रारंभिक विवरण दिए थे, किंतु ऑट्रम की रिपोर्ट ने विलय का अंतिम वैधानिक आधार तैयार किया।

52. (1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
अवध विलय की प्रक्रिया में कई व्यक्तियों का योगदान था। नवाब वाजिद अली शाह अंतिम शासक थे जिन्हें निर्वासित किया गया। कर्नल स्लीमैन ने रेजिडेंट के रूप में वहां की अव्यवस्था पर प्रारंभिक रिपोर्ट दी थी। जेम्स ऑट्रम ने वह निर्णायक रिपोर्ट तैयार की जिसे आधार बनाकर 1856 में लॉर्ड डलहौजी ने अवध का पूर्ण ब्रिटिश विलय सफलतापूर्वक संपन्न किया।

53. (4) 1856
अवध का ब्रिटिश साम्राज्य में औपचारिक विलय फरवरी 1856 में हुआ। यह लॉर्ड डलहौजी के कार्यकाल का अंतिम बड़ा विस्तार था। यद्यपि अवध लंबे समय से अंग्रेजों का निष्ठावान सहयोगी रहा था, फिर भी कुशासन का आरोप लगाकर उसे छीन लिया गया। इस घटना ने अवध की जनता और ब्रिटिश सेना में सेवारत वहां के सिपाहियों को अत्यंत आहत किया, जो 1857 के विद्रोह का मुख्य कारण बना।

NODIA

54. (2) इसका विलय कड़ाई से व्यपगत के सिद्धांत के प्रावधानों के तहत किया गया था।
अवध का विलय व्यपगत के सिद्धांत के तहत नहीं हुआ था, क्योंकि नवाब के पास उत्तराधिकारी थे। अंग्रेजों ने इसके लिए 'कुशासन' का आधार प्रस्तुत किया था। नवाब वाजिद अली शाह ने इस विलय का कड़ा विरोध किया और संधि पर हस्ताक्षर करने से मना कर दिया। उन्हें वार्षिक पेंशन देकर कलकत्ता भेज दिया गया। यह विलय डलहौजी की साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षा का चरम उदाहरण था।

55. (1) कथन I सही है और कथन II गलत है।
बंगाल सेना के अधिकांश सिपाही अवध की उच्च जातियों से थे, इसलिए इसे 'बंगाल सेना की पौधशाला' कहा जाता था। अवध के विलय ने इन सिपाहियों की स्थिति को और बिगाड़ दिया। उनके गांवों में उनकी पारंपरिक सामाजिक प्रतिष्ठा कम हो गई और उन्हें नई ब्रिटिश राजस्व प्रणाली के कठोर करों का सामना करना पड़ा। उनके विशेषाधिकार समाप्त होने से उनमें अंग्रेजों के प्रति गहरा आक्रोश व्याप्त हो गया।

8. मेरठ में विद्रोह के शुरु होने के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. विद्रोह आधिकारिक तौर पर 10 मई 1857 को शुरु हुआ था।
II. तीसरी नेटिव कैवेलरी के सिपाहियों ने मेरठ में सबसे पहले चर्बीयुक्त कारतूसों के इस्तेमाल से इनकार किया था।
III. विद्रोही मेरठ जेल तोड़ने के तुरंत बाद आगरा की ओर कूच कर गए।
IV. जनरल हेविट मेरठ में मुख्य ब्रिटिश अधिकारी थे जो विद्रोहियों के मार्च को रोकने में विफल रहे।
V. मेरठ का विद्रोह मंगल पांडे की फांसी से पहले हुआ था।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) I, II और IV
(2) I, III और V
(3) II, III और IV
(4) I, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

9. राजस्थान में 1857 के विद्रोह के संदर्भ में, विद्रोह का प्रथम विस्फोट कहाँ हुआ था?
(1) नीमच
(2) एरिनपुरा
(3) नसीराबाद
(4) कोटा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

10. सूची I में दिए गए 1857 के विद्रोह के नेताओं को सूची II में दिए गए विद्रोह के केंद्रों के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: 1857 के विद्रोह के नेता
A. बेगम हज़रत महल
B. नाना साहेब
C. खान बहादुर खान
D. कुंवर सिंह
सूची II: विद्रोह के केंद्र
i. कानपुर
ii. लखनऊ
iii. बिहार
iv. बरेली
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

11. हालाँकि बहादुर शाह ज़फ़र दिल्ली में विद्रोह के प्रतीकात्मक प्रमुख थे, लेकिन वास्तविक कार्यकारी शक्तियों का प्रयोग सैनिकों और नागरिकों की एक परिषद द्वारा किया जाता था। इस परिषद का प्रमुख कौन था?
(1) हकीम अहसानुल्लाह
(2) मिर्जा मुगल
(3) अजीमुल्लाह खान
(4) जनरल बख्त खान
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

12. निम्नलिखित अभिकथन (A) और कारण (R) को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): 1857 के विद्रोहियों ने अपने आंदोलन का नेतृत्व करने के लिए स्वाभाविक रूप से बहादुर शाह ज़फ़र की ओर रुख किया।
कारण (R): मुगल सम्राट के पास एक शक्तिशाली सैन्य बल था जो उत्तरी भारत से अंग्रेजों को बाहर निकालने में सक्षम था।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

13. 1857 के विद्रोह के दौरान कानपुर की घटनाओं के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) नाना साहेब पेशवा बाजीराव द्वितीय के दत्तक पुत्र थे।
(2) सर ह्यू व्हीलर ने उस सैन्य टुकड़ी की कमान संभाली थी जिसने नाना साहेब के सामने आत्मसमर्पण किया था।
(3) नाना साहेब ने दिसंबर 1857 में अंग्रेजों से सफलतापूर्वक कानपुर पुनः छीन लिया और 1860 तक वहां शासन किया।
(4) तांत्या टोपे ने नाना साहेब के सैन्य अभियानों के नेतृत्व में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

14. 'ब्रिटिश अधिकारी' और 'दमन के केंद्र' का निम्नलिखित में से कौन सा जोड़ा सही सुमेलित है?
(1) जॉन निकोलसन - झाँसी
(2) सर ह्यू रोज़ - दिल्ली
(3) मेजर विलियम टेलर - बरेली
(4) सर कोलिन कैंपबेल - लखनऊ
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

15. लखनऊ की घेराबंदी के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. ब्रिटिश रेजिडेंट सर हेनरी लॉरेंस रेजिडेंसी की घेराबंदी के दौरान मारे गए थे।
II. बेगम हज़रत महल ने अपने अल्पवयस्क पुत्र बिरजिस कादिर को नवाब घोषित किया था।
III. जंग बहादुर के नेतृत्व वाली गोरखा रेजीमेंटों ने लखनऊ को पुनः जीतने में अंग्रेजों की सहायता करने से इनकार कर दिया था।
IV. जनरल हैवलॉक और सर जेम्स आउट्रम ने जून 1857 में बिना किसी लड़ाई के सभी ब्रिटिश नागरिकों को सफलतापूर्वक वहां से निकाल लिया था।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?

Click Here to Buy book on Amazon

करना पड़ा। इस वैधानिक और सामाजिक गिरावट ने सिपाहियों के मन में अंग्रेजों के प्रति गहरी कड़वाहट पैदा की।

67. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
लॉर्ड डलहौजी की विस्तारवादी नीतियों ने भारतीय शासकों में व्यापक भय और अविश्वास उत्पन्न कर दिया था। व्यपगत के सिद्धांत और अवध के अधिग्रहण ने यह स्पष्ट कर दिया कि कोई भी राज्य सुरक्षित नहीं है। इसने उन शासकों को भी अंग्रेजों का शत्रु बना दिया जो पहले निष्ठावान थे। यही राजनीतिक असुरक्षा 1857 के विद्रोह का मुख्य कारण बनी, जिसमें कई विस्थापित राजाओं ने भाग लिया।

68. (3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, और II, I की व्याख्या करता है।
भारतीयों को यह संदेह था कि ब्रिटिश शासन उनकी धार्मिक मान्यताओं को नष्ट कर ईसाई धर्म थोपना चाहता है। रेलवे, टेलीग्राफ और पश्चिमी शिक्षा जैसी सुधारों को इसी सांस्कृतिक आक्रमण का हिस्सा माना गया। इन आधुनिक बदलावों को प्राचीन परंपराओं को समाप्त करने के षड्यंत्र के रुप में देखा गया। विलय की नीति और इन सामाजिक हस्तक्षेपों ने सामूहिक भय को बढ़ाकर विद्रोह की स्थितियाँ उत्पन्न कीं।

69. (1) केवल I, II और III
लॉर्ड डलहौजी की व्यपगत की नीति, अवध का विलय और पेंशन व उपाधियों की समाप्ति 1857 के विद्रोह हेतु प्रमुख रुप से उत्तरदायी थी। 'सहायक संधि प्रणाली' की शुरुआत लॉर्ड वेलेस्ली ने बहुत पहले की थी, न कि डलहौजी ने। यद्यपि डलहौजी ने पूर्व संधियों का लाभ उठाया, किंतु सहायक संधि उनकी मूल नीति नहीं थी। अन्य तीन नीतियां उनके साम्राज्यवादी दृष्टिकोण का परिणाम थीं।

70. (2) ग्वालियर के महाराजा जयाजीराव सिंधिया
1857 के विद्रोह के दौरान ग्वालियर के महाराजा जयाजीराव सिंधिया ने अंग्रेजों का साथ दिया और वे विद्रोहियों में सम्मिलित नहीं हुए। इसके विपरीत, रानी लक्ष्मीबाई, नाना साहिब और बेगम हजरत महल ने ब्रिटिश नीतियों और अपने राज्यों के विलय के विरुद्ध सशस्त्र संघर्ष का नेतृत्व किया। सिंधिया की निष्ठा अंग्रेजों के लिए अत्यंत सहायक सिद्ध हुई, जैसा कि स्वयं तत्कालीन गवर्नर-जनरल ने स्वीकार किया था।

71. (4) तीव्र सैन्य आवागमन और ब्रिटिश औद्योगिक उपयोग के लिए कच्चे माल की कुशल निकासी की सुविधा प्रदान करना।
लॉर्ड डलहौजी द्वारा भारत में रेलवे और टेलीग्राफ का विकास मुख्य रुप से ब्रिटिश आर्थिक और सैन्य हितों की पूर्ति हेतु किया गया था। रेलवे का उद्देश्य भारत के आंतरिक भागों से कच्चा माल बंदरगाहों तक पहुँचाना और ब्रिटिश निर्मित माल को बाजारों में फैलाना था। साथ ही, विद्रोह की स्थिति में तीव्र सैन्य आवागमन हेतु यह आवश्यक था। टेलीग्राफ ने प्रशासनिक संचार को सुदृढ़ कर साम्राज्य पर नियंत्रण बढ़ाया।

72. (1) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
लॉर्ड डलहौजी के कार्यकाल में महत्वपूर्ण तकनीकी और शैक्षिक प्रगति हुई। 1853 में बॉम्बे और ठाणे के मध्य प्रथम रेलवे लाइन प्रारंभ हुई। इसी वर्ष कलकत्ता और आगरा के बीच टेलीग्राफ सेवा शुरु हुई। 1854 के पोस्टल एक्ट ने आधुनिक डाक व्यवस्था की नींव रखी और 'वुड्स डिस्पैच' को भारतीय शिक्षा का मैग्रा कार्टा कहा गया। इन सुधारों ने आधुनिक भारत के ढांचे का निर्माण किया।

73. (3) सार्वजनिक निर्माण विभाग (PWD)
लॉर्ड डलहौजी ने बुनियादी ढांचे के विकास हेतु एक पृथक 'सार्वजनिक निर्माण विभाग' (PWD) की स्थापना की। इससे पूर्व यह कार्य सैन्य बोर्ड के अधीन था, जो नागरिक परियोजनाओं हेतु अनुपयुक्त था। डलहौजी ने सड़कों, नहरों और पुलों के निर्माण हेतु पर्याप्त संसाधन उपलब्ध कराए। गंगा नहर जैसी विशाल परियोजनाएं इसी विभाग के माध्यम से पूर्ण हुईं, जिससे भारत में आधुनिक अभियांत्रिकी को प्रोत्साहन मिला।

74. (1) विद्यालयों में स्थानीय भाषाओं के उपयोग पर पूर्ण प्रतिबंध, प्रत्येक शैक्षिक स्तर पर अंग्रेजी को अनिवार्य करना।
लॉर्ड डलहौजी की शैक्षिक नीति में स्थानीय भाषाओं पर पूर्ण प्रतिबंध नहीं था। 1854 के वुड्स डिस्पैच ने प्राथमिक स्तर पर स्थानीय भाषाओं में शिक्षा देने और उच्च स्तर पर अंग्रेजी को माध्यम बनाने की सिफारिश की थी। उन्होंने रुड़की में इंजीनियरिंग कॉलेज की स्थापना की और महिला शिक्षा का समर्थन किया। विश्वविद्यालयों की स्थापना का प्रस्ताव भी उन्हीं के काल में आया। अतः स्थानीय भाषाओं पर प्रतिबंध का कथन गलत है।

75. (4) बुनियादी ढाँचे और प्रशासनिक सुधार आधुनिक स्वरुप के थे लेकिन साम्राज्यवादी लक्ष्यों की पूर्ति करते थे, जिससे बड़े पैमाने पर प्रतिरोध हुआ।
लॉर्ड डलहौजी का व्यक्तित्व विरोधाभासी था; उन्होंने भारत में आधुनिक तकनीकी और प्रशासनिक प्रणालियों की नींव रखी, किंतु उनका मूल उद्देश्य ब्रिटिश साम्राज्यवाद को सुदृढ़ करना था। उनकी विस्तारवादी नीतियों और सामाजिक हस्तक्षेपों ने समाज के सभी वर्गों में असुरक्षा की भावना उत्पन्न की। इसी द्वंद्व के कारण उनके कार्यकाल में आधुनिकता का प्रारंभ तो हुआ, किंतु साथ ही 1857 के भीषण विद्रोह की परिस्थितियाँ भी निर्मित हुईं।

76. (2) भैरोवाल की संधि (1846) - लॉर्ड डलहौजी
भैरोवाल की संधि दिसंबर 1846 में संपन्न हुई थी, उस समय लॉर्ड हार्डिंग भारत के गवर्नर-जनरल थे, न कि लॉर्ड डलहौजी। डलहौजी ने 1848 में पदभार ग्रहण किया था। अमृतसर की संधि (1809) लॉर्ड मिंटो और लाहौर की संधि (1846) लॉर्ड हार्डिंग के समय की घटनाएँ हैं। त्रिपक्षीय संधि (1838) लॉर्ड ऑकलैंड के काल की है। अतः भैरोवाल की संधि का डलहौजी से मिलान ऐतिहासिक रुप से त्रुटिपूर्ण है।

Downloaded from www.pdf.tube

34. (1) केवल I और II
पंजाब के आंतरिक प्रशासन में ब्रिटिश रेजिडेंट के निरंतर हस्तक्षेप ने सिखों के स्वाभिमान को आहत किया। प्रथम युद्ध के पश्चात बड़ी संख्या में सिख सैनिकों को सेवामुक्त किए जाने से आर्थिक संकट और बेरोजगारी उत्पन्न हुई। इन रुष्ट सैनिकों ने अंग्रेजों के विरुद्ध शस्त्र उठाए। ब्रिटिश रेजिडेंट ने सिख पंचायतों की शक्तियां घटा दी थीं। अतः प्रथम दो कथन द्वितीय युद्ध के प्रमुख उत्तरदायी कारण थे।

35. (3) दोस्त मोहम्मद खान के नेतृत्व में अफगान
द्वितीय आंग्ल-सिख युद्ध के दौरान एक अनूठा राजनीतिक गठबंधन हुआ जब सिखों ने अपने पुराने शत्रु अफगान शासक दोस्त मोहम्मद खान से सहायता माँगी। अंग्रेजों को बाहर निकालने हेतु सिखों ने अफगानों को पेशावर देने का वचन दिया था। यद्यपि यह गठबंधन अधिक सफल नहीं रहा और गुजरात की लड़ाई में पराजय के पश्चात अफगानों को भी पीछे हटने हेतु विवश होना पड़ा।

36. (4) एक अनिर्णायक युद्ध जिसके परिणामस्वरूप ब्रिटिश सेना को अत्यधिक भारी क्षति हुई।
जनवरी 1849 की चिलियाँवाला की लड़ाई ब्रिटिश सैन्य इतिहास की अत्यंत विवादास्पद और महंगी लड़ाइयों में से एक है। लॉर्ड गफ के नेतृत्व में ब्रिटिश सेना को सिखों के भीषण प्रतिरोध का सामना करना पड़ा, जिससे उन्हें भारी जनहानि हुई। इस लड़ाई का परिणाम स्पष्ट नहीं रहा। अंग्रेजों की इस विफलता के कारण ब्रिटेन में लॉर्ड गफ की तीव्र आलोचना हुई और उन्हें पद से हटाने का निर्णय लिया गया।

37. (3) गुजरात की लड़ाई
21 फरवरी 1849 को हुई गुजरात की लड़ाई द्वितीय आंग्ल-सिख युद्ध का अंतिम और निर्णायक संघर्ष था। इसे 'तोपों की लड़ाई' भी कहा जाता है क्योंकि अंग्रेजों ने इसमें भारी तोपखाने का प्रयोग किया था। ब्रिटिश तोपों की मारक क्षमता ने सिख सेना को पूर्णतः छिन्न-भिन्न कर दिया। इस निर्णायक पराजय के साथ ही सिखों का प्रतिरोध समाप्त हो गया और पंजाब के विलय का मार्ग प्रशस्त हुआ।

38. (2) लॉर्ड ह्यू गफ
पंजाब के विलय के पश्चात लॉर्ड डलहौजी ने शासन हेतु तीन सदस्यीय प्रशासनिक बोर्ड का गठन किया। इसमें हेनरी लॉरेंस (अध्यक्ष), जॉन लॉरेंस और चार्ल्स मैन्सेल शामिल थे। लॉर्ड ह्यू गफ मुख्य सेनापति थे, वे इस बोर्ड के सदस्य नहीं थे। इस बोर्ड का मुख्य कार्य पंजाब में कानून-व्यवस्था स्थापित करना और नई प्रशासनिक एवं राजस्व प्रणाली को लागू करना था।

39. (1) केवल I, II, III और IV
द्वितीय आंग्ल-सिख युद्ध के पश्चात 1849 में लॉर्ड डलहौजी ने पंजाब का विलय किया। महाराजा दलीप सिंह को पेंशन देकर शिक्षा हेतु इंग्लैंड भेज दिया गया और प्रसिद्ध कोहिनूर हीरा अंग्रेजों ने अपने अधिकार में ले लिया। खालसा सेना को ब्रिटिश सेना में सम्मिलित नहीं किया गया, अपितु उसे पूर्णतः भंग कर दिया गया था। अतः पांचवां कथन ऐतिहासिक रूप से असत्य है।

40. (1) प्रशासनिक बोर्ड को समाप्त कर दिया गया और जॉन लॉरेंस को पहले मुख्य आयुक्त (चीफ कमिश्नर) के रूप में नियुक्त किया गया।
1849 में स्थापित प्रशासनिक बोर्ड के सदस्यों, विशेषकर हेनरी और जॉन लॉरेंस के मध्य गंभीर वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो गए थे। इसके समाधान हेतु लॉर्ड डलहौजी ने 1853 में बोर्ड को भंग कर दिया। उन्होंने पंजाब का प्रशासन एक व्यक्ति के अधीन करते हुए जॉन लॉरेंस को प्रथम मुख्य आयुक्त नियुक्त किया। इस परिवर्तन से पंजाब में ब्रिटिश शासन अधिक सुसंगठित और प्रभावशाली हो गया।

41. (3) यह मान्यता कि उत्तराधिकारी व्यक्तिगत संपत्ति के वारिस तो हो सकते हैं लेकिन राजनीतिक अधिकारों के उत्तराधिकार के लिए ब्रिटिश सहमति आवश्यक थी।
लॉर्ड डलहौजी की व्यपगत के सिद्धांत की नीति इस तर्क पर आधारित थी कि एक दत्तक पुत्र अपने पिता की व्यक्तिगत संपत्ति का उत्तराधिकारी तो हो सकता है, किंतु वह राज्य या राजनीतिक पद का स्वामी नहीं बन सकता। इसके लिए ब्रिटिश सरकार की पूर्व अनुमति अनिवार्य थी। इस नीति का उद्देश्य उन भारतीय राज्यों को हड़पना था जिनका कोई प्राकृतिक उत्तराधिकारी नहीं था।

42. (1) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
लॉर्ड डलहौजी ने व्यपगत के सिद्धांत द्वारा कई राज्यों का विलय किया। सर्वप्रथम 1848 में सतारा का विलय हुआ। इसके पश्चात 1849 में जैतपुर और संबलपुर को अधिग्रहित किया गया। 1853 में राजा गंगाधर राव की मृत्यु के बाद झाँसी का विलय हुआ और 1854 में प्राकृतिक उत्तराधिकारी के अभाव में नागपुर को ब्रिटिश साम्राज्य में सम्मिलित कर लिया गया।

43. (1) कथन I सही है और कथन II गलत है।
व्यपगत का सिद्धांत मुख्य रूप से उन 'आश्रित' राज्यों पर लागू था जिनका सृजन ब्रिटिश सरकार ने किया था। डलहौजी ने राज्यों को तीन श्रेणियों में विभाजित किया था और यह नीति स्वतंत्र रियासतों पर समान रूप से लागू नहीं थी। स्वतंत्र सहयोगी राज्यों के मामले में गोद लेने की परंपरा को सामान्यतः मान्यता प्राप्त थी। अतः यह कहना कि इसे सभी राज्यों पर अनिवार्य रूप से लागू किया गया, गलत है।

44. (2) स्वतंत्र राज्य जो कभी किसी सर्वोपरि शक्ति के अधीनस्थ नहीं रहे थे।
डलहौजी की नीति के अनुसार, जो राज्य पूर्णतः स्वतंत्र थे और कभी मुगलों या मराठों के अधीन नहीं रहे थे, उन्हें उत्तराधिकारी गोद लेने का पूर्ण अधिकार था। इसके लिए ब्रिटिश सहमति की आवश्यकता नहीं थी। अन्य दो श्रेणियों (अधीनस्थ और संरक्षित) हेतु ब्रिटिश अनुमति अनिवार्य थी। यह वर्गीकरण अंग्रेजों को भारतीय रियासतों के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप और विलय का वैधानिक अवसर प्रदान करता था।

NODIA

अध्याय 17

1857 का विद्रोह

1. निम्नलिखित में से कौन सी ब्रिटिश नीति वह प्राथमिक राजनीतिक कारण थी जिसने 1857 के विद्रोह से पहले कई भारतीय शासकों को असंतुष्ट कर दिया था?
   (1) सहायक संधि
   (2) व्यपगत का सिद्धांत
   (3) स्थायी बंदोबस्त
   (4) घेरे की नीति
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

2. 1857 के विद्रोह के आर्थिक कारणों के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
   (1) ब्रिटिश शुल्क नीति ने भारत में ब्रिटिश निर्मित वस्तुओं के आयात को गंभीर रूप से प्रतिबंधित कर दिया था।
   (2) नई राजस्व व्यवस्था के तहत भारी कराधान ने किसानों को निर्धन बना दिया था।
   (3) पारंपरिक भारतीय हस्तशिल्प के विनाश के कारण कारीगरों के बीच बड़े पैमाने पर बेरोजगारी फैल गई।
   (4) भारतीय राज्यों के विलय के परिणामस्वरूप पारंपरिक विद्वानों और कलाकारों को प्राप्त संरक्षण की हानि हुई।
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

3. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
   कथन I: 1856 के सामान्य सेवा भर्ती अधिनियम ने उच्च जाति के हिंदू सिपाहियों में भारी आक्रोश पैदा किया।
   कथन II: इस अधिनियम के तहत यह अनिवार्य कर दिया गया था कि बंगाल सेना के सभी भविष्य के नए सैनिकों को ब्रिटिश सरकार की आवश्यकतानुसार समुद्र पार सहित कहीं भी सेवा देनी होगी।
   (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं और कथन II, कथन I की सही व्याख्या करता है।
   (2) कथन I और कथन II दोनों सही हैं लेकिन कथन II, कथन I की सही व्याख्या नहीं करता है।
   (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
   (4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

4. धार्मिक कारणों के संदर्भ में, 1850 के धार्मिक अक्षमता अधिनियम का प्राथमिक प्रभाव क्या था?
   (1) इसने सभी ब्रिटिश भारतीय क्षेत्रों में सती प्रथा को कड़ाई से प्रतिबंधित कर दिया।
   (2) इसने विभिन्न भारतीय प्रांतों में उच्च जाति के हिंदू समुदायों के बीच विधवा पुनर्विवाह को कानूनी मान्यता प्रदान की।
   (3) इसने सैन्य छावनियों की सीमाओं के भीतर ईसाई प्रचारकों के सक्रिय प्रचार पर प्रतिबंध लगा दिया।
   (4) इसने ईसाई धर्म अपनाने वाले व्यक्तियों को मौजूदा रीति-रिवाजों के बावजूद पैतृक संपत्ति प्राप्त करने की अनुमति दी।
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

5. 1857 के विद्रोह से पूर्व सैन्य शिकायतों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
   I. भारतीय सिपाहियों को सिंध जैसे नए विलय किए गए क्षेत्रों में सेवा करते समय विदेशी सेवा भत्ता देने से मना कर दिया गया था।
   II. 1854 के डाकघर अधिनियम ने सिपाहियों को पहले प्राप्त मुफ्त डाक की सुविधा को समाप्त कर दिया।
   III. भारतीय सिपाही ब्रिगेडियर जनरल के पद तक पदोन्नति के पात्र थे।
   उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
   (1) केवल I और II
   (2) केवल II और III
   (3) केवल I और III
   (4) I, II और III
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

6. निम्नलिखित में से किस घटना ने 1857 से पहले ब्रिटिश अपराजेयता के भ्रम को तोड़ने में योगदान नहीं दिया?
   (1) प्रथम अफ़ग़ान युद्ध (1838-42)
   (2) तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध (1817-18)
   (3) पंजाब युद्ध (1845-49)
   (4) क्रीमिया का युद्ध (1854-56)
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

7. 1857 के विद्रोह का तात्कालिक कारण नई एनफील्ड राइफल की शुरुआत थी। ब्रिटिश भारतीय सेना में इस राइफल को निम्नलिखित में से किस पुरानी बंदूक के स्थान पर लाया गया था?
   (1) स्नाइडर-एनफील्ड
   (2) मार्टिनी-हेनरी
   (3) स्पेंसर रिपीटिंग राइफल
   (4) ब्राउन बेस
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Click Here to Buy book on Amazon

56. (1) देशी शाही दरबारों के विनाश से विलासिता की वस्तुओं और पारंपरिक शिल्प के प्राथमिक संरक्षकों का अंत हो गया।
भारतीय राज्यों के विलय से वहां के शाही दरबार समाप्त हो गए, जो स्थानीय शिल्पकारों और कारीगरों के मुख्य संरक्षक थे। विलासिता की वस्तुओं और पारंपरिक हथियारों की मांग अचानक समाप्त हो गई। ब्रिटिश शासन ने स्वदेशी उद्योगों के स्थान पर मशीनों से बने विदेशी माल को बढ़ावा दिया। इसके फलस्वरूप लाखों कुशल कारीगर अपनी आजीविका खोकर निर्धनता और कृषि पर निर्भर होने के लिए विवश हो गए।

57. (1) A, D, B, C
नए क्षेत्रों की विजय के पश्चात ब्रिटिश प्रशासन एक निश्चित क्रम अपनाता था। सर्वप्रथम सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु देशी सेना को भंग किया जाता था। तत्पश्चात शासन हेतु प्रशासनिक बोर्ड या आयुक्त की नियुक्ति होती थी। इसके बाद आय हेतु भू-राजस्व बंदोबस्त लागू किए जाते थे और अंत में अर्थव्यवस्था को ब्रिटिश हितों के अनुकूल बनाने हेतु कृषि का व्यवसायीकरण किया जाता था।

58. (1) हजारों कर-मुक्त जागीरों और संपदाओं की जब्ती।
1852 में लॉर्ड डलहौजी द्वारा बॉम्बे प्रेसीडेंसी में गठित इनाम कमीशन का मुख्य उद्देश्य कर-मुक्त भूमियों के स्वामित्व की जाँच करना था। इस आयोग ने हजारों जागीरदारों से स्वामित्व के प्राचीन प्रमाण मांगे। पर्याप्त दस्तावेज न होने पर उनकी जागीरें जब्त कर ली गईं। इस कठोर कार्यवाही ने पारंपरिक भू-स्वामी वर्ग को आर्थिक रूप से तबाह कर दिया, जिससे उनमें ब्रिटिश शासन के विरुद्ध तीव्र रोष उत्पन्न हुआ।

59. (1) केवल I, II, III और V
ब्रिटिश विलय की नीतियों ने भारतीय समाज पर गंभीर प्रभाव डाला। विसैन्यीकरण से लाखों सैनिक बेरोजगार हुए और नई राजस्व प्रणाली ने किसानों को साहूकारों के जाल में फँसा दिया। पारंपरिक जमींदारों की उपेक्षा से ग्रामीण सामाजिक ढांचा बिखर गया। कुलीन वर्ग ने अपनी शक्ति खो दी। हालांकि, विलय से भारत में कोई औद्योगिक विकास नहीं हुआ, अपितु भारत कच्चे माल का निर्यातक मात्र बनकर रह गया।

60. (2) ताल्लुकदारों को संपदाओं से वंचित करना ताकि खेती करने वालों को भूमि दी जा सके, साथ ही राजस्व की मांग का अत्यधिक निर्धारण करना।
1856 के एकमुश्त बंदोबस्त का लक्ष्य अवध के शक्तिशाली ताल्लुकदारों के प्रभाव को समाप्त करना था। अंग्रेजों ने उन्हें बिचौलिया मानकर भूमि सीधे किसानों को देने का प्रयास किया, किंतु राजस्व की दरें अत्यधिक ऊँची रखीं। इससे किसान और ताल्लुकदार दोनों असंतुष्ट हुए। अपनी पैतृक भूमि और अधिकार खोने के कारण ताल्लुकदार ब्रिटिश प्रशासन के कट्टर शत्रु बन गए और बाद में विद्रोह का नेतृत्व किया।

61. (3) उन्हें स्थानीय प्रतिष्ठा की भारी हानि हुई और वे 1857 के दौरान rural विद्रोह के सक्रिय नेता बन गए।
अवध के ताल्लुकदारों ने ब्रिटिश नीतियों के कारण अपनी संपत्ति के साथ-साथ सामाजिक सम्मान भी खो दिया। वे सदियों से अपने क्षेत्रों के संरक्षक थे। किलों के विनाश और भूमि के छीने जाने ने उन्हें अपमानित किया। जब 1857 का संग्राम प्रारंभ हुआ, तो इन ताल्लुकदारों ने ग्रामीण जनता को संगठित किया और अंग्रेजों के विरुद्ध सशस्त्र विद्रोह का नेतृत्व कर इसे एक जन-आंदोलन बना दिया।

62. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
ब्रिटिश नीतियों ने समाज के विभिन्न वर्गों को प्रभावित किया। 1856 के राजस्व बंदोबस्त ने ताल्लुकदारों की आर्थिक शक्ति को चोट पहुँचाई। सेना के विघटन से सैन्य वर्ग बेरोजगार हुआ। शाही दरबारों के पतन से शिल्पकारों की आजीविका छिन गई और व्यपगत के सिद्धांत ने राजकुमारों के उत्तराधिकार अधिकारों को समाप्त कर दिया। इन सभी समूहों के सामूहिक असंतोष ने ही 1857 के महान विद्रोह की पृष्ठभूमि तैयार की।

63. (1) हैदराबाद के निजाम की उपाधि
लॉर्ड डलहौजी ने कई शासकों की पेंशन और उपाधियाँ समाप्त की थीं। उन्होंने नाना साहिब की पेंशन रोक दी और कर्नाटक तथा तंजौर के राजाओं की उपाधियाँ समाप्त कर दीं। हालांकि, हैदराबाद के निजाम की उपाधि कभी समाप्त नहीं की गई थी। निजाम के साथ डलहौजी ने केवल ऋण चुकाने हेतु क्षेत्रों के हस्तांतरण के समझौते किए थे। अतः निजाम का उदाहरण इस संदर्भ में अन्य से भिन्न है।

64. (1) केवल I और II
लॉर्ड डलहौजी ने नाना साहिब की पेंशन बंद कर मराठा भावनाओं को आहत किया। उन्होंने मुगल सम्राट बहादुर शाह जफर के उत्तराधिकारियों को लाल किले से बेदखल करने की योजना बनाई, जो मुगलों का सीधा अपमान था। उन्होंने दक्कन के मुस्लिम अभिजात वर्ग के अधिकारों को सुरक्षित करने के स्थान पर इनाम कमीशन के माध्यम से उनकी संपत्तियाँ छीन लीं। अतः तीसरा कथन उनके वास्तविक कार्यों के विपरीत होने से गलत है।

NODIA

65. (2) C, A, D, B
डलहौजी के काल में राज्यों के विलय का कालक्रम अत्यंत महत्वपूर्ण है। सर्वप्रथम 1848 में सतारा का विलय हुआ, जो व्यपगत के सिद्धांत का प्रथम शिकार बना। इसके पश्चात 1853 में झाँसी और 1854 में नागपुर को ब्रिटिश साम्राज्य में मिलाया गया। सबसे अंत में 1856 में 'कुशासन' के आधार पर अवध का विलय हुआ। इन घटनाओं ने भारतीय रियासतों में ब्रिटिश विरोधी भावनाओं को तीव्र कर दिया।

66. (1) अवध में सिपाहियों के परिवारों के लिए विशेष वैधानिक विशेषाधिकारों को हटाना, जिससे व्यापक असंतोष उत्पन्न हुआ।
अवध के विलय से पूर्व वहां के सिपाहियों को ब्रिटिश अदालतों में विशेष कानूनी सुविधाएं और प्राथमिकता प्राप्त थी। विलय के पश्चात अवध को सामान्य प्रांत बनाने से ये विशेषाधिकार समाप्त हो गए। अब सिपाहियों को भी सामान्य नागरिकों की भाँति जटिल कानूनी प्रक्रियाओं और भारी करों का सामना

(1) केवल I और II
(2) केवल III और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) केवल I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

16. झाँसी का विलय, जिससे रानी लक्ष्मीबाई में आक्रोश पैदा हुआ, व्यपगत के सिद्धांत के तहत किस वर्ष हुआ था?
(1) 1848
(2) 1851
(3) 1853
(4) 1856
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

17. अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह में रानी लक्ष्मीबाई के शामिल होने का सबसे प्रमुख कारण क्या था?
(1) झाँसी के स्थानीय किसानों पर अंग्रेजों द्वारा अत्यधिक भू-राजस्व की मांग थोपना।
(2) अंग्रेजों द्वारा उनके दत्तक पुत्र को झाँसी के वैध उत्तराधिकारी के रूप में मान्यता देने से इनकार करना।
(3) झाँसी सैन्य टुकड़ी के विद्रोही सिपाहियों द्वारा उन्हें नेतृत्व करने के लिए मजबूर करना।
(4) क्षेत्र के विलय के बाद अंग्रेजों द्वारा उनके व्यक्तिगत पेंशन को देने से मना करना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

18. निम्नलिखित केंद्रों पर 1857 के विद्रोह के शुरु होने का सही कालानुक्रमिक क्रम चुनिए:
(1) बैरकपुर, मेरठ, दिल्ली, लखनऊ
(2) मेरठ, बैरकपुर, लखनऊ, दिल्ली
(3) दिल्ली, मेरठ, बैरकपुर, लखनऊ
(4) बैरकपुर, दिल्ली, मेरठ, लखनऊ
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

19. खान बहादुर खान, जिन्होंने 1857 के विद्रोह के दौरान ब्रिटिश सेना का कड़ा प्रतिरोध किया, किस क्षेत्र से संबंधित थे?
(1) अवध
(2) बुंदेलखंड
(3) रुहेलखंड
(4) दोआब
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

20. सूची I में ब्रिटिश दमनकारियों को सूची II में उनके कार्य क्षेत्रों के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: ब्रिटिश दमनकारी
A. जॉन निकोलसन
B. सर ह्यू रोज़
C. विलियम टेलर
D. कोलिन कैंपबेल
सूची II: कार्य क्षेत्र
i. झाँसी और ग्वालियर
ii. दिल्ली
iii. कानपुर और लखनऊ
iv. आरा (बिहार)
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

21. बिहार के किस अस्सी वर्षीय ज़मींदार ने अंग्रेजों के खिलाफ एक शानदार छापामार युद्ध का संचालन किया और अपनी प्राकृतिक मृत्यु तक अपराजित रहे?
(1) अमर सिंह
(2) शाह मल
(3) कुंवर सिंह
(4) मौलवी अहमदुल्ला
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

22. फ़ैज़ाबाद के मौलवी अहमदुल्ला के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।
(1) उन्हें अंग्रेजों ने दिल्ली शहर में पकड़ लिया और फांसी दे दी थी।
(2) उन्होंने धर्मयुद्ध की घोषणा की और चिनहट के युद्ध में हेनरी लॉरेंस की सेना को हराया।
(3) वे एक वफादार थे जिन्होंने अवध में विद्रोह को दबाने में अंग्रेजों की सहायता की थी।
(4) लखनऊ के पतन के बाद वे नाना साहेब के साथ नेपाल के तराई क्षेत्र में भाग गए थे।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

23. निम्नलिखित में से किसने 1857 के विद्रोह को "राष्ट्रीय स्वतंत्रता का एक नियोजित युद्ध" कहा था?
(1) आर. सी. मजूमदार
(2) एस. एन. सेन
(3) बेंजामिन डिज़रायली
(4) वी. डी. सावरकर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

24. 1857 के विद्रोह की विफलता का एक महत्वपूर्ण कारण विभिन्न भारतीय समूहों की भागीदारी न होना था। निम्नलिखित में से कौन सा समूह मुख्य रूप से अंग्रेजों का समर्थक रहा?
(1) अंग्रेजी-शिक्षित भारतीय बुद्धिजीवी वर्ग
(2) अवध के किसान
(3) पारंपरिक कारीगर
(4) देशी रियासतों के भंग किए गए सैनिक
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

25. 1857 के विद्रोह की विफलता के कारणों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. विद्रोहियों के पास एक एकीकृत कमान और भविष्योन्मुखी राजनीतिक विचारधारा का अभाव था।

Downloaded from www.pdf.tube

77. (1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
आंग्ल-सिख युद्धों की लड़ाइयों का अत्यधिक ऐतिहासिक महत्व है। मुदकी और सोबराओं की लड़ाइयाँ प्रथम आंग्ल-सिख युद्ध (1845-46) का अंग थीं, जिसमें अंग्रेजों की विजय हुई। चिलियाँवाला और गुजरात की लड़ाइयाँ द्वितीय आंग्ल-सिख युद्ध (1848-49) के दौरान लड़ी गईं। चिलियाँवाला में अंग्रेजों को क्षति हुई, जबकि गुजरात की लड़ाई निर्णायक रही जिसके पश्चात पंजाब का पूर्ण विलय कर लिया गया।

78. (2) £40,000 से £50,000 प्रति वर्ष
1849 में पंजाब के विलय के पश्चात अंग्रेजों ने बालक महाराजा दलीप सिंह को अपदस्थ कर दिया। उन्हें शासन के अधिकारों के परित्याग के बदले 40,000 से 50,000 पाउंड वार्षिक की पेंशन प्रदान की गई। इसके पश्चात उन्हें शिक्षा हेतु इंग्लैंड भेज दिया गया। यह पेंशन साम्राज्य की आय की तुलना में अत्यंत न्यून थी। महाराजा का निर्वासन पंजाब में ब्रिटिश सत्ता के पूर्ण सुदृढ़ीकरण का परिचायक था।

79. (1) केवल I, II, IV और V
लॉर्ड डलहौजी प्रत्यक्ष ब्रिटिश शासन के समर्थक थे और उन्होंने देशी रियासतों को अक्षम माना। उन्होंने लोअर बर्मा का विलय कर साम्राज्य की सीमाओं का विस्तार किया। हालांकि, उन्होंने व्यपगत के सिद्धांत का प्रयोग केवल मुस्लिम राज्यों के विरुद्ध नहीं किया, अपितु हिंदू राज्यों जैसे सतारा, झाँसी और नागपुर पर भी इसे कड़ाई से लागू किया। अतः तीसरा कथन गलत है क्योंकि उनकी नीति साम्राज्यवादी लाभ पर आधारित थी।

80. (2) उपमहाद्वीप की विजय का समापन, जिससे साम्राज्य का विस्तार उत्तर-पश्चिम की प्राकृतिक सीमाओं तक हो गया।
1849 में पंजाब का विलय ब्रिटिश भारत के इतिहास की एक युगांतकारी घटना थी। इसने भारत के भीतर सभी स्वतंत्र शक्तियों के अस्तित्व को समाप्त कर दिया। अब ब्रिटिश साम्राज्य की सीमाएँ हिंदूकुश पर्वतमाला और अफगानिस्तान तक पहुँच गईं, जो भारत की प्राकृतिक रक्षा सीमा थी। इसके साथ ही पूरे भारतीय उपमहाद्वीप पर अंग्रेजों का प्रत्यक्ष नियंत्रण स्थापित हुआ और साम्राज्य विस्तार का चरण अपनी पूर्णता को प्राप्त हुआ।

NODIA

33. 1852 में स्थापित इनाम कमीशन का प्राथमिक कार्य क्या था?
(1) बंगाल क्षेत्र की औद्योगिक क्षमता का मूल्यांकन करना।
(2) उन भूमि अनुदानों को जब्त करना जिनके पास वैध कानूनी अधिकार नहीं थे।
(3) उत्तरी बिहार में नील की खेती को विनियमित करना।
(4) अवध क्षेत्र में स्थायी भू-राजस्व बंदोबस्त को लागू करना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

34. 1857 के विद्रोह के नेताओं के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा जोड़ा गलत सुमेलित है?
(1) बेगम हज़रत महल - पकड़ी गईं और सेलुलर जेल में कैद की गईं
(2) बहादुर शाह ज़फ़र - रंगून निर्वासित किए गए
(3) नाना साहेब - नेपाल भाग गए
(4) तांत्या टोपे - अंग्रेजों द्वारा फांसी दी गई
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

35. झाँसी में विद्रोह के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. रानी लक्ष्मीबाई ने तांत्या टोपे की मदद से ग्वालियर के किले पर अधिकार कर लिया था।
II. ग्वालियर के शासक जयाजीराव सिंधिया विद्रोही सेना में शामिल हो गए थे।
III. सर ह्यू रोज़ वह ब्रिटिश कमांडर था जिसने झाँसी की घेराबंदी की थी।
IV. जून 1858 में युद्ध के मैदान में रानी लक्ष्मीबाई की मृत्यु हो गई।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) I, II और III
(2) I, III और IV
(3) II, III और IV
(4) I, II और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

36. निम्नलिखित में से कौन सा ब्रिटिश अधिकारी 1856 में कुशासन के आधार पर अवध के विलय के लिए उत्तरदायी था?
(1) लॉर्ड कैनिंग
(2) लॉर्ड वेलेज़्ली
(3) लॉर्ड हेस्टिंग्स
(4) लॉर्ड डलहौजी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

37. निम्नलिखित में से कौन 1857 के बाद अंग्रेजों द्वारा अपनाए गए "लड़ाकू जातियों" के सिद्धांत की सर्वोत्तम व्याख्या करता है?
(1) विशेष रूप से ब्रिटिश और यूरोपीय क्षेत्रों से सैनिकों की भर्ती करने की नीति।
(2) उन क्षेत्रों में विशेष मार्शल लॉ लागू करना जिन्होंने विद्रोह में भाग लिया था।
(3) विशिष्ट भारतीय समूहों की भर्ती करना जिन्हें स्वाभाविक रूप से अधिक साहसी और वफादार माना जाता था।
(4) विदेशी औपनिवेशिक युद्धों में लड़ने के लिए समर्पित स्वदेशी रेजीमेंटों का निर्माण करना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

38. 1857-58 की निम्नलिखित घटनाओं को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. मेरठ में विद्रोह
II. बैरकपुर में मंगल पांडे का विद्रोह
III. महारानी विक्टोरिया की उद्घोषणा
IV. हुमायूं के मकबरे पर बहादुर शाह ज़फ़र की गिरफ्तारी
(1) II, I, IV, III
(2) I, II, III, IV
(3) II, IV, I, III
(4) I, III, II, IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

39. 1857 के दौरान राजस्थान विद्रोह के संदर्भ में, कोटा में विद्रोह का नेतृत्व किसने किया था?
(1) ठाकुर कुशाल सिंह
(2) रावत केसरी सिंह
(3) अमर चंद बांठिया
(4) मेहराब खान और जयदयाल
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

40. सूची I में दिए गए शब्दों को सूची II में 1857 के विद्रोह के महत्व के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: शब्द
A. चर्बीयुक्त कारतूस
B. व्यपगत का सिद्धांत
C. भर्ती अधिनियम
D. चपाती और कमल
सूची II: संदर्भ
i. विद्रोहियों के बीच गुप्त संचार की विधि
ii. धार्मिक भावनाओं से जुड़ा तात्कालिक कारण
iii. विलय के लिए राजनीतिक हथियार
iv. अनिवार्य समुद्र पार सैन्य सेवा
(1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

41. किस प्रमुख भारतीय इतिहासकार ने यह निष्कर्ष निकाला कि 1857 का विद्रोह "न तो प्रथम, न ही राष्ट्रीय और न ही स्वतंत्रता संग्राम था"?
(1) ताराचंद
(2) बिपन चंद्रा
(3) आर. सी. मजूमदार
(4) इरफ़ान हबीब
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Click Here to Buy book on Amazon

(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

79. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: 1857 के विद्रोह के दौरान हिंदू-मुस्लिम एकता स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थी।
कथन II: बहादुर शाह ज़फ़र ने हिंदू भावनाओं का सम्मान करने के लिए गोहत्या पर प्रतिबंध लगा दिया था।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं और कथन II, कथन I की सही व्याख्या करता है।
(2) कथन I और कथन II दोनों सही हैं लेकिन कथन II, कथन I की सही व्याख्या नहीं करता है।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

80. सूची I में सुधार अधिनियमों को सूची II में उनके लागू होने के वर्ष के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: सुधार अधिनियम
A. सती प्रथा उन्मूलन अधिनियम
B. हिंदू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम
C. धार्मिक अक्षमता अधिनियम
D. सामान्य सेवा भर्ती अधिनियम
सूची II: वर्ष
i. 1850
ii. 1829
iii. 1856
iv. 1856
(1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

51. मेरठ में विद्रोह करने वाले सिपाही मुख्य रूप से किस रेजीमेंट से संबंधित थे?
(1) 19वीं नेटिव इन्फैंट्री
(2) 34वीं नेटिव इन्फैंट्री
(3) तीसरी नेटिव कैवेलरी
(4) मद्रास सैपर्स
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

52. निम्नलिखित अभिकथन (A) और कारण (R) को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): अंग्रेजी-शिक्षित मध्यम वर्ग ने 1857 के विद्रोह का समर्थन नहीं किया।
कारण (R): उनका मानना था कि भारत के आधुनिकीकरण के लिए ब्रिटिश शासन आवश्यक था।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

53. निम्नलिखित में से किस सामाजिक सुधार ने रुढ़िवादी भारतीयों में सबसे कम असंतोष पैदा किया?
(1) सती प्रथा का उन्मूलन
(2) विधवा पुनर्विवाह का वैधीकरण
(3) जाति-आधारित अलग स्कूली शिक्षा को बढ़ावा देना
(4) लड़कियों के लिए पश्चिमी शैक्षणिक संस्थान खोलना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

54. निम्नलिखित में से कौन 1857 के विद्रोह के तुरंत बाद हुए "श्वेत विद्रोह" का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(1) बंगाल में यूरोपीय बागान मालिकों द्वारा ब्रिटिश प्रशासन के खिलाफ विद्रोह।
(2) ब्रिटिश क्राउन को सेवाएं हस्तांतरित किए जाने पर यूरोपीय सैनिकों के बीच असंतोष।
(3) वेतन वृद्धि की मांग को लेकर ब्रिटिश सिविल सेवकों द्वारा विद्रोह।
(4) धार्मिक नीति के खिलाफ यूरोपीय मिशनरियों द्वारा विद्रोह।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

55. क्षेत्रीय नेताओं की भूमिका के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. अजीमुल्लाह खान नाना साहेब के सलाहकार थे।
II. तांत्या टोपे को मान सिंह नामक एक ज़मींदार ने धोखा दिया था।
III. बख्त खान दिल्ली में सेना का नेतृत्व करने से पहले ब्रिटिश तोपखाने में सूबेदार थे।
IV. रानी जिंदन ने पंजाब क्षेत्र में विद्रोह का नेतृत्व किया था।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल IV
(3) केवल III और IV
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

56. 1857 के विद्रोह के दमन के बाद अवध में ब्रिटिश कृषि नीति में क्या बदलाव आया?
(1) अंग्रेजों ने तालुकदारों के साथ गठबंधन किया और उनकी भूमि उन्हें वापस कर दी।
(2) ब्रिटिश प्रशासन ने ज़मींदारी प्रथा को पूरी तरह से समाप्त कर दिया।
(3) अंग्रेजों ने गरीब किसानों के लिए भूमि पुनर्वितरण कार्यक्रम शुरु किया।
(4) अंग्रेजों ने अवध क्षेत्र में रैयतवाड़ी प्रणाली लागू की।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

57. अमर चंद बांठिया का 1857 के विद्रोह से क्या संबंध था?
(1) एरिनपुरा में विद्रोह का नेतृत्व करने वाले सिपाही।
(2) बुंदेलखंड की एक रियासत के शासक।
(3) राजस्थान के एक व्यापारी जिन्होंने रानी लक्ष्मीबाई को वित्तीय सहायता दी थी।
(4) भरतपुर के राजनीतिक एजेंट।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

58. लखनऊ को मुक्त कराने के लिए सैन्य अभियानों की कमान संभालने वाले ब्रिटिश अधिकारियों का सही क्रम क्या है?
(1) हेनरी हैवलॉक → कोलिन कैंपबेल → जेम्स आउट्रम
(2) हेनरी हैवलॉक → जेम्स आउट्रम → कोलिन कैंपबेल
(3) कोलिन कैंपबेल → जेम्स आउट्रम → हेनरी हैवलॉक
(4) जेम्स आउट्रम → कोलिन कैंपबेल → हेनरी हैवलॉक
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

59. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: डलहौजी द्वारा शुरु की गई टेलीग्राफ प्रणाली विद्रोह के दौरान अंग्रेजों के लिए हानिकारक साबित हुई।
कथन II: ब्रिटिश सेना ने सैनिकों की आवाजाही के समन्वय के लिए टेलीग्राफ का कुशलतापूर्वक उपयोग किया।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं और कथन II, कथन I की सही व्याख्या करता है।
(2) कथन I और कथन II दोनों सही हैं लेकिन कथन II, कथन I की सही व्याख्या नहीं करता है।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

60. सूची I में राजस्थान की छावनियों को सूची II में 1857 के विद्रोह की तारीखों के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: राजस्थान की छावनी

तोपखाने जैसे महत्वपूर्ण विभागों को पूर्णतः यूरोपीय सैनिकों के अधीन कर दिया गया। यह नीति विद्रोह के अनुभवों से उत्पन्न भय का परिणाम थी, जिसका उद्देश्य सेना में पुन: विद्रोह की संभावना को समाप्त करना था।

32. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
1857 का विद्रोह भारतीय इतिहास की एक युगांतरकारी घटना थी जिसे 'स्वतंत्रता का प्रथम युद्ध' कहा जाता है। यह संघर्ष अद्वितीय था क्योंकि इसमें प्रथम बार हिंदू और मुस्लिम सिपाहियों, किसानों और बेदखल शासकों ने मिलकर ब्रिटिश शासन को चुनौती दी थी। इस सामूहिक भागीदारी ने इसे एक व्यापक और राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान किया। यद्यपि यह पूर्णतः सफल नहीं रहा, परंतु इसने भारतीयों के मन में विदेशी शासन के विरुद्ध एकजुट होकर लड़ने की चेतना जाग्रत की।

33. (2) उन भूमि अनुदानों को जब्त करना जिनके पास वैध कानूनी अधिकार नहीं थे।
लॉर्ड डलहौजी के शासनकाल के दौरान 1852 में गठित इनाम कमीशन का मुख्य उद्देश्य बॉम्बे प्रेसीडेंसी में कर-मुक्त भूमि अनुदानों की जाँच करना था। आयोग ने हजारों जागीरदारों और जमींदारों से उनकी भूमि के स्वामित्व के प्रमाण मांगे। पर्याप्त साक्ष्य न होने पर लगभग बीस हजार जागीरें जब्त कर ली गईं। इस कठोर कार्यवाही ने अभिजात वर्ग में भारी असुरक्षा उत्पन्न की, जो अंततः 1857 के विद्रोह के दौरान उनके सक्रिय विद्रोह का एक प्रमुख कारण बनी।

34. (1) बेगम हज़रत महल - पकड़ी गईं और सेलुलर जेल में कैद की गईं
1857 के विद्रोह के दमन के पश्चात विभिन्न नेताओं का परिणाम अलग-अलग रहा। बहादुर शाह जफर को रंगून निर्वासित किया गया, नाना साहेब पराजय के बाद नेपाल चले गए और तांत्या टोपे को बंदी बनाकर फांसी दी गई। यद्यपि, लखनऊ का नेतृत्व करने वाली बेगम हजरत महल कभी बंदी नहीं बनीं। उन्होंने अंग्रेजों के समक्ष आत्मसमर्पण करने के स्थान पर नेपाल में शरण ली और वहां अपने निर्वासन के दौरान ही उनकी मृत्यु हुई, जो उनके दृढ़ संकल्प को दर्शाता है।

35. (2) I, III और IV
झाँसी में रानी लक्ष्मीबाई ने अदम्य साहस प्रदर्शित करते हुए तांत्या टोपे के साथ ग्वालियर के दुर्ग पर अधिकार कर लिया था। सर ह्यू रोज़ ने झाँसी की घेराबंदी की और उनके विरुद्ध कड़ा अभियान चलाया। जून 1858 में रणक्षेत्र में लड़ते हुए रानी ने वीरगति प्राप्त की। यह उल्लेखनीय है कि ग्वालियर के शासक सिंधिया विद्रोही सेना में सम्मिलित नहीं हुए थे, बल्कि वे अंग्रेजों के प्रति वफादार रहे और आगरा चले गए थे, जिससे विद्रोहियों की स्थिति निर्बल हुई।

36. (4) लॉर्ड डलहौजी
लॉर्ड डलहौजी ने 1856 में कुशासन का आरोप लगाकर अवध की रियासत को ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया था। यद्यपि अवध का नवाब वाजिद अली शाह अंग्रेजों का पुराना और वफादार सहयोगी था, फिर भी डलहौजी ने इस समृद्ध क्षेत्र पर अधिकार पाने हेतु प्रशासनिक विफलता का बहाना बनाया। इस अन्यायपूर्ण विलय ने अवध की जनता, तालुकदारों और वहां के सैनिकों में तीव्र असंतोष उत्पन्न किया, जो बाद में 1857 के विद्रोह में उग्र रूप में प्रकट हुआ।

37. (3) विशिष्ट भारतीय समूहों की भर्ती करना जिन्हें स्वाभाविक रूप से अधिक साहसी और वफादार माना जाता था।
1857 के विद्रोह के पश्चात अंग्रेजों ने सैन्य भर्ती हेतु 'लड़ाकू जातियों' का सिद्धांत अपनाया। इसके अंतर्गत उन समुदायों, जैसे सिख, गोरखा और पठानों को वरीयता दी गई जिन्होंने विद्रोह के दौरान अंग्रेजों की सहायता की थी। अंग्रेजों का मानना था कि ये समूह स्वाभाविक रूप से अधिक निष्ठावान हैं। इसके विपरीत, विद्रोह के केंद्र रहे अवध और बिहार के ब्राह्मणों और राजपूतों को 'गैर-लड़ाकू' घोषित कर उनकी भर्ती सीमित कर दी गई, जो एक सोची-समझी नीति थी।

38. (1) II, I, IV, III
1857-58 की महत्वपूर्ण घटनाओं का सही कालानुक्रमिक क्रम मार्च 1857 में बैरकपुर में मंगल पांडे के विद्रोह से प्रारंभ होता है। इसके पश्चात 10 मई 1857 को मेरठ में बड़े पैमाने पर विद्रोह भड़का। सितंबर 1857 में दिल्ली के पतन के उपरांत बहादुर शाह जफर को हुमायूं के मकबरे से बंदी बनाया गया। अंततः 1 नवंबर 1858 को महारानी विक्टोरिया की उद्घोषणा के साथ भारत में ब्रिटिश शासन की नई व्यवस्था प्रारंभ हुई, जिसने कंपनी शासन का अंत किया।

39. (4) मेहराब खान और जयदयाल
राजस्थान में कोटा का विद्रोह 1857 के संग्राम की एक अत्यंत महत्वपूर्ण और उग्र घटना थी। यहाँ विद्रोह का नेतृत्व सैन्य अधिकारियों के स्थान पर मेहराब खान और लाला जयदयाल जैसे नेताओं ने किया था। विद्रोहियों ने कोटा के महाराव को महल में नजरबंद कर दिया और राजनीतिक एजेंट मेजर बर्टन की हत्या कर दी। कोटा में विद्रोह का स्वरूप जन-विद्रोह जैसा था, जहाँ जनता ने संगठित होकर लगभग छह माह तक शहर पर अपना प्रभावी नियंत्रण बनाए रखा था।

40. (1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
1857 के विद्रोह के विभिन्न कारकों ने मिलकर इसे एक व्यापक स्वरूप प्रदान किया। चर्बीयुक्त कारतूसों ने तात्कालिक धार्मिक आक्रोश उत्पन्न किया, जबकि व्यपगत के सिद्धांत ने राज्यों के विलय का आधार तैयार किया। भर्ती अधिनियम ने सैनिकों को समुद्र पार सेवा हेतु विवश किया। साथ ही, चपाती और कमल के फूलों का उपयोग विद्रोहियों द्वारा गुप्त रूप से संदेश प्रसारित करने और क्रांति की योजना को समन्वयित करने के लिए प्रभावी ढंग से किया गया था।

41. (3) आर. सी. मजूमदार
प्रसिद्ध इतिहासकार आर. सी. मजूमदार ने 1857 के विद्रोह के स्वरूप पर एक तर्कपूर्ण निष्कर्ष प्रस्तुत किया। उन्होंने अपने शोध में कहा कि यह संघर्ष न तो प्रथम था, न ही राष्ट्रीय और न ही यह स्वतंत्रता के लिए लड़ा गया कोई सुव्यवस्थित संग्राम था। उनका मानना था कि विद्रोहियों के उद्देश्य स्थानीय

Downloaded from www.pdf.tube

(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

70. सूची I में राजस्थान के विद्रोह केंद्रों को सूची II में संबंधित व्यक्तियों या शासकों के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: राजस्थान विद्रोह केंद्र
A. एरिनपुरा
B. मेवाड़
C. जयपुर
D. जोधपुर
सूची II: व्यक्ति या शासक
i. जोधपुर लीजन
ii. महाराणा स्वरुप सिंह
iii. महाराजा राम सिंह द्वितीय
iv. महाराजा तख्त सिंह
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

71. 1857 का विद्रोह दक्षिण और पश्चिम भारत में न फैल पाने का एक प्रमुख कारण क्या था?
(1) वहां के सिपाहियों को पहले ही निशस्त्र कर दिया गया था।
(2) वहां ब्रिटिश विरोधी भावना विकसित नहीं हुई थी।
(3) चर्बीयुक्त कारतूसों की समस्या वहां अप्रासंगिक थी।
(4) रैयतवाड़ी बंदोबस्त ने वहां के किसानों को अपेक्षाकृत अधिक संतुष्ट रखा था।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

72. निम्नलिखित अभिकथन (A) और कारण (R) को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): 1857 के विद्रोह के कारण भारत में ब्रिटिश क्षेत्रीय विस्तार का अंत हुआ।
कारण (R): ब्रिटिश सरकार ने आधिकारिक तौर पर विलय की नीति त्याग दी और गोद लेने के अधिकार को मान्यता दी।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

73. कौन सा विद्रोही नेता मध्य भारत के जंगलों में भाग गया और 1859 तक छापामार युद्ध जारी रखा?
(1) नाना साहेब
(2) कुंवर सिंह
(3) तांत्या टोपे
(4) बख्त खान
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

74. लोकप्रिय साहित्य में 1857 के विद्रोह की विरासत के संबंध में सही जोड़े की पहचान कीजिए।
(1) सुभद्रा कुमारी चौहान - कविता "झाँसी की रानी"
(2) आनंदमठ - 1857 के विद्रोह पर आधारित
(3) माझा प्रवास - पंजाब विद्रोह का विवरण
(4) कॉजेज़ ऑफ़ द इंडियन रिवोल्ट - कार्ल मार्क्स
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

75. 1857 के विद्रोह की राजनीतिक पृष्ठभूमि के बारे में कौन सा कथन गलत है?
I. अंग्रेजों ने नाना साहेब की पेंशन बंद कर दी थी।
II. कर्नाटक और तंजौर के शासकों की उपाधियाँ समाप्त कर दी गई थीं।
III. लॉर्ड डलहौजी ने घोषणा की कि मुगल उत्तराधिकारी लाल किले में नहीं रहेंगे।
IV. अंग्रेजों ने मुगल सम्राट की संप्रभुता का पूरा सम्मान किया।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल III और IV
(3) केवल IV
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

76. क्रीमिया युद्ध की घटनाओं ने भारतीय सिपाहियों को किस प्रकार प्रभावित किया?
(1) ब्रिटिश विजय ने सिपाहियों का मनोबल गिराया।
(2) ब्रिटिश हार की अफवाहों ने सिपाहियों को प्रोत्साहित किया।
(3) क्रीमिया में सिपाहियों की तैनाती से वेतन विवाद बढ़ा।
(4) रूसी जासूसों ने सिपाहियों को उकसाया।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

77. किस राज्य का विलय लॉर्ड डलहौजी ने व्यपगत के सिद्धांत के तहत नहीं किया था?
(1) सतारा
(2) झाँसी
(3) ग्वालियर
(4) नागपुर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

78. व्यपगत के सिद्धांत के तहत विलय किए गए राज्यों का सही कालानुक्रमिक क्रम क्या है?
I. झाँसी
II. सतारा
III. उदयपुर
IV. नागपुर
(1) II, III, I, IV
(2) I, II, III, IV
(3) II, I, IV, III
(4) III, II, IV, I

A. नसीराबाद
B. नीमच
C. एरिनपुरा
D. कोटा
सूची II: तारीख
i. 3 जून 1857
ii. 28 मई 1857
iii. 15 अक्टूबर 1857
iv. 21 अगस्त 1857
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

61. लॉर्ड डलहौजी ने अवध के विलय को उचित ठहराने के लिए किस ब्रिटिश अधिकारी की रिपोर्ट का उपयोग किया था?
(1) मैकाले
(2) हंटर
(3) आउट्रम
(4) स्ट्रैची
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

62. 1857 से पहले अवध में की गई संक्षिप्त बेदखली प्रक्रिया से समाज का कौन सा वर्ग सर्वाधिक प्रभावित हुआ था?
(1) पारंपरिक कारीगर
(2) शहरी व्यापारी
(3) गिरमिटिया मजदूर
(4) तालुकदार
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

63. विद्रोह के प्रसार के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) बॉम्बे सेना ने बंगाल सेना की तरह ही व्यापक विद्रोह का अनुभव किया।
(2) नर्मदा नदी ने मुख्य रूप से विद्रोह की दक्षिणी सीमा बनाई थी।
(3) मद्रास सेना पूरे विद्रोह के दौरान अंग्रेजों के प्रति वफादार रही।
(4) पंजाब का क्षेत्र अंग्रेजों के लिए सैनिकों की भर्ती का महत्वपूर्ण केंद्र रहा।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

64. 1857 के बाद अंग्रेजों की "लड़ाकू जातियों" की नीति किस रणनीति का हिस्सा थी?
(1) व्यपगत का सिद्धांत
(2) फूट डालो और राज करो
(3) घेरे की नीति
(4) सर्वोच्चता का सिद्धांत
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

65. भारतीय समाज पर 1857 के विद्रोह के परिणामों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. अंग्रेजों ने भारत के सामाजिक और धार्मिक रीति-रिवाजों में अहस्तक्षेप की नीति अपनाई।
II. औपनिवेशिक राज्य द्वारा हिंदू-मुस्लिम एकता को सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया गया।
III. ब्रिटिश प्रशासन नस्लीय रूप से अधिक पृथक हो गया।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल I और III
(3) केवल II और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

66. 1857 के विद्रोह के समय ब्रिटिश प्रधानमंत्री कौन थे?
(1) लॉर्ड पामर्स्टन
(2) लॉर्ड जॉन रसेल
(3) बेंजामिन डिज़रायली
(4) विलियम ग्लैडस्टोन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

67. "यहाँ वह महिला सोई हुई है, जो विद्रोहियों में एकमात्र मर्द थी," यह कथन किसके द्वारा कहा गया था?
(1) लॉर्ड डलहौजी
(2) सर कोलिन कैंपबेल
(3) सर ह्यू रोज़
(4) हेनरी हैवलॉक
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

68. 1857 के विद्रोह के आर्थिक परिणामों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. विद्रोह के दमन का वित्तीय बोझ ब्रिटिश राजकोष द्वारा वहन किया गया था।
II. वित्तीय घाटे को पूरा करने के लिए भारत में पहली बार आयकर लगाया गया था।
III. भारतीय रेलवे में विदेशी निवेश में भारी वृद्धि हुई।
IV. भारतीय हथकरघा उद्योगों को भारी संरक्षण मिला।
V. भारत का सार्वजनिक ऋण अत्यधिक बढ़ गया।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) I, II और III
(2) II, III और V
(3) I, IV और V
(4) II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

69. 1857 के विद्रोह के दौरान मारे गए ब्रिटिश अधिकारियों में से कौन सा विकल्प अन्य से भिन्न है?
(1) सर हेनरी लॉरेंस
(2) जनरल जॉन निकोलसन
(3) सर ह्यू रोज़
(4) मेजर बर्टन

Click Here to Buy book on Amazon

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) व्यपगत का सिद्धांत
लॉर्ड डलहौजी द्वारा लागू किया गया व्यपगत का सिद्धांत 1857 के विद्रोह का एक प्रमुख राजनीतिक कारण था। इस नीति के अंतर्गत, यदि किसी संरक्षित राज्य के शासक की मृत्यु बिना किसी स्वाभाविक उत्तराधिकारी के होती थी, तो उस राज्य को ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया जाता था। इसने झाँसी, सतारा और नागपुर जैसे राज्यों के भारतीय शासकों में अत्यधिक असुरक्षा और गहरा असंतोष उत्पन्न कर दिया था।

2. (1) ब्रिटिश शुल्क नीति ने भारत में ब्रिटिश निर्मित वस्तुओं के आयात को गंभीर रूप से प्रतिबंधित कर दिया था।
ब्रिटिश आर्थिक नीतियों का मुख्य उद्देश्य भारत को ब्रिटिश निर्मित वस्तुओं के लिए एक विशाल बाजार बनाना था। इसके विपरीत, भारत में ब्रिटिश निर्मित वस्तुओं के आयात को प्रतिबंधित करने के बजाय उन्हें न्यूनतम शुल्क पर प्रोत्साहित किया गया था। इससे भारतीय हस्तशिल्प और पारंपरिक उद्योगों का पतन हुआ। साथ ही, भारी कराधान और दोषपूर्ण भू-राजस्व नीतियों ने किसानों और शिल्पकारों को अत्यधिक निर्धनता के जाल में धकेल दिया था।

3. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं और कथन II, कथन I की सही व्याख्या करता है।
लॉर्ड कैनिंग द्वारा 1856 में पारित सामान्य सेवा भर्ती अधिनियम ने बंगाल सेना के सिपाहियों में भारी असंतोष उत्पन्न किया। इस विधि के अनुसार, नए सैनिकों के लिए आवश्यकता पड़ने पर समुद्र पार जाकर सेवा करना अनिवार्य कर दिया गया था। तत्कालीन हिंदू समाज में समुद्र पार यात्रा करना धर्म के विरुद्ध माना जाता था, जिससे सैनिकों को अपनी धार्मिक पवित्रता और सामाजिक स्थिति खोने का भय सताने लगा था।

4. (4) इसने ईसाई धर्म अपनाने वाले व्यक्तियों को मौजूदा रीति-रिवाजों के बावजूद पैतृक संपत्ति प्राप्त करने की अनुमति दी।
1850 का धार्मिक अक्षमता अधिनियम, जिसे लेक्स लोकी कानून भी कहा जाता है, ने पारंपरिक हिंदू उत्तराधिकार नियमों में महत्वपूर्ण परिवर्तन किए। इस कानून ने ईसाई धर्म अपनाने वाले व्यक्तियों को उनकी पैतृक संपत्ति प्राप्त करने का कानूनी अधिकार प्रदान किया। भारतीयों ने इसे अपने धर्म और सामाजिक ढांचे पर सीधे प्रहार के रूप में देखा। उन्हें लगा कि ब्रिटिश सरकार भारतीयों को ईसाई धर्म में परिवर्तित करने हेतु प्रोत्साहित कर रही है।

5. (1) केवल I और II
1857 से पूर्व भारतीय सैनिकों में कई गंभीर शिकायतें व्याप्त थीं। सिंध और पंजाब जैसे दूरस्थ क्षेत्रों में सेवा करने पर मिलने वाला विदेशी सेवा भत्ता अचानक बंद कर दिया गया था। साथ ही, 1854 के डाकघर अधिनियम ने सैनिकों को मिलने वाली निःशुल्क डाक सुविधा छीन ली। पदोन्नति के मामले में भी भेदभाव था, क्योंकि भारतीय सैनिक सूबेदार से ऊंचे पदों पर नहीं पहुँच सकते थे, जो उनके निरंतर आक्रोश का कारण था।

6. (2) तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध (1817-18)
प्रथम अफगान युद्ध, पंजाब युद्ध और क्रीमिया युद्ध में ब्रिटिश सेना को भारी क्षति उठानी पड़ी थी। इन पराजयों ने ब्रिटिश अपराजेयता के मिथक को तोड़ दिया और भारतीय सैनिकों में आत्मविश्वास जगाया कि वे भी अंग्रेजों को पराजित कर सकते हैं। इसके विपरीत, तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध बहुत पहले हुआ था और इसमें अंग्रेजों की निर्णायक विजय हुई थी, इसलिए इस घटना ने अंग्रेजों की सैन्य शक्ति के भ्रम को कम नहीं किया।

7. (4) ब्राउन बेस
1857 के विद्रोह का तात्कालिक कारण सेना में नई एनफील्ड राइफल का उपयोग था। इस आधुनिक राइफल को पुरानी और भारी 'ब्राउन बेस' बंदूक के स्थान पर सेना में सम्मिलित किया गया था। एनफील्ड राइफल के कारतूसों पर गाय और सूअर की चर्बी होने की सूचना ने हिंदू और मुस्लिम सैनिकों की धार्मिक भावनाओं को गंभीर रूप से आहत किया। इस घटना ने सैनिकों के बीच पूर्व से व्याप्त असंतोष में चिंगारी का कार्य किया।

8. (1) I, II और IV
1857 का विद्रोह आधिकारिक रूप से 10 मई को मेरठ से प्रारंभ हुआ, जहाँ तीसरी नेटिव कैवेलरी के सैनिकों ने चर्बीयुक्त कारतूसों के उपयोग से मना कर दिया था। जनरल हेविट वहां के मुख्य अधिकारी थे, जो विद्रोहियों को नियंत्रित करने में विफल रहे। विद्रोही कारागार तोड़कर दिल्ली की ओर बढ़े थे, न कि आगरा की ओर। मंगल पांडे को इस विद्रोह की औपचारिक शुरुआत से पूर्व ही फांसी दी जा चुकी थी।

9. (3) नसीराबाद
राजस्थान में 1857 के विद्रोह का प्रथम विस्फोट 28 मई 1857 को नसीराबाद छावनी में हुआ था। यहाँ 15वीं बंगाल नेटिव इन्फैंट्री के सैनिकों ने विद्रोह किया और ब्रिटिश अधिकारियों पर आक्रमण कर दिया। सैनिकों में यह अविश्वास उत्पन्न हो गया था कि अंग्रेज उनके धर्म को भ्रष्ट करने की योजना बना रहे हैं। नसीराबाद से प्रारंभ हुई यह विद्रोह की ज्वाला शीघ्र ही नीमच, एरिनपुरा और कोटा जैसे क्षेत्रों में फैल गई।

10. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
1857 के संघर्ष के दौरान विभिन्न क्षेत्रों का नेतृत्व प्रभावशाली स्थानीय नेताओं ने किया। लखनऊ में बेगम हजरत महल ने विद्रोह का सफल संचालन किया, जबकि कानपुर में नाना साहेब ने कमान संभाली। बरेली में खान बहादुर खान ने ब्रिटिश सेना का कड़ा प्रतिरोध किया और बिहार के जगदीशपुर क्षेत्र में अस्सी वर्षीय कुंवर सिंह ने अपूर्व वीरता का परिचय दिया।

NODIA

42. अंग्रेजों ने 1857 की घटनाओं के महत्व को कम करने के लिए आधिकारिक तौर पर इसे क्या नाम दिया था?
(1) सिपाही विद्रोह
(2) महान विद्रोह
(3) किसान विद्रोह
(4) स्वतंत्रता संग्राम
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

43. राजपूताना की किस रियासत ने 1857 के विद्रोह को दबाने के लिए अपनी सीमाओं के बाहर सैन्य बल भेजकर अंग्रेजों की सहायता की थी?
(1) मेवाड़
(2) मारवाड़
(3) जयपुर
(4) बीकानेर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

44. 1857 के बाद भारतीय सेना पर लागू की गई अंग्रेजों की 'फूट डालो और राज करो' की नीति का प्रत्यक्ष प्रभाव क्या था?
(1) सभी पारंपरिक जाति-आधारित सैन्य रेजीमेंटों का पूर्ण उन्मूलन।
(2) एकीकृत सैन्य कार्रवाई को रोकने के लिए विभिन्न जातियों और समुदायों का मिश्रण करना।
(3) पैदल सेना में विशेष रूप से हिंदुओं की भर्ती जबकि तोपखाने में मुसलमानों को रखना।
(4) सूबेदार के पद से नीचे के सभी पदों के लिए केवल ब्रिटिश अधिकारियों की तैनाती।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

45. भारतीय राष्ट्रीय चेतना में 1857 के विद्रोह की विरासत के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह बाद के राष्ट्रवादी आंदोलन के लिए प्रेरणा का एक शक्तिशाली प्रतीक बना।
II. लोक कथाओं और साहित्य में स्थानीय विद्रोही नेताओं को प्रारंभिक राष्ट्रीय नायकों के रूप में महिमामंडित किया गया।
III. इसने सिद्ध कर दिया कि सशस्त्र विद्रोह ही स्वतंत्रता प्राप्त करने का एकमात्र मार्ग था।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

46. भारत सरकार अधिनियम 1858 के तहत, भारत में ब्रिटिश क्राउन के सीधे प्रतिनिधि के रूप में किसने कार्य किया?
(1) भारत के राज्य सचिव
(2) बोर्ड ऑफ कंट्रोल के अध्यक्ष
(3) प्रांतों के मुख्य आयुक्त
(4) गवर्नर-जनरल, जिन्हें वायसराय की उपाधि दी गई
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

47. ईस्ट इंडिया कंपनी से ब्रिटिश क्राउन को सत्ता हस्तांतरण के बाद भारत का प्रथम वायसराय कौन था?
(1) लॉर्ड कैनिंग
(2) लॉर्ड डलहौजी
(3) लॉर्ड एल्गिन
(4) लॉर्ड लिटन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

48. 1857 के विद्रोह के दौरान आऊवा के ठाकुर कुशाल सिंह के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उन्होंने अंग्रेजों और जोधपुर के महाराजा की संयुक्त सेना को हराया था।
II. वे मेवाड़ राज्य से संबंधित थे।
III. चेलावास के युद्ध को "काले-गोरे के युद्ध" के रूप में जाना जाता है।
IV. जोधपुर के राजनीतिक एजेंट कैप्टन मोंक मेसन का सिर आऊवा के किले पर लटका दिया गया था।
V. अंततः उन्हें टेलर कमीशन द्वारा बरी कर दिया गया था।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) I, II, III और IV
(2) I, III, IV और V
(3) II, III, IV और V
(4) I, II, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

49. किस क्षेत्र में शाह मल ने 1857 के दौरान किसानों को संगठित करके ब्रिटिश अधिकारियों के खिलाफ विद्रोह किया?
(1) बिहार में जगदीशपुर
(2) पश्चिमी उत्तर प्रदेश में बड़ौत
(3) अवध में फ़ैज़ाबाद
(4) मध्य प्रदेश में मंडला
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

50. सूची I में 1857 की प्रमुख घटनाओं को सूची II में दी गई तारीखों के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: घटनाएँ
A. मेरठ में विद्रोह
B. विद्रोहियों द्वारा दिल्ली पर अधिकार
C. महारानी की उद्घोषणा
D. दिल्ली पर पुनः अंग्रेजों का कब्जा
सूची II: तारीखें
i. 11 मई 1857
ii. 10 मई 1857
iii. सितंबर 1857
iv. 1 नवंबर 1858
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i

Downloaded from www.pdf.tube

थे। उन्होंने अपनी आयु की परवाह किए बिना अंग्रेजों के विरुद्ध एक अत्यंत प्रभावी छापामार युद्ध का संचालन किया। उन्होंने बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश के बड़े क्षेत्रों को अंग्रेजों से मुक्त कराया। गंभीर रूप से घायल होने के उपरांत भी, वे अपनी मृत्यु तक अंग्रेजों द्वारा अपराजित रहे, जो उनकी सैन्य प्रतिभा का प्रमाण है।

22. (2) उन्होंने धर्मयुद्ध की घोषणा की और चिनहट के युद्ध में हेनरी लॉरेंस की सेना को हराया।
फैजाबाद के मौलवी अहमदुल्ला शाह 1857 के विद्रोह के एक प्रेरणादायक नेता थे जिन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध धर्मयुद्ध का आह्वान किया। उन्होंने चिनहट के प्रसिद्ध युद्ध में सर हेनरी लॉरेंस की ब्रिटिश सेना को पराजित किया था। उनकी वीरता और रणनीतिक कौशल से अंग्रेज इतने भयभीत थे कि उन्हें बंदी बनाने हेतु भारी पुरस्कार की घोषणा की गई थी। वे अंत तक संघर्ष करते रहे और अवध के लोगों के लिए प्रतिरोध का प्रतीक बन गए।

23. (4) वी. डी. सावरकर
विनायक दामोदर सावरकर ने 1857 की घटनाओं को केवल एक सैन्य विद्रोह मानने से मना कर दिया। उन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक में इसे 'भारतीय स्वतंत्रता का प्रथम युद्ध' और 'राष्ट्रीय स्वतंत्रता का एक नियोजित युद्ध' कहकर संबोधित किया। सावरकर का मानना था कि यह संघर्ष विदेशी दासता की बेड़ियों को तोड़ने के लिए भारतीय जनता द्वारा किया गया प्रथम संगठित प्रयास था। उनके इस राष्ट्रवादी दृष्टिकोण ने भविष्य के स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों को प्रेरित किया।

24. (1) अंग्रेजी-शिक्षित भारतीय बुद्धिजीवी वर्ग
1857 के विद्रोह के दौरान भारतीय समाज के सभी वर्गों ने समान रूप से भाग नहीं लिया। अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त मध्यम वर्ग और बुद्धिजीवी वर्ग ने इस विद्रोह से स्वयं को पृथक रखा। उनका मानना था कि ब्रिटिश शासन भारत के आधुनिकीकरण और सामाजिक सुधारों हेतु आवश्यक है। इस वर्ग ने विद्रोहियों के पारंपरिक लक्ष्यों को देश के भविष्य के लिए उचित नहीं माना, जिससे विद्रोह को आवश्यक वैचारिक और प्रशासनिक समर्थन प्राप्त नहीं हुआ।

25. (3) केवल I और III
1857 के विद्रोह की असफलता का प्रमुख कारण विद्रोहियों के मध्य एक एकीकृत नेतृत्व और साझा राजनीतिक दृष्टि का अभाव था। इसके विपरीत, अंग्रेजों के पास आधुनिक शस्त्र, बेहतर संचार व्यवस्था और कुशल सेनापति थे। ग्वालियर के सिंधिया और इंदौर के होल्कर जैसे प्रभावशाली शासक विद्रोही सेना का नेतृत्व करने के स्थान पर अंग्रेजों के प्रति वफादार रहे और उन्होंने विद्रोह को दबाने में सहायता प्रदान की, जिससे विद्रोह निर्बल हो गया।

26. (1) बेंजामिन डिज़रायली
ब्रिटिश राजनीतिज्ञ और भविष्य के प्रधानमंत्री बेंजामिन डिज़रायली ने ब्रिटिश संसद के सदन में 1857 के विद्रोह को केवल एक सैनिक असंतोष मानने से मना कर दिया था। उन्होंने इसे एक 'राष्ट्रीय विद्रोह' के रूप में वर्णित किया, जो विदेशी शासन के विरुद्ध भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों के सामूहिक आक्रोश का परिणाम था। उनका यह तर्क तत्कालीन सरकारी पक्ष के विपरीत था, जो इसे केवल कुछ असंतुष्ट सिपाहियों की एक सीमित घटना बता रहे थे।

NODIA

27. (4) इलाहाबाद
1 नवंबर 1858 को इलाहाबाद के मिंटो पार्क में आयोजित एक भव्य दरबार में लॉर्ड कैनिंग ने महारानी विक्टोरिया की ऐतिहासिक उद्घोषणा पढ़ी। इस उद्घोषणा के माध्यम से भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन को आधिकारिक रूप से समाप्त कर दिया गया और सत्ता सीधे ब्रिटिश क्राउन को सौंप दी गई। इस अवसर पर गवर्नर-जनरल को वायसराय की उपाधि दी गई और भारतीय रियासतों के प्रति नीति में परिवर्तन सहित कई सुधारों की घोषणा की गई।

28. (1) I, II, III और V
1857 के विद्रोह के पश्चात भारत सरकार अधिनियम 1858 ने शासन व्यवस्था परिवर्तित कर दी। नियंत्रण बोर्ड को समाप्त कर 'भारत के राज्य सचिव' का नया पद निर्मित किया गया। ब्रिटिश सरकार ने भारतीय रियासतों के विलय की नीति त्याग दी और धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप न करने का वचन दिया। यद्यपि, सुरक्षा की दृष्टि से सेना में ब्रिटिश सैनिकों का अनुपात बढ़ा दिया गया और भारतीय सैनिकों का अनुपात घटा दिया गया, ताकि भविष्य में विद्रोह न हो।

29. (3) आऊवा के ठाकुर कुशाल सिंह
1857 के महान संग्राम के दौरान अधिकांश प्रमुख रियासतों के शासकों ने अंग्रेजों का साथ दिया। कश्मीर के महाराजा, हैदराबाद के निजाम और भोपाल के नवाब ब्रिटिश सत्ता के प्रति वफादार रहे और विद्रोह को दबाने में सहायता की। इसके विपरीत, आऊवा के ठाकुर कुशाल सिंह ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध विद्रोह किया। उन्होंने स्थानीय सेना को संगठित कर अंग्रेजों और जोधपुर के महाराजा की संयुक्त सेनाओं को चुनौती दी और अत्यंत वीरतापूर्वक संघर्ष किया।

30. (1) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
1857 के विद्रोह के विभिन्न पक्षों पर कई महत्वपूर्ण पुस्तकें लिखी गई हैं। वी. डी. सावरकर ने इसे स्वतंत्रता का प्रथम युद्ध माना, जबकि एस. एन. सेन ने अपनी आधिकारिक पुस्तक 'एटीन फिफ्टी-सेवन' में इसका विश्लेषण किया। आर. सी. मजूमदार ने सिपाही विद्रोह पर अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत किया और सर सैयद अहमद खान ने 'असबाब-ए-बगावत-ए-हिंद' के माध्यम से विद्रोह के कारणों की विवेचना की। ये पुस्तकें इस ऐतिहासिक घटना को समझने हेतु महत्वपूर्ण स्रोत हैं।

31. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं और कथन II, कथन I की सही व्याख्या करता है।
1857 के विद्रोह के उपरांत ब्रिटिश सरकार ने भविष्य की सुरक्षा हेतु भारतीय सेना का पुनर्गठन किया। पील कमीशन की अनुशंसाओं के आधार पर, सेना में ब्रिटिश सैनिकों की संख्या बढ़ाई गई ताकि वे भारतीय सैनिकों पर नियंत्रण रख सकें।

इन सभी नेताओं ने ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेंकने के लिए सामूहिक प्रयास किए।

11. (4) जनरल बख्त खान
दिल्ली पर अधिकार करने के पश्चात विद्रोही सैनिकों ने मुगल सम्राट बहादुर शाह जफर को अपना प्रतीकात्मक प्रमुख घोषित किया। यद्यपि, वास्तविक सैन्य और कार्यकारी शक्तियाँ सैनिकों तथा नागरिकों की एक विशेष परिषद के पास थीं। इस परिषद का नेतृत्व जनरल बख्त खान ने किया, जो बरेली से सेना लेकर दिल्ली आए थे। उन्होंने ब्रिटिश घेराबंदी के दौरान दिल्ली की रक्षा और प्रशासनिक व्यवस्था को सुव्यवस्थित करने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

12. (3) A सही है लेकिन R गलत है।
1857 के विद्रोहियों ने मुगल सम्राट बहादुर शाह जफर को अपना नेता चुनकर भारत की पारंपरिक एकता और संप्रभुता को पुनः स्थापित करने का प्रयास किया। उस समय मुगल सम्राट केवल नाममात्र के शासक थे और उनके पास अंग्रेजों से लड़ने हेतु कोई शक्तिशाली सैन्य बल या वित्तीय संसाधन नहीं थे। विद्रोहियों ने उनकी ओर इसलिए रुख किया क्योंकि मुगल वंश अभी भी भारतीय जनता के बीच वैधता और एकता का प्रतीक था।

13. (3) नाना साहेब ने दिसंबर 1857 में अंग्रेजों से सफलतापूर्वक कानपुर पुनः छीन लिया और 1860 तक वहां शासन किया।
कानपुर में विद्रोह का नेतृत्व पेशवा बाजीराव द्वितीय के दत्तक पुत्र नाना साहेब ने किया था। सर ह्यू व्हीलर की कमान वाली ब्रिटिश टुकड़ी ने उनके समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया था और तांत्या टोपे ने उनके सैन्य अभियानों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। यद्यपि, नाना साहेब अधिक समय तक कानपुर पर अपना नियंत्रण नहीं रख सके। सर कोलिन कैंपबेल ने दिसंबर 1857 में कानपुर पर पुनः कब्जा कर लिया और नाना साहेब को वहां से हटना पड़ा।

14. (4) सर कोलिन कैंपबेल - लखनऊ
1857 के विद्रोह को दबाने में विभिन्न ब्रिटिश अधिकारियों ने मुख्य भूमिका निभाई। सर कोलिन कैंपबेल ने लखनऊ और कानपुर में विद्रोही सेनाओं को पराजित कर ब्रिटिश नियंत्रण पुनः स्थापित किया। इसके विपरीत, जॉन निकोलसन ने दिल्ली में अभियान का नेतृत्व किया था, जबकि सर ह्यू रोज़ ने झाँसी और ग्वालियर में विद्रोह का दमन किया। मेजर विलियम टेलर मुख्य रूप से बिहार के आरा क्षेत्र में विद्रोह को शांत करने हेतु उत्तरदायी थे।

15. (2) केवल III और IV
लखनऊ की घेराबंदी के दौरान सर हेनरी लॉरेंस की मृत्यु हुई और बेगम हजरत महल ने अपने अल्पवयस्क पुत्र को नवाब घोषित किया। नेपाल के जंग बहादुर के नेतृत्व वाली गोरखा रेजीमेंटों ने वास्तव में लखनऊ को पुनः जीतने में अंग्रेजों की सक्रिय सहायता की थी। साथ ही, जनरल हैवलॉक और आउट्रम जून 1857 में स्थिति को नियंत्रित करने में विफल रहे थे और उन्हें स्वयं रेजिडेंसी के भीतर लंबी घेराबंदी झेलनी पड़ी थी।

16. (3) 1853
लॉर्ड डलहौजी ने व्यपगत के सिद्धांत का कड़ाई से पालन करते हुए 1853 में झाँसी का ब्रिटिश साम्राज्य में विलय कर दिया था। झाँसी के राजा गंगाधर राव की मृत्यु के पश्चात अंग्रेजों ने उनके दत्तक पुत्र को उत्तराधिकारी मानने से मना कर दिया था। इस अन्यायपूर्ण विलय ने रानी लक्ष्मीबाई के मन में अंग्रेजों के प्रति तीव्र आक्रोश उत्पन्न किया, जिसके परिणामस्वरूप वे 1857 के महान विद्रोह की एक अत्यंत साहसी नेत्री बनीं।

17. (2) अंग्रेजों द्वारा उनके दत्तक पुत्र को झाँसी के वैध उत्तराधिकारी के रुप में मान्यता देने से इनकार करना।
रानी लक्ष्मीबाई के विद्रोह में सम्मिलित होने का मुख्य कारण व्यपगत के सिद्धांत का कठोर अनुप्रयोग था। राजा गंगाधर राव की मृत्यु के पश्चात, लॉर्ड डलहौजी ने उनके दत्तक पुत्र दामोदर राव को उत्तराधिकार के अधिकार से वंचित कर दिया। अंग्रेजों ने झाँसी को ब्रिटिश क्षेत्र में मिला लिया, जिससे रानी ने अपनी रियासत की स्वतंत्रता की रक्षा हेतु हथियार उठाए। उनका यह व्यक्तिगत संघर्ष शीघ्र ही राष्ट्रीय मुक्ति संग्राम का हिस्सा बन गया।

18. (1) बैरकपुर, मेरठ, दिल्ली, लखनऊ
1857 के विद्रोह की घटनाओं का क्रम बैरकपुर से प्रारंभ हुआ, जहाँ मार्च में मंगल पांडे ने विद्रोह किया था। इसके पश्चात 10 मई को मेरठ की छावनी में सिपाहियों ने संगठित होकर विद्रोह कर दिया। मेरठ के सैनिक 11 मई को दिल्ली पहुँचे और उस पर अधिकार कर लिया। अंततः मई के अंतिम सप्ताह तक यह ज्वाला अवध की राजधानी लखनऊ तक पहुँच गई। यह क्रम उत्तर भारत में विद्रोह के भौगोलिक प्रसार को प्रदर्शित करता है।

19. (3) रुहेलखंड
खान बहादुर खान ने रुहेलखंड क्षेत्र में 1857 के विद्रोह का प्रभावी ढंग से नेतृत्व किया था। बरेली उनकी गतिविधियों का मुख्य केंद्र था, जहाँ उन्होंने स्वयं को मुगल सम्राट के वायसराय के रूप में स्थापित किया। उन्होंने एक विशाल सेना संगठित की और ब्रिटिश सत्ता को कड़ी चुनौती दी। रुहेलखंड के निवासियों ने उनके नेतृत्व में विदेशी शासन के विरुद्ध अत्यंत वीरता और अटूट समर्पण के साथ संघर्ष किया था, जो इतिहास में स्मरणीय है।

20. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
विद्रोह को कुचलने हेतु अंग्रेजों ने अपने कुशल सेनापतियों को विभिन्न केंद्रों पर तैनात किया। जॉन निकोलसन ने दिल्ली पर पुनः कब्जा करने हेतु अभियान चलाया। सर ह्यू रोज़ ने झाँसी और ग्वालियर में रानी लक्ष्मीबाई और तांत्या टोपे का मुकाबला किया। विलियम टेलर ने बिहार के आरा क्षेत्र में विद्रोह का दमन किया, जबकि मुख्य सेनापति कोलिन कैंपबेल ने कानपुर और लखनऊ में ब्रिटिश सत्ता की पुनर्स्थापना के लिए निर्णायक सैन्य अभियानों का संचालन किया।

21. (3) कुंवर सिंह
बिहार के जगदीशपुर के अस्सी वर्षीय जमींदार कुंवर सिंह 1857 के महान विद्रोह के सबसे विशिष्ट योद्धाओं में से एक

Click Here to Buy book on Amazon

और व्यक्तिगत हितों से प्रेरित थे। मजूमदार का यह विचार तत्कालीन प्रचलित राष्ट्रवादी दृष्टिकोण के विरुद्ध था, जिसने इस घटना को राष्ट्रीय मुक्ति का महान युद्ध माना था।

42. (1) सिपाही विद्रोह
ब्रिटिश इतिहासकारों और अधिकारियों ने 1857 की घटनाओं के व्यापक राजनीतिक और सामाजिक महत्व को कम करने हेतु इसे आधिकारिक रूप से 'सिपाही विद्रोह' का नाम दिया। उनके अनुसार, यह केवल कुछ असंतुष्ट सैनिकों का अपनी धार्मिक भावनाओं और कार्य परिस्थितियों को लेकर किया गया एक सीमित विद्रोह था। इस नामकरण का मुख्य उद्देश्य विश्व को यह दिखाना था कि ब्रिटिश शासन के विरुद्ध कोई जन आक्रोश नहीं था, बल्कि यह केवल सेना की आंतरिक अनुशासनहीनता थी।

43. (4) बीकानेर
1857 के विद्रोह के दौरान बीकानेर के महाराजा सरदार सिंह राजपूताना के एकमात्र ऐसे शासक थे जिन्होंने स्वयं अपनी सेना का नेतृत्व करते हुए राज्य की सीमाओं से बाहर जाकर अंग्रेजों की सहायता की थी। उन्होंने पंजाब और हरियाणा के विद्रोह प्रभावित क्षेत्रों में विद्रोही गतिविधियों को दबाने में ब्रिटिश सेना का सक्रिय साथ दिया। उनकी इस सेवा के बदले अंग्रेजों ने उन्हें टिब्बी परगने के 41 गाँव उपहार स्वरुप प्रदान करके उनकी वफादारी का सम्मान किया था।

44. (2) एकीकृत सैन्य कार्रवाई को रोकने के लिए विभिन्न जातियों और समुदायों का मिश्रण करना।
1857 के पश्चात अंग्रेजों ने सेना में एकता को भंग करने हेतु 'फूट डालो और राज करो' की नीति अपनाई। उन्होंने रेजीमेंटों का गठन इस प्रकार किया कि विभिन्न जातियों, क्षेत्रों और धर्मों के सैनिकों को एक साथ रखा जाए ताकि उनमें कोई साझा पहचान या सामूहिक भावना विकसित न हो सके। इस विभाजनकारी नीति का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना था कि भविष्य में सैनिक कभी भी किसी साझा कारण हेतु एकजुट होकर ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध संगठित विद्रोह न कर सकें।

45. (1) केवल I और II
1857 का विद्रोह विफल होने के उपरांत भी भारतीय राष्ट्रीय चेतना के विकास में एक मील का पत्थर सिद्ध हुआ। इसने भविष्य के राष्ट्रवादी आंदोलन हेतु वीरता और बलिदान का एक शक्तिशाली प्रतीक प्रदान किया। लोक कथाओं और क्षेत्रीय साहित्य में रानी लक्ष्मीबाई, कुंवर सिंह और नाना साहेब जैसे नेताओं को प्रथम राष्ट्रीय नायकों के रूप में अमर कर दिया गया। इन गाथाओं ने आने वाली पीढ़ियों के मन में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध प्रतिरोध और देशप्रेम की भावना को निरंतर प्रज्वलित रखा।

46. (4) गवर्नर-जनरल, जिन्हें वायसराय की उपाधि दी गई
1858 के भारत सरकार अधिनियम ने देश के प्रशासन में पूर्ण परिवर्तन किए। इस विधि के अंतर्गत गवर्नर-जनरल को वायसराय की उपाधि दी गई, जो सीधे ब्रिटिश क्राउन के प्रतिनिधि के रूप में कार्य करता था। वायसराय ब्रिटिश सरकार की ओर से भारत का सर्वोच्च प्रशासनिक अधिकारी बन गया। यह व्यवस्था ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन को समाप्त कर सत्ता को सीधे ब्रिटिश राजशाही को सौंपने का परिणाम थी, जिससे भारत का शासन सीधे लंदन से संचालित होने लगा।

47. (1) लॉर्ड कैनिंग
लॉर्ड कैनिंग 1857 के विद्रोह के दौरान भारत के गवर्नर-जनरल थे और विद्रोह के पश्चात वे ही भारत के प्रथम वायसराय बने। 1858 के अधिनियम के प्रभावी होने के उपरांत, उन्होंने कंपनी के शासन से ब्रिटिश क्राउन के सीधे शासन में सत्ता के हस्तांतरण का कुशलतापूर्वक प्रबंधन किया। वायसराय के रूप में उन्होंने महारानी की उद्घोषणा को पढ़ा और विद्रोह के पश्चात शांति व्यवस्था स्थापित करने तथा प्रशासनिक ढांचे को पुनर्गठित करने की दिशा में महत्वपूर्ण नीतिगत कार्य किए थे।

48. (2) I, III, IV और V
आऊवा के ठाकुर कुशाल सिंह मारवाड़ क्षेत्र के एक साहसी विद्रोही नेता थे जिन्होंने अंग्रेजों और जोधपुर की संयुक्त सेनाओं को पराजित किया था। चेलावास के युद्ध को इतिहास में "काले-गोरे के युद्ध" के रूप में जाना जाता है, जहाँ जोधपुर के राजनीतिक एजेंट मोंक मेसन की हत्या कर दी गई थी। विद्रोह के उपरांत उन पर अभियोग चलाया गया, परंतु टेलर कमीशन ने उन्हें साक्ष्यों के अभाव में मुक्त कर दिया। यह उल्लेखनीय है कि आऊवा मेवाड़ का नहीं अपितु मारवाड़ रियासत का हिस्सा था।

49. (2) पश्चिमी उत्तर प्रदेश में बड़ौत
शाह मल उत्तर प्रदेश के बागपत जिले के बड़ौत परगने के एक शक्तिशाली जाट किसान नेता थे जिन्होंने 1857 के दौरान स्थानीय किसानों को संगठित किया। उन्होंने सरकारी भवनों को नष्ट कर दिया और अंग्रेजों की संचार व्यवस्था को बाधित कर दिया। शाह मल ने विद्रोहियों हेतु रसद और गुप्त सूचनाएं एकत्रित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यद्यपि वे एक युद्ध के दौरान वीरगति को प्राप्त हुए, परंतु उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि किसान वर्ग भी विदेशी शासन के विरुद्ध प्रभावी नेतृत्व कर सकता है।

50. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
1857 के घटनाक्रम की महत्वपूर्ण तिथियां भारत के भविष्य को निर्धारित करने वाली सिद्ध हुईं। 10 मई को मेरठ में विद्रोह की चिंगारी भड़की, जो अगले ही दिन 11 मई को दिल्ली पर विद्रोही अधिकार के साथ ज्वाला बन गई। अंग्रेजों ने कड़े संघर्ष के पश्चात सितंबर 1857 में दिल्ली पर पुनः नियंत्रण प्राप्त किया, जो विद्रोहियों के लिए एक बड़ा आघात था। अंततः 1 नवंबर 1858 को महारानी की उद्घोषणा के साथ ही कंपनी शासन का औपचारिक अंत और नए युग का प्रारंभ हुआ।

51. (3) तीसरी नेटिव कैवेलरी
मेरठ में 1857 के महान विद्रोह की औपचारिक शुरुआत तीसरी नेटिव कैवेलरी के सैनिकों द्वारा की गई थी। इन सैनिकों ने नए चर्बीयुक्त कारतूसों के उपयोग को अपने धर्म के विरुद्ध मानते हुए उन्हें स्पर्श करने से मना कर दिया था। इस अवज्ञा के लिए जब उन्हें कठोर कारावास का दंड दिया गया, तो उनके साथियों ने 10 मई को विद्रोह कर दिया। उन्होंने अपने अधिकारियों को

Downloaded from www.pdf.tube

की सहायता और विद्रोह को कुचलने के लिए किया था, जो उनकी निष्ठा को दर्शाता है।

71. (4) रैयतवाड़ी बंदोबस्त ने वहां के किसानों को अपेक्षाकृत अधिक संतुष्ट रखा था।
1857 के विद्रोह का दक्षिण और पश्चिम भारत में व्यापक विस्तार न होने का एक प्रमुख कारण वहां की भू-राजस्व व्यवस्था थी। मद्रास और बॉम्बे प्रेसीडेंसी में मुख्य रूप से रैयतवाड़ी प्रणाली लागू थी, जहाँ सरकार का प्रत्यक्ष संपर्क किसानों से था। यद्यपि कर की दरें यहाँ भी उच्च थीं, परंतु उत्तर भारत की जमींदारी व्यवस्था की तुलना में यहाँ के किसान बिचौलियों के शोषण से अपेक्षाकृत मुक्त थे। इस प्रशासनिक स्थिरता ने उन क्षेत्रों में विद्रोह के प्रसार को प्रतिबंधित करने में मुख्य भूमिका निभाई थी।

72. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
1857 के विद्रोह ने अंग्रेजों को अपनी साम्राज्यवादी नीतियों पर पुनर्विचार करने हेतु विवश कर दिया। महारानी की 1858 की उद्घोषणा के साथ, ब्रिटिश सरकार ने आधिकारिक रूप से भारतीय रियासतों के विलय की नीति को त्याग दिया। उन्होंने भारतीय शासकों को दत्तक पुत्र ग्रहण करने के अधिकार को पुनः मान्यता दी और उनकी क्षेत्रीय अखंडता का सम्मान करने का वचन दिया। इस नीतिगत परिवर्तन का मुख्य उद्देश्य भारतीय राजाओं को विद्रोह के मार्ग से हटाकर ब्रिटिश राजशाही का निष्ठावान सहयोगी बनाना था।

73. (3) तांत्या टोपे
तांत्या टोपे 1857 के विद्रोह के सबसे कुशल और दृढ़ विद्रोही सेनापति थे। ग्वालियर के पतन के उपरांत भी उन्होंने हार नहीं मानी और मध्य भारत के सघन वनों में चले गए। वहां से उन्होंने लगभग दो वर्षों तक अंग्रेजों के विरुद्ध एक अत्यंत प्रभावी छापामार युद्ध जारी रखा। उन्होंने अपनी लघु सैन्य टुकड़ी के साथ ब्रिटिश सेना को बार-बार चकमा दिया और उनकी संचार व्यवस्था को छिन्न-भिन्न कर दिया। अंततः एक विश्वासघाती जमींदार के कारण उन्हें बंदी बनाया गया और 1859 में फांसी दी गई।

74. (1) सुभद्रा कुमारी चौहान - कविता "झाँसी की रानी"
1857 के विद्रोह ने भारतीय साहित्य और लोक चेतना पर अमिट प्रभाव छोड़ा है। सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा रचित प्रसिद्ध कविता "झाँसी की रानी" ने लक्ष्मीबाई की वीरता को जन-जन तक पहुँचाया और राष्ट्रीय भावनाओं को प्रज्वलित किया। इसके विपरीत, 'आनंदमठ' संन्यासी विद्रोह पर आधारित है, और 'माझा प्रवास' विष्णुभट्ट गोडसे द्वारा लिखा गया एक यात्रा वृत्तांत है जो विद्रोह के प्रत्यक्ष अनुभव बताता है। सर सैयद अहमद खान ने 'कॉजेज़ ऑफ़ द इंडियन रिवोल्ट' नामक पुस्तक के माध्यम से अपने विचार व्यक्त किए थे।

75. (3) केवल IV
1857 से पूर्व अंग्रेजों की राजनीतिक नीतियों ने भारतीय राजघरानों के प्रति गहरे अनादर का प्रदर्शन किया। उन्होंने नाना साहेब की पेंशन बंद कर दी और कई रियासतों की उपाधियाँ समाप्त कर दीं। लॉर्ड डलहौजी ने घोषणा की थी कि मुगल सम्राट के उत्तराधिकारियों को लाल किला रिक्त करना होगा और वे केवल 'राजकुमारों' के रूप में जाने जाएंगे। इन अपमानजनक कार्रवाइयों से यह स्पष्ट था कि अंग्रेज मुगल सम्राट की संप्रभुता को पूर्णतः समाप्त कर अपनी सर्वोच्चता स्थापित करना चाहते थे।

76. (2) ब्रिटिश हार की अफवाहों ने सिपाहियों को प्रोत्साहित किया।
1857 के विद्रोह के समय ब्रिटिश सेना क्रीमिया युद्ध (1854-56) में संलग्न थी। इस युद्ध के दौरान ब्रिटिश सेना को हुई आरंभिक पराजयों और भारी क्षति की अफवाहें भारत तक पहुँचीं। इन समाचारों ने भारतीय सिपाहियों के मन में यह विश्वास उत्पन्न कर दिया कि ब्रिटिश सेना अपराजेय नहीं है और सही समय पर प्रहार करने से उन्हें भारत से निष्कासित किया जा सकता है। इस मनोवैज्ञानिक प्रभाव ने विद्रोह की तैयारी कर रहे सैनिकों को आवश्यक साहस और प्रोत्साहन प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

77. (3) ग्वालियर
लॉर्ड डलहौजी ने व्यपगत के सिद्धांत का उपयोग मुख्य रूप से उन रियासतों को अधिग्रहित करने हेतु किया जिनके शासकों का कोई प्राकृतिक उत्तराधिकारी नहीं था। इसके अंतर्गत सतारा, झाँसी और नागपुर जैसे राज्यों का विलय ब्रिटिश साम्राज्य में कर लिया गया था। यद्यपि, ग्वालियर का विलय इस नीति के अंतर्गत नहीं किया गया था। ग्वालियर के सिंधिया शासक अंग्रेजों के निष्ठावान सहयोगी बने रहे और उन्होंने 1857 के विद्रोह के दौरान भी ब्रिटिश सत्ता का सहयोग किया, जिसके कारण उनकी रियासत की सत्ता सुरक्षित रही थी।

78. (1) II, III, I, IV
लॉर्ड डलहौजी द्वारा व्यपगत के सिद्धांत के अंतर्गत राज्यों के विलय का एक निश्चित क्रम था। सर्वप्रथम 1848 में सतारा को ब्रिटिश साम्राज्य में सम्मिलित किया गया। इसके पश्चात 1852 में उदयपुर और फिर 1853 में झाँसी का विलय किया गया, जिसने रानी लक्ष्मीबाई को विद्रोह हेतु प्रेरित किया। अंततः 1854 में नागपुर को भी इसी नीति के अंतर्गत अधिग्रहित कर लिया गया। यह क्रमिक विस्तारवादी नीति भारतीय शासकों के मध्य व्यापक असुरक्षा और विद्रोह की भावना जाग्रत करने का एक मुख्य राजनीतिक कारण बनी थी।

79. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं और कथन II, कथन I की सही व्याख्या करता है।
1857 का विद्रोह भारतीय इतिहास में हिंदू-मुस्लिम एकता का एक स्वर्णिम अध्याय था। दोनों समुदायों के सिपाहियों और नागरिकों ने एक-दूसरे के धर्म का सम्मान करते हुए साझा शत्रु के विरुद्ध संघर्ष किया। इस एकता को सुदृढ़ करने हेतु, मुगल सम्राट बहादुर शाह जफर ने एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए विद्रोही क्षेत्रों में गोहत्या पर पूर्ण प्रतिबंध आरोपित कर दिया था। इस निर्णय का उद्देश्य हिंदू भावनाओं का सम्मान करना और विद्रोहियों के मध्य किसी भी प्रकार के सांप्रदायिक तनाव को समाप्त करना था।

NODIA

में अवध के प्रशासन को अत्यंत भ्रष्ट और अक्षम वर्णित किया गया था। आउट्रम ने दावा किया कि वहां की जनता नवाब के कुशासन से पीड़ित है और ब्रिटिश हस्तक्षेप अनिवार्य है। यद्यपि, यह रिपोर्ट काफी हद तक एकतरफा और पक्षपाती थी, जिसे केवल समृद्ध अवध क्षेत्र को ब्रिटिश साम्राज्य का हिस्सा बनाने के औचित्य को सिद्ध करने हेतु एक राजनीतिक हथियार के रूप में उपयोग किया गया था।

62. (4) तालुकदार
1856 में अवध के विलय के तुरंत पश्चात लागू की गई 'संक्षिप्त बंदोबस्त' नीति ने वहां के शक्तिशाली तालुकदारों को सर्वाधिक प्रभावित किया। अंग्रेजों ने उनके भूमि अधिकारों की सूक्ष्म जाँच की और वैध प्रलेखों के अभाव में उनकी पैतृक जागीरें और राजस्व वसूलने के अधिकार छीन लिए। इससे शताब्दियों से चले आ रहे तालुकदारों के सामाजिक और आर्थिक प्रभुत्व को गहरा आघात लगा। यही कारण था कि 1857 के विद्रोह के दौरान अवध के तालुकदारों ने बड़े पैमाने पर अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध किया था।

63. (1) बॉम्बे सेना ने बंगाल सेना की तरह ही व्यापक विद्रोह का अनुभव किया।
1857 का विद्रोह मुख्य रूप से उत्तरी और मध्य भारत तक ही सीमित रहा, जहाँ बंगाल सेना के सैनिकों ने बड़े पैमाने पर भाग लिया था। इसके विपरीत, बॉम्बे और मद्रास प्रेसीडेंसी की सेनाएँ मोटे तौर पर विद्रोह की लहर से अप्रभावित रहीं और अंग्रेजों के प्रति वफादार बनी रहीं। पंजाब का क्षेत्र भी विद्रोह को कुचलने में अंग्रेजों हेतु एक महत्वपूर्ण आधार बना रहा। विद्रोह की दक्षिण सीमा मुख्य रूप से नर्मदा नदी तक ही थी, जिसके पार इसका प्रभाव नगण्य रहा था।

64. (2) फूट डालो और राज करो
1857 के विद्रोह के पश्चात अंग्रेजों द्वारा अपनाई गई 'लड़ाकू जातियों' की नीति उनकी प्रसिद्ध 'फूट डालो और राज करो' की रणनीति का ही एक अंग थी। इसके माध्यम से उन्होंने भारतीय समाज को मार्शल और नॉन-मार्शल समूहों में विभाजित कर दिया। उन्होंने उन समुदायों को सेना में अधिक स्थान दिया जो विद्रोह के दौरान अंग्रेजों के प्रति निष्ठावान रहे थे, जबकि विद्रोही क्षेत्रों के लोगों को अयोग्य घोषित कर दिया। इस नीति का उद्देश्य सेना के भीतर क्षेत्रीय और जातीय वैमनस्य उत्पन्न करना था।

65. (2) केवल I और III
1857 के विद्रोह के उपरांत ब्रिटिश सरकार ने अपनी नीतियों में दूरगामी परिवर्तन किए। उन्होंने भारतीयों की धार्मिक भावनाओं के प्रति अधिक सावधानी बरतते हुए सामाजिक और धार्मिक रीति-रिवाजों में अहस्तक्षेप की नीति अपनाई। साथ ही, विद्रोह के कटु अनुभवों के कारण ब्रिटिश प्रशासन और सेना में नस्लीय भेदभाव और पृथक्करण और भी गहरा हो गया। इसके विपरीत, अंग्रेजों ने भविष्य में किसी भी संयुक्त विद्रोह को रोकने हेतु हिंदू-मुस्लिम एकता के स्थान पर उनके मध्य विभाजन की रणनीति अपनाई थी।

66. (1) लॉर्ड पामर्स्टन
1857 के विद्रोह के समय लॉर्ड पामर्स्टन ब्रिटेन के प्रधानमंत्री थे। उनके कार्यकाल के दौरान ही भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन को समाप्त करने और सत्ता को सीधे ब्रिटिश क्राउन को हस्तांतरित करने की प्रक्रिया प्रारंभ हुई थी। पामर्स्टन सरकार ने भारत में विद्रोह को दबाने हेतु अतिरिक्त सैन्य बल भेजने और बाद में प्रशासनिक सुधारों के लिए 1858 के अधिनियम को संसद में प्रस्तुत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उनके नेतृत्व में ब्रिटिश नीति में साम्राज्यवादी नियंत्रण को सुदृढ़ किया गया।

67. (3) सर ह्यू रोज़
झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की वीरता और युद्ध कौशल से उनके सबसे प्रबल शत्रु, ब्रिटिश सेनापति सर ह्यू रोज़ भी अत्यंत प्रभावित थे। रानी की शहादत के पश्चात उन्होंने श्रद्धापूर्वक कहा था कि "यहाँ वह महिला सोई हुई है, जो विद्रोहियों में एकमात्र मर्द थी।" यह कथन रानी लक्ष्मीबाई के अदम्य साहस, नेतृत्व क्षमता और अटूट देशभक्ति को एक विदेशी सैन्य अधिकारी द्वारा दी गई एक ऐतिहासिक श्रद्धांजलि है। रानी लक्ष्मीबाई भारतीय इतिहास में वीरता और स्वाभिमान के शाश्वत प्रतीक के रूप में आज भी जीवित हैं।

68. (2) II, III और V
1857 के विद्रोह के दमन ने ब्रिटिश राजकोष पर भारी वित्तीय भार डाला, जिसे अंततः भारतीय जनता पर ही थोपा गया। इस वित्तीय घाटे की पूर्ति हेतु 1860 में भारत में प्रथम बार जेम्स विल्सन द्वारा आयकर आरोपित किया गया था। इसके साथ ही, सार्वजनिक ऋण में अत्यधिक वृद्धि हुई और सैन्य सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए रेलवे और बुनियादी ढांचे में विदेशी निवेश को प्रोत्साहित किया गया। यद्यपि, इस दौरान भारतीय हथकरघा उद्योगों को कोई संरक्षण नहीं मिला, बल्कि उनकी स्थिति और भी शोचनीय हो गई थी।

69. (3) सर ह्यू रोज़
1857 के भीषण संग्राम के दौरान कई महत्वपूर्ण ब्रिटिश अधिकारियों को अपने प्राण गंवानी पड़े थे। सर हेनरी लॉरेंस लखनऊ की रेजिडेंसी में मारे गए, जॉन निकोलसन दिल्ली पर पुनः कब्जा करते समय वीरगति को प्राप्त हुए और मेजर बर्टन की हत्या कोटा के विद्रोहियों ने कर दी थी। इन सबके विपरीत, सर ह्यू रोज़ ने न केवल विद्रोह के दौरान झाँसी और मध्य भारत में सफल सैन्य अभियानों का नेतृत्व किया, बल्कि वे इस युद्ध में जीवित रहे और बाद में उन्हें उच्च सैन्य सम्मानों से अलंकृत किया गया था।

70. (1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
राजस्थान में 1857 के विद्रोह के दौरान विभिन्न रियासतों और सैन्य टुकड़ियों की भूमिका भिन्न रही। एरिनपुरा में 'जोधपुर लीजन' के सैनिकों ने विद्रोह का नेतृत्व किया और दिल्ली की ओर प्रस्थान किया। मेवाड़ के महाराणा स्वरूप सिंह ने संकट के समय ब्रिटिश परिवारों को शरण दी और अंग्रेजों का सहयोग किया। जयपुर के महाराजा राम सिंह द्वितीय और जोधपुर के महाराजा तख्त सिंह ने भी अपनी सैन्य शक्ति का उपयोग अंग्रेजों

Click Here to Buy book on Amazon

मार डाला, जेलों के ताले तोड़े और दिल्ली की ओर कूच कर दिया था।

52. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
1857 के विद्रोह के दौरान अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त मध्यम वर्ग और बुद्धिजीवियों ने स्वयं को विद्रोहियों से पृथक रखा। इस वर्ग का मानना था कि भारत का विकास और आधुनिक सभ्यता की ओर प्रगति केवल ब्रिटिश शासन के संरक्षण में ही संभव है। उन्हें लगा कि विद्रोही नेता पुरानी सामंती व्यवस्था को वापस लाना चाहते हैं, जो भारत के आधुनिकीकरण के पथ में बाधक होगी। इसीलिए, उन्होंने विद्रोह का समर्थन करने के स्थान पर ब्रिटिश प्रशासन के प्रति तटस्थ रवैया अपनाया।

53. (3) जाति-आधारित अलग स्कूली शिक्षा को बढ़ावा देना
अंग्रेजों द्वारा किए गए सामाजिक सुधारों ने भारतीय समाज में विविध प्रतिक्रियाएं उत्पन्न कीं। सती प्रथा का उन्मूलन और विधवा पुनर्विवाह जैसे नियमों ने रूढ़िवादी वर्गों में गहरा आक्रोश उत्पन्न किया क्योंकि इन्हें धर्म में सीधा हस्तक्षेप माना गया। पश्चिमी शिक्षा और मिशनरी गतिविधियों को भी शंका की दृष्टि से देखा गया। इसके विपरीत, जाति-आधारित पृथक स्कूली शिक्षा जैसी नीतियों ने भारतीय सामाजिक संरचना को कोई चुनौती नहीं दी, इसलिए रूढ़िवादी हिंदुओं ने इसे कम आपत्तिजनक माना था।

54. (2) ब्रिटिश क्राउन को सेवाएं हस्तांतरित किए जाने पर यूरोपीय सैनिकों के बीच असंतोष।
1857 के विद्रोह के उपरांत, जब ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना को सीधे ब्रिटिश क्राउन के अधीन स्थानांतरित किया गया, तो यूरोपीय सैनिकों ने इसका विरोध किया। इसे 'श्वेत विद्रोह' कहा जाता है। इन सैनिकों का तर्क था कि उनका अनुबंध कंपनी के साथ था, न कि क्राउन के साथ, और वे इस हस्तांतरण के बदले विशेष भत्ते या पुनः भर्ती के अधिकार की मांग कर रहे थे। यद्यपि यह सशस्त्र संघर्ष नहीं था, परंतु इसने संक्रमण काल के दौरान ब्रिटिश प्रशासन हेतु समस्या उत्पन्न की थी।

55. (2) केवल IV
1857 के विद्रोह में विभिन्न क्षेत्रीय नेताओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण थी। अजीमुल्लाह खान और तांत्या टोपे ने अपनी नीतियों से अंग्रेजों को विचलित किया, जबकि बख्त खान ने दिल्ली में सैन्य कमान संभाली। यद्यपि, पंजाब की रानी जिंदन के विषय में यह कथन त्रुटिपूर्ण है कि उन्होंने 1857 में विद्रोह का नेतृत्व किया था। वे उस समय निर्वासन में थीं और सक्रिय रूप से विद्रोह में सम्मिलित नहीं थीं। पंजाब का अधिकांश क्षेत्र इस विद्रोह के दौरान मुख्य रूप से अंग्रेजों के प्रति वफादार बना रहा था।

56. (1) अंग्रेजों ने तालुकदारों के साथ गठबंधन किया और उनकी भूमि उन्हें वापस कर दी।
1857 के विद्रोह के दमन के पश्चात अंग्रेजों ने अवध में अपनी नीति में महत्वपूर्ण परिवर्तन किया। उन्होंने अनुभव किया कि तालुकदारों की बेदखली विद्रोह का एक बड़ा कारण थी। विद्रोह के उपरांत शांति बनाए रखने हेतु अंग्रेजों ने तालुकदारों को अपना स्वाभाविक सहयोगी स्वीकार कर लिया और उनकी अधिकांश भूमि तथा अधिकार उन्हें वापस कर दिए। इस नीति का उद्देश्य एक निष्ठावान जमींदार वर्ग निर्मित करना था जो भविष्य में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध किसी भी विद्रोह को रोकने में सहायता कर सके।

57. (3) राजस्थान के एक व्यापारी जिन्होंने रानी लक्ष्मीबाई को वित्तीय सहायता दी थी।
अमर चंद बांठिया ग्वालियर के एक संपन्न राजस्थानी व्यापारी थे जिन्होंने 1857 के विद्रोह में अद्वितीय देशभक्ति का परिचय दिया। उन्होंने ग्वालियर के राजकीय कोष से रानी लक्ष्मीबाई और तांत्या टोपे की विद्रोही सेना को भारी वित्तीय सहायता प्रदान की ताकि वे युद्ध जारी रख सकें। उनके इस कृत्य को अंग्रेजों ने राजद्रोह माना और उन्हें ग्वालियर के बाजार में सार्वजनिक रूप से फांसी दे दी गई। उन्हें 'राजस्थान का मंगल पांडे' भी कहा जाता है, जो उनके बलिदान को सम्मानित करता है।

58. (2) हेनरी हैवलॉक → जेम्स आउट्रम → कोलिन कैंपबेल
लखनऊ को विद्रोहियों के नियंत्रण से मुक्त कराने हेतु अंग्रेजों ने कई सैन्य अभियान चलाए। सर्वप्रथम हेनरी हैवलॉक ने रेजिडेंसी को राहत देने का प्रयास किया, परंतु वे विफल रहे। इसके पश्चात जेम्स आउट्रम ने कमान संभाली, परंतु वे भी विद्रोहियों के घेरे को पूर्णतः तोड़ने में असमर्थ रहे। अंततः नवंबर 1857 में मुख्य सेनापति सर कोलिन कैंपबेल ने एक विशाल सैन्य बल के साथ लखनऊ पर निर्णायक आक्रमण किया और शहर को विद्रोहियों से मुक्त कराकर ब्रिटिश सत्ता पुनः स्थापित की थी।

59. (4) कथन I गलत है लेकिन II सही है।
लॉर्ड डलहौजी द्वारा भारत में प्रारंभ की गई टेलीग्राफ और रेलवे जैसी आधुनिक संचार प्रणालियाँ 1857 के विद्रोह के दौरान अंग्रेजों हेतु वरदान सिद्ध हुईं। टेलीग्राफ के माध्यम से ब्रिटिश सेना ने विभिन्न केंद्रों पर होने वाली विद्रोही गतिविधियों की तत्काल सूचना प्राप्त की और अपनी सैन्य टुकड़ियों के आवागमन को कुशलतापूर्वक समन्वित किया। इसके विपरीत, विद्रोहियों के पास ऐसे आधुनिक साधनों का पूर्ण अभाव था, जिससे वे सूचनाओं के आदान-प्रदान और रणनीतिक योजना बनाने में अंग्रेजों से पिछड़ गए थे।

60. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
राजस्थान में 1857 के विद्रोह की विभिन्न घटनाओं की तिथियां इसके व्यापक प्रसार को दर्शाती हैं। नसीराबाद में 28 मई को प्रथम बार विद्रोह भड़का, जिसके उपरांत 3 जून को नीमच के सैनिकों ने हथियार उठाए। एरिनपुरा में विद्रोह का प्रारंभ 21 अगस्त को हुआ, जहाँ सैनिकों ने "चलो दिल्ली, मारो फिरंगी" का नारा दिया। कोटा का सबसे उग्र जन-विद्रोह 15 अक्टूबर को प्रारंभ हुआ। इन पृथक तिथियों ने राजस्थान में ब्रिटिश प्रशासन हेतु निरंतर चुनौतियां उत्पन्न की थीं।

61. (3) आउट्रम
लॉर्ड डलहौजी ने 1856 में अवध के विलय का निर्णय जेम्स आउट्रम की एक रिपोर्ट के आधार पर लिया था। इस रिपोर्ट

NODIA

80. (1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
1857 से पूर्व ब्रिटिश सरकार द्वारा पारित विभिन्न सुधार अधिनियमों ने भारतीय समाज में भिन्न समय पर प्रभाव डाला। सती प्रथा उन्मूलन अधिनियम 1829 में लॉर्ड विलियम बेंटिक के प्रयासों से आया। धार्मिक अक्षमता अधिनियम 1850 में लागू हुआ, जिसने धर्मांतरण के उपरांत भी संपत्ति के अधिकार सुरक्षित किए। लॉर्ड कैनिंग के समय 1856 में हिंदू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम और सामान्य सेवा भर्ती अधिनियम पारित हुए। इन विधियों ने रूढ़िवादी भारतीय समाज के मन में यह धारणा पुष्ट की कि अंग्रेज उनके धर्म को नष्ट करना चाहते हैं।

www.nodia.in

Downloaded from www.pdf.tube

अध्याय 18
ब्रिटिश राजनीतिक एवं प्रशासनिक नीतियाँ

1. निम्नलिखित में से कौन सा भारत सरकार अधिनियम 1858 का प्राथमिक परिणाम था?
(1) ब्रिटिश क्राउन से ईस्ट इंडिया कंपनी को शक्ति का हस्तांतरण
(2) ईस्ट इंडिया कंपनी से ब्रिटिश क्राउन को शक्ति का हस्तांतरण
(3) प्रांतों में द्वैध शासन की शुरुआत
(4) भारत में एक संघीय ढांचे की स्थापना
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

2. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (अधिनियम)
A. भारत सरकार अधिनियम 1858
B. भारतीय परिषद अधिनियम 1861
C. मॉर्ले-मिंटो सुधार 1909
D. मोंटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार 1919
सूची II: (मुख्य विशेषता)
i. विभागीय प्रणाली (पोर्टफोलियो सिस्टम) की शुरुआत
ii. भारत के राज्य सचिव के पद का सृजन
iii. प्रांतों में द्वैध शासन की शुरुआत
iv. मुसलमानों के लिए पृथक निर्वाचक मंडल की शुरुआत
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

3. भारतीय परिषद अधिनियम 1861 ने ब्रिटिश भारत में विधायी प्रक्रिया को मौलिक रूप से कैसे परिवर्तित किया?
(1) गवर्नर जनरल और उनकी परिषद के हाथों में सभी विधायी शक्तियों का केंद्रीकरण करके
(2) सीमित मताधिकार प्रणाली के माध्यम से केंद्रीय विधान परिषद के लिए प्रत्यक्ष चुनाव शुरू करके
(3) बॉम्बे और मद्रास प्रेसीडेंसी को विधायी शक्तियां पुनः प्रदान करके विकेंद्रीकरण की शुरुआत करना
(4) गवर्नर जनरल की कार्यकारी परिषद को समाप्त करके उसके स्थान पर एक प्रतिनिधि निकाय की स्थापना करना
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

4. भारतीय परिषद अधिनियम 1892 के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसने केंद्रीय और प्रांतीय विधान परिषदों में अतिरिक्त सदस्यों की संख्या में वृद्धि की।
II. इसने विधान परिषदों को बजट पर चर्चा करने की शक्ति प्रदान की।
III. इसने स्पष्ट रूप से सभी गैर-सरकारी सीटों के लिए सार्वभौमिक मताधिकार के आधार पर प्रत्यक्ष चुनाव की शुरुआत की।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

NODIA

5. निम्नलिखित में से कौन सा 1909 के मॉर्ले-मिंटो सुधारों का प्रावधान नहीं था?
(1) इसने केंद्रीय और प्रांतीय दोनों स्तरों पर विधान परिषदों के आकार में पर्याप्त वृद्धि की।
(2) इसने केंद्रीय विधान परिषद में सरकारी बहुमत बनाए रखा।
(3) इसने विशेष रूप से सिखों और भारतीय ईसाइयों के लिए सांप्रदायिक प्रतिनिधित्व की प्रणाली शुरु की।
(4) इसने पहली बार वायसराय की कार्यकारी परिषदों के साथ भारतीयों के जुड़ाव का प्रावधान किया।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

6. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A): 1919 के मोंटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधारों ने प्रांतीय स्तर पर द्वैध शासन की शुरुआत की।
कारण (R): इसका उद्देश्य बिना किसी आरक्षण के निर्वाचित भारतीय मंत्रियों को प्रांतीय प्रशासन का नियंत्रण पूर्णतः हस्तांतरित करना था।
नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

7. भारत सरकार अधिनियम 1935 के अंतर्गत, विधान की अवशिष्ट शक्तियां किसमें निहित थीं?
(1) संघीय विधायिका

(2) प्रांतीय विधायिका
(3) भारत के राज्य सचिव
(4) गवर्नर जनरल
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

8. भारत सरकार अधिनियम 1935 के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसने अखिल भारतीय संघ की स्थापना का प्रावधान किया।
II. इसने प्रांतों में द्वैध शासन को समाप्त कर प्रांतीय स्वायत्तता की शुरुआत की।
III. इसने केंद्र में द्वैध शासन की शुरुआत की।
IV. इसने भारत के एक संघीय न्यायालय की स्थापना की।
कथनों का कौन सा संयोजन सही है?
(1) केवल I, II और IV
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

9. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: भारतीय सिविल सेवा (ICS) को प्रारंभ में व्यवस्थित नस्लीय भेदभाव द्वारा चिन्हित किया गया था, जिसने भारतीयों को उच्च प्रशासनिक पदों से बाहर रखा।
कथन II: लॉर्ड लिटन द्वारा शुरु की गई वैधानिक सिविल सेवा ने भारतीय और ब्रिटिश सिविल सेवकों की स्थिति को सफलतापूर्वक समान कर दिया।
निम्नलिखित में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

10. निम्नलिखित विधायी अधिनियमों को उनके अधिनियमन के कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. वर्नाक्यूलर प्रेस अधिनियम
II. बजट पर चर्चा की अनुमति देने वाला भारतीय परिषद अधिनियम
III. क्राउन शासन स्थापित करने वाला भारत सरकार अधिनियम
IV. सांप्रदायिक निर्वाचन मंडल शुरु करने वाला भारतीय परिषद अधिनियम
सही क्रम का चयन कीजिए:
(1) III, I, II, IV
(2) I, III, II, IV
(3) III, II, I, IV
(4) I, II, III, IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

11. भारतीय कानूनों के संहिताकरण के लिए 1834 में नियुक्त प्रथम विधि आयोग की अध्यक्षता निम्नलिखित में से किसने की थी?
(1) लॉर्ड कॉर्नवालिस
(2) लॉर्ड डलहौजी
(3) वारेन हेस्टिंग्स
(4) लॉर्ड मैकाले
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

12. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (प्रेस कानून/अधिनियम)
A. प्रेस सेंसरशिप अधिनियम, 1799
B. लाइसेंसिंग विनियमन, 1823
C. भारतीय प्रेस की मुक्ति, 1835
D. वर्नाक्यूलर प्रेस अधिनियम, 1878
सूची II: (गवर्नर जनरल/वायसराय)
i. लॉर्ड लिटन
ii. लॉर्ड वेलेज़ली
iii. चार्ल्स मेटकाफ
iv. जॉन एडम्स
(1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(2) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(3) A-i, B-iv, C-iii, D-ii
(4) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

13. ब्रिटिश शासन के अंतर्गत पुलिस प्रणाली के विकास के संबंध में विषम विकल्प का चयन करें:
(1) लॉर्ड कॉर्नवालिस द्वारा दरोगा प्रणाली की स्थापना
(2) भारतीय पुलिस अधिनियम 1861 का अधिनियमन
(3) पुलिस अधिकार क्षेत्रों में सुधार के लिए इल्बर्ट बिल की शुरुआत
(4) 1902 में फ्रेजर आयोग की नियुक्ति
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

14. वर्नाक्यूलर प्रेस अधिनियम 1878 के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसे भारतीय भाषाई प्रेस की स्वतंत्रता को प्रतिबंधित करने के लिए अधिनियमित किया गया था।
II. इसके अंतर्गत मुद्रकों को एक बंध-पत्र भरने की आवश्यकता थी कि वे सरकार के विरुद्ध असंतोष उत्पन्न करने वाली कोई सामग्री प्रकाशित नहीं करेंगे।
III. इस अधिनियम के अंतर्गत मजिस्ट्रेट का निर्णय अंतिम था और उसके विरुद्ध न्यायालय में अपील नहीं की जा सकती थी।
IV. यह अंग्रेजी और स्थानीय भाषा (वर्नाक्यूलर) दोनों के समाचार पत्रों पर समान रुप से लागू होता था।
V. इसे अंततः लॉर्ड रिपन द्वारा निरस्त कर दिया गया था।
निम्नलिखित में से कौन सा कथनों का संयोजन सही है?
(1) केवल I, II, III और V
(2) केवल I, II, IV और V

Click Here to Buy book on Amazon

(3) केवल II, III, IV और V
(4) केवल I, III, IV और V
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

15. ब्रिटिश राजनीतिक दमन के संदर्भ में, भारतीय दंड संहिता की धारा 124A विशेष रूप से राजद्रोह को किस रूप में परिभाषित करती है?
(1) सरकार के प्रति घृणा, अवमानना या असंतोष फैलाना या फैलाने का प्रयास करना
(2) सार्वजनिक व्यवस्था को बिगाड़ने के लिए विभिन्न धार्मिक समूहों के बीच शत्रुता को बढ़ावा देना
(3) ब्रिटिश क्राउन या भारत की स्थापित सरकार के विरुद्ध युद्ध छेड़ना या उसका प्रयास करना
(4) पूर्व आधिकारिक अनुमति प्राप्त किए बिना गैरकानूनी सभाओं और सार्वजनिक जुलूसों का आयोजन करना
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

16. भारत में औपनिवेशिक सिविल सेवाओं के विकास में निम्नलिखित महत्वपूर्ण चरणों का सही कालानुक्रमिक क्रम चुनें:
(1) फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना, मैकाले समिति की रिपोर्ट, भारत में एक साथ परीक्षाओं की शुरुआत, इस्लिंगटन आयोग
(2) फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना, मैकाले समिति की रिपोर्ट, इस्लिंगटन आयोग, भारत में एक साथ परीक्षाओं की शुरुआत
(3) मैकाले समिति की रिपोर्ट, फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना, इस्लिंगटन आयोग, भारत में एक साथ परीक्षाओं की शुरुआत
(4) मैकाले समिति की रिपोर्ट, भारत में एक साथ परीक्षाओं की शुरुआत, फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना, इस्लिंगटन आयोग
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

17. 1905 की बंगाल विभाजन नीति के पीछे लॉर्ड कर्जन का अंतर्निहित राजनीतिक उद्देश्य क्या था, जिसे आधिकारिक तौर पर प्रशासनिक सुविधा के आधार पर उचित ठहराया गया था?
(1) पूर्वी जिलों और पंजाब के कुछ हिस्सों के तीव्र औद्योगिक विकास को बढ़ावा देना
(2) बंगाल की राजनीतिक रूप से जागरूक जनसंख्या को विभाजित कर भारतीय राष्ट्रवाद को कमजोर करना
(3) एक पृथक प्रशासनिक प्रांत के लिए अखिल भारतीय मुस्लिम लीग की मांग को पूरा करना
(4) भारत के उत्तरी और पूर्वी क्षेत्रों में अकाल का प्रभावी प्रबंधन करना
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

18. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (ब्रिटिश नीति से संबंधित शब्दावली)
A. प्रांतों में द्वैध शासन
B. प्रांतीय स्वायत्तता
C. विभागीय प्रणाली (पोर्टफोलियो सिस्टम)
D. सांप्रदायिक निर्वाचन मंडल
सूची II: (संबद्ध अधिनियम)
i. भारत सरकार अधिनियम 1935
ii. भारतीय परिषद अधिनियम 1861
iii. मॉर्ले-मिंटो सुधार 1909
iv. मोंटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार 1919
(1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(2) A-i, B-iv, C-iii, D-ii
(3) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(4) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

19. ब्रिटिश भारत में औपनिवेशिक शहरी नियोजन और नस्लीय पृथक्करण के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) अंग्रेजों ने मूल नगरों से दूर 'सिविल लाइन्स' और 'छावनी' (कैंटोनमेंट) नामक पृथक आवासीय क्षेत्र विकसित किए।
(2) भारतीय जनसंख्या से शारीरिक और सामाजिक दूरी बनाए रखने के लिए 'व्हाइट टाउन्स' और 'ब्लैक टाउन्स' की अवधारणा का प्रयोग किया गया।
(3) हिल स्टेशनों की स्थापना केवल रणनीतिक सैन्य चौकियों के रूप में की गई थी और वहां कोई प्रशासनिक कार्य नहीं थे।
(4) यूरोपीय क्षेत्रों में औपनिवेशिक शहरी नियोजन ने चौड़ी सड़कों, बंगलों और बेहतर स्वच्छता अवसंरचना को प्राथमिकता दी।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

NODIA

20. औपनिवेशिक प्रशासन में जनगणना की भूमिका के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. भारत की पहली समकालिक (सिंक्रोनस) और व्यापक जनगणना 1881 में आयोजित की गई थी।
II. जनगणना कार्य पूर्णतः सांख्यिकीय थे और जाति या धार्मिक पहचान को सुदृढ़ करने में उनकी कोई भूमिका नहीं थी।
III. औपनिवेशिक सरकार ने जनगणना के आंकड़ों का उपयोग लड़ाकू और गैर-लड़ाकू जातियों को वर्गीकृत करने के लिए किया, जिससे 'फूट डालो और राज करो' की नीति में सहायता मिली।
दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

21. निम्नलिखित में से कौन 19वीं सदी के अंत और 20वीं सदी के प्रारंभ में अंग्रेजों की 'फूट डालो और राज करो' की नीति के मुख्य तंत्र का सर्वोत्तम वर्णन करता है?

(1) क्षेत्रीय भाषाओं और स्थानीय परंपराओं को दबाते हुए एक एकीकृत राष्ट्रीय पहचान को प्रोत्साहित करना
(2) सेना को सभी प्रमुख जातियों के समान प्रतिनिधित्व के साथ कड़ाई से क्षेत्रीय कमानों में विभाजित करना
(3) ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध एकीकृत विरोध को रोकने के लिए व्यवस्थित रूप से एक समुदाय का पक्ष लेना
(4) धर्म या जाति के स्थान पर विशुद्ध रूप से आर्थिक वर्ग के आधार पर जनसंख्या को पृथक करना
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

22. न्यायिक मील के पत्थर और उनकी विशेषताओं के निम्नलिखित जोड़ों में से कौन सा गलत सुमेलित है?
(1) 1773 का रेगुलेटिंग एक्ट - कलकत्ता में सर्वोच्च न्यायालय की स्थापना
(2) भारत सरकार अधिनियम 1935 - लंदन में प्रिवी काउंसिल की स्थापना
(3) भारतीय उच्च न्यायालय अधिनियम 1861 - सर्वोच्च न्यायालयों और सदर अदालतों का उन्मूलन
(4) मैकाले का विधि आयोग - भारतीय दंड संहिता का प्रारुप तैयार करना
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

23. भारत सरकार अधिनियम 1858 ने भारतीय प्रशासन की देखरेख के लिए 'बोर्ड ऑफ कंट्रोल' और 'कोर्ट ऑफ डायरेक्टर्स' को किस नई इकाई से प्रतिस्थापित किया?
(1) शाही विधायी निकाय द्वारा सहायता प्राप्त गवर्नर जनरल इन काउंसिल
(2) भारतीय नामित सदस्यों वाली इंपीरियल लेजिस्लेटिव काउंसिल
(3) रियासतों के हितों का प्रतिनिधित्व करने वाला 'चेंबर ऑफ प्रिंसेस'
(4) भारत के राज्य सचिव और उनकी सलाहकार परिषद, 'इंडिया काउंसिल'
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

24. निम्नलिखित में से कौन सा भारतीय परिषद अधिनियम 1861 की विशेषता नहीं थी?
(1) इसने औपचारिक रूप से प्रांतीय परिषदों के लिए प्रत्यक्ष चुनाव के सिद्धांत की शुरुआत की।
(2) इसने वायसराय को आपातकाल के दौरान अध्यादेश जारी करने का अधिकार दिया।
(3) इसने वायसराय की विधान परिषद में गैर-सरकारी सदस्यों के नामांकन की अनुमति दी।
(4) इसने लॉर्ड कैनिंग द्वारा प्रारंभ की गई विभागीय प्रणाली (पोर्टफोलियो सिस्टम) को मान्यता दी।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

25. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (ब्रिटिश अधिकारी)
A. लॉर्ड कॉर्नवालिस
B. लॉर्ड कर्जन
C. लॉर्ड विलियम बेंटिक
D. लॉर्ड कैनिंग
सूची II: (पुलिस/प्रशासनिक सुधार)
i. एसपी के पद को समाप्त किया और उत्तरदायित्व कलेक्टर को हस्तांतरित कर दिए
ii. फ्रेजर पुलिस आयोग की नियुक्ति की
iii. भारतीय पुलिस अधिनियम 1861 अधिनियमित किया
iv. थाना और दरोगा प्रणाली का सृजन किया
(1) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
(2) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(3) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(4) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

26. राजनीतिक असंतोष को रोकने के लिए किस वर्ष भारतीय दंड संहिता (IPC) में औपचारिक रूप से धारा 124A (राजद्रोह) को जोड़ा गया था?
(1) 1860
(2) 1870
(3) 1898
(4) 1908
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

27. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: औपनिवेशिक जनगणना में व्यक्तियों को अपनी जाति और धार्मिक पहचान को स्पष्ट रूप से परिभाषित करना आवश्यक था, जिससे सामाजिक सीमाएं कठोर हो गईं।
कथन II: हरबर्ट होप रिस्ली ने सामाजिक वरीयता के क्रम में आधिकारिक तौर पर जातियों को वर्गीकृत करने के लिए 1901 की जनगणना का उपयोग किया, जिसे भारतीयों द्वारा व्यापक विरोध के बिना स्वीकार कर लिया गया।
निम्नलिखित में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

NODIA

28. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A): लॉर्ड लिटन द्वारा भारतीय सिविल सेवा (ICS) परीक्षा के लिए अधिकतम आयु सीमा 21 से घटाकर 19 वर्ष करना नस्लीय भेदभाव की एक सुविचारित नीति थी।
कारण (R): इसका मुख्य उद्देश्य भारतीय उम्मीदवारों के लिए इंग्लैंड जाकर ब्रिटिश उम्मीदवारों के विरुद्ध सफलतापूर्वक प्रतिस्पर्धा करना असंभव बनाना था।
नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।

(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

29. औपनिवेशिक शासन के दौरान 'छावनी' (कैंटोनमेंट) स्थापित करने की अवधारणा मुख्य रूप से किस आवश्यकता से प्रेरित थी?
(1) स्थानीय औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था को सहारा देने के लिए औद्योगिक केंद्र विकसित करना
(2) विभिन्न भारतीय सामाजिक वर्गों के बीच पाश्चात्य शिक्षा के प्रचार के लिए केंद्र स्थापित करना
(3) यूरोपीय सैन्य और नागरिक निवासियों के लिए पृथक और सुरक्षित शहरी स्थान निर्मित करना
(4) भारतीय अभिजात वर्ग को पारंपरिक शहरों से आधुनिक शहरी क्षेत्रों में स्थानांतरित करना
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

30. अंग्रेजों की 'फूट डालो और राज करो' की नीति के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. 1905 में बंगाल का विभाजन इस नीति की भौगोलिक अभिव्यक्ति थी, जिसका उद्देश्य पूर्व में एक मुस्लिम बहुल प्रांत निर्मित करना था।
II. 1909 में पृथक निर्वाचक मंडलों की शुरुआत का ब्रिटिश प्रशासकों ने कड़ा विरोध किया था, लेकिन भारतीय नेताओं ने इसे उन पर थोपा था।
III. इस नीति ने एकीकृत राष्ट्रवादी आंदोलन के उदय को रोकने के लिए क्षेत्रीय और सांप्रदायिक विभाजनों का लाभ उठाया।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II
(3) केवल I और III
(4) केवल III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

31. भारत सरकार अधिनियम 1935 की विशेषताओं के संबंध में विषम विकल्प का चयन करें:
(1) वायसराय की कार्यकारी परिषद में विभागीय प्रणाली (पोर्टफोलियो सिस्टम) की शुरुआत।
(2) द्वैध शासन प्रणाली को प्रतिस्थापित करने के लिए प्रांतीय स्वायत्तता की शुरुआत।
(3) विभिन्न रियासतों सहित एक अखिल भारतीय संघ की स्थापना का प्रावधान।
(4) औपनिवेशिक शासन में पहली बार केंद्रीय स्तर पर द्वैध शासन की शुरुआत।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

32. फ्रेजर आयोग (1902) को लॉर्ड कर्जन द्वारा मुख्य रूप से किस क्षेत्र में सुधारों की समीक्षा के लिए नियुक्त किया गया था?
(1) प्रेस विनियम
(2) पुलिस प्रशासन
(3) न्यायिक संहिताकरण
(4) अकाल राहत
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

33. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (कानूनी संहिता/अधिनियम)
A. भारतीय दंड संहिता
B. दंड प्रक्रिया संहिता
C. नागरिक प्रक्रिया संहिता
D. भारतीय साक्ष्य अधिनियम
सूची II: (अधिनियमन का वर्ष)
i. 1859
ii. 1860
iii. 1861
iv. 1872
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

34. 1919 के मोंटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधारों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(1) इसने दो विधायी सदनों के माध्यम से केंद्रीय स्तर पर द्विसदनीयता (बाइकैमेरलिज्म) की शुरुआत की।
(2) इसने गवर्नर के निर्णयों पर प्रांतीय विधायिकाओं को पूर्ण वीटो शक्ति प्रदान की।
(3) इसने राष्ट्रवादी एकता को बढ़ावा देने के लिए पृथक निर्वाचक मंडल की प्रणाली को समाप्त कर दिया।
(4) इसने वायसराय की कार्यकारी परिषद का पूर्णतः भारतीयकरण कर दिया।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

35. ब्रिटिश भारत में राजद्रोह कानूनों और राजनीतिक दमन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. बाल गंगाधर तिलक को 'केसरी' में उनके लेखन के लिए धारा 124A के अंतर्गत दोषी ठहराया गया था।
II. महात्मा गांधी पर 'यंग इंडिया' में लेखों के लिए 1922 में राजद्रोह का मुकदमा चलाया गया था।
III. औपनिवेशिक सरकार ने राजद्रोह कानूनों का उपयोग केवल हिंसक क्रांतिकारियों के विरुद्ध किया।
IV. धारा 124A ने सरकार को किसी भी आलोचनात्मक राय को राजद्रोह मानकर उसे दबाने की अनुमति दी।
दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, II और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) केवल I और IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

Downloaded from www.pdf.tube

36. भारतीय राष्ट्रवादी आंदोलन पर 1878 के वर्नाक्यूलर प्रेस अधिनियम जैसे कठोर प्रेस कानूनों का प्राथमिक परिणाम क्या था?
(1) इससे उपमहाद्वीप में सभी भाषाई समाचार पत्रों का पूर्ण पतन हो गया।
(2) इसके परिणामस्वरूप प्रिंटिंग प्रेस के आयात पर स्थायी प्रतिबंध लगा दिया गया।
(3) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने प्रेस की स्वतंत्रता की मांग को छोड़ दिया।
(4) इसने राष्ट्रवादी विमर्श को गुप्त रूप से कार्य करने के लिए विवश किया और कुछ पत्रों को अंग्रेजी में बदलने के लिए प्रेरित किया।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

37. निम्नलिखित में से कौन सा भारत सरकार अधिनियम 1935 के अंतर्गत स्थापित संघीय न्यायालय की विशेषता नहीं थी?
(1) केंद्र और प्रांतों के बीच कानूनी विवादों में इसका प्रारंभिक अधिकार क्षेत्र था।
(2) संवैधानिक व्याख्या से जुड़े मामलों में उच्च न्यायालयों पर इसका अपीलीय अधिकार क्षेत्र था।
(3) इसने अपील के सर्वोच्च न्यायालय के रूप में कार्य किया, जिसने प्रिवी काउंसिल के अधिकार क्षेत्र को प्रतिस्थापित कर दिया।
(4) इसके न्यायाधीशों की नियुक्ति सीधे ब्रिटिश क्राउन द्वारा की जाती थी।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

38. निम्नलिखित औपनिवेशिक प्रेस विनियमों को सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
I. मेटकाफ अधिनियम (भारतीय प्रेस की मुक्ति)
II. जॉन एडम्स के लाइसेंसिंग विनियम
III. वर्नाक्यूलर प्रेस अधिनियम
IV. लॉर्ड वेलेज़ली का प्रेस सेंसरशिप अधिनियम
सही क्रम का चयन कीजिए:
(1) IV, II, I, III
(2) II, IV, I, III
(3) IV, I, II, III
(4) I, II, IV, III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

39. ब्रिटिश भारत में सिविल सेवाओं से संबंधित निम्नलिखित जोड़ों में से कौन सा सही सुमेलित है?
(1) लॉर्ड लिटन - भारत और इंग्लैंड में एक साथ ICS परीक्षा की शुरुआत
(2) ऐचिसन आयोग - ICS के लिए अधिकतम आयु सीमा घटाकर 19 करने की सिफारिश
(3) इस्लिंगटन आयोग - भारतीय सिविल सेवा को समाप्त करने की सिफारिश
(4) ली आयोग - लोक सेवा आयोग की स्थापना की सिफारिश
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

40. 1905 की विभाजन नीति के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसे बंगाल प्रेसीडेंसी के बड़े आकार के कारण प्रशासनिक आवश्यकता के रूप में उचित ठहराया गया था।
II. इसने पूर्वी बंगाल को असम के साथ मिलाकर नया प्रांत बनाने का प्रावधान किया।
III. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने क्षेत्रीय स्वायत्तता की दिशा में एक कदम के रूप में इसका स्वागत किया।
IV. इसने पंजाब के विभाजन को सफलतापूर्वक लागू किया।
V. तीव्र विरोध के कारण 1911 में विभाजन को निरस्त कर दिया गया था।
निम्नलिखित में से कौन सा कथनों का संयोजन गलत है?
(1) केवल I और II
(2) केवल III और IV
(3) केवल I, II और V
(4) केवल III, IV और V
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

41. मैकाले आयोग के नेतृत्व में कानूनों के संहिताकरण का मूल उद्देश्य क्या था?
(1) पारंपरिक हिंदू और इस्लामी न्यायशास्त्र को उनके मूल रूप में संरक्षित करना
(2) भारतीयों को ब्रिटिश नागरिकों के समान मौलिक अधिकार प्रदान करना
(3) औपनिवेशिक प्रशासन और वाणिज्यिक दोहन की सुविधा के लिए समान कानूनी प्रणाली स्थापित करना
(4) आपराधिक मामलों को संभालने के लिए स्थानीय ग्राम पंचायतों को सशक्त बनाना
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

42. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (औपनिवेशिक शहरी शब्दावली)
A. छावनी (कैंटोनमेंट)
B. सिविल लाइन्स
C. ब्लैक टाउन
D. हिल स्टेशन
सूची II: (विवरण)
i. यूरोपीय अधिकारियों के लिए आवासीय क्षेत्र
ii. भारतीय जनसंख्या द्वारा बसाए गए क्षेत्र
iii. ब्रिटिश सेना के लिए स्थापित सैन्य क्षेत्र
iv. यूरोपीय अधिकारियों के लिए स्वास्थ्य केंद्र और ग्रीष्मकालीन विश्राम स्थल
(1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(2) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
(3) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(4) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

43. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: 1909 के मॉर्ले-मिंटो सुधारों ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को केंद्रीय विधान परिषद में बहुमत प्रदान किया।

NODIA

राजमुकुट का शासन स्थापित हुआ। इसके पश्चात 1878 में वर्नाक्यूलर प्रेस अधिनियम द्वारा प्रेस पर प्रतिबंध लगाए गए। 1892 के अधिनियम ने विधान परिषद को बजट पर चर्चा की अनुमति प्रदान की। अंत में, 1909 के सुधारों द्वारा सांप्रदायिक निर्वाचन मंडल की शुरुआत की गई। यह क्रम भारतीय राजनीति में बदलते ब्रिटिश दृष्टिकोण को दर्शाता है।

11. (4) लॉर्ड मैकाले
भारत में कानूनी प्रणालियों को व्यवस्थित करने हेतु 1833 के चार्टर अधिनियम के अंतर्गत 1834 में प्रथम विधि आयोग का गठन किया गया था। इस महत्वपूर्ण आयोग की अध्यक्षता लॉर्ड मैकाले ने की थी। उनके नेतृत्व में ही भारतीय दंड संहिता का प्रारंभिक प्रारूप तैयार किया गया था। इस आयोग का मुख्य उद्देश्य विभिन्न स्थानीय कानूनों को संहिताबद्ध करना और पूरे ब्रिटिश भारत के लिए एक समान कानूनी ढांचा विकसित करना था।

12. (2) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
ब्रिटिश काल में प्रेस की स्वतंत्रता विभिन्न प्रशासकों के अधीन परिवर्तित होती रही। लॉर्ड वेलेज़ली ने 1799 में प्रेस सेंसरशिप लागू की, जबकि जॉन एडम्स ने 1823 में कठोर लाइसेंसिंग नियम बनाए। चार्ल्स मेटकाफ को भारतीय प्रेस का मुक्तिदाता कहा जाता है क्योंकि उन्होंने 1835 में इन प्रतिबंधों को हटाया। लॉर्ड लिटन ने 1878 में वर्नाक्यूलर प्रेस अधिनियम पारित कर भारतीय भाषाओं के समाचार पत्रों पर कड़े प्रतिबंध लगाकर अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का दमन किया।

13. (3) पुलिस अधिकार क्षेत्रों में सुधार के लिए इल्बर्ट बिल की शुरुआत
ब्रिटिश भारत में पुलिस व्यवस्था का विकास विभिन्न चरणों में हुआ। लॉर्ड कॉर्नवालिस ने थाना और दरोगा प्रणाली की नींव रखी। 1861 का पुलिस अधिनियम एक आधुनिक और संगठित पुलिस बल के गठन का आधार बना। लॉर्ड कर्जन के समय फ्रेजर आयोग ने पुलिस सुधारों की अनुशंसा की। हालांकि, इल्बर्ट बिल का संबंध न्यायिक अधिकारों और नस्लीय भेदभाव की समाप्ति से था, न कि प्रत्यक्ष रूप से पुलिस प्रशासन के सुधार या कार्यक्षेत्र से।

14. (1) केवल I, II, III और V
1878 का अधिनियम विशेष रूप से भारतीय भाषाई समाचार पत्रों के विरुद्ध लाया गया था। इसमें प्रकाशकों से सरकार विरोधी सामग्री न छापने का वचन लिया जाता था और मजिस्ट्रेट का निर्णय अंतिम होता था। यह अधिनियम भेदभावपूर्ण था क्योंकि यह केवल स्थानीय भाषाओं के प्रेस पर लागू होता था, अंग्रेजी प्रेस पर नहीं। राष्ट्रवादियों के तीव्र विरोध के कारण लॉर्ड रिपन ने 1882 में इस दमनकारी कानून को पूरी तरह निरस्त कर दिया था।

15. (1) सरकार के प्रति घृणा, अवमानना या असंतोष फैलाना या फैलाने का प्रयास करना
भारतीय दंड संहिता की धारा 124A राजद्रोह को परिभाषित करती है। इसके अनुसार, यदि कोई व्यक्ति बोले गए या लिखे गए शब्दों, संकेतों या दृश्य प्रतिनिधित्व द्वारा विधि द्वारा स्थापित सरकार के प्रति घृणा, अवमानना या असंतोष फैलाने का प्रयास करता है, तो उसे दंडित किया जा सकता है। औपनिवेशिक काल में इस कानून का मुख्य उद्देश्य ब्रिटिश शासन के विरुद्ध उठने वाली राष्ट्रवादी आवाजों और राजनीतिक असंतोष का दमन करना था।

16. (2) फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना, मैकाले समिति की रिपोर्ट, इस्लिंगटन आयोग, भारत में एक साथ परीक्षाओं की शुरुआत
नागरिक सेवाओं का विकास एक दीर्घकालिक प्रक्रिया रही है। 1800 में लॉर्ड वेलेज़ली ने अधिकारियों के प्रशिक्षण हेतु फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना की। 1854 में मैकाले समिति ने प्रतियोगी परीक्षाओं की अनुशंसा की। 1912 में इस्लिंगटन आयोग ने सेवाओं के भारतीयकरण पर विचार किया। अंततः 1922 से भारत और इंग्लैंड में एक साथ परीक्षाएं आयोजित होने लगीं। यह क्रमिक परिवर्तन भारतीय प्रशासनिक सेवा को अधिक व्यवस्थित और समावेशी बनाने हेतु था।

17. (2) बंगाल की राजनीतिक रूप से जागरूक जनसंख्या को विभाजित कर भारतीय राष्ट्रवाद को कमजोर करना
लॉर्ड कर्जन ने 1905 में बंगाल के विभाजन हेतु प्रशासनिक असुविधा का तर्क दिया था। हालांकि, वास्तविक राजनीतिक उद्देश्य बंगाली बुद्धिजीवियों और बढ़ते राष्ट्रवादी आंदोलन को दुर्बल करना था। अंग्रेजों ने धार्मिक आधार पर फूट डालकर हिंदुओं और मुसलमानों के मध्य अविश्वास उत्पन्न करने का प्रयास किया। वे बंगाल को राजनीतिक गतिविधियों के केंद्र के रुप में समाप्त करना चाहते थे ताकि ब्रिटिश विरोधी भावनाओं के प्रसार को प्रभावी रूप से रोका जा सके।

18. (1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
ब्रिटिश संवैधानिक सुधारों ने विभिन्न प्रशासनिक प्रणालियों को जन्म दिया। 1861 के अधिनियम ने विभागीय प्रणाली की शुरुआत की, जिससे शासन में विशिष्टता आई। 1909 के सुधारों ने सांप्रदायिक निर्वाचन मंडल के माध्यम से समाज को विभाजित किया। 1919 के अधिनियम ने प्रांतों में द्वैध शासन लागू किया, जो शक्तियों के पृथक्करण का प्रारंभिक प्रयास था। अंततः 1935 के अधिनियम ने प्रांतों को पूर्ण स्वायत्तता प्रदान की, जिससे वे अपने आंतरिक मामलों में अधिक स्वतंत्र हो सके।

19. (3) हिल स्टेशनों की स्थापना केवल रणनीतिक सैन्य चौकियों के रूप में की गई थी और वहां कोई प्रशासनिक कार्य नहीं थे।
औपनिवेशिक नगरों में नस्लीय पृथक्करण स्पष्ट था, जहाँ यूरोपीय और भारतीय बस्तियाँ पृथक थीं। 'व्हाइट टाउन्स' में चौड़ी सड़कें और बंगले होते थे, जबकि 'ब्लैक टाउन्स' घने और अव्यवस्थित थे। हिल स्टेशनों का उपयोग केवल सैन्य चौकियों के रूप में नहीं, बल्कि ग्रीष्मकालीन राजधानियों और स्वास्थ्य केंद्रों के रूप में भी किया जाता था। शिमला जैसे स्थानों ने महत्वपूर्ण प्रशासनिक केंद्रों के रूप में कार्य किया, जहाँ से गर्मियों में संपूर्ण ब्रिटिश सरकार संचालित होती थी।

Click Here to Buy book on Amazon

51. राजनीतिक असंतोष को दबाने के उद्देश्य से बनाए गए निम्नलिखित कानूनों में से विषम का चयन करें:
(1) वर्नाक्यूलर प्रेस अधिनियम, 1878
(2) रौलट एक्ट, 1919
(3) इल्बर्ट बिल, 1883
(4) भारतीय दंड संहिता की धारा 124A
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

52. ब्रिटिश शासन के अंतर्गत स्थापित औपनिवेशिक अदालतों के सही पदानुक्रम (निम्नतम से उच्चतम) का चयन करें:
(1) मुंसिफ कोर्ट, जिला न्यायाधीश की अदालत, सदर दीवानी अदालत, प्रिवी कांउसिल
(2) जिला न्यायाधीश की अदालत, मुंसिफ कोर्ट, प्रिवी कांउसिल, सदर दीवानी अदालत
(3) मुंसिफ कोर्ट, सदर दीवानी अदालत, जिला न्यायाधीश की अदालत, प्रिवी कांउसिल
(4) सदर दीवानी अदालत, मुंसिफ कोर्ट, जिला न्यायाधीश की अदालत, प्रिवी कांउसिल
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

53. औपनिवेशिक न्यायिक प्रणाली में नस्लीय भेदभाव के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) यूरोपीय ब्रिटिश प्रजा पर प्रायः केवल यूरोपीय न्यायाधीशों द्वारा ही मुकदमा चलाया जाता था।
(2) 1883 के इल्बर्ट बिल ने भारतीय मजिस्ट्रेटों को यूरोपीय अपराधियों पर मुकदमा चलाने की अनुमति देने का प्रस्ताव किया था।
(3) यूरोपीय लोगों के विरोध के कारण इल्बर्ट बिल को उसके मूल रूप में तत्काल लागू कर दिया गया।
(4) यूरोपीय लोगों को समान अपराधों के लिए भारतीयों की तुलना में हल्की सजा दी जाती थी।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

54. 'उच्च परिवारों' के भारतीयों के लिए अनुबंधित (covenanted) पदों के छठे भाग वाली वैधानिक सिविल सेवा 1878-79 में किसके द्वारा शुरू की गई थी?
(1) लॉर्ड रिपन
(2) लॉर्ड लिटन
(3) लॉर्ड मेयो
(4) लॉर्ड डफरिन
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

55. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (ब्रिटिश अधिकारी)
A. लॉर्ड कर्जन
B. लॉर्ड रिपन
C. लॉर्ड मैकाले
D. लॉर्ड मॉर्ले
सूची II: (संबद्ध नीति/घटना)
i. कानूनों का संहिताकरण
ii. बंगाल का विभाजन (1905)
iii. वर्नाक्यूलर प्रेस अधिनियम का निरसन
iv. सांप्रदायिक निर्वाचक मंडलों की शुरुआत
(1) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(2) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(3) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(4) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

56. भारत सरकार अधिनियम 1919 के अंतर्गत लागू 'द्वैध शासन' की विफलता का मुख्य कारण क्या था?
(1) मंत्रियों के पास वित्त और पुलिस जैसे 'आरक्षित' विभागों पर नियंत्रण नहीं था।
(2) वायसराय के हाथों में शक्ति केंद्रित करने के लिए प्रांतीय विधायिकाओं को समाप्त कर दिया गया।
(3) अधिनियम ने पुलिस और वित्त का नियंत्रण सीधे भारतीय मंत्रियों को सौंप दिया।
(4) रियासतों ने प्रांतीय चुनावों में भाग लेने से इनकार कर दिया।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

57. भारत सरकार अधिनियम 1935 के संबंध में निम्नलिखित जोड़ों में से कौन सा सही सुमेलित है?
(1) संघीय विधायिका - केंद्र में द्विसदनीय प्रणाली का उन्मूलन
(2) मताधिकार - सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार की शुरुआत
(3) प्रांतीय स्वायत्तता - प्रांतों में द्वैध शासन का प्रतिस्थापन
(4) कांउसिल ऑफ इंडिया - भारत सचिव के सलाहकार निकाय का विस्तार
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

NODIA

58. 1905 के बंगाल विभाजन के लिए औपनिवेशिक सरकार द्वारा दिया गया सार्वजनिक प्रशासनिक तर्क क्या था?
(1) बंगाल सरकार के प्रशासनिक बोझ को कम करना और असम के विकास को बढ़ावा देना
(2) राजधानी को कलकत्ता से स्थानांतरित कर राष्ट्रवादी नेताओं को पृथक करना
(3) वफादारी के पुरस्कार के रूप में पूर्वी भारत में मुस्लिम बहुल राज्य स्थापित करना
(4) बंगाली और उड़िया भाषियों के बीच भाषाई सीमाओं का निर्धारण करना
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

59. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: औपनिवेशिक छावनियों (कैंटोनमेंट) की स्थापना से एकीकृत शहरी परिदृश्य बना जहाँ यूरोपीय और स्थानीय जनसंख्या स्वतंत्र रूप से मिलते थे।
कथन II: सिविल लाइन्स में बंगलों की स्थापत्य शैली नस्लीय श्रेष्ठता और शारीरिक पृथक्करण सुनिश्चित करने के लिए बनाई गई थी।
निम्नलिखित में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

(1) केवल I, II, III और V
(2) केवल I, II, IV और V
(3) केवल II, III, IV और V
(4) केवल I, III, IV और V
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

76. निम्नलिखित में से किस अधिनियम का उपयोग ब्रिटिश सरकार द्वारा राजनीतिक दमन के उपकरण के रूप में नहीं किया गया था?
(1) आधिकारिक गोपनीयता अधिनियम, 1904
(2) इल्बर्ट बिल, 1883
(3) भारतीय प्रेस (आपातकालीन शक्तियां) अधिनियम, 1931
(4) आपराधिक कानून संशोधन अधिनियम, 1908
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

77. भारत सरकार अधिनियम 1935 के अंतर्गत 'संघीय सूची' (Federal List) में कौन सा विषय सम्मिलित था?
(1) सार्वजनिक स्वास्थ्य और स्वच्छता
(2) स्थानीय शासन
(3) विदेशी मामले
(4) कृषि
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

78. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: 1901 में उत्तर-पश्चिम सीमा प्रांत (NWFP) का निर्माण केवल भाषाई कारणों से प्रेरित था।
कथन II: ब्रिटिश क्षेत्रीय पुनर्गठन का उद्देश्य प्रायः एकीकृत समुदायों की एकजुटता को तोड़ना था।
निम्नलिखित में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

79. कानूनों के संहिताकरण का पारंपरिक भारतीय कानूनी प्रणालियों पर क्या प्रभाव पड़ा?
(1) इसने एक जटिल मुकदमेबाजी प्रक्रिया निर्मित की जिससे ग्रामीण निर्धनों को हानि हुई।
(2) इसने पारंपरिक ग्राम पंचायतों के अधिकार को सुदृढ़ किया।
(3) इसने सभी धार्मिक व्यक्तिगत कानूनों को समाप्त कर समान नागरिक संहिता लागू की।
(4) इसने कानूनी पेशे का लोकतंत्रीकरण कर सभी को प्रवेश दिया।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

80. 1857 के पश्चात हुए संवैधानिक परिवर्तन के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(1) भारत सरकार अधिनियम 1858 ने गवर्नर जनरल का पद समाप्त कर दिया।
(2) ब्रिटिश क्राउन ने भारत के प्रशासन की सीधी जिम्मेदारी ली और कंपनी शासन का अंत हुआ।
(3) ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना को तुरंत भंग कर केवल भारतीय रेजिमेंट बनाई गईं।
(4) अधिनियम ने कलकत्ता में एक निर्वाचित संसद की स्थापना की।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

www.nodia.in

Downloaded from www.pdf.tube

असंतोष को दबाने के लिए एक अर्धसैनिक बल के रुप में बनाया गया था।
(4) इसने अनिवार्य किया कि पुलिस के उच्च पदों पर केवल भारतीयों को नियुक्त किया जाए।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

68. व्यवहार में, किस औपनिवेशिक नीति द्वारा 'कानून के शासन' की अवधारणा से समझौता किया गया था?
(1) नागरिक प्रक्रियाओं का व्यवस्थित संहिताकरण
(2) जिला स्तर पर कार्यकारी और न्यायिक कार्यों का पृथक्करण
(3) प्रेसीडेंसी नगरों में उच्च न्यायालयों की स्थापना
(4) कठोर राजद्रोह कानूनों और नस्लीय भेदभाव वाली न्यायिक प्रक्रियाओं का अधिनियमन
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

69. 1909 के सुधारों द्वारा सांप्रदायिक निर्वाचक मंडल की शुरुआत का दीर्घकालिक राजनीतिक प्रभाव क्या था?
(1) इसने सभी समुदायों को एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रवादी ढांचे में समाहित कर दिया।
(2) इसके परिणामस्वरुप ब्रिटिश क्राउन से कांग्रेस को शक्ति का हस्तांतरण हुआ।
(3) इसने राजनीतिक अधिकारों के आधार के रूप में धार्मिक पहचान को संस्थागत रूप दिया, जिससे गहरा विभाजन हुआ।
(4) इसके कारण ब्रिटिश सरकार ने 'फूट डालो और राज करो' की नीति त्याग दी।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

70. भारतीय सिविल सेवा (ICS) में नस्लीय भेदभाव के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. परीक्षाएं प्रारंभ में केवल लंदन में आयोजित की जाती थीं।
II. पाठ्यक्रम में ग्रीक और लैटिन जैसी यूरोपीय भाषाओं को वरीयता दी गई थी।
III. भारतीय उम्मीदवारों के लिए अधिकतम आयु सीमा में उत्तरोत्तर वृद्धि की गई।
IV. भारतीयों को अनुबंधित (covenanted) ICS से दूर रखने के लिए पृथक वैधानिक सिविल सेवा बनाई गई थी।
निम्नलिखित में से कौन सा कथनों का संयोजन सही है?
(1) केवल I, II और IV
(2) केवल I, II और III
(3) केवल II, III और IV
(4) केवल I, III और IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

71. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: भारत सरकार अधिनियम 1858 ने भारत सचिव की सहायता हेतु 15 सदस्यीय 'काउंसिल ऑफ इंडिया' का सृजन किया।
कथन II: इस परिषद के सदस्य भारतीय विधान परिषदों द्वारा चुने जाते थे।
निम्नलिखित में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

NODIA

72. 1917 की 'अगस्त घोषणा' के बाद कौन सा संवैधानिक सुधार लागू किया गया था?
(1) मोंटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार 1919
(2) मॉर्ले-मिंटो सुधार 1909
(3) भारत सरकार अधिनियम 1935
(4) भारतीय परिषद अधिनियम 1892
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

73. औपनिवेशिक जनगणना के संबंध में कौन सा जोड़ा सही सुमेलित है?
(1) 1872 - प्रथम समकालिक और पूर्ण जनगणना
(2) 1881 - लॉर्ड मेयो के प्रशासन के अंतर्गत प्रथम स्थानीय जनगणना
(3) 1901 - जनगणना जिसमें नृवंशमितीय माप और जाति रैंकिंग का प्रयोग किया गया
(4) 1931 - जाति आधारित डेटा संग्रह को पूर्णतः छोड़ने वाली प्रथम जनगणना
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

74. औपनिवेशिक शहरी नियोजन ने प्रायः 'स्वच्छता' और 'सार्वजनिक स्वास्थ्य' के तर्कों का उपयोग किसलिए किया?
(1) स्थानीय आवासों को गिराने और नस्लीय पृथक्करण को न्यायसंगत ठहराने के लिए
(2) भारतीय समाज के सभी वर्गों को समान स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान करने के लिए
(3) आयुर्वेद और यूनानी जैसी स्वदेशी चिकित्सा प्रणालियों के विकास के लिए
(4) यूरोपीय अधिकारियों को पारंपरिक भारतीय आवासों में एकीकृत करने के लिए
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

75. भारत में औपनिवेशिक पुलिस व्यवस्था के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. पुलिस बल पदानुक्रमित था जिसमें उच्च पदों पर यूरोपीय लोगों का वर्चस्व था।
II. दरोगा प्रणाली किसानों के प्रति भ्रष्ट और दमनकारी थी।
III. आपराधिक जनजाति अधिनियम 1871 द्वारा समुदायों को आदतन अपराधी घोषित किया गया।
IV. पुलिस राष्ट्रवादी आंदोलन के प्रति सहानुभूति रखती थी।
V. फ्रेजर आयोग की सिफारिशों के पश्चात सीआईडी (CID) की स्थापना की गई।
दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

कथन II: लॉर्ड मिंटो ने हिंदुओं और मुसलमानों के बीच राजनीतिक विभाजन उत्पन्न करने के लिए मुसलमानों के लिए पृथक निर्वाचक मंडल की शुरुआत की।
निम्नलिखित में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

44. भारतीय सिविल सेवा (ICS) परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले प्रथम भारतीय कौन थे?
(1) सुरेंद्रनाथ बनर्जी
(2) सत्येंद्रनाथ टैगोर
(3) सुभाष चंद्र बोस
(4) रोमेश चंद्र दत्त
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

45. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A): अंग्रेजों की 'फूट डालो और राज करो' की नीति सांप्रदायिक निर्वाचक मंडलों के संस्थागतकरण पर आधारित थी।
कारण (R): सांप्रदायिक निर्वाचक मंडलों ने यह सुनिश्चित किया कि समुदाय अपने धार्मिक नेताओं के लिए मतदान करें, जिससे धार्मिक पहचान राजनीतिक गुटों में बदल गई।
नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

46. भारतीय परिषद अधिनियम 1892 के अंतर्गत पहली बार विधान परिषद के सदस्यों को कौन सी महत्वपूर्ण शक्ति प्रदान की गई?
(1) बजट पर मतदान करने और व्यय को मंजूरी देने का अधिकार
(2) शाही परिषद की संरचना में संवैधानिक संशोधन प्रस्तावित करने का अधिकार
(3) गवर्नर जनरल द्वारा प्रस्तुत कराधान विधेयकों को वीटो करने का अधिकार
(4) वार्षिक बजट पर चर्चा करने और कार्यपालिका से प्रश्न पूछने का अधिकार
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

47. निम्नलिखित में से कौन सा औपनिवेशिक जनगणना का भारतीय समाज पर प्रभाव नहीं था?
(1) इसने वर्ण व्यवस्था को आर्थिक वर्गों से प्रतिस्थापित कर उसे पूर्णतः समाप्त कर दिया।
(2) इसने सामाजिक वरीयता के आधार पर जातियों का आधिकारिक वर्गीकरण प्रस्तुत किया।
(3) इसने धार्मिक जनसांख्यिकी को विस्तृत रूप से दर्शाया, जिससे सांप्रदायिक राजनीति को बढ़ावा मिला।
(4) इसने आगामी सुधारों में धर्म आधारित पृथक निर्वाचक मंडल लागू करने के लिए सांख्यिकीय आधार प्रदान किया।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

48. भारतीय पुलिस अधिनियम 1861 के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसने महानिरीक्षक (इंस्पेक्टर जनरल) के अधीन प्रत्येक प्रांत में एकीकृत पुलिस बल की स्थापना की।
II. इसने पुलिस बल को विकेंद्रीकृत कर नियंत्रण पूर्णतः ग्राम प्रधानों को सौंप दिया।
III. इसने पुलिस को नागरिक प्रशासन, विशेष रूप से जिला मजिस्ट्रेट के अधीन कर दिया।
दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

49. ब्रिटिश संवैधानिक विकास के संदर्भ में, 'अधीनस्थ पृथक्करण' से 'अधीनस्थ संघ' की ओर परिवर्तन मुख्य रूप से ब्रिटिश क्राउन और किसके संबंधों से संबंधित था?
(1) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस
(2) देशी रियासतें
(3) प्रांतीय विधायिकाएं
(4) यूरोपीय व्यावसायिक उद्यम
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

50. 1858 से 1935 के संवैधानिक विकास के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. 1858 के अधिनियम ने भारत सचिव की सहायता हेतु 'काउंसिल ऑफ इंडिया' का गठन किया।
II. 1892 के अधिनियम ने प्रांतीय चुनावों में सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार की शुरुआत की।
III. 1919 के अधिनियम ने प्रांतीय बजट को केंद्रीय बजट से पृथक कर दिया।
IV. 1935 के अधिनियम ने ब्रिटिश प्रांतों और रियासतों को एक संघ में एकीकृत करने का प्रस्ताव दिया।
निम्नलिखित में से कौन सा कथनों का संयोजन गलत है?
(1) केवल I और III
(2) केवल II
(3) केवल III और IV
(4) केवल I, II और IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

Click Here to Buy book on Amazon

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) ईस्ट इंडिया कंपनी से ब्रिटिश क्राउन को शक्ति का हस्तांतरण
1857 के विद्रोह के उपरांत ब्रिटिश संसद ने भारत सरकार अधिनियम पारित किया। इसका मुख्य उद्देश्य ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन को समाप्त करना था। इस अधिनियम द्वारा भारत का प्रशासन सीधे ब्रिटिश महारानी के अधीन कर दिया गया। इसने नियंत्रण बोर्ड और निदेशक मंडल जैसी द्वैध शासन प्रणाली को समाप्त कर दिया। अब भारत का प्रशासन ब्रिटिश राजमुकुट के नाम पर संचालित होने लगा।

2. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
विभिन्न ब्रिटिश अधिनियमों ने भारत में प्रशासनिक ढांचे को आकार दिया। 1858 के अधिनियम ने भारत के राज्य सचिव का पद सृजित किया। 1861 के अधिनियम ने विभागीय प्रणाली की नींव रखी। 1909 के सुधारों ने मुसलमानों के लिए सांप्रदायिक प्रतिनिधित्व का प्रारंभ किया। अंततः 1919 के सुधारों ने प्रांतों में द्वैध शासन लागू किया। ये सभी प्रावधान भारत में ब्रिटिश औपनिवेशिक नियंत्रण को सुदृढ़ करने वाले महत्वपूर्ण मील के पत्थर थे।

3. (3) बॉम्बे और मद्रास प्रेसीडेंसी को विधायी शक्तियां पुनः प्रदान करके विकेंद्रीकरण की शुरुआत करना
भारतीय परिषद अधिनियम 1861 ने भारत में विधायी विकेंद्रीकरण की प्रक्रिया का सूत्रपात किया। इसने बॉम्बे और मद्रास प्रेसीडेंसी को उनकी विधि निर्माण की शक्तियां पुनः प्रदान कीं, जो 1833 के अधिनियम द्वारा वापस ले ली गई थीं। यह कदम प्रशासनिक कुशलता बढ़ाने और स्थानीय स्तर पर शासन सुधारने के उद्देश्य से उठाया गया था। इसके साथ ही वायसराय की परिषद में गैर-सरकारी सदस्यों का प्रावधान भी किया गया।

4. (1) केवल I और II
1892 के अधिनियम ने विधान परिषदों के विस्तार और कार्यप्रणाली में सुधार किया। इसने केंद्रीय और प्रांतीय परिषदों में अतिरिक्त सदस्यों की संख्या में वृद्धि की। इसके अतिरिक्त, सदस्यों को पहली बार वार्षिक बजट पर चर्चा करने और कार्यपालिका से प्रश्न पूछने का सीमित अधिकार प्राप्त हुआ। हालांकि, इसमें प्रत्यक्ष निर्वाचन का कोई स्पष्ट प्रावधान नहीं था। यह सुधार भारतीय राष्ट्रवादियों की बढ़ती मांगों के प्रति एक सीमित प्रतिक्रिया थी।

5. (3) इसने विशेष रूप से सिखों और भारतीय ईसाइयों के लिए सांप्रदायिक प्रतिनिधित्व की प्रणाली शुरु की।
1909 के सुधारों ने मुख्य रूप से मुसलमानों के लिए पृथक निर्वाचक मंडल की व्यवस्था की थी। सिखों, भारतीय ईसाइयों और एंग्लो-इंडियंस हेतु सांप्रदायिक प्रतिनिधित्व का विस्तार 1919 के अधिनियम द्वारा किया गया। 1909 के अधिनियम ने विधान परिषदों का आकार बढ़ाया और वायसराय की कार्यकारी परिषद में प्रथम भारतीय सदस्य के रूप में सत्येंद्र प्रसाद सिन्हा की नियुक्ति का मार्ग प्रशस्त किया। इसका उद्देश्य राष्ट्रवादियों में विभाजन उत्पन्न करना था।

6. (3) A सही है लेकिन R गलत है।
1919 के भारत सरकार अधिनियम ने प्रांतीय प्रशासन में द्वैध शासन की शुरुआत की। इसके अंतर्गत विषयों को 'आरक्षित' और 'हस्तांतरित' श्रेणियों में विभाजित किया गया था। आरक्षित विषयों का नियंत्रण गवर्नर के पास था, जबकि हस्तांतरित विषयों का प्रशासन भारतीय मंत्रियों को सौंपा गया था। प्रशासन का पूर्ण नियंत्रण भारतीयों को नहीं मिला था, क्योंकि महत्वपूर्ण विभाग अभी भी ब्रिटिश नियंत्रण में थे। अतः केवल द्वैध शासन का प्रावधान सत्य है।

7. (4) गवर्नर जनरल
1935 के भारत सरकार अधिनियम ने शक्तियों के विभाजन हेतु तीन सूचियाँ निर्मित कीं: संघीय, प्रांतीय और समवर्ती। वे विषय जो इन तीनों सूचियों में सम्मिलित नहीं थे, उन्हें अवशिष्ट शक्तियाँ कहा गया। अधिनियम के अनुसार, इन अवशिष्ट शक्तियों पर निर्णय लेने का अंतिम अधिकार गवर्नर जनरल के पास सुरक्षित रखा गया था। यह प्रावधान केंद्र सरकार और वायसराय की स्थिति को अत्यंत शक्तिशाली और निर्णायक बनाने के लिए किया गया था।

8. (4) I, II, III, IV
1935 का अधिनियम भारतीय संवैधानिक इतिहास का एक विस्तृत प्रलेख था। इसने अखिल भारतीय संघ की स्थापना का प्रस्ताव दिया और प्रांतों में द्वैध शासन समाप्त कर स्वायत्तता लागू की। साथ ही, केंद्र में द्वैध शासन की शुरुआत की गई और एक संघीय न्यायालय की स्थापना का मार्ग प्रशस्त हुआ। यह अधिनियम भारत में संघीय संरचना की नींव रखने और प्रशासनिक सुधारों को अगले स्तर पर ले जाने हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

9. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
भारतीय सिविल सेवा में प्रारंभ में भारतीयों के प्रवेश को रोकने हेतु कठोर नस्लीय मानदंड अपनाए गए थे। लॉर्ड लिटन द्वारा स्थापित वैधानिक सिविल सेवा का उद्देश्य उच्च वर्गीय भारतीयों को संतुष्ट करना था, किंतु यह ब्रिटिश सिविल सेवकों के समान दर्जा देने में विफल रही। भारतीयों के लिए आयु सीमा और परीक्षा के स्थान जैसी बाधाएं जानबूझकर बनाई गई थीं ताकि वे उच्च प्रशासनिक पदों तक न पहुँच सकें।

10. (1) III, I, II, IV
भारत में ब्रिटिश विधायी इतिहास क्रमिक विकास का परिणाम है। 1858 में भारत सरकार अधिनियम के माध्यम से ब्रिटिश

Downloaded from www.pdf.tube

स्थापत्य शैली में विकसित किए गए थे, जहाँ चौड़ी सड़कें, उद्यान और बेहतर जल निकासी व्यवस्था थी। यह भौतिक अलगाव नस्लीय श्रेष्ठता के भाव को बनाए रखने और विद्रोह की स्थिति में यूरोपीय निवासियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु था।

30. (2) केवल II
अंग्रेजों ने अपनी सत्ता सुरक्षित रखने हेतु सामाजिक विभाजनों का कुशलतापूर्वक उपयोग किया। 1905 में बंगाल का विभाजन इसी रणनीति का अंग था ताकि राष्ट्रवादी आंदोलनों को दुर्बल किया जा सके। 1909 में सांप्रदायिक निर्वाचक मंडल की शुरुआत ब्रिटिश प्रशासकों द्वारा की गई थी, न कि भारतीयों द्वारा उन पर थोपी गई थी। इसका उद्देश्य समुदायों के मध्य राजनीतिक हितों का संघर्ष उत्पन्न करना था। यह नीति एकीकृत राष्ट्रवाद के उदय को रोकने में अंग्रेजों का एक प्रमुख राजनीतिक अस्त्र सिद्ध हुई।

31. (1) वायसराय की कार्यकारी परिषद में विभागीय प्रणाली (पोर्टफोलियो सिस्टम) की शुरुआत।
1861 के अधिनियम ने भारत में विभागीय प्रणाली की शुरुआत की थी। 1935 के अधिनियम की प्रमुख विशेषताओं में प्रांतीय स्वायत्तता, अखिल भारतीय संघ का प्रस्ताव और केंद्र में द्वैध शासन सम्मिलित थे। इसने प्रांतों में प्रचलित पुरानी शासन व्यवस्था को परिवर्तित कर उन्हें अधिक शक्तियाँ प्रदान कीं। यह अधिनियम एक संघीय ढांचे की स्थापना की दिशा में सबसे व्यापक प्रयास था, जिसने भारतीय संवैधानिक इतिहास में कई महत्वपूर्ण प्रशासनिक परिवर्तनों को जन्म दिया और भविष्य के ढांचे की आधारशिला रखी।

32. (2) पुलिस प्रशासन
लॉर्ड कर्जन ने 1902 में पुलिस प्रशासन की स्थिति की समीक्षा करने और उसमें सुधार के सुझाव देने हेतु एंड्रयू फ्रेजर की अध्यक्षता में एक आयोग नियुक्त किया था। इस आयोग ने पुलिस बल में व्याप्त भ्रष्टाचार, अकर्मण्यता और प्रशिक्षण के अभाव की तीव्र आलोचना की थी। इसकी अनुशंसाओं के आधार पर पुलिस अधिकारियों के वेतन में वृद्धि की गई, प्रशिक्षण केंद्रों की स्थापना हुई और प्रांतीय पुलिस बलों के भीतर आपराधिक जाँच विभाग (सीआईडी) जैसे विशिष्ट निकायों का गठन किया गया।

33. (2) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
ब्रिटिश शासन ने भारतीय कानूनी प्रणाली को संहिताबद्ध करने हेतु कई महत्वपूर्ण अधिनियम पारित किए। नागरिक प्रक्रिया संहिता 1859 में लागू हुई, जिसके पश्चात 1860 में व्यापक भारतीय दंड संहिता आई। 1861 में दंड प्रक्रिया संहिता को वैधानिक रूप दिया गया ताकि आपराधिक न्याय प्रणाली को व्यवस्थित किया जा सके। अंततः 1872 में भारतीय साक्ष्य अधिनियम पारित हुआ। इन संहिताओं ने भारत में एक एकीकृत न्यायिक संरचना की नींव रखी, जो मुख्य रूप से ब्रिटिश कानूनी सिद्धांतों पर आधारित थी।

34. (1) इसने एक औपचारिक रूप से प्रांतीय परिषदों के लिए प्रत्यक्ष चुनाव के सिद्धांत की शुरुआत की।
1919 के सुधारों ने भारतीय प्रशासन में कई महत्वपूर्ण परिवर्तन किए। इसने प्रथम बार केंद्र स्तर पर एक द्विसदनीय विधायिका की शुरुआत की, जिसमें राज्य परिषद और केंद्रीय विधानसभा सम्मिलित थी। इसने प्रत्यक्ष निर्वाचन की सीमित प्रणाली को भी अपनाया। हालांकि, वायसराय के पास अभी भी व्यापक वीटो शक्तियां थीं और निर्णय लेने का अंतिम अधिकार उसी के पास था। इस अधिनियम ने भारतीय प्रतिनिधियों को शासन में कुछ भागीदारी दी, किंतु वास्तविक सत्ता ब्रिटिश अधिकारियों के पास रही।

35. (2) केवल I, II और IV
औपनिवेशिक काल में राजद्रोह कानूनों का उपयोग व्यापक रूप से राजनीतिक विरोध के दमन हेतु किया गया। तिलक और गांधी जैसे प्रमुख नेताओं पर उनके लेखन और भाषणों के लिए अभियोग चलाए गए। धारा 124A इतनी व्यापक थी कि सरकार के विरुद्ध किसी भी असंतोषजनक टिप्पणी को अपराध माना जा सकता था। यह कानून केवल हिंसक विद्रोहियों तक सीमित नहीं था, अपितु इसने अहिंसक राष्ट्रवादी आंदोलनों और स्वतंत्र पत्रकारिता को भी लक्ष्य बनाया ताकि ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध जनमत निर्मित न हो सके।

36. (4) इसने राष्ट्रवादी विमर्श को गुप्त रूप से कार्य करने के लिए विवश किया और कुछ पत्रों को अंग्रेजी में बदलने के लिए प्रेरित किया।
1878 के वर्नाक्यूलर प्रेस अधिनियम जैसे कठोर कानूनों ने भारतीय भाषाई समाचार पत्रों को विषम स्थिति में डाल दिया। इस दमनकारी नीति के कारण कई समाचार पत्र बंद हो गए, जबकि 'अमृत बाजार पत्रिका' जैसे कुछ पत्रों ने रातों-रात स्वयं को अंग्रेजी में परिवर्तित कर लिया ताकि वे कानून की पकड़ से बच सकें। इसने राष्ट्रवादी विमर्श को पूर्णतः समाप्त नहीं किया, बल्कि इसे अधिक सतर्क और कभी-कभी भूमिगत होकर कार्य करने हेतु प्रेरित किया, जिससे ब्रिटिश शासन के प्रति जन-आक्रोश बढ़ा।

NODIA

37. (3) इसने अपील के सर्वोच्च न्यायालय के रूप में कार्य किया, जिसने प्रिवी काउंसिल के अधिकार क्षेत्र को प्रतिस्थापित कर दिया।
1935 के अधिनियम के अंतर्गत स्थापित संघीय न्यायालय ने 1937 में कार्य करना प्रारंभ किया। इसके पास केंद्र और प्रांतों के मध्य विवादों को सुलझाने का मूल अधिकार क्षेत्र था और यह संवैधानिक विषयों में अपीलीय न्यायालय भी था। हालांकि, यह भारत का सर्वोच्च और अंतिम अपीलीय न्यायालय नहीं था, क्योंकि इसके निर्णयों के विरुद्ध लंदन स्थित प्रिवी काउंसिल में अपील की जा सकती थी। इस न्यायालय का उद्देश्य संघीय ढांचे के भीतर कानूनी निरंतरता और विवादों का संवैधानिक समाधान सुनिश्चित करना था।

38. (1) IV, II, I, III
भारत में प्रेस नियंत्रण का इतिहास उतार-चढ़ाव वाला रहा है। सर्वप्रथम 1799 में लॉर्ड वेलेज़ली ने सेंसरशिप लागू की।

20. (3) केवल I और III
1881 की जनगणना भारत में व्यवस्थित डेटा संग्रह की शुरुआत थी। जनगणना केवल सांख्यिकीय अभ्यास नहीं थी, बल्कि इसने सामाजिक और धार्मिक पहचान को स्पष्ट रूप से वर्गीकृत किया। अंग्रेजों ने इन आंकड़ों का उपयोग समुदायों के मध्य विभेद उत्पन्न करने और लड़ाकू जातियों जैसी श्रेणियों के माध्यम से 'फूट डालो और राज करो' की नीति को सुदृढ़ करने हेतु किया। इससे भारतीय समाज में पारंपरिक पहचान अधिक कठोर हो गई और सांप्रदायिक राजनीति को आधार प्राप्त हुआ।

21. (3) ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध एकीकृत विरोध को रोकने के लिए व्यवस्थित रूप से एक समुदाय का पक्ष लेना
ब्रिटिश शासन ने भारत में अपनी स्थिति सुदृढ़ करने हेतु विभिन्न समुदायों के मध्य मतभेदों का सहारा लिया। 'फूट डालो और राज करो' की नीति के अंतर्गत, वे प्रायः एक समुदाय को दूसरे के विरुद्ध खड़ा करने के लिए उसे विशेष रियायतें देते थे। इसका उद्देश्य भारतीयों के मध्य एक संयुक्त राष्ट्रवादी चेतना के विकास को अवरुद्ध करना था। सांप्रदायिक प्रतिनिधित्व और पक्षपातपूर्ण नीतियों ने सामाजिक विभाजन को गहरा किया, जिससे ब्रिटिश शासन को चुनौती देना कठिन हो गया।

22. (2) भारत सरकार अधिनियम 1935 - लंदन में प्रिवी काउंसिल की स्थापना
भारत में न्यायिक सुधारों की एक लंबी श्रृंखला रही है। 1773 के रेगुलेटिंग एक्ट ने कलकत्ता में सर्वोच्च न्यायालय की नींव रखी। 1861 के अधिनियम ने उच्च न्यायालयों का गठन किया। मैकाले के आयोग ने दंड संहिता का ढांचा तैयार किया। प्रिवी काउंसिल लंदन में बहुत पहले से ही सर्वोच्च अपीलीय निकाय के रूप में कार्यरत थी, इसकी स्थापना 1935 के अधिनियम द्वारा नहीं हुई थी। 1935 के अधिनियम ने वास्तव में भारत में संघीय न्यायालय की स्थापना की थी।

23. (4) भारत के राज्य सचिव और उनकी सलाहकार परिषद, 'इंडिया काउंसिल'
1858 के अधिनियम ने भारत के प्रशासन में आमूल-चूल परिवर्तन किए। ईस्ट इंडिया कंपनी के नियंत्रण बोर्ड और निदेशक मंडल को समाप्त कर दिया गया। उनके स्थान पर 'भारत के राज्य सचिव' का नया पद सृजित हुआ, जो ब्रिटिश कैबिनेट का सदस्य होता था। उनकी सहायता हेतु 15 सदस्यीय 'इंडिया काउंसिल' का गठन किया गया। इस व्यवस्था ने भारतीय प्रशासन पर ब्रिटिश संसद का प्रत्यक्ष और पूर्ण नियंत्रण सुनिश्चित कर दिया, जिससे कंपनी का प्रभाव पूर्णतः समाप्त हो गया।

24. (1) इसने औपचारिक रूप से प्रांतीय परिषदों के लिए प्रत्यक्ष चुनाव के सिद्धांत की शुरुआत की।
1861 का अधिनियम विधायी विकास की दिशा में महत्वपूर्ण था, किंतु इसने निर्वाचन की कोई प्रणाली प्रारंभ नहीं की थी। इसने वायसराय को आपातकाल में अध्यादेश जारी करने की शक्ति प्रदान की और विभागीय प्रणाली को कानूनी मान्यता दी। इसके माध्यम से विधायी विकेंद्रीकरण का सूत्रपात हुआ और परिषद में कुछ भारतीयों को गैर-सरकारी सदस्यों के रूप में नामांकित किया गया। हालांकि, निर्वाचित प्रतिनिधित्व की अवधारणा अभी भी प्रशासन में अनुपस्थित थी, जो बाद के सुधारों में धीरे-धीरे आई।

25. (3) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
विभिन्न गवर्नरों ने पुलिस और प्रशासनिक ढांचे में परिवर्तन किए। लॉर्ड कॉर्नवालिस ने कानून व्यवस्था हेतु थाना प्रणाली विकसित की। लॉर्ड विलियम बेंटिक ने दक्षता हेतु पुलिस अधीक्षकों के पद समाप्त कर शक्तियां कलेक्टरों को प्रदान कीं। लॉर्ड कैनिंग के कार्यकाल में 1861 का महत्वपूर्ण पुलिस अधिनियम पारित हुआ, जिसने आधुनिक पुलिस की रूपरेखा तैयार की। लॉर्ड कर्जन ने फ्रेजर आयोग की नियुक्ति कर पुलिस बल के आधुनिकीकरण और प्रशिक्षण पर ध्यान केंद्रित करते हुए व्यापक सुधारों की अनुशंसा की।

26. (2) 1870
मूल भारतीय दंड संहिता 1860 में लागू हुई थी, किंतु इसमें प्रारंभ में राजद्रोह का विशिष्ट प्रावधान नहीं था। बढ़ते राजनीतिक असंतोष और वहाबी आंदोलनों का दमन करने हेतु 1870 में धारा 124A को औपचारिक रूप से संहिता में सम्मिलित किया गया। यह कानून जेम्स स्टीफन के प्रयासों का परिणाम था। इसका उद्देश्य उन सभी गतिविधियों को दंडनीय बनाना था जो सरकार के प्रति असंतोष उत्पन्न करती थीं। पश्चात में इसका उपयोग राष्ट्रवादी नेताओं को कारावास भेजने हेतु व्यापक स्तर पर किया गया।

27. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
औपनिवेशिक जनगणना ने भारतीयों को कठोर सामाजिक श्रेणियों में विभाजित किया। 1901 में रिस्ली के नेतृत्व में जातियों को उनकी सामाजिक स्थिति के अनुसार सूचीबद्ध किया गया। इस प्रक्रिया ने न केवल जातियों के मध्य प्रतिस्पर्धा बढ़ाई, अपितु कई समुदायों ने अपनी श्रेणी को लेकर तीव्र विरोध भी प्रकट किया। भारतीयों ने इसे समाज को खंडित करने के षड्यंत्र के रूप में देखा। जनगणना के इन आंकड़ों ने अंततः सांप्रदायिक और जातिगत राजनीति हेतु एक सुदृढ़ सांख्यिकीय आधार प्रदान किया।

28. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
लॉर्ड लिटन ने सिविल सेवा परीक्षा की आयु सीमा 21 से घटाकर 19 वर्ष कर दी थी। यह कदम जानबूझकर उठाया गया था ताकि भारतीय छात्रों के लिए लंदन जाकर इतनी अल्पायु में कठिन परीक्षा उत्तीर्ण करना लगभग असंभव हो जाए। यह ब्रिटिश नौकरशाही के नस्लीय चरित्र को बनाए रखने की एक सोची-समझी नीति थी। भारतीयों ने इसका व्यापक विरोध किया, क्योंकि यह समानता के आश्वासनों के विपरीत था और उन्हें उच्च प्रशासनिक सेवाओं से पृथक रखने का षड्यंत्र था।

29. (3) यूरोपीय सैन्य और नागरिक निवासियों के लिए पृथक और सुरक्षित शहरी स्थान निर्मित करना
छावनियों की स्थापना मुख्य रूप से सुरक्षा और स्वच्छता के दृष्टिकोण से की गई थी। अंग्रेज अपनी सेना और नागरिक अधिकारियों को भीड़भाड़ वाले और 'अस्वास्थ्यकर' माने जाने वाले भारतीय नगरों से पृथक रखना चाहते थे। ये क्षेत्र यूरोपीय

Click Here to Buy book on Amazon

(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

60. भारतीय परिषद अधिनियम 1861 और 1892 के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. 1861 के अधिनियम ने विधायी विकेंद्रीकरण की प्रक्रिया शुरु की।
II. 1861 के अधिनियम ने विभागीय प्रणाली (पोर्टफोलियो सिस्टम) की शुरुआत की।
III. 1892 के अधिनियम ने सदस्यों को परिषद में पूरक प्रश्न पूछने की अनुमति दी।
IV. 1892 के अधिनियम ने वार्षिक बजट पर चर्चा की अनुमति दी।
V. 1892 के अधिनियम ने केंद्रीय विधान परिषद में पूर्णतः निर्वाचित बहुमत स्थापित किया।
निम्नलिखित में से कौन सा कथनों का संयोजन सही है?
(1) केवल I, II और IV
(2) केवल I, II, III और IV
(3) केवल II, III और V
(4) केवल I, III, IV और V
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

61. भारत सरकार अधिनियम 1858 के लागू होने के बाद भारत का प्रथम वायसराय कौन बना?
(1) लॉर्ड डलहौजी
(2) लॉर्ड मेयो
(3) लॉर्ड कैनिंग
(4) लॉर्ड एल्गिन
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

62. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A): औपनिवेशिक सरकार ने राष्ट्रवादी पत्रकारिता को दबाने के लिए राजद्रोह कानूनों (IPC 124A) का व्यापक प्रयोग किया।
कारण (R): राष्ट्रवादी समाचार पत्र ब्रिटिश शासन के विरुद्ध व्यापक राजनीतिक जागरुकता और असंतोष उत्पन्न करने में सफल हो रहे थे।
नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

63. 1878 का वर्नाक्यूलर प्रेस अधिनियम किस गवर्नर जनरल द्वारा निरस्त किया गया था?
(1) लॉर्ड रिपन
(2) लॉर्ड लिटन
(3) लॉर्ड डफरिन
(4) लॉर्ड कर्जन
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

NODIA

64. निम्नलिखित में से कौन अंग्रेजों द्वारा स्थापित औपनिवेशिक न्यायिक प्रणाली की विशेषता नहीं थी?
(1) 'कानून के शासन' (रुल ऑफ लॉ) की सैद्धांतिक अवधारणा की शुरुआत
(2) यूरोपीय प्रजा के परीक्षण (ट्रायल) में नस्लीय भेदभाव का पूर्ण उन्मूलन
(3) दीवानी और आपराधिक अदालतों की एक एकीकृत और पदानुक्रमित प्रणाली की स्थापना
(4) पारंपरिक रीति-रिवाजों का कठोर वैधानिक कानूनों में संहिताकरण
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

65. ब्रिटिश भारत के संवैधानिक विकास के संबंध में विषम विकल्प का चयन करें:
(1) भारतीय परिषद अधिनियम 1861
(2) वर्नाक्यूलर प्रेस अधिनियम 1878
(3) भारतीय परिषद अधिनियम 1892
(4) मॉर्ले-मिंटो सुधार 1909
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

66. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (आयोग)
A. ऐचिसन आयोग
B. फ्रेजर आयोग
C. ली आयोग
D. मैकाले आयोग
सूची II: (प्राथमिक विषय)
i. भारत में उच्चतर नागरिक सेवाएं (1924)
ii. भारत में लोक सेवाएं (1886)
iii. पुलिस सुधार (1902)
iv. भारतीय कानूनों का संहिताकरण (1834)
(1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(2) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(3) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(4) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

67. निम्नलिखित में से कौन सा कथन भारतीय पुलिस अधिनियम 1861 के अंतर्गत स्थापित पुलिस प्रणाली की भूमिका का सटीक वर्णन करता है?
(1) इसका प्राथमिक उद्देश्य सामुदायिक पुलिसिंग और सामाजिक कल्याण था।
(2) इसने कानून-व्यवस्था के कार्यों को जिला मजिस्ट्रेट की देखरेख से पूर्णतः मुक्त कर दिया।
(3) इसे औपनिवेशिक व्यवस्था बनाए रखने और राजनीतिक

इसके पश्चात 1823 में जॉन एडम्स ने लाइसेंसिंग नियम बनाए। 1835 में चार्ल्स मेटकाफ ने उदार नीति अपनाते हुए प्रेस को मुक्त किया। अंततः 1878 में लॉर्ड लिटन ने वर्नाक्यूलर प्रेस अधिनियम पारित कर भारतीय भाषाओं के समाचार पत्रों पर कठोर प्रतिबंध लगाए। यह क्रम ब्रिटिश प्रशासकों की बदलती प्राथमिकताओं और राष्ट्रवादी भावनाओं के प्रति उनके भय को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

39. (4) ली आयोग - लोक सेवा आयोग की स्थापना की सिफारिश
भारत में सिविल सेवाओं के सुधारों हेतु कई आयोग गठित हुए। 1923 में स्थापित ली आयोग ने भारत में एक लोक सेवा आयोग की तत्काल स्थापना की अनुशंसा की, जिसके परिणामस्वरूप 1926 में इसका गठन हुआ। लॉर्ड लिटन ने वास्तव में आयु सीमा न्यून की थी और ऐचिसन आयोग ने आयु सीमा बढ़ाने का सुझाव दिया था। इस्लिंगटन आयोग ने सेवाओं के भारतीयकरण पर विचार किया था। ये आयोग भारतीय प्रशासनिक ढांचे में भारतीय भागीदारी को क्रमिक रूप से बढ़ाने हेतु महत्वपूर्ण थे।

40. (2) केवल III और IV
1905 के बंगाल विभाजन का भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने तीव्र विरोध किया और इसे सांप्रदायिक आधार पर फूट डालने की चाल बताया। यह केवल बंगाल प्रेसीडेंसी से संबंधित था और इसका पंजाब के विभाजन से कोई संबंध नहीं था। विभाजन के विरुद्ध स्वदेशी आंदोलन के रूप में भीषण जन-विरोध हुआ, जिसके दबाव में आकर ब्रिटिश सरकार को 1911 में इसे निरस्त करना पड़ा। यह घटना भारतीय राष्ट्रवाद के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ थी, जिसने औपनिवेशिक विरोधी भावनाओं को संगठित और मुखर बनाया।

41. (3) औपनिवेशिक प्रशासन और वाणिज्यिक दोहन की सुविधा के लिए समान कानूनी प्रणाली स्थापित करना
लॉर्ड मैकाले के नेतृत्व में कानूनी संहिताकरण का प्राथमिक लक्ष्य भारत में व्याप्त विविध और असंगत कानूनी परंपराओं को समाप्त करना था। ब्रिटिश सरकार एक ऐसी सुसंगत और एकीकृत कानूनी प्रणाली चाहती थी जो उनके प्रशासनिक नियंत्रण और व्यापारिक हितों को सुगम बना सके। इससे पूरे उपमहाद्वीप में समान न्याय प्रक्रिया सुनिश्चित हुई, जिससे औपनिवेशिक शासन को अधिक प्रभावी ढंग से संचालित करने में सहायता मिली। इसने स्वदेशी प्रणालियों को प्रतिस्थापित कर कानूनी ढांचे को पश्चिमी सिद्धांतों के अनुरूप ढाल दिया।

42. (1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
औपनिवेशिक नगरों का ढांचा सामाजिक और नस्लीय विभाजन पर आधारित था। छावनियाँ विशेष रूप से ब्रिटिश सैनिकों हेतु सुरक्षित सैन्य क्षेत्र थीं। सिविल लाइन्स में नागरिक अधिकारी निवास करते थे, जो भारतीय जनसंख्या से दूर विकसित की गई थीं। 'ब्लैक टाउन' वह क्षेत्र था जहाँ स्थानीय भारतीय जनसंख्या घनी बस्तियों में रहती थी। हिल स्टेशनों का उपयोग यूरोपीय लोगों द्वारा भीषण ग्रीष्म ऋतु से बचने और स्वास्थ्य सुधार हेतु किया जाता था। ये सभी स्थान औपनिवेशिक शासन की विशिष्ट शहरी संस्कृति के प्रतीक बने।

43. (4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
1909 के सुधारों ने विधान परिषदों में सरकारी बहुमत बनाए रखा, अतः कांग्रेस को बहुमत प्राप्त होने का दावा असत्य है। लॉर्ड मिंटो का वास्तविक उद्देश्य मुसलमानों हेतु पृथक निर्वाचक मंडल की शुरुआत कर राष्ट्रवादी आंदोलन में विभाजन उत्पन्न करना था। इससे धार्मिक पहचान को राजनीतिक महत्व मिला और भविष्य के सांप्रदायिक विभाजन का आधार निर्मित हुआ। यह नीति 'फूट डालो और राज करो' के सिद्धांत का स्पष्ट उदाहरण थी, जिसने भारतीय समाज में अविश्वास और राजनीतिक अलगाव को संस्थागत रूप दिया।

44. (2) सत्येंद्रनाथ टैगोर
भारतीय सिविल सेवा की परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले प्रथम भारतीय सत्येंद्रनाथ टैगोर थे। उन्होंने 1863 में यह सफलता प्राप्त की थी, जो उस समय एक असाधारण उपलब्धि थी। उस काल में परीक्षा केवल लंदन में होती थी और आयु सीमा भी अत्यंत न्यून थी। उनकी इस सफलता ने अन्य भारतीयों को भी इस प्रतिष्ठित सेवा में आने हेतु प्रेरित किया। सत्येंद्रनाथ टैगोर रवींद्रनाथ टैगोर के अग्रज थे और उन्होंने औपनिवेशिक प्रशासन के उच्चतम स्तर पर भारतीय प्रतिभा की क्षमता को सफलतापूर्वक प्रमाणित किया था।

45. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
अंग्रेजों ने सांप्रदायिक निर्वाचक मंडलों को एक सोची-समझी रणनीति के अंतर्गत लागू किया था। इसके माध्यम से उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि नागरिक अपने धर्म के आधार पर प्रतिनिधियों का निर्वाचन करें। इस व्यवस्था ने राजनीतिक हितों को धार्मिक पहचान से संबद्ध कर दिया, जिससे विभिन्न समुदायों के मध्य सहयोग के स्थान पर प्रतिस्पर्धा और अविश्वास की भावना उत्पन्न हुई। यह नीति राष्ट्रवादी एकता को भंग करने और ब्रिटिश शासन को सुरक्षित रखने हेतु अत्यंत प्रभावी उपकरण सिद्ध हुई, जिसका भारतीय राजनीति पर स्थायी प्रभाव पड़ा।

46. (4) वार्षिक बजट पर चर्चा करने और कार्यपालिका से प्रश्न पूछने का अधिकार
1892 के भारतीय परिषद अधिनियम ने विधान परिषद के कार्यों का विस्तार किया। इसके अंतर्गत सदस्यों को वार्षिक बजट पर चर्चा करने का अधिकार प्रदान किया गया, जो पूर्व में संभव नहीं था। इसके अतिरिक्त, वे कार्यपालिका से लोक हित के विषयों पर प्रश्न भी पूछ सकते थे। हालांकि, वे बजट पर मतदान नहीं कर सकते थे और न ही पूरक प्रश्न पूछ सकते थे। यह सुधार भारतीय नेताओं की निरंतर मांगों का परिणाम था, जिसने प्रशासन में भारतीयों की सीमित किंतु महत्वपूर्ण भागीदारी सुनिश्चित करने का प्रारंभ किया।

47. (1) इसने वर्ण व्यवस्था को आर्थिक वर्गों से प्रतिस्थापित कर उसे पूर्णतः समाप्त कर दिया।
औपनिवेशिक जनगणना ने भारतीय समाज को अधिक जागरूक और कभी-कभी विभाजित भी किया। इसने जातियों का आधिकारिक वर्गीकरण और उनकी सामाजिक स्थिति को स्पष्ट रूप से अंकित किया, जिससे जातिगत चेतना में वृद्धि हुई। साथ ही, विस्तृत धार्मिक आंकड़ों ने सांप्रदायिक राजनीति को

Downloaded from www.pdf.tube

थे। इसके विपरीत, 1878 का वर्नाक्यूलर प्रेस अधिनियम एक दमनकारी प्रशासनिक कानून था जिसका उद्देश्य केवल अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और समाचार पत्रों पर प्रतिबंध लगाना था। इसका प्रत्यक्ष संबंध सरकार की संरचना या संवैधानिक सुधारों से नहीं था, बल्कि यह औपनिवेशिक नियंत्रण का साधन मात्र था।

66. (1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
ब्रिटिश काल के विभिन्न आयोगों ने प्रशासनिक सुधारों की रूपरेखा निर्धारित की। 1834 में मैकाले आयोग ने कानूनी संहिताकरण की नींव रखी। 1886 के ऐचिसन आयोग ने लोक सेवाओं में सुधार और आयु सीमा पर अनुशंसाएं दीं। 1902 के फ्रेजर आयोग ने पुलिस बल के आधुनिकीकरण और सीआईडी के गठन का सुझाव दिया। अंततः 1924 के ली आयोग ने उच्च नागरिक सेवाओं के भारतीयकरण और लोक सेवा आयोग की स्थापना पर बल दिया। ये सभी आयोग औपनिवेशिक नौकरशाही और न्याय व्यवस्था को अधिक व्यवस्थित बनाने हेतु गठित थे।

67. (3) इसे औपनिवेशिक व्यवस्था बनाए रखने और राजनीतिक असंतोष को दबाने के लिए एक अर्धसैनिक बल के रूप में बनाया गया था।
1861 के भारतीय पुलिस अधिनियम का मुख्य उद्देश्य जन कल्याण नहीं, अपितु ब्रिटिश सत्ता की सुरक्षा सुनिश्चित करना था। इसे 1857 के विद्रोह के अनुभव को दृष्टिगत रखते हुए एक अर्धसैनिक बल के रूप में ढाला गया था। इसका मुख्य कार्य विधि और व्यवस्था के नाम पर किसी भी प्रकार के राजनीतिक विरोध और राष्ट्रवादी गतिविधियों को कठोरता से दबाना था। पुलिस को नागरिकों के प्रति उत्तरदायी बनाने के स्थान पर सीधे औपनिवेशिक प्रशासन का एक दमनकारी अंग बनाया गया था, जो पूर्णतः ब्रिटिश हितों हेतु कार्य करता था।

68. (4) कठोर राजद्रोह कानूनों और नस्लीय भेदभाव वाली न्यायिक प्रक्रियाओं का अधिनियमन
यद्यपि अंग्रेजों ने सैद्धांतिक रूप से 'विधि के शासन' की अवधारणा प्रस्तुत की, किंतु व्यवहार में उन्होंने अपने राजनीतिक हितों हेतु इसके साथ अनेक समझौते किए। कठोर राजद्रोह कानूनों (धारा 124A) ने सरकार की आलोचना को दंडनीय अपराध बना दिया, जो न्याय के नैसर्गिक सिद्धांतों के प्रतिकूल था। साथ ही, न्यायिक प्रक्रियाओं में नस्लीय भेदभाव ने यह सुनिश्चित किया कि यूरोपीय नागरिकों को भारतीयों के समान दंड का सामना न करना पड़े। ये विसंगतियां प्रमाणित करती हैं कि औपनिवेशिक कानूनी प्रणाली निष्पक्षता के स्थान पर वर्चस्व का साधन थी।

69. (3) इसने राजनीतिक अधिकारों के आधार के रूप में धार्मिक पहचान को संस्थागत रूप दिया, जिससे गहरा विभाजन हुआ।
1909 के सुधारों द्वारा प्रारंभ किए गए सांप्रदायिक निर्वाचक मंडलों ने भारतीय राजनीति में धर्म को एक स्थायी और संस्थागत आधार प्रदान किया। इसने विभिन्न समुदायों के मध्य साझा राष्ट्रीय हितों के स्थान पर संकीर्ण सांप्रदायिक पहचान को प्रोत्साहित किया। इससे समुदायों के मध्य राजनीतिक दूरी बढ़ती गई और भविष्य के लिए एक ऐसे अलगाववादी विमर्श की नींव पड़ी जिसने अंततः देश के विभाजन में मुख्य भूमिका निभाई। यह नीति ब्रिटिश सरकार की 'फूट डालो और राज करो' की रणनीति का सर्वाधिक घातक और दूरगामी परिणाम सिद्ध हुई।

NODIA

70. (1) केवल I, II और IV
भारतीय सिविल सेवा में नस्लीय भेदभाव अनेक स्तरों पर विद्यमान था। परीक्षाएं केवल लंदन में आयोजित की जाती थीं, जिससे भारतीयों का सम्मिलित होना दुष्कर था। पाठ्यक्रम में जानबूझकर यूरोपीय विषयों को प्रधानता दी गई थी। आयु सीमा में वृद्धि के स्थान पर वास्तव में उसे समय-समय पर घटाया गया ताकि भारतीय अभ्यर्थी बाहर रहें। 1878 में एक पृथक वैधानिक सिविल सेवा भी निर्मित की गई ताकि भारतीयों को मुख्य अनुबंधित सेवा से दूर रखा जा सके। ये सभी उपाय ब्रिटिश नौकरशाही के अनन्य स्वरूप को सुरक्षित रखने हेतु थे।

71. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
1858 के अधिनियम ने भारत सचिव की मंत्रणा हेतु 15 सदस्यीय 'इंडिया काउंसिल' का गठन किया था। यह कथन पूर्णतः सत्य है। हालांकि, इन सदस्यों का निर्वाचन भारतीय विधान परिषदों द्वारा नहीं किया जाता था, अपितु उनमें से अधिकांश की नियुक्ति ब्रिटिश सम्राट और कंपनी के पूर्व निदेशकों द्वारा की जाती थी। यह परिषद लंदन में स्थित थी और इसका उद्देश्य भारतीय प्रशासन पर ब्रिटिश संसद के नियंत्रण को सुदृढ़ करना था। अतः भारतीय निकायों की इसमें कोई भूमिका नहीं थी, जिससे यह पूर्णतः एक औपनिवेशिक संरचना बनी रही।

72. (1) मोंटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार 1919
अगस्त 1917 में भारत के राज्य सचिव एडविन मोंटेग्यू ने एक ऐतिहासिक घोषणा की, जिसमें भारत में क्रमिक रूप से उत्तरदायी सरकार की स्थापना का आश्वासन दिया गया था। इस घोषणा के आधार पर ही 1919 का भारत सरकार अधिनियम निर्मित किया गया, जिसे मोंटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधारों के रूप में जाना जाता है। इन सुधारों ने प्रांतों में द्वैध शासन लागू किया और विधायी भागीदारी का विस्तार किया। यह घोषणा प्रथम विश्व युद्ध के समय भारतीय सहयोग प्राप्त करने और बढ़ती राष्ट्रवादी मांगों को शांत करने हेतु ब्रिटिश नीति में एक महत्वपूर्ण मोड़ थी।

73. (3) 1901 - जनगणना जिसमें नृवंशमितीय माप और जाति रैंकिंग का प्रयोग किया गया
भारत में जनगणना का इतिहास सामाजिक वर्गीकरण से गहनता से संबद्ध है। 1901 की जनगणना विशेष महत्वपूर्ण थी क्योंकि हर्बर्ट रिस्ली के नेतृत्व में इसमें नृवंशमितीय मापों का उपयोग हुआ और जातियों को उनकी कथित सामाजिक श्रेष्ठता के अनुसार श्रेणी दी गई। इसने भारतीय समाज में जातिगत पहचान को अधिक कठोर और प्रतिस्पर्धी बना दिया। 1872 में प्रथम गैर-समकालिक जनगणना हुई थी, जबकि 1881 में प्रथम पूर्ण समकालिक जनगणना लॉर्ड रिपन के कार्यकाल में हुई थी। 1931 की जनगणना भी जाति आधारित आंकड़ों हेतु विख्यात है।

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs,
you are wasting valuable time.

Research shows that learning from
PRINTED BOOKS has up to
4× HIGHER RETENTION
than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY
PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS**
move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND**
in competition.

In competitive exams,
being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

मंत्रियों को केवल शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे हस्तांतरित विभाग दिए गए थे, जिनके पास कोई वास्तविक वित्तीय शक्ति नहीं थी। पुलिस, न्याय और वित्त जैसे महत्वपूर्ण 'आरक्षित' विषय अभी भी गवर्नर और उनकी कार्यकारी परिषद के पूर्ण नियंत्रण में थे। पर्याप्त धन और महत्वपूर्ण विभागों के अभाव में भारतीय मंत्री प्रभावी कार्य करने में असमर्थ थे। इस व्यवस्था ने केवल उत्तरदायित्व का भ्रम उत्पन्न किया।

57. (3) प्रांतीय स्वायत्तता - प्रांतों में द्वैध शासन का प्रतिस्थापन
1935 के भारत सरकार अधिनियम की सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपलब्धि प्रांतों में द्वैध शासन को समाप्त कर प्रांतीय स्वायत्तता लागू करना था। इसके अंतर्गत प्रांतों को अपने आंतरिक प्रशासन में अधिक स्वतंत्रता प्रदान की गई और मंत्रियों को विधायिका के प्रति उत्तरदायी बनाया गया। हालांकि, केंद्र में द्वैध शासन का प्रस्ताव दिया गया था। इसने सीमित मताधिकार का विस्तार तो किया, किंतु सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार नहीं दिया। यह अधिनियम भारतीय संघीय ढांचे के विकास की दिशा में एक अत्यंत जटिल संवैधानिक चरण था।

58. (1) बंगाल सरकार के प्रशासनिक बोझ को कम करना और असम के विकास को बढ़ावा देना
लॉर्ड कर्जन की सरकार ने आधिकारिक रूप से बंगाल विभाजन को विशुद्ध प्रशासनिक आवश्यकता बताया था। उनका तर्क था कि बंगाल प्रेसीडेंसी का विशाल आकार एक ही प्रशासन हेतु संभालना दुष्कर है। उन्होंने दावा किया कि विभाजन से सुदूर पूर्वी क्षेत्रों और असम के विकास में सहायता प्राप्त होगी। हालांकि, जनता और राष्ट्रवादी नेताओं ने इसे 'फूट डालो और राज करो' की नीति माना, जिसका उद्देश्य बंगाली भाषी नागरिकों की एकता को भंग करना और बढ़ते राजनीतिक असंतोष को धार्मिक आधार पर विभाजित करना था।

59. (4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
औपनिवेशिक छावनियाँ स्थानीय जनसंख्या के साथ मिलने के स्थान पर उनसे पूर्णतः पृथक रहने हेतु निर्मित की गई थीं। इन क्षेत्रों का निर्माण नस्लीय श्रेष्ठता और सुरक्षा के भाव को अक्षुण्ण रखने हेतु किया गया था। सिविल लाइन्स में बंगलों की स्थापत्य शैली यूरोपीय जीवनशैली और शारीरिक दूरी सुनिश्चित करने हेतु विशेष रूप से तैयार थी। यहाँ की चौड़ी सड़कें और उद्यान भारतीय नगरों की भीड़भाड़ से सर्वथा भिन्न थे। यह शहरी नियोजन औपनिवेशिक शासन की शक्ति और सामाजिक भेदभाव का प्रत्यक्ष प्रदर्शन था।

60. (1) केवल I, II और IV
1861 के अधिनियम ने विधायी शक्तियों के विकेंद्रीकरण और विभागीय प्रणाली की शुरुआत की, जिसने शासन को अधिक संगठित बनाया। 1892 के अधिनियम ने विधान परिषदों का विस्तार किया और प्रथम बार सदस्यों को बजट पर चर्चा का अधिकार दिया। हालांकि, सदस्यों को पूरक प्रश्न पूछने का अधिकार 1909 के सुधारों में प्राप्त हुआ। 1892 के अधिनियम में निर्वाचित बहुमत का भी अभाव था। ये दोनों अधिनियम भारतीय संवैधानिक विकास के प्रारंभिक चरण थे, जिन्होंने भविष्य के प्रतिनिधित्व और विधायी सुधारों हेतु आधार निर्मित किया।

61. (3) लॉर्ड कैनिंग
1857 के विद्रोह के उपरांत, ब्रिटिश संसद ने 1858 का भारत सरकार अधिनियम पारित कर ईस्ट इंडिया कंपनी का शासन समाप्त कर दिया। इसके पश्चात भारत का प्रशासन सीधे ब्रिटिश राजमुकुट के अधीन आ गया। इस परिवर्तन के साथ ही गवर्नर जनरल के पद को 'वायसराय' का नया नाम दिया गया, जो भारत में ब्रिटिश सम्राट का प्रतिनिधि होता था। लॉर्ड कैनिंग भारत के अंतिम गवर्नर जनरल और प्रथम वायसराय बने। उनके कार्यकाल में ही कंपनी से राजमुकुट को सत्ता के हस्तांतरण की ऐतिहासिक प्रक्रिया पूर्ण हुई थी।

62. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
ब्रिटिश सरकार ने राष्ट्रवादी पत्रकारिता को अपनी सत्ता हेतु एक गंभीर संकट के रूप में देखा। भारतीय समाचार पत्र औपनिवेशिक शोषण के विरुद्ध जनमत तैयार कर रहे थे और नागरिकों में राजनीतिक चेतना जागृत कर रहे थे। इस असंतोष को रोकने हेतु सरकार ने राजद्रोह कानून (धारा 124A) का कठोरता से प्रयोग किया। इसके माध्यम से किसी भी ऐसी सामग्री को अपराध घोषित किया जा सकता था जो शासन के प्रति अरुचि उत्पन्न करती थी। यह दमनकारी नीति राष्ट्रवादी आवाजों को मौन करने का एक माध्यम थी।

63. (1) लॉर्ड रिपन
1878 का वर्नाक्यूलर प्रेस अधिनियम लॉर्ड लिटन द्वारा स्थानीय भाषाओं के समाचार पत्रों की स्वतंत्रता का दमन करने हेतु लाया गया था। इस अधिनियम का भारतीयों ने व्यापक विरोध किया क्योंकि यह नस्लीय रूप से भेदभावपूर्ण था। जब 1880 में लॉर्ड रिपन भारत के वायसराय बने, तो उन्होंने उदार दृष्टिकोण अपनाया। उन्होंने प्रेस की स्वतंत्रता को लोकतांत्रिक शासन हेतु अनिवार्य माना और 1882 में इस दमनकारी अधिनियम को पूर्णतः निरस्त कर दिया। उनके इस कार्य ने उन्हें भारतीय जनमानस में एक लोकप्रिय और उदार प्रशासक के रूप में स्थापित किया।

64. (2) यूरोपीय प्रजा के परीक्षण (ट्रायल) में नस्लीय भेदभाव का पूर्ण उन्मूलन
औपनिवेशिक न्यायिक प्रणाली ने भारत में 'विधि के शासन' और न्यायालयों के संगठित सोपान की शुरुआत की, किंतु यह कभी पूर्ण समानता पर आधारित नहीं थी। इसमें नस्लीय भेदभाव गहराई से व्याप्त था। यूरोपीय ब्रिटिश नागरिकों के मामलों की सुनवाई हेतु प्रायः केवल यूरोपीय न्यायाधीश ही अधिकृत होते थे। इल्बर्ट बिल जैसे सुधारों की विफलता से स्पष्ट हो गया कि ब्रिटिश शासन अपनी न्यायिक प्रक्रियाओं में नस्लीय श्रेष्ठता बनाए रखना चाहता था। अतः, भेदभाव का उन्मूलन औपनिवेशिक न्यायिक व्यवस्था की विशेषता कभी नहीं बन सका।

65. (2) वर्नाक्यूलर प्रेस अधिनियम 1878
1861 और 1892 के भारतीय परिषद अधिनियम तथा 1909 के मॉर्ले-मिंटो सुधार भारत के संवैधानिक ढांचे के विकास और विधायी विस्तार से संबद्ध थे। ये अधिनियम शासन प्रणाली में परिवर्तन और भारतीय भागीदारी के स्तर को निर्धारित करते

Click Here to Buy book on Amazon

(4) भारतीय प्रशासन की ओर से भारत सचिव द्वारा लंदन में किए गए खर्च।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

15. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर का चयन कीजिए:
सूची I: (आर्थिक राष्ट्रवादी)
A. दादाभाई नौरोजी
B. रोमेश चंद्र दत्त
C. महादेव गोविंद रानाडे
D. जी. वी. जोशी
सूची II: (प्रमुख कार्य/योगदान)
i. एसेज ऑन इंडियन इकोनॉमिक्स
ii. पॉवर्टी एंड अन-ब्रिटिश रूल इन इंडिया
iii. इकोनॉमिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया
iv. कृषि उत्पादन का विस्तृत सांख्यिकीय विश्लेषण
(1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(2) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(3) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(4) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

16. दिए गए कथन और कारण के आधार पर सही विकल्प का चयन कीजिए:
कथन (A): भारत में रेलवे नेटवर्क के विस्तार ने वि-औद्योगिकीकरण की प्रक्रिया को तीव्र कर दिया।
कारण (R): रेलवे ने ब्रिटेन के कारखानों में बने सस्ते सामानों को भारत के दूर-दराज के आंतरिक बाजारों तक पहुँचाने में सक्षम बनाया, जिससे स्थानीय शिल्पकारों का पतन हुआ।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

17. अंग्रेजों द्वारा शुरू किए गए निम्नलिखित भू-राजस्व प्रयोगों पर विचार कीजिए। उनकी शुरुआत का सही कालानुक्रमिक क्रम कौन सा है?
I. बंगाल में स्थायी बंदोबस्त
II. वारेन हेस्टिंग्स द्वारा पंचवर्षीय बंदोबस्त
III. महलवाड़ी बंदोबस्त (रेगुलेशन VII)
IV. मद्रास में थॉमस मुनरो द्वारा रैयतवाड़ी की शुरुआत
निम्नलिखित में से कौन सा क्रम सही है?
(1) I, II, III, IV
(2) II, I, IV, III
(3) II, I, III, IV
(4) I, IV, II, III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

18. धन के बहिर्गमन सिद्धांत के संदर्भ में 'प्रतिफल रहित निर्यात' (Unrequited exports) की अवधारणा का तात्पर्य है कि:
(1) बिना किसी भौतिक या वित्तीय मुआवजे के भारत से ब्रिटेन को माल का हस्तांतरण।
(2) वह संरचनात्मक असंतुलन जहाँ भारतीय प्राथमिक निर्यात, आयातित तैयार उत्पादों की तुलना में अत्यधिक सस्ते थे।
(3) ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा पारंपरिक भारतीय हस्तशिल्प के निर्यात पर पूर्ण प्रतिबंध।
(4) कृषि निर्यात का मशीनरी या औद्योगिक संयंत्र जैसी अचल संपत्तियों के बदले अनिवार्य विनिमय।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

19. बंगाल के जमींदारों और किसानों पर स्थायी बंदोबस्त के प्रभाव के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) इसने जमींदारों का एक वफादार वर्ग बनाया जिसने ब्रिटिश शासन का समर्थन किया।
(2) राज्य की भू-राजस्व मांग को सदैव के लिए निर्धारित कर दिया गया था।
(3) भूमि पर किसानों के पारंपरिक अधिकारों को कड़ाई से संरक्षित और दर्ज किया गया था।
(4) 'सूर्यास्त नियम' के सख्त प्रवर्तन के कारण कई मूल जमींदारों ने अपनी संपत्तियां खो दीं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

20. भारत में रेलवे की शुरुआत के पीछे औपनिवेशिक उद्देश्यों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. रक्षा और आंतरिक सुरक्षा के लिए ब्रिटिश भारतीय सेना की तीव्र आवाजाही की सुविधा प्रदान करना।
II. सभी भारतीय प्रांतों के समान औद्योगिक विकास को बढ़ावा देना।
III. ब्रिटिश निर्मित वस्तुओं के लिए भारतीय बाजारों को खोलना।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

21. किस विधायी अधिनियम ने औपचारिक रूप से भारत के साथ व्यापार पर ईस्ट इंडिया कंपनी के एकाधिकार को समाप्त कर दिया और इसे सभी ब्रिटिश नागरिकों के लिए खोल दिया?
(1) 1773 का रेगुलेटिंग एक्ट
(2) 1784 का पिट्स इंडिया एक्ट
(3) 1813 का चार्टर एक्ट
(4) 1833 का चार्टर एक्ट
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

22. भारत में कृषि के व्यवसायीकरण का एक प्रमुख सामाजिक-आर्थिक प्रभाव क्या था?

74. (1) स्थानीय आवासों को गिराने और नस्लीय पृथक्करण को न्यायसंगत ठहराने के लिए
औपनिवेशिक शासन में, स्वच्छता और सार्वजनिक स्वास्थ्य के तर्कों का प्रायः राजनीतिक और नस्लीय उद्देश्यों हेतु उपयोग किया गया। अंग्रेज भारतीय बस्तियों को 'रोगों का केंद्र' मानकर उन्हें ध्वस्त कर देते थे ताकि यूरोपीय क्षेत्रों को सुरक्षित रखा जा सके। इसके माध्यम से उन्होंने 'सिविल लाइन्स' और 'व्हाइट टाउन्स' जैसे पृथक क्षेत्रों के निर्माण को न्यायसंगत सिद्ध किया। यह नीति न केवल शारीरिक अपितु सामाजिक रूप से भी भारतीयों और अंग्रेजों के मध्य दूरी बढ़ाने और नस्लीय भेदभाव को वैज्ञानिक आधार प्रदान करने की सोची-समझी रणनीति थी।

75. (1) केवल I, II, III और V
औपनिवेशिक पुलिस व्यवस्था एक कठोर सोपान और दमनकारी नीतियों पर आधारित थी। दरोगा प्रणाली कृषकों के शोषण हेतु कुख्यात थी और 1871 के आपराधिक जनजाति अधिनियम ने संपूर्ण समुदायों को अपराधी घोषित कर दिया। लॉर्ड कर्जन के काल में फ्रेजर आयोग ने पुलिस की कार्यक्षमता सुधारने हेतु सीआईडी के गठन का सुझाव दिया था। पुलिस का मुख्य कार्य राष्ट्रवादी आंदोलनों के प्रति सहानुभूति रखना नहीं, अपितु उन्हें कुचलना था। यह बल पूर्णतः ब्रिटिश नियंत्रण में था और इसका उपयोग साम्राज्य विरोधी हर आवाज को दबाने हेतु होता था।

76. (2) इल्बर्ट बिल, 1883
ब्रिटिश सरकार ने राजनीतिक असंतोष को दबाने हेतु आधिकारिक गोपनीयता अधिनियम, प्रेस अधिनियम और आपराधिक कानून संशोधन जैसे अनेक कठोर नियम बनाए थे। इन नियमों ने नागरिक स्वतंत्रता को सीमित किया और सरकार को असीमित दमनकारी शक्तियाँ दीं। इसके विपरीत, 1883 के इल्बर्ट बिल का उद्देश्य न्यायिक समानता लाना था ताकि भारतीय न्यायाधीश भी यूरोपीय नागरिकों के अभियोगों की सुनवाई कर सकें। यद्यपि ब्रिटिश समुदाय के विरोध के कारण यह अपने मूल उद्देश्य में पूर्णतः सफल नहीं रहा, किंतु यह दमन का साधन नहीं बल्कि सुधार का एक प्रयास था।

77. (3) विदेशी मामले
1935 के भारत सरकार अधिनियम ने केंद्र और प्रांतों के मध्य शक्तियों का स्पष्ट पृथक्करण किया। 'संघीय सूची' में उन विषयों को रखा गया था जिनका महत्व संपूर्ण राष्ट्र हेतु था और जिन पर केवल केंद्रीय विधायिका विधि बना सकती थी। विदेशी मामले, रक्षा, मुद्रा और रेलवे जैसे महत्वपूर्ण विषय इसी सूची का अंग थे। इसके विपरीत, सार्वजनिक स्वास्थ्य, स्थानीय शासन और कृषि जैसे विषय 'प्रांतीय सूची' में सम्मिलित थे। यह विभाजन भारत में एक संघीय शासन प्रणाली की संरचना तैयार करने और प्रशासनिक उत्तरदायित्वों को व्यवस्थित करने हेतु किया गया था।

78. (4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
1901 में उत्तर-पश्चिम सीमा प्रांत का निर्माण केवल भाषाई आधार पर नहीं, अपितु मुख्य रूप से सामरिक और सुरक्षा कारणों से किया गया था। अंग्रेज अफगानिस्तान की सीमा के समीप एक सुदृढ़ प्रशासनिक इकाई चाहते थे। ब्रिटिश क्षेत्रीय पुनर्गठन की नीतियां प्रायः राजनीतिक लाभ और 'फूट डालो और राज करो' की रणनीति से प्रेरित होती थीं। वे भौगोलिक सीमाओं को इस प्रकार परिवर्तित करते थे जिससे एकीकृत समुदायों की सामाजिक और राजनीतिक एकजुटता दुर्बल हो जाए। अतः पुनर्गठन का उद्देश्य प्रशासनिक सरलता के स्थान पर औपनिवेशिक नियंत्रण सुदृढ़ करना था।

NODIA

79. (1) इसने एक जटिल मुकदमेबाजी प्रक्रिया निर्मित की जिससे ग्रामीण निर्धनों को हानि हुई।
कानूनों के संहिताकरण ने पारंपरिक अनौपचारिक न्याय प्रणालियों को प्रतिस्थापित कर एक जटिल और औपचारिक ब्रिटिश कानूनी ढांचा स्थापित किया। इस नवीन व्यवस्था में अधिवक्ताओं, अदालती शुल्कों और दीर्घ प्रक्रियाओं की आवश्यकता थी, जिसे समझना और वहन करना ग्रामीण निर्धनों हेतु अत्यंत दुष्कर था। इससे मुकदमेबाजी में अत्यधिक वृद्धि हुई और शक्तिशाली वर्गों को कानूनी दांव-पेच के माध्यम से निर्धनों का शोषण करने का अवसर मिला। यद्यपि इसने समान कानून प्रदान किया, किंतु इसने न्याय को महंगा और साधारण जनता की पहुँच से दूर कर दिया।

80. (2) ब्रिटिश क्राउन ने भारत के प्रशासन की सीधी जिम्मेदारी ली और कंपनी शासन का अंत हुआ।
1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के पश्चात ब्रिटिश नीति में युगांतकारी परिवर्तन आया। 1858 के अधिनियम ने भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी के विवादास्पद शासन को पूर्णतः समाप्त कर दिया। इसके स्थान पर ब्रिटिश राजमुकुट ने भारत के प्रशासन का प्रत्यक्ष और पूर्ण उत्तरदायित्व अपने हाथों में ले लिया। गवर्नर जनरल को अब वायसराय के रूप में जाना जाने लगा, जो सीधे ब्रिटिश संसद के प्रति उत्तरदायी था। यह परिवर्तन भारत में एक अधिक संगठित और औपचारिक औपनिवेशिक शासन की शुरुआत थी, जिसने साम्राज्यवादी नियंत्रण को प्राथमिकता दी।

www.nodia.in

हिस्सा थे जो 'धन के बहिर्गमन' का अंग बने?
(1) केवल I, II, IV और V
(2) केवल I, II, III और IV
(3) केवल II, III, IV और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

30. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर का चयन कीजिए:
सूची I: (पुस्तक/प्रकाशन)
A. द इकोनॉमिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया
B. पॉवर्टी एंड अन-ब्रिटिश रूल इन इंडिया
C. नील दर्पण
D. सम इकोनॉमिक एस्पेक्ट्स ऑफ ब्रिटिश रूल इन इंडिया
सूची II: (लेखक)
i. दादाभाई नौरोजी
ii. जी. सुब्रमण्यम अय्यर
iii. आर. सी. दत्त
iv. दीनबंधु मित्र
(1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(2) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(3) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

31. 19वीं सदी के भारत में वि-औद्योगिकीकरण के कारणों में से असंगत विकल्प की पहचान कीजिए।
(1) प्रमुख भारतीय शहरों में आधुनिक कारखाना-आधारित उद्योगों का उदय
(2) पारंपरिक भारतीय दरबारों और कुलीनों के संरक्षण की समाप्ति
(3) अंग्रेजों द्वारा एकतरफा मुक्त व्यापार नीति की शुरुआत
(4) आयात की सुविधा प्रदान करने वाले रेलवे नेटवर्क का तीव्र विस्तार
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

32. वह तंत्र जिसके द्वारा ईस्ट इंडिया कंपनी बंगाल से एकत्रित अधिशेष भू-राजस्व का उपयोग यूरोप को निर्यात करने के लिए भारतीय सामान खरीदने के लिए करती थी, क्या कहलाता था?
(1) एजेंसी प्रणाली
(2) निवेश प्रणाली
(3) गारंटी प्रणाली
(4) साम्राज्यिक अधिमान प्रणाली
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

33. महलवाड़ी प्रणाली के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. बंदोबस्त पूरे गांव के समुदाय या 'महल' के साथ किया गया था।
II. स्वामित्व अधिकार संयुक्त रूप से ग्रामीण समुदाय में निहित थे।
III. इसने राज्य और वास्तविक काश्तकार के बीच बिचौलियों की उपस्थिति को पूरी तरह से समाप्त कर दिया।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

34. स्थायी बंदोबस्त के संबंध में दिए गए कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
कथन I: 'सूर्यास्त नियम' के क्रियान्वयन से जमींदारी संपदाओं का बड़े पैमाने पर हस्तांतरण हुआ।
कथन II: इन संपदाओं के नए खरीदार अक्सर शहरी व्यापारी और साहूकार थे जो 'अनुपस्थित भूस्वामी' बन गए।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

35. अंग्रेजों के अधीन रेलवे के विकास के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) यूनाइटेड किंगडम स्थित निजी वाणिज्यिक उद्यमों द्वारा प्रारंभिक रेलवे नेटवर्क का निर्माण।
(2) ब्रिटिश निवेशकों द्वारा किए गए सभी पूंजी निवेशों पर 5% की गारंटीशुदा न्यूनतम वार्षिक वापसी।
(3) भारत में बड़े पैमाने पर स्थानीय रोजगार का सृजन और भारी इंजीनियरिंग क्षेत्रों का विकास।
(4) संसाधन संपन्न आंतरिक क्षेत्रों को प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय बंदरगाहों से जोड़ने के लिए तैयार किया गया एक रेडियल नेटवर्क डिजाइन।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

36. ब्रिटिश व्यापार नीति के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसने भारतीय निर्मित वस्तुओं के निर्यात को व्यवस्थित रूप से हतोत्साहित किया।
II. इसने ब्रिटिश मशीन-निर्मित वस्त्रों के आयात को प्रोत्साहित किया।
III. इसने भारत से मुख्य रूप से पूंजीगत वस्तुओं से युक्त एक विविध निर्यात बास्केट को बढ़ावा दिया।
IV. 'साम्राज्यिक वरीयता' की नीति भारत में गैर-ब्रिटिश आयातों की तुलना में ब्रिटिश आयातों को लाभ देने के लिए बनाई गई थी।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल III
(3) केवल III और IV
(4) केवल I और IV

Downloaded from www.pdf.tube

(1) वैश्विक वस्तु बाजारों के साथ जुड़ने की भारतीय किसानों की इच्छा
(2) औपनिवेशिक प्रशासन द्वारा आधुनिक कृषि प्रौद्योगिकियों की शुरुआत
(3) ग्रामीण बंगाल में सहकारी कृषि समितियों की स्थापना
(4) किसानों के लिए भू-राजस्व की अत्यधिक मांगों का नकद में भुगतान करने की अनिवार्यता
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

8. निम्नलिखित अकाल आयोगों पर विचार कीजिए। ब्रिटिश शासन के तहत उनकी स्थापना का सही कालानुक्रमिक क्रम कौन सा है?
(1) कैंपबेल आयोग, स्ट्रेची आयोग, लायल आयोग, मैकडोनेल आयोग
(2) स्ट्रेची आयोग, कैंपबेल आयोग, मैकडोनेल आयोग, लायल आयोग
(3) कैंपबेल आयोग, लायल आयोग, स्ट्रेची आयोग, मैकडोनेल आयोग
(4) मैकडोनेल आयोग, स्ट्रेची आयोग, कैंपबेल आयोग, लायल आयोग
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

9. साहूकारी और किसान ऋणग्रस्तता के संबंध में दिए गए कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
कथन I: ब्रिटिश कानूनी प्रणाली ने भूमि को एक हस्तांतरणीय संपत्ति बना दिया, जिससे साहूकारों को ऋण न चुकाने की स्थिति में किसानों की भूमि जब्त करने की अनुमति मिल गई।
कथन II: ब्रिटिश शासन से पहले पारंपरिक ग्रामीण सामुदायिक संरचना ने बाहरी लोगों को भूमि के हस्तांतरण को अत्यधिक प्रतिबंधित किया था।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

10. ब्रिटिश शासन के तहत बागान अर्थव्यवस्था के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यूरोपीय बागान मालिकों ने मुख्य रूप से नील, चाय और कॉफी जैसी फसलों पर ध्यान केंद्रित किया।
II. असम के चाय बागानों में श्रम समान और स्वैच्छिक अनुबंधों द्वारा संचालित था।
III. 1859 के अंतर्देशीय आप्रवासन अधिनियम ने बागान मालिकों को काम छोड़कर भागने वाले मजदूरों के विरुद्ध दंडात्मक शक्तियाँ प्रदान कीं।
IV. बागान फसलें काफी हद तक निर्यात के बजाय भारतीय घरेलू बाजार के लिए थीं।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I और III
(2) केवल II और IV
(3) केवल I, II और IV
(4) केवल II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

11. 1859-60 का नील विद्रोह यूरोपीय बागान मालिकों की दमनकारी प्रथाओं के विरुद्ध हुआ था। निम्नलिखित में से कौन इस विद्रोह के प्रमुख नेता थे?
(1) सिद्धू और कान्हू मुर्मू
(2) बिरसा मुंडा और गया मुंडा
(3) वासुदेव बलवंत फड़के और उमाजी नाइक
(4) दिगंबर विश्वास और बिष्णुचरण विश्वास
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

12. निम्नलिखित में से कौन सा 1920 के दशक से पहले भारत में ब्रिटिश औद्योगिक नीति की विशेषता नहीं है?
(1) स्वदेशी उद्योगों के लिए सरकारी वित्तीय सहायता का पूर्ण अभाव
(2) नवजात भारतीय उद्योगों की रक्षा के लिए उच्च शुल्क बाधाओं का कार्यान्वयन
(3) भारतीयों के लिए तकनीकी और प्रबंधकीय शिक्षा का अभाव
(4) सरकारी सामान की खरीद बड़े पैमाने पर भारतीय निर्माताओं के बजाय ब्रिटेन से करना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

13. टाटा आयरन एंड स्टील कंपनी (TISCO) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसकी स्थापना जमशेदजी टाटा द्वारा 1907 में की गई थी।
II. यह पूरी तरह से ब्रिटिश औपनिवेशिक सरकार द्वारा वित्तपोषित था।
III. इसकी स्थापना आंशिक रूप से स्वदेशी आंदोलन के स्वदेशी उद्यम पर बल से प्रभावित थी।
IV. कारखाना साकची में स्थापित किया गया था, जिसका नाम बाद में बदलकर जमशेदपुर कर दिया गया।
V. इसे अपनी स्थापना के समय ही ब्रिटिश सरकार से तत्काल शुल्क संरक्षण प्राप्त हुआ।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, III और IV
(3) केवल II, IV और V
(4) केवल I, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

14. ब्रिटिश वित्तीय शोषण के संदर्भ में, 'गृह प्रभार' (Home Charges) शब्द विशेष रूप से किसे संदर्भित करता था?
(1) दक्षिण भारत के रैयतवाड़ी और महलवाड़ी क्षेत्रों में किसानों से एकत्र किया गया भू-राजस्व।
(2) ब्रिटिश उपभोक्ता बाजारों में प्रवेश करने वाले प्रसंस्कृत भारतीय सामानों पर लगाया गया आयात शुल्क।
(3) तीन प्रेसीडेंसियों में नगर निगमों और स्थानीय परिषदों के प्रबंधन के लिए परिचालन व्यय।

NODIA

सांख्यिकीय आधार प्रदान किया। हालांकि, जनगणना ने वर्ण व्यवस्था को समाप्त नहीं किया, अपितु इसने पारंपरिक पहचानों को अधिक सुदृढ़ और कठोर बना दिया। इसने भविष्य के राजनीतिक प्रतिनिधित्व हेतु धर्म और जाति को मुख्य आधार के रूप में स्थापित किया।

48. (3) केवल I और III

1861 के पुलिस अधिनियम ने भारत में एक संगठित और सोपानिक पुलिस बल की नींव रखी। इसके अंतर्गत प्रत्येक प्रांत में एक महानिरीक्षक नियुक्त किया गया और पुलिस को जिला स्तर पर मजिस्ट्रेट के प्रशासनिक नियंत्रण में रखा गया। इस व्यवस्था का मुख्य उद्देश्य स्थानीय नियंत्रण के स्थान पर एक केंद्रीकृत संरचना निर्मित करना था जो ब्रिटिश हितों की रक्षा कर सके। इसने पुरानी ग्रामीण पुलिस प्रणालियों को समाप्त कर पुलिस को एक पेशेवर किंतु दमनकारी सरकारी अंग के रूप में विकसित किया, जो सीधे औपनिवेशिक प्रशासन के प्रति उत्तरदायी था।

49. (2) देशी रियासतें

ब्रिटिश सरकार की रियासतों के प्रति नीति समय के साथ परिवर्तित होती रही। 'अधीनस्थ पृथक्करण' के काल में अंग्रेजों ने रियासतों को परस्पर पृथक रखा। किंतु 1857 के विद्रोह के पश्चात, उन्होंने रियासतों को साम्राज्य के स्तंभों के रूप में देखा और 'अधीनस्थ संघ' की नीति अपनाई। इसका उद्देश्य रियासतों को ब्रिटिश राजमुकुट के प्रति निष्ठावान बनाकर उन्हें प्रशासनिक ढांचे में एकीकृत करना था। यह परिवर्तन राष्ट्रवादी आंदोलनों के विरुद्ध एक सुरक्षा तंत्र विकसित करने और रियासतों के सहयोग से भारत पर पकड़ सुदृढ़ करने हेतु किया गया था।

50. (2) केवल II

1892 के अधिनियम ने विधान परिषदों के विस्तार और बजट चर्चा की शुरुआत की, किंतु इसमें सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार का कोई प्रावधान नहीं था। वास्तव में, मताधिकार अत्यंत सीमित था और केवल विशिष्ट योग्यता वाले नागरिकों तक ही सीमित था। भारत में मताधिकार का धीरे-धीरे विस्तार हुआ, किंतु सार्वभौमिक मताधिकार स्वतंत्रता के पश्चात संविधान द्वारा ही संभव हुआ। 1858 के अधिनियम द्वारा परिषद का गठन और 1919 द्वारा बजट पृथक्करण जैसे अन्य प्रावधान ऐतिहासिक रूप से सत्य हैं और प्रशासनिक विकास को प्रदर्शित करते हैं।

51. (3) इल्बर्ट बिल, 1883

वर्नाक्यूलर प्रेस अधिनियम, रौलट एक्ट और राजद्रोह कानून (धारा 124A) सभी ब्रिटिश सरकार द्वारा भारतीय असंतोष और राष्ट्रवादी गतिविधियों के दमन हेतु निर्मित किए गए थे। इनके माध्यम से अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को सीमित किया गया और बिना अभियोग के बंदी बनाने की अनुमति दी गई। इसके विपरीत, इल्बर्ट बिल का उद्देश्य भारतीय न्यायाधीशों को यूरोपीय नागरिकों के अभियोग सुनने का अधिकार प्रदान कर न्यायिक समानता लाना था। हालांकि, तीव्र विरोध के कारण इसे संशोधित करना पड़ा, किंतु यह दमनकारी श्रेणी में नहीं आता था।

52. (1) मुंसिफ कोर्ट, जिला न्यायाधीश की अदालत, सदर दीवानी अदालत, प्रिवी काउंसिल

ब्रिटिश काल में दीवानी न्याय व्यवस्था एक व्यवस्थित सोपान पर आधारित थी। निम्नतम स्तर पर मुंसिफ अदालतें होती थीं जो लघु विवादों का निस्तारण करती थीं। इसके ऊपर जिला न्यायाधीश की अदालत होती थी, जो अधिक महत्वपूर्ण विषयों की सुनवाई करती थी। प्रांतीय स्तर पर सदर दीवानी अदालत सर्वोच्च थी। अंततः, सर्वोच्च और संवैधानिक विवादों हेतु अंतिम अपील लंदन स्थित प्रिवी काउंसिल में की जाती थी। यह ढांचा भारत में एक आधुनिक और एकीकृत न्यायिक प्रणाली स्थापित करने के ब्रिटिश प्रयासों का अंग था।

53. (3) यूरोपीय लोगों के विरोध के कारण इल्बर्ट बिल को उसके मूल रूप में तत्काल लागू कर दिया गया।

औपनिवेशिक न्याय प्रणाली में गहरा नस्लीय भेदभाव विद्यमान था। इल्बर्ट बिल ने भारतीय न्यायाधीशों को यूरोपीय अपराधियों के मामलों की सुनवाई का अधिकार देने का प्रस्ताव किया था, जिसका यूरोपीय समुदाय ने उग्र विरोध किया। इस दबाव के कारण सरकार को विधेयक में संशोधन करना पड़ा, जिससे भारतीय न्यायाधीशों की शक्तियां अत्यंत सीमित हो गईं। यूरोपीय नागरिकों को सदैव विशेष अधिकार प्राप्त थे और उनके लिए दंड के प्रावधान भी प्रायः भारतीयों की तुलना में अत्यंत मृदु होते थे। यह भेदभाव औपनिवेशिक न्याय के खोखलेपन को दर्शाता था।

54. (2) लॉर्ड लिटन

लॉर्ड लिटन ने 1878-79 में वैधानिक सिविल सेवा का प्रारंभ किया था। इसका उद्देश्य उच्च सामाजिक पृष्ठभूमि वाले भारतीयों को प्रशासन के कतिपय पदों पर नियुक्त करना था, बिना उन्हें लंदन की कठिन प्रतियोगी परीक्षा में सम्मिलित हुए। इसके अंतर्गत अनुबंधित पदों का छठा भाग भारतीयों हेतु आरक्षित था। हालांकि, इस सेवा को कभी भी वह प्रतिष्ठा और शक्ति प्राप्त नहीं हुई जो नियमित आईसीएस अधिकारियों को मिलती थी। यह प्रणाली अंततः विफल रही और भारतीयों की वास्तविक प्रशासनिक मांगों को संतुष्ट करने में अक्षम सिद्ध हुई।

55. (4) A-ii, B-iii, C-i, D-iv

विभिन्न ब्रिटिश अधिकारियों ने भारत की प्रशासनिक और कानूनी नीतियों को प्रभावित किया। लॉर्ड कर्जन को 1905 के विवादास्पद बंगाल विभाजन हेतु स्मरण किया जाता है। लॉर्ड रिपन ने प्रेस की स्वतंत्रता के समर्थक के रूप में वर्नाक्यूलर प्रेस अधिनियम को निरस्त किया। लॉर्ड मैकाले ने भारतीय कानूनों के संहिताकरण और दंड संहिता के प्रारूपण में मुख्य भूमिका निभाई। लॉर्ड मॉर्ले ने 1909 के सुधारों के माध्यम से सांप्रदायिक निर्वाचक मंडलों की शुरुआत की। ये सभी घटनाएं औपनिवेशिक काल के राजनीतिक और कानूनी इतिहास में महत्वपूर्ण हैं।

56. (1) मंत्रियों के पास वित्त और पुलिस जैसे 'आरक्षित' विभागों पर नियंत्रण नहीं था।

1919 के सुधारों के अंतर्गत लागू द्वैध शासन की विफलता का मुख्य कारण शक्तियों का त्रुटिपूर्ण विभाजन था। भारतीय

Click Here to Buy book on Amazon

(1) छोटे किसानों और काश्तकारों की दीर्घकालिक ग्रामीण ऋणग्रस्तता में भारी कमी।
(2) खाद्य फसलों की खेती में कमी, जिसने व्यापक अकाल के प्रभाव को और अधिक विनाशकारी बना दिया।
(3) सभी कृषि वर्गों और मजदूरों के जीवन स्तर में पर्याप्त और समान सुधार।
(4) वास्तविक उत्पादक और अंतिम बाजार खरीदार के बीच बिचौलियों का पूर्ण उन्मूलन।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

23. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर का चयन कीजिए:
सूची I: (अकाल/घटना)
A. बंगाल का महान अकाल
B. उड़ीसा का अकाल
C. दक्षिण भारत का महान अकाल (मद्रास/बॉम्बे)
D. लॉर्ड कर्जन के समय का अकाल
सूची II: (वर्ष/अवधि)
i. 1866
ii. 1770
iii. 1899-1900
iv. 1876-1878
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

24. 1875 के दक्कन के दंगे मुख्य रूप से किस समूह के विरुद्ध किसानों का विद्रोह थे?
(1) मारवाड़ी और गुजराती साहूकार
(2) यूरोपीय नील बागान मालिक
(3) ब्रिटिश राजस्व अधिकारी
(4) महलवाड़ी प्रणाली के अनुपस्थित भूस्वामी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

25. औपनिवेशिक भारत में बागान अर्थव्यवस्था के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. नील की खेती काफी हद तक किसानों को दिए गए जबरन नकद अग्रिम पर निर्भर थी।
II. चाय के बागान मुख्य रूप से बंगाल के डेल्टा क्षेत्र में स्थापित किए गए थे।
III. बागान मालिकों को औपनिवेशिक प्रशासन से व्यापक शक्तियां और समर्थन प्राप्त था।
IV. 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में नील से कृत्रिम रंगों की ओर संक्रमण ने कई यूरोपीय बागान मालिकों को प्रभावित किया।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, III और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

26. नील विद्रोह के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।
(1) इस आंदोलन को बंगाली मध्यम वर्ग के बुद्धिजीवियों और समाचार पत्रों का सक्रिय समर्थन मिला।
(2) विद्रोह को भारी सैन्य तैनाती के माध्यम से दबाया गया जिससे बड़े पैमाने पर जनहानि हुई।
(3) यह आंदोलन दक्षिण भारत के रियासतों में विस्तार करने से पहले मद्रास क्षेत्र में शुरु हुआ था।
(4) इस विरोध ने औपनिवेशिक सरकार को बंगाल में सभी कृषि करों को पूरी तरह से समाप्त करने के लिए विवश कर दिया।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

27. दिए गए कथन और कारण के आधार पर सही विकल्प का चयन कीजिए:
कथन (A): भारत में ब्रिटिश सरकार ने प्रथम विश्व युद्ध तक आधुनिक स्वदेशी उद्योगों के विकास को सक्रिय रूप से हतोत्साहित किया।
कारण (R): साम्राज्यवादी अर्थव्यवस्था में भारत की प्राथमिक भूमिका कच्चे माल का आपूर्तिकर्ता और ब्रिटिश औद्योगिक वस्तुओं का बाजार बनना था।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

28. औपनिवेशिक उदासीनता के बावजूद टाटा आयरन एंड स्टील कंपनी (TISCO) जैसी प्रारंभिक भारतीय औद्योगिक पहलों की सफलता के लिए सबसे उपयुक्त कारण कौन सा है?
(1) भारी औद्योगिक विकास के लिए विभिन्न प्रांतीय सरकारों द्वारा जारी प्रत्यक्ष वित्तीय अनुदान।
(2) राष्ट्रवादी स्वदेशी भावना और स्थानीय भारतीय निवेशकों द्वारा प्रदान किया गया पूंजीगत समर्थन।
(3) ब्रिटिश औद्योगिक विशेषज्ञों के विशिष्ट तकनीकी ज्ञान और प्रबंधन कौशल पर पूर्ण निर्भरता।
(4) घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार क्षेत्रों में विदेशी इस्पात उत्पादकों से प्रतिस्पर्धा का पूर्ण अभाव।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

29. निम्नलिखित तत्वों पर विचार कीजिए:
I. सेवानिवृत्त ब्रिटिश अधिकारियों की पेंशन
II. भारत सरकार द्वारा लिए गए विदेशी ऋण पर ब्याज
III. भारत में निवेश की गई निजी ब्रिटिश पूंजी का लाभ
IV. लंदन में भारत सचिव के कार्यालय का व्यय
V. ईस्ट इंडिया कंपनी के शेयरधारकों को भुगतान किया गया लाभांश
उपरोक्त में से कौन से 'गृह प्रभार' (Home Charges) का

NODIA

अध्याय 19
ब्रिटिश आर्थिक नीतियाँ एवं उनका प्रभाव

1. ब्रिटिश शासन के तहत भारत में वि-औद्योगिकीकरण की प्रक्रिया का सबसे सटीक वर्णन निम्नलिखित में से कौन सा है?
(1) भारतीय अर्थव्यवस्था का कृषि से औद्योगिक उत्पादन की ओर संक्रमण
(2) पारंपरिक भारतीय हस्तशिल्प और कारीगर उद्योगों का व्यवस्थित विनाश
(3) ब्रिटिश निर्मित वस्तुओं के स्थान पर भारतीय स्वदेशी उत्पादों का प्रतिस्थापन
(4) लघु उद्योगों की कीमत पर भारी उद्योगों की स्थापना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

2. 'धन के बहिर्गमन' (Drain of Wealth) सिद्धांत के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसे पहली बार दादाभाई नौरोजी ने अपनी पुस्तक 'पॉवर्टी एंड अन-ब्रिटिश रूल इन इंडिया' में व्यवस्थित रूप से प्रतिपादित किया था।
II. इस बहिर्गमन का एक प्रमुख घटक ब्रिटिश सरकार को भुगतान किए जाने वाले 'गृह प्रभार' (Home Charges) थे।
III. इस बहिर्गमन ने भारत के भीतर पूंजी निर्माण और औद्योगीकरण को सुगम बनाया।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

3. भू-राजस्व का स्थायी बंदोबस्त बंगाल में वर्ष 1793 में किस गवर्नर-जनरल द्वारा शुरु किया गया था?
(1) लॉर्ड हेस्टिंग्स
(2) लॉर्ड वेलेज़ली
(3) लॉर्ड कॉर्नवालिस
(4) लॉर्ड विलियम बेंटिक
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

4. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर का चयन कीजिए:
सूची I: (भू-राजस्व प्रणाली)
A. स्थायी बंदोबस्त
B. रैयतवाड़ी प्रणाली
C. महलवाड़ी प्रणाली
D. मालगुजारी प्रणाली
सूची II: (क्षेत्र/सम्बद्ध व्यक्ति)
i. होल्ट मैकेंजी
ii. मध्य प्रांत
iii. थॉमस मुनरो
iv. बंगाल और बिहार
(1) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(2) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(3) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(4) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

5. दिए गए कथन और कारण के आधार पर सही विकल्प का चयन कीजिए:
कथन (A): अंग्रेजों द्वारा भारत में रेलवे की शुरुआत का मुख्य उद्देश्य देश के आंतरिक आर्थिक विकास को बढ़ावा देना था।
कारण (R): रेलवे ने ब्रिटेन को निर्यात के लिए कच्चे माल को आंतरिक क्षेत्रों से बंदरगाहों तक तेजी से पहुँचाने की सुविधा प्रदान की।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

6. निम्नलिखित में से कौन सा कथन 19वीं शताब्दी के दौरान भारत में ब्रिटिश व्यापार नीति की प्रकृति की सही पहचान करता है?
(1) एक पारस्परिक मुक्त व्यापार प्रणाली जिसने भारतीय और ब्रिटिश दोनों वस्तुओं के लिए समान शुल्क संरचना स्थापित की।
(2) एकतरफा मुक्त व्यापार नीति जिसने भारतीय निर्यात पर उच्च कर लगाते हुए शुल्क-मुक्त ब्रिटिश आयात की अनुमति दी।
(3) विदेशी वस्त्रों पर उच्च शुल्क लगाकर स्थानीय कुटीर उद्योगों की रक्षा के लिए बनाई गई एक संरक्षणवादी नीति।
(4) प्रतिस्पर्धी यूरोपीय बाजारों में महत्वपूर्ण भारतीय औद्योगिक कच्चे माल के निर्यात पर पूर्ण प्रतिबंध।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

7. ब्रिटिश शासन के दौरान भारत में कृषि के जबरन व्यवसायीकरण का प्राथमिक कारण क्या था?

Downloaded from www.pdf.tube

(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

37. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर का चयन कीजिए:
सूची I: (वाणिज्यिक फसल)
A. जूट
B. कपास
C. चाय
D. गन्ना
सूची II: (प्राथमिक कृषि क्षेत्र)
i. असम
ii. संयुक्त प्रांत
iii. बंगाल
iv. महाराष्ट्र/दक्कन
(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-i, B-iv, C-iii, D-ii
(3) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(4) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

38. ब्रिटिश आर्थिक प्रभाव से संबंधित निम्नलिखित घटनाओं पर विचार कीजिए। निम्नलिखित में से कौन सा सही कालानुक्रमिक क्रम दर्शाता है?
(1) बंगाल का स्थायी बंदोबस्त, ईस्ट इंडिया कंपनी के एकाधिकार की समाप्ति, दक्कन के दंगे, TISCO की स्थापना
(2) ईस्ट इंडिया कंपनी के एकाधिकार की समाप्ति, बंगाल का स्थायी बंदोबस्त, दक्कन के दंगे, TISCO की स्थापना
(3) बंगाल का स्थायी बंदोबस्त, दक्कन के दंगे, ईस्ट इंडिया कंपनी के एकाधिकार की समाप्ति, TISCO की स्थापना
(4) दक्कन के दंगे, बंगाल का स्थायी बंदोबस्त, ईस्ट इंडिया कंपनी के एकाधिकार की समाप्ति, TISCO की स्थापना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

39. दिए गए कथन और कारण के आधार पर सही विकल्प का चयन कीजिए:
कथन (A): ब्रिटिश शासन के तहत 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में अकाल की आवृत्ति और विभीषिका में काफी वृद्धि हुई।
कारण (R): गंभीर अकाल के समय भी, ब्रिटिश प्रशासन अक्सर मुक्त बाजार के सिद्धांतों के आधार पर भारत से खाद्यान्न का निर्यात जारी रखता था।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

40. वर्ष 1900 का पंजाब भूमि हस्तांतरण अधिनियम मुख्य रूप से किस लिए पारित किया गया था?
(1) गैर-कृषि साहूकारों को कृषि भूमि के हस्तांतरण को रोकने के लिए।
(2) यूरोपीय बागान मालिकों को पंजाब क्षेत्र में उपजाऊ कृषि भूखंड खरीदने के लिए कानूनी प्रोत्साहन प्रदान करने के लिए।
(3) पूरे प्रशासनिक प्रांत में रैयतवाड़ी बंदोबस्त के तत्काल कार्यान्वयन को अनिवार्य करने के लिए।
(4) राज्य प्रायोजित सिंचाई परियोजनाओं के माध्यम से वाणिज्यिक नकदी फसलों की व्यापक खेती को प्रोत्साहित करने के लिए।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

41. नील बागान अर्थव्यवस्था के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. निज प्रणाली के तहत, बागान मालिक उन जमीनों पर नील का उत्पादन करता था जिन पर उसका सीधा नियंत्रण होता था।
II. रयती प्रणाली के तहत, बागान मालिकों ने रैयतों को नील की खेती के अनुबंध पर हस्ताक्षर करने के लिए विवश किया।
III. अनुबंध पर हस्ताक्षर करने वाले रैयतों को कम ब्याज दरों पर नकद अग्रिम प्राप्त हुआ जिसने उन्हें ऋण से मुक्त कर दिया।
IV. नील की खेती ने मृदा की उर्वरता को तेजी से समाप्त कर दिया, जिससे वह धान की खेती के लिए अनुपयुक्त हो गई।
V. बागान मालिकों ने नील की खेती सुनिश्चित करने के लिए मुख्य रूप से अनुनय का प्रयोग किया।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II और IV
(2) केवल II, III और V
(3) केवल I, II, IV और V
(4) केवल I, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

42. 1850 के दशक के उत्तरार्ध में बंगाल में यूरोपीय बागान मालिकों द्वारा अपनाए गए शोषणकारी अनुबंधों और जबरदस्ती की प्रथाओं का सबसे प्रत्यक्ष प्रभाव क्या था?
(1) नील विद्रोह का भड़कना
(2) साहूकार वर्ग का पूर्ण उन्मूलन
(3) किसानों के लिए वैधानिक न्यूनतम वेतन की स्थापना
(4) बंगाल को तत्काल राजनीतिक स्वतंत्रता प्रदान करना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

43. निम्नलिखित में से किसने ब्रिटिश शासन के तहत भारतीय उद्योगों के पिछड़ेपन में योगदान नहीं दिया?
(1) औपनिवेशिक प्रशासन द्वारा अपनाई गई भेदभावपूर्ण शुल्क संरचना और व्यापार नीतियां।
(2) भारतीय उद्यमियों के लिए औद्योगिक ऋण और विश्वसनीय वित्तीय संस्थानों की भारी कमी।
(3) आधुनिक तकनीकी और व्यावसायिक स्कूलों के अभाव

ने हस्तशिल्प को नष्ट कर दिया। रेलवे ने भी आयातित माल को सुलभ बनाकर स्थानीय विनिर्माण को हानि पहुँचाई। आधुनिक उद्योगों का उदय बाद की घटना थी।

32. (2) निवेश प्रणाली
निवेश प्रणाली वह तंत्र था जिसके द्वारा ईस्ट इंडिया कंपनी भारत से एकत्रित राजस्व का एक बड़ा भाग भारतीय माल क्रय करने हेतु उपयोग करती थी। इस माल को यूरोप में विक्रय कर भारी लाभ अर्जित किया जाता था। वास्तव में, भारत से निर्यातित सामान के बदले देश को कोई भुगतान प्राप्त नहीं होता था क्योंकि वह भारतीय करदाताओं के धन से ही खरीदा जाता था। इसने बंगाल की अर्थव्यवस्था को खोखला कर दिया।

33. (1) केवल I और II
महलवाड़ी प्रणाली में राजस्व का बंदोबस्त व्यक्तिगत किसानों के स्थान पर पूरे गाँव या 'महल' के साथ किया जाता था। भूमि पर स्वामित्व के अधिकार भी अक्सर ग्रामीण समुदाय में सामूहिक रूप से निहित थे। यद्यपि इस व्यवस्था का उद्देश्य सुधार करना था, किंतु व्यवहार में गाँव के मुखिया ने मध्यस्थ की भूमिका निभानी प्रारंभ कर दी। इससे राज्य और वास्तविक कृषकों के बीच सीधा संबंध स्थापित नहीं हो सका और शोषण निरंतर जारी रहा।

34. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
स्थायी बंदोबस्त में 'सूर्यास्त नियम' एक अत्यंत कठोर प्रावधान था जिसके अंतर्गत निश्चित तिथि तक राजस्व न देने पर जमींदारी नीलाम कर दी जाती थी। इसके कारण पुराने जमींदार परिवार अपनी संपत्ति खो बैठे और उनके स्थान पर शहरी व्यापारियों का अधिपत्य हो गया। ये नए स्वामी गाँवों में नहीं रहते थे और किसानों के कल्याण में उनकी कोई रुचि नहीं थी। इसने 'अनुपस्थित भूस्वामी' वर्ग को जन्म दिया।

35. (3) भारत में बड़े पैमाने पर स्थानीय रोजगार का सृजन और भारी इंजीनियरिंग क्षेत्रों का विकास।
भारत में रेलवे के विकास ने स्थानीय उद्योगों को कोई प्रोत्साहन नहीं दिया क्योंकि इंजन और पटरी जैसी मशीनें ब्रिटेन से आयात की जाती थीं। इससे भारत के भारी अभियांत्रिक क्षेत्र का विकास बाधित रहा। यद्यपि संचालन हेतु कुछ निम्न स्तरीय रोजगार सृजित हुए, किंतु उच्च पदों पर केवल अंग्रेजों का वर्चस्व था। रेलवे ने संसाधनों का उपयोग केवल ब्रिटिश लाभ के लिए किया और देश को केवल एक उपभोक्ता बाजार बनाया।

36. (2) केवल III
ब्रिटिश व्यापार नीति का मुख्य उद्देश्य भारत को कच्चे माल का निर्यातक और तैयार माल का आयातक बनाना था। इसमें कभी भी भारत से विविध औद्योगिक वस्तुओं के निर्यात को प्रोत्साहन नहीं दिया गया। सरकार ने 'साम्राज्यिक वरीयता' के माध्यम से ब्रिटिश वस्तुओं को प्राथमिकता प्रदान की। भारतीय विनिर्माण को हतोत्साहित करने हेतु ब्रिटिश वस्त्रों पर आयात शुल्क हटा दिए गए थे। अतः भारतीय निर्यात केवल कृषि उत्पादों तक ही सीमित रहा।

37. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
ब्रिटिश शासन के दौरान विभिन्न क्षेत्रों को विशिष्ट नकदी फसलों हेतु विकसित किया गया। बंगाल में जूट उद्योग का प्रभुत्व था, जिसने वहाँ की अर्थव्यवस्था को वैश्विक मांग से जोड़ा। महाराष्ट्र के क्षेत्रों में कपास की कृषि व्यापक रूप से की गई ताकि ब्रिटिश मिलों को कच्चा माल मिल सके। असम अपनी चाय हेतु प्रसिद्ध हुआ, जबकि संयुक्त प्रांत का क्षेत्र गन्ना उत्पादन का प्रमुख केंद्र बना। इन फसलों ने ग्रामीण आत्मनिर्भरता को समाप्त किया।

38. (1) बंगाल का स्थायी बंदोबस्त, ईस्ट इंडिया कंपनी के एकाधिकार की समाप्ति, दक्कन के दंगे, TISCO की स्थापना
भारतीय आर्थिक इतिहास की ये घटनाएँ ब्रिटिश प्रभाव के विभिन्न चरणों को दर्शाती हैं। 1793 में स्थायी बंदोबस्त से भू-राजस्व की नई प्रणाली प्रारंभ हुई। इसके पश्चात 1813 के अधिनियम ने कंपनी के व्यापारिक एकाधिकार को समाप्त कर मुक्त व्यापार का मार्ग प्रशस्त किया। 1875 में दक्कन के किसानों ने साहूकारों के शोषण के विरुद्ध विद्रोह किया। अंततः 1907 में टाटा आयरन एंड स्टील कंपनी की स्थापना एक महत्वपूर्ण औद्योगिक सोपान सिद्ध हुई।

39. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
19वीं सदी के अंत में अकालों की भीषणता बढ़ने का मुख्य कारण औपनिवेशिक प्रशासन की असंवेदनशीलता थी। गंभीर अकाल के दौरान भी सरकार ने खाद्यान्न निर्यात पर प्रतिबंध नहीं लगाया क्योंकि वे 'मुक्त व्यापार' की नीतियों के प्रति प्रतिबद्ध थे। इससे स्थानीय बाजारों में अनाज की कमी हो गई और कीमतें निर्धनों की पहुँच से बाहर हो गईं। सरकार की प्राथमिकता केवल राजस्व संग्रह थी, जिससे अकाल राहत कार्य विफल रहे।

40. (1) गैर-कृषि साहूकारों को कृषि भूमि के हस्तांतरण को रोकने के लिए।
1900 का पंजाब भूमि हस्तांतरण अधिनियम ग्रामीण असंतोष को कम करने हेतु पारित किया गया था। पंजाब में किसान ऋणग्रस्त हो रहे थे और उनकी भूमि साहूकारों के पास जा रही थी, जो स्वयं कृषि नहीं करते थे। इससे ग्रामीण समाज में अस्थिरता और ब्रिटिश शासन के विरुद्ध रोष उत्पन्न हो रहा था। इस अधिनियम ने गैर-कृषि जातियों को भूमि विक्रय पर प्रतिबंध लगा दिया ताकि कृषक वर्गों का स्वामित्व सुरक्षित रहे।

41. (1) केवल I, II और IV
नील उत्पादन की निज और रयती प्रणालियाँ अत्यंत दमनकारी थीं। रयती व्यवस्था में किसानों को अनुबंधों पर हस्ताक्षर हेतु विवश किया जाता था और दिए गए अग्रिम धन उन्हें ऋण के जाल में फँसा देते थे। नील की कृषि मृदा की पोषक शक्ति को सोख लेती थी, जिससे भूमि अन्य फसलों हेतु अनुपयुक्त हो जाती थी। बागान मालिकों ने किसानों पर नियंत्रण बनाए रखने हेतु शारीरिक हिंसा और सामाजिक बहिष्कार का सहारा लिया।

Click Here to Buy book on Amazon

सूची I: (कृषि संरचना की शब्दावली)
A. जमींदार
B. रैयत
C. जोतदार
D. महाजन
सूची II: (भूमिका/विवरण)
i. पर्याप्त जोत वाला धनी किसान या मध्यस्थ
ii. साहूकार जो ग्रामीण ऋण प्रदान करता था
iii. राज्य के लिए राजस्व एकत्र करने हेतु उत्तरदायी स्वामी
iv. वास्तविक काश्तकार या किसान
(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(4) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

52. ब्रिटिश शासन के दौरान रेलवे माल ढुलाई दरों की नीति के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) माल ढुलाई संरचना को जानबूझकर प्राथमिक कच्चे माल के तीव्र निर्यात की सुविधा के लिए बनाया गया था।
(2) आंतरिक क्षेत्रों के दूरस्थ बाजारों तक पहुँचने वाले ब्रिटिश औद्योगिक आयातों के लिए परिवहन लागत न्यून रखी गई थी।
(3) रेलवे मूल्य निर्धारण रणनीति ने स्थानीय भारतीय विनिर्माण को क्षति पहुँचाने के लिए एक अप्रत्यक्ष शुल्क के रूप में कार्य किया।
(4) घरेलू उद्योग का समर्थन करने के लिए अंतर्देशीय व्यापार को अधिमान्य दरें प्रदान की गई थीं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

53. ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर कृषि के व्यवसायीकरण के निम्नलिखित प्रभावों पर विचार कीजिए:
I. इसने भारतीय किसान को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों के उतार-चढ़ाव से जोड़ दिया।
II. इसके कारण किसानों के बीच स्तरीकरण बढ़ा, जिससे एक छोटे उच्च वर्ग को लाभ हुआ।
III. इसने भूमिहीन मजदूरों की खाद्य सुरक्षा को काफी बढ़ाया।
IV. इसके परिणामस्वरूप मुख्य खाद्य फसलों की कीमत पर नकदी फसलों का विस्तार हुआ।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, II और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) केवल I, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

54. 19वीं शताब्दी की शुरुआत में भारतीय वस्त्रों पर ब्रिटिश सरकार द्वारा लगाए गए उच्च आयात शुल्क का क्या प्रभाव पड़ा?
(1) ऐसी स्थिति उत्पन्न हुई जहाँ स्थानीय बुनकरों को आधुनिक भाप चालित तकनीक अपनाने के लिए विवश होना पड़ा।
(2) भारतीय माल के लिए ब्रिटिश बाजारों का बंद होना, जिसने वि-औद्योगिकीकरण को तीव्र किया।
(3) यूरोपीय देशों में प्रसंस्कृत भारतीय सूती कपड़ों की अवैध तस्करी में भारी वृद्धि हुई।
(4) ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा विशेष रूप से वैश्विक मसाला व्यापार पर ध्यान केंद्रित करने का रणनीतिक निर्णय लिया गया।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

55. वर्ष 1900 के मैकडोनेल आयोग ने अकाल प्रशासन के लिए निम्नलिखित में से किस उपाय की अनुशंसा की थी?
(1) सरकारी राजस्व बचाने के लिए सभी सरकारी वित्तपोषित राहत कार्यक्रमों को पूर्णतः बंद करना।
(2) खाद्यान्न की कमी के बावजूद अहस्तक्षेप के आर्थिक सिद्धांतों का कड़ाई से अनुपालन करना।
(3) सभी अकाल राहत प्रयासों को स्थायी रूप से विदेशी धार्मिक संगठनों को सौंपना।
(4) पूर्व अनुमान और त्वरित राहत की एक 'नैतिक रणनीति', जिसमें राजस्व स्थगन भी सम्मिलित है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

56. ब्रिटिश शासन के तहत किसान ऋणग्रस्तता के प्राथमिक कारणों में से असंगत विकल्प की पहचान कीजिए।
(1) राज्य सहकारी बैंकों से कम ब्याज वाले ऋण की व्यापक उपलब्धता।
(2) औपनिवेशिक राज्य द्वारा कठोर और अत्यधिक उच्च भू-राजस्व मांगों का लागू होना।
(3) एक नए कानूनी ढांचे की शुरुआत जिसने साहूकारों के अधिकारों को प्राथमिकता दी।
(4) कृषि क्षेत्र का व्यवसायीकरण जिसके लिए अग्रिम नकद निवेश की आवश्यकता थी।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

57. नील विद्रोह की विशेषताओं और उसके परिणामों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. बागान मालिकों ने किसानों को विवश करने के लिए 'लठियाल' कहे जाने वाले सशस्त्र कर्मियों का प्रयोग किया।
II. सरकार ने प्रणाली की जांच के लिए 1860 में 'नील आयोग' नियुक्त किया।
III. नील आयोग ने बागान मालिकों को सभी गलत कार्यों से पूरी तरह दोषमुक्त कर दिया।
IV. विद्रोह के बाद, बंगाल से नील की खेती लगभग समाप्त हो गई।
V. बंगाल विद्रोह के बाद बागान मालिकों ने अपना कार्य बिहार स्थानांतरित कर दिया।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II, IV और V

Downloaded from www.pdf.tube

वैश्विक बाजारों में उच्च मांग थी। असम के चाय बागानों में कार्यरत श्रमिकों की स्थिति अत्यंत दयनीय थी और उनके अनुबंध शोषणकारी थे। यह प्रणाली भारतीय आवश्यकताओं के स्थान पर पूर्णतः विदेशी व्यापारिक हितों के अनुकूल थी।

11. (4) दिगंबर विश्वास और बिष्णुचरण विश्वास
1859-60 का नील विद्रोह बंगाल के किसानों द्वारा यूरोपीय बागान मालिकों के अत्याचारों के विरुद्ध एक सशक्त आंदोलन था। इसका नेतृत्व दिगंबर विश्वास और बिष्णुचरण विश्वास ने नादिया जिले से किया। किसानों ने नील की कृषि करने से इनकार कर दिया और बागान मालिकों के दमन का साहसपूर्वक सामना किया। इस आंदोलन की सफलता ने ब्रिटिश सरकार को नील आयोग नियुक्त करने हेतु विवश कर दिया था।

12. (2) नवजात भारतीय उद्योगों की रक्षा के लिए उच्च शुल्क बाधाओं का कार्यान्वयन
1920 के दशक से पूर्व ब्रिटिश औद्योगिक नीति भारतीय उद्यमों के प्रति उदासीन और शत्रुतापूर्ण रही। सरकार ने कभी भी नवजात भारतीय उद्योगों को ब्रिटिश आयात से बचाने हेतु सुरक्षात्मक शुल्क नहीं लगाए। इसके विपरीत, तकनीकी शिक्षा और ऋण सुविधाओं का निरंतर अभाव बना रहा। सरकारी क्रय भी मुख्यतः ब्रिटिश कंपनियों से ही किया जाता था। संरक्षण के अभाव में भारतीय पूंजीपति केवल सीमित क्षेत्रों में पनपे।

13. (2) केवल I, III और IV
टाटा आयरन एंड स्टील कंपनी की स्थापना 1907 में जमशेदजी टाटा के प्रयासों से हुई थी। यह स्वदेशी आंदोलन के दौरान भारतीय आत्मनिर्भरता और उद्यमिता के प्रतीक के रूप में उभरी। इसकी पूंजी पूर्णतः भारतीय निवेशकों द्वारा प्रदान की गई थी। यद्यपि इसे प्रारंभ में कोई विशेष शुल्क संरक्षण नहीं मिला, किंतु प्रथम विश्व युद्ध के दौरान सैन्य आवश्यकताओं के कारण इसकी उत्पादन क्षमता में भारी वृद्धि हुई।

14. (4) भारतीय प्रशासन की ओर से भारत सचिव द्वारा लंदन में किए गए खर्च।
'गृह प्रभार' ब्रिटिश भारत के व्यय का वह भाग था जो लंदन में भारत सचिव के कार्यालय संचालन हेतु भेजा जाता था। इसमें ब्रिटिश अधिकारियों की पेंशन, भारत सरकार द्वारा लिए गए विदेशी ऋण पर ब्याज और ब्रिटेन में क्रय की गई सैन्य सामग्री का भुगतान सम्मिलित था। यह धन निकासी का आधिकारिक माध्यम था, जिससे राष्ट्रीय आय का बड़ा भाग बिना किसी प्रत्यक्ष लाभ के बाहर चला जाता था।

15. (1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
प्रारंभिक राष्ट्रवादी विचारकों ने ब्रिटिश आर्थिक नीतियों की गहन आलोचना की। दादाभाई नौरोजी ने निर्धनता के कारणों का विश्लेषण किया, जबकि रोमेश चंद्र दत्त ने आर्थिक इतिहास पर विस्तार से लिखा। महादेव गोविंद रानाडे ने भारतीय अर्थव्यवस्था के विभिन्न पक्षों पर निबंध प्रस्तुत किए और जी. वी. जोशी ने सांख्यिकीय आंकड़ों से कृषि संकट को उजागर किया। इन विद्वानों ने सिद्ध किया कि ब्रिटिश शासन ही भारतीय निर्धनता हेतु उत्तरदायी था।

16. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
भारत में रेलवे के विस्तार ने वि-औद्योगिकीकरण की प्रक्रिया को तीव्र किया क्योंकि इसने ब्रिटिश माल के परिवहन को सुलभ बनाया। मशीनों से निर्मित सस्ते ब्रिटिश उत्पाद रेलवे के माध्यम से सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुँच गए, जिसका सामना पारंपरिक कारीगर नहीं कर सके। इस तीव्र प्रतिस्पर्धा के कारण स्थानीय हस्तशिल्प और कुटीर उद्योग नष्ट हो गए। अतः रेलवे ने भारतीय आर्थिक ढांचे को औपनिवेशिक हितों के अनुकूल बदल दिया।

17. (2) II, I, IV, III
ब्रिटिश राजस्व नीतियों का विकास एक क्रमिक प्रक्रिया थी। सर्वप्रथम वारेन हेस्टिंग्स ने पंचवर्षीय बंदोबस्त के प्रयोग किए। इसके पश्चात 1793 में लॉर्ड कॉर्नवालिस ने बंगाल में स्थायी बंदोबस्त लागू किया। 19वीं शताब्दी के प्रारंभ में थॉमस मुनरो ने मद्रास में रैयतवाड़ी प्रणाली प्रारंभ की, जहाँ राजस्व निर्धारण सीधे किसानों के साथ हुआ। अंततः 1833 के आसपास महलवाड़ी प्रणाली को उत्तर-पश्चिम प्रांतों में व्यवस्थित रूप प्रदान किया गया।

18. (1) बिना किसी भौतिक या वित्तीय मुआवजे के भारत से ब्रिटेन को माल का हस्तांतरण।
प्रतिफल रहित निर्यात की अवधारणा यह दर्शाती है कि भारत से भारी मात्रा में वस्तुओं का निर्यात हुआ, जिसके बदले देश को कोई वास्तविक आर्थिक लाभ प्राप्त नहीं हुआ। यह निकासी मुख्य रूप से गृह प्रभार और ब्रिटिश अधिकारियों के धन प्रेषण के रूप में थी। इस प्रक्रिया ने भारतीय अधिशेष को देश में निवेश करने के बजाय ब्रिटेन की औद्योगिक समृद्धि में योगदान दिया, जिससे भारत में पूंजी अभाव बढ़ा।

19. (3) भूमि पर किसानों के पारंपरिक अधिकारों को कड़ाई से संरक्षित और दर्ज किया गया था।
स्थायी बंदोबस्त ने जमींदारों को भूमि का पूर्ण स्वामी बनाकर किसानों की स्थिति अत्यंत दयनीय कर दी। इस व्यवस्था में किसानों के पारंपरिक अधिकारों की पूर्णतः उपेक्षा की गई और उन्हें जमींदारों की दया पर आश्रित काश्तकार बना दिया गया। राजस्व की उच्च मांग के कारण जमींदार अक्सर किसानों का उत्पीड़न करते थे। यद्यपि राजस्व निश्चित था, किंतु किसानों की बेदखली रोकने हेतु कोई विधिक सुरक्षा नहीं थी।

20. (3) केवल I और III
भारत में रेलवे निर्माण के पीछे ब्रिटिश प्रशासन के दो प्रमुख रणनीतिक उद्देश्य थे। प्रथम, सेना को विद्रोह प्रभावित क्षेत्रों में शीघ्र भेजकर आंतरिक सुरक्षा सुदृढ़ करना। द्वितीय, भारत के भीतरी बाजारों को ब्रिटिश औद्योगिक उत्पादों हेतु खोलना और कच्चे माल का निर्यात सुगम बनाना। ब्रिटिश सरकार का उद्देश्य कभी भी भारत का समग्र विकास करना नहीं था। रेलवे का ढांचा केवल औपनिवेशिक व्यापारिक हितों की ही पूर्ति करता था।

21. (3) 1813 का चार्टर एक्ट
1813 के चार्टर अधिनियम ने भारत के साथ व्यापार पर ईस्ट इंडिया कंपनी के एकाधिकार को समाप्त कर दिया। इसके

NODIA

(4) इसे मुख्य रूप से उत्तर-पश्चिमी प्रांतों, मध्य भारत के कुछ हिस्सों और पंजाब में लागू किया गया था।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

66. बंगाल में स्थायी बंदोबस्त के सामाजिक-आर्थिक प्रभाव के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।
(1) उप-सामंतीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से बिचौलियों की कई परतों का निर्माण हुआ।
(2) रैयतों के पारंपरिक अधिकारों को मनमाने ढंग से बेदखली के विरुद्ध कानूनी संरक्षण प्राप्त हुआ।
(3) जमींदारों को अपने लाभ को कृषि के तकनीकी आधुनिकीकरण में निवेश करने के लिए प्रोत्साहन मिला।
(4) राज्य के नेतृत्व वाली ग्रामीण बैंकिंग के माध्यम से पारंपरिक ग्रामीण साहूकार वर्ग का पूर्ण उन्मूलन हुआ।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

67. भारत में रेलवे नेटवर्क के विस्तार में अंग्रेजों के प्राथमिक उद्देश्यों में से असंगत विकल्प की पहचान कीजिए।
(1) आंतरिक विद्रोहों को दबाने के लिए सैनिकों की त्वरित आवाजाही सुनिश्चित करना।
(2) प्रमुख बंदरगाहों को कच्चे माल उत्पादक आंतरिक क्षेत्रों से जोड़ना।
(3) भारत के भीतर औद्योगिक विकास में क्षेत्रीय असमानताओं को दूर करना।
(4) ब्रिटिश निर्मित वस्तुओं की खपत के लिए एक विशाल एकीकृत बाजार बनाना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

68. निम्नलिखित में से कौन सा तथ्य यह स्पष्ट करता है कि अंग्रेजों ने भारत में कृषि के व्यवसायीकरण को क्यों प्रोत्साहित किया?
(1) पूरे भारत में भूमिहीन कृषि श्रमिकों की सामाजिक और आर्थिक स्थिति में सुधार के लिए।
(2) भविष्य के क्षेत्रीय अकालों को रोकने के लिए मुख्य खाद्य फसलों के घरेलू उत्पादन को बढ़ाने के लिए।
(3) स्थानीय भारतीय ग्रामीण समुदायों और बाजारों की पारंपरिक आत्मनिर्भरता बनाए रखने के लिए।
(4) ब्रिटिश उद्योगों के लिए कच्चे माल की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

69. 1870 और 1880 के दशक में सूती आयात शुल्क को समाप्त करने के विवाद ने मुख्य रूप से क्या उजागर किया?
(1) भारतीय सूती मिलों के विकास की रक्षा के लिए औपनिवेशिक सरकार की प्रतिबद्धता।
(2) वायसराय के आर्थिक एजेंडे को निर्देशित करने की स्वदेशी आंदोलन की क्षमता।
(3) ब्रिटिश नीति पर लंकाशायर और मैनचेस्टर के कपड़ा उद्योग के हितों का प्रभाव।
(4) लंदन के अधिकारियों से भारत सरकार की पूर्ण प्रशासनिक स्वतंत्रता।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

70. अकालों के प्रति ब्रिटिश प्रतिक्रिया के संबंध में दिए गए कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
कथन I: अकालों के प्रति औपनिवेशिक राज्य की प्रारंभिक प्रतिक्रिया अहस्तक्षेप के आर्थिक सिद्धांत से गहराई से प्रभावित थी।
कथन II: 1883 के अकाल संहिता ने शेष ब्रिटिश शासन के लिए भारत में अकालों को पूर्णतः समाप्त कर दिया।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

71. संथाल विद्रोह (1855-56) एक प्रमुख आदिवासी-किसान विद्रोह था। इसका प्राथमिक आर्थिक कारण क्या था?
(1) ब्रिटिश भारतीय सेना की इकाइयों में आदिवासी संथालों की अनिवार्य भर्ती।
(2) संथाल परगना क्षेत्र के भीतर रैयतवाड़ी भू-राजस्व बंदोबस्त का कार्यान्वयन।
(3) बागान मालिकों की देखरेख में अफीम की फसलों की जबरन खेती।
(4) जमींदारों और साहूकारों द्वारा उत्पीड़न तथा भूमि से बेदखली।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

72. बागान अर्थव्यवस्था और वाणिज्यिक वानिकी के विकास ने आदिवासी समुदायों को सीधे कैसे प्रभावित किया?
(1) वनों की घेराबंदी और पारंपरिक अधिकारों के प्रतिबंध के कारण आजीविका की हानि।
(2) प्रतिस्पर्धी वेतन के साथ औद्योगिक कार्यबल में आदिवासियों का एकीकरण।
(3) आधुनिक वन प्रबंधन के क्षेत्र में विशिष्ट तकनीकी शिक्षा का प्रावधान।
(4) पैतृक आदिवासी वन भूमि पर पूर्ण स्वामित्व अधिकारों की कानूनी मान्यता।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

73. नाटक 'नील दर्पण' के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।
(1) यह विशेष रूप से स्वदेशी आंदोलन को प्रेरित करने के लिए लिखा गया एक क्रांतिकारी कार्य था।
(2) यह औपनिवेशिक नील उद्योग की लाभप्रदता पर एक औपचारिक प्रशासनिक रिपोर्ट थी।
(3) इसमें नील किसानों के उत्पीड़न का यथार्थवादी चित्रण किया गया था।
(4) यह सरकार की सामान्य औद्योगिक नीति की आलोचना के कारण प्रतिबंधित नाटक था।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Click Here to Buy book on Amazon

(2) केवल I, II, III और V
(3) केवल II, III, IV और V
(4) केवल I, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

58. 'तिनकठिया' प्रणाली, जिसने किसानों को अपनी भूमि के एक निश्चित भाग पर एक विशिष्ट फसल उगाने के लिए विवश किया, मुख्य रूप से किस फसल से संबंधित थी?
(1) नील
(2) चाय
(3) कॉफी
(4) रबर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

59. "विवेकाधीन संरक्षण" की ब्रिटिश औद्योगिक नीति के संबंध में दिए गए कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
कथन I: इसने कुछ भारतीय उद्योगों को शुल्क संरक्षण प्रदान किया लेकिन अत्यंत कठोर शर्तों के अधीन।
कथन II: यह नीति मुख्य रूप से स्वदेशी उद्योगों को ब्रिटिश आयात के विरुद्ध पूर्ण सुरक्षा देने के लिए बनाई गई थी।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

60. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर का चयन कीजिए:
सूची I: (प्रारंभिक आधुनिक उद्योग)
A. पहली सूती मिल (1853/54)
B. पहली जूट मिल (1855)
C. पहला लोहा और इस्पात संयंत्र (आधुनिक प्रयास)
D. पहली पेपर मिल
सूची II: (प्रथम प्रमुख मिल/कारखाने का स्थान)
i. रिशरा (बंगाल)
ii. बॉम्बे
iii. सेरामपुर
iv. कुल्टी / बराकर
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

61. निम्नलिखित में से कौन सा घटक भारत से ब्रिटेन भेजे जाने वाले 'गृह प्रभार' का हिस्सा नहीं था?
(1) सार्वजनिक ऋण पर देय ब्याज भुगतान जो लंदन बाजार में जुटाया गया था।
(2) इंग्लैंड में ब्रिटिश फर्मों द्वारा निर्मित सैन्य उपकरणों और भंडार की खरीद लागत।
(3) ब्रिटिश घरेलू उद्योगों में भारत सरकार का निवेश।
(4) ब्रिटेन में भुगतान किए जाने वाले ब्रिटिश अधिकारियों के पेंशन और अवकाश भत्ते।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

62. प्रारंभिक राष्ट्रवादी आलोचना के बारे में दिए गए कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
कथन I: प्रारंभिक राष्ट्रवादियों ने किसी भी परिस्थिति में भारत में विदेशी पूंजी के प्रवेश का पूर्ण विरोध किया।
कथन II: उनका मानना था कि विदेशी पूंजी ने स्वदेशी पूंजी को प्रतिस्थापित किया और देश को राजनीतिक रूप से अधीन बनाए रखा।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

63. वि-औद्योगिकीकरण की प्रक्रिया के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) ब्रिटिश औपनिवेशिक राज्य ने विस्थापित शिल्पकारों को पुनः प्रशिक्षित करने के लिए आधुनिक तकनीक को सक्रिय रूप से पेश किया।
(2) इसके परिणामस्वरूप जनसंख्या का उद्योग से कृषि की ओर भारी विस्थापन हुआ।
(3) इसके कारण कृषि और घरेलू उद्योग के बीच पारंपरिक समन्वय का विनाश हुआ।
(4) स्वदेशी राजदरबारों के पतन ने विलासिता के हस्तशिल्प के प्राथमिक उपभोक्ताओं को समाप्त कर दिया।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

64. भारतीय अर्थव्यवस्था पर 'धन के बहिर्गमन' (Drain of Wealth) का प्राथमिक समष्टि आर्थिक प्रभाव क्या था?
(1) चांदी की अतिरिक्त आपूर्ति के कारण इसने अति-मुद्रास्फीति उत्पन्न की।
(2) इसने घरेलू पूंजी निर्माण और आर्थिक विकास को गंभीर रूप से बाधित किया।
(3) इसने भारत और यूरोपीय देशों के बीच व्यापार घाटे को संतुलित किया।
(4) इसके कारण भारतीय किसानों की प्रति व्यक्ति आय में अभूतपूर्व वृद्धि हुई।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

65. भू-राजस्व की महलवाड़ी प्रणाली की निम्नलिखित में से कौन सी विशेषता नहीं है?
(1) राजस्व को स्थायी रूप से निर्धारित करने के बजाय समय-समय पर संशोधित किया जाता था।
(2) व्यक्तिगत किसानों की राजस्व हिस्सेदारी के लिए कोई व्यक्तिगत उत्तरदायित्व नहीं था।
(3) बंदोबस्त गांव के मुखिया या सह-साझेदारों के निकाय के साथ किया गया था।

NODIA

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) पारंपरिक भारतीय हस्तशिल्प और कारीगर उद्योगों का व्यवस्थित विनाश
वि-औद्योगिकीकरण का अर्थ पारंपरिक हस्तशिल्प उद्योगों का क्रमिक पतन है। ब्रिटेन की औद्योगिक क्रांति के उपरांत वहां निर्मित सस्ते वस्त्रों ने भारतीय बाजारों पर अधिपत्य जमा लिया, जिससे स्थानीय बुनकर रोजगारविहीन हो गए। साथ ही, औपनिवेशिक शासन ने भारतीय निर्यात पर भारी शुल्क लगाया जबकि ब्रिटिश आयात को शुल्क मुक्त रखा। इस भेदभावपूर्ण नीति ने भारतीय कारीगरी को पूर्णतः नष्ट करके अर्थव्यवस्था को पंगु बना दिया।

2. (1) केवल I और II
दादाभाई नौरोजी ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक में स्पष्ट किया कि भारत की निर्धनता का मूल कारण संसाधनों का ब्रिटेन की ओर निरंतर प्रवाह था। 'गृह प्रभार' इस धन निकासी का अनिवार्य भाग था, जिसमें प्रशासनिक और सैन्य व्यय सम्मिलित थे। इस प्रक्रिया ने भारत में पूंजी संचय और औद्योगिक विकास को बाधित किया, जिससे देश की आर्थिक प्रगति और विकास की संभावनाओं पर अत्यंत प्रतिकूल प्रभाव पड़ा।

3. (3) लॉर्ड कॉर्नवालिस
वर्ष 1793 में गवर्नर-जनरल लॉर्ड कॉर्नवालिस द्वारा बंगाल में लागू स्थायी बंदोबस्त प्रणाली ने राजस्व संग्रह में स्थिरता लाने का प्रयास किया। इसके अंतर्गत जमींदारों को भूमि का वास्तविक स्वामी स्वीकार किया गया और सरकार का राजस्व भाग सदैव के लिए निश्चित कर दिया गया। इस व्यवस्था का मुख्य उद्देश्य एक वफादार जमींदार वर्ग निर्मित करना था, जो ग्रामीण क्षेत्रों में ब्रिटिश सत्ता के आधार स्तंभ बनें।

4. (1) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
भारत में विभिन्न भू-राजस्व प्रणालियाँ अलग-अलग क्षेत्रों में क्रियान्वित थीं। स्थायी बंदोबस्त मुख्य रूप से बंगाल और बिहार में प्रचलित था। रैयतवाड़ी प्रणाली थॉमस मुनरो द्वारा मद्रास में विकसित की गई, जहाँ किसानों से सीधा संपर्क साधा गया। महलवाड़ी प्रणाली उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में अपनाई गई, जबकि मालगुज़ारी व्यवस्था मध्य प्रांत से संबंधित थी। इन सभी प्रणालियों का लक्ष्य केवल अधिकतम राजस्व संग्रह सुनिश्चित करना था।

5. (4) A गलत है लेकिन R सही है।
भारत में रेलवे के विस्तार का वास्तविक उद्देश्य भारतीय अर्थव्यवस्था का विकास नहीं, बल्कि ब्रिटिश साम्राज्य के हितों की सुरक्षा था। इसने सैन्य टुकड़ियों की तीव्र आवाजाही और आंतरिक क्षेत्रों से कच्चे माल को बंदरगाहों तक पहुँचाने में सहायता की। इससे ब्रिटिश निर्मित माल को सुदूर भारतीय बाजारों तक पहुँचाना सुलभ हो गया। अतः रेलवे औपनिवेशिक शोषण का एक शक्तिशाली साधन सिद्ध हुई, न कि विकास का।

6. (2) एकतरफा मुक्त व्यापार नीति जिसने भारतीय निर्यात पर उच्च कर लगाते हुए शुल्क-मुक्त ब्रिटिश आयात की अनुमति दी।
उन्नीसवीं शताब्दी की ब्रिटिश व्यापार नीति पूर्णतः ब्रिटेन के औद्योगिक हितों की पूर्ति हेतु निर्मित थी। भारतीय बाजारों को ब्रिटिश निर्मित वस्त्रों के लिए बिना किसी आयात शुल्क के खोल दिया गया, जिससे स्थानीय उद्योगों की नींव हिल गई। दूसरी ओर, भारतीय वस्तुओं पर ब्रिटेन में प्रवेश हेतु अत्यंत उच्च शुल्क लगाए गए। इस भेदभावपूर्ण नीति ने भारतीय विनिर्माण को वैश्विक और घरेलू बाजारों में पिछाड़ दिया।

7. (4) किसानों के लिए भू-राजस्व की अत्यधिक मांगों का नकद में भुगतान करने की अनिवार्यता
कृषि के व्यवसायीकरण का मुख्य कारण औपनिवेशिक राजस्व नीति थी, जिसने नकद भुगतान पर अत्यधिक बल दिया। किसानों को ऊँचे लगान चुकाने हेतु बाजार में बिकने वाली नकदी फसलों जैसे नील, जूट और कपास को उगाने हेतु विवश होना पड़ा। इससे किसानों की स्वयं की खाद्य सुरक्षा संकट में पड़ गई और वे ऋण के दुष्चक्र में फँस गए। इस प्रक्रिया ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को असुरक्षित बनाया।

8. (1) कैंपबेल आयोग, स्ट्रेची आयोग, लायल आयोग, मैकडोनेल आयोग
ब्रिटिश काल में अकालों की विभीषिका को देखते हुए समय-समय पर विभिन्न अकाल आयोगों का गठन किया गया। सर्वप्रथम 1866 में कैंपबेल आयोग बना, जिसके पश्चात 1880 में स्ट्रेची आयोग ने अकाल संहिता की नींव रखी। इसके उपरांत 1897 में लायल आयोग और 1900 में लॉर्ड कर्जन के समय मैकडोनेल आयोग गठित हुआ। इन आयोगों का मुख्य उद्देश्य राहत कार्यों और राजस्व नीतियों की समीक्षा करना था।

9. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
ब्रिटिश शासन ने भारतीय कृषि में भूमि को एक हस्तांतरणीय वस्तु बना दिया, जिससे ग्रामीण ऋणग्रस्तता का स्वरुप बदल गया। नई विधिक प्रणाली ने साहूकारों को अधिकार दिया कि वे ऋण न चुकाने पर किसानों की भूमि जब्त कर सकें। इससे पूर्व, पारंपरिक समाज में भूमि का बाहरी व्यक्तियों को हस्तांतरण अत्यंत प्रतिबंधित था। इन परिवर्तनों के कारण लाखों किसान अपनी ही भूमि पर बटाईदार बन गए।

10. (2) केवल II और IV
भारत में बागान अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से यूरोपीय पूंजीपतियों द्वारा निर्यात हेतु स्थापित की गई थी। इसमें नील, चाय और कॉफी जैसी फसलों पर ध्यान केंद्रित किया गया जिनकी

Downloaded from www.pdf.tube

के परिणामस्वरुप कुशल श्रम की कमी।
(4) पारंपरिक कारीगरों को प्रदान की गई बड़े पैमाने पर सरकारी सब्सिडी और वित्तीय अनुदान।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

44. टाटा आयरन एंड स्टील कंपनी (TISCO) की स्थापना किस वर्ष हुई थी?
(1) 1895
(2) 1907
(3) 1914
(4) 1921
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

45. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर का चयन कीजिए:
सूची I: (वित्तीय शोषण से संबंधित शब्दावली)
A. गारंटीशुदा ब्याज
B. साम्राज्यिक वरीयता
C. गृह प्रभार
D. एजेंसी हाउस
सूची II: (विवरण)
i. भारत में प्रवेश करने वाले ब्रिटिश सामानों के लिए निम्न आयात शुल्क
ii. भारत में विदेशी पूंजी का प्रबंधन करने वाली प्रारंभिक व्यापारिक फर्में
iii. लंदन में भारत सचिव के कार्यालय के व्यय
iv. ब्रिटिश रेलवे निवेशकों को प्रदान की गई निश्चित न्यूनतम वापसी
(1) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(2) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(3) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

46. प्रारंभिक भारतीय राष्ट्रवादी आर्थिक आलोचना के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।
(1) इसने तर्क दिया कि भारतीय निर्धनता अंतर्निहित सांस्कृतिक पिछड़ेपन और अधिक जनसंख्या का परिणाम थी।
(2) इसने माना कि ब्रिटिश शासन ने भारत में सुदृढ़ औद्योगिक विकास की नींव रखी थी।
(3) इसने ब्रिटिश सरकार द्वारा लागू की गई मुक्त व्यापार नीति का पुरजोर समर्थन किया।
(4) इसने भारतीय उद्योगों के संरक्षण और विकास के लिए राज्य की शक्ति के सक्रिय उपयोग की मांग की।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

47. आर्थिक बहिर्गमन और राष्ट्रवादी प्रतिक्रिया से संबंधित निम्नलिखित घटनाओं पर विचार कीजिए। निम्नलिखित में से कौन सा सही कालानुक्रमिक क्रम है?
I. 'पॉवर्टी एंड अन-ब्रिटिश रुल इन इंडिया' का प्रकाशन
II. भारतीय व्यय पर वेल्बी आयोग का गठन
III. नौरोजी द्वारा बहिर्गमन सिद्धांत की पहली सार्वजनिक अभिव्यक्ति
IV. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा स्वदेशी प्रस्ताव को अपनाना
निम्नलिखित में से कौन सा क्रम सही है?
(1) III, I, II, IV
(2) III, II, I, IV
(3) I, III, II, IV
(4) II, III, I, IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

48. वि-शहरीकरण, वि-औद्योगिकीकरण का एक प्रत्यक्ष परिणाम था। निम्नलिखित में से किन पारंपरिक विनिर्माण केंद्रों को इस अवधि के दौरान भारी गिरावट का सामना करना पड़ा?
(1) बॉम्बे और कलकत्ता
(2) मुर्शिदाबाद और ढाका
(3) मद्रास और कराची
(4) कानपुर और अहमदाबाद
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

49. धन के बहिर्गमन की विशेषताओं के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. बहिर्गमन अनिवार्य रूप से भारत से ब्रिटेन को सामाजिक अधिशेष का एकतरफा हस्तांतरण था।
II. इसमें आधिकारिक प्रशासनिक बहिर्गमन और निजी वाणिज्यिक बहिर्गमन दोनों शामिल थे।
III. इसने भारत में आधुनिक तकनीक और प्रबंधन प्रथाओं के समान हस्तांतरण की सुविधा प्रदान की।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

50. रैयतवाड़ी बंदोबस्त मूल रुप से स्वतंत्र किसान मालिकों का एक वर्ग बनाने के लिए था, फिर भी यह काफी हद तक भू-स्वामित्ववाद को समाप्त करने में विफल रहा क्योंकि:
(1) उच्च राजस्व मांगों और ऋण के कारण भूमि साहूकारों के नियंत्रण में चली गई।
(2) ब्रिटिश प्रशासन ने स्वेच्छा से पूर्व जमींदारों को भूमि के सभी मालिकाना हक वापस करने का निर्णय लिया।
(3) पूरी रैयतवाड़ी प्रणाली को इसकी शुरुआत के कुछ समय बाद सरकार द्वारा कानूनी रुप से समाप्त कर दिया गया था।
(4) किसान समूहों ने बड़े पैमाने पर सहकारी समितियां बनाईं और आवंटित भूमि पर खेती करने से इनकार कर दिया।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

51. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर का चयन कीजिए:

NODIA

पश्चात चाय और चीन के साथ व्यापार को छोड़कर, भारतीय बाजार सभी ब्रिटिश व्यापारियों हेतु खोल दिए गए। यह परिवर्तन ब्रिटेन की औद्योगिक क्रांति के दबाव का परिणाम था, जहाँ कारखाना स्वामियों को नए बाजारों की आवश्यकता थी। इस कदम ने भारत में ब्रिटिश निर्मित वस्तुओं के प्रवेश को और तीव्र किया।

22. (2) खाद्य फसलों की खेती में कमी, जिसने व्यापक अकाल के प्रभाव को और अधिक विनाशकारी बना दिया।
कृषि के व्यवसायीकरण के कारण किसानों ने खाद्यान्न के स्थान पर कपास और नील जैसी नकदी फसलों को वरीयता दी। परिणामस्वरूप, भीषण सूखे के समय देश में पर्याप्त खाद्यान्न भंडार नहीं बचा। इसने अकालों की विभीषिका बढ़ा दी और लाखों लोग भुखमरी के शिकार हुए। किसानों की बाजार पर निर्भरता बढ़ी, किंतु उनकी आय में कोई सुधार नहीं हुआ, बल्कि वे ऋण के जाल में और अधिक फँसते चले गए।

23. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
औपनिवेशिक काल के दौरान भारत में कई विनाशकारी अकाल पड़े। 1770 का बंगाल अकाल प्रथम बड़ा संकट था जिसने भारी जनसंख्या को प्रभावित किया। इसके पश्चात 1866 में उड़ीसा और 1876-78 के दौरान दक्षिण भारत में भीषण अकाल पड़े, जहाँ सरकारी सहायता अपर्याप्त रही। लॉर्ड कर्जन के कार्यकाल में 1899-1900 का अकाल भी अत्यंत घातक सिद्ध हुआ। ये घटनाएँ ब्रिटिश आर्थिक नीतियों और कृषि संकट को उजागर करती हैं।

24. (1) मारवाड़ी और गुजराती साहूकार
1875 के दक्कन दंगे पुणे और अहमदनगर के किसानों द्वारा साहूकारों के विरुद्ध किया गया विद्रोह था। उच्च भू-राजस्व और ऋण के बोझ तले दबे किसान साहूकारों के विधिक उत्पीड़न से त्रस्त थे। विद्रोहियों ने विशेष रूप से साहूकारों के ऋण पत्रों और बहीखातों को जला दिया। यह विद्रोह दर्शाता है कि औपनिवेशिक राजस्व और विधिक प्रणाली ने ग्रामीण भारत में एक नए और अत्यंत शोषणकारी मध्यस्थ वर्ग को जन्म दिया था।

25. (2) केवल I, III और IV
बागान अर्थव्यवस्था में नील और चाय की कृषि शोषणकारी प्रणालियों पर आधारित थी। नील की कृषि हेतु किसानों को अग्रिम नकद राशि देकर अनुबंधों में बाँधा जाता था। चाय के बागान मुख्य रूप से असम में केंद्रित थे। बागान मालिकों को औपनिवेशिक सरकार का पूर्ण समर्थन प्राप्त था, जिससे वे श्रमिकों का दमन कर सके। 19वीं सदी के अंत में कृत्रिम रंगों के आविष्कार ने प्राकृतिक नील की मांग घटा दी थी।

26. (1) इस आंदोलन को बंगाली मध्यम वर्ग के बुद्धिजीवियों और समाचार पत्रों का सक्रिय समर्थन मिला।
नील विद्रोह एक अनूठा आंदोलन था जिसे शिक्षित मध्यम वर्ग का व्यापक सहयोग प्राप्त हुआ। बुद्धिजीवियों ने लेखों और नाटकों के माध्यम से किसानों की दुर्दशा को उजागर किया। हरिश्चंद्र मुखर्जी जैसे पत्रकारों ने समाचार पत्रों में बागान मालिकों के अत्याचारों का निरंतर विरोध किया। इस सामाजिक समर्थन ने विद्रोह को व्यापक राजनीतिक स्वरूप प्रदान किया, जिसके कारण सरकार को झुकना पड़ा और अपनी दमनकारी नीतियों की समीक्षा करनी पड़ी।

27. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
प्रथम विश्व युद्ध से पूर्व तक ब्रिटिश नीति भारत में किसी भी आधुनिक औद्योगिक विकास को रोकने की थी। औपनिवेशिक सत्ता चाहती थी कि भारत केवल कच्चे माल का उत्पादन करे ताकि ब्रिटेन के कारखानों को रसद प्राप्त होती रहे। साथ ही, भारत को ब्रिटिश तैयार माल हेतु एक सुरक्षित बाजार के रूप में आरक्षित रखा गया। उद्योगों हेतु कोई वित्तीय या तकनीकी सहायता नहीं दी गई, जिससे अर्थव्यवस्था पिछड़ी रही।

28. (2) राष्ट्रवादी स्वदेशी भावना और स्थानीय भारतीय निवेशकों द्वारा प्रदान किया गया पूंजीगत समर्थन।
औपनिवेशिक सरकार की उदासीनता के उपरांत भी टाटा आयरन एंड स्टील कंपनी की सफलता में स्वदेशी आंदोलन का बड़ा योगदान था। ब्रिटिश वस्तुओं के बहिष्कार और स्वदेशी उत्पादों के प्रति बढ़ते सम्मान ने स्थानीय निवेशकों को प्रोत्साहित किया। जमशेदजी टाटा को आवश्यक पूंजी ब्रिटिश बैंकों के स्थान पर भारतीय पूंजीपतियों और आम जनता के अंशदान से प्राप्त हुई। यह सफलता सिद्ध करती है कि राष्ट्रवाद ने औद्योगिक विकास को आधार दिया।

29. (1) केवल I, II, IV और V
'गृह प्रभार' धन के बहिर्गमन का एक तंत्र था जिसमें ब्रिटिश प्रशासन के विभिन्न व्यय सम्मिलित थे। इसमें लंदन स्थित भारत सचिव के कार्यालय का व्यय, सेवानिवृत्त अधिकारियों की पेंशन और विदेशी ऋण का ब्याज प्रमुख थे। ईस्ट इंडिया कंपनी के शेयरधारकों का लाभांश भी इसी का भाग था। किंतु भारत में निवेशित निजी ब्रिटिश पूंजी का लाभ एक व्यापारिक निकासी थी, जिसे तकनीकी रूप से सरकारी 'गृह प्रभार' में नहीं गिना गया।

30. (1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
आर्थिक राष्ट्रवाद के साहित्य ने ब्रिटिश शासन की जड़ों पर प्रहार किया। आर. सी. दत्त ने भारत के आर्थिक पतन का ऐतिहासिक विवरण दिया, जबकि दादाभाई नौरोजी ने निर्धनता को धन की निकासी से जोड़ा। दीनबंधु मित्र का 'नील दर्पण' किसानों के सामाजिक शोषण का सजीव चित्रण था और जी. सुब्रमण्यम अय्यर ने आर्थिक शोषण के पक्षों पर प्रकाश डाला। इन कार्यों ने भारतीय जनता में राजनीतिक और आर्थिक चेतना का प्रसार किया।

31. (1) प्रमुख भारतीय शहरों में आधुनिक कारखाना-आधारित उद्योगों का उदय
19वीं शताब्दी में वि-औद्योगिकीकरण का अर्थ पारंपरिक उद्योगों का विनाश था, न कि आधुनिक कारखानों का उदय। वास्तव में, आधुनिक उद्योगों का विकास अत्यंत धीमा था, जो पारंपरिक कारीगरों के पतन की भरपाई करने में अक्षम था। राजदरबारों के संरक्षण की समाप्ति और एकतरफा मुक्त व्यापार

Click Here to Buy book on Amazon

74. अकाल के दौरान औपनिवेशिक प्रशासकों द्वारा अहस्तक्षेप (Laissez-faire) अर्थशास्त्र के कड़ाई से पालन का अर्थ था:
(1) खाद्यान्न के निजी व्यापार में हस्तक्षेप करने से इनकार, यहाँ तक कि जमाखोरी के दौरान भी।
(2) खाद्यान्न की कीमतों को नियंत्रित और स्थिर करने के लिए राज्य के अधिकार का प्रयोग।
(3) सभी अकाल प्रभावित आबादी को निशुल्क खाद्यान्न का बिना शर्त वितरण।
(4) खाद्यान्न की कमी के दौरान इसके निर्यात पर पूर्ण प्रतिबंध का कार्यान्वयन।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

75. भारत में निम्नलिखित में से कौन सा प्रारंभिक आधुनिक उद्योग अपनी स्थापना से ही लगभग विशेष रूप से भारतीयों के स्वामित्व और प्रबंधन में था?
(1) बंगाल में जूट उद्योग
(2) असम में चाय बागान उद्योग
(3) बिहार में नील बागान उद्योग
(4) बॉम्बे और अहमदाबाद में सूती वस्त्र उद्योग
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

76. 'गृह प्रभार' (Home Charges) के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) यह भारतीय अर्थव्यवस्था द्वारा उत्पन्न कुल निर्यात अधिशेष का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था।
(2) यह भारतीय बुनियादी ढांचे के सहयोग के लिए ब्रिटिश राजकोष द्वारा भेजा गया धन था।
(3) यह भारत से ब्रिटेन की ओर एकतरफा आर्थिक बहिर्गमन के प्रमुख घटकों में से एक था।
(4) यह भारतीय रेलवे में निजी निवेशकों को दिया गया अनिवार्य ब्याज भुगतान था।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

77. भारत में प्रारंभिक आर्थिक राष्ट्रवादियों की सबसे महत्वपूर्ण मांग क्या थी?
(1) भारतीय क्षेत्र से सभी ब्रिटिश कर्मियों की तत्काल और पूर्ण वापसी।
(2) सभी भूमि संसाधनों का राष्ट्रीयकरण और निजी संपत्ति का पूर्ण उन्मूलन।
(3) भारतीय उद्योगों के लिए संरक्षणवाद और सक्रिय सरकारी समर्थन।
(4) संपूर्ण अर्थव्यवस्था की कृषि आत्मनिर्भरता की ओर जबरन वापसी।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

78. ब्रिटिश शासन के तहत भारत के विदेशी ऋण के बारे में दिए गए कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
कथन I: भारत के विदेशी ऋण का एक बड़ा हिस्सा उन युद्धों की लागत के कारण था जो अंग्रेजों ने अपने साम्राज्यवादी हितों के लिए भारत की सीमाओं के बाहर लड़े थे।
कथन II: इस ऋण की अदायगी धन के बहिर्गमन का एक प्रमुख तंत्र थी।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

79. थॉमस मुनरो मुख्य रूप से किस भू-राजस्व प्रणाली की शुरुआत से संबद्ध हैं?
(1) रैयतवाड़ी प्रणाली
(2) स्थायी बंदोबस्त
(3) महलवाड़ी प्रणाली
(4) मालगुजारी प्रणाली
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

80. कृषि के व्यवसायीकरण ने मुख्य रूप से किस कारण से ग्रामीण उप-सामंतीकरण की वृद्धि में योगदान दिया?
(1) औपनिवेशिक राज्य ने भूमि स्वामित्व की कई परतें बनाने के लिए सक्रिय रूप से कानून पारित किए।
(2) भूमि के बढ़ते मूल्यों ने बिचौलियों को स्वयं खेती किए बिना लाभ के लिए भूमि पट्टे पर देने की अनुमति दी।
(3) जोखिम साझा करने के लिए किसान वर्ग ने स्वेच्छा से बड़ी सामूहिक कृषि इकाइयाँ बनाईं।
(4) यूरोपीय निवेशकों ने सभी उपलब्ध भूमि खरीद ली और उसे भारतीय किरायेदारों को वापस पट्टे पर दे दिया।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

www.nodia.in
NODIA

42. (1) नील विद्रोह का भड़कना
बंगाल में यूरोपीय बागान मालिकों द्वारा किसानों का अत्यधिक शोषण और क्रूर व्यवहार 1859 के नील विद्रोह का तात्कालिक कारण बना। किसानों को बाजार दरों से बहुत कम दाम पर नील उगाने हेतु विवश किया जाता था और इनकार करने पर प्रताड़ित किया जाता था। इस दमन ने किसानों में एकजुटता उत्पन्न की और उन्होंने सामूहिक रूप से नील का बहिष्कार किया। यह विद्रोह औपनिवेशिक शोषण के विरुद्ध एक सशक्त प्रतिरोध बना।

43. (4) पारंपरिक कारीगरों को प्रदान की गई बड़े पैमाने पर सरकारी सब्सिडी और वित्तीय अनुदान।
भारतीय उद्योगों के पिछड़ेपन का मुख्य कारण सरकार की उदासीनता थी, न कि उन्हें प्राप्त कोई समर्थन। ब्रिटिश काल में भारतीय कारीगरों को कभी कोई सरकारी सब्सिडी या वित्तीय सहायता प्राप्त नहीं हुई। इसके विपरीत, भेदभावपूर्ण शुल्क और तकनीकी शिक्षा का अभाव प्रगति में बड़ी बाधा बना रहा। बैंकिंग और ऋण सुविधाओं पर भी यूरोपीय संस्थाओं का नियंत्रण था, जिससे भारतीय उद्यमियों को पूंजी जुटाने में कठिनाई हुई।

44. (2) 1907
टाटा आयरन एंड स्टील कंपनी की स्थापना 1907 में हुई, जो भारत के औद्योगिक इतिहास का एक क्रांतिकारी मोड़ था। इसकी नींव जमशेदजी टाटा के विजन पर रखी गई थी। यह उस समय का सबसे बड़ा स्वदेशी उद्यम था, जिसने भारत में भारी उद्योगों के विकास का मार्ग प्रशस्त किया। इसकी स्थापना ने सिद्ध किया कि विदेशी सहायता के बिना भी भारतीय अपनी क्षमताओं से आधुनिक कारखाने स्थापित कर सकते हैं।

45. (1) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
ब्रिटिश आर्थिक नीतियों ने विभिन्न तंत्रों द्वारा भारत का शोषण किया। रेलवे में निवेश करने वाले ब्रिटिश निवेशकों को लाभ की गारंटी दी गई थी, जिसका भुगतान भारतीय राजस्व से होता था। 'साम्राज्यिक वरीयता' ने ब्रिटिश सामान हेतु भारतीय बाजारों को सुलभ बनाया। 'गृह प्रभार' के अंतर्गत लंदन के प्रशासनिक व्यय का भार भारत पर डाला गया, जबकि 'एजेंसी हाउस' ने व्यापारिक मुनाफे को देश से बाहर भेजने का कार्य किया।

46. (4) इसने भारतीय उद्योगों के संरक्षण और विकास के लिए राज्य की शक्ति के सक्रिय उपयोग की मांग की।
प्रारंभिक आर्थिक राष्ट्रवादियों ने तर्क दिया कि भारत की निर्धनता ब्रिटिश नीतियों का परिणाम है। उन्होंने मांग की कि सरकार 'मुक्त व्यापार' त्यागकर भारतीय उद्योगों को संरक्षण देने हेतु शुल्क लगाए। राष्ट्रवादियों ने स्वदेशी पूंजी के विकास और तकनीकी शिक्षा के विस्तार पर बल दिया। उनका मानना था कि राज्य की जिम्मेदारी केवल कानून व्यवस्था बनाए रखना नहीं, बल्कि देश के आर्थिक हितों का संवर्धन करना भी होनी चाहिए।

47. (2) III, II, I, IV
धन के बहिर्गमन के विरुद्ध राष्ट्रवादी चेतना क्रमिक रूप से विकसित हुई। दादाभाई नौरोजी ने 1867 में सर्वप्रथम इस सिद्धांत को प्रस्तुत किया। इसके पश्चात 1895 में व्यय की समीक्षा हेतु वैल्बी आयोग बना। 1901 में नौरोजी की प्रसिद्ध पुस्तक प्रकाशित हुई, जिसने इस विषय पर गहन विश्लेषण दिया। अंततः 1905 में बंगाल विभाजन के विरोध में कांग्रेस ने स्वदेशी और बहिष्कार को अपनाकर इसे जनांदोलन का रूप प्रदान किया।

48. (2) मुर्शिदाबाद और ढाका
वि-औद्योगिकीकरण के कारण भारत के प्राचीन विनिर्माण केंद्रों का तीव्र पतन हुआ, जिसे वि-शहरीकरण कहा जाता है। ढाका और मुर्शिदाबाद जैसे शहर, जो उत्तम वस्त्रों हेतु विश्व विख्यात थे, अब उजड़ने लगे थे। यहाँ के कारीगरों की आय के स्रोत समाप्त हो गए और उन्हें आजीविका हेतु गाँवों की ओर पलायन करना पड़ा। इसके विपरीत बॉम्बे जैसे नए शहर केवल प्रशासनिक और व्यापारिक केंद्रों के रूप में विकसित हुए।

49. (1) केवल I और II
धन का बहिर्गमन अनिवार्य रूप से संसाधनों का ब्रिटेन की ओर एकतरफा प्रवाह था, जिसके बदले देश को कोई वास्तविक लाभ प्राप्त नहीं होता था। इसमें न केवल सरकारी व्यय बल्कि ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा भेजा गया व्यक्तिगत मुनाफा भी सम्मिलित था। इस प्रक्रिया ने भारत में आधुनिक तकनीक के हस्तांतरण को बाधित किया क्योंकि सारा अधिशेष ब्रिटेन चला गया। इससे भारतीय अर्थव्यवस्था में पूंजी निर्माण की प्रक्रिया पूर्णतः अवरुद्ध हो गई।

50. (1) उच्च राजस्व मांगों और ऋण के कारण भूमि साहूकारों के नियंत्रण में चली गई।
यद्यपि रैयतवाड़ी प्रणाली का उद्देश्य किसानों को भूमि का स्वामी बनाना था, किंतु अत्यधिक भू-राजस्व ने इस लक्ष्य को विफल कर दिया। लगान चुकाने हेतु किसानों को साहूकारों से ऊँची दरों पर ऋण लेना पड़ा। ऋण न चुका पाने की स्थिति में उनकी भूमि विधिक रूप से साहूकारों के अधिकार में चली गई। इस प्रकार ग्रामीण क्षेत्रों में साहूकारों के रूप में एक नया शोषक वर्ग उदित हुआ और किसान भूमिहीन हो गए।

51. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
औपनिवेशिक ग्रामीण समाज में विभिन्न वर्गों की विशिष्ट भूमिकाएँ थीं। जमींदार राजस्व वसूलने वाले स्वामी थे, जबकि रैयत वास्तविक किसान थे। जोतदार वे धनी किसान थे जिन्होंने गाँवों में पर्याप्त प्रभाव और भूमि अर्जित कर ली थी। महाजन या साहूकार ऋण प्रणाली के केंद्र में थे, जिनकी ब्याज दरें अत्यंत शोषणकारी थीं। इन वर्गों के मध्य के जटिल संबंधों ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को असमान बनाया, जिससे किसान सदैव संकट में रहे।

NODIA

52. (4) घरेलू उद्योग का समर्थन करने के लिए अंतर्देशीय व्यापार को अधिमान्य दरें प्रदान की गई थीं।
ब्रिटिश रेलवे की माल ढुलाई दरें पूर्णतः औपनिवेशिक व्यापारिक हितों के पक्ष में थीं। कच्चे माल को बंदरगाहों तक पहुँचाने हेतु दरें बहुत कम रखी गई थीं, किंतु एक भारतीय शहर से दूसरे शहर माल भेजने का शुल्क अत्यधिक था। इसने अंतर्देशीय व्यापार और स्थानीय विनिर्माण को हतोत्साहित किया। इस मूल्य निर्धारण नीति ने रेलवे को भारतीय उद्योगों के विकास के स्थान पर उनके विनाश का साधन बना दिया।

53. (2) केवल I, II और IV
कृषि के व्यवसायीकरण ने ग्रामीण भारत में गहरे आर्थिक परिवर्तन किए। भारतीय किसान अब वैश्विक मूल्यों और अंतरराष्ट्रीय घटनाओं के सीधे प्रभाव में आ गए। इससे ग्रामीण समाज में असमानता बढ़ी क्योंकि केवल धनी किसान ही नकदी फसलों का लाभ ले सके। सामान्य किसानों हेतु खाद्यान्न की कमी हो गई क्योंकि उपजाऊ भूमि पर जूट और कपास उगाया जाने लगा। खाद्य असुरक्षा के कारण भूमिहीन मजदूरों की स्थिति और दयनीय हो गई।

54. (2) भारतीय माल के लिए ब्रिटिश बाजारों का बंद होना, जिसने वि-औद्योगिकीकरण को तीव्र किया।
19वीं सदी के प्रारंभ में ब्रिटिश सरकार ने भारतीय सूती वस्त्रों पर अत्यधिक उच्च आयात शुल्क लगाकर अपने उद्योगों की रक्षा की। इस नीति ने भारतीय वस्त्रों को ब्रिटिश बाजार से बाहर कर दिया। एक समय का निर्यातक भारत अब केवल कच्चे माल का आपूर्तिकर्ता बनकर रह गया। इसने भारतीय बुनकरों की आजीविका को नष्ट कर दिया, जिससे वे कृषि की ओर लौटने को विवश हुए और भूमि पर बोझ बढ़ गया।

55. (4) पूर्व अनुमान और त्वरित राहत की एक 'नैतिक रणनीति', जिसमें राजस्व स्थगन भी सम्मिलित है।
1900 के मैकडोनेल आयोग ने अकाल प्रबंधन हेतु एक 'नैतिक रणनीति' की अनुशंसा की थी। इसमें संकट के आगमन से पूर्व अनुमान लगाने और त्वरित सरकारी सहायता प्रदान करने पर बल दिया गया। आयोग ने अकाल के समय किसानों को राहत देने हेतु राजस्व वसूली स्थगित करने और कृषि ऋण देने का सुझाव दिया। हालांकि इन अनुशंसाओं का वास्तविक क्रियान्वयन प्रशासनिक सीमाओं और बजट अभाव के कारण सदैव पूर्णतः सफल नहीं रहा।

56. (1) राज्य सहकारी बैंकों से कम ब्याज वाले ऋण की व्यापक उपलब्धता।
ब्रिटिश शासन के दौरान किसान ऋणग्रस्तता का मुख्य कारण संस्थागत ऋण स्रोतों का अभाव था। औपनिवेशिक राज्य ने सहकारी बैंकों के विकास पर ध्यान नहीं दिया। अत्यधिक भू-राजस्व और नकद भुगतान की अनिवार्यता ने किसानों को स्थानीय साहूकारों के चंगुल में धकेल दिया। नई विधिक व्यवस्था ने साहूकारों को भूमि हड़पने की शक्ति प्रदान की, जिससे ऋण का बोझ किसानों हेतु एक कभी न समाप्त होने वाला दुष्चक्र बन गया।

57. (1) केवल I, II, IV और V
नील विद्रोह एक सफल आंदोलन था जिसने बागान मालिकों के दमन का दृढ़ता से मुकाबला किया। सरकार द्वारा नियुक्त नील आयोग ने अत्याचारों को स्वीकार किया और माना कि किसानों को नील कृषि हेतु विवश नहीं किया जा सकता। इसके उपरांत बंगाल में नील उद्योग का पतन हुआ और बागान मालिक अन्य क्षेत्रों में चले गए। इस विद्रोह ने भारतीय किसानों में आत्म-सम्मान की भावना जागृत की और सामूहिक प्रतिरोध का महत्व समझाया।

58. (1) नील
तिनकठिया प्रणाली बिहार के चंपारण में नील की कृषि से जुड़ी एक शोषणकारी व्यवस्था थी। इसके अंतर्गत किसानों को अपनी भूमि के 3/20 भाग पर नील उगाना अनिवार्य था। यह अनुबंध किसानों हेतु अत्यंत घाटे का सौदा था क्योंकि नील के दाम बहुत कम थे और इससे मृदा की उर्वरता भी समाप्त हो जाती थी। गांधीजी ने 1917 में इसी व्यवस्था के विरुद्ध सत्याग्रह किया, जिसके कारण इसे समाप्त करना पड़ा।

59. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
ब्रिटिश सरकार द्वारा अपनाई गई "विवेकाधीन संरक्षण" की नीति केवल नाममात्र की सुरक्षा थी। इसके अंतर्गत कुछ चुनिंदा भारतीय उद्योगों को शुल्क संरक्षण दिया गया, किंतु कठोर शर्तों के कारण बहुत कम कंपनियां लाभ उठा सकीं। इस नीति का मुख्य उद्देश्य भारतीय उद्योगों को पूर्ण सुरक्षा देना नहीं था, बल्कि केवल उन क्षेत्रों में सीमित सहायता देना था जहाँ ब्रिटिश हितों को कोई सीधा खतरा नहीं था।

60. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
भारत में आधुनिक उद्योगों का प्रारंभ 19वीं सदी के मध्य में हुआ। प्रथम सूती मिल बॉम्बे में स्थापित की गई, जिसने पश्चिमी भारत को वस्त्र उद्योग का केंद्र बनाया। जूट उद्योग की प्रथम मिल बंगाल के रिशरा में प्रारंभ हुई। लोहे और इस्पात के प्रयास कुल्टी में हुए, जबकि कागज उद्योग सेरामपुर में प्रारंभ हुआ। ये मिलें भारतीय औद्योगिक परिदृश्य में नए युग का प्रारंभ थीं, यद्यपि अधिकांश पर यूरोपीय पूंजी का नियंत्रण था।

61. (3) ब्रिटिश घरेलू उद्योगों में भारत सरकार का निवेश।
'गृह प्रभार' का तात्पर्य भारत से बाहर जाने वाले उन भुगतानों से था जो ब्रिटिश प्रशासन के संचालन हेतु आवश्यक थे। इसमें पेंशन, ऋण का ब्याज और सैन्य सामग्री की खरीद सम्मिलित थी। भारत सरकार ने कभी ब्रिटिश घरेलू उद्योगों में कोई निवेश नहीं किया, बल्कि भारतीय करदाताओं का धन ब्रिटेन के साम्राज्यिक हितों और प्रशासनिक ढाँचे को बनाए रखने हेतु व्यय किया गया। यह निकासी पूर्णतः एकतरफा और शोषणकारी थी।

62. (4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
प्रारंभिक राष्ट्रवादियों ने विदेशी पूंजी के अनियंत्रित प्रभाव और उसके राजनीतिक परिणामों के प्रति चिंता व्यक्त की थी। उनका मानना था कि विदेशी पूंजी का प्रभुत्व भारतीय संसाधनों के शोषण को बढ़ाता है और स्वदेशी पूंजी के विकास

Downloaded from www.pdf.tube

को रोकता है। विदेशी निवेश के माध्यम से ब्रिटिश कंपनियां भारत की आर्थिक व्यवस्था पर अपनी पकड़ सुदृढ़ कर रही थीं। राष्ट्रवादियों की मुख्य चिंता यह थी कि आर्थिक विकास भारतीयों के नियंत्रण में हो।

63. (1) ब्रिटिश औपनिवेशिक राज्य ने विस्थापित शिल्पकारों को पुनः प्रशिक्षित करने के लिए आधुनिक तकनीक को सक्रिय रूप से पेश किया।
वि-औद्योगिकीकरण के दौरान ब्रिटिश सरकार ने विस्थापित कारीगरों की सहायता हेतु कोई कदम नहीं उठाया। शिल्पकारों को आधुनिक तकनीक सिखाने या वैकल्पिक रोजगार देने की कोई योजना नहीं थी। इसके विपरीत, औपनिवेशिक नीतियों ने उनके पारंपरिक व्यवसायों को पूर्णतः नष्ट कर दिया। लाखों लोग शहरों से गाँवों की ओर पलायन हेतु विवश हुए, जिससे कृषि पर जनसंख्या का असहनीय बोझ बढ़ा और ग्रामीण निर्धनता में अत्यधिक वृद्धि हुई।

64. (2) इसने घरेलू पूंजी निर्माण और आर्थिक विकास को गंभीर रूप से बाधित किया।
धन के बहिर्गमन का सबसे घातक प्रभाव यह था कि भारत अपने अधिशेष पूंजी से वंचित हो गया। जो धन भारत में कारखानों और सिंचाई परियोजनाओं में निवेश होना चाहिए था, वह ब्रिटेन चला गया। इसके कारण देश में पूंजी का भारी अभाव उत्पन्न हुआ, जिससे आधुनिक उद्योगों का विकास नहीं हो सका। भारत केवल प्राथमिक वस्तुओं का आपूर्तिकर्ता बना रहा, जबकि ब्रिटिश अर्थव्यवस्था भारतीय संसाधनों से अत्यंत शक्तिशाली बन गई।

65. (2) व्यक्तिगत किसानों की राजस्व हिस्सेदारी के लिए कोई व्यक्तिगत उत्तरदायित्व नहीं था।
महलवाड़ी प्रणाली में यद्यपि पूरे गाँव के साथ संयुक्त रूप से बंदोबस्त किया जाता था, किंतु व्यक्तिगत किसानों की भी अपने भाग के प्रति जिम्मेदारी बनी रहती थी। राजस्व को स्थायी रूप से तय नहीं किया गया था, बल्कि समय-समय पर इसके संशोधन का प्रावधान था। यह व्यवस्था उत्तर-पश्चिम प्रांतों और पंजाब में क्रियान्वित थी। इसके अंतर्गत गाँव के मुखिया की भूमिका महत्वपूर्ण थी, जो सरकार की ओर से राजस्व एकत्र करता था।

66. (1) उप-सामंतीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से बिचौलियों की कई परतों का निर्माण हुआ।
स्थायी बंदोबस्त के परिणामस्वरूप बंगाल में उप-सामंतीकरण की जटिल समस्या उत्पन्न हुई। जमींदारों ने अपने राजस्व वसूली के अधिकार अन्य मध्यस्थों को पट्टे पर दे दिए, जिन्होंने आगे और भी छोटे बिचौलिये बना लिए। इस प्रकार राज्य और वास्तविक किसान के मध्य बिचौलियों की एक लंबी श्रृंखला निर्मित हो गई। इसका अंतिम भार गरीब किसान पर पड़ा, जिसका शोषण चरम पर पहुँच गया और उसे कोई विधिक सुरक्षा नहीं मिली।

67. (3) भारत के भीतर औद्योगिक विकास में क्षेत्रीय असमानताओं को दूर करना।
ब्रिटिश सरकार ने रेलवे का विकास कभी भारत के संतुलित क्षेत्रीय विकास के उद्देश्य से नहीं किया। रेलवे का नेटवर्क मुख्य रूप से उन क्षेत्रों को जोड़ने हेतु बना था जहाँ से कच्चा माल प्राप्त किया जा सके या जहाँ सेना को शीघ्र पहुँचाना आवश्यक था। क्षेत्रीय समानता औपनिवेशिक प्रशासन की प्राथमिकताओं में कभी नहीं रही। रेलवे ने केवल उन क्षेत्रों को समृद्ध बनाया जो ब्रिटिश व्यापार के केंद्र थे, शेष हिस्से पिछड़ते गए।

68. (4) ब्रिटिश उद्योगों के लिए कच्चे माल की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए।
कृषि के व्यवसायीकरण का मूल प्रेरक तत्व ब्रिटेन की औद्योगिक आवश्यकताएं थीं। ब्रिटिश वस्त्र उद्योग को भारतीय कपास और नील की सस्ती आपूर्ति की आवश्यकता थी। औपनिवेशिक प्रशासन ने ऐसी राजस्व और व्यापारिक नीतियां बनाईं जिन्होंने भारतीय किसानों को अपनी खाद्य सुरक्षा की कीमत पर इन नकदी फसलों को उगाने हेतु विवश किया। इस प्रक्रिया ने भारतीय कृषि को वैश्विक बाजार की माँगों का एक अधीनस्थ हिस्सा बना दिया।

NODIA

69. (3) ब्रिटिश नीति पर लंकाशायर और मैनचेस्टर के कपड़ा उद्योग के हितों का प्रभाव।
सूती आयात शुल्क को समाप्त करने का विवाद यह स्पष्ट करता है कि ब्रिटिश सरकार के निर्णय लंदन के उद्योगपतियों के दबाव में लिए जाते थे। ब्रिटिश मिल मालिकों को भारतीय मिलों से मिलने वाली सामान्य प्रतिस्पर्धा भी स्वीकार्य नहीं थी। अतः उनके हितों की रक्षा हेतु भारत में आयातित ब्रिटिश वस्त्रों पर शुल्क हटा दिए गए। इस कदम ने सिद्ध किया कि औपनिवेशिक प्रशासन का प्रथम कर्तव्य केवल ब्रिटिश पूंजीपतियों का लाभ था।

70. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
प्रारंभ में ब्रिटिश सरकार अकालों को केवल प्राकृतिक आपदा मानती थी और बाजार की शक्तियों में हस्तक्षेप से बचती थी। अकाल संहिता के लागू होने के पश्चात भी अकाल पूर्णतः समाप्त नहीं हुए, जैसा कि 1943 के बंगाल अकाल से स्पष्ट है। अकाल संहिता ने राहत कार्यों हेतु नियम तो बनाए, किंतु प्रशासनिक अक्षमता और साम्राज्यवादी प्राथमिकताओं के कारण वे संकट को पूर्णतः रोकने में विफल रहे, जिससे मानवीय त्रासदी जारी रही।

71. (4) जमींदारों और साहूकारों द्वारा उत्पीड़न तथा भूमि से बेदखली।
संथाल विद्रोह का मुख्य कारण बाहरी लोगों, जिन्हें 'दिकू' कहा जाता था, द्वारा किया गया आर्थिक शोषण था। ब्रिटिश भू-राजस्व व्यवस्था ने जमींदारों और साहूकारों को संथालों की पारंपरिक भूमि पर अधिकार दे दिया। उच्च लगान और ऋण के कारण संथाल अपनी भूमि से बेदखल होने लगे। साहूकारों के अत्याचारों और पुलिस के भ्रष्टाचार ने संथालों को हथियार उठाने हेतु विवश कर दिया। यह विद्रोह अस्मिता की रक्षा का संघर्ष था।

38. सूची-I (आंदोलन/संस्था) को सूची-II (विशेषता/संस्थापक) से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:

सूची I: (आंदोलन/संस्था)

A. अलीगढ़ आंदोलन
B. देवबंद आंदोलन
C. ब्रह्म समाज
D. आर्य समाज

सूची II: (विशेषता/संस्थापक)

i. पारंपरिक इस्लामी छात्रवृत्ति और ब्रिटिश विरोधी रुख
ii. पश्चिमी प्रभाव को खारिज करने वाला पुनरुत्थानवादी हिंदू आंदोलन
iii. पश्चिमी वैज्ञानिक शिक्षा और अंग्रेजों के प्रति वफादारी
iv. पूर्वी आध्यात्मिकता और पश्चिमी तर्कवाद का संश्लेषण

कूट:

(1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(2) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(3) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

39. भारत में इस्लामी सुधार आंदोलनों के संदर्भ में, देवबंद आंदोलन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

कथन I: यह मुस्लिम उलेमाओं के रूढ़िवादी वर्ग द्वारा विदेशी शासकों के विरुद्ध संघर्ष की भावना को जीवित रखने के लिए आयोजित एक पुनरुत्थानवादी आंदोलन था।

कथन II: इसने फतवा जारी करने पर कड़ाई से प्रतिबंध लगा दिया और अंग्रेजी भाषा को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

40. अलीगढ़ और देवबंद आंदोलनों के बीच अंतर के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. अलीगढ़ आंदोलन सुधारवादी था, जबकि देवबंद पुनरुत्थानवादी था।
II. देवबंद ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के गठन का स्वागत किया, जबकि अलीगढ़ ने इसका विरोध किया।
III. अलीगढ़ ने अंग्रेजी शिक्षा पर जोर दिया, जबकि देवबंद ने पारंपरिक इस्लामी शिक्षाओं पर ध्यान केंद्रित किया।
IV. दोनों आंदोलनों की स्थापना एक ही वर्ष में हुई थी।
V. दोनों आंदोलन पश्चिमी संस्कृति को अपनाने पर सहमत थे।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(1) केवल I, II, और III
(2) केवल II, III, और V
(3) केवल I, IV, और V
(4) केवल I, III, और IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

41. ज्योतिराव फुले ने 1873 में सत्यशोधक समाज की स्थापना मुख्य रूप से किसलिए की थी?

(1) महाराष्ट्र में ब्रिटिश प्रशासनिक उपस्थिति के विरुद्ध एक उग्र किसान विद्रोह को संगठित करने के लिए।
(2) ग्रामीण और पिछड़े सामाजिक वर्गों के बीच पारंपरिक संस्कृत शिक्षा को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित करने के लिए।
(3) निचली जातियों को ब्राह्मणवादी उत्पीड़न और रुढ़िवादी ग्रंथों के प्रभाव से मुक्त करने के लिए।
(4) अछूत समुदायों को पारंपरिक वर्ण व्यवस्था की संरचनाओं में वापस एकीकृत करने के लिए।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

42. ज्योतिराव फुले की सामाजिक सुधार गतिविधियों के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।

(1) उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को उसके शुरुआती ब्रिटिश-विरोधी चरण के दौरान सक्रिय समर्थन दिया।
(2) उन्होंने यह दावा करके ब्राह्मणवादी वर्चस्व को चुनौती दी कि वे विदेशी आर्य आक्रमणकारियों के वंशज थे।
(3) उन्होंने पुणे में लड़कियों के लिए एक विशेष स्कूल स्थापित करके महाराष्ट्र में महिला शिक्षा की नींव रखी।
(4) उन्होंने जाति पदानुक्रम में निहित सामाजिक असमानताओं के पूर्ण उन्मूलन के लिए अभियान चलाया।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

43. ज्योतिराव फुले द्वारा 1873 में कौन-सी प्रतिष्ठित पुस्तक लिखी गई थी और उन अमेरिकी लोगों को समर्पित की गई थी जिन्होंने दासता को समाप्त करने के लिए लड़ाई लड़ी थी?

(1) सार्वजनिक सत्यधर्म
(2) शेतकऱ्याचा आसूड
(3) तृतीय रत्न
(4) गुलामगिरी
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

44. सुधारकों और निचली जाति के उत्थान में उनके विशिष्ट योगदान के संबंध में सही युग्म की पहचान कीजिए:

(1) श्री नारायण गुरु - वायकोम सत्याग्रह
(2) ई.वी. रामास्वामी नायकर - आत्म-सम्मान आंदोलन
(3) ज्योतिराव फुले - बहिष्कृत हितकारिणी सभा
(4) बी.आर. अंबेडकर - सत्यशोधक समाज
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

45. महाराष्ट्र में शिक्षा और सामाजिक सुधार के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए, जहाँ एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:

कथन (A): रुढ़िवादी समाज के तीव्र विरोध के बावजूद ज्योतिराव फुले ने लड़कियों और निचली जातियों के लिए स्कूल खोले।

कारण (R): उनका दृढ़ विश्वास था कि शिक्षा शोषित वर्गों

अध्याय 20

सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन

NODIA

1. 19वीं शताब्दी के दौरान भारतीय अभिजात वर्ग पर पश्चिमी शिक्षा के प्राथमिक प्रभाव का सबसे सटीक वर्णन निम्नलिखित में से कौन-सा है?
(1) इसके परिणामस्वरूप पारंपरिक मूल्यों का पूर्ण त्याग और ब्रिटिश समाज में पूर्ण सांस्कृतिक आत्मसातीकरण हुआ।
(2) इसने एक तर्कसंगत आलोचनात्मक दृष्टिकोण को बढ़ावा दिया जिससे सामाजिक-धार्मिक सुधारों की प्रेरणा मिली।
(3) इसके कारण एक एकीकृत राजनीतिक आंदोलन शुरू हुआ जिसने तुरंत ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से पूर्ण स्वतंत्रता की मांग की।
(4) इसे विशेष रूप से ईस्ट इंडिया कंपनी के प्रशासनिक कार्यों के प्रबंधन के लिए एक लिपिक वर्ग तैयार करने हेतु बनाया गया था।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

2. आधुनिक भारत के इतिहास के संदर्भ में, सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों की पृष्ठभूमि के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: प्रिंटिंग प्रेस (छापाखाना) की शुरुआत ने क्षेत्रीय भाषाओं में सुधारवादी विचारों और सार्वजनिक बहसों के प्रसार को सुगम बनाया।
कथन II: शुरुआती सुधार आंदोलन प्रबोधन जैसी वैश्विक बौद्धिक धाराओं से पूरी तरह अलग थे।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

3. राजा राममोहन राय ने वेदांत के एकेश्वरवादी आदर्शों के प्रचार के लिए 1814 में निम्नलिखित में से किस संस्था की स्थापना की थी?
(1) ब्रह्म सभा
(2) तत्त्वबोधिनी सभा
(3) आत्मीय सभा
(4) प्रार्थना समाज
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

4. राजा राममोहन राय के नेतृत्व में ब्रह्म समाज की विचारधारा के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) इसने एकेश्वरवाद का समर्थन किया और मूर्ति पूजा का कड़ा विरोध किया।
(2) इसने इस विचार को खारिज कर दिया कि किसी भी धार्मिक ग्रंथ को ईश्वरीय रूप से अचूक माना जाना चाहिए।
(3) इसने जाति व्यवस्था और अस्पृश्यता जैसे सामाजिक अन्यायों की कड़ी निंदा की।
(4) इसने कर्म और आत्मा के आवागमन के सिद्धांतों को मौलिक धार्मिक सिद्धांतों के रूप में बनाए रखा।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

5. भारत में सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए, जहाँ एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A): राजा राममोहन राय ने सती प्रथा के विरुद्ध अपने अभियान में प्राचीन हिंदू शास्त्रों से व्यापक रूप से उद्धरण दिए।
कारण (R): वह रुढ़िवादी तत्वों को यह सिद्ध करना चाहते थे कि सती प्रथा हिंदू धर्म के वास्तविक मूल का हिस्सा नहीं थी।
नीचे दिए गए कूट में से सही उत्तर चुनिए:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

6. ऐतिहासिक 'बंगाल सती विनियमन', जिसने सती प्रथा को अवैध और आपराधिक न्यायालयों द्वारा दंडनीय घोषित किया, किस वर्ष और किस गवर्नर-जनरल द्वारा पारित किया गया था?
(1) 1833 में लॉर्ड डलहौजी द्वारा
(2) 1829 में लॉर्ड विलियम बेंटिक द्वारा
(3) 1829 में लॉर्ड वेलेज़ली द्वारा
(4) 1856 में लॉर्ड कैनिंग द्वारा
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

7. देवेंद्रनाथ टैगोर की 'तत्त्वबोधिनी सभा' के सुधारवादी एजेंडे में निम्नलिखित में से कौन-सा अपवाद था?
(1) भारत के अतीत के तर्कसंगत अध्ययन को बढ़ावा देना
(2) राममोहन राय के विचारों का प्रचार-प्रसार करना
(3) आधुनिक अध्ययन के लिए उपनिषद के ग्रंथों का व्यवस्थित संकलन करना
(4) बंगाली साहित्य के पूर्ण पश्चिमीकरण को प्रोत्साहित

72. (1) वनों की घेराबंदी और पारंपरिक अधिकारों के प्रतिबंध के कारण आजीविका की हानि।
ब्रिटिश वन कानूनों ने आदिवासी समुदायों के जीवन को पूर्णतः बदल दिया। वनों को सरकारी संपत्ति घोषित कर दिया गया, जिससे आदिवासियों के पशु चराने और वनोपज एकत्र करने के पारंपरिक अधिकार छीन लिए गए। उनके जंगलों में प्रवेश पर प्रतिबंध लगा दिया गया, जिससे उनकी आजीविका का आधार समाप्त हो गया। कई आदिवासियों को विवश होकर बागानों में बंधुआ मजदूर बनना पड़ा, जहाँ उनका अत्यधिक शारीरिक और आर्थिक शोषण हुआ।

73. (3) इसमें नील किसानों के उत्पीड़न का यथार्थवादी चित्रण किया गया था।
दीनबंधु मित्र का नाटक 'नील दर्पण' बंगाल के नील किसानों की त्रासदी का एक सशक्त दस्तावेज है। इस नाटक ने दर्शाया कि कैसे यूरोपीय बागान मालिक किसानों को नील उगाने हेतु शारीरिक रूप से प्रताड़ित करते थे और विधिक व्यवस्था उनके पक्ष में थी। इस रचना ने बंगाल के मध्यम वर्ग की चेतना को झकझोर दिया और नील विद्रोह के प्रति व्यापक सहानुभूति उत्पन्न की। यह साहित्य द्वारा प्रतिरोध का उत्कृष्ट उदाहरण है।

74. (1) खाद्यान्न के निजी व्यापार में हस्तक्षेप करने से इनकार, यहाँ तक कि जमाखोरी के दौरान भी।
अहस्तक्षेप की आर्थिक नीति के अंतर्गत ब्रिटिश प्रशासन ने अकाल के समय अनाज की कीमतों को नियंत्रित करने से इनकार कर दिया। उनका मानना था कि बाजार स्वयं आपूर्ति सुनिश्चित करेगा, किंतु व्यापारियों ने जमाखोरी करके मूल्य बढ़ा दिए। सरकार ने अनाज निर्यात पर भी रोक नहीं लगाई, जिससे भुखमरी और बढ़ गई। इस कठोर दृष्टिकोण ने लाखों निर्दोष लोगों को मृत्यु के मुख में धकेल दिया, क्योंकि उनकी क्रय शक्ति समाप्त थी।

75. (4) बॉम्बे और अहमदाबाद में सूती वस्त्र उद्योग
भारत में सूती वस्त्र उद्योग उन दुर्लभ आधुनिक क्षेत्रों में से एक था जहाँ भारतीय पूंजीपतियों का वर्चस्व था। बॉम्बे और अहमदाबाद के पारसी और गुजराती उद्यमियों ने अपनी स्वयं की पूंजी से इन मिलों को स्थापित किया। इसके विपरीत, जूट और नील जैसे उद्योग पूर्णतः यूरोपीय कंपनियों के नियंत्रण में थे। भारतीय सूती मिलों ने न केवल ब्रिटिश प्रतिस्पर्धा का सामना किया, बल्कि स्वदेशी आंदोलन के दौरान आर्थिक स्वावलंबन का माध्यम बनीं।

76. (2) यह भारतीय बुनियादी ढांचे के सहयोग के लिए ब्रिटिश राजकोष द्वारा भेजा गया धन था।
गृह प्रभार के विषय में यह धारणा त्रुटिपूर्ण है कि वह भारत की सहायता हेतु था। वास्तव में, यह भारत से ब्रिटेन को भेजा जाने वाला धन था। यह निकासी भारतीय करदाताओं के धन से की जाती थी और इसका उपयोग लंदन में ब्रिटिश सरकार के व्यय पूरे करने हेतु होता था। इसे 'अदृश्य निर्यात' कहा जाता था क्योंकि इसके बदले भारत को कोई भौतिक लाभ नहीं मिलता था। यह औपनिवेशिक शोषण का तंत्र था।

77. (3) भारतीय उद्योगों के लिए संरक्षणवाद और सक्रिय सरकारी समर्थन।
प्रारंभिक आर्थिक राष्ट्रवादियों की प्रमुख मांग यह थी कि सरकार अपनी 'मुक्त व्यापार' की नीति का त्याग करे। उन्होंने तर्क दिया कि भारतीय उद्योगों के विकास हेतु विदेशी प्रतिस्पर्धा से सुरक्षा अनिवार्य है। उन्होंने सरकार से आग्रह किया कि वह आधुनिक उद्योगों की स्थापना हेतु वित्तीय सहायता, तकनीकी प्रशिक्षण और आधारभूत संरचना प्रदान करे। राष्ट्रवादियों का लक्ष्य भारत को कृषि आधारित उपनिवेश से बदलकर एक आधुनिक औद्योगिक राष्ट्र बनाना था।

78. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
ब्रिटिश सरकार ने अफगानिस्तान और बर्मा जैसे क्षेत्रों में लड़े गए युद्धों का संपूर्ण आर्थिक भार भारत पर डाल दिया, जिससे देश का विदेशी ऋण बढ़ गया। इस ऋण का उपयोग भारत के विकास के स्थान पर ब्रिटिश साम्राज्य के विस्तार हेतु किया गया। इस ऋण पर अत्यधिक ब्याज देना पड़ता था, जो धन की निकासी का मुख्य माध्यम बना। भारतीय जनता को उस कर्ज की अदायगी करनी पड़ी जिसका उनके कल्याण से कोई संबंध नहीं था।

79. (1) रैयतवाड़ी प्रणाली
थॉमस मुनरो को मद्रास प्रेसीडेंसी में रैयतवाड़ी प्रणाली लागू करने का श्रेय दिया जाता है। उन्होंने जमींदारी प्रथा के स्थान पर सीधे किसानों के साथ राजस्व का समझौता करना उचित समझा। उनका मानना था कि इससे बिचौलियों का अंत होगा और राज्य का राजस्व भी बढ़ेगा। हालांकि, इस प्रणाली में भी राजस्व की दरें अत्यंत उच्च थीं और वसूली के तरीके कठोर थे। मालिकाना हक मिलने के बाद भी अत्यधिक करों ने किसानों को निर्धन बनाया।

80. (2) भूमि के बढ़ते मूल्यों ने बिचौलियों को स्वयं खेती किए बिना लाभ के लिए भूमि पट्टे पर देने की अनुमति दी।
कृषि के व्यवसायीकरण और बढ़ती वैश्विक माँग के कारण भूमि के मूल्यों में भारी वृद्धि हुई। इससे ऐसी स्थिति उत्पन्न हुई जहाँ भूस्वामी स्वयं खेती करने के बजाय भूमि को पट्टे पर देना अधिक लाभदायक समझने लगे। इस प्रक्रिया ने ग्रामीण समाज में बिचौलियों की कई परतें निर्मित कर दीं। प्रत्येक स्तर पर लाभ कमाने की होड़ ने वास्तविक किसानों पर लगान का बोझ असहनीय बढ़ा दिया, जिससे ग्रामीण शोषण का नया ढाँचा तैयार हुआ।

www.nodia.in

Downloaded from www.pdf.tube

उत्साह के साथ निकटता से जुड़ी थी।
III. एम.जी. रानाडे ने भारतीय राष्ट्रीय सामाजिक सम्मेलन की स्थापना की।
IV. प्रार्थना समाज के सदस्यों ने दबे-कुचले वर्गों के उत्थान के लिए सक्रिय रूप से कार्य किया।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I
(2) केवल II और IV
(3) केवल I और III
(4) केवल III और IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

16. प्रार्थना समाज परंपरा में सुधारकों और उनके प्राथमिक कार्यक्षेत्र के संबंध में गलत सुमेलित युग्म की पहचान कीजिए:
(1) डी.के. कर्वे - महिला शिक्षा और विधवा पुनर्विवाह
(2) आर.जी. भंडारकर - ब्रिटिश शासन के विरुद्ध सशस्त्र विद्रोह
(3) एम.जी. रानाडे - भारतीय राष्ट्रीय सामाजिक सम्मेलन
(4) एन.एम. जोशी - ट्रेड यूनियनवाद और श्रमिक कल्याण
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

17. मूल वैदिक ग्रंथों की प्रमाणिकता पर बल देने के लिए "वेदों की ओर लौटो" का नारा निम्नलिखित में से किस समाज सुधारक द्वारा दिया गया था?
(1) राजा राममोहन राय
(2) दयानंद सरस्वती
(3) स्वामी विवेकानंद
(4) रामकृष्ण परमहंस
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

18. सूची-I (सुधार आंदोलन/विचार) को सूची-II (प्रमुख व्यक्तित्व) से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (आंदोलन/विचार)
A. शुद्धि आंदोलन
B. नव-वेदांत
C. दलित अस्मिता
D. सत्यशोधक समाज

सूची II: (प्रमुख व्यक्तित्व)
i. स्वामी विवेकानंद
ii. बी.आर. अंबेडकर
iii. दयानंद सरस्वती
iv. ज्योतिराव फुले

कूट:
(1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(2) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
(3) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

NODIA

19. आर्य समाज की आधिकारिक स्थापना वर्ष 1875 में निम्नलिखित में से किस शहर में हुई थी?
(1) लाहौर
(2) कोलकाता
(3) बंबई
(4) मद्रास
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

20. आर्य समाज की विचारधारा के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसने वेदों के साथ-साथ पुराणों की प्रमाणिकता को भी स्वीकार किया।
II. इसने मूर्ति पूजा और कर्मकांडीय पुरोहितवाद की कड़ी निंदा की।
III. इसने जन्म पर आधारित जाति व्यवस्था का विरोध किया और योग्यता पर आधारित वर्ण व्यवस्था की वकालत की।
IV. इसने कर्म और पुनर्जन्म की अवधारणा को पूरी तरह से खारिज कर दिया।
V. इसने पुरुषों और महिलाओं के लिए समान शैक्षिक अवसरों को बढ़ावा दिया।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II, और V
(2) केवल II, III, और V
(3) केवल II, IV, और V
(4) केवल I, III, और IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

21. आर्य समाज द्वारा शुरू किए गए 'शुद्धि' आंदोलन के प्रयोग का सबसे सटीक उदाहरण निम्नलिखित में से कौन-सा है?
(1) पारंपरिक गुरुकुल प्रणालियों को बढ़ावा देने के लिए विदेशी शैक्षणिक संस्थानों के बहिष्कार का आयोजन करना।
(2) पर्यावरणीय और आध्यात्मिक वातावरण को प्रतीकात्मक रूप से शुद्ध करने के लिए अग्नि यज्ञ करना।
(3) उन व्यक्तियों का पुन: धर्म परिवर्तन करना जिन्होंने पहले हिंदू धर्म छोड़कर अन्य धर्म अपना लिया था।
(4) ग्रामीण समुदायों के लिए शारीरिक शुद्धिकरण प्रदान करने हेतु बड़े पैमाने पर परोपकारी पहल करना।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

22. आर्य समाज के विभाजन से जुड़ी निम्नलिखित सभी शैक्षिक पहलें थीं, सिवाय:
(1) लाहौर में दयानंद एंग्लो-वैदिक कॉलेज की स्थापना।
(2) मुहम्मडन एंग्लो-ओरिएंटल कॉलेज की स्थापना।
(3) हरिद्वार में गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना।
(4) कॉलेज पार्टी द्वारा वैदिक मूल्यों के साथ मिश्रित अंग्रेजी शिक्षा का प्रचार।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

करना
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

8. भारतीय समाज सुधार के संदर्भ में, सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:

सूची I: (व्यक्तित्व)
A. राजा राममोहन राय
B. देवेंद्रनाथ टैगोर
C. केशव चंद्र सेन
D. ईश्वर चंद्र विद्यासागर

सूची II: (संबद्ध पत्रिका/संस्था)
i. तत्त्वबोधिनी पत्रिका
ii. इंडियन रिफॉर्म एसोसिएशन
iii. मिरात-उल-अखबार
iv. सोम प्रकाश

कूट:
(1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(2) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
(3) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

9. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन उस वैचारिक मतभेद को सही ढंग से उजागर करता है जिसके कारण 1866 में ब्रह्म समाज में पहला विभाजन हुआ?
(1) टैगोर विभिन्न ईसाई धर्मग्रंथों को शामिल करना चाहते थे, जबकि सेन केवल वैदिक ग्रंथों तक ही शिक्षाओं को सीमित रखने पर अड़े थे।
(2) केशव चंद्र सेन ने भारत की तत्काल राजनीतिक स्वतंत्रता की मांग की, जिससे धार्मिक संगठन विभाजित हो गया।
(3) सेन द्वारा अंतर-जातीय विवाह जैसे प्रगतिशील सामाजिक सुधारों की वकालत को रूढ़िवादी टैगोर ने अस्वीकार कर दिया था।
(4) देवेंद्रनाथ टैगोर ने 1857 के विद्रोह का समर्थन किया, जबकि केशव चंद्र सेन अंग्रेजों के प्रति वफादार रहे।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

10. ब्रह्म समाज के विभाजन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. 'भारतीय ब्रह्म समाज' का गठन केशव चंद्र सेन द्वारा किया गया था।
II. 'आदि ब्रह्म समाज' देवेंद्रनाथ टैगोर के नेतृत्व में रहा।
III. 'साधारण ब्रह्म समाज' की स्थापना केशव चंद्र सेन के उन अनुयायियों द्वारा की गई थी जिन्होंने उनकी अल्पायु पुत्री के विवाह का विरोध किया था।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल III
(4) I, II, और III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

11. निम्नलिखित सामाजिक-धार्मिक संगठनों में से उनके उद्भव के भौगोलिक क्षेत्र के आधार पर विषम को पहचानिए:
(1) ब्रह्म समाज
(2) तत्त्वबोधिनी सभा
(3) साधारण ब्रह्म समाज
(4) प्रार्थना समाज
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

12. निम्नलिखित में से कौन-सा इन सामाजिक-धार्मिक संगठनों की स्थापना का सही कालानुक्रमिक क्रम है?
(1) आत्मीय सभा, ब्रह्म समाज, तत्त्वबोधिनी सभा, प्रार्थना समाज
(2) ब्रह्म समाज, आत्मीय सभा, प्रार्थना समाज, तत्त्वबोधिनी सभा
(3) आत्मीय सभा, तत्त्वबोधिनी सभा, ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज
(4) तत्त्वबोधिनी सभा, आत्मीय सभा, ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

13. प्रार्थना समाज की स्थापना 1867 में बंबई में मुख्य रूप से किस ब्रह्म समाज के नेता के मार्गदर्शन में हुई थी, जिन्होंने महाराष्ट्र का दौरा किया था?
(1) राजा राममोहन राय
(2) स्वामी विवेकानंद
(3) केशव चंद्र सेन
(4) देवेंद्रनाथ टैगोर
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

14. महाराष्ट्र में सामाजिक सुधारों के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

कथन I: प्रार्थना समाज ने हिंदू परंपराओं से पूरी तरह नाता तोड़ने के बजाय सामाजिक सुधार के प्रति क्रमिक दृष्टिकोण अपनाया।

कथन II: एम.जी. रानाडे और आर.जी. भंडारकर इसके सबसे प्रमुख नेताओं में से थे।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

15. महाराष्ट्र में सामाजिक सुधार गतिविधियों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. प्रार्थना समाज ने कड़ाई से केवल धार्मिक सुधारों पर ध्यान केंद्रित किया और विधवा पुनर्विवाह जैसे सामाजिक मुद्दों से परहेज किया।
II. डेक्कन एजुकेशन सोसाइटी महाराष्ट्र में सुधारवादी

Click Here to Buy book on Amazon

III. वह भारतीय राष्ट्रीय जागरण और होम रुल आंदोलन की कट्टर विरोधी थीं।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II, और III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

31. शिक्षित भारतीय मध्यम वर्ग पर थियोसोफिकल सोसाइटी की गतिविधियों का प्राथमिक प्रभाव क्या था?

(1) इसने उन्हें अपनी प्राचीन सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत पर गर्व महसूस करने में मदद की।
(2) इसके कारण उन्होंने अपनी पारंपरिक धार्मिक प्रथाओं को पूरी तरह से त्याग दिया।
(3) इसके कारण अभिजात वर्ग का बड़े पैमाने पर ईसाई धर्म में परिवर्तन हुआ।
(4) इसने दक्षिण भारत में जाति व्यवस्था के तत्काल पतन की शुरुआत की।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

32. सामाजिक-धार्मिक सुधार युग के दौरान स्थापित निम्नलिखित संस्थानों पर विचार कीजिए:

I. सेंट्रल हिंदू कॉलेज, वाराणसी
II. मुहम्मडन एंग्लो-ओरिएंटल कॉलेज, अलीगढ़
III. रामकृष्ण मिशन

निम्नलिखित में से कौन-सा इनकी स्थापना का सही कालानुक्रमिक क्रम है?

(1) I, II, III
(2) II, III, I
(3) II, I, III
(4) III, II, I
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

33. अलीगढ़ आंदोलन मुख्य रूप से सर सैयद अहमद खान द्वारा निम्नलिखित में से किस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए शुरु किया गया था?

(1) ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध सशस्त्र संघर्ष छेड़ना
(2) भारतीय मुसलमानों के बीच आधुनिक पश्चिमी शिक्षा और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देना
(3) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के बैनर तले हिंदुओं और मुसलमानों को एकजुट करना
(4) रुढ़िवादी इस्लामी धर्मशास्त्र को पुनर्जीवित करना और पारंपरिक मदरसा शिक्षा का कड़ाई से पालन करना
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

34. धर्म पर सर सैयद अहमद खान के विचारों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?

(1) उन्होंने आधुनिक तर्कवाद और विज्ञान के नजरिए से धार्मिक सिद्धांतों की व्याख्या करने का तर्क दिया।
(2) उन्होंने कड़ाई से धर्मनिरपेक्ष समाज की वकालत करने के लिए कुरान के अधिकार को पूरी तरह से खारिज कर दिया।
(3) उन्होंने परंपरा को बनाए रखने के लिए पश्चिमी वैज्ञानिक साहित्य का उर्दू में अनुवाद करने का सक्रिय विरोध किया।
(4) उन्होंने इस्लामी कानूनों की व्याख्या करने और उन्हें लागू करने के लिए पारंपरिक पादरी वर्ग के विशेष अधिकार का समर्थन किया।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

35. अलीगढ़ आंदोलन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. इसने इस्लामी आस्था को आधुनिक वैज्ञानिक विचार के साथ जोड़ने का प्रयास किया।
II. इसने पर्दा प्रथा को खारिज कर दिया और स्कूलों में महिलाओं की आधुनिक शिक्षा को बढ़ावा देने में अग्रणी था।
III. सर सैयद अहमद खान ने 'यूनाइटेड इंडियन पैट्रियोटिक एसोसिएशन' की स्थापना की।
IV. यह आंदोलन ब्रिटिश शासन के प्रति शत्रुतापूर्ण था और शुरुआती कांग्रेस के साथ संरेखित था।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन गलत है/हैं?

(1) केवल I और III
(2) केवल II और IV
(3) केवल I और II
(4) केवल III और IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

36. निम्नलिखित में से कौन-सी अलीगढ़ आंदोलन की मुख्य विशेषता नहीं थी?

(1) ब्रिटिश सरकार के प्रति वफादारी की वकालत करना।
(2) मुसलमानों के बीच बहुविवाह जैसी सामाजिक बुराइयों में सुधार करना।
(3) MAO कॉलेज के माध्यम से अंग्रेजी शिक्षा को बढ़ावा देना।
(4) एक पुनरुत्थानवादी दृष्टिकोण को बढ़ावा देना जिसने पश्चिमी दार्शनिक विचारों को खारिज कर दिया।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

37. ब्रिटिश शिक्षा और संस्कृति के प्रति उनके प्राथमिक वैचारिक रुख के आधार पर निम्नलिखित इस्लामी आंदोलनों में से विषम को पहचानिए:

(1) अलीगढ़ आंदोलन
(2) अहमदिया आंदोलन
(3) देवबंद आंदोलन
(4) नवाब अब्दुल लतीफ के नेतृत्व वाला आंदोलन
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

Downloaded from www.pdf.tube

23. रामकृष्ण परमहंस ने ईश्वर प्राप्ति के लिए मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किस मार्ग पर बल दिया?
(1) पारंपरिक वैदिक अनुष्ठानों का पालन और स्थापित जाति नियमों का रखरखाव।
(2) जंगलों में आध्यात्मिक एकांत प्राप्त करने के लिए सांसारिक कर्तव्यों का पूर्ण त्याग।
(3) विदेशी औपनिवेशिक और सांस्कृतिक प्रभुत्व की संरचनाओं के विरुद्ध प्रत्यक्ष राजनीतिक आंदोलन।
(4) आध्यात्मिक भक्ति, सार्वभौमिकता और सभी प्रमुख धार्मिक सत्यों की अंतर्निहित एकता।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

24. स्वामी विवेकानंद के 'नव-वेदांत' का सबसे उपयुक्त वर्णन कौन-सा है?
(1) इसने वेदांत की आध्यात्मिक शिक्षाओं को व्यावहारिक समाज सेवा और मानवतावाद के साथ जोड़ा।
(2) इसने वेदांत की व्याख्या कड़ाई से एक ऐसी तपस्वी परंपरा के रूप में की जिसमें समाज से अलग रहने की आवश्यकता थी।
(3) इसने बलपूर्वक धर्म परिवर्तन द्वारा हिंदू धर्म को एकमात्र वैध वैश्विक धर्म के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया।
(4) इसने उपनिषदों को खारिज कर दिया और पूरी तरह से भगवद गीता की शिक्षाओं पर भरोसा किया।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

25. भारतीय राष्ट्रीय जागरण के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए, जहाँ एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A): स्वामी विवेकानंद ने राष्ट्रीय जागरण और युवाओं की शारीरिक शक्ति पर बहुत जोर दिया।
कारण (R): उनका मानना था कि एक कमजोर और भूखा राष्ट्र आध्यात्मिकता को नहीं समझ सकता और न ही अपना उत्थान कर सकता है।
नीचे दिए गए कूट में से सही उत्तर चुनिए:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

26. स्वामी विवेकानंद के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) उन्होंने पूर्वी आध्यात्मिकता से पश्चिमी वैज्ञानिक भौतिकवाद के पूर्ण अलगाव की वकालत की।
(2) उन्होंने मानवीय राहत और सामाजिक कार्यों के समन्वय के लिए 1897 में रामकृष्ण मिशन की स्थापना की।
(3) उन्होंने 1893 में विश्व धर्म संसद में भारतीय आध्यात्मिक परंपराओं का प्रतिनिधित्व किया।
(4) उन्होंने अस्पृश्यता के विरुद्ध अभियान चलाया और इस प्रथा को मौलिक रूप से एक सामाजिक बुराई बताया।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

27. रामकृष्ण मठ और रामकृष्ण मिशन का मुख्यालय कहाँ स्थित है?
(1) दक्षिणेश्वर
(2) कन्याकुमारी
(3) हरिद्वार
(4) बेलूर
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

28. सूची-I (पुस्तक/प्रकाशन) को सूची-II (लेखक/सुधारक) से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (पुस्तक/प्रकाशन)
A. सत्यार्थ प्रकाश
B. गुलामगिरी
C. जाति का विनाश
D. कर्म योग
सूची II: (लेखक/सुधारक)
i. स्वामी विवेकानंद
ii. दयानंद सरस्वती
iii. बी.आर. अंबेडकर
iv. ज्योतिराव फुले
कूट:
(1) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(2) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(3) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(4) A-i, B-iv, C-iii, D-ii
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

NODIA

29. भारत में सामाजिक आंदोलनों के इतिहास के संदर्भ में, थियोसोफिकल सोसाइटी के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: थियोसोफिकल सोसाइटी की स्थापना मूल रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका में मैडम एच.पी. ब्लावात्स्की और कर्नल एच.एस. ऑलकाट द्वारा की गई थी।
कथन II: भारत में, सोसाइटी ने प्राचीन हिंदू और बौद्ध दर्शन का कड़ा विरोध करके व्यापक लोकप्रियता हासिल की।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

30. भारतीय समाज में एनी बेसेंट के योगदान के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उन्होंने भगवद गीता का अंग्रेजी में अनुवाद किया।
II. उन्होंने वाराणसी में सेंट्रल हिंदू कॉलेज की स्थापना की, जो बाद में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय बना।

को अज्ञानता और शोषण से मुक्त करने का सबसे शक्तिशाली हथियार है।
नीचे दिए गए कूट में से सही उत्तर चुनिए:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

46. डॉ. बी.आर. अंबेडकर के नेतृत्व में 20वीं शताब्दी में 'दलित अस्मिता' की अवधारणा पिछले सुधार आंदोलनों से अलग थी क्योंकि इसने:
(1) राजनीतिक शक्ति के बिना रीति-रिवाजों के संस्कृतिकरण के माध्यम से सामाजिक स्थिति सुधारने की कोशिश की।
(2) मुख्य रूप से उच्च जाति के हिंदू सुधारकों के परोपकार और सहानुभूति पर भरोसा किया।
(3) जाति पदानुक्रम से बचने के लिए अन्य धर्मों में बड़े पैमाने पर धर्म परिवर्तन को सुगम बनाने का लक्ष्य रखा।
(4) राजनीतिक सशक्तिकरण, पृथक निर्वाचक मंडल और व्यापक संवैधानिक सुरक्षा उपायों की मांग की।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

47. 1927 में डॉ. बी.आर. अंबेडकर के नेतृत्व में हुए महाड़ सत्याग्रह के मुख्य उद्देश्य को निम्नलिखित में से कौन परिभाषित करता है?
(1) सार्वजनिक चवदार तालाब से पानी भरने के अछूतों के अधिकार को सुरक्षित करना।
(2) दबे-कुचले वर्गों के लिए पृथक निर्वाचक मंडल की मांग करना।
(3) साइमन कमीशन के विरुद्ध विरोध प्रदर्शन करना।
(4) नासिक के कालाराम मंदिर में मंदिर प्रवेश की मांग करना।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

48. बी.आर. अंबेडकर के योगदान के संदर्भ में, सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (संगठन/पत्रिका)
A. बहिष्कृत हितकारिणी सभा
B. मूकनायक
C. इंडिपेंडेंट लेबर पार्टी
D. शेड्यूल्ड कास्ट्स फेडरेशन
सूची II: (वर्ष)
i. 1920
ii. 1924
iii. 1936
iv. 1942
कूट:
(1) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(2) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(3) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

49. भारत में जाति व्यवस्था के विरुद्ध संघर्ष के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: अंबेडकर का मानना था कि जाति व्यवस्था एक मामूली सामाजिक विकृति थी जिसे सहभोज के माध्यम से ठीक किया जा सकता था।
कथन II: 'जाति का विनाश' में उन्होंने तर्क दिया कि जाति व्यवस्था को तोड़ने का वास्तविक तरीका अंतर-जातीय विवाह और उन धार्मिक धारणाओं को नष्ट करना है जिन पर जाति आधारित है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

50. 1932 के पूना पैक्ट के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इस पर बी.आर. अंबेडकर और महात्मा गांधी के बीच सहमति बनी थी।
II. इसने दबे-कुचले वर्गों के लिए पृथक निर्वाचक मंडल प्रदान किया।
III. इसने प्रांतीय विधानमंडलों में आरक्षित सीटों के पक्ष में पृथक निर्वाचक मंडल के विचार को त्याग दिया।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II, और III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

51. महाड़ सत्याग्रह के दौरान बी.आर. अंबेडकर द्वारा मनुस्मृति जलाने का गहरा प्रभाव क्या था?
(1) इसके कारण ब्रिटिश प्रशासन ने तुरंत जाति व्यवस्था के पूर्ण उन्मूलन के लिए कानून बनाया।
(2) इसने पूरे देश में दलित समुदायों के लिए सभी रुढ़िवादी मंदिरों को तुरंत खोलने के लिए विवश किया।
(3) यह उन रुढ़िवादी धर्मग्रंथों की आमूल-चूल अस्वीकृति का प्रतीक था जो अस्पृश्यता का आधार प्रदान करते थे।
(4) इसके परिणामस्वरुप उन्हें बंबई विधानमंडल की सदस्यता से तुरंत और स्थायी रूप से निष्कासित कर दिया गया।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

52. डॉ. बी.आर. अंबेडकर के नेतृत्व में हुए आंदोलनों/घटनाओं का सही कालानुक्रमिक क्रम निम्नलिखित में से कौन-सा है?
(1) महाड़ सत्याग्रह, कालाराम मंदिर प्रवेश आंदोलन, पूना

Click Here to Buy book on Amazon

B. एच.एस. ऑलकाट
C. एनी बेसेंट
D. एलन ऑक्टेवियन ह्यूम

सूची II: (योगदान)
i. भारत में होम रूल लीग की शुरुआत की
ii. 1875 में न्यूयॉर्क में सोसाइटी की सह-स्थापना की
iii. मुख्यालय अड्यार, मद्रास स्थानांतरित किया
iv. सोसाइटी का समर्थन किया लेकिन मुख्य रूप से कांग्रेस की स्थापना के लिए जाने जाते हैं

कूट:
(1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(2) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(3) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(4) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

69. सर सैयद अहमद खान ने मुसलमानों के बीच आधुनिक विचारों और वैज्ञानिक तर्क को फैलाने के लिए एक पत्रिका शुरू की थी। निम्नलिखित में से कौन-सा उनके सुधारवादी प्रकाशनों से संबद्ध नहीं था?
(1) तहजीब-उल-अखलाक
(2) द लॉयल मुहम्मडन्स ऑफ इंडिया
(3) अल-हिलाल
(4) कमेंट्री ऑन द होली बाइबिल
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

70. देवबंद आंदोलन के संस्थापकों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसकी स्थापना मोहम्मद कासिम नानौतवी और रशीद अहमद गंगोही ने की थी।
II. इसकी स्थापना वर्ष 1866 में सहारनपुर जिले में हुई थी।
III. इसका उद्देश्य सर सैयद अहमद खान की एम.ए.ओ. कॉलेज की पहल का समर्थन करना था।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल III
(3) केवल II और III
(4) केवल I और III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

71. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन ज्योतिराव फुले के सत्यशोधक समाज के सामाजिक आधार की सही पहचान करता है?
(1) यह मुख्य रूप से बंबई शहर में स्थित उदार उच्च-जाति के सुधारकों से बना था।
(2) यह पूरी तरह से ब्रिटिश औपनिवेशिक प्रशासकों द्वारा प्रदान किए गए संस्थागत समर्थन पर निर्भर था।
(3) यह विशेष रूप से उन अछूत व्यक्तियों के लिए एक संगठन था जिन्होंने अन्य धर्म अपना लिया था।
(4) यह माली, तेली, कुनबी और धनगर जैसे पिछड़े वर्गों का एक आंदोलन था।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

72. दलित और निचली जाति के अधिकारों के लिए हुई निम्नलिखित ऐतिहासिक घटनाओं पर विचार कीजिए:
I. महाड़ सत्याग्रह
II. सत्यशोधक समाज की स्थापना
III. बहिष्कृत हितकारिणी सभा की स्थापना

निम्नलिखित में से कौन-सा इन घटनाओं का सही कालानुक्रमिक क्रम है?
(1) II, III, I
(2) III, I, II
(3) II, I, III
(4) I, II, III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

73. महाड़ सत्याग्रह और बी.आर. अंबेडकर के नेतृत्व में हुए बाद के आंदोलनों का प्रत्यक्ष सामाजिक-राजनीतिक प्रभाव क्या था?
(1) बंबई प्रेसीडेंसी के ब्रिटिश गवर्नर का तत्काल इस्तीफा।
(2) पूरे ग्रामीण महाराष्ट्र में जाति पदानुक्रम का पूर्ण और तात्कालिक उन्मूलन।
(3) दबे-कुचले वर्गों की एक सुदृढ़ राजनीतिक पहचान और संगठित अधिकारों का दावा।
(4) हिंदू महासभा की संरचनाओं में दबे-कुचले वर्गों के आंदोलनों का पूर्ण विलय।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

74. ब्रिटिश भारत में सामाजिक विधान के संदर्भ में, 1891 के आयु सहमति अधिनियम के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

कथन I: यह मुख्य रूप से पारसी सुधारक बी.एम. मालाबारी के प्रयासों के कारण पारित किया गया था।

कथन II: इस अधिनियम को सभी रुढ़िवादी हिंदू नेताओं, विशेष रूप से बाल गंगाधर तिलक का पूर्ण समर्थन प्राप्त हुआ।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

NODIA

75. पंडिता रमाबाई के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उन्होंने निराश्रित विधवाओं की सहायता के लिए 'शारदा सदन' की स्थापना की।
II. वे एक रुढ़िवादी हिंदू थीं जिन्होंने धर्म परिवर्तन का कड़ा विरोध किया।
III. वे "द हाई-कास्ट हिंदू वुमन" पुस्तक की लेखिका थीं।
IV. उन्होंने पारंपरिक हिंदू समाज की पितृसत्तात्मक प्रकृति की आलोचना की।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

I. सुधारकों ने अक्सर आधुनिक सामाजिक परिवर्तनों को न्यायसंगत ठहराने के लिए पारंपरिक धार्मिक ग्रंथों का उपयोग किया।
II. ब्रह्म समाज उपनिषदिक दर्शन और पश्चिमी उदारवाद दोनों से प्रभावित था।
III. रामकृष्ण मिशन ने पश्चिमी मानवतावाद को पूरी तरह से खारिज कर दिया।
IV. सर सैयद अहमद खान ने समकालीन तर्कवाद के आलोक में कुरान की व्याख्या करने की कोशिश की।
V. थियोसोफिकल सोसाइटी ने प्राचीन भारतीय दर्शन से प्रेरणा ली।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III, और IV
(2) केवल I, II, IV, और V
(3) केवल II, III, IV, और V
(4) केवल I, III, IV, और V
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

61. भारतीय सुधारकों के वैश्विक दृष्टिकोण के संदर्भ में, राजा राममोहन राय के दृष्टिकोण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: राजा राममोहन राय की अंतरराष्ट्रीय घटनाओं में गहरी रुचि थी और उन्होंने विश्व स्तर पर स्वतंत्रता के उद्देश्य का समर्थन किया।
कथन II: उन्होंने फ्रांसीसी क्रांति का विरोध किया और नेपल्स विद्रोह की विफलता पर खुशी मनाई।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

62. देवेंद्रनाथ टैगोर द्वारा स्थापित 'तत्त्वबोधिनी सभा' का ब्रह्म समाज में विलय किस वर्ष हुआ था?
(1) 1839
(2) 1843
(3) 1859
(4) 1866
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

63. 'इंडियन रिफॉर्म एसोसिएशन' की स्थापना 1870 में किसके द्वारा की गई थी?
(1) केशव चंद्र सेन
(2) राधाकांत देब
(3) एम.जी. रानाडे
(4) एनी बेसेंट
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

64. सामाजिक सुधार के प्रति एम.जी. रानाडे और प्रार्थना समाज के दृष्टिकोण को सबसे अच्छी तरह से किस रुप में समझा जा सकता है?
(1) कट्टरपंथी और मूर्तिभंजक
(2) क्रमिक और शिक्षा एवं अनुनय पर निर्भर
(3) उग्रवादी और क्रांतिकारी
(4) पुनरुत्थानवादी और पूरी तरह से पश्चिमी विरोधी
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

65. वैदिक पुनरुत्थानवादी आंदोलनों के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए, जहाँ एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रुप में अंकित किया गया है:
कथन (A): स्वामी दयानंद सरस्वती ने जन्म आधारित जाति व्यवस्था का कड़ा विरोध किया।
कारण (R): वे वर्ण व्यवस्था की वैदिक अवधारणा में विश्वास करते थे, जो व्यक्ति की योग्यता, व्यवसाय और चरित्र पर आधारित थी।
नीचे दिए गए कूट में से सही उत्तर चुनिए:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

66. 1893 में आर्य समाज में हुए विभाजन के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) गुरुकुल पार्टी ने वैदिक मूल्यों के साथ संयुक्त पश्चिमी अंग्रेजी शिक्षा की वकालत की।
(2) कॉलेज पार्टी लाला हंसराज और लाला लाजपत राय के नेतृत्व में कार्य करती थी।
(3) मुख्य विभाजन कॉलेज पार्टी और गुरुकुल पार्टी के गुटों के बीच हुआ था।
(4) गुरुकुल पार्टी का प्रबंधन स्वामी श्रद्धानंद के नेतृत्व में किया गया था।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

67. शिकागो में विश्व धर्म संसद में स्वामी विवेकानंद का ऐतिहासिक संबोधन, जिसने हिंदू धर्म को एक प्रमुख विश्व धर्म के रुप में प्रस्तुत किया, किस वर्ष हुआ था?
(1) 1889
(2) 1893
(3) 1897
(4) 1902
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

68. सूची-I (थियोसोफिकल सोसाइटी के नेता) को सूची-II (विशिष्ट योगदान) से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (नेता)
A. एच.पी. ब्लावात्स्की

Downloaded from www.pdf.tube

पैक्ट, बौद्ध धर्म अपनाना
(2) पूना पैक्ट, महाड़ सत्याग्रह, कालाराम मंदिर प्रवेश आंदोलन, बौद्ध धर्म अपनाना
(3) कालाराम मंदिर प्रवेश आंदोलन, महाड़ सत्याग्रह, पूना पैक्ट, बौद्ध धर्म अपनाना
(4) महाड़ सत्याग्रह, पूना पैक्ट, कालाराम मंदिर प्रवेश आंदोलन, बौद्ध धर्म अपनाना
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

53. हिंदू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम, जिसने हिंदू विधवाओं के पुनर्विवाह को वैध बना दिया, किस वर्ष और मुख्य रूप से किस सुधारक के प्रयासों के कारण लागू किया गया था?
(1) 1829, राजा राममोहन राय
(2) 1891, बी.एम. मालाबारी
(3) 1856, ईश्वर चंद्र विद्यासागर
(4) 1872, केशव चंद्र सेन
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

54. महिला सुधार के क्षेत्र में डी.के. कर्वे द्वारा निभाई गई भूमिका का सबसे उपयुक्त वर्णन निम्नलिखित में से कौन-सा है?
(1) उन्होंने मुस्लिम समुदायों के बीच पर्दा प्रथा के पूर्ण उन्मूलन के लिए सफलतापूर्वक अभियान चलाया।
(2) उन्होंने प्रथम भारतीय महिला विश्वविद्यालय की स्थापना की और महिला शिक्षा पर व्यापक रूप से ध्यान केंद्रित किया।
(3) उन्होंने 1891 के आयु सहमति अधिनियम के पारित होने के लिए मुख्य भूमिका निभाई।
(4) उन्होंने स्वदेशी युग के दौरान महिलाओं के लिए सार्वभौमिक मतदान अधिकारों की मांग करते हुए विरोध प्रदर्शनों का नेतृत्व किया।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

55. 19वीं और 20वीं शताब्दी की शुरुआत में महिला सुधार आंदोलनों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. पंडिता रमाबाई ने महिला शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए आर्य महिला समाज की स्थापना की।
II. बाल विवाह निषेध अधिनियम (सारदा अधिनियम) 1929 में विवाह की आयु निर्धारित करते हुए पारित किया गया था।
III. वीरेशलिंगम पंतुलु ने मद्रास प्रेसीडेंसी में विधवा पुनर्विवाह के लिए व्यापक कार्य किया।
IV. 'अखिल भारतीय महिला सम्मेलन' जैसे महिला संगठन राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन से पूरी तरह अलग थे।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल IV
(2) केवल I और II
(3) केवल II और III
(4) I, II, और III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

56. ब्रिटिश भारत में महिला सुधार से जुड़े विधायी उपायों में निम्नलिखित सभी शामिल थे, सिवाय:
(1) मंदिर प्रवेश उद्घोषणा (1936)
(2) नेटिव मैरिज एक्ट (1872)
(3) आयु सहमति अधिनियम (1891)
(4) सारदा अधिनियम (1929)
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

57. निम्नलिखित सुधारकों में से उनकी गतिविधि के प्राथमिक क्षेत्र के आधार पर विषम को पहचानिए:
(1) ईश्वर चंद्र विद्यासागर
(2) राजा राममोहन राय
(3) कंदुकुरी वीरेशलिंगम
(4) देवेंद्रनाथ टैगोर
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

NODIA

58. सूची-I (सुधारक) को सूची-II (महिला सुधार में योगदान) से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (सुधारक)
A. ईश्वर चंद्र विद्यासागर
B. बी.एम. मालाबारी
C. डी.के. कर्वे
D. पंडिता रमाबाई
सूची II: (योगदान)
i. 1856 का हिंदू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम
ii. 1891 के आयु सहमति अधिनियम के लिए अभियान
iii. एस.एन.डी.टी. महिला विश्वविद्यालय
iv. शारदा सदन
कूट:
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(4) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

59. निम्नलिखित में से कौन-सा 19वीं शताब्दी के सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों की एक प्रमुख सीमा की सही पहचान करता है?
(1) वे भारतीय घरेलू जीवन में महिलाओं की स्थिति को संबोधित करने में पूरी तरह विफल रहे।
(2) वे पूरी तरह से ब्रिटिश सरकार की प्रशासनिक शाखाओं द्वारा वित्त पोषित और निर्देशित थे।
(3) उन्होंने धार्मिक सुधार की उपेक्षा करते हुए विशेष रूप से आर्थिक सुधारों पर ध्यान केंद्रित किया।
(4) उनका सामाजिक आधार संकीर्ण था और वे मुख्य रूप से शहरी, शिक्षित मध्यम वर्ग तक ही सीमित थे।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

60. भारतीय सुधार आंदोलनों की समन्वयवादी प्रकृति के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

(1) केवल I, II, और III
(2) केवल I, III, और IV
(3) केवल II, III, और IV
(4) I, II, III, और IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

76. महिला शिक्षा में डी.के. कर्वे का महान कार्य 1916 में एस.एन. डी.टी. महिला विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ संपन्न हुआ। यह विश्वविद्यालय प्रारंभ में कहाँ स्थापित किया गया था?
(1) कोलकाता
(2) पुणे
(3) मद्रास
(4) दिल्ली
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

77. सुधारकों और उनकी गतिविधि के प्राथमिक क्षेत्र के संबंध में गलत सुमेलित युग्म की पहचान कीजिए:
(1) श्री नारायण गुरु - केरल
(2) दयानंद सरस्वती - पंजाब और उत्तर भारत
(3) कंदुकुरी वीरेशलिंगम - महाराष्ट्र
(4) राजा राममोहन राय - बंगाल
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

78. भारतीय सामाजिक इतिहास के संदर्भ में, सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (अवधारणा)
A. सती
B. शुद्धि
C. पर्दा
D. बहिष्कृत
सूची II: (संदर्भ/अर्थ)
i. महिलाओं का पृथक्करण
ii. बहिष्कृत या दबे-कुचले
iii. विधवा का आत्मदाह
iv. शुद्धिकरण या पुन: धर्म परिवर्तन
कूट:
(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

79. रामकृष्ण मिशन द्वारा की जाने वाली समाज सेवा का सबसे उपयुक्त दार्शनिक आधार निम्नलिखित में से कौन-सा है?
(1) मानव सेवा ही ईश्वर सेवा है (जीव ही शिव है)।
(2) राजनीतिक प्रभाव प्राप्त करने के साधन के रूप में दान।
(3) धर्म परिवर्तन को सुगम बनाने के लिए गरीबों की सहायता करना।
(4) अनिवार्य वैदिक यज्ञों की पूर्ति।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

80. 19वीं शताब्दी के सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों के निम्नलिखित व्यापक विषयों पर विचार कीजिए:
I. जातिगत भेदभाव और अस्पृश्यता का उन्मूलन।
II. शिक्षा और भेदभावपूर्ण प्रथाओं की समाप्ति के माध्यम से महिलाओं की मुक्ति।
III. अंधविश्वास के स्थान पर तर्कवाद और आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देना।
IV. ब्रिटिश संस्कृति के पक्ष में सभी प्राचीन भारतीय परंपराओं का पूर्ण त्याग।
V. जनता तक पहुँचने के लिए स्थानीय भाषाओं का उपयोग।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल IV
(3) केवल III और V
(4) केवल II, III, और IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

www.nodia.in

Click Here to Buy book on Amazon

42. (1) उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को उसके शुरुआती ब्रिटिश-विरोधी चरण के दौरान सक्रिय समर्थन दिया।
ज्योतिराव फुले शुरुआती कांग्रेस के आलोचक थे क्योंकि उनका मानना था कि यह संगठन केवल उच्च जातियों के हितों का प्रतिनिधित्व करता है और आम जनता तथा किसानों की समस्याओं की उपेक्षा करता है। उन्होंने तर्क दिया कि जब तक समाज से जाति प्रथा समाप्त नहीं होती, सच्ची राष्ट्रीय एकता संभव नहीं है। उन्होंने महिला शिक्षा के लिए पहला स्कूल खोला और ब्राह्मणवादी वर्चस्व को ऐतिहासिक और सामाजिक आधार पर चुनौती दी।

43. (4) गुलामगिरी
ज्योतिराव फुले ने 1873 में अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'गुलामगिरी' लिखी, जो जाति प्रथा की क्रूरता पर एक तीखा प्रहार थी। उन्होंने इस पुस्तक को उन अमेरिकी नागरिकों को समर्पित किया, जिन्होंने वहाँ दासता के विरुद्ध संघर्ष किया और अश्वेतों को मुक्त कराया। फुले ने भारत में निचली जातियों की स्थिति की तुलना अमेरिका के दासों से की और संदेश दिया कि मानवता के विरुद्ध हो रहे किसी भी शोषण का अंत करना प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है।

44. (2) ई.वी. रामास्वामी नायकर - आत्म-सम्मान आंदोलन
ई.वी. रामास्वामी नायकर 'पेरियार' ने दक्षिण भारत में आत्म-सम्मान आंदोलन शुरु किया, जिसका उद्देश्य पिछड़ी जातियों में गौरव पैदा करना और ब्राह्मणवादी प्रभुत्व को समाप्त करना था। श्री नारायण गुरु ने केरल में 'एक जाति, एक धर्म, एक ईश्वर' का संदेश दिया था। डॉ. अंबेडकर ने बहिष्कृत हितकारिणी सभा का गठन किया और ज्योतिराव फुले ने सत्यशोधक समाज की नींव रखी। अतः केवल दूसरा विकल्प ही सही सुमेलित है।

45. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
ज्योतिराव फुले का मानना था कि ज्ञान ही वह प्रकाश है जो सामाजिक गुलामी की जंजीरों को तोड़ सकता है। उन्होंने कठिन परिस्थितियों और सामाजिक बहिष्कार का सामना करते हुए भी दलितों और महिलाओं के लिए शिक्षा के द्वार खोले। उनका तर्क था कि शिक्षा के अभाव के कारण ही निचली जातियाँ अपने अधिकारों से वंचित हैं और उनका शोषण किया जा रहा है। उनके इन प्रयासों ने महाराष्ट्र में व्यापक सामाजिक क्रांति का सूत्रपात किया।

46. (4) राजनीतिक सशक्तिकरण, पृथक निर्वाचक मंडल और व्यापक संवैधानिक सुरक्षा उपायों की मांग की।
बी.आर. अंबेडकर का आंदोलन पिछले सुधारों से भिन्न था क्योंकि उन्होंने केवल सामाजिक सुधारों के बजाय राजनीतिक शक्ति पर ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने तर्क दिया कि दलितों की स्थिति तब तक नहीं सुधरेगी जब तक उनके पास विधायी शक्ति नहीं होगी। उन्होंने आरक्षण, पृथक निर्वाचक मंडल और कानूनी अधिकारों की मांग की। उनका दृष्टिकोण संरचनात्मक था जिसने दलितों को एक राजनीतिक शक्ति के रूप में संगठित होने के लिए प्रेरित किया।

47. (1) सार्वजनिक चवदार तालाब से पानी भरने के अछूतों के अधिकार को सुरक्षित करना।
महाड़ सत्याग्रह 1927 में डॉ. अंबेडकर द्वारा आयोजित एक ऐतिहासिक घटना थी, जिसने अस्पृश्यता को सार्वजनिक रूप से चुनौती दी। यह आंदोलन चवदार तालाब के जल पर सभी का समान अधिकार स्थापित करने के लिए था, जिसे तत्कालीन समाज में अछूतों के लिए वर्जित माना जाता था। इस सत्याग्रह ने सिद्ध किया कि दलित समुदाय अब अपने नागरिक अधिकारों के लिए संघर्ष करने को तैयार है। इसी दौरान उन्होंने मनुस्मृति का दहन भी किया था।

NODIA

48. (1) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
डॉ. अंबेडकर ने दलितों के उत्थान के लिए विभिन्न चरणों में महत्वपूर्ण कदम उठाए। उन्होंने 1920 में 'मूकनायक' पत्रिका के माध्यम से शोषितों की आवाज उठाई और 1924 में 'बहिष्कृत हितकारिणी सभा' की स्थापना की। आगे चलकर 1936 में उन्होंने 'इंडिपेंडेंट लेबर पार्टी' बनाई और 1942 में दलितों के राजनीतिक प्रतिनिधित्व हेतु 'शेड्यूल्ड कास्ट्स फेडरेशन' का गठन किया। ये प्रयास उनके जीवनपर्यंत संघर्ष के प्रतीक हैं।

49. (4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
डॉ. अंबेडकर का मानना था कि जाति व्यवस्था कोई सामान्य सामाजिक बुराई नहीं है, बल्कि इसकी जड़ें उन धार्मिक ग्रंथों में हैं जो इसे पवित्रता प्रदान करते हैं। अपनी कृति 'जाति का विनाश' में उन्होंने स्पष्ट किया कि जब तक अंतर-जातीय विवाह को बढ़ावा नहीं दिया जाएगा और जातिगत श्रेष्ठता की धारणाओं को नष्ट नहीं किया जाएगा, तब तक समाज में वास्तविक समानता और बंधुत्व स्थापित नहीं हो सकता।

50. (3) केवल I और III
पूना पैक्ट 1932 में महात्मा गांधी और डॉ. बी.आर. अंबेडकर के मध्य हुआ एक महत्वपूर्ण समझौता था। इसके तहत दलितों के लिए ब्रिटिश सरकार द्वारा घोषित 'पृथक निर्वाचक मंडल' के विचार को त्याग दिया गया। इसके बदले में प्रांतीय और केंद्रीय विधानमंडलों में दलितों के लिए आरक्षित सीटों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि की गई। यह समझौता हिंदू समाज के भीतर दलितों के राजनीतिक एकीकरण का प्रयास था, यद्यपि अंबेडकर इससे पूर्णतः संतुष्ट नहीं थे।

51. (3) यह उन रुढ़िवादी धर्मग्रंथों की आममल-चूल अस्वीकृति का प्रतीक था जो अस्पृश्यता का आधार प्रदान करते थे।
महाड़ सत्याग्रह के दौरान मनुस्मृति का जलाया जाना भारतीय इतिहास की एक प्रतीकात्मक और साहसी घटना थी। डॉ. अंबेडकर ने इसके माध्यम से उन सभी कानूनों और सामाजिक व्यवस्थाओं को नकार दिया जो मनुष्य को उसकी जाति के आधार पर अपवित्र मानते थे। यह कृत्य रुढ़िवादी विचारधारा के विरुद्ध एक खुली चुनौती थी, जिसने दलितों को अपनी मानसिक दासता से मुक्त होने और आत्म-सम्मान के लिए उठ खड़े होने का क्रांतिकारी संदेश दिया।

लगाकर 'साधारण ब्रह्म समाज' की स्थापना की। यह संगठन लोकतांत्रिक सिद्धांतों पर आधारित था और इसने महिला शिक्षा एवं सशक्तिकरण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किया।

11. (4) प्रार्थना समाज
भौगोलिक विश्लेषण से स्पष्ट है कि ब्रह्म समाज, तत्त्वबोधिनी सभा और साधारण ब्रह्म समाज की उत्पत्ति बंगाल क्षेत्र में हुई थी। ये सभी संस्थाएँ कलकत्ता के बौद्धिक वातावरण से विकसित हुई थीं। इसके विपरीत, प्रार्थना समाज की स्थापना बंबई में हुई थी, जो पश्चिमी भारत का प्रमुख केंद्र था। यद्यपि यह ब्रह्म समाज के विचारों से प्रेरित था, परंतु इसका कार्यक्षेत्र मुख्य रूप से महाराष्ट्र और गुजरात तक सीमित था।

12. (1) आत्मीय सभा, ब्रह्म समाज, तत्त्वबोधिनी सभा, प्रार्थना समाज
भारतीय सुधार आंदोलनों का कालक्रम अत्यंत महत्वपूर्ण है। राजा राममोहन राय ने 1814 में आत्मीय सभा का गठन किया, जिसके पश्चात 1828 में ब्रह्म समाज की स्थापना हुई। देवेंद्रनाथ टैगोर ने 1839 में तत्त्वबोधिनी सभा की शुरुआत की। अंततः 1867 में केशव चंद्र सेन के महाराष्ट्र दौरे से प्रभावित होकर आत्माराम पांडुरंग ने बंबई में प्रार्थना समाज की स्थापना की, जिसने पश्चिमी भारत में व्यापक सामाजिक सुधार किए।

13. (3) केशव चंद्र सेन
प्रार्थना समाज की स्थापना 1867 में आत्माराम पांडुरंग द्वारा बंबई में की गई थी। इस संस्था के गठन में केशव चंद्र सेन की महाराष्ट्र यात्रा और उनके ओजस्वी भाषणों ने उत्प्रेरक का कार्य किया। उनके द्वारा प्रस्तुत उदारवादी और प्रगतिशील विचारों ने पश्चिमी भारत के शिक्षित युवाओं को संगठित होने के लिए प्रेरित किया। यह संस्था आगे चलकर एम.जी. रानाडे जैसे महान समाज सुधारकों के मार्गदर्शन में सशक्त हुई।

14. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
प्रार्थना समाज ने महाराष्ट्र में सामाजिक सुधार हेतु एक मध्यम मार्ग अपनाया था। इसने हिंदू धर्म की मूल परंपराओं को पूरी तरह त्यागने के स्थान पर उनमें व्याप्त कुरीतियों को शिक्षा और तर्क के माध्यम से दूर करने का प्रयास किया। महादेव गोविंद रानाडे और आर.जी. भंडारकर के नेतृत्व में इस संस्था ने विधवा पुनर्विवाह, स्त्री शिक्षा और जाति प्रथा के विरोध में व्यापक कार्य किए।

15. (1) केवल I
प्रार्थना समाज केवल धार्मिक सुधारों तक सीमित नहीं था, बल्कि इसने विधवा पुनर्विवाह, स्त्री शिक्षा और वंचित वर्गों के उत्थान जैसे सामाजिक मुद्दों पर भी सक्रियता से कार्य किया। एम.जी. रानाडे ने 'भारतीय राष्ट्रीय सामाजिक सम्मेलन' की स्थापना की, जो सुधारों हेतु एक अखिल भारतीय मंच था। इस संस्था ने समाज के पिछड़े वर्गों के लिए रात्रि पाठशालाएँ और अनाथालय स्थापित किए। अतः सामाजिक उदासीनता का तर्क असत्य है।

16. (2) आर.जी. भंडारकर - ब्रिटिश शासन के विरुद्ध सशस्त्र विद्रोह
आर.जी. भंडारकर एक प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान, शिक्षाविद् और समाज सुधारक थे। उनका मुख्य योगदान प्रार्थना समाज के माध्यम से धार्मिक शुद्धिकरण और सामाजिक बुराइयों को दूर करने में था, न कि सशस्त्र विद्रोह में। इसके विपरीत, डी.के. कर्वे ने महिला शिक्षा और एम.जी. रानाडे ने सामाजिक सम्मेलन के माध्यम से सुधारों को गति दी। एन.एम. जोशी ने मजदूर वर्ग के कल्याण और श्रमिक आंदोलनों में कार्य किया था।

17. (2) दयानंद सरस्वती
स्वामी दयानंद सरस्वती ने भारतीय समाज को पुनः वैदिक आदर्शों की ओर ले जाने के लिए "वेदों की ओर लौटो" का प्रसिद्ध नारा दिया था। उनका मानना था कि उत्तर-वैदिक काल में जो कुरीतियाँ जैसे मूर्ति पूजा, अस्पृश्यता और अंधविश्वास शामिल हो गए हैं, वे मूल वेदों का हिस्सा नहीं हैं। उन्होंने वेदों को अचूक सत्य का भंडार माना और शुद्धि आंदोलन के माध्यम से हिंदू धर्म में सुधार किया।

NODIA

18. (1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
विभिन्न आंदोलनों ने भारतीय वैचारिक संरचना को गहराई से प्रभावित किया। स्वामी दयानंद सरस्वती ने धर्म परिवर्तन कर चुके लोगों की वापसी हेतु शुद्धि आंदोलन चलाया। स्वामी विवेकानंद ने नव-वेदांत के माध्यम से अध्यात्म को समाज सेवा से जोड़ा। बी.आर. अंबेडकर ने दलित अधिकारों के लिए संघर्ष किया, जबकि ज्योतिराव फुले ने पिछड़ी जातियों को शोषण से मुक्त करने हेतु सत्यशोधक समाज की स्थापना की। इन सुधारकों ने समतावादी समाज की नींव रखी।

19. (3) बंबई
आर्य समाज की स्थापना स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा 1875 में बंबई में की गई थी। यद्यपि बाद में इस आंदोलन का मुख्य केंद्र लाहौर और पंजाब क्षेत्र बना, परंतु इसकी शुरुआत पश्चिमी भारत से हुई थी। इस संस्था ने हिंदू धर्म के पुनरुद्धार और वेदों की सर्वोच्चता स्थापित करने पर बल दिया। इसने शिक्षा के प्रसार और सामाजिक सुधारों के माध्यम से भारतीय राष्ट्रवाद को एक नई दिशा एवं गति प्रदान की।

20. (2) केवल II, III, और V
आर्य समाज की विचारधारा पूर्णतः वेदों पर आधारित थी और इसने पुराणों में वर्णित कथाओं एवं कर्मकांडों को अस्वीकार कर दिया। स्वामी दयानंद ने मूर्ति पूजा और पुरोहितवाद का कड़ा विरोध किया। उन्होंने जन्म आधारित जाति व्यवस्था के स्थान पर योग्यता आधारित वर्ण व्यवस्था का समर्थन किया। साथ ही संस्था ने महिला शिक्षा और विधवा पुनर्विवाह को बढ़ावा दिया। यह पुनर्जन्म और कर्म के सिद्धांतों में अडिग विश्वास रखती थी।

21. (3) उन व्यक्तियों का पुन: धर्म परिवर्तन करना जिन्होंने पहले हिंदू धर्म छोड़कर अन्य धर्म अपना लिया था।
आर्य समाज द्वारा शुरु किया गया शुद्धि आंदोलन एक महत्वपूर्ण कदम था, जिसका उद्देश्य उन हिंदुओं को वापस मूल धर्म में लाना था जिन्होंने इस्लाम या ईसाई धर्म अपना लिया

था। इससे पूर्व हिंदू धर्म में वापसी की कोई औपचारिक प्रक्रिया उपलब्ध नहीं थी। इस आंदोलन ने न केवल धार्मिक बल्कि सामाजिक एकता को भी सुदृढ़ करने का प्रयास किया, यद्यपि इसके कारण तत्कालीन समय में कुछ सांप्रदायिक तनाव भी हुए।

22. (2) मुहम्मडन एंग्लो-ओरिएंटल कॉलेज की स्थापना।
मुहम्मडन एंग्लो-ओरिएंटल कॉलेज की स्थापना सर सैयद अहमद खान द्वारा अलीगढ़ आंदोलन के अंतर्गत की गई थी। आर्य समाज के भीतर शिक्षा पद्धति को लेकर मतभेद थे, जिसके कारण दयानंद एंग्लो-वैदिक कॉलेज और गुरुकुल कांगड़ी जैसे संस्थान स्थापित हुए। कॉलेज पक्ष पश्चिमी शिक्षा और विज्ञान के साथ वेदों के मिश्रण का समर्थक था, जबकि गुरुकुल पक्ष पारंपरिक वैदिक शिक्षा पद्धति को पुनर्जीवित करने के लिए समर्पित था।

23. (4) आध्यात्मिक भक्ति, सार्वभौमिकता और सभी प्रमुख धार्मिक सत्यों की अंतर्निहित एकता।
रामकृष्ण परमहंस ने ईश्वर प्राप्ति के लिए सरल आध्यात्मिक भक्ति और सभी धर्मों की समानता पर बल दिया। उनका मानना था कि विभिन्न धर्म एक ही ईश्वर तक पहुँचने के भिन्न मार्ग हैं और सभी में सत्य का अंश विद्यमान है। उन्होंने किसी विशेष कर्मकांड के स्थान पर अंतर्मन की शुद्धि और निस्वार्थ प्रेम को प्राथमिकता दी। इन्ही उदारवादी विचारों ने आगे चलकर स्वामी विवेकानंद की वैचारिक पृष्ठभूमि तैयार की।

24. (1) इसने वेदांत की आध्यात्मिक शिक्षाओं को व्यावहारिक समाज सेवा और मानवतावाद के साथ जोड़ा।
स्वामी विवेकानंद का नव-वेदांत दर्शन अध्यात्म को केवल मंदिरों तक सीमित नहीं रखता, बल्कि उसे दीन-दुखियों की सेवा से जोड़ता है। उन्होंने "शिव भाव से जीव सेवा" का मंत्र दिया, जिसका अर्थ है कि प्रत्येक मनुष्य में ईश्वर का वास है और उसकी सेवा ही सच्ची पूजा है। इस विचारधारा ने भारतीय युवाओं में आत्मविश्वास भरा और राष्ट्र निर्माण के लिए निस्वार्थ सेवा को मुख्य आधार बनाया।

25. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
स्वामी विवेकानंद का मानना था कि आत्मिक उन्नति के लिए शारीरिक शक्ति और मानसिक दृढ़ता अनिवार्य है। उन्होंने कहा था कि भारत को आज भगवद गीता की तुलना में फुटबॉल के मैदान की अधिक आवश्यकता है ताकि युवा शक्तिशाली बन सकें। उनका तर्क था कि जो व्यक्ति शारीरिक रूप से कमजोर और भूख से व्याकुल है, वह उच्च आध्यात्मिक सत्यों को कभी भी पूर्णतः ग्रहण नहीं कर सकता।

26. (1) उन्होंने पूर्वी आध्यात्मिकता से पश्चिमी वैज्ञानिक भौतिकवाद के पूर्ण अलगाव की वकालत की।
स्वामी विवेकानंद ने पूर्व की आध्यात्मिकता और पश्चिम के वैज्ञानिक भौतिकवाद के बीच समन्वय पर बल दिया था। उनका मानना था कि भारत को पश्चिम से विज्ञान और संगठन सीखने की आवश्यकता है, जबकि पश्चिम को भारत से आत्मिक शांति प्राप्त करनी चाहिए। उन्होंने 1897 में रामकृष्ण मिशन की स्थापना की और शिकागो धर्म संसद में भारत का प्रतिनिधित्व किया। उन्होंने समाज में व्याप्त अस्पृश्यता और संकीर्णता की भी निंदा की।

27. (4) बेलूर
रामकृष्ण मठ और मिशन का मुख्यालय पश्चिम बंगाल के हावड़ा जिले में गंगा नदी के तट पर स्थित बेलूर में है। इसकी स्थापना स्वामी विवेकानंद ने अपने गुरु के आदर्शों को संस्थागत रूप देने के लिए की थी। बेलूर मठ की वास्तुकला हिंदू, इस्लामी और ईसाई स्थापत्य शैलियों के मिश्रण को प्रदर्शित करती है। यह स्थान आज भी विश्वभर में आध्यात्मिकता और मानवतावाद का प्रमुख केंद्र बना हुआ है।

28. (1) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
विभिन्न सुधारकों के ग्रंथों ने समाज में वैचारिक क्रांति लाने का कार्य किया। स्वामी दयानंद सरस्वती ने 'सत्यार्थ प्रकाश' में वैदिक सत्य की व्याख्या की, जबकि ज्योतिराव फुले की 'गुलामगिरी' ने जाति आधारित शोषण को चुनौती दी। डॉ. बी.आर. अंबेडकर ने 'जाति का विनाश' के माध्यम से सामाजिक संरचना में परिवर्तन की मांग की और स्वामी विवेकानंद की पुस्तक 'कर्म योग' ने निष्काम सेवा के सिद्धांत को प्रतिपादित किया।

29. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
थियोसोफिकल सोसाइटी की स्थापना 1875 में न्यूयॉर्क में हुई थी, जो बाद में भारत आई। इस संस्था ने प्राचीन हिंदू और बौद्ध दर्शन की प्रशंसा की और उन्हें विश्व का श्रेष्ठ दर्शन बताया। इसने पुनर्जन्म और कर्म के सिद्धांतों का समर्थन किया, जिससे भारतीयों में अपनी संस्कृति के प्रति गौरव की भावना जाग्रत हुई। एनी बेसेंट के नेतृत्व में इस आंदोलन ने भारतीय राष्ट्रीय पुनर्जागरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

30. (1) केवल I और II
एनी बेसेंट ने भारतीय संस्कृति को वैश्विक स्तर पर पहुँचाने के लिए भगवद गीता का अंग्रेजी अनुवाद किया। उन्होंने वाराणसी में सेंट्रल हिंदू कॉलेज की स्थापना की, जो बाद में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय बना। वे भारतीय स्वतंत्रता की प्रबल समर्थक थीं और उन्होंने होम रूल आंदोलन का नेतृत्व किया था, अतः उन्हें आंदोलन का विरोधी कहना सर्वथा गलत है। उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की पहली महिला अध्यक्ष के रूप में भी सेवा की।

31. (1) इसने उन्हें अपनी प्राचीन सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत पर गर्व महसूस करने में मदद की।
थियोसोफिकल सोसाइटी ने पश्चिमी बुद्धिजीवियों द्वारा भारतीय दर्शन की महानता को स्वीकार किए जाने के कारण शिक्षित भारतीय वर्ग में आत्मविश्वास पैदा किया। जब विदेशियों ने उपनिषदों और बौद्ध धर्म की प्रशंसा की, तो भारतीयों को अपनी परंपराओं के प्रति हीन भावना त्यागने की प्रेरणा मिली। इसने न केवल धार्मिक पुनरुद्धार को बढ़ावा दिया, बल्कि सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की नींव भी सुदृढ़ की, जिसने स्वतंत्रता संग्राम को वैचारिक आधार प्रदान किया।

Downloaded from www.pdf.tube

32. (2) II, III, I
इन संस्थानों की स्थापना आधुनिक भारत के निर्माण में मील का पत्थर है। सर सैयद अहमद खान ने 1875 में अलीगढ़ में मुहम्मडन एंग्लो-ओरिएंटल कॉलेज की स्थापना की। इसके पश्चात स्वामी विवेकानंद ने 1897 में रामकृष्ण मिशन का गठन किया। अंत में एनी बेसेंट द्वारा 1898 में वाराणसी में सेंट्रल हिंदू कॉलेज की स्थापना की गई। यह कालक्रम भारत में शैक्षिक और सामाजिक सुधारों के विस्तार एवं विविधता को प्रदर्शित करता है।

33. (2) भारतीय मुसलमानों के बीच आधुनिक पश्चिमी शिक्षा और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देना
अलीगढ़ आंदोलन का मुख्य लक्ष्य मुस्लिम समुदाय को मध्यकालीन जड़ता से बाहर निकालकर आधुनिक युग के साथ जोड़ना था। सर सैयद अहमद खान का मानना था कि जब तक मुसलमान अंग्रेजी शिक्षा और विज्ञान को नहीं अपनाएंगे, वे सामाजिक रूप से पिछड़े रहेंगे। उन्होंने तर्कवाद के आधार पर धर्मग्रंथों की व्याख्या की और कट्टरता के स्थान पर प्रगतिशील सोच को बढ़ावा दिया। इस आंदोलन ने शिक्षित मुस्लिम वर्ग को जन्म दिया।

34. (1) उन्होंने आधुनिक तर्कवाद और विज्ञान के नजरिए से धार्मिक सिद्धांतों की व्याख्या करने का तर्क दिया।
सर सैयद अहमद खान एक महान विचारक थे, जिन्होंने धर्म को विज्ञान और तर्क की कसौटी पर परखने का प्रयास किया। उनका मानना था कि 'ईश्वर का वचन' और 'ईश्वर का कार्य' परस्पर विरोधी नहीं हो सकते। उन्होंने पश्चिमी वैज्ञानिक साहित्य का उर्दू में अनुवाद करने हेतु 'साइंटिफिक सोसाइटी' की स्थापना की। उन्होंने पारंपरिक रुढ़िवादिता को चुनौती दी और इस्लामी शिक्षाओं को समकालीन संदर्भ में प्रस्तुत करने का प्रयास किया।

35. (2) केवल II और IV
अलीगढ़ आंदोलन ने आधुनिक शिक्षा का समर्थन किया, परंतु वह महिलाओं की सार्वजनिक शिक्षा और पर्दा प्रथा के विरोध में उतना मुखर नहीं था। साथ ही सर सैयद अहमद खान का मानना था कि मुसलमानों का हित ब्रिटिश सरकार के प्रति वफादार रहने में है, न कि कांग्रेस के राजनीतिक विरोध में। इसलिए यह आंदोलन शुरुआती कांग्रेस के प्रति सशंकित था। अन्य कथन इस आंदोलन की प्रकृति को सही ढंग से परिभाषित करते हैं।

36. (4) एक पुनरुत्थानवादी दृष्टिकोण को बढ़ावा देना जिसने पश्चिमी दार्शनिक विचारों को खारिज कर दिया।
अलीगढ़ आंदोलन एक सुधारवादी आंदोलन था, न कि पुनरुत्थानवादी। इसने पश्चिमी दार्शनिक विचारों और वैज्ञानिक ज्ञान का स्वागत किया और उन्हें इस्लामी संस्कृति के साथ एकीकृत करने का प्रयास किया। इसके विपरीत, पुनरुत्थानवादी आंदोलन वे थे जो केवल अतीत की ओर लौटने और पश्चिमी प्रभाव को पूरी तरह खारिज करने की बात करते थे। अलीगढ़ आंदोलन ने बहुविवाह जैसी बुराइयों का विरोध किया और मुस्लिम समुदाय का विकास करना चाहते थे।

37. (3) देवबंद आंदोलन
वैचारिक आधार पर देवबंद आंदोलन अन्य सुधारों से भिन्न था। जहाँ अलीगढ़, अहमदिया और अब्दुल लतीफ के आंदोलन ब्रिटिश शिक्षा और पश्चिमी संस्कृति के प्रति सहयोगी दृष्टिकोण रखते थे, वहीं देवबंद एक रुढ़िवादी पुनरुत्थानवादी आंदोलन था। इसने पश्चिमी शिक्षा को अस्वीकार किया और पारंपरिक इस्लामी शिक्षा एवं धार्मिक शुद्धता पर ध्यान केंद्रित किया। इसका मुख्य उद्देश्य विदेशी शासन के विरुद्ध संघर्ष की भावना जाग्रत करना और शरियत को अक्षुण्ण रखना था।

38. (1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
अलीगढ़ आंदोलन ने पश्चिमी विज्ञान और ब्रिटिश वफादारी का समन्वय किया, जबकि देवबंद ने पारंपरिक शिक्षा और ब्रिटिश विरोध को चुना। ब्रह्म समाज ने पूर्वी अध्यात्म और पश्चिमी तर्कवाद का एक नवीन संश्लेषण प्रस्तुत किया जिसने बंगाल के शिक्षित वर्ग को प्रभावित किया। वहीं आर्य समाज एक हिंदू पुनरुत्थानवादी आंदोलन था जिसने वेदों की श्रेष्ठता स्थापित करते हुए पश्चिमी सांस्कृतिक प्रभुत्व को चुनौती दी। इन सभी ने वैचारिक परिवर्तन किए।

NODIA

39. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
देवबंद आंदोलन उलेमाओं द्वारा संचालित एक धार्मिक आंदोलन था, जिसने ब्रिटिश शासन के सांस्कृतिक हस्तक्षेप के विरुद्ध मोर्चा खोला। यह आंदोलन फतवों के माध्यम से मुसलमानों को धार्मिक निर्देश प्रदान करता था और इसका उद्देश्य शरियत की रक्षा करना था। इसने अंग्रेजी भाषा और पश्चिमी शिक्षा प्रणाली को अपनाने का कड़ा विरोध किया क्योंकि इसे धार्मिक पहचान के लिए खतरा माना जाता था। अतः कथन दो इसकी नीतियों के विपरीत है।

40. (1) केवल I, II, और III
अलीगढ़ और देवबंद आंदोलनों के बीच वैचारिक ध्रुवीकरण स्पष्ट था। अलीगढ़ आंदोलन ने आधुनिकता और अंग्रेजी शिक्षा को प्राथमिकता दी और कांग्रेस की राजनीति से दूर रहा। इसके विपरीत, देवबंद ने पारंपरिक शिक्षा पर बल दिया और ब्रिटिश विरोधी होने के कारण कांग्रेस का समर्थन किया। यद्यपि ये दोनों आंदोलन भिन्न समय पर शुरु हुए और इनके विचार विपरीत थे, फिर भी इन्होंने मुस्लिम समाज की दिशा तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

41. (3) निचली जातियों को ब्राह्मणवादी उत्पीड़न और रुढ़िवादी ग्रंथों के प्रभाव से मुक्त करने के लिए।
ज्योतिराव फुले ने 1873 में सत्यशोधक समाज की स्थापना करके जातिगत भेदभाव के विरुद्ध एक शक्तिशाली आंदोलन शुरु किया। उनका मुख्य उद्देश्य शूद्रों और अति-शूद्रों को पुरोहितों के मानसिक और सामाजिक शोषण से बचाना था। उन्होंने तर्क दिया कि सभी मनुष्य समान हैं और ईश्वर की पूजा के लिए किसी मध्यस्थ की आवश्यकता नहीं है। इस संस्था ने पिछड़ी जातियों में स्वाभिमान जगाया और उन्हें अधिकारों के प्रति सचेत किया।

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) इसने एक तर्कसंगत आलोचनात्मक दृष्टिकोण को बढ़ावा दिया जिससे सामाजिक-धार्मिक सुधारों की प्रेरणा मिली।
उन्नीसवीं शताब्दी में पश्चिमी शिक्षा के प्रसार ने भारतीय शिक्षित वर्ग में नवीन चेतना जाग्रत की। इस शिक्षा ने तर्कवाद और मानवीय मूल्यों पर बल दिया, जिससे भारतीयों ने सामाजिक कुरीतियों और धार्मिक अंधविश्वासों का वैज्ञानिक विश्लेषण प्रारंभ किया। इसके परिणामस्वरूप देश में विभिन्न सुधार आंदोलनों का जन्म हुआ, जिन्होंने भारतीय समाज के आधुनिकीकरण और सांस्कृतिक पुनर्जागरण का मार्ग प्रशस्त किया।

2. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
आधुनिक भारत में मुद्रण यंत्र के आगमन ने विचारों के आदान-प्रदान में क्रांति ला दी। क्षेत्रीय भाषाओं में पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन से सुधारवादी विचार जन-सामान्य तक पहुँचे और व्यापक सार्वजनिक चर्चा संभव हुई। तत्कालीन सुधारक वैश्विक बौद्धिक धाराओं और प्रबोधन काल के उदारवादी विचारों से अत्यधिक प्रभावित थे, इसलिए यह कहना अनुचित है कि वे वैश्विक वैचारिक धाराओं से पृथक थे।

3. (3) आत्मीय सभा
राजा राममोहन राय ने एकेश्वरवाद के सिद्धांतों के प्रचार और हिंदू धर्म की कुरीतियों के विरुद्ध जनमत तैयार करने हेतु 1814 में कलकत्ता में आत्मीय सभा की स्थापना की थी। इसका मुख्य उद्देश्य वेदांत दर्शन को तर्क के साथ प्रस्तुत करना और समाज में प्रचलित अंधविश्वासों को चुनौती देना था। यह संस्था आगे चलकर ब्रह्म समाज का आधार बनी, जिसने भारतीय पुनर्जागरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

4. (4) इसने कर्म और आत्मा के आवागमन के सिद्धांतों को मौलिक धार्मिक सिद्धांतों के रूप में बनाए रखा।
ब्रह्म समाज ने मुख्य रूप से एकेश्वरवाद का समर्थन किया और वेदों की अचूकता को स्वीकार नहीं किया। यह संस्था तर्क और मानवीय विवेक को सर्वोपरि मानती थी। इसने कर्म और पुनर्जन्म जैसे पारंपरिक हिंदू सिद्धांतों के प्रति अनिवार्य प्रतिबद्धता नहीं दिखाई, बल्कि सामाजिक समानता और न्याय पर बल दिया। मूर्ति पूजा और व्यर्थ के कर्मकांडों का विरोध करना इसकी विचारधारा का प्रमुख आधार था।

5. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
राजा राममोहन राय ने सती प्रथा जैसी अमानवीय परंपरा को समाप्त करने के लिए शास्त्रों का कुशलतापूर्वक उपयोग किया। उन्होंने वेदों और उपनिषदों के संदर्भों से यह सिद्ध किया कि यह प्रथा हिंदू धर्म की मूल आध्यात्मिक मान्यताओं के विपरीत है। उनका उद्देश्य रुढ़िवादी समाज को यह विश्वास दिलाना था कि वे शास्त्रों का उल्लंघन नहीं कर रहे, बल्कि धर्म के वास्तविक स्वरुप को स्थापित कर रहे हैं।

6. (2) 1829 में लॉर्ड विलियम बेंटिक द्वारा
वर्ष 1829 में लॉर्ड विलियम बेंटिक ने 'बंगाल सती विनियमन' पारित किया, जिसने सती प्रथा को आधिकारिक रूप से अवैध और दंडनीय अपराध घोषित कर दिया। यह ऐतिहासिक निर्णय राजा राममोहन राय के निरंतर प्रयासों और उनके द्वारा चलाए गए मानवतावादी आंदोलनों का प्रतिफल था। इस कानून ने समाज में व्याप्त एक क्रूर कुप्रथा का अंत किया और सामाजिक सुधारों के क्षेत्र में नवीन अध्याय प्रारंभ किया।

7. (4) बंगाली साहित्य के पूर्ण पश्चिमीकरण को प्रोत्साहित करना
देवेंद्रनाथ टैगोर ने 1839 में तत्त्वबोधिनी सभा की स्थापना राजा राममोहन राय के विचारों को आगे बढ़ाने के लिए की थी। इस सभा का मुख्य उद्देश्य उपनिषदों के ज्ञान का प्रचार करना और भारत के समृद्ध सांस्कृतिक अतीत का अध्ययन करना था। इसने बंगाली भाषा और साहित्य के विकास पर बल दिया, परंतु यह साहित्य के पूर्ण पश्चिमीकरण के विरुद्ध थी और भारतीय अस्मिता को सुरक्षित रखना चाहती थी।

8. (1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
विभिन्न समाज सुधारकों ने अपनी संस्थाओं और पत्रिकाओं के माध्यम से जनचेतना जाग्रत की। राजा राममोहन राय ने फारसी में 'मिरात-उल-अखबार' प्रकाशित किया, जबकि देवेंद्रनाथ टैगोर 'तत्त्वबोधिनी पत्रिका' से जुड़े थे। केशव चंद्र सेन ने 'इंडियन रिफॉर्म एसोसिएशन' के माध्यम से सामाजिक कार्यों को विस्तार दिया और ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने 'सोम प्रकाश' पत्रिका के माध्यम से विधवा पुनर्विवाह जैसे गंभीर मुद्दों को उठाया।

9. (3) सेन द्वारा अंतर-जातीय विवाह जैसे प्रगतिशील सामाजिक सुधारों की वकालत को रुढ़िवादी टैगोर ने अस्वीकार कर दिया था।
ब्रह्म समाज में 1866 का विभाजन सामाजिक सुधारों की गति और प्रकृति को लेकर हुआ था। केशव चंद्र सेन अधिक तीव्र और क्रांतिकारी परिवर्तनों, जैसे अंतर-जातीय विवाह और कट्टरपंथ के त्याग के पक्षधर थे। इसके विपरीत देवेंद्रनाथ टैगोर हिंदू परंपराओं के साथ संतुलन बनाए रखने और क्रमिक सुधारों के समर्थक थे। इसी वैचारिक मतभेद के कारण संगठन दो अलग-अलग शाखाओं में विभाजित हो गया।

10. (3) केवल III
ब्रह्म समाज में दूसरा महत्वपूर्ण विभाजन 1878 में हुआ था। केशव चंद्र सेन द्वारा अपनी अल्पायु पुत्री का विवाह कूचबिहार के राजा से करने के निर्णय ने समर्थकों में भारी असंतोष उत्पन्न किया। उन्होंने सेन पर संस्थागत नियमों के उल्लंघन का आरोप

Click Here to Buy book on Amazon

52. (1) महाड़ सत्याग्रह, कालाराम मंदिर प्रवेश आंदोलन, पूना पैक्ट, बौद्ध धर्म अपनाना
डॉ. अंबेडकर के संघर्षों का क्रम उनके वैचारिक विकास को दर्शाता है। 1927 में उन्होंने महाड़ सत्याग्रह के जरिए नागरिक अधिकारों की मांग की, जिसके पश्चात 1930 में कालाराम मंदिर प्रवेश आंदोलन किया। 1932 में उन्होंने पूना पैक्ट पर हस्ताक्षर किए। अंततः हिंदू धर्म में व्याप्त जातिगत भेदभाव से मुक्ति पाने और आध्यात्मिक शांति के लिए उन्होंने 1956 में नागपुर में अपने लाखों अनुयायियों के साथ बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया।

53. (3) 1856, ईश्वर चंद्र विद्यासागर
ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने विधवाओं की दयनीय स्थिति को सुधारने के लिए शास्त्रों के आधार पर विधवा पुनर्विवाह का समर्थन किया। उनके अथक प्रयासों के परिणामस्वरूप 1856 में 'हिंदू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम' पारित हुआ। इस कानून ने विधवाओं के पुनर्विवाह को कानूनी मान्यता दी और उनकी संतानों को वैध घोषित किया। यह कानून रुढ़िवादी समाज की कड़ी प्रतिक्रिया के बावजूद लागू किया गया था, जो महिला सुधारों के इतिहास में मील का पत्थर साबित हुआ।

54. (2) उन्होंने प्रथम भारतीय महिला विश्वविद्यालय की स्थापना की और महिला शिक्षा पर व्यापक रूप से ध्यान केंद्रित किया।
धोंडो केशव कर्वे ने अपना पूरा जीवन महिला उत्थान और विधवाओं के कल्याण के लिए समर्पित कर दिया। उन्होंने 1916 में पुणे में 'श्रीमती नाथीबाई दामोदर ठाकरसी महिला विश्वविद्यालय' की स्थापना की, जो भारत का पहला महिला विश्वविद्यालय था। उन्होंने स्वयं एक विधवा से विवाह करके समाज के सामने एक उदाहरण पेश किया। उनके इन असाधारण योगदानों के लिए उन्हें 1958 में भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से अलंकृत किया गया था।

55. (1) केवल IV
बीसवीं शताब्दी के महिला संगठन राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय रूप से भागीदार थे। इन संगठनों ने सामाजिक अधिकारों के साथ-साथ राजनीतिक स्वतंत्रता की भी मांग की। पंडिता रमाबाई ने आर्य महिला समाज बनाया और सारदा अधिनियम ने विवाह की आयु निर्धारित की। वीरेशलिंगम पंतुलु ने दक्षिण भारत में सुधारों का नेतृत्व किया। अतः चौथा कथन गलत है क्योंकि महिला आंदोलनों ने राष्ट्रवाद को वैचारिक मजबूती और व्यापक सामाजिक आधार प्रदान किया था।

56. (1) मंदिर प्रवेश उद्घोषणा (1936)
मंदिर प्रवेश उद्घोषणा मुख्य रूप से जाति आधारित भेदभाव को दूर करने और दलितों को धार्मिक अधिकार दिलाने से संबंधित थी, न कि प्रत्यक्ष रूप से महिला सुधार से। इसके विपरीत, नेटिव मैरिज एक्ट, आयु सहमति अधिनियम और सारदा अधिनियम सीधे तौर पर महिलाओं की विवाह की आयु और उनकी सामाजिक स्थिति में सुधार हेतु लाए गए कानूनी उपाय थे। ये अधिनियम बाल विवाह जैसी कुरीतियों को नियंत्रित करने के उद्देश्य से बनाए गए थे।

57. (3) कंदुकुरी वीरेशलिंगम
भौगोलिक और भाषाई क्षेत्र के आधार पर कंदुकुरी वीरेशलिंगम अन्य सुधारकों से भिन्न हैं। राजा राममोहन राय, ईश्वर चंद्र विद्यासागर और देवेंद्रनाथ टैगोर मुख्य रूप से बंगाल के बौद्धिक पुनर्जागरण से जुड़े थे। इसके विपरीत, वीरेशलिंगम पंतुलु ने मद्रास प्रेसीडेंसी और विशेष रूप से तेलुगु भाषी क्षेत्रों में सुधारों का नेतृत्व किया। उन्हें 'आधुनिक आंध्र के जनक' के रूप में जाना जाता है, जिन्होंने विधवा पुनर्विवाह और शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी कार्य किए थे।

58. (1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
महिला सुधार के क्षेत्र में प्रत्येक सुधारक का एक ऐतिहासिक योगदान रहा है। विद्यासागर ने 1856 के विधवा पुनर्विवाह कानून के लिए पृष्ठभूमि तैयार की, जबकि बी.एम. मालाबारी ने आयु सहमति अधिनियम हेतु अभियान चलाया। डी.के. कर्वे ने महिलाओं के लिए देश का प्रथम विश्वविद्यालय स्थापित किया और पंडिता रमाबाई ने निराश्रित महिलाओं के लिए 'शारदा सदन' जैसे आश्रय स्थलों की व्यवस्था की। इन सभी ने समाज में महिलाओं को नई पहचान प्रदान की।

59. (4) उनका सामाजिक आधार संकीर्ण था और वे मुख्य रूप से शहरी, शिक्षित मध्यम वर्ग तक ही सीमित थे।
उन्नीसवीं शताब्दी के सुधार आंदोलनों की सबसे बड़ी सीमा यह थी कि वे ग्रामीण भारत की विशाल आबादी तक गहराई से नहीं पहुँच सके। इनके नेता और अनुयायी अधिकांशतः शहरों में रहने वाले और अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त मध्यम वर्ग के लोग थे। यद्यपि उनके विचार प्रगतिशील थे, परंतु वे आम जनता की भाषा और उनकी दैनिक समस्याओं के साथ पूर्णतः सामंजस्य नहीं बिठा पाए। इसके कारण इनका प्रभाव समाज के एक विशिष्ट वर्ग तक ही सीमित रहा।

60. (2) केवल I, II, IV, और V
भारतीय सुधार आंदोलनों की विशेषता यह थी कि उन्होंने परंपरा और आधुनिकता के बीच समन्वय स्थापित किया। ब्रह्म समाज ने उपनिषदों की दार्शनिक गहराई को पश्चिमी उदारवाद के साथ मिलाया। सर सैयद अहमद खान ने कुरान को आधुनिक विज्ञान की कसौटी पर परखा और थियोसोफिकल सोसाइटी ने प्राचीन भारतीय दर्शन को अपनाया। रामकृष्ण मिशन ने पश्चिमी मानवतावाद को भारतीय अध्यात्म के साथ एकीकृत किया, इसलिए कथन III गलत है। अन्य सभी कथन इन आंदोलनों की प्रकृति स्पष्ट करते हैं।

61. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
राजा राममोहन राय एक सच्चे अंतरराष्ट्रीयवादी थे, जिनका विश्वास था कि स्वतंत्रता एक वैश्विक अवधारणा है। उन्होंने स्पेन, नेपल्स और लातिनी अमेरिका के स्वतंत्रता संग्रामों का समर्थन किया। वे फ्रांसीसी क्रांति के आदर्शों 'स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व' के प्रशंसक थे। जब नेपल्स में स्वतंत्रता आंदोलन विफल हुआ, तो वे अत्यधिक दुखी हुए थे। अतः यह कहना गलत है कि उन्होंने इन वैश्विक आंदोलनों का विरोध किया या उनकी विफलता पर हर्ष व्यक्त किया था।

NODIA

(2) बिपिन चंद्र पाल
(3) अरविंद घोष
(4) लाला लाजपत राय
(5) अनुत्तरित प्रश्न

32. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के पहले चार अध्यक्षों के सही कालानुक्रमिक क्रम (1885, 1886, 1887, 1888) का चयन कीजिए:
(1) डब्ल्यू.सी. बनर्जी, दादाभाई नौरोजी, बदरुद्दीन तैयबजी, जॉर्ज यूल
(2) दादाभाई नौरोजी, डब्ल्यू.सी. बनर्जी, जॉर्ज यूल, बदरुद्दीन तैयबजी
(3) डब्ल्यू.सी. बनर्जी, बदरुद्दीन तैयबजी, दादाभाई नौरोजी, जॉर्ज यूल
(4) जॉर्ज यूल, डब्ल्यू.सी. बनर्जी, दादाभाई नौरोजी, बदरुद्दीन तैयबजी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

33. 1885 में अपनी स्थापना के समय भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के उद्देश्यों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. देश के विभिन्न क्षेत्रों के राष्ट्रवादी राजनीतिक कार्यकर्ताओं के बीच मैत्रीपूर्ण संबंधों को बढ़ावा देना।
II. लोकप्रिय माँगों का निर्माण और उन्हें सरकार के समक्ष प्रस्तुत करना।
III. पूर्ण स्वराज (पूर्ण स्वतंत्रता) की तत्काल माँग।
IV. राष्ट्रीय एकता की भावना का विकास और सुदृढ़ीकरण।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, II और IV
(4) केवल I, III और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

34. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के संबंध में "सुरक्षा वाल्व सिद्धांत" को मुख्य रूप से किस नेता ने अपने लेखन में लोकप्रिय बनाया था?
(1) लाला लाजपत राय
(2) डब्ल्यू.सी. बनर्जी
(3) सुरेंद्रनाथ बनर्जी
(4) बदरुद्दीन तैयबजी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

35. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): लॉर्ड डफरिन, जो प्रारंभ में कांग्रेस को अनुकूल दृष्टि से देखते थे, बाद में शत्रुतापूर्ण हो गए और इसे "सूक्ष्म अल्पसंख्यक" का प्रतिनिधि कहा।
कारण (R): कांग्रेस ने अपने प्रारंभिक वर्षों में महत्वपूर्ण संवैधानिक सुधारों, सिविल सेवाओं के भारतीयकरण और सैन्य व्यय में कटौती की माँग करना प्रारंभ कर दिया था।
उपर्युक्त दो कथनों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा एक सही है?
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

36. 1885 में बॉम्बे में आयोजित भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के पहले अधिवेशन में कितने प्रतिनिधियों ने भाग लिया था?
(1) 52
(2) 72
(3) 92
(4) 112
(5) अनुत्तरित प्रश्न

37. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (कांग्रेस-पूर्व संगठन)
A. ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन
B. इंडियन एसोसिएशन ऑफ कलकत्ता
C. मद्रास महाजन सभा
D. बॉम्बे प्रेसीडेंसी एसोसिएशन
सूची II: (प्रमुख संस्थापक/नेता)
i. सुरेंद्रनाथ बनर्जी
ii. एम. वीरराघवाचारी
iii. फिरोजशाह मेहता
iv. राधाकांत देब
(1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(2) A-i, B-iv, C-iii, D-ii
(3) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

38. कांग्रेस के उदारवादी चरण द्वारा की गई निम्नलिखित माँगों पर विचार कीजिए:
I. विधायी परिषदों का विस्तार और सुधार।
II. न्यायपालिका को कार्यपालिका से पृथक करना।
III. भारत और इंग्लैंड में एक साथ आई.सी.एस. परीक्षा आयोजित करना।
IV. भारतीय रियासतों पर ब्रिटिश सर्वोच्चता को तत्काल समाप्त करना।
V. भारी सैन्य व्यय में कमी।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III और V
(2) केवल I, III, IV और V
(3) केवल II, III, IV और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

Downloaded from www.pdf.tube

72. (2) II, III, I
निचली जाति के उत्थान की घटनाओं का कालक्रम उनकी बढ़ती चेतना को दर्शाता है। सर्वप्रथम 1873 में ज्योतिराव फुले ने सत्यशोधक समाज की स्थापना की। इसके पश्चात बीसवीं शताब्दी में डॉ. बी.आर. अंबेडकर ने 1924 में 'बहिष्कृत हितकारिणी सभा' का गठन किया ताकि दलितों को संगठित किया जा सके। अंत में 1927 में ऐतिहासिक महाड़ सत्याग्रह हुआ, जिसने अछूतों के सार्वजनिक अधिकारों के लिए एक प्रत्यक्ष और सशक्त संघर्ष की शुरुआत की, जो आधुनिक भारत की नींव बना।

73. (3) दबे-कुचले वर्गों की एक सुदृढ़ राजनीतिक पहचान और संगठित अधिकारों का दावा।
महाड़ सत्याग्रह ने दलित समुदायों के भीतर एक नई मनोवैज्ञानिक और राजनीतिक चेतना का संचार किया। इस आंदोलन के बाद दलित वर्ग अब केवल उच्च जाति के सुधारकों की दया पर निर्भर रहने वाला समूह नहीं रहा, बल्कि वह अपने अधिकारों की मांग करने वाली एक स्वायत्त राजनीतिक शक्ति बन गया। इसने अंबेडकर को शोषितों के निर्विवाद नेता के रूप में स्थापित किया और भविष्य के संवैधानिक सुरक्षा उपायों एवं आरक्षण के संघर्ष हेतु आधार प्रदान किया।

74. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
1891 का आयु सहमति अधिनियम पारसी सुधारक बी.एम. मालाबारी के प्रयासों का परिणाम था, जिसने कन्याओं के विवाह की न्यूनतम आयु 10 से बढ़ाकर 12 वर्ष कर दी थी। बाल गंगाधर तिलक जैसे राष्ट्रवादी नेताओं ने इस कानून का विरोध किया था। तिलक का तर्क यह नहीं था कि वे बाल विवाह के समर्थक थे, बल्कि वे सामाजिक मामलों में विदेशी औपनिवेशिक सरकार के हस्तक्षेप को अनुचित और भारतीय स्वायत्तता का अपमान मानते थे।

75. (2) केवल I, III, और IV
पंडिता रमाबाई एक महान विदुषी थीं, जिन्होंने भारतीय समाज की पितृसत्तात्मक व्यवस्था पर कड़े प्रहार किए। उन्होंने 'शारदा सदन' के माध्यम से निराश्रित महिलाओं को सहारा दिया और 'द हाई-कास्ट हिंदू वुमन' लिखकर उच्च जाति की महिलाओं के दमन को उजागर किया। यद्यपि उन्होंने बाद में ईसाई धर्म अपना लिया था, इसलिए उन्हें एक रुढ़िवादी हिंदू कहना गलत है। उनके सुधार कार्यों ने महिला मुक्ति आंदोलन को एक नई बौद्धिक और व्यावहारिक दिशा प्रदान की।

76. (2) पुणे
डी.के. कर्वे ने महिला शिक्षा को समर्पित भारत का पहला विश्वविद्यालय 1916 में पुणे में स्थापित किया था। यह विश्वविद्यालय आगे चलकर 'श्रीमती नाथीबाई दामोदर ठाकरसी महिला विश्वविद्यालय' के रूप में जाना गया। कर्वे का मानना था कि महिलाओं का सशक्तिकरण केवल शिक्षा के माध्यम से ही संभव है। पुणे, जो उस समय महाराष्ट्र में सामाजिक सुधारों का प्रमुख केंद्र था, इस क्रांतिकारी शैक्षणिक पहल के लिए सबसे उपयुक्त स्थान सिद्ध हुआ जिसने हजारों महिलाओं का भविष्य संवारा।

77. (3) कंदुकुरी वीरेशलिंगम - महाराष्ट्र
कंदुकुरी वीरेशलिंगम का प्राथमिक कार्यक्षेत्र महाराष्ट्र नहीं, बल्कि मद्रास प्रेसीडेंसी का तेलुगु भाषी क्षेत्र था। उन्हें आधुनिक तेलुगु साहित्य और सामाजिक सुधारों का अग्रदूत माना जाता है। अन्य युग्म सही सुमेलित हैं: श्री नारायण गुरु ने केरल में दलितों के लिए कार्य किया, दयानंद सरस्वती का प्रभाव उत्तर भारत और पंजाब में रहा, और राजा राममोहन राय ने बंगाल में सती प्रथा के विरुद्ध ऐतिहासिक संघर्ष का नेतृत्व किया था।

78. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
भारतीय समाज सुधार के संदर्भ में इन अवधारणाओं के विशिष्ट अर्थ हैं। सती का अर्थ विधवा का अपने पति की चिता पर आत्मदाह करना था। शुद्धि आंदोलन का उद्देश्य अन्य धर्मों में गए लोगों की हिंदू धर्म में वापसी कराना था। पर्दा प्रथा महिलाओं के सार्वजनिक अलगाव और उनके घर तक सीमित रहने से संबंधित थी। वहीं 'बहिष्कृत' शब्द का प्रयोग समाज से उपेक्षित वर्गों के लिए किया गया, जिन्होंने आत्म-सम्मान के लिए संघर्ष किया।

79. (1) मानव सेवा ही ईश्वर सेवा है (जीव ही शिव है)।
रामकृष्ण मिशन के सामाजिक कार्यों का मुख्य आधार आध्यात्मिक मानवतावाद है। स्वामी विवेकानंद ने सिखाया कि प्रत्येक मनुष्य में परमात्मा का अंश है, इसलिए उसकी सेवा करना ही ईश्वर की सच्ची उपासना है। यह दर्शन केवल भौतिक सहायता तक सीमित नहीं है, बल्कि इसे एक आध्यात्मिक साधना माना गया है। इसी विचार से प्रेरित होकर मिशन ने आपदा राहत, चिकित्सा सहायता और शिक्षा के क्षेत्र में निस्वार्थ भाव से कार्य किया, जो मानवता के प्रति समर्पित है।

80. (2) केवल IV
भारतीय सुधार आंदोलनों ने कभी भी ब्रिटिश संस्कृति के पक्ष में अपनी प्राचीन परंपराओं के पूर्ण त्याग की बात नहीं की। इसके विपरीत, अधिकांश सुधारकों ने भारतीय दर्शन की श्रेष्ठता को बनाए रखते हुए केवल उसकी बुराइयों को दूर करने का प्रयास किया। उन्होंने तर्कवाद, महिला शिक्षा और जाति प्रथा के उन्मूलन पर बल दिया और जनता से जुड़ने के लिए स्थानीय भाषाओं का प्रभावी उपयोग किया। अतः चौथा कथन इन आंदोलनों की गौरवशाली सांस्कृतिक प्रकृति के विरुद्ध है।

www.nodia.in

NODIA

अध्याय 21

राष्ट्रवाद का उदय एवं प्रारंभिक कांग्रेस

1. निम्नलिखित में से किस कारक ने 19वीं शताब्दी के अंत में भारतीय राष्ट्रवाद के उदय के लिए सबसे महत्वपूर्ण आर्थिक उत्प्रेरक के रूप में कार्य किया?
(1) बंगाल में शोषणकारी द्वैध शासन प्रणाली का लागू होना
(2) धन का निष्कासन और स्वदेशी उद्योगों का विनाश
(3) केंद्रीय भारतीय रिजर्व बैंक की स्थापना
(4) अंग्रेजों द्वारा भारतीय शिल्प वस्तुओं का आधिकारिक प्रचार
(5) अनुत्तरित प्रश्न

2. 1883 के इल्बर्ट बिल विवाद ने निम्नलिखित में से किसे उजागर करके भारतीय राष्ट्रवाद में योगदान दिया?
(1) नस्लीय अहंकार और कानूनी समानता के प्रति यूरोपीय विरोध
(2) यूरोपीय नील बागान मालिकों द्वारा भारतीय किसानों का आर्थिक शोषण
(3) ग्रामीण क्षेत्रों में आधुनिक अंग्रेजी शिक्षा के विस्तार के प्रति ब्रिटिश अनिच्छा
(4) भारतीयों को सार्वभौमिक मताधिकार देने से संसदीय इनकार
(5) अनुत्तरित प्रश्न

3. लॉर्ड लिटन की उन प्रतिक्रियावादी नीतियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए जिन्होंने राष्ट्रवादी भावनाओं को प्रेरित किया:
I. उन्होंने भारतीय भाषाओं के समाचार पत्रों की स्वतंत्रता पर अंकुश लगाने के लिए वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट पारित किया।
II. उन्होंने भारतीय सिविल सेवा परीक्षा की अधिकतम आयु सीमा 21 वर्ष से घटाकर 19 वर्ष कर दी।
III. उन्होंने भारतीयों को उच्च प्रशासनिक पदों पर आसीन होने से रोकने के लिए वैधानिक नागरिक सेवा को समाप्त कर दिया।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

4. निम्नलिखित में से कौन सा कारक भारत में राष्ट्रीय जागृति के विकास में सहायक नहीं था?
(1) देश का राजनीतिक, प्रशासनिक और आर्थिक एकीकरण
(2) यूरोपीय और भारतीय विद्वानों द्वारा भारत के गौरवशाली अतीत की पुनर्खोज
(3) 19वीं शताब्दी के सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन
(4) ब्रिटिश क्राउन द्वारा स्थानीय हस्तशिल्प उद्योगों को संरक्षण और सहायता प्रदान करना
(5) अनुत्तरित प्रश्न

5. रेलवे और टेलीग्राफ जैसे परिवहन और संचार के आधुनिक साधनों की शुरुआत ने मुख्य रूप से राष्ट्रवाद में किस प्रकार सहायता की?
(1) भारतीयों के बीच जाति और धार्मिक बाधाओं का पूर्ण उन्मूलन करके
(2) औपनिवेशिक प्रशासन के विरुद्ध सशस्त्र विद्रोहों को सुगम बनाकर
(3) भौतिक गतिशीलता, विचारों के आदान-प्रदान और क्षेत्रीय अलगाव को समाप्त करके
(4) लाखों युवाओं के लिए उच्च वेतन वाले तकनीकी करियर का प्रावधान करके
(5) अनुत्तरित प्रश्न

6. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (समाचार पत्र)
A. अमृत बाजार पत्रिका
B. द हिंदू
C. केसरी
D. वॉइस ऑफ इंडिया
सूची II: (संस्थापक/संपादक)
i. जी. सुब्रमण्यम अय्यर
ii. शिशिर कुमार घोष
iii. दादाभाई नौरोजी
iv. बाल गंगाधर तिलक
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

7. वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट, जिसका उद्देश्य राष्ट्रवादी प्रेस का दमन करना था, किस वर्ष और किस वायसराय के कार्यकाल में अधिनियमित किया गया था?
(1) 1878, लॉर्ड लिटन
(2) 1881, लॉर्ड रिपन

Click Here to Buy book on Amazon

(3) 1904, लॉर्ड कर्जन
(4) 1910, लॉर्ड हार्डिंग
(5) अनुत्तरित प्रश्न

8. प्रारंभिक राष्ट्रीय जागृति में प्रेस की भूमिका के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।
(1) प्रेस ने राजनीतिक शिक्षा और विचारधारा के एक उपकरण के रूप में कार्य किया
(2) प्रारंभिक राष्ट्रवादी प्रेस एक अत्यधिक लाभदायक व्यावसायिक उद्यम था
(3) समाचार पत्र शहरों तक ही सीमित थे और जिला कस्बों तक पहुँचने में विफल रहे
(4) प्रारंभिक नेताओं ने केवल अंग्रेजी में प्रकाशन किया और क्षेत्रीय भाषाओं की उपेक्षा की
(5) अनुत्तरित प्रश्न

9. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): ब्रिटिश सरकार ने 1878 का वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट अधिनियमित किया।
कारण (R): क्षेत्रीय प्रेस ब्रिटिश शाही नीतियों की निरंतर आलोचना कर रहा था और जनसमूह के बीच राष्ट्रवादी विचारों का प्रभावी ढंग से प्रचार कर रहा था।
उपर्युक्त दो कथनों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा एक सही है?
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

10. 1878 के वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट के प्रतिबंधों से बचने के लिए, किस प्रसिद्ध समाचार पत्र ने रातों-रात खुद को अंग्रेजी भाषा के साप्ताहिक में परिवर्तित कर लिया था?
(1) अमृत बाजार पत्रिका
(2) सोम प्रकाश
(3) सुधारक
(4) बंगाली
(5) अनुत्तरित प्रश्न

11. राष्ट्रवादी विचारों के प्रसार में आधुनिक शिक्षा की भूमिका के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसने भारतीय बुद्धिजीवियों को लोकतंत्र, तर्कवाद और स्वतंत्रता के आधुनिक पश्चिमी विचारों से परिचित कराया।
II. अंग्रेजी भाषा ने विभिन्न भाषाई क्षेत्रों के शिक्षित भारतीयों के लिए संचार का एक साझा माध्यम प्रदान किया।
III. अंग्रेजों ने स्पष्ट रूप से भारतीयों के बीच स्वतंत्रता और स्वशासन की भावना को बढ़ावा देने के लिए शिक्षा प्रणाली को तैयार किया था।
IV. इसने एक नए मध्यम वर्ग के निर्माण में सहायता की जिसने अंततः राष्ट्रीय आंदोलन को नेतृत्व प्रदान किया।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, II और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) केवल I, III और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

12. निम्नलिखित में से कौन सा कथन भारत में अंग्रेजी शिक्षा प्रारंभ करने के पीछे औपनिवेशिक प्रशासन के प्राथमिक उद्देश्य का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(1) भारतीय समाज में वैज्ञानिक अनुसंधान और औद्योगिक नवाचार को बढ़ावा देना
(2) शासन में सहायता के लिए रुचि और बुद्धि में अंग्रेजों जैसे दिखने वाले भारतीयों का एक वर्ग तैयार करना
(3) भारतीयों को लोकतांत्रिक और गणतंत्रात्मक शासन प्रणाली स्थापित करने के लिए तैयार करना
(4) वैश्विक मंच पर शास्त्रीय भारतीय साहित्य की समृद्ध विरासत को बढ़ावा देना
(5) अनुत्तरित प्रश्न

13. निम्नलिखित में से कौन सा शैक्षणिक संस्थान राष्ट्रीय जागृति के रूप में भारतीय राष्ट्रवादियों द्वारा स्थापित नहीं किया गया था?
(1) डेक्कन एजुकेशन सोसाइटी
(2) बंगाल नेशनल कॉलेज
(3) फोर्ट विलियम कॉलेज
(4) डी.ए.वी. कॉलेज, लाहौर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

14. राष्ट्रवाद के उदय के दौरान अंग्रेजों की शैक्षणिक नीतियों के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) 1854 के वुड्स डिस्पैच को अक्सर भारत में अंग्रेजी शिक्षा का 'मैग्ना कार्टा' कहा जाता है।
(2) 1902 के रैले आयोग की नियुक्ति लॉर्ड कर्जन द्वारा विश्वविद्यालयों की स्थिति और संभावनाओं की जांच के लिए की गई थी।
(3) ब्रिटिश शिक्षा प्रणाली ने जानबूझकर व्यापक व्यावसायिक और तकनीकी प्रशिक्षण की उपेक्षा की।
(4) हंटर आयोग ने प्राथमिक शिक्षा की अनदेखी करते हुए विश्वविद्यालय शिक्षा पर ध्यान केंद्रित किया।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

15. प्रारंभिक ब्रिटिश शैक्षिक नीति में 'अधोमुखी निस्पंदन सिद्धांत' की अवधारणा का अर्थ था:
(1) आधुनिक विचारों का शिक्षित अभिजात वर्ग से छनकर आम जनता तक पहुँचना
(2) समाज के निम्नतम स्तर को व्यापक शिक्षा का प्रत्यक्ष प्रावधान
(3) उदार कलाओं की तुलना में तकनीकी और व्यावसायिक

Downloaded from www.pdf.tube

(2) जनता की क्षमता में अटूट विश्वास
(3) जन्मसिद्ध अधिकार के रूप में स्वराज की माँग
(4) आत्मनिर्भरता और रचनात्मक कार्य की वकालत
(5) अनुत्तरित प्रश्न

48. बंगाल विभाजन से जुड़ी निम्नलिखित घटनाओं को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. सरकार द्वारा विभाजन की औपचारिक घोषणा
II. विभाजन आधिकारिक तौर पर प्रभावी हुआ (शोक दिवस)
III. कलकत्ता टाउन हॉल में बहिष्कार प्रस्ताव पारित होना
IV. विभाजन का रद्दीकरण
निम्नलिखित में से कौन सा सही कालानुक्रमिक क्रम दर्शाता है?
(1) I - III - II - IV
(2) III - I - II - IV
(3) I - II - III - IV
(4) III - II - I - IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

49. बंगाल विभाजन के लिए लॉर्ड कर्जन के उद्देश्यों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. आधिकारिक तौर पर बताया गया कारण यह था कि प्रांत प्रशासनिक दृष्टि से बहुत बड़ा था।
II. वास्तविक राजनीतिक उद्देश्य बंगाली भाषी जनसंख्या को विभाजित करना और राष्ट्रवादी केंद्र को कमजोर करना था।
III. विभाजन का उद्देश्य पूर्व में एक मुस्लिम बहुल प्रांत बनाकर हिंदुओं और मुसलमानों के बीच फूट पैदा करना था।
IV. विभाजन मुख्य रुप से स्थानीय भारतीय नेताओं को पूर्ण प्रशासनिक स्वायत्तता देने के लिए किया गया था।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, II और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) केवल I, III और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

50. बंगाल विभाजन किस सटीक तिथि को आधिकारिक तौर पर प्रभावी हुआ, जिससे व्यापक विरोध प्रदर्शन प्रारंभ हुए और शोक दिवस मनाया गया?
(1) 19 जुलाई, 1905
(2) 7 अगस्त, 1905
(3) 16 अक्टूबर, 1905
(4) 12 दिसंबर, 1911
(5) अनुत्तरित प्रश्न

51. स्वदेशी आंदोलन के दौरान रवींद्रनाथ टैगोर की भूमिका के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उन्होंने प्रदर्शनकारियों को प्रेरित करने के लिए देशभक्ति गीत 'आमार सोनार बांग्ला' की रचना की।
II. उन्होंने विभाजन के दिन एकता के प्रतीक के रूप में हिंदुओं और मुसलमानों के बीच 'रक्षा बंधन' मनाने का सुझाव दिया।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I
(2) केवल II
(3) I और II दोनों
(4) न तो I और न ही II
(5) अनुत्तरित प्रश्न

NODIA

52. 1905 में बंगाल विभाजन के बाद, नव निर्मित प्रांत 'पूर्वी बंगाल और असम' में निम्नलिखित में से कौन सा क्षेत्र सम्मिलित नहीं था?
(1) ढाका
(2) चटगाँव
(3) राजशाही
(4) बिहार
(5) अनुत्तरित प्रश्न

53. 20वीं शताब्दी के प्रारंभ के भारतीय राष्ट्रवाद के संदर्भ में प्रत्यक्ष कार्य-कारण संबंध यह दर्शाता है कि बंगाल विभाजन ने सीधे तौर पर किस आंदोलन को जन्म दिया?
(1) असहयोग आंदोलन
(2) सविनय अवज्ञा आंदोलन
(3) स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलन
(4) भारत छोड़ो आंदोलन
(5) अनुत्तरित प्रश्न

54. स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलन के प्रभाव के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इससे बंगाल में विदेशी वस्त्रों और वस्तुओं के आयात में भारी गिरावट आई।
II. इसने साबुन, माचिस और हथकरघा जैसे स्वदेशी उद्योगों के विकास को प्रोत्साहित किया।
III. इसके परिणामस्वरुप समानांतर राष्ट्रीय शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना हुई।
IV. इसने बंगाल की पूरी मुस्लिम आबादी को कांग्रेस के समर्थन में सफलतापूर्वक एकजुट कर दिया।
V. इसने राष्ट्रवादी आंदोलन में याचिका पद्धति से सक्रिय जनभागीदारी की ओर परिवर्तन को चिह्नित किया।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल III और V
(3) केवल IV
(4) केवल II, IV और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

55. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (स्वदेशी के दौरान संस्थान/समिति)

23. प्रभावशाली पुस्तक "अनहैप्पी इंडिया", जिसने ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन की कड़ी आलोचना की और कैथरीन मेयो की 'मदर इंडिया' का प्रत्युत्तर दिया, किसके द्वारा लिखी गई थी?
(1) बिपिन चंद्र पाल
(2) बाल गंगाधर तिलक
(3) अरविंद घोष
(4) लाला लाजपत राय
(5) अनुत्तरित प्रश्न

24. लाला लाजपत राय के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. वे पंजाब में आर्य समाज आंदोलन से सक्रिय रूप से जुड़े थे।
II. उन्होंने स्वदेशी आंदोलन का कड़ा विरोध किया और इसे आर्थिक रूप से अव्यवहारिक माना।
III. वे 1920 में अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस के पहले अध्यक्ष बने।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

25. राष्ट्रवादी नेता और उनके संबंधित प्रकाशन का निम्नलिखित में से कौन सा युग्म गलत सुमेलित है?
(1) लाला लाजपत राय - द पंजाबी
(2) बिपिन चंद्र पाल - न्यू इंडिया
(3) अरविंद घोष - वॉइस ऑफ इंडिया
(4) बाल गंगाधर तिलक - महरत्ता
(5) अनुत्तरित प्रश्न

26. लाला लाजपत राय ने "पंजाब केसरी" की लोकप्रिय उपाधि मुख्य रूप से किसके कारण अर्जित की?
(1) पंजाब क्षेत्र में उनके सशक्त नेतृत्व और जन लामबंदी के कारण
(2) लाहौर में सिख शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना के कारण
(3) ब्रिटिश भारतीय सीमावर्ती सेना में विशिष्ट सैन्य सेवा के कारण
(4) पूरे पंजाब प्रांत में पारंपरिक कुश्ती के अखाड़ों में उनकी दक्षता के कारण
(5) अनुत्तरित प्रश्न

27. बिपिन चंद्र पाल के राजनीतिक सफर के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।
(1) उन्होंने एक चरमपंथी के रूप में प्रारंभ किया लेकिन बाद में उदारवादी याचना दृष्टिकोण के कट्टर समर्थक बन गए।
(2) उन्होंने अपने करियर के प्रारंभ से ही अंग्रेजों के विरुद्ध सशस्त्र विद्रोह की निरंतर वकालत की।
(3) बंगाल में धार्मिक सुधारों के लिए सक्रिय राजनीति से पूर्ण पृथक्करण।
(4) उदारवादी संवैधानिकता से प्रमुख चरमपंथी नेतृत्व की ओर परिवर्तन।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

28. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (चरमपंथी नेता)
A. बिपिन चंद्र पाल
B. बाल गंगाधर तिलक
C. लाला लाजपत राय
D. अरविंद घोष
सूची II: (मुख्य विचारधारा/कार्य)
i. सक्रिय निष्क्रिय प्रतिरोध और आध्यात्मिक राष्ट्रवाद की वकालत की
ii. आर्थिक आलोचना और श्रमिक आंदोलनों पर बल दिया
iii. सार्वजनिक उत्सवों के माध्यम से सांस्कृतिक पुनरुत्थानवाद पर ध्यान केंद्रित किया
iv. बंगाल में ब्रिटिश नियंत्रण से मुक्त पूर्ण स्वायत्तता की अवधारणा को लोकप्रिय बनाया
(1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

29. स्वदेशी आंदोलन के दौरान बिपिन चंद्र पाल की 'राष्ट्रीय शिक्षा' की अवधारणा का मुख्य उद्देश्य था:
(1) ब्रिटिश प्रशासनिक कार्यालयों के लिए सस्ते लिपिक कर्मचारी प्रदान करना
(2) ग्रामीण स्कूलों में सभी स्वदेशी भाषाओं को अंग्रेजी से बदलना
(3) राष्ट्रीय भावना जागृत करना और छात्रों को नागरिक कर्तव्यों के लिए तैयार करना
(4) आधुनिक वैज्ञानिक अध्ययन को छोड़कर विशेष रूप से धार्मिक ग्रंथों पर ध्यान केंद्रित करना
(5) अनुत्तरित प्रश्न

30. बिपिन चंद्र पाल ने अपने राष्ट्रवादी विचारों के प्रचार के लिए 1901 में कौन सा अंग्रेजी साप्ताहिक प्रारंभ किया था?
(1) वंदे मातरम
(2) युगांतर
(3) द बंगाली
(4) न्यू इंडिया
(5) अनुत्तरित प्रश्न

31. निम्नलिखित प्रारंभिक राष्ट्रवादी नेताओं में से कौन सा एक 'उदारवादी' दल से संबंधित होने के कारण 'चरमपंथी' नेताओं से भिन्न है?
(1) गोपाल कृष्ण गोखले

Click Here to Buy book on Amazon

प्रशिक्षण को प्राथमिकता देना
(4) सार्वजनिक शैक्षणिक संस्थानों के लिए कुल राज्य वित्त पोषण में क्रमिक कमी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

16. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (पहल/प्रकाशन)
A. गणपति महोत्सव
B. शिवाजी महोत्सव
C. केसरी
D. महरत्ता
सूची II: (वर्ष/बाल गंगाधर तिलक से संबंधित विवरण)
i. अंग्रेजी भाषा
ii. 1893
iii. 1895
iv. मराठी भाषा
(1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(2) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(3) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(4) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(5) अनुत्तरित प्रश्न

17. प्रसिद्ध नारा "स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूँगा" बाल गंगाधर तिलक द्वारा राष्ट्रीय आंदोलन के किस प्रमुख चरण के दौरान दिया गया था?
(1) स्वदेशी आंदोलन (1905)
(2) होम रूल आंदोलन (1916)
(3) असहयोग आंदोलन (1920)
(4) कांग्रेस की स्थापना (1885)
(5) अनुत्तरित प्रश्न

18. बाल गंगाधर तिलक के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. वे एक रूढ़िवादी हिंदू थे जिन्होंने सम्मति आयु विधेयक का विरोध किया था।
II. उन्होंने आम जनता के बीच राष्ट्रवादी विचारों के प्रसार के लिए पारंपरिक धार्मिक उत्सवों के उपयोग की प्रथा प्रारंभ की।
III. वे राजनीतिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रार्थना और याचिका के उदारवादी तरीकों में दृढ़ विश्वास रखते थे।
IV. वे प्रेस में अपने लेखन के कारण कई बार जेल जाने वाले पहले राष्ट्रवादी नेता थे।
V. उन्होंने 1907 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सूरत अधिवेशन की अध्यक्षता की थी।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल III और V
(3) केवल II, IV और V
(4) केवल I, III और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

19. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रुप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): बाल गंगाधर तिलक ने जनता को लामबंद करने के लिए गणपति और शिवाजी जैसे पारंपरिक उत्सवों का उपयोग किया।
कारण (R): तिलक राष्ट्रवादी आंदोलन को केवल उच्च जाति के अभिजात वर्ग तक ही सीमित रखना चाहते थे और जन भागीदारी से बचना चाहते थे।
उपर्युक्त दो कथनों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा एक सही है?
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

NODIA

20. निम्नलिखित ब्रिटिश लेखकों में से किसने बाल गंगाधर तिलक को "भारतीय अशांति का जनक" कहा था?
(1) लॉर्ड कर्जन
(2) जॉन मॉर्ले
(3) एडविन मोंटेग्यू
(4) वेलेंटाइन चिरोल
(5) अनुत्तरित प्रश्न

21. निम्नलिखित में से कौन सी पद्धति स्वराज प्राप्त करने के लिए बाल गंगाधर तिलक की राजनीतिक रणनीति का मुख्य घटक नहीं थी?
(1) विदेशी वस्त्रों और आयातित व्यावसायिक वस्तुओं का बहिष्कार
(2) स्वदेशी संस्थानों के माध्यम से राष्ट्रीय शिक्षा का प्रचार
(3) ब्रिटिश क्राउन की आर्थिक और वित्तीय नीतियों के प्रति अधीनता
(4) निष्क्रिय प्रतिरोध और सामूहिक असहयोग का आयोजन
(5) अनुत्तरित प्रश्न

22. लाला लाजपत राय के जीवन से संबंधित निम्नलिखित घटनाओं को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. बिना मुकदमे के मांडले निर्वासन
II. लाहौर में नेशनल स्कूल की स्थापना
III. कलकत्ता में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के विशेष अधिवेशन की अध्यक्षता
IV. साइमन कमीशन का विरोध करते समय गंभीर लाठीचार्ज
निम्नलिखित में से कौन सा सही कालानुक्रमिक क्रम दर्शाता है?
(1) II - I - III - IV
(2) I - II - IV - III
(3) II - III - I - IV
(4) I - III - II - IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

39. कांग्रेस के उदारवादी नेताओं की राजनीतिक पद्धति का सबसे सटीक वर्णन निम्नलिखित में से किसके द्वारा किया गया है?
(1) संगठित सशस्त्र संघर्ष और गुप्त संस्थाओं का गठन
(2) सामूहिक हड़तालें, आर्थिक बहिष्कार और संगठित सविनय अवज्ञा
(3) विदेशों में ब्रिटिश विरोधी शक्तियों से सैन्य हस्तक्षेप की माँग करना
(4) प्रार्थना, याचिका और विरोध का उपयोग करते हुए संवैधानिक आंदोलन
(5) अनुत्तरित प्रश्न

40. उदारवादी कांग्रेस द्वारा की गई निरंतर संवैधानिक माँगों के प्रति रियायत के रूप में अंग्रेजों द्वारा निम्नलिखित में से कौन सा विधायी उपाय पारित किया गया था?
(1) 1853 का चार्टर एक्ट
(2) 1892 का भारतीय परिषद अधिनियम
(3) 1919 का रॉलेट एक्ट
(4) 1935 का भारत सरकार अधिनियम
(5) अनुत्तरित प्रश्न

41. निम्नलिखित में से कौन सा नेता भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के उदारवादी चरण से संबंधित नहीं है?
(1) दादाभाई नौरोजी
(2) फिरोजशाह मेहता
(3) अरविंद घोष
(4) दिनशा वाचा
(5) अनुत्तरित प्रश्न

42. उदारवादियों की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि "औपनिवेशिक शासन की आर्थिक आलोचना" थी। इसमें किस विचार का प्रचार करना सम्मिलित था?
(1) धन के बहिर्गमन और स्थानीय उद्योगों की क्षति के कारण उत्पन्न निर्धनता
(2) ब्रिटिश शासन भारत के आर्थिक विकास के लिए आवश्यक एक ईश्वरीय वरदान था
(3) भारत में निर्धनता एक प्राकृतिक घटना थी जिसका औपनिवेशिक नीतियों से कोई संबंध नहीं था
(4) ब्रिटिश पूंजीपतियों द्वारा तीव्र औद्योगीकरण ही भारत के लिए एकमात्र समाधान था
(5) अनुत्तरित प्रश्न

43. उदारवादियों और चरमपंथियों के बीच अंतर को स्पष्ट करने वाले निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उदारवादियों का मानना था कि ब्रिटिश शासन में न्याय की जन्मजात भावना है, जबकि चरमपंथियों का मानना था कि अंग्रेज केवल दबाव के आगे झुकेंगे।
II. उदारवादियों ने अपनी राजनीतिक गतिविधियों को शिक्षित वर्गों तक सीमित रखा, जबकि चरमपंथियों ने सामूहिक राजनीतिक भागीदारी पर बल दिया।
III. उदारवादी और चरमपंथी दोनों 1905 से पूर्व ब्रिटिश साम्राज्य के बाहर पूर्ण स्वतंत्रता के तत्काल लक्ष्य पर सार्वभौमिक रूप से सहमत थे।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?
(1) केवल I
(2) केवल II
(3) केवल III
(4) केवल I और II
(5) अनुत्तरित प्रश्न

44. "न्यू लैम्प्स फॉर ओल्ड" नामक प्रभावशाली लेखों की श्रृंखला, जिसने कांग्रेस की उदारवादी राजनीति की कड़ी आलोचना की, किसके द्वारा लिखी गई थी?
(1) बाल गंगाधर तिलक
(2) अरविंद घोष
(3) बिपिन चंद्र पाल
(4) लाला लाजपत राय
(5) अनुत्तरित प्रश्न

45. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (लेखक/नेता)
A. दादाभाई नौरोजी
B. अरविंद घोष
C. बाल गंगाधर तिलक
D. आर.सी. दत्त
सूची II: (कृति/अवधारणा)
i. निष्क्रिय प्रतिरोध का सिद्धांत
ii. पॉवर्टी एंड अन-ब्रिटिश रूल इन इंडिया
iii. इकोनॉमिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया
iv. गीता रहस्य
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

46. 20वीं शताब्दी की शुरुआत में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के भीतर चरमपंथ के उदय का सबसे उपयुक्त कारण निम्नलिखित में से किसे माना जाता है?
(1) ब्रिटिश सरकार द्वारा सभी उदारवादी माँगों की पूर्ण संतुष्टि
(2) भारतीय कृषि क्षेत्र में अचानक भारी धन का आगमन
(3) अंग्रेजों द्वारा स्वेच्छा से प्रशासनिक शक्ति हस्तांतरित करने का निर्णय
(4) उदारवादी तरीकों से मोहभंग और कर्जन की प्रतिक्रियावादी नीतियां
(5) अनुत्तरित प्रश्न

47. उदारवादियों की तुलना में चरमपंथी नेताओं की मुख्य वैचारिक मान्यताओं के संबंध में विषम विकल्प की पहचान कीजिए।
(1) ब्रिटिश शासन की ईश्वरीय प्रकृति में विश्वास

Downloaded from www.pdf.tube

62. (2) 1843
देवेंद्रनाथ टैगोर ने 1839 में तत्त्वबोधिनी सभा की स्थापना की थी ताकि राजा राममोहन राय के विचारों को व्यवस्थित रूप से प्रसारित किया जा सके। आगे चलकर 1843 में इस सभा का ब्रह्म समाज में औपचारिक रूप से विलय हो गया। इस विलय ने ब्रह्म समाज को एक नई संगठनात्मक शक्ति और वैचारिक स्पष्टता प्रदान की। देवेंद्रनाथ टैगोर के नेतृत्व में ब्रह्म समाज ने अपनी ऊर्जा पुनः प्राप्त की और बंगाली बुद्धिजीवियों के बीच एक प्रभावशाली शक्ति के रूप में उभरा।

63. (1) केशव चंद्र सेन
केशव चंद्र सेन ने 1870 में 'इंडियन रिफॉर्म एसोसिएशन' का गठन किया था। इस संस्था का उद्देश्य व्यापक सामाजिक सुधार लाना था, जिसमें स्त्री शिक्षा, मद्यपान निषेध और सस्ते साहित्य का प्रकाशन शामिल था। सेन ने इस संगठन के माध्यम से समाज के कमजोर वर्गों की सेवा करने और जनता में वैज्ञानिक चेतना का विकास करने का प्रयास किया। यह संस्था उनकी उस प्रगतिशील विचारधारा का परिणाम थी जो धर्म को व्यावहारिक समाज सेवा से जोड़ती थी।

64. (2) क्रमिक और शिक्षा एवं अनुनय पर निर्भर
महादेव गोविंद रानाडे और प्रार्थना समाज का दृष्टिकोण क्रांतिकारी होने के बजाय विकासवादी और क्रमिक था। उनका मानना था कि समाज में स्थायी परिवर्तन बलपूर्वक नहीं, बल्कि लोगों की सोच बदलकर और उन्हें शिक्षित करके ही लाया जा सकता है। उन्होंने तर्क और समाज के भीतर रहकर ही सुधार करने की नीति अपनाई। वे प्राचीन भारतीय परंपराओं का सम्मान करते थे और उन्हीं के भीतर मौजूद सुधारवादी तत्वों को उभारकर समाज को आधुनिक बनाना चाहते थे।

65. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
स्वामी दयानंद सरस्वती ने मध्यकालीन विकृतियों के रूप में उभरी जन्म आधारित जाति व्यवस्था का प्रबल विरोध किया। उनका तर्क था कि वेदों में वर्ण का निर्धारण व्यक्ति के कर्म, स्वभाव और गुणों के आधार पर होता है, न कि जन्म से। वे एक ऐसे गतिशील समाज का निर्माण करना चाहते थे जहाँ प्रत्येक व्यक्ति को उसकी क्षमता के अनुसार स्थान मिले। इस प्रकार उनका विरोध वेदों की शुद्ध व्यवस्था की पुनर्स्थापना के लिए ही था।

66. (1) गुरुकुल पार्टी ने वैदिक मूल्यों के साथ संयुक्त पश्चिमी अंग्रेजी शिक्षा की वकालत की।
1893 में आर्य समाज का विभाजन शिक्षा और खान-पान के मुद्दों पर हुआ था। गुरुकुल दल, जिसका नेतृत्व स्वामी श्रद्धानंद कर रहे थे, पश्चिमी शिक्षा के विरुद्ध था और पारंपरिक वैदिक शिक्षा पद्धति पर बल देता था। इसके विपरीत, लाला हंसराज और लाला लाजपत राय के कॉलेज दल ने वैदिक मूल्यों के साथ पश्चिमी विज्ञान और अंग्रेजी शिक्षा के समन्वय की वकालत की। अतः पहला कथन गलत है क्योंकि यह कॉलेज दल की विशेषता को दर्शाता है।

67. (2) 1893
स्वामी विवेकानंद ने वर्ष 1893 में शिकागो में आयोजित 'विश्व धर्म संसद' में भाग लेकर भारतीय अध्यात्म का गौरव बढ़ाया। उनके प्रसिद्ध संबोधन "अमेरिका के भाइयों और बहनों" ने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस भाषण ने न केवल हिंदू धर्म को एक सहिष्णु और सार्वभौमिक धर्म के रूप में स्थापित किया, बल्कि पश्चिम में भारत की सांस्कृतिक छवि को भी बदल दिया। इस घटना के बाद भारतीय राष्ट्रवाद को एक नया और सशक्त वैचारिक आधार प्राप्त हुआ।

68. (1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
थियोसोफिकल सोसाइटी के विभिन्न नेताओं ने विशिष्ट भूमिकाएँ निभाईं। मैडम ब्लावात्स्की ने इसकी स्थापना न्यूयॉर्क में की, जबकि कर्नल ऑलकाट ने इसका मुख्यालय अड्यार स्थानांतरित किया। एनी बेसेंट ने भारत आकर होम रूल आंदोलन के माध्यम से राजनीतिक चेतना जाग्रत की। ए.ओ. ह्यूम सोसाइटी के समर्थक थे, परंतु उन्हें मुख्य रूप से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के सूत्रधार के रूप में जाना जाता है। इन सभी ने भारतीय पुनर्जागरण को वैश्विक पहचान दिलाई।

69. (3) अल-हिलाल
'अल-हिलाल' पत्रिका का संपादन मौलाना अबुल कलाम आजाद द्वारा किया गया था, न कि सर सैयद अहमद खान द्वारा। सर सैयद अहमद खान ने 'तहजीब-उल-अखलाक' के माध्यम से आधुनिक विचारों का प्रचार किया और 'द लॉयल मुहम्मडन्स ऑफ इंडिया' लिखकर अंग्रेजों की गलतफहमियाँ दूर करने का प्रयास किया। उन्होंने ईसाई धर्म और इस्लाम के बीच संवाद हेतु बाइबिल पर भी टिप्पणी लिखी। अतः 'अल-हिलाल' उनके सुधारवादी प्रकाशनों की सूची में सम्मिलित नहीं है।

70. (2) केवल III
देवबंद आंदोलन अलीगढ़ आंदोलन का समर्थक नहीं, बल्कि उसका वैचारिक विरोधी था। जहाँ अलीगढ़ आंदोलन पश्चिमी शिक्षा और ब्रिटिश वफादारी का पक्षधर था, वहीं देवबंद ने पारंपरिक इस्लामी शिक्षा और ब्रिटिश विरोध की नीति अपनाई थी। इस आंदोलन की स्थापना 1866 में मोहम्मद कासिम नानौतवी और रशीद अहमद गंगोही ने की थी। इसका मुख्य लक्ष्य मुस्लिम समाज को धार्मिक रूप से सशक्त करना और उन्हें औपनिवेशिक शासन के प्रभाव से मुक्त रखना था।

71. (4) यह माली, तेली, कुनबी और धनगर जैसे पिछड़े वर्गों का एक आंदोलन था।
सत्यशोधक समाज का सबसे सशक्त पक्ष इसका व्यापक सामाजिक आधार था। ज्योतिराव फुले ने इस संगठन को उन समुदायों के लिए बनाया था जो पारंपरिक रूप से कृषि और छोटे व्यवसायों से जुड़े थे और जिन्हें उच्च जाति के वर्चस्व के कारण उपेक्षित रखा गया था। माली, कुनबी और धनगर जैसी जातियों ने इस आंदोलन को अपने अधिकारों के संघर्ष के रूप में अपनाया। यह उच्च-जाति के सुधारों के विपरीत एक वास्तविक जन-आंदोलन था।

NODIA

A. स्वदेश बांधव समिति
B. बंगाल नेशनल कॉलेज
C. एंटी-सर्कुलर सोसाइटी
D. डॉन सोसाइटी
सूची II: (प्रमुख व्यक्ति)
i. अरविंद घोष (प्राचार्य के रूप में)
ii. अश्विनी कुमार दत्त
iii. सतीश चंद्र मुखर्जी
iv. सचिंद्र प्रसाद बोस
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

56. स्वदेशी आंदोलन के दौरान 'आत्मशक्ति' की अवधारणा पर बहुत बल दिया गया था। व्यवहार में, इसका मुख्य रुप से अर्थ था:
(1) सामाजिक सुधार और स्वदेशी उद्यमों के माध्यम से राष्ट्रीय गौरव की स्थापना
(2) सैन्य रक्षा के लिए पूरी तरह से अंग्रेजों पर निर्भर रहना
(3) सरकारी नौकरियों का बहिष्कार करना और केवल भिक्षा पर निर्भर रहना
(4) विशेष रुप से ब्रिटिश अधिकारियों की सशस्त्र हत्याओं में सम्मिलित होना
(5) अनुत्तरित प्रश्न

57. बहिष्कार और स्वदेशी आंदोलन में विभिन्न सामाजिक समूहों की भागीदारी के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।
(1) छात्र पूरी तरह से उदासीन थे और विदेशी सामान बेचने वाली दुकानों के बाहर धरने में उनकी कोई भूमिका नहीं थी।
(2) महिलाएँ अपने घरों तक ही सीमित रहीं और राष्ट्रवादी जुलूसों में भाग नहीं लिया।
(3) आंदोलन में धरना प्रदर्शन और जनता को लामबंद करने में महिलाओं और छात्रों की व्यापक सक्रिय भागीदारी देखी गई।
(4) उच्च वर्ग के जमींदारों ने सार्वभौमिक रूप से आंदोलन का विरोध किया और ब्रिटिश पुलिस की सहायता की।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

58. स्वदेशी आंदोलन के नेताओं और उनके संबंधित कार्य क्षेत्रों का निम्नलिखित में से कौन सा युग्म गलत सुमेलित है?
(1) सैयद हैदर रज़ा - मध्य प्रांत
(2) बाल गंगाधर तिलक - बॉम्बे और पुणे
(3) लाला लाजपत राय और अजीत सिंह - पंजाब
(4) वी.ओ. चिदंबरम पिल्लई - मद्रास प्रेसीडेंसी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

59. 1907 के सूरत विभाजन के कारणों से जुड़े निम्नलिखित मुद्दों पर विचार कीजिए:
I. चरमपंथी स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलन को बंगाल के बाहर विस्तारित करना चाहते थे, जिसका उदारवादियों ने विरोध किया।
II. उदारवादी 1906 में पारित स्वराज, बहिष्कार और राष्ट्रीय शिक्षा के प्रस्तावों को हटाना चाहते थे।
III. रास बिहारी घोष और लाला लाजपत राय के बीच सूरत अधिवेशन के अध्यक्ष के चयन को लेकर विवाद।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

60. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): 1907 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का सूरत अधिवेशन उदारवादियों और चरमपंथियों के बीच औपचारिक विभाजन के साथ समाप्त हुआ।
कारण (R): ब्रिटिश सरकार ने सफलतापूर्वक दोनों गुटों के बीच मध्यस्थता की, जिससे चरमपंथियों को स्वेच्छा से कांग्रेस छोड़ने के लिए विवश होना पड़ा।
उपर्युक्त दो कथनों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा एक सही है?
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

61. 1907 के विवादित सूरत अधिवेशन की अध्यक्षता किसने की थी जहाँ कांग्रेस का विभाजन हुआ था?
(1) दादाभाई नौरोजी
(2) सुरेंद्रनाथ बनर्जी
(3) रास बिहारी घोष
(4) फिरोजशाह मेहता
(5) अनुत्तरित प्रश्न

62. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के उन अधिवेशनों के सही कालानुक्रमिक क्रम का चयन कीजिए जो विभाजन की ओर ले गए:
(1) बनारस (1905), कलकत्ता (1906), सूरत (1907)
(2) कलकत्ता (1906), बनारस (1905), सूरत (1907)
(3) सूरत (1907), बनारस (1905), कलकत्ता (1906)
(4) बनारस (1905), सूरत (1907), कलकत्ता (1906)
(5) अनुत्तरित प्रश्न

63. कलकत्ता अधिवेशन (1906) में दादाभाई नौरोजी की अध्यक्षता में कांग्रेस ने चार समझौते के प्रस्ताव पारित किए थे। निम्नलिखित में से कौन सा उनमें सम्मिलित नहीं था?

Click Here to Buy book on Amazon

(4) मदन लाल ढींगरा द्वारा कर्जन वायली की हत्या
(5) अनुत्तरित प्रश्न

80. 20वीं शताब्दी के प्रारंभ की भारतीय राजनीति के संदर्भ में, राजनीतिक रणनीति के रूप में 'व्यक्तिगत वीरतापूर्ण कार्य' की मुख्य विशेषता थी:
(1) सरकारी नीति को बदलने के लिए एक एकल राजनीतिक नेता द्वारा सामूहिक उपवास
(2) औपनिवेशिक अधिकारियों और देशद्रोहियों की हत्या के लिए गुप्त योजना तैयार करना
(3) ग्रामीण क्षेत्रों में अकेले दम पर शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना करना
(4) प्रमुख ब्रिटिश समाचार पत्रों में गुमनाम याचिकाओं का प्रकाशन
(5) अनुत्तरित प्रश्न

NODIA

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs,
you are wasting valuable time.

Research shows that learning from
PRINTED BOOKS has up to
4× HIGHER RETENTION
than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS**
move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND**
in competition.

In competitive exams,
being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

(4) केवल I, IV और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

71. 1916 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के ऐतिहासिक लखनऊ अधिवेशन के अध्यक्ष कौन थे?
(1) एनी बेसेंट
(2) बाल गंगाधर तिलक
(3) सैयद नबीउल्लाह
(4) अंबिका चरण मजूमदार
(5) अनुत्तरित प्रश्न

72. इतिहासकारों द्वारा राष्ट्रीय आंदोलन के लिए लखनऊ समझौते (1916) का सबसे महत्वपूर्ण दीर्घकालिक दोष निम्नलिखित में से किसे माना जाता है?
(1) पृथक निर्वाचक मंडल को स्वीकार करके सांप्रदायिक राजनीति को वैधता प्रदान करना
(2) इसने ब्रिटिश सरकार को पूर्णतः पृथक कर दिया, जिससे तत्काल मार्शल लॉ लागू हो गया।
(3) कांग्रेस में एक गंभीर और स्थायी वित्तीय संकट का कारण बनना
(4) इसके कारण मुख्यधारा के राजनीतिक क्षेत्र से उदारवादी नेताओं का निष्कासन हुआ।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

73. उन नेताओं के सही युग्म की पहचान कीजिए जो 1916 में लखनऊ में कांग्रेस-लीग एकता के मुख्य वास्तुकार और सूत्रधार थे।
(1) महात्मा गांधी और आगा खान
(2) जवाहरलाल नेहरू और लियाकत अली खान
(3) बाल गंगाधर तिलक और मोहम्मद अली जिन्ना
(4) एनी बेसेंट और सैयद अहमद खान
(5) अनुत्तरित प्रश्न

74. निम्नलिखित में से किस अंतर्राष्ट्रीय घटना ने 1916 तक मुस्लिम लीग को कांग्रेस के निकट लाने में एक कारक के रूप में योगदान दिया?
(1) प्रथम विश्व युद्ध में ओटोमन साम्राज्य के प्रति ब्रिटिश शत्रुता
(2) 1917 की सफल रूसी क्रांति
(3) यूरोप में वर्साय की संधि पर औपचारिक हस्ताक्षर
(4) ओटोमन खलीफा द्वारा बंगाल विभाजन को वापस लेना
(5) अनुत्तरित प्रश्न

75. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (प्रारंभिक क्रांतिकारी संगठन)
A. मित्र मेला
B. अनुशीलन समिति (कलकत्ता)
C. अभिनव भारत
D. युगांतर (पत्रिका और समूह)
सूची II: (संस्थापक/प्रमुख नेता)
i. वी.डी. सावरकर
ii. प्रमथ मित्र
iii. वी.डी. सावरकर (एक परिवर्तित गुप्त संस्था के रूप में)
iv. बारींद्र कुमार घोष और भूपेंद्रनाथ दत्त
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-i, B-iv, C-iii, D-ii
(4) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(5) अनुत्तरित प्रश्न

NODIA

76. अलीपुर बम षड्यंत्र केस (1908) निम्नलिखित में से किसकी हत्या के प्रयास के पश्चात प्रारंभिक क्रांतिकारियों पर चलाया गया एक बड़ा मुकदमा था?
(1) लॉर्ड हार्डिंग
(2) डगलस किंग्सफोर्ड
(3) कर्जन वायली
(4) ए.एम.टी. जैक्सन
(5) अनुत्तरित प्रश्न

77. अभिनव भारत समाज के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह विनायक दामोदर सावरकर और उनके भाई गणेश सावरकर द्वारा स्थापित एक गुप्त संस्था थी।
II. इसने विभाजन से लड़ने के लिए विशेष रूप से बंगाल प्रेसीडेंसी के भीतर कार्य किया।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I
(2) केवल II
(3) I और II दोनों
(4) न तो I और न ही II
(5) अनुत्तरित प्रश्न

78. क्रांतिकारी राष्ट्रवाद के प्रारंभिक चरण (1915 से पहले) के मुख्य उद्देश्य और कार्यप्रणाली के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।
(1) उन्होंने ब्रिटिश संसद के माध्यम से शांतिपूर्ण ढंग से संवैधानिक सुधारों पर चर्चा करने का प्रयास किया।
(2) उन्होंने अहिंसक सविनय अवज्ञा के गांधीवादी सिद्धांतों का कड़ाई से पालन किया।
(3) ब्रिटिश कारखानों के भीतर बड़े पैमाने पर औद्योगिक हड़तालें आयोजित करना
(4) शासकों को आतंकित करने के लिए व्यक्तिगत वीरतापूर्ण कार्य और राजनीतिक हत्याएं
(5) अनुत्तरित प्रश्न

79. निम्नलिखित क्रांतिकारी घटनाओं में से कौन सी एक विषम विकल्प है क्योंकि यह क्रांतिकारी राष्ट्रवाद के प्रारंभिक चरण (1915 से पहले) से संबंधित नहीं है?
(1) काकोरी ट्रेन डकैती
(2) चापेकर बंधुओं द्वारा रैंड की हत्या
(3) मुजफ्फरपुर में किंग्सफोर्ड की जान लेने का प्रयास

9. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
लॉर्ड लिटन द्वारा 1878 में वर्नाक्यूलर प्रेस अधिनियम का निर्माण मुख्य रूप से क्षेत्रीय प्रेस की बढ़ती लोकप्रियता और प्रभाव को रोकने के लिए किया गया था। उस समय भारतीय भाषाओं के समाचार पत्र ब्रिटिश नीतियों की निरंतर और तीखी आलोचना कर रहे थे। ये पत्र जनसामान्य के बीच राष्ट्रवादी चेतना और ब्रिटिश विरोधी भावनाओं को प्रभावी ढंग से प्रसारित कर रहे थे। सरकार ने इस अधिनियम के माध्यम से प्रेस को नियंत्रित कर असंतोष की अभिव्यक्ति को दबाने का प्रयास किया था।

10. (1) अमृत बाजार पत्रिका
1878 का वर्नाक्यूलर प्रेस अधिनियम विशेष रूप से क्षेत्रीय भाषाओं के समाचार पत्रों को लक्षित करने के लिए बनाया गया था। 'अमृत बाजार पत्रिका' ने इस कानून के कठोर प्रतिबंधों और दमन से बचने के लिए एक साहसी कदम उठाया। रातों-रात इस पत्रिका ने स्वयं को अंग्रेजी भाषा के समाचार पत्र में परिवर्तित कर लिया। इस बुद्धिमत्तापूर्ण रणनीति ने इसे सरकारी नियंत्रण से बचा लिया और राष्ट्रवादी पत्रकारिता को निरंतर जारी रखना पूरी तरह संभव बनाया।

11. (2) केवल I, II और IV
आधुनिक शिक्षा ने भारतीय राष्ट्रवाद के आधार को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसने भारतीय बुद्धिजीवियों को पश्चिमी लोकतांत्रिक मूल्यों, तर्कवाद और स्वतंत्रता के सिद्धांतों से परिचित कराया। अंग्रेजी भाषा ने विभिन्न प्रांतों के शिक्षित भारतीयों के बीच संवाद के एक साझा सेतु के रूप में कार्य किया, जिससे क्षेत्रीय बाधाएं कम हुईं। इसके परिणामस्वरूप एक प्रबुद्ध मध्यम वर्ग का उदय हुआ, जिसने आगे चलकर राष्ट्रीय आंदोलन को कुशल नेतृत्व और एक निश्चित वैचारिक दिशा प्रदान की।

12. (2) शासन में सहायता के लिए रुचि और बुद्धि में अंग्रेजों जैसे दिखने वाले भारतीयों का एक वर्ग तैयार करना
भारत में अंग्रेजी शिक्षा की शुरुआत के पीछे ब्रिटिश प्रशासन का मुख्य उद्देश्य एक ऐसा वर्ग तैयार करना था जो रक्त और रंग में भारतीय हो, लेकिन अपनी रुचि, विचारों और बुद्धि में अंग्रेज जैसा हो। मैकाले के प्रसिद्ध दस्तावेज ने स्पष्ट किया कि उन्हें प्रशासन के निचले स्तरों पर कार्य करने के लिए कुशल और वफादार लिपिकों की आवश्यकता थी। वे भारतीयों को अपनी संस्कृति और व्यवस्था के प्रति निष्ठावान बनाकर साम्राज्य की नींव को सुदृढ़ करना चाहते थे।

13. (3) फोर्ट विलियम कॉलेज
राष्ट्रीय जागृति के दौरान भारतीय राष्ट्रवादियों ने स्वदेशी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कई संस्थानों की स्थापना की। डेक्कन एजुकेशन सोसाइटी और बंगाल नेशनल कॉलेज इसी दिशा में किए गए प्रयास थे। इसके विपरीत, फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना 1800 में लॉर्ड वेलेजली द्वारा की गई थी। इसका प्राथमिक उद्देश्य ब्रिटिश नागरिक सेवकों को भारतीय भाषाओं और रीति-रिवाजों का प्रशिक्षण देना था, ताकि वे प्रशासन को अधिक कुशलता से संचालित कर सकें, न कि राष्ट्रवादी शिक्षा प्रदान करना।

14. (4) हंटर आयोग ने प्राथमिक शिक्षा की अनदेखी करते हुए विश्वविद्यालय शिक्षा पर ध्यान केंद्रित किया।
ब्रिटिश शिक्षा नीति के संदर्भ में यह कहना गलत है कि हंटर आयोग ने प्राथमिक शिक्षा की उपेक्षा की। वास्तव में, 1882 के हंटर शिक्षा आयोग ने प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा के सुधार और विस्तार पर विशेष बल दिया था। आयोग ने सिफारिश की थी कि प्राथमिक शिक्षा स्थानीय भाषाओं में दी जानी चाहिए और इसका प्रबंधन स्थानीय निकायों को सौंपा जाना चाहिए। अन्य महत्वपूर्ण पहलों में 1854 का वुड्स डिस्पैच शामिल था, जिसने भारतीय शिक्षा व्यवस्था को प्रभावित किया।

15. (1) आधुनिक विचारों का शिक्षित अभिजात वर्ग से छनकर आम जनता तक पहुँचना
प्रारंभिक ब्रिटिश शैक्षिक नीति का 'अधोमुखी निस्पंदन सिद्धांत' इस विचार पर आधारित था कि शिक्षा केवल समाज के उच्च और मध्यम वर्ग के एक सीमित वर्ग को दी जानी चाहिए। सरकार का मानना था कि इन शिक्षित व्यक्तियों के माध्यम से आधुनिक विचार और ज्ञान धीरे-धीरे छनकर आम जनता तक पहुँचेंगे। इस नीति का उद्देश्य बड़े पैमाने पर जन शिक्षा के भारी व्यय से बचना और प्रशासन के प्रति वफादार एक छोटा प्रबुद्ध वर्ग तैयार करना था।

16. (1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
बाल गंगाधर तिलक ने जन चेतना जागृत करने के लिए सांस्कृतिक प्रतीकों का प्रयोग किया। उन्होंने 1893 में गणपति उत्सव और 1895 में शिवाजी महोत्सव की शुरुआत की ताकि लोग राष्ट्रवादी उद्देश्यों के लिए एकत्रित हो सकें। उन्होंने दो महत्वपूर्ण समाचार पत्रों का संपादन भी किया; 'केसरी' मराठी भाषा में और 'महरत्ता' अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित होता था। इन माध्यमों से उन्होंने ब्रिटिश शासन की कड़ी आलोचना की और स्वराज के विचार को जन-जन तक पहुँचाने में सफलता प्राप्त की।

17. (2) होम रूल आंदोलन (1916)
"स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूँगा" का प्रसिद्ध उद्घोष बाल गंगाधर तिलक ने होम रूल आंदोलन के दौरान किया था। 1916 में प्रारंभ हुए इस आंदोलन का मुख्य उद्देश्य ब्रिटिश साम्राज्य के भीतर संवैधानिक तरीकों से भारत के लिए स्वशासन प्राप्त करना था। इस प्रभावशाली नारे ने भारतीय जनता में नई ऊर्जा और आत्मविश्वास का संचार किया। इसने स्वराज की माँग को एक लोकप्रिय जनांदोलन बना दिया और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को नई गति प्रदान की।

18. (2) केवल III और V
बाल गंगाधर तिलक एक प्रखर राष्ट्रवादी नेता थे जिन्होंने राजनीतिक उद्देश्यों के लिए प्रार्थना और याचिका जैसे उदारवादी तरीकों का सदैव विरोध किया। वे सक्रिय प्रतिरोध और जन लामबंदी में पूर्ण विश्वास रखते थे। 1907 के सूरत अधिवेशन की अध्यक्षता उन्होंने नहीं, बल्कि रास बिहारी घोष ने की थी, जहाँ कांग्रेस का औपचारिक विभाजन हुआ था। तिलक ने हमेशा आम जनता के बीच राष्ट्रवादी विचारों के प्रसार के

Downloaded from www.pdf.tube

उत्तर (व्याख्या सहित)

NODIA

1. (2) धन का निष्कासन और स्वदेशी उद्योगों का विनाश
19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में आर्थिक शोषण ने भारतीय राष्ट्रवाद के उदय में निर्णायक भूमिका निभाई। ब्रिटिश नीतियों के कारण भारतीय संपदा का निरंतर इंग्लैंड की ओर निष्कासन हुआ, जिससे पारंपरिक हस्तशिल्प और उद्योगों का पतन हुआ। इस व्यवस्थित वि-औद्योगिकीकरण ने भारतीय जनता में व्यापक निर्धनता और असंतोष उत्पन्न किया। शिक्षित भारतीयों ने इस शोषणकारी प्रकृति को समझा और संगठित होकर औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध राष्ट्रवादी चेतना का व्यापक प्रसार किया।

2. (1) नस्लीय अहंकार और कानूनी समानता के प्रति यूरोपीय विरोध
1883 का इल्बर्ट बिल विवाद भारतीय राष्ट्रवाद के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ था। इस विधेयक का उद्देश्य भारतीय न्यायाधीशों को यूरोपीय अभियुक्तों के मुकदमों की सुनवाई का अधिकार देकर न्यायिक समानता स्थापित करना था। अंग्रेजों द्वारा इसके तीव्र विरोध ने उनकी नस्लीय श्रेष्ठता की भावना और अहंकार को पूरी तरह उजागर कर दिया। इस घटना ने भारतीयों को अपने अधिकारों के लिए संगठित होने हेतु प्रेरित किया, जिससे देश में राजनीतिक चेतना अत्यंत सुदृढ़ हुई।

3. (1) केवल I और II
लॉर्ड लिटन की दमनकारी नीतियों ने भारतीय राष्ट्रवाद को तीव्र करने में उत्प्रेरक का कार्य किया। 1878 के वर्नाक्यूलर प्रेस अधिनियम के माध्यम से क्षेत्रीय समाचार पत्रों की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को बाधित किया गया। इसके अतिरिक्त, भारतीय नागरिक सेवा परीक्षा में बैठने की अधिकतम आयु सीमा को 21 से घटाकर 19 वर्ष करने का उद्देश्य भारतीयों को उच्च पदों से वंचित रखना था। इन प्रतिक्रियावादी कदमों ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध भारतीय जनता में व्यापक आक्रोश उत्पन्न किया।

4. (4) ब्रिटिश क्राउन द्वारा स्थानीय हस्तशिल्प उद्योगों को संरक्षण और सहायता प्रदान करना
भारत में राष्ट्रीय जागृति के विकास में विभिन्न सामाजिक, राजनीतिक और प्रशासनिक कारकों ने योगदान दिया। राजनीतिक एकीकरण, अतीत की पुनर्खोज और सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों ने भारतीयों में एकता का भाव जगाया। इसके विपरीत, ब्रिटिश शासन ने कभी भी स्थानीय हस्तशिल्प उद्योगों को संरक्षण प्रदान नहीं किया। वास्तव में, औपनिवेशिक आर्थिक नीतियों ने पारंपरिक भारतीय उद्योगों का विनाश किया, जो राष्ट्रवाद के उदय का एक प्रमुख कारण बना, न कि सहायता का साधन।

5. (3) भौतिक गतिशीलता, विचारों के आदान-प्रदान और क्षेत्रीय अलगाव को समाप्त करके
रेलवे और टेलीग्राफ जैसे आधुनिक परिवहन और संचार साधनों ने भारत के एकीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन साधनों ने देश के विभिन्न भागों के मध्य भौतिक गतिशीलता को सुगम बनाया और क्षेत्रीय पृथकता को समाप्त किया। इसके माध्यम से विभिन्न क्षेत्रों के नेता और सामान्य जन आपस में जुड़ सके, जिससे विचारों का आदान-प्रदान तीव्र हुआ। इस निरंतर संपर्क ने साझा राजनीतिक चेतना और राष्ट्रवादी भावनाओं को विकसित करने में अप्रत्याशित रुप से बड़ी सहायता प्रदान की।

6. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान समाचार पत्रों ने जनमत निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 'अमृत बाजार पत्रिका' का संपादन शिशिर कुमार घोष ने किया, जबकि 'द हिंदू' की स्थापना जी. सुब्रमण्यम अय्यर ने की थी। बाल गंगाधर तिलक ने 'केसरी' के माध्यम से राष्ट्रवादी विचारों का प्रसार किया और दादाभाई नौरोजी 'वॉइस ऑफ इंडिया' से जुड़े थे। इन प्रकाशनों ने औपनिवेशिक नीतियों की आलोचना की और भारतीयों को उनके अधिकारों के प्रति निरंतर जागरूक करने का महान कार्य किया।

7. (1) 1878, लॉर्ड लिटन
वर्नाक्यूलर प्रेस अधिनियम को 1878 में वायसराय लॉर्ड लिटन के कार्यकाल के दौरान लागू किया गया था। इस अधिनियम का मुख्य उद्देश्य भारतीय भाषाओं के समाचार पत्रों पर कड़ा नियंत्रण रखना और सरकार विरोधी आवाजों को दबाना था। इसे 'गैगिंग एक्ट' के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि इसने प्रेस की स्वतंत्रता को बुरी तरह बाधित किया। इस दमनकारी कानून ने भारतीय बुद्धिजीवियों और पत्रकारों के बीच ब्रिटिश शासन के प्रति भारी असंतोष और विद्रोह की भावना उत्पन्न की।

8. (1) प्रेस ने राजनीतिक शिक्षा और विचारधारा के एक उपकरण के रूप में कार्य किया
प्रारंभिक राष्ट्रीय जागृति के दौर में प्रेस केवल सूचना का माध्यम नहीं, बल्कि राजनीतिक शिक्षा का एक शक्तिशाली उपकरण था। समाचार पत्रों ने ब्रिटिश शासन की आर्थिक और प्रशासनिक नीतियों का आलोचनात्मक विश्लेषण किया और राष्ट्रवादी विचारधारा का प्रसार किया। इनके माध्यम से दूर-दराज के क्षेत्रों तक राजनीतिक चेतना पहुँची और लोगों को साझा राष्ट्रीय उद्देश्यों के लिए एकजुट किया गया। प्रेस ने सरकार पर दबाव बनाने और सार्वजनिक माँगें प्रस्तुत करने में अग्रणी भूमिका निभाई थी।

28. (1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
विभिन्न उग्रवादी नेताओं ने राष्ट्रवाद में अलग-अलग दृष्टिकोण जोड़े। बिपिन चंद्र पाल ने बंगाल में पूर्ण स्वायत्तता के विचार को लोकप्रिय बनाया। बाल गंगाधर तिलक ने सांस्कृतिक पुनरुत्थान और उत्सवों के माध्यम से जनसमूह को प्रेरित किया। लाला लाजपत राय ने आर्थिक आलोचना और श्रमिक हितों पर विशेष बल दिया। अरविंद घोष ने आध्यात्मिक राष्ट्रवाद और सक्रिय निष्क्रिय प्रतिरोध के सिद्धांत को विकसित किया। इन सभी नेताओं ने मिलकर भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को एक जुझारु और जन-आधारित स्वरूप प्रदान किया।

29. (3) राष्ट्रीय भावना जागृत करना और छात्रों को नागरिक कर्तव्यों के तैयार करना
स्वदेशी आंदोलन के दौरान बिपिन चंद्र पाल द्वारा दी गई 'राष्ट्रीय शिक्षा' की अवधारणा का मुख्य उद्देश्य भारतीय छात्रों में देशभक्ति की भावना जागृत करना था। वे चाहते थे कि शिक्षा प्रणाली ब्रिटिश नियंत्रण से मुक्त हो और छात्रों को उनके नागरिक कर्तव्यों के प्रति जागरूक बनाए। इस शिक्षा का लक्ष्य केवल किताबी ज्ञान देना नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण और राष्ट्र के प्रति समर्पण पैदा करना था। उन्होंने स्वदेशी स्कूलों के माध्यम से एक आत्मनिर्भर और स्वाभिमानी पीढ़ी तैयार करने पर बल दिया।

30. (4) न्यू इंडिया
बिपिन चंद्र पाल ने 1901 में 'न्यू इंडिया' नामक अंग्रेजी साप्ताहिक समाचार पत्र की शुरुआत की थी। इस प्रकाशन का प्राथमिक उद्देश्य राष्ट्रवादी विचारों का व्यापक प्रचार करना और शिक्षित वर्ग को राजनीतिक रूप से जागरूक करना था। अपने तीखे लेखों के माध्यम से उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्यवाद की आर्थिक और राजनीतिक विफलताओं को खुलकर उजागर किया। 'न्यू इंडिया' ने स्वदेशी और बहिष्कार के सिद्धांतों को वैचारिक आधार प्रदान करने और बंगाल के युवाओं को प्रेरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

31. (1) गोपाल कृष्ण गोखले
गोपाल कृष्ण गोखले भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के उदारवादी दल के एक प्रमुख और प्रभावशाली नेता थे। वे अपनी राजनीतिक गतिविधियों में संवैधानिक साधनों, चर्चा और याचिकाओं के उपयोग पर विश्वास करते थे। इसके विपरीत, बिपिन चंद्र पाल, अरविंद घोष और लाला लाजपत राय उग्रवादी विचारधारा से जुड़े थे, जो अधिक सक्रिय संघर्ष और सामूहिक विरोध के समर्थक थे। गोखले ने हमेशा अंग्रेजों के साथ संवाद और क्रमिक सुधारों के माध्यम से भारतीय समस्याओं का समाधान खोजने का प्रयास किया।

32. (1) डब्ल्यू.सी. बनर्जी, दादाभाई नौरोजी, बदरुद्दीन तैयबजी, जॉर्ज यूल
भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रारंभिक अधिवेशनों ने इसके अखिल भारतीय चरित्र को स्थापित किया। 1885 के पहले अधिवेशन की अध्यक्षता डब्ल्यू.सी. बनर्जी ने की थी। इसके बाद 1886 में दादाभाई नौरोजी, 1887 में बदरुद्दीन तैयबजी और 1888 में जॉर्ज यूल ने नेतृत्व संभाला। यह विविध चयन इस बात का प्रतीक था कि कांग्रेस किसी एक क्षेत्र या समुदाय तक सीमित नहीं थी, बल्कि पूरे देश का प्रतिनिधित्व करने वाला एक राष्ट्रीय मंच बनने की दिशा में अग्रसर थी।

33. (3) केवल I, II और IV
1885 में अपनी स्थापना के समय भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के उद्देश्य मुख्य रूप से देश के विभिन्न क्षेत्रों के राजनीतिक कार्यकर्ताओं के बीच मैत्रीपूर्ण संबंध बनाना और राष्ट्रीय एकता की भावना को सुदृढ़ करना था। संगठन का लक्ष्य लोकप्रिय माँगों को संकलित कर सरकार के समक्ष संवैधानिक रूप से प्रस्तुत करना था। उस समय 'पूर्ण स्वराज' की तत्काल माँग उनका लक्ष्य नहीं था; बल्कि वे ब्रिटिश शासन के भीतर ही प्रशासनिक सुधारों और अधिक भारतीय प्रतिनिधित्व की आकांक्षा रखते थे।

34. (1) लाला लाजपत राय
भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के संदर्भ में "सुरक्षा वाल्व सिद्धांत" को लाला लाजपत राय ने अपने लेखों में प्रमुखता से प्रचारित किया था। इस सिद्धांत के अनुसार, ए.ओ. ह्यूम ने कांग्रेस का गठन ब्रिटिश सरकार के प्रति बढ़ते भारतीय असंतोष को एक सुरक्षित मार्ग देने के लिए किया था ताकि भविष्य में कोई बड़ा विद्रोह न हो। लाला लाजपत राय का मानना था कि यह संस्था प्रारंभ में ब्रिटिश हितों की रक्षा के लिए बनाई गई थी, हालांकि बाद में यह स्वतंत्र रूप से विकसित हुई।

35. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
लॉर्ड डफरिन ने प्रारंभ में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रति एक उदार दृष्टिकोण अपनाया था, लेकिन जैसे-जैसे संगठन ने संवैधानिक सुधारों और प्रशासनिक माँगों को उठाना शुरु किया, उनका रुख शत्रुतापूर्ण हो गया। कांग्रेस द्वारा नागरिक सेवाओं के भारतीयकरण और सैन्य खर्च में कटौती की माँगों ने ब्रिटिश सरकार को असहज कर दिया। परिणामस्वरुप, डफरिन ने कांग्रेस की अवहेलना करते हुए इसे भारत के केवल एक "सूक्ष्म अल्पसंख्यक" का प्रतिनिधि घोषित कर दिया।

36. (2) 72
भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का पहला अधिवेशन दिसंबर 1885 में बॉम्बे के गोकुलदास तेजपाल संस्कृत कॉलेज में आयोजित किया गया था। इस ऐतिहासिक सम्मेलन में भारत के विभिन्न हिस्सों से आए कुल 72 प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। इन प्रतिनिधियों में प्रमुख वकील, पत्रकार और प्रबुद्ध नागरिक शामिल थे, जो देश की राजनीतिक और प्रशासनिक व्यवस्था में सुधार चाहते थे। इस छोटे से समूह ने भविष्य के एक विशाल राष्ट्रीय आंदोलन की नींव रखी, जिसने अंततः स्वतंत्रता का मार्ग प्रशस्त किया।

37. (1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
कांग्रेस की स्थापना से पहले कई क्षेत्रीय संगठनों ने राजनीतिक चेतना जगाने का कार्य किया। 'ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन' की स्थापना में राधाकांत देब की प्रमुख भूमिका थी। सुरेंद्रनाथ बनर्जी ने 'इंडियन एसोसिएशन ऑफ कलकत्ता' के माध्यम से मध्यम वर्ग को संगठित किया। 'मद्रास महाजन सभा'

Click Here to Buy book on Amazon

लिए पारंपरिक उत्सवों और प्रेस का सशक्त माध्यम के रूप में उपयोग किया।

19. (3) A सही है लेकिन R गलत है।
बाल गंगाधर तिलक ने गणपति और शिवाजी जैसे पारंपरिक उत्सवों का आयोजन मुख्य रूप से आम जनता को राष्ट्रीय आंदोलन से जोड़ने के लिए किया था। उनका उद्देश्य राजनीतिक चेतना को केवल शिक्षित अभिजात वर्ग तक सीमित न रखकर इसे ग्रामीण और शहरी जनमानस तक पहुँचाना था। यह दावा पूरी तरह गलत है कि वे जन भागीदारी से बचना चाहते थे। इसके विपरीत, वे सक्रिय जन आंदोलनों के प्रबल समर्थक थे और मानते थे कि बिना जन सहयोग के स्वराज मिलना असंभव है।

20. (4) वेलेंटाइन चिरोल
ब्रिटिश लेखक और पत्रकार वेलेंटाइन चिरोल ने अपनी पुस्तक "इंडियन अनरेस्ट" में बाल गंगाधर तिलक को "भारतीय अशांति का जनक" कहा था। यह उपाधि तिलक द्वारा भारतीयों में जगाई गई तीव्र राष्ट्रवादी भावना और ब्रिटिश विरोधी सक्रियता के कारण दी गई थी। चिरोल का मानना था कि तिलक की गतिविधियों और उनके विचारों ने ब्रिटिश औपनिवेशिक व्यवस्था के लिए गंभीर खतरा उत्पन्न कर दिया था। तिलक ने इस अपमानजनक टिप्पणी के विरुद्ध लंदन में कानूनी मुकदमा भी लड़ा था।

21. (3) ब्रिटिश क्राउन की आर्थिक और वित्तीय नीतियों के प्रति अधीनता
बाल गंगाधर तिलक की राजनीतिक रणनीति का मुख्य केंद्र बिंदु पूर्ण स्वराज और आत्मनिर्भरता था। उन्होंने विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार, स्वदेशी के प्रचार और राष्ट्रीय शिक्षा के माध्यम से ब्रिटिश शासन की नींव कमजोर करने का निरंतर प्रयास किया। वे निष्क्रिय प्रतिरोध और सामूहिक असहयोग के प्रबल समर्थक थे। ब्रिटिश आर्थिक नीतियों के प्रति अधीनता स्वीकार करना उनकी विचारधारा के बिल्कुल विपरीत था। उन्होंने सदैव औपनिवेशिक शोषण का पुरजोर विरोध कर भारतीयों को आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने हेतु प्रेरित किया।

22. (4) I - III - II - IV
लाला लाजपत राय के जीवन की प्रमुख घटनाएं भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महत्वपूर्ण पड़ाव हैं। सबसे पहले 1907 में उन्हें बिना मुकदमे के मांडले निर्वासित किया गया था। इसके पश्चात 1920 में उन्होंने कलकत्ता में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के विशेष अधिवेशन की अध्यक्षता की। 1921 में उन्होंने लाहौर में 'नेशनल स्कूल' की स्थापना कर शिक्षा के क्षेत्र में योगदान दिया। अंततः, 1928 में साइमन कमीशन का विरोध करते समय उन पर हुए लाठीचार्ज के कारण उनका बलिदान हुआ।

23. (4) लाला लाजपत राय
"अनहेप्पी इंडिया" नामक प्रसिद्ध पुस्तक लाला लाजपत राय द्वारा लिखी गई थी। यह पुस्तक कैथरीन मेयो की पक्षपाती रचना 'मदर इंडिया' के उत्तर में लिखी गई थी, जिसमें भारतीय समाज की अत्यंत नकारात्मक छवि प्रस्तुत की गई थी। लाला लाजपत राय ने अपनी पुस्तक में ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के कारण भारत की दुर्दशा, गरीबी और आर्थिक शोषण का तथ्यात्मक विवरण प्रस्तुत किया। उन्होंने वैश्विक मंच पर भारत का पक्ष मजबूती से रखा और ब्रिटिश साम्राज्य की वास्तविक शोषक प्रकृति को उजागर किया।

24. (3) केवल I और III
लाला लाजपत राय पंजाब में आर्य समाज आंदोलन के एक सक्रिय और प्रमुख सदस्य थे, जहाँ उन्होंने शिक्षा और समाज सुधार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे स्वदेशी आंदोलन के कट्टर समर्थक थे और उन्होंने इसके आर्थिक महत्व को बखूबी समझा था। 1920 में जब अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस की स्थापना हुई, तो वे इसके पहले अध्यक्ष चुने गए। उन्होंने श्रमिकों के अधिकारों और राष्ट्रीय स्वतंत्रता को आपस में जोड़कर एक नई राजनीतिक चेतना का सूत्रपात किया।

NODIA

25. (3) अरविंद घोष - वॉइस ऑफ इंडिया
राष्ट्रवादी नेताओं और उनके प्रकाशनों का सही मिलान इतिहास की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। लाला लाजपत राय 'द पंजाबी' से जुड़े थे और बिपिन चंद्र पाल ने 'न्यू इंडिया' का संपादन किया। बाल गंगाधर तिलक अपने समाचार पत्र 'महरत्ता' के लिए प्रसिद्ध थे। अरविंद घोष का संबंध 'वंदे मातरम' जैसे पत्रों से था, जबकि 'वॉइस ऑफ इंडिया' दादाभाई नौरोजी द्वारा प्रकाशित किया जाता था। अरविंद घोष ने अपने लेखन के माध्यम से आध्यात्मिक राष्ट्रवाद और क्रांतिकारी विचारों का प्रचार किया था।

26. (1) पंजाब क्षेत्र में उनके सशक्त नेतृत्व और जन लामबंदी के कारण
लाला लाजपत राय को "पंजाब केसरी" की उपाधि मुख्य रूप से उनके अदम्य साहस और पंजाब क्षेत्र में शक्तिशाली जन लामबंदी के कारण दी गई थी। उन्होंने औपनिवेशिक अन्याय के विरुद्ध जनता को संगठित किया और राष्ट्रवादी आंदोलनों को एक नई दिशा दी। उनके ओजस्वी भाषणों और निडर नेतृत्व ने उन्हें जनमानस का प्रिय नेता बना दिया। पंजाब में उनके द्वारा किए गए सामाजिक और राजनीतिक कार्यों ने क्षेत्र में ब्रिटिश शासन की जड़ों को गहराई तक हिला दिया था।

27. (4) उदारवादी संवैधानिकता से प्रमुख चरमपंथी नेतृत्व की ओर परिवर्तन।
बिपिन चंद्र पाल के राजनीतिक जीवन का क्रमिक विकास भारतीय राष्ट्रवाद के बदलते स्वरूप को दर्शाता है। उन्होंने अपने करियर की शुरुआत उदारवादी विचारों और संवैधानिक पद्धतियों के समर्थक के रूप में की थी। हालांकि, ब्रिटिश नीतियों के प्रति बढ़ते असंतोष और स्वदेशी आंदोलन के दौरान वे प्रमुख 'लाल-बाल-पाल' तिकड़ी के एक महत्वपूर्ण उग्रवादी नेता के रूप में उभरे। उन्होंने पूर्ण स्वायत्तता और निष्क्रिय प्रतिरोध की वकालत की, जिससे वे याचना की राजनीति के स्थान पर सक्रिय राजनीतिक संघर्ष के प्रतीक बन गए।

(1) अल्पसंख्यकों के लिए पृथक निर्वाचक मंडल
(2) स्वराज
(3) बहिष्कार
(4) राष्ट्रीय शिक्षा
(5) अनुत्तरित प्रश्न

64. बाल गंगाधर तिलक और एनी बेसेंट की होम रुल लीग की तुलना करने वाले निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. तिलक ने अप्रैल 1916 में अपनी लीग प्रारंभ की, जबकि बेसेंट ने सितंबर 1916 में अपनी लीग प्रारंभ की।
II. तिलक की लीग महाराष्ट्र (बॉम्बे शहर को छोड़कर), कर्नाटक, मध्य प्रांत और बरार तक सीमित थी।
III. बेसेंट की लीग ने भारत के उन शेष क्षेत्रों को कवर किया जो तिलक की लीग के अंतर्गत नहीं थे।
IV. वैचारिक मतभेदों के कारण, दोनों लीगों ने एक-दूसरे का कड़ा विरोध किया और समान सदस्यों के लिए प्रतिस्पर्धा की।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

65. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (प्रमुख सहयोगी)
A. जोसेफ बैप्टिस्टा
B. एन.सी. केलकर
C. जॉर्ज अरुंडेल
D. बी.पी. वाडिया
सूची II: (होम रुल आंदोलन में भूमिका/संस्था)
i. तिलक की होम रुल लीग के सचिव
ii. तिलक की होम रुल लीग के अध्यक्ष
iii. बेसेंट की लीग और श्रमिक आंदोलन में सक्रिय सहयोगी
iv. एनी बेसेंट की होम रुल लीग के संगठन सचिव
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) अनुत्तरित प्रश्न

66. 1917 में एनी बेसेंट की गिरफ्तारी के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. मद्रास सरकार द्वारा उनकी गिरफ्तारी के कारण व्यापक राष्ट्रीय रोष उत्पन्न हुआ और होम रुल आंदोलन को गति मिली।
II. उनकी गिरफ्तारी के विरोध में सर एस. सुब्रमण्यम अय्यर ने अपनी 'नाइटहुड' की उपाधि त्याग दी।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I
(2) केवल II
(3) I और II दोनों
(4) न तो I और न ही II
(5) अनुत्तरित प्रश्न

67. भारत में होम रुल लीग आंदोलन का मौलिक उद्देश्य क्या था?
(1) एक संगठित सशस्त्र क्रांति के माध्यम से ब्रिटिश शासन को समाप्त करना
(2) तत्काल एक समाजवादी साम्यवादी राज्य की स्थापना करना
(3) ब्रिटिश साम्राज्य के भीतर भारत के लिए स्वशासन की प्राप्ति
(4) 1857 से पूर्व की रियासतों को उनकी पूर्ण शक्तियाँ वापस दिलाना
(5) अनुत्तरित प्रश्न

68. भारतीय समाज के निम्नलिखित में से किस वर्ग ने होम रुल लीग आंदोलन का मुख्य रुप से विरोध किया या उससे दूर रहे?
(1) पश्चिमी शिक्षित शहरी मध्यम वर्ग और बुद्धिजीवी
(2) मद्रास और बॉम्बे का छात्र समुदाय
(3) प्रमुख भारतीय उद्योगपति वर्ग
(4) मद्रास के गैर-ब्राह्मण और महाराष्ट्र की निचली जातियाँ
(5) अनुत्तरित प्रश्न

69. एनी बेसेंट ने मुख्य रुप से अपने किन दो प्रभावशाली समाचार पत्रों के माध्यम से होम रुल आंदोलन के विचारों का प्रचार किया?
(1) महरत्ता और केसरी
(2) युगांतर और संध्या
(3) न्यू इंडिया और कॉमनवील
(4) इंडियन ओपिनियन और हरिजन
(5) अनुत्तरित प्रश्न

70. 1916 के लखनऊ समझौते के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में चरमपंथियों की वापसी को चिह्नित किया।
II. इसने कांग्रेस और अखिल भारतीय मुस्लिम लीग के बीच एक ऐतिहासिक राजनीतिक गठबंधन स्थापित किया।
III. कांग्रेस ने औपचारिक रुप से मुस्लिम लीग की पृथक निर्वाचक मंडल की माँग को स्वीकार कर लिया।
IV. दोनों संगठनों ने संयुक्त रुप से माँग की कि भारत को तत्काल डोमिनियन स्टेटस दिया जाए।
V. इस समझौते ने भारत में सांप्रदायिक समस्या को स्थायी रुप से हल कर दिया और सभी हिंदू-मुस्लिम तनाव को समाप्त कर दिया।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल III और IV
(3) केवल V

Downloaded from www.pdf.tube

के संस्थापकों में एम. वीरराघवाचारी शामिल थे और 'बॉम्बे प्रेसीडेंसी एसोसिएशन' का नेतृत्व फिरोजशाह मेहता ने किया था। इन संस्थाओं ने स्थानीय समस्याओं को उठाने और भारतीयों को संगठित करने का आधार तैयार किया।

38. (1) केवल I, II, III और V
कांग्रेस के उदारवादी चरण के दौरान नेताओं ने ब्रिटिश सरकार से निरंतर संवैधानिक और प्रशासनिक सुधारों की माँग की। उनकी प्रमुख माँगों में विधायी परिषदों का विस्तार, न्यायपालिका को कार्यपालिका से अलग करना और भारत एवं इंग्लैंड में एक साथ नागरिक सेवा परीक्षा का आयोजन शामिल था। उन्होंने प्रशासन के भारतीयकरण और भारी सैन्य व्यय को कम करने पर भी बल दिया। हालांकि, इस प्रारंभिक काल में उन्होंने रियासतों पर ब्रिटिश सर्वोच्चता को तत्काल समाप्त करने जैसी कोई उग्र माँग नहीं की थी।

39. (4) प्रार्थना, याचिका और विरोध का उपयोग करते हुए संवैधानिक आंदोलन
उदारवादी कांग्रेस नेताओं की राजनीतिक कार्यप्रणाली पूरी तरह से संवैधानिक और शांतिपूर्ण साधनों पर आधारित थी। वे ब्रिटिश न्यायप्रियता में अटूट विश्वास रखते थे और अपनी माँगों को मनवाने के लिए "प्रार्थना, याचिका और विरोध" की नीति अपनाते थे। उनका मुख्य उद्देश्य जनमत तैयार करना और याचिकाओं एवं शिष्टमंडलों के माध्यम से ब्रिटिश अधिकारियों को भारतीय समस्याओं से अवगत कराना था। उन्होंने कभी भी सशस्त्र संघर्ष या क्रांतिकारी हिंसा का समर्थन नहीं किया, बल्कि वे कानून के दायरे में रहकर सुधारों हेतु प्रयत्नशील रहे।

40. (2) 1892 का भारतीय परिषद अधिनियम
उदारवादी कांग्रेस द्वारा किए गए निरंतर संवैधानिक आंदोलनों और माँगों के परिणामस्वरूप ब्रिटिश सरकार ने 1892 का भारतीय परिषद अधिनियम पारित किया। यह अधिनियम उदारवादियों की एक महत्वपूर्ण सफलता मानी जाती है क्योंकि इसने विधायी परिषदों के आकार में वृद्धि की और उनके कार्यों का विस्तार किया। हालांकि यह अधिनियम भारतीयों की सभी आकांक्षाओं को पूरा नहीं कर सका, लेकिन इसने बजट पर चर्चा करने के सीमित अधिकार प्रदान किए। इसने भविष्य के संवैधानिक सुधारों की नींव रखी और राजनीतिक भागीदारी का मार्ग प्रशस्त किया।

41. (3) अरविंद घोष
दादाभाई नौरोजी, फिरोजशाह मेहता और दिनशा वाचा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के उदारवादी चरण के प्रमुख स्तंभ थे, जो संवैधानिक सुधारों और याचना की राजनीति में विश्वास करते थे। इसके विपरीत, अरविंद घोष एक प्रखर राष्ट्रवादी और उग्रवादी नेता थे। उन्होंने उदारवादियों के "प्रार्थना और याचिका" के तरीकों की कड़ी आलोचना की और निष्क्रिय प्रतिरोध एवं सक्रिय राजनीतिक संघर्ष की वकालत की। अरविंद घोष का मानना था कि स्वराज केवल आत्म-त्याग और दृढ़ संघर्ष से ही प्राप्त किया जा सकता है।

42. (1) धन के बहिर्गमन और स्थानीय उद्योगों की क्षति के कारण उत्पन्न निर्धनता
उदारवादी नेताओं की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि ब्रिटिश शासन की व्यवस्थित आर्थिक आलोचना करना था। दादाभाई नौरोजी जैसे विचारकों ने 'धन के बहिर्गमन' का सिद्धांत प्रतिपादित किया, जिसमें बताया गया कि कैसे भारत की संपत्ति निरंतर इंग्लैंड भेजी जा रही है। उन्होंने तर्क दिया कि इसी आर्थिक शोषण और स्वदेशी उद्योगों के विनाश के कारण भारत में व्यापक निर्धनता व्याप्त है। इस आलोचना ने औपनिवेशिक शासन के लोक-कल्याणकारी मुखौटे को उतार दिया और भारतीयों को जागरूक किया कि उनकी गरीबी का कारण ब्रिटिश नीतियां हैं।

43. (3) केवल III
उदारवादियों और उग्रवादियों के बीच वैचारिक मतभेद स्पष्ट थे। उदारवादी ब्रिटिश न्यायप्रियता में विश्वास करते थे और शिक्षित वर्ग तक सीमित थे, जबकि उग्रवादी जन भागीदारी और दबाव की राजनीति के समर्थक थे। हालांकि, यह कहना गलत है कि 1905 से पहले दोनों पक्ष पूर्ण स्वतंत्रता के लक्ष्य पर सार्वभौमिक रूप से सहमत थे। वास्तव में, उस समय तक उदारवादी मुख्य रूप से प्रशासनिक सुधारों की माँग कर रहे थे, और 'स्वराज' का विचार बाद में स्वदेशी आंदोलन के दौरान अधिक प्रबल रूप से उभरा।

NODIA

44. (2) अरविंद घोष
"न्यू लैम्प्स फॉर ओल्ड" लेखों की प्रसिद्ध श्रृंखला अरविंद घोष द्वारा लिखी गई थी। इन लेखों के माध्यम से उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की तत्कालीन उदारवादी राजनीति और उनके संवैधानिक तरीकों की अत्यंत तीखी आलोचना की। उन्होंने तर्क दिया कि उदारवादियों की "याचना की नीति" ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध पूरी तरह अप्रभावी है और इससे कभी भी वास्तविक स्वराज प्राप्त नहीं हो सकता। घोष ने एक नई, अधिक सक्रिय राष्ट्रवादी विचारधारा का आह्वान किया, जिसने कांग्रेस के भीतर उग्रवादी गुट का मार्ग प्रशस्त किया।

45. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
भारतीय राष्ट्रवादी साहित्य ने स्वतंत्रता संग्राम को वैचारिक मजबूती प्रदान की। दादाभाई नौरोजी ने 'पॉवर्टी एंड अन-ब्रिटिश रूल इन इंडिया' लिखकर आर्थिक शोषण को उजागर किया। अरविंद घोष ने 'निष्क्रिय प्रतिरोध' के सिद्धांत का प्रतिपादन किया, जो उनके लेखों का केंद्र था। बाल गंगाधर तिलक ने 'गीता रहस्य' की रचना की, जो कर्मयोग की प्रेरणा देती है। आर.सी. दत्त ने अपनी पुस्तक 'इकोनॉमिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया' के माध्यम से औपनिवेशिक शासन के आर्थिक प्रभावों का गहरा विश्लेषण किया।

46. (4) उदारवादी तरीकों से मोहभंग और कर्जन की प्रतिक्रियावादी नीतियां
20वीं शताब्दी के प्रारंभ में उग्रवाद का उदय मुख्य रूप से उदारवादी नेताओं के संवैधानिक तरीकों की विफलता और उनके प्रति बढ़ते मोहभंग के कारण हुआ। युवा राष्ट्रवादी महसूस करने लगे थे कि प्रार्थना और याचिकाओं से ब्रिटिश सरकार

पर कोई वास्तविक प्रभाव नहीं पड़ रहा है। इसके साथ ही, वायसराय लॉर्ड कर्जन की प्रतिक्रियावादी नीतियों, विशेषकर बंगाल विभाजन, ने आक्रोश को तीव्र किया। इन घटनाओं ने भारतीयों को यह विश्वास दिलाया कि स्वराज केवल आत्म-विश्वास और सक्रिय सामूहिक संघर्ष से ही संभव है।

47. (1) ब्रिटिश शासन की ईश्वरीय प्रकृति में विश्वास
उग्रवादी नेता उदारवादियों से वैचारिक रूप से भिन्न थे क्योंकि वे ब्रिटिश शासन की न्यायप्रियता या ईश्वरीय प्रकृति में बिल्कुल विश्वास नहीं रखते थे। वे मानते थे कि औपनिवेशिक शासन मूलतः शोषणकारी है और इसे केवल जनशक्ति के दबाव से बदला जा सकता है। उनकी मुख्य मान्यताओं में जनता की अपार क्षमता पर अटूट विश्वास, स्वराज को अपना जन्मसिद्ध अधिकार मानना और स्वदेशी कार्यों के माध्यम से आत्मनिर्भरता प्राप्त करना शामिल था। ब्रिटिश शासन के प्रति किसी भी प्रकार की श्रद्धा रखना उनकी विचारधारा के विपरीत था।

48. (1) I - III - II - IV
बंगाल विभाजन से जुड़ी घटनाओं का क्रम भारतीय इतिहास में अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसकी शुरुआत जुलाई 1905 में सरकार द्वारा विभाजन की औपचारिक घोषणा से हुई। इसके विरोध में अगस्त 1905 में कलकत्ता टाउन हॉल में ऐतिहासिक बहिष्कार प्रस्ताव पारित किया गया। विभाजन आधिकारिक रूप से 16 अक्टूबर 1905 को प्रभावी हुआ, जिसे पूरे बंगाल में शोक दिवस के रूप में मनाया गया। अंततः, तीव्र राष्ट्रवादी विरोध और निरंतर जन आंदोलनों के कारण ब्रिटिश सरकार को 1911 में इस विभाजन को रद्द करना पड़ा था।

49. (1) केवल I, II और III
लॉर्ड कर्जन ने बंगाल विभाजन के लिए आधिकारिक तौर पर प्रशासनिक असुविधा का तर्क दिया था, लेकिन उनके वास्तविक उद्देश्य गहरे राजनीतिक थे। वे बंगाल की बढ़ती राष्ट्रवादी एकता को तोड़ना और बंगाली भाषी जनसंख्या को अल्पमत में लाना चाहते थे। इसके अतिरिक्त, एक मुस्लिम बहुल प्रांत बनाकर वे हिंदुओं और मुसलमानों के बीच फूट डालना चाहते थे ताकि राष्ट्रीय आंदोलन को कमजोर किया जा सके। यह स्पष्ट रूप से "फूट डालो और राज करो" की नीति का हिस्सा था।

50. (3) 16 अक्टूबर, 1905
बंगाल विभाजन आधिकारिक तौर पर 16 अक्टूबर 1905 को लागू हुआ था। इस दिन को पूरे बंगाल में व्यापक शोक दिवस के रूप में मनाया गया। लोगों ने उपवास रखे, कलकत्ता की सड़कों पर नंगे पाँव जुलूस निकाले और गंगा में पवित्र स्नान किया। 'वंदे मातरम' का नारा विरोध का मुख्य स्वर बन गया। इस दिन का सबसे महत्वपूर्ण पहलू हिंदुओं और मुसलमानों द्वारा एक-दूसरे की कलाइयों पर राखी बाँधना था, जो सांप्रदायिक एकता और ब्रिटिश विभाजनकारी नीति के विरुद्ध सामूहिक प्रतिरोध का प्रतीक बन गया।

51. (3) I और II दोनों
स्वदेशी आंदोलन के दौरान रवींद्रनाथ टैगोर ने सांस्कृतिक और सामाजिक स्तर पर नेतृत्व प्रदान किया। उन्होंने 'आमार सोनार बांग्ला' जैसे देशभक्ति गीतों की रचना की, जिन्होंने आंदोलनकारियों में राष्ट्रप्रेम की भावना को प्रज्वलित किया। इसके अतिरिक्त, उन्होंने 16 अक्टूबर को विभाजन के प्रभावी होने के दिन 'रक्षा बंधन' मनाने का आह्वान किया। इसका उद्देश्य हिंदुओं और मुसलमानों के बीच अटूट एकता का प्रदर्शन करना और अंग्रेजों की 'फूट डालो और राज करो' की नीति को चुनौती देना था।

52. (4) बिहार
1905 के बंगाल विभाजन के बाद निर्मित नए प्रांत 'पूर्वी बंगाल और असम' में ढाका, राजशाही और चटगाँव के प्रमुख क्षेत्र शामिल किए गए थे। इसकी राजधानी ढाका को बनाया गया था। इस विभाजन का उद्देश्य मुस्लिम बहुल पूर्व को हिंदू बहुल पश्चिम से अलग करना था। बिहार उस समय शेष बंगाल का हिस्सा बना रहा, जिसे पश्चिम बंगाल के रूप में जाना जाता था और जिसमें उड़ीसा भी शामिल था। यह विभाजन विशुद्ध रूप से प्रशासनिक सुधार के नाम पर किया गया एक राजनीतिक कदम था।

53. (3) स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलन
1905 में लॉर्ड कर्जन द्वारा किए गए बंगाल विभाजन के सीधे परिणाम के रूप में स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलन का जन्म हुआ। यह भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के इतिहास में पहली बार था जब जनता ने बड़े पैमाने पर संगठित होकर ब्रिटिश शासन की नीतियों का कड़ा विरोध किया। इस आंदोलन ने न केवल विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार पर बल दिया, बल्कि भारतीय उद्योगों, शिक्षा और संस्कृति के संवर्धन के माध्यम से आत्मनिर्भरता प्राप्त करने का मार्ग भी प्रशस्त किया। इसने राष्ट्रवाद को अधिक उग्र दिशा प्रदान की।

54. (3) केवल IV
स्वदेशी आंदोलन ने भारतीय समाज के कई वर्गों को गहराई से प्रभावित किया, जिससे विदेशी वस्तुओं के आयात में कमी आई और स्वदेशी उद्योगों को बढ़ावा मिला। इसने जन भागीदारी की एक नई संस्कृति विकसित की। हालांकि, यह कहना गलत है कि इस आंदोलन ने बंगाल की पूरी मुस्लिम आबादी को कांग्रेस के पक्ष में सफलतापूर्वक एकजुट कर दिया। वास्तव में, ब्रिटिश सरकार के प्रोत्साहन से मुस्लिम समाज का एक वर्ग विभाजन के पक्ष में था और इसी दौरान 1906 में मुस्लिम लीग की स्थापना हुई थी।

55. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
स्वदेशी आंदोलन के दौरान कई संस्थानों ने जन लामबंदी और शिक्षा में योगदान दिया। अश्विनी कुमार दत्त ने बरिसाल में 'स्वदेश बांधव समिति' की स्थापना की। अरविंद घोष 'बंगाल नेशनल कॉलेज' के पहले प्राचार्य बने। सचिंद्र प्रसाद बोस ने छात्रों को सरकारी प्रतिबंधों से बचाने के लिए 'एंटी-सर्कुलर सोसाइटी' बनाई। सतीश चंद्र मुखर्जी 'डॉन सोसाइटी' के माध्यम से राष्ट्रीय शिक्षा का प्रचार कर रहे थे। इन संस्थाओं ने मिलकर

Click Here to Buy book on Amazon

एक समानांतर राष्ट्रीय ढांचा खड़ा करने का प्रयास किया, जिसने औपनिवेशिक व्यवस्था को चुनौती दी।

56. (1) सामाजिक सुधार और स्वदेशी उद्यमों के माध्यम से राष्ट्रीय गौरव की स्थापना
स्वदेशी आंदोलन के दौरान 'आत्मशक्ति' का विचार राष्ट्रवादियों के लिए एक प्रेरक मंत्र बन गया था। इसका व्यवहारिक अर्थ सामाजिक और आर्थिक सुधारों के माध्यम से राष्ट्रीय गौरव और स्वावलंबन को पुनर्स्थापित करना था। इसमें स्वदेशी उद्यमों की स्थापना, पारंपरिक उद्योगों का पुनरुद्धार और राष्ट्रीय शिक्षा को बढ़ावा देना शामिल था। आत्मशक्ति का लक्ष्य भारतीयों को मानसिक गुलामी से मुक्त करना और उन्हें अपनी क्षमताओं पर विश्वास दिलाना था, ताकि वे बिना किसी विदेशी सहायता के अपने राष्ट्र का पुनर्निर्माण कर सकें।

57. (3) आंदोलन में धरना प्रदर्शन और जनता को लामबंद करने में महिलाओं और छात्रों की व्यापक सक्रिय भागीदारी देखी गई।
बहिष्कार और स्वदेशी आंदोलन की एक प्रमुख विशेषता समाज के विभिन्न वर्गों, विशेष रूप से महिलाओं और छात्रों की अभूतपूर्व भागीदारी थी। छात्रों ने सरकारी आदेशों की परवाह किए बिना विदेशी सामान बेचने वाली दुकानों के बाहर धरने दिए और सभाएं आयोजित कीं। महिलाएँ भी पहली बार बड़ी संख्या में अपने घरों से बाहर आईं और उन्होंने सक्रिय रूप से प्रदर्शनों और स्वदेशी के प्रचार में भाग लिया। इस व्यापक जन भागीदारी ने आंदोलन को एक नई शक्ति दी और स्वतंत्रता की आकांक्षा को मजबूत किया।

58. (1) सैयद हैदर रज़ा - मध्य प्रांत
स्वदेशी आंदोलन बंगाल से बाहर भी देश के विभिन्न हिस्सों में फैला, जहाँ विभिन्न नेताओं ने कमान संभाली। बाल गंगाधर तिलक ने बॉम्बे और पुणे में नेतृत्व किया, जबकि लाला लाजपत राय और अजीत सिंह ने पंजाब में मोर्चा संभाला। वी.ओ. चिदंबरम पिल्लई ने मद्रास प्रेसीडेंसी में आंदोलन को गति दी। सैयद हैदर रज़ा मुख्य रूप से दिल्ली में सक्रिय थे, न कि मध्य प्रांत में। इन नेताओं ने स्थानीय समस्याओं को राष्ट्रीय मुद्दों से जोड़कर आंदोलन को एक अखिल भारतीय स्वरूप प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

59. (4) I, II और III
1907 का सूरत विभाजन कांग्रेस के भीतर गहरे वैचारिक और रणनीतिक मतभेदों का परिणाम था। उग्रवादी स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलन को बंगाल के बाहर पूरे भारत में फैलाना चाहते थे, जिसका उदारवादियों ने विरोध किया। इसके अतिरिक्त, 1906 के कलकत्ता अधिवेशन में पारित स्वराज और बहिष्कार के प्रस्तावों के कार्यान्वयन को लेकर भी विवाद था। अधिवेशन के अध्यक्ष के रूप में रास बिहारी घोष के चयन और कार्यप्रणाली ने तनाव को चरम पर पहुँचा दिया, जिससे अंततः संगठन दो गुटों में औपचारिक रूप से विभाजित हो गया।

60. (3) A सही है लेकिन R गलत है।
1907 में सूरत अधिवेशन में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का विभाजन एक ऐतिहासिक सत्य है, जिसने आंदोलन को अस्थाई रूप से कमजोर कर दिया था। हालांकि, यह दावा पूरी तरह आधारहीन है कि ब्रिटिश सरकार ने दोनों गुटों के बीच मध्यस्थता की या उन्हें विभाजित होने के लिए विवश किया। वास्तव में, अंग्रेजों ने "फूट डालो और राज करो" की नीति के तहत उग्रवादियों का दमन किया और उदारवादियों को लुभाने का प्रयास किया, लेकिन विभाजन का मुख्य कारण कांग्रेस के आंतरिक वैचारिक मतभेद ही थे।

61. (3) रास बिहारी घोष
1907 के ऐतिहासिक और विवादास्पद सूरत अधिवेशन की अध्यक्षता रास बिहारी घोष ने की थी। यह अधिवेशन ताप्ती नदी के तट पर आयोजित किया गया था और यह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के इतिहास में उदारवादियों और उग्रवादियों के बीच औपचारिक विभाजन के लिए कुख्यात हुआ। उग्रवादियों ने घोष की उम्मीदवारी का विरोध किया था, जिससे दोनों गुटों के बीच तनाव चरम पर पहुँचा और अंततः हिंसक झड़पों के कारण अधिवेशन स्थगित करना पड़ा। इस विभाजन ने आने वाले कई वर्षों तक राष्ट्रीय आंदोलन को प्रभावित किया।

62. (1) बनारस (1905), कलकत्ता (1906), सूरत (1907)
कांग्रेस में बढ़ते आंतरिक तनाव का क्रम बनारस, कलकत्ता और सूरत अधिवेशनों के माध्यम से देखा जा सकता है। 1905 के बनारस अधिवेशन में बंगाल विभाजन के विरुद्ध असंतोष प्रकट हुआ। 1906 के कलकत्ता अधिवेशन में दादाभाई नौरोजी के नेतृत्व में स्वराज का लक्ष्य घोषित कर तनाव को कम करने का प्रयास किया गया। हालांकि, 1907 के सूरत अधिवेशन तक आते-आते उदारवादियों और उग्रवादियों के बीच रणनीतिक मतभेद इतने गहरे हो गए कि संगठन का औपचारिक विभाजन अपरिहार्य हो गया। यह राष्ट्रवादी राजनीति में एक बड़ा मोड़ था।

63. (1) अल्पसंख्यकों के लिए पृथक निर्वाचक मंडल
1906 के कलकत्ता अधिवेशन में दादाभाई नौरोजी की अध्यक्षता में कांग्रेस ने चार महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित किए थे: स्वराज, बहिष्कार, स्वदेशी और राष्ट्रीय शिक्षा। इन प्रस्तावों का उद्देश्य उग्रवादियों को संतुष्ट करना और आंदोलन को नई दिशा देना था। हालांकि, उस समय कांग्रेस के एजेंडे में अल्पसंख्यकों के लिए पृथक निर्वाचक मंडल का कोई प्रावधान शामिल नहीं था। पृथक निर्वाचक मंडल की माँग मुस्लिम लीग द्वारा उठाई गई थी, जिसे बाद में 1909 के सुधारों के माध्यम से अंग्रेजों ने स्वीकार किया था।

64. (1) केवल I, II और III
बाल गंगाधर तिलक और एनी बेसेंट की होम रूल लीग ने समन्वय के साथ कार्य किया। तिलक ने अप्रैल 1916 में अपनी लीग महाराष्ट्र (बॉम्बे को छोड़कर) और मध्य प्रांत में प्रारंभ की, जबकि बेसेंट ने सितंबर 1916 में शेष भारत के लिए अपनी लीग बनाई। यह धारणा गलत है कि दोनों लीगों ने एक-दूसरे का विरोध किया; वास्तव में, उन्होंने आपसी प्रतिस्पर्धा से बचने के लिए अपने कार्यक्षेत्र विभाजित किए थे। दोनों का साझा लक्ष्य ब्रिटिश साम्राज्य के भीतर संवैधानिक स्वशासन प्राप्त करना था।

Downloaded from www.pdf.tube

अध्याय 22

गांधी युग : जन आंदोलन एवं प्रमुख घटनाएँ

1. दक्षिण अफ्रीका में महात्मा गांधी द्वारा सत्याग्रह का पहला बड़ा प्रयोग मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किसके विरोध में आयोजित किया गया था?
(1) गिरमिटिया श्रमिक प्रणाली की कठोर स्थितियाँ
(2) एशियाटिक रजिस्ट्रेशन अधिनियम
(3) भारतीय व्यापारियों पर भारी मतदान कर लगाना
(4) रेलवे के डिब्बों में भारतीयों का सख्त पृथक्करण
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

2. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (पत्रिका/समाचार पत्र)
A. इंडियन ओपिनियन
B. नवजीवन
C. हरिजन
D. यंग इंडिया
सूची II: (प्राथमिक भाषा/प्रारूप)
i. अंग्रेजी (भारत में शुरुआती चरण)
ii. अंग्रेजी (अस्पृश्यता पर केंद्रित)
iii. गुजराती (घरेलू मुद्दों पर केंद्रित)
iv. गुजराती, अंग्रेजी, तमिल और हिंदी सहित बहुभाषी
कूट:
(1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

3. दक्षिण अफ्रीका में महात्मा गांधी की प्रारंभिक बस्तियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. फीनिक्स बस्ती की स्थापना 1904 में डरबन के पास की गई थी।
II. टॉलस्टॉय फार्म की स्थापना उनके मित्र हरमन कालेनबाक की वित्तीय सहायता से की गई थी।
III. दोनों बस्तियों ने शांतिपूर्ण सत्याग्रह के लिए स्वयंसेवकों को तैयार करने हेतु प्रशिक्षण आधार के रूप में कार्य किया।
उपर्युक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

4. जनवरी 1915 में भारत में उनकी स्थायी वापसी पर, निम्नलिखित में से किसने महात्मा गांधी को सक्रिय रूप से राजनीति में शामिल होने से पहले देश की राजनीतिक और सामाजिक वास्तविकताओं को समझने के लिए एक वर्ष तक देश का भ्रमण करने की सलाह दी थी?
(1) बाल गंगाधर तिलक
(2) फिरोजशाह मेहता
(3) दादाभाई नौरोजी
(4) गोपाल कृष्ण गोखले
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

5. भारत में महात्मा गांधी द्वारा रखी गई प्रारंभिक संस्थागत नींव के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: भारत लौटने पर, गांधी ने 1915 में अहमदाबाद के कोचरब में सत्याग्रह आश्रम की स्थापना की।
कथन II: आश्रम को बाद में 1917 में साबरमती नदी के तट पर स्थानांतरित कर दिया गया था ताकि कृषि और पशुपालन जैसी गतिविधियों को संचालित किया जा सके।
उपर्युक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

6. 1917 के चंपारण सत्याग्रह का प्राथमिक कारण तीनकठिया पद्धति के तहत किसानों का शोषण था। इस पद्धति के तहत, यूरोपीय बागान स्वामियों ने भारतीय किसानों को अपनी भूमि के कितने हिस्से पर नील की खेती करने के लिए विवश किया?
(1) 1/10 भाग
(2) 3/20 भाग
(3) 1/3 भाग
(4) 1/4 भाग
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

7. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। इन दोनों कथनों का ध्यानपूर्वक परीक्षण कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
अभिकथन (A): चंपारण सत्याग्रह भारत में महात्मा गांधी द्वारा सविनय अवज्ञा का पहला सफल प्रयोग था।

NODIA

और अंग्रेजों द्वारा उन पर किए गए हमलों ने भारतीय मुस्लिमों में ब्रिटिश विरोधी भावना उत्पन्न कर दी। इस अंतर्राष्ट्रीय स्थिति ने मुस्लिम लीग के दृष्टिकोण में बड़ा बदलाव किया, जिससे वह कांग्रेस के निकट आई। इसी साझा असंतोष के परिणामस्वरुप 1916 में लखनऊ समझौता संभव हो सका, जहाँ दोनों संगठनों ने मिलकर ब्रिटिश शासन के विरुद्ध मोर्चा बनाया।

75. (1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
20वीं शताब्दी के प्रारंभ में कई गुप्त क्रांतिकारी संगठनों ने सशस्त्र संघर्ष के माध्यम से स्वतंत्रता का प्रयास किया। वी.डी. सावरकर ने 'मित्र मेला' की स्थापना की, जो बाद में 'अभिनव भारत' के रूप में एक शक्तिशाली गुप्त संस्था बनी। कलकत्ता में 'अनुशीलन समिति' का गठन प्रमथ मित्र ने किया था, जिसका उद्देश्य युवाओं को क्रांतिकारी कार्यों के लिए तैयार करना था। बारींद्र कुमार घोष और भूपेंद्रनाथ दत्त ने 'युगांतर' पत्रिका के माध्यम से उग्र विचारों का प्रसार किया। इन संगठनों ने युवाओं में बलिदान की भावना भरी।

76. (2) डगलस किंग्सफोर्ड
1908 का अलीपुर बम षड्यंत्र केस मुजफ्फरपुर के जिला न्यायाधीश डगलस किंग्सफोर्ड की हत्या के असफल प्रयास के बाद प्रारंभ हुआ था। किंग्सफोर्ड अपने दमनकारी और कठोर निर्णयों के लिए क्रांतिकारियों के निशाने पर थे। खुदीराम बोस और प्रफुल्ल चाकी ने उनकी हत्या के लिए बम फेंका, लेकिन दुर्भाग्यवश उसमें दो निर्दोष यूरोपीय महिलाएं मारी गईं। इस घटना के बाद ब्रिटिश सरकार ने व्यापक छापेमारी की और अरविंद घोष सहित कई क्रांतिकारियों को गिरफ्तार किया। यह मुकदमा भारतीय क्रांतिकारी इतिहास के सबसे प्रसिद्ध कानूनी संघर्षों में से एक है।

77. (1) केवल I
'अभिनव भारत' समाज की स्थापना विनायक दामोदर सावरकर और उनके भाई गणेश सावरकर द्वारा 1904 में की गई थी। यह मूलतः 'मित्र मेला' नामक संगठन का ही एक विकसित और गुप्त स्वरुप था। इसका मुख्य कार्यक्षेत्र महाराष्ट्र था, न कि बंगाल प्रेसीडेंसी। इस संगठन का उद्देश्य सशस्त्र विद्रोह के माध्यम से ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेंकना था। सावरकर ने इटली के क्रांतिकारी जोसेफ मेजिनी के सिद्धांतों पर इसे संगठित किया था। इसने अनेक युवा क्रांतिकारियों को निरंतर बलिदान हेतु प्रेरित किया था।

78. (4) शासकों को आतंकित करने के लिए व्यक्तिगत वीरतापूर्ण कार्य और राजनीतिक हत्याएं
क्रांतिकारी राष्ट्रवाद के प्रारंभिक चरण की कार्यप्रणाली मुख्य रूप से "व्यक्तिगत वीरतापूर्ण कार्यों" और ब्रिटिश अधिकारियों की राजनीतिक हत्याओं पर आधारित थी। इन क्रांतिकारियों का मानना था कि अत्याचारी शासकों को आतंकित करके और उनके मन में भय पैदा करके ही स्वतंत्रता का मार्ग प्रशस्त किया जा सकता है। उन्होंने जन आंदोलनों के बजाय गुप्त संस्थाओं, बम निर्माण और सशस्त्र आक्रमणों को प्राथमिकता दी। उनका उद्देश्य युवाओं को अपने सर्वोच्च बलिदान से प्रेरित करना और औपनिवेशिक प्रशासन के आत्मविश्वास को हिला देना था।

79. (1) काकोरी ट्रेन डकैती
चापेकर बंधुओं द्वारा रैंड की हत्या, किंग्सफोर्ड की हत्या का प्रयास और कर्जन वायली की हत्या क्रांतिकारी राष्ट्रवाद के प्रारंभिक चरण की महत्वपूर्ण घटनाएं हैं। ये सभी व्यक्तिगत वीरता और स्थानीय गुप्त संगठनों से जुड़ी थीं। इसके विपरीत, काकोरी ट्रेन डकैती 1925 में हुई थी, जो क्रांतिकारी आंदोलन के दूसरे चरण का हिस्सा थी। यह घटना हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन द्वारा सरकारी खजाने को लूटने के लिए अंजाम दी गई थी, जिसमें संगठन और रणनीति का एक नया और अधिक परिपक्व स्तर स्पष्ट रूप से दिखाई देता था।

80. (2) औपनिवेशिक अधिकारियों और देशद्रोहियों की हत्या के लिए गुप्त योजना तैयार करना
प्रारंभिक क्रांतिकारी चरण के दौरान 'व्यक्तिगत वीरतापूर्ण कार्य' की मुख्य विशेषता औपनिवेशिक अधिकारियों और देशद्रोहियों की हत्या के लिए सावधानीपूर्वक गुप्त योजनाएं तैयार करना थी। क्रांतिकारी मानते थे कि सामूहिक जन आंदोलन की अनुपस्थिति में, अत्याचारी शासकों पर व्यक्तिगत हमले करके जनता में उत्साह जगाया जा सकता है और प्रशासन को पंगु बनाया जा सकता है। इसमें बम फेंकना और वीरतापूर्वक अपनी गिरफ्तारी देना शामिल था। इन कार्यों का उद्देश्य विदेशी शासन के विरुद्ध एक कड़ा संदेश देना और युवाओं में राष्ट्रभक्ति का संचार करना था।

www.nodia.in

Click Here to Buy book on Amazon

28. 1942 के क्रिप्स मिशन की विफलता ने निम्नलिखित में से किस प्रमुख जन आंदोलन के लिए प्रत्यक्ष उत्प्रेरक के रूप में कार्य किया?
(1) असहयोग आंदोलन
(2) भारत छोड़ो आंदोलन
(3) सविनय अवज्ञा आंदोलन
(4) व्यक्तिगत सत्याग्रह
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

29. 1937 और 1939 के बीच कांग्रेस मंत्रालयों द्वारा की गई निम्नलिखित विधायी और प्रशासनिक कार्रवाइयों पर विचार कीजिए:
I. किसानों के अधिकारों की रक्षा और ऋण के भार को कम करने के लिए काश्तकारी कानून पारित करना।
II. सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान सरकार द्वारा जब्त की गई भूमि की वापसी।
III. सभी ब्रिटिश भारतीय प्रांतों में जमींदारी प्रथा का पूर्ण उन्मूलन।
IV. कई राजनीतिक संगठनों और राष्ट्रवादी प्रकाशनों पर लगे प्रतिबंधों को हटाना।
V. चयनित क्षेत्रों में मद्यनिषेध लागू करना।
उपर्युक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(1) I, II, IV और V
(2) I, III, IV और V
(3) II, III, IV और V
(4) I, II, III और V
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

30. महात्मा गांधी ने 'सत्याग्रह' की अपनी अवधारणा को पश्चिमी अवधारणा 'निष्क्रिय प्रतिरोध' से भिन्न बताया। गांधी के अनुसार, सत्याग्रह की सबसे प्रमुख विशेषता निम्नलिखित में से कौन सी है?
(1) यह निर्बलों का अस्त्र है और कड़ाई से राजनीतिक दबाव पर निर्भर करता है।
(2) यदि लंबे समय के बाद शांतिपूर्ण मार्ग विफल हो जाते हैं, तो यह शारीरिक बल के प्रयोग की अनुमति देता है।
(3) यह निरंतर बहिष्कार के माध्यम से प्रतिद्वंद्वी को शारीरिक रूप से क्लांत करने का प्रयास करता है।
(4) यह प्रतिद्वंद्वी के प्रति कोई दुर्भावना नहीं रखता और सत्य तथा प्रेम की सक्रिय शक्ति पर निर्भर करता है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

31. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान भूमिगत नेता)
A. उषा मेहता
B. अरुणा आसफ अली
C. जयप्रकाश नारायण
D. चित्तू पांडे
सूची II: (संबद्ध गतिविधि/भूमिका)
i. ग्वालिया टैंक मैदान में राष्ट्रीय ध्वज फहराना
ii. गुप्त कांग्रेस रेडियो का संचालन
iii. बलिया में समानांतर सरकार की स्थापना
iv. छापामार युद्ध के लिए 'आजाद दस्ता' का गठन
कूट:
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

NODIA

32. क्रिप्स मिशन (1942) के प्रस्तावों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा युग्म गलत सुमेलित है?
(1) संविधान निर्मात्री सभा – युद्ध के पश्चात पूरी तरह से भारतीयों द्वारा निर्मित
(2) भारत के लिए युद्धोपरांत स्थिति – तत्काल पूर्ण स्वतंत्रता
(3) प्रांतों के लिए विकल्प – किसी भी प्रांत को नया संविधान स्वीकार न करने और पृथक समझौता करने का अधिकार
(4) द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान भारत की रक्षा – ब्रिटिश सरकार के नियंत्रण में रहेगी
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

33. निम्नलिखित में से कौन 1940 के दशक के दौरान संवैधानिक प्रस्तावों और योजनाओं का सही कालानुक्रमिक क्रम दर्शाता है?
(1) अगस्त प्रस्ताव → क्रिप्स मिशन → सी.आर. फॉर्मूला → वेवेल योजना
(2) क्रिप्स मिशन → अगस्त प्रस्ताव → वेवेल योजना → सी.आर. फॉर्मूला
(3) अगस्त प्रस्ताव → सी.आर. फॉर्मूला → क्रिप्स मिशन → वेवेल योजना
(4) सी.आर. फॉर्मूला → अगस्त प्रस्ताव → वेवेल योजना → क्रिप्स मिशन
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

34. भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान स्थापित समानांतर सरकारों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. चित्तू पांडे के नेतृत्व में बलिया की समानांतर सरकार, स्थापित होने वाली प्रारंभिक सरकारों में से एक थी।
II. तामलुक में जातीय सरकार ने सक्रिय रूप से चक्रवात राहत कार्य किया और स्कूलों को अनुदान दिया।
III. सतारा, महाराष्ट्र में प्रति सरकार, आंदोलन की सबसे दीर्घजीवी समानांतर सरकार के रूप में उभरी।
उपर्युक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

कारण (R): सरकार चंपारण कृषि अधिनियम बनाने के लिए विवश हुई, जिसने तीनकठिया पद्धति को समाप्त कर दिया और किसानों को अवैध वसूली का एक हिस्सा वापस कर दिया।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

8. निम्नलिखित में से किस प्रारंभिक आंदोलन में महात्मा गांधी ने किसी विवाद को सुलझाने के लिए पहली बार 'भूख हड़ताल' (आमरण अनशन) की विधि का उपयोग किया था?
(1) अहमदाबाद मिल हड़ताल
(2) चंपारण सत्याग्रह
(3) खेड़ा सत्याग्रह
(4) रोलेट सत्याग्रह
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

9. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (आंदोलन/घटना)
A. चंपारण सत्याग्रह
B. खेड़ा सत्याग्रह
C. अहमदाबाद मिल हड़ताल
D. रोलेट सत्याग्रह
सूची II: (प्रमुख सहयोगी/नेता)
i. अनुसूया साराभाई
ii. राजेन्द्र प्रसाद
iii. स्वामी श्रद्धानंद
iv. सरदार वल्लभभाई पटेल
कूट:
(1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(4) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

10. निम्नलिखित में से कौन सा रोलेट अधिनियम (अराजक और क्रांतिकारी अपराध अधिनियम, 1919) का कठोर प्रावधान नहीं था?
(1) किसी भी नए भारतीय भाषाई समाचार पत्र की स्थापना पर पूर्ण प्रतिबंध
(2) केवल राजद्रोह के संदेह में किसी भी व्यक्ति की गिरफ्तारी और निष्कासन
(3) बिना किसी मुकदमे के दो वर्ष तक राजनीतिक कैदियों को हिरासत में रखना
(4) अपील के अधिकार के बिना विशेष न्यायालयों द्वारा राजनीतिक कैदियों का विचारण
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

11. रोलेट सत्याग्रह के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. गांधी ने आंदोलन के समन्वय के लिए बॉम्बे में सत्याग्रह सभा का गठन किया।
II. इसने गांधी के स्थानीय अभियानों से हटकर उनके पहले अखिल भारतीय सामूहिक हड़ताल के नेतृत्व की ओर परिवर्तन को चिह्नित किया।
III. दंगों की किसी भी घटना के बिना आंदोलन सभी प्रांतों में पूरी तरह से अहिंसक रहा।
IV. गांधी ने व्यापक हिंसा और जलियांवाला बाग हत्याकांड के बाद सत्याग्रह को स्थगित करने का निर्णय लिया।
उपर्युक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(1) I, II और III
(2) I, II और IV
(3) II, III और IV
(4) केवल I और IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

12. निम्नलिखित में से कौन वर्ष 1919 में हुई घटनाओं का सही कालानुक्रमिक क्रम दर्शाता है?
(1) रोलेट अधिनियम का पारित होना → राष्ट्रव्यापी सत्याग्रह दिवस (हड़ताल) → डॉ. किचलू और डॉ. सत्यपाल की गिरफ्तारी → जलियांवाला बाग हत्याकांड
(2) राष्ट्रव्यापी सत्याग्रह दिवस (हड़ताल) → रोलेट अधिनियम का पारित होना → जलियांवाला बाग हत्याकांड → डॉ. किचलू और डॉ. सत्यपाल की गिरफ्तारी
(3) रोलेट अधिनियम का पारित होना → डॉ. किचलू और डॉ. सत्यपाल की गिरफ्तारी → राष्ट्रव्यापी सत्याग्रह दिवस (हड़ताल) → जलियांवाला बाग हत्याकांड
(4) डॉ. किचलू और डॉ. सत्यपाल की गिरफ्तारी → रोलेट अधिनियम का पारित होना → राष्ट्रव्यापी सत्याग्रह दिवस (हड़ताल) → जलियांवाला बाग हत्याकांड
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

13. जलियांवाला बाग हत्याकांड के बाद के घटनाक्रम के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) रवींद्रनाथ टैगोर ने हत्याकांड के विरोध में अपनी 'नाइटहुड' की उपाधि त्याग दी।
(2) सर शंकरन नायर ने वायसराय की कार्यकारी परिषद से त्यागपत्र दे दिया।
(3) ब्रिटिश सरकार ने तुरंत जनरल डायर को गिरफ्तार कर लिया और उन्हें आजीवन कारावास की सजा सुनाई।
(4) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने हत्याकांड की जांच के लिए अपनी गैर-सरकारी समिति नियुक्त की।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

14. दिसंबर 1920 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के ऐतिहासिक नागपुर अधिवेशन में एक बड़ा संवैधानिक परिवर्तन अपनाया गया था। कांग्रेस का नया परिभाषित लक्ष्य क्या था?
(1) ब्रिटिश साम्राज्य के बाहर पूर्ण स्वतंत्रता (पूर्ण स्वराज)

Downloaded from www.pdf.tube

(2) निर्वासन में एक अंतरिम समानांतर सरकार की स्थापना
(3) ब्रिटिश राष्ट्रमंडल के भीतर डोमिनियन स्टेटस
(4) शांतिपूर्ण और वैध साधनों के माध्यम से स्वराज की प्राप्ति
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

15. असहयोग आंदोलन (1920-22) के कार्यक्रमों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. अंग्रेजों द्वारा प्रदान की गई उपाधियों और मानद पदों का त्याग।
II. छात्रों द्वारा सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों और कॉलेजों का बहिष्कार।
III. प्रमुख वकीलों द्वारा न्यायालयों का बहिष्कार।
IV. पहले ही चरण में भू-राजस्व और करों के भुगतान से तत्काल इनकार।
V. स्वदेशी वस्तुओं का प्रचार और विदेशी कपड़ों का बहिष्कार।
उपर्युक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(1) I, II, III और V
(2) I, III, IV और V
(3) II, III, IV और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

16. 1922 की चौरी-चौरा घटना के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए:
(1) यह संयुक्त प्रांत के गोरखपुर जिले में हुई थी।
(2) जब हिंसा भड़की तब महात्मा गांधी चौरी-चौरा में प्रत्यक्ष रूप से उपस्थित थे।
(3) उत्तेजित भीड़ ने एक पुलिस थाने में आग लगा दी, जिससे 22 पुलिसकर्मियों की मृत्यु हो गई।
(4) इस घटना के कारण असहयोग आंदोलन को आकस्मिक रूप से वापस ले लिया गया।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

17. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। इन दोनों कथनों का ध्यानपूर्वक परीक्षण कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
अभिकथन (A): महात्मा गांधी ने चौरी-चौरा घटना के बाद फरवरी 1922 में असहयोग आंदोलन को अचानक रोक दिया।
कारण (R): उनका मानना था कि भारतीय जनता ने अभी तक पूर्ण अहिंसा की पद्धति को पूरी तरह से नहीं समझा है और आंदोलन एक हिंसक विद्रोह में बदल सकता है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

18. असहयोग आंदोलन को वापस लेने के बाद, कांग्रेस कार्य समिति ने 1922 में बारदोली प्रस्ताव पारित किया। इस प्रस्ताव का प्राथमिक ध्यान क्या था?
(1) कांग्रेसियों को खादी, मद्यनिषेध और राष्ट्रीय शिक्षा सहित रचनात्मक कार्यक्रम पर ध्यान केंद्रित करने का निर्देश देना
(2) विशेष रूप से कर बहिष्कार पर केंद्रित एक नया सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरु करना
(3) युवाओं को उग्रवादी और सशस्त्र क्रांतिकारी गतिविधियों में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करना
(4) आगामी प्रांतीय विधायी चुनावों में तत्काल भागीदारी को अनिवार्य बनाना
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

19. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (नमक सत्याग्रह का क्षेत्र)
A. तमिलनाडु (तिरुचिरापल्ली से वेदारण्यम)
B. मालाबार (कालीकट से पय्यानूर)
C. धरसाणा नमक कारखाना
D. ओडिशा (बालासोर और कटक)
सूची II: (प्रमुख नेता)
i. के. केलप्पन
ii. सरोजिनी नायडू
iii. सी. राजगोपालाचारी
iv. गोपबंधु चौधरी
कूट:
(1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(2) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
(3) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(4) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

NODIA

20. महात्मा गांधी ने जनवरी 1930 में वायसराय लॉर्ड इरविन के समक्ष अपनी प्रसिद्ध 'ग्यारह मांगें' प्रस्तुत कीं। इन विशिष्ट मांगों को प्रस्तुत करने का तात्कालिक रणनीतिक उद्देश्य क्या था?
(1) प्रथम गोलमेज सम्मेलन में अपनी भागीदारी के लिए शर्तों को अंतिम रूप देना
(2) भगत सिंह और उनके साथियों की मुक्ति सुनिश्चित करना
(3) प्रांतों में अंतरिम कांग्रेस मंत्रालयों के गठन पर वार्ता करना
(4) सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू करने से पहले सम्मानजनक समझौते के लिए एक अंतिम अवसर प्रदान करना
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

21. सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930-31) के दौरान की गतिविधियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. महाराष्ट्र, कर्नाटक और मध्य प्रांतों में दमनकारी वन कानूनों की व्यापक अवहेलना देखी गई।
II. पूर्वी भारत, विशेष रूप से बिहार और बंगाल में चौकीदारी कर बंदी अभियान सफलतापूर्वक आयोजित किए गए।

III. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने आंदोलन की मांगों पर वार्ता करने के लिए प्रथम गोलमेज सम्मेलन में पूरी तरह भाग लिया।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?

(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

22. गांधीवादी युग की निम्नलिखित प्रमुख घटनाओं को उनके सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:

I. गांधी-इरविन समझौते पर हस्ताक्षर
II. भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु को फांसी
III. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का कराची अधिवेशन
IV. द्वितीय गोलमेज सम्मेलन

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही क्रम चुनिए:

(1) I, II, III, IV
(2) II, I, III, IV
(3) I, III, II, IV
(4) III, I, IV, II
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

23. जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने पहले और तीसरे गोलमेज सम्मेलनों का बहिष्कार किया था, निम्नलिखित प्रमुख भारतीय नेताओं में से किसने लंदन में तीनों गोलमेज सम्मेलनों में भाग लिया था?

(1) महात्मा गांधी
(2) जवाहरलाल नेहरू
(3) सरदार वल्लभभाई पटेल
(4) बी.आर. अंबेडकर
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

24. गांधी-इरविन समझौते (1931) में सहमत शर्तों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

कथन I: ब्रिटिश सरकार उन सभी राजनीतिक कैदियों को रिहा करने के लिए सहमत हो गई, जिन्हें आंदोलन के दौरान हिंसा का दोषी ठहराया गया था।

कथन II: भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस सविनय अवज्ञा आंदोलन को स्थगित करने और द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने के लिए सहमत हुई।

उपर्युक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा सही है?

(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

25. 1932 के सांप्रदायिक पंचाट के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. इसकी घोषणा ब्रिटिश प्रधानमंत्री रैमसे मैकडोनाल्ड ने की थी।
II. इसने मुसलमानों, सिखों और यूरोपीय लोगों के लिए पृथक निर्वाचक मंडल प्रदान किया, लेकिन दलित वर्गों को इससे स्पष्ट रूप से वंचित कर दिया।
III. महात्मा गांधी ने इसके प्रावधानों के विरोध में यरवदा केंद्रीय कारागार में आमरण अनशन शुरू किया।
IV. इसे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा बिना किसी संशोधन की मांग के पूरी तरह से समर्थन दिया गया था।

उपर्युक्त में से कौन से कथन गलत हैं?

(1) केवल I और III
(2) केवल II और IV
(3) I, II और IV
(4) केवल III और IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

26. 1937 के प्रांतीय चुनावों के संदर्भ में, अक्टूबर-नवंबर 1939 में कांग्रेस मंत्रालयों के त्यागपत्र का प्राथमिक कारण क्या था?

(1) वायसराय लिनलिथगो ने भारतीय राजनीतिक नेतृत्व से परामर्श किए बिना भारत को द्वितीय विश्व युद्ध में सम्मिलित घोषित कर दिया।
(2) ब्रिटिश सरकार ने कांग्रेस द्वारा प्रस्तावित प्रमुख भूमि सुधारों और सामाजिक-आर्थिक नीतियों को लागू करने से इनकार कर दिया।
(3) मुस्लिम लीग ने 'प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस' शुरू किया, जिससे कांग्रेस शासित प्रांतों में शासन करना असंभव हो गया।
(4) महात्मा गांधी ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध राष्ट्रव्यापी भारत छोड़ो आंदोलन तत्काल शुरू करने का आह्वान किया।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

27. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची I: (1937 के चुनावों में प्रांत)

A. संयुक्त प्रांत
B. बिहार
C. बॉम्बे
D. मद्रास

सूची II: (कांग्रेस प्रीमियर/प्रधानमंत्री)

i. सी. राजगोपालाचारी
ii. गोविंद बल्लभ पंत
iii. बी.जी. खेर
iv. श्री कृष्ण सिन्हा

कूट:

(1) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(2) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(3) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(4) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

Click Here to Buy book on Amazon

65. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
होम रूल आंदोलन की सफलता में कुशल संगठन और सहयोगियों का बड़ा योगदान था। जोसेफ बैप्टिस्टा तिलक की लीग के पहले अध्यक्ष थे, जबकि एन.सी. केलकर ने इसके सचिव के रूप में कार्य किया। एनी बेसेंट की लीग में जॉर्ज अरुंडेल संगठन सचिव के रूप में अत्यंत सक्रिय थे। बी.पी. वाडिया ने न केवल बेसेंट की लीग में सहायता की बल्कि श्रमिक आंदोलनों को भी प्रोत्साहित किया। इन नेताओं के आपसी समन्वय और संगठनात्मक कौशल ने होम रूल के संदेश को शिक्षित वर्ग के साथ-साथ आम जनता तक प्रभावी ढंग से पहुँचाया।

66. (3) I और II दोनों
1917 में मद्रास सरकार द्वारा एनी बेसेंट और उनके सहयोगियों की गिरफ्तारी ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में एक नया मोड़ ला दिया। इस दमनकारी कार्रवाई के विरुद्ध पूरे देश में रोष व्याप्त हो गया और होम रूल आंदोलन की लोकप्रियता अचानक बढ़ गई। विरोध के एक बड़े प्रतीक के रूप में, सर एस. सुब्रमण्यम अय्यर ने अपनी प्रतिष्ठित 'नाइटहुड' की उपाधि त्याग दी। सरकार को इस भारी जन दबाव के आगे झुकना पड़ा और अंततः उन्हें रिहा करना पड़ा, जिससे राष्ट्रवादियों का मनोबल ऊँचा हुआ।

67. (3) ब्रिटिश साम्राज्य के भीतर भारत के लिए स्वशासन की प्राप्ति
भारत में होम रूल लीग आंदोलन का मौलिक उद्देश्य ब्रिटिश साम्राज्य के भीतर संवैधानिक तरीकों से 'स्वशासन' या 'होम रूल' प्राप्त करना था। यह ऑस्ट्रेलिया और कनाडा जैसे उपनिवेशों को दिए गए डोमिनियन स्टेटस के समान था। इस आंदोलन का लक्ष्य पूर्ण स्वतंत्रता या सशस्त्र क्रांति नहीं, बल्कि भारतीयों को अपने आंतरिक मामलों के प्रबंधन का अधिकार दिलाना था। तिलक और बेसेंट ने इसके माध्यम से राजनीतिक शिक्षा का प्रसार किया, जिससे भविष्य के बड़े आंदोलनों के लिए एक मजबूत आधार तैयार हुआ।

68. (4) मद्रास के गैर-ब्राह्मण और महाराष्ट्र की निचली जातियाँ
होम रूल आंदोलन को शहरी मध्यम वर्ग और छात्रों का व्यापक समर्थन मिला, लेकिन समाज के कुछ वर्गों ने इससे दूरी बनाए रखी। मद्रास के गैर-ब्राह्मणों और महाराष्ट्र की कुछ निचली जातियों ने इसका विरोध किया क्योंकि उन्हें डर था कि स्वशासन का अर्थ उच्च जातियों का प्रभुत्व होगा। उन्हें लगा कि ब्रिटिश शासन के तहत उन्हें सामाजिक समानता और न्याय मिलने की अधिक संभावना है। यह प्रतिरोध उस समय के भारतीय समाज में व्याप्त गहरे सामाजिक विभाजन को दर्शाता है, जिसे पाटने का निरंतर प्रयास किया गया।

69. (3) न्यू इंडिया और कॉमनवील
एनी बेसेंट ने होम रूल आंदोलन के सिद्धांतों और उद्देश्यों को जन-जन तक पहुँचाने के लिए अपने दो प्रमुख समाचार पत्रों, 'न्यू इंडिया' और 'कॉमनवील' का अत्यंत प्रभावी ढंग से उपयोग किया। 'न्यू इंडिया' एक दैनिक पत्र था, जबकि 'कॉमनवील' एक साप्ताहिक पत्रिका थी। इन प्रकाशनों के माध्यम से उन्होंने ब्रिटिश प्रशासन की कमियों को उजागर किया और भारतीयों को स्वशासन के महत्व के प्रति शिक्षित किया। उनके सशक्त लेखन ने न केवल भारतीयों को प्रेरित किया, बल्कि आंदोलन के लिए अंतरराष्ट्रीय जनमत भी तैयार किया।

70. (3) केवल V
1916 का लखनऊ समझौता भारतीय राजनीति की एक मील का पत्थर घटना थी, जिसने कांग्रेस के दोनों गुटों और मुस्लिम लीग को एक मंच पर लाया। इसमें पृथक निर्वाचक मंडल की स्वीकृति और डोमिनियन स्टेटस की संयुक्त माँग शामिल थी। हालांकि, यह मानना पूरी तरह गलत है कि इस समझौते ने सांप्रदायिक समस्या को स्थायी रूप से हल कर दिया था। वास्तव में, इसने शीर्ष स्तर पर एक राजनीतिक गठबंधन तो बनाया, लेकिन आम जनता के बीच सांप्रदायिक आधार पर होने वाले अलगाव को समाप्त करने में यह असफल रहा।

71. (4) अंबिका चरण मजूमदार
भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के ऐतिहासिक लखनऊ अधिवेशन की अध्यक्षता अंबिका चरण मजूमदार ने की थी। यह 1916 का अधिवेशन कांग्रेस के पुनर्मिलन और मुस्लिम लीग के साथ सहयोग के लिए सदैव याद किया जाता है। मजूमदार के कुशल नेतृत्व में उदारवादियों और उग्रवादियों के बीच नौ साल पुराने विवाद का अंत हुआ। इस अधिवेशन में हुए लखनऊ समझौते ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध एक संयुक्त राष्ट्रीय मोर्चा बनाने की दिशा में मार्ग प्रशस्त किया। इस सभा ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में एकता के एक नए युग का सूत्रपात किया।

NODIA

72. (1) पृथक निर्वाचक मंडल को स्वीकार करके सांप्रदायिक राजनीति को वैधता प्रदान करना
इतिहासकारों के अनुसार, लखनऊ समझौते का सबसे गंभीर और दीर्घकालिक दोष कांग्रेस द्वारा मुस्लिम लीग की पृथक निर्वाचक मंडल की माँग को औपचारिक रूप से स्वीकार करना था। इस कदम ने धर्म के आधार पर राजनीति को संवैधानिक वैधता प्रदान कर दी, जिसने भविष्य में द्वि-राष्ट्र सिद्धांत और सांप्रदायिक विभाजन की नींव को और मजबूत किया। हालांकि अल्पकालिक रूप से इससे एकता प्रदर्शित हुई, लेकिन इसने राष्ट्रीय आंदोलन के धर्मनिरपेक्ष चरित्र के सामने एक बड़ी चुनौती पेश की, जिसका परिणाम अंततः दुखद रहा।

73. (3) बाल गंगाधर तिलक और मोहम्मद अली जिन्ना
1916 में लखनऊ में कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच ऐतिहासिक एकता स्थापित करने में बाल गंगाधर तिलक और मोहम्मद अली जिन्ना ने मुख्य वास्तुकार की भूमिका निभाई थी। तिलक ने जहाँ कांग्रेस के दोनों गुटों को जोड़ने और लीग के साथ सहयोग के लिए मंच तैयार किया, वहीं जिन्ना ने मुस्लिम लीग की ओर से इस गठबंधन को वैचारिक मजबूती प्रदान की। इन दोनों नेताओं के साझा प्रयासों ने यह साबित किया कि साझा राष्ट्रीय उद्देश्यों के लिए विभिन्न राजनीतिक विचारधाराओं का एकजुट होना संभव है।

74. (1) प्रथम विश्व युद्ध में ओटोमन साम्राज्य के प्रति ब्रिटिश शत्रुता
प्रथम विश्व युद्ध के दौरान ओटोमन साम्राज्य के प्रति ब्रिटिश शत्रुता ने भारतीय मुसलमानों को गहराई से प्रभावित किया। ओटोमन सुल्तान को मुस्लिम जगत का खलीफा माना जाता था,

35. 1946 के अंत में, महात्मा गांधी ने सांप्रदायिक सद्भाव और शांति का प्रचार करने के लिए दंगा प्रभावित गांवों के माध्यम से एक साहसिक पदयात्रा की थी। इस विशिष्ट मिशन का प्राथमिक केंद्र कौन सा क्षेत्र था?
(1) केरल में मालाबार तट
(2) पंजाब में मुल्तान जिला
(3) बंगाल में नोआखली जिला
(4) हैदराबाद राज्य
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

36. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (1940 के दशक की प्रमुख घटना)
A. अगस्त प्रस्ताव
B. भारत छोड़ो आंदोलन की शुरुआत
C. आजाद हिंद फौज के कैदियों पर लाल किला मुकदमा
D. शाही भारतीय नौसेना विद्रोह
सूची II: (संबंधित वर्ष)
i. 1945
ii. 1946
iii. 1940
iv. 1942
कूट:
(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(3) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

37. रोलेट सत्याग्रह के नाम से जाना जाने वाला व्यापक जन आंदोलन 'अराजक और क्रांतिकारी अपराध अधिनियम' के पारित होने से प्रत्यक्ष रूप से शुरु हुआ था। ब्रिटिश सरकार द्वारा इस अधिनियम को पारित करने के लिए दिया गया प्राथमिक तर्क क्या था?
(1) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को प्रांतीय चुनाव लड़ने से रोकना
(2) एक पृथक राष्ट्र की बढ़ती मांगों को दबाना
(3) बढ़ते क्रांतिकारी राष्ट्रवाद और युद्धकालीन षड्यंत्रों के संकट को रोकना
(4) नमक उत्पादन पर ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के एकाधिकार को विधिक रूप से लागू करना
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

38. कैबिनेट मिशन योजना (1946) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. अनुभाग A में मद्रास, बॉम्बे, यूपी, बिहार, मध्य प्रांत और उड़ीसा जैसे हिंदू-बहुमत वाले प्रांत सम्मिलित थे।
II. अनुभाग B में उत्तर-पश्चिम के मुस्लिम-बहुमत वाले प्रांत: पंजाब, NWFP और सिंध सम्मिलित थे।
III. अनुभाग C में बंगाल और असम सम्मिलित थे।
IV. इसने एक अत्यधिक केंद्रीकृत और सशक्त संघ सरकार का प्रस्ताव दिया जिसमें अवशिष्ट शक्तियां केंद्र में निहित थीं।
V. इसने पाकिस्तान के एक संप्रभु राष्ट्र के तत्काल निर्माण की प्रबल संस्तुति की।
उपर्युक्त में से कौन से कथन गलत हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल III और V
(3) केवल IV और V
(4) केवल II और IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

NODIA

39. 1920 में असहयोग आंदोलन के आरंभ के दौरान, महात्मा गांधी ने प्रसिद्ध प्रतिज्ञा की थी कि यदि रचनात्मक और बहिष्कार कार्यक्रमों को पूर्णतः लागू किया गया, तो एक निश्चित समय सीमा के भीतर 'स्वराज' प्राप्त हो जाएगा। यह समय सीमा क्या थी?
(1) छह मास के भीतर
(2) एक वर्ष के भीतर
(3) तीन वर्ष के भीतर
(4) पांच वर्ष के भीतर
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

40. भारत के विभाजन की ओर ले जाने वाली निम्नलिखित महत्वपूर्ण घटनाओं को उनके सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. कैबिनेट मिशन का आगमन
II. मुस्लिम लीग द्वारा प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस मनाना
III. ब्रिटिश वापसी के लिए समय सीमा निर्धारित करते हुए प्रधानमंत्री क्लेमेंट एटली की घोषणा
IV. माउंटबेटन योजना की घोषणा
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही क्रम चुनिए:
(1) I, II, III, IV
(2) II, I, IV, III
(3) I, III, II, IV
(4) III, I, II, IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

41. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। इन दोनों कथनों का ध्यानपूर्वक परीक्षण कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
अभिकथन (A): पूना पैक्ट (1932) ने दलित वर्गों के लिए पृथक निर्वाचक मंडल के विचार को त्याग दिया।
कारण (R): बी.आर. अंबेडकर को ब्रिटिश सरकार ने वायसराय की कार्यकारी परिषद में पद के बदले संयुक्त निर्वाचक मंडल स्वीकार करने के लिए मना लिया था।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

42. 1917 में साबरमती नदी के तट पर स्थानांतरित होने से पहले, 1915 में कोचरब में महात्मा गांधी द्वारा स्थापित आश्रम का मूल नाम क्या था?
(1) सत्याग्रह आश्रम
(2) हरिजन आश्रम
(3) सेवाग्राम आश्रम
(4) फीनिक्स आश्रम
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

43. एक स्थानीय किसान राजकुमार शुक्ल ने महात्मा गांधी को चंपारण आने और नील की खेती करने वाले किसानों की दुर्दशा की जांच करने के लिए मनाया। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के किस अधिवेशन में शुक्ल इस उद्देश्य के लिए गांधी से मिले थे?
(1) सूरत अधिवेशन, 1907
(2) कलकत्ता अधिवेशन, 1911
(3) अमृतसर अधिवेशन, 1919
(4) लखनऊ अधिवेशन, 1916
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

44. 1918 की अहमदाबाद मिल हड़ताल के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. मुख्य विवाद मिल स्वामियों और श्रमिकों के बीच 'प्लेग बोनस' को वापस लेने को लेकर था।
II. महात्मा गांधी ने श्रमिकों को हड़ताल पर जाने और 35 प्रतिशत मजदूरी वृद्धि की मांग करने की सलाह दी।
III. गांधी के हस्तक्षेप से पहले मिल स्वामियों ने आरंभ में 50 प्रतिशत वृद्धि की पेशकश की थी, जिसे श्रमिकों ने अस्वीकार कर दिया था।
उपर्युक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

45. राजपूताना के निम्नलिखित में से किस प्रमुख नेता ने गांधीवादी सिद्धांतों का कड़ाई से पालन किया, अजमेर में चरखा संघ की स्थापना की, और असहयोग आंदोलन के दौरान अपनी 'राय बहादुर' की उपाधि त्याग दी थी?
(1) जय नारायण व्यास
(2) माणिक्य लाल वर्मा
(3) जमनालाल बजाज
(4) गोकुलभाई भट्ट
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

46. असहयोग आंदोलन की वापसी के बाद के निम्नलिखित राजनीतिक घटनाक्रमों पर विचार कीजिए:
कथन I: स्वराज पार्टी का गठन उन नेताओं द्वारा किया गया था जो परिषद चुनाव लड़ना चाहते थे और ब्रिटिश विधायी परिषदों के कामकाज में भीतर से बाधा डालना चाहते थे।
कथन II: इन नेताओं को 'परिवर्तन-विरोधी' के रूप में जाना जाता था, जिनमें सी.आर. दास और मोतीलाल नेहरु जैसे प्रमुख व्यक्तित्व सम्मिलित थे।
उपर्युक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

47. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (ब्रिटिश आयोग/समिति)
A. हंटर आयोग (1919)
B. मुडीमैन समिति (1924)
C. साइमन कमीशन (1927)
D. बटलर समिति (1927)
सूची II: (प्राथमिक उद्देश्य/संबोधित मुद्दा)
i. 1919 के अधिनियम द्वारा स्थापित द्वैध शासन के कामकाज की जांच करना
ii. जलियांवाला बाग हत्याकांड की जांच करना
iii. सर्वोच्च शक्ति और रियासतों के बीच संबंधों की जांच करना
iv. भारत में आगे के सुधारों के लिए संवैधानिक ढांचे की समीक्षा करना
कूट:
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(3) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

48. 1945 में शिमला सम्मेलन (वेवेल योजना) में चर्चा किए गए प्रस्तावों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसने प्रस्ताव दिया कि वायसराय की कार्यकारी परिषद के सभी सदस्य, वायसराय और प्रधान सेनापति को छोड़कर, भारतीय होंगे।
II. इसने कार्यकारी परिषद में सवर्ण हिंदुओं और मुसलमानों के लिए समान प्रतिनिधित्व का सुझाव दिया।
III. मुस्लिम लीग ने परिषद के सभी मुस्लिम सदस्यों को नामांकित करने के एकमात्र अधिकार की मांग करके सम्मेलन को विफल कर दिया।
IV. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने समझौते को सुगम बनाने के लिए पूर्णतः हिंदू संस्था के रूप में पहचाने जाने के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया।
उपर्युक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(1) I, II और IV
(2) I, II और III
(3) II, III और IV
(4) I, III और IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

Downloaded from www.pdf.tube

49. निम्नलिखित में से कौन सा जन आंदोलनों के साथ शुरू किए गए महात्मा गांधी के 'रचनात्मक कार्यक्रम' का अभिन्न अंग नहीं था?
(1) खादी का प्रचार और कताई
(2) तीव्र भारी औद्योगीकरण को बढ़ावा देना
(3) हिंदू-मुस्लिम एकता को प्रोत्साहन
(4) अस्पृश्यता का निवारण
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

50. असहयोग आंदोलन में विभिन्न सामाजिक समूहों की भागीदारी के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. महिलाओं ने बड़ी संख्या में सक्रिय रूप से भाग लिया, प्रायः मद्य की दुकानों और विदेशी कपड़ों की दुकानों पर धरना दिया।
II. छात्रों ने नव स्थापित राष्ट्रीय स्कूलों और कॉलेजों में प्रवेश के लिए सरकारी नियंत्रण वाले शिक्षण संस्थानों को छोड़ दिया।
III. भारतीय व्यापारिक वर्ग ने वित्तीय हानि के भय से आरंभ से ही आंदोलन का पूर्ण विरोध किया।
IV. विभिन्न क्षेत्रों के किसानों ने अपनी स्थानीय कृषि समस्याओं को स्वराज के राष्ट्रीय संघर्ष के साथ जोड़ दिया।
उपर्युक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(1) I, II और III
(2) I, II और IV
(3) II, III और IV
(4) I, III और IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

51. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। इन दोनों कथनों का ध्यानपूर्वक परीक्षण कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
अभिकथन (A): कैबिनेट मिशन योजना (1946) ने मुस्लिम लीग की एक पृथक, संप्रभु पाकिस्तान राष्ट्र की मांग को स्पष्ट रूप से अस्वीकार कर दिया।
कारण (R): मिशन ने निष्कर्ष निकाला कि एक पृथक पाकिस्तान सांप्रदायिक अल्पसंख्यक समस्या का समाधान नहीं करेगा और प्रशासनिक तथा आर्थिक रूप से अवव्यवहार्य होगा।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

52. इतिहासकारों द्वारा चर्चा किए गए विभिन्न कारणों में से, महात्मा गांधी द्वारा 1922 में असहयोग आंदोलन को आकस्मिक रूप से वापस लेने का प्राथमिक कारण क्या बताया गया था?
(1) तिलक स्वराज कोष का समाप्त होना, जिससे आंदोलन को जारी रखना कठिन हो गया
(2) गांधी और वायसराय लॉर्ड रीडिंग के बीच वार्ता के माध्यम से एक गुप्त समझौता
(3) शीर्ष कांग्रेस नेताओं की सामूहिक गिरफ्तारी, जिससे आंदोलन नेतृत्वविहीन हो गया
(4) चौरी-चौरा की हिंसक घटना, जिसने अहिंसा के मूल सिद्धांत के साथ समझौता किया
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

53. ऐतिहासिक दांडी मार्च (नमक सत्याग्रह), जिसने 1930 में सविनय अवज्ञा आंदोलन का आरंभ किया, लगभग 240 मील की दूरी तय की। यह मार्च कहाँ से आरंभ हुआ था?
(1) पोरबंदर
(2) बारदोली
(3) साबरमती आश्रम
(4) वर्धा आश्रम
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

54. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (स्थान)
A. वेदारण्यम
B. पय्यानूर
C. सानिकट्टा
D. धरसाणा
सूची II: (वर्तमान राज्य)
i. केरल
ii. गुजरात
iii. तमिलनाडु
iv. कर्नाटक
कूट:
(1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(2) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(3) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

NODIA

55. सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान, धरसाणा नमक कारखाने में शांतिपूर्ण सत्याग्रहियों पर पुलिस के बर्बर लाठीचार्ज को किस प्रसिद्ध अमेरिकी पत्रकार ने देखा और विश्व स्तर पर उसकी रिपोर्ट दी थी?
(1) लुई फिशर
(2) विलियम शिरर
(3) एडगर स्नो
(4) वेब मिलर
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

56. 1930 में महात्मा गांधी द्वारा लॉर्ड इरविन को प्रस्तुत 'ग्यारह मांगों' में सम्मिलित निम्नलिखित मांगों पर विचार कीजिए:
I. नमक कर और सरकारी नमक एकाधिकार को समाप्त

(2) उन्होंने सार्वजनिक जीवन से पूरी तरह संन्यास ले लिया और नेतृत्व के निर्णय के विरोध में चले गए।
(3) उन्होंने सैद्धांतिक रूप से इसका विरोध किया लेकिन आगे की सांप्रदायिक हिंसा को रोकने के लिए इसे एक अपरिहार्य वास्तविकता के रूप में स्वीकार कर लिया।
(4) उन्होंने अगस्त 1947 में आमरण अनशन शुरू किया जिससे विभाजन को एक वर्ष के लिए टाल दिया गया।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

74. महात्मा गांधी ने अपने दर्शन का प्रचार करने के लिए जीवन भर कई संस्थानों की स्थापना की। निम्नलिखित में से किस संस्थान की स्थापना उनके द्वारा नहीं की गई थी?
(1) शान्तिनिकेतन
(2) टॉलस्टॉय फार्म
(3) फीनिक्स सेटलमेंट
(4) साबरमती आश्रम
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

75. भारत लौटने और अपना कार्य आरंभ करने के दौरान, गांधी को "महात्मा" की उपाधि दी गई थी। उन्हें यह उपाधि देने के लिए किसे पहचाना जाता है?
(1) गोपाल कृष्ण गोखले
(2) सुभाष चंद्र बोस
(3) बाल गंगाधर तिलक
(4) रवींद्रनाथ टैगोर
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

76. चंपारण सत्याग्रह के दौरान, महात्मा गांधी को प्रमुख राष्ट्रवादी नेताओं की एक समर्पित टीम द्वारा सहायता प्रदान की गई थी। निम्नलिखित में से किसने चंपारण अभियान के दौरान गांधी की सहायता नहीं की थी?
(1) राजेन्द्र प्रसाद
(2) सुभाष चंद्र बोस
(3) जे.बी. कृपलानी
(4) महादेव देसाई
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

77. असहयोग आंदोलन में स्थानीय समस्याओं के आधार पर विभिन्न क्षेत्रीय अभिव्यक्तियाँ देखी गईं। क्षेत्र और आंदोलन के विशिष्ट रूप का निम्नलिखित में से कौन सा युग्म गलत सुमेलित है?
(1) मिदनापुर – यूनियन बोर्ड विरोधी कर आंदोलन
(2) असम – चाय बागान श्रमिकों द्वारा हड़ताल
(3) पंजाब – मोपला विद्रोह
(4) आंध्र प्रदेश (गुंटूर) – वन कानूनों की अवहेलना
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

78. सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान 'खुदाई खिदमतगारों' के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: खान अब्दुल गफ्फार खान के नेतृत्व में, उन्होंने उत्तर-पश्चिमी सीमा प्रांत में जनता को लामबंद करने में प्रमुख भूमिका निभाई।
कथन II: वे एक सशस्त्र उग्रवादी समूह थे जो अक्सर ब्रिटिश सेना के साथ हिंसक झड़पों में सम्मिलित होते थे।
उपर्युक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

79. 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान विभिन्न राजनीतिक समूहों के रुख के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए:
(1) मुस्लिम लीग ने आंदोलन का विरोध किया और दावा किया कि यह हिंदू वर्चस्व स्थापित करने की एक योजना थी।
(2) भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने आधिकारिक तौर पर आंदोलन का समर्थन किया और भूमिगत गतिविधियों में भाग लिया।
(3) हिंदू महासभा ने राष्ट्रव्यापी हड़ताल आयोजित करके आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया।
(4) रियासतों के शासकों ने भारी संख्या में अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह किया।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

80. 15 अगस्त 1947 को महात्मा गांधी कहाँ थे, जब भारत आधिकारिक तौर पर अपनी स्वतंत्रता का उत्सव मना रहा था?
(1) लाल किले में उपस्थित होकर मौन प्रार्थना कर रहे थे
(2) कलकत्ता में उपवास कर रहे थे और सांप्रदायिक हिंसा को शांत करने का प्रयास कर रहे थे
(3) अहमदाबाद में साबरमती आश्रम में निवास कर रहे थे
(4) अपने प्रथम सत्याग्रह की याद में चंपारण के गांवों का भ्रमण कर रहे थे
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

www.nodia.in

Click Here to Buy book on Amazon

प्रसारित करने के लिए गुप्त रूप से 'कांग्रेस रेडियो' का संचालन किया?
(1) अरुणा आसफ अली
(2) उषा मेहता
(3) सुचेता कृपलानी
(4) सरोजिनी नायडू
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

66. असहयोग और सविनय अवज्ञा आंदोलनों की तुलना में, निम्नलिखित में से कौन सा 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन की विशिष्ट प्रकृति का सबसे उपयुक्त वर्णन करता है?
(1) संपूर्ण कांग्रेस नेतृत्व की तत्काल गिरफ्तारी के कारण यह जमीनी स्तर पर स्वतः स्फूर्त और नेतृत्वविहीन था।
(2) यह महात्मा गांधी द्वारा सीधे जारी किए गए दैनिक आदेशों के साथ अत्यधिक केंद्रीकृत था।
(3) यह ग्रामीण जनता की किसी भी महत्वपूर्ण भागीदारी के बिना केवल शहरी शिक्षित वर्ग तक ही सीमित था।
(4) इसे मुस्लिम लीग और भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी से पूर्ण वित्तीय और राजनीतिक समर्थन प्राप्त हुआ था।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

67. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने 1942 में क्रिप्स मिशन द्वारा लाए गए प्रस्तावों को मुख्य रूप से इसलिए अस्वीकार कर दिया क्योंकि मिशन:
(1) भारत को तुरंत दो संप्रभु राज्यों में विभाजित करने पर बल दे रहा था।
(2) आजाद हिंद फौज को तत्काल भंग करने की मांग कर रहा था।
(3) सत्ता के तत्काल वास्तविक हस्तांतरण के स्थान पर युद्ध के पश्चात केवल डोमिनियन स्टेटस की पेशकश कर रहा था।
(4) चल रहे द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान भारत की रक्षा को पूरी तरह से भारतीय नेताओं को सौंपने का प्रस्ताव दिया था।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

68. क्रिप्स मिशन (1942) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: क्रिप्स मिशन ने प्रस्ताव दिया कि युद्धोपरांत संविधान निर्मात्री सभा में केवल भारतीय सम्मिलित होंगे।
कथन II: मुस्लिम लीग ने क्रिप्स प्रस्तावों को अस्वीकार कर दिया क्योंकि उन्होंने स्पष्ट रूप से एक पृथक पाकिस्तान राष्ट्र के निर्माण को स्वीकार नहीं किया था।
उपर्युक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

69. मुस्लिम लीग ने 1946 की कैबिनेट मिशन योजना को एक पृथक पाकिस्तान को अस्वीकार करने के उपरांत भी आरंभ में स्वीकार कर लिया था। उनकी स्वीकृति का प्राथमिक कारण क्या था?
(1) अंग्रेजों ने मुहम्मद अली जिन्ना को संयुक्त भारत का प्रथम गवर्नर-जनरल बनाने का वचन दिया था।
(2) योजना ने मुस्लिम लीग को सभी केंद्रीय विधानों पर विशेष वीटो शक्ति प्रदान की थी।
(3) अनुभाग B और C में प्रांतों के अनिवार्य समूहन ने परोक्ष रूप से भविष्य के पाकिस्तान का आधार प्रदान किया था।
(4) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस संविधान सभा में मुस्लिम लीग के साथ समानता पर सहमत हो गई थी।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

70. 1946 के कैबिनेट मिशन में तीन वरिष्ठ ब्रिटिश कैबिनेट मंत्री सम्मिलित थे। निम्नलिखित में से कौन कैबिनेट मिशन का सदस्य नहीं था?
(1) लॉर्ड पैथिक-लॉरेंस
(2) लॉर्ड माउंटबेटन
(3) सर स्टैफोर्ड क्रिप्स
(4) ए.वी. अलेक्जेंडर
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

NODIA

71. कैबिनेट मिशन योजना के तहत संविधान सभा के चुनावों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) प्रांतों को उनकी जनसंख्या के अनुपात में सीटें आवंटित की गई थीं।
(2) मतदान एकल संक्रमणीय मत के माध्यम से आनुपातिक प्रतिनिधित्व की पद्धति द्वारा किया गया था।
(3) मुस्लिम लीग ने मुसलमानों के लिए आरक्षित अधिकांश सीटों पर विजय प्राप्त की।
(4) संविधान सभा के सदस्य सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार के माध्यम से सीधे जनता द्वारा चुने गए थे।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

72. वह औपचारिक योजना जिसने सत्ता के हस्तांतरण और ब्रिटिश भारत को भारत और पाकिस्तान में विभाजित करने की प्रक्रिया निर्धारित की थी, निम्नलिखित में से किस तिथि को घोषित की गई थी?
(1) 16 अगस्त, 1946
(2) 20 फरवरी, 1947
(3) 3 जून, 1947
(4) 18 जुलाई, 1947
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

73. निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प 1947 में भारत के विभाजन पर महात्मा गांधी के अंतिम रुख को सबसे उपयुक्त रूप से दर्शाता है?
(1) उन्होंने सांप्रदायिक संघर्ष को हल करने के सर्वश्रेष्ठ समाधान के रूप में इसका उत्साहपूर्वक समर्थन किया।

करना।
II. सैन्य व्यय को 50 प्रतिशत तक कम करना।
III. भू-राजस्व को 50 प्रतिशत तक कम करना।
IV. भारत को तुरंत डोमिनियन स्टेटस प्रदान करना।
V. हिंसा के दोषी कैदियों को छोड़कर, सभी राजनीतिक कैदियों को रिहा करना।

उपर्युक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(1) I, II, III और V
(2) I, II, IV और V
(3) I, III, IV और V
(4) II, III, IV और V
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

57. 1931 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कराची अधिवेशन में गांधी-इरविन समझौते के अनुमोदन के साथ दो अत्यंत महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित किए गए थे। ये प्रस्ताव मुख्य रूप से किससे संबंधित थे?
(1) पूर्ण स्वतंत्रता और आजाद हिंद फौज का गठन
(2) जमींदारी प्रथा का उन्मूलन और भाषाई प्रांतों का निर्माण
(3) मौलिक अधिकार और राष्ट्रीय आर्थिक कार्यक्रम
(4) खिलाफत आंदोलन के लिए समर्थन और साइमन कमीशन का बहिष्कार
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

58. प्रथम गोलमेज सम्मेलन (1930-31) के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने इस सम्मेलन में सक्रिय रूप से भाग लिया, जिसका प्रतिनिधित्व जवाहरलाल नेहरू ने किया था।
(2) यह पहली बार था जब भारतीय नेताओं को अंग्रेजों के साथ बराबरी के स्तर पर संवैधानिक सुधारों पर चर्चा के लिए आमंत्रित किया गया था।
(3) यह लंदन में आयोजित किया गया था और इसकी अध्यक्षता ब्रिटिश प्रधानमंत्री रैमसे मैकडोनाल्ड ने की थी।
(4) मुस्लिम लीग, हिंदू महासभा और दलित वर्गों के प्रमुख प्रतिनिधि सम्मेलन में सम्मिलित हुए थे।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

59. वह तात्कालिक कारण क्या था जिसने महात्मा गांधी को सितंबर 1932 में यरवदा केंद्रीय कारागार में 'आमरण अनशन' करने के लिए प्रेरित किया?
(1) द्वितीय गोलमेज सम्मेलन की भारत को तत्काल डोमिनियन स्टेटस देने में विफलता।
(2) लॉर्ड विलिंगडन द्वारा सविनय अवज्ञा आंदोलन का बर्बर दमन।
(3) महानगरों में अचानक भीषण सांप्रदायिक दंगों का भड़कना।
(4) दलित वर्गों के लिए पृथक निर्वाचक मंडल प्रदान करने वाले सांप्रदायिक पंचाट की घोषणा।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

60. ऐतिहासिक पूना पैक्ट (1932), जिसने सांप्रदायिक पंचाट को संशोधित किया, मूल रूप से निम्नलिखित में से किसके बीच एक समझौता था?
(1) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और मुस्लिम लीग
(2) महात्मा गांधी और बी.आर. अंबेडकर
(3) महात्मा गांधी और लॉर्ड विलिंगडन
(4) स्वराज पार्टी और ब्रिटिश संसद
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

61. 1937 के प्रांतीय चुनावों के बाद, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस सफल होकर उभरी लेकिन कुछ प्रांतों में पूर्ण बहुमत प्राप्त करने में विफल रही। निम्नलिखित में से किस प्रांत में कांग्रेस ने पूर्ण बहुमत प्राप्त नहीं किया?
(1) मद्रास
(2) संयुक्त प्रांत
(3) पंजाब
(4) बिहार
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

62. जन आंदोलन और उसकी शुरुआत के समय कार्यरत ब्रिटिश वायसराय का निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही सुमेलित है?
(1) असहयोग आंदोलन – लॉर्ड इरविन
(2) सविनय अवज्ञा आंदोलन – लॉर्ड चेम्सफोर्ड
(3) चंपारण सत्याग्रह – लॉर्ड रीडिंग
(4) भारत छोड़ो आंदोलन – लॉर्ड लिनलिथगो
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

63. 1937 से 1939 तक अपने कार्यकाल के दौरान कांग्रेस मंत्रालयों की निम्नलिखित में से कौन सी विशेषता नहीं थी?
(1) सूती वस्त्र उद्योग का पूर्ण राष्ट्रीयकरण
(2) कृषि काश्तकारों की रक्षा के लिए व्यापक काश्तकारी कानूनों का निर्माण
(3) निवारक निरोध कानूनों के तहत रखे गए राजनीतिक कैदियों की रिहाई
(4) बुनियादी शिक्षा की वर्धा योजना का प्रचार
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

64. भारत छोड़ो आंदोलन शुरू करने का ऐतिहासिक प्रस्ताव 8 अगस्त, 1942 को पारित किया गया था। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी का यह अधिवेशन किस स्थान पर आयोजित किया गया था?
(1) जलियांवाला बाग, अमृतसर
(2) ग्वालिया टैंक मैदान, बॉम्बे
(3) साबरमती आश्रम, अहमदाबाद
(4) आनंद भवन, इलाहाबाद
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

65. 9 अगस्त, 1942 को वरिष्ठ कांग्रेस नेताओं की गिरफ्तारी के बाद, भारत छोड़ो आंदोलन को भूमिगत नेटवर्क द्वारा जारी रखा गया था। निम्नलिखित में से किसने जनता तक संदेश

Downloaded from www.pdf.tube

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) एशियाटिक रजिस्ट्रेशन अधिनियम
1906 में दक्षिण अफ्रीका में गांधीजी ने 'एशियाटिक पंजीकरण अधिनियम' के विरुद्ध सत्याग्रह का प्रथम प्रयोग किया। इसके अंतर्गत प्रत्येक भारतीय का पंजीकरण और उंगलियों के निशान देना अनिवार्य था। गांधीजी ने इसे भारतीयों के स्वाभिमान पर आघात माना। इस संघर्ष ने अहिंसक प्रतिरोध की शक्ति सिद्ध की और भविष्य के स्वतंत्रता आंदोलनों के लिए सुदृढ़ वैचारिक आधारशिला रखी।

2. (1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
गांधीजी ने विभिन्न भाषाओं में समाचार पत्रों का संपादन किया। 'इंडियन ओपिनियन' दक्षिण अफ्रीका में बहुभाषी रूप में निकला। 'नवजीवन' मुख्य रूप से गुजराती में सामाजिक विषयों पर केंद्रित था। 'हरिजन' का प्रकाशन अस्पृश्यता निवारण हेतु अंग्रेजी में हुआ। 'यंग इंडिया' भारत में उनके राजनीतिक विचारों के प्रसार का प्रमुख माध्यम बना। ये सभी पत्र अहिंसक सिद्धांतों के प्रचार में अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध हुए।

3. (4) I, II और III
दक्षिण अफ्रीका में गांधीजी ने सामूहिक जीवन और सत्याग्रह हेतु दो बस्तियाँ बसाईं। 1904 में डरबन के निकट 'फीनिक्स' बस्ती की स्थापना हुई। 1910 में जोहान्सबर्ग के पास 'टॉलस्टॉय फार्म' बना, जिसमें उनके मित्र हरमन कालेनबाक ने आर्थिक सहायता दी। इन स्थानों ने सत्याग्रहियों में शारीरिक श्रम, अनुशासन और मानसिक सुदृढ़ता विकसित करने के लिए महत्वपूर्ण प्रशिक्षण केंद्रों के रूप में कार्य किया।

4. (4) गोपाल कृष्ण गोखले
1915 में भारत वापसी के बाद गांधीजी ने गोपाल कृष्ण गोखले को अपना राजनीतिक गुरु माना। गोखले ने उन्हें सक्रिय राजनीति में उतरने से पहले एक वर्ष तक भारत की वास्तविक स्थिति समझने हेतु देश भ्रमण की सलाह दी। इस यात्रा ने गांधीजी को भारतीय ग्रामीण परिवेश, निर्धनता और जनता की मूलभूत समस्याओं को गहराई से समझने में सहायता की, जो उनके भावी आंदोलनों की प्रेरणा बनी।

5. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
भारत आने के उपरांत गांधीजी ने 1915 में अहमदाबाद के कोचरब में 'सत्याग्रह आश्रम' स्थापित किया। गतिविधियों के विस्तार और कृषि कार्यों हेतु 1917 में इसे साबरमती नदी के तट पर स्थानांतरित कर दिया गया। यह आश्रम गांधीवादी जीवन पद्धति, खादी कताई और समाज सुधार का प्रमुख केंद्र बना। यहीं से उन्होंने कई ऐतिहासिक आंदोलनों की रुपरेखा बनाई और स्वयंसेवकों को प्रशिक्षित किया।

6. (2) 3/20 भाग
बिहार के चंपारण की 'तिनकठिया पद्धति' के अनुसार किसानों को अपनी भूमि के 20 में से 3 हिस्सों पर नील की खेती करना अनिवार्य था। यूरोपीय बागान मालिकों द्वारा थोपी गई इस व्यवस्था से किसानों का आर्थिक शोषण होता था। 1917 में गांधीजी ने इस अन्याय के विरुद्ध अपना पहला सफल सत्याग्रह किया। इसके परिणामस्वरुप सरकार को इस दमनकारी पद्धति को कानून द्वारा समाप्त करना पड़ा।

7. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
चंपारण सत्याग्रह भारत में गांधीजी द्वारा सविनय अवज्ञा का प्रथम सफल उदाहरण था। उन्होंने किसानों पर होने वाले अत्याचारों के विरुद्ध अहिंसक मार्ग अपनाया। इस आंदोलन की सफलता से ब्रिटिश सरकार ने 'चंपारण कृषि अधिनियम' पारित किया। इसने दशकों पुरानी तिनकठिया पद्धति समाप्त कर दी और किसानों को अवैध वसूली का कुछ अंश वापस दिलाया। इसने गांधीजी को राष्ट्रव्यापी नेतृत्व के रूप में प्रतिष्ठित किया।

8. (1) अहमदाबाद मिल हड़ताल
1918 में अहमदाबाद के सूती मिल मालिकों और श्रमिकों के मध्य बोनस विवाद सुलझाने हेतु गांधीजी ने पहली बार भूख हड़ताल की। श्रमिकों की 35 प्रतिशत वेतन वृद्धि की मांग का समर्थन करते हुए उन्होंने आमरण अनशन किया। इस पद्धति ने मिल मालिकों पर नैतिक दबाव बनाया और अंततः समझौता हुआ। यह घटना भारतीय मजदूर आंदोलनों के इतिहास में अहिंसक संघर्ष के नए अध्याय की शुरुआत थी।

9. (1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
चंपारण सत्याग्रह में राजेंद्र प्रसाद ने गांधीजी का सहयोग किया। खेड़ा में सरदार पटेल प्रमुख सहयोगी रहे, जिन्होंने किसानों को करबंदी हेतु संगठित किया। अहमदाबाद मिल हड़ताल में अनुसूया साराभाई ने श्रमिकों का नेतृत्व किया। रोलेट सत्याग्रह के समय स्वामी श्रद्धानंद ने दिल्ली में कमान संभाली। इन क्षेत्रीय नेताओं के सक्रिय सहयोग से ही गांधीजी के प्रारंभिक क्षेत्रीय आंदोलन आगे चलकर राष्ट्रव्यापी स्वरुप ले सके।

10. (1) किसी भी नए भारतीय भाषाई समाचार पत्र की स्थापना पर पूर्ण प्रतिबंध
1919 का रोलेट अधिनियम सरकार को संदेह के आधार पर किसी को भी गिरफ्तार कर बिना मुकदमे दो वर्ष तक जेल में रखने की शक्ति देता था। इसमें अभियुक्तों को अपील के अधिकार से वंचित किया गया था। यद्यपि इसमें क्रांतिकारी गतिविधियों को कुचलने के कड़े प्रावधान थे, परंतु नए भारतीय भाषाई समाचार पत्रों की स्थापना पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने जैसा कोई विशिष्ट प्रावधान इसमें सम्मिलित नहीं था।

NODIA

11. (2) I, II और IV
रोलेट अधिनियम के विरोध में गांधीजी ने बंबई में 'सत्याग्रह सभा' बनाई, जो उनके प्रथम अखिल भारतीय आंदोलन की शुरुआत थी। इस दौरान देशव्यापी हड़ताल और प्रदर्शन हुए। परंतु पंजाब सहित अन्य क्षेत्रों में बढ़ती हिंसा और जलियांवाला बाग हत्याकांड ने गांधीजी को व्यथित कर दिया। उन्हें लगा कि जनता अभी अहिंसा हेतु पूर्णतः प्रशिक्षित नहीं है, अतः उन्होंने इस सत्याग्रह को स्थगित करने का निर्णय लिया।

12. (1) रोलेट अधिनियम का पारित होना → राष्ट्रव्यापी सत्याग्रह दिवस (हड़ताल) → डॉ. किचलू और डॉ. सत्यपाल की गिरफ्तारी → जलियांवाला बाग हत्याकांड
वर्ष 1919 की घटनाओं का क्रम रोलेट अधिनियम के पारित होने से आरंभ हुआ। इसके विरोध में 6 अप्रैल को देशव्यापी सत्याग्रह दिवस मनाया गया। पंजाब में तनाव के कारण नेता डॉ. किचलू और डॉ. सत्यपाल गिरफ्तार हुए। उनकी गिरफ्तारी का विरोध करने हेतु 13 अप्रैल को जलियांवाला बाग में भीड़ जुटी, जहाँ जनरल डायर ने अंधाधुंध गोलीबारी कर भीषण नरसंहार किया, जिसने पूरे राष्ट्र को झकझोर दिया।

13. (3) ब्रिटिश सरकार ने तुरंत जनरल डायर को गिरफ्तार कर लिया और उन्हें आजीवन कारावास की सजा सुनाई।
जलियांवाला बाग हत्याकांड के विरोध में रवींद्रनाथ टैगोर ने 'नाइटहुड' लौटा दी और शंकरन नायर ने वायसराय की परिषद से त्यागपत्र दिया। कांग्रेस ने भी जांच हेतु समिति बनाई। परंतु ब्रिटिश सरकार ने जनरल डायर को दंडित करने के स्थान पर सेवामुक्त कर ब्रिटेन भेज दिया। वहां उनके समर्थकों ने उन्हें सम्मानित किया। अतः यह कहना गलत है कि उन्हें गिरफ्तार कर आजीवन कारावास दिया गया था।

14. (4) शांतिपूर्ण और वैध साधनों के माध्यम से स्वराज की प्राप्ति
दिसंबर 1920 के नागपुर अधिवेशन में कांग्रेस ने अपने संविधान में महत्वपूर्ण परिवर्तन किए। अब कांग्रेस का लक्ष्य शांतिपूर्ण और वैधानिक साधनों से 'स्वराज' प्राप्त करना निश्चित हुआ। इस अधिवेशन ने कांग्रेस को एक कुलीन संगठन से जन-संगठन में बदल दिया। सदस्यता शुल्क घटाया गया ताकि ग्रामीण और निर्धन वर्ग भी जुड़ सके। इससे राष्ट्रीय आंदोलन को एक नई दिशा और व्यापक आधार प्राप्त हुआ।

15. (1) I, II, III और V
असहयोग आंदोलन के कार्यक्रमों में सरकारी पदवियों का त्याग, शिक्षण संस्थानों और न्यायालयों का बहिष्कार तथा विदेशी वस्तुओं का त्याग सम्मिलित था। खादी को अपनाना इसका मुख्य अंग था। हालांकि, आंदोलन के प्रारंभिक चरणों में भू-राजस्व और करों के भुगतान से तत्काल मना करने का राष्ट्रव्यापी कार्यक्रम अनिवार्य नहीं था। यह केवल अंतिम चरण हेतु सुरक्षित था। अधिकांश जनता ने अहिंसक रूप से सरकार से सहयोग वापस लिया।

16. (2) जब हिंसा भड़की तब महात्मा गांधी चौरी-चौरा में प्रत्यक्ष रूप से उपस्थित थे।
फरवरी 1922 में संयुक्त प्रांत के गोरखपुर जिले के चौरी-चौरा में उग्र भीड़ ने पुलिस थाने में आग लगा दी, जिससे 22 पुलिसकर्मी मारे गए। इस हिंसक घटना के समय गांधीजी वहां उपस्थित नहीं थे, वे गुजरात के बारदोली में थे। हिंसा की सूचना मिलते ही उन्होंने तुरंत असहयोग आंदोलन वापस ले लिया। उनका मानना था कि अहिंसा के बिना कोई आंदोलन अपना वास्तविक लक्ष्य प्राप्त नहीं कर सकता।

17. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
चौरी-चौरा कांड के बाद गांधीजी ने फरवरी 1922 में असहयोग आंदोलन स्थगित कर दिया। उनका दृढ़ विश्वास था कि यदि आंदोलन हिंसक हुआ, तो सरकार उसे सुगमता से कुचल देगी। गांधीजी का मानना था कि भारतीय जनता अभी अहिंसा के उच्च आदर्शों को पूरी तरह नहीं समझ पाई है। अतः आंदोलन को खूनी क्रांति में बदलने से रोकने हेतु उन्होंने इसे वापस लेना ही उचित समझा।

18. (1) कांग्रेसियों को खादी, मद्यनिषेध और राष्ट्रीय शिक्षा सहित रचनात्मक कार्यक्रम पर ध्यान केंद्रित करने का निर्देश देना
असहयोग आंदोलन की वापसी के बाद कांग्रेस कार्य समिति ने बारदोली में रचनात्मक कार्यों पर बल देने का प्रस्ताव पारित किया। इसका उद्देश्य कार्यकर्ताओं को सामाजिक सुधारों से जोड़ना था। इसमें खादी प्रचार, मद्यनिषेध, अस्पृश्यता निवारण और राष्ट्रीय शिक्षण संस्थानों की स्थापना मुख्य थी। गांधीजी चाहते थे कि संघर्ष के विश्राम काल में जनता को अनुशासित किया जाए, ताकि आगामी बड़े आंदोलनों हेतु सुदृढ़ आधार बने।

19. (1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
नमक सत्याग्रह के समय देश के विभिन्न क्षेत्रों में सशक्त नेतृत्व उभरा। तमिलनाडु में राजगोपालाचारी ने तिरुचिरापल्ली से वेदारण्यम तक यात्रा की। केरल में के. केलप्पन ने कालीकट से पय्यानूर तक मार्च किया। गुजरात के धरसाणा में सरोजिनी नायडू ने नेतृत्व संभाला, जहाँ पुलिस दमन अत्यंत क्रूर था। ओडिशा में गोपबंधु चौधरी ने नमक कानून तोड़ा। इन क्षेत्रीय आंदोलनों ने सविनय अवज्ञा को वास्तविक राष्ट्रव्यापी स्वरूप प्रदान किया।

20. (4) सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू करने से पहले सम्मानजनक समझौते के लिए एक अंतिम अवसर प्रदान करना
सविनय अवज्ञा आंदोलन से पूर्व जनवरी 1930 में गांधीजी ने वायसराय लॉर्ड इरविन को ग्यारह मांगें भेजीं। इनमें नमक कर की समाप्ति, सैन्य व्यय में कटौती और राजनीतिक बंदियों की रिहाई मुख्य थी। इसका रणनीतिक उद्देश्य सरकार को शांतिपूर्ण समझौते का अंतिम अवसर देना था। गांधीजी चाहते थे कि यदि न्यायपूर्ण मांगें मान ली जाएं, तो संघर्ष टल जाए। सरकार की उपेक्षा के बाद ही दांडी यात्रा आरंभ हुई।

Click Here to Buy book on Amazon

21. (3) केवल III
सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान महाराष्ट्र और मध्य प्रांत में वन कानूनों का उल्लंघन हुआ, जबकि बिहार और बंगाल में चौकीदारी कर विरोधी अभियान चले। यह कथन त्रुटिपूर्ण है कि कांग्रेस ने प्रथम गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया था। वास्तव में, कांग्रेस ने ब्रिटिश नीतियों और संवैधानिक अस्पष्टता के कारण इसका बहिष्कार किया था। केवल गांधी-इरविन समझौते के पश्चात ही कांग्रेस द्वितीय सम्मेलन में सम्मिलित होने पर सहमत हुई।

22. (1) I, II, III, IV
इन घटनाओं का सही क्रम मार्च 1931 के गांधी-इरविन समझौते से आरंभ होता है। इसके उपरांत 23 मार्च 1931 को भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु को फांसी दी गई। मार्च के अंत में कराची अधिवेशन में समझौते को स्वीकृति मिली। अंततः सितंबर 1931 में गांधीजी कांग्रेस के एकमात्र प्रतिनिधि के रूप में लंदन में आयोजित द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने हेतु समुद्री मार्ग से रवाना हुए थे।

23. (4) बी.आर. अंबेडकर
जहाँ कांग्रेस ने प्रथम और तृतीय गोलमेज सम्मेलनों का बहिष्कार किया, वहीं डॉ. बी.आर. अंबेडकर ने तीनों सम्मेलनों में भाग लिया। उन्होंने दलितों हेतु पृथक निर्वाचक मंडल और संवैधानिक सुरक्षा की मांग की। गांधीजी केवल द्वितीय सम्मेलन में गए, जहाँ दलित प्रतिनिधित्व के मुद्दे पर अंबेडकर से उनके गंभीर मतभेद हुए। इसी कारण यह सम्मेलन किसी निश्चित संवैधानिक परिणाम पर पहुँचे बिना ही समाप्त हो गया।

24. (4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
गांधी-इरविन समझौते के अंतर्गत ब्रिटिश सरकार केवल उन राजनीतिक बंदियों को मुक्त करने पर सहमत हुई जिन पर हिंसा का आरोप नहीं था। क्रांतिकारियों की रिहाई की मांग अंग्रेजों ने ठुकरा दी थी। दूसरी ओर, कांग्रेस ने सविनय अवज्ञा आंदोलन स्थगित करने और संवैधानिक चर्चा हेतु द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने की सहमति दी। यह वार्ता गांधीजी और वायसराय के मध्य समानता के स्तर पर हुई थी।

25. (2) केवल II और IV
1932 में रैमसे मैकडोनाल्ड द्वारा घोषित 'सांप्रदायिक पंचाट' ने दलितों को अल्पसंख्यक मानकर उनके लिए पृथक निर्वाचक मंडल का प्रावधान किया। गांधीजी ने इसके विरोध में यरवदा जेल में अनशन किया क्योंकि वे दलितों को हिंदू समाज से पृथक करने के विरुद्ध थे। यह कहना गलत है कि कांग्रेस ने इस पंचाट का पूर्ण समर्थन किया; वास्तव में कांग्रेस इसके प्रावधानों को लेकर दुविधा में थी और तटस्थ रही।

26. (1) वायसराय लिनलिथगो ने भारतीय राजनीतिक नेतृत्व से परामर्श किए बिना भारत को द्वितीय विश्व युद्ध में सम्मिलित घोषित कर दिया।
1939 में द्वितीय विश्व युद्ध आरंभ होने पर वायसराय लॉर्ड लिनलिथगो ने भारतीय नेताओं या प्रांतीय मंत्रिमंडलों से परामर्श किए बिना भारत को युद्ध में सम्मिलित घोषित कर दिया। कांग्रेस ने इसे अलोकतांत्रिक और भारतीय स्वाभिमान पर चोट माना। विरोध स्वरुप सात प्रांतों के कांग्रेस मंत्रिमंडलों ने सामूहिक त्यागपत्र दे दिया। उनका तर्क था कि पराधीन राष्ट्र किसी अन्य की रक्षा हेतु युद्ध में शामिल होने हेतु विवश नहीं किया जा सकता।

27. (1) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
1937 के चुनावों के बाद विभिन्न प्रांतों में कांग्रेस ने सरकारें बनाईं। संयुक्त प्रांत में गोविंद बल्लभ पंत, बिहार में डॉ. श्रीकृष्ण सिन्हा और बंबई में बी.जी. खेर मुख्यमंत्री बने। मद्रास में सी. राजगोपालाचारी ने नेतृत्व संभाला। इन मंत्रिमंडलों ने अपने लघु शासनकाल में भूमि सुधार, शिक्षा प्रसार और नागरिक अधिकारों की बहाली हेतु अनेक जनहितैषी कार्य किए। उनके कार्यों ने सिद्ध किया कि भारतीय स्वशासन चलाने में पूर्णतः सक्षम हैं।

28. (2) भारत छोड़ो आंदोलन
1942 में क्रिप्स मिशन की विफलता ने भारतीय नेतृत्व को निराश किया। मिशन द्वारा प्रस्तावित 'डोमिनियन स्टेटस' अपर्याप्त था और इसमें तत्काल सत्ता हस्तांतरण का प्रावधान नहीं था। गांधीजी ने इसे 'उत्तर-दिनांकित चेक' कहा। इस संवैधानिक गतिरोध और जापानी आक्रमण के भय ने गांधीजी को 'भारत छोड़ो' का नारा देने और निर्णायक जन आंदोलन आरंभ करने को विवश किया। यह संघर्ष ब्रिटिश शासन की समाप्ति हेतु अंतिम प्रहार सिद्ध हुआ।

29. (1) I, II, III और V
कांग्रेस मंत्रिमंडलों ने किसानों को ऋण राहत देने और काश्तकारी अधिकारों की रक्षा हेतु कानून बनाए। उन्होंने पूर्व आंदोलनों में जब्त संपत्तियां वापस दिलाईं और नागरिक स्वतंत्रताओं पर लगे प्रतिबंध हटाए। मद्यनिषेध और बुनियादी शिक्षा को प्रोत्साहित किया गया। परंतु इन मंत्रिमंडलों के पास जमींदारी प्रथा पूर्णतः समाप्त करने का न तो पर्याप्त समय था और न ही संवैधानिक अधिकार। उनके कार्यकाल ने भारतीय प्रशासनिक कुशलता का परिचय दिया।

30. (4) यह प्रतिद्वंद्वी के प्रति कोई दुर्भावना नहीं रखता और सत्य तथा प्रेम की सक्रिय शक्ति पर निर्भर करता है।
गांधीजी के अनुसार सत्याग्रह 'सत्य की शक्ति' है, जो पश्चिमी 'निष्क्रिय प्रतिरोध' से भिन्न है। निष्क्रिय प्रतिरोध निर्बलों का अस्त्र माना जाता है जिसमें हिंसा की गुंजाइश रहती है। इसके विपरीत, सत्याग्रह आत्मिक बल पर आधारित है और इसमें विरोधी के प्रति द्वेष नहीं होता। सत्याग्रही स्वयं कष्ट सहकर शत्रु का हृदय परिवर्तन करने का प्रयास करता है। यह सत्य और अहिंसा की एक सक्रिय और सकारात्मक शक्ति है।

31. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
भारत छोड़ो आंदोलन में उषा मेहता ने गुप्त 'कांग्रेस रेडियो' चलाया। अरुणा आसफ अली ने बंबई के ग्वालिया टैंक मैदान में ध्वजारोहण कर साहस दिखाया। जयप्रकाश नारायण ने हज़ारीबाग जेल से भागकर 'आजाद दस्ता' बनाया और छापामार युद्ध लड़ा। चित्तू पांडे ने बलिया में समानांतर सरकार स्थापित की। इन नेताओं की भूमिगत गतिविधियों ने शीर्ष नेतृत्व की

Downloaded from www.pdf.tube

गिरफ्तारी के बाद भी स्वतंत्रता की लौ को प्रज्वलित रखा और जनता का मनोबल बढ़ाया।

32. (2) भारत के लिए युद्धोपरांत स्थिति – तत्काल पूर्ण स्वतंत्रता
क्रिप्स मिशन के प्रस्तावों में युद्ध के पश्चात भारतीय संविधान सभा और प्रांतों को संघ से अलग होने का अधिकार दिया गया था। रक्षा विभाग पर अंग्रेजों का पूर्ण नियंत्रण बना रहा। मिशन ने युद्ध के तुरंत बाद 'पूर्ण स्वतंत्रता' की कोई पेशकश नहीं की थी, बल्कि केवल 'डोमिनियन स्टेटस' का वादा किया था। यही प्रमुख कारण था कि कांग्रेस और अन्य भारतीय दलों ने इन प्रस्तावों को पूरी तरह अस्वीकार कर दिया।

33. (1) अगस्त प्रस्ताव → क्रिप्स मिशन → सी.आर. फॉर्मूला → वेवेल योजना
1940 के दशक के संवैधानिक प्रस्तावों का क्रम 'अगस्त प्रस्ताव' (1940) से शुरू होता है। इसके पश्चात 1942 में क्रिप्स मिशन आया। 1944 में राजगोपालाचारी ने कांग्रेस और मुस्लिम लीग का गतिरोध दूर करने हेतु 'सी.आर. फॉर्मूला' दिया। अंततः 1945 में वायसराय लॉर्ड वेवेल ने शिमला सम्मेलन के दौरान 'वेवेल योजना' प्रस्तुत की। ये सभी प्रयास सत्ता हस्तांतरण के जटिल मुद्दों को सुलझाने हेतु किए गए थे।

34. (4) I, II और III
भारत छोड़ो आंदोलन की विशिष्टता विभिन्न क्षेत्रों में समानांतर सरकारों की स्थापना थी। बलिया में चित्तू पांडे ने प्रथम ऐसी सरकार बनाई। बंगाल के तामलुक में 'जातीय सरकार' ने जनकल्याणकारी कार्य किए। महाराष्ट्र के सतारा में 'प्रति सरकार' सर्वाधिक समय तक सक्रिय रही। इन स्थानीय शासनों ने ब्रिटिश सत्ता की उपेक्षा करते हुए जनता के मध्य अपनी व्यवस्था स्थापित की, जो भारतीय जनमानस की विद्रोह भावना और स्वायत्तता की इच्छा को दर्शाती थी।

35. (3) बंगाल में नोआखली जिला
1946 के अंत में बंगाल का नोआखली जिला भीषण सांप्रदायिक दंगों की चपेट में था। तब गांधीजी ने वहां शांति स्थापना हेतु पदयात्रा की। उन्होंने गांवों में घूमकर लोगों के मध्य आपसी विश्वास और भाईचारा बहाल करने का प्रयास किया। जब देश स्वतंत्रता के उत्सव की तैयारी कर रहा था, गांधीजी निहत्थे दंगा प्रभावित क्षेत्रों में अहिंसा का संदेश फैला रहे थे। उनके इस अदम्य साहस हेतु उन्हें 'वन मैन बाउंड्री फोर्स' कहा गया।

36. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
1940 के दशक की घटनाओं में 'अगस्त प्रस्ताव' 1940 में आया। 'भारत छोड़ो आंदोलन' का प्रस्ताव अगस्त 1942 में पारित हुआ। आजाद हिंद फौज के अधिकारियों पर 'लाल किला मुकदमा' नवंबर 1945 में आरंभ हुआ, जिससे राष्ट्रभक्ति की लहर दौड़ी। फरवरी 1946 में बंबई में 'शाही भारतीय नौसेना' के नाविकों ने नस्लीय भेदभाव के विरुद्ध विद्रोह किया। यह विद्रोह ब्रिटिश शासन के जाने का अंतिम स्पष्ट संकेत था।

NODIA

37. (3) बढ़ते क्रांतिकारी राष्ट्रवाद और युद्धकालीन षड्यंत्रों के संकट को रोकना
ब्रिटिश सरकार ने 1919 में रोलेट अधिनियम मुख्य रूप से प्रथम विश्व युद्ध के बाद बढ़ते क्रांतिकारी राष्ट्रवाद को कुचलने हेतु बनाया था। सरकार का विचार था कि युद्धकालीन विशेष शक्तियां समाप्त होने के बाद क्रांतिकारी गतिविधियों को रोकने हेतु कठोर कानूनों की आवश्यकता है। इस कानून ने बिना कानूनी प्रक्रिया के दमन की असीमित शक्तियां दीं, जिसे भारतीयों ने 'बिना वकील, बिना अपील, बिना दलील' का कानून कहा।

38. (3) केवल IV और V
कैबिनेट मिशन योजना ने केंद्र में केवल रक्षा, संचार और विदेशी मामलों के साथ एक ढीले संघ का प्रस्ताव दिया था, न कि केंद्रीकृत सरकार का। अवशिष्ट शक्तियां प्रांतों को दी गई थीं। मिशन ने मुस्लिम लीग की 'पाकिस्तान' की मांग को स्पष्ट रूप से अस्वीकार कर दिया था। इसके स्थान पर प्रांतों को तीन समूहों में बांटने का सुझाव दिया गया था, ताकि मुस्लिम बहुल क्षेत्रों को संघ के भीतर ही स्वायत्तता प्राप्त हो सके।

39. (2) एक वर्ष के भीतर
1920 में असहयोग आंदोलन के आरंभ में गांधीजी ने घोषणा की थी कि यदि देश पूर्ण अनुशासन के साथ बहिष्कार और रचनात्मक कार्यों को अपनाता है, तो 'एक वर्ष में स्वराज' प्राप्त हो सकता है। उन्होंने स्वदेशी अपनाने और सरकारी संस्थाओं के त्याग पर बल दिया। यद्यपि हिंसा के कारण आंदोलन वापस लेना पड़ा, परंतु इस नारे ने भारतीय जनता में अभूतपूर्व उत्साह भरा और स्वतंत्रता के लक्ष्य को निकट अनुभव कराया।

40. (1) I, II, III, IV
विभाजन की घटनाओं का क्रम मार्च 1946 के 'कैबिनेट मिशन' से आरंभ होता है। मिशन की विफलता के बाद अगस्त 1946 में मुस्लिम लीग ने 'प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस' मनाया। फरवरी 1947 में ब्रिटिश प्रधानमंत्री एटली ने जून 1948 तक भारत छोड़ने की घोषणा की। अंततः जून 1947 में 'माउंटबेटन योजना' आई, जिसमें भारत विभाजन और 15 अगस्त 1947 को सत्ता हस्तांतरण का अंतिम खाका तैयार कर प्रस्तुत किया गया था।

41. (3) A सही है लेकिन R गलत है।
'पूना पैक्ट' द्वारा डॉ. अंबेडकर दलितों हेतु पृथक निर्वाचक मंडल की मांग त्यागने और संयुक्त निर्वाचक मंडल अपनाने पर सहमत हुए। बदले में विधानमंडलों में दलितों हेतु आरक्षित सीटें बढ़ाई गईं। यह कहना गलत है कि उन्हें वायसराय की परिषद में पद का प्रलोभन दिया गया था। वास्तव में, गांधीजी के अनशन से बिगड़ते स्वास्थ्य और तीव्र सामाजिक दबाव के कारण एक राजनीतिक समाधान के रूप में यह समझौता संपन्न हुआ था।

42. (1) सत्याग्रह आश्रम
गांधीजी ने 25 मई 1915 को अहमदाबाद के कोचरब में अपने प्रथम आश्रम की स्थापना की, जिसका नाम 'सत्याग्रह आश्रम' था। यह नाम सत्य और अहिंसा के प्रति उनकी निष्ठा का प्रतीक था। आश्रम का उद्देश्य सत्य की खोज करना और उसके लिए

समर्पित स्वयंसेवक तैयार करना था। 1917 में प्लेग और कृषि कार्यों की आवश्यकता के कारण इसे साबरमती नदी के तट पर स्थानांतरित किया गया, जहाँ से यह राष्ट्रीय आंदोलनों का केंद्र बना।

43. (4) लखनऊ अधिवेशन, 1916
1916 के लखनऊ अधिवेशन में किसान नेता राजकुमार शुक्ल ने गांधीजी से भेंट की। उन्होंने चंपारण के नील किसानों पर यूरोपीय बागान मालिकों के अत्याचारों और तिनकठिया पद्धति के शोषण की जानकारी दी। शुक्ल के बार-बार आग्रह पर ही गांधीजी चंपारण जाने हेतु तैयार हुए। इसी अधिवेशन में कांग्रेस के उदारवादी और उग्रवादी धड़ों का पुनर्मिलन हुआ था तथा ऐतिहासिक 'कांग्रेस-लीग समझौता' भी संपन्न हुआ था।

44. (1) केवल I और II
1918 की अहमदाबाद मिल हड़ताल का मुख्य कारण 'प्लेग बोनस' की समाप्ति था। गांधीजी ने श्रमिकों को 35 प्रतिशत वेतन वृद्धि की मांग करने और अहिंसक रहने की सलाह दी। मालिकों ने केवल 20 प्रतिशत वृद्धि की बात कही, जिसे श्रमिकों ने अस्वीकार कर दिया। गांधीजी की भूख हड़ताल ने मालिकों पर नैतिक दबाव बनाया और मांग स्वीकार हुई। यह आंदोलन भारतीय श्रम इतिहास में अहिंसक संघर्ष की सफलता का उत्कृष्ट उदाहरण बना।

45. (3) जमनालाल बजाज
उद्योगपति जमनालाल बजाज गांधीजी के अनन्य सहयोगी थे। उन्होंने गांधीवादी आदर्शों को अपनाकर अजमेर में चरखा संघ बनाया और खादी प्रचार में जुटे रहे। असहयोग आंदोलन के दौरान उन्होंने ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रदत्त 'राय बहादुर' की उपाधि त्याग दी थी। वे दीर्घकाल तक कांग्रेस के कोषाध्यक्ष रहे और अपनी संपत्ति का बड़ा भाग राष्ट्र सेवा हेतु दान किया। गांधीजी उन्हें अपना 'पांचवां पुत्र' मानते थे।

46. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
असहयोग आंदोलन के उपरांत 'स्वराज पार्टी' का गठन उन नेताओं ने किया जो विधान परिषदों में प्रवेश कर सरकारी कार्यों में बाधा डालना चाहते थे। इसमें सी.आर. दास और मोतीलाल नेहरू थे, जिन्हें 'परिवर्तनवादी' कहा गया। 'अपरिवर्तनवादी' वे थे, जैसे राजेंद्र प्रसाद और सरदार पटेल, जो परिषद प्रवेश के विरोधी थे और रचनात्मक कार्यों में विश्वास रखते थे। 1923 के चुनावों में स्वराजियों ने उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की थी।

47. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
'हंटर आयोग' 1919 के जलियांवाला बाग कांड की जांच हेतु बना था। 'मुडीमैन समिति' ने 1919 के अधिनियम के दोषों का अध्ययन किया। 'साइमन कमीशन' 1927 में भावी संवैधानिक सुधारों की समीक्षा हेतु नियुक्त हुआ, जिसका भारतीयों ने बहिष्कार किया। 'बटलर समिति' का कार्य ब्रिटिश सत्ता और रियासतों के संबंधों को स्पष्ट करना था। ये सभी आयोग भारत के औपनिवेशिक काल के संवैधानिक इतिहास को समझने के महत्वपूर्ण आधार हैं।

48. (2) I, II और III
'वेवेल योजना' ने वायसराय परिषद में केवल भारतीयों को रखने का प्रस्ताव दिया (वायसराय और प्रधान सेनापति को छोड़कर)। इसमें सवर्ण हिंदुओं और मुसलमानों को समान प्रतिनिधित्व का सुझाव था। शिमला सम्मेलन मुस्लिम लीग की इस हठ के कारण विफल रहा कि परिषद के सभी मुस्लिम सदस्य केवल वही मनोंकित करेगी। कांग्रेस ने स्वयं को केवल हिंदू संस्था मानने से मना कर दिया क्योंकि वह एक धर्मनिरपेक्ष दल था।

49. (2) तीव्र भारी औद्योगीकरण को बढ़ावा देना
गांधीजी का रचनात्मक कार्यक्रम ग्रामीण आत्मनिर्भरता पर आधारित था। इसमें खादी, ग्रामोद्योग, हिंदू-मुस्लिम एकता, अस्पृश्यता निवारण और मद्यनिषेध मुख्य थे। गांधीजी आधुनिक मशीनीकरण और बड़े उद्योगों के आलोचक थे क्योंकि उनके अनुसार इससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था नष्ट होती है। वे उत्पादन के विकेंद्रीकरण और कुटीर उद्योगों के समर्थक थे, अतः 'तीव्र भारी औद्योगीकरण' उनके एजेंडे में नहीं था। उनका उद्देश्य ग्राम स्वराज के माध्यम से उत्थान करना था।

50. (2) I, II और IV
असहयोग आंदोलन में महिलाओं ने विदेशी वस्त्रों की होली जलाई और शराब की दुकानों पर धरना दिया। छात्रों ने सरकारी संस्थाओं का त्याग कर राष्ट्रीय विद्यालयों में प्रवेश लिया। किसानों ने भी इसे अपने स्थानीय संघर्षों से जोड़ा। यह कहना गलत है कि व्यापारी वर्ग इसके विरुद्ध था; वास्तव में अनेक उद्योगपतियों ने स्वदेशी का समर्थन किया और आंदोलन को आर्थिक सहायता दी। यह समाज के प्रत्येक वर्ग की भागीदारी वाला जन आंदोलन बना।

51. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
1946 के कैबिनेट मिशन ने एक संप्रभु पाकिस्तान की मांग को प्रशासनिक और सामरिक आधार पर अस्वीकार किया। मिशन का मानना था कि छोटे क्षेत्रों में विभाजन से अल्पसंख्यकों की समस्या नहीं सुलझेगी और इससे देश की रक्षा व्यवस्था कमजोर होगी। इसके अतिरिक्त, पाकिस्तान के दो भागों के मध्य भौगोलिक दूरी आर्थिक रूप से अव्यवहारिक थी। इसके विकल्प के रूप में मिशन ने त्रि-स्तरीय संघीय ढांचे का सुझाव दिया था।

52. (4) चौरी-चौरा की हिंसक घटना, जिसने अहिंसा के मूल सिद्धांत के साथ समझौता किया
1922 में असहयोग आंदोलन की आकस्मिक वापसी का कारण चौरी-चौरा की हिंसक घटना थी। गांधीजी हेतु अहिंसा एक अटल सिद्धांत था। जब भीड़ ने पुलिसकर्मियों को जला दिया, तो उन्हें लगा कि आंदोलन हिंसक अराजकता की ओर बढ़ रहा है। उन्हें भय था कि हिंसा के कारण ब्रिटिश सरकार को दमन का अवसर मिल जाएगा। अतः उन्होंने आंदोलन रोक दिया। वे अपने सिद्धांतों पर किसी भी परिस्थिति में अडिग रहे।

Click Here to Buy book on Amazon

53. (3) साबरमती आश्रम
ऐतिहासिक दांडी मार्च 12 मार्च 1930 को साबरमती आश्रम से आरंभ हुआ। गांधीजी ने 78 अनुयायियों के साथ गुजरात के तटीय गांव दांडी की 240 मील लंबी यात्रा 24 दिनों में पूर्ण की। 6 अप्रैल 1930 को दांडी में नमक बनाकर उन्होंने ब्रिटिश नमक कानून का उल्लंघन किया। इस सरल परंतु प्रतीकात्मक कृत्य ने साम्राज्य की नींव हिला दी और देशभर में सविनय अवज्ञा आंदोलन की ज्वाला प्रज्वलित कर दी।

54. (1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
नमक सत्याग्रह के दौरान विभिन्न राज्यों में आंदोलन के प्रमुख केंद्र बने। तमिलनाडु के वेदारण्यम में राजगोपालाचारी ने नेतृत्व किया। केरल के पय्यानूर में के. केलप्पन ने नमक कानून तोड़ा। कर्नाटक का सानिकट्टा नमक उत्पादन का प्रमुख केंद्र बना। गुजरात के धरसाणा में सरोजिनी नायडू और इमाम साहब ने साहसी प्रदर्शन किया। इन भौगोलिक केंद्रों ने सिद्ध किया कि नमक सत्याग्रह एक वास्तविक अखिल भारतीय जन आंदोलन था।

55. (4) वेब मिलर
सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान धरसाणा नमक कारखाने पर हुए सत्याग्रह में अमेरिकी पत्रकार 'वेब मिलर' उपस्थित थे। उन्होंने अपनी रिपोर्ट में विस्तार से बताया कि कैसे निहत्थे सत्याग्रहियों पर पुलिस ने क्रूर लाठियां बरसाईं, परंतु किसी ने प्रतिकार नहीं किया। उनकी इस रिपोर्ट ने वैश्विक स्तर पर सुर्खियां बटोरीं और ब्रिटिश राज की नैतिक पराजय तथा भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अहिंसक संकल्प को अंतरराष्ट्रीय समुदाय के सम्मुख उजागर किया।

56. (1) I, II, III और V
गांधीजी की ग्यारह मांगों में नमक कर की समाप्ति, सैन्य और प्रशासनिक व्यय में 50 प्रतिशत कटौती तथा लगान को आधा करने जैसी मांगें थीं। उन्होंने राजनीतिक बंदियों की रिहाई पर भी बल दिया। हालांकि, इन मांगों में 'तत्काल डोमिनियन स्टेटस' का उल्लेख नहीं था, क्योंकि कांग्रेस 1929 के लाहौर अधिवेशन में 'पूर्ण स्वराज' का संकल्प पहले ही ले चुकी थी। इन मांगों का उद्देश्य समाज के व्यापक वर्गों को जोड़ना था।

57. (3) मौलिक अधिकार और राष्ट्रीय आर्थिक कार्यक्रम
1931 के कराची अधिवेशन में मौलिक अधिकारों और राष्ट्रीय आर्थिक कार्यक्रम पर ऐतिहासिक प्रस्ताव पारित हुए। इन्होंने स्वतंत्र भारत के भावी संविधान और सामाजिक-आर्थिक नीतियों की नींव रखी। इसमें प्रेस की स्वतंत्रता, धर्मनिरपेक्षता, श्रमिकों के अधिकार और कृषि सुधारों का संकल्प लिया गया। इससे स्पष्ट हुआ कि कांग्रेस हेतु स्वराज केवल राजनीतिक सत्ता का हस्तांतरण नहीं, बल्कि निर्धन जनता के लिए आर्थिक एवं सामाजिक मुक्ति का मार्ग था।

58. (1) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने इस सम्मेलन में सक्रिय रूप से भाग लिया, जिसका प्रतिनिधित्व जवाहरलाल नेहरू ने किया था।
प्रथम गोलमेज सम्मेलन (1930) में मुस्लिम लीग और रियासतों ने भाग लिया, परंतु कांग्रेस ने सविनय अवज्ञा आंदोलन के कारण इसका बहिष्कार किया। नेहरू या कांग्रेस का कोई नेता इसमें सम्मिलित नहीं हुआ। कांग्रेस की अनुपस्थिति में यह सम्मेलन किसी सार्थक संवैधानिक परिणाम पर नहीं पहुँच सका। केवल गांधी-इरविन समझौते के उपरांत ही कांग्रेस दूसरे सम्मेलन में भाग लेने हेतु सहमत हुई। अतः सक्रिय भागीदारी का कथन असत्य है।

NODIA

59. (4) दलित वर्गों के लिए पृथक निर्वाचक मंडल प्रदान करने वाले सांप्रदायिक पंचाट की घोषणा।
1932 में यरवदा जेल में गांधीजी के आमरण अनशन का कारण ब्रिटिश प्रधानमंत्री द्वारा घोषित 'सांप्रदायिक पंचाट' था। इसने दलितों हेतु 'पृथक निर्वाचक मंडल' का प्रावधान किया था। गांधीजी का मानना था कि इससे हिंदू समाज स्थायी रूप से विभाजित हो जाएगा और अस्पृश्यता निवारण के प्रयास विफल होंगे। उन्होंने हिंदू एकता अक्षुण्ण रखने हेतु 'संयुक्त निर्वाचक मंडल' पर बल देते हुए अनशन किया, जो अंततः 'पूना पैक्ट' के साथ संपन्न हुआ।

60. (2) महात्मा गांधी और बी.आर. अंबेडकर
'पूना पैक्ट' 24 सितंबर 1932 को गांधीजी और डॉ. बी.आर. अंबेडकर के मध्य हुआ। इसने सांप्रदायिक पंचाट के पृथक निर्वाचक मंडल वाले प्रावधान को बदल दिया। इसके स्थान पर दलितों को संयुक्त निर्वाचक मंडल के अंतर्गत प्रांतीय और केंद्रीय विधानमंडलों में आरक्षित सीटें दी गईं। इस समझौते ने गांधीजी का अनशन समाप्त करवाया और भारतीय राजनीति में दलितों के संवैधानिक प्रतिनिधित्व को एक नई दिशा प्रदान की।

61. (3) पंजाब
1937 के चुनावों में कांग्रेस ने मद्रास, संयुक्त प्रांत, बिहार और ओडिशा जैसे प्रांतों में पूर्ण बहुमत प्राप्त किया। परंतु पंजाब में 'यूनियनिस्ट पार्टी' का वर्चस्व रहा, जहाँ मुस्लिम, हिंदू और सिख जमींदारों का गठबंधन था। बंगाल और सिंध में भी कांग्रेस को स्पष्ट बहुमत नहीं मिला। इन चुनावों ने कांग्रेस की व्यापक लोकप्रियता सिद्ध की, किंतु पंजाब और बंगाल जैसे क्षेत्रों में क्षेत्रीय दलों की पकड़ भी स्पष्ट रूप से दिखाई दी।

62. (4) भारत छोड़ो आंदोलन – लॉर्ड लिनलिथगो
भारत छोड़ो आंदोलन के समय लॉर्ड लिनलिथगो वायसराय थे, जिन्होंने दमनकारी नीतियां अपनाईं। असहयोग आंदोलन के समय लॉर्ड चेम्सफोर्ड पद पर थे, जबकि सविनय अवज्ञा आंदोलन लॉर्ड इरविन के कार्यकाल में हुआ। चंपारण सत्याग्रह (1917) के समय भी चेम्सफोर्ड ही थे। लॉर्ड रीडिंग असहयोग आंदोलन के बाद आए। इन वायसरायों के निर्णय और नीतियों ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की विभिन्न अवस्थाओं और उसकी तीव्रता को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित किया।

63. (1) सूती वस्त्र उद्योग का पूर्ण राष्ट्रीयकरण
1937-39 के कांग्रेस मंत्रिमंडलों ने राजनीतिक बंदियों की रिहाई, नागरिक स्वतंत्रता की बहाली और कृषि सुधार हेतु महत्वपूर्ण कार्य किए। उन्होंने बुनियादी शिक्षा को बढ़ावा दिया। परंतु उस समय 'सूती वस्त्र उद्योग का राष्ट्रीयकरण' उनकी

प्राथमिकता नहीं थी। उनका मुख्य ध्यान औपनिवेशिक शासन के दमनकारी प्रभाव को कम करने और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को राहत देने पर था। उद्योगों का पूर्ण सरकारीकरण उस काल की आर्थिक नीति का हिस्सा नहीं था।

64. (2) ग्वालिया टैंक मैदान, बॉम्बे
8 अगस्त 1942 को कांग्रेस का अधिवेशन बंबई के 'ग्वालिया टैंक मैदान' (अब अगस्त क्रांति मैदान) में हुआ। यहाँ गांधीजी ने 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव पेश किया और 'करो या मरो' का नारा दिया। इस आह्वान ने देश में अभूतपूर्व ऊर्जा का संचार किया। शीर्ष नेताओं की गिरफ्तारी के बाद भी यह आंदोलन स्वतः स्फूर्त रूप से पूरे देश में फैल गया। यह मैदान स्वतंत्रता संग्राम के अंतिम और निर्णायक संघर्ष का साक्षी बना।

65. (2) उषा मेहता
9 अगस्त 1942 को नेतृत्व की गिरफ्तारी के बाद उषा मेहता ने अद्भुत साहस दिखाया। उन्होंने साथियों के साथ मिलकर बंबई में गुप्त 'आजाद कांग्रेस रेडियो' चलाया। यह रेडियो जनता तक गांधीजी के संदेश और आंदोलन की सूचनाएं पहुँचाने का प्रभावी माध्यम बना। पुलिस की पकड़ से बचने हेतु वे निरंतर प्रसारण केंद्र बदलती रहती थीं। उनके इस कार्य ने सिद्ध किया कि दमन के बावजूद भारतीय जनता का मनोबल अटूट है।

66. (1) संपूर्ण कांग्रेस नेतृत्व की तत्काल गिरफ्तारी के कारण यह जमीनी स्तर पर स्वतः स्फूर्त और नेतृत्वविहीन था।
भारत छोड़ो आंदोलन अपने पूर्ववर्ती आंदोलनों से भिन्न था क्योंकि यह मुख्य रूप से स्वतः स्फूर्त और नेतृत्वविहीन था। शीर्ष नेताओं की तत्काल गिरफ्तारी के कारण जनता ने स्वयं संघर्ष की कमान संभाली। लोगों ने संचार तंत्र ठप किया और समानांतर सरकारें बनाईं। गांधीजी का 'करो या मरो' मंत्र प्रत्येक भारतीय हेतु मार्गदर्शक बना। यह एक पूर्ण जनक्रांति थी जिसमें जनता ने बिना किसी केंद्रीय मार्गदर्शन के ब्रिटिश सत्ता को चुनौती दी।

67. (3) सत्ता के तत्काल वास्तविक हस्तांतरण के स्थान पर युद्ध के पश्चात केवल डोमिनियन स्टेटस की पेशकश कर रहा था।
1942 में क्रिप्स मिशन की असफलता का कारण सत्ता के वास्तविक हस्तांतरण हेतु ठोस योजना का अभाव था। ब्रिटिश सरकार केवल युद्ध पश्चात 'डोमिनियन स्टेटस' की बात कर रही थी, जो पूर्ण स्वतंत्रता की मांग से बहुत कम था। रक्षा विभाग पर भी अंग्रेजों का नियंत्रण बना रहा। गांधीजी ने इसे 'उत्तर-दिनांकित चेक' कहा। इस संवैधानिक गतिरोध ने भारतीयों को विश्वास दिलाया कि अब एक निर्णायक संघर्ष ही एकमात्र मार्ग है।

68. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
क्रिप्स मिशन ने युद्ध पश्चात भारतीय सदस्यों वाली संविधान सभा का प्रस्ताव दिया था, परंतु इसमें रियासतों के प्रतिनिधियों को राजाओं द्वारा मनोनीत करने का प्रावधान था। मुस्लिम लीग ने इन प्रस्तावों को इसलिए नकारा क्योंकि इसमें पाकिस्तान के निर्माण की स्पष्ट स्वीकृति नहीं थी। यद्यपि प्रांतों को संघ से अलग होने का विकल्प दिया गया था, किंतु वह लीग की मांग हेतु अपर्याप्त था। अतः कांग्रेस और लीग दोनों ने इसे अस्वीकार किया।

69. (3) अनुभाग B और C में प्रांतों के अनिवार्य समूहन ने परोक्ष रूप से भविष्य के पाकिस्तान का आधार प्रदान किया था।
मुस्लिम लीग ने 1946 की कैबिनेट मिशन योजना को आरंभ में इसलिए स्वीकारा क्योंकि इसमें 'प्रांतों के समूहन' का प्रस्ताव था। समूह B और C में मुस्लिम बहुल प्रांत रखे गए थे, जिन्हें अलग संविधान सभा बनाने और संघ से पृथक होने का संभावित अधिकार था। जिन्ना ने इसमें 'पाकिस्तान का बीज' देखा और माना कि यह अनिवार्य समूहन अंततः एक स्वतंत्र राष्ट्र का मार्ग प्रशस्त करेगा। हालांकि बाद में मतभेदों के कारण उन्होंने स्वीकृति वापस ली।

70. (2) लॉर्ड माउंटबेटन
1946 का कैबिनेट मिशन तीन ब्रिटिश मंत्रियों (पैथिक-लॉरेंस, स्टैफोर्ड क्रिप्स और ए.वी. अलेक्जेंडर) का दल था। लॉर्ड माउंटबेटन इसका हिस्सा नहीं थे; वे मार्च 1947 में अंतिम वायसराय बनकर आए थे। मिशन का उद्देश्य भारत की अखंडता बनाए रखते हुए संवैधानिक समाधान खोजना और अंतरिम सरकार बनाना था। यद्यपि मिशन की योजना दीर्घकाल तक प्रभावी नहीं रही, परंतु इसने संविधान सभा के गठन का मार्ग प्रशस्त किया जो अत्यंत महत्वपूर्ण था।

71. (4) संविधान सभा के सदस्य सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार के माध्यम से सीधे जनता द्वारा चुने गए थे।
कैबिनेट मिशन योजना के अंतर्गत संविधान सभा के सदस्यों का चुनाव 'सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार' द्वारा सीधे जनता ने नहीं किया था। इसके विपरीत, उनका चुनाव प्रांतीय विधान सभाओं के सदस्यों द्वारा अप्रत्यक्ष रूप से हुआ था। सीटों का आवंटन जनसंख्या के अनुपात में था और मतदान हेतु एकल संक्रमणीय मत पद्धति अपनाई गई थी। यह सभा निर्वाचित और देशी रियासतों के मनोनीत प्रतिनिधियों का मिश्रण थी। अतः सीधा चुनाव होने का कथन त्रुटिपूर्ण है।

72. (3) 3 जून, 1947
भारत विभाजन और सत्ता हस्तांतरण की अंतिम 'माउंटबेटन योजना' की घोषणा 3 जून 1947 को हुई। इसके द्वारा ब्रिटिश भारत को दो स्वतंत्र राष्ट्रों - भारत और पाकिस्तान में बांटने का निर्णय लिया गया। इसने विभाजन प्रक्रिया और सीमा निर्धारण हेतु रेडक्लिफ आयोग की रूपरेखा प्रस्तुत की। इस घोषणा ने वर्षों से चली आ रही राजनीतिक अनिश्चितता को समाप्त किया, परंतु साथ ही इसने देश को इतिहास के सबसे बड़े और पीड़ादायक विस्थापन की त्रासदी में धकेल दिया।

73. (3) उन्होंने सैद्धांतिक रूप से इसका विरोध किया लेकिन आगे की सांप्रदायिक हिंसा को रोकने के लिए इसे एक अपरिहार्य वास्तविकता के रूप में स्वीकार कर लिया।
गांधीजी विभाजन के कट्टर विरोधी थे और इसे 'भारत माता का अंग-भंग' मानते थे। वे अंत तक अखंड भारत के पक्षधर रहे। परंतु सांप्रदायिक हिंसा का तांडव देखकर और कांग्रेस-लीग के मध्य समझौते की कोई संभावना न पाकर, उन्होंने भारी मन

Downloaded from www.pdf.tube

C. ब्रिटिश संसद में भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम का पारित होना
D. रेडक्लिफ रेखा पंचाट (Award) का प्रकाशन
(1) B, A, C, D
(2) A, B, C, D
(3) B, C, A, D
(4) A, C, B, D
(5) अनुत्तरित प्रश्न

52. निम्नलिखित में से कौन सा समुदाय रेडक्लिफ रेखा द्वारा भौगोलिक रूप से विभाजित नहीं हुआ था, जिससे दोनों तरफ बड़े पैमाने पर विस्थापन नहीं हुआ?
(1) सिख
(2) बंगाली हिंदू
(3) पंजाबी मुस्लिम
(4) पारसी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

53. क्रांतिकारी विचारधाराओं/प्रकाशनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा युग्म गलत सुमेलित है?
(1) फिलॉसफी ऑफ द बॉम्ब (Philosophy of the Bomb) - भगवती चरण वोहरा
(2) वंदे मातरम - अरबिंदो घोष
(3) द इंडियन सोशियोलॉजिस्ट (The Indian Sociologist) - वासुदेव बलवंत फड़के
(4) व्हाई आई एम एन एथिस्ट (Why I am an Atheist) - भगत सिंह
(5) अनुत्तरित प्रश्न

54. निम्नलिखित में से कौन सा कथन काकोरी षड्यंत्र के बाद चंद्रशेखर आजाद की भूमिका का सही वर्णन करता है?
(1) उन्होंने ब्रिटिश अधिकारियों के सामने आत्मसमर्पण कर दिया और बाद में उन्हें अंडमान द्वीप समूह निर्वासित कर दिया गया।
(2) वे सफलतापूर्वक गिरफ्तारी से बचते रहे और HSRA के तहत बिखरे हुए क्रांतिकारियों को पुनर्गठित किया।
(3) वे भारत में बड़े पैमाने पर सशस्त्र विद्रोह के लिए प्रत्यक्ष सैन्य सहायता प्राप्त करने हेतु जर्मनी भाग गए।
(4) उन्होंने सशस्त्र संघर्ष को पूरी तरह से छोड़ दिया और गांधी के नेतृत्व में असहयोग आंदोलन में शामिल हो गए।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

55. बंगाल के क्रांतिकारियों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. अनुशीलन समिति ने मुख्य रूप से क्रांतिकारी गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए छद्म रूप में व्यायामशालाओं के एक नेटवर्क के रूप में कार्य किया।
II. सूर्य सेन ने 1930 में प्रसिद्ध चटगांव शस्त्रागार छापे का नेतृत्व किया था।
III. बंगाल के क्रांतिकारियों ने सशस्त्र कार्रवाइयों में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी को पूरी तरह से वर्जित कर रखा था।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II
(3) केवल I और III
(4) केवल III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

56. 1939 के त्रिपुरी अधिवेशन में सुभाष चंद्र बोस ने महात्मा गांधी द्वारा समर्थित किस उम्मीदवार को हराकर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष का चुनाव जीता था?
(1) पट्टाभि सीतारमैय्या
(2) पंडित जवाहरलाल नेहरु
(3) सरदार वल्लभभाई पटेल
(4) मौलाना अबुल कलाम आजाद
(5) अनुत्तरित प्रश्न

57. सुभाष चंद्र बोस द्वारा स्थापित आजाद हिंद की अंतरिम सरकार (Provisional Government of Free India) का मुख्यालय कहाँ स्थित था?
(1) टोक्यो और बर्लिन में
(2) बैंकॉक और मनीला में
(3) सिंगापुर और रंगून में
(4) पोर्ट ब्लेयर और इंफाल में
(5) अनुत्तरित प्रश्न

58. सूची I में भारत के विभाजन पर आधारित प्रसिद्ध साहित्यिक कृतियों को सूची II में उनके लेखकों के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (साहित्यिक कृति)
A. ट्रेन टू पाकिस्तान
B. तमस
C. टोबा टेक सिंह
D. आइस-कैंडी-मैन
सूची II: (लेखक)
i. सआदत हसन मंटो
ii. खुशवंत सिंह
iii. बाप्सी सिधवा
iv. भीष्म साहनी
निम्नलिखित में से कौन सा सही मिलान है?
(1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(2) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-i, B-iv, C-ii, D-iii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

59. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन दिए गए हैं।
कथन I: मुस्लिम लीग ने ब्रिटिश सरकार द्वारा कांग्रेस को उनके बिना अंतरिम सरकार बनाने के लिए आमंत्रित करने के फैसले के विरोध में 'प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस' का आह्वान किया था।
कथन II: प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस के परिणामस्वरूप पूरे ब्रिटिश भारत में अभूतपूर्व शांति और सांप्रदायिक सद्भाव बना

NODIA

अध्याय 23

क्रांतिकारी आंदोलन, क्षेत्रीय आंदोलन एवं विभाजन

1. निम्नलिखित में से किसे महाराष्ट्र में 'रामोसी किसान दल' (Ramosi Peasant Force) संगठित करने के कारण भारत की स्वतंत्रता के लिए 'सशस्त्र संघर्ष का जनक' माना जाता है?
(1) बाल गंगाधर तिलक
(2) वासुदेव बलवंत फड़के
(3) दामोदर हरि चापेकर
(4) विनायक दामोदर सावरकर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

2. सूची I में दिए गए क्रांतिकारी व्यक्तित्वों को सूची II में उनकी संबद्ध गतिविधियों या संगठनों के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (क्रांतिकारी व्यक्तित्व)
A. वासुदेव बलवंत फड़के
B. चापेकर बंधु
C. बारीन्द्र कुमार घोष
D. वी.डी. सावरकर
सूची II: (कार्य/संगठन)
i. अभिनव भारत सोसाइटी
ii. डब्ल्यू.सी. रैंड की हत्या
iii. रामोसी किसान दल
iv. अनुशीलन समिति
निम्नलिखित में से कौन सा सही मिलान है?
(1) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(2) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(3) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(4) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(5) अनुत्तरित प्रश्न

3. चापेकर बंधुओं के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) उन्होंने शारीरिक और नैतिक प्रशिक्षण के लिए 'चापेकर क्लब' नामक एक गुप्त संस्था बनाई थी।
(2) उन्होंने 1897 में पुणे के प्लेग कमिश्नर डब्ल्यू.सी. रैंड की हत्या कर दी थी।
(3) वे सफलतापूर्वक यूरोप भाग गए और लंदन से अपनी क्रांतिकारी गतिविधियाँ जारी रखीं।
(4) वे ब्यूबोनिक प्लेग महामारी के दौरान अंग्रेजों द्वारा अपनाए गए दमनकारी उपायों से प्रेरित थे।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

4. 'हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन' (HSRA) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसकी स्थापना 1928 में फिरोजशाह कोटला, नई दिल्ली में हुई थी।
II. HSRA का घोषणापत्र, जिसका शीर्षक 'द फिलॉसफी ऑफ द बॉम्ब' (बम का दर्शन) था, भगत सिंह द्वारा लिखा गया था।
III. इसका उद्देश्य समाजवादी सिद्धांतों पर आधारित 'यूनाइटेड स्टेट्स ऑफ इंडिया' के एक संघीय गणराज्य की स्थापना करना था।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) I, II और III
(4) केवल I और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

5. क्रांतिकारी पत्रिका 'युगांतर', जिसने बंगाल के युवाओं को प्रेरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, की स्थापना 1906 में किसके द्वारा की गई थी?
(1) अरबिंदो घोष और बिपिन चंद्र पाल
(2) सूर्य सेन और प्रीतिलता वाडेदार
(3) बारीन्द्र कुमार घोष और भूपेंद्रनाथ दत्त
(4) रास बिहारी बोस और सचिंद्रनाथ सान्याल
(5) अनुत्तरित प्रश्न

6. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं — कथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दें।
कथन (A): 1905 के बंगाल विभाजन ने बंगाल में क्रांतिकारी राष्ट्रवाद के उदय के लिए एक बड़े उत्प्रेरक के रूप में कार्य किया।
कारण (R): विभाजन को तत्काल वापस कराने में शांतिपूर्ण स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलनों की विफलता ने युवाओं को निराश किया, जिससे उन्होंने व्यक्तिगत वीरतापूर्ण कार्यों का मार्ग अपनाया।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

7. 20वीं शताब्दी की शुरुआत में भारत में क्रांतिकारी साजिशों के संबंध में सही सुमेलित युग्म की पहचान कीजिए:
(1) अलीपुर बम कांड - रास बिहारी बोस के नेतृत्व में
(2) दिल्ली षड्यंत्र मामला - मुख्य रूप से सूर्य सेन द्वारा

Click Here to Buy book on Amazon

D. माउंटबेटन योजना (1947)

सूची II: (प्रमुख प्रावधान)

i. त्रि-स्तरीय संघीय ढांचे का प्रस्ताव दिया और पाकिस्तान को खारिज कर दिया

ii. भारत के तत्काल विभाजन का प्रस्ताव दिया

iii. द्वितीय विश्व युद्ध के बाद संविधान सभा की मांग को स्वीकार किया

iv. प्रांतों को अलग होने और एक अलग संघ बनाने का अधिकार दिया

निम्नलिखित में से कौन सा सही मिलान है?

(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(5) अनुत्तरित प्रश्न

37. 1946 की घटनाओं के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही सुमेलित है?

(1) कैबिनेट मिशन का आगमन - 9 दिसंबर
(2) अंतरिम सरकार का गठन - 26 जनवरी
(3) प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस - 16 अगस्त
(4) संविधान सभा की पहली बैठक - 2 सितंबर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

38. मुस्लिम लीग के 'प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस' (Direct Action Day) के आह्वान के बाद बंगाल में भड़की व्यापक सांप्रदायिक हिंसा को ऐतिहासिक रूप से किस नाम से जाना जाता है?

(1) मोपला विद्रोह
(2) द ग्रेट कलकत्ता किलिंग्स
(3) नोआखली नरसंहार
(4) चौरी-चौरा कांड
(5) अनुत्तरित प्रश्न

39. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं — कथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दें।

कथन (A): मुस्लिम लीग अंततः अक्टूबर 1946 में पाकिस्तान की अपनी मांग छोड़े बिना अंतरिम सरकार में शामिल हो गई।

कारण (R): लीग मुख्य रूप से नए संविधान के निर्माण में कांग्रेस के साथ रचनात्मक रूप से सहयोग करने के लिए सरकार में शामिल हुई थी।

(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

40. माउंटबेटन योजना के तहत ब्रिटिश वापसी की तारीख को अगस्त 1947 तक आगे बढ़ाने के ब्रिटिश सरकार के फैसले के पीछे मुख्य प्रेरणा क्या थी?

(1) देश भर में बढ़ती सांप्रदायिक हिंसा के कारण कानून और व्यवस्था का तेजी से बिगड़ना।
(2) भारतीय राजनीतिक नेतृत्व की प्रशासन को निर्बाध और कुशलता से संभालने की पूर्ण तत्परता।
(3) दक्षिण एशियाई क्षेत्रों को तेजी से वि-औपनिवेशीकरण करने के लिए संयुक्त राष्ट्र और वैश्विक शक्तियों का तीव्र दबाव।
(4) सर सिरिल रेडक्लिफ आयोग द्वारा जटिल सीमा सीमांकन प्रक्रिया का सफलतापूर्वक समापन।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

41. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन दिए गए हैं।

कथन I: भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम 1947 ने 15 अगस्त, 1947 को दो स्वतंत्र अधिराज्यों (Dominions), भारत और पाकिस्तान के निर्माण का प्रावधान किया।

कथन II: इस अधिनियम के तहत, भारतीय रियासतों पर ब्रिटिश क्राउन की सर्वोच्चता (Paramountcy) पूरी तरह से समाप्त हो गई।

निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?

(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) अनुत्तरित प्रश्न

42. 3 जून, 1947 की माउंटबेटन योजना के तहत, किस प्रांत के विभाजन का निर्णय जनमत संग्रह (referendum) द्वारा लिया जाना था?

(1) उत्तर-पश्चिमी सीमा प्रांत (NWFP)
(2) पंजाब का पश्चिमी प्रांत
(3) बंगाल का पूर्वी प्रांत
(4) सिंध का मरुस्थलीय प्रांत
(5) अनुत्तरित प्रश्न

43. पंजाब और बंगाल में भारत और पाकिस्तान के बीच सीमाओं को सीमांकित करने का कार्य सौंपा गया सीमा आयोगों की अध्यक्षता किसके द्वारा की गई थी?

(1) लॉर्ड माउंटबेटन
(2) क्लेमेंट एटली
(3) लॉर्ड पेथिक-लॉरेंस
(4) सर सिरिल रेडक्लिफ
(5) अनुत्तरित प्रश्न

44. माउंटबेटन योजना के प्रावधानों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. पंजाब और बंगाल की विधान सभाएं इस बात पर मतदान करेंगी कि उनके प्रांतों का विभाजन किया जाना चाहिए या नहीं।

II. सिंध भारत या पाकिस्तान में शामिल होने के बारे में अपना निर्णय स्वयं लेगा।

III. असम के सिलहट जिले को बिना किसी मतदान के स्वचालित रूप से भारत को आवंटित किया जाएगा।

NODIA

से पालन करता था।

V. बोस भारत की स्वतंत्रता के लिए अंतर्राष्ट्रीय समर्थन प्राप्त करने हेतु 1941 में कलकत्ता में अपनी नजरबंदी से भाग निकले।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) I, III, IV और V
(2) II, III और IV
(3) I, II और V
(4) I, II, III और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

15. सुभाष चंद्र बोस ने किस देश में 'फ्री इंडिया सेंटर' (Free India Centre) का गठन किया और पहली बार 'नेताजी' की उपाधि प्राप्त की?
(1) जर्मनी
(2) जापान
(3) सिंगापुर
(4) बर्मा
(5) अनुत्तरित प्रश्न

16. सूची I में दी गई 'आजाद हिंद फौज' (INA) की इकाइयों को सूची II में उनके प्रमुख कमांडरों या महत्व के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (INA इकाई)
A. सुभाष ब्रिगेड
B. झाँसी की रानी रेजिमेंट
C. आजाद ब्रिगेड
D. प्रथम INA (1942)
सूची II: (कमांडार/महत्व)
i. कैप्टन लक्ष्मी स्वामीनाथन
ii. शाह नवाज खान
iii. मोहन सिंह
iv. इनायत कियानी
निम्नलिखित में से कौन सा सही मिलान है?
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

17. 1939 में सुभाष चंद्र बोस द्वारा गठित 'फॉरवर्ड ब्लॉक' को राजनीतिक रूप से सबसे सटीक रूप में कैसे परिभाषित किया जा सकता है?
(1) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का एक रूढ़िवादी, वफादार धड़ा।
(2) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के भीतर एक कट्टरपंथी धड़े के रूप में कार्य करने वाला एक समाजवादी राजनीतिक संगठन।
(3) भारत में तानाशाही स्थापित करने के उद्देश्य से बनाया गया एक स्वतंत्र फासीवादी राजनीतिक दल।
(4) एक उग्रवादी संगठन जो अपनी स्थापना से ही भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से पूरी तरह से अलग था।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

18. आजाद हिंद फौज (INA) के सैन्य अभियानों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(1) INA ने 1944 में इंफाल और कोहिमा के हमलों के दौरान जापानी सेना के साथ मिलकर लड़ाई लड़ी थी।
(2) INA ने 1944 में एक आकस्मिक उत्तरी आक्रमण के माध्यम से सफलतापूर्वक दिल्ली पर कब्जा कर लिया था।
(3) INA का प्राथमिक सैन्य अभियान मुंबई शहर पर किया गया एक जल-थल (amphibious) हमला था।
(4) 1945 में बर्लिन के पतन के बाद INA ने औपचारिक रूप से सोवियत संघ के सामने आत्मसमर्पण कर दिया था।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

19. 1945-46 के INA मुकदमों (लाल किला मुकदमा) के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. पहले मुकदमे में तीन अधिकारी शामिल थे: प्रेम कुमार सहगल, शाह नवाज खान और गुरबख्श सिंह ढिल्लों।
II. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने आधिकारिक तौर पर इन मुकदमों का बहिष्कार किया और कोई भी कानूनी बचाव प्रदान करने से इनकार कर दिया।
III. इन मुकदमों ने पूरे भारत में राष्ट्रवादी भावना और सार्वजनिक विरोध की एक विशाल लहर पैदा कर दी।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

20. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं — कथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दें।
कथन (A): ब्रिटिश अधिकारी दोषी ठहराए गए INA अधिकारियों की सजा माफ करने के लिए मजबूर हुए।
कारण (R): इस मुकदमे ने अभूतपूर्व राष्ट्रवादी उभार पैदा किया और ब्रिटिश भारतीय सशस्त्र बलों की वफादारी के लिए खतरा पैदा कर दिया।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

NODIA

21. निम्नलिखित में से किसने ऐतिहासिक लाल किला मुकदमों के दौरान 'INA रक्षा समिति' में सेवा नहीं दी थी?
(1) भूलाभाई देसाई
(2) जवाहरलाल नेहरु
(3) बी.आर. अंबेडकर

आयोजित
(3) काकोरी ट्रेन डकैती - चापेकर बंधुओं द्वारा अंजाम दी गई
(4) मुजफ्फरपुर बमबारी - प्रफुल्ल चाकी और खुदीराम बोस
(5) अनुत्तरित प्रश्न

8. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन दिए गए हैं।
कथन I: अरबिंदो घोष अलीपुर बम षड्यंत्र मामले में मुख्य आरोपी थे, लेकिन चितरंजन दास द्वारा शानदार बचाव के कारण उन्हें बरी कर दिया गया था।
कथन II: बरी होने के बाद, अरबिंदो घोष सशस्त्र विद्रोह आयोजित करने के लिए तुरंत उत्तरी अमेरिका में गदर पार्टी में शामिल हो गए।
निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) अनुत्तरित प्रश्न

9. चंद्रशेखर आजाद और क्रांतिकारी गतिविधियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. वे 1925 की काकोरी ट्रेन डकैती में शामिल थे।
II. उन्होंने 1928 में 'हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन' (HRA) को 'हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन' (HSRA) के रूप में पुनर्गठित किया।
III. उन्होंने लाला लाजपत राय की मृत्यु का बदला लेने के लिए जे.पी. सांडर्स की गोली मारकर हत्या कर दी।
IV. उन्हें इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में ब्रिटिश पुलिस ने जीवित पकड़ लिया था और उन्हें फांसी दे दी गई थी।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल III और IV
(3) केवल IV
(4) केवल II और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

10. भगत सिंह और चंद्रशेखर आजाद के नेतृत्व में 'हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन' (HSRA) में पहले के क्रांतिकारी समूहों की तुलना में क्या प्राथमिक वैचारिक बदलाव देखा गया?
(1) व्यक्तिगत वीरतापूर्ण कार्यों के स्थान पर मार्क्सवादी और समाजवादी सिद्धांतों पर आधारित सामूहिक सशस्त्र संघर्ष का आयोजन करना।
(2) अखिल भारतीय क्रांतिकारी नेटवर्क के स्थान पर विशिष्ट शिकायतों पर केंद्रित क्षेत्रीय विद्रोहों की ओर झुकाव।
(3) सशस्त्र संघर्ष के स्थान पर मौजूदा विधायी ढांचे के भीतर विरोध के पूर्णतः संवैधानिक तरीकों को अपनाना।
(4) सांस्कृतिक परंपरावाद के माध्यम से जनता को संगठित करने के लिए धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रवाद से धार्मिक पुनरुत्थानवाद की ओर बदलाव।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

11. निम्नलिखित क्रांतिकारी घटनाओं के सही कालानुक्रमिक क्रम का चयन कीजिए:
A. हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (HSRA) का गठन
B. काकोरी ट्रेन डकैती
C. भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त द्वारा केंद्रीय विधान सभा में बम फेंकना
D. भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु को फांसी
(1) B, A, C, D
(2) A, B, C, D
(3) B, C, A, D
(4) A, C, B, D
(5) अनुत्तरित प्रश्न

12. भगत सिंह के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) उन्होंने युवाओं को स्वतंत्रता संग्राम में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु 1926 में 'नौजवान भारत सभा' की स्थापना की।
(2) उन्होंने 1929 में वायसराय लॉर्ड इरविन की हत्या करने के लिए गोली चलाई थी।
(3) उन्होंने जेल में रहते हुए प्रसिद्ध लेख 'मैं नास्तिक क्यों हूँ' (Why I am an Atheist) लिखा था।
(4) उन्होंने पब्लिक सेफ्टी बिल और ट्रेड डिस्प्यूट एक्ट के विरोध में केंद्रीय विधान सभा में प्रभावहीन बम फेंके थे।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

13. अरबिंदो घोष के सक्रिय क्रांतिकारी राजनीति से आध्यात्मिकता की ओर जाने का प्रमुख कारण क्या था?
(1) ब्रिटिश औपनिवेशिक सरकार द्वारा अनुशीलन समिति और उसकी सहायक शाखाओं का पूर्ण दमन।
(2) कट्टरपंथी युगांतर समूह द्वारा अपनाई गई हिंसक पद्धतियों और गुप्त रणनीतियों से गहरा मोहभंग।
(3) अलीपुर जेल में कारावास के दौरान स्वामी विवेकानंद के दर्शन और उनके गहरे आध्यात्मिक अनुभव।
(4) जेल से अपनी तत्काल रिहाई सुनिश्चित करने के लिए ब्रिटिश सरकारी अधिकारियों के साथ एक स्पष्ट गुप्त समझौता।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

14. सुभाष चंद्र बोस और फॉरवर्ड ब्लॉक के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. बोस ने 1939 के त्रिपुरी अधिवेशन में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया था।
II. फॉरवर्ड ब्लॉक की स्थापना कांग्रेस पार्टी के भीतर एक वामपंथी धड़े के रूप में की गई थी।
III. बोस का लक्ष्य फॉरवर्ड ब्लॉक के तहत सभी कट्टरपंथी और साम्राज्यवाद विरोधी तत्वों को एकजुट करना था।
IV. फॉरवर्ड ब्लॉक अहिंसा के गांधीवादी सिद्धांतों का कड़ाई

Downloaded from www.pdf.tube

29. राष्ट्रवादी आंदोलन के दौरान, बंगाली भाषाई और सांस्कृतिक पहचान का एकत्रीकरण किस ब्रिटिश प्रशासनिक कार्रवाई के जवाब में सबसे अधिक सक्रिय रूप से हुआ?
(1) इल्बर्ट बिल विवाद
(2) 1919 का रौलट एक्ट
(3) 1905 का बंगाल विभाजन
(4) 1932 में सांप्रदायिक पंचाट (Communal Award) की घोषणा
(5) अनुत्तरित प्रश्न

30. 'द्वि-राष्ट्र सिद्धांत' (Two-Nation Theory) और मुस्लिम लीग के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. द्वि-राष्ट्र सिद्धांत का दावा था कि हिंदू और मुसलमान दो अलग-अलग राष्ट्र थे जिनके सांस्कृतिक और राजनीतिक मतभेद अपूरणीय थे।
II. वी.डी. सावरकर उन शुरुआती नेताओं में से थे जिन्होंने वैचारिक रूप से यह स्पष्ट किया था कि भारत दो राष्ट्रों से बना है।
III. मुहम्मद इकबाल ने अपने 1930 के इलाहाबाद संबोधन में एक एकीकृत उत्तर-पश्चिमी भारतीय मुस्लिम राज्य का प्रस्ताव रखा था।
IV. 'पाकिस्तान' शब्द मुहम्मद अली जिन्ना द्वारा गोलमेज सम्मेलनों के दौरान गढ़ा गया था।
V. मुस्लिम लीग ने आधिकारिक तौर पर 1940 में एक अलग मुस्लिम राज्य की मांग को स्वीकार किया था।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I, III और IV
(4) I, II, III और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

31. अखिल भारतीय मुस्लिम लीग के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) इसने कांग्रेस के साथ 1920 के अपने सत्र में औपचारिक रूप से 'पूर्ण स्वराज' के लक्ष्य को अपनाया था।
(2) इसकी स्थापना 1906 में ढाका में नवाब सलीमुल्लाह के नेतृत्व में मुस्लिम राजनीतिक अधिकारों की रक्षा के लिए की गई थी।
(3) इसने शुरु में 1905 के बंगाल विभाजन का समर्थन किया था क्योंकि इसमें पूर्व में एक मुस्लिम बहुल प्रांत का वादा किया गया था।
(4) इसने प्रतिनिधि सरकार की मांग के लिए 1916 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के साथ ऐतिहासिक लखनऊ समझौते पर हस्ताक्षर किए थे।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

32. 23 मार्च, 1940 को मुस्लिम लीग के अधिवेशन में ऐतिहासिक लाहौर प्रस्ताव (जिसे अक्सर पाकिस्तान प्रस्ताव कहा जाता है) औपचारिक रूप से किसने प्रस्तुत किया था?
(1) सिकंदर हयात खान
(2) ए.के. फजलुल हक
(3) लियाकत अली खान
(4) चौधरी खलीकुज्जमां
(5) अनुत्तरित प्रश्न

33. निम्नलिखित में से किस मुस्लिम संगठन या नेता ने द्वि-राष्ट्र सिद्धांत और पाकिस्तान की मांग का विरोध नहीं किया था?
(1) जमीयत उलेमा-ए-हिंद
(2) अखिल भारतीय मुस्लिम लीग
(3) मजलिस-ए-अहरार-उल-इस्लाम
(4) खान अब्दुल गफ्फार खान (खुदाई खिदमतगार)
(5) अनुत्तरित प्रश्न

34. 1940 के लाहौर प्रस्ताव के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसने मांग की कि भौगोलिक रूप से सटे हुए क्षेत्रों को उत्तर-पश्चिमी और पूर्वी क्षेत्रों में स्वतंत्र राज्यों के रूप में सीमांकित किया जाए।
II. प्रस्ताव के मूल पाठ में स्पष्ट रूप से 'पाकिस्तान' शब्द का कई बार प्रयोग किया गया था।
III. इसने इन इकाइयों में अल्पसंख्यकों के संरक्षण के लिए पर्याप्त, प्रभावी और अनिवार्य सुरक्षा उपायों की मांग की।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और III
(2) केवल I और II
(3) केवल II और III
(4) I, II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

35. 1946 की कैबिनेट मिशन योजना की अंतिम विफलता का मुख्य कारण क्या था?
(1) द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के बावजूद ब्रिटिश सरकार ने भारत को डोमिनियन स्टेटस देने से इनकार कर दिया।
(2) योजना ने भारत को सैकड़ों अलग-अलग रियासतों में तत्काल और पूर्ण विखंडन (balkanization) का प्रस्ताव दिया था।
(3) प्रांतों के लिए 'समूहन' (grouping) खंड की व्याख्या को लेकर कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच अपूरणीय मतभेद।
(4) क्षेत्रीय शत्रुता के अचानक भड़कने से किसी सहमति पर पहुँचने से पहले ही इसके कार्यान्वयन में बाधा उत्पन्न हुई।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

NODIA

36. सूची I में दी गई ऐतिहासिक योजनाओं/मिशनों को सूची II में भारत के भविष्य के संबंध में उनके प्रमुख प्रावधानों के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (योजना/मिशन)
A. अगस्त प्रस्ताव (1940)
B. क्रिप्स मिशन (1942)
C. कैबिनेट मिशन (1946)

से इसे एक कड़वी वास्तविकता के रूप में स्वीकार किया। उन्हें लगा कि विभाजन को रोकने का हठ देश को भीषण गृहयुद्ध में झोंक सकता है। अतः उन्होंने शांति हेतु इस दुःखद निर्णय को स्वीकार किया।

74. (1) शान्तिनिकेतन
शांतिनिकेतन की स्थापना रवींद्रनाथ टैगोर ने की थी, जो बाद में 'विश्व भारती' विश्वविद्यालय बना। अन्य तीन संस्थान गांधीजी द्वारा स्थापित थे। उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में 'फीनिक्स सेटलमेंट' (1904) और 'टॉलस्टॉय फार्म' (1910) की नींव रखी। भारत वापसी पर उन्होंने 1917 में 'साबरमती आश्रम' बनाया। ये आश्रम गांधीजी के सत्य, अहिंसा, शारीरिक श्रम और सामूहिक जीवन के प्रयोगों के प्रमुख केंद्र थे, जहाँ उन्होंने स्वतंत्रता सेनानियों को प्रशिक्षित किया।

75. (4) रवींद्रनाथ टैगोर
गांधीजी को 'महात्मा' की उपाधि रवींद्रनाथ टैगोर ने दी थी। यह उनके नैतिक बल, सत्य के प्रति अटूट निष्ठा और असाधारण व्यक्तित्व के प्रति सम्मान का प्रतीक था। प्रत्युत्तर में गांधीजी ने टैगोर को 'गुरुदेव' कहकर संबोधित किया। इन दोनों महापुरुषों के वैचारिक मतभेदों के बावजूद एक-दूसरे के प्रति अगाध श्रद्धा थी। 'महात्मा' शब्द उनके नाम का अभिन्न अंग बन गया, जिसने उन्हें विश्व पटल पर एक संत-राजनेता के रूप में प्रतिष्ठित किया।

76. (2) सुभाष चंद्र बोस
1917 के चंपारण सत्याग्रह में गांधीजी को राजेंद्र प्रसाद, जे.बी. कृपलानी, महादेव देसाई और ब्रजकिशोर प्रसाद जैसे नेताओं का सहयोग मिला। इन्होंने गांवों में जाकर किसानों के साक्ष्य जुटाए। सुभाष चंद्र बोस उस समय छात्र थे और वे काफी बाद में राजनीति में सक्रिय हुए, अतः वे इस अभियान का हिस्सा नहीं थे। चंपारण के इस सहयोगी दल ने गांधीजी के कार्य करने की पद्धति को समझा और भविष्य के राष्ट्रीय आंदोलनों हेतु आधार तैयार किया।

77. (3) पंजाब – मोपला विद्रोह
असहयोग आंदोलन में स्थानीय मुद्दे राष्ट्रीय संघर्ष से जुड़े। बंगाल में कर विरोधी आंदोलन और असम में चाय बागान श्रमिकों की हड़ताल हुई। आंध्र में वन सत्याग्रह हुए। परंतु 'मोपला विद्रोह' पंजाब में नहीं, अपितु केरल के मालाबार तट पर हुआ था। यह विद्रोह मुस्लिम बटाईदारों द्वारा जमींदारों और ब्रिटिश शासन के विरुद्ध था, जिसने कालान्तर में हिंसक सांप्रदायिक रूप ले लिया। अतः पंजाब को इस विद्रोह से जोड़ना भौगोलिक दृष्टि से अशुद्ध है।

78. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
खान अब्दुल गफ्फार खान ने उत्तर-पश्चिमी सीमा प्रांत में 'खुदाई खिदमतगार' (लाल कुर्ती दल) बनाया। वे गांधीजी के अहिंसा सिद्धांत के अनन्य अनुयायी थे। यह कहना गलत है कि वे सशस्त्र उग्रवादी थे; इसके विपरीत, वे पूर्णतः अहिंसक संगठन थे। उन्होंने सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान भीषण दमन के बावजूद अहिंसा का त्याग नहीं किया। उनके इस समर्पण हेतु उन्हें 'सीमांत गांधी' कहा गया और उन्होंने पश्तूनों में चेतना जागृत की।

79. (1) मुस्लिम लीग ने आंदोलन का विरोध किया और दावा किया कि यह हिंदू वर्चस्व स्थापित करने की एक योजना थी।
1942 के भारत छोड़ो आंदोलन का मुस्लिम लीग ने विरोध किया और इसे हिंदू वर्चस्व की योजना बताया। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी भी सोवियत संघ के युद्ध में शामिल होने के कारण अंग्रेजों के समर्थन में रही और आंदोलन से पृथक रही। हिंदू महासभा और रियासतों के राजाओं ने भी इस संघर्ष में भाग नहीं लिया। इन विविध राजनीतिक दृष्टिकोणों के बावजूद, यह आंदोलन एक विशाल जनक्रांति बना जिसने औपनिवेशिक शासन की नींव हिला दी।

80. (2) कलकत्ता में उपवास कर रहे थे और सांप्रदायिक हिंसा को शांत करने का प्रयास कर रहे थे
15 अगस्त 1947 को गांधीजी दिल्ली के उत्सव में सम्मिलित नहीं थे। वे कलकत्ता में सांप्रदायिक दंगों को शांत करने हेतु उपवास और प्रार्थना कर रहे थे। उनके लिए स्वतंत्रता का उल्लास विभाजन की हिंसा से धूमिल हो गया था। उन्होंने शांति और बंधुत्व की स्थापना को उत्सव मनाने से अधिक आवश्यक माना। उनके प्रयासों ने बंगाल में शांति बहाल की, जिसे देखते हुए लॉर्ड माउंटबेटन ने उन्हें 'वन मैन बाउंड्री फोर्स' की संज्ञा दी थी।

www.nodia.in

Click Here to Buy book on Amazon

IV. हैदराबाद को पाकिस्तान में शामिल होने से कड़ाई से मना किया गया था।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?

(1) केवल I और II
(2) केवल III और IV
(3) I, II और IV
(4) केवल II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

45. निम्नलिखित में से कौन भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम, 1947 के एक प्रावधान का सही वर्णन करता है?

(1) इसने लॉर्ड माउंटबेटन को भारत और पाकिस्तान दोनों की एक साथ सेवा करने वाले पहले गवर्नर-जनरल के रूप में नियुक्त किया।
(2) इसने आदेश दिया कि भारत की मौजूदा संविधान सभा को तत्काल प्रभाव से भंग कर दिया जाए।
(3) इसने दो नए अधिराज्यों की मौजूदा संविधान सभाओं को उनकी संबंधित केंद्रीय विधायिकाओं के रूप में नामित किया।
(4) इसने सभी ब्रिटिश सैन्य बलों को कांग्रेस पार्टी के तत्काल और अनन्य कमान में स्थानांतरित कर दिया।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

46. सूची I में दिए गए प्रांतों/क्षेत्रों को सूची II में 1947 में उनके विलय/विभाजन को निर्धारित करने के लिए उपयोग की गई पद्धति के साथ सुमेलित कीजिए:

सूची I: (प्रांत/क्षेत्र)

A. सिंध
B. उत्तर-पश्चिमी सीमा प्रांत (NWFP)
C. सिलहट (असम)
D. पंजाब

सूची II: (निर्णय की पद्धति)

i. जनमत संग्रह जिसके कारण पूर्वी बंगाल में विलय हुआ
ii. प्रांतीय विधान सभा द्वारा मतदान
iii. विभाजित विधान सभा सदस्यों के मतदान द्वारा तय किया गया विभाजन
iv. जनमत संग्रह जिसके कारण पाकिस्तान में विलय हुआ

निम्नलिखित में से कौन सा सही मिलान है?

(1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(5) अनुत्तरित प्रश्न

47. भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम 1947 के संदर्भ में, 'अधिराज्य का दर्जा' (Dominion Status) शब्द का संविधान अपनाने से पहले भारत और पाकिस्तान के लिए अस्थायी रूप से क्या अर्थ था?

(1) वे पूरी तरह से स्वतंत्र राष्ट्र थे लेकिन प्रतीकात्मक रूप से ब्रिटिश सम्राट को राज्य के प्रमुख के रूप में बनाए रखा।
(2) ब्रिटिश संसद के पास उनके घरेलू कानूनों और कानूनी कार्यों को वीटो करने की संवैधानिक शक्ति बनी रही।
(3) वे केवल स्वायत्त क्षेत्र थे जिनकी संपूर्ण विदेश नीति अभी भी लंदन से नियंत्रित की जा रही थी।
(4) उन्हें बिना किसी अलग होने के अधिकार के स्थायी रूप से ब्रिटिश साम्राज्य के भीतर रहने के लिए कानूनी रूप से बाध्य किया गया था।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

48. उस क्षेत्र की पहचान कीजिए जहाँ 1947 में बड़े पैमाने पर विभाजन से संबंधित नरसंहार और शरणार्थियों का दो-तरफा पलायन नहीं हुआ था।

(1) पंजाब
(2) मद्रास
(3) बंगाल
(4) दिल्ली
(5) अनुत्तरित प्रश्न

49. विभाजन के दौरान मानवीय क्षति और पलायन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. विभाजन ने मानव इतिहास के सबसे बड़े जबरन पलायन में से एक को जन्म दिया।
II. हिंसा पूरी तरह से एक तरफा थी, जिसमें केवल पाकिस्तान में रहने वाले अल्पसंख्यक समुदायों को निशाना बनाया गया था।
III. सीमा के दोनों ओर महिलाओं को अक्सर अपहरण, यौन हिंसा और जबरन धर्म परिवर्तन का शिकार बनाया गया।
IV. विस्थापित व्यक्तियों की भारी आमद को समायोजित करने के लिए दिल्ली में किंग्सवे कैंप जैसे शरणार्थी शिविर स्थापित किए गए थे।
V. सटीक सीमाओं की घोषणा 15 अगस्त के बाद ही की गई थी, जिससे जनता में भ्रम और दहशत बढ़ गई थी।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

(1) केवल I और III
(2) I, III, IV और V
(3) केवल II और IV
(4) केवल I, II और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

NODIA

50. 15 अगस्त, 1947 को महात्मा गांधी कहाँ थे, जहाँ वे दिल्ली में स्वतंत्रता समारोहों में भाग लेने के बजाय सांप्रदायिक हिंसा को शांत करने का प्रयास कर रहे थे?

(1) कोलकाता
(2) नोआखली
(3) लाहौर
(4) अमृतसर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

51. भारत के विभाजन के अंतिम चरण से संबंधित निम्नलिखित घटनाओं के सही कालानुक्रमिक क्रम का चयन कीजिए:

A. माउंटबेटन योजना की घोषणा
B. वायसराय के रूप में लॉर्ड माउंटबेटन का आगमन

(4) तेज बहादुर सप्रू
(5) अनुत्तरित प्रश्न

22. निम्नलिखित घटनाओं को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
A. लाल किले में INA के मुकदमे शुरू होना
B. रॉयल इंडियन नेवी (RIN) विद्रोह
C. सुभाष चंद्र बोस द्वारा आजाद हिंद की अंतरिम सरकार का गठन
D. कैबिनेट मिशन का आगमन
(1) C, A, B, D
(2) A, C, B, D
(3) C, B, A, D
(4) B, C, D, A
(5) अनुत्तरित प्रश्न

23. निम्नलिखित में से कौन सा जहाज 1946 के रॉयल इंडियन नेवी (RIN) विद्रोह की शुरुआत या प्रसार से संबंधित नहीं है?
(1) HMIS तलवार
(2) HMIS हिंदुस्तान
(3) HMIS बहादुर
(4) HMIS कॉर्नवालिस
(5) अनुत्तरित प्रश्न

24. 1946 के रॉयल इंडियन नेवी (RIN) विद्रोह के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह नस्लीय भेदभाव, खराब भोजन और ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा दुर्व्यवहार के विरोध में मुंबई में शुरू हुआ था।
II. विद्रोहियों ने जहाजों पर तिरंगा, अर्धचंद्र और हंसिया-हथौड़ा के झंडे फहराए।
III. महात्मा गांधी ने नौसेना रेटिंग्स (नाविकों) द्वारा अपनाई गई हिंसक पद्धतियों का उत्साहपूर्वक समर्थन किया।
IV. वल्लभभाई पटेल और एम.ए. जिन्ना ने अंततः रेटिंग्स को आत्मसमर्पण करने के लिए राजी किया।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) I, II और IV
(2) I, III और IV
(3) II, III और IV
(4) I, II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

25. ब्रिटिश प्रशासन पर 1946 के रॉयल इंडियन नेवी (RIN) विद्रोह का सबसे महत्वपूर्ण तत्काल राजनीतिक प्रभाव क्या था?
(1) इसके कारण अंग्रेजों ने मुंबई में सुरक्षा चिंताओं के चलते कैबिनेट मिशन को अनिश्चित काल के लिए स्थगित कर दिया।
(2) इसके परिणामस्वरुप भारतीय सैनिकों की बड़े पैमाने पर छंटनी हुई और उनके स्थान पर पूरी तरह से ब्रिटिश वफादार रेजिमेंट तैनात की गईं।
(3) इसने अंग्रेजों को यह विश्वास दिला दिया कि वे अब अपने शासन को बनाए रखने के लिए भारतीय सशस्त्र बलों पर पूरी तरह भरोसा नहीं कर सकते।
(4) इसके कारण आगे के सैन्य विद्रोहों से बचने के लिए भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम को तत्काल पारित किया गया।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

26. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन दिए गए हैं।
कथन I: मद्रास प्रेसीडेंसी में 'जस्टिस पार्टी' की स्थापना मुख्य रुप से गैर-ब्राह्मण समुदायों के राजनीतिक और शैक्षिक अधिकारों पर बल देने के लिए की गई थी।
कथन II: ई.वी. रामास्वामी नायकर द्वारा शुरू किए गए 'आत्म-सम्मान आंदोलन' का उद्देश्य ब्राह्मणवादी अनुष्ठानों और जाति व्यवस्था को त्यागकर गैर-ब्राह्मणों की गरिमा बहाल करना था।
निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) अनुत्तरित प्रश्न

27. 58 दिनों के उपवास के बाद किस नेता की मृत्यु के बाद आंध्र के अलग तेलुगु भाषी राज्य के आंदोलन ने तीव्र भावनात्मक गति प्राप्त की?
(1) तंगुतुरी प्रकाशम
(2) के. कामराज
(3) एन. संजीव रेड्डी
(4) पोट्टी श्रीरामुलु
(5) अनुत्तरित प्रश्न

28. सूची I में दिए गए क्षेत्रीय नेताओं को सूची II में उनके संबंधित आंदोलनों या संगठनों के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (नेता)
A. ई.वी. रामास्वामी (पेरियार)
B. फजलुल हक
C. स्वामी सहजानंद सरस्वती
D. तारा सिंह
सूची II: (आंदोलन/संगठन)
i. कृषक प्रजा पार्टी
ii. अकाली दल
iii. आत्म-सम्मान आंदोलन
iv. अखिल भारतीय किसान सभा
निम्नलिखित में से कौन सा सही मिलान है?
(1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(2) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(3) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(4) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

Downloaded from www.pdf.tube

रहा।
निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) अनुत्तरित प्रश्न

60. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं — कथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दें।
कथन (A): कांग्रेस और मुस्लिम लीग के नेताओं ने 1946 के रॉयल इंडियन नेवी (RIN) विद्रोह का समर्थन नहीं किया।
कारण (R): नेताओं को डर था कि सशस्त्र बलों में विद्रोह को बढ़ावा देने से उन आगामी स्वतंत्र राज्यों के लिए एक खतरनाक मिसाल कायम होगी जिन पर वे शासन करने वाले थे।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

61. 'द्वि-राष्ट्र सिद्धांत' ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के किस मुख्य वैचारिक स्तंभ को मौलिक रूप से चुनौती दी थी?
(1) आर्थिक आत्मनिर्भरता (स्वदेशी)
(2) अहिंसक सविनय अवज्ञा
(3) धर्मनिरपेक्ष क्षेत्रीय राष्ट्रवाद
(4) पूर्ण स्वतंत्रता (पूर्ण स्वराज)
(5) अनुत्तरित प्रश्न

62. कैबिनेट मिशन योजना ने ब्रिटिश भारतीय प्रांतों को तीन वर्गों (A, B और C) में वर्गीकृत करने का प्रस्ताव दिया था। इस वर्गीकरण का प्राथमिक इच्छित प्रभाव क्या था?
(1) पूरे भारतीय उपमहाद्वीप को लघु-राज्यों में तत्काल और अपरिवर्तनीय विखंडन सुनिश्चित करना।
(2) समूह B और C को पूर्ण स्वतंत्रता देकर संप्रभु पाकिस्तान के लिए मुस्लिम लीग की मांग को पूरा करना।
(3) नागपुर अधिवेशन के सिद्धांतों के अनुसार भारत को स्थायी रूप से भाषाई राज्यों में विभाजित करना।
(4) मुस्लिम लीग को शांत करने के लिए मुस्लिम बहुल क्षेत्रों को पर्याप्त क्षेत्रीय स्वायत्तता प्रदान करते हुए अखंड भारत को बनाए रखना।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

63. कैबिनेट मिशन से संबंधित निम्नलिखित घटनाक्रमों को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
A. कैबिनेट मिशन का भारत आगमन
B. मुस्लिम लीग द्वारा कैबिनेट मिशन योजना को स्वीकार करना
C. मुस्लिम लीग द्वारा योजना की अपनी स्वीकृति वापस लेना
D. कांग्रेस द्वारा अनिवार्य समूहन को अस्वीकार करना लेकिन संविधान सभा को स्वीकार करना
(1) A, B, D, C
(2) A, D, B, C
(3) A, B, C, D
(4) A, C, D, B
(5) अनुत्तरित प्रश्न

NODIA

64. स्वतंत्रता संग्राम के दौरान क्षेत्रीय पहचान के उद्भव के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) 1920 के कांग्रेस के नागपुर अधिवेशन ने अपनी समितियों के आयोजन के लिए भाषाई सिद्धांत को औपचारिक रूप से मान्यता दी थी।
(2) स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा भाषाई प्रांतों की मांग को पूरी तरह से खारिज कर दिया गया था।
(3) तेलुगु भाषी नेताओं ने मद्रास प्रेसीडेंसी से अलग आंध्र प्रांत बनाने की सक्रिय रूप से मांग की थी।
(4) जस्टिस पार्टी ने मद्रास प्रेसीडेंसी में राजनीतिक अधिकार सुरक्षित करने के लिए गैर-ब्राह्मण पहचान को सफलतापूर्वक संगठित किया था।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

65. झाँसी की रानी के नाम पर रखी गई आजाद हिंद फौज की महिला रेजिमेंट की कमान किसके पास थी?
(1) कांग्रेस की अरुणा आसफ अली
(2) कैप्टन लक्ष्मी स्वामीनाथन
(3) गुप्त रेडियो की उषा मेहता
(4) नाइटिंगेल सरोजिनी नायडू
(5) अनुत्तरित प्रश्न

66. 1940 में मुस्लिम लीग के ऐतिहासिक लाहौर अधिवेशन के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसकी अध्यक्षता मुहम्मद अली जिन्ना ने की थी।
II. इसने मुसलमानों के लिए अलग स्वायत्त राज्यों की मांग वाला प्रस्ताव अपनाया।
III. इस प्रस्ताव ने भारत सरकार अधिनियम 1935 में प्रस्तावित संघीय ढांचे को दृढ़ता से खारिज कर दिया।
IV. इसने बिना किसी राजनीतिक रियायत के ब्रिटिश युद्ध प्रयासों के लिए बिना शर्त समर्थन की घोषणा की।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) I, II और III
(2) II, III और IV
(3) I, II और IV
(4) केवल I और II
(5) अनुत्तरित प्रश्न

67. भारत के विभाजन पर राजनीतिक नेताओं के रुख के संबंध में सही सुमेलित युग्म की पहचान कीजिए:
(1) महात्मा गांधी - शुरू से ही विभाजन का उत्साहपूर्वक

38. (2) द ग्रेट कलकत्ता किलिंग्स
मुस्लिम लीग द्वारा 16 अगस्त 1946 को आयोजित 'प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस' के परिणामस्वरूप कोलकाता में अत्यंत भीषण सांप्रदायिक हिंसा भड़क उठी थी। इस भयानक रक्तपात को इतिहास में 'द ग्रेट कलकत्ता किलिंग्स' के नाम से जाना जाता है। इस हिंसा ने हजारों निर्दोषों के प्राण लिए और सामाजिक समरसता को भारी क्षति पहुँचाई। कोलकाता से प्रारंभ हुई यह अशांति शीघ्र ही देश के अन्य भागों में भी फैल गई, जिससे भारत का विभाजन लगभग अपरिहार्य और अत्यंत निकट प्रतीत होने लगा।

39. (3) A सही है लेकिन R गलत है।
अक्टूबर 1946 में मुस्लिम लीग अंतरिम सरकार में सम्मिलित तो हुई, परंतु उसका उद्देश्य कांग्रेस के साथ रचनात्मक सहयोग करना नहीं था। लीग ने स्पष्ट किया था कि वह अपनी पाकिस्तान की मांग पर अडिग है और सरकार के भीतर रहकर केवल अपने हितों का संरक्षण करना चाहती है। वास्तविकता में, लीग के मंत्रियों ने सरकारी कार्यप्रणाली में अनेक बाधाएं उत्पन्न कीं और परिषद के भीतर एक प्रकार का गतिरोध पैदा कर दिया, जिससे प्रशासन का संचालन अत्यंत दुष्कर हो गया था।

40. (1) देश भर में बढ़ती सांप्रदायिक हिंसा के कारण कानून और व्यवस्था का तेजी से बिगड़ना।
ब्रिटिश सरकार ने मूलतः जून 1948 तक सत्ता हस्तांतरण का लक्ष्य निर्धारित किया था, परंतु लॉर्ड माउंटबेटन ने इसे अगस्त 1947 तक पूर्वगामी कर दिया। इसका मुख्य कारण देश भर में अनियंत्रित रूप से फैल रही सांप्रदायिक हिंसा और दंगे थे। अंग्रेजों को यह भय था कि यदि वे शीघ्र वापस नहीं गए, तो प्रशासनिक तंत्र पूर्णतः ध्वस्त हो जाएगा और वे गृहयुद्ध जैसी स्थिति में फंस सकते हैं। अतः उन्होंने अराजकता से बचने हेतु त्वरित सत्ता हस्तांतरण किया।

41. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम 1947 ने भारत को दो संप्रभु अधिराज्यों में विभाजित करने का वैधानिक प्रावधान किया। इस अधिनियम के प्रभावी होते ही भारतीय रियासतों पर ब्रिटिश सम्राट की सर्वोच्चता का औपचारिक अंत हो गया। इसका तात्पर्य था कि रियासतें अब तकनीकी रूप से स्वतंत्र थीं और उन्हें भारत अथवा पाकिस्तान में से किसी एक में सम्मिलित होने या पूर्णतः स्वतंत्र रहने का विकल्प प्राप्त था। यह अधिनियम ब्रिटिश औपनिवेशिक सत्ता के औपचारिक समापन और दो नए राष्ट्रों के उदय का प्रतीक था।

42. (1) उत्तर-पश्चिमी सीमा प्रांत (NWFP)
माउंटबेटन योजना के अंतर्गत यह महत्वपूर्ण निर्णय लिया गया था कि उत्तर-पश्चिमी सीमा प्रांत के भविष्य का निर्धारण वहां की जनता द्वारा जनमत संग्रह के माध्यम से किया जाएगा। खान अब्दुल गफ्फार खान के कड़े विरोध के उपरांत भी वहां जनमत संग्रह आयोजित हुआ, जिसमें जनता ने पाकिस्तान के पक्ष में मतदान किया। इसी प्रकार का जनमत संग्रह असम के सिलहट जिले में भी संपन्न कराया गया था। यह प्रक्रिया उन विवादित क्षेत्रों की राजनीतिक दिशा तय करने हेतु अपनाई गई थी।

43. (4) सर सिरिल रेडक्लिफ
भारत के विभाजन के समय सीमाओं के सटीक निर्धारण हेतु दो सीमा आयोगों का गठन किया गया था, जिनकी अध्यक्षता ब्रिटिश अधिवक्ता सर सिरिल रेडक्लिफ ने की थी। उनका दायित्व पंजाब और बंगाल के प्रांतों को धार्मिक बहुलता के आधार पर विखंडित करना था। रेडक्लिफ ने यह जटिल कार्य अत्यंत अल्प समय में और बिना किसी क्षेत्रीय ज्ञान के पूर्ण किया, जिसके कारण अनेक गांव और परिवार विभाजित हो गए। उनके द्वारा निर्धारित सीमा को आज 'रेडक्लिफ रेखा' के नाम से जाना जाता है।

44. (2) केवल III और IV
माउंटबेटन योजना के अनुसार पंजाब और बंगाल की विधानसभाओं को विभाजन के पक्ष अथवा विपक्ष में मतदान करना था, जबकि सिंध को अपना निर्णय स्वयं लेने का अधिकार दिया गया था। असम के सिलहट जिले में भविष्य तय करने हेतु जनमत संग्रह का विशिष्ट प्रावधान था, न कि वह स्वतः भारत का भाग बना था। साथ ही, रियासतों को यह विकल्प दिया गया था कि वे अपनी स्वेच्छा से किसी भी अधिराज्य में सम्मिलित हो सकें। अतः सिलहट और रियासतों से संबंधित कथन त्रुटिपूर्ण हैं।

45. (3) इसने दो नए अधिराज्यों की मौजूदा संविधान सभाओं को उनकी संबंधित केंद्रीय विधायिकाओं के रूप में नामित किया।
भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम 1947 ने एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रशासनिक व्यवस्था की। इसके अंतर्गत भारत और पाकिस्तान की संविधान सभाओं को तब तक के लिए अपने-अपने राष्ट्रों के केंद्रीय विधानमंडलों के रूप में कार्य करने का अधिकार दिया गया, जब तक कि नए संविधान पूर्णतः निर्मित और लागू न हो जाएं। इसने सत्ता के रिक्त स्थान को भरने और विधायी निरंतरता बनाए रखने में सहायता की। इस प्रावधान ने दोनों नए राष्ट्रों को अपने पुराने कानूनों को संशोधित करने की पूर्ण शक्ति भी प्रदान की।

46. (1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
वर्ष 1947 में विभिन्न क्षेत्रों के विलय का निर्णय भिन्न-भिन्न लोकतांत्रिक और विधायी पद्धतियों द्वारा लिया गया था। सिंध की विधानसभा ने मतदान के माध्यम से पाकिस्तान में सम्मिलित होने का निश्चय किया। उत्तर-पश्चिमी सीमा प्रांत में जनमत संग्रह द्वारा पाकिस्तान का चयन किया गया। असम के सिलहट जिले में जनमत संग्रह संपन्न हुआ जिससे वह पूर्वी बंगाल का अंग बना। पंजाब में विधानसभा के विभाजित सदस्यों के मतदान के आधार पर प्रांत का दो भागों में विभाजन सुनिश्चित किया गया था।

47. (1) वे पूरी तरह से स्वतंत्र राष्ट्र थे लेकिन प्रतीकात्मक रूप से ब्रिटिश सम्राट को राज्य के प्रमुख के रूप में बनाए रखा।
वर्ष 1947 में 'अधिराज्य' (डोमिनियन) का अर्थ था कि भारत और पाकिस्तान आंतरिक एवं बाह्य रूप से पूर्णतः स्वतंत्र थे। वे जब चाहें राष्ट्रमंडल से पृथक हो सकते थे। हालांकि, नया संविधान लागू होने तक तकनीकी रूप से ब्रिटिश सम्राट राज्य का औपचारिक प्रमुख बना रहा, जिसका प्रतिनिधित्व गवर्नर-

Click Here to Buy book on Amazon

भारतीय संघ से अलग होने के उद्देश्य से अलगाववादी आंदोलन थे।
(3) उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नेतृत्व में व्यापक साम्राज्यवाद विरोधी संघर्ष से पूरी तरह अलग होकर कार्य किया।
(4) वे संघर्ष के दौरान भारतीय एकता को विभाजित करने की रणनीति के रूप में विशेष रूप से ब्रिटिश सरकार द्वारा संचालित किए गए थे।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

75. निम्नलिखित में से कौन सा भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम, 1947 का प्रावधान नहीं था?
(1) विभिन्न भारतीय रियासतों पर ब्रिटिश आधिपत्य और सर्वोच्चता का औपचारिक अंत।
(2) लंदन में भारत सचिव (Secretary of State for India) के पद और कार्यों का पूर्ण उन्मूलन।
(3) ब्रिटिश सम्राट द्वारा उपयोग की जाने वाली उपाधियों से 'भारत का सम्राट' शब्द को हटाना।
(4) दोनों अधिराज्यों के स्थायी संविधान के रूप में भारत सरकार अधिनियम 1935 को तत्काल अपनाना।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

76. 1947 के विभाजन के दौरान पंजाब में व्यापक जनसांख्यिकीय त्रासदी और हिंसा मुख्य रूप से किस कारण से और बढ़ गई थी?
(1) नवनिर्मित सीमाओं के पार ब्रिटिश सेना द्वारा आयोजित आबादी का शांतिपूर्ण और व्यवस्थित आदान-प्रदान।
(2) पूरे प्रांत में धार्मिक समुदायों का आपस में गुंथा होना और सीमा आयोग द्वारा अचानक, मनमाना विभाजन।
(3) पीछे हटते ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा संपूर्ण परिवहन नेटवर्क का पूर्ण और व्यवस्थित विनाश।
(4) राजनीतिक संक्रमण के चरम के दौरान उसी समय क्षेत्र में आया एक भीषण और व्यापक अकाल।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

77. द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जर्मनी में सुभाष चंद्र बोस द्वारा भारतीय युद्धबंदियों की कौन सी इकाई बनाई गई थी?
(1) गदर बटालियन
(2) बर्लिन टाइगर्स
(3) फ्री इंडिया लीजन
(4) हिंदुस्तान सोशलिस्ट आर्मी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

78. सूची I में क्रांतिकारियों को सूची II में उनकी लोकप्रिय उपाधियों या उपनामों के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (क्रांतिकारी)
A. सुभाष चंद्र बोस
B. भगत सिंह
C. चंद्रशेखर
D. सूर्य सेन
सूची II: (उपाधि/उपनाम)
i. आजाद
ii. मास्टरदा
iii. नेताजी
iv. शहीद-ए-आजम
निम्नलिखित में से कौन सा सही मिलान है?
(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(3) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(4) A-i, B-iv, C-iii, D-ii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

79. RIN विद्रोह (1946) को अक्सर एक महत्वपूर्ण मोड़ के रूप में देखा जाता है क्योंकि इसने यह प्रदर्शित किया कि:
(1) राष्ट्रवाद ने ब्रिटिश साम्राज्यवादी शक्ति के सबसे वफादार साधनों, सशस्त्र बलों में भी गहरी पैठ बना ली थी।
(2) अंग्रेज बिना किसी अतिरिक्त सैन्य सहायता के स्थानीय पुलिस कार्रवाई के माध्यम से किसी भी सशस्त्र विद्रोह को सफलतापूर्वक कुचल सकते थे।
(3) भारतीय मध्यम वर्ग और औद्योगिक श्रमिक स्वाभाविक रूप से नौसेना रेटिंग्स की मांगों के विरोधी थे।
(4) आजाद हिंद फौज अभी भी तटीय क्षेत्रों में स्थित नौसैनिक अड्डों से गुप्त रूप से कार्य कर रही थी।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

80. निम्नलिखित में से कौन सा कथन द्वितीय विश्व युद्ध (1945-46) की समाप्ति के ठीक बाद भारत के राजनीतिक वातावरण को सही ढंग से दर्शाता है?
(1) अत्यधिक राजनीतिक उदासीनता और ब्रिटिश शासन के प्रति पूर्ण समर्पण का काल।
(2) जन आंदोलनों, श्रमिक हड़तालों और सशस्त्र बलों में विद्रोहों की विशेषता वाला तीव्र राष्ट्रवादी उभार।
(3) युद्ध के साझा अनुभव के कारण सांप्रदायिक तनावों पर पूर्ण विराम।
(4) बिना किसी घर्षण के कांग्रेस, मुस्लिम लीग और ब्रिटिश सरकार के बीच निर्बाध राजनीतिक सहयोग।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

www.nodia.in

Downloaded from www.pdf.tube

समर्थन किया
(2) वल्लभभाई पटेल - माउंटबेटन योजना को खारिज कर दिया और इस्तीफा दे दिया
(3) मौलाना अबुल कलाम आजाद - अंत तक विभाजन का कड़ा विरोध किया
(4) खान अब्दुल गफ्फार खान - NWFP का पाकिस्तान में तत्काल विलय की मांग की
(5) अनुत्तरित प्रश्न

68. सूची I में कैबिनेट मिशन के प्रस्तावित प्रांतीय समूहों को सूची II में उनमें शामिल प्रांतों के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (कैबिनेट मिशन समूह)
A. समूह A
B. समूह B
C. समूह C
D. रियासतें
सूची II: (शामिल क्षेत्र)
i. बंगाल और असम
ii. मद्रास, मुंबई, संयुक्त प्रांत (UP), बिहार, मध्य प्रांत, ओडिशा
iii. समूहन के लिए बाध्य नहीं थे, अपनी शर्तों पर बातचीत कर सकते थे
iv. पंजाब, NWFP, सिंध
निम्नलिखित में से कौन सा सही मिलान है?
(1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(3) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

69. सिलहट जिला, जहाँ 1947 में अपने भविष्य का फैसला करने के लिए जनमत संग्रह हुआ था, मूल रूप से किस ब्रिटिश भारतीय प्रांत का हिस्सा था?
(1) बंगाल
(2) बिहार
(3) असम
(4) ओडिशा
(5) अनुत्तरित प्रश्न

70. हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (HSRA) से जुड़े निम्नलिखित क्रांतिकारियों में से किसे ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा फांसी नहीं दी गई थी?
(1) भगत सिंह
(2) चंद्रशेखर आजाद
(3) सुखदेव
(4) राजगुरु
(5) अनुत्तरित प्रश्न

71. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन दिए गए हैं।
कथन I: मुस्लिम लीग के लियाकत अली खान ने 1946 की अंतरिम सरकार में महत्वपूर्ण 'वित्त' विभाग संभाला था।
कथन II: उन्होंने वित्त मंत्री के रूप में अपनी स्थिति का उपयोग कांग्रेस नेताओं के पास मौजूद मंत्रालयों के कामकाज को सुचारु रूप से चलाने में मदद करने के लिए किया।
निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) अनुत्तरित प्रश्न

NODIA

72. शुरुआती क्रांतिकारी राष्ट्रवादियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. वासुदेव बलवंत फड़के का उद्देश्य सशस्त्र विद्रोह संगठित करके एक स्वतंत्र भारतीय गणराज्य का पुनर्निर्माण करना था।
II. अरबिंदो घोष ने पूरी तरह से क्रांतिकारी गतिविधियों की ओर मुड़ने से पहले निष्क्रिय प्रतिरोध के विचार का प्रचार किया था।
III. चापेकर बंधु मौलिक रूप से उदार पश्चिमी राजनीतिक दर्शन से प्रेरित थे।
IV. वी.डी. सावरकर ने 'अभिनव भारत सोसाइटी' की स्थापना की थी।
V. शुरुआती क्रांतिकारी अक्सर शिवाजी और महाराणा प्रताप जैसे धार्मिक और ऐतिहासिक प्रतीकों से प्रेरणा लेते थे।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) I, II, IV और V
(2) I, III, IV और V
(3) II, III और IV
(4) I, II, III, IV और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

73. 1946 की कैबिनेट मिशन योजना के संदर्भ में, 'समूहन' (Grouping) शब्द का क्या अर्थ था?
(1) ब्रिटिश क्राउन के तहत सभी रियासतों का एक एकल प्रशासनिक संघ में पूर्ण एकीकरण।
(2) भारतीय सेना का अलग-अलग हिंदू और मुस्लिम सैन्य रेजिमेंटों में स्थायी विभाजन।
(3) स्वास्थ्य और पुलिस जैसे सामान्य विषयों वाले प्रांतों के उप-संघों का प्रस्तावित गठन।
(4) स्वतंत्र पाकिस्तान राज्य के निर्माण के लिए सीमाओं का अंतिम और विस्तृत सीमांकन।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

74. निम्नलिखित में से कौन 1947 से पहले भारत में क्षेत्रीय और भाषाई आंदोलनों की दिशा को सबसे अच्छी तरह से दर्शाता है?
(1) वे अक्सर राष्ट्रीय आंदोलन के समानांतर चलते थे, जो एक संयुक्त या संघीय भारत के भीतर सांस्कृतिक मान्यता और राजनीतिक अधिकारों की मांग करते थे।
(2) वे मुख्य रूप से संप्रभु जातीय राज्य बनाने के लिए

भीषण मुठभेड़ के दौरान उन्होंने स्वयं को गोली मारकर अपनी शहादत दी थी। वे जीवन पर्यंत पुलिस की पकड़ से बाहर रहे।

10. (1) व्यक्तिगत वीरतापूर्ण कार्यों के स्थान पर मार्क्सवादी और समाजवादी सिद्धांतों पर आधारित सामूहिक सशस्त्र संघर्ष का आयोजन करना।
हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन ने क्रांतिकारी आंदोलन को एक नया वैचारिक आधार प्रदान किया। भगत सिंह और उनके सहयोगियों के नेतृत्व में इस संगठन ने मार्क्सवादी और समाजवादी विचारधारा को अपनाया। उन्होंने व्यक्तिगत वीरता के स्थान पर व्यापक जन चेतना और सामूहिक सशस्त्र संघर्ष की अनिवार्यता पर बल दिया। उनका अंतिम लक्ष्य केवल राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त करना नहीं, बल्कि शोषण से मुक्त एक सामाजिक और आर्थिक रूप से न्यायपूर्ण व्यवस्था की स्थापना करना था, जो एक प्रगतिशील राष्ट्र का आधार बने।

11. (1) B, A, C, D
इन क्रांतिकारी घटनाओं का कालक्रम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की तीव्रता को दर्शाता है। सर्वप्रथम वर्ष 1925 में काकोरी रेल डकैती की घटना हुई थी। इसके पश्चात वर्ष 1928 में दिल्ली में हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन का गठन हुआ। अप्रैल 1929 में भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने केंद्रीय विधान सभा में बम फेंका। अंततः, 23 मार्च 1931 को भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु को फांसी दी गई। यह अनुक्रम क्रांतिकारी गतिविधियों के क्रमिक विस्तार और बलिदान की गाथा को स्पष्ट करता है।

12. (2) उन्होंने 1929 में वायसराय लॉर्ड इरविन की हत्या करने के लिए गोली चलाई थी।
भगत सिंह ने वर्ष 1926 में युवाओं को देश सेवा के लिए संगठित करने हेतु नौजवान भारत सभा की स्थापना की थी। जेल में प्रवास के दौरान उन्होंने 'मैं नास्तिक क्यों हूँ' जैसा प्रसिद्ध लेख लिखा और जन जागृति हेतु विधानसभा में बम भी फेंके। हालांकि, उन्होंने कभी भी वायसराय लॉर्ड इरविन पर गोली नहीं चलाई थी। उनका प्राथमिक उद्देश्य ब्रिटिश साम्राज्यवाद के दमनकारी कानूनों के विरुद्ध क्रांतिकारी विरोध प्रकट करना था, न कि व्यक्तिगत हत्याओं के माध्यम से सत्ता परिवर्तन करना।

13. (3) अलीपुर जेल में कारावास के दौरान स्वामी विवेकानंद के दर्शन और उनके गहरे आध्यात्मिक अनुभव।
अरबिंदो घोष का सक्रिय राजनीति से सन्यास लेकर आध्यात्मिकता की ओर मुड़ना एक युगांतकारी परिवर्तन था। अलीपुर जेल में एकांतवास के दौरान उन्हें गहन आध्यात्मिक अनुभूतियाँ हुईं और उन्होंने स्वामी विवेकानंद के वेदांत दर्शन का गंभीरता से अध्ययन किया। इन अनुभवों ने उन्हें विश्वास दिलाया कि भारत का वास्तविक पुनरुत्थान केवल राजनीतिक संघर्ष से नहीं, बल्कि आध्यात्मिक चेतना के जागरण से ही संभव है। इसके पश्चात वे पांडिचेरी जाकर पूर्णतः साधना और लेखन में लीन हो गए।

14. (4) I, II, III और V
सुभाष चंद्र बोस ने कांग्रेस के भीतर वैचारिक मतभेदों के कारण वर्ष 1939 में अध्यक्ष पद से त्यागपत्र देकर फॉरवर्ड ब्लॉक की स्थापना की थी। इसका मुख्य उद्देश्य सभी साम्राज्यवाद विरोधी शक्तियों को एक मंच पर लाना था। वे पूर्ण स्वतंत्रता के प्रबल पक्षधर थे और अहिंसा के गांधीवादी मार्ग से असहमत थे। भारत की स्वाधीनता के लिए विदेशी सहायता प्राप्त करने हेतु वे अपनी नजरबंदी से बचकर सफलतापूर्वक जर्मनी और फिर जापान पहुँचने में सफल रहे थे।

15. (1) जर्मनी
सुभाष चंद्र बोस ने जर्मनी प्रवास के दौरान वर्ष 1941 में 'फ्री इंडिया सेंटर' की स्थापना की थी। यहीं पर भारतीय समुदाय द्वारा उन्हें सर्वप्रथम 'नेताजी' की उपाधि से सम्मानित किया गया था। उन्होंने बर्लिन रेडियो के माध्यम से भारत की स्वतंत्रता के लिए निरंतर वैश्विक प्रचार किया। जर्मनी में ही उन्होंने भारतीय युद्धबंदियों को संगठित कर 'फ्री इंडिया लीजन' नामक सैन्य दल का गठन किया, जो भविष्य में आजाद हिंद फौज के सुदृढ़ीकरण और भारत की मुक्ति के संघर्ष का वैचारिक आधार बना।

16. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
आजाद हिंद फौज की विभिन्न इकाइयों का संचालन कुशल कमांडरों द्वारा किया गया था। सुभाष ब्रिगेड की कमान शाह नवाज खान के पास थी। महिलाओं की 'झाँसी की रानी रेजिमेंट' का गौरवशाली नेतृत्व कैप्टन लक्ष्मी स्वामीनाथन ने किया था। गांधी ब्रिगेड के प्रमुख इनायत कियानी थे। प्रथम आजाद हिंद फौज का गठन वर्ष 1942 में कैप्टन मोहन सिंह द्वारा किया गया था। इन सभी इकाइयों ने भारत की स्वाधीनता के लिए अदम्य साहस और वीरता का परिचय देते हुए संघर्ष किया।

17. (2) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के भीतर एक कट्टरपंथी धड़े के रूप में कार्य करने वाला एक समाजवादी राजनीतिक संगठन।
सुभाष चंद्र बोस द्वारा स्थापित फॉरवर्ड ब्लॉक की प्रकृति मूलतः समाजवादी और क्रांतिकारी थी। इसकी स्थापना कांग्रेस के भीतर एक ऐसे वर्ग के रूप में की गई थी जो ब्रिटिश शासन के विरुद्ध अधिक आक्रामक और प्रत्यक्ष संघर्ष की नीति का समर्थक था। बोस का यह दृढ़ मत था कि स्वतंत्रता केवल समझौतों से नहीं, बल्कि पूर्ण शक्ति प्रदर्शन और सुदृढ़ संगठन के माध्यम से ही प्राप्त की जा सकती है। यह दल भारतीय राजनीति में वामपंथी विचारधारा का एक प्रमुख स्वर बना।

18. (1) INA ने 1944 में इंफाल और कोहिमा के हमलों के दौरान जापानी सेना के साथ मिलकर लड़ाई लड़ी थी।
आजाद हिंद फौज ने द्वितीय विश्व युद्ध के समय भारत की सीमाओं पर ऐतिहासिक सैन्य अभियान चलाए थे। वर्ष 1944 में जापानी सेना के सहयोग से इस फौज ने इंफाल और कोहिमा के क्षेत्रों में ब्रिटिश सेना को कड़ी चुनौती दी थी। यद्यपि रसद की आपूर्ति में कमी और प्रतिकूल मौसम के कारण वे पूर्ण विजय प्राप्त नहीं कर सके, परंतु उनके इस साहसी प्रयास ने भारतीय सैनिकों और जनमानस में अभूतपूर्व देशभक्ति और आत्मविश्वास की भावना को जागृत कर दिया था।

Click Here to Buy book on Amazon

19. (3) केवल I और III
लाल किले में संचालित ऐतिहासिक मुकदमों में प्रेम कुमार सहगल, शाह नवाज खान और गुरबख्श सिंह ढिल्लों मुख्य आरोपी थे। इन मुकदमों ने पूरे देश में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध भारी जनाक्रोश और राष्ट्रवादी लहर उत्पन्न की थी। कांग्रेस ने आधिकारिक तौर पर इन अधिकारियों की रक्षा हेतु एक समिति बनाई थी, जिसमें जवाहरलाल नेहरू और भूलाभाई देसाई जैसे प्रख्यात अधिवक्ता शामिल थे। इस व्यापक जन उभार ने अंग्रेजों को यह आभास करा दिया कि अब भारत छोड़ना अपरिहार्य है।

20. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
लाल किले के मुकदमों के दौरान भारतीय जनता में व्याप्त तीव्र राष्ट्रवादी आक्रोश ने ब्रिटिश प्रशासन की नींव हिला दी थी। ब्रिटिश अधिकारियों को यह स्पष्ट आभास हो गया था कि यदि इन सैन्य अधिकारियों को दंडित किया गया, तो भारतीय सशस्त्र बलों में बड़े पैमाने पर विद्रोह भड़क सकता है। सेना की वफादारी पर मंडराते इस गंभीर खतरे को देखते हुए वायसराय ने अपनी विशेषाधिकार शक्ति का प्रयोग किया और दोषी अधिकारियों की सजा माफ कर उन्हें रिहा कर दिया।

21. (3) बी.आर. अंबेडकर
आजाद हिंद फौज के अधिकारियों के बचाव के लिए गठित ऐतिहासिक रक्षा समिति में देश के कई प्रतिष्ठित कानूनी विशेषज्ञों ने भाग लिया था। इसमें भूलाभाई देसाई ने मुख्य वकील के रूप में नेतृत्व किया, जबकि तेज बहादुर सप्रू और जवाहरलाल नेहरू ने भी सक्रिय सहयोग प्रदान किया था। बी.आर. अंबेडकर इस विशिष्ट कानूनी रक्षा दल का हिस्सा नहीं थे। इस कानूनी संघर्ष ने न केवल अधिकारियों को जीवनदान दिया बल्कि भारतीय स्वाधीनता के पक्ष में अंतरराष्ट्रीय जनमत भी तैयार किया।

22. (1) C, A, B, D
इन घटनाओं का ऐतिहासिक अनुक्रम भारतीय स्वतंत्रता के अंतिम संघर्षों को दर्शाता है। सुभाष चंद्र बोस ने अक्टूबर 1943 में आजाद हिंद की अंतरिम सरकार का गठन किया था। इसके पश्चात नवंबर 1945 में लाल किले में आजाद हिंद फौज के मुकदमे प्रारंभ हुए। फरवरी 1946 में रॉयल इंडियन नेवी का ऐतिहासिक विद्रोह हुआ, जिसने ब्रिटिश शासन को झकझोर दिया। अंततः, मार्च 1946 में ब्रिटिश कैबिनेट मिशन भारत आया। यह घटनाक्रम दर्शाता है कि कैसे निरंतर दबाव ने ब्रिटिश साम्राज्य का अंत सुनिश्चित किया।

23. (4) HMIS कॉर्नवालिस
वर्ष 1946 का नौसेना विद्रोह मुख्य रूप से मुंबई स्थित 'एच.एम.आई.एस. तलवार' नामक पोत से प्रारंभ हुआ था और शीघ्र ही यह कराची के 'एच.एम.आई.एस. हिंदुस्तान' जैसे अन्य जहाजों तक फैल गया। 'एच.एम.आई.एस. बहादुर' भी इस विद्रोह के दौरान सक्रिय केंद्रों में सम्मिलित था। हालांकि, 'एच.एम.आई.एस. कॉर्नवालिस' का इस विद्रोह के सूत्रपात या व्यापक विस्तार से कोई प्रत्यक्ष संबंध नहीं रहा है। यह विद्रोह ब्रिटिश शासन के विरुद्ध भारतीय सशस्त्र बलों के भीतर संचित असंतोष का प्रबल प्रतीक था।

24. (1) I, II और IV
रॉयल इंडियन नेवी विद्रोह नस्लीय भेदभाव और निम्न स्तर की भोजन व्यवस्था के विरुद्ध प्रारंभ हुआ था, जिसने शीघ्र ही राजनीतिक स्वरूप धारण कर लिया। विद्रोहियों ने अपने जहाजों पर कांग्रेस, मुस्लिम लीग और कम्युनिस्ट पार्टी के ध्वज फहराकर अपनी एकता प्रदर्शित की। सरदार पटेल और मोहम्मद अली जिन्ना के हस्तक्षेप और आश्वासन के पश्चात ही नाविकों ने आत्मसमर्पण किया। महात्मा गांधी ने इस विद्रोह में अपनाई गई हिंसक पद्धतियों का समर्थन नहीं किया था और इसकी सैद्धांतिक रूप से आलोचना की थी।

25. (3) इसने अंग्रेजों को यह विश्वास दिला दिया कि वे अब अपने शासन को बनाए रखने के लिए भारतीय सशस्त्र बलों पर पूरी तरह भरोसा नहीं कर सकते।
नौसेना विद्रोह ने ब्रिटिश साम्राज्य के सबसे विश्वसनीय आधार, भारतीय सशस्त्र बलों की वफादारी को समाप्त कर दिया। ब्रिटिश अधिकारियों को यह पूर्णतः स्पष्ट हो गया कि यदि उनकी अपनी सेना ही उनके विरुद्ध खड़ी हो जाए, तो भारत पर औपनिवेशिक शासन बनाए रखना अब असंभव होगा। इस ऐतिहासिक घटना ने भारत से ब्रिटिश वापसी की प्रक्रिया को अत्यधिक तीव्र कर दिया और यह सिद्ध किया कि विदेशी शासन के अंतिम दिन अब अत्यंत निकट आ गए हैं।

26. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
मद्रास प्रेसीडेंसी में जस्टिस पार्टी और आत्म-सम्मान आंदोलन ने सामाजिक न्याय की स्थापना में क्रांतिकारी भूमिका निभाई। जस्टिस पार्टी ने सरकारी सेवाओं और शिक्षा में गैर-ब्राह्मणों के लिए आरक्षण और अधिकारों की सशक्त वकालत की। वहीं, पेरियार द्वारा संचालित आत्म-सम्मान आंदोलन ने जाति आधारित भेदभाव और रुढ़िवादी कर्मकांडों का विरोध करते हुए वंचित वर्गों के स्वाभिमान को जागृत किया। इन दोनों आंदोलनों ने दक्षिण भारत की राजनीति और सामाजिक संरचना को अधिक समावेशी और लोकतांत्रिक बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

27. (4) पोट्टी श्रीरामुलु
स्वतंत्र भारत में भाषाई आधार पर राज्यों के पुनर्गठन की मांग को पोट्टी श्रीरामुलु के बलिदान ने एक नई दिशा प्रदान की। उन्होंने तेलुगु भाषी जनता के लिए पृथक आंध्र राज्य की मांग को लेकर 58 दिनों तक आमरण अनशन किया, जिसके पश्चात उनका देहावसान हो गया। इस दुखद घटना के कारण पूरे क्षेत्र में तीव्र जनाक्रोश फैल गया। परिणामतः, सरकार को विवश होकर वर्ष 1953 में भाषाई आधार पर प्रथम राज्य के रूप में आंध्र प्रदेश का गठन करना पड़ा।

28. (1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
विभिन्न क्षेत्रीय नेताओं ने अपने विशिष्ट आंदोलनों के माध्यम से भारतीय समाज और राजनीति को गहराई से प्रभावित किया। ई.वी. रामास्वामी पेरियार ने आत्म-सम्मान आंदोलन का नेतृत्व किया। फजलुल हक बंगाल की कृषक प्रजा पार्टी के संस्थापक थे। स्वामी सहजानंद सरस्वती ने अखिल भारतीय किसान सभा के माध्यम से कृषकों के हितों की सशक्त रक्षा की। मास्टर

NODIA

तारा सिंह ने सिखों के राजनीतिक अधिकारों हेतु अकाली दल का सफल नेतृत्व किया। यह मिलान सामाजिक आंदोलनों की व्यापकता को प्रदर्शित करता है।

29. (3) 1905 का बंगाल विभाजन
लॉर्ड कर्जन द्वारा वर्ष 1905 में किया गया बंगाल विभाजन बंगाली अस्मिता और उभरते राष्ट्रवाद पर एक तीखा प्रहार था। इस प्रशासनिक निर्णय का मुख्य उद्देश्य बंगाल की राजनीतिक एकता को विखंडित करना और सांप्रदायिक आधार पर विभाजन पैदा करना था। इसके प्रत्युत्तर में पूरे बंगाल में सांस्कृतिक और भाषाई चेतना का अभूतपूर्व संचार हुआ, जिसने स्वदेशी आंदोलन को जन्म दिया। बंगाली जनता ने इसे अपनी मातृभूमि के अपमान के रूप में देखा और संगठित होकर इसका प्रखर विरोध किया।

30. (4) I, II, III और V
द्वि-राष्ट्र सिद्धांत का मूल विचार यह था कि हिंदू और मुसलमान दो पृथक संस्कृतियों वाले राष्ट्र हैं। सावरकर और इकबाल जैसे विचारकों ने अपने-अपने दृष्टिकोण से इस वैचारिक विमर्श को विस्तार दिया था। मुस्लिम लीग ने वर्ष 1940 के लाहौर अधिवेशन में औपचारिक रूप से एक पृथक राज्य की मांग की थी। महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि 'पाकिस्तान' शब्द का सृजन चौधरी रहमत अली ने किया था, न कि मोहम्मद अली जिन्ना ने। यह सिद्धांत अंततः भारत के विभाजन का प्रमुख वैचारिक आधार बना।

31. (1) इसने कांग्रेस के साथ 1920 के अपने सत्र में औपचारिक रूप से 'पूर्ण स्वराज' के लक्ष्य को अपनाया था।
मुस्लिम लीग की स्थापना वर्ष 1906 में मुसलमानों के राजनीतिक अधिकारों की रक्षा हेतु की गई थी। इसने आरंभिक वर्षों में बंगाल विभाजन का समर्थन किया और लखनऊ समझौते के माध्यम से कांग्रेस के साथ सहयोग का प्रयास भी किया। हालांकि, मुस्लिम लीग ने कभी भी कांग्रेस के साथ मिलकर 'पूर्ण स्वराज' को अपना आधिकारिक राजनीतिक लक्ष्य नहीं बनाया था। इसके विपरीत, लीग का मुख्य ध्यान सदैव पृथक निर्वाचन मंडल और कालांतर में एक पृथक मुस्लिम राष्ट्र की प्राप्ति पर ही केंद्रित रहा।

32. (2) ए.के. फजलुल हक
लाहौर में वर्ष 1940 में आयोजित मुस्लिम लीग के ऐतिहासिक अधिवेशन में वह प्रसिद्ध प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया, जिसे बाद में 'पाकिस्तान प्रस्ताव' के रूप में ख्याति मिली। यह प्रस्ताव ए.के. फजलुल हक द्वारा प्रस्तुत किया गया था। इसमें भारत के उत्तर-पश्चिमी और पूर्वी क्षेत्रों के मुस्लिम बहुल प्रांतों को स्वतंत्र और स्वायत्त राज्यों के रूप में गठित करने की मांग की गई थी। यद्यपि इस मूल पाठ में 'पाकिस्तान' शब्द का उल्लेख नहीं था, परंतु इसने भविष्य के विभाजन की ठोस आधारशिला रख दी थी।

33. (2) अखिल भारतीय मुस्लिम लीग
भारतीय मुसलमानों के कई राष्ट्रवादी संगठनों और प्रतिष्ठित नेताओं ने देश के विभाजन और द्वि-राष्ट्र सिद्धांत का कड़ा विरोध किया था। जमीयत उलेमा-ए-हिंद और खुदाई खिदमतगार जैसे संगठन अखंड भारत और हिंदू-मुस्लिम एकता के कट्टर समर्थक थे। इसके विपरीत, केवल अखिल भारतीय मुस्लिम लीग ही वह प्रमुख राजनीतिक शक्ति थी जिसने सक्रिय रूप से द्वि-राष्ट्र सिद्धांत का प्रचार किया और मुसलमानों के लिए एक संप्रभु राष्ट्र की मांग को अपना मुख्य राजनीतिक लक्ष्य बनाकर विभाजन पर बल दिया।

34. (1) केवल I और III
वर्ष 1940 के लाहौर प्रस्ताव में मुस्लिम बहुल क्षेत्रों को स्वतंत्र और स्वायत्त प्रशासनिक इकाइयों के रूप में संगठित करने की मांग की गई थी। इसमें अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा हेतु पर्याप्त संवैधानिक सुरक्षा उपायों का भी स्पष्ट प्रावधान था। उल्लेखनीय है कि इस प्रस्ताव के मूल राजकीय पाठ में कहीं भी 'पाकिस्तान' शब्द का प्रयोग नहीं किया गया था। यह शब्द बाद में राजनीतिक चर्चाओं में लोकप्रिय हुआ और अंततः इस अलगाववादी आंदोलन की पहचान बन गया।

35. (3) प्रांतों के लिए 'समूहन' (grouping) खंड की व्याख्या को लेकर कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच अपूरणीय मतभेद।
कैबिनेट मिशन योजना की विफलता का मुख्य कारण प्रांतों के प्रस्तावित समूहन से संबंधित विवाद था। मुस्लिम लीग इस समूहन को अनिवार्य मानती थी, जिसे वह भविष्य में पाकिस्तान के निर्माण की सीढ़ी के रूप में देख रही थी। इसके विपरीत, कांग्रेस का तर्क था कि प्रांतों को अपनी इच्छानुसार किसी भी समूह में सम्मिलित होने या न होने की स्वायत्तता होनी चाहिए। इस व्याख्यात्मक मतभेद और पारस्परिक अविश्वास के कारण सत्ता हस्तांतरण की यह शांतिपूर्ण योजना अंततः असफल हो गई।

36. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
विभिन्न ब्रिटिश प्रस्तावों ने भारत के संवैधानिक भविष्य को भिन्न स्वरूप प्रदान किए। अगस्त प्रस्ताव ने युद्धोपरांत संविधान सभा के गठन की बात स्वीकार की। क्रिप्स मिशन ने प्रांतों को भारतीय संघ से पृथक होने का अधिकार दिया। कैबिनेट मिशन ने त्रि-स्तरीय संघीय ढांचे के माध्यम से अखंड भारत को बनाए रखने का अंतिम प्रयास किया। अंततः माउंटबेटन योजना ने भारत के वास्तविक और तात्कालिक विभाजन का स्पष्ट प्रस्ताव प्रस्तुत किया, जिसके आधार पर ही देश स्वतंत्र और विभाजित हुआ।

37. (3) प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस - 16 अगस्त
वर्ष 1946 के दौरान भारतीय राजनीति में अत्यंत महत्वपूर्ण घटनाक्रम हुए। 16 अगस्त 1946 को मुस्लिम लीग ने अपनी पाकिस्तान की मांग को मनवाने हेतु 'प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस' का आह्वान किया था। यह तिथि भारतीय इतिहास में भीषण सांप्रदायिक हिंसा की शुरुआत के रूप में अंकित है। अन्य घटनाओं के अंतर्गत, संविधान सभा की प्रथम बैठक 9 दिसंबर 1946 को हुई और अंतरिम सरकार का गठन 2 सितंबर 1946 को जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में सफलतापूर्वक किया गया था।

Downloaded from www.pdf.tube

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) वासुदेव बलवंत फड़के
वासुदेव बलवंत फड़के को भारतीय सशस्त्र विद्रोह का जनक माना जाता है। उन्होंने महाराष्ट्र में भीषण अकाल के दौरान ब्रिटिश सरकार की दमनकारी नीतियों के विरुद्ध रामोसी समुदाय को संगठित कर एक शक्तिशाली विद्रोही सेना तैयार की थी। उनका मुख्य लक्ष्य गुरिल्ला युद्ध पद्धति से ब्रिटिश शासन को समाप्त कर एक स्वतंत्र भारतीय गणराज्य की स्थापना करना था। उनके क्रांतिकारी प्रयासों ने आगामी पीढ़ी के राष्ट्रवादियों को निरंतर प्रेरित किया।

2. (1) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के क्रांतिकारियों ने विभिन्न गुप्त संगठनों के माध्यम से अपनी गतिविधियाँ संचालित कीं। वासुदेव बलवंत फड़के ने रामोसी किसान दल का गठन किया था। चापेकर बंधुओं ने पुणे के प्लेग कमिश्नर रैंड की हत्या की। बारीन्द्र कुमार घोष बंगाल की प्रसिद्ध अनुशीलन समिति के सक्रिय सदस्य थे, जबकि विनायक दामोदर सावरकर ने अभिनव भारत सोसाइटी नामक महत्वपूर्ण क्रांतिकारी संगठन की नींव रखी थी, जिसने सशस्त्र क्रांति का मार्ग प्रशस्त किया।

3. (3) वे सफलतापूर्वक यूरोप भाग गए और लंदन से अपनी क्रांतिकारी गतिविधियाँ जारी रखीं।
चापेकर बंधु पुणे में ब्रिटिश अधिकारियों के अत्याचारों के विरुद्ध संघर्ष के लिए प्रसिद्ध थे। उन्होंने वर्ष 1897 में पुणे के प्लेग कमिश्नर रैंड और आयर्स्ट की हत्या की थी, क्योंकि वे महामारी के दौरान सरकार द्वारा अपनाए गए अमानवीय और अपमानजनक उपायों से अत्यंत क्षुब्ध थे। इस घटना के पश्चात उन्हें ब्रिटिश सरकार द्वारा बंदी बनाकर मृत्युदंड दे दिया गया। उनके यूरोप भागने और वहां से गतिविधियाँ चलाने का कोई ऐतिहासिक साक्ष्य नहीं है।

4. (4) केवल I और III
हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन की स्थापना वर्ष 1928 में दिल्ली के फिरोजशाह कोटला मैदान में हुई थी। इस संगठन का प्रमुख उद्देश्य भारत में समाजवादी सिद्धांतों पर आधारित एक संघीय गणराज्य की स्थापना करना था। संगठन का वैचारिक घोषणापत्र 'द फिलॉसफी ऑफ द बॉम्ब' भगवती चरण वोहरा द्वारा लिखा गया था। अतः स्थापना का स्थान और समाजवादी लक्ष्यों से संबंधित कथन ऐतिहासिक रूप से पूर्णतः सत्य हैं, जबकि घोषणापत्र का श्रेय भगत सिंह को देना तथ्यात्मक रूप से त्रुटिपूर्ण है।

5. (3) बारीन्द्र कुमार घोष और भूपेंद्रनाथ दत्त
बंगाल में क्रांतिकारी राष्ट्रवाद के प्रचार-प्रसार में युगांतर पत्रिका की भूमिका अत्यंत निर्णायक रही है। इसकी स्थापना वर्ष 1906 में बारीन्द्र कुमार घोष और भूपेंद्रनाथ दत्त द्वारा की गई थी। इस पत्रिका ने अपने ओजस्वी लेखों के माध्यम से भारतीय युवाओं को औपनिवेशिक दासता के विरुद्ध सशस्त्र संघर्ष करने के लिए प्रेरित किया। यह पत्रिका अनुशीलन समिति की गतिविधियों और क्रांतिकारी विचारधारा को जन-जन तक पहुँचाने का मुख्य माध्यम बनी, जिससे ब्रिटिश शासन में भय व्याप्त हो गया था।

6. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
वर्ष 1905 के बंगाल विभाजन ने भारतीयों में ब्रिटिश विरोधी भावनाओं को तीव्र कर दिया, जिसने क्रांतिकारी राष्ट्रवाद के उदय में उत्प्रेरक का कार्य किया। उदारवादी आंदोलनों की विफलता और विभाजन रद्द न होने के कारण युवाओं में गहरा असंतोष व्याप्त हो गया था। इस हताशा ने उन्हें अहिंसक विरोध के स्थान पर व्यक्तिगत वीरता और सशस्त्र विद्रोह के मार्ग पर चलने के लिए विवश किया। इसी पृष्ठभूमि ने बंगाल में गुप्त क्रांतिकारी संगठनों और हिंसक गतिविधियों के एक नए युग को जन्म दिया।

7. (4) मुजफ्फरपुर बमबारी - प्रफुल्ल चाकी और खुदीराम बोस
मुजफ्फरपुर बम कांड भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन की एक अत्यंत साहसिक घटना थी। वर्ष 1908 में प्रफुल्ल चाकी और खुदीराम बोस ने कुख्यात मजिस्ट्रेट किंग्सफोर्ड की हत्या के उद्देश्य से बम फेंका था। अन्य घटनाओं में अलीपुर षड्यंत्र अरबिंदो घोष से और दिल्ली षड्यंत्र रास बिहारी बोस से संबंधित था। काकोरी कांड का सफल क्रियान्वयन हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन के साहसी क्रांतिकारियों द्वारा किया गया था, जिनका उद्देश्य सरकारी खजाने को प्राप्त कर अपनी गतिविधियों को गति देना था।

8. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
अलीपुर बम षड्यंत्र मामले में अरबिंदो घोष पर मुख्य आरोपी के रूप में अभियोग चलाया गया था। प्रसिद्ध अधिवक्ता चितरंजन दास के प्रभावी बचाव के कारण उन्हें साक्ष्यों के अभाव में रिहा कर दिया गया। कारावास से मुक्ति के पश्चात उनके जीवन में व्यापक आध्यात्मिक परिवर्तन आया और वे सक्रिय क्रांतिकारी राजनीति का परित्याग कर पांडिचेरी चले गए। वहां उन्होंने अपना शेष जीवन दर्शन, साधना और योग को समर्पित कर दिया। उनका गदर पार्टी की गतिविधियों से कोई प्रत्यक्ष संबंध नहीं रहा था।

9. (2) केवल III और IV
चंद्रशेखर आजाद ने हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन को समाजवादी सिद्धांतों के आधार पर पुनर्गठित किया था। वे काकोरी कांड और सांडर्स की हत्या जैसी महत्वपूर्ण घटनाओं के प्रमुख रणनीतिकार थे। उल्लेखनीय है कि सांडर्स की हत्या में मुख्य भूमिका भगत सिंह और राजगुरु की थी। अंततः, वर्ष 1931 में इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में ब्रिटिश पुलिस के साथ

NODIA

जनरल करता था। भारत ने वर्ष 1950 में पूर्ण गणतंत्र बनकर इस प्रतीकात्मक संबंध को समाप्त किया। यह केवल एक संक्रमणकालीन दौर था जिसने संवैधानिक स्थिरता को बनाए रखने में सहयोग प्रदान किया।

48. (2) मद्रास
1947 के विभाजन के दौरान भयानक हिंसा और बड़े पैमाने पर विस्थापन मुख्य रूप से उन प्रांतों में हुआ जो भौगोलिक रूप से विभाजित किए गए थे, जैसे पंजाब और बंगाल। दिल्ली भी शरणार्थियों के आगमन और सांप्रदायिक अशांति का साक्षी बनी। इसके विपरीत, दक्षिण भारत की मद्रास प्रेसीडेंसी इस भीषण त्रासदी और व्यापक पलायन से लगभग अछूती रही। वहां की भौगोलिक स्थिति और सामाजिक परिवेश के कारण विभाजन का सीधा और हिंसक प्रभाव उस प्रकार नहीं पड़ा जैसा उत्तर भारत में देखा गया था।

49. (2) I, III, IV और V
भारत का विभाजन मानव इतिहास का सबसे बड़ा बलात विस्थापन था, जिसमें करोड़ों लोग बेघर हुए। सीमा के दोनों ओर समुदायों ने अकल्पनीय हिंसा का सामना किया और महिलाएं इसका सबसे सुभेद्य लक्ष्य बनीं। दिल्ली में किंग्सवे शिविर जैसे अनेक विशाल शरणार्थी शिविर स्थापित किए गए थे। विभाजन की मुख्य त्रासदी यह थी कि सीमाओं की सटीक घोषणा स्वतंत्रता के पश्चात हुई, जिससे जनता में भारी संशय और असुरक्षा उत्पन्न हुई, जो अंततः अनियंत्रित हिंसा का कारण बनी।

50. (1) कोलकाता
15 अगस्त 1947 को जब दिल्ली स्वाधीनता के हर्षोल्लास में निमग्न थी, तब महात्मा गांधी कोलकाता में सांप्रदायिक दंगों को शांत करने हेतु उपवास और प्रार्थना कर रहे थे। वे नोआखली और कोलकाता के क्षेत्रों में व्याप्त घृणा को समाप्त करने हेतु अशांत गलियों में पदयात्रा कर रहे थे। गांधीजी का यह दृढ़ मत था कि यदि जनता के हृदय में शांति नहीं है, तो राजनीतिक स्वतंत्रता का कोई मूल्य नहीं है। उनके मानवीय प्रयासों ने बंगाल में हिंसा रोकने में चमत्कारी भूमिका निभाई।

51. (1) B, A, C, D
विभाजन की प्रक्रियाओं का ऐतिहासिक क्रम मार्च 1947 में लॉर्ड माउंटबेटन के आगमन से प्रारंभ होता है। इसके पश्चात 3 जून 1947 को उन्होंने अपनी विभाजन योजना प्रस्तुत की। जुलाई 1947 में ब्रिटिश संसद द्वारा भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम पारित किया गया। अंततः, 17 अगस्त 1947 को रेडक्लिफ रेखा के निर्धारण का आधिकारिक प्रकाशन संपन्न हुआ। यह क्रम स्पष्ट करता है कि कैसे अत्यंत अल्प समय में एक विशाल उपमहाद्वीप के विभाजन की जटिल और कष्टदायक प्रशासनिक प्रक्रियाओं को पूर्ण किया गया था।

52. (4) पारसी
रेडक्लिफ रेखा ने मुख्य रूप से पंजाब और बंगाल के निवासियों को भौगोलिक आधार पर पृथक किया, जिससे सिख, हिंदू और मुस्लिम जनसंख्या का व्यापक विस्थापन हुआ। पंजाब के सिखों और मुसलमानों को अपनी पैतृक भूमि और संपत्तियां छोड़कर सीमाओं के पार पलायन करना पड़ा। हालांकि, पारसी समुदाय का कोई ऐसा विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र नहीं था जो इस रेखा द्वारा विभाजित हुआ हो। उनकी जनसंख्या अधिकांशतः मुंबई और कराची जैसे नगरों में केंद्रित थी, जिससे उन्हें उस स्तर का विस्थापन नहीं झेलना पड़ा।

53. (3) द इंडियन सोशियोलॉजिस्ट (The Indian Sociologist) - वासुदेव बलवंत फड़के
क्रांतिकारी आंदोलनों में पत्रिकाओं का योगदान अविस्मरणीय रहा है। 'द इंडियन सोशियोलॉजिस्ट' पत्रिका का संपादन लंदन में श्यामजी कृष्ण वर्मा द्वारा किया गया था, न कि वासुदेव बलवंत फड़के द्वारा। अन्य कृतियां जैसे 'फिलॉसफी ऑफ द बॉम्ब' भगवती चरण वोहरा की है और 'व्हाई आई एम एन एथिस्ट' भगत सिंह का कालजयी लेख है। अरबिंदो घोष ने 'वंदे मातरम' के माध्यम से प्रखर राष्ट्रवाद का संदेश दिया। इन प्रकाशनों ने सशस्त्र क्रांति की वैचारिक पृष्ठभूमि निर्मित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

54. (2) वे सफलतापूर्वक गिरफ्तारी से बचते रहे और HSRA के तहत बिखरे हुए क्रांतिकारियों को पुनर्गठित किया।
काकोरी कांड के पश्चात चंद्रशेखर आजाद ही एकमात्र ऐसे प्रमुख क्रांतिकारी थे जिन्हें पुलिस बंदी नहीं बना सकी थी। उन्होंने भूमिगत होकर अपना संघर्ष अटूट रखा और बिखरे हुए क्रांतिकारियों को संगठित कर 'हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन' को पुनर्जीवित किया। उन्होंने अपनी संपूर्ण शक्ति और बौद्धिक क्षमता संगठन के विस्तार और ब्रिटिश अधिकारियों के विरुद्ध नई रणनीतियां बनाने में लगाई। वे अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार कभी भी जीवित अवस्था में ब्रिटिश पुलिस के हाथों नहीं आए।

55. (4) केवल III
बंगाल में क्रांतिकारी गतिविधियों का नेतृत्व प्रमुख रूप से अनुशीलन समिति और सूर्य सेन के दल ने किया। अनुशीलन समिति ने शारीरिक व्यायाम के माध्यम से युवाओं को संगठित किया। 1930 का चटगांव शस्त्रागार छापा सूर्य सेन की विशिष्ट उपलब्धि थी। उल्लेखनीय है कि बंगाल के आंदोलनों में महिलाओं की सक्रिय और निर्भीक भागीदारी थी। प्रीतिलता वाडेदार और कल्पना दत्त जैसी वीरांगनाओं ने सशस्त्र अभियानों में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर संघर्ष किया, जो इस आंदोलन को एक अनूठा स्वरूप प्रदान करता है।

56. (1) पट्टाभि सीतारमैय्या
वर्ष 1939 के त्रिपुरी अधिवेशन में सुभाष चंद्र बोस ने कांग्रेस अध्यक्ष पद के चुनाव में पट्टाभि सीतारमैय्या को पराजित किया था। सीतारमैय्या को महात्मा गांधी का पूर्ण समर्थन प्राप्त था, इसलिए उनकी पराजय को गांधीजी ने अपनी व्यक्तिगत पराजय स्वीकार किया था। इस निर्वाचन ने कांग्रेस के भीतर गहरे वैचारिक मतभेदों को सार्वजनिक कर दिया। अंततः, कार्यसमिति के साथ अपेक्षित सहयोग न मिल पाने के कारण बोस ने त्यागपत्र दे दिया और फॉरवर्ड ब्लॉक का गठन किया, जो एक ऐतिहासिक घटना थी।

Click Here to Buy book on Amazon

57. (3) सिंगापुर और रंगून में
सुभाष चंद्र बोस द्वारा स्थापित आजाद हिंद की अंतरिम सरकार का गठन अक्टूबर 1943 में सिंगापुर में संपन्न हुआ था। कालांतर में, सैन्य अभियानों की प्रगति के साथ इसका मुख्यालय रंगून स्थानांतरित कर दिया गया। सिंगापुर इस सरकार का प्राथमिक केंद्र बना रहा, जहाँ से दक्षिण-पूर्वी एशिया के भारतीयों को संगठित किया गया। इन दोनों नगरों ने आजाद हिंद फौज की सामरिक गतिविधियों और रणनीतियों के सफल संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिससे ब्रिटिश सत्ता को सीधी चुनौती मिली।

58. (1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
भारत के विभाजन की मानवीय त्रासदी को साहित्यकारों ने अपनी कृतियों में जीवंत किया है। खुशवंत सिंह की 'ट्रेन टू पाकिस्तान' विस्थापन की पीड़ा को दर्शाती है। भीष्म साहनी की 'तमस' सांप्रदायिक दंगों का मार्मिक चित्रण करती है। सआदत हसन मंटो की 'टोबा टेक सिंह' विभाजन की अतार्किक मानवीय वेदना को प्रकट करती है। बाप्सी सिधवा की 'आइस-कैंडी-मैन' पारसी परिप्रेक्ष्य से इस विनाशकारी घटना को प्रस्तुत करती है। ये सभी रचनाएं उस अंधकारमय अध्याय का ऐतिहासिक और भावनात्मक दस्तावेज हैं।

59. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
मुस्लिम लीग ने 16 अगस्त 1946 को 'प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस' का आह्वान इसलिए किया था क्योंकि वे कांग्रेस को एकल रूप से सरकार बनाने देने के ब्रिटिश निर्णय के विरुद्ध थे। वे अपनी पाकिस्तान की मांग हेतु अनैतिक दबाव बनाना चाहते थे। दुर्भाग्यवश, इस आह्वान के कारण शांति के स्थान पर संपूर्ण देश में, विशेषकर कोलकाता में, अत्यंत भीषण सांप्रदायिक दंगे भड़क उठे। इस हिंसा ने हजारों निर्दोषों के प्राण लिए और भारतीय समाज में वैमनस्य की एक गहरी खाई उत्पन्न कर दी।

60. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
कांग्रेस और मुस्लिम लीग के शीर्ष नेताओं ने 1946 के नौसेना विद्रोह का समर्थन करने से दूरी बनाए रखी, क्योंकि वे सत्ता हस्तांतरण के अत्यंत निकट थे। उन्हें यह आशंका थी कि यदि सशस्त्र बलों में अनुशासनहीनता और विद्रोह की प्रवृत्ति विकसित होती है, तो स्वतंत्र भारत और पाकिस्तान की भावी सरकारों के लिए सेना पर नियंत्रण रखना असंभव हो जाएगा। वे चाहते थे कि सत्ता का हस्तांतरण एक सुव्यवस्थित और अनुशासित ढांचे के अंतर्गत हो, न कि अनियंत्रित सशस्त्र विद्रोह से।

61. (3) धर्मनिरपेक्ष क्षेत्रीय राष्ट्रवाद
द्वि-राष्ट्र सिद्धांत ने कांग्रेस के उस मूल दर्शन को चुनौती दी कि भारत के समस्त निवासी, धार्मिक भिन्नता के उपरांत भी, एक ही राष्ट्र का अभिन्न अंग हैं। कांग्रेस धर्मनिरपेक्षता और साझा भौगोलिक राष्ट्रवाद में दृढ़ विश्वास रखती थी। इसके विपरीत, जिन्ना का सिद्धांत यह प्रतिपादित करता था कि धर्म ही राष्ट्रीयता का एकमात्र आधार है। इस विचार ने साझा भारतीय पहचान की अवधारणा को गहरा आघात पहुँचाया और भारतीय राष्ट्रवाद की परिभाषा को संकीर्ण धार्मिक आधार पर विभाजित करने का प्रयास किया।

NODIA

62. (4) मुस्लिम लीग को शांत करने के लिए मुस्लिम बहुल क्षेत्रों को पर्याप्त क्षेत्रीय स्वायत्तता प्रदान करते हुए अखंड भारत को बनाए रखना।
कैबिनेट मिशन की समूहन योजना एक संवैधानिक समझौता खोजने का प्रयास थी। इसका प्राथमिक उद्देश्य भारत की भौगोलिक अखंडता को सुरक्षित रखते हुए मुस्लिम लीग की आशंकाओं का निवारण करना था। प्रांतों को विशिष्ट समूहों में विभाजित कर उन्हें आंतरिक विषयों पर स्वायत्तता देने का प्रस्ताव था, जबकि रक्षा, संचार और विदेश नीति केंद्र के अधीन रहनी थी। यह व्यवस्था इसलिए निर्मित की गई थी ताकि मुसलमानों को सशक्त स्वायत्तता प्राप्त हो और देश का विभाजन टाला जा सके।

63. (1) A, B, D, C
कैबिनेट मिशन से संबंधित घटनाक्रम मार्च 1946 में इसके आगमन से शुरु हुए। जून में मुस्लिम लीग ने प्राथमिक रुप से इस योजना को स्वीकार कर लिया था। तत्पश्चात कांग्रेस ने संविधान सभा में सम्मिलित होना स्वीकार किया, परंतु अनिवार्य समूहन के प्रावधानों पर असहमति प्रकट की। नेहरु के बयानों और कांग्रेस के इस रुख से असुरक्षित महसूस करते हुए मुस्लिम लीग ने अंततः जुलाई के अंत में अपनी स्वीकृति वापस ले ली और प्रत्यक्ष कार्यवाही का मार्ग अपनाने का विधिवत निर्णय लिया था।

64. (2) स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा भाषाई प्रांतों की मांग को पूरी तरह से खारिज कर दिया गया था।
भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने स्वतंत्रता आंदोलन के समय भाषाई पहचान के महत्व को सदैव सम्मान दिया था। वर्ष 1920 के नागपुर अधिवेशन में पार्टी ने स्वयं को भाषाई आधार पर पुनर्गठित किया, जिससे क्षेत्रीय भाषाओं को व्यापक प्रोत्साहन मिला। कांग्रेस के नेतृत्व ने समय-समय पर भाषाई आधार पर प्रांतों के निर्माण का सैद्धांतिक समर्थन किया था। अतः यह कहना अनुचित है कि उन्होंने इस मांग को अस्वीकार किया था। वास्तव में, भाषाई चेतना ने राष्ट्रीय आंदोलन को अधिक समावेशी और जन-आधारित बनाया।

65. (2) कैप्टन लक्ष्मी स्वामीनाथन
आजाद हिंद फौज की सर्वाधिक विशिष्ट इकाइयों में से एक 'झाँसी की रानी रेजिमेंट' थी, जिसका सफल नेतृत्व कैप्टन लक्ष्मी स्वामीनाथन ने किया था। यह एशिया की प्रथम महिला लड़ाकू सैन्य रेजिमेंट थी, जो लैंगिक समानता और प्रखर क्रांतिकारी भावना की प्रतीक बनी। इन महिला सैनिकों को कठोर सैन्य प्रशिक्षण दिया गया था और वे रणक्षेत्र में प्रत्यक्ष संघर्ष हेतु पूर्णतः तत्पर थीं। इस रेजिमेंट ने भारतीय महिलाओं में अपूर्व आत्मविश्वास और राष्ट्र के प्रति समर्पण की एक नई चेतना जागृत की थी।

66. (1) I, II और III
वर्ष 1940 के लाहौर अधिवेशन में मोहम्मद अली जिन्ना ने द्वि-राष्ट्र सिद्धांत पर बल दिया और मुसलमानों हेतु स्वतंत्र राज्यों की मांग का प्रस्ताव पारित कराया। इस अधिवेशन ने भारत सरकार अधिनियम 1935 के संघीय ढांचे को पूर्णतः अस्वीकार कर दिया, क्योंकि लीग को यह भय था कि इसमें हिंदू बहुल केंद्र का प्रभुत्व रहेगा। लीग ने ब्रिटिश युद्ध प्रयासों के लिए समर्थन की सहमति तो दी, परंतु इसके बदले में उन्होंने मुसलमानों हेतु स्पष्ट राजनीतिक रियायतों और सुरक्षा उपायों की कठोर शर्तें भी प्रस्तुत की थीं।

67. (3) मौलाना अबुल कलाम आजाद - अंत तक विभाजन का कड़ा विरोध किया
मौलाना अबुल कलाम आजाद उन महान मुस्लिम नेताओं में अग्रणी थे जिन्होंने द्वि-राष्ट्र सिद्धांत और देश के विभाजन का अंतिम समय तक प्रखर विरोध किया। वे एक अखंड भारत और साझी संस्कृति के प्रबल समर्थक थे। इसके विपरीत, गांधीजी आरंभ में विरोधी थे परंतु परिस्थितियों के वशीभूत उन्होंने इसे स्वीकार किया। सरदार पटेल ने प्रशासनिक स्थिरता हेतु विभाजन को आवश्यक माना। खान अब्दुल गफ्फार खान भी विभाजन के विरुद्ध थे और उन्होंने इसे पख्तूनों के साथ घोर विश्वासघात की संज्ञा दी थी।

68. (1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
कैबिनेट मिशन ने प्रशासनिक सरलता और राजनीतिक मांगों के मध्य सामंजस्य स्थापित करने हेतु प्रांतों को तीन श्रेणियों में विभाजित किया था। समूह A में हिंदू बहुल प्रांत जैसे मद्रास, मुंबई और बिहार सम्मिलित थे। समूह B में उत्तर-पश्चिमी मुस्लिम बहुल प्रांत जैसे पंजाब और सिंध को रखा गया था। समूह C के अंतर्गत बंगाल और असम सम्मिलित थे। रियासतों को इन समूहों में सम्मिलित होने हेतु बाध्य नहीं किया गया था और उन्हें केंद्र के साथ अपनी विशिष्ट शर्तों पर वार्ता करने की पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान की गई थी।

69. (3) असम
सिलहट जिला ऐतिहासिक और प्रशासनिक दृष्टि से असम प्रांत का अभिन्न भाग था। हालांकि, इसकी जनसंख्या का एक वृहद भाग मुस्लिम था और भाषाई रूप से यह बंगाल के अत्यंत निकट था। 1947 के विभाजन के समय, माउंटबेटन योजना के अधीन यहाँ जनमत संग्रह कराया गया ताकि स्थानीय जनता अपना भविष्य स्वयं चुन सके। जनमत संग्रह के प्राप्त परिणामों के आधार पर, सिलहट ने पूर्वी बंगाल के साथ सम्मिलित होने का निर्णय लिया, जो कालांतर में पूर्वी पाकिस्तान और वर्तमान में बांग्लादेश का हिस्सा बना।

70. (2) चंद्रशेखर आजाद
हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन के अधिकांश प्रमुख क्रांतिकारियों को ब्रिटिश सरकार द्वारा फांसी दी गई थी। भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु को 23 मार्च 1931 को लाहौर जेल में मृत्युदंड दिया गया। इसके विपरीत, चंद्रशेखर आजाद को कभी फांसी नहीं दी गई। उन्होंने 27 फरवरी 1931 को इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में पुलिस के साथ अदम्य साहस से लड़ते हुए अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण की और अंतिम गोली स्वयं को मार ली, ताकि वे कभी भी जीवित अवस्था में शत्रुओं के हाथ न आ सकें।

71. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
वर्ष 1946 की अंतरिम सरकार में लियाकत अली खान को महत्वपूर्ण वित्त मंत्रालय का उत्तरदायित्व सौंपा गया था। हालांकि, उन्होंने इस पद का उपयोग कांग्रेस के नेतृत्व वाले मंत्रालयों के कार्यों में सहयोग करने के स्थान पर उनमें बाधाएं उत्पन्न करने हेतु किया। उन्होंने वित्त पर नियंत्रण के माध्यम से अन्य विभागों के आवश्यक व्ययों और लोक-कल्याणकारी योजनाओं को अवरुद्ध कर दिया। इस निरंतर प्रशासनिक गतिरोध ने यह स्पष्ट कर दिया कि कांग्रेस और मुस्लिम लीग का साथ मिलकर शासन करना व्यावहारिक रूप से असंभव है।

72. (1) I, II, IV और V
आरंभिक क्रांतिकारियों जैसे फड़के और सावरकर ने सशस्त्र संघर्ष और गुप्त संगठनों के माध्यम से भारत की स्वाधीनता का संकल्प लिया था। अरबिंदो घोष ने सक्रिय क्रांति से पूर्व निष्क्रिय प्रतिरोध का सिद्धांत प्रस्तुत किया था। ये सभी क्रांतिकारी पाश्चात्य दर्शन के स्थान पर शिवाजी और महाराणा प्रताप जैसे भारतीय गौरवशाली इतिहास और धार्मिक प्रतीकों से अत्यधिक प्रेरित थे। चापेकर बंधु भी अपनी सांस्कृतिक परंपराओं और राष्ट्र रक्षा की उत्कृष्ट भावना से ओतप्रोत थे, न कि उदारवादी पाश्चात्य राजनीतिक विचारधाराओं से।

73. (3) स्वास्थ्य और पुलिस जैसे सामान्य विषयों वाले प्रांतों के उप-संघों का प्रस्तावित गठन।
कैबिनेट मिशन योजना के अंतर्गत 'समूहन' एक ऐसी संवैधानिक संकल्पना थी जिसमें प्रांतों को परस्पर मिलकर अपनी पृथक कार्यपालिका और विधायिका निर्मित करने की अनुमति प्रदान की गई थी। ये समूह अपने स्तर पर सामान्य हितों के विषयों जैसे क्षेत्रीय प्रशासन और आर्थिक नीतियों का स्वतंत्र प्रबंधन कर सकते थे। यह व्यवस्था संघीय केंद्र के अधीन एक उप-संघ की भांति कार्य करती। इसका मुख्य उद्देश्य मुस्लिम बहुल प्रांतों को स्वायत्तता का अनुभव कराना था ताकि वे अखंड भारत के ढांचे में स्वयं को सुरक्षित समझ सकें।

74. (1) वे अक्सर राष्ट्रीय आंदोलन के समानांतर चलते थे, जो एक संयुक्त या संघीय भारत के भीतर सांस्कृतिक मान्यता और राजनीतिक अधिकारों की मांग करते थे।
भारत में क्षेत्रीय और भाषाई आंदोलन प्रायः राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम के पूरक के रूप में विकसित हुए। इन आंदोलनों का लक्ष्य राष्ट्र से पृथक होना नहीं, बल्कि स्वतंत्र भारत के अंतर्गत अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक और भाषाई पहचान को संवैधानिक संरक्षण दिलाना था। तेलुगु, तमिल और बंगाली अस्मिता के इन संघर्षों ने राष्ट्रीय आंदोलन को अधिक जन-केंद्रित और लोकतांत्रिक बनाया। इन समूहों ने ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध साझा संघर्ष करते हुए भी अपने आंतरिक सुधारों और क्षेत्रीय स्वायत्तता की मांगों को दृढ़ता से रखा था।

NODIA

(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

22. निम्नलिखित में से कौन-सी संवैधानिक विशेषता 1976 के 42वें संशोधन अधिनियम द्वारा स्पष्ट रूप से प्रस्तावना में जोड़ी गई थी, यद्यपि इसका दर्शन 1950 से ही अंतर्निहित था?
(1) लोकतांत्रिक
(2) पंथनिरपेक्ष
(3) गणराज्य
(4) संप्रभु
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

23. संविधान में परिकल्पित भारत के एक 'गणराज्य' होने की सबसे उपयुक्त व्याख्या क्या है?
(1) राज्य धर्म से पृथक है और सभी धर्मों के साथ समान व्यवहार करता है।
(2) सरकार की शक्तियाँ केंद्र और राज्यों के बीच विभाजित हैं।
(3) संविधान राज्य की मनमानी कार्रवाइयों के विरुद्ध मौलिक अधिकारों की गारंटी देता है।
(4) राज्य का प्रमुख निर्वाचित होता है और किसी भी विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग की अनुपस्थिति होती है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

24. भारतीय संविधान के निम्नलिखित प्रावधानों पर विचार कीजिए:
I. केंद्र द्वारा राज्य के राज्यपालों की नियुक्ति
II. सातवीं अनुसूची के माध्यम से शक्तियों का विभाजन
III. अखिल भारतीय सेवाएँ
उपरोक्त में से कौन-सा/से प्रावधान संविधान के संघीय स्वरूप को नहीं दर्शाता/दर्शाते हैं?
(1) केवल I और III
(2) केवल I और II
(3) केवल II और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

25. नेहरू के उस दृष्टिकोण, जिसने भारतीय संविधान को आकार दिया, की मुख्य विशेषताओं में से निम्नलिखित में से कौन-सा एक अपवाद है?
(1) सरकार का संसदीय स्वरूप
(2) सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार
(3) धर्मतांत्रिक राज्य तंत्र
(4) सामाजिक-आर्थिक न्याय के प्रति प्रतिबद्धता
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

26. स्वतंत्रता के बाद भारत द्वारा अपनाया गया आर्थिक ढांचा, जो नेहरू के लोकतांत्रिक समाजवाद के दृष्टिकोण को दर्शाता है, सबसे अच्छी तरह से इस प्रकार वर्णित किया गया है:
(1) सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों वाली एक मिश्रित अर्थव्यवस्था
(2) न्यूनतम राज्य निरीक्षण वाली एक अहस्तक्षेपकारी पूंजीवादी अर्थव्यवस्था
(3) सोवियत मॉडल के समान पूर्णतः राज्य नियंत्रित कमांड अर्थव्यवस्था
(4) श्रमिक समूहों द्वारा संचालित एक विकेंद्रीकृत सिंडिकलिस्ट अर्थव्यवस्था
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

27. समाज के समाजवादी ढांचे के संबंध में निम्नलिखित में से सही कथन/कथनों की पहचान कीजिए:
कथन I: 1955 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के आवड़ी अधिवेशन में, "समाज के समाजवादी ढांचे" को स्थापित करने का प्रस्ताव आधिकारिक तौर पर स्वीकार किया गया था।
कथन II: इस प्रस्ताव का उद्देश्य भारत में सभी कृषि भूमि और निजी उद्योगों का पूर्ण राष्ट्रीयकरण करना था।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है और कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

28. आर्थिक नियोजन से संबंधित निम्नलिखित संस्थानों और घटनाओं को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
I. योजना आयोग की स्थापना
II. राष्ट्रीय विकास परिषद की स्थापना
III. प्रथम पंचवर्षीय योजना का शुभारंभ
निम्नलिखित में से कौन-सा सही अनुक्रम है?
(1) I, II, III
(2) III, I, II
(3) I, III, II
(4) II, I, III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

29. सूची I में संस्था या नीति को सूची II में उसके संबंधित मुख्य कार्य या पक्ष के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I (संस्था/नीति):
A. योजना आयोग
B. राष्ट्रीय विकास परिषद
C. औद्योगिक नीति संकल्प 1956
D. पंचवर्षीय योजनाएं
सूची II (मुख्य कार्य/पक्ष):
i. सार्वजनिक क्षेत्र को प्रोत्साहन देने वाले भारत के आर्थिक संविधान के रूप में कार्य किया
ii. राष्ट्रीय योजनाओं का प्रारूप तैयार करने के लिए भौतिक, पूंजीगत और मानवीय संसाधनों का आकलन
iii. लक्षित आर्थिक विकास के लिए समयबद्ध रूपरेखा
iv. नियोजन प्रक्रिया में राज्यों की भागीदारी के लिए मंच
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iv, B-ii, C-i, D-iii

Downloaded from www.pdf.tube

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs, you are wasting valuable time.

Research shows that learning from **PRINTED BOOKS** has up to **4× HIGHER RETENTION** than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS** move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND** in competition.

In competitive exams, being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

अध्याय 24

स्वातंत्र्योत्तर राज्यों का पुनर्गठन एवं नेहरूवादी संस्थान निर्माण

1. भारत और पाकिस्तान के बीच परिसंपत्तियों और देनदारियों के विभाजन की देखरेख के लिए लॉर्ड माउंटबेटन की अध्यक्षता में निम्नलिखित में से किस निकाय की स्थापना की गई थी?
(1) सीमा आयोग
(2) विभाजन परिषद
(3) मध्यस्थता न्यायाधिकरण
(4) अंतर-डोमीनियन सम्मेलन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

2. सूची I में दी गई रियासतों को सूची II में एकीकरण के दौरान उनके संबंधित मुख्य मुद्दों के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I (रियासत):
A. त्रावणकोर
B. जोधपुर
C. भोपाल
D. जूनागढ़
सूची II (एकीकरण के दौरान मुख्य मुद्दा):
i. नवाब हिंदू बहुसंख्यक आबादी होने के बावजूद पाकिस्तान में सम्मिलित होना चाहता था
ii. दीवान सर सी.पी. रामास्वामी अय्यर ने स्वतंत्र रहने के निर्णय की घोषणा की
iii. महाराजा हनुवंत सिंह ने बेहतर सीमा शर्तों के लिए पाकिस्तान में शामिल होने पर विचार किया
iv. नवाब हमीदुल्ला खान स्वतंत्र रहना चाहते थे और विलय में विलंब किया
(1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

3. 1947 में सर सिरिल रेडक्लिफ की अध्यक्षता वाले सीमा आयोगों का प्राथमिक अधिदेश क्या था?
(1) भारत की सीमाओं के भीतर रियासतों की स्थिति निर्धारित करना
(2) भारत और पाकिस्तान के बीच सैन्य संपत्तियों का विभाजन करना
(3) बंगाल और पंजाब के दोनों हिस्सों की सीमाओं का निर्धारण करना
(4) एकीकृत रियासतों और ब्रिटिश भारतीय प्रांतों के बीच सीमा विवादों को सुलझाना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

4. रियासतों के एकीकरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. 'विलय पत्र' (इंस्ट्रूमेंट ऑफ एक्सेसन) ने भारत सरकार के अधिकार क्षेत्र को कड़ाई से केवल रक्षा, विदेश मामले और संचार तक सीमित रखा।
II. सरदार वल्लभभाई पटेल ने रियासतों से संबंधित मामलों को संभालने के लिए जुलाई 1947 में रियासती विभाग की स्थापना की।
III. सरदार पटेल की सहायता के लिए वी.पी. मेनन को रियासती विभाग का मंत्री नियुक्त किया गया था।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(1) केवल II और III
(2) केवल I और III
(3) I, II और III
(4) केवल I और II
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

5. निम्नलिखित में से किस रियासत ने प्रारंभ में 15 अगस्त 1947 तक 'विलय पत्र' पर हस्ताक्षर नहीं किए थे?
(1) बड़ौदा, मैसूर और ग्वालियर
(2) पटियाला, बीकानेर और जयपुर
(3) जूनागढ़, हैदराबाद और कश्मीर
(4) त्रावणकोर, कोचीन और मैसूर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

6. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। इन दोनों कथनों की सावधानीपूर्वक जांच करें और सही उत्तर का चयन करें:
कथन (A): भारत सरकार ने नवंबर 1947 में हैदराबाद के निज़ाम के साथ एक 'यथास्थिति समझौते' (स्टैंडस्टिल एग्रीमेंट) पर हस्ताक्षर किए।
कारण (R): भारत कश्मीर संघर्ष पर ध्यान केंद्रित करने के लिए एकीकरण प्रक्रिया में विलंब करना चाहता था।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।

38. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। इन दोनों कथनों की सावधानीपूर्वक जांच करें और सही उत्तर का चयन करें:

कथन (A): 1956 के 7वें संविधान संशोधन अधिनियम ने भाग A और भाग B राज्यों के बीच के अंतर को समाप्त कर दिया।

कारण (R): राज्य पुनर्गठन अधिनियम ने राष्ट्रीय एकीकरण और प्रशासनिक एकरूपता को बढ़ावा देने के लिए सभी प्रमुख राज्यों के लिए एक समान स्थिति अनिवार्य कर दी थी।

(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

39. क्षेत्रीय परिषदों (ज़ोनल काउंसिल) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. क्षेत्रीय परिषदों की स्थापना 1956 के राज्य पुनर्गठन अधिनियम द्वारा की गई थी।
II. वे संवैधानिक निकाय हैं जिनका स्पष्ट उल्लेख 1950 के मूल संविधान में किया गया है।
III. केंद्रीय गृह मंत्री सभी क्षेत्रीय परिषदों के साझा अध्यक्ष के रूप में कार्य करते हैं।

उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) I, II और III
(4) केवल I और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

40. 1956 में राजस्थान के पुनर्गठन के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?

(1) भाग C राज्य अजमेर-मेरवाड़ा का औपचारिक रूप से राजस्थान में विलय कर दिया गया था।
(2) माउंट आबू क्षेत्र को राजस्थान से बॉम्बे राज्य में स्थानांतरित कर दिया गया था।
(3) सुनेल टप्पा क्षेत्र सिरोंज के बदले मध्य प्रदेश को दे दिया गया था।
(4) 1956 में राजस्थान को कुछ समय के लिए केंद्र शासित प्रदेश के रूप में वर्गीकृत किया गया था।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

41. प्रारंभिक लोकतांत्रिक संस्थाओं से संबंधित निम्नलिखित घटनाओं को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:

I. भारत में प्रथम आम चुनाव का आयोजन
II. लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम का अधिनियमन
III. भारत निर्वाचन आयोग की स्थापना
IV. प्रथम लोकसभा का गठन

निम्नलिखित में से कौन-सा सही अनुक्रम है?

(1) III, II, I, IV
(2) II, III, I, IV
(3) III, I, II, IV
(4) I, III, II, IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

42. स्वतंत्र भारत के प्रथम मुख्य निर्वाचन आयुक्त के रूप में किसे नियुक्त किया गया था?

(1) सुकुमार सेन
(2) टी.एन. शेषन
(3) के.वी.के. सुंदरम
(4) वी.एस. रमादेवी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

43. 1951-52 के प्रथम आम चुनाव के दौरान सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार को लागू करने में सबसे महत्वपूर्ण प्रशासनिक चुनौती निम्नलिखित में से कौन-सी थी?

(1) पाकिस्तान के साथ तत्काल सीमा विवादों और शरणार्थी संकट को हल करना
(2) विभिन्न रियासतों को चुनावों में भाग लेने के लिए सहमत करना
(3) मतदान के लिए प्रारंभिक इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीनों का अभिकल्पन और परीक्षण करना
(4) एक विशाल निरक्षर जनसंख्या के लिए निर्वाचक नामावली तैयार करना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

44. भारत में प्रथम आम चुनाव के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. यह उस समय मानव इतिहास का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक अभ्यास था।
II. केवल उन पुरुषों को मत देने की अनुमति थी जिनके पास संपत्ति थी या जो कर देते थे।
III. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने लोकसभा और अधिकांश राज्य विधानसभाओं दोनों में भारी बहुमत प्राप्त किया।
IV. निर्दलीय उम्मीदवारों और कम्युनिस्ट समूहों ने विपक्ष का बड़ा भाग बनाया।

उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, III और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

45. सूची I में संसदीय निकाय या व्यक्तित्व को सूची II में नेहरू युग के संबंधित विवरणों के साथ सुमेलित कीजिए:

सूची I:

A. प्रथम लोकसभा अध्यक्ष
B. लोक लेखा समिति
C. राज्यसभा
D. प्रथम लोकसभा उपाध्यक्ष

सूची II:

B. मेहर चंद महाजन
C. शेख अब्दुल्ला
D. लॉर्ड माउंटबेटन

सूची II (भूमिका):
i. विलय के समय जम्मू और कश्मीर के प्रधानमंत्री
ii. नेशनल कॉन्फ्रेंस के नेता जिन्होंने जन आंदोलन का नेतृत्व किया
iii. गवर्नर-जनरल जिन्होंने विलय पत्र को स्वीकार किया
iv. जम्मू और कश्मीर के डोगरा शासक

(1) A-i, B-iv, C-iii, D-ii
(2) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

15. जम्मू और कश्मीर राज्य के संबंध में अस्थायी प्रावधानों को भारतीय संविधान के किस अनुच्छेद के अंतर्गत सम्मिलित किया गया था?
(1) अनुच्छेद 370
(2) अनुच्छेद 35A
(3) अनुच्छेद 371
(4) अनुच्छेद 239A
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

16. भारत की संविधान सभा के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसका गठन नवंबर 1946 में कैबिनेट मिशन योजना द्वारा तैयार की गई रुपरेखा के तहत किया गया था।
II. संविधान सभा के सदस्य सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार के आधार पर सीधे जनता द्वारा निर्वाचित थे।
III. रियासतों के प्रतिनिधियों को रियासतों के प्रमुखों द्वारा मनोनीत किया जाना था।
IV. डॉ. सच्चिदानंद सिन्हा को सभा का अस्थायी अध्यक्ष चुना गया था।
V. विभाजन के बाद, संविधान सभा की सदस्य संख्या घटकर 299 रह गई थी।

उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III और IV
(2) केवल I, III, IV और V
(3) केवल II, III, IV और V
(4) केवल I, II, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

17. 22 जनवरी 1947 को संविधान सभा द्वारा अपनाए गए 'उद्देश्य प्रस्ताव' (ऑब्जेक्टिव्स रेजोल्यूशन) ने मुख्य रूप से क्या प्रदान किया?
(1) संघ और राज्यों की विस्तृत प्रशासनिक संरचना
(2) भारतीय संविधान का दार्शनिक आधार और मार्गदर्शक सिद्धांत
(3) भारत और पाकिस्तान के बीच सैन्य संपत्तियों का तत्काल विभाजन
(4) संविधान सभा के संचालन के लिए प्रक्रिया के नियम
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

18. संविधान सभा द्वारा भारत के संविधान को औपचारिक रुप से किस तिथि को अंगीकृत और अधिनियमित किया गया था?
(1) 15 अगस्त 1947
(2) 26 नवंबर 1949
(3) 24 जनवरी 1950
(4) 26 जनवरी 1950
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

19. संविधान सभा की प्रारुप समिति (ड्राफ्टिंग कमेटी) की सदस्यता के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प अन्य से भिन्न है?
(1) अल्लादी कृष्णस्वामी अय्यर
(2) के.एम. मुंशी
(3) राजेंद्र प्रसाद
(4) एन. गोपालस्वामी आयंगर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

20. सूची I में संविधान सभा की समितियों को सूची II में उनके संबंधित अध्यक्षों के साथ सुमेलित कीजिए:

सूची I (समिति):
A. संघ शक्ति समिति
B. प्रांतीय संविधान समिति
C. प्रारुप समिति
D. संचालन समिति

सूची II (अध्यक्ष):
i. डॉ. बी.आर. अंबेडकर
ii. डॉ. राजेंद्र प्रसाद
iii. जवाहरलाल नेहरु
iv. सरदार वल्लभभाई पटेल

(1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(2) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

21. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रुप में अंकित किया गया है। इन दोनों कथनों की सावधानीपूर्वक जांच करें और सही उत्तर का चयन करें:

कथन (A): भारतीय संविधान को स्वरुप में संघीय किंतु भावना में एकात्मक बताया गया है।

कारण (R): संविधान में सशक्त केंद्रीकरण की प्रवृत्तियाँ सम्मिलित हैं, जैसे एकल नागरिकता और राज्य की सीमाओं को परिवर्तित करने की संसद की शक्ति।

(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।

(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

7. 1948 में 'ऑपरेशन पोलो' के दौरान भारतीय सेना के कमांडर-इन-चीफ कौन थे?
(1) जनरल के.एम. करियप्पा
(2) जनरल के.एस. थिमैया
(3) मेजर जनरल जे.एन. चौधरी
(4) जनरल सर रॉय बुचर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

8. हैदराबाद के रजाकारों के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए:
(1) निज़ाम पर दबाव बनाने के लिए उन्हें भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा सक्रिय रूप से समर्थन दिया गया था।
(2) वे मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन (MIM) से संबद्ध एक अर्धसैनिक स्वयंसेवक बल थे।
(3) उनका नेतृत्व कासिम रजवी ने किया था और उनका उद्देश्य हैदराबाद की स्वतंत्र स्थिति को बनाए रखना था।
(4) किसानों और राजनीतिक कार्यकर्ताओं के विरुद्ध उनकी दमनकारी गतिविधियों ने भारतीय सैन्य हस्तक्षेप को अनिवार्य कर दिया।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

9. हैदराबाद के एकीकरण के संबंध में निम्नलिखित में से सही कथन/कथनों की पहचान कीजिए:
कथन I: हैदराबाद के निज़ाम ने भारत के साथ विवाद में हस्तक्षेप करने के लिए संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद का द्वार खटखटाया था।
कथन II: भारत सरकार ने आधिकारिक तौर पर 'ऑपरेशन पोलो' को विदेशी क्षेत्र पर अधिकार करने के लिए एक सैन्य आक्रमण के रूप में वर्गीकृत किया था।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है और कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

10. 'ऑपरेशन पोलो' के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह 13 सितंबर 1948 को प्रारंभ हुआ था।
II. यह यथास्थिति समझौते के उल्लंघन और रजाकारों द्वारा बढ़ते अत्याचारों के कारण आवश्यक हो गया था।
III. निज़ाम ने औपचारिक रूप से 17 सितंबर 1948 को आत्मसमर्पण कर दिया।
IV. आत्मसमर्पण के बाद, निज़ाम को सभी प्रशासनिक भूमिकाओं से हटा दिया गया और पाकिस्तान निर्वासित कर दिया गया।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

11. कश्मीर के एकीकरण से संबंधित निम्नलिखित घटनाओं को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
I. महाराजा हरि सिंह द्वारा 'विलय पत्र' पर हस्ताक्षर करना
II. उत्तर-पश्चिम सीमा प्रांत के कबीलाई आक्रमणकारियों द्वारा हमला
III. कश्मीर और पाकिस्तान के बीच यथास्थिति समझौते पर हस्ताक्षर
IV. संयुक्त राष्ट्र द्वारा कराया गया औपचारिक युद्धविराम
निम्नलिखित में से कौन-सा सही अनुक्रम है?
(1) I, II, III, IV
(2) III, II, I, IV
(3) II, I, III, IV
(4) III, I, II, IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

12. निम्नलिखित में से कौन-सा महाराजा हरि सिंह के किसी भी डोमीनियन में सम्मिलित होने में प्रारंभिक संकोच का कारण नहीं था?
(1) वह जम्मू और कश्मीर को एक स्वतंत्र राज्य बनाए रखने की आकांक्षा रखते थे।
(2) वह अंग्रेजों के साथ एक गुप्त रक्षा समझौते से बंधे थे जो विलय को प्रतिबंधित करता था।
(3) उन्हें पाकिस्तान में शामिल होने के लिए मुस्लिम कॉन्फ्रेंस के दबाव का सामना करना पड़ा।
(4) वह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के लोकतांत्रिक और समाजवादी झुकाव से सशंकित थे।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

13. नवाब के पलायन के बाद किस पद्धति के माध्यम से जूनागढ़ रियासत को औपचारिक रूप से भारतीय संघ में एकीकृत किया गया था?
(1) राज्य को एकीकृत करने के लिए गवर्नर-जनरल द्वारा जारी एक विशेष कार्यकारी आदेश
(2) एक प्रत्यक्ष सैन्य विजय जिसके परिणामस्वरूप राज्य विधानसभा भंग हो गई
(3) फरवरी 1948 में आयोजित एक जनमत संग्रह (प्लेबिसाइट) जिसमें बहुमत ने भारत के पक्ष में मतदान किया
(4) संयुक्त राष्ट्र में दोनों देशों के बीच हस्ताक्षरित एक द्विपक्षीय संधि
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

14. सूची I में दिए गए व्यक्तियों को सूची II में कश्मीर एकीकरण के दौरान उनकी संबंधित भूमिकाओं के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I (व्यक्ति):
A. हरि सिंह

Downloaded from www.pdf.tube

(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

30. 1956 के औद्योगिक नीति संकल्प के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसने राज्य की भूमिका के आधार पर उद्योगों को तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया।
II. अनुसूची A के उद्योग विशेष रूप से सार्वजनिक क्षेत्र के लिए आरक्षित थे।
III. इसने सभी क्षेत्रों में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के प्रवेश को पूर्णतः प्रतिबंधित कर दिया।
IV. यह आर्थिक विकास के महालनोबिस मॉडल से प्रभावित था।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से गलत है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और IV
(3) केवल I और IV
(4) केवल III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

31. निम्नलिखित में से कौन 1953 में नियुक्त राज्य पुनर्गठन आयोग (SRC) का सदस्य नहीं था?
(1) एस.के. धर
(2) फ़ज़ल अली
(3) के.एम. पणिक्कर
(4) एच.एन. कुंजरू
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

32. राज्य पुनर्गठन आयोग (1953-56) की सिफारिशों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
(1) इसने राज्यों के चार-स्तरीय वर्गीकरण को समाप्त करने की सिफारिश की।
(2) इसने भाषा को राज्यों के पुनर्गठन के एकमात्र मानदंड के रूप में स्वीकार किया।
(3) इसने 16 राज्यों और 3 केंद्र शासित प्रदेशों के निर्माण का सुझाव दिया।
(4) इसने राष्ट्रीय एकता, सुरक्षा और आर्थिक व्यवहार्यता को प्रमुख कारकों के रूप में महत्व दिया।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

33. प्रारंभिक भाषाई प्रांत आयोगों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. एस.के. धर आयोग (1948) ने प्रशासनिक सुविधा के स्थान पर भाषाई आधार पर राज्यों के पुनर्गठन की सिफारिश की थी।
II. JVP समिति (1948) में जवाहरलाल नेहरू, वल्लभभाई पटेल और पट्टाभि सीतारमैया सम्मिलित थे।
III. JVP समिति ने औपचारिक रूप से भाषा को राज्य पुनर्गठन के प्राथमिक आधार के रूप में स्वीकार किया।
IV. पोट्टी श्रीरामुलु की मृत्यु ने व्यापक विरोध प्रदर्शन प्रारंभ कर दिए जिसके कारण आंध्र राज्य का निर्माण हुआ।
V. आंध्र राज्य का गठन 1953 में मद्रास राज्य से तेलुगु भाषी क्षेत्रों को पृथक करके किया गया था।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से गलत है/हैं?
(1) केवल II और IV
(2) केवल I और III
(3) केवल I, III और V
(4) केवल II, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

34. 1952 में पोट्टी श्रीरामुलु की 56 दिनों की भूख हड़ताल और उसके पश्चात हुई मृत्यु का प्रत्यक्ष राजनीतिक प्रभाव क्या था?
(1) प्रथम भाषाई राज्य आंध्र का निर्माण
(2) हैदराबाद का भारतीय संघ में एकीकरण
(3) नेहरू मंत्रिमंडल का तत्काल त्यागपत्र
(4) राज्य पुनर्गठन अधिनियम का पारित होना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

35. धर आयोग की रिपोर्ट के तुरंत बाद किस समिति ने राष्ट्रीय एकता की चिंताओं का हवाला देते हुए राज्यों के पुनर्गठन के आधार के रूप में भाषा को अस्वीकार कर दिया था?
(1) शाह आयोग
(2) फ़ज़ल अली आयोग
(3) JVP समिति
(4) कोठारी आयोग
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

36. सूची I में 1956 से पूर्व के राज्य वर्गीकरण को सूची II में मूल संविधान के अंतर्गत उनके विवरण के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I (1956 से पूर्व वर्गीकरण):
A. भाग A राज्य
B. भाग B राज्य
C. भाग C राज्य
D. भाग D क्षेत्र
सूची II (विवरण):
i. राजप्रमुख द्वारा शासित पूर्व रियासतें
ii. पूर्व मुख्य आयुक्त के प्रांत और कुछ छोटी रियासतें
iii. उपराज्यपाल द्वारा शासित अंडमान और निकोबार द्वीप समूह
iv. राज्यपाल द्वारा शासित पूर्व ब्रिटिश भारतीय प्रांत
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

37. 1956 के राज्य पुनर्गठन अधिनियम के परिणामस्वरूप कितने राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों का निर्माण हुआ?
(1) 16 राज्य और 3 केंद्र शासित प्रदेश
(2) 15 राज्य और 5 केंद्र शासित प्रदेश
(3) 14 राज्य और 6 केंद्र शासित प्रदेश
(4) 14 राज्य और 5 केंद्र शासित प्रदेश
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

75. (4) दोनों अधिराज्यों के स्थायी संविधान के रूप में भारत सरकार अधिनियम 1935 को तत्काल अपनाना।
भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम 1947 ने भारत सचिव के पद को समाप्त किया और रियासतों पर ब्रिटिश प्रभुसत्ता का अंत कर दिया। इसने ब्रिटिश सम्राट की 'भारत का सम्राट' जैसी उपाधि भी विलोपित कर दी। हालांकि, इस अधिनियम ने 1935 के कानून को स्थायी संविधान के रूप में स्वीकार नहीं किया था। इसके स्थान पर यह प्रावधान किया गया कि जब तक नवीन संविधान निर्मित नहीं हो जाते, तब तक दोनों अधिराज्य 1935 के अधिनियम के ढांचे के अंतर्गत ही अपने अंतरिम प्रशासन और विधायी कार्यों का संचालन करेंगे।

76. (2) पूरे प्रांत में धार्मिक समुदायों का आपस में गुंथा होना और सीमा आयोग द्वारा अचानक, मनमाना विभाजन।
पंजाब में विभाजन की विभीषिका इसलिए अधिक विनाशकारी थी क्योंकि वहां हिंदू, मुस्लिम और सिख समुदाय सदियों से परस्पर मिलकर रहते थे। सीमा आयोग द्वारा बिना किसी पूर्व सूचना और सूक्ष्म भौगोलिक विश्लेषण के अचानक खींची गई रेखा ने करोड़ों लोगों को रातों-रात अपनी ही भूमि पर पराया बना दिया। सीमाओं की घोषणा होते ही लोग प्राण रक्षा हेतु व्याकुल होकर पलायन करने लगे। इस अनियोजित और कृत्रिम विभाजन ने सांप्रदायिक उन्माद को भड़काया, जिससे व्यापक नरसंहार और अभूतपूर्व विस्थापन की स्थिति उत्पन्न हुई।

77. (3) फ्री INDIA लीजन
द्वितीय विश्व युद्ध के समय जब सुभाष चंद्र बोस जर्मनी में थे, तब उन्होंने वहां बंदी बनाए गए भारतीय सैनिकों को संगठित कर 'फ्री इंडिया लीजन' का गठन किया था। इन पराक्रमी सैनिकों ने नेताजी के नेतृत्व में भारत की मुक्ति हेतु युद्ध लड़ने का पवित्र संकल्प लिया। यद्यपि इसका व्यापक प्रयोग बड़े सैन्य अभियानों में नहीं हो सका, परंतु इसने विदेशों में रह रहे भारतीयों में अटूट देशभक्ति का संचार किया। यह विशिष्ट सैन्य इकाई नेताजी की अद्वितीय रणनीतिक और कूटनीतिक कुशलता का ज्वलंत प्रमाण थी।

78. (1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के क्रांतिकारियों को जनता ने उनके अतुलनीय योगदान हेतु विशिष्ट उपाधियों से अलंकृत किया है। सुभाष चंद्र बोस को उनकी नेतृत्व क्षमता के कारण 'नेताजी' कहा गया। भगत सिंह अपने सर्वोच्च बलिदान के कारण 'शहीद-ए-आजम' के रूप में अमर हुए। चंद्रशेखर ने कभी बंदी न बनने की प्रतिज्ञा के कारण 'आजाद' की उपाधि अर्जित की। सूर्य सेन को उनके शिष्यों और साथियों द्वारा 'मास्टरदा' के आदरणीय संबोधन से पुकारा जाता था, जो उनकी सादगी और मार्गदर्शक भूमिका को प्रदर्शित करता है।

79. (1) राष्ट्रवाद ने ब्रिटिश साम्राज्यवादी शक्ति के सबसे वफादार साधनों, सशस्त्र बलों में भी गहरी पैठ बना ली थी।
वर्ष 1946 का नौसेना विद्रोह ब्रिटिश सत्ता के लिए एक अंतिम चेतावनी थी। इसने यह सिद्ध कर दिया कि अब भारतीय सैनिक और नाविक केवल ब्रिटिश आदेशों के दास नहीं रहे थे, बल्कि उनमें राष्ट्रवाद की भावना प्रज्वलित हो चुकी थी। जब साम्राज्य की वफादारी का मुख्य स्तंभ, सेना ही डगमगा गई, तो अंग्रेजों को यह सत्य स्वीकार करना पड़ा कि वे भारत पर अब बलपूर्वक शासन नहीं कर सकते। इस विद्रोह ने ब्रिटिश साम्राज्य के नैतिक और भौतिक आधार को पूर्णतः ध्वस्त कर दिया था।

80. (2) जन आंदोलनों, श्रमिक हड़तालों और सशस्त्र बलों में विद्रोहों की विशेषता वाला तीव्र राष्ट्रवादी उभार।
द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के पश्चात भारत में राजनीतिक चेतना का अभूतपूर्व विस्फोट हुआ। यह काल केवल कूटनीतिक वार्ताओं का नहीं, बल्कि सड़कों पर होने वाले प्रखर विरोध प्रदर्शनों, आजाद हिंद फौज के मुकदमों के विरुद्ध जन-उभार और नौसेना विद्रोह जैसी घटनाओं का साक्षी रहा। देश के विविध भागों में औद्योगिक श्रमिकों की हड़तालें और कृषक विद्रोह भी अत्यंत उग्र हो गए थे। इस व्यापक और सशक्त राष्ट्रवादी लहर ने ब्रिटिश प्रशासन को यह स्पष्ट संदेश दिया कि अब उनका भारत में बने रहना असंभव है।

www.nodia.in

Click Here to Buy book on Amazon

i. एम.ए. आयंगर
ii. जी.वी. मावलंकर
iii. राज्यों की परिषद (काउंसिल ऑफ स्टेट्स) जिसकी स्थापना 1952 में हुई
iv. वित्तीय नियंत्रण का प्रयोग करने वाली प्राचीनतम संसदीय समिति

(1) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(2) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

46. 2 अक्टूबर 1959 को प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने राजस्थान के किस जिले में पंचायती राज व्यवस्था का शुभारंभ किया था?

(1) जोधपुर
(2) जयपुर
(3) उदयपुर
(4) नागौर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

47. बलवंतराय मेहता समिति के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. इसकी नियुक्ति 1957 में सामुदायिक विकास कार्यक्रम के कार्यसंचालन की जांच के लिए की गई थी।
II. इसने द्वि-स्तरीय पंचायती राज व्यवस्था की स्थापना की सिफारिश की।
III. इसने सुझाव दिया कि ब्लॉक स्तर पर पंचायत समिति कार्यकारी निकाय होनी चाहिए।
IV. इसने ग्राम पंचायत के लिए प्रत्यक्ष निर्वाचन की सिफारिश की।
V. जिला स्तर पर जिला परिषद की कल्पना मुख्य रूप से एक सलाहकार और पर्यवेक्षी निकाय के रूप में की गई थी।

उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(1) केवल I, III, IV और V
(2) केवल I, II, IV और V
(3) केवल II, III, IV और V
(4) केवल I, II, III और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

48. राजस्थान के पश्चात, 1959 में पंचायती राज व्यवस्था को अपनाने और लागू करने वाला दूसरा राज्य कौन-सा था?

(1) मध्य प्रदेश
(2) आंध्र प्रदेश
(3) उत्तर प्रदेश
(4) महाराष्ट्र
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

49. सामुदायिक विकास कार्यक्रम के संबंध में निम्नलिखित में से सही कथन/कथनों की पहचान कीजिए:

कथन I: सामुदायिक विकास कार्यक्रम (1952) जनभागीदारी के अभाव के कारण अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में काफी हद तक विफल रहा।
कथन II: बलवंतराय मेहता समिति ने इसी कमी को दूर करने के लिए 'लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण' की सिफारिश की थी।

(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है और कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

50. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। इन दोनों कथनों की सावधानीपूर्वक जांच करें और सही उत्तर का चयन करें:

कथन (A): नेहरू ने पंचायती राज के प्रारंभ को भारत में लोकतांत्रिक संस्थाओं के निर्माण में एक क्रांतिकारी कदम माना।
कारण (R): इसका उद्देश्य प्रशासनिक शक्तियों को सीधे ग्राम स्तर पर हस्तांतरित करना था, जिससे विकास योजना में जमीनी स्तर की भागीदारी सुनिश्चित हो सके।

(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

51. सूची I में सर्वोच्च न्यायालय के महत्वपूर्ण प्रारंभिक वादों को सूची II में उनके प्राथमिक विषय के साथ सुमेलित कीजिए:

सूची I (वाद):
A. ए.के. गोपालन वाद (1950)
B. शंकरी प्रसाद वाद (1951)
C. रमेश थापर वाद (1950)
D. चंपकम दोराईराजन वाद (1951)

सूची II (विषय):
i. भाषण और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता (क्रॉस रोड्स पर प्रतिबंध)
ii. निवारक निरोध और जीवन का अधिकार (अनुच्छेद 21)
iii. प्रथम संशोधन और शिक्षण संस्थानों में आरक्षण की वैधता
iv. मौलिक अधिकारों की संशोधनीयता (प्रथम संशोधन की वैधता)

(1) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(2) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

52. भारत के सर्वोच्च न्यायालय का औपचारिक रूप से उद्घाटन किस तिथि को किया गया था?

Downloaded from www.pdf.tube

(1) 26 नवंबर 1949
(2) 26 जनवरी 1950
(3) 28 जनवरी 1950
(4) 15 अगस्त 1950
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

53. निम्नलिखित संवैधानिक प्रावधानों पर विचार कीजिए:
I. सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीशों के कार्यकाल की सुरक्षा
II. न्यायाधीशों के वेतन का भारत की संचित निधि पर भारित होना
III. सामान्य समय के दौरान न्यायिक वेतन को कम करने की कार्यपालिका की शक्ति
उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन भारत में न्यायपालिका की स्वतंत्रता को सुरक्षित करने में सही है/हैं?
(1) केवल II और III
(2) केवल I और III
(3) केवल I और II
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

54. निम्नलिखित में से किसने स्वतंत्र भारत के प्रथम मुख्य न्यायाधीश के रूप में कार्य किया?
(1) पतंजलि शास्त्री
(2) एच.जे. कानिया
(3) एम.सी. महाजन
(4) एस.आर. दास
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

55. गणतंत्र के प्रारंभिक वर्षों में, नेहरुवादी सरकार ने प्रायः उन न्यायिक निर्णयों पर कैसी प्रतिक्रिया दी जिन्होंने भूमि सुधार कानूनों को निरस्त कर दिया था?
(1) न्यायालयों को पूर्णतः दरकिनार करने के लिए विशेष कार्यकारी आदेश पारित करके
(2) सुधारों को लागू करने में विफल रहने वाली राज्य सरकारों को भंग करके
(3) विशिष्ट राष्ट्रपति आदेश के माध्यम से असहयोग करने वाले न्यायाधीशों को हटाकर
(4) भूमि सुधार कानूनों की रक्षा के लिए संविधान संशोधन अधिनियमित करके
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

56. गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) को आकार देने वाले निम्नलिखित सम्मेलनों को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
I. बेलग्रेड सम्मेलन
II. एशियाई संबंध सम्मेलन
III. बांडुंग सम्मेलन
निम्नलिखित में से कौन-सा सही अनुक्रम है?
(1) I, II, III
(2) II, III, I
(3) III, I, II
(4) II, I, III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

57. निम्नलिखित नेताओं में से किसे गुटनिरपेक्ष आंदोलन के संस्थापक वास्तुकारों में से एक नहीं माना जाता है?
(1) जवाहरलाल नेहरु
(2) जोसिप ब्रोज़ टीटो
(3) विंस्टन चर्चिल
(4) गमाल अब्देल नासिर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

58. नेहरु द्वारा परिकल्पित गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) के मुख्य सिद्धांतों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. वैश्विक मामलों से पूर्ण पृथकता और सभी संघर्षों में कठोर तटस्थता।
II. शीत युद्ध के शक्ति गुटों से नव-स्वतंत्र राष्ट्रों की स्वायत्तता को सुरक्षित रखना।
III. विश्व स्तर पर उपनिवेशवाद विरोधी और साम्राज्यवाद विरोधी संघर्षों का समर्थन करना।
IV. नाटो और वारसॉ संधि का मुकाबला करने के लिए एक तीसरा सैन्य गुट बनाना।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से गलत है/हैं?
(1) केवल I और IV
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) केवल III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

59. गुटनिरपेक्ष आंदोलन के संस्थापक और उनके संबंधित देश के सही सुमेलित युग्म की पहचान कीजिए:
(1) सुकर्णो - घाना
(2) क्वामे नक्रूमा - इंडोनेशिया
(3) गमाल अब्देल नासिर - तुर्की
(4) जोसिप ब्रोज़ टीटो - यूगोस्लाविया
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

60. जवाहरलाल नेहरु ने भारत की गुटनिरपेक्षता की नीति को 'सकारात्मक तटस्थता' से किस प्रकार भिन्न बताया?
(1) गुटनिरपेक्षता का अर्थ सोवियत संघ के साथ गुप्त रूप से गठबंधन करना था, जबकि तटस्थता का अर्थ अमेरिका के साथ गठबंधन करना था।
(2) तटस्थता का अर्थ युद्ध से बाहर रहना है, जबकि गुटनिरपेक्षता का अर्थ सैन्य गुटों में सम्मिलित हुए बिना शांति को बढ़ावा देने के लिए विश्व मामलों में सक्रिय भागीदारी है।
(3) नेहरु द्वारा संयुक्त राष्ट्र से पूर्ण अलगाव दर्शाने के लिए दोनों शब्दों का प्रयोग किया गया था।
(4) गुटनिरपेक्षता ने गुट वाले देशों के साथ व्यापार को प्रतिबंधित किया, जबकि तटस्थता ने मुक्त व्यापार को बढ़ावा दिया।

(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

61. पंचशील के निम्नलिखित सिद्धांतों पर विचार कीजिए:
I. एक-दूसरे की क्षेत्रीय अखंडता और संप्रभुता के लिए पारस्परिक सम्मान
II. पारस्परिक अनाक्रमण
III. एक-दूसरे के आंतरिक मामलों में पारस्परिक हस्तक्षेप न करना
IV. समानता और पारस्परिक लाभ
V. शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल II, III, IV और V
(3) I, II, III, IV और V
(4) केवल I, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

62. 1954 के ऐतिहासिक पंचशील समझौते पर भारत और किस अन्य देश के बीच हस्ताक्षर किए गए थे?
(1) पाकिस्तान
(2) सोवियत संघ
(3) श्रीलंका
(4) चीन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

63. सूची I में घटना या संधि को सूची II में संबंधित वर्ष के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I:
A. एशियाई संबंध सम्मेलन
B. बांडुंग सम्मेलन
C. बेलग्रेड शिखर सम्मेलन (प्रथम NAM)
D. पंचशील पर हस्ताक्षर
सूची II:
i. 1955
ii. 1961
iii. 1947
iv. 1954
(1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(2) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

64. नेहरू के अंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोण और विदेश नीति के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए:
(1) उन्होंने निशस्त्रीकरण और परमाणु अप्रसार के लक्ष्य का पुरजोर समर्थन किया।
(2) गणतंत्र बनते ही उन्होंने तुरंत भारत को राष्ट्रमंडल (कॉमनवेल्थ ऑफ नेशंस) से पृथक कर लिया था।
(3) उन्होंने संयुक्त राष्ट्र को वैश्विक शांति बनाए रखने के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में देखा।
(4) उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद की नीति का कड़ा विरोध किया।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

65. निम्नलिखित में से कौन 1950 के दशक में एशियाई एकजुटता पर नेहरू के बल देने के अंतर्निहित उद्देश्य का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(1) पश्चिमी यूरोप का मुकाबला करने के लिए एक स्थायी एशियाई सैन्य गठबंधन बनाना
(2) सामूहिक आर्थिक आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देना और नव-स्वतंत्र राष्ट्रों की राजनीतिक आवाज सशक्त करना
(3) पूरे दक्षिण-पूर्व एशिया पर चीनी प्रभुत्व सुनिश्चित करना
(4) मिशनरी कूटनीति के माध्यम से विश्व स्तर पर भारतीय लोकतांत्रिक समाजवाद का प्रसार करना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

66. 1959 में दलाई लामा को भारत द्वारा राजनीतिक शरण देने का प्रत्यक्ष भू-राजनीतिक प्रभाव क्या था?
(1) इससे भारत-चीन संबंधों में गिरावट आई, जो अंततः 1962 के संघर्ष का कारण बनी
(2) इसके कारण पंचशील समझौते पर तत्काल और बिना शर्त हस्ताक्षर हुए
(3) इसके परिणामस्वरूप भारतीय राज्य की निंदा करने वाला एक औपचारिक संयुक्त राष्ट्र प्रस्ताव आया
(4) इसने पाकिस्तान को भारत के साथ एक पारस्परिक सैन्य रक्षा समझौते पर हस्ताक्षर करने के लिए विवश किया
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

67. भारत-चीन युद्ध के संबंध में निम्नलिखित में से सही कथन/कथनों की पहचान कीजिए:
कथन I: भारत द्वारा अपनाई गई "अग्रवर्ती नीति" (फॉरवर्ड पॉलिसी) में चीनी अतिक्रमण को रोकने के लिए विवादित क्षेत्रों में भारतीय चौकियाँ स्थापित करना सम्मिलित था।
कथन II: चीन ने अग्रवर्ती नीति को स्वीकार कर लिया और स्वेच्छा से अक्साई चिन क्षेत्र से अपनी सेना वापस बुला ली।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है और कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

68. मैकमोहन रेखा, जो 1962 के भारत-चीन युद्ध के दौरान विवाद का एक प्रमुख बिंदु थी, चीन और किस भारतीय क्षेत्र के बीच सीमा के रूप में कार्य करती है?
(1) लद्दाख
(2) हिमाचल प्रदेश
(3) सिक्किम
(4) अरुणाचल प्रदेश (तत्कालीन NEFA)
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Click Here to Buy book on Amazon

परिवर्तन की शक्ति इसे केंद्र की ओर झुकाती हैं। आपातकाल में संविधान पूर्णतः एकात्मक स्वरूप धारण कर लेता है ताकि राष्ट्रीय एकता और अखंडता को अक्षुण्ण रखा जा सके।

22. (2) पंथनिरपेक्ष
1976 के 42वें संविधान संशोधन द्वारा प्रस्तावना में 'पंथनिरपेक्ष' शब्द जोड़ा गया। यद्यपि यह मूल प्रस्तावना में नहीं था, परंतु भारतीय राज्य का स्वरूप प्रारंभ से ही धर्मनिरपेक्ष रहा है। अनुच्छेद 25 से 28 के तहत धार्मिक स्वतंत्रता पहले से ही उपलब्ध थी। भारतीय पंथनिरपेक्षता का अर्थ है कि राज्य का अपना कोई धर्म नहीं होगा और वह सभी धर्मों को समान सम्मान व संरक्षण प्रदान करेगा।

23. (4) राज्य का प्रमुख निर्वाचित होता है और किसी भी विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग की अनुपस्थिति होती है।
भारत एक गणराज्य है क्योंकि यहाँ राज्य का सर्वोच्च प्रमुख (राष्ट्रपति) अप्रत्यक्ष रूप से एक निश्चित कार्यकाल हेतु निर्वाचित होता है। यह वंशानुगत राजशाही के विपरीत है। गणतंत्र में राजनीतिक संप्रभोता किसी व्यक्ति के बजाय जनता में निहित होती है। इसके अंतर्गत सभी सार्वजनिक पद प्रत्येक नागरिक के लिए बिना किसी भेदभाव के खुले होते हैं, जो लोकतांत्रिक समानता के सिद्धांत को मजबूती प्रदान करते हैं।

24. (1) केवल I और III
भारतीय संविधान के एकात्मक लक्षणों में केंद्र द्वारा राज्यपालों की नियुक्ति और अखिल भारतीय सेवाएँ प्रमुख हैं, क्योंकि ये राज्यों पर केंद्र के नियंत्रण को बढ़ाते हैं। इसके विपरीत, सातवीं अनुसूची के माध्यम से शक्तियों का विभाजन एक स्पष्ट संघीय विशेषता है। राज्यपाल केंद्र के प्रतिनिधि के रूप में कार्य करते हैं। ये विशेषताएँ भारत के संघीय ढांचे को लचीला और राष्ट्रीय हितों के प्रति केंद्र-उन्मुख बनाती हैं।

25. (3) धर्मतांत्रिक राज्य तंत्र
जवाहरलाल नेहरू के आधुनिक भारत के दृष्टिकोण में धर्मतांत्रिक राज्य तंत्र हेतु कोई स्थान नहीं था। वे एक धर्मनिरपेक्ष राज्य के प्रबल समर्थक थे। उनके विजन में संसदीय शासन स्वरूप और सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार अत्यंत महत्वपूर्ण थे। नेहरू ने सामाजिक-आर्थिक न्याय और वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर बल दिया ताकि भारत आधुनिक राष्ट्र बन सके। उन्होंने धर्म को व्यक्तिगत आस्था का विषय मानकर उसे राजनीति से दूर रखने का प्रयास किया।

26. (1) सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों वाली एक मिश्रित अर्थव्यवस्था
स्वतंत्रता पश्चात भारत ने मिश्रित अर्थव्यवस्था का मॉडल अपनाया, जो नेहरूवादी लोकतांत्रिक समाजवाद की पहचान बना। इसमें रणनीतिक उद्योगों का नियंत्रण सरकार के पास रहा, जबकि अन्य क्षेत्र निजी उद्यमों हेतु खुले रखे गए। इसका उद्देश्य आर्थिक विकास के साथ सामाजिक न्याय सुनिश्चित करना था। नेहरू का मानना था कि संसाधनों की कमी को देखते हुए राज्य को आर्थिक नियोजन में सक्रिय और अग्रणी भूमिका निभानी चाहिए।

27. (3) कथन I सही है और कथन II गलत है।
1955 के आवड़ी अधिवेशन में 'समाज के समाजवादी ढांचे' का लक्ष्य स्वीकार किया गया। इसका उद्देश्य समानता और संसाधनों का जनहित में उपयोग था। नेहरू का समाजवाद सोवियत मॉडल जैसा नहीं था, जहाँ पूर्ण राष्ट्रीयकरण हो। भारत ने निजी संपत्ति का उन्मूलन नहीं किया, बल्कि मिश्रित अर्थव्यवस्था में सार्वजनिक क्षेत्र को प्रमुख भूमिका दी ताकि विकास संतुलित रहे और शोषण मुक्त समाज का निर्माण हो सके।

28. (3) I, III, II
आर्थिक नियोजन हेतु मार्च 1950 में योजना आयोग की स्थापना हुई। इसके पश्चात अप्रैल 1951 में प्रथम पंचवर्षीय योजना प्रारंभ हुई, जिसका मुख्य ध्यान कृषि पर था। नियोजन में राज्यों के साथ तालमेल और योजनाओं को अंतिम स्वीकृति देने हेतु अगस्त 1952 में राष्ट्रीय विकास परिषद का गठन किया गया। इस प्रकार पहले संस्था बनी, फिर योजना लागू हुई और अंत में राज्यों की भागीदारी सुनिश्चित हुई।

29. (3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
योजना आयोग का कार्य संसाधनों का आकलन कर विकास योजनाएं बनाना था। राष्ट्रीय विकास परिषद एक ऐसा मंच था जहाँ केंद्र और राज्यों के मुख्यमंत्री नियोजन पर चर्चा करते थे। औद्योगिक नीति संकल्प 1956 को भारत का 'आर्थिक संविधान' कहा जाता है क्योंकि इसने सार्वजनिक क्षेत्र के वर्चस्व की नींव रखी। पंचवर्षीय योजनाएं आर्थिक लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु एक निश्चित समयबद्ध रूपरेखा प्रदान करती थीं।

30. (4) केवल III
1956 का औद्योगिक नीति संकल्प महालनोबिस मॉडल पर आधारित था, जिसने भारी उद्योगों पर ध्यान केंद्रित किया। इसने उद्योगों को तीन श्रेणियों में बांटा, जिसमें अनुसूची क के उद्योग राज्य हेतु आरक्षित थे। इस नीति ने विदेशी निवेश को पूर्णतः प्रतिबंधित नहीं किया, बल्कि विनियमित किया। विदेशी पूंजी का स्वागत उन क्षेत्रों में हुआ जहाँ घरेलू क्षमताएं सीमित थीं। इसका मुख्य उद्देश्य आत्मनिर्भरता और संतुलित क्षेत्रीय विकास था।

31. (1) एस.के. धर
1953 के राज्य पुनर्गठन आयोग में न्यायमूर्ति फ़ज़ल अली अध्यक्ष थे, जबकि के.एम. पणिक्कर और एच.एन. कुंजरू सदस्य थे। एस.के. धर इसके सदस्य नहीं थे; उन्होंने 1948 के भाषाई प्रांत आयोग की अध्यक्षता की थी। फ़ज़ल अली आयोग ने भाषाई आधार पर पुनर्गठन की मांग का अध्ययन कर 1955 में रिपोर्ट दी। इसी की सिफारिशों ने 1956 के अधिनियम का मार्ग प्रशस्त किया, जिससे भारत का मानचित्र बदला।

32. (2) इसने भाषा को राज्यों के पुनर्गठन के एकमात्र मानदंड के रूप में स्वीकार किया।
राज्य पुनर्गठन आयोग ने भाषा को प्रमुख कारक माना, किंतु 'एकमात्र' आधार मानने से इनकार कर दिया। आयोग ने प्रशासनिक सुगमता, आर्थिक व्यवहार्यता और राष्ट्रीय सुरक्षा

NODIA

(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है और कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

79. राज्य पुनर्गठन अधिनियम 1956 और समवर्ती 7वें संविधान संशोधन के अंतर्गत, 'राजप्रमुख' की संस्था को समाप्त कर उसके स्थान पर निम्नलिखित पद सृजित किया गया:
(1) राज्यपाल
(2) मुख्यमंत्री
(3) उपराज्यपाल
(4) मुख्य आयुक्त
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

80. भारत में संस्था निर्माण के संबंध में नेहरु युग की सबसे स्थायी विरासत किसे माना जाता है?
(1) पड़ोसी देशों को दक्षिण एशियाई संघ में सम्मिलित करना
(2) नागरिक सर्वोच्चता और नियमित लोकतांत्रिक निर्वाचन स्थापित करना
(3) 1964 के मध्य से पूर्व निर्धनता और निरक्षरता के सभी रुपों को समाप्त करना
(4) भारत को एक स्थिर एकल-पार्टी सत्तावादी राज्य में परिवर्तित करना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

www.nodia.in

Downloaded from www.pdf.tube

69. निम्नलिखित में से कौन-सा 1962 के भारत-चीन युद्ध का परिणाम नहीं था?
(1) भारत की अंतरराष्ट्रीय छवि और नेहरू की व्यक्तिगत प्रतिष्ठा को गहरा आघात
(2) भारत के तत्कालीन रक्षा मंत्री का त्यागपत्र
(3) पूर्णतः कृषि पर ध्यान केंद्रित करने के लिए भारत के रक्षा बजट में भारी कटौती
(4) भारतीय सशस्त्र बलों को आधुनिक बनाने और सशक्त करने की आवश्यकता का अनुभव
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

70. भारत के वे रक्षा मंत्री कौन थे जिन्हें 1962 के भारत-चीन युद्ध की हार के पश्चात त्यागपत्र देना पड़ा था?
(1) सरदार स्वर्ण सिंह
(2) वी.के. कृष्ण मेनन
(3) वाई.बी. चव्हाण
(4) जगजीवन राम
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

71. 1963 में एक योजना प्रस्तावित की गई थी जिसमें वरिष्ठ कांग्रेस नेताओं को सरकारी पदों से त्यागपत्र देने और स्वयं को संगठनात्मक कार्य में समर्पित करने के लिए कहा गया था। इस योजना को किस नाम से जाना जाता है?
(1) देसाई योजना
(2) नेहरु योजना
(3) शास्त्री योजना
(4) कामराज योजना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

72. मई 1964 में जवाहरलाल नेहरु की मृत्यु के तुरंत बाद नेतृत्व परिवर्तन के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?
(1) लाल बहादुर शास्त्री को सर्वसम्मति से कांग्रेस संसदीय दल के नेता के रूप में चुना गया था।
(2) इंदिरा गांधी तुरंत भारत की प्रधानमंत्री के रूप में उनकी उत्तराधिकारी बनीं।
(3) मोरारजी देसाई ने कांग्रेस नेतृत्व के विरुद्ध एक सफल विद्रोह किया और प्रधानमंत्री बने।
(4) भारत के राष्ट्रपति ने लोकसभा को भंग कर दिया और नए आम चुनाव की घोषणा की।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

73. 1960 के दशक में राजनीतिक संक्रमण के दौरान, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में 'सिंडिकेट' शब्द का अर्थ था:
(1) तत्काल भूमि सुधार नीतियों की मांग करने वाले कट्टरपंथी समाजवादी नेता
(2) कांग्रेस को पराजित करने का प्रयास करने वाले विपक्षी दलों का गठबंधन
(3) पार्टी तंत्र को नियंत्रित करने वाले प्रभावशाली क्षेत्रीय कांग्रेस नेता
(4) प्रधानमंत्री द्वारा चुने गए वरिष्ठ मंत्रियों का आंतरिक मंत्रिमंडल
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

74. जवाहरलाल नेहरु के गिरते स्वास्थ्य और तत्पश्चात हुई मृत्यु का भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पर क्या महत्वपूर्ण राजनीतिक प्रभाव पड़ा?
(1) एक सर्वोपरि नेता से सामूहिक नेतृत्व की ओर संक्रमण
(2) पार्टी का तुरंत क्षेत्रीय संगठनों में विखंडन
(3) समाजवादी कार्यसूची को त्यागकर दक्षिणपंथी नीतियों को अपनाना
(4) सैन्य प्रतिष्ठान द्वारा पार्टी का पूर्ण अधिग्रहण
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

75. निम्नलिखित राजनीतिक हस्तियों में से उस विकल्प की पहचान कीजिए जिसे 1964 के संक्रमण के दौरान प्रधानमंत्री पद के लिए प्राथमिक दावेदार या 'किंगमेकर' नहीं माना गया था:
(1) मोरारजी देसाई
(2) लाल बहादुर शास्त्री
(3) के. कामराज
(4) सी. राजगोपालाचारी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

76. भारतीय राज्यों के एकीकरण और पुनर्गठन के संबंध में गलत युग्म की पहचान कीजिए:
(1) सरदार पटेल - भारत के लौह पुरुष जिन्होंने राज्यों के एकीकरण का नेतृत्व किया
(2) माउंटबेटन - रियासतों को पूर्ण स्वतंत्रता घोषित करने का परामर्श दिया
(3) वी.पी. मेनन - 'द स्टोरी ऑफ द इंटीग्रेशन ऑफ द इंडियन स्टेट्स' के लेखक
(4) पोट्टी श्रीरामुलु - पृथक तेलुगु भाषी राज्य के लिए आंदोलन किया
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

77. प्रस्तावना का निम्नलिखित में से कौन-सा तत्व प्रत्यक्ष रूप से संसाधनों का न्यायसंगत वितरण सुनिश्चित करने और वंचित वर्ग की रक्षा करने के नेहरु के दृष्टिकोण को दर्शाता है?
(1) विचार और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता
(2) व्यक्ति की गरिमा सुनिश्चित करने वाली बंधुता
(3) सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय
(4) प्रतिष्ठा और अवसर की समानता
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

78. नए राज्यों के निर्माण के संबंध में निम्नलिखित में से सही कथन/कथनों की पहचान कीजिए:
कथन I: भारत की संसद साधारण बहुमत से किसी भी राज्य से क्षेत्र पृथक करके एक नया राज्य बना सकती है।
कथन II: संबंधित राज्य विधायिका की सहमति संवैधानिक रूप से अनिवार्य है और इसे संसद द्वारा अस्वीकार नहीं किया जा सकता है।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।

11. (2) III, II, I, IV
कश्मीर एकीकरण का क्रम इस प्रकार है: अगस्त 1947 में महाराजा ने पाकिस्तान के साथ यथास्थिति समझौता किया। अक्टूबर 1947 में पाकिस्तान समर्थित कबीलाई लड़ाकों ने आक्रमण किया। संकट की घड़ी में महाराजा ने 26 अक्टूबर 1947 को विलय पत्र पर हस्ताक्षर किए और भारतीय सेना ने श्रीनगर को बचाया। अंततः, जनवरी 1949 में संयुक्त राष्ट्र के हस्तक्षेप के पश्चात दोनों देशों के बीच औपचारिक युद्धविराम प्रभावी हुआ।

12. (2) वह अंग्रेजों के साथ एक गुप्त रक्षा समझौते से बंधे थे जो विलय को प्रतिबंधित करता था।
महाराजा हरि सिंह कश्मीर को स्वतंत्र रखना चाहते थे, इसलिए उन्होंने किसी अधिराज्य में शामिल होने से इनकार किया। उन्हें मुस्लिम बहुसंख्यक आबादी और पाकिस्तान के संभावित दबाव का भय था। वे नेहरू के लोकतांत्रिक विचारों को राजशाही हेतु खतरा मानते थे। अंग्रेजों के साथ ऐसा कोई गुप्त समझौता नहीं था जो उन्हें भारत या पाकिस्तान में विलय करने से वैधानिक रूप से रोकता हो। विकल्प 2 गलत है।

13. (3) फरवरी 1948 में आयोजित एक जनमत संग्रह (प्लेबिसाइट) जिसमें बहुमत ने भारत के पक्ष में मतदान किया
जूनागढ़ के नवाब द्वारा पाकिस्तान में विलय की घोषणा पर वहां की जनता ने विद्रोह किया। नवाब के पलायन के बाद भारत ने प्रशासन संभाला। लोकतांत्रिक वैधता हेतु फरवरी 1948 में जनमत संग्रह आयोजित हुआ, जिसमें 99 प्रतिशत से अधिक जनता ने भारत में विलय का समर्थन किया। इस प्रकार जूनागढ़ औपचारिक रूप से भारतीय संघ का हिस्सा बना और पाकिस्तान का दावा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विफल हुआ।

14. (4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
कश्मीर विलय के समय हरि सिंह डोगरा शासक थे। मेहर चंद महाजन उस संकट में जम्मू-कश्मीर के प्रधानमंत्री थे जिन्होंने भारत से सैन्य सहायता मांगी। शेख अब्दुल्ला नेशनल कॉन्फ्रेंस के लोकप्रिय नेता थे जो भारत के धर्मनिरपेक्ष ढांचे के पक्षधर थे। लॉर्ड माउंटबेटन उस समय भारत के गवर्नर-जनरल थे जिन्होंने कश्मीर के भारत में संवैधानिक विलय को औपचारिक रूप से स्वीकार कर अपनी सहमति प्रदान की थी।

15. (1) अनुच्छेद 370
भारतीय संविधान के अनुच्छेद 370 के तहत जम्मू-कश्मीर को विशेष स्वायत्तता प्रदान करने वाले अस्थायी प्रावधान थे। यह राज्य को अपना संविधान बनाने की अनुमति देता था और संसद की विधायी शक्तियां सीमित करता था। इसे विशिष्ट परिस्थितियों के कारण शामिल किया गया था। अनुच्छेद 35A ने निवासियों को विशेष अधिकार दिए। इन प्रावधानों को अगस्त 2019 में केंद्र सरकार द्वारा संवैधानिक प्रक्रिया के माध्यम से निष्प्रभावी कर दिया गया।

16. (2) केवल I, III, IV और V
संविधान सभा का गठन कैबिनेट मिशन योजना के आधार पर अप्रत्यक्ष निर्वाचन द्वारा हुआ था, न कि प्रत्यक्ष सार्वभौमिक मताधिकार द्वारा। प्रांतीय विधानसभाओं के सदस्यों ने इनका चुनाव किया। रियासतों के प्रतिनिधि शासकों द्वारा नामित थे। डॉ. सच्चिदानंद सिन्हा को पहली बैठक में अस्थायी अध्यक्ष चुना गया। विभाजन के बाद मुस्लिम लीग के हटने से सदस्य संख्या 299 रह गई, जिनमें से 284 ने अंतिम संविधान पर हस्ताक्षर किए।

17. (2) भारतीय संविधान का दार्शनिक आधार और मार्गदर्शक सिद्धांत
जवाहरलाल नेहरू द्वारा प्रस्तुत 'उद्देश्य प्रस्ताव' ने संविधान निर्माण हेतु व्यापक वैचारिक ढांचा प्रदान किया। इसमें भारत को स्वतंत्र, संप्रभु और लोकतांत्रिक गणराज्य बनाने का संकल्प था। इसने सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय तथा अल्पसंख्यकों की सुरक्षा पर बल दिया। प्रस्ताव ने स्पष्ट किया कि समस्त शक्तियाँ जनता में निहित होंगी। यही प्रस्ताव बाद में भारतीय संविधान की प्रस्तावना का आधार बना और पूरी प्रक्रिया को दिशा दी।

18. (2) 26 नवंबर 1949
भारतीय संविधान सभा ने 26 नवंबर 1949 को संविधान को औपचारिक रूप से अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित किया। इसी तिथि से नागरिकता और चुनाव जैसे कुछ प्रावधान तत्काल प्रभावी हो गए थे। पूर्ण रूप से लागू करने हेतु 26 जनवरी 1950 की तिथि चुनी गई, क्योंकि 1930 में इसी दिन पूर्ण स्वराज्य का संकल्प लिया गया था। अब प्रतिवर्ष 26 नवंबर को भारत में 'संविधान दिवस' मनाया जाता है।

19. (3) राजेंद्र प्रसाद
डॉ. बी.आर. अंबेडकर की अध्यक्षता वाली प्रारुप समिति में सात सदस्य थे, जिनमें अल्लादी कृष्णस्वामी अय्यर और के.एम. मुंशी प्रमुख थे। डॉ. राजेंद्र प्रसाद संविधान सभा के स्थायी अध्यक्ष थे, किंतु वे प्रारुप समिति के सदस्य नहीं थे। प्रारुप समिति का कार्य संवैधानिक सलाहकार बी.एन. राव द्वारा तैयार मसौदे की जांच कर अंतिम रुप देना था। राजेंद्र प्रसाद ने संपूर्ण सभा की कार्यवाहियों का कुशलतापूर्वक संचालन किया था।

20. (4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
संविधान सभा के संचालन हेतु कई समितियां बनीं। जवाहरलाल नेहरु संघ शक्ति समिति के अध्यक्ष थे। सरदार पटेल ने प्रांतीय संविधान और मौलिक अधिकार समिति का नेतृत्व किया। डॉ. बी.आर. अंबेडकर सबसे महत्वपूर्ण प्रारुप समिति के अध्यक्ष थे। डॉ. राजेंद्र प्रसाद संचालन और प्रक्रिया नियम समिति के अध्यक्ष थे। इन नेताओं के सामूहिक नेतृत्व और विशेषज्ञता ने ही भारत के विशाल एवं विविध संविधान के निर्माण को संभव बनाया।

21. (1) A Standard R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
भारतीय संविधान 'अर्ध-संघीय' है क्योंकि इसमें संघीय और एकात्मक दोनों विशेषताएं हैं। सामान्यतः यह संघीय प्रणाली की तरह कार्य करता है, जहाँ शक्तियाँ विभाजित हैं। परंतु एकल नागरिकता, एकीकृत न्यायपालिका और संसद को सीमाओं में

Click Here to Buy book on Amazon

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) विभाजन परिषद
भारत-पाकिस्तान विभाजन के दौरान संपत्तियों और देनदारियों के बंटवारे हेतु लॉर्ड माउंटबेटन की अध्यक्षता में विभाजन परिषद गठित की गई थी। इसमें दोनों अधिराज्यों के प्रतिनिधि शामिल थे। परिषद को प्रशासनिक व वित्तीय संपत्तियों पर अंतिम निर्णय का अधिकार था। इसकी सहायता हेतु विशेषज्ञों की संचालन समिति और कई उप-समितियां बनाई गईं थीं ताकि रेल, डाक और सैन्य संसाधनों का सुचारू विभाजन सुनिश्चित हो सके।

2. (1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
एकीकरण के दौरान विभिन्न रियासतों में चुनौतियाँ थीं। त्रावणकोर के दीवान सी.पी. रामास्वामी अय्यर ने स्वतंत्र रहने की घोषणा की। जोधपुर के महाराजा हनुवंत सिंह ने पाकिस्तान में शामिल होने हेतु जिन्ना से वार्ता की। भोपाल के नवाब हमीदुल्ला खान ने विलय में विलंब किया। जूनागढ़ के नवाब ने हिंदू बहुसंख्यक आबादी के बावजूद पाकिस्तान में विलय की घोषणा की, जिससे वहाँ तीव्र जन-विद्रोह उत्पन्न हुआ।

3. (3) बंगाल और पंजाब के दोनों हिस्सों की सीमाओं का निर्धारण करना
सर सिरिल रेडक्लिफ की अध्यक्षता वाले सीमा आयोगों का मुख्य कार्य पंजाब और बंगाल का भौगोलिक विभाजन करना था। यह कार्य मुख्य रूप से धार्मिक जनसंख्या और अन्य कारकों जैसे संचार व रणनीतिक महत्व के आधार पर किया गया। अगस्त 1947 में घोषित इस विभाजन रेखा ने आधुनिक भारत-पाकिस्तान की अंतरराष्ट्रीय सीमाओं को निर्धारित किया, जिससे बड़े पैमाने पर विस्थापन और सांप्रदायिक दंगे हुए।

4. (4) केवल I और II
रियासती विभाग की स्थापना जुलाई 1947 में सरदार पटेल के नेतृत्व में एकीकरण हेतु की गई थी। विलय पत्र एक वैधानिक दस्तावेज था जिसके माध्यम से राजाओं ने रक्षा, विदेश और संचार का नियंत्रण भारत सरकार को सौंपा। वी.पी. मेनन इस विभाग के सचिव थे, न कि मंत्री। पटेल और मेनन की जोड़ी ने कूटनीतिक कौशल से अधिकांश रियासतों को भारतीय संघ में शामिल किया।

5. (3) जूनागढ़, हैदराबाद और कश्मीर
15 अगस्त 1947 तक जूनागढ़, हैदराबाद और कश्मीर ने भारत में विलय नहीं किया था। जूनागढ़ का नवाब पाकिस्तान का पक्षधर था, जबकि जनता भारत के पक्ष में थी। हैदराबाद के निज़ाम स्वतंत्र रहना चाहते थे और उन्होंने यथास्थिति समझौता किया। कश्मीर के महाराजा हरि सिंह भी स्वतंत्र रहना चाहते थे, परंतु अक्टूबर 1947 में कबीलाई आक्रमण के पश्चात उन्होंने सैन्य सहायता हेतु विलय पत्र पर हस्ताक्षर किए।

6. (3) A सही है लेकिन R गलत है।
भारत सरकार ने नवंबर 1947 में हैदराबाद के निज़ाम के साथ एक वर्षीय यथास्थिति समझौते पर हस्ताक्षर किए। इसका उद्देश्य वार्ता हेतु समय प्राप्त करना था। कारण गलत है क्योंकि भारत सरकार का उद्देश्य एकीकरण में विलंब करना नहीं था। भारत चाहता था कि निज़ाम आंतरिक रूप से लोकतांत्रिक सुधार करें, जबकि निज़ाम इस समय का उपयोग अपनी सैन्य शक्ति और रजाकारों को संगठित करने हेतु कर रहे थे।

7. (4) जनरल सर रॉय बुचर
सितंबर 1948 में हैदराबाद की सैन्य कार्रवाई 'ऑपरेशन पोलो' के समय जनरल सर रॉय बुचर भारतीय सेना के प्रधान सेनापति थे। यद्यपि जमीनी नेतृत्व मेजर जनरल जे.एन. चौधरी ने किया, परंतु संपूर्ण सेना की कमान बुचर के पास थी। यह अभियान पांच दिनों तक चला, जिसके बाद हैदराबाद की सेना ने आत्मसमर्पण कर दिया। इस कार्रवाई ने निज़ाम की हठधर्मिता समाप्त कर राज्य का पूर्ण विलय सुनिश्चित किया।

8. (1) निज़ाम पर दबाव बनाने के लिए उन्हें भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा सक्रिय रूप से समर्थन दिया गया था।
रजाकार निज़ाम के समर्थक एक कट्टरपंथी अर्धसैनिक बल थे, जिसका नेतृत्व कासिम रजवी कर रहा था। इनका उद्देश्य हैदराबाद को स्वतंत्र मुस्लिम राज्य बनाए रखना था। रजाकारों ने भारतीय संघ का समर्थन करने वाले नागरिकों और हिंदुओं पर भीषण अत्याचार किए। कांग्रेस ने कभी उनका समर्थन नहीं किया। उनकी हिंसक गतिविधियों के कारण ही भारत सरकार को हैदराबाद में सैन्य हस्तक्षेप का कड़ा निर्णय लेना पड़ा था।

9. (3) कथन I सही है और कथन II गलत है।
हैदराबाद के निज़ाम ने भारतीय दबाव के विरुद्ध संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में अपील की थी। भारत सरकार ने 'ऑपरेशन पोलो' को किसी संप्रभु देश पर आक्रमण के बजाय एक 'पुलिस कार्रवाई' बताया। भारत का तर्क था कि हैदराबाद के अराजक हालात आंतरिक सुरक्षा हेतु खतरा थे। भारत ने इसे अंतरराष्ट्रीय युद्ध नहीं माना, क्योंकि हैदराबाद तकनीकी रूप से कभी स्वतंत्र अंतरराष्ट्रीय व्यक्तित्व प्राप्त नहीं कर सका था।

10. (1) केवल I, II और III
ऑपरेशन पोलो 13 सितंबर 1948 को हैदराबाद में बिगड़ती कानून-व्यवस्था और रजाकारों के अत्याचारों के कारण शुरु हुआ। निज़ाम द्वारा यथास्थिति समझौते के उल्लंघन से सैन्य हस्तक्षेप अनिवार्य हो गया। 17 सितंबर को निज़ाम की सेना ने आत्मसमर्पण किया। समर्पण के पश्चात निज़ाम को पाकिस्तान निर्वासित नहीं किया गया, बल्कि उन्हें हैदराबाद का राजप्रमुख बनाया गया। इस प्रकार हैदराबाद का प्रशासनिक एकीकरण भारतीय संघ में संपन्न हुआ।

NODIA

को भी महत्व दिया। इसकी मुख्य सिफारिशों में राज्यों के पुराने 'क, ख, ग, घ' वर्गीकरण को समाप्त करना शामिल था। आयोग ने संतुलित दृष्टिकोण अपनाया ताकि भाषाई भावनाओं का सम्मान हो और देश की एकता व अखंडता भी सुरक्षित रहे।

33. (2) केवल I और III
एस.के. धर आयोग और JVP समिति ने प्रारंभ में भाषाई पुनर्गठन का विरोध किया। उनका मानना था कि इससे राष्ट्रीय एकता को खतरा हो सकता है और प्रशासनिक सुविधा ही आधार होनी चाहिए। परंतु पोट्टी श्रीरामुलु के 56 दिनों के अनशन और मृत्यु के बाद उपजे जन-आक्रोश ने सरकार को विवश किया। इसके परिणामस्वरूप 1953 में भाषाई आधार पर पहले राज्य के रूप में 'आंध्र राज्य' का गठन हुआ।

34. (1) प्रथम भाषाई राज्य आंध्र का निर्माण
गांधीवादी नेता पोट्टी श्रीरामुलु की पृथक तेलुगु भाषी राज्य की मांग हेतु अनशन के दौरान मृत्यु ने व्यापक हिंसा और असंतोष उत्पन्न किया। स्थिति नियंत्रित करने हेतु प्रधानमंत्री नेहरु ने दिसंबर 1952 में आंध्र राज्य के गठन की घोषणा की। 1 अक्टूबर 1953 को इसका औपचारिक गठन हुआ। इस घटना ने पूरे देश में भाषाई आधार पर पुनर्गठन की मांग तेज कर दी, जिससे सरकार को आयोग नियुक्त करना पड़ा।

35. (3) JVP समिति
1948 में गठित JVP समिति (नेहरु, पटेल, सीतारमैया) ने भाषाई आधार पर पुनर्गठन की मांग पर विचार किया। समिति ने रिपोर्ट में कहा कि सुरक्षा और आर्थिक स्थिरता सर्वोपरि है, अतः भाषा को मुख्य आधार नहीं बनाना चाहिए। उन्हें भय था कि इससे अलगाववाद बढ़ सकता है। हालांकि, उन्होंने माना कि यदि जनभावना अत्यंत प्रबल हो, तो भविष्य में लोकतांत्रिक रूप से इस पर विचार किया जा सकता है।

36. (4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
स्वतंत्रता पश्चात भारत में राज्यों का जटिल वर्गीकरण था। भाग A में पूर्व ब्रिटिश प्रांत थे। भाग B में बड़ी रियासतें या उनके संघ थे जिनका प्रशासन राजप्रमुखों के पास था। भाग C में मुख्य आयुक्त के प्रांत और छोटी रियासतें शामिल थीं। भाग D में केवल अंडमान और निकोबार द्वीप समूह था। 1956 के राज्य पुनर्गठन अधिनियम ने इस असमान और भेदभावपूर्ण वर्गीकरण को पूर्णतः समाप्त कर दिया।

37. (3) 14 राज्य और 6 केंद्र शासित प्रदेश
राज्य पुनर्गठन अधिनियम 1956 और 7वें संशोधन के माध्यम से भारत के राजनीतिक मानचित्र का व्यापक पुनर्गठन हुआ। इसके परिणामस्वरूप 1 नवंबर 1956 को 14 राज्यों और 6 केंद्र शासित प्रदेशों का निर्माण हुआ। इस प्रक्रिया ने पुराने वर्गीकरण को समाप्त कर भाषाई समरूपता को आधार प्रदान किया। इसका उद्देश्य प्रशासनिक असमानता दूर करना और लोकतंत्र को भाषाई स्तर पर जनता के निकट लाना था।

38. (1) A Standard R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
1956 के 7वें संशोधन ने भाग A और भाग B राज्यों के बीच संवैधानिक अंतर समाप्त कर दिया, जिससे सभी राज्य समान कानूनी स्थिति में आए। पूर्व में भाग B राज्यों पर केंद्र का नियंत्रण अधिक था। पुनर्गठन का उद्देश्य समान प्रशासनिक ढांचा स्थापित करना और रियासतों के अवशेषों को समाप्त कर राष्ट्रीय एकीकरण सुदृढ़ करना था। इस सुधार ने भारत को एकीकृत राजनीतिक इकाई के रूप में मजबूती दी।

39. (4) केवल I और III
क्षेत्रीय परिषदों की स्थापना 1956 के अधिनियम के तहत हुई, अतः ये वैधानिक निकाय हैं, संवैधानिक नहीं। इनका उल्लेख मूल संविधान में नहीं था। देश को पांच क्षेत्रों में बांटा गया है ताकि राज्यों के मध्य सहयोग बढ़े। केंद्रीय गृह मंत्री इन परिषदों के अध्यक्ष होते हैं, जबकि मुख्यमंत्री रोटेशन से उपाध्यक्ष बनते हैं। ये परिषदें अंतर-राज्यीय विवादों और साझा आर्थिक हितों पर चर्चा का महत्वपूर्ण मंच हैं।

NODIA

40. (1) भाग C राज्य अजमेर-मेरवाड़ा का औपचारिक रूप से राजस्थान में विलय कर दिया गया था।
1956 के पुनर्गठन में राजस्थान के स्वरूप में महत्वपूर्ण बदलाव हुए। केंद्र शासित अजमेर-मेरवाड़ा का राजस्थान में विलय हुआ। बंबई राज्य के आबू और दिलवाड़ा क्षेत्र भी राजस्थान को मिले। मध्य प्रदेश के सुनेल टप्पा क्षेत्र का राजस्थान में विलय हुआ, जबकि झालावाड़ का सिरोंज क्षेत्र मध्य प्रदेश को दिया गया। इन परिवर्तनों ने राजस्थान के भौगोलिक और प्रशासनिक एकीकरण को पूर्णता प्रदान की।

41. (1) III, II, I, IV
लोकतांत्रिक यात्रा में निर्वाचन संबंधी घटनाओं का क्रम इस प्रकार है: जनवरी 1950 में निर्वाचन आयोग की स्थापना हुई। इसके बाद 1950 और 1951 में लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम पारित हुए। इन तैयारियों के पश्चात अक्टूबर 1951 से फरवरी 1952 के मध्य प्रथम आम चुनाव संपन्न हुए। अंततः, अप्रैल 1952 में प्रथम लोकसभा का विधिवत गठन हुआ। इस प्रक्रिया ने भारतीय लोकतंत्र की मजबूत नींव रखी।

42. (1) सुकुमार सेन
सुकुमार सेन स्वतंत्र भारत के प्रथम मुख्य निर्वाचन आयुक्त थे। उन्होंने 1950 से 1958 तक कार्य किया और पहले दो आम चुनावों का सफल संचालन किया। निरक्षरता और भौगोलिक विषमताओं के बीच चुनावी तंत्र खड़ा करना बड़ी चुनौती थी। सेन के कुशल प्रबंधन और नवाचारी दृष्टिकोण के कारण ही भारत में निष्पक्ष और पारदर्शी चुनाव प्रणाली की परंपरा स्थापित हुई, जिसकी वैश्विक स्तर पर प्रशंसा की गई।

43. (4) एक विशाल निरक्षर जनसंख्या के लिए निर्वाचक नामावली तैयार करना
प्रथम आम चुनाव में लगभग 85 प्रतिशत जनसंख्या निरक्षर थी, जो नामावली तैयार करने में बड़ी बाधा थी। कई महिलाओं ने अपने नाम के बजाय रिश्तों के आधार पर पंजीकरण कराया,

65. (2) सामूहिक आर्थिक आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देना और नव-स्वतंत्र राष्ट्रों की राजनीतिक आवाज सशक्त करना
1950 के दशक में एशियाई एकजुटता पर बल देने का उद्देश्य यह था कि नव-स्वतंत्र देश महाशक्तियों के मोहरे न बनें। नेहरू चाहते थे कि ये देश आपस में सहयोग कर आर्थिक आत्मनिर्भरता प्राप्त करें और विश्व मंच पर प्रभावशाली भूमिका निभाएं। उन्होंने इसे सैन्य गुट के बजाय एक नैतिक गठबंधन के रूप में देखा, जो एक स्वतंत्र 'एशियाई व्यक्तित्व' का निर्माण कर वैश्विक शांति का संदेश दे सके।

66. (1) इससे भारत-चीन संबंधों में गिरावट आई, जो अंततः 1962 के संघर्ष का कारण बनी
1959 में दलाई लामा को भारत में शरण देने को चीन ने अपने आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप माना। इससे दोनों देशों में अविश्वास बढ़ा और सीमा विवाद उत्तेजित हुआ। चीनी मीडिया में भारत विरोधी प्रचार तेज हो गया और सीमा पर झड़पें शुरू हुईं। यही तनाव निरंतर बढ़ता गया और अंततः 1962 के युद्ध में परिणत हुआ, जिसने भारत-चीन संबंधों को लंबे समय हेतु स्थाई क्षति पहुँचाई।

67. (3) कथन I सही है और कथन II गलत है।
भारत ने 1960 के दशक में 'अग्रवर्ती नीति' अपनाई, जिसके तहत विवादित क्षेत्रों में सैन्य चौकियाँ स्थापित की गईं। भारत इसे अपना विधिक अधिकार मानता था। चीन ने इसे आक्रामक मानकर अक्साई चिन से पीछे हटने के बजाय सैन्य तैयारी और तेज कर दी। चीन ने इस स्थिति को आक्रमण के बहाने के रूप में प्रयोग किया। अंततः, चीनी सेना ने अक्टूबर 1962 में लद्दाख और नेफा दोनों क्षेत्रों में बड़ा हमला किया।

68. (4) अरुणाचल प्रदेश (तत्कालीन NEFA)
मैकमोहन रेखा पूर्वी हिमालय क्षेत्र में भारत और चीन के बीच की सीमा रेखा है, जिसे 1914 में तय किया गया था। चीन इसे 'साम्राज्यवादी विरासत' मानकर मान्यता नहीं देता। 1962 के युद्ध में चीनी सेना ने इस रेखा को पार कर तत्कालीन नेफा (अरुणाचल प्रदेश) के बड़े हिस्से पर कब्जा कर लिया था। युद्धविराम के बाद चीन पीछे तो हटा, किंतु वह आज भी इस क्षेत्र पर अपना दावा करता रहता है।

69. (3) पूर्णतः कृषि पर ध्यान केंद्रित करने के लिए भारत के रक्षा बजट में भारी कटौती
1962 की हार ने भारत को सैन्य कमजोरियों का आभास कराया, जिससे रक्षा बजट में भारी वृद्धि और सेना का आधुनिकीकरण किया गया। रक्षा मंत्री वी.के. कृष्ण मेनन को त्यागपत्र देना पड़ा। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर गुटनिरपेक्षता पर प्रश्न उठे और नेहरू की प्रतिष्ठा को धक्का लगा। इस संकट ने भारत को अपनी विदेश नीति और सुरक्षा प्राथमिकताओं का पुनर्मूल्यांकन करने हेतु विवश किया, जिससे भविष्य हेतु महत्वपूर्ण सबक लिए गए।

70. (2) वी.के. कृष्ण मेनन
वी.के. कृष्ण मेनन 1962 के युद्ध के समय भारत के रक्षा मंत्री थे। युद्ध में सैन्य तैयारी की कमी और रणनीतिक विफलताओं हेतु उन्हें सीधे तौर पर जिम्मेदार माना गया। संसद और कांग्रेस पार्टी के भीतर भारी आक्रोश के कारण नेहरू को उनका त्यागपत्र स्वीकार करना पड़ा। उनके पश्चात वाई.बी. चव्हाण नए रक्षा मंत्री बने, जिन्होंने भारतीय सशस्त्र बलों की युद्ध क्षमता को सुधारने और आधुनिकीकरण का महत्वपूर्ण कार्य किया।

71. (4) कामराज योजना
1963 में के. कामराज ने कांग्रेस संगठन को पुनर्जीवित करने हेतु 'कामराज योजना' प्रस्तावित की। इसके तहत वरिष्ठ मंत्रियों को पद त्यागकर पार्टी कार्यों में जुटना था। नेहरू ने इसे स्वीकार किया, जिसके अंतर्गत लाल बहादुर शास्त्री और मोरारजी देसाई जैसे नेताओं ने इस्तीफे दिए। आलोचकों के अनुसार, नेहरू ने इसका प्रयोग अपने राजनीतिक प्रतिद्वंद्वियों को सरकार से बाहर करने हेतु किया, हालांकि इसका घोषित उद्देश्य सांगठनिक मजबूती था।

72. (1) लाल बहादुर शास्त्री को सर्वसम्मति से कांग्रेस संसदीय दल के नेता के रूप में चुना गया था।
मई 1964 में नेहरू की मृत्यु के बाद कांग्रेस अध्यक्ष के. कामराज ने आम सहमति बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिससे लाल बहादुर शास्त्री निर्विरोध नेता चुने गए। शास्त्रीजी की सादगी और स्वच्छ छवि ने उन्हें लोकप्रिय बनाया। यह सत्ता हस्तांतरण भारतीय लोकतंत्र की परिपक्वता का प्रमाण था, जिसने विश्व को दिखाया कि भारत नेहरू के बिना भी स्थिर और लोकतांत्रिक रूप से सुदृढ़ बना रह सकता है।

73. (3) पार्टी तंत्र को नियंत्रित करने वाले प्रभावशाली क्षेत्रीय कांग्रेस नेता
1960 के दशक में कांग्रेस के भीतर 'सिंडिकेट' उन शक्तिशाली क्षेत्रीय नेताओं का समूह था जिनका संगठन पर नियंत्रण था। इसमें कामराज, निजलिंगप्पा और संजीव रेड्डी जैसे नेता प्रमुख थे। इन्होंने नेहरू के बाद शास्त्री और इंदिरा गांधी को प्रधानमंत्री बनाने में 'किंगमेकर' की भूमिका निभाई। प्रारंभ में इंदिरा गांधी ने इनके समर्थन से शासन किया, परंतु बाद में स्वायत्तता हेतु उनसे संघर्ष किया, जिससे 1969 में पार्टी विभाजित हुई।

74. (1) एक सर्वोपरि नेता से सामूहिक नेतृत्व की ओर संक्रमण
नेहरू के निधन ने कांग्रेस में एक युग का अंत किया, जहाँ एक व्यक्तित्व का वर्चस्व था। इसके पश्चात पार्टी 'सामूहिक नेतृत्व' के दौर में पहुँची, जहाँ शक्ति प्रधानमंत्री, पार्टी अध्यक्ष और क्षेत्रीय दिग्गजों (सिंडिकेट) के मध्य विभाजित हुई। इस काल में आंतरिक लोकतंत्र और गुटबाजी दोनों बढ़े। यद्यपि इससे अस्थिरता आई, परंतु इसने विभिन्न विचारधाराओं और क्षेत्रीय आकांक्षाओं को पार्टी के भीतर स्थान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

75. (4) सी. राजगोपालाचारी
1964 के सत्ता संक्रमण के समय सी. राजगोपालाचारी दौड़ में नहीं थे, क्योंकि वे कांग्रेस छोड़कर 'स्वतंत्र पार्टी' बना चुके थे। मुख्य मुकाबला मोरारजी देसाई और लाल बहादुर शास्त्री के मध्य था। कामराज ने 'किंगमेकर' के रूप में शास्त्री के पक्ष में सहमति बनाई। जयप्रकाश नारायण और इंदिरा गांधी के नामों पर भी चर्चा हुई, परंतु शास्त्रीजी को उनकी सर्वमान्य छवि के कारण प्राथमिकता दी गई।

Downloaded from www.pdf.tube

सिद्धांतों की नींव रखी। नवंबर 1951 में पद पर रहते हुए उनका निधन हो गया, जिसके पश्चात न्यायमूर्ति पतंजलि शास्त्री ने यह पद संभाला।

55. (4) भूमि सुधार कानूनों की रक्षा के लिए संविधान संशोधन अधिनियमित करके
जब न्यायालयों ने संपत्ति के अधिकार के आधार पर भूमि सुधार कानूनों को अवैध घोषित किया, तब नेहरू सरकार ने विधायी मार्ग अपनाया। सामाजिक न्याय हेतु 1951 में प्रथम संविधान संशोधन लाया गया, जिससे 'नौवीं अनुसूची' का निर्माण हुआ। इस अनुसूची में शामिल कानूनों को न्यायिक समीक्षा से सुरक्षा दी गई ताकि जमींदारी उन्मूलन और सामाजिक-आर्थिक सुधारों की प्रक्रिया में कानूनी बाधाएं उत्पन्न न हों।

56. (2) II, III, I
गुटनिरपेक्ष आंदोलन के उदय का क्रम: मार्च 1947 में दिल्ली में 'एशियाई संबंध सम्मेलन' हुआ। 1955 में इंडोनेशिया में 'बांडुंग सम्मेलन' आयोजित हुआ, जहाँ अफ्रीकी-एशियाई देशों ने उपनिवेशवाद के विरुद्ध एकजुटता दिखाई। अंततः, सितंबर 1961 में यूगोस्लाविया के बेलग्रेड में प्रथम औपचारिक शिखर सम्मेलन हुआ। इस सम्मेलन ने विश्व राजनीति में महाशक्तियों के गुटों से अलग एक 'तीसरी शक्ति' के उदय की घोषणा की।

57. (3) विंस्टन चर्चिल
गुटनिरपेक्ष आंदोलन के संस्थापक नेहरू (भारत), टीटो (यूगोस्लाविया), नासिर (मिस्र), सुकर्णो (इंडोनेशिया) और नक्रूमा (घाना) थे। विंस्टन चर्चिल ब्रिटेन के प्रधानमंत्री थे और उन्होंने शीत युद्ध में पश्चिमी गुट का नेतृत्व किया; वे गुटनिरपेक्षता के विरोधी थे। इन पांच नेताओं ने नव-स्वतंत्र राष्ट्रों को महाशक्तियों के सैन्य गुटों से दूर रखने और स्वतंत्र विदेश नीति बनाए रखने हेतु एक वैश्विक मंच प्रदान किया था।

58. (1) केवल I और IV
नेहरूवादी गुटनिरपेक्षता का अर्थ तटस्थता या दुनिया से अलग रहना नहीं, बल्कि वैश्विक मुद्दों पर सक्रिय भागीदारी थी। इसका उद्देश्य नव-स्वतंत्र राष्ट्रों की स्वायत्तता सुरक्षित करना और उपनिवेशवाद का विरोध करना था। नेहरू ने इसे कभी सैन्य गुट बनाने हेतु प्रेरित नहीं किया। उनका मानना था कि सैन्य गठबंधनों से तनाव बढ़ता है। यह एक नैतिक मंच था जो महाशक्तियों के मध्य मध्यस्थता और निशस्त्रीकरण पर बल देता था।

59. (4) जोसिप ब्रोज़ टीटो - यूगोस्लाविया
गुटनिरपेक्ष आंदोलन के नेताओं का सही मिलान: जोसिप ब्रोज़ टीटो यूगोस्लाविया के राष्ट्रपति थे। सुकर्णो इंडोनेशिया के, क्वामे नक्रूमा घाना के और गमाल अब्देल नासिर मिस्र के नेता थे। इन नेताओं की साझा दृष्टि ने एशिया, अफ्रीका और लातिन अमेरिका के देशों को एकजुट किया। इसके माध्यम से वे शीत युद्ध के दौरान किसी महाशक्ति का पिछलग्गू बने बिना वैश्विक मामलों में अपनी स्वतंत्र आवाज उठा सके।

60. (2) तटस्थता का अर्थ युद्ध से बाहर रहना है, जबकि गुटनिरपेक्षता का अर्थ सैन्य गुटों में सम्मिलित हुए बिना शांति को बढ़ावा देने के लिए विश्व मामलों में सक्रिय भागीदारी है।
नेहरू ने स्पष्ट किया कि गुटनिरपेक्षता नकारात्मक नीति नहीं है। तटस्थता युद्ध के समय की स्थिति है, जबकि गुटनिरपेक्षता शांति काल की गतिशील नीति है। भारत का उद्देश्य विश्व राजनीति से भागना नहीं, बल्कि प्रत्येक मुद्दे पर उसके गुणों के आधार पर स्वतंत्र निर्णय लेना था। यह नीति भारत को दोनों महाशक्तियों से सहायता प्राप्त करने और वैश्विक मंच पर नैतिक शक्ति के रूप में उभरने में सहायक हुई।

61. (3) I, II, III, IV और V
पंचशील के पांच सिद्धांत शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के आधार हैं: क्षेत्रीय अखंडता का सम्मान, अनाक्रमण, आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करना, समानता व पारस्परिक लाभ और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व। नेहरू का मानना था कि यदि ये सिद्धांत अंतरराष्ट्रीय संबंधों का आधार बनें, तो युद्ध के भय को समाप्त किया जा सकता है। 1955 के बांडुंग सम्मेलन में भी इन्हें स्वीकार किया गया। ये आज भी भारत की विदेश नीति के मार्गदर्शक हैं।

62. (4) चीन
29 अप्रैल 1954 को भारत और चीन के मध्य तिब्बत क्षेत्र के व्यापार और संबंधों हेतु एक ऐतिहासिक समझौता हुआ, जिसकी प्रस्तावना में 'पंचशील' सिद्धांतों का उल्लेख था। इस पर नेहरू और चाऊ एन-लाई ने सहमति जताई। यह एशियाई देशों के मध्य मित्रता का नया मॉडल माना गया। हालांकि, बाद में सीमा विवाद और 1962 के युद्ध ने इन सिद्धांतों की प्रभावशीलता पर प्रश्नचिन्ह लगाए, फिर भी इनका वैचारिक महत्व बना रहा।

63. (1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
विदेशी नीति की घटनाओं का कालक्रम: एशियाई संबंध सम्मेलन मार्च 1947 में हुआ। पंचशील समझौते पर 1954 में हस्ताक्षर हुए। इसके पश्चात 1955 में बांडुंग सम्मेलन संपन्न हुआ, जिसने अफ्रीकी-एशियाई सहयोग को नई ऊंचाइयों पर पहुँचाया। अंततः, इन प्रयासों के परिणामस्वरुप 1961 में बेलग्रेड में गुटनिरपेक्ष आंदोलन का प्रथम शिखर सम्मेलन हुआ, जिसने शीत युद्ध के दौर में नव-स्वतंत्र राष्ट्रों को एक नया वैश्विक विकल्प प्रदान किया।

64. (2) गणतंत्र बनते ही उन्होंने तुरंत भारत को राष्ट्रमंडल (कॉमनवेल्थ ऑफ नेशंस) से पृथक कर लिया था।
नेहरू के अंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोण में निशस्त्रीकरण और संयुक्त राष्ट्र की मजबूती सर्वोपरि थी। उन्होंने रंगभेद और उपनिवेशवाद का विरोध किया। हालांकि, उन्होंने भारत को राष्ट्रमंडल से अलग नहीं किया, बल्कि गणतंत्र स्थिति को उसके भीतर बनाए रखा। उन्होंने तर्क दिया कि इससे संप्रभुता से समझौता किए बिना वैश्विक संपर्क और आर्थिक लाभ मिलेगा। यह उनकी व्यावहारिक कूटनीति का उदाहरण था, जिसने भारत को संतुलित वैश्विक स्थान दिलाया।

NODIA

जिसे आयोग ने अस्वीकार कर व्यक्तिगत पहचान अनिवार्य की। सरल प्रतीकों का प्रयोग और विशाल ग्रामीण क्षेत्रों में मतदान केंद्र बनाना कठिन था। इन चुनौतियों के बावजूद, सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार का सफल क्रियान्वयन ऐतिहासिक उपलब्धि रही।

44. (2) केवल I, III और IV
प्रथम आम चुनाव ने संपत्ति और शिक्षा की बाधाएं हटाकर सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार लागू किया। कांग्रेस ने नेहरु के नेतृत्व में 489 में से 364 सीटें जीतकर प्रचंड बहुमत प्राप्त किया। विपक्षी दलों में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी दूसरे स्थान पर रही। इस चुनाव ने सिद्ध किया कि गरीबी और निरक्षरता के बावजूद निष्पक्ष लोकतांत्रिक व्यवस्था संभव है, जिसने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत का सम्मान और साख बढ़ाई।

45. (3) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
जी.वी. मावलंकर प्रथम लोकसभा अध्यक्ष थे, जिन्होंने संसदीय मर्यादाओं की नींव रखी। एम.ए. आयंगर प्रथम उपाध्यक्ष बने। लोक लेखा समिति सबसे पुरानी संसदीय समिति है जो सरकारी खर्चों की निगरानी कर वित्तीय जवाबदेही सुनिश्चित करती है। राज्यसभा का गठन 1952 में हुआ, जो एक स्थायी सदन है। इन संस्थाओं ने नेहरु युग में विधायी प्रक्रियाओं को स्थापित करने और लोकतंत्र को सुदृढ़ करने में भूमिका निभाई।

46. (4) नागौर
लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण हेतु प्रधानमंत्री नेहरु ने 2 अक्टूबर 1959 को राजस्थान के नागौर में त्रि-स्तरीय पंचायती राज व्यवस्था का उद्घाटन किया। यह तिथि गांधी जयंती होने के कारण चुनी गई, क्योंकि वे 'ग्राम स्वराज' के समर्थक थे। नागौर से शुरु हुई यह यात्रा स्थानीय स्वशासन के विस्तार का आधार बनी। इसका मुख्य उद्देश्य ग्रामीण जनता को विकास योजनाओं में सक्रिय भागीदारी का अवसर प्रदान करना था।

47. (1) केवल I, III, IV और V
बलवंतराय मेहता समिति ने 1957 में त्रि-स्तरीय व्यवस्था की सिफारिश की थी। इसमें ग्राम पंचायत, पंचायत समिति और जिला परिषद के गठन का सुझाव था। समिति ने माना कि पंचायत समिति को मुख्य कार्यकारी निकाय होना चाहिए। ग्राम पंचायत सदस्यों का प्रत्यक्ष निर्वाचन और जिला परिषद की भूमिका सलाहकार व पर्यवेक्षी निकाय के रुप में प्रस्तावित थी ताकि सत्ता का वास्तविक विकेंद्रीकरण ग्रामीण स्तर पर हो सके।

48. (2) आंध्र प्रदेश
राजस्थान के पश्चात आंध्र प्रदेश पंचायती राज व्यवस्था अपनाने वाला दूसरा राज्य बना। आंध्र प्रदेश ने नवंबर 1959 में त्रि-स्तरीय पंचायत संरचना को औपचारिक रुप से स्वीकार किया। इसके बाद असम, तमिलनाडु और कर्नाटक जैसे राज्यों ने भी अपने कानूनों के माध्यम से स्थानीय निकायों का गठन किया। मूल भावना प्रशासन को जनता के निकट ले जाना और ग्रामीण विकास में जनभागीदारी को संस्थागत रुप देना था।

49. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
1952 का सामुदायिक विकास कार्यक्रम सरकारी अधिकारियों के नियंत्रण में था, जिससे जनता की सक्रिय भागीदारी नहीं मिल सकी। इसे 'ऊपर से थोपा गया' विकास माना गया। इसकी जांच करने वाली मेहता समिति ने निष्कर्ष निकाला कि बिना जन-भागीदारी के विकास टिकाऊ नहीं होगा। इसी कारण समिति ने 'लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण' की सिफारिश की, जिसका लक्ष्य निर्वाचित स्थानीय निकायों को वास्तविक सत्ता हस्तांतरित करना था।

50. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
नेहरु का दृढ़ विश्वास था कि ग्रामीण विकास हेतु ग्रामीणों का स्वयं जिम्मेदारी उठाना आवश्यक है। उन्होंने पंचायती राज को लोकतंत्र को जमीनी स्तर पर गहरा बनाने का माध्यम माना। उनके अनुसार, पंचायतों से न केवल शक्तियों का विकेंद्रीकरण होता है, बल्कि यह भविष्य के नेतृत्व को प्रशिक्षित करने की पाठशाला भी है। इस व्यवस्था ने गांवों को आत्मनिर्भर बनाने और स्थानीय ज्ञान के उपयोग का मार्ग खोला।

51. (3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
प्रारंभिक न्यायिक इतिहास में ये वाद महत्वपूर्ण हैं। ए.के. गोपालन वाद ने व्यक्तिगत स्वतंत्रता की व्याख्या की। शंकरी प्रसाद वाद ने संसद की संविधान संशोधन शक्ति को चुनौती दी। रमेश थापर वाद अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और प्रेस प्रतिबंधों से संबंधित था। चंपकम दोराईराजन वाद ने शिक्षण संस्थानों में आरक्षण की वैधता पर प्रश्न उठाए, जिससे मौलिक अधिकारों और नीति निदेशक तत्वों के मध्य संतुलन की चर्चा शुरु हुई।

52. (3) 28 जनवरी 1950
भारत का सर्वोच्च न्यायालय 28 जनवरी 1950 को अस्तित्व में आया। इसका उद्घाटन संसद भवन के प्रिंस चैंबर में हुआ, जहाँ पहले फेडरल कोर्ट की बैठकें होती थीं। इसने 'फेडरल कोर्ट ऑफ इंडिया' और 'प्रिवी काउंसिल' के न्यायिक अधिकार क्षेत्र को प्रतिस्थापित किया। यह लोकतंत्र के तीसरे स्तंभ के रुप में स्थापित हुआ, जिसका उत्तरदायित्व संविधान की रक्षा करना और नागरिकों के मौलिक अधिकारों की गारंटी देना है।

53. (3) केवल I और II
न्यायपालिका की स्वतंत्रता हेतु संविधान में कड़े प्रावधान हैं। न्यायाधीशों के कार्यकाल की सुरक्षा उन्हें कार्यपालिका के दबाव से मुक्त रखती है। उनके वेतन और भत्ते भारत की संचित निधि पर भारित होते हैं, जिस पर संसद में मतदान नहीं होता। वित्तीय आपातकाल के अतिरिक्त उनके वेतन में कटौती नहीं की जा सकती। ये प्रावधान सुनिश्चित करते हैं कि न्यायाधीश बिना किसी भय या पक्षपात के न्याय कर सकें।

54. (2) एच.जे. कानिया
न्यायमूर्ति हीरालाल जेकिसुनदास कानिया स्वतंत्र भारत के पहले मुख्य न्यायाधीश थे। वे इससे पूर्व फेडरल कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश रहे थे। उनके कार्यकाल में सर्वोच्च न्यायालय ने अपने प्रारंभिक नियमों और प्रक्रियाओं को स्थापित किया। उन्होंने संविधान की सर्वोच्चता और न्यायिक समीक्षा के

Click Here to Buy book on Amazon

76. (2) माउंटबेटन - रियासतों को पूर्ण स्वतंत्रता घोषित करने का परामर्श दिया
माउंटबेटन ने रियासतों को स्वतंत्र रहने का परामर्श नहीं दिया था। उन्होंने चेतावनी दी थी कि वे अलग होकर अस्तित्व नहीं बचा पाएंगे। उन्होंने राजाओं को भौगोलिक निकटता के आधार पर भारत या पाकिस्तान में शामिल होने हेतु प्रोत्साहित किया। पटेल और मेनन ने इसी आधार पर एकीकरण किया। पोट्टी श्रीरामुलु ने भाषाई पुनर्गठन हेतु प्राण दिए थे। अतः माउंटबेटन के संबंध में दिया गया यह कथन ऐतिहासिक रूप से गलत है।

77. (3) सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय
प्रस्तावना में निहित 'सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय' का आदर्श नेहरू के समाजवादी विजन का प्रतिबिंब है। नेहरू का मानना था कि राजनीतिक स्वतंत्रता तब तक अधूरी है जब तक गरीबी और शोषण का अंत न हो। 'आर्थिक न्याय' संसाधनों के उचित वितरण पर बल देता है, जबकि 'सामाजिक न्याय' भेदभाव समाप्त करता है। ये तत्व मिलकर एक कल्याणकारी राज्य की नींव रखते हैं, जिसका लक्ष्य अंतिम व्यक्ति का उत्थान है।

NODIA

78. (3) कथन I सही है और कथन II गलत है।
अनुच्छेद 3 के तहत संसद को साधारण बहुमत से राज्यों की सीमाओं में परिवर्तन या नए राज्य निर्माण की व्यापक शक्ति प्राप्त है। राष्ट्रपति संबंधित राज्य विधायिका के विचार जानने हेतु विधेयक भेजते हैं, परंतु संसद उन विचारों को मानने हेतु बाध्य नहीं है। राज्य की सहमति अनिवार्य नहीं है और संसद राज्य की इच्छा के विरुद्ध भी पुनर्गठन कर सकती है। यह प्रावधान देश की क्षेत्रीय अखंडता को सुरक्षित करता है।

79. (1) राज्यपाल
1956 के पुनर्गठन और 7वें संशोधन ने भाग ख राज्यों में प्रचलित 'राजप्रमुख' पद को पूर्णतः समाप्त कर दिया। इसके स्थान पर सभी राज्यों हेतु 'राज्यपाल' का एक समान पद सृजित किया गया, जिसकी नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा की जाती है। इस बदलाव ने पूर्व राजशाही के प्रतीकों को समाप्त कर देश में एक समान लोकतांत्रिक प्रशासनिक व्यवस्था लागू की, जिससे राष्ट्रीय एकीकरण और संवैधानिक समानता की प्रक्रिया और अधिक सुदृढ़ हुई।

80. (2) नागरिक सर्वोच्चता और नियमित लोकतांत्रिक निर्वाचन स्थापित करना
नेहरू युग की स्थायी विरासत भारत में मजबूत लोकतांत्रिक नींव रखना है। उन्होंने सुनिश्चित किया कि सेना सदैव नागरिक सरकार के अधीन रहे। उन्होंने स्वतंत्र चुनाव आयोग, न्यायपालिका और संसद जैसी संस्थाओं को सर्वोच्च प्राथमिकता दी। नियमित निष्पक्ष चुनाव और शांतिपूर्ण सत्ता हस्तांतरण की परंपरा उनकी बड़ी उपलब्धि थी। इसी कारण भारत आज विश्व के सबसे स्थिर और सफल लोकतंत्रों में गिना जाता है, जो उनकी दूरदर्शिता का परिणाम है।

15. भारत में हरित क्रांति के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसमें मुख्य रूप से उच्च उपज वाली किस्म (HYV) के बीजों का उपयोग शामिल था।
II. इसका प्रारंभिक चरण पंजाब और हरियाणा जैसे गेहूं उत्पादक क्षेत्रों में अत्यधिक सफल रहा।
III. इसके लिए जल, रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों की सुनिश्चित आपूर्ति की आवश्यकता थी।
IV. इसने सभी भारतीय राज्यों में कृषि असमानताओं को तुरंत समाप्त कर दिया।
V. एम.एस. स्वामीनाथन भारत में इस क्रांति के प्रमुख वास्तुकार थे।
उपर्युक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(1) केवल I, II, III और IV
(2) केवल I, II, III और V
(3) केवल II, III, IV और V
(4) केवल I, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

16. भारत में हरित क्रांति की शुरुआत किसकी सीधी प्रतिक्रिया थी?
(1) कृषि निर्यात बढ़ाने के लिए विश्व व्यापार संगठन का आदेश
(2) खाद्यान्न की कमी और अमेरिका से PL-480 आयात पर निर्भरता को दूर करना
(3) तकनीकी उन्नयन की मांग करने वाले किसान आंदोलनों की मांगें
(4) सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयों द्वारा उत्पादित रासायनिक उर्वरकों की अतिरिक्त उपलब्धता
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

17. अपने शुरुआती दशकों में हरित क्रांति की एक प्रमुख आलोचना निम्नलिखित में से कौन सी थी?
(1) इसके कारण उत्तर भारत में गेहूं उत्पादन प्रणाली पूरी तरह से ठप हो गई
(2) ग्रामीण क्षेत्रों में क्षेत्रीय और व्यक्तिगत असमानताएं बढ़ गईं
(3) इसके कारण उद्योगों से श्रम का कृषि की ओर बड़े पैमाने पर पलायन हुआ
(4) इसने कृषि मूल्य निर्धारण में राज्य के हस्तक्षेप की आवश्यकता को पूरी तरह से समाप्त कर दिया
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

18. पंजाब और हरियाणा जैसे राज्यों में हरित क्रांति की पद्धतियों का एक महत्वपूर्ण दीर्घकालिक पारिस्थितिक परिणाम क्या था?
(1) भूजल स्तर में गिरावट और मृदा लवणता में वृद्धि
(2) वन क्षेत्र में पर्याप्त वृद्धि
(3) कृषि क्षेत्र से ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में कमी
(4) जैविक खेती के कारण मिट्टी की प्राकृतिक उर्वरता में वृद्धि
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

19. 1970 में शुरु किए गए "ऑपरेशन फ्लड" को सबसे सटीक रुप से किस प्रकार परिभाषित किया गया है?
(1) पूर्वी भारत में नदियों की बाढ़ को नियंत्रित करने के लिए एक व्यापक आपदा प्रबंधन कार्यक्रम
(2) सिंचाई नहरों के नेटवर्क का विस्तार करने के लिए एक ग्रामीण विकास कार्यक्रम
(3) राष्ट्रव्यापी दुग्ध ग्रिड बनाने के उद्देश्य से एक राष्ट्रीय डेयरी विकास कार्यक्रम
(4) समुद्री मत्स्य उत्पादन बढ़ाने के लिए राज्य प्रायोजित योजना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

20. नीचे दिए गए विकल्पों में से ऑपरेशन फ्लड के चरणों के सही कालानुक्रमिक क्रम का चयन कीजिए:
(1) चरण I (ग्रामीण दुग्ध केंद्रों को महानगरीय बाजारों से जोड़ना) → चरण II (दुग्ध केंद्रों का विस्तार) → चरण III (सहकारी बुनियादी ढांचे का सुदृढ़ीकरण)
(2) चरण I (दुग्ध केंद्रों का विस्तार) → चरण II (ग्रामीण दुग्ध केंद्रों को महानगरीय बाजारों से जोड़ना) → चरण III (सहकारी बुनियादी ढांचे का सुदृढ़ीकरण)
(3) चरण I (सहकारी बुनियादी ढांचे का सुदृढ़ीकरण) → चरण II (दुग्ध केंद्रों का विस्तार) → चरण III (ग्रामीण दुग्ध केंद्रों को महानगरीय बाजारों से जोड़ना)
(4) चरण I (ग्रामीण दुग्ध केंद्रों को महानगरीय बाजारों से जोड़ना) → चरण II (सहकारी बुनियादी ढांचे का सुदृढ़ीकरण) → चरण III (दुग्ध केंद्रों का विस्तार)
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

21. निम्नलिखित में से किसे भारत में "श्वेत क्रांति के जनक" के रुप में व्यापक मान्यता प्राप्त है?
(1) नॉर्मन बोरलॉग
(2) एम.एस. स्वामीनाथन
(3) वी. कुरियन
(4) सी. सुब्रमण्यम
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

22. श्वेत क्रांति के संबंध में सही युग्म की पहचान कीजिए:
(1) AMUL - एग्रीकल्चरल मार्केटिंग यूनियन लिमिटेड
(2) NDDB - नेशनल डेयरी डेवलपमेंट बोर्ड
(3) IRMA - इंडियन रूरल मिल्क एसोसिएशन
(4) ऑपरेशन फ्लड - पूर्णतः विश्व बैंक द्वारा वित्तपोषित
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

23. जुलाई 1969 में, भारत सरकार द्वारा एक अध्यादेश के माध्यम से कितने प्रमुख वाणिज्यिक बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया गया था?
(1) 6
(2) 12
(3) 20

Downloaded from www.pdf.tube

सुविधा प्रदान करना
(3) विश्व बैंक द्वारा प्रदान की गई विदेशी सहायता की शर्तों का अनुपालन करना
(4) विभाजन के कारण उत्पन्न खाद्यान्न की कमी और कृषि संबंधी बाधाओं को दूर करना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

8. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं - अभिकथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प चुनकर प्रश्न का उत्तर दीजिए।
अभिकथन (A): द्वितीय पंचवर्षीय योजना में भारी और बुनियादी उद्योगों की स्थापना पर व्यापक बल दिया गया।
कारण (R): योजनाकारों का मानना था कि तीव्र संरचनात्मक परिवर्तन और दीर्घकालिक आर्थिक विकास को प्रेरित करने के लिए एक सुदृढ़ पूंजीगत वस्तु क्षेत्र आवश्यक है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

9. द्वितीय पंचवर्षीय योजना में अपनाई गई आर्थिक रणनीति को सामान्यतः क्या कहा जाता है?
(1) गाडगिल रणनीति
(2) राव-मनमोहन मॉडल
(3) महालनोबिस मॉडल
(4) चक्रवर्ती मॉडल
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

10. द्वितीय पंचवर्षीय योजना के दौरान औद्योगीकरण अभियान के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. भिलाई इस्पात संयंत्र सोवियत संघ की सहायता से स्थापित किया गया था।
II. दुर्गापुर इस्पात संयंत्र ब्रिटिश सहयोग से स्थापित किया गया था।
III. राउरकेला इस्पात संयंत्र पश्चिम जर्मनी की तकनीकी सहायता से बनाया गया था।
IV. उपभोक्ता वस्तु उद्योगों को भारी उद्योगों के समान ही प्राथमिकता और धन दिया गया था।
उपर्युक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(1) केवल I, II और IV
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, II और III
(4) केवल I, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

11. भारत की शुरुआती आर्थिक योजना में सार्वजनिक क्षेत्र के प्रभुत्व के पीछे के तर्क की सबसे अच्छी व्याख्या निम्नलिखित में से कौन सी है?
(1) बुनियादी ढांचे में सार्वजनिक क्षेत्र के प्रयासों के पूरक के लिए प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की अनुमति दी गई थी
(2) भारत के संविधान ने स्पष्ट रूप से औद्योगिक उद्यमों के निजी स्वामित्व को प्रतिबंधित किया था
(3) सार्वजनिक क्षेत्र का उद्देश्य पूर्णतः विदेशी मुद्रा के लिए निर्यात अधिशेष उत्पन्न करना था
(4) दीर्घकालिक निवेश वाले भारी उद्योगों के लिए निजी क्षेत्र के पास पूंजी की कमी थी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

12. 1991 के सुधारों से पहले भारत में सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों की आलोचना के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) कई सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयां नौकरशाही विलंब और राजनीतिक हस्तक्षेप से ग्रस्त थीं।
(2) उन्होंने निवेश पर उच्च प्रतिफल दर उत्पन्न की, जिससे निजी पूंजी बाहर हो गई।
(3) वे अक्सर अत्यधिक कर्मचारियों और कम श्रम उत्पादकता के साथ कार्य करते थे।
(4) सार्वजनिक क्षेत्र की उपयोगिताओं में मूल्य निर्धारण नीतियों के कारण अक्सर पर्याप्त वित्तीय हानि हुई।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

13. निम्नलिखित में से किस नीतिगत दस्तावेज ने आधिकारिक तौर पर उद्योगों को तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया, जिससे अर्थव्यवस्था के प्रमुख क्षेत्रों को विशेष रूप से राज्य के लिए आरक्षित किया गया?
(1) औद्योगिक नीति संकल्प 1948
(2) एकाधिकार और प्रतिबंधात्मक व्यापार व्यवहार अधिनियम 1969
(3) औद्योगिक नीति संकल्प 1956
(4) औद्योगिक नीति विवरण 1977
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

14. सूची I के औद्योगिक नीति संकल्पों/विवरणों को सूची II में उनकी प्रमुख विशेषताओं के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (संकल्प/विवरण)
A. औद्योगिक नीति 1948
B. औद्योगिक नीति 1956
C. औद्योगिक नीति 1977
D. औद्योगिक नीति 1991
सूची II: (प्रमुख विशेषताएं)
i. अधिकांश क्षेत्रों के लिए औद्योगिक लाइसेंसिंग की समाप्ति
ii. मिश्रित अर्थव्यवस्था की अवधारणा का परिचय
iii. सार्वजनिक क्षेत्र का प्रभुत्व और अनुसूची A, B, C उद्योगों का वर्गीकरण
iv. लघु, ग्रामीण और कुटीर उद्योगों पर बल
(1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(2) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(3) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

64. सूची I के गरीबी उन्मूलन और रोजगार सृजन कार्यक्रमों को सूची II में उनकी प्रमुख विशेषताओं या लक्षित समूहों के साथ सुमेलित कीजिए।

सूची I: (गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम)

A. IRDP (एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम)
B. TRYSEM
C. NREP (राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम)
D. इंदिरा आवास योजना

सूची II: (प्रमुख विशेषताएं/लक्ष्य)

i. हाशिए पर रहने वाले और गरीबों को ग्रामीण आवास प्रदान करना
ii. संपत्ति सृजन के माध्यम से ग्रामीण गरीबों को स्वरोजगार के अवसर प्रदान करना
iii. स्वरोजगार के लिए ग्रामीण युवाओं को प्रशिक्षण देना
iv. ग्रामीण क्षेत्रों में मजदूरी रोजगार का सृजन

(1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(2) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

65. 2000 तक भारत में गरीबी उन्मूलन रणनीतियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. प्रारंभिक पंचवर्षीय योजनाएं गरीबी कम करने के लिए आर्थिक विकास के "टपकन सिद्धांत" (ट्रिकल-डाउन) प्रभाव पर बहुत अधिक निर्भर थीं।
II. टपकन सिद्धांत की विफलता के कारण, बाद में लक्षित गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम शुरू किए गए।
III. 1991 के बाद के सुधार काल में सभी राज्य प्रायोजित गरीबी उन्मूलन योजनाओं को पूरी तरह से त्याग दिया गया था।

उपर्युक्त में से कौन से कथन सही हैं?

(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

66. प्रसिद्ध राजनीतिक नारा "गरीबी हटाओ" किस पंचवर्षीय योजना के दौरान एक स्पष्ट योजनागत उद्देश्य में परिवर्तित हुआ?

(1) पांचवीं पंचवर्षीय योजना
(2) तृतीय पंचवर्षीय योजना
(3) चौथी पंचवर्षीय योजना
(4) सातवीं पंचवर्षीय योजना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

67. निम्नलिखित में से कौन सा 1990 के दशक के आर्थिक सुधारों के बाद निवेश प्रतिरुप में बदलाव का सबसे अच्छा प्रतिनिधित्व करता है?

(1) सकल पूंजी निर्माण में सार्वजनिक क्षेत्र की हिस्सेदारी में भारी वृद्धि
(2) मुख्य बुनियादी ढांचे में निजी क्षेत्र के निवेश का पूर्ण और स्थायी उन्मूलन
(3) सार्वजनिक क्षेत्र की हिस्सेदारी में सापेक्ष गिरावट और निजी क्षेत्र के निवेश में वृद्धि
(4) प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को विशेष रूप से कृषि क्षेत्र तक सीमित करना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

68. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं - अभिकथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प चुनकर प्रश्न का उत्तर दीजिए।

अभिकथन (A): प्रथम पंचवर्षीय योजना ने मुख्य रुप से भारी उद्योगों के बजाय कृषि और सिंचाई के लिए संसाधनों का आवंटन किया।

कारण (R): स्वतंत्रता के बाद भारत को गंभीर खाद्यान्न की कमी और बड़े पैमाने पर शरणार्थियों की समस्या का सामना करना पड़ा, जिसके लिए ग्रामीण अर्थव्यवस्था के तत्काल स्थिरीकरण की आवश्यकता थी।

(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

69. द्वितीय पंचवर्षीय योजना के दौरान स्थापित भारी उद्योगों और उनके सहयोगी देश के गलत युग्म की पहचान कीजिए:

(1) भिलाई इस्पात संयंत्र - सोवियत संघ
(2) राउरकेला इस्पात संयंत्र - पश्चिम जर्मनी
(3) बोकारो इस्पात संयंत्र - संयुक्त राज्य अमेरिका
(4) दुर्गापुर इस्पात संयंत्र - यूनाइटेड किंगडम
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

70. 1950 और 1990 के बीच सार्वजनिक क्षेत्र के प्रभुत्व के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. 1948 के औद्योगिक नीति संकल्प ने शस्त्र और गोला-बारूद, परमाणु ऊर्जा और रेलवे परिवहन पर राज्य का एकाधिकार स्थापित किया।
II. IPR 1956 की अनुसूची A में विशेष रुप से राज्य के लिए आरक्षित 17 उद्योग शामिल थे।
III. सार्वजनिक क्षेत्र से एक आदर्श नियोक्ता के रूप में सेवा करने और क्षेत्रीय विषमताओं को कम करने की अपेक्षा की गई थी।
IV. सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयां सरकारी बजट के लिए भारी अधिशेष राजस्व उत्पन्न करने में काफी हद तक सफल रहीं।

उपर्युक्त में से कौन से कथन सही हैं?

Click Here to Buy book on Amazon

(4) 14
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

24. सूची I के वित्तीय मील के पत्थरों को सूची II में उनके संबंधित वर्षों के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (वित्तीय मील के पत्थर)
A. भारतीय रिजर्व बैंक की स्थापना
B. इंपीरियल बैंक ऑफ इंडिया का राष्ट्रीयकरण (SBI बनाने के लिए)
C. बैंक राष्ट्रीयकरण की पहली बड़ी लहर
D. बैंक राष्ट्रीयकरण की दूसरी लहर (6 बैंक)
सूची II: (वर्ष)
i. 1955
ii. 1969
iii. 1980
iv. 1935
(1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(2) A-i, B-iv, C-ii, D-iii
(3) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

25. 1969 में बैंक राष्ट्रीयकरण के तर्क के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. कृषि और लघु उद्योगों जैसे प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में ऋण प्रवाह को निर्देशित करना।
II. कुछ औद्योगिक घरानों के हाथों में आर्थिक शक्ति के संकेंद्रण को रोकना।
III. अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष द्वारा थोपी गई शर्तों का कड़ाई से पालन करना।
उपर्युक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

26. 2000 तक भारत में बैंक राष्ट्रीयकरण का निम्नलिखित में से कौन सा परिणाम नहीं था?
(1) बैंकिंग क्षेत्र में गैर-निष्पादित आस्तियों (NPAs) का पूर्ण उन्मूलन
(2) ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में बैंक शाखाओं का व्यापक विस्तार
(3) घरेलू बचत के संग्रहण में महत्वपूर्ण वृद्धि
(4) जिला स्तर पर ऋण नियोजन के लिए लीड बैंक योजना की शुरुआत
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

27. पूर्व भारतीय राज्यों के शासकों के प्रिवी पर्स और विशेषाधिकारों को किस संविधान संशोधन अधिनियम के माध्यम से समाप्त किया गया था?
(1) 24वां संशोधन अधिनियम, 1971
(2) 25वां संशोधन अधिनियम, 1971
(3) 42वां संशोधन अधिनियम, 1976
(4) 26वां संशोधन अधिनियम, 1971
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

28. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं - अभिकथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प चुनकर प्रश्न का उत्तर दीजिए।
अभिकथन (A): जमींदारी और अन्य मध्यवर्ती व्यवस्थाओं का उन्मूलन स्वतंत्रता के बाद के भारत में भूमि सुधारों का सबसे सफल घटक था।
कारण (R): मध्यस्थों के उन्मूलन ने देश भर में खेतिहर मजदूरों के बीच भूमिहीनता और गरीबी को पूरी तरह से समाप्त कर दिया।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

29. भूदान आंदोलन के रूप में जानी जाने वाली स्वैच्छिक भूमि सुधार पहल का नेतृत्व किसके द्वारा किया गया था?
(1) महात्मा गांधी
(2) जयप्रकाश नारायण
(3) आचार्य विनोबा भावे
(4) राम मनोहर लोहिया
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

30. 2000 तक भारत में भूमि सुधार नीतियों के निम्नलिखित घटकों पर विचार कीजिए:
I. मध्यस्थों का उन्मूलन
II. पट्टेदारी सुधार (किराये का विनियमन और कार्यकाल की सुरक्षा)
III. भूमि जोत की अधिकतम सीमा लगाना
IV. भूमि की चकबंदी
उपर्युक्त में से कौन से कथन भारत के भूमि सुधार कार्यक्रम के तहत अपनाए गए उपायों का सही प्रतिनिधित्व करते हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, III और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

31. भारत के भूमि सुधारों के संदर्भ में, किन राज्यों को सामान्यतः 20वीं सदी के अंत तक पट्टेदारी सुधारों और भूमि सीमा को सबसे सफलतापूर्वक लागू करने के लिए मान्यता दी जाती है?
(1) केरल और पश्चिम बंगाल
(2) बिहार और मध्य प्रदेश
(3) राजस्थान और उत्तर प्रदेश

Downloaded from www.pdf.tube

(4) पंजाब और हरियाणा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

32. गरीबी दूर करने और जनता के जीवन स्तर में सुधार करने के लिए बनाया गया '20-सूत्रीय आर्थिक कार्यक्रम' पहली बार किस अवधि के दौरान शुरु किया गया था?
(1) प्रथम पंचवर्षीय योजना (1951)
(2) आपातकाल की अवधि (1975)
(3) भारत-पाक युद्ध (1971) के बाद
(4) नई आर्थिक नीति (1991)
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

33. 1975 में राष्ट्रीय आपातकाल की घोषणा से ठीक पहले गंभीर आर्थिक संकट की अवधि थी। निम्नलिखित में से कौन सी इस पूर्ववर्ती संकट की एक प्रमुख विशेषता थी?
(1) अपस्फीति की प्रवृत्तियां और अतिरिक्त औद्योगिक क्षमता
(2) तेल की कीमतों के झटके और फसल की विफलता के कारण उच्च मुद्रास्फीति
(3) प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में भारी वृद्धि जिससे रुपये का मूल्य बढ़ गया
(4) खाद्यान्नों का अधिशेष उत्पादन जिससे कृषि कीमतों में भारी गिरावट आई
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

34. सूची I के प्रमुख विधायी अधिनियमों और घटनाओं को सूची II में उनके संबंधित वर्षों के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (घटनाएं/विधायन)
A. MRTP अधिनियम पारित हुआ
B. विदेशी मुद्रा विनियमन अधिनियम (FERA) पारित हुआ
C. आंतरिक आपातकाल की घोषणा
D. प्रिवी पर्स की समाप्ति
सूची II: (वर्ष)
i. 1969
ii. 1971
iii. 1973
iv. 1975
(1) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
(2) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(3) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

35. आपातकाल की अवधि (1975-1977) के दौरान आर्थिक प्रभावों और नीतियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. सख्त प्रशासनिक उपायों के कारण शुरुआती चरण में मुद्रास्फीति को नियंत्रित किया गया था।
II. श्रमिक संघ की गतिविधियों और हड़तालों पर कड़ा प्रतिबंध लगा दिया गया था।
III. तस्करों और कालाबाजारियों पर प्रभावी कार्रवाई की गई।
IV. अर्थव्यवस्था में निजी क्षेत्र का पूर्ण विनियंत्रण देखा गया।
V. अनिवार्य परिवार नियोजन अभियानों के कारण व्यापक ग्रामीण अशांति पैदा हुई।
उपर्युक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(1) केवल I, II, III और V
(2) केवल II, III, IV और V
(3) केवल I, III, IV और V
(4) केवल I, II, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

36. एकाधिकार और प्रतिबंधात्मक व्यापार व्यवहार (MRTP) अधिनियम, 1969 का मुख्य उद्देश्य क्या था?
(1) वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने के लिए बड़े घरेलू समूहों के गठन को प्रोत्साहित करना
(2) राज्य व्यापार निगम के तहत विदेशी व्यापार का एकाधिकार करना
(3) कृषि क्षेत्र में बहुराष्ट्रीय निगमों के प्रवेश को प्रतिबंधित करना
(4) जनहित के विरुद्ध आर्थिक शक्ति के संकेंद्रण को रोकना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

37. भारत में "लाइसेंस राज" प्रणाली के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसमें निजी उद्यमों को अपनी उत्पाद श्रेणी स्थापित करने, विस्तार करने या बदलने के लिए सरकार की मंजूरी प्राप्त करने की आवश्यकता होती थी।
II. इसने औद्योगिक क्षेत्र में भ्रष्टाचार और नौकरशाही के विलंब को प्रभावी ढंग से समाप्त कर दिया।
सही विकल्प चुनें:
(1) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(2) कथन I गलत है और कथन II सही है।
(3) कथन I और II दोनों सही हैं।
(4) कथन I और II दोनों गलत हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

38. निम्नलिखित में से कौन सा औद्योगिक लाइसेंसिंग प्रणाली (लाइसेंस राज) के सबसे महत्वपूर्ण नकारात्मक परिणाम का सबसे सटीक वर्णन करता है?
(1) इसके परिणामस्वरूप सस्ती आयातित उपभोक्ता वस्तुओं की अधिकता हो गई।
(2) इसने औद्योगिक प्रतिस्पर्धा को दबा दिया, अक्षमता को बढ़ावा दिया और बड़े पैमाने के उत्पादन की मितव्ययिता में बाधा डाली।
(3) इसके कारण बड़े पैमाने पर निवेश के माध्यम से भारत के विदेशी मुद्रा भंडार में तेजी से गिरावट आई।
(4) इसके कारण निजी निवेश पूरी तरह से विनिर्माण से कृषि की ओर स्थानांतरित हो गया।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

39. आर्थिक सुधारों के संदर्भ में, MRTP अधिनियम को बाद में बाजार प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देने के लिए एक आधुनिक कानून द्वारा प्रतिस्थापित किया गया था। इसे किस अधिनियम ने प्रतिस्थापित किया?
(1) आवश्यक वस्तु अधिनियम
(2) विदेशी मुद्रा प्रबंधन अधिनियम
(3) कंपनी अधिनियम, 2013
(4) प्रतिस्पर्धा अधिनियम
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

40. निम्नलिखित आर्थिक मील के पत्थरों पर विचार कीजिए:
I. मिश्रित अर्थव्यवस्था का ढांचा स्थापित करने वाला औद्योगिक नीति संकल्प
II. प्रथम पंचवर्षीय योजना की शुरुआत
III. MRTP अधिनियम का अधिनियमन
IV. 14 प्रमुख वाणिज्यिक बैंकों का राष्ट्रीयकरण
निम्नलिखित में से कौन सा सही कालानुक्रमिक अनुक्रम का प्रतिनिधित्व करता है?
(1) II, I, III, IV
(2) I, II, III, IV
(3) II, I, IV, III
(4) I, II, IV, III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

41. 1991 की नई आर्थिक नीति लागू होने के समय भारत के क्रमशः प्रधानमंत्री और वित्त मंत्री कौन थे?
(1) राजीव गांधी और वी.पी. सिंह
(2) चंद्रशेखर और यशवंत सिन्हा
(3) पी.वी. नरसिम्हा राव और डॉ. मनमोहन सिंह
(4) अटल बिहारी वाजपेयी और जसवंत सिंह
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

42. 1991 में व्यापक आर्थिक सुधारों की शुरुआत का तात्कालिक कारण क्या था?
(1) गंभीर भुगतान संतुलन संकट और विदेशी मुद्रा भंडार की कमी
(2) वित्तीय घबराहट के साथ घरेलू शेयर बाजार में भारी गिरावट
(3) व्यापक कृषि संकट और किसान विद्रोह
(4) राजकोषीय बजट में एक अनियंत्रित अधिशेष
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

43. 1991 की नई आर्थिक नीति तीन मुख्य स्तंभों पर आधारित थी जिन्हें सामान्यतः LPG के रूप में जाना जाता है। निम्नलिखित में से कौन सा इन स्तंभों में से एक नहीं है?
(1) उदारीकरण
(2) निजीकरण
(3) वैश्वीकरण
(4) स्थानीयकरण
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

44. सूची I में 1991 के आर्थिक सुधारों के घटकों को सूची II में उनकी संबंधित परिभाषाओं के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (सुधार घटक)
A. उदारीकरण
B. निजीकरण
C. वैश्वीकरण
D. स्थिरीकरण उपाय
सूची II: (परिभाषाएं)
i. मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने और भुगतान संतुलन घाटे को ठीक करने के लिए अल्पकालिक नीतियां
ii. राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को विश्व अर्थव्यवस्था के साथ एकीकृत करना
iii. उद्योगों पर अनावश्यक सरकारी नियंत्रण और प्रतिबंधों को हटाना
iv. सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों के स्वामित्व या प्रबंधन को निजी क्षेत्र में स्थानांतरित करना
(1) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

45. 1991 में संकट प्रबंधन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. आपातकालीन ऋण सुरक्षित करने के लिए भारत को बैंक ऑफ इंग्लैंड के पास अपना स्वर्ण भंडार गिरवी रखना पड़ा था।
II. अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) और विश्व बैंक ने सख्त शर्तों के साथ ऋण प्रदान किया।
III. शुरु किए गए सुधार पूर्णतः संरचनात्मक थे और व्यापक आर्थिक स्थिरीकरण की उपेक्षा की गई थी।
उपर्युक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

46. 1991 में अपनाए गए उदारीकरण उपायों के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) सार्वजनिक क्षेत्र की भूमिका को कम किया गया और कई क्षेत्रों को निजी भागीदारी के लिए खोल दिया गया।
(2) कई महत्वपूर्ण क्षेत्रों में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की सीमा बढ़ा दी गई।
(3) आयात पर मात्रात्मक प्रतिबंधों को धीरे-धीरे समाप्त कर दिया गया।
(4) सभी उद्योगों के लिए बिना किसी अपवाद के औद्योगिक लाइसेंसिंग समाप्त कर दी गई।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Click Here to Buy book on Amazon

47. 1991 के औद्योगिक विनियंत्रण के बाद, उद्योगों की एक संक्षिप्त सूची के लिए औद्योगिक लाइसेंसिंग को बरकरार रखा गया था। यह मुख्य रूप से किस कारण से था?
(1) रणनीतिक, सुरक्षा और पर्यावरणीय चिंताएं
(2) वैश्विक प्रतिस्पर्धा से घरेलू लघु उद्योगों का संरक्षण
(3) लाइसेंस शुल्क के माध्यम से राजस्व सृजन
(4) विश्व व्यापार संगठन द्वारा जारी निर्देश
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

48. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं - अभिकथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प चुनकर प्रश्न का उत्तर दीजिए।
अभिकथन (A): 1991 की नई आर्थिक नीति ने प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) नियमों को महत्वपूर्ण रूप से उदार बनाया।
कारण (R): सरकार विदेशी पूंजी तथा प्रौद्योगिकी को आकर्षित करना चाहती थी और भारतीय उद्योगों को वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं के साथ एकीकृत करना चाहती थी।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

49. 1991 के सुधारों के परिणामस्वरूप, सार्वजनिक क्षेत्र के लिए विशेष रूप से आरक्षित उद्योगों की संख्या में भारी कमी आई। 1990 के दशक के अंत में निम्नलिखित में से कौन सा सार्वजनिक क्षेत्र के लिए आरक्षित रहा?
(1) दूरसंचार
(2) परमाणु ऊर्जा
(3) नागरिक उड्डयन
(4) लोहा और इस्पात
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

50. 1990 के दशक में किए गए निम्नलिखित सुधार उपायों पर विचार कीजिए:
I. वाणिज्यिक बैंकिंग क्षेत्र में ब्याज दरों का विनियंत्रण।
II. उच्चतम सीमा शुल्क और शुल्क दरों में कमी।
III. बाजार निर्धारित विनिमय दर प्रणाली की ओर बढ़ना।
IV. कपड़ा उद्योग का पूर्णतः राष्ट्रीयकरण करने के लिए कानूनों का अधिनियमन।
उपर्युक्त में से कौन से कथन उदारीकरण युग के सुधारों का सही प्रतिनिधित्व करते हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

51. भारत के आर्थिक सुधारों के संदर्भ में, "विनिवेश" शब्द को सबसे सटीक रूप से किस प्रकार परिभाषित किया गया है?
(1) घाटे में चल रहे सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों को पूरी तरह बंद करना
(2) सरकार द्वारा निजी क्षेत्र की कंपनियों के शेयर खरीदने की प्रक्रिया
(3) सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयों में सरकारी इक्विटी को निजी या सार्वजनिक संस्थाओं को बेचना
(4) घरेलू बाजार से प्रत्यक्ष विदेशी निवेश और निजी इक्विटी की निकासी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

52. सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों के विनिवेश पर सरकार को सलाह देने के लिए 1993 में नियुक्त समिति की अध्यक्षता किसके द्वारा की गई थी?
(1) राजा जे. चेलैया
(2) एम. नरसिम्हम
(3) विजय केलकर
(4) सी. रंगराजन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

53. 2000 तक भारत में उपयोग की जाने वाली निजीकरण की विधियों के संबंध में सही युग्म की पहचान कीजिए।
(1) रणनीतिक बिक्री - प्रबंधन नियंत्रण के हस्तांतरण के बिना 50 प्रतिशत से कम शेयरों की बिक्री
(2) अल्पसंख्यक बिक्री - किसी निजी संस्था को प्रबंधन नियंत्रण के हस्तांतरण के साथ बहुमत शेयरों की बिक्री
(3) परिसंपत्ति बिक्री - बंद पड़ी सार्वजनिक क्षेत्र की इकाई की भौतिक संपत्तियों को बेचना
(4) स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति - बीमार निजी क्षेत्र की इकाइयों का राष्ट्रीयकरण करना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

54. सूची I में 1990 के दशक की प्रमुख आर्थिक सुधार समितियों को सूची II में उनके संबंधित क्षेत्रों के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (सुधार समितियां)
A. नरसिम्हम समिति I (1991)
B. चेलैया समिति (1991)
C. रंगराजन समिति (1993)
D. मल्होत्रा समिति (1993)
सूची II: (क्षेत्र)
i. कर सुधार
ii. सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों (PSUs) का विनिवेश
iii. वित्तीय प्रणाली / बैंकिंग सुधार
iv. बीमा क्षेत्र सुधार
(1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(2) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
(3) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(4) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

55. 1990 के दशक में सार्वजनिक क्षेत्र के सुधारों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. सरकार ने 1997 में "नवरत्न" नीति पेश की।

II. नवरत्न का दर्जा मिलने से चयनित लाभ कमाने वाले PSUs को अधिक परिचालन और वित्तीय स्वायत्तता प्राप्त हुई।
III. शुरुआती विनिवेश का प्राथमिक उद्देश्य राजकोषीय घाटे को पाटने के लिए राजस्व जुटाना था।
IV. दीर्घकालिक रणनीतियां तैयार करने के लिए 1996 में एक विनिवेश आयोग का गठन किया गया था।
V. प्रबंधन नियंत्रण के हस्तांतरण वाली रणनीतिक बिक्री 1991 में तुरंत विनिवेश की प्रमुख विधि बन गई।

उपर्युक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(1) केवल I, II, III और IV
(2) केवल II, III, IV और V
(3) केवल I, II, IV और V
(4) केवल I, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

56. विनिवेश आयोग के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसका गठन 1996 में जी.वी. रामकृष्ण की अध्यक्षता में किया गया था।
II. इसकी सिफारिशें बाध्यकारी थीं और सरकार द्वारा बिना शर्त लागू की गई थीं।

सही विकल्प चुनें:
(1) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(2) कथन I गलत है और कथन II सही है।
(3) कथन I और II दोनों सही हैं।
(4) कथन I और II दोनों गलत हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

57. भारत में वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने लघु उद्योगों (SSIs) को काफी प्रभावित किया। 2000 तक वैश्वीकरण के कारण लघु उद्योगों के सामने सबसे महत्वपूर्ण चुनौती क्या थी?
(1) अत्यधिक घरेलू सब्सिडी जिसने उन्हें अकुशल बना दिया
(2) वैश्विक व्यापार निकायों के आदेशानुसार उच्च मांग वाले लघु उद्योग उत्पादों के निर्यात पर पूर्ण प्रतिबंध
(3) मात्रात्मक प्रतिबंधों को हटाने के बाद आयातित वस्तुओं के साथ प्रतिस्पर्धा करने में असमर्थता
(4) राज्य सरकारों द्वारा सफल लघु उद्योगों का जबरन राष्ट्रीयकरण
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

58. निम्नलिखित में से कौन सा नीतिगत उपाय सामान्यतः भारत में वैश्वीकरण की प्रक्रिया से नहीं जुड़ा है?
(1) विदेशी प्रौद्योगिकी समझौतों का सख्त विनियमन और सीमा तय करना
(2) आयात शुल्क और टैरिफ में कमी
(3) चालू खाते पर रुपये की परिवर्तनीयता
(4) विदेशी पोर्टफोलियो निवेश और दीर्घकालिक संस्थागत पूंजी को प्रोत्साहित करना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

59. जुलाई 1991 में, भारतीय रिजर्व बैंक ने रुपये का दो चरणों में अवमूल्यन लागू किया। इस उपाय का प्राथमिक अभीष्ट प्रभाव क्या था?
(1) घरेलू उपभोक्ताओं के लिए आयातित विलासिता की वस्तुओं को सस्ता बनाना
(2) रुपये की अंतर्राष्ट्रीय क्रय शक्ति और विनिमय मूल्य में उल्लेखनीय वृद्धि करना
(3) घरेलू शेयर बाजार के मूल्य को कृत्रिम रूप से बढ़ाना
(4) भारतीय वस्तुओं की अंतर्राष्ट्रीय कीमतें कम करके निर्यात को बढ़ावा देना और आयात को हतोत्साहित करना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

60. भारत के विदेशी मुद्रा नियामक ढांचे में बदलाव को दर्शाने वाले सही अनुक्रम का चयन कीजिए:
(1) विदेशी मुद्रा प्रबंधन अधिनियम (FEMA) → विदेशी मुद्रा विनियमन अधिनियम (FERA)
(2) विदेशी मुद्रा विनियमन अधिनियम (FERA) → विदेशी मुद्रा प्रबंधन अधिनियम (FEMA)
(3) एकाधिकार और प्रतिबंधात्मक व्यापार व्यवहार अधिनियम (MRTP) → विदेशी मुद्रा विनियमन अधिनियम (FERA)
(4) विदेशी मुद्रा प्रबंधन अधिनियम (FEMA) → प्रतिस्पर्धा अधिनियम
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

61. वैश्विक अर्थव्यवस्था में भारत का एकीकरण तब औपचारिक रूप से स्थापित हुआ जब वह किस वर्ष में विश्व व्यापार संगठन (WTO) का संस्थापक सदस्य बना?
(1) 1991
(2) 1993
(3) 1995
(4) 1999
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

62. अर्थशास्त्री राज कृष्ण द्वारा गढ़ा गया शब्द "हिंदू विकास दर" किसे संदर्भित करता है?
(1) 1990 के दशक के उदारीकरण की अवधि के दौरान प्राप्त तीव्र और निरंतर आर्थिक विकास
(2) हरित क्रांति के दौरान कृषि क्षेत्र की असाधारण उच्च विकास दर
(3) राज्य द्वारा वित्तपोषित धार्मिक अल्पसंख्यक संस्थानों की विशिष्ट विकास दर
(4) 1950 से 1980 के दशक तक अनुभव की गई 3.5% की निम्न वार्षिक आर्थिक वृद्धि
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

63. निम्नलिखित समितियों में से बेमेल को पहचानिए।
(1) तारापोर समिति
(2) वाई.के. अलघ समिति
(3) डी.टी. लकड़ावाला समिति
(4) सुरेश तेंदुलकर समिति

Downloaded from www.pdf.tube

अध्याय 25

नियोजन, आर्थिक सुधार एवं वर्ष 2000 तक का विकास

1. भारत का योजना आयोग मार्च 1950 में निम्नलिखित में से किस माध्यम से स्थापित किया गया था?
(1) भारत के संविधान में एक संशोधन द्वारा
(2) भारत सरकार के एक प्रस्ताव द्वारा
(3) भारत की संसद द्वारा पारित एक अधिनियम द्वारा
(4) भारत के राष्ट्रपति द्वारा प्रख्यापित एक अध्यादेश द्वारा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

2. निम्नलिखित में से कौन सा कथन 2000 तक की योजना प्रक्रिया में राष्ट्रीय विकास परिषद (NDC) की प्राथमिक भूमिका का सबसे सटीक वर्णन करता है?
(1) योजना आयोग द्वारा तैयार की गई पंचवर्षीय योजनाओं को अनुमोदित करना
(2) पंचवर्षीय योजनाओं का मसौदा तैयार करना और राज्यों को बजट आवंटित करना
(3) जिला स्तर पर योजनागत योजनाओं के दैनिक कार्यान्वयन की निगरानी करना
(4) केंद्र और राज्यों के बीच वित्तीय विवादों के समाधान के लिए एक वैधानिक निकाय के रूप में कार्य करना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

3. निम्नलिखित में से कौन सा भारत के योजना आयोग का निर्दिष्ट कार्य नहीं था?
(1) देश के भौतिक, पूंजीगत और मानवीय संसाधनों का आकलन करना
(2) देश के संसाधनों के सबसे प्रभावी और संतुलित उपयोग के लिए योजना तैयार करना
(3) अनुच्छेद 275 के तहत राज्य सरकारों को वैधानिक वित्तीय अनुदान वितरित करना
(4) उन चरणों को परिभाषित करना जिनमें योजना को लागू किया जाना चाहिए और संसाधनों के आवंटन का प्रस्ताव करना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

4. सूची I की पंचवर्षीय योजनाओं को सूची II में उनके प्राथमिक केंद्र क्षेत्रों के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (पंचवर्षीय योजनाएं)
A. प्रथम पंचवर्षीय योजना
B. द्वितीय पंचवर्षीय योजना
C. तृतीय पंचवर्षीय योजना
D. पांचवीं पंचवर्षीय योजना
सूची II: (प्राथमिक केंद्र क्षेत्र)
i. भारी उद्योगों पर बल देने के साथ तीव्र औद्योगीकरण
ii. कृषि विकास और मुद्रास्फीति पर नियंत्रण
iii. गरीबी उन्मूलन (गरीबी हटाओ) और आत्मनिर्भरता
iv. स्वतंत्र अर्थव्यवस्था और स्व-सृजित विकास
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(4) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

5. प्रथम पंचवर्षीय योजना (1951-1956) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह मुख्य रुप से आर्थिक विकास के हैरोड-डोमर मॉडल पर आधारित थी।
II. इसने एक सुदृढ़ पूंजी आधार बनाने के लिए औद्योगिक विकास को सर्वोच्च प्राथमिकता दी।
III. इस अवधि के दौरान भाखड़ा नांगल और हीराकुंड जैसी प्रमुख सिंचाई परियोजनाएं शुरु की गईं।
उपर्युक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

6. प्रथम पंचवर्षीय योजना के दौरान 2.1 प्रतिशत के लक्ष्य के विरुद्ध वास्तविक आर्थिक विकास दर क्या प्राप्त हुई थी?
(1) 1.8 प्रतिशत
(2) 3.6 प्रतिशत
(3) 2.5 प्रतिशत
(4) 4.5 प्रतिशत
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

7. प्रथम पंचवर्षीय योजना के दौरान कृषि पर ध्यान केंद्रित करने के पीछे प्राथमिक तर्क क्या था?
(1) आवश्यक विदेशी मुद्रा भंडार उत्पन्न करने के लिए कच्चे माल के निर्यात में वृद्धि करना
(2) कृषि श्रमिकों को विनिर्माण क्षेत्र में स्थानांतरित करने की

(1) केवल I, II और III
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

71. हरित क्रांति शुरू में पूर्वी भारत (जैसे बिहार, बंगाल, ओडिशा) में किस मुख्य कारण से सफल नहीं हुई?
(1) इस क्षेत्र में कृषि योग्य भूमि का पूर्ण अभाव
(2) पूर्वी राज्यों में गेहूं के उपभोग के प्रति सांस्कृतिक प्रतिरोध
(3) इस क्षेत्र की कई राज्य सरकारों द्वारा अधिनियमित रासायनिक उर्वरकों पर विधायी प्रतिबंध
(4) कमजोर बुनियादी ढांचा, दोषपूर्ण सिंचाई नियंत्रण और खंडित भूमि जोत
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

72. "बिलियन लीटर आइडिया" एक शब्द है जो सामान्यतः भारत के आर्थिक इतिहास में किस महत्वपूर्ण विकास से जुड़ा है?
(1) ऑपरेशन फ्लड और दुग्ध उत्पादन का विस्तार
(2) तीसरी योजना के तहत पेट्रोलियम शोधन क्षमता का विस्तार
(3) राष्ट्रीय पेयजल मिशन
(4) 1990 के दशक में इथेनॉल सम्मिश्रण का बड़े पैमाने पर विस्तार
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

73. 1969 में बैंकों के राष्ट्रीयकरण के माध्यम से प्राप्त एक प्रमुख उद्देश्य प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र को ऋण (PSL) देना शुरू करना था। शुरुआत में इस निर्देश से किस क्षेत्र को सबसे अधिक लाभ हुआ?
(1) भारी मशीनरी और इस्पात
(2) सूचना प्रौद्योगिकी और सॉफ्टवेयर
(3) कृषि और संबद्ध गतिविधियाँ
(4) नागरिक उड्डयन और पर्यटन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

74. सूची I की पंचवर्षीय योजनाओं को सूची II में उन विकास मॉडलों/रणनीतियों के साथ सुमेलित कीजिए जिन पर वे आधारित थीं।
सूची I: (पंचवर्षीय योजनाएं)
A. प्रथम योजना
B. द्वितीय योजना
C. तृतीय योजना
D. आठवीं योजना
सूची II: (विकास मॉडल/रणनीतियों)
i. जॉन सेंडी और एस. चक्रवर्ती मॉडल
ii. हैरोड-डोमर मॉडल
iii. महालनोबिस मॉडल
iv. राव-मनमोहन मॉडल
(1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(2) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(3) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(4) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

75. 1991 के सुधारों के बाद के दशक (2000 तक) में भारत के आर्थिक प्रदर्शन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. भारत के GDP में सेवा क्षेत्र की हिस्सेदारी में तेजी से विस्तार हुआ।
II. सूचना प्रौद्योगिकी (IT) और सॉफ्टवेयर सेवा क्षेत्र में वृद्धि शुरु हुई।
III. भारत का विदेशी मुद्रा भंडार संतोषजनक स्तर तक बढ़ गया।
IV. विनिर्माण क्षेत्र ने पूरे 1990 के दशक में लगातार विस्फोटक, दो अंकों की वृद्धि का अनुभव किया।
V. समग्र GDP में कृषि की हिस्सेदारी में गिरावट जारी रही।
उपर्युक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(1) केवल I, II, III और V
(2) केवल I, II, IV और V
(3) केवल II, III, IV और V
(4) केवल I, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

76. 1991 में लाइसेंस राज को समाप्त करने के बाद, कुछ विशिष्ट क्षेत्रों के लिए औद्योगिक लाइसेंसिंग को बरकरार रखा गया था। निम्नलिखित में से कौन सा अनिवार्य लाइसेंस की आवश्यकता वाले क्षेत्रों में शामिल नहीं था?
(1) शराब और मादक पेय
(2) सूती वस्त्र और परिधान
(3) एयरोस्पेस और रक्षा उपकरण
(4) सिगरेट और तंबाकू उत्पाद
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

77. 2000 तक भारत में भूमि जोत की सीमा के कार्यान्वयन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसके परिणामस्वरुप सभी भारतीय राज्यों में भूमिहीनों को अधिशेष भूमि का बड़े पैमाने पर पुनर्वितरण हुआ।
II. कार्यान्वयन में खामियों, बेनामी हस्तांतरण और लंबी मुकदमेबाजी के कारण गंभीर बाधा आई।
सही विकल्प चुनें:
(1) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(2) कथन I गलत है और कथन II सही है।
(3) कथन I और II दोनों सही हैं।
(4) कथन I और II दोनों गलत हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

78. आपातकाल की अवधि (1975-1977) के दौरान, सरकार ने आर्थिक अपराधों पर नियंत्रण के लिए SAFEMA कानून बनाया था। SAFEMA का पूर्ण रुप क्या है?
(1) स्टेट एजेंसी फॉर फॉरेन एक्सचेंज मैनेजमेंट एक्ट
(2) स्पेशल अथॉरिटी फॉर फाइनेंशियल एनफोर्समेंट एंड

Click Here to Buy book on Amazon

30. (4) I, II, III और IV
भारत के भूमि सुधार कार्यक्रम में मुख्य रुप से चार महत्वपूर्ण घटक सम्मिलित थे। सर्वप्रथम जमींदार जैसे मध्यस्थों का उन्मूलन किया गया। द्वितीय, पट्टेदारी सुधार के अंतर्गत किराये का विनियमन और काश्तकारों के कार्यकाल की सुरक्षा सुनिश्चित की गई। तृतीय, एक व्यक्ति या परिवार के पास रहने वाली भूमि पर अधिकतम सीमा निर्धारित की गई। अंततः कृषि दक्षता बढ़ाने हेतु बिखरी हुई छोटी जोतों की चकबंदी करने के उपायों को प्रभावी ढंग से अपनाया गया।

31. (1) केरल और पश्चिम बंगाल
भारत में केरल और पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों को भूमि सुधार नीतियों को सबसे प्रभावी ढंग से लागू करने हेतु जाना जाता है। इन राज्यों में सुदृढ़ राजनीतिक इच्छाशक्ति और जन आंदोलनों के कारण पट्टेदारी सुधारों और भूमि सीमा कानूनों का सफल क्रियान्वयन संभव हुआ। वहां भूमिहीन श्रमिकों को वास्तविक अधिकार प्रदान किए गए और अधिशेष भूमि का पुनर्वितरण किया गया। इसके विपरीत, कई उत्तर भारतीय राज्यों में यह सुधार प्रक्रिया अत्यंत धीमी रही।

32. (2) आपातकाल की अवधि (1975)
गरीबी दूर करने और समाज के वंचित वर्गों के जीवन स्तर में सुधार हेतु 20-सूत्रीय आर्थिक कार्यक्रम की घोषणा प्रथम बार वर्ष 1975 में की गई थी। यह तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी द्वारा राष्ट्रीय आपातकाल के दौरान प्रारंभ किया गया एक महत्वपूर्ण नीतिगत दस्तावेज था। इसमें कृषि उत्पादन बढ़ाने, ग्रामीण ऋणग्रस्तता कम करने, न्यूनतम मजदूरी सुनिश्चित करने और आवश्यक वस्तुओं के वितरण जैसे समाज कल्याणकारी लक्ष्यों पर विशेष ध्यान केंद्रित किया गया था।

33. (2) तेल की कीमतों के झटके और फसल की विफलता के कारण उच्च मुद्रास्फीति
1975 में राष्ट्रीय आपातकाल की घोषणा से पूर्व भारत गंभीर आर्थिक चुनौतियों का सामना कर रहा था। 1973 के वैश्विक तेल संकट के कारण ईंधन की कीमतों में भारी उछाल आया था। साथ ही, मानसून की विफलता के कारण कृषि उत्पादन गिर गया था जिससे देश में उच्च मुद्रास्फीति और खाद्यान्न की कमी उत्पन्न हो गई थी। इन आर्थिक संकटों के कारण जनता में गहरा असंतोष फैला, जिसने अंततः राजनीतिक अस्थिरता को तीव्र कर दिया।

34. (1) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
एकाधिकार और प्रतिबंधात्मक व्यापार व्यवहार अधिनियम वर्ष 1969 में पारित किया गया था। प्रिवी पर्स की समाप्ति का संवैधानिक संशोधन 1971 में प्रभावी हुआ। विदेशी मुद्रा विनियमन अधिनियम को देश के विदेशी मुद्रा संसाधनों के प्रबंधन हेतु 1973 में लाया गया था। अंततः जून 1975 में आंतरिक अशांति के आधार पर देश में राष्ट्रीय आपातकाल की घोषणा की गई। ये सभी घटनाएं भारतीय राजनीति और अर्थव्यवस्था के महत्वपूर्ण ऐतिहासिक मील के पत्थर हैं।

35. (1) केवल I, II, III और V
आपातकाल के दौरान सरकार ने सख्त प्रशासनिक उपायों द्वारा मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने का प्रयास किया। श्रमिक संघों की गतिविधियों और हड़तालों पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया गया था। तस्करों और कालाबाजारियों के विरुद्ध कठोर कार्रवाई की गई ताकि आपूर्ति श्रृंखला स्थिर बनी रहे। हालांकि, इस अवधि में अर्थव्यवस्था का निजीकरण नहीं हुआ, बल्कि राज्य का नियंत्रण और कड़ा हो गया था। अनिवार्य परिवार नियोजन अभियानों के कारण ग्रामीण जनता में व्यापक नाराजगी थी।

36. (4) जनहित के विरुद्ध आर्थिक शक्ति के संकेंद्रण को रोकना
एमआरटीपी अधिनियम 1969 का मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना था कि आर्थिक शक्ति का संकेंद्रण कुछ ही व्यापारिक हाथों में न हो जाए, जिससे जनहित को हानि पहुँचे। यह कानून बड़े व्यावसायिक समूहों के विस्तार को नियंत्रित करता था और एकाधिकारवादी तथा प्रतिबंधात्मक व्यापार प्रथाओं पर रोक लगाता था। इसका लक्ष्य बाजार में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा बनाए रखना और छोटे उद्यमियों को बड़े निगमों के अनुचित व्यापार व्यवहार से विधिक सुरक्षा प्रदान करना था।

37. (1) कथन I सही है और कथन II गलत है।
लाइसेंस राज प्रणाली के तहत निजी उद्यमियों को नया उद्योग लगाने, क्षमता विस्तार करने या उत्पादों की श्रेणी बदलने हेतु सरकार से पूर्व अनुमति लेना अनिवार्य था। यह नीति संसाधनों के आवंटन पर कड़ा नियंत्रण रखने के उद्देश्य से बनाई गई थी। हालांकि, इस प्रणाली ने भ्रष्टाचार और नौकरशाही के विलंब को समाप्त करने के स्थान पर उन्हें और अधिक बढ़ावा दिया। इसके कारण औद्योगिक क्षेत्र में लालफीताशाही बढ़ी और उद्यमशीलता बाधित हुई।

38. (2) इसने औद्योगिक प्रतिस्पर्धा को दबा दिया, अक्षमता को बढ़ावा दिया और बड़े पैमाने के उत्पादन की मितव्ययिता में बाधा डाली।
औद्योगिक लाइसेंसिंग प्रणाली का सबसे नकारात्मक परिणाम यह हुआ कि इसने बाजार में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को दबा दिया। लाइसेंस प्राप्त करने की जटिल प्रक्रिया के कारण नई कंपनियों का प्रवेश अत्यंत कठिन हो गया, जिससे मौजूदा कंपनियों में अकुशलता बढ़ी। इसने उद्योगों को बड़े पैमाने पर उत्पादन की मितव्ययिता प्राप्त करने से रोका, क्योंकि क्षमता विस्तार पर सख्त सरकारी सीमाएं लागू थीं। इसके फलस्वरुप भारतीय उद्योग वैश्विक स्तर पर काफी हद तक अप्रतिस्पर्धी हो गए।

39. (4) प्रतिस्पर्धा अधिनियम
आर्थिक उदारीकरण के पश्चात पुराने एमआरटीपी अधिनियम को वर्ष 2002 के प्रतिस्पर्धा अधिनियम द्वारा प्रतिस्थापित कर दिया गया। एमआरटीपी अधिनियम का ध्यान बड़े उद्योगों के आकार को सीमित करने पर था, जबकि नए प्रतिस्पर्धा अधिनियम का उद्देश्य बाजार में निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देना और उपभोक्ता हितों की रक्षा करना है। यह बदलाव वैश्वीकरण के युग में भारतीय बाजार को आधुनिक बनाने और एकाधिकारवादी व्यवहार को रोकने हेतु आवश्यक था ताकि औद्योगिक दक्षता बढ़ सके।

NODIA

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) भारत सरकार के एक प्रस्ताव द्वारा
भारत के योजना आयोग की स्थापना मार्च 1950 में केंद्रीय मंत्रिमंडल के एक प्रस्ताव द्वारा की गई थी। यह न तो एक संवैधानिक निकाय था और न ही वैधानिक। इसे सरकार के एक कार्यकारी निर्णय के माध्यम से बनाया गया था। इसका मुख्य उत्तरदायित्व देश के भौतिक एवं मानवीय संसाधनों का आकलन करना तथा विकास हेतु पंचवर्षीय योजनाएं तैयार करना था। प्रधानमंत्री इसके पदेन अध्यक्ष होते थे। वर्ष 2015 में इसे नीति आयोग द्वारा प्रतिस्थापित कर दिया गया।

2. (1) योजना आयोग द्वारा तैयार की गई पंचवर्षीय योजनाओं को अनुमोदित करना
राष्ट्रीय विकास परिषद की स्थापना अगस्त 1952 में योजना निर्माण प्रक्रिया में राज्यों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने हेतु की गई थी। यह देश में योजना निर्माण से संबंधित एक सर्वोच्च निकाय है। इसका प्राथमिक उत्तरदायित्व योजना आयोग द्वारा तैयार की गई पंचवर्षीय योजनाओं की विस्तृत समीक्षा करना और उन्हें अंतिम रूप से अनुमोदित करना था। यह केंद्र और राज्यों के बीच विकासात्मक नीतियों एवं राष्ट्रीय उद्देश्यों पर प्रभावी समन्वय स्थापित करने हेतु एक महत्वपूर्ण मंच था।

3. (3) अनुच्छेद 275 के तहत राज्य सरकारों को वैधानिक वित्तीय अनुदान वितरित करना
योजना आयोग का मुख्य कार्य देश के भौतिक, पूंजीगत और मानवीय संसाधनों का वैज्ञानिक आकलन करना था। यह संसाधनों के संतुलित उपयोग हेतु प्रभावी योजनाएं बनाता था और विकास के विभिन्न चरणों को प्राथमिकता के आधार पर निर्धारित करता था। अनुच्छेद 275 के तहत राज्यों को वैधानिक वित्तीय अनुदान वितरित करने का कार्य वित्त आयोग का है, जो एक संवैधानिक निकाय है। योजना आयोग का इस प्रकार के वैधानिक वित्तीय आवंटन में कोई उत्तरदायित्व नहीं था।

4. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
प्रथम पंचवर्षीय योजना ने मुख्य रूप से कृषि विकास और मुद्रास्फीति के नियंत्रण को प्राथमिकता दी थी। द्वितीय योजना ने महालनोबिस मॉडल को अपनाते हुए भारी उद्योगों और तीव्र औद्योगीकरण पर ध्यान केंद्रित किया। तृतीय योजना का लक्ष्य भारतीय अर्थव्यवस्था को आत्मनिर्भर और स्व-सृजित बनाना था। पांचवीं योजना का प्रमुख उद्देश्य गरीबी उन्मूलन, जिसे 'गरीबी हटाओ' का नारा दिया गया, और आर्थिक आत्मनिर्भरता प्राप्त करना था। ये सभी योजनाएं भारत के आर्थिक विकास की सुदृढ़ आधारशिला साबित हुईं।

NODIA

5. (3) केवल I और III
प्रथम पंचवर्षीय योजना मुख्य रूप से आर्थिक विकास के हैरोड-डोमर मॉडल पर आधारित थी। इस योजना में कृषि क्षेत्र के समग्र विकास को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई थी, न कि औद्योगिक क्षेत्र को। इसी अवधि के दौरान देश की सिंचाई आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु भाखड़ा नांगल, हीराकुंड और दामोदर घाटी जैसी महत्वपूर्ण बहुउद्देशीय परियोजनाएं प्रारंभ की गईं। यह योजना अपने निर्धारित विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने और अर्थव्यवस्था को स्थिरता प्रदान करने में पूरी तरह सफल रही थी।

6. (2) 3.6 प्रतिशत
प्रथम पंचवर्षीय योजना के दौरान भारतीय अर्थव्यवस्था ने अपनी अनुमानित क्षमता से बेहतर प्रदर्शन किया था। सरकार ने इस अवधि के लिए 2.1% की वार्षिक आर्थिक विकास दर का लक्ष्य निर्धारित किया था। अनुकूल मानसून और कृषि उत्पादन में आशातीत वृद्धि के कारण वास्तविक विकास दर 3.6% प्राप्त हुई थी। यह उपलब्धि प्रारंभिक वर्षों में आर्थिक स्थिरीकरण और भविष्य के नियोजन की दिशा में एक अत्यंत महत्वपूर्ण एवं सकारात्मक कदम साबित हुई थी।

7. (4) विभाजन के कारण उत्पन्न खाद्यान्न की कमी और कृषि संबंधी बाधाओं को दूर करना
स्वतंत्रता और देश के विभाजन के पश्चात भारत को अत्यंत गंभीर खाद्यान्न संकट का सामना करना पड़ा था। विभाजन के कारण सर्वाधिक उपजाऊ कृषि भूमि का एक विशाल हिस्सा पाकिस्तान के पास चला गया था। इसी कारण प्रथम पंचवर्षीय योजना में कृषि क्षेत्र पर ध्यान केंद्रित करने का प्राथमिक उद्देश्य खाद्यान्न की कमी को तत्काल दूर करना और कृषि संबंधी बाधाओं को समाप्त करना था ताकि देश आत्मनिर्भर बन सके।

8. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
द्वितीय पंचवर्षीय योजना में भारी और बुनियादी उद्योगों के विकास पर विशेष बल दिया गया था। योजनाकारों का यह सुदृढ़ विचार था कि भारतीय अर्थव्यवस्था में तीव्र संरचनात्मक परिवर्तन लाने के लिए एक मजबूत पूंजीगत वस्तु क्षेत्र का होना अनिवार्य है। भारी उद्योगों की स्थापना से आत्मनिर्भरता प्राप्त करने और दीर्घकालिक आर्थिक विकास को गति मिलने की संभावना थी। यह रणनीति देश को औद्योगिक रूप से समृद्ध एवं सशक्त बनाने हेतु अपनाई गई थी।

9. (3) महालनोबिस मॉडल
द्वितीय पंचवर्षीय योजना की आर्थिक रणनीति को व्यापक रूप से महालनोबिस मॉडल के नाम से जाना जाता है। इस प्रारूप को प्रसिद्ध सांख्यिकीविद् पी.सी. महालनोबिस ने तैयार किया था। इसमें बुनियादी और भारी उद्योगों के विकास के माध्यम

50. (1) केवल I, II और III
1990 के दशक के सुधारों में बैंकिंग क्षेत्र में ब्याज दरों का विनियंत्रण करना और आयात शुल्क दरों में भारी कटौती करना शामिल था। सरकार ने भारतीय रुपये के विनिमय मूल्य को प्रशासनिक नियंत्रण से हटाकर बाजार आधारित प्रणाली की ओर मोड़ दिया। हालांकि इस युग में उद्योगों के राष्ट्रीयकरण की नीति को पूर्णतः त्याग दिया गया था। इसके स्थान पर सार्वजनिक उद्यमों के विनिवेश पर ध्यान दिया गया ताकि अर्थव्यवस्था को अधिक गतिशील और प्रतिस्पर्धी बनाया जा सके।

51. (3) सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयों में सरकारी इक्विटी को निजी या सार्वजनिक संस्थाओं को बेचना
भारत के आर्थिक संदर्भ में 'विनिवेश' का अर्थ सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयों में सरकार की हिस्सेदारी या इक्विटी को निजी या सार्वजनिक निवेशकों को बेचना है। इसका मुख्य उद्देश्य सरकारी खजाने हेतु अतिरिक्त संसाधन जुटाना और इन उद्यमों के प्रबंधन में व्यावसायिक दक्षता लाना है। विनिवेश के माध्यम से सरकार धीरे-धीरे अपना स्वामित्व कम करती है ताकि बाजार की अनुशासनिक शक्तियों का लाभ उठाया जा सके। यह नीति राजकोषीय घाटे को कम करने में भी सहायक है।

52. (4) सी. रंगराजन
सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों के विनिवेश के संबंध में व्यापक सुझाव देने हेतु वर्ष 1993 में एक उच्च स्तरीय समिति का गठन किया गया था। इस समिति की अध्यक्षता प्रसिद्ध अर्थशास्त्री सी. रंगराजन ने की थी। समिति ने विनिवेश के लक्ष्य, विधि और प्राप्त राजस्व के उपयोग के विषय में महत्वपूर्ण सिफारिशें प्रस्तुत की थीं। इसकी रिपोर्ट ने भविष्य की विनिवेश नीतियों हेतु एक स्पष्ट रूपरेखा तैयार की, जिसमें रणनीतिक और गैर-रणनीतिक क्षेत्रों के मध्य अंतर को स्पष्ट किया गया।

53. (3) परिसंपत्ति बिक्री - बंद पड़ी सार्वजनिक क्षेत्र की इकाई की भौतिक संपत्तियों को बेचना
वर्ष 2000 तक भारत में विनिवेश और निजीकरण हेतु विभिन्न पद्धतियों का उपयोग किया गया। परिसंपत्ति बिक्री के अंतर्गत उन सार्वजनिक इकाइयों की भौतिक संपत्तियों, जैसे मशीनरी या भूमि को बेचा जाता था जो स्थायी रूप से बंद हो चुकी थीं। रणनीतिक बिक्री में प्रबंधन नियंत्रण के हस्तांतरण के साथ बहुमत शेयर बेचे जाते हैं। अल्पसंख्यक बिक्री में नियंत्रण सरकार के पास ही रहता है। स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति का उपयोग कर्मचारियों की संख्या को युक्तिसंगत बनाने हेतु किया गया।

54. (1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
नरसिम्हम समिति (1991) ने बैंकिंग और वित्तीय प्रणाली में व्यापक सुधारों की सिफारिश की थी। राजा चेलैया समिति ने देश की कर संरचना को आधुनिक बनाने और कर आधार बढ़ाने पर महत्वपूर्ण सुझाव दिए। सी. रंगराजन समिति (1993) ने सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों के विनिवेश की प्रक्रिया को परिभाषित किया। मल्होत्रा समिति ने बीमा क्षेत्र को निजी भागीदारी हेतु खोलने और इस क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा बढ़ाने के लिए सुधारों का प्रस्ताव प्रस्तुत किया था।

55. (1) केवल I, II, III और IV
सरकार ने 1997 में चयनित लाभ कमाने वाले सार्वजनिक उपक्रमों को 'नवरत्न' का दर्जा प्रदान किया, जिससे उन्हें अधिक वित्तीय और परिचालन स्वायत्तता मिली। शुरुआती विनिवेश का मुख्य लक्ष्य राजकोषीय घाटे को नियंत्रित करने हेतु राजस्व जुटाना था। 1996 में जी.वी. रामकृष्ण की अध्यक्षता में विनिवेश आयोग का गठन किया गया ताकि इस प्रक्रिया हेतु दीर्घकालिक रणनीतियां बनाई जा सकें। हालांकि प्रबंधन हस्तांतरण वाली रणनीतिक बिक्री 1991 में विनिवेश की प्रारंभिक या प्रमुख विधि नहीं थी।

56. (1) कथन I सही है और कथन II गलत है।
विनिवेश आयोग का गठन वर्ष 1996 में जी.वी. रामकृष्ण की अध्यक्षता में एक सलाहकार निकाय के रूप में किया गया था। इसका मुख्य कार्य विभिन्न सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयों के विनिवेश की संभावनाओं का सूक्ष्म विश्लेषण करना और सरकार को अपनी विस्तृत रिपोर्ट सौंपना था। हालांकि इस आयोग की सिफारिशें सरकार हेतु कानूनी रूप से बाध्यकारी नहीं थीं। सरकार इन सुझावों पर अंतिम निर्णय लेने हेतु पूर्णतः स्वतंत्र थी, जिसके कारण कई बार नीतियों पर वैचारिक मतभेद भी हुए।

57. (3) मात्रात्मक प्रतिबंधों को हटाने के बाद आयातित वस्तुओं के साथ प्रतिस्पर्धा करने में असमर्थता
वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने भारत के लघु उद्योगों के समक्ष अत्यंत कड़ी चुनौतियां प्रस्तुत कीं। 1990 के दशक में जब आयात पर से मात्रात्मक प्रतिबंध हटा लिए गए, तो घरेलू बाजार में सस्ती और उच्च गुणवत्ता वाली विदेशी वस्तुओं की बाढ़ आ गई। तकनीकी और वित्तीय रूप से तुलनात्मक रूप से कमजोर होने के कारण, कई भारतीय लघु इकाइयां इन आयातित उत्पादों के साथ मूल्य और गुणवत्ता के स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने में असमर्थ रहीं। इससे कई पारंपरिक उद्योगों को क्षति पहुँची।

58. (1) विदेशी प्रौद्योगिकी समझौतों का सख्त विनियमन और सीमा तय करना
भारत में वैश्वीकरण की नीति के अंतर्गत आयात शुल्क और टैरिफ में निरंतर कटौती की गई ताकि अंतरराष्ट्रीय व्यापार सुगम हो सके। चालू खाते पर रुपये को पूर्ण परिवर्तनीय बनाया गया और विदेशी पोर्टफोलियो निवेश को प्रोत्साहित किया गया। हालांकि विदेशी प्रौद्योगिकी समझौतों पर सख्त नियम और सीमाएं आरोपित करना वैश्वीकरण का अंग नहीं है; इसके विपरीत, सुधारों के दौरान ऐसी बाधाओं को हटाया गया ताकि भारतीय कंपनियां आधुनिक वैश्विक तकनीक को सुगमता से प्राप्त कर सकें।

59. (4) भारतीय वस्तुओं की अंतर्राष्ट्रीय कीमतें कम करके निर्यात को बढ़ावा देना और आयात को हतोत्साहित करना
जुलाई 1991 में भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा रुपये का अवमूल्यन दो चरणों में किया गया था। इस साहसिक कदम का प्राथमिक उद्देश्य भारतीय वस्तुओं को अंतरराष्ट्रीय बाजार में सस्ता और अधिक प्रतिस्पर्धी बनाना था, जिससे निर्यात को प्रोत्साहन मिल सके। साथ ही, इसने विदेशी वस्तुओं को महंगा कर दिया

Downloaded from www.pdf.tube

उपभोक्ताओं से जोड़ा। इसने बिचौलियों के शोषण को समाप्त करने और डेयरी किसानों की आय बढ़ाने में सहायता की, जिसे श्वेत क्रांति भी कहा जाता है।

20. (1) चरण I (ग्रामीण दुग्ध केंद्रों को महानगरीय बाजारों से जोड़ना) → चरण II (दुग्ध केंद्रों का विस्तार) → चरण III (सहकारी बुनियादी ढांचे का सुदृढ़ीकरण)
ऑपरेशन फ्लड को तीन व्यवस्थित चरणों में लागू किया गया था। प्रथम चरण में ग्रामीण दुग्ध केंद्रों को देश के चार प्रमुख महानगरीय बाजारों से जोड़ा गया। द्वितीय चरण के दौरान दुग्ध केंद्रों और सहकारी समितियों की संख्या में व्यापक विस्तार किया गया ताकि अधिक से अधिक ग्रामीण किसानों को लाभ मिले। तृतीय चरण में दुग्ध सहकारी बुनियादी ढांचे को और अधिक सुदृढ़ तथा आत्मनिर्भर बनाया गया। इस दृष्टिकोण ने डेयरी क्षेत्र का कायाकल्प कर दिया।

21. (3) वी. कुरियन
डॉक्टर वर्गीज कुरियन को भारत में श्वेत क्रांति के जनक के रूप में सम्मानित किया जाता है। उन्होंने अमूल सहकारी मॉडल के माध्यम से देश में डेयरी उद्योग की पूरी दिशा ही बदल दी। उनके कुशल नेतृत्व में ऑपरेशन फ्लड कार्यक्रम चलाया गया, जिससे भारत दूध की कमी वाले राष्ट्र से बढ़कर विश्व का अग्रणी उत्पादक बन गया। उनके योगदान ने लाखों ग्रामीण किसानों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाया और डेयरी क्षेत्र में आत्मनिर्भरता सुनिश्चित की।

22. (2) NDDB - नेशनल डेयरी डेवलपमेंट बोर्ड
राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड (NDDB) की स्थापना 1965 में की गई थी, जिसका मुख्यालय गुजरात के आणंद में स्थित है। यह संस्थान भारत में ऑपरेशन फ्लड और श्वेत क्रांति के सफल क्रियान्वयन हेतु उत्तरदायी था। अमूल का पूर्ण रूप 'आनंद मिल्क यूनियन लिमिटेड' है। श्वेत क्रांति को विभिन्न अंतरराष्ट्रीय स्रोतों से वित्तीय सहायता प्राप्त हुई थी और यह पूर्ण रूप से केवल विश्व बैंक की सहायता पर ही आश्रित नहीं थी।

23. (4) 14
भारत सरकार ने 19 जुलाई 1969 को एक ऐतिहासिक अध्यादेश के माध्यम से देश के 14 प्रमुख वाणिज्यिक बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया था। इन बैंकों के पास उस समय कुल जमा राशि का 80% से अधिक भाग था। इस साहसिक कदम का उद्देश्य बैंकिंग सेवाओं को ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुँचाना और अर्थव्यवस्था के प्राथमिकता वाले क्षेत्रों, जैसे कृषि और लघु उद्योगों को ऋण की सुलभ एवं आसान उपलब्धता सुनिश्चित करना था।

24. (1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
भारतीय रिजर्व बैंक की स्थापना वर्ष 1935 में देश के केंद्रीय बैंक के रूप में हुई थी। 1955 में इंपीरियल बैंक ऑफ इंडिया का राष्ट्रीयकरण करके भारतीय स्टेट बैंक का गठन किया गया। जुलाई 1969 में 14 प्रमुख बैंकों का राष्ट्रीयकरण करके बैंकिंग क्षेत्र में प्रथम बड़ी लहर आई। इसके पश्चात 1980 में 6 अन्य वाणिज्यिक बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया गया। ये सभी कदम वित्तीय संसाधनों पर सार्वजनिक नियंत्रण स्थापित करने हेतु उठाए गए थे।

25. (1) केवल I और II
वर्ष 1969 में बैंकों के राष्ट्रीयकरण के पीछे कई महत्वपूर्ण सामाजिक और आर्थिक तर्क विद्यमान थे। सरकार का प्राथमिक उद्देश्य कृषि और लघु उद्योगों जैसे प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्रों में ऋण के प्रवाह को निर्देशित करना था, जिन्हें निजी बैंक प्रायः अनदेखा कर रहे थे। इसके अतिरिक्त, इसका लक्ष्य कुछ विशाल औद्योगिक घरानों के हाथों में आर्थिक शक्ति और जमा पूंजी के संकेंद्रण को रोकना था ताकि बैंकिंग सेवाएं अधिक समावेशी बन सकें।

26. (1) बैंकिंग क्षेत्र में गैर-निष्पादित आस्तियों (NPAs) का पूर्ण उन्मूलन
बैंक राष्ट्रीयकरण के परिणामस्वरूप भारत में ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में बैंक शाखाओं का अभूतपूर्व विस्तार हुआ। इससे घरेलू बचत को औपचारिक माध्यमों में एकत्रित करने में बड़ी सफलता मिली और ऋण नियोजन संभव हुआ। हालांकि, बैंकिंग क्षेत्र से गैर-निष्पादित आस्तियों (NPA) का पूर्ण उन्मूलन कभी संभव नहीं हो सका। इसके विपरीत, राजनीतिक हस्तक्षेप और ऋण माफी जैसी लोक-लुभावन नीतियों के कारण बैंकों पर वित्तीय दबाव और अधिक बढ़ता गया।

27. (4) 26वां संशोधन अधिनियम, 1971
भारतीय संविधान के 26वें संशोधन अधिनियम, 1971 के माध्यम से पूर्व भारतीय रियासतों के शासकों को प्राप्त होने वाले प्रिवी पर्स और विशेष विशेषाधिकारों को पूर्णतः समाप्त कर दिया गया। यह निर्णय सामाजिक समानता के सिद्धांतों को सुदृढ़ करने और लोकतांत्रिक मूल्यों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से लिया गया था। सरकार का मानना था कि स्वतंत्र भारत में वंशानुगत विशेषाधिकारों और राजकोष से दिए जाने वाले इन भुगतानों का कोई स्थान नहीं है।

NODIA

28. (3) A सही है लेकिन R गलत है।
स्वतंत्रता के पश्चात भारत में जमींदारी और अन्य मध्यवर्ती व्यवस्थाओं का उन्मूलन भूमि सुधारों का सबसे सफल भाग रहा। इससे लाखों काश्तकार सीधे राज्य के संपर्क में आए और उन्हें भूमि पर स्वामित्व प्राप्त हुआ। हालांकि यह कहना अनुचित है कि मध्यस्थों के खात्मे से देश में भूमिहीनता और गरीबी पूर्णतः समाप्त हो गई। भूमि सुधारों के अन्य चरण, जैसे जोत की अधिकतम सीमा का निर्धारण, कई राज्यों में प्रभावी नहीं रहे।

29. (3) आचार्य विनोबा भावे
भूदान आंदोलन एक स्वैच्छिक भूमि सुधार पहल थी जिसकी शुरुआत 1951 में आचार्य विनोबा भावे द्वारा की गई थी। इस आंदोलन का मुख्य उद्देश्य धनी भूस्वामियों को अपनी स्वेच्छा से भूमि का एक हिस्सा भूमिहीन गरीबों को दान करने हेतु प्रेरित करना था। यह अभिनव प्रयास तेलंगाना के पोचमपल्ली गाँव से प्रारंभ हुआ था। यह अहिंसक तरीके से सामाजिक परिवर्तन लाने और भूमि पुनर्वितरण की समस्या को हल करने का एक महान प्रयोग था।

69. (3) बोकारो इस्पात संयंत्र - संयुक्त राज्य अमेरिका
द्वितीय पंचवर्षीय योजना के दौरान भारत ने प्रमुख राष्ट्रों के सहयोग से कई विशाल इस्पात संयंत्र स्थापित किए। भिलाई इस्पात संयंत्र सोवियत संघ की सहायता से और दुर्गापुर इस्पात संयंत्र यूनाइटेड किंगडम के तकनीकी सहयोग से निर्मित हुआ। राउरकेला संयंत्र में पश्चिम जर्मनी ने बहुमूल्य सहायता प्रदान की। हालांकि बोकारो इस्पात संयंत्र का निर्माण सोवियत संघ के सहयोग से किया गया था, न कि संयुक्त राज्य अमेरिका के। यह संयंत्र बाद में औद्योगिक आत्मनिर्भरता की दिशा में एक विशाल मील का पत्थर सिद्ध हुआ।

70. (1) केवल I, II और III
1948 की औद्योगिक नीति ने परमाणु ऊर्जा और रेलवे जैसे रणनीतिक क्षेत्रों पर राज्य का पूर्ण एकाधिकार स्थापित किया। 1956 की औद्योगिक नीति की अनुसूची 'क' में 17 उद्योग विशेष रूप से सार्वजनिक क्षेत्र हेतु आरक्षित किए गए थे। उस समय सार्वजनिक क्षेत्र से एक आदर्श नियोक्ता की भूमिका निभाने और क्षेत्रीय असंतुलन को कम करने की अपेक्षा की गई थी। हालांकि यह कथन सत्य नहीं है कि सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयां सदैव भारी अधिशेष राजस्व उत्पन्न करने में सफल रहीं; बल्कि उनमें से कई इकाइयां वित्तीय घाटे में रहीं।

71. (4) कमजोर बुनियादी ढांचा, दोषपूर्ण सिंचाई नियंत्रण और खंडित भूमि जोत
हरित क्रांति की प्रारंभिक सफलता मुख्य रूप से उत्तर-पश्चिमी भारत तक ही सीमित रही। पूर्वी राज्यों जैसे बिहार, ओडिशा और पश्चिम बंगाल में यह उस समय सफल नहीं हो सकी क्योंकि वहां कृषि बुनियादी ढांचा अत्यंत कमजोर था। इन क्षेत्रों में सिंचाई पर नियंत्रण का अभाव, बिजली की अनियमित आपूर्ति और भूमि जोत का अत्यधिक विखंडन प्रमुख अवरोध थे। इसके अतिरिक्त वहां की संस्थागत व्यवस्था और ऋण सुविधाएं भी उतनी सुदृढ़ नहीं थीं जितनी आधुनिक सघन खेती हेतु आवश्यक होती हैं।

72. (1) ऑपरेशन फ्लड और दुग्ध उत्पादन का विस्तार
"बिलियन लीटर आइडिया" एक प्रसिद्ध शब्दावली है जो भारत के ऑपरेशन फ्लड और दुग्ध उत्पादन में आई अभूतपूर्व क्रांति से जुड़ी हुई है। यह शब्द उस महत्वाकांक्षी योजना को प्रदर्शित करता है जिसके माध्यम से भारत में दूध के उत्पादन और वितरण को एक विशाल औद्योगिक पैमाने पर व्यवस्थित किया गया। इस विचार ने डेयरी क्षेत्र में सहकारी समितियों के माध्यम से लाखों छोटे उत्पादकों को एकीकृत किया, जिससे देश में दूध की प्रचुर उपलब्धता सुनिश्चित हुई और ग्रामीण समृद्धि के नवीन द्वार खुल सके।

73. (3) कृषि और संबद्ध गतिविधियाँ
1969 में बैंकों के राष्ट्रीयकरण के पश्चात 'प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र को ऋण' (PSL) प्रदान करना एक अनिवार्य नीति बन गई। इस निर्देश का मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना था कि बैंकिंग संसाधनों का एक निश्चित भाग उन क्षेत्रों को प्राप्त हो जो अर्थव्यवस्था हेतु महत्वपूर्ण हैं परंतु जिन्हें पूर्व में नजरअंदाज किया गया था। इस नीति से सर्वाधिक लाभ कृषि और उससे संबद्ध गतिविधियों को प्राप्त हुआ। इसने छोटे किसानों और ग्रामीण कारीगरों हेतु औपचारिक ऋण के द्वार खोले जिससे उनकी साहूकारों पर निर्भरता कम हुई।

74. (1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
प्रथम पंचवर्षीय योजना हैरोड-डोमर मॉडल पर आधारित थी जिसने बचत और निवेश पर ध्यान केंद्रित किया। द्वितीय योजना महालनोबिस मॉडल पर आधारित थी जिसने भारी उद्योगों के विकास को प्राथमिकता दी। तृतीय योजना में संतुलित आंचलिक विकास पर बल दिया गया। आठवीं योजना (1992-97) को राव-मनमोहन मॉडल के रूप में जाना जाता है, क्योंकि इसमें 1991 के उदारीकरण और बाजारोन्मुखी सुधारों को पूर्णतः लागू किया गया था। यह योजना भारत की विकास दर में क्रांतिकारी परिवर्तन का आधार बनी।

75. (1) केवल I, II, III और V
1991 के सुधारों के पश्चात के दशक में भारत के सकल घरेलू उत्पाद में सेवा क्षेत्र का योगदान अत्यंत तीव्र गति से बढ़ा। इसी कालखंड में सूचना प्रौद्योगिकी और सॉफ्टवेयर निर्यात में भारत एक वैश्विक शक्ति के रूप में उभरा। विदेशी मुद्रा भंडार में निरंतर वृद्धि दर्ज की गई जिससे देश की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हुई। हालांकि कुल जीडीपी में कृषि की हिस्सेदारी में लगातार गिरावट देखी गई। यह कहना अनुचित है कि विनिर्माण क्षेत्र ने पूरे दशक में लगातार दो अंकों की विकास दर प्राप्त की थी।

76. (2) सूती वस्त्र और परिधान
1991 की नई औद्योगिक नीति ने अधिकांश क्षेत्रों हेतु लाइसेंसिंग की अनिवार्यता को समाप्त कर दिया था। मदिरा, सिगरेट, खतरनाक रसायन और रक्षा उपकरण जैसे विशिष्ट उद्योगों हेतु उनकी संवेदनशीलता के कारण लाइसेंसिंग को अनिवार्य बनाए रखा गया। हालांकि सूती वस्त्र और परिधान उद्योग को इस अनिवार्य सूची से बाहर रखा गया था ताकि इस क्षेत्र में निजी निवेश और रोजगार के अवसरों को प्रोत्साहन मिल सके। इससे कपड़ा क्षेत्र में आधुनिक तकनीक अपनाने और वैश्विक निर्यात बाजार में प्रतिस्पर्धा करने में सुगमता हुई।

77. (2) कथन II सही है।
भारत में भूमि जोत की अधिकतम सीमा आरोपित करने वाले कानूनों का क्रियान्वयन अत्यंत चुनौतीपूर्ण सिद्ध हुआ। यह कहना असत्य है कि इसके माध्यम से सभी राज्यों में भूमिहीनों को भूमि का बड़े पैमाने पर पुनर्वितरण हुआ। वास्तविकता यह है कि विधिक खामियों, बेनामी हस्तांतरणों और प्रभावशाली भूस्वामियों द्वारा की गई लंबी कानूनी मुकदमेबाजी ने इस प्रक्रिया में गंभीर बाधाएं उत्पन्न कीं। कुछ विशिष्ट राज्यों को छोड़कर, अधिकांश हिस्सों में अधिशेष भूमि का वास्तविक वितरण बहुत ही कम और निराशाजनक रहा था।

78. (4) स्मगलर्स एंड फॉरेन एक्सचेंज मैनिपुलेटर्स (फॉरफीचर ऑफ प्रॉपर्टी) एक्ट
आपातकाल के दौरान 1976 में लागू किया गया सेफेमा (SAFEMA) एक अत्यंत कठोर कानून था। इसका पूर्ण नाम स्मगलर्स एंड फॉरेन एक्सचेंज मैनिपुलेटर्स (फॉरफीचर ऑफ

Click Here to Buy book on Amazon

40. (4) I, II, IV, III
भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास क्रम में सर्वप्रथम 1948 में प्रथम औद्योगिक नीति संकल्प आया जिसने मिश्रित अर्थव्यवस्था की नींव रखी। इसके पश्चात 1951 में प्रथम पंचवर्षीय योजना की शुरुआत हुई। जुलाई 1969 में 14 प्रमुख वाणिज्यिक बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया गया। इसी वर्ष के अंत में दिसंबर 1969 में एमआरटीपी अधिनियम को अधिनियमित किया गया था। यह कालक्रम भारत के नियोजित विकास और आर्थिक ढांचे में राज्य के बढ़ते हुए नियंत्रण को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

41. (3) पी.वी. नरसिम्हा राव और डॉ. मनमोहन सिंह
वर्ष 1991 में जब भारत ने अपनी नई आर्थिक नीति और ऐतिहासिक सुधारों की घोषणा की, तब पी.वी. नरसिम्हा राव देश के प्रधानमंत्री थे। डॉ. मनमोहन सिंह उस समय वित्त मंत्री के रूप में सेवारत थे। इन दोनों नेताओं की जोड़ी को आधुनिक भारत में आर्थिक उदारीकरण का प्रमुख सूत्रधार माना जाता है। उनके नेतृत्व में लिए गए साहसिक निर्णयों ने भारतीय अर्थव्यवस्था को भुगतान संतुलन के संकट से बाहर निकाला और नवीन विकास की आधारशिला रखी।

42. (1) गंभीर भुगतान संतुलन संकट और विदेशी मुद्रा भंडार की कमी
1991 के सुधारों का तात्कालिक कारण एक अत्यंत गंभीर भुगतान संतुलन संकट था। उस समय भारत का विदेशी मुद्रा भंडार इतना कम हो गया था कि वह केवल दो सप्ताह के आयात हेतु ही पर्याप्त था। खाड़ी युद्ध के कारण तेल की कीमतें बढ़ गई थीं और विदेशी ऋण चुकाने की भारत की क्षमता पर प्रश्न उठ रहे थे। इस चरम वित्तीय आपातकाल ने सरकार को अपनी आर्थिक नीतियों में आमूलचूल परिवर्तन करने हेतु बाध्य किया।

43. (4) स्थानीयकरण
1991 की नई आर्थिक नीति तीन मुख्य स्तंभों पर आधारित थी जिन्हें संयुक्त रूप से एलपीजी (LPG) कहा जाता है। इसमें उदारीकरण का अर्थ उद्योगों पर सरकारी नियंत्रण कम करना था, निजीकरण का उद्देश्य सार्वजनिक इकाइयों में निजी भागीदारी बढ़ाना था, और वैश्वीकरण ने भारतीय अर्थव्यवस्था को विश्व बाजार के साथ एकीकृत करने पर बल दिया। स्थानीयकरण इन सुधारों का अंग नहीं था, क्योंकि सुधारों का रुख अंतरराष्ट्रीय मानकों और खुलेपन की ओर था।

44. (1) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
उदारीकरण का तात्पर्य उद्योगों पर लगे अनावश्यक सरकारी प्रतिबंधों को हटाना है। निजीकरण के अंतर्गत सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों का स्वामित्व या प्रबंधन निजी हाथों में स्थानांतरित किया जाता है। वैश्वीकरण राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को वैश्विक बाजार के साथ एकीकृत करने की प्रक्रिया है। स्थिरीकरण उपाय उन अल्पकालिक नीतियों को कहा जाता है जो मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने और भुगतान संतुलन के घाटे को सुधारने हेतु तत्काल प्रभाव से लागू की गई थीं ताकि अर्थव्यवस्था स्थिर हो सके।

45. (1) केवल I और II
1991 के संकट के दौरान भारत को आपातकालीन विदेशी मुद्रा सुरक्षित करने हेतु बैंक ऑफ इंग्लैंड के पास अपना स्वर्ण भंडार गिरवी रखना पड़ा था। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व बैंक ने इस कठिन समय में वित्तीय सहायता प्रदान की, परंतु इसके बदले में उन्होंने भारत पर अपनी अर्थव्यवस्था को उदार बनाने की सख्त शर्तें लगाई थीं। ये सुधार केवल संरचनात्मक नहीं थे, बल्कि इनमें व्यापक आर्थिक स्थिरीकरण के उपायों पर भी विशेष बल दिया गया था।

46. (4) सभी उद्योगों के लिए बिना किसी अपवाद के औद्योगिक लाइसेंसिंग समाप्त कर दी गई।
1991 के उदारीकरण उपायों ने सार्वजनिक क्षेत्र की भूमिका को काफी सीमित कर दिया और कई महत्वपूर्ण क्षेत्रों को निजी निवेश हेतु खोल दिया। विदेशी निवेश की सीमाएं बढ़ा दी गईं और आयात पर लगे मात्रात्मक प्रतिबंधों को चरणबद्ध तरीके से समाप्त किया गया। हालांकि यह कहना पूर्णतः गलत है कि सभी उद्योगों हेतु बिना किसी अपवाद के लाइसेंसिंग समाप्त की गई थी। कुछ विशिष्ट संवेदनशील उद्योगों हेतु अनिवार्य लाइसेंसिंग को उस समय भी बरकरार रखा गया था।

47. (1) रणनीतिक, सुरक्षा और पर्यावरणीय चिंताएं
1991 में अधिकांश उद्योगों को विनियंत्रित करने के बावजूद सरकार ने कुछ विशिष्ट क्षेत्रों हेतु औद्योगिक लाइसेंसिंग की अनिवार्यता बनाए रखी। इसके पीछे मुख्य कारण राष्ट्रीय सुरक्षा, रणनीतिक महत्व और पर्यावरण संरक्षण से जुड़ी गंभीर चिंताएं थीं। उदाहरण के लिए, रक्षा उपकरण, खतरनाक रसायन और तंबाकू जैसे क्षेत्रों को सार्वजनिक स्वास्थ्य तथा सुरक्षा के आधार पर विनियमित करना आवश्यक था ताकि उदारीकरण से देश की सुरक्षा और पारिस्थितिकी पर प्रतिकूल प्रभाव न पड़े।

NODIA

48. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
1991 की नई आर्थिक नीति ने प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के नियमों को अत्यधिक लचीला और सुगम बना दिया। सरकार का यह मानना था कि विदेशी पूंजी और उन्नत तकनीक को आकर्षित करने से भारतीय उद्योगों की कार्यदक्षता में सुधार होगा। इसका मुख्य उद्देश्य घरेलू उद्योगों को वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं के साथ एकीकृत करना और अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा हेतु तैयार करना था। विदेशी निवेश से न केवल विदेशी मुद्रा का प्रवाह बढ़ा, बल्कि इससे तकनीकी ज्ञान का भी प्रसार हुआ।

49. (2) परमाणु ऊर्जा
1991 के सुधारों के पश्चात सार्वजनिक क्षेत्र हेतु विशेष रूप से आरक्षित उद्योगों की सूची को अत्यंत छोटा कर दिया गया। 1990 के दशक के अंत तक केवल परमाणु ऊर्जा और रेलवे जैसे रणनीतिक क्षेत्र ही सरकार के पूर्ण नियंत्रण में रहे। दूरसंचार, नागरिक उड्डयन और लोहा एवं इस्पात जैसे विशाल क्षेत्रों को निजी कंपनियों हेतु खोल दिया गया था ताकि उनमें प्रतिस्पर्धा और दक्षता बढ़ सके। परमाणु ऊर्जा को राष्ट्रीय सुरक्षा कारणों से सरकारी नियंत्रण में आरक्षित रखा गया।

से तीव्र औद्योगीकरण पर मुख्य ध्यान केंद्रित किया गया था। इस मॉडल का मुख्य उद्देश्य लंबी अवधि में निवेश और उत्पादन क्षमता को बढ़ाना था ताकि भारतीय अर्थव्यवस्था को वैश्विक स्तर पर पूरी तरह आत्मनिर्भर बनाया जा सके।

10. (3) केवल I, II और III
द्वितीय पंचवर्षीय योजना के दौरान भारत ने विदेशी तकनीकी सहयोग से तीन प्रमुख इस्पात संयंत्र स्थापित किए। भिलाई इस्पात संयंत्र की स्थापना सोवियत संघ की सहायता से की गई थी। दुर्गापुर इस्पात संयंत्र के निर्माण में यूनाइटेड किंगडम ने महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया था। राउरकेला इस्पात संयंत्र पश्चिम जर्मनी के सहयोग से ओडिशा में स्थापित किया गया था। इस दौरान उपभोक्ता वस्तुओं के स्थान पर भारी और बुनियादी उद्योगों को सर्वोच्च वित्तीय प्राथमिकता दी गई थी।

11. (4) दीर्घकालिक निवेश वाले भारी उद्योगों के लिए निजी क्षेत्र के पास पूंजी की कमी थी
भारत के प्रारंभिक योजना काल में सार्वजनिक क्षेत्र के प्रभुत्व का मुख्य कारण निजी क्षेत्र में आवश्यक पूंजी का अभाव था। भारी उद्योगों और बुनियादी ढांचे के विकास हेतु विशाल निवेश और लंबी परिपक्वता अवधि की आवश्यकता थी, जिसे वहन करने में निजी उद्यमी उस समय सक्षम नहीं थे। इसके अतिरिक्त, सरकार सामाजिक कल्याण सुनिश्चित करने और आर्थिक शक्ति के विकेंद्रीकरण हेतु रणनीतिक क्षेत्रों पर अपना पूर्ण नियंत्रण रखना चाहती थी।

12. (2) उन्होंने निवेश पर उच्च प्रतिफल दर उत्पन्न की, जिससे निजी पूंजी बाहर हो गई।
1991 के आर्थिक सुधारों से पूर्व सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों को कई गंभीर चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा था। ये इकाइयां अक्सर अत्यधिक कर्मचारियों, निम्न श्रम उत्पादकता और प्रशासनिक हस्तक्षेप से जूझ रही थीं। उनकी मूल्य निर्धारण नीतियां वित्तीय लाभ के स्थान पर सामाजिक उद्देश्यों से प्रेरित थीं, जिसके कारण उन्हें भारी वित्तीय हानि उठानी पड़ी। यह कहना पूर्णतः त्रुटिपूर्ण है कि उन्होंने निवेश पर उच्च प्रतिफल दर उत्पन्न की थी।

13. (3) औद्योगिक नीति संकल्प 1956
औद्योगिक नीति संकल्प 1956 को भारत का आर्थिक संविधान भी कहा जाता है। इसने उद्योगों को तीन स्पष्ट श्रेणियों या अनुसूचियों में वर्गीकृत किया था। अनुसूची 'क' में वे उद्योग थे जो विशेष रूप से राज्य के लिए आरक्षित थे। अनुसूची 'ख' में राज्य के स्वामित्व वाले परंतु निजी भागीदारी हेतु खुले उद्योग शामिल थे। अनुसूची 'ग' में शेष निजी उद्योग रखे गए थे। इसने सार्वजनिक क्षेत्र को अर्थव्यवस्था की कमान सौंपी थी।

14. (1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
औद्योगिक नीति 1948 ने भारत में मिश्रित अर्थव्यवस्था की आधारशिला रखी। 1956 की नीति ने सार्वजनिक क्षेत्र के प्रभुत्व और उद्योगों के त्रिस्तरीय वर्गीकरण पर बल दिया। 1977 के औद्योगिक नीति विवरण ने विशेष रूप से लघु, ग्रामीण और कुटीर उद्योगों के विकास को प्राथमिकता दी। अंततः 1991 की नई औद्योगिक नीति ने अधिकांश क्षेत्रों के लिए औद्योगिक लाइसेंसिंग को समाप्त कर दिया और भारतीय अर्थव्यवस्था में आर्थिक उदारीकरण के एक नए युग का सूत्रपात किया।

15. (2) केवल I, II, III और V
भारत में हरित क्रांति के मुख्य वास्तुकार एम.एस. स्वामीनाथन थे। इसमें उच्च उपज वाली किस्म के बीजों का उपयोग किया गया, जिसके लिए प्रचुर जल, रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों की आवश्यकता थी। इसका प्रारंभिक प्रभाव पंजाब और हरियाणा के गेहूं उत्पादक क्षेत्रों में अत्यधिक सफल रहा। हालांकि इसने सभी राज्यों में क्षेत्रीय असमानताओं को तुरंत समाप्त नहीं किया, बल्कि कुछ क्षेत्रों को अन्य भौगोलिक क्षेत्रों की तुलना में अधिक समृद्ध और विकसित बना दिया।

16. (2) खाद्यान्न की कमी और अमेरिका से PL-480 आयात पर निर्भरता को दूर करना
1960 के दशक के मध्य में भारत को गंभीर खाद्यान्न संकट का सामना करना पड़ा था। उस समय भारत अनाज की आपूर्ति के लिए मुख्य रूप से अमेरिका से आने वाले पीएल-480 आयात पर निर्भर था। इस विदेशी निर्भरता को समाप्त करने और राष्ट्र को खाद्यान्न उत्पादन में पूर्णतः आत्मनिर्भर बनाने के लिए हरित क्रांति प्रारंभ की गई थी। इसके तहत आधुनिक कृषि तकनीक अपनाई गई जिससे फसल उत्पादन में क्रांतिकारी वृद्धि संभव हुई।

17. (2) ग्रामीण क्षेत्रों में क्षेत्रीय और व्यक्तिगत असमानताएं बढ़ गईं
हरित क्रांति की एक प्रमुख आलोचना यह रही है कि इसके कारण ग्रामीण क्षेत्रों में क्षेत्रीय और व्यक्तिगत आर्थिक असमानताएं काफी बढ़ गईं। इस तकनीक का लाभ मुख्य रूप से उन किसानों को प्राप्त हुआ जिनके पास पर्याप्त सिंचाई सुविधाएं और निवेश की अच्छी क्षमता उपलब्ध थी। पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश जैसे क्षेत्र अत्यधिक समृद्ध हो गए, जबकि देश के अन्य विशाल हिस्से कृषि विकास की इस दौड़ में पीछे रह गए।

18. (1) भूजल स्तर में गिरावट और मृदा लवणता में वृद्धि
पंजाब और हरियाणा में हरित क्रांति की सघन कृषि पद्धतियों के गंभीर पारिस्थितिक परिणाम सामने आए हैं। उच्च उपज वाली फसलों हेतु सिंचाई की अत्यधिक आवश्यकता के कारण भूजल स्तर में भारी गिरावट दर्ज की गई है। साथ ही, रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों के अनियंत्रित उपयोग और दोषपूर्ण सिंचाई तकनीकों ने मिट्टी की प्राकृतिक उर्वरता को प्रभावित किया है तथा मृदा लवणता में वृद्धि की है। इससे कृषि भूमि के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा।

19. (3) राष्ट्रव्यापी दुग्ध ग्रिड बनाने के उद्देश्य से एक राष्ट्रीय डेयरी कार्यक्रम
ऑपरेशन फ्लड वर्ष 1970 में प्रारंभ किया गया एक महत्वाकांक्षी राष्ट्रीय डेयरी विकास कार्यक्रम था। इसका मुख्य उद्देश्य भारत को विश्व का सबसे बड़ा दुग्ध उत्पादक राष्ट्र बनाना था। इस कार्यक्रम के माध्यम से एक राष्ट्रव्यापी दुग्ध ग्रिड स्थापित किया गया, जिसने ग्रामीण दुग्ध उत्पादकों को सीधे शहरी

Downloaded from www.pdf.tube

जिससे अनावश्यक आयात को हतोत्साहित करने में सहायता मिली। यह उपाय देश के घटते विदेशी मुद्रा भंडार को स्थिर करने और भुगतान संतुलन के संकट को दूर करने हेतु था।

60. (2) विदेशी मुद्रा विनियमन अधिनियम (FERA) → विदेशी मुद्रा प्रबंधन अधिनियम (FEMA)
भारत में विदेशी मुद्रा के नियमन हेतु पूर्व में 1973 का विदेशी मुद्रा विनियमन अधिनियम (FERA) प्रभावी था, जो अत्यंत कठोर प्रावधानों वाला कानून था। आर्थिक उदारीकरण की आवश्यकताओं को देखते हुए इसे 1999 में विदेशी मुद्रा प्रबंधन अधिनियम (FEMA) द्वारा प्रतिस्थापित किया गया। फेमा का दृष्टिकोण दंडात्मक होने के स्थान पर प्रबंधन और सुविधा प्रदान करने वाला है। यह परिवर्तन भारत के विदेशी व्यापार को सुगम बनाने और विदेशी निवेश हेतु अनुकूल परिवेश निर्मित करने में सहायक सिद्ध हुआ।

61. (3) 1995
भारत ने 1 जनवरी 1995 को विश्व व्यापार संगठन (WTO) के संस्थापक सदस्य के रूप में अपनी सदस्यता ग्रहण की थी। यह संगठन अंतरराष्ट्रीय व्यापार के नियमों को संचालित करने हेतु स्थापित किया गया था। विश्व व्यापार संगठन में सम्मिलित होकर भारत ने वैश्विक व्यापारिक नियमों के प्रति अपनी सुदृढ़ प्रतिबद्धता व्यक्त की। इसने भारत को अपनी व्यापारिक नीतियों को अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरुप ढालने और वैश्विक बाजार तक व्यापक पहुँच प्राप्त करने का एक अत्यंत महत्वपूर्ण अवसर प्रदान किया।

62. (4) 1950 से 1980 के दशक तक अनुभव की गई 3.5% की निम्न वार्षिक आर्थिक वृद्धि
"हिंदू विकास दर" शब्दावली प्रसिद्ध अर्थशास्त्री राज कृष्ण द्वारा 1970 के दशक में प्रतिपादित की गई थी। यह शब्द 1950 से लेकर 1980 के दशक तक भारतीय अर्थव्यवस्था की औसत 3.5% की वार्षिक निम्न विकास दर को इंगित करता है। यह दर उस समय की जनसंख्या वृद्धि और आर्थिक निवेश की तुलना में अत्यंत मंद मानी जाती थी। यह शब्द उस युग की स्थिर और धीमी आर्थिक वृद्धि की आलोचना के रूप में प्रयुक्त किया जाता था, जो 1991 के सुधारों से पूर्व की स्थिति थी।

63. (1) तारापोर समिति
दिए गए विकल्पों में तारापोर समिति अन्य से पूर्णतः भिन्न है क्योंकि इसका संबंध पूंजी खाते की परिवर्तनीयता और वित्तीय क्षेत्र के सुधारों से है। इसके विपरीत, वाई.के. अलघ समिति, डी.टी. लकड़ावाला समिति और सुरेश तेंदुलकर समिति का संबंध भारत में गरीबी के मापन और गरीबी रेखा के निर्धारण हेतु वैज्ञानिक पद्धतियां विकसित करने से रहा है। गरीबी मापन समितियां मुख्य रूप से उपभोग व्यय पर आधारित थीं, जबकि तारापोर समिति विदेशी मुद्रा क्षेत्र हेतु गठित की गई थी।

64. (1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम का उद्देश्य संपत्ति सृजन के माध्यम से निर्धनों को स्वरोजगार प्रदान करना था। ट्राईसेम कार्यक्रम ग्रामीण युवाओं को तकनीकी कौशल और प्रशिक्षण देने हेतु प्रारंभ किया गया था। राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम का मुख्य ध्यान ग्रामीण क्षेत्रों में मजदूरी आधारित रोजगार के अवसर सृजित करना था। इंदिरा आवास योजना विशेष रूप से अनुसूचित जातियों और अन्य ग्रामीण निर्धनों को निःशुल्क पक्का आवास उपलब्ध कराने की एक अत्यंत महत्वपूर्ण सामाजिक कल्याणकारी योजना थी।

65. (1) केवल I और II
शुरुआती पंचवर्षीय योजनाओं में यह माना गया था कि आर्थिक विकास का लाभ धीरे-धीरे समाज के सबसे निचले स्तर तक स्वयं पहुँचेगा, जिसे "टपकन सिद्धांत" कहा जाता है। हालांकि जब इस सिद्धांत से गरीबी में अपेक्षित कमी नहीं आई, तब सरकार ने सीधे हस्तक्षेप करने वाले लक्षित गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम प्रारंभ किए। यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि 1991 के सुधारों के पश्चात सभी राज्य प्रायोजित योजनाओं को बंद कर दिया गया था; बल्कि उन्हें अधिक प्रभावी बनाया गया।

66. (1) पांचवीं पंचवर्षीय योजना
"गरीबी हटाओ" का प्रसिद्ध नारा इंदिरा गांधी ने 1971 के चुनावों के दौरान दिया था। हालांकि इसे एक औपचारिक और स्पष्ट योजनागत उद्देश्य के रूप में पांचवीं पंचवर्षीय योजना (1974-78) के दौरान विधिवत अपनाया गया। इस योजना का मुख्य ध्यान गरीबी के उन्मूलन और आर्थिक आत्मनिर्भरता प्राप्त करने पर केंद्रित था। इसके लिए न्यूनतम आवश्यकता कार्यक्रम प्रारंभ किया गया ताकि शिक्षा, स्वास्थ्य और आवास जैसी बुनियादी सुविधाएं निर्धनों तक सुगमता से पहुँच सकें। यह एक बड़ा वैचारिक परिवर्तन था।

67. (3) सार्वजनिक क्षेत्र की हिस्सेदारी में सापेक्ष गिरावट और निजी क्षेत्र के निवेश में वृद्धि
1991 के आर्थिक सुधारों के पश्चात भारत में निवेश के प्रतिरूप में एक मौलिक और व्यापक बदलाव देखा गया। अर्थव्यवस्था में सार्वजनिक क्षेत्र की हिस्सेदारी और प्रभुत्व में सापेक्ष गिरावट आई, जबकि निजी क्षेत्र के निवेश में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई। सरकार ने बुनियादी ढांचे और विनिर्माण जैसे प्रमुख क्षेत्रों को निजी पूंजी और विदेशी निवेश हेतु खोल दिया। इस परिवर्तन का उद्देश्य बाजार की शक्तियों को अधिक सक्रिय करना और निवेश की दक्षता बढ़ाना था, जिससे सार्वजनिक संसाधनों पर बोझ कम हुआ।

NODIA

68. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
प्रथम पंचवर्षीय योजना ने कृषि और सिंचाई को सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान की थी। इसका मुख्य कारण यह था कि स्वतंत्रता और विभाजन के पश्चात देश खाद्यान्न की भीषण कमी और लाखों शरणार्थियों के पुनर्वास की समस्या से संघर्ष कर रहा था। अर्थव्यवस्था को स्थिरता प्रदान करने हेतु कृषि क्षेत्र को सुदृढ़ करना अपरिहार्य था। सिंचाई परियोजनाओं में निवेश करने से न केवल उत्पादन में वृद्धि हुई, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था की नींव भी मजबूत हुई। यह रणनीति तत्कालीन परिस्थितियों हेतु पूर्णतः उपयुक्त थी।

मैनेजमेंट एक्ट
(3) सिक्योरिटीज एंड फॉरेन एक्सचेंज मॉनिटरिंग एजेंसी एक्ट
(4) स्मगलर्स एंड फॉरेन एक्सचेंज मैनिपुलेटर्स (फॉरफीचर ऑफ प्रॉपर्टी) एक्ट
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

79. 1990 के दशक की उदारीकरण प्रक्रिया के दौरान "मात्रात्मक प्रतिबंधों" (QRs) को हटाने का अर्थ था:
(1) आयातित और निर्यातित वस्तुओं पर मात्रात्मक कोटा समाप्त करना
(2) स्थापित किए जा सकने वाले निजी बैंकों की संख्या पर से सीमा हटाना
(3) RBI द्वारा वितरित घरेलू ऋण की राशि पर प्रतिबंध हटाना
(4) कॉर्पोरेट कर दरों की सीमा को वापस लेना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

80. 1990 के दशक की निम्नलिखित आर्थिक घटनाओं पर विचार कीजिए:
I. विदेशी मुद्रा प्रबंधन अधिनियम (FEMA) का अधिनियमन
II. भारतीय रुपये का दो चरणों में अवमूल्यन
III. विनिवेश आयोग की स्थापना
IV. भारत का WTO का सदस्य बनना
निम्नलिखित में से कौन सा सही कालानुक्रमिक अनुक्रम का प्रतिनिधित्व करता है?
(1) II, IV, III, I
(2) II, III, IV, I
(3) IV, II, III, I
(4) II, IV, I, III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Click Here to Buy book on Amazon

प्रॉपर्टी) एक्ट है। इस कानून का मुख्य उद्देश्य तस्करी और अवैध विदेशी मुद्रा लेनदेन के माध्यम से अर्जित की गई अवैध संपत्ति को जब्त करना था। यह सरकार द्वारा आर्थिक अपराधों पर अंकुश लगाने और काली कमाई के प्रवाह को रोकने हेतु उठाया गया एक अत्यंत कड़ा कदम था, जो उस समय की सख्त आर्थिक नीतियों का प्रमुख अंग था।

79. (1) आयातित और निर्यातित वस्तुओं पर मात्रात्मक कोटा समाप्त करना
1990 के दशक में आर्थिक उदारीकरण के अंतर्गत "मात्रात्मक प्रतिबंधों" को हटाना एक क्रांतिकारी कदम था। इसका अर्थ था कि आयातित और निर्यातित वस्तुओं की भौतिक मात्रा पर आरोपित कोटा या सीमाओं को पूर्णतः समाप्त कर दिया गया। पूर्व में कई वस्तुओं के आयात हेतु विशेष लाइसेंस और निश्चित मात्रा की सीमा निर्धारित थी। इन प्रतिबंधों के हटने से अंतरराष्ट्रीय व्यापार में बाधाएं न्यूनतम हुईं और भारतीय बाजार में वैश्विक वस्तुओं की सुलभता बढ़ी, जिससे घरेलू उत्पादकों के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा मिला।

80. (1) II, IV, III, I
1990 के दशक की आर्थिक घटनाओं का सही क्रम भारत की सुधार यात्रा को स्पष्ट करता है। सर्वप्रथम जुलाई 1991 में रुपये का अवमूल्यन किया गया। इसके पश्चात जनवरी 1995 में भारत आधिकारिक रूप से विश्व व्यापार संगठन का सदस्य बना। विनिवेश की प्रक्रिया को व्यवस्थित और पारदर्शी बनाने हेतु अगस्त 1996 में विनिवेश आयोग की स्थापना की गई। अंत में 1999 में विदेशी मुद्रा विनियमन को उदार बनाने हेतु फेमा (FEMA) अधिनियम पारित किया गया था। यह संपूर्ण अनुक्रम आर्थिक उदारीकरण का प्रतीक है।

www.nodia.in

Downloaded from www.pdf.tube

C. नाग
D. अग्नि
सूची II: परिचालन प्रकार
i. टैंक-रोधी निर्देशित मिसाइल
ii. मध्यम दूरी की बैलिस्टिक मिसाइल
iii. कम दूरी की सतह-से-सतह बैलिस्टिक मिसाइल
iv. कम दूरी की सतह-से-हवा मिसाइल
(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) अनुत्तरित प्रश्न

16. भारत के त्रि-स्तरीय परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम के दूसरे चरण में फास्ट ब्रीडर रिएक्टर (FBR) का उपयोग शामिल है। कार्यक्रम के तीसरे चरण में उपयोग किए जाने के लिए एफबीआर के ब्लैंकेट (Blanket) में निम्नलिखित में से कौन सा ईंधन तैयार किया जाता है?
(1) प्लूटोनियम-239
(2) यूरेनियम-233
(3) यूरेनियम-235
(4) थोरियम-232
(5) अनुत्तरित प्रश्न

17. स्वतंत्रता के बाद भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों (IITs) की स्थापना के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) आईआईटी की अवधारणा सरकार समिति की सिफारिशों से प्रेरित थी।
(2) सोवियत संघ की सहायता से बॉम्बे में पहला आईआईटी स्थापित किया गया था।
(3) आईआईटी खड़गपुर स्थापित होने वाला पहला भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान था।
(4) प्रौद्योगिकी संस्थान अधिनियम, 1961 ने उन्हें राष्ट्रीय महत्व के संस्थानों के रूप में घोषित किया।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

18. स्वतंत्रता के बाद के भारत के वैज्ञानिक इतिहास के निम्नलिखित प्रमुख घटनाक्रमों पर विचार कीजिए:
I. वैज्ञानिक नीति संकल्प को अपनाना
II. भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) की स्थापना
III. आर्यभट्ट उपग्रह का प्रक्षेपण
IV. पोखरण में पहला परमाणु परीक्षण
V. जैव प्रौद्योगिकी विभाग (DBT) की स्थापना
उपर्युक्त में से कौन सी घटनाएँ 1980 से पहले घटित हुईं?
(1) I, II, III, और IV
(2) II, III, IV, और V
(3) I, III, IV, और V
(4) I, II, IV, और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

NODIA

19. मई 1998 में पोखरण परीक्षण रेंज में भारत द्वारा किए गए पांच परमाणु विस्फोटों की श्रृंखला किस प्रधानमंत्री के नेतृत्व में की गई थी?
(1) इंदिरा गांधी
(2) राजीव गांधी
(3) अटल बिहारी वाजपेयी
(4) पी.वी. नरसिम्हा राव
(5) अनुत्तरित प्रश्न

20. निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प भारत के शुरुआती अंतरिक्ष उपग्रहों के प्रक्षेपण का सही कालानुक्रमिक क्रम दर्शाता है?
(1) आर्यभट्ट, एप्पल (APPLE), भास्कर-I, रोहिणी RS-1
(2) आर्यभट्ट, भास्कर-I, रोहिणी RS-1, एप्पल (APPLE)
(3) भास्कर-I, आर्यभट्ट, रोहिणी RS-1, एप्पल (APPLE)
(4) आर्यभट्ट, रोहिणी RS-1, भास्कर-I, एप्पल (APPLE)
(5) अनुत्तरित प्रश्न

21. भारत में सूचना प्रौद्योगिकी (IT) क्रांति के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: सॉफ्टवेयर निर्यात को प्रोत्साहित करने और बढ़ाने के लिए 1991 में 'सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी पार्क्स ऑफ इंडिया' (STPI) योजना स्थापित की गई थी।
कथन II: भारतीय आईटी उद्योग वैश्विक आउटसोर्सिंग तक विस्तार करने से पहले शुरू में विशेष रूप से घरेलू बाजार की आवश्यकताओं को पूरा करके तेजी से बढ़ा।
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही कथन की पहचान कीजिए।
(1) कथन I सही है और कथन II गलत है
(2) कथन I गलत है और कथन II सही है
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(5) अनुत्तरित प्रश्न

22. वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (CSIR) राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं का एक विस्तृत नेटवर्क संचालित करता है। निम्नलिखित में से कौन सी प्रयोगशाला सीएसआईआर नेटवर्क के तहत कार्य नहीं करती है?
(1) नेशनल केमिकल लेबोरेटरी (NCL), पुणे
(2) डिफेंस रिसर्च एंड डेवलपमेंट लेबोरेटरी (DRDL), हैदराबाद
(3) नेशनल फिजिकल लेबोरेटरी (NPL), नई दिल्ली
(4) नेशनल एयरोस्पेस लेबोरेटरीज (NAL), बेंगलुरु
(5) अनुत्तरित प्रश्न

23. अंतरिक्ष संस्थान और उसके प्राथमिक परिचालन मुख्यालय का सही युग्म पहचानिए।
(1) विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र (VSSC) - बेंगलुरु
(2) अंतरिक्ष अनुप्रयोग केंद्र (SAC) - तिरुवनंतपुरम
(3) यू.आर. राव उपग्रह केंद्र (URSC) - अहमदाबाद
(4) सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र (SDSC) - श्रीहरिकोटा
(5) अनुत्तरित प्रश्न

(5) अनुत्तरित प्रश्न

8. भारत में हरित क्रांति तकनीक के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह मुख्य रूप से गेहूं और चावल के उच्च उपज वाली किस्म (HYV) के बीजों की शुरुआत पर निर्भर थी।
II. इसके कारण रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों की खपत में महत्वपूर्ण कमी आई।
III. इन तकनीकों को भारतीय परिस्थितियों के अनुकूल बनाने में एम.एस. स्वामीनाथन ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) I और II
(2) II और III
(3) I और III
(4) I, II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

9. निम्नलिखित में से कौन सी मिसाइल प्रणाली 1983 में शुरु किए गए मूल एकीकृत निर्देशित मिसाइल विकास कार्यक्रम (IGMDP) का हिस्सा नहीं थी?
(1) अग्नि
(2) पृथ्वी
(3) ब्रह्मोस
(4) त्रिशूल
(5) अनुत्तरित प्रश्न

10. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): विक्रम साराभाई ने सैन्य उपयोग की तुलना में राष्ट्रीय विकास और जन शिक्षा के लिए अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग पर विशेष बल दिया।
कारण (R): वे दूरस्थ भारतीय गांवों में शिक्षा पहुँचाने के लिए 'सैटेलाइट इंस्ट्रक्शनल टेलीविजन एक्सपेरिमेंट' (SITE) शुरु करने में सहायक थे।
उपर्युक्त कथनों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

11. निम्नलिखित में से कौन सा कथन भारत के पहले उपग्रह 'आर्यभट्ट' का सही वर्णन करता है?
(1) इसे 1975 में श्रीहरिकोटा से स्वदेशी एसएलवी-3 रॉकेट का उपयोग करके प्रक्षेपित किया गया था।
(2) यह टेलीविजन प्रसारण के लिए निर्मित एक भू-तुल्यकालिक संचार उपग्रह था।
(3) इसे मुख्य रूप से सैन्य टोही और सीमा निगरानी के लिए बनाया गया था।
(4) इसे पूरी तरह से भारत में डिजाइन और निर्मित किया गया था लेकिन सोवियत संघ द्वारा प्रक्षेपित किया गया था।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

12. भारत के प्रक्षेपण यानों पीएसएलवी (PSLV) और जीएसएलवी (GSLV) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. पीएसएलवी एक चार चरणों वाला प्रक्षेपण यान है जिसमें ठोस और तरल दोनों प्रणोदन चरणों का उपयोग किया जाता है।
II. जीएसएलवी को मुख्य रूप से भारी उपग्रहों को भू-स्थिर स्थानांतरण कक्षा (GTO) में स्थापित करने के लिए विकसित किया गया था।
III. पीएसएलवी का उपयोग कभी भी अंतरग्रहीय मिशनों या चंद्र जांच के लिए नहीं किया गया है।
IV. जीएसएलवी कार्यक्रम की सफलता के लिए स्वदेशी क्रायोजेनिक इंजन तकनीक का विकास महत्वपूर्ण था।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?
(1) I और II
(2) केवल III
(3) II और IV
(4) I और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

13. निम्नलिखित में से कौन सा 1991 में 'सेंटर फॉर डेवलपमेंट ऑफ एडवांस्ड कंप्यूटिंग' (C-DAC) द्वारा स्वदेशी रूप से विकसित पहला सुपरकंप्यूटर था?
(1) परम युवा
(2) परम पद्म
(3) परम 8000
(4) परम ईशान
(5) अनुत्तरित प्रश्न

14. वह प्राथमिक भू-राजनीतिक कारण क्या था जिसने 'परम' सुपरकंप्यूटर को स्वदेशी रूप से विकसित करने के भारत के निर्णय में तेजी लाई?
(1) उच्च स्तरीय कंप्यूटिंग के लिए सोवियत संघ के साथ व्यापक प्रौद्योगिकी हस्तांतरण समझौते पर हस्ताक्षर
(2) संयुक्त राष्ट्र द्वारा सभी विकासशील देशों को स्वदेशी सुपरकंप्यूटर बनाने के लिए जारी किया गया आदेश
(3) जापान से आयातित शुरुआती मेनफ्रेम कंप्यूटरों की पूर्ण विफलता और उच्च रखरखाव लागत
(4) परमाणु अप्रसार चिंताओं के कारण अमेरिका द्वारा भारत को 'क्रे' (Cray) सुपरकंप्यूटर निर्यात करने से इनकार
(5) अनुत्तरित प्रश्न

15. सूची I में डीआरडीओ द्वारा विकसित मिसाइलों का सूची II में उनके सही परिचालन प्रकारों के साथ मिलान कीजिए।
सूची I: मिसाइल का नाम
A. पृथ्वी
B. त्रिशूल

Click Here to Buy book on Amazon

को सफलतापूर्वक प्रक्षेपित किया था, का इसरो द्वारा आधिकारिक तौर पर नाम बदलकर क्या रखा गया है?
(1) पीएसएलवी-XL
(2) एचएलवी (हैवी लिफ्ट व्हीकल)
(3) एसएसएलवी (स्मॉल सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल)
(4) एलवीएम3 (Launch Vehicle Mark-3)
(5) अनुत्तरित प्रश्न

47. भारत में अंतरिक्ष विभाग (DOS) के प्रशासन के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) अंतरिक्ष विभाग विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय के प्रशासनिक क्षेत्राधिकार के तहत कार्य करता है।
(2) अंतरिक्ष विभाग सीधे भारत के प्रधानमंत्री को रिपोर्ट करता है।
(3) इसरो अंतरिक्ष विभाग की प्राथमिक अनुसंधान एवं विकास शाखा के रूप में कार्य करता है।
(4) अंतरिक्ष आयोग नीतियों को तैयार करता है और भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम के कार्यान्वयन की निगरानी करता है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

48. होमी जे. भाभा के योगदान के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. वे टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च (TIFR) के संस्थापक निदेशक थे।
II. उन्होंने भारत के परमाणु ऊर्जा आयोग के पहले अध्यक्ष के रूप में कार्य किया।
III. कॉस्मिक रे कैस्केड प्रक्रिया पर उनके कार्य के लिए उन्हें भौतिकी में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) I और II
(2) II और III
(3) I और III
(4) I, II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

49. भारतीय आईटी उद्योग के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: 'सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी पार्क्स ऑफ इंडिया' (STPI) ने 1990 के दशक में आईटी कंपनियों को 'एकल खिड़की मंजूरी' (Single-window clearance) और कर प्रोत्साहन प्रदान किए।
कथन II: टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (TCS) सॉफ्टवेयर सेवाओं के लिए 'ग्लोबल डिलीवरी मॉडल' की शुरुआत करने वाली शुरुआती भारतीय आईटी कंपनियों में से एक थी।
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही कथन की पहचान कीजिए।
(1) कथन I सही है और कथन II गलत है
(2) कथन I गलत है और कथन II सही है
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(5) अनुत्तरित प्रश्न

NODIA

50. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): भारत में हरित क्रांति के शुरुआती चरण के कारण क्षेत्रीय आर्थिक असमानताएं बढ़ीं।
कारण (R): उच्च उपज वाली किस्म की प्रौद्योगिकियां मुख्य रूप से उन क्षेत्रों में सफल रहीं जहाँ सुनिश्चित सिंचाई बुनियादी ढांचा था, जैसे पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश।
उपर्युक्त कथनों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

51. भारत के मिसाइल विकास कार्यक्रम के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा अग्नि और ब्रह्मोस मिसाइल प्रणालियों के बीच मूलभूत अंतर को दर्शाता है?
(1) अग्नि जहाजों से दागी जाने वाली एक क्रूज मिसाइल है, जबकि ब्रह्मोस जमीन से दागी जाने वाली बैलिस्टिक मिसाइल है
(2) अग्नि पूर्णतः एक टैंक-रोधी मिसाइल है, जबकि ब्रह्मोस एक अंतरमहाद्वीपीय बैलिस्टिक मिसाइल (ICBM) है
(3) अग्नि एक बैलिस्टिक प्रक्षेपवक्र का अनुसरण करती है, जबकि ब्रह्मोस एक सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल है
(4) अग्नि को रूस के साथ संयुक्त रूप से विकसित किया गया था, जबकि ब्रह्मोस पूर्णतः भारतीय प्रयोगशालाओं द्वारा स्वदेशी रूप से विकसित है
(5) अनुत्तरित प्रश्न

52. पोखरण-II परमाणु परीक्षणों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. परीक्षण मई 1998 में तीन दिनों में आयोजित किए गए थे।
II. ऑपरेशन में एक थर्मोन्यूक्लियर डिवाइस का परीक्षण शामिल था।
III. सफल परीक्षणों के बाद, भारत ने तुरंत व्यापक परमाणु-परीक्षण-प्रतिबंध संधि (CTBT) पर हस्ताक्षर किए।
IV. पहले परीक्षण की तिथि, 11 मई, को आधिकारिक तौर पर भारत में राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस के रूप में घोषित किया गया था।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) I, II और III
(2) II, III और IV
(3) I, II और IV
(4) I, III और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

53. यद्यपि स्वतंत्रता से पहले स्थापित, भारतीय विज्ञान संस्थान (IISc) बेंगलुरु ने किस प्रमुख अंतरिक्ष वैज्ञानिक के निर्देशन में

24. डॉ. विक्रम साराभाई, जिन्हें व्यापक रूप से भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम का जनक माना जाता है, ने 1947 में फिजिकल रिसर्च लेबोरेटरी (PRL) की स्थापना निम्नलिखित में से किस शहर में की थी?
(1) अहमदाबाद
(2) नई दिल्ली
(3) मुंबई
(4) बेंगलुरु
(5) अनुत्तरित प्रश्न

25. सूची I में भारत के शुरुआती परमाणु अनुसंधान रिएक्टरों का सूची II में उनकी विशिष्ट विशेषताओं के साथ मिलान कीजिए।
सूची I: परमाणु रिएक्टर
A. अप्सरा
B. साइरस (CIRUS)
C. पूर्णिमा-I
D. कामिनी
सूची II: विशेषताएँ
i. ईंधन के रूप में यूरेनियम-233 का उपयोग करने वाला विश्व का पहला रिएक्टर
ii. भारत का पहला परमाणु अनुसंधान रिएक्टर (1956)
iii. कनाडा की सहायता से निर्मित, जिसने हथियार-ग्रेड प्लूटोनियम की आपूर्ति की
iv. प्लूटोनियम का उपयोग करने वाला भारत का पहला प्रयोगात्मक फास्ट रिएक्टर
(1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(2) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) अनुत्तरित प्रश्न

26. निम्नलिखित में से कौन सा कथन भारत में हरित क्रांति के दौरान पेश किए गए एक मुख्य तकनीकी घटक की सही पहचान करता है?
(1) नॉर्मन बोरलॉग द्वारा विकसित अर्ध-बौनी, उच्च उपज वाली गेहूं की किस्मों की शुरुआत
(2) जैविक खेती पद्धतियों और जैव-उर्वरकों के उपयोग की ओर पूर्ण परिवर्तन
(3) शुष्क भूमि खेती तकनीकों के पक्ष में सतह सिंचाई विधियों का उन्मूलन
(4) बिना किसी रासायनिक इनपुट के स्वदेशी बीज किस्मों पर विशेष निर्भरता
(5) अनुत्तरित प्रश्न

27. 1980 के दशक के दौरान बेंगलुरु में बहुराष्ट्रीय आईटी उद्योग के विकास के लिए निम्नलिखित में से किसे सबसे उपयुक्त शुरुआती कारक (Trigger) माना जाता है?
(1) सी-डैक (C-DAC) द्वारा परम सुपरकंप्यूटर का प्रक्षेपण
(2) कर्नाटक में पहले निजी इंटरनेट सेवा प्रदाता की शुरुआत
(3) राज्य सरकार द्वारा सभी विद्यालयों में कंप्यूटर विज्ञान को अनिवार्य बनाने का आदेश
(4) 1985 में टेक्सास इंस्ट्रूमेंट्स द्वारा भारत में पहले विदेशी अनुसंधान एवं विकास केंद्र की स्थापना
(5) अनुत्तरित प्रश्न

28. एकीकृत निर्देशित मिसाइल विकास कार्यक्रम (IGMDP) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसे आधिकारिक तौर पर 1983 में भारत सरकार द्वारा शुरू किया गया था।
II. डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम इस कार्यक्रम के मुख्य कार्यकारी और वास्तुकार थे।
III. कार्यक्रम में भारत की पहली स्वदेशी परमाणु-संचालित पनडुब्बी का विकास शामिल था।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) I और II
(2) II और III
(3) I और III
(4) I, II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

29. निम्नलिखित चार शब्द विभिन्न भारतीय संस्थानों द्वारा विकसित स्वदेशी सुपरकंप्यूटरों की श्रेणी से संबंधित हैं। बेमेल विकल्प की पहचान कीजिए।
(1) परम (PARAM)
(2) अनुपम (Anupam)
(3) आकाश (Akash)
(4) पेस (PACE)
(5) अनुत्तरित प्रश्न

30. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): 1974 में पोखरण में हुए शांतिपूर्ण परमाणु विस्फोट के परिणामस्वरूप भारत के विरुद्ध कड़े अंतरराष्ट्रीय प्रौद्योगिकी प्रतिबंध लगाए गए थे।
कारण (R): इन प्रतिबंधों ने परमाणु ऊर्जा और अंतरिक्ष क्षेत्रों में भारत के स्वदेशी विकास को स्थायी रूप से पूर्णतः रोक दिया था।
उपर्युक्त कथनों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

31. भारत का पहला उपग्रह 'आर्यभट्ट' निम्नलिखित में से किस प्रक्षेपण यान का उपयोग करके अंतरिक्ष में भेजा गया था?
(1) कॉसमॉस-3M (Kosmos-3M)
(2) एसएलवी-3 (SLV-3)
(3) एरियन 1 (Ariane 1)
(4) डेल्टा II (Delta II)
(5) अनुत्तरित प्रश्न

Downloaded from www.pdf.tube

अध्याय 26
स्वातंत्र्योत्तर भारत में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

1. जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में पेश किए गए 1958 के वैज्ञानिक नीति संकल्प (Scientific Policy Resolution) का मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित में से क्या था?
(1) वैज्ञानिक अनुसंधान को केवल सरकारी क्षेत्रों के भीतर रक्षा और परमाणु ऊर्जा परियोजनाओं तक सीमित रखना
(2) विज्ञान और वैज्ञानिक अनुसंधान के सभी पहलुओं को बढ़ावा देना, प्रोत्साहित करना और निरंतर बनाए रखना
(3) सरकारी व्यय को कम करने के लिए सभी राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं और वैज्ञानिक संस्थानों का निजीकरण करना
(4) घरेलू समाधान विकसित करने के बजाय औद्योगिक विकास के लिए विशेष रूप से विदेशी तकनीक पर निर्भर रहना
(5) अनुत्तरित प्रश्न

2. निम्नलिखित में से किसे व्यापक रूप से भारत के त्रि-स्तरीय परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम का मुख्य वास्तुकार माना जाता है?
(1) होमी जे. भाभा
(2) विक्रम साराभाई
(3) ए.पी.जे. अब्दुल कलाम
(4) राजा रमन्ना
(5) अनुत्तरित प्रश्न

3. वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (CSIR) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: सीएसआईआर की स्थापना भारत में औद्योगिक अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए एक स्वायत्त निकाय के रूप में की गई थी।
कथन II: भारत के राष्ट्रपति सीएसआईआर के पदेन अध्यक्ष के रूप में कार्य करते हैं।
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही कथन की पहचान कीजिए।
(1) कथन I सही है और कथन II गलत है
(2) कथन I गलत है और कथन II सही है
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(5) अनुत्तरित प्रश्न

4. भारत की शुरुआती तकनीकी प्रगति के आधार पर निम्नलिखित चार इकाइयाँ एक ही श्रेणी से संबंधित हैं। बेमेल विकल्प की पहचान कीजिए।
(1) आर्यभट्ट
(2) भास्कर-I
(3) रोहिणी
(4) पृथ्वी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

5. सूची I में दिए गए प्रमुख वैज्ञानिक संस्थानों का सूची II में दिए गए उनके प्रमुख संस्थापकों या अग्रणी व्यक्तित्वों के साथ मिलान कीजिए।
सूची I: वैज्ञानिक संस्थान
A. टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च (TIFR)
B. फिजिकल रिसर्च लेबोरेटरी (PRL)
C. सेंटर फॉर डेवलपमेंट ऑफ एडवांस्ड कंप्यूटिंग (C-DAC)
D. भारतीय सांख्यिकीय संस्थान (ISI)
सूची II: संस्थापक/अग्रणी व्यक्तित्व
i. विक्रम साराभाई
ii. पी.सी. महालनोबिस
iii. होमी जे. भाभा
iv. विजय भटकर
(1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(2) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(3) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(4) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(5) अनुत्तरित प्रश्न

6. 18 मई 1974 को राजस्थान के पोखरण में भारत द्वारा किए गए पहले सफल परमाणु परीक्षण को निम्नलिखित में से कौन सा कूट नाम (Code Name) दिया गया था?
(1) ऑपरेशन शक्ति
(2) स्माइलिंग बुद्धा
(3) ऑपरेशन विजय
(4) ऑपरेशन पराक्रम
(5) अनुत्तरित प्रश्न

NODIA

7. आईटी क्रांति के दौरान भारत की 'सिलिकॉन वैली' के रूप में बेंगलुरु के तेजी से उभरने का सबसे उपयुक्त कारण निम्नलिखित में से किसे माना जाता है?
(1) कंप्यूटर हार्डवेयर निर्माण के लिए स्थानीय कच्चे माल और उच्च गुणवत्ता वाले सिलिकॉन की प्रचुरता
(2) कर्नाटक में कार्य करने वाले सभी व्यवसायों और बहुराष्ट्रीय निगमों के लिए करों में पूर्ण छूट
(3) केंद्र सरकार द्वारा सभी आईटी कंपनियों और प्रौद्योगिकी पार्कों का प्रत्यक्ष वित्तपोषण और प्रबंधन
(4) अंग्रेजी भाषी तकनीकी स्नातकों का एक बड़ा समूह और सॉफ्टवेयर निर्यात के लिए राज्य की शुरुआती अनुकूल नीतियां

(5) अनुत्तरित प्रश्न

39. स्वतंत्रता के बाद के भारतीय औषध उद्योग के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: सस्ती जेनेरिक दवाओं के बड़े पैमाने पर उत्पादन के कारण भारत को अक्सर 'विश्व की फार्मेसी' कहा जाता है।
कथन II: सस्ती जेनेरिक दवाओं के उत्पादन में परिवर्तन को भारतीय पेटेंट अधिनियम 1970 द्वारा सुगम बनाया गया था, जिसने औषधियों के लिए 'उत्पाद पेटेंट' के स्थान पर 'प्रक्रिया पेटेंट' (Process Patents) की अनुमति दी थी।
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही कथन की पहचान कीजिए।
(1) कथन I सही है और कथन II गलत है
(2) कथन I गलत है और कथन II सही है
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(5) अनुत्तरित प्रश्न

40. स्वतंत्रता के बाद के भारत में इन प्रमुख वैज्ञानिक संगठनों को उनकी औपचारिक स्थापना (या उनकी आधुनिक राष्ट्रीय भूमिका में परिवर्तन) के कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO)
II. रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (DRDO)
III. परमाणु ऊर्जा विभाग (DAE)
IV. वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (CSIR) - राष्ट्रीय प्रयोगशाला नेटवर्क में परिवर्तन
दिए गए विकल्पों में से सही क्रम चुनिए:
(1) IV, III, II, I
(2) III, IV, I, II
(3) IV, II, III, I
(4) II, III, IV, I
(5) अनुत्तरित प्रश्न

41. पहले भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IIT) का औपचारिक उद्घाटन 1951 में पूर्व हिजली डिटेंशन कैंप के स्थान पर किया गया था। यह परिसर कहाँ स्थित है?
(1) कानपुर
(2) मद्रास (चेन्नई)
(3) खड़गपुर
(4) बॉम्बे (मुंबई)
(5) अनुत्तरित प्रश्न

42. सेंटर फॉर डेवलपमेंट ऑफ एडवांस्ड कंप्यूटिंग (C-DAC) की स्थापना और उसके बाद 'परम' श्रृंखला के सुपरकंप्यूटरों का निर्माण निम्नलिखित में से किस घटना का प्रत्यक्ष परिणाम था?
(1) अमेरिका द्वारा भारत को 'क्रे एक्स-एमपी' (Cray X-MP) सुपरकंप्यूटर के लिए निर्यात मंजूरी देने से इनकार करना
(2) घरेलू उद्योग की सुरक्षा के लिए सभी अमेरिकी कंप्यूटर हार्डवेयर आयात पर प्रतिबंध लगाने का भारत का निर्णय
(3) भारत सरकार और यूरोपीय संघ के बीच हस्ताक्षरित एक संयुक्त प्रौद्योगिकी साझाकरण समझौता
(4) राजस्थान के मरुस्थल में किए गए पोखरण-II परमाणु परीक्षणों की रणनीतिक सफलता
(5) अनुत्तरित प्रश्न

43. निम्नलिखित में से कौन सा कथन भारत सरकार द्वारा तैयार किए गए 1958 के वैज्ञानिक नीति संकल्प (SPR) के केंद्रीय दर्शन को सबसे अच्छी तरह दर्शाता है?
(1) उच्च वैज्ञानिक शिक्षा और उन्नत प्रयोगशालाओं तक पहुँच को केवल विशिष्ट संस्थानों तक ही सीमित रखना
(2) यह सुनिश्चित करना कि वैज्ञानिक अनुसंधान और औद्योगिक वित्तपोषण पूर्णतः तीव्र सैन्य विस्तार के अनुरूप हों
(3) विश्वविद्यालयों में आधुनिक अनुभवजन्य विज्ञान के स्थान पर स्वदेशी पारंपरिक ज्ञान और लोककथाओं को अनिवार्य बनाना
(4) वैज्ञानिक ज्ञान की प्राप्ति और अनुप्रयोग से सभी लाभों को सुनिश्चित करना
(5) अनुत्तरित प्रश्न

44. भारत में हरित क्रांति के प्रारंभिक चरण के दौरान मुख्य रूप से निम्नलिखित चार फसलों की उपज में सुधार का लक्ष्य रखा गया था। बेमेल विकल्प की पहचान कीजिए।
(1) गेहूं
(2) सेब
(3) चावल
(4) मक्का
(5) अनुत्तरित प्रश्न

45. सूची I में रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (DRDO) की प्रमुख प्रयोगशालाओं का सूची II में उनके संबंधित स्थानों के साथ मिलान कीजिए।
सूची I: डीआरडीओ प्रयोगशाला
A. एयरोनॉटिकल डेवलपमेंट एस्टेब्लिशमेंट (ADE)
B. आर्मामेंट रिसर्च एंड डेवलपमेंट एस्टेब्लिशमेंट (ARDE)
C. डिफेंस लेबोरेटरी (DLJ)
D. लेजर साइंस एंड टेक्नोलॉजी सेंटर (LASTEC)
सूची II: स्थान
i. पुणे
ii. बेंगलुरु
iii. दिल्ली
iv. जोधपुर
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

46. जियोसिंक्रोनस सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल मार्क III (GSLV Mk III), जिसने चंद्रयान-2 और चंद्रयान-3 मिशनों

Click Here to Buy book on Amazon

61. निम्नलिखित चार शब्द भारतीय अंतरिक्ष प्रक्षेपण यान (Launch Vehicles) की श्रेणी से संबंधित हैं। बेमेल विकल्प की पहचान कीजिए।
(1) ASLV
(2) PSLV
(3) INSAT
(4) GSLV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

62. निम्नलिखित में से कौन सा कथन डीआरडीओ द्वारा विकसित 'अग्नि-V' मिसाइल की क्षमता का सही वर्णन करता है?
(1) यह लगभग 150 किमी की मारक क्षमता वाली एक कम दूरी की सामरिक मिसाइल है
(2) यह शत्रु के लड़ाकू विमानों को रोकने और नष्ट करने के लिए निर्मित सतह-से-हवा मिसाइल है
(3) यह गुप्त समुद्री अभियानों के लिए उपयोग की जाने वाली पनडुब्बी से दागी जाने वाली क्रूज मिसाइल है
(4) 5,000 किमी से अधिक की मारक क्षमता वाली एक अंतरमहाद्वीपीय बैलिस्टिक मिसाइल (ICBM)
(5) अनुत्तरित प्रश्न

63. परम 8000 सुपरकंप्यूटर के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: इसे वितरित स्मृति समानांतर वास्तुकला (Distributed memory parallel architecture) का उपयोग करके निर्मित किया गया था।
कथन II: यह अमेरिकी प्रतिबंधों को दरकिनार करने के लिए सोवियत संघ द्वारा निर्मित आयातित माइक्रोप्रोसेसरों पर पूर्णतः निर्भर था।
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही कथन की पहचान कीजिए।
(1) कथन I सही है और कथन II गलत है
(2) कथन I गलत है और कथन II सही है
(3) दोनों कथन I और कथन II सही हैं
(4) दोनों कथन I और कथन II गलत हैं
(5) अनुत्तरित प्रश्न

64. 1992 में 'एंट्रिक्स कॉर्पोरेशन लिमिटेड' (Antrix Corporation Limited) की स्थापना का प्राथमिक संस्थागत कारण क्या था?
(1) ग्रामीण क्षेत्रों में विशेष कृषि उपग्रहों के घरेलू निर्माण और वितरण की निगरानी की आवश्यकता
(2) अंतरिक्ष उत्पादों और प्रक्षेपण सेवाओं का वैश्विक स्तर पर विपणन करने के लिए इसरो की वाणिज्यिक शाखा के रूप में कार्य करना
(3) सीएसआईआर के तहत सभी राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं की वित्तीय संपत्ति और पेटेंट पोर्टफोलियो का प्रबंधन करना
(4) भविष्य के भारतीय अंतरिक्ष मिशनों के लिए सभी प्रक्षेपण यान विकास और जमीनी कार्यों का निजीकरण करना
(5) अनुत्तरित प्रश्न

65. सूची I में भारत सरकार की प्रमुख विज्ञान और प्रौद्योगिकी नीतियों का सूची II में उनके अपनाए जाने के संबंधित वर्षों के साथ मिलान कीजिए।
सूची I: नीति
A. वैज्ञानिक नीति संकल्प (Scientific Policy Resolution)
B. प्रौद्योगिकी नीति वक्तव्य (Technology Policy Statement)
C. विज्ञान और प्रौद्योगिकी नीति (Science and Technology Policy)
D. विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार नीति (STIP)
सूची II: वर्ष
i. 1958
ii. 1983
iii. 2003
iv. 2013
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) अनुत्तरित प्रश्न

66. वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (CSIR) औपचारिक रूप से सितंबर 1942 में एक स्वायत्त निकाय के रूप में स्थापित किया गया था। इसका स्थापना दिवस भारत में प्रतिवर्ष किस तिथि को मनाया जाता है?
(1) 26 सितंबर
(2) 28 फरवरी
(3) 11 मई
(4) 15 अक्टूबर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

NODIA

67. भारत के त्रि-स्तरीय परमाणु कार्यक्रम के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) पहले चरण में प्राकृतिक यूरेनियम द्वारा संचालित प्रेशराइज्ड हैवी वॉटर रिएक्टर (PHWRs) शामिल हैं।
(2) दूसरे चरण में प्लूटोनियम और यूरेनियम के मिश्रित ऑक्साइड द्वारा संचालित फास्ट ब्रीडर रिएक्टर (FBRs) शामिल हैं।
(3) तीसरे चरण में एनएसजी (NSG) देशों से आयातित अत्यधिक समृद्ध यूरेनियम-235 द्वारा संचालित उन्नत भारी पानी रिएक्टरों का उपयोग किया जाता है।
(4) कार्यक्रम का व्यापक लक्ष्य भारत के विशाल थोरियम भंडारों का अंततः उपयोग करना है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

68. आर्यभट्ट उपग्रह के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसे एक्स-रे खगोल विज्ञान, एरोनॉमिक्स और सौर भौतिकी में वैज्ञानिक प्रयोग करने के लिए निर्मित किया गया था।

स्वतंत्रता के बाद अपनी एयरोस्पेस और वैज्ञानिक अनुसंधान क्षमताओं में महत्वपूर्ण विस्तार देखा?
(1) सी.वी. रमन
(2) मेघनाद साहा
(3) सतीश धवन
(4) शांति स्वरूप भटनागर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

54. भारतीय जैव प्रौद्योगिकी क्षेत्र ने टीका निर्माण में व्यापक प्रगति की है। निम्नलिखित में से कौन सी एक स्वदेशी भारतीय बायोफार्मास्युटिकल कंपनी नहीं है जो टीका विकास या निर्माण के लिए जानी जाती है?
(1) सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया
(2) फाइजर इंडिया
(3) भारत बायोटेक
(4) पनासिया बायोटेक
(5) अनुत्तरित प्रश्न

55. सूची I में स्वदेशी सुपरकंप्यूटरों की श्रृंखला का सूची II में उन संबंधित भारतीय संगठनों के साथ मिलान कीजिए जिन्होंने उन्हें विकसित किया है।
सूची I: सुपरकंप्यूटर श्रृंखला
A. परम (PARAM) श्रृंखला
B. अनुपम (Anupam) श्रृंखला
C. पेस (PACE) श्रृंखला
D. फ्लोसोल्वर (Flosolver)
सूची II: विकासकर्ता संगठन
i. भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र (BARC)
ii. नेशनल एयरोस्पेस लेबोरेटरीज (NAL)
iii. रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (DRDO)
iv. सेंटर फॉर डेवलपमेंट ऑफ एडवांस्ड कंप्यूटिंग (C-DAC)
(1) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(2) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(3) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(4) A-i, B-iv, C-ii, D-iii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

56. डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने डीआरडीओ के तहत आईजीएमडीपी (IGMDP) का नेतृत्व करने से पहले, निम्नलिखित में से किस मिशन के लिए परियोजना निदेशक के रूप में कार्य करके भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) में ऐतिहासिक योगदान दिया था?
(1) सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल (SLV-3)
(2) आर्यभट्ट उपग्रह
(3) पोलर सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल (PSLV)
(4) मंगल ऑर्बिटर मिशन (मंगल्यान)
(5) अनुत्तरित प्रश्न

57. प्रमुख वैज्ञानिक अनुसंधान संस्थानों और भारत में उनके स्थानों के संबंध में सही युग्म की पहचान कीजिए।
(1) सेंटर फॉर सेल्युलर एंड मॉलिक्यूलर बायोलॉजी (CCMB) - हैदराबाद
(2) सेंट्रल ड्रग रिसर्च इंस्टीट्यूट (CDRI) - लखनऊ
(3) नेशनल केमिकल लेबोरेटरी (NCL) - पुणे
(4) नेशनल ब्रेन रिसर्च सेंटर (NBRC) - मानेसर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

58. भारतीय कृषि विज्ञान के संस्थानों और प्रमुख घटनाक्रमों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) कृषि अनुसंधान और शिक्षा के समन्वय के लिए शीर्ष निकाय के रूप में कार्य करता है।
II. एम.एस. स्वामीनाथन ने बाद में कृषि संकट को दूर करने के लिए राष्ट्रीय किसान आयोग की अध्यक्षता की।
III. दुग्ध उत्पादन बढ़ाने के लिए हरित क्रांति के तुरंत बाद श्वेत क्रांति (ऑपरेशन फ्लड) शुरू हुई थी।
IV. कृषि विज्ञान केंद्र (KVKs) जिला स्तर पर अग्रिम पंक्ति के कृषि विस्तार केंद्रों के रूप में कार्य करते हैं।
V. हरित क्रांति के परिणामस्वरूप दलहन और अनाज की उपज में समान आनुपातिक वृद्धि हुई।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?
(1) I और II
(2) III और IV
(3) केवल V
(4) II, IV और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

NODIA

59. शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार, जो भारत में सर्वोच्च बहु-विषयक विज्ञान पुरस्कारों में से एक है, प्रतिवर्ष सीएसआईआर (CSIR) द्वारा प्रदान किया जाता है। निम्नलिखित में से कौन सा इस पुरस्कार के लिए सबसे उपयुक्त पात्रता मानदंड है?
(1) यह विशेष रूप से 65 वर्ष से अधिक आयु के वरिष्ठ वैज्ञानिकों को 'लाइफटाइम अचीवमेंट' पुरस्कार के रूप में दिया जाता है
(2) यह केवल भारत के विदेशी नागरिकों को पूर्णतः देश के बाहर किए गए शोध के लिए दिया जाता है
(3) यह विशेष रूप से गहरे अंतरिक्ष अन्वेषण और खगोल विज्ञान के क्षेत्र में कार्य करने वाले वैज्ञानिकों को दिया जाता है
(4) 45 वर्ष से कम आयु के शोधकर्ताओं द्वारा विज्ञान में उत्कृष्ट योगदान के लिए
(5) अनुत्तरित प्रश्न

60. निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प भारत की स्वदेशी मिसाइल प्रणालियों के पहले सफल उड़ान परीक्षणों के सही कालानुक्रमिक क्रम को दर्शाता है?
(1) पृथ्वी-I, अग्नि-I टेक्नोलॉजी डिमॉन्स्ट्रेटर, ब्रह्मोस, अग्नि-V
(2) अग्नि-I टेक्नोलॉजी डिमॉन्स्ट्रेटर, पृथ्वी-I, ब्रह्मोस, अग्नि-V
(3) पृथ्वी-I, ब्रह्मोस, अग्नि-I टेक्नोलॉजी डिमॉन्स्ट्रेटर, अग्नि-V
(4) ब्रह्मोस, पृथ्वी-I, अग्नि-I टेक्नोलॉजी डिमॉन्स्ट्रेटर, अग्नि-V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

32. भारत में जैव प्रौद्योगिकी और औषध (Pharmaceutical) उद्योग के विकास के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय के तहत 1986 में जैव प्रौद्योगिकी विभाग (DBT) की स्थापना की गई थी।
II. शांता बायोटेक्निक्स ने भारत का पहला स्वदेशी रीकॉम्बिनेंट डीएनए हेपेटाइटिस बी टीका विकसित किया।
III. भारत वर्तमान में विश्व स्तर पर जेनेरिक दवाओं के सबसे बड़े प्रदाताओं में से एक है।
IV. भारतीय पेटेंट अधिनियम 1970 ने औषधियों में 'उत्पाद पेटेंट' (Product Patents) को मान्यता दी, जिससे जेनेरिक दवाओं का तत्काल प्रभुत्व कायम हो गया।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?

(1) I और II
(2) केवल IV
(3) III और IV
(4) II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

33. पोलर सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल (PSLV) के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?

(1) पीएसएलवी को भारत के एक मजबूत तीसरी पीढ़ी के प्रक्षेपण यान के रूप में वर्गीकृत किया गया है।
(2) यह भारी पेलोड की तैनाती के लिए क्रायोजेनिक ऊपरी चरण का उपयोग करता है।
(3) यह तरल चरणों से सफलतापूर्वक लैस होने वाला पहला भारतीय प्रक्षेपण यान था।
(4) पीएसएलवी ने चंद्रयान-1 और मंगल ऑर्बिटर मिशन (MOM) अंतरिक्ष यान को सफलतापूर्वक प्रक्षेपित किया।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

34. जीएसएलवी कार्यक्रम के लिए स्वदेशी क्रायोजेनिक इंजन तकनीक का विकास महत्वपूर्ण था। एक क्रायोजेनिक इंजन मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किस प्रणोदक (Propellant) संयोजन का उपयोग करता है?

(1) ईंधन के रूप में तरल हाइड्रोजन और ऑक्सीकारक के रूप में तरल ऑक्सीजन
(2) ठोस HTPB और तरल अनसिमेट्रिकल डाइमिथाइलहाइड्राज़ीन
(3) तरल नाइट्रोजन और तरल हीलियम
(4) केरोसिन (RP-1) और तरल ऑक्सीजन
(5) अनुत्तरित प्रश्न

35. सूची I में अग्रणी भारतीय वैज्ञानिकों का सूची II में उस विशिष्ट क्षेत्र या कार्यक्रम के साथ मिलान कीजिए जिससे वे सर्वाधिक प्रसिद्ध रूप से जुड़े हुए हैं।

सूची I: वैज्ञानिक

A. होमी जे. भाभा
B. एम.एस. स्वामीनाथन
C. सैम पित्रोदा
D. यू.आर. राव

सूची II: क्षेत्र/कार्यक्रम

i. कृषि विज्ञान और हरित क्रांति
ii. दूरसंचार क्रांति
iii. उपग्रह प्रौद्योगिकी और इसरो
iv. परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम

(1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(2) A-i, B-iv, C-iii, D-ii
(3) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(4) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(5) अनुत्तरित प्रश्न

36. डॉ. होमी जे. भाभा की दुखद मृत्यु, जिसने भारत के शुरुआती परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम को एक बड़ा आघात दिया था, 1966 में निम्नलिखित में से किस घटना के कारण हुई थी?

(1) भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र में एक प्रयोगशाला दुर्घटना
(2) नई दिल्ली में एक हत्या
(3) ट्रॉम्बे में एक रिएक्टर परीक्षण के दौरान विकिरण का प्रभाव
(4) आल्प्स में मोंट ब्लांक के पास एक वाणिज्यिक विमान दुर्घटना
(5) अनुत्तरित प्रश्न

37. निम्नलिखित में से कौन सी पहल या समिति विक्रम साराभाई के नेतृत्व में भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम के शुरुआती वर्षों से जुड़ी नहीं थी?

(1) अंतरिक्ष अनुसंधान के लिए भारतीय राष्ट्रीय समिति (INCOSPAR)
(2) थुम्बा इक्वेटोरियल रॉकेट लॉन्चिंग स्टेशन (TERLS)
(3) नेविगेशन विद इंडियन कॉन्स्टेलेशन (NavIC)
(4) सैटेलाइट इंस्ट्रक्शनल टेलीविजन एक्सपेरिमेंट (SITE)
(5) अनुत्तरित प्रश्न

38. भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम के संरचनात्मक विकास के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. इनकोस्पर (INCOSPAR) की स्थापना 1962 में परमाणु ऊर्जा विभाग के तहत की गई थी।
II. भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) का गठन 1969 में इनकोस्पर के स्थान पर किया गया था।
III. भारत सरकार ने 1972 में अंतरिक्ष आयोग का गठन किया और अंतरिक्ष विभाग (DOS) की स्थापना की।
IV. 1972 में इसरो को अंतरिक्ष विभाग के प्रत्यक्ष प्रशासनिक नियंत्रण में लाया गया था।
V. अंतरिक्ष विभाग रक्षा मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में कार्य करता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?

(1) I और II
(2) केवल V
(3) III और IV
(4) II, IV और V

Downloaded from www.pdf.tube

II. इसे 'कपुस्टिन यार' प्रक्षेपण सुविधा से प्रक्षेपित किया गया था।
III. इसने कक्षा में त्रुटिहीन रूप से कार्य किया और एक दशक से अधिक समय तक निरंतर टेलीमेट्री डेटा प्रदान किया।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) I और II
(2) II और III
(3) I और III
(4) I, II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

69. हरित क्रांति के दौरान उच्च उपज वाली किस्म (HYV) के बीजों के सफल अनुप्रयोग के लिए निम्नलिखित में से किस सहवर्ती इनपुट की आवश्यकता थी?
(1) नाइट्रोजनयुक्त उर्वरकों के प्रयोग में पर्याप्त कमी
(2) यंत्रीकृत खेती से हटकर शारीरिक श्रम की ओर परिवर्तन
(3) रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के साथ-साथ नियंत्रित और सुनिश्चित सिंचाई
(4) विशेष रूप से शुष्क और अर्ध-शुष्क वर्षा आधारित क्षेत्रों में खेती
(5) अनुत्तरित प्रश्न

70. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): 21वीं सदी की शुरुआत तक, भारत ने स्वयं को आईटी और 'बिजनेस प्रोसेस आउटसोर्सिंग' (BPO) के लिए एक प्रमुख वैश्विक केंद्र के रूप में स्थापित कर लिया था।
कारण (R): भारत के पास एक जनसांख्यिकीय लाभ था जिसमें अपेक्षाकृत कम लागत वाले, कुशल और अंग्रेजी भाषी तकनीकी पेशेवरों का एक बड़ा समूह शामिल था।
उपर्युक्त कथनों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

71. पोलर सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल (PSLV) इसरो का मुख्य आधार रहा है। निम्नलिखित में से किस प्रमुख भारतीय अंतरिक्ष मिशन ने अपने प्रक्षेपण के लिए पीएसएलवी का उपयोग नहीं किया था?
(1) चंद्रयान-1
(2) मंगल ऑर्बिटर मिशन (मंगल्यान)
(3) एस्ट्रोसैट (Astrosat)
(4) चंद्रयान-2
(5) अनुत्तरित प्रश्न

72. डॉ. विक्रम साराभाई के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उन्होंने भारतीय प्रबंधन संस्थान (IIM) अहमदाबाद की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
II. उन्होंने भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) के पहले अध्यक्ष के रूप में कार्य किया।
III. उन्हें मरणोपरांत पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया था।
IV. वे भारत के पहले स्वदेशी सुपरकंप्यूटर 'परम' के मुख्य वास्तुकार थे।

उपत्तरित कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?
(1) I और II
(2) III और IV
(3) केवल IV
(4) I और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

73. भारत और एशिया का पहला परमाणु अनुसंधान रिएक्टर 'अप्सरा' 1956 में संचालित हुआ। किस देश ने अप्सरा के लिए तकनीकी सहायता और समृद्ध यूरेनियम ईंधन की प्रारंभिक आपूर्ति प्रदान की थी?
(1) संयुक्त राज्य अमेरिका
(2) सोवियत संघ
(3) यूनाइटेड किंगडम
(4) कनाडा
(5) अनुत्तरित प्रश्न

74. भारत के प्रमुख आईटी/प्रौद्योगिकी केंद्र और उसके व्यापक रूप से मान्यता प्राप्त नाम या विशिष्ट सॉफ्टवेयर पार्क स्थापना के सही युग्म की पहचान कीजिए।
(1) हैदराबाद - हाईटेक सिटी (HITEC City)
(2) बेंगलुरु - साइबराबाद (Cyberabad)
(3) पुणे - भारत की सिलिकॉन वैली
(4) जयपुर - इलेक्ट्रॉनिक सिटी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

75. सूची I में प्रमुख भारतीय उपग्रह श्रृंखलाओं का सूची II में उनके प्राथमिक परिचालन उद्देश्य के साथ मिलान कीजिए।
सूची I: उपग्रह श्रृंखला
A. इन्सैट (INSAT)
B. आईआरएस (भारतीय सुदूर संवेदन)
C. IRNSS (NavIC)
D. एस्ट्रोसैट (Astrosat)

सूची II: परिचालन उद्देश्य
i. पृथ्वी अवलोकन और संसाधन निगरानी
ii. मल्टी-वेवलेंथ अंतरिक्ष वेधशाला
iii. दूरसंचार, प्रसारण और मौसम विज्ञान
iv. स्वतंत्र क्षेत्रीय उपग्रह नेविगेशन

(1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(2) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(3) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(4) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

NODIA

स्वास्थ्य संबंधी शिक्षा प्रसारित की गई, जो सामाजिक विकास का उदाहरण था।

11. (4) इसे पूरी तरह से भारत में डिजाइन और निर्मित किया गया था लेकिन सोवियत संघ द्वारा प्रक्षेपित किया गया था।
आर्यभट्ट भारत का पहला वैज्ञानिक उपग्रह था, जिसे 19 अप्रैल 1975 को अंतरिक्ष में भेजा गया था। इसे भारतीय वैज्ञानिकों और इंजीनियरों द्वारा स्वदेशी रूप से डिजाइन और निर्मित किया गया था। चूँकि उस समय भारत के पास अपना शक्तिशाली प्रक्षेपण यान नहीं था, इसलिए इसे सोवियत संघ के 'कॉसमॉस-3एम' रॉकेट से भेजा गया। इस मिशन ने भारत को उपग्रह प्रौद्योगिकी सीखने और अंतरिक्ष युग में प्रवेश करने में सक्षम बनाया।

12. (2) केवल III
पीएसएलवी भारत का विश्वसनीय चार चरणों वाला प्रक्षेपण यान है जिसमें ठोस और तरल ईंधन का उपयोग होता है। जीएसएलवी को भारी उपग्रहों को भू-स्थिर कक्षाओं में स्थापित करने हेतु विकसित किया गया है। यह धारणा गलत है कि पीएसएलवी का उपयोग अंतरग्रहीय मिशनों हेतु नहीं हुआ, क्योंकि चंद्रयान-1 और मंगल मिशन इसी से संपन्न हुए। स्वदेशी क्रायोजेनिक तकनीक जीएसएलवी कार्यक्रम की सफलता का आधार मानी जाती है।

13. (3) परम 8000
'परम 8000' भारत का पहला स्वदेशी सुपरकंप्यूटर था जिसे 1991 में सी-डैक द्वारा विकसित किया गया था। विजय भटकर के नेतृत्व में भारतीय वैज्ञानिकों ने इस जटिल मशीन का निर्माण किया। इसमें समानांतर प्रसंस्करण वास्तुकला का उपयोग किया गया था, जो एक बड़ी तकनीकी उपलब्धि थी। इस सफलता ने भारत को सुपरकंप्यूटिंग क्षमता वाले चुनिंदा देशों में खड़ा किया। इसने वैज्ञानिक और रक्षा अनुसंधान क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

14. (4) परमाणु अप्रसार चिंताओं के कारण अमेरिका द्वारा भारत को 'क्रे' (Cray) सुपरकंप्यूटर निर्यात करने से इनकार
भारत ने सुपरकंप्यूटिंग में आत्मनिर्भरता का निर्णय एक महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय अवरोध के बाद लिया। अस्सी के दशक में भारत को मौसम पूर्वानुमान हेतु अमेरिकी 'क्रे' सुपरकंप्यूटर की आवश्यकता थी। अमेरिका ने परमाणु कार्यक्रम में इसके उपयोग की आशंका जताते हुए निर्यात से इनकार कर दिया। इस प्रतिबंध ने भारतीय वैज्ञानिकों को चुनौती स्वीकार करने हेतु प्रेरित किया, जिसके परिणामस्वरूप 'परम' श्रृंखला के स्वदेशी सुपरकंप्यूटर का विकास हुआ।

15. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
भारत के निर्देशित मिसाइल कार्यक्रम के तहत विकसित मिसाइलें विशिष्ट रक्षा आवश्यकताओं को पूरा करती हैं। पृथ्वी सतह-से-सतह पर मार करने वाली कम दूरी की मिसाइल है। त्रिशूल को कम दूरी की सतह-से-हवा में रक्षा हेतु बनाया गया है। नाग एक परिष्कृत टैंक-रोधी निर्देशित मिसाइल है, जबकि अग्नि श्रृंखला की मिसाइलें मध्यम से लंबी दूरी की बैलिस्टिक मिसाइलें हैं। इन प्रणालियों ने भारत की सामरिक शक्ति को सुदृढ़ किया।

16. (2) यूरेनियम-233
भारत के परमाणु कार्यक्रम का दूसरा चरण फास्ट ब्रीडर रिएक्टरों पर आधारित है। इनमें मुख्य ईंधन के रूप में प्लूटोनियम का उपयोग होता है और इनके चारों ओर थोरियम-232 का आवरण रखा जाता है। प्रक्रिया के दौरान थोरियम न्यूट्रॉन अवशोषित करके यूरेनियम-233 में परिवर्तित हो जाता है। यही यूरेनियम-233 तीसरे चरण के लिए प्राथमिक ईंधन के रूप में उपयोग होगा, जिससे भारत अपने विशाल थोरियम भंडार का उपयोग कर सकेगा।

17. (2) सोवियत संघ की सहायता से बॉम्बे में पहला आईआईटी स्थापित किया गया था।
भारत में तकनीकी शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु 'सरकार समिति' की सिफारिशों पर भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों की स्थापना हुई। आईआईटी खड़गपुर 1951 में स्थापित होने वाला देश का पहला संस्थान था। यह कथन कि बॉम्बे में पहला आईआईटी सोवियत संघ की सहायता से बना था, गलत है क्योंकि खड़गपुर प्रथम था। आईआईटी बॉम्बे को बाद में यूनेस्को के माध्यम से सोवियत सहायता प्राप्त हुई। 1961 के अधिनियम ने इन्हें राष्ट्रीय महत्व दिया।

18. (1) I, II, III, और IV
भारत के वैज्ञानिक इतिहास में 1958 में वैज्ञानिक नीति संकल्प अपनाया गया। इसरो की स्थापना 1969 में हुई, जिसने अंतरिक्ष कार्यक्रम को गति दी। 1974 में पोखरण में पहला सफल परमाणु परीक्षण किया गया। 1975 में भारत का प्रथम उपग्रह 'आर्यभट्ट' प्रक्षेपित हुआ। जैव प्रौद्योगिकी विभाग की स्थापना 1986 में हुई, जो 1980 के बाद की घटना है। अतः प्रथम चार महत्वपूर्ण घटनाएं 1980 के दशक से पहले की हैं।

19. (3) अटल बिहारी वाजपेयी
मई 1998 में पोखरण में किए गए पांच परमाणु विस्फोटों की श्रृंखला प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में संपन्न हुई। इस अभियान को 'ऑपरेशन शक्ति' नाम दिया गया, जिसने भारत को परमाणु हथियार संपन्न राष्ट्र के रूप में स्थापित किया। इन परीक्षणों ने भारत की रक्षात्मक और वैज्ञानिक क्षमताओं का वैश्विक प्रदर्शन किया। इस ऐतिहासिक सफलता के उपलक्ष्य में ही प्रत्येक वर्ष 11 मई को राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस मनाया जाता है।

20. (2) आर्यभट्ट, भास्कर-I, रोहिणी RS-1, एप्पल (APPLE)
भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम में उपग्रह प्रक्षेपण का एक निश्चित कालक्रम रहा है। सर्वप्रथम 1975 में 'आर्यभट्ट' सोवियत संघ की सहायता से भेजा गया। इसके पश्चात 1979 में पृथ्वी पर्यवेक्षण हेतु 'भास्कर-1' का प्रक्षेपण हुआ। 1980 में 'रोहिणी आरएस-1' स्वदेशी प्रक्षेपण यान द्वारा कक्षा में स्थापित होने वाला प्रथम भारतीय उपग्रह बना। अंततः 1981 में 'एप्पल' उपग्रह ने भारत में संचार क्रांति की नींव रखी और सफलतापूर्वक स्थापित किया गया।

Click Here to Buy book on Amazon

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs,
you are wasting valuable time.

Research shows that learning from
PRINTED BOOKS has up to
4× HIGHER RETENTION
than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS**
move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND**
in competition.

In competitive exams,
being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) विज्ञान और वैज्ञानिक अनुसंधान के सभी पहलुओं को बढ़ावा देना, प्रोत्साहित करना और निरंतर बनाए रखना
1958 का वैज्ञानिक नीति संकल्प भारत में विज्ञान और प्रौद्योगिकी की आधारशिला था। इसका मुख्य उद्देश्य नागरिकों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करना और अनुसंधान में उत्कृष्टता लाना था। जवाहरलाल नेहरु का मानना था कि विज्ञान से निर्धनता और सामाजिक असमानता मिटाई जा सकती है। यह संकल्प संसाधनों के कुशल उपयोग और पूर्ण आत्मनिर्भरता प्राप्त करने पर केंद्रित था।

2. (1) होमी जे. भाभा
होमी जहांगीर भाभा भारतीय परमाणु कार्यक्रम के जनक और त्रि-स्तरीय ऊर्जा ढांचे के मुख्य वास्तुकार थे। उन्होंने भारत के सीमित यूरेनियम और विशाल थोरियम भंडार को देखते हुए यह रणनीति बनाई थी। इसका उद्देश्य ऊर्जा सुरक्षा और परमाणु ऊर्जा का शांतिपूर्ण उपयोग सुनिश्चित करना था। उन्होंने परमाणु ऊर्जा आयोग और टाटा मूलभूत अनुसंधान संस्थान जैसे प्रमुख संस्थानों की स्थापना की थी।

3. (1) कथन I सही है और कथन II गलत है
वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद भारत का सबसे बड़ा अनुसंधान संगठन है। इसकी स्थापना 1942 में औद्योगिक क्षेत्र में तकनीकी नवाचार को बढ़ावा देने के लिए की गई थी। यह परिषद पूरे देश में प्रयोगशालाओं का विस्तृत जाल संचालित करती है। महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि भारत के प्रधानमंत्री इसके पदेन अध्यक्ष होते हैं, न कि राष्ट्रपति, जो इसकी प्रशासनिक संरचना को विशिष्ट बनाता है।

4. (4) पृथ्वी
आर्यभट्ट, भास्कर-1 और रोहिणी भारत के शुरुआती अंतरिक्ष अभियानों और उपग्रह विकास के महत्वपूर्ण चरण हैं। आर्यभट्ट भारत का पहला उपग्रह था, जबकि रोहिणी स्वदेशी प्रक्षेपण यान द्वारा कक्षा में स्थापित होने वाला प्रथम उपग्रह बना। इसके विपरीत, पृथ्वी सतह-से-सतह पर मार करने वाली एक बैलिस्टिक मिसाइल है। इसे रक्षा कार्यक्रम के तहत विकसित किया गया था, इसलिए यह उपग्रहों की श्रेणी से अलग है।

5. (1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
भारतीय वैज्ञानिक संस्थानों के निर्माण में कई दूरदर्शी व्यक्तित्वों का अमूल्य योगदान रहा है। होमी जे. भाभा ने परमाणु विज्ञान हेतु टाटा मूलभूत अनुसंधान संस्थान की नींव रखी। विक्रम साराभाई ने भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला स्थापित की। विजय भटकर ने सुपरकंप्यूटिंग क्षेत्र में सी-डैक का नेतृत्व किया, जबकि पी.सी. महालनोबिस ने भारतीय सांख्यिकीय संस्थान बनाया। इन संस्थानों ने भारत की तकनीकी प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

6. (2) स्माइलिंग बुद्धा
18 मई 1974 को पोखरण में किए गए भारत के पहले परमाणु परीक्षण का कूट नाम 'स्माइलिंग बुद्धा' था। यह परीक्षण बुद्ध पूर्णिमा के दिन हुआ था, इसलिए इसे यह सांकेतिक नाम दिया गया। इस सफलता के साथ भारत परमाणु शक्ति प्रदर्शित करने वाला विश्व का छठा राष्ट्र बना। सरकार ने इसे शांतिपूर्ण परमाणु विस्फोट बताया था जिसका उद्देश्य वैज्ञानिक अनुसंधान और ऊर्जा विकास को गति देना था।

NODIA

7. (4) अंग्रेजी भाषी तकनीकी स्नातकों का एक बड़ा समूह और सॉफ्टवेयर निर्यात के लिए राज्य की शुरुआती अनुकूल नीतियां
बेंगलुरु का भारत की 'सिलिकॉन वैली' बनना कई महत्वपूर्ण कारकों का परिणाम था। यहाँ स्थित प्रतिष्ठित संस्थानों ने बड़ी संख्या में कुशल तकनीकी स्नातक तैयार किए। कर्नाटक सरकार द्वारा सॉफ्टवेयर पार्कों की समय पर स्थापना और अनुकूल नीतियों ने वैश्विक कंपनियों को आकर्षित किया। सुखद जलवायु और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों की उपस्थिति ने सूचना प्रौद्योगिकी निर्यात और तकनीकी पारिस्थितिकी तंत्र को निरंतर मजबूती प्रदान की।

8. (3) I और III
भारत में हरित क्रांति मुख्य रूप से गेहूं और चावल की उच्च उपज वाली किस्मों के बीजों पर आधारित थी। एम.एस. स्वामीनाथन ने इन बीजों को भारतीय परिस्थितियों के अनुकूल बनाने में अग्रणी भूमिका निभाई। इस तकनीक में रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों और सुनिश्चित सिंचाई का उपयोग अनिवार्य था। यद्यपि इसने खाद्यान्न में आत्मनिर्भरता प्रदान की, परंतु उर्वरकों के अधिक प्रयोग से कुछ पर्यावरणीय चुनौतियां भी उत्पन्न हुई थीं।

9. (3) ब्रह्मोस
एकीकृत निर्देशित मिसाइल विकास कार्यक्रम 1983 में मिसाइल प्रौद्योगिकी में आत्मनिर्भरता हेतु शुरु हुआ था। इस कार्यक्रम के तहत पांच मुख्य मिसाइलें- अग्नि, पृथ्वी, त्रिशूल, आकाश और नाग विकसित की गईं। ब्रह्मोस इस मूल कार्यक्रम का हिस्सा नहीं थी, क्योंकि इसे बाद में भारत और रूस के संयुक्त उद्यम के रूप में विकसित किया गया था। ब्रह्मोस एक सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल है जो अपनी गति हेतु प्रसिद्ध है।

10. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
विक्रम साराभाई ने हमेशा अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के उपयोग को मानव कल्याण और सामाजिक विकास से जोड़ा। उनका मानना था कि उपग्रहों का उपयोग पिछड़े क्षेत्रों में शिक्षा पहुँचाने के लिए किया जाना चाहिए। इसी दूरदृष्टि के कारण उन्होंने 'सैटेलाइट इंस्ट्रक्शनल टेलीविजन एक्सपेरिमेंट' की रूपरेखा तैयार की थी। इसके माध्यम से हजारों गांवों में टेलीविजन द्वारा कृषि और

सुपरकंप्यूटिंग जैसे क्षेत्रों में स्वदेशी क्षमताओं को अधिक मजबूती से विकसित किया।

31. (1) कॉसमॉस-3M (Kosmos-3M)
भारत के पहले उपग्रह 'आर्यभट्ट' का प्रक्षेपण 1975 में सोवियत संघ के 'कॉसमॉस-3एम' प्रक्षेपण यान द्वारा किया गया था। यह उपग्रह पूरी तरह से भारतीय डिजाइन और तकनीक पर आधारित था, लेकिन उस समय भारत के पास अपना कोई शक्तिशाली रॉकेट उपलब्ध नहीं था। यह मिशन सोवियत संघ और भारत के बीच एक महत्वपूर्ण वैज्ञानिक सहयोग का सुखद परिणाम था। इस सफल प्रक्षेपण ने भारत को अंतरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर नई पहचान और आत्मविश्वास प्रदान किया।

32. (2) केवल IV
भारत सरकार ने 1986 में जैव प्रौद्योगिकी विभाग की स्थापना की, जिसने अनुसंधान को नई दिशा दी। शांता बायोटेक्निक्स ने कम लागत वाला स्वदेशी हेपेटाइटिस बी का टीका बनाकर ख्याति प्राप्त की। भारतीय पेटेंट अधिनियम 1970 ने केवल 'प्रक्रिया पेटेंट' की अनुमति दी थी, जिससे कंपनियों को दवाओं के सस्ते संस्करण बनाने में सहायता मिली। इसी कारण भारत जेनेरिक दवाओं का बड़ा प्रदाता बना। उत्पाद पेटेंट को बाद में 2005 में अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप अपनाया गया था।

33. (2) यह भारी पेलोड की तैनाती के लिए क्रायोजेनिक ऊपरी चरण का उपयोग करता है।
पीएसएलवी इसरो का अत्यंत सफल और भरोसेमंद प्रक्षेपण यान है। यह तरल ईंधन चरणों का उपयोग करने वाला भारत का पहला रॉकेट था, जिसने इसकी दक्षता बढ़ाई। पीएसएलवी ने ही चंद्रयान-1 और मंगल ऑर्बिटर जैसे जटिल मिशनों को सफलतापूर्वक संपन्न किया है। हालांकि, यह क्रायोजेनिक ऊपरी चरण का उपयोग नहीं करता है; क्रायोजेनिक तकनीक का उपयोग विशेष रूप से जीएसएलवी रॉकेटों में भारी उपग्रहों को ऊँची कक्षाओं में स्थापित करने के लिए किया जाता है। पीएसएलवी मुख्य रूप से सूर्य-तुल्यकालिक कक्षाओं हेतु है।

34. (1) ईंधन के रूप में तरल हाइड्रोजन और ऑक्सीकारक के रूप में तरल ऑक्सीजन
क्रायोजेनिक इंजन एक अत्यंत परिष्कृत तकनीक है जो बहुत कम तापमान पर कार्य करने वाले प्रणोदकों का उपयोग करती है। इसमें मुख्य रूप से ईंधन के रूप में तरल हाइड्रोजन और ऑक्सीकारक के रूप में तरल ऑक्सीजन का संयोजन होता है। हाइड्रोजन को तरल रखने हेतु शून्य से 253 डिग्री नीचे और ऑक्सीजन को 183 डिग्री नीचे रखा जाता है। यह संयोजन रॉकेट को बहुत अधिक बल प्रदान करता है, जो भारी संचार उपग्रहों को गहरी कक्षाओं में पहुँचाने हेतु आवश्यक होता है।

35. (1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
भारत के महान वैज्ञानिकों ने विभिन्न क्षेत्रों में देश को अग्रणी बनाया है। होमी जे. भाभा ने परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम की नींव रखी, जबकि एम.एस. स्वामीनाथन ने कृषि विज्ञान में सुधार कर हरित क्रांति का नेतृत्व किया। सैम पित्रोदा ने दूरसंचार क्षेत्र में तकनीकी बदलाव लाकर डिजिटल इंडिया का मार्ग प्रशस्त किया। यू.आर. राव ने उपग्रह प्रौद्योगिकी के विकास और इसरो के मिशनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन व्यक्तित्वों के प्रयासों ने भारत को आधुनिक और तकनीकी रूप से सक्षम बनाया।

36. (4) आल्प्स में मोंट ब्लांक के पास एक वाणिज्यिक विमान दुर्घटना
भारतीय परमाणु कार्यक्रम के जनक डॉ. होमी जहांगीर भाभा की मृत्यु 24 जनवरी 1966 को एक विमान दुर्घटना में हुई थी। वे एयर इंडिया के विमान से यात्रा कर रहे थे जो आल्प्स पर्वतमाला में मोंट ब्लांक के पास दुर्घटनाग्रस्त हो गया। इस दुखद घटना ने भारत के उभरते परमाणु कार्यक्रम को गहरा आघात पहुँचाया। उस समय वे अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी की बैठक में भाग लेने हेतु वियना जा रहे थे। उनकी मृत्यु भारतीय विज्ञान और तकनीकी नेतृत्व हेतु एक अपूरणीय क्षति थी।

37. (3) नेविगेशन विद इंडियन कॉन्स्टेलेशन (NavIC)
डॉ. विक्रम साराभाई ने भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम के शुरुआती वर्षों में इनकोस्पर की स्थापना और थुम्बा रॉकेट केंद्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने सैटेलाइट इंस्ट्रक्शनल टेलीविजन एक्सपेरिमेंट के माध्यम से शिक्षा प्रसार की कल्पना की थी। इसके विपरीत, 'नाविक' भारत की आधुनिक क्षेत्रीय उपग्रह नेविगेशन प्रणाली है जिसे साराभाई के निधन के दशकों बाद इसरो द्वारा विकसित किया गया। अतः नाविक प्रणाली का संबंध साराभाई के कालखंड से नहीं है, बल्कि यह हाल की एक बड़ी तकनीकी उपलब्धि है।

38. (2) केवल V
भारत का अंतरिक्ष कार्यक्रम 1962 में इनकोस्पर के गठन के साथ शुरु हुआ, जिसका स्थान 1969 में इसरो ने लिया। 1972 में अंतरिक्ष आयोग और विभाग की स्थापना के बाद इसरो को सीधे प्रशासनिक नियंत्रण में लाया गया। यह ढांचा प्रधानमंत्री को सीधे रिपोर्ट करता है ताकि निर्णयों में तेजी आए। यह धारणा गलत है कि अंतरिक्ष विभाग रक्षा मंत्रालय के अंतर्गत है; वास्तव में यह एक स्वतंत्र विभाग है जो सीधे प्रधानमंत्री के अधीन कार्य करता है और वैज्ञानिक स्वतंत्रता सुनिश्चित करता है।

39. (3) दोनों कथन I और कथन II सही हैं
भारत अपनी सस्ती और उच्च गुणवत्ता वाली जेनेरिक दवाओं के कारण 'विश्व की फार्मेसी' के रूप में प्रसिद्ध है। इस सफलता के पीछे 1970 का भारतीय पेटेंट अधिनियम एक मुख्य कारण रहा है। इस कानून ने 'उत्पाद पेटेंट' के बजाय 'प्रक्रिया पेटेंट' को मान्यता दी, जिससे भारतीय कंपनियों को दवाओं के निर्माण के नए और सस्ते तरीके विकसित करने की अनुमति मिली। इसके परिणामस्वरूप घरेलू कंपनियों ने महंगी दवाओं के किफायती संस्करण तैयार किए, जिससे स्वास्थ्य सेवाएं विकासशील देशों के लिए सुलभ हो सकीं।

40. (1) IV, III, II, I
भारत में वैज्ञानिक संगठनों की स्थापना एक व्यवस्थित क्रम में हुई है। सीएसआईआर ने 1942 में अपने राष्ट्रीय प्रयोगशाला

Downloaded from www.pdf.tube

21. (1) कथन I सही है और कथन II गलत है
भारत सरकार ने 1991 में 'सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी पार्क्स ऑफ इंडिया' योजना शुरू की, जिससे सॉफ्टवेयर निर्यात को भारी प्रोत्साहन मिला। इस योजना ने सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र में बुनियादी ढांचे को गति दी। हालांकि, यह कथन गलत है कि भारतीय आईटी उद्योग पहले घरेलू बाजार पर केंद्रित था। वास्तव में, इसकी वृद्धि वैश्विक आउटसोर्सिंग और विदेशी बाजारों की आवश्यकताओं को पूरा करने से शुरु हुई थी, जिसने भारत को वैश्विक मानचित्र पर स्थापित किया।

22. (2) डिफेंस रिसर्च एंड डेवलपमेंट लेबोरेटरी (DRDL), हैदराबाद
वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद नागरिक अनुसंधान प्रयोगशालाओं का एक विशाल नेटवर्क संचालित करती है। पुणे की राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला, नई दिल्ली की राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला और बेंगलुरु की राष्ट्रीय वांतरिक्ष प्रयोगशालाएं सीएसआईआर के अंतर्गत आती हैं। इसके विपरीत, हैदराबाद की रक्षा अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशाला रक्षा अनुसंधान संगठन (डीआरडीओ) के अधीन है। अतः डीआरडीएल रक्षा क्षेत्र से संबंधित होने के कारण सीएसआईआर नेटवर्क का हिस्सा नहीं है।

23. (4) सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र (SDSC) - श्रीहरिकोटा
भारत के अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थानों के मुख्यालय विभिन्न शहरों में स्थित हैं। सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र श्रीहरिकोटा में है, जो प्राथमिक उपग्रह प्रक्षेपण केंद्र है। विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र तिरुवनंतपुरम में स्थित है, जहाँ रॉकेट विकास होता है। अंतरिक्ष अनुप्रयोग केंद्र अहमदाबाद में है, जबकि यू.आर. राव उपग्रह केंद्र बेंगलुरु में स्थित है, जहाँ उपग्रहों का निर्माण होता है। अतः श्रीहरिकोटा और सतीश धवन केंद्र का युग्म भौगोलिक रूप से सही है।

24. (1) अहमदाबाद
डॉ. विक्रम साराभाई ने 1947 में अहमदाबाद में भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला की स्थापना की थी, जिसे अंतरिक्ष विज्ञान की जननी माना जाता है। उन्होंने इस संस्थान की शुरुआत एक चैरिटेबल ट्रस्ट के माध्यम से की थी। इस प्रयोगशाला ने कॉस्मिक किरणों और वायुमंडलीय भौतिकी में अग्रणी शोध किए। यहीं से भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम के शुरुआती विचारों और विकास को दिशा मिली। साराभाई की दूरदर्शिता ने इसे वैश्विक स्तर पर वैज्ञानिक अनुसंधान का केंद्र बनाया।

25. (1) A-ii, B-iii, C-iv, D-ii
परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम के विकास में अनुसंधान रिएक्टरों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। अप्सरा 1956 में संचालित होने वाला एशिया का पहला परमाणु रिएक्टर था। साइरस का निर्माण कनाडा की सहायता से हुआ और यह प्लूटोनियम का स्रोत बना। पूर्णिमा-1 प्रथम प्रयोगात्मक फास्ट रिएक्टर था जिसने प्लूटोनियम का उपयोग किया। कामिनी रिएक्टर विश्व का पहला ऐसा रिएक्टर है जिसने ईंधन के रूप में यूरेनियम-233 का उपयोग किया, जो थोरियम आधारित भविष्य की योजना का हिस्सा है।

26. (1) नॉर्मन बोरलॉग द्वारा विकसित अर्ध-बौनी, उच्च उपज वाली गेहूं की किस्मों की शुरुआत
भारत में हरित क्रांति का मुख्य घटक नॉर्मन बोरलॉग द्वारा विकसित उच्च उपज वाली गेहूं की किस्मों की शुरुआत थी। ये किस्में पारंपरिक किस्मों की तुलना में छोटी और अधिक उत्पादक थीं। इनके सफल उपयोग हेतु रासायनिक उर्वरकों और सुनिश्चित सिंचाई की आवश्यकता थी। एम.एस. स्वामीनाथन ने इन किस्मों को भारतीय जलवायु और मिट्टी के अनुकूल बनाया। इस वैज्ञानिक दृष्टिकोण ने भारत को खाद्यान्न की कमी वाले देश से एक आत्मनिर्भर राष्ट्र बना दिया।

NODIA

27. (4) 1985 में टेक्सास इंस्ट्रूमेंट्स द्वारा भारत में पहले विदेशी अनुसंधान एवं विकास केंद्र की स्थापना
बेंगलुरु में बहुराष्ट्रीय आईटी उद्योग के उदय का प्रमुख कारण 1985 में टेक्सास इंस्ट्रूमेंट्स द्वारा अपना अनुसंधान केंद्र स्थापित करना था। यह किसी बहुराष्ट्रीय कंपनी द्वारा भारत में स्थापित इस प्रकार का पहला केंद्र था। इसने अन्य वैश्विक कंपनियों के लिए बेंगलुरु में निवेश का मार्ग प्रशस्त किया। शहर में मौजूद कुशल तकनीकी प्रतिभा और अनुकूल वातावरण ने इस विकास को गति दी। इस घटना ने बेंगलुरु को अंतरराष्ट्रीय सॉफ्टवेयर सेवाओं के वैश्विक केंद्र के रूप में स्थापित किया।

28. (1) I और II
निर्देशित मिसाइल विकास कार्यक्रम भारत का एक महत्वाकांक्षी रक्षा उपक्रम था जिसे 1983 में शुरु किया गया था। डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम इस कार्यक्रम के मुख्य वास्तुकार थे, जिन्होंने भारत को मिसाइल शक्ति बनाने में नेतृत्व दिया। इस कार्यक्रम के तहत पांच स्वदेशी मिसाइल प्रणालियों का विकास सफलतापूर्वक किया गया। हालांकि, परमाणु-संचालित पनडुब्बी का विकास इस विशिष्ट कार्यक्रम का हिस्सा नहीं था, बल्कि वह एक अलग उन्नत प्रौद्योगिकी परियोजना के अंतर्गत संचालित किया गया था।

29. (3) आकाश (Akash)
परम, अनुपम और पेस भारतीय संस्थानों द्वारा विकसित स्वदेशी सुपरकंप्यूटर प्रणालियों की श्रेणियां हैं। परम को सी-डैक, अनुपम को भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र और पेस को डीआरडीओ द्वारा उच्च स्तरीय गणनाओं हेतु विकसित किया गया था। इसके विपरीत, आकाश एक सुपरकंप्यूटर नहीं बल्कि सतह-से-हवा में मार करने वाली मिसाइल प्रणाली है। इसे निर्देशित मिसाइल विकास कार्यक्रम के तहत विकसित किया गया था। अतः आकाश अपने कार्यों के आधार पर अन्य तीन प्रणालियों से भिन्न है।

30. (3) A सही है लेकिन R गलत है।
1974 के पोखरण परीक्षण के बाद भारत को कड़े अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंधों और तकनीकी बहिष्कार का सामना करना पड़ा था। कई देशों ने भारत को संवेदनशील प्रौद्योगिकियों की आपूर्ति बंद कर दी थी। हालांकि, यह दावा गलत है कि इन प्रतिबंधों ने भारत के विकास को हमेशा हेतु रोक दिया। वास्तव में, इन प्रतिबंधों ने भारतीय वैज्ञानिकों को स्वावलंबी बनने हेतु प्रेरित किया। इसके परिणामस्वरूप भारत ने अंतरिक्ष और

76. भारत के परमाणु परीक्षणों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

कथन I: 1974 में पोखरण-I परीक्षण को आधिकारिक तौर पर भारत सरकार द्वारा "शांतिपूर्ण परमाणु विस्फोट" (PNE) के रूप में वर्णित किया गया था।

कथन II: 1998 में पोखरण-II परीक्षणों को स्पष्ट रूप से हथियार परीक्षणों के रूप में घोषित किया गया था, जिससे भारत परमाणु हथियार संपन्न राष्ट्र के रूप में स्थापित हुआ।

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही कथन की पहचान कीजिए।

(1) कथन I सही है और कथन II गलत है
(2) कथन I गलत है और कथन II सही है
(3) दोनों कथन I और कथन II सही हैं
(4) दोनों कथन I और कथन II गलत हैं
(5) अनुत्तरित प्रश्न

77. इसरो द्वारा स्वदेशी क्रायोजेनिक तकनीक का सफल विकास निम्नलिखित में से किस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए सबसे उपयुक्त है?

(1) न्यूनतम लागत पर निम्न पृथ्वी कक्षा (LEO) में हल्के नैनो-उपग्रहों को प्रक्षेपित करना
(2) वायुमंडलीय अध्ययन में उपयोग किए जाने वाले साउंडिंग रॉकेटों के लिए अधिक बल (Thrust) प्रदान करना
(3) भारी संचार उपग्रहों को भू-स्थिर स्थानांतरण कक्षा (GTO) में प्रक्षेपित करने में सक्षम बनाना
(4) सैन्य क्रूज मिसाइलों के लिए एयर-ब्रीदिंग स्क्रैमजेट इंजन विकसित करना
(5) अनुत्तरित प्रश्न

78. मिसाइल प्रणालियों की निम्नलिखित सूची पर विचार कीजिए:

I. पृथ्वी
II. अग्नि
III. त्रिशूल
IV. नाग
V. आकाश

निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प मूल एकीकृत निर्देशित मिसाइल विकास कार्यक्रम (IGMDP) के तहत विकसित पांच मुख्य मिसाइल प्रणालियों का प्रतिनिधित्व करता है?

(1) I, II, III, IV, और V
(2) I, III, IV, V, और ब्रह्मोस
(3) II, III, IV, V, और अस्त्र
(4) I, II, III, V, और K-15
(5) अनुत्तरित प्रश्न

79. स्वतंत्रता के बाद के भारत में औषध उद्योग के विकास के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?

(1) 1970 के अधिनियम के तहत प्रक्रिया पेटेंट की ओर परिवर्तन ने जेनेरिक दवा उद्योग को प्रोत्साहित किया
(2) 1970 से पहले, भारत बल्क ड्रग निर्माण में अत्यधिक आत्मनिर्भर था और पश्चिम से कोई आवश्यक दवा आयात नहीं करता था
(3) भारतीय पेटेंट अधिनियम 1970 ने उत्पाद पेटेंट को सख्ती से लागू करके घरेलू दवा कंपनियों के विकास को गंभीर रूप से बाधित किया
(4) 1995 में विश्व व्यापार संगठन (WTO) में भारत के प्रवेश ने देश में सभी जेनेरिक दवा निर्माण और अनुसंधान गतिविधियों पर तुरंत प्रतिबंध लगा दिया
(5) अनुत्तरित प्रश्न

80. ट्रॉम्बे में स्थापित निम्नलिखित ऐतिहासिक परमाणु अनुसंधान रिएक्टरों को उनके संचालित होने के कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:

I. जरलीना (ZERLINA)
II. साइरस (CIRUS)
III. अप्सरा (Apsara)
IV. ध्रुव (DHRUVA)

दिए गए विकल्पों में से सही क्रम चुनिए:

(1) III, II, I, IV
(2) III, I, II, IV
(3) II, III, I, IV
(4) I, II, III, IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

www.nodia.in

Click Here to Buy book on Amazon

नेटवर्क के साथ अनुसंधान शुरू किया। इसके बाद 1954 में परमाणु ऊर्जा विभाग की स्थापना हुई ताकि ऊर्जा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता प्राप्त हो। 1958 में रक्षा अनुसंधान को मजबूत करने हेतु डीआरडीओ का गठन किया गया। अंततः 1969 में इसरो की औपचारिक स्थापना हुई। यह कालक्रम भारत की बढ़ती वैज्ञानिक और सामरिक महत्वाकांक्षाओं और उपलब्धियों को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

41. (3) खड़गपुर
भारत के पहले भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान की स्थापना 1951 में पश्चिम बंगाल के खड़गपुर में की गई थी। इस संस्थान का उद्घाटन ऐतिहासिक हिजली डिटेंशन कैंप के परिसर में हुआ, जिसका उपयोग ब्रिटिश काल में स्वतंत्रता सेनानियों को रखने हेतु किया जाता था। जवाहरलाल नेहरू ने इसे भारत के उज्ज्वल भविष्य के लिए ज्ञान और कौशल का मंदिर माना था। इसका उद्देश्य देश के औद्योगिक विकास हेतु उच्च गुणवत्ता वाले इंजीनियर तैयार करना था। आज यह संस्थान अपनी शैक्षणिक उत्कृष्टता हेतु विश्वविख्यात है।

42. (1) अमेरिका द्वारा भारत को 'क्रे एक्स-एमपी' (Cray X-MP) सुपरकंप्यूटर के लिए निर्यात मंजूरी देने से इनकार करना
भारत में स्वदेशी सुपरकंप्यूटिंग की यात्रा अमेरिकी प्रतिबंधों के जवाब में शुरू हुई थी। अस्सी के दशक में जब अमेरिका ने तकनीकी कारणों से भारत को 'क्रे' सुपरकंप्यूटर देने से मना कर दिया, तब भारत ने स्वयं अपनी क्षमता विकसित करने का निश्चय किया। इसी चुनौती के फलस्वरूप 1988 में सी-डैक की स्थापना हुई और मात्र तीन वर्षों में भारत ने 'परम 8000' सुपरकंप्यूटर का निर्माण किया। इस उपलब्धि ने सिद्ध किया कि बाहरी तकनीकी बाधाओं के बावजूद भारतीय वैज्ञानिक आत्मनिर्भरता प्राप्त कर सकते हैं।

43. (4) वैज्ञानिक ज्ञान की प्राप्ति और अनुप्रयोग से सभी लाभों को सुनिश्चित करना
1958 का वैज्ञानिक नीति संकल्प भारत के सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन में विज्ञान की भूमिका को परिभाषित करता है। इसका मूल दर्शन यह था कि वैज्ञानिक ज्ञान और इसके व्यावहारिक अनुप्रयोग से मिलने वाले लाभ समाज के हर वर्ग तक पहुँचने चाहिए। संकल्प का उद्देश्य केवल अनुसंधान करना ही नहीं था, बल्कि देश में एक वैज्ञानिक संस्कृति विकसित करना भी था। यह नीति संसाधनों के इष्टतम उपयोग, तकनीकी आत्मनिर्भरता और राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान हेतु विज्ञान को एक सशक्त उपकरण के रूप में अपनाती थी।

44. (2) सेब
भारत में हरित क्रांति का प्राथमिक ध्यान उन फसलों पर था जो खाद्य सुरक्षा हेतु सबसे अनिवार्य थीं। इसमें गेहूं और चावल के उत्पादन में क्रांतिकारी वृद्धि मुख्य लक्ष्य था, जिसके लिए उच्च उपज वाले बीजों का प्रयोग किया गया। मक्का और अन्य अनाजों की उत्पादकता बढ़ाने के भी प्रयास हुए थे। हालांकि, सेब और अन्य बागवानी फसलों का हरित क्रांति के इस विशेष तकनीकी चरण से कोई सीधा संबंध नहीं था। इसका मुख्य उद्देश्य खाद्यान्न उत्पादन में त्वरित आत्मनिर्भरता प्राप्त करना और भुखमरी समाप्त करना था।

45. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन की प्रयोगशालाएं विशिष्ट अनुसंधान क्षेत्रों में कार्यरत हैं। वांतरिक्ष विकास प्रतिष्ठान बेंगलुरु में स्थित है, जो विमानन प्रौद्योगिकी पर ध्यान केंद्रित करता है। आयुध अनुसंधान एवं विकास स्थापना पुणे में हथियारों के विकास हेतु प्रसिद्ध है। रक्षा प्रयोगशाला जोधपुर में रेगिस्तानी परिस्थितियों पर कार्य करती है, जबकि लेजर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी केंद्र दिल्ली में स्थित है। यह नेटवर्क भारत की रक्षा आवश्यकताओं हेतु एक मजबूत स्वदेशी तकनीकी आधार प्रदान करता है, जो सुरक्षा हेतु महत्वपूर्ण है।

46. (4) एलवीएम3 (Launch Vehicle Mark-3)
इसरो ने अपने सबसे शक्तिशाली प्रक्षेपण यान जीएसएलवी मार्क III का नाम बदलकर अब 'एलवीएम-3' कर दिया है। यह रॉकेट भारी पेलोड को अंतरिक्ष में ले जाने की क्षमता रखता है और चंद्रयान-3 जैसे महत्वपूर्ण मिशनों की सफलता में इसकी मुख्य भूमिका रही है। नाम बदलने का उद्देश्य यान की पहचान को सरल और वैश्विक मानकों के अनुरूप बनाना है। यह एक तीन चरणों वाला यान है जिसमें ठोस, तरल और एक शक्तिशाली स्वदेशी क्रायोजेनिक चरण शामिल है, जो इसे भारत का सबसे सक्षम यान बनाता है।

47. (1) अंतरिक्ष विभाग विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय के प्रशासनिक क्षेत्राधिकार के तहत कार्य करता है।
भारत में अंतरिक्ष कार्यक्रम का प्रशासन एक विशिष्ट संरचना द्वारा किया जाता है। अंतरिक्ष विभाग एक स्वतंत्र विभाग है जो सीधे प्रधानमंत्री को रिपोर्ट करता है और यह विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अधीन नहीं आता। अंतरिक्ष आयोग नीतियों के निर्माण हेतु जिम्मेदार है, जबकि इसरो इसकी मुख्य अनुसंधान और विकास इकाई के रूप में कार्य करता है। यह सीधी रिपोर्टिंग प्रणाली नौकरशाही की बाधाओं को कम करती है और अंतरिक्ष मिशनों हेतु त्वरित निर्णय लेने में अत्यधिक सहायक सिद्ध होती है।

48. (1) I और II
होमी जे. भाभा भारत में परमाणु ऊर्जा और मौलिक अनुसंधान के प्रणेता थे। उन्होंने टाटा मूलभूत अनुसंधान संस्थान की स्थापना की और इसके पहले निदेशक बने। साथ ही, वे भारतीय परमाणु ऊर्जा आयोग के प्रथम अध्यक्ष भी थे। कॉस्मिक किरणों पर उनके शोध को वैश्विक मान्यता मिली, लेकिन यह कहना गलत है कि उन्हें इसके लिए नोबेल पुरस्कार दिया गया था। हालांकि वे इसके प्रबल दावेदार थे, उनकी उपलब्धियों ने भारत को परमाणु क्षेत्र में एक आत्मनिर्भर और सम्मानित राष्ट्र बनाने की दिशा में मजबूत कदम उठाए।

49. (3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
भारतीय आईटी उद्योग के विकास में 'सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी पार्क्स ऑफ इंडिया' योजना ने क्रांतिकारी भूमिका निभाई। इसने कर प्रोत्साहनों के माध्यम से एक अनुकूल व्यापारिक माहौल

Downloaded from www.pdf.tube

67. (3) तीसरे चरण में एनएसजी (NSG) देशों से आयातित अत्यधिक समृद्ध यूरेनियम-235 द्वारा संचालित उन्नत भारी पानी रिएक्टरों का उपयोग किया जाता है।
भारत का परमाणु कार्यक्रम तीन चरणों में बना है। प्रथम चरण में प्राकृतिक यूरेनियम से भारी पानी रिएक्टर चलाए जाते हैं। द्वितीय चरण में फास्ट ब्रीडर रिएक्टरों का उपयोग होता है जो ईंधन पैदा करते हैं। यह कथन कि तीसरे चरण में आयातित यूरेनियम-235 का उपयोग होता है, तकनीकी रूप से पूर्णतः गलत है। वास्तव में, तीसरे चरण का मुख्य उद्देश्य भारत के विशाल स्वदेशी थोरियम भंडार का उपयोग करके यूरेनियम-233 के माध्यम से ऊर्जा उत्पादन करना है। यह चरण भारत को ऊर्जा सुरक्षा में आत्मनिर्भर बनाने हेतु तैयार किया गया है।

68. (1) I और II
भारत का पहला उपग्रह 'आर्यभट्ट' वैज्ञानिक अनुसंधान के उद्देश्य से बनाया गया था, जिसमें सौर भौतिकी के प्रयोग शामिल थे। इसे 1975 में सोवियत संघ के प्रक्षेपण स्थल से अंतरिक्ष में भेजा गया था। हालांकि, यह उपग्रह कक्षा में लंबे समय तक कार्य नहीं कर सका। बिजली आपूर्ति में खराबी के कारण केवल पांच दिनों के बाद ही उपग्रह से संपर्क टूट गया और डेटा प्राप्त होना बंद हो गया। फिर भी, यह मिशन उपग्रह निर्माण की तकनीकी क्षमता और अनुभव हासिल करने में भारत के लिए अत्यंत सफल और प्रेरणादायक रहा था।

69. (3) रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के साथ-साथ नियंत्रित और सुनिश्चित सिंचाई
हरित क्रांति की सफलता केवल बीजों पर नहीं, बल्कि एक संपूर्ण पैकेज पर निर्भर थी। इन बीजों की उत्पादकता प्राप्त करने हेतु रासायनिक उर्वरकों और प्रभावी कीटनाशकों का उपयोग अनिवार्य था। सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता सुनिश्चित सिंचाई की थी, क्योंकि ये नई किस्में पारंपरिक वर्षा आधारित खेती के बजाय नियमित जल आपूर्ति पर निर्भर थीं। इन सभी कारकों के समन्वित प्रयोग ने ही फसल उत्पादन में वह अभूतपूर्व वृद्धि सुनिश्चित की, जिसने भारत को खाद्य सुरक्षा और आत्मनिर्भरता प्रदान की तथा अकाल के संकट से मुक्त किया।

70. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
21वीं सदी के प्रारंभ तक भारत ने वैश्विक आईटी और आउटसोर्सिंग क्षेत्र में एक अग्रणी स्थान प्राप्त कर लिया था। इस सफलता का मुख्य कारण भारत का विशाल जनसांख्यिकीय लाभांश था, जिसमें बड़ी संख्या में कुशल और अंग्रेजी बोलने वाले तकनीकी पेशेवर उपलब्ध थे। विकसित देशों की तुलना में भारत में श्रम लागत कम होने के कारण वैश्विक कंपनियों ने अपने कार्यों का केंद्र भारत को बनाया। सरकार की अनुकूल नीतियों और बेहतर इंटरनेट संपर्क ने भी इस विकास को नई गति दी, जिससे भारत 'विश्व का बैक ऑफिस' कहलाया।

71. (4) चंद्रयान-2
पीएसएलवी इसरो का सबसे विश्वसनीय रॉकेट रहा है, जिसका उपयोग चंद्रयान-1 और मंगल मिशन जैसे वैज्ञानिक अभियानों हेतु किया गया। हालांकि, चंद्रयान-2 मिशन हेतु पीएसएलवी का उपयोग नहीं किया गया था। चंद्रयान-2 का कुल वजन बहुत अधिक था, जिसमें एक ऑर्बिटर, लैंडर और रोवर शामिल थे। इतने भारी पेलोड को चंद्रमा तक पहुँचाने हेतु भारत के सबसे शक्तिशाली प्रक्षेपण यान, एलवीएम-3 (जीएसएलवी मार्क III) का उपयोग किया गया था। यह यान भारी उपग्रहों को ले जाने में सक्षम है, जबकि पीएसएलवी मध्यम श्रेणी के उपग्रहों हेतु उपयुक्त है।

72. (3) केवल IV
डॉ. विक्रम साराभाई भारतीय विज्ञान के महान दूरदर्शी थे। उन्होंने इसरो के पहले अध्यक्ष के रूप में कार्य किया और आईआईएम अहमदाबाद जैसे संस्थानों की स्थापना की। उनकी उपलब्धियों हेतु उन्हें मरणोपरांत पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया। यह कथन कि वे 'परम' सुपरकंप्यूटर के मुख्य वास्तुकार थे, पूर्णतः गलत है। 'परम' का विकास डॉ. विजय भटकर के नेतृत्व में सी-डैक द्वारा साराभाई के निधन के कई वर्षों बाद किया गया था। साराभाई का प्राथमिक योगदान अंतरिक्ष अनुसंधान और परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण उपयोग के क्षेत्र में रहा है।

73. (3) यूनाइटेड किंगडम
'अप्सरा' भारत और पूरे एशिया का पहला परमाणु अनुसंधान रिएक्टर था, जो 1956 में भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र में शुरू हुआ। इसके निर्माण हेतु यूनाइटेड किंगडम ने महत्वपूर्ण तकनीकी सहायता प्रदान की थी और समृद्ध यूरेनियम ईंधन की प्रारंभिक आपूर्ति भी की थी। होमी जे. भाभा की देखरेख में इसे स्वदेशी रूप से डिजाइन किया गया था, लेकिन अंतरराष्ट्रीय सहयोग ने इसे समय पर पूरा करने में मदद की। इस रिएक्टर की सफलता ने भारत की परमाणु क्षमता को सिद्ध किया और भविष्य के व्यापक परमाणु कार्यक्रम हेतु ठोस आधार तैयार किया।

74. (1) हैदराबाद - हाईटेक सिटी (HITEC City)
हैदराबाद को भारतीय आईटी उद्योग के एक प्रमुख केंद्र के रूप में पहचाना जाता है, विशेष रूप से 'हाईटेक सिटी' की स्थापना के बाद। इस क्षेत्र ने वैश्विक सॉफ्टवेयर कंपनियों को आकर्षित किया है। विकल्प में बेंगलुरु को सिलिकॉन वैली और पुणे को इलेक्ट्रॉनिक सिटी के साथ गलत जोड़ा गया है, क्योंकि बेंगलुरु ही 'भारत की सिलिकॉन वैली' है। हैदराबाद का हाईटेक सिटी आधुनिक बुनियादी ढांचे और तकनीकी विकास का उत्कृष्ट उदाहरण है, जिसने शहर को अंतरराष्ट्रीय पहचान दी और राज्य की अर्थव्यवस्था को नई ऊंचाइयों पर पहुँचाया।

75. (1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
भारत की उपग्रह प्रणालियां विभिन्न महत्वपूर्ण उद्देश्यों को पूरा करने हेतु बनाई गई हैं। इन्सैट श्रृंखला मुख्य रूप से दूरसंचार और मौसम की भविष्यवाणी हेतु उपयोग की जाती है। आईआरएस उपग्रह पृथ्वी के संसाधनों की निगरानी और मानचित्रण के लिए जिम्मेदार हैं। नाविक प्रणाली भारत की अपनी स्वतंत्र नेविगेशन सेवा है जो भौगोलिक स्थिति की जानकारी देती है। एस्ट्रोसैट एक विशेष अंतरिक्ष वेधशाला है जो ब्रह्मांड का अध्ययन करती है। इन उपग्रहों के जाल ने भारत को संचार, रक्षा और वैज्ञानिक अनुसंधान में अत्यधिक सक्षम और आत्मनिर्भर बना दिया है।

NODIA

की अध्यक्षता भी की। हरित क्रांति के बाद दुग्ध उत्पादन हेतु 'ऑपरेशन फ्लड' शुरू हुआ, जिसने भारत को आत्मनिर्भर बनाया। कृषि विज्ञान केंद्र किसानों को नई तकनीक सिखाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह गलत है कि दलहन और अनाज की उपज समान रूप से बढ़ी, क्योंकि हरित क्रांति का मुख्य लाभ मुख्य रूप से गेहूं और चावल को मिला।

59. (4) 45 वर्ष से कम आयु के शोधकर्ताओं द्वारा विज्ञान में उत्कृष्ट योगदान के लिए
शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार भारत के सबसे प्रतिष्ठित वैज्ञानिक सम्मानों में से एक है, जिसे प्रतिवर्ष सीएसआईआर द्वारा प्रदान किया जाता है। यह पुरस्कार विशेष रूप से 45 वर्ष से कम आयु के उन युवा वैज्ञानिकों को दिया जाता है जिन्होंने विज्ञान और प्रौद्योगिकी में असाधारण योगदान दिया हो। इसका उद्देश्य वैज्ञानिक प्रतिभाओं को उनके करियर के शुरुआती चरण में प्रोत्साहित करना और शोध की संस्कृति को मजबूत बनाना है। यह पुरस्कार जीव विज्ञान, भौतिकी और इंजीनियरिंग जैसे सात विभिन्न वैज्ञानिक विषयों में उत्कृष्ट कार्य हेतु दिया जाता है।

60. (1) पृथ्वी-I, अग्नि-I टेक्नोलॉजी डिमॉन्स्ट्रेटर, ब्रह्मोस, अग्नि-V
भारत की मिसाइल विकास यात्रा एक क्रमिक और रणनीतिक प्रक्रिया रही है। सबसे पहले 1988 में कम दूरी की मिसाइल 'पृथ्वी-1' का सफल परीक्षण किया गया। इसके बाद 1989 में लंबी दूरी की तकनीक प्रदर्शन हेतु 'अग्नि-1' का प्रक्षेपण हुआ। 2001 में सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल 'ब्रह्मोस' का सफल परीक्षण किया गया, जो भारत-रूस सहयोग का परिणाम था। अंततः 2012 में 5000 किमी से अधिक मारक क्षमता वाली अंतरमहाद्वीपीय मिसाइल 'अग्नि-5' का सफल परीक्षण हुआ। यह क्रम भारत की बढ़ती सामरिक शक्ति और आत्मनिर्भरता को दर्शाता है।

61. (3) INSAT
एएसएलवी, पीएसएलवी और जीएसएलवी सभी इसरो द्वारा विकसित विभिन्न पीढ़ियों के प्रक्षेपण यान या रॉकेट प्रणालियां हैं, जिनका उपयोग उपग्रहों को अंतरिक्ष में भेजने हेतु किया जाता है। इसके विपरीत, 'इन्सैट' किसी प्रक्षेपण यान का नाम नहीं है, बल्कि यह संचार और मौसम विज्ञान हेतु उपयोग की जाने वाली उपग्रह श्रृंखला का नाम है। अतः इन्सैट एक उपग्रह प्रणाली है जबकि अन्य तीन उन माध्यमों के नाम हैं जो उपग्रहों को कक्षा तक पहुँचाते हैं। यह वर्गीकरण प्रक्षेपण तकनीक और उपग्रह सेवा के बीच के अंतर को स्पष्ट करता है।

62. (4) 5,000 किमी से अधिक की मारक क्षमता वाली एक अंतरमहाद्वीपीय बैलिस्टिक मिसाइल (ICBM)
डीआरडीओ द्वारा विकसित 'अग्नि-5' भारत की सबसे उन्नत और शक्तिशाली लंबी दूरी की मिसाइल है। यह एक अंतरमहाद्वीपीय बैलिस्टिक मिसाइल की श्रेणी में आती है, जिसकी मारक क्षमता 5,000 किलोमीटर से अधिक है। यह मिसाइल परमाणु हथियार ले जाने में सक्षम है और इसमें तीन चरणों वाली ठोस ईंधन प्रणाली का उपयोग किया गया है। इसकी उच्च सटीकता और लंबी दूरी की क्षमता भारत को एक मजबूत सामरिक प्रतिरोधक क्षमता प्रदान करती है। अग्नि-5 का सफल विकास भारत की आत्मनिर्भरता और वैश्विक रक्षा परिदृश्य में सैन्य शक्ति का प्रमाण है।

63. (1) कथन I सही है और कथन II गलत है
परम 8000 भारत का पहला स्वदेशी सुपरकंप्यूटर था, जिसे समानांतर प्रसंस्करण की उन्नत तकनीक पर आधारित किया गया था। यह तकनीक उस समय बहुत ही आधुनिक मानी जाती थी और इसने भारत को सुपरकंप्यूटिंग क्षेत्र में स्थापित किया। हालांकि, यह कहना गलत है कि यह पूरी तरह सोवियत माइक्रोप्रोसेसरों पर निर्भर था। वास्तव में, इसे भारतीय वैज्ञानिकों ने पश्चिमी देशों द्वारा तकनीक देने से मना करने के बाद स्वदेशी संसाधनों और नवाचार का उपयोग करके बनाया था। इस उपलब्धि ने भारत की तकनीकी संप्रभुता और आत्मनिर्भरता को सिद्ध किया।

64. (2) अंतरिक्ष उत्पादों और प्रक्षेपण सेवाओं का वैश्विक स्तर पर विपणन करने के लिए इसरो की वाणिज्यिक शाखा के रूप में कार्य करना
1992 में 'एंट्रिक्स कॉर्पोरेशन लिमिटेड' की स्थापना इसरो की एक वाणिज्यिक शाखा के रूप में की गई थी। इसका प्राथमिक उद्देश्य भारत द्वारा विकसित अंतरिक्ष प्रौद्योगिकियों और प्रक्षेपण सेवाओं का अंतरराष्ट्रीय बाजार में विपणन करना था। एंट्रिक्स ने वैश्विक ग्राहकों के उपग्रहों को भारतीय रॉकेटों द्वारा अंतरिक्ष में भेजने हेतु कई महत्वपूर्ण समझौते किए। इससे न केवल विदेशी मुद्रा की प्राप्ति हुई, बल्कि भारत की प्रक्षेपण क्षमता की विश्वसनीयता भी दुनिया में साबित हुई। यह संगठन इसरो के अनुसंधान और व्यावसायिक लाभ के बीच सेतु है।

65. (1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
भारत में विज्ञान और प्रौद्योगिकी की दिशा निर्धारित करने हेतु समय-समय पर विभिन्न नीतियां अपनाई गई हैं। 1958 में पहला वैज्ञानिक नीति संकल्प नेहरू के विजन के साथ आया। 1983 में आत्मनिर्भरता पर केंद्रित प्रौद्योगिकी नीति वक्तव्य जारी हुआ। 2003 में विज्ञान और प्रौद्योगिकी नीति आई जिसने नवाचार और निवेश पर बल दिया। अंततः 2013 में विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार नीति पेश की गई, जिसका उद्देश्य भारत को शीर्ष पांच वैज्ञानिक शक्तियों में शामिल करना है। इन नीतियों ने भारतीय अनुसंधान को निरंतर आधुनिक और प्रासंगिक बनाए रखा है।

66. (1) 26 सितंबर
वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद भारत का सबसे प्रमुख नागरिक अनुसंधान संगठन है, जिसकी स्थापना 26 सितंबर 1942 को हुई थी। प्रत्येक वर्ष 26 सितंबर को इसका स्थापना दिवस गौरव के साथ मनाया जाता है। शांति स्वरूप भटनागर इसके पहले महानिदेशक थे, जिनके प्रयासों से देश भर में प्रयोगशालाओं का जाल बिछाया गया। इस दिन सीएसआईआर के वैज्ञानिक योगदानों को याद किया जाता है और उत्कृष्ट अनुसंधान हेतु पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं। यह संगठन भारत की औद्योगिक और तकनीकी प्रगति में एक मुख्य स्तंभ की तरह कार्य कर रहा है।

Click Here to Buy book on Amazon

तैयार किया, जिससे विदेशी निवेश और निर्यात में वृद्धि हुई। इसके साथ ही, टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज जैसी कंपनियों ने 'ग्लोबल डिलीवरी मॉडल' अपनाकर सॉफ्टवेयर सेवाओं की गुणवत्ता में अंतरराष्ट्रीय मानक स्थापित किए। इन संयुक्त प्रयासों ने भारत को वैश्विक सॉफ्टवेयर बाजार में एक विश्वसनीय और प्रमुख सेवा प्रदाता के रुप में मजबूती से स्थापित करने में बहुत मदद की।

50. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
हरित क्रांति ने भारत को आत्मनिर्भर तो बनाया, लेकिन इसके कारण विभिन्न क्षेत्रों के बीच आर्थिक असमानताएं भी बढ़ीं। उच्च उपज वाली किस्मों की सफलता हेतु प्रचुर जल आपूर्ति और रासायनिक खाद आवश्यक थी। पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में पहले से बेहतर सिंचाई ढांचा मौजूद था, इसलिए इन क्षेत्रों ने नई तकनीक का सर्वाधिक लाभ उठाया। इसके विपरीत, वर्षा आधारित और गरीब क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे के अभाव में यह क्रांति अपेक्षित परिणाम नहीं दे सकी, जिससे क्षेत्रीय विकास का अंतर काफी बढ़ गया।

51. (3) अग्नि एक बैलिस्टिक प्रक्षेपवक्र का अनुसरण करती है, जबकि ब्रह्मोस एक सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल है
अग्नि और ब्रह्मोस भारत की दो महत्वपूर्ण मिसाइल प्रणालियां हैं, जो अलग सिद्धांतों पर कार्य करती हैं। अग्नि एक बैलिस्टिक मिसाइल है, जो प्रक्षेपण के बाद वायुमंडल के बाहर जाकर गुरुत्वाकर्षण के प्रभाव में लक्ष्य पर गिरती है। इसके विपरीत, ब्रह्मोस एक सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल है जो पूरी उड़ान के दौरान वायुमंडल के भीतर ही रहती है और अपनी तीव्र गति से लक्ष्य को भेदती है। अग्नि को भारत ने स्वदेशी रुप से विकसित किया है, जबकि ब्रह्मोस भारत और रुस का एक सफल संयुक्त उपक्रम है।

52. (3) I, II और IV
मई 1998 में आयोजित पोखरण-2 परीक्षण भारत के परमाणु इतिहास का निर्णायक क्षण था। इसमें तीन दिनों में कुल पांच परमाणु परीक्षण किए गए, जिनमें एक थर्मोन्यूक्लियर डिवाइस भी शामिल था। इन सफल प्रयोगों के कारण ही 11 मई को प्रतिवर्ष राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस मनाया जाता है। हालांकि, परीक्षणों के बाद भारत ने 'सीटीबीटी' पर हस्ताक्षर नहीं किए, क्योंकि भारत इसे भेदभावपूर्ण मानता था। इन परीक्षणों ने भारत को दुनिया के सामने एक परमाणु शक्ति संपन्न और स्वाभिमानी राष्ट्र के रूप में निर्विवाद रूप से स्थापित किया।

53. (3) सतीश धवन
भारतीय विज्ञान संस्थान ने स्वतंत्रता के बाद अपनी अनुसंधान क्षमताओं में व्यापक विस्तार देखा, विशेषकर सतीश धवन के मार्गदर्शन में। वे एक प्रसिद्ध वांतरिक्ष इंजीनियर थे जिन्होंने आईआईएससी और इसरो दोनों का नेतृत्व किया। उनके कार्यकाल के दौरान संस्थान ने वांतरिक्ष इंजीनियरिंग और अंतरिक्ष विज्ञान के अत्याधुनिक शोध केंद्र स्थापित किए। उन्होंने युवा वैज्ञानिकों को प्रेरित किया और वैज्ञानिक अनुसंधान को राष्ट्रीय विकास की जरूरतों से जोड़ने पर बल दिया। उनके योगदान ने भारत को अंतरिक्ष और विमानन प्रौद्योगिकी में वैश्विक पहचान दिलाई।

54. (2) फाइजर इंडिया
भारत का जैव प्रौद्योगिकी क्षेत्र टीका निर्माण में वैश्विक स्तर पर अग्रणी है। सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया, भारत बायोटेक और पनासिया बायोटेक जैसी कंपनियां पूरी तरह स्वदेशी हैं और इन्होंने विभिन्न बीमारियों के किफायती टीकों का विकास किया है। इसके विपरीत, फाइजर इंडिया एक बहुराष्ट्रीय कंपनी की भारतीय सहायक इकाई है, जिसकी जड़ें अमेरिका में हैं। भारतीय कंपनियों ने न केवल देश की स्वास्थ्य आवश्यकताओं को पूरा किया, बल्कि विकासशील देशों को सस्ते और प्रभावी टीके उपलब्ध कराकर मानवता की बड़ी सेवा भी की है।

55. (1) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
भारत में सुपरकंप्यूटिंग का विकास विभिन्न विशिष्ट संस्थानों के प्रयासों का परिणाम है। सी-डैक ने प्रसिद्ध 'परम' श्रृंखला के सुपरकंप्यूटर विकसित किए, जिन्होंने भारत को अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाई। भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र ने परमाणु अनुसंधान की जटिल गणनाओं हेतु 'अनुपम' श्रृंखला का निर्माण किया। रक्षा क्षेत्र की जरूरतों हेतु डीआरडीओ ने 'पेस' श्रृंखला विकसित की, जबकि राष्ट्रीय वांतरिक्ष प्रयोगशालाओं ने 'फ्लोसोल्वर' का निर्माण किया। इन प्रणालियों ने भारत को जटिल वैज्ञानिक समस्याओं के समाधान और डेटा विश्लेषण में आत्मनिर्भर बनाया।

NODIA

56. (1) सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल (SLV-3)
डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने इसरो में 'एसएलवी-3' परियोजना के निदेशक के रुप में ऐतिहासिक कार्य किया था। 1980 में इस स्वदेशी प्रक्षेपण यान के सफल परीक्षण ने ही रोहिणी उपग्रह को पृथ्वी की कक्षा में स्थापित किया। यह उपलब्धि भारत के लिए अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में एक बड़ा मोड़ साबित हुई। इसके बाद ही कलाम ने डीआरडीओ के मिसाइल कार्यक्रम का नेतृत्व किया। उनकी इस दोहरी विशेषज्ञता ने भारत को अंतरिक्ष और रक्षा, दोनों ही रणनीतिक क्षेत्रों में महान और गौरवशाली ऊंचाइयों पर पहुँचाया।

57. (3) नेशनल केमिकल लेबोरेटरी (NCL) - पुणे
भारत के प्रमुख वैज्ञानिक संस्थान अपनी विशिष्ट विशेषज्ञता हेतु जाने जाते हैं। राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला पुणे में स्थित है और यह रसायन विज्ञान में अनुसंधान का अग्रणी केंद्र है। इसके अलावा, कोशिकीय एवं आणविक जीव विज्ञान केंद्र हैदराबाद में स्थित है, जो जीव विज्ञान के जटिल क्षेत्रों पर कार्य करता है। केंद्रीय औषधि अनुसंधान संस्थान लखनऊ में और राष्ट्रीय मस्तिष्क अनुसंधान केंद्र मानेसर में स्थित है। इन संस्थानों की स्थापना का उद्देश्य विशिष्ट वैज्ञानिक क्षेत्रों में आत्मनिर्भरता प्राप्त करना और नवाचार को प्रोत्साहित करना रहा है।

58. (3) केवल V
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद कृषि शिक्षा और अनुसंधान का समन्वय करने वाली सर्वोच्च संस्था है। एम.एस. स्वामीनाथन ने न केवल हरित क्रांति का नेतृत्व किया, बल्कि किसान आयोग

76. (3) दोनों कथन I और कथन II सही हैं
1974 के पोखरण-1 परीक्षण को भारत ने 'शांतिपूर्ण परमाणु विस्फोट' का नाम दिया था ताकि यह स्पष्ट किया जा सके कि इसका उद्देश्य केवल वैज्ञानिक अनुसंधान है। इसके विपरीत, 1998 में किए गए पोखरण-2 परीक्षणों के बाद भारत ने आधिकारिक घोषणा की कि वह अब एक परमाणु हथियार संपन्न देश है। इन दोनों परीक्षणों ने भारत की रणनीतिक नीतियों में बदलाव को दर्शाया। पहले परीक्षण ने परमाणु क्षमता का प्रदर्शन किया, जबकि दूसरे परीक्षण ने उस क्षमता को सामरिक सैन्य शक्ति में बदलकर भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा को वैश्विक मजबूती दी।

77. (3) भारी संचार उपग्रहों को भू-स्थिर स्थानांतरण कक्षा (GTO) में प्रक्षेपित करने में सक्षम बनाना
क्रायोजेनिक तकनीक का विकास इसरो हेतु एक कठिन लेकिन महत्वपूर्ण मील का पत्थर रहा है। यह तकनीक बहुत भारी संचार उपग्रहों को, जिनका वजन दो टन से अधिक होता है, पृथ्वी से 36,000 किलोमीटर ऊपर भू-स्थिर कक्षाओं में स्थापित करने हेतु आवश्यक बल प्रदान करती है। पहले भारत इस कार्य हेतु विदेशी प्रक्षेपण सेवाओं पर निर्भर था, लेकिन स्वदेशी क्रायोजेनिक इंजन के विकास के बाद भारत अब भारी पेलोड हेतु पूरी तरह आत्मनिर्भर हो गया है। इसने जीएसएलवी कार्यक्रम को सफल बनाया और भविष्य के गहरे अंतरिक्ष मिशनों के द्वार खोल दिए।

78. (1) I, II, III, IV, और V
निर्देशित मिसाइल विकास कार्यक्रम भारत की रक्षा तैयारियों को आधुनिक बनाने का ऐतिहासिक प्रयास था। इस कार्यक्रम के तहत पांच मुख्य मिसाइलों के विकास का लक्ष्य था। पृथ्वी सतह-से-सतह मिसाइल है, अग्नि लंबी दूरी की बैलिस्टिक मिसाइल है, त्रिशूल कम दूरी की और आकाश मध्यम दूरी की सतह-से-हवा मिसाइलें हैं। नाग एक टैंक-रोधी निर्देशित मिसाइल है। इन प्रणालियों के सफल विकास ने भारत को मिसाइल प्रौद्योगिकी में आत्मनिर्भर बनाया और आयात पर निर्भरता को कम किया। यह कार्यक्रम डॉ. कलाम के सफल नेतृत्व में संपन्न हुआ था।

79. (1) 1970 के अधिनियम के तहत प्रक्रिया पेटेंट की ओर परिवर्तन ने जेनेरिक दवा उद्योग को प्रोत्साहित किया
भारतीय औषध उद्योग की सफलता में 1970 का पेटेंट अधिनियम सबसे महत्वपूर्ण कारक रहा है। इस कानून ने दवाओं हेतु 'उत्पाद पेटेंट' के बजाय 'प्रक्रिया पेटेंट' की अनुमति दी थी। इसका अर्थ था कि भारतीय कंपनियां किसी दवा को बनाने का नया तरीका खोजकर उसका उत्पादन कर सकती थीं। इसने घरेलू कंपनियों को महंगी विदेशी दवाओं के सस्ते जेनेरिक संस्करण बनाने हेतु प्रेरित किया। इसके परिणामस्वरूप भारत दवाओं में आत्मनिर्भर बना और आज दुनिया भर में सस्ती जीवन रक्षक दवाओं के प्रमुख निर्यातक के रुप में गौरव के साथ जाना जाता है।

80. (3) III, II, I, IV
ट्रॉम्बे में स्थापित परमाणु रिएक्टरों का क्रम भारत की परमाणु यात्रा के विकास को दर्शाता है। सर्वप्रथम 1956 में 'अप्सरा' शुरु हुआ जो एशिया का पहला रिएक्टर था। इसके बाद 1960 में 'साइरस' को कनाडा के सहयोग से स्थापित किया गया। 1961 में 'जरलीना' का संचालन हुआ जो रिएक्टर भौतिकी के अध्ययन हेतु था। बहुत बाद में 1985 में 'ध्रुव' रिएक्टर सक्रिय हुआ जो भारत का सबसे बड़ा अनुसंधान रिएक्टर है। इस क्रमिक विकास ने भारत को परमाणु ईंधन चक्र और अनुसंधान में व्यापक दक्षता तथा आत्मविश्वास प्रदान किया है।

www.nodia.in

Downloaded from www.pdf.tube

Visit :
www.pdf.tube

Download PDFs For :

- ✓ MPPSC Chapterwise Question Bank
- ✓ KVS/NVS Chapterwise Question Bank
- ✓ KVS/NVS 30 Sample Papers for Tier-II
- ✓ DSSSB TGT Chapterwise Question Bank
- ✓ DSSSB Sample Papers
- ✓ Chapterwise Question Bank
- ✓ JEE NEET Foundation
- ✓ Primary Classes Worksheets
- ✓ Olympiad Guide
- ✓ Sample Papers
- ✓ Previous Year CBSE Papers
- ✓ Previous JEE, NEET and CUET Papers

NODIA

Nodia Editions LLP
125, Sector 6, Vidhyadhar Nagar, Jaipur 302039

MRP ₹ 520.00